ग़ौसुस्सक़लैन महबूबे सुब्हानी कुतबे रब्बानी
हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो अन्हो
की मशहूर ज़माना तसनीफ़

ग़ुनियतुत्तालिबीन

जिसनें अंदाज़े बयान का लुत्फ़ और सलासते
ज़बान का कैफ़ हर हर सतर में मौजूद है

तर्जमा अज़:
अदीबे शहीर हज़रत
शम्स सिद्दीक़ी बरैलवी
साबिक़ सदर शोअबा–ए–फ़ारसी
दारूल उलूम मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ

गौसुस्सक़लैन, महबूबे सुब्हानी कुतबे रब्बानी
हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो अन्हो
की मशहूर ज़माना तसनीफ़

गुनियतुत्तालिबीन

जिसमें अंदाज़े बयान का लुत्फ़ और सलासते
ज़बान का कैफ़ हर हर सतर में मौजूद है

तर्जमा अज़:
अदीबे शहीर हज़रत
शम्स सिद्दीक़ी बरैलवी
साबिक़ सदर शोअबा–ए–फ़ारसी
दारूल उलूम मंज़रे इस्लाम बरैली शरीफ़

अदबी दुनिया
399, मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली–6

किताब : गुनियतुत्तालिबीन

तसनीफ़ : महबूबे सुब्हानी कुतबे रब्बानी
हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो अन्हो

तर्जमा : अदीबे शहीर शम्स बरैलवी

बएहतेमाम : रेहान अहमद सिद्दीकी

सने इशाअत : मई 2010 ई०

तादाद : 1100

सफ़्हात : 728

हदिया

अदबी दुनिया

399 मटिया महल, जामा मस्जिद, देहली–6
फोन: आफ़िस: 23250122,

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

उनवान	सफ़हा
बाब 12	

उनवान	सफ़हा
बाब 13	

उनवान	सफ़हा
शबे बरात में नमाज़	397
बाब 14	
रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाएल	398
लफ़्ज़े रमज़ान की तशरीह व तहक़ीक़	400
कुरआन पाक किस तरह नाज़िल हुआ	401
माहे रमज़ान के फ़ज़ाएल	402
माहे रमज़ान की बरकतें	403
शबे क़द्र	404
रमज़ान के हुरूफ़	407
रमज़ान की हुरमत	408
सरदारी और सरवरी	408
सूरह क़द्र की तफ़सीर	408
लैलतुल क़द्र के मानी	409
शबे क़द्र की तलाश	410
शबे जुमा अफ़ज़ल है या शबे क़द्र	411
शबे क़द्र पर शबे जुमा की अफ़ज़लियत	412
शबे क़द्र अफ़ज़ल है शबे जुमा से	412
शबे क़द्र के ग़ैर मुतअय्यन होने का सबब	413
अल्लाह तआला ने हुज़ूर को पांच रातें मरहमत फ़रमाई	414
बदकारों के लिए नेकोकारों की शफ़ाअत	414
शबे क़द्र की अलामतें	415
नमाज़े तरावीह	416
नमाज़े तरावीह की जमाअत	417
शबे क़द्र और माहे रमज़ान के मज़ीद मसाएल	418
सदक़ए फ़ित्र व ईदुल फ़ित्र	420
ईद की वजहे तसमिया	421
मिल्लते इब्राहीम की ईद	422
हज़रते मूसा की ईद	423

उनवान	सफ़हा
हज़रते ईसा की उम्मत की ईद	424
ईद मोमिन भी मनाता है और काफ़िर भी	426
ईद मनाने का इस्लामी तरीक़ा	427
बाब 15	
दस दिनों के फ़ज़ाएल	429
माह ज़िल हिज्जा के अशरा	430
अव्वल में मोजज़ाते अम्बिया	
अशरा ज़िल हिज्जा की इबादात	431
इस अशरा की नमाज़ों के फ़ज़ाएल	432
हज़रत आदम की दस चीज़ें	433
हज़रत इब्राहीम की दस चीज़ें	433
हज़रत शोऐब की दस चीज़ें	434
हज़रत मूसा की दस चीज़ें	434
सय्यदुल मुर्सलीन की दस चीज़ें	435
अशरा ज़िल हिज्जा की अज़मत	435
क़सम [illegible] करने की हिकमत	436
[illegible]या	437
एहराम बांधना और लब्बैक कहना	437
एक आराबी का वाक़िआ	438
हजरे असवद	439
हज के इरादे से घर से निकलने वाला और उसकी वफ़ात	440
यौमित्तरबीया की वजहे तसमिया	440
तकमीले नेमत का दिन	443
अल यौमा अकमलतो की मज़ीद तशरीह	444
अरफ़ात और अरफ़ा के मानी	445
रोज़े अरफ़ा और शबे अरफ़ा की फ़ज़ीलत	447
अरफ़ा का रोज़ा	450
अरफ़ा के दिन की नमाज़ें	450
यौमे अरफ़ात की दुआयें	451
अरफ़ा की वह दुआयें जो आंहज़रत के साथ मख़सूस थीं	453

उनवान	सफ़हा

उनवान	सफ़हा
तसव्वुफ़ के मानी	657
मुतसव्विफ़ और सूफ़ी का फ़र्क़	657
सालिक का मख़लूक़ में मौजूद होना	658
बाब 25	
मुब्तदी के वाजिबात	662
कुरआन और हदीसे की पाबन्दी	662
मोजज़ा और करामत	663
मुरीद का मेल मिलाप किन लोगों से मना है	663
इज्ज़ व इंकसार	663
मुरीद और रज़ाए इलाही	664
शैख़ की मुख़ालफ़त न करना	664
हज़रत आदम की तरबीयत	665
हज़रत आदम का जन्नत से ख़ुरूज	666
औलिया अल्लाह और अब्दाल	667
शैख़्स से मुनक़तअ होना	667
मज़ीद आद[illegible]	[illegible]68
समाअ के व[illegible] के आदाब	6[illegible]8
समाअ के बारे में हमारा [illegible]ुक़्तए नज़[illegible]	[illegible]68
समाअ में मुरीद के आ[illegible]	669
शैख़ की अहमियत	669
तादीबे मुरीद में शैख़ का [illegible] अमल	670
मुरीद किस को बनाया [illegible]ाए	671
बाब 26	
दोस्तों के साथ सूफ़ी की रविश	673
ग़ैरों के साथ बरताव	673
उमरा के साथ सोहबत	673
फ़ुक़रा की मुसाहेबत उमरा के लिए	674
फ़क़ीर से हुस्ने सुलूक	675
फ़ेक्र पर सब्र की ख़ूबी	675
सुपुर्दगी का सिला	676
रसूलुल्लाह की हदीस	677
फ़ेक्र से मोहब्बत	677
फ़ेक्र की शर्त	678
तर्के हिफ़्ज़े नफ़्स	678
माल की कमी हसरते दिल का मौजिब है	678
फ़क़ीर को मुस्तक़बिल की फ़िक्र नहीं करना चाहिए	679
मौत का इंतज़ार	679
फ़क़ीर कब सवाल करे	680
दोस्तों के साथ सुलूक	681
दूसरों की चीज़ों का [illegible]स्तेमाल	681
[illegible]स्बे हैसियत बरताव	682
[illegible]ीर को किस तरह [illegible]ना चाहिए	683
अ[illegible]निया और फ़ु[illegible] के [illegible]थ खा[illegible]ना	683
अपन[illegible]यों के स[illegible]थ सुलूक	684
इजाज़त [illegible]रूरी [illegible]	684
पेश क़द[illegible] और पहल करना	685
[illegible] अदाएगी अदबे दरवेश है	685
[illegible] के [illegible]ने में बच्चों को भी शरीक करे	686
ख़ुद दावत में शरीक होना मुनासिब नहीं है	686
उलूमे शरीअत की तालीम अहल व अयाल को देना ज़रूरी है	687
मोमिन के सफ़र की ग़र्ज़ व ग़ायत	687
सफ़र की एक शर्त	688
औराद व वज़ाएफ़े सफ़र	688
आग़ाज़े सफ़र ही से दिल की निगरानी करना	689
एक जगह पर क़याम	689
मक़बूलियत वजहे हिजाब है	689
सफ़र में रफ़ीक़ों के साथ रहने का तरीक़ा	689

दो बातें

एक बंदए हक़ीर की तरफ़ से

ज़मानए क़दीम से अवामुन्नास की इसलाहे हाल और हिदायते उख़रवी व दुनयवी के लिए हक़ व सदाक़त के जाम की फ़राहमी की जाती रही है और यह इल्तेज़ाम ख़ालिक़े कायनात जल्ला जलालहु ने ब अहसन अपनी मख़लूक़ के लिए फ़रमाया है। अम्बिया व मुर्सलीन के बेहतरीन दौर के बाद उसने यह ख़िदमत अपने मुक़र्रबीन रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन के सुपुर्द की और यह सिलसिला अला हालेही जारी व सारी है।

हक़ व सदाक़त की पैग़ाम रसानी के लिए उलमाए रब्बानीन ने मुख़्तलिफ़ तरीक़े इस्तेमाल किये उन में किरदार व अमल को अव्वलियत हासिल रही, जो कुछ किया हक़ की ख़ातिर किया जिसकी ख़ूशबू फैली और इलाक़े के इलाक़े को मुअत्तर व फ़ैज़याब कर [illegible] गई। दूसरा तरीक़ा तक़रीर व तहरीर का है, अपने मुरीदीन व मुतवस्[illegible] व मुतअक़दीन के [illegible]हवाल की दुरूस्ती के लिए उनके मिज़ाज और उनके अहवाल के मुताबि[illegible] वाज़ व तहरीर के [illegible]दाज़ को नवाज़ा, बाद के अदवार में उनकी इफ़ादियत व अहमियत के [illegible]शे नज़र वाज़[illegible] मल[illegible]ज़ात की शक्ल में उनके किसी ख़ास मुरीद या अक़ीदतमंद ने मुरत्तब क[illegible] जो आज [illegible] शक्ल में हमारे सामने मौजूद है। इसी तरह तहरीरी हिदायात [illegible]भी हैं जो [illegible] अंदाज़ से मुरीदों के लिए लिखी गई बाद को आम हो गई।

गुनियतुत्ता[illegible]ब तरीकु[illegible]हक मौसूम [illegible] गुनि[illegible]तुत्तालिबीन [illegible]ज़रत सय्यदना मोहीयुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी [illegible]ज़ियल्लाहो तआला अन्हो की हर दौ[illegible]में [illegible]तरीन किताब है जो तालिबे राह को अपने अहवाले ज़ाहि[illegible] व बाति[illegible]र नज़र [illegible]ने के लिए [illegible]र और बेमिस्ल है और हक़ीक़त यह है कि इस किताब के ए[illegible] एक बा[illegible] को पढ़ने के बाद इन पर ग़ौर किया [illegible]ए और अपने अहवाल को उनके मुताबिक़ ढाल लिया जा[illegible]से पाक का फ़ैज़ बिला शुब्हा जारी हो जायेगा और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसको अपने मुक़र्रबीन में शामि[illegible]रमा लेगा इन्शा अल्लाह तआला।

और सही यही है कि[illegible]पने हाल को ग़ैर मुन्ज़बित तरीक़े पर छोड़े रहते हैं, दीन और मज़हब के नाम पर जो समझ में आया कभी यह कर लिया कभी वह कर लिया और ख़ुद को जन्नत का हक़दार समझ कर इत्मीनान से बैठ गये, मैं आज की मौजूदा नस्ल से यही अर्ज़ करूंगा कि अपनी मसरूफ़ ज़िन्दगी में से एक दो घंटे रोज़ाना इसे एक ज़रूरी काम समझ कर निकालें और बुज़ुर्गों की तसनीफ़ करदा किताबों को मुताला में रखें इन्शा अल्लाह तआला दीन और दुनिया दोनों में मक़बूल होंगे। गुनियतुत्तालिबीन पर ज़्यादा कुछ न कहते हुए बस इतना अर्ज़ करूंगा कि एक बार अल्लाह के वास्ते पढ़ जाइये इन्शा अल्लाह वह नूर अता कर दिया जाएगा जिससे आलम के आलम रौशन हो जायेंगे।

साजिद हाशमी अय्यूबी अल फ़िरदौसी

बतारीख़ 4 जमादिउल अव्वल 1431 हि०

बमुताबिक़ 19 अप्रील 2010 बरोज़ पीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहु व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हर्फ़े आग़ाज़

अलगुनियतुत्तालिब तरीक़ुल हक़

बारगाहे अहदियत में सना व नयायश, दरबारे रिसालत में दरुद व सलाम और हज़रत रिसालत पनाही सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आल व असहाब की बारगाह में गुलहाए मनाक़िब व अक़ीदत निछावर करने के बाद मअरुज़ हूं कि हज़रत सय्यदना गौसे आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो की सवानेह मुबारका में आप की तसानीफ़ के तआरुफ़ व तब्सरा के सिलसिला में अर्ज़ किया गया था कि आप की मशहूर ज़माना तसनीफ़ गुनियतुत्[illegible]लिबीन पर मुतरजिम दी[illegible]चा किताब में कुछ अर्ज़ करेगा कि सवानेह पाक के चन्द सफ़हात में [illegible] की गुंजाईश नहीं थी।

तमाम मोअर्रेख़ीन और हज़रत गौसे आज़म रज़ियल[illegible]ाहो अन्हो के [illegible]वानेह [illegible]गार हज़रात का इस अम्र पर इत्तेफ़ाक़ है कि आप की तसानीफ़ में गुनिय[illegible]त्तालिबीन, अ[illegible]हुर्रब्बानी और फ़ुतूहुल ग़ैब बहुत मशहूर हैं और इन तीनों कुतुब में आख़िरी [illegible] [illegible]ताबें आप की तक़ारीर के ईमान अफ़रोज़ मजमूए हैं सिर्फ़ गुनियतुत्तालिबीन एक मुस्तक़िल तस[illegible]ीफ़ की [illegible]सियत रखती है।

मशहूर मु[illegible]तशरिक़ [illegible]स मारग[illegible] ने [illegible]पने मक़ाला [illegible]न्दर्जा इन्साइक्लो पिडिया ऑफ़ इस्लाम इशाअ[illegible] 1913ई॰ [illegible] आप की त[illegible]नीफ़ [illegible]ी तअदा[illegible] इस तरतीब से नौ (9) बताई है (1)अलगुनियतुत्ता[illegible]लिब तरीक़ुल [illegible]क़ (2)अल[illegible]तहुर्र[illegible] [illegible]हुल ग़ैब (4)हिज़्ब बशाइरुल ख़ैरात (5)जलाइलुल ख़ाति[illegible] (6) अ[illegible]मवाहिबुर्रहम[illegible]निया वल फ़ुतूहुर्रब्बानिय[illegible] [illegible] मरातिबुल अख़लाक़ुस्सुन्निया वल मक़ामातुल इर[illegible] (7) यवाक़ीतुल हकम (8) अलफ़ियूज़ातुर्रब्बानिया (9) वह ख़ुत्बे जो बहजतुल असरार और [illegible]री कुतब सवानेह में मज़कूर हैं।

एक दूसरा मुस्तशरि[illegible] [illegible]र डब्लू बराऊ ने (बर्न यूनिवर्सीटी बर्लिन) इन्साइक्लो पिडिया ऑफ़ इस्लाम की तबअ् [illegible]द 1960 ई॰ में अपने मज़मून में हज़रत की तसानीफ़ के सिलसिला में रक़म तराज़ है कि:

यह दौर था जिस में (हज़रत) अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो अन्हो) ने अपने मिशन का आगज़ किया वह अपनी तस्नीफ़ अलगुनियतुत्तालिब तरीक़ुल हक़ मतबूआ क़ाहिरा 1304हि॰ में एक आलिम नज़र आतें हैं। किताब कि इब्तिदा में वह एक सुन्नी मुसलमान के अख़लाक़ी और समाजी फ़राईज़ बयान करते हैं वह हंबली नुक़्ताए नज़र से एक ऐसा दस्तूरुल अमल मुरत्तब करते हैं जिसका जानना हर मुसलमान के लिए ज़रुरी है इसमें 73 फ़िरक़ों का तज़करा भी किया है और किताब को तरीक़े तसव्वुफ़ के बयान पर ख़त्म किया है।

इस मुस्तशरिक़ ने आप की मज़ीद दो किताबों का और ज़िक्र किया है यानी अलफ़तहुर्रब्बानी और फ़ुतूहुल ग़ैब। इन के अलावा दूसरी किताबों के ज़िक्र से गुरेज़ किया है। मुस्तशरक़ीन के अलावा दीगर अरबी और फ़ारसी ज़बान के सवानेह निगार हज़रात और मोअर्रिख़ीन नीज़ तज़्करा

निगारों ने आप की उन अव्वलुज़्ज़िक्र तीन किताबों पर इत्तेफ़ाक़ किया है जिस के बाईस यह तीनों कुतुब बार बार छपी हैं और अक़ीदत के हाथों ने एहतेराम की आंखों से इनको लगाया है।

असल नाम क्या है

हज़रत गौसे आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो की इस मबसूत किताब के सिलसिला में तमाम तज़्करा नविसों का इत्तेफ़ाक़ है जैसा कि मैं इस से क़ब्ल तहरीर कर चुका हूं लेकिन किताब के नाम में क़द्रे इख़्तेलाफ़ है। अरबी ज़बान में जिस क़दर नुस्ख़े दस्तियाब और मौजूद हैं। तमाम नुस्ख़ों में यह किताब अलगुन्यितुत्तालीब तरीक़ुल हक़ के नाम से मौसूम है जिस तरह हज़रत मुसन्निफ़ ने ख़ुद दीबाचा के इख़तेताम में फ़रमाया है। इस सराहत के बाद मज़ीद किसी बहस की ज़रुरत इस सिलसिले में बाक़ी नहीं रहती कि किताब का असले नाम क्या है। अब सवाल यह पैदा होता है कि गुन्यितुत्तालेबीन नाम क्यों मशहूर हुआ इस की वजह बजुज़ इसके और कुछ नहीं कि चूंकि यह नाम बहुत तवील था और पूरा नाम बार बार लेना दुश्वार मालूम होता था इस लिए अलगुन्यितुत्तालीब को गुन्यितुत्तालेबीन से बद[illegible] दिया गया। गोया अस[illegible] नाम को मुख़्तसर कर दिया गया। एक दूसरी वजह यह भी हो सक[illegible] है कि हिन्दुस्तान में [illegible]ब इस का पहला तर्जमा मौलाना अब्दुल हकीम सयालकोटी ने फ़ारसी [illegible]बान में किया [illegible] उन्ह[illegible] उन्होंने तर्जमा को असल नाम से मुताबिक़्ते कुल्ली के तौर पर गुन्यितु[illegible]तालेबीन से [illegible] कर दिया।

शाहज़ादा दारा शिकोह हज़रत मौलाना अब्दुल हक[illegible] [illegible]यालकोटी मरहूम के मुआसरीन में से हैं उन्होंने भी अपनी किताब सफ़ीनतुल औलिया में इस किताब को गुन्यितुत्तालेबीन ही से मौसूम किया है और मेरा [illegible]ल है कि [illegible]के पेश नज़र असले किताब का कोई मख़तूता नहीं था बल्कि अग़लब [illegible] कि उन्होंने हज़रत मौल[illegible]ा अ[illegible]ल हकीम [illegible]यालकोटी का फ़ारसी तर्जमा ही देखा हो और ह[illegible] सराहत उसका नाम "[illegible]न्यितुत्त[illegible] [illegible] तहरीर कर दिया हो।

उर्दू तराजीम [illegible] सबसे पहला तर्ज[illegible] मतबअ् नवल किशोर [illegible]नऊ व कानपुर से मत्न के साथ शाय हुआ जि[illegible] [illegible]र्जिम मौलवी महबूबुद्दीन इब्न मुन्शी जमाल अहमद हैं। यह तर्जमा उन्नीसवीं सदी के रोबअ् आख़िर में शाया हुआ और इसका नाम भी "गुन्यितुत्तालेबीन" ही है। बहरहाल "अलगुन्यितुत्ता[illegible] [illegible]कुलहक़" और "गुन्यितुत्तालेबीन एक ही चीज़ है। ज़्यादा से ज़्यादा यह कहा जा सकता है कि यह किताब अपने तराजिम की कसरत के बाइस अपने असले नाम के बजाए तराजिम के नाम से मशहूर हो गई। अब इस शोहरते आ़म की वजह से मतर्जिम मजबूर है कि रफ़अ् इश्तेबाह के लिए वह भी इसी नाम की पैरवी करे। चुनांचे मैंने तर्जमा की सरलोह पर दोनों नामों को इख़्तेयार किया है। वावैन में असल नाम तहरीर किया है और पेशानी पर मशहूर नाम ।

अलगुन्यितुत्तालिब तरीक़ुलहक़ का मौज़ू

जैसा कि नाम से ज़ाहिर है अलगुन्यितुत्तालिब तरीक़ुलहक़ का मौज़ू का मौज़ूअ् शरीअ़त है जैसा कि हुज़ूर वाला ने दीबाचा में सराहत फ़रमाई है कि

गोया फ़राइज़ इस्लाम व सुनन नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मारफ़ते इलाही, आदाबे इस्लामी, अवामिर व नवाही की तामील व इताअ़त इस किताब का मौज़ूअ् है और इन मबाहिस

और मौजूआत को नसूसे क़ुरानीया और अहादीसे नब्वी से इस्तिदलाल के साथ पेश फ़रमाया है।

अलावा अज़ीं मुस्लमानों के मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों के अक़ाइद की मुकम्मल तशरीह और ग़लत अक़ाएद का रद फ़रमाया है। बाज़ आयात की तफ़सीर भी फ़रमाई है। आमाल व अज़्कार और अशग़ाल का भी बयान फ़रमाया है। किताब के आख़िर में एक मबसूत बाब आदाबुल मुरीदैन पर मुश्तमिल है जिसमें तरीक़त की तालीम बड़े दिल पज़ीर अन्दाज़ में दी गई है। इस तरह अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ शरीअत और तरीक़त की तालीमात का लबाब और जौहर है और एक दिल नशीन और दिल पज़ीर इमतेज़ाज, लेकिन इसमें भी आप ने अपनी मजालिस और खुतबात की तरह शरीअ़त को मुक़द्दम रखा है और अहकामे इलाही और इत्तेबाए नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बड़े ही अजीब अस्लूब और दिलों को ख़शीयते इलाही से हैबत ज़दा कर देने वाले अन्दाज़ में पेश फ़रमाया है।

अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ की फ़ेहरिस्ते मज़ामीन आप के पेशे नज़र है इसमें आप को अन्दाज़ा हो जाएगा कि हज़रत सय्यदना गौसे आ[illegible] ने अहयाए दीन मती[illegible] के लिए किस क़दर मसाई–ए–जमीला फ़रमाई है।

शायद बाज़ कोहताबीं यह ख़्याल करें कि हज़रत [illegible]ौसुस्सक़लैन [illegible]ज़ियल्ल[illegible]हो अन्हो ने जिन मौज़ूआत पर क़लम उठाया है वह ऐसे मौज़ूआत हैं [illegible]न पर हज़र[illegible] अस[illegible]फ़े कराम और मआ़सिरीने एज़ाम ने भी क़लम उठाया है और उन मौज़ू[illegible]र कुतुबे अ[illegible]बीया का एक वाफ़िर ज़ख़ीरा मौजूद हैं लेकिन यह शरफ़ सिर्फ़ हज़र[illegible] वाला के सा[illegible] मख़स[illegible] है कि आप के कलाम का सोज़ और और इरशा[illegible] का गुद[illegible] और [illegible]ल्फ़ाज़ का जो[illegible]ा दिलों को तड़पा देता है। आप की सवानेह मुब[illegible]का में मैंने इस अम्र की [illegible]ाहत [illegible] है कि [illegible] के ज़ोरे बयान और सोज़ो कलाम की ही यह असर[illegible]ा कि फ़िस्क़[illegible]व फ़ुजूर से भरपूर [illegible]गड़े हुए मुआ़शरे में आप की दावते हक़ ने लाखों बंद[illegible]ने खुद[illegible] की काया [illegible]लट दी और हज़ारों [illegible] गुम कर्दा मन्ज़िल, मन्ज़िल आशना हो गए।

अलगुन्यितुत्त[illegible]ब तरीकुलहक़ का अन्दाज़े बयान

"अलगुन्यितुत्तालिब [illegible]क़" का असलूबे बयान कैसा है और अपने हम अस्र मुसन्निफ़ीन से हज़रत वाला का अंदा[illegible] बयान किस क़दर जुदागाना है, इस मौज़ू पर क़लम उठाना अगरचे हद्दे अदब से तजावुज़ करना है, मैं क्या मेरी बिसाते इल्मी की हकीक़त क्या कि मैं हज़रत के असलूबे बयान पर क़लम उठाऊं लेकिन मैंने चूंकि "अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़" के इल्मी व अदबी पहलू को भी अपना मौज़ूअ् क़रार दिया है इसलिए मजबूरन यह जसारत कर रहा हूं और हज़ूर ग़ौसियत से इमदाद का ख़्वाहां हूं कि मेरे क़लम कज बयान को यह सलीक़ा अता हो कि इस सिलसिला में कुछ अर्ज़ कर सकूं लेकिन इस सिलसिला में सब से बड़ी दुश्वारी यह है कि हज़रत वाला के अस्लूबे बयान के सिलसिला में कुछ अर्ज़ करने के लिए यह ज़रुरी है कि मैं आप के फ़सीह व बलीग़ इन्शा से इक़्तिबासात बतौर इस्तिदलाल पेश करुं। लेकिन सोचता हूं कि उर्दू तर्जमा के साथ हज़रत वाला की इन्शा परदाज़ी की फ़साहत व बलाग़त, सलासत व रवानी, शिकोह अल्फ़ाज़ और हुस्ने बयान के पहलू अगर उजागर करता हूं तो क़ारईन तर्जमा को इससे दिलचस्पी पैदा नहीं हो सकेगी।

बहैसियत मजमूई बक़ौल हज़रत आमिर बिन वहब यह कहना भी कि

उनकी ज़ाते गरामी एक ऐसी ज़िन्दा किताब थी जिस में तफ़सीरं व हदीस़ व फ़िक़्ह व अदब वगैरह, कोई ऐसा इल्म न था जिस में यदेतूला हासिल न हो, बिलख़ुसूस तफ़सीरे क़ुरआन के सिलसिला में जो महारत हासिल थी वह अपनी नज़ीर आप है ब–ई हमा कमाले अदब के एक गोशा को भी बेनक़ाब नहीं करता।

अलगुन्यितुत्तालिब तरीक़ुलहक़ का तर्जमा आप के सामने है और तर्जमा में असल इन्शा और ज़बान के महासिन व ख़ुसूसियात को किसी तरह भी मुन्तक़िल नहीं किया जा सकता। अलबत्ता यह आप ज़रुर देखेंगे कि हज़रत वाला जिस मौज़ूअ् पर क़लम उठाते हैं वह एक समुन्द्र है जो ठाठें मार रहा है और एक सर मस्ती और जोश है जो एक एक लफ़्ज़ से पैदा हो रहा है। हज़रत वाला जिस मौज़ूअ् पर क़लम उठाते हैं उसकी तमाम जुज़ियात को पेश फ़रमाते हैं लेकिन अन्दाज़े बयान में वह सरमदी कैफ़ और दिल नशीनी है कि रुह में एक मस्ती की कैफ़ियत पैदा होती है, अलफ़ाज़ का जोश दिलों को गरमाता है और तबीयत में गुरेज़ की कैफ़ीयत [illegible]दा नहीं होती। दिल चाहता है कि इसी तरह पुरकैफ़ अन्दाज़ में खोया [illegible] और हुस्ने बयान ने ज[illegible] महवीयत बख़्शी है उसका इख़्तेताम न हो।

हज़रत वाला जहां अज़ाबे अलीम से डराते हैं वहां [illegible]लफ़ाज़ की [illegible] और [illegible]शिकोह से दिल लरज़ जाते है और बद आमालियों पर नदामत का पसी[illegible] बहने लगता [illegible]। और जहां इनामाते खुदावन्दी का ज़िक्र करते हैं वहां रुह में बाली[illegible]गी और [illegible] में एक [illegible] व सुरूर पैदा होता है। इनामे इलाही पर दिल के दरीचे ख[illegible] जाते है और अल्ताफ़[illegible] इलाही पर जबीं सजदा रेज़ हो जाती है और [illegible]ह सब [illegible] नतीजा [illegible]ज़रत के उस ख[illegible]स का जो इस्लाहे मुआशरे के सिलसिला में आ[illegible]के पुरनूर क़ल[illegible] में मौजूद [illegible]ा। इ[illegible] सोज़े [illegible]नी का जो इश्के इलाही की तपिश ने आप को बख़्श[illegible] था।

आम अन्दा[illegible] ब[illegible]ान

हुज़ूर गौसे आज़[illegible] यह मख़सूस अन्दाज़े बयान है कि आप जो कुछ फ़रमाते हैं उसके लिए इस्तिआरे, तश्बीह य[illegible] म[illegible] का सहारा नहीं ढूंढते कि इस सूरत में इबारत बे असर हो जाती है और सोज़ व गु[illegible] की कैफ़ीयत उन परदों के पीच व ख़म में गुम हो जाती है। सोज़ व गुदाज़ और बयान की सदाक़त और खुलूस का तक़ाज़ा होता है कि जो कुछ कहा जाए वह सीधे साधे तरीक़े से कहा जाए चुनांचे हज़रत वाला जो कुछ फ़रमाते हैं वह छोटे छोटे जुमलों में मज़बूत और मसज्जअ् बंदिशों के साथ वाज़ेह अलफ़ाज़ में फ़रमाते हैं और फिर यह कि हज़रत जहां तक मुमकिन होता है अपने क़ौल पर नस्से क़ुरआनी या हदीसे नब्वी से इस्तिदलाल फ़रमाते हैं जिस से जुम्ले कमाले बलन्दी पर पहुंच जाते हैं। आप की इन्शा लतीफ़ में इसकी बेहद व बेशुमार मिसालें भी मौजूद हैं जहां नस्से क़ुरआनी और हदीसे नब्वी से इस्तिदलाल नहीं फ़रमाते वहां अकाबेरीने सूफ़ीया के अक़्वाल से ताईद लाते हैं। उन मक़ामात पर यह महसूस होता है कि कुन्दन पर कोई नगीने जड़ रहा है। इस तरह हम कह सकते हैं कि आप की इन्शा आली, मसुज्जअ् व मुक़फ़्फ़ा होने के साथ साथ मुरस्सअ् भी है। अलग़रज़ इन्शा फ़सीह व बलीग़ की तमाम ख़ूबीयां आप की इन्शा आली में मौजूद हैं।

मुझे अफ़्सोस के साथ यह बात तहरीर करनी पड़ रही है कि "अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ "के किसी मुतर्जिम ने हज़रत वाला की ख़ुसूसीयात इन्शा परदाज़ी पर दो हर्फ़ भी लिखने की ज़हमत गवारा नहीं फ़रमाई। राक़िमुल हुरुफ़ ने इस सिलसिला में सबसे पहले यह जसारत की है। अल्लाह तआला से लग़ज़िशे क़लम के लिए तौबा का ख़्वाहां और हुज़ूर गौसीयत में अपनी गुस्ताख़ी पर उफ़्व व दरगुज़र का तालिब हूं।

अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ के ख़िलाफ़ एक शुबहा का इज़ाला

मैंने जब से अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ का तर्जमा शुरु किया था, बाज़ असहाब की ज़बानी यह बात बार बार सुनी कि हज़रत गौसे आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो ने जहां गुमराह फ़िरक़ों को बयान फ़रमाया है उन में फ़िरक़ा हनफ़ीया का भी ज़िक्र किया है इस बोहतान तराशी ने हूज़ूरे गौसीयत से जो अक़ीदत हनफ़ीयों के दिलों में थी इसमें तो कुछ कमी पैदा नहीं हुई लेकिन एक शुबा अज़ीम दिलों में ज़रूर पैदा हो गया और बहुत से लोग तज़बज़ुब का शिकार हो गए अब इस बोहतान तराज़ी की असल सुनिये।

हज़रत सय्यदना गौसे आज़म ने जिन फ़िर्का [illegible]ल्ला की सराहत फ़रमाई है उसमें एक उन्वान "हन्फ़ीया मरजीया" का क़ायम फ़रमाया है और इरशाद किया कि हज़रत नोमान बिन साबित के बाज़ पैरो "हन्फ़ीया मरजीया" कहलाते हैं कि वह अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना ही काफ़ी समझते हैं और इसी को असले ईमान [illegible] देते हैं जैसा कि बरहूती ने अपनी किताब अश्शजरा में इस का ज़िक्र किया है। मैंने जहां इस इबारत का तर्जमा किया है वहां हाशिया में इसकी शराहत [illegible] दी है। [illegible] हज़रत मुसन्निफ़ ने अपनी किताब में दो तीन मक़ामात पर हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो का ज़िक्र फ़रमाया है और वहां अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित रज़ियल्लाहो अन्हो के अल्फ़ाज़ से आप[illegible] किया है। इस से साबित है कि आप ने फ़िर्का ज़ाल्ला में सिर्फ़ उन चन्द असहाब का ज़िक्र किया है जो [illegible] को हनफ़ीया मरजीया कहते हैं और ईमान के लिए [illegible] को ज़रुरी नहीं समझते। इस बोहतान तराज़ी की असल यह है कि इस नुक़्ता को हवा देने वाले और बढ़ा चढ़ा कर पेश करने वाले वही गुमराह फ़िर्क़े हैं जिन की तादाद अब भी ख़ासी मौजूद है और जिन अक़ाइद पर हज़रत मुसन्निफ़ ने तन्क़ीस फ़रमाई है।

अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ का उर्दू में तर्जमा

इस सिलसिला में मज़ीद कुछ कहना सताइशे ख़ुद बज़बाने ख़ुद का मिसदाक़ होगा इस लिए इस बाब में सिर्फ़ इतना ही कहना काफ़ी है कि तर्जमा आप के सामने मौजूद है मुलाहिज़ा फ़रमायें और यह देखें कि ज़बान की सलासत व बयान की रवानी कहें भी क़ारी के ज़हन पर बार नहीं होगी। मैंने यह भरपूर कोशिश की है कि ज़बान का लुत्फ़ क़ायम रखते हुए हज़रत मुसन्निफ़ के अलफ़ाज़ के मानी से गुरेज़ न करुं मफ़हूम के बदलने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। और एक अहम ख़ुसूसियत यह कि मैंने इसको असल अरबी नुस्ख़ा (मतबूआ मिस्र) से तर्जमा किया किसी फ़ारसी या उर्दू के तर्जमे से इस्तिफ़ादा नहीं किया। हां यह ज़रुर है कि इस्तिख़राजे मसाइल व मबाहिस के लिए "फ़स्ल" के लफ़्ज़ को तर्क करके अहम मौज़ूआत की तबवीब की है और ज़ेली मबाहिस के लिए बग़ली सुरख़ीयां क़ायम करदी हैं ताकि हुसने मानवी के साथ साथ हुसने सौरी भी पैदा हो जाए। मत्न में जहां जहां नुसूसे क़ुरआनी और अहादीसे नब्वी या अज़कार

व अदय्या मासूरा को पेश किया गया है मैंने उनको एक कालम में पेश करके मुकाबिल में उनका तर्जमा दे दिया है ताकि क़ारी की निगाहें असल मत्न से महरुम न रहें। उम्मीद कि यह तर्जमा क़बूलीयत का शरफ़ हासिल करेगा और अरबाबे इल्म व अदब इसको ब नज़रे इस्तेहसान मुलाहिज़ा फ़रमायेंगे।

तर्जमा की तक्मेला के सिलसिला में अपने मुहिब व मुकर्रम हज़रत मौलाना मौलवी अबू बकर साहब मौलवी फ़ाज़िल (पंजाब) ख़तीब जामा मस्जिद पी आई ए एयरपोर्ट कराची का है बेहद शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने तर्जमा की मुशकिलात के हल में मेरी रहनुमाई फ़रमाई और दुश्वारीयों को दूर फ़रमाया। इसी तरह अपने मुख़लिस मौलाना मौलवी गुलाम मुहीयुद्दीन साहिब नईमी मुरादाबादी का भी ममनून हूं कि जनाब मौसूफ़ ने बड़ी ज़र्फ़ निगही से तसहीह पर तव्वजोह फ़रमाई और नुसूसे कुरआनी और अहादीसे नब्वी व अदय्या मासूरा के असल मत्न को किताबत की अग़लात से पाक फ़रमाया। अल्लाह तआला उनको जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए।

मैंने अपने अज़ीज़ दोस्त जिनसे मेरे बिरादराना रवाबित क़ाइम हैं और जो मुझ पर बे ग़ायत शफ़क़त फ़रमाते हैं यानी मुहब्बी मुहम्मद मुईनुद्दीन अहमद चिश्ती क़ादरी एडमनिस्ट्रेटीव आफ़िसर ड्. मेडिकल कालेज कराची का भी सिपास गुज़ार हूं उन्होंने इस तर्जमा की तक्मील में मेरी हिम्मत अफ़ज़ाई फ़रमाई। और हज़रत गौसुस्सक़लैन की सवानेह [illegible] का एक इब्तिदाई ख़ाका मुझे मुरत्तब करके मरहमत फ़रमाया। अल्लाह तआला मेरे इन तमाम दोस्तों को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए और हम सब की मसाई को मशकूर बनाए।

नाचीज़

शम्स सिद्दीक़ी [illegible]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नबी अख़िरुज़्ज़मां सय्यदे दौरां फ़ख़्रे आदम व आदमियां अहमदे मुजतबा मुहम्मदे मुस्तफ़ा मुहम्मद सलल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाए। कुफ़्र व ज़लालत को जमाले जहां आरा की रौशनी से मुनव्वर व मुस्तनीर फ़रमा कर फ़ज़ाए आलम को नूरे ईमान से रौशन फ़रमाया हुज़ूर की ज़ाते गिरामी को नुबूव्वत के साथ साथ बारगाहे रुबूबियत से ख़त्मुलमुर्सलीन व ख़ातिमुन्नबीईन के तुग़राए बे मिसाली अता हुए और कलामे हक़ ने अलयौ म अकमल्तो लकुम दीनुकुम व अतमम तो अलैकुम नेअ मती व रज़ैतो लकुम इस्ला म दीना फ़रमा कर दीने इस्लाम के तक्मिला पर मुहरे तस्दीक़ सब्त फ़रमा दी और ज़ाहिर फ़रमा दिया कि [illegible]ब किसी शारेअ् की ज़रुरत बाक़ी नहीं रही।

चूंकि सआदत व शक़ावत, नूर व ज़ुल्मत, ताअ्त व [illegible]स्यान इन्सानी फ़ितरत[illegible] बतौरे जबिल्लत वदीअत की गई हैं पस जब दुनियावी राहतें, और फ़ानी अ[illegible]साइशें, नफ़ूसे[illegible]ानी [illegible] अनांगीर होकर उसको रास्ती से मोड़कर ग़लत रास्तों पर डाल देती हैं [illegible]ह जबिल्लत नफ़से बशरी में हैजान पैदा करके ईमान की नूरानी और पाकीज़ा फ़[illegible]ाओं में सरफ[illegible] और फ़ि[illegible]नों में तैरगी से उनके तकददुर और ज़ुलमत के [illegible]स बन क[illegible]ब हर [illegible]रफ़ मुहीत हो [illegible]ई तो अहयाए दीने मतीन के लिए सुलहा व उफ़[illegible]व अक़्ता[illegible] अब्दाल [illegible]दा [illegible]या गया [illegible]क वह अपने पाकीज़ा अन्फ़ास व आमाल, मुजाहिद[illegible] और मुज़क्क[illegible] अशग़ाल [illegible] उन [illegible] फ़ितना सामानियों का इज़ाला करें और जब शख़्सी [illegible]बरूत औ[illegible] अफ़रादी [illegible]वत अवाम[illegible] बल्कि [illegible]वास से भी आलाए कल्मतुल हक़ की कूव्वतों को [illegible]ल्ब [illegible]रे तो यह नुफ़ूस क़ुदसिया, तमाशा [illegible]कुनद ख़लके व मन बरदारमी रक़्सम, का मिस्दाक़ ब[illegible] उस शख़्सी जबरूत व अनानियत का तिलिस्म तोड़ दें और अनानियत व इस्तिब्दाद के मिनारों को [illegible] के गुर्ज़ से पारा पारा कर दें।

मुसलमानों की तारी[illegible] जिस को आम तौर पर तारीख़े इस्लाम से ताबीर किया जाता है एक ऐसा सदाक़त नामा है जिस को कोई दूसरी क़ौम पेश नहीं कर सकी। मुसलमानों की यह तारीख़ हक़ाइक़ निगारी का एक ऐसा मरक़्क़ा है कि अक़्वामे आलम में कोई दूसरी क़ौम ऐसी दरायत और हक़ीकत का इज़्हार नहीं कर सकी। यह तारीख़ एक ऐसा मरक़्क़ा है जिस में निगाहों को ख़ीरह कर देने वाले नक़ूश भी हैं और मस्ख़ शुदा ख़ुतूत भी! मुसलमानों के अदल व इनसाफ़ के, एहसान व राफ़त और बज़्ल व करम के हैरत अंगेज़ वाक़आत भी हैं। एक तरफ़ तो हज़रत उमर की अदल गुस्तरी, रईयत परवरी के बेमिसाल कारनामे हैं, हज़रत उस्मान ग़नी और हज़रत अली मुर्तज़ा की सख़ावत व शुजाअ्त की अदीमुन नज़ीर शहादतें हैं तो दूसरी तरफ़ ख़ारजियों की फ़ितना सामानियों, मुसलमानों की बे राह रवी और दुनिया परस्ती, उनकी चीरह दस्ती और ज़ुल्म व ग़ारतगरी के अलम नाक वाक़ेआत भी हैं। वह काबा जिस के सामने मुसलमानों की जबीं हाए नयाज़ झुकती हैं और जिस का तवाफ़ हर दिले मुस्लिम की आरज़ू!इसी काबा की दीवारों को मुसलमानों ने अपनी मुनजनीक़ के पत्थरों से टुकड़े टक्ड़े कर डाला! हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर

की गिरफ़तारी के लिए हरमे काबा पर इस तरह यूरिश की गई कि गिलाफ़े काबा भी जल उठा। मदीनतुर्रसूल जिस की सर बलन्दी और अज़मत का यह आलम कि आशिक़ाने रसूल उस ज़मीने मुक़द्दस को सर के बल तय करते हैं उसको तीन शबाना रोज़ लौटने वाले शक़ीयुल क़ल्ब शामी मुसलमान थे। इस्लामी तारीख़ ने अपनी इन हौलनाकियों और तबाह कारियों को छुपाया नहीं बल्कि उन जहां फ़रसा वाक़ेआत के एक एक गोशे से नक़ाब उठाया है और बताया है कि मुसलमान पस्ती और कज रवी में किन हदों को छू लेता है।

बनू उमय्या और बनू अब्बास ने अपनी सल्तनत के इस्तेहक़ाक़ व इस्तेहकाम के लिए अरब व अजम में जिस तरह खून की नदियां बहाईं वह एक तारीख़ी हक़ीक़त है। जंगे क़ादसिया और जंगे यरमूक ने गैर मुस्लिमों के हौसलों को बिल्कुल्लिया शिकस्त दे दी थी और फिर वह कभी ईरान व रोम में इज्तेमाई तौर पर न उभर सके अलबत्ता मामूली झड़पें मुसलमानों, मजूसियों और रूमियों के माबैन अर्सा दराज़ तक जारी रहीं। यह तमाम जंगें मुसलमानों और काफ़िरों के दर्मियान हुईं लेकिन बनू उमय्या और खुसूसन बनू अब्बास का दौरे सल्तनत जो चार सौ साल से ज़्यादा की मुद्दत पर फैला हुआ है मुसलमानों [illegible] माबैन मुख़ासमत जं[illegible] व जदल, सियासी कशमकश और हुसूले इक़्तिदार के लिए खूंरेज़ी और [illegible]मन कुशी का ऐसा [illegible] है कि इराक़ व अजम में दावते अब्बासिया के सिलसिला में लाखों मुसलमानों की गर्दनें मुसलमानों ने काट कर फेंक दीं। अब्बासी सल्तनत के क़याम के बाद इस खूंरेज़ी के सैलाब में कुछ ठहराव पैदा हुआ लेकिन महदी के बाद यह सैल फिर तुंद रौ हो गया। अमीन [illegible] मामून की जंग ने पिछली तमाम कसर पूरी कर दी इस अर्सा में कई लाख मुसलमान, मुसलमानों के हाथों बे दरेग़ क़त्ल किये गये। मामून फ़[illegible] व का[illegible]नी के बाद [illegible] करो व फ़र से तख़्ते सल्तनत पर मुतमक्किन हुआ लेकिन अफ़सोस कि उसका इल्मी व अदबी दौर [illegible] ख़ं[illegible]मी से महफ़ूज़ न रह सका। आले बरबक पर जो कुछ तबाही न[illegible]ल हुई व[illegible] मामून क[illegible] [illegible]ज़िल हुई, इराक़ की शोरिश, फ़ित्ना मक्का, फ़ित्ना यमन, बग़ावत [illegible] ज़ुत, बाबक ख़रम्मी और फ़ित्ना ख़[illegible]क़ कुरआन मामून के दौर की यादगारें हैं। इल्म व अ[illegible] इस अज़ीम सरपरस्त ही की पुश्त गर्मी और पुश्त पनाही ने मशाहीरे इस्लाम की गर्दनें दबोच लीं, हज़रत इमाम अहमद हम्बल और इमाम मोहम्मद जैसे सरख़ील उल्मा और फ़कीहाने एज[illegible] [illegible]तौक़ व सलासिल पहनाये गये और उन पर जब्र व तशद्दुद रवा रखा गया।

एतज़ाल की बढ़ती हुई सैल एक तूफ़ान बन कर आगे बढ़ी और बड़े बड़े साबित क़दमों से या तो अपनी बात मनवा ली या उनके दोशबार सर से सुबुकदोश कर दिये गये। फ़ित्ना एतज़ाल ने अब्बासी ख़लीफ़ा वासिक़ बिल्लाह के दौर में कुछ दम लिया था कि फ़ित्ना बातनिया ने सर उठाया और यह बहुत जल्द एक ऐसी तहरीक बन गया कि शैख़ुल जबाल क़िल अतुल मौत में एक ऐसे एक़्तेदार का मालिक बन गया जिसके सामने बड़े बड़े सरकशों ने सर झुका दिये। उसकी जन्नती अरज़ी ने एक बार देखा है दूसरी बार देखने की हवस है, के पर्दे में वह क़यामत ढाई कि इस्लामी शमा इरान व इराक़ में टिमटिमाने लगी वह तो यह कहिये हलाकू ख़ां के हाथों उसका इस्तिसाल हो गया वर्ना बातनी और फ़िदाई किसी ग़ैर बातनी को रोके ज़मीन पर ज़िन्दा न छोड़ते उन बातनियों और फ़िदाईयों के हाथों इस्लाम के रेजालों अज़ीम, मशाहीर उल्मा व फ़ुक़्हा मारे गये। निज़ामुल मुल्क तूसी जैसा रजले अज़ीम और वज़ीर बा तदबीर भी उनकी

तहरीक का निशाना बन गया।

अगर मैं इस चार सद साला दौर की फ़ित्ना सामानियों को तफ़सील से बयान करूं तो इसके लिये सैंकड़ों सफ़हात की ज़रूरत होगी। मुख़्तसर यह है कि इस कशमकश जाह व सतवत के दौर में लाखों मुसलमान मारे गये, हज़ारों घर और क़रिये वीरान हुये, हर तरफ़ तबाही व बरबादी ही बरबादी थी। उल्मा दरबारियों की रेशादवानियों में इस तरह जकड़े हुये थे कि उनसे फ़ौज़ व फ़लाह की तवक़्क़ोआत टूट चुकी थीं। चुनांचे यही देखिये कि फ़ित्ना ख़ल्के क़ुरआन के सिलसिले में दौरे मामून में जब आज़माईश का वक़्त आया तो हुकूमत के ख़ौफ़ से ईमान व इंसाफ़ का सरे रिश्ता उनके हाथों से निकल गया और ख़लीफ़े वक़्त की हां में हां मिला कर जान बचा ली।

इस सियासी अब्तरी और इंतिन्शार ने लोगों के दिलों से सुकून व क़रार छीन लिया था। एक तवाईफ़ुल मलूकी का सा आलम था। एक ख़ौफ़ व हरास हर तरफ़ तारी था उल्माए वक़्त महर ब लब थे। इस्लाम के रिजाले अज़ीम ख़ाना नशीनी ही में अपनी आफ़ियत समझते थे उस वक़्त इस्लामी अलम उठाने वाला सिवाए सूफ़ीयाए करा[illegible] के और कोई नहीं था।

तारीख़ शाहिद है कि दूसरी सदी हिजरी से छ[illegible] सदी हिजरी तक इस [illegible]सलके तसव्वुफ़ ने अरब और अजम में जिस क़दर तरक़्क़ी की और उसका दाएरा नुफ़ू[illegible] जिस क़दर वसीअ् हुआ और जिस तादाद में नफ़ूसे क़ुद्सिया इस चार सद साला दौर में आम[illegible] मुस्लिमीन की रहबरी और तज़कीया–ए–नफ़ूस व क़ूलूब के लिए म[illegible]स–ए– [illegible] पर आए वह किसी और दौर को मयस्सर नहीं हो सके। शहरों के हंगामों और सियासी रेशादवानियों से महफ़ूज़ रहने के लिए यह हज़रात आबादियों से मुंह मोड़ कर [illegible]नियों को आबाद करते और शरीअ्ते मुहम्मदी की आबयारी में हमातन मसरुफ़ रहते। उन हज़रात के क़ौल [illegible] फ़ेअ्ल की सदाक़्त और उनका इख़लास बहुत जल्द उन वीरानों को इंसानों से म[illegible]ता। यही विराने आबदियों में बदल जाते। यहां दीन की इशाअ्त के लिए दीनी मदारिस और ज़िक्रे [illegible] के लिए ख़ानकाहें ख़ुद बख़ुद क़ाइम हो जातीं।

उन्ही वीरानों से [illegible] पाक नफ़ूस के सद्क़ा में ख़ानकाही निज़ाम का आग़ाज़ हुआ और तसव्वुफ़ के मशहूर आलिम [illegible]दे, सलासिल क़ादरिया सुहवरदीया, नक़्शबन्दीया और चिश्तिया पैदा हुए। इन सलासिल [illegible] सरख़ील और इआज़मे सूफ़याए किबार उसी दौर पान सद साला में ज़हूर में आए और तमाम आलम पर अपने ज़ुहद व इत्तक़ा, सिदक़ व सफ़ा, सब्र व क़नाअ्त और अहयाये शरीअ्त व तरीक़त के ऐसे नुक़ूश सब्त कर गए जो रहती दुनिया तक मिट नहीं सकते। इस ख़ानक़ाही निज़ाम के जो दूर रस नताएज बर आमद हुए इसका अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि इन ख़ानक़ाहों से तरबीयत पाने वाले अपने मुर्शिदे आला के हुक्म से हर उस जगह पहुंच जाते जहां मुसलमान इज्तेमाई तौर पर अब्तरी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे होते थे जहां ऐश व तने आसानी ने उनसे इस्लामी ख़साइल छीन लिए होते, गोया यह ख़ानक़ाही निज़ाम मुसलमानों की इसलाह का एक इज्तेमाई मिशन था। मुर्शिद जहां ज़रुरत महसूस फ़रमाता वहां अपने लाइक़ व फ़ाएक़ और मुतअमद मुरीद को भेज देता कि जाओ और उस ख़ित्ता के मुसलमानों की इसलाह का काम करो। यह हज़रात सैंकड़ो हज़ारों मील का सफ़र करते, सऊबाते सफ़र उठाते, और अहयाये मिल्लत व दीन की ख़ातिर बेज़ादे राह तवक्कल अलल्लाह इस मक़सद और मुर्शिद के

हुक्म की तामील के लिए निकल खड़े होते यह वहां पहुंचते। उमरा व शुयूख़े सल्तनत उनका मज़ाक़ उड़ाते और उनकी राह में हाइल होते, सियासी रेशादवानियों से उनके गिर्द दाम कसा जाता। लेकिन यह हज़रात उन तमाम ख़तरात से बे परवाह हो कर अपने मिशन की तकमील में सरापा महव हो जाते।

ईरान का दौर तवाइफुल मलूकी हो या इराक़ व अरब की खूं आशाम जंगें, सलीबी जंगें हूं या रुमियों से जिदाल व क़िताल, इस सारे पुर आशोब और बेचैनी और बे इत्मेनानी के माहौल में उस वक़्त की दीनी दर्सगाहें जो हक़ीक़त में सुलहाए ज़माना की ख़ानक़ाहें थीं, सिर्फ़ अमन व अमान का गहवारा बनीं। यहां सिद्क़ व ईक़ान का दर्स भी मिलता था और तज़कीया नफ़्स का सामान भी था। अहयाये दीन व मतीन के लिए अहकाम यहीं से सादिर होते थे।

तसव्वुफ़ या ख़ानक़ाही निज़ाम को हिजाज़ से ज्यादा फैलने फूलने का मौक़ा अजम में नसीब हुआ। अजम के मुक़ाबला में अरब उन फ़ित्ना सामानियों से निस्बतन महफ़ूज़ रहा जो शख़्सी इक़्तेदार के हुसूल के लिए पांच सौ साला दौर में दुनियाए इस्लाम में पैदा हुईं। अगरचे उमवी दौर की लाई हुई तबाही का मातम मदीना मुनव्[illegible] और मक्का मोअज्ज़[illegible] के दर व दीवार मुद्दत तक करते रहे लेकिन हिजाज में मक्का मुकर्र[illegible] और मदीना मुनव्वरा के अलावा मदनी ज़िन्दगी और इमरानी तहज़ीब के आसार दूसरे मक़ाम[illegible]त पर बहुत [illegible] मौजू[illegible] थे। अरब की जिन्दगी पर बद्दूयत छाई हुई थी हिज़रियत के निशान [illegible] ख़ाल थे य[illegible]ही वजह है कि शहरी जिन्दगी की वह गहमा गहमी यहां मफ़कूद थी ज[illegible] इराक़ व अज[illegible] का तु[illegible] इम्तियाज़ मुद्दतों तक़ बनी रही। यहीं वजह है [illegible] मुल्क गी[illegible] की त[illegible]रीकों को उ[illegible] बिलादे मुक़द्दसा और जज़ीरा नुमाए अरब में [illegible]मन के सिवा) परवान च[illegible]ने के [illegible]वाक़े बह[illegible] कम मिले और उनका रुख़ हमेशा इराक़ व अजम क[illegible] जानिब र[illegible] मुल्क गी[illegible] के लि[illegible] आशाम जंगें हुईं और जिन शोरिशों ने सर उठाया उनक[illegible] मरकज़ हमेशा अ[illegible]फ़हान व बग़दाद रहे य[illegible]बब है कि ख़ानक़ाही निज़ाम आप अरब के मुक़ाब[illegible]राक़ व अजम में ज़्यादा पायेंगे अगरचे हज़रत सलमान फ़ारसी ने बहुत से शोरिशों और इ[illegible]लाफ़ात से बचने के लिए अलग थलग एक विराने में क़याम करके उस ख़ानक़ाही निज़ाम का सं[illegible]द रख दिया था लेकिन वह किसी ऐसी तहरीक को शुरु नहीं कर सके थे जिससे ख़ानक़ाही निज़ाम के इरतिक़ा की कड़ियां मिलाई जा सकें। इसी तरह हज़रत हसन बसरी और राबे अदवीया हज़रत सलमान फ़ारसी के मुत्तबईन ज़रुर कहे जा सकते हैं लेकिन वह किसी ऐसी तहरीक के मुहर्रिक नहीं कहे जा सकते। हां यह ज़रुर है कि हज़रत सलमान फ़ारसी की तरह यह शख़्सीयतें भी दरबारी ताल्लुक़ात और सियासी सरगर्मीयों से अलग थलग रहीं।

ख़लीफ़तुर्रसूल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हो ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में अपने अद्ल व इंसाफ़ और सियासत व तदब्बुर से सिर्फ़ अरब ही में हुदूद मुल्की को वुसअत नहीं बख़्शी बल्कि उन्होंने जज़ीरा नुमाए अरब से बाहर भी एक इस्लामी सलतनत की बुनियाद डाली थी जिसको हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआ़ला अन्हो और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने बढ़ा कर उस वक़्त की सब से अज़ीमुश्शान और क़वी तरीन सलतनते इलाहिया

बना दिया था। हज़रत अली को जंगे सिफ़्फ़ीन व जंगे जुमल और फ़ित्ना ख़वारिज के सबब दाख़िली शोरिशों ही से फ़ुरसत नहीं मिली जो वह उन हुदूद को और वुसअ़त बख़्शते अलबत्ता जब यह दौलते इस्लामिया बनी उमय्या के पास और उसका उन्वान उम्वी सलतनत क़रार पाया तो उन्होंने उसके हुदूद मशरिक़ व मग़रिब में और वसीअ़ कर दिए। अगरचे उनके दौर में भी खूने मुस्लिम की अरज़ानी रही मगर हुदूदे मम्लिकत वसीअ़ से वसीअ़ तर होते चले गए। तक़रीबन सौ बरस बाद बनो उमय्या के ज़वाल ने दौलते अब्बासीया की तरह डाली तो उन्होंने उसको एक ऐसी अज़ीम सलतनत बना दिया जो सिर्फ़ एक दो ममालिक पर फैली हुई नहीं थी बल्कि अब्बासी दौलत पन्द्रह मुल्कों पर महतवी थी और हर एक क़मल रौ चन्द वलायतों या सूबों पर मबनी। ज़रा उन ममालिक और उनके तहत वलायतों या सूबों पर नज़र डालिये ताकि आप को अन्दाज़ा हो सके कि इस्लाम के सेह सद साला दौर में मुसलमानों के क़दम कहां से कहां तक पहुंच गए थे।

मम्लिकत या अक़्लीम	तादादे विलायत	विलायात तहते म[illegible]लिकत
1—जज़ीरतुल अरब	4	हिजाज़—यमन—उम[illegible]न हिज्र
2—इराक़ या बाबुल	5	कूफ़ा—बस्रा—वासित[illegible]दाइन— हलवान—सामिरा
3—जज़ीरा	3	दयारे रबीआ[illegible]रे ब[illegible]र —दयारे मिस्र
4—शाम	6	[illegible]न, हम्स, [illegible]मश्क़, उरदुन, फ़िलि[illegible]ीन, शर[illegible],
5—मिस्र		जफ़ार[illegible]ौफ़, रीफ़, इसकन्द्रीया, मक़्दूनिया, सअ[illegible]या
6— मग़रिब	6	[illegible]ा, ताहरत, सिजिलमास, नास, सूस [illegible]सा
7—मावराऊन्नह[illegible]	6	फ़रग़ाना, इस्बीजाब, शाश, अशरुसना, सुग़द, बुख़ारा
8— खुरासान	9	बल्ख़, ग़ज़नैन, लबत, सजिस्तान(सिस्तान) हरात, जूज़ जान, मरव शाहजहां, नीशापुर, कहिस्तान, (ममालिके अब्बासिया में सबसे ज़्यादा ज़रख़ेज़ व शादाब यही मुल्क था,
9— अक़्लीम व वैलम	5	क़ौस, जिरजान, तिब्रिसतान, वैलिमान, ख़िमरज़
10— माब	3	आरमीनिया, आज़र बाईजान
11— अलजिबाल	3	रै, हमदान, अस्फ़हान,
12—ख़ूज़िस्तान	7	सूस, तुस्तर (समुस्तर) जन्दिसापुर, अ़कर मुकर्रम, अहवाज़, वरदुक़, राम हरमज़
13—फ़ारस	6	अरजात, ख़रवारू शेर, दारूल जर्द, शीराज़, साबूर अस्तख़र

14—किरमान	5	बर्दसीर, सीरजान, मिरनासीर, बम, जैरफ़त
15—सिंध	4	मकरान (सदर मक़ाम पिंजौर जो आजकल पंजगोर के नाम से मशहूर है) तूरान, ख़ास सिंध (मंसूरा दारूस्सलतनत) हिन्द
कुल	78 सूबे	

इस मुजमिल फ़ेहरिस्त से आप को यह अंदाज़ा तो कम अज़ कम हो जायेगा कि इन अज़ीम 78 विलायतों या सूबों पर मुशतमिल यह अरीज़ व बसीत पंद्रह ममालिक पर फैली हुई सलतनते अब्बासिया अपनी शान व शौकत और सतवत व जबरूत के एतबार से क्या होगी। इसी शान व शौकत के साथ साथ हुसूले इक़्तेदार और जाह व सरवत की कशमकश जब परवान चढ़ी और अहदे अब्बासिया के पांच दौरों में ख़ूने मुस्लिम की जो अरज़ानी हुई इसकी तफ़सील आज भी जब बयान की जाती है तो हमारे सर शर्म स झुक जाते हैं।

हुकूमते अब्बासिया (जिसको इस्लामी तारीख़ में ख़िलाफ़ते अब्बासिया कहा जाता है) का आग़ाज़ 13 रबीउल अव्वल 132 हि० से हुआ। उस दिन अब्बासी ख़लीफ़ा सफ़्फ़ाह के हाथ पर बैत हुई और उस हुकूमत का एख़्तेमाम 4 सफ़र 656 हि० को आख़िरी ख़लीफ़ा मुतअ़स्सिम बिल्लाह के क़त्ल पर हुआ। इस तरह अब्बासी सलतनत 524 साल क़ायम रही और इस में 37 ख़लीफ़ा हुये।

दौलते अब्बासी के एक़्तेदार और बेमिसाल शान व शौकत का दौर, उसका पहला दौर है जो सफ़्फ़ाह, मंसूर, महदी, हादी, हारून रशीद, मामून। मुतअ़स्सिम बिल्लाह और वासिक़ बिल्लाह की पुर सतवत व जबरूत सलतनतों पर मुश्तमिल हैं यह दौर 132 हि० से होकर 232 हि० पर ख़त्म हुआ। एक तरफ़ तो यह दौर अब्बासी हुकूमत की शान व शौकत और उनकी बेमिसाल अज़मत व जलाल का ताबनाक मुरक़्क़अ है तो दूसरी तरफ़ [illegible] जदल, क़त्ल व ग़ारत गिरी, ख़ूंरेज़ी और सफ़्फ़ाकी में भी आप अपना जवाब है। मुंदर्जा बाला अक़ालीम और ममलिकतों का क़याम ज़ाहिर है कि अमन व अमान के पुर सुकून माहौल में तो हुआ नहीं होगा, बहुत सी तहरीकें उस सद साला दौर में उठीं। बहुत से दाईयाने हुकूमत पैदा हुये। बहुत से तालेअ़ आज़मा तलवार ले कर मक़ाबिल में आये, चंद सरदारों और अमीरों ने बग़ावत पर कमर बांधी, अपनी हुकूमतों के क़याम के लिये सर तोड़ कर कोशिशें कीं, मुसलमानों की तलवारों ने मुसलमानों का बेदरेग़ लहू बहाया। अब्बासियों ने अपनी दावत की तकमील और सलतनत के इस्तहकाम के लिये लाखों मुसलमानों को तहे तेग़ किया तब कहीं वह इस क़दर वसीअ़ ममलिकत को क़ायम कर सके।

जैसा कि मैं ऊपर ज़िक्र कर चुका हूं कि दूसरी सदी हिजरी से लेकर छटी सदी हिजरी तक पान सद साला दौर जिस तरह ख़ून आशामियों और ख़ाना जंगियों का दौर है उसी तरह यह दौर तसव्वुफ़ की अज़मत और सर बलन्दी का ज़माना भी है। दौलते अब्बासिया की वह विलायात जिन का ज़िक्र एख़्तेसार के साथ किया जा चुका है हज़ारों सूफ़ियाए किराम का मोलिद व मंशा बनी रहीं। और अरबाबे तसव्वुफ़ के मशहूर ख़ानवादे और सलासिल इस पान सद साला दौर में परवान चढ़े। वह दिल जिन में ख़ौफ़े ख़ुदा, ख़ल्क़े ख़ुदा से मोहब्बत और अहकामे इलाही की बजा आवरी का जज़्बा ज़िन्दा होता और जो अलशफ़क़तो अला ख़ल्क़िल्लाह वत्ताअति ले अमरिल्लाह को

इस्लाम, दीन, अद्ल, इंसाफ़, दयानत, सदाक़त और मारफ़ते हक़ का ज़रीआ समझते थे वह शहरों की उस पुर आशोब ज़िन्दगी से कनाराकश होकर वीरानों को आबाद करते, ज़िक्रे हक़ की महफ़िलों को आरास्ता करते और दिलों को नूरे मारफ़त से चमकाते।

इसी सलतनते अब्बासिया का चौथा दौर है। और इन्हेतात के बाद हुकूमत ने कुछ संभाला लिया है बनू बवय्या के बाद आले सलजूक़ की हुकूमत क़ायम हो चुकी है लेकिन उन्होंने बग़दाद की मरकज़ियत कर ख़त्म करके रै को अपना मर्कज़ और मुस्तक़र ख़िलाफ़त बना लिया है। आले सलजूक़ ने आले बवय्या के बर ख़िलाफ़ अब्बासी ख़लीफ़ा का एहतराम बहाल कर दिया है। ख़लीफ़ा मुस्तज़हर बिल्लाह, मुक़तदी बिल्लाह यानी अबूल क़ासिम अब्दुल्लाह बिन ज़ख़ीरा बिन अबुल अब्बास बिन क़ायम बे अमरिल्लाह अब्बासी तख़्त पर मुतमक्किन है (ख़िलाफ़त 5 मोहर्रम 487 हि० से 16 रबीउल अव्वल 512 हि०)। यह वह वक़्त है कि सुलतान संजर मलिक शाह इस अहद का सुलतान है। हज़रत हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली मुल्क के इंतेशार और अहालियाने मुल्क की बे राह रवी और बद आमालियों से बद दिल होकर दर्स व तदरीस का सिलसिला बंद करके बग़दाद से मुल्क शाम की तरफ़ रवाना हो चुके हैं। हसन बिन सबाह की तलवार को ख़ून का चसका पड़ चुका है। अकाबरीने उम्मत बग़दाद छोड़ रहे हैं। सबाही और बातनी अक़ाएद के ख़िलाफ़ ज़बान खोलना मौत को दावत देने के मुतरादिफ़ है। उंदलुस में ख़ाना जंगियां हो रही हैं। अफ़्रीक़ा में मोवहहिदीन और मुराबतीन बरसरे पैकार [illegible] पर करामता क़ाबिज़ हो चुके हैं, सलीबी जंगें शुरू हो चुकी हैं, ईरान बहुत सी रियासतों में तक़सीम हो चुका है, मश्रिक़ में मावराउन नहर, ख़ुरासान और पंजाब में ग़ज़नवी ख़ानदान का सुलतान इब्राहीम हुक्मरानी कर रहा है। दाता गंज बख़्श हज़रत उस्मान अली हिजवेरी लाहौरी इरशाद की मसनद से रह गुज़र आलम बाक़ी हो चुके हैं। हर तरफ़ एक अफ़रा तफ़री का आलम है गहवारा इल्म व मज़हब यानी बग़दाद मासियत में मुब्तला है कि एक अठारह साला नौजवान सालेह 488 हि० में गीलान के क़स्बा नीफ़ से इल्म की तिश्नगी बुझाने के लिये आज़िमे बग़दाद होते हैं।

गीलान के महले वक़ूअ के सिलसिला में अगरचे मोअर्रिख़ीन में काफ़ी एख़्तेलाफ़ पाया जाता है और बाज़ हज़रात ने अजीब अजीब मोशगाफ़िया इस सिलसिला में की हैं लेकिन हमारे मशहूर मोअर्रेख़ीन मसऊदी और जरीर तबरी का बयान इस सिलसिला में बहुत ज़्यादा वक़ीअ् है। उनका बयान है कि गीलान जिसे अरब जीलान कहते हैं ईरान क़दीम का एक सूबा था जो अक़्लीमे वैलम के तवाबेअ में था इसके शुमाल में बहीरए कैस्पीयन, जुनूब में सिलसिला कोहे अलबर्ज़ और मश्रिक़ में माज़न्दरान था। उस अहद का जदीद इस्लाहात के बाद गीलान एक आज़ाद मम्लिकत बन गया था और उसका दारुस सलतनत रश्त था। आज भी रश्त शुमाली ईरान का एक मशहूर शहर है लेकिन गीलान को सूबा कहना सही नहीं। गीलान विलायते तिब्रिस्तान का एक मशहूर शहर था और तिब्रिस्तान अक़्लीम वैलम का एक सूबा था।

शहरे गीलान के मशहूर ताबेअ्, तवालिमश, गिरगान रिदद, लाहीजान, रूद सर और राहता बाद हैं। गीलान की यह आज़ादी और ख़ुद मुख़्तारी दौरे सफ़वीया में ख़त्म हो गई और अब्बासे अव्वल (सफ़वी) ने उस को ईरान में शामिल कर लिया। 1813ई० के ईरान रुस मुआहिदा के मुताबिक़ उसका बहुत सा इलाक़ा रुसी हुदूद में शामिल कर लिया गया और आज ईरान जदीद

में इस नाम का कोई सूबा या कोई विलायत नहीं अलबत्ता लाहीजान और रश्त मौजूद हैं।

इसी गीलान के क़स्बा नीफ़ में एक ख़ुदा परस्त वली कामिल हज़रत अबूसालेह मूसा (जंगी दोस्त) आबाद थे। हज़रत अबू सालेह मूसा की दियानत और तक़वा, उनका ज़ुहद और इत्तेक़ा उस मन्ज़िल पर था कि आलमे शबाब ही में यह ख़शीयते इलाही और इस्मत व इफ़्फ़त की उन मन्ज़िलों पर पहुंच गए थे जहां इंसान अगर तौफ़ीक़े इलाही शामिले हाल हो तो मुद्दतों की रियाज़तों के बाद पहुंचा करता है। हज़रत मूसा जंगी दोस्त का आलमे शबाब था। एक रोज़ सख़्त गरसंगी के आलम में एक सेब जो नदी में बहता हुआ आ रहा था निकाल कर खा लिया। लेकिन खाने के बाद मअन ख़्याल आया कि बाग़ के मालिक से इजाज़त लिए बग़ैर मुझे सेब खाने का हक़ नहीं था और न वह मेरे लिए हलाल था। सख़्त पशेमान हुए और आख़िर कार बाग़ के मालिक के तलाश में नदी के कनारे कनारे उस जानिब चल खड़े हुए जिधर से सेब बहता हुआ आया था। दूर दराज़ की मुसाफ़त क़तअ् करने के बाद आख़िरकार एक ऐसे बाग़ के क़रीब पहुंचे जिस के सेब के दरख़्तों की शाख़ें पानी में लटक रही थीं। आप को यक़ीन [illegible] गया कि यही वह बाग़ है जिसका बहता हुआ सेब मैंने खाया है। लोग[illegible] दरयाफ़्त किया कि [illegible] बाग़ का मालिक कौन है। लोगों ने बताया कि हज़रत अब्दुल्लाह सौम[illegible] इस बाग़ के मालि[illegible] हैं और उन का सौमआ इस बाग़ के अन्दर है आप बाग़ के अन्दर पहुंच [illegible]र हज़रत अ[illegible]ाह स[illegible]मई की ख़िदमत में पहुंचे और अपने आने की गर्ज़ व ग़ायत बयान की ह[illegible] अब्दुल्लाह [illegible]मई इस नौजवान के ज़ुहद इत्तक़ा को देखकर हैरान रह गए कि अ[illegible]लाह अल्ला[illegible] [illegible]क सेब [illegible]र इसकी इजाज़त के लिए इस क़दर दूर दराज़ कठिन मंज़ि[illegible] का स[illegible]र। हज़रत मू[illegible]ा जंग[illegible] दोस्त जब तालिबे माफ़ी हुए तो हज़रत [illegible]ब्दुल्लाह[illegible]मई ने आ[illegible]ा हस[illegible] नसब दर[illegible]फ़्त किया और कुछ देर ख़ामोश रहकर कुछ ग़ौर[illegible] तअम्मुल किया उसके [illegible]ाद फ़[illegible] [illegible]जवान मैं तुम को उस वक़्त तक माफ़ नहीं करुंगा [illegible]ब तक [illegible] मेरी एक [illegible]ाहिश पूर[illegible] दो। [illegible]सा जंगी दोस्त ने अर्ज़ किया कि मैं हुसूले माफ़ी [illegible] लि[illegible] आप की हर ख़्वाहिश ब सर व चश्[illegible]बजा लाने के लिए तैयार हूं। हज़रत अब्दुल्लाह सौ[illegible] फ़रमाया कि तुम मेरी बेटी उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा को अपनी ज़ौजियत में क़बूल कर लो, लेकिन यह [illegible]झ लो कि वह गूंगी, बहरी, लूली, लंगड़ी और अन्धी है, बोलो क्या तुम्हें मन्जूर है।

हज़रत मूसा जंगी दोस्त कुछ देर तो ख़ामोश रहे लेकिन फिर ख़्याल आया कि माफ़ी इस शर्त को क़बूल किए बग़ैर मिल नहीं सकती और जो कुछ सऊबात अब तक उठाईं हैं वह इस माफ़ी के लिए। दिल का तक़्वा फ़ौरन कह उठा कि अब्दुल्लाह सौमई की शर्त क़बूल करलो। हज़रत मूसा जंगी दोस्त ने अर्ज़ किया कि हज़रत वाला अगर ख़ता की माफ़ी इस शर्त की तहसील पर मब्नी व मुन्हसिर है तो मुझे यह रिश्ता मन्ज़ूर है। हज़रत शैख़ ने फ़ौरन ख़ानक़ाहे आलिया में एलान करा दिया और जब शादी का सामान ठीक हो गया तो हज़रत शैख़ ने खुद ख़ुत्बा निकाह पढ़ाया और उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा को उस नौजवान की ज़ौजियत में दे दिया। जब मूसा ज़ंगी दोस्त हुजलए उरुसी में पहुंचे तो वहां एक पैकर हुस्न व जमाल को देख कर तौबा इस्तिग़फ़ार करते हुए फ़ौरन पलट पड़े और हज़रत अब्दुल्लाह सौमई की ख़िदमत में पहुंच कर अर्ज़ किया क हज़रत आपने मेरा अक़्द एक अंधी, लूली लंगड़ी अपाहीज दोशीज़ा से किया था

लेकिन हुजलए उरूसी में तो कोई ना महरम मौजूद है जो इन तमाम ओयूब से मुबर्रा है जिनको आपने उम्मुल ख़ैर से मुत्तसिफ़ फ़रमाया था। हज़रत अब्दुल्लाह सौमई ने फ़रमाया कि अज़ीज़म हुजलए उरूसी में जो दोशीज़ा मौजूद है वही उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा तुम्हारी ज़ौजा है मैंने उसको अंधी इस एतबार से कहा था कि आज तक उसकी नज़र ना महरम पर नहीं पड़ी। बहरी इस लिहाज से कि आज तक कोई बुरी बात उसने नहीं सुनी, गूंगी इस एतबार से कहा कि उसने झूट नहीं बोला न किसी की ग़ीबत की, लुंजी इस वजह से कहा कि कभी इसने अपने हाथों से ऐसा काम नहीं किया जो शरीअत के ख़िलाफ़ हो, लंगड़ी यूं कहा कि उसने अल्लाह की राह के सिवा किसी और रास्ता पर आज तक क़दम नहीं रखा। अल्लाह अल्लाह हज़रत मूसा जंगी दोस्त की खुश बख़्ती कि ऐसी सालिहा और वलिया ख़ातून के अक़्द में आयीं। हज़रत मूसा जंगी दोस्त शादी के बाद कुछ अर्सा तो हज़रत अब्दुल्लाह सौमई की ख़ानक़ाह में मुक़ीम रहे फिर अपनी सालिहा और आबिदा बीवी को लेकर नीफ़ वापस चले आये।

इन्ही फ़रिश्ता ख़िसाल साहबे तक़वा व तहा[illegible]त ज़ौजैन के यहां 47[illegible] हि० में एक फ़र्ज़न्द तवल्लुद हुये, जिनका नामे नामी अब्दुल क़ादिर [illegible] गया और अहया–ए[illegible] मिल्लत व दीन के बाइस मोहीयुद्दीन के लक़ब से सर बलन्द हुये। जब ऐ[illegible] पाकीज़ा ख़ि[illegible]ल, त[illegible]वा व परहेज़गारी की दिलदादा मां हों और ऐसा ज़ुहद व इत्तक़ा रखने [illegible]ला बाप तो [illegible]र है [illegible]के फ़र्ज़न्द किन सिफ़ाते बलन्द को लेकर दुनिया में आया होगा।

आप के वालिदे माजिद के इस्मे गरामी के सिलसिला म[illegible]ी मोअर्र[illegible]न में क़दरे इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। मशहूर मो[illegible]र्रिख़ और [illegible]त नि[illegible]ार अज़्ज़हबी [illegible]बू सालेह अब्दुल्लाह जंगी दोस्त बताते हैं। मग़[illegible]ी मोअर्रख़[illegible]न जैसे बस्[illegible]मान [illegible]ली बिन म[illegible] बिन जंगी दोस्त बताता है। मार गोलिथ की तह[illegible]क़ीक़ के मुताबिक़ इब्न ज[illegible]गी दो[illegible] [illegible]यादा सही है। इस सिलसिला में आपके सिलसिला के नामव[illegible] फ़रज़न्द [illegible] आप की [illegible]की अ[illegible]वीं पुस्त में हैं यानी सय्यद ताहिर अलाउद्दीन [illegible]बे [illegible]ज्जादा क़ादरिया व नक़ीब ज़ादा ने जो सवानेह हयात हज़रत की मुरत्तब की है इस में ह[illegible] पीराने पीर के वालिद माजिद का इस्मे गरामी अबी सालेह मूसा जंगी दोस्त लिखा है और यही ज्य[illegible] सही है।

हज़रत उम्मुल ख़ैर [illegible]मा के यहां यह विलादत अयास यानी साठ बरस की उम्र में हुई थी, रमज़ानुल मुबारक का महीना था, और 477 हि० पाक गोदों में एक पाक बातिन और पाक तीनत बच्चा ने परवान चढ़ना शुरू किया और उन रूहानी कमालात से ग़ैर शऊरी तौर पर बहरावर होता चला गया जो वालिदैन में कुदरत ने वदीअत फ़रमाये थे, लेकिन उस अज़ीम फ़र्ज़न्द ने अभी ज़िन्दगी की चंद मंज़िलें ही तय की थीं कि ज़ुहद व इत्तक़ा के रजले अज़ीम यानी हज़रत मूसा जंगी दोस्त का इंतक़ाल हो गया और उस सालेह यतीम फ़र्ज़न्द की तालीम व तरबीयत का तमाम बोझ आबिदा सालिहा ज़ईफ़ा ख़ातून उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा के कंधों पर आ पड़ा। बग़दाद उस दौर में तालीम का मर्कज़ था मदरसा निज़ामिया बग़दाद का चार दांगे आलम में शोहरा था। मदरसा अहनाफ़ भी इसी तरह से मशहूर था।

488 हि० में जब कि उस फ़र्ज़न्द ने उम्र की अठारहवीं मंज़िल में क़दम रखा तो एक रोज़ यह वालिदा मोहतरमा से सफ़र की इजाज़त के तालिब हुये। सालिहा और आबिदा मां ने होनहार

बेटे के इश्तियाक़ को देखते हुये बग़दाद जाने की इजाज़त मरहमत फ़रमा दी। हर चंद कि उस ज़माना में जब कि हर तरफ़ अफ़रा तफ़री फैली हुई थी मुल्की नज़्म व नस्क़ दरहम व बरहम था। तिब्रिस्तान से बग़दाद तक सैंकड़ों कोस की मुसाफ़त थी। रास्ते पुर ख़तर थे किसी कारवां का सलामती के साथ अपनी मंज़िल पर पहुंच जाना एक बड़ी बात समझी जाती थी हज़रत उम्मुल ख़ैर ने तहसीले उलूम के लिये बा दीदा–ए–अश्कबार बेटे को गले से लगा कर रूख़सत किया। बग़दाद में मुस्तनसर बिल्लाह सरीर आराये सलतनत है, ईरान में सलजूक़ी सलतनत की वह आन बान बाक़ी नहीं जो मलिक शाह और निज़ामुल मुल्क के दम से थी। 485 हि० में निज़ामुल मुल्क एक बातनी (फ़िदाई) के हाथ से शहीद हो गये और उनकी शहादत के बीस बाईस दिन के बाद ही सलतनत सलजूक़िया का नुमाइन्दा सोज़िह (मलिक शाह) भी ग़ुरूब हो गया। तख़्ते सलजूक़ के लिये मलिक शाह के फ़र्ज़न्द आपस में उलझ रहे थे। वली अहद सलतनत चूंकि नामज़द नहीं हुआ था लिहाज़ा तरकान ख़ातून की ख़्वाहिश है कि उसका बेटा महमूद बाप का जानशीन हो जो सुलतान का सबसे छोटा बेटा है, और हक़ है बरकियारूक़ का। शाहज़ादा मोहम्मद और शाहज़ादा संजर भी तख़्त के दावेदार हैं लेकिन निज़ामुल मुल्क ने बरकियारूक़ की वली अहदी सुलतान से मंज़ूर करा ली थी लिहाज़ा निज़ामुल मुल्क के उमरा की मदद से सुलतान बरकियारूक़ तख़्ते सलतनत पर रौनक़ अफ़रोज़ हुआ लेकिन मुल्क में अमन व अमान क़ायम न हो सका।

उस वक़्त उन ममालिक में कैफ़ियत यह थी कि रै, [illegible] तिब्रिस्तान, ख़ूज़िस्तान, फ़ारस, दयारे बकर और हरमैन शरीफ़ैन में बरकियारूक़ के नाम का ख़ुत्बा पढ़ा जा रहा था और आज़र बाईजान, आरान, आरमीनिया, अस्फ़हान और इराक़ में सुलतान मोहम्मद बिन मलिक शाह सलजूक़ी का, संजर बिन मलिक शाह ने ममालिके शरक़िया यानी जिरजान से मावराउन नहर तक अपने नाम का ख़ुत्बा शुरू कर दिया था। फिरंगी मुल्के शाम पर और बैतुल मुक़द्दस पर क़ब्ज़ा करने के लिये हमला आवर हो चुके थे।

इस मुख़्तसर से मुल्की हालात से आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि ममालिके इस्लामिया में कैसी ख़ाना जंगी छिड़ी हुई थी। दिलों से सुकून रूख़सत था न शहरों में अमन व अमान था न क़रियों में। कारवां की गुज़र गाहें पुर ख़तर थीं अहले क़ाफ़िला महफ़ूज़ व मामून न थे मंज़िल पर पहुंचने से पहले ही लुट जाते थे चुनांचे यह क़ाफ़िला भी जिसमें इल्म व कमाल के जोया फ़र्ज़न्द सईद, वली मादर ज़ाद हज़रत अब्दुल क़ादिर अल मुलक़्क़ब बेह मोहीयुद्दीन शरीक थे। नीफ़ से बग़दाद को रवाना हुआ लेकिन चंद मंज़िल तय कर पाया था कि डाकूओं ने घेर लिया लेकिन हज़रत अब्दुल क़ादिर के सिदक़ व सफ़ा ने अहले क़ाफ़िला को तबाही से महफ़ूज़ रखा, और हमला आवरों ने दुज़दी और रहज़नी से उस नौ उम्र सालेह जवान के हाथ पर तौबा की।

आख़िरकार क़तअ् मनाज़िल करते हुए कई माह की मुद्दत के बाद हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर बग़दाद पहुंचे। जैसा कि इससे क़ब्ल अर्ज किया जा चुका है उस वक़्त ख़लीफ़ा मुस्तनसर बिल्लाह बिन अबूलक़ासिम बिल्लाह बिन ज़ग़ीरा अबूल अब्बास इब्न क़ाइम बेअमरिल्लाह के तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ था। लेकिन आले बोविया के इक़्तेदार ने बग़दाद की इल्मी व अज़मत को गहन लगा दिया था। फिस्क़ व फुजूर और मासियत का दौर दौरा था। चन्द पाकीज़ा

नुफ़ूस उस शहर में ज़रूर मौजूद थे लेकिन उनका हलका असर महदूद था कुछ अल्लाह वाले भी थे और वह वअ्ज़ व नसीहत से गो दिलों को गरमाना चाहते थे लेकिन उनकी मजलिसें सूनी पड़ी थीं कोई उनके वअ्ज़ व नसीहत की तरफ़ कान धरने वाला न था। हर चन्द ख़लीफ़ा मुस्तन्सर बिल्लाह खुद एक मर्दे सालेह करीम और ख़लीक़, नेक मिज़ाज, सख़ी और पाबन्दे शरीअत ख़लीफ़ा था और उलमा व फ़ुज़ला और फ़ुक़रा और सुलहा से मोहब्बत करने वाला। लेकिन रइय्यत का मिज़ाज तन्इम व ऐश परस्ती ने इतना बिगाड़ दिया था कि मासियत व सियाह कारी बग़दाद का मुक़द्दर बन चुकी थी बातिनी शोरिश ऊरुज पर थी और सलीबी जंग की बिना पड़ चुकी थी।

तहसीले इल्म व फ़नः

हज़रत महीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी कमाले इल्मी के हुसूल के लिए जब मर्कज़े उलूम व फ़नून और गहवारए तहज़ीबे इस्लामीया यानी बग़दाद में वारिद हुए तो आप सबसे पहले हज़रत शैख़ हम्माद बिन मुस्लिम दब्बास की ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त तमाम बग़दाद ही नहीं बल्कि अतराफ़ व अक्नाफ़ में भी हज़रत हम्माद दब्बास की इरफ़ान शनासी का शहरा था। हज़रत हम्माद दब्बास की मजलिस जो ज़्यादा तर उनकी दुकान पर क़ाइम होती थी तालिबान का मरजअ् थी। उस वक़्त के सूफ़ियाए किराम और असरार व हक़ीकत के जोया उस दुकान पर जमा होते थे जहां बज़ाहिर तो "राब" फ़रोख़्त होती थी लेकिन ब बातिन दिलों की मारफ़त की शीरीनी और हलावत से आसूदा किया जाता था। शैख़ दब्बास ने इस शहबाज़ तरीक़त को हाथों हाथ लिया और पज़ीराई में कोई दक़ीक़ा फ़ुरू गुज़ाश्त नहीं फ़रमाया।

हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ने शैख़ तरीक़त की तहरीक और खुद तक्मीले उलूमे शरीआ के जज़्बा की सर शारी से मनाज़िले सुलूक तय करने से पहले यह मुनासिब ख़्याल फ़रमाया कि उलूमे दीनिया और उलूमे मुतादाविला की तक्मील कर ली जाए चुनाचे आप क़ाज़ी अबू सईद अलमुबारक अल मख़्ज़ूमी की ख़िदमत में पहुचें। क़ाज़ी अबू सईद का शुमार अकाबिर फ़ुक़्हए अस्र में होता था उन्होंने मदरसा बाबुल अज़ज के नाम से एक दर्सगाह क़ाइम कर रखी थी जहां उलमाए मुतबहहरीन दर्स की मसनदों पर मुस्मक्किन थे। चुनांचे आप ने उस मदरसा में हज़रत अबू ज़करिया तबरेज़ी से अदब की तकमील फ़रमाई हज़रत अबू ज़करिया अदबियात में मुन्फ़रिद मक़ाम रखते थे। मुतअद्दिद किताबों के मुसन्फ़ि और उस वक़्त के शोहरए आफ़ाक़ अदीब थे। अदबीयात की तहसील के साथ साथ आपने इल्मे हदीस की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और उस वक़्त के मशाहीर मुहद्देसीन जैसे अबूल ग़नाएम मोहम्मद बिन अली मैमून अल ख़रासी, अबूल बरकात तल्हा अल आक़ूली, अबू उसमान इस्माईल बिन मुहम्मद अस्बहानी, अबू ताहिर मोहम्मद अब्दुर्रहमान इब्न अहमद, अबूल मन्सूर अब्दुर्रहमान, अबू नसर मोहम्मद बिन मुख़तार हाशमी।

फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह में आप ने शैख़ अबूल ख़त्ताब महफ़ूज़ अल कूलुज़ानी, अबूल वफ़ा अली बिन अक़ील हम्बली, अबूल हसन मोहम्मद बिन क़ाज़ी अबू याला, मोहम्मद बिन अल हुसैन बिन मोहम्मद सिराज, क़ाज़ी अबूल सईद अल मुबारक मख़ज़ूमी बानी मदरसा बाबुल अज़ज से इस्तिफ़ादा फ़रमाया। आप अपनी तसनीफ़ अलगुन्यितुत्तालीब अत्तरीक़ुल हक़" में अकसर व बेशतर सनदे रिवायत में काला शैख़ना मुबारक और काला हिबतुल्लाह बिन मुबारक का ज़िक्र

फ़रमाते हैं। इस से ज़ाहिर होता है आप हदीस व फ़िक़्हा में इन दोनों हज़रात से काफ़ी मुतास्सिर थे और उन को सनद तसलीम करते थे।

हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी के असात्ज़ा कराम में अक्सरीयत ऐसे उलमा की थी जिनका फ़िक़्ही मस्लक हंबली था। शायद यही सबब है कि आप भी इस मज़हब से मुतास्सिर हुए और आप ने भी इस को इख़्तेयार किया। हदीस शरीफ़ पर आप की ज़र्फ़ निगाही और दिक़्क़ते नज़र का यह आलम था कि आपके असातज़ा किराम सनद देते वक़्त फ़रमाया करते थे।

ऐ अब्दुल क़ादिर हम तो अल्फ़ाज़े हदीस की सनद दे रहे हैं वरना हदीस के मानी में तो हम तुम से इस्तेफ़ादा करते हैं क्योंकि बाज़ अहादीस के मतालिब जो तुम ने बयान किए हैं उन तक हमारी फ़हम की रसाई नहीं थी।

दर्स व तदरीस से फ़राग़त के बाद आप अपने दिली जोश के बाइस मुद्दतों तक इराक़ के वीरानों और ख़राबात की तरफ़ निकल जाते और कई कई रोज़ तक बस्ती का मुंह न देखते लेकिन कुदरत को आप से एक अज़ीमुश्शान दीनी ख़िदमत लेनी थी इसलिए आप ने अपने उस्तादे गिरामी क़ाज़ी अबू सईदु अल मुबारक अलम[illegible]मी के इरशाद के बमूजिब मदरसा बाबूल अज़ज में ख़िदमते तदरीस अपने ज़िम्मा ले ली। आप[illegible] जब मदरसा में दर्स शुरू फ़रमाया तो तलबा की तादाद कुछ ज़्यादा न थी लेकिन आपके त[illegible]हुरे इल्मी [illegible] शोहरा इस क़दर जल्द बग़दाद और मुज़ाफ़ाते बग़दाद में पहुंचा कि दूर दराज़ [illegible]त के तलबा जूक़ दर जूक़ आपके दर्स में शरीक होने लगे और मदरसा बाबुल अज़ज की वुसअत उन तालिबाने शौक़ की गुंजाइश के लिए कम हो गई और [illegible]लत हो गई कि जिन तलबा को मदरसा में जगह न मिलती थी वह मदरसा के मुत्तसिल बाज़ा[illegible] और चौक[illegible]ठकर आप की [illegible] तक़ारीर से इस्तेफ़ादा करते जो दौराने दर्स आप फ़रमाया करते।

इस हालत से मुतास्सिर [illegible]कर बग़[illegible] के अरबा[illegible] ने म[illegible]सा की वुसअत में ज़रे कसीर सर्फ़ किया यहां तक कि [illegible] नेक बन्दे बग़ैर उजरत रात दिन [illegible]मीर में लगे रहते और थोड़ी सी मुद्दत में मदरसा [illegible]सअत दे दी गई। 528 हि॰ में मदरसा की वुसअत का काम अन्जाम पहुंच गया और एक मोहत्तम [illegible]न इमारत तैयार हो गई उस वक़्त यह मदरसा बाबुल अज़ज के बजाए मदरसा क़ादरी[illegible] के नाम से मौसूम होकर अक्नाफ़े आलम में मशहूर हुआ।

दर्स व तदरीसः

मदरसा में आप एक सबक़ तफ़्सीर का, एक हदीस (शरीफ़) का, एक फ़िक़्ह का और एक इख़्तेलाफ़ अइम्मा अरबा और उनके दलाइल का आप ख़ुद देते थे। यूं सुबह व शाम तफ़्सीर व हदीस, फ़िक़्ह उसूले फ़िक़्ह और नहव के अस्बाक़ होते थे। नहव के बाद ज़ोहर और अस्र के दर्मियान इल्मे तजवीद की तालीम होती थी। फ़तवा नवेसी का शोअ्बा इसके अलावा था, और मवाइज़े हस्ना की मजालिस इसके सिवा।

मोएज़त व तल्क़ीनः

521हि॰ में हज़रत ने पहली तक़रीर फ़रमाई। इब्तिदा में सामईन की तादाद बहुत कम थी लेकिन आप की पहली तक़रीर ने बग़दाद में तहलका मचा दिया। फिर तो इंसानों का एक दरिया उमड़ आया। हर वाज़ में इस क़दर हुजूम होने लगा कि बाब अश्शामिया की जामा मस्जिद

हाज़रीन के लिए तंग हो गई। यह देख कर आप ईदगाह बग़दाद के वसीअ् व अरीज़ मैदान को अपने मवाएज़ के लिए पसन्द फ़रमाया, और फिर आप अर्सा तक उसी मक़ाम पर वाज़ फ़रमाते रहे। बग़दादियों ने आप की ख़िताबत और मोएज़त से मुतास्सिर हो कर बग़दाद के बाहर एक तवील व अरीज़ रिबात तामीर कराई और यह सिलसिला इस क़दर वसीअ् होता चला गया कि मदरसा बाबुल अज़ज की तामीरात इस रिबात की तामीरात से मुत्तसिल व मुलहिक़ होकर एक आली शान वसीअ् व अरीज़ ज़ाविया या ख़ानक़ाह की शक्ल में नज़र आने लगीं हज़रत यहां दस्तूर के मुताबिक़ जुमा, यक शंबा और दो शंबा को दावत रूश्द व हिदायत फ़रमाया करते थे।

अरबी ज़बान पर उबूर पाना:

हज़रत की मादरी ज़बान फ़ारसी थी और बग़दाद अरबी अदब का गहवारा और फ़ुस्हाए अरब का मल्जा व मावा। पस ज़रुरत थी कि आप अरबी ज़बान में वाज़ फ़रमायें इस लिए बावुजूद कि आप उलूमे दीनिया व अदबीया पर उबूर कामिल हासिल कर चुके थे और हदीस शरीफ़ के मअ्नी में ऐसे ऐसे निकात बयान फ़रमाते थे कि आप के [illegible]सातज़ा भी उसके मो[illegible]रिफ़ थे लेकिन बईं हमा कमाले तक़रीर की हिम्मत आप अपने आप में [illegible] पाते थे चुनाचे हज़रत [illegible]ुद फ़रमाते हैं कि

"521हि॰ में 16 शव्वाल सह शंबा के रोज़ मैं हुज़ूर अकरम सल्ल[illegible]ाहो अ[illegible]ैहि वसल्लम के दीदार से आलमे रुया में मुशर्रफ़ हुआ। मैंने देखा कि हुज़ूर मुझे वाज़ [illegible]ने की हिदायत फ़रमा रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं अजमी हूं बग़दाद [illegible]स्हा के सामने ज़बान खोलते हुए डरता हूं। मैं उन हज़रात के सामने क्यों कर [illegible]लाम करुं। ऐसा न हो कि बग़दाद के फ़सीह व बलीग़ हज़रात मुझ पर [illegible]ना ज़न [illegible] कि "[illegible]लादे नबी हो[illegible] के बावुजूद अरबी से ना बलद है, और फिर भी वाज़ व पिन्द में सरगर्म [illegible]।"

मेरी इस गुज़ारिश पर हु[illegible]र सल्लल्[illegible]ो अलैहि [illegible] ने सात मर्तबा कुछ पढ़कर मेरे मुंह पर दम फ़रमाया अ[illegible] वाज़ [illegible]ा हुक्म दिया। दूसरे रोज़ मैं बादे [illegible]ज़े ज़ुहर वाज़ कहने के इरादे से मिम्बर पर बैठा अ[illegible]ता रहा कि क्या कहूं। मेरे इर्द गिर्द ख़िलक़त का हुजूम था और हर एक मेरा वाज़ सुनने का मुशताक़ था। हर चन्द कि मेरे सीना में दरियाए इल्म मौजज़न था मगर ज़बान नहीं खुलती थी कि[illegible]क्त मेरे जद्दे अमजद हज़रत अली करमल्लाह वज्हहु तशरीफ़ लाए और छः मर्तबा कुछ पढ़कर मेरे मुंह पर दम किया मेरी ज़बान फ़ौरन खुल गई और मैंने वाज़ शुरु कर दिया। अब मेरी ताक़ते लिसानी की सारे बग़दाद में धूम मच गई। ख़ुद मेरे दिल में जोशे सुख़न का यह आलम था कि अगर कुछ अर्सा ख़ामोश रहता और वाज़ न कहता तो मेरा दम घूंटने लगता था। अव्वल अव्वल मेरी महफ़िले तज़्कीर में थोड़े लोग हुआ करते थे मगर आख़िर में नौबत यहां तक पहुंची कि हुजूम की मस्जिद में गुंजाइश ना मुमकिन हो गई बिल आख़िर ईदगाह में मिम्बर रखा गया और मैंने वहां वाज़ कहना शुरु कर दिया।

आप फ़रमाते हैं कि:–

सत्तर हज़ार अफ़राद मेरी मजलिस में शरीक हुआ करते थे। सवार इतने आते थे कि उनकी गर्द से ईदगाह के गिर्द एक हलक़ा बन जाता था और दूर से तोदा नज़र आता था–"

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी अख़बारुल अख़यार में ब तज़किरा हज़रत ग़ौसुल आज़म तहरीर फ़रमाते हैं कि:–

हज़रत के कलाम मोअ्जिज़ बयान में वह तासीर थी कि जब आप आयाते वईद के मआनी इरशाद फ़रमाते थे तो तमाम लोग लरज़ जाते थे। चेहरों का रंग फ़क हो जाता था गिरया व ज़ारी का यह आलम होता था कि अहले महफ़िल पर बेहोशी तारी हो जाती थी।

जब आप रहमते इलाही की तशरीह व तौज़ीह और उसके मतालिब बयान फ़रमाने लगते तो लोगों के दिल गुन्चों की तरह खिल जाते थे अकसर हाज़रीन तो बादाए ज़ौक़ व शौक़ से इस तरह मस्त व बेखुद हो जाते थे कि बाद ख़त्मे महफ़िल उनको होश आता था और बाज़ तो महफ़िल में ही जां बहक़ तस्लीम हो जाते-"

हज़रत मोहद्दिस दहलवी इसी सिलसिला में रक़म तराज़ हैं:-

हज़रत की महफ़िले वाज़ में चार सौ अफ़राद क़लम दावत ले कर बैठते थे जो कुछ आप से सुनते उसको लिखते जाते।

हज़रत के मवाइज़ दिलों पर बिजली का असर करते थे। शैख़ उमर कीसानी कहते हैं कि कोई मजलिस ऐसी नहीं होती थी जिस में यहूद व नसारा इस्लाम क़बूल न करते हों। और आम्मतुन्नास रहज़नी, ख़ूरेंज़ी, बदकारी और जराइम से तौबा न करते हों। फ़ासिदुल एतक़ाद अपने ग़लत अक़ाइद से आप की महफ़िल में तौबा करते थे। मोअर्रिख़ीन का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि बग़दाद की आबादी के एक बड़े हिस्से ने आप के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़बूल किया।

मोहक़्क़िके वक़्त शैख़ मौफ़िक़ुद्दीन इब्ने क़िदामा साहबे किताब मुग़नी के इस क़ौल से हज़रत मोहक़्क़िक़ मोहद्दिस देहलवी के इरशाद की ताईद होती है हज़रत मोफ़िक़ुद्दीन फ़रमाते हैं।

मैंने किसी शख़्स को आप से बढ़कर दीन के बाइस ताज़ीम पाते नहीं देखा, बादशाह वोज़रा और उमरा आप की मजालिस में नियाज़ मन्दाना तरीक़े पर हाज़िर होते थे और अदब से बैठ जाते थे उलमा फ़ुक़्हा का तो कुछ शुमार ही नहीं था। एक एक दफ़ा में चार चार सौ दवातें शुमार की गई हैं जो आप के इरशादात क़लम बन्द करने के लिए मौजूद होती थीं।

आप पर बग़दाद की मुआशरती समाजी और दीनी ज़िन्दगी की बिगड़ती हुई हालत पोशीदा नहीं थी, ज़ुल्म व सितम, ज़ब्र व इस्तिब्दाद, फ़वाहिश व तने आसानी ऐश व तुरब में डूबी हुई ज़िन्दगी को हलाकत के भंवर से बाहर निकाल कर लाना ही आप का मक़्सूदे अस्ली था और इसी लिए आपने बग़दाद को अपनी दावत का मरकज़ बनाया था, आप के मवाइज़ का असली मोजिब यही था कि बन्दगाने खुदा की इस्लाह की जाए चुनांचे आप का हर वक़्त उन बरगश्ता हाल नुफ़ूस की इस्लाह में मशगूल और मसरुफ़ रहते। बड़े बड़े लोगों को उनकी बुराईयों पर बेधड़क टोकते और इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाते यानी आप सलातीने वक़्त (खुलाफ़ाए बग़दाद) वोज़रा, उमराए सलतनत, अकाबेरीने मिल्लत, आमिल व क़ाज़ी, वाएज़ व सूफ़ी हर एक को बे धड़क टोकते और उसकी बुराईयों से आगाह फ़रमाते और कभी कभी किसी की इन्फ़रादियत, वजाहत और सतवत व शौकत से मरऊब नहीं होते थे। मैं इस सिलसिला में आप के खुत्बात व मवाइज़ से चन्द इक़्तसाबात पेश कर रहा हूं ताकि आप को हज़रत की ख़िताबत और इस्लाह की शान का अंदाज़ा हो सके।

ज़ालिमों, आलिमों, सूफ़ीयों, और फ़क़ीहों से ख़िताब

तुम रमज़ान में अपने नफ़्सों को पानी पीने से रोकते हो और जब इफ़्तार का वक़्त आता है

तो मुसलमानों के खून से इफ़्तार करते हो और उन पर ज़ुल्म करके जो माल हासिल किया है उसे निगलते हो।

ऐ लोगो! अफ़सोस कि तुम सैर होकर खाते हो और तुम्हारे पड़ोसी भूखे रहते हैं और फिर दावा यह करते हो कि हम मोमिन हैं, तुम्हारा ईमान सही नहीं।

देखो! हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने हाथ से साइल को दिया करते थे अपनी ऊंटनी को चारा डालते, उसका दूध दुहते और अपना कुर्ता सिया करते। तुम उनकी मुताबिअ्त का दावा कैसे करते हो, जब कि अक़्वाल व अफ़आल में उनकी मुख़ालिफ़त कर रहे हो।"

ऐ मोलवियो, ऐ फ़क़ीहो! ऐ ज़ाहिदो! ऐ आबिदो, ऐ सूफ़ीयो! तुम में कोई ऐसा नहीं जो तौबा का हाजतमन्द न हो, हमारे पास तुम्हारी मौत और हयात की सारी ख़बरें हैं सच्ची मोहब्बत जिस में तग़य्युर नहीं आ सकता वह मोहब्बतें इलाही है, वही है जिस को तुम अपने दिल की आखों से देखते हो और वही मोहब्बते रुहानी, सिद्दीको की मोहब्बत है।

ऐ नफ़्स, ख़्वाहिश, तबीयत और शैतान के बन्दो! मैं तुम्हें क्या बताऊं मेरे पास तो हक़ दर हक़ मग़्ज़ दर मग़्ज़ और सफ़ा दर सफ़ा तोड़ने और जोड़ने के सिवा कुछ भी नहीं यानी तोड़ना मा सिवा अल्लाह से और जोड़ना अल्लाह से ।

ऐ मुनाफ़िक़ो! ऐ दावा करने वालो! ऐ झूठो ! मैं तुम्हारी हवस का क़ाएल नहीं अहले दिल की सोहबत अख़्तियार करो, ताकि तुम को भी दिल नसीब हो लेकिन तुम्हारे पास तो दिल है ही नहीं, तुम तो सरापा नफ़्स व तबीयत और हवा व हवस हो!!

बाशिन्दिगाने बग़दाद से ख़िताब

ऐ बग़दाद के रहने वाले! तुम्हारे अन्दर निफ़ाक़ ज़्यादा और इख़लास कम हो गया है और अक़्वाल बिला आमाल बढ़ गए हैं और अमल के बग़ैर क़ौल किसी काम का नहीं।

तुम्हारे आमाल का बड़ा हिस्सा जिस्म बे रुह है क्यों कि रुह इख़लास व तौहीद और सुन्नते रसूलुल्लाह पर क़ाइम है, ग़फ़लत मत करो, अपनी हालत को पलटो ताकि तुम को राह मिले जाग उठो ऐ सोने वालो! ऐ ग़फ़लत शिआरो बेदार हो जाओ! ऐ सोने वालो जाग उठो जिस पर भी तुम ने एतमाद किया वह तुम्हारा माबूद है और जिस पर नफ़ा या नुक़्सान में तुम्हारी नज़र पड़े और तुम ऐसा समझो कि उसके हाथों हक़ तआला (नफ़ा व नुक़्सान) को जारी करने वाला है वह तुम्हारा माबूद है अन्क़रीब तुम्हें अपना अन्जाम नज़र आ जाएगा!

दरबारी उलमा, ज़ुह्हाद और सलातीन से ख़िताब

ऐ इल्म व अमल में ख़ियानत करने वालो! तुम को उनसे क्या निस्बत, ऐ अल्लाह और उसके रसूल के दुशमनों! ऐ अल्लाह के बन्दों पर डाका डालने वालो! तुम खुले ज़ुल्म और खुले निफ़ाक़ में मुब्तिला हो, यह निफ़ाक़ कब तक।

ऐ आलिमो और ज़ाहिदो! बादशाहों और सुलतानों के लिए तुम कब तक मुनाफ़िक़ बने रहोगे कि तुम उनसे अपना ज़र व माल, शहवात व लज़्ज़ात हासिल करते रहो। तुम और अकसर बादशाहाने वक़्त अल्लाह के माल और उसके बन्दों के बारे में ज़ालिम, और ख़ियानत करने वाले हो।

ऐ इलाही, मुनाफ़िक़ों की शौकत तोड़ दे और उनको ज़लील फ़रमा, या उनको तौबा की

तौफीक अता फरमा और जालिमों का किला कमा फरमा दे, जमीन को उनसे पाक फरमा दे या उनकी इस्लाह फरमा (आमीन)

(इक्तिबासात अज़ अल फतहुर्रब्बानी)

इस उमूमी खिताब में अक्सर तखसीस भी फरमाया करते थे, अक्सर उमरा और सलातीन वक्त आप की खिदमत में दुआये खैर के हुसूल के लिए हाजिर होते इस मौके पर आप उन को नसीहत फरमाते और वईदे इलाही से डराते, एक बार अल मुस्तन्जिद बिल्लाह आप की खिदमते बा बरकत में बारयाब हुआ और हज़रत की खिदमत में दस तोडे अशरफियों के पेश किए और कबूल फरमाने पर इसरार किया, आपने दोनों हाथों में चन्द अशरफियों को ले कर रगड़ा तो उनसे खून टपकने लगा उस वक्त हज़रत ने अलमुस्तन्जिद से फरमाया।

तुम्हें अल्लाह से शर्म नहीं आती कि इंसानों का खून खाते हो और उसे जमा करके मेरे पास लाते हो।

अलमुस्तन्जिद यह माजरा देखकर बेहोश हो गया।

आप आलाए कल्मतुल हक् कभी बाक नहीं फ[illegible] थे गलत कारियों [illegible] आप बादशाह को भी इसी तरह डांट दिया करते थे जैसे किसी आमी को [illegible] एक बार बादशाहे वक्[illegible] खलीफा मुक्तज़ी ले अमरिल्लाह ने काज़ी अबूल वफ़ा यहया बिन सईद [illegible]न यहया बिन [illegible] को काजी–ए–बग़दाद मुकर्रर कर दिया यह शख़्स अपनी दराज़ दस्ती [illegible] सितम रा[illegible] की बदौलत "इब्नुल मजहमुज्ज़ालिम" के लकब से पुकारा जाता था। लोगों [illegible] ह[illegible]रत से [illegible]लीफा की इस अवाम दुश्मनी की शिकायत की [illegible] आप ने ब[illegible] मिम्[illegible]र खलीफा (अ[illegible]मुक्त[illegible] ले अम्रिल्लाह) जो आप की मजिलस श[illegible]फ़ में मौ[illegible]द था इस [illegible] फट[illegible]ारा।

तुम ने मुस्[illegible]मानों पर एक ऐसे शख़्स को [illegible]या जो अज्लमुज़्ज़ालेमीन है कल क़यामत के दिन [illegible]स रब्बुल[illegible]लेमीन [illegible] जो अरहम[illegible] है [illegible] जवाब दो गे–"

यह सुन कर [illegible]लीफा लरज़ा बर अन्दाम हो गया और उस[illegible]र खशीयते इलाही से लरजा तारी हो गया उसने [illegible] वक्त क़ाज़ी मज़कूर को कुज़ात के ओहदा माजूल कर दिया लेकिन गुरबा और फुक़रा के साथ आ[illegible]ा सलूक बिल्कुल मसावियाना था आप उनके साथ बैठ जाते और बड़ी बे तकल्लुफी से [illegible] गुफतगू फ़रमाते और उनको आज़ादाना गुफ्तगू का मौक़ा देते। आप के इन्ही अख़लाक़ और फ़जाइल ने अवाम को आप का गरवीदा और ख्वास को आप का वालह शैदा बना दिया था।

आप के मवाइज़ का असर

आपके उन मवाइज़े हस्ना और ख़िताबाते हकीमाना का यह असर हुआ कि बग़दाद जो ऐश व तुरब का गहवारा–ए–रन्दी सरमस्ती का ठिकाना था जहां के नौजवान रईसज़ादे और शुरफा आदाबे शराफ़त व सियादत भुला चुके थे बहुत जल्द राहे रास्त पर आ गए उनकी सर मस्तीया मांद पड़ गई, हज़ारों अफ़राद ने आप के दस्ते हक परस्त पर तौबा की। सिर्फ़ मुस्लमान ही ताइब नहीं हुए बल्कि सदहा यहूदियों और ईसाइयों ने इस्लाम क़बूल किया चुनांचे मोअर्रेख़ीन का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि बग़दाद की आबादी के बड़े हिस्से ने हज़रत वाला के हाथ पर तौबा की और बकसरत यहूद व नसारा और अहले ज़िम्मा मुसलमान हुए।

आप के उन मवाइज़े हसना के तीन मजमूए हैं यानी अलफ़त्हुर्रब्बानी, फ़ुतूहुल गैब' अल गुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ गुनियतुत्तालेबीन, इन कुतुब में आप के इरशादाते हकीमाना को बकैदे मौजू ज़ब्ते तहरीर में लाया गया है इन तीनों किताबों में अव्वलुज़्ज़िक्र दो किताबें मुख़्तसर हैं और तीसरी यानी गुनियतुत्तालेबीन बहुत मुफ़स्सल है। मैं इन्शा अल्लाह आप की तसानीफ़ पर तफ़सीली बहस आप की तसानीफ़ के सिलसिला में करुंगा।

हज़रत गौसे आज़म और तालीमाते बातनी

हजरत गौसे पाक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तसानीफ़े मुबारिका आप के मवाइज़ व इरशादाते गरामी ही उस बलन्द मर्तबा और हिक्मत के उस आला दर्जा पर हैं किउनकी कमा हक़्क़हु, तारीफ़, उन का असर और उन के फ़ैज़ान का इहाता करना और उनसे नताइज मुरत्तब हुए उनका बयान करना बहुत ही दुशवार है। यह मवाइज़ व दर्स उस बलन्दी और असर आफ़रीनी की उस मंज़िल पर हैं कि आप की फ़ज़ीलत और आप के कमालाते इल्मी पर दलीलें क़ातेअ् हैं लेकिन क्या अरब और क्या अजम, क्या [illegible]न्द और क्या शाम व [illegible]राक़ तमाम दुनिया में आप के नामे वाला की अज़मत और फ़ैजाने मारे[illegible] की जो धूम और [illegible] है वह आप के कमालाते बातनी और आप के रुश्द व हिदायत के [illegible]लसिला यानी [illegible]लसिला क़ादरिया का फ़रोग़ और उसकी आलमगीर इशाअ्त है। ज़ैल के [illegible] में इस पाक सिलसिला के बारे में मुख़्तसरन तहरीर कर रहा हूं।

हज़रत ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपनी दावते हक़ के सिलसिला में अलफ़तहुर्रब्बानी में इस तरह इरशाद फ़र[illegible] हैः

ऐ लोगो! द[illegible]वते हक़ क़बूल करो, बेशक मैं [illegible] इलल[illegible] हूं कि तुमको अल्लाह के दरवाज़े और उसकी इता[illegible]त की त[illegible] बुलाता हूं अपने न[illegible] तरफ़ नहीं बुलाता कि मुनाफ़िक़ ही अल्लाह की तरफ़ [illegible]ख़लूक़ को नहीं बुलाता बल्कि अपने नफ़्स [illegible] तरफ़ बुलाता है।

इस अज़ीम दाव[illegible] [illegible]लये आपने उन चंद हस्तियों को इंतख़ाब फ़रमाया जिनमें यह जौहरे क़ाबिल मौजूद था चुनांचे उनमें गुले सर सब्द हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन उमर बिन मोहम्मद सुहरवरदी साहबे अवारि[illegible]फ़ुल मआ]रिफ़ हैं। आप उनफ़वाने शबाब में उलूमे अक़लिया के बड़े दिलदादा थे और आपकी तबीयत का रूजहान मन्कूलात की तरफ़ बहुत कम था। यह हाल देख कर आपके अम्मे नामदार हज़रत शैख़ अबू नजीब सुहरवरदी जिनके इरशाद का शोहरा दूर दूर तक फैला हुआ था और एक अज़ीम साहबे तरीक़त बुज़ुर्ग शुमार होते थे अपने नौजवान बिरादरज़ादा को हज़रत की ख़िदमते बा सआदत में लेकर हाज़िर हुये और हुज़ूरे ग़ौसियत में अर्ज़ किया कि मेरा यह बिरादर ज़ादा हर वक़्त माक़ूलात में मशग़ूल रहता है हर चंद कि मैं रोकता हूं लेकिन मैं कामयाब नहीं होता। हुज़ूर शैख़ सुहरवरदी से पूछा तुमने इल्मुल कलाम में कौन कौन सी किताबें पढ़ी हैं शैख़ सुहरवरदी ने कुतुब आमोख़्ता की नाम बनाम निशान दही कि। हूज़ूर गौसे आज़म ने किताबों के नाम सुन कर अपना दस्ते मुबारक सुहरवरदी के सीना पर फेरा हाथ का फेरना था कि सीना माक़ूलात से बिल्कुल साफ़ हो गया। जो कुछ पढ़ा था सब का सब महव हो गया और वह दिल अल्लाह तआला ने जिसको नूरे हिदायत, ईक़ान और इल्मे लदुन्नी की सलाहियत से नवाज़ा था मारिफ़े इलाहिया से मामूर हो गया और क़ाल हाल से बदल गया दिल

व दिमाग़ की दुनिया में एक इन्क़लाबे अज़ीम बरपा हो गया और आप ने फ़ौरन दामने ग़ौसियत को थाम लिया। अल्लाह तआला ने शैख़ सुहरवरदी के ज़रिये क़ादरियत को दुनिया के गोशा गोशा में फैला दिया जिस का ज़िक्र बहुत इजमाल के साथ में यहां कर रहा हूं ।

हज़रत शैख़ सुहरवरदी का सिलसिलए तरीक़त मशरिक़ और मग़रिब तक बहुत जल्द फैल गया, शाम मिस्र, अरब, अजम, तुरकिस्तान और मावरा उन्नहर तक और इस बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द में सिन्ध, दिल्ली और मशरिक़ में मिदनापुर, बंगाल और आसाम सब इस सिलसिला के रौशन सितारों की ताबनाकियों से जगमगा उठे।

हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन के मुरीद ख़ास शैख़ मुस्लेहुद्दीन अल मारुफ़ सअ़दी शीराज़ी ने शीराज़ में इस सिलसिला को फैलाया और अपनी ज़िन्दए जावेद कुतुब गुलिस्तां व बोस्तां के ज़रिया इन तामम मुल्कों में हिक्मत व मारफ़त के चिराग़ रौशन किए जहां फ़ारसी ज़बान पढ़ी और समझी जा सकती थी।

जब फ़ित्नए तातार ने बग़दाद को तबाह करने के बाद शाम की तरफ़ अपना रुख़ किया तो सिलसिला क़ादरिया सुहरवरदीया के शैख़े आज़म हज़रत अज़ीज़ुद्दीन बिन अब्दुस्सलाम की तहरीक पर मुजाहिदे आज़म तुर्क अजीम रुकनुद्दीन सरस ने इस फ़ित्ना का मुक़ाबला एक आहिनी दीवार बन कर किया और सैले बला को रोका और शाम व अरब की सरज़मीन से उसका मुंह फेर दिया इस बतले हुर्रीयत और मुजाहिदे आज़म ने शाम में तातारियों को जो पै दर पै शिकस्तें दीं वह तारीख़ के सफ़हात पर सब्त हैं मिस्र में सलतनते अब्बासीया का क़याम उन्ही की बदौलत ज़हूर में आया।

सिलसिला क़ादरिया और सुहरवरदीया के एक और दरख़शन्दा आफ़ताब हज़रत शैख़ुल इस्लाम शैख़ बहाउद्दीन ज़क्रीया मुल्तानी हैं जिन के ज़रिया सिन्ध व हिन्द के जुल्मत कदे में ईमान व इरफ़ान के चिराग़ रौशन हुए और इस्लाम की रौशनी से यह सियाह ख़ाने जग.मगा उठे आप की सई से ऊच और मुल्तान इस आफ़ताब की रोशनी से मुनव्वर हैं।

बंगाल की वह सर ज़मीन जो कुफ़्र व शिर्क से सियाह ख़ाना बनी हुई थी वहां इस्लाम के पहले मुबल्लिग़ हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी सुहरवरदी हैं हज़रत शैख़ जलालुद्दीन शैख़ुश्शुयूख़ हज़रत सुहरवरदी के ख़लीफ़ा आज़म थे।

ऊच में इसी सिलसिला का वह आफ़ताब ग़ुरुब हुआ जिसका नाम नामी हज़रत सय्यद जलाल सुर्ख़ सुहरवरदी है जिन के साहबज़ादे हज़रत शैख़ सय्यद अहमद कबीर बुख़ारी थे। उन्होंने इस्लाम की इशाअ़त में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया शाह जलाल मुजर्रद जिन्होंने सिलहट में इस्लाम की शमा फ़रोज़ां की आप ही के नवासे हैं।

हज़रत ख़्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी भी इसी ख़ानवादा सुहरवरदीया की एक शमए फ़रोज़ां हैं जिन्होंने हिन्द के मग़रिबी हिस्सा में इशाअ़ते इस्लाम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। अलग़रज़ हिन्दुस्तान और दूसरे ममालिक में सुहरवरदी सिलसिला को जो क़बूले आम और अज़ीम तब्लीग़ी कामयाबियां हासिल हुई वह तमाम तर हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो की दुआ की बरकात हैं इस ख़ानदान में आप के लुत्फ़ करम से सदहा फ़ुक़राए कामिल और दरवेशाने मुख़्लिस और मुबल्लेग़ीने इस्लाम पैदा हुए कि आज भी यह

आफ़ताब इस बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द में अपनी तमाम तर ताबानियों के साथ फ़रोज़ां है।

इस सिलसिला सुहरवरदीया के अलावा भी क़ादरियत के आफ़ताब ने कुफ्र की तारीक रातों में उजाला फ़रमाया और आप से इस क़दर सलासिल तरीक़त जारी व सारी हुए कि आज भी दुनिया में जहां जहां मुसलमान आबाद हैं वहां यह सिलसिला ज़रुर मौजूद है। हर चन्द कि आप हंबली फ़िक़्ह के पैरु और उस के शारेह थे आपकी अज़ीम तसनीफ़ गुन्यितुत्तालीब तरीकुल हक फ़िक्हे हंबली पर एक मुस्तनद कितबा है लेकिन चूंकि आप महज़ इस्लाम के दाई थे और किताबे इलाही और सुन्नते मुहम्मदी हज़रत गौसे आज़म के दीन व मज़हब, फ़िक्र व नज़र और वाज़ व इरशाद का मरकज़ व महवर था इस लिए आप की अज़मत का सिक्का हन्फ़ियों के दिलों पर इस तरह बैठा हुआ है जिस तरह हंबलियों के दिलों पर, बल्कि मैं तो यह कहने में बाक नहीं करुंगा कि इस बर्रे सग़ीर पाक व हिन्द में हन्फ़ी जिस कसीर तादाद में आप के गुलामों में शामिल हैं और आप के सलासिल हन्फ़ी बुजुर्गों में जिस क़दर पाए जाते हैं वह हंबलीयों से कहीं ज़्यादा हैं।

हज़रत का तरीक़ा एहसान व तालीम व तल्क़ीन भी तमाम तर किताब व सुन्नत पर मबनी व मुनहसर है इस में न फ़लसफ़ए कलाम के ग़वामिज़ व रमूज़ हैं और न वहदतुल वजूद और वहदतुश्शहूद के मबाहिस हैं हज़रत का क़ल्ब नूरानी सोज़, यक़ीन, हुज़ूर और शहूद और इरफ़ाने इलाही है और सुन्नते नब्वी उसका महवर व मरकज़ है यही बाइस है कि चार दांगे आलम में आप का डंका अब भी बज रहा है।

क़ादरियत के बहुत से सलासिल आप की औलाद अमजाद से जारी व सारी हुए जो फुक़्हा क़ादरियत कहलाते हैं उर्फ़े आम में उन में से हर एक नक़ीबुल अशराफ़ कहलाता है।

हज़रत गौसे आज़म की इज़्दवाजी ज़िन्दगी

हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने मुख़तलिफ़ औक़ात में चार शादियां कीं और उन चारों अज़्वाज से आप की औलाद पैदा हुई। औलादे ज़कूर के सिलसिले में आप के सवानेह निगार मुख़्तलिफुल ख़्याल हैं चुनांचे मौलाना अब्दुल अलीम रक़म तराज़ हैं कि आपके बीस औलादे नरीना (फ़रज़न्द) और उन्नीस लड़कियां पैदा हुईं लेकिन जब उन्होंने तफ़्सील बयान की तो लड़कियों की तादाद सिर्फ़ 16 लिखी है और किसी लड़की का नाम तहरीर नहीं किया है। इस सिलसिला में सब से ज़्यादा मुस्तनद बयान हज़रत पीर ताहिर अलाउद्दीन अलक़ादिरी अलजीलानी इब्ने नक़ीबुल अशराफ़ महमूद हुस्सामुद्दीन क़ादरी जो ख़ानदाने ग़ौसिया के एक ख़ुदा परस्त, दीनदार फ़रज़न्द हैं और पाकिस्तान में जिनके मुरीदान बा सफ़ा की एक ख़ासी तादाद मौजूद है हज़रत शैख़ ताहिर अलाऊद्दीन, हज़रत सय्यदना शैख़ अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की चौदहवीं पुश्त में हैं और हज़रत शैख़ सय्यद अब्दुल अज़ीज़ की औलाद से हैं जो हज़रत ग़ौस पाक के दूसरे फ़रज़न्द हैं इस सिलसिला में सबसे ज़्यादा मुस्तनद क़ौल आप का हो सकता है।

हज़रत शैख़ सय्यद ताहिर अलाऊद्दीन साहिब अपनी तानीफ़ तज़्किरा क़ादरिया (मत्बूआ इस्तिक़्लाल प्रेस लाहौर शास करदा हाल दरबारे गौसिया 1962 ई०) में ब उनवान" आप की औलाद अहले बैते मुतहहरा के अस्माए गरामी" के तहत फ़रज़न्दाने गरामी के अस्मा इस तरह तहरीर फ़रमाते हैं।

1—अस्सय्यद अश्शैख़ हसीबुन्नस्ब अल इमाम अलमुक़्तदा हज़रत अब्दुल रज़्ज़ाक़ क़ादरी अलजीलानी। विलादत 525 हि॰ वफ़ात 653हि॰

2—हज़रत अब्दुल अज़ीज़ क़ादरी अलजीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
विलादत 534, हि॰वफ़ात: 602 हि॰

3—हज़रत अब्दुल जब्बार वफ़ात 575 हि॰

4—हज़रत अब्दुल वहहाब विलादत 523 हि॰,वफ़ात 553 हि॰

5—हज़रत अब्दुल ग़फ़्फ़ार

6—हज़रत अब्दुज ग़नी

7—हज़रत सालेह

8—हज़रत मुहम्मद वफ़ात 600 हि॰

9—हज़रत शम्सुद्दीन

10—हज़रत इब्राहीम वफ़ात: 593हि॰

11—हज़रत यहया विलादत:550हि॰, वफ़ात: 6[illegible] हि॰

कुल ग्यारह फ़रज़न्द और एक दुख़्तर नेक अ[illegible]र सय्यदा जनाबा फ़[illegible]मा रजीयल्लाहो तआला अन्हा। कुल औलाद चौदह नफ़ूसे क़ुदसिया।

इस सिलसिला में मज़ीद वज़ाहत इस तरह फ़रमा[illegible]

इनमें से सिर्फ़ तीन हज़रात सय्यदना अब्[illegible]ल रज़्ज़ा[illegible] [illegible]य्यदना अ[illegible]ुल अज़ीज़, सय्यदना इब्राहीम रज़ीयल्लाहो तआला अन्हुम की औलाद हुई जो बग़दा[illegible] शरीफ़ [illegible]के अलावा दीगर अतराफ़ व अक्नाफ़ में [illegible] फैली हु[illegible]। इस औ[illegible] पाक में से कुद्देस [illegible]र्रहुल अज़ीज हज़रत गौसे पाक के साहबज़ादे ह[illegible]रत शैखुल [illegible]शाईख़ ह[illegible]ीबुन [illegible] मुक़्तदा साहिबुल मौला अब्दुल अज़ीज़ साहब ज़्य[illegible]ा इल्म [illegible]ज़्ल, रज़ा[illegible] तवक्कु[illegible] व अ[illegible]ाब, जुहद व तक़्वा में मशहूर हुए", (तज़्किरा क़ा[illegible]रिया स[illegible]30,31)

शहज़ादा दारा [illegible] सफ़ीनतलु औलिया में लिखते हैं:—

1—हज़रत ग़ौसुस्सक़लैन [illegible] दस साहबज़ादों में पहले शैख़ सैफ़ुद्दीन अब्दुल वहहाब कुद्देस सिर्रहु हैं माह शाबान 51[illegible] विलादत हुई और 25 शव्वाल 603 हि॰ में वफ़ात पाई आप का मज़ार बग़दाद में है।

2—शैख़ शर्फ़ुद्दीन ईसा कुद्देस सिर्रहु हैं आप इल्मे तसव्वुफ़ पर मशहूर किताब जवाहिरुल असरार के मुसन्निफ़ हैं आप की वफ़ात 573 हि॰ में मिस्र में हुई।

3—शैख़ शम्सुद्दीन अब्दुल अज़ीज़ कुद्देस सिर्रहु आप सन्जार (संजर) की तरफ़ हिजरत फ़रमा गए थे और वहीं सकूनत इख़्तियार फ़रमा ली।

4—शैख़ ताजुद्दीन अबू बकर अब्दुल रज़्ज़ाक़ कुद्देस सिर्रहु रिसाला जिलाउल ख़ातिर जो हज़रत गौसे आज़म के मलफ़ूज़ात हैं आप की तसनीफ़ है आप का मज़ार बग़दाद शरीफ़ में है।

5—हज़रत शैख़ अबू इसहाक़ इब्राहीम कुद्देस सिर्रहु आप की विलादत 528 हि॰ और वफ़ात 6 शाबान 633 हि॰ में हुई आप का मज़ार हूज़ूर गौसे पाक के मज़ार के क़रीब है।

6—हज़रत शैख़ अबूल फ़ज़्ल मोहम्मद कुद्देस सिर्रहु आप की वफ़ात 27 सफ़र 587 हि॰ में हुई आपका मज़ार भी बग़दाद में है।

7—हज़रत शैख़ अबू ज़करिया यहया क़ुद्देस सिर्रहु आप की विलादत 6 रबीउल अव्वल 550 हि॰ और वफ़ात 14 शाबान 600 हि॰ में हुई आप का मज़ार भी बग़दाद शरीफ़ में हज़रत शैख़ अब्दुल वहहाब के मज़ार के क़रीब वाक़ेअ़ है।

8—हज़रत शैख़ अबू नसर मूसा क़ुद्देस सिर्रहु आप की विलादत 529 हि॰ और वफ़ात जमादिल उख़रा 600 हि॰ में दिमश्क़ में हुई और आप वहीं मदफ़ून हुए।

शहज़ादा दारा शिकोह ने सिर्फ़ इन्ही आठ फ़रज़न्दों का ज़िक्र किया है बाक़ी दो साहबज़ादों का ज़िक्र नहीं किया।

आफ़ताबुद्दीन अहमद फ़ुतूहुलगैब के अंग्रेज़ी तर्जमा के दीबाचा में तहरीर करते हैं कि "हूज़ूर सय्यदना ग़ौसुल आज़म ने 52 साल की उम्र तक मुतअहहिल ज़िन्दगी इख़्तियार न फ़रमाई उसके बाद सुन्नते नब्वी के ख़्याल से आपने मुख़्तलिफ़ ज़मानों में चार शादियां कीं और उन चारों अज़वाज से आप के यहां 27 साहबज़ादे और 22 साहबज़ादियां पैदा हुईं उन साहबज़ादों में से सिर्फ़ चार साहबज़ादे मशहूर हुए (1) हज़रत शैख़ अब्दुल वहहाब (2) हज़रत शैख़ ईसा (3)हज़रत शैख़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ और (4) हज़रत शैख़ मूसा। (दीबाचा फ़ुतूहुल गैब अंग्रेज़ी तर्जमा स:11)

लेकिन जैसा कि मैं पहले तहरीर कर चुका हूं कि इस सिलसिला में सब से ज़्यादा मुस्तनद बयान जनाब शख़ ताहिर अलाउद्दीन साहब का है, जो हूज़ूर ग़ौसे आज़म की चौदहवीं पुश्त में से हैं।

हज़रत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी के मामूलात

आप हफ़्ता में तीन मर्तबा अवामी मज्लिस से ख़िताब फ़रमाया करते थे और हर रोज़ सुबह और सेह पहर के वक़्त आप तफ़्सीर, हदीस और [illegible] का दर्स दिया करते थे। ज़ोहर की नमाज़ के बाद आप फ़तवे का अहम काम अंजाम दिया करते [illegible] या दूर दराज़ के शहरों और मुल्कों से जो कुछ सवालात आप की ख़िदमत में आया करते थे उनके जवाबात तहरीर फ़रमाते।

आपके साहबज़ादे हज़रत अब्दुल रज़्ज़ाक़ इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रते वालिद माजिद ने तीस साल तक यानी 528 हि॰ से 558 हि॰ तक दर्स व तदरीस के साथ साथ इफ़्ता का शग़्ल जारी रखा। मसाइल फ़िक़्ही पर उबूर का यह आलम था कि इस्तिख़राजे मसाइल के लिए आप ने कभी कुतुब से मदद नहीं ली। आप जो जवाब लिखते वह क़लम बरदाश्ता लिखते आप इमाम शाफ़ई और इमाम हंबल के मज़हब पर फ़तवा दिया करते थे। हर रोज़ मग़रिब की नमाज़ से क़ब्ल आप गुरबा में खाना तक़्सीम फ़रमाते और नमाज़े मग़रिब के बाद खाना खाने के लिए बैठ जाते और अपने क़ुर्ब व जवार के ऐसे तमाम लोगों को खाने में शरीक फ़रमाते जो नादार होते। इशा की नमाज़ के बाद आप मज्लिस से उठ जाते और अपना ज़्यादा वक़्त क़ुरआन ख़ानी और यादे इलाही में सर्फ़ फ़रमाते।

हज़रत का तरीक़ा तल्क़ीन व इरशाद:

हज़रत के मवाइज़ दिलों पर बिजली की तरह असर करते थे, आपका अन्दाज़े बयान ऐसा दिल नशीन और मोअस्सिर होता था कि दिलों में इन्क़लाब पैदा हो जाता था आप की को मज्लिस ऐसी न थी जिस में यहूद व नसारा इस्लाम न क़बूल करते हों और बदकार व बद आमाल

मुसलमान आप के दस्ते हक़ परस्त पर ताइब न होते हों, हर मज्लिस में हज़ारों फ़ासिदुल एतक़ाद अपने ग़लत अक़ाइद से तौबा करते और हज़रत की रहबरी से सिराते मुस्तक़ीम पर आ जाते।

आप की मज्लिस में छोटे बड़े, ग़रीब व अमीर और आक़ा व ग़ुलाम की कोई तख़सीस नहीं थी बादशाह और वज़रा आप की मज्लिस में नियाज़ मन्दाना हाज़िर होते और बा अदब बैठते आप को जो कुछ फ़रमाना होता था बे धड़क इरशाद फ़रमाते, सलातीने वक़्त पर कड़ी से कड़ी तन्क़ीद की जाती लेकिन वह उसी अदब और सुकून के साथ उसको सुनते जिस तरह दूसरे अवामुन्नास। चुनांचे उन मजालिस में अक्सर व बेशतर इस तरह से आम तन्क़ीद फ़रमाते।

"ऐ इल्म व अमल में ख़यानत करने वालो। तुम को उन (ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्गों) से क्या निसबत, ऐ अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मनों! ऐ अल्लाह के बन्दों के डाकूओ, तुम खुले ज़ुल्म और खुले निफ़ाक़ में मुब्तला हो, यह निफ़ाक़ कब तक।

ऐ आलिमों! ऐ ज़ाहिदो! शाहों और सुलतानों के लिए तुम कब तक मुना[illegible]क़ बने रहोगे ताकि उनसे दुनिया का माल व ज़र, शहवात व लज़्ज़ात [illegible]सिल करते रहो। तुम [illegible]र अक्सर शाहाने वक़्त अल्लाह के माल और उसके बन्दों के मुताल्लिक़ ज़ालिम और ख़ाइन [illegible]।

बारे इलाहा– मुनाफ़िक़ों की शौकत तोड़ दे और [illegible]न को ज़लील [illegible]रमा। [illegible]नको तौबा की तौफ़ीक़ दे और ज़ालिमों का क़िला क़मा फ़रमा दे ज़मीन [illegible]नसे पाक क[illegible]दे या उन की इस्लाह फ़रमा। (आमीन)

"ऐ बादशाहो! ऐ गुला[illegible]! ऐ ज़ालि[illegible] और ऐ मुनसिफ़ो ऐ मु[illegible]ाफ़िक़ो और ऐ मुख़्लिसो! दुनिया एक महदूद व[illegible] है और [illegible]ख़िरत गै[illegible]नाही [illegible]मुद्दत तक[illegible], अपने मुजाहिदे और ज़ुहद से जुमला मासिवा [illegible]ल्लाह को छोड़ो, ग़ैर से त[illegible]लब क[illegible] जिस ने दुनिया के अमीरों से तमा या ख़ौफ़ को दिल [illegible]में जगह [illegible] वह मवह[illegible]द या नाइ[illegible]लुल्ल[illegible] सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम होने का दावा नहीं [illegible] सक[illegible]ा क्योंकि ख़ालिक़ के बदले मख़लूक़ [illegible] उम्मीद व ख़ौफ़ रखना शिर्क है।"

ऐ मुनाफ़िक़ो ऐ मख़लूक़ [illegible] अस्बाब की परस्तिश करने वाले हक़ तआला को भुलाने वाले गर्दन झुका फिर तौबा [illegible] उसके बाद इल्म सीख और अमल कर और मुख़्लिस बन वरना हिदायत न पाएगा।"

तुम रमज़ान में अपने नफ़्सों को पानी पीने से रोकते हो और जब इफ़्तार का वक़्त आता है तो मुसलमानों के ख़ून से इफ़्तार करते हो। उन पर ज़ुल्म करके जो माल तुम ने हासिल किया उसको निगलते हो।"

ऐ लोगो! अफ़सोस कि तुम सैर हो कर खाते हो और तुम्हारे पड़ोसी भूके हैं और फिर तुम यह दावा करते हो कि हम मोमिन हैं। तुम्हारा ईमान सही नहीं। देखो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने दस्ते मुबारक से साइल को दिया करते थे और अपनी ऊंटनी को ख़ुद चारा डालते थे और उसका दूध दूहते और अपने क़मीज़ आप सिया करते थे तुम इन की मुताबेअ़त का दावा कैसे करते हो हांलाकि अक़्वाल व अफ़आल में उन की मुख़ालिफ़त कर रहे हो।

(इक़्तिसाबात अज़ मजालिस फ़ुतूहुर्रब्बानी)

हुजूर सय्यदना ग़ौसे आज़म शख़्सी सलतनत गैर शरई मलूकीयत और अमारत को हराम जानते थे बादशाहों और अमीरों की ताज़ीम व तकरीम को शिर्क ख़याल फ़रमाते थे। उन से कभी नहीं मिलते थे मगर बादशाह बड़े इसरार से हाज़िरी की दरख़्वास्त करते, जब यह हाज़िर होते तो हज़रत मकान के अन्दर तशरीफ़ ले जाते थे और जब यह आकर बैठ जाते उस वक़्त आप मज्लिस में तशरीफ़ लाते (ताकि बादशाह के लिए ताज़ीमन उठने का सवाल पैदा न हो) इसी तरह हज़रत ग़ौसे आज़म बादशाहों की बैतुल माल को ग़सब किया हुआ माल समझते थे, और बादशाहों और अमीरों को अल्लाह के माल का लूटने वाला और डाकू समझते थे। आप उनको बंदगाने ख़ुदा का ख़ाईन ख़्याल फ़रमाते थे। आप के मवाइज़ में जा बजा ऐसी सराहतें हैं और सलातीन व उमरा से ख़िताब हैं फुतूहुर्रब्बानी में ख़ास तौर पर ऐसे खुतबात व मवाइज़ मौजूद हैं।

हज़रत ग़ौसुस्सक़लैन की तहरीके इसलाह व दावते जिहाद

छट्टी सदी हिजरी और आलमे इस्लाम की अब्तरी व बद हाली

इस सवानेह मुक़द्दस के आग़ाज़ में मुख़्तसर तौर पर मैंने पांचवीं और छठी सदी हिजरी की उन तबाह कारियों और बरबादियों का ज़िक्र किया है जिन्होंने अरब, इराक़, शाम, और मिस्र को तह व बाला कर रखा था। आलमे इस्लाम में क़यामते सुग़रा बरपा थी अमन व अमान रुख़सत हो चुका था हर तरफ़ अफ़रा तफ़री का आलम था। खास तौर पर छठी सदी हिजरी एक बहुत ही पुर आशोब और पुर फ़ितन सदी गुज़री है। तमाम आलमे इस्लाम सियासी इन्तेशार की ज़द में था। बड़े बड़े फ़िक्री और इल्मी बुहरान आए और अच्छे अच्छों के पैर उखड़ गए। बग़दाद जिस को कभी आलमे इस्लाम में मर्कज़ीयत का शरफ़ हासिल था, उसकी मर्कज़ीयत रू बा ज़वाल थी। सियासी इन्तेशार और इक़्तेदार की कशमकश ने तवाइफ़ुल मलूकी की सूरत इख़्तियार कर ली और इस तवाइफ़ुल मलूकी ने इस्लाम की अज़ीम सलतनत के हिस्से बख़रे कर दिए थे।

बग़दाद की मर्कज़ीयत वैलिमियों, सामानियों, सलजूक़ीयों और ग़ज़नीयों के दर्मियान घर कर एक जस्दे बे रुह बन गई थी मज़कूरा सलतनतें आपस में जोउल अर्ज़ के बाइस दस्त ब गिरेबां थीं ख़्वारज़्मि शाहीयों और सामानियों और सफ़ारियों ने जंग व जदल का बाज़ार गर्म कर रखा था। शाम की सर ज़मीन फ़ातमीने मिस्र के ज़ेरे नगीं आ चुकी थी। सर ज़मीने हिजाज़ को कभी फ़ातमियों को लब्बैक कहना पड़ता और कभी अब्बासीयों को।

इस सियासी इन्तेशार ने मर्कज़ीयत के तार व पौद इस तरह बिखैर दिए थे कि ग़ैर मुस्लिम हमला आवरों को अपनी नाक़ाबिले फ़रामोश शिकस्तों का इन्तेक़ाम लेने का इससे बेहतर और कोई मौक़ा नहीं मिल सकता था चुनांचे जब इस्लाम की अज़ीमुश्शान सलतनत मुतअद्दिद सरहदों में तक़्सीम हो गई तो वस्त एशिया के खूंख़ार हमला आवर यानी तातारी अपनी हवस मुल्क गीरी के लिए आगे बढ़े और ख़्वारिज़्म शाहीयों का नाम सफ़हए हस्ती से मिटा दिया।

यहूदी और नसरानी हुक्मरां सलीबी जंग का ज़ोर शोर से एहतमाम करने लगे और आफ़ताबे

गौसियत के गुरुब होते ही तातारियों के हाथों बग़दाद पर जो कुछ गुज़री वह तारीख़ कभी फ़रामोश नहीं कर सकती और सलीबी सूरमाओं ने अरज़े फ़िलिस्तीन व शाम के अमन व अमान को जिस तरह तह व बाला किया, वह एक तारीख़ी हक़ीक़त है।

इस सियासी अब्तरी और सियासी मर्कज़ीयत के पारा पारा हो जाने से आलमे इस्लाम के इक़्तेदारे आला को यह नक़्सान पहुंचा की मुसलमान एक ऐसी ताक़त न रहा जो ग़ैर क़ौमों को अपने किरदार ब अख़लाक़ और जज़्बए जिहाद से मरऊब, खौफ़ ज़दा और उनके अज़ाइम को मुतज़लज़ल कर दिया करता था, जो आलाए कल्मतुल हक़ के वक़्त मौत से बेख़तर खेलता था। वह तलवार जो ग़ैरों के लिए वक़्फ़ थी अब उसकी तेज़ी अपनों पर आज़माई जा रही थी इस अफ़रा तफ़री और तवाइफ़ुल मलूकी ने अख़लाक़ी हालत को भी तबाह कर दिया। वही रज़ाइल अख़लाक़ जो ग़ैर मुस्लिमों की तबाह कारियों का बाइस और उनकी रुसवाई का सबब बने हुए थे अब मुसलमानों की शान बन गए थे। रियाकारी, ख़ुदगर्ज़ी, मक्र व फ़रेब, हिर्स व तमा, बुज़दिली, ख़ुशामद ख़ियानत और ज़िल्लत उनका शेआर बन गए। इक़्तेदार परस्ती और चन्द अफ़राद की बाला दस्ती ने नई नई साज़िशों को जन्म दिया ब हैसियत मजमूई न कोई इज्तेमाई मक़्सद था और न कोई मुश्तरका नस्बुल ऐन। मज़हब से बेगानगी एक पसंन्दीदा सिफ़त बन गई। शैफ़तगी पहली थी उसकी जगह बे ताल्लुक़ी ने ले ली और नौबत यहां तक पहुंच गई कि इल्म अमल के बजाए सिर्फ़ चन्द किताबों के पढ़ने तक महदूद व मुन्हसर हो गया। किताब व सुन्नत के मौज़ूआत के बजाए फ़लसफ़ीयाना मोशगाफ़ियों को जन्म दिया गया और उसके बानी हुए जो अपने अक़ाइदे फ़ासिदा की इशाअत के लिए ऐसे मौक़ा के इन्तेज़ार में थें इल्मुल कलाम के निकात अदबी मजलिसों की जान बन गए और फ़लसफ़ा व कलाम के मबाहिस व मौज़ूअ् पर मुनाज़रे और कज बहसियां अदब परवरी और अदब नवाज़ी का निशान क़रार पाए। चुनांचे तारीख़ शाहिद है कि मामून रशीद के दरबार में ख़ुल्के क़ुरआन पर जो मुबाहसे और मुनाज़रे हुए वह किस दीनी ख़िदमत में शुमार नहीं हो सके बल्कि इसके दूर रस मुज़िर नताइज निकले।

शद्दाद तो अपनी जन्नत इरम के बाइस मुसलमानों में मतरुद व मरदूद ठहरा लेकिन एक होशमन्द बातिनी ने अलतमूत में एक जन्नत बनाकर आलमे इस्लाम में अज़ीम फ़ित्ना बरपा कर दिया, हज़ारों लाखों मुसलमानों को गुमराह किया, मशाहीरे इस्लाम तह तेग़ हुए। मुतज़ला और अशाइरा के मकातिबे फ़िक्र की बड़ी धूम धाम से बिना पड़ी और उस बेदीनी की रौ में खूब परवान चढ़े। नतीजा ज़ाहिर था कि इशराक़ी और बातिनी रमूज़ और उन पर नुक्ता आफ़रीनियों ने इस्लामी तसव्वुरात और बुनियादी मुसल्लिमात तक को नज़रों से ओझल कर दिया, मैं इस सिलसिला में ज़्यादा तफ़सील में जाना नहीं चाहता कि मैं इब्तेदाई सफ़हों में इस पर क़दरे तफ़सील से लिख चुका हूं। मुख़्तसर यह कि मुस्लमानों के तमद्दुनी निज़ाम के तार व पौद इस तरह बिखर गए कि फिर उनकी शीराज़ा बन्दी न हो सकी।

हमारे उलमा व फ़ुज़ला उन इल्मी बहसों में उलझे हुए थे, उमरा व अमाइद और सलातीन मुल्क गीरी की हवस का शिकार थे और जब वह इस शिकार के लिए उठते तो हर ज़ुल्म रौ और हर सितम मबाह बल्कि ऐने इन्साफ़ बन जाता था अब सिर्फ़ एक ही चारा कार बाक़ी रह गया था कि इस तबाह हाल उम्मत में एक ऐसा गरोह पैदा हो जो सोने वालों को जगाए, गुम करदा राहों को रास्ता पर लगाए और किताब व सुन्नत का अहया करे, ज़ाहिर है कि यह काम ऐसी

जमाअत अंजाम दे सकती थी और वही अफ़राद उस नाव का पार लगा सकते थे जिनको न दुनिया खरीद सकती थी और न सतवत व दबदबा शाही उनकी गर्दनों को अपने आगे झुका सकता था।

इसलाहे नफ़्स, तज़कीया बातिन और अहयाए शरीअत (मोहम्मदी) की यह तहरीक हर चंद कि कई सदी पहले शुरु हो चुकी थी अगर हम तफहहुस से काम लें तो हजरत हसन बसरी रज़ियल्लाहो अन्हो के अहदे मसऊद तक जा पहुंचते हैं गोया उस तहरीक का चश्मा हम को पहली सदी हिजरी में रवां मिलता है लेकिन कई सदी तक यह तहरीक मकामीयत के हुदूद में महदूद रही और एक आलमगीर तहरीक न बन सकी हर चन्द कि उन कुरुने माज़िया में ईरान, इराक, और शाम व अरब में ज़ाविए और खानकाहें मिलती हैं जहां यह पाकीज़ा नुफूस अपने मुक़द्दस फरीज़ा को सर अन्जाम दिया करते थे और हलका बगोशाने खानकाह अतराफ व अक्नाफ में अवाम की रहनुमाई का फ़रीज़ा अदा करते रहते थे लेकिन पांचवी और छठी सदी हिजरी में गुमराही और ज़लालत के साए इतने तवील व अरीज़ हो गए कि उन्होंने तमाम दुनियाए इस्लाम को अपनी लपेट में ले लिया उस वक़्त इस अम्र की बडी शिद्दत से जरुरत थी कि इस्लाहे नफ्स, तज़कीया बातिन और अहयाए दीने मतीन की यह तहरीक भी उतनी ही वुसअत पज़ीर हो जाए जितने ज़लालत व गुमराही के साए।

अल्लाह तआला ने यह अहम और दुशवार काम अपने महबूब और मुकद्दस बन्दे के जो उसके महबूब वाला मकाम सय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निसबते खास रखता था सुपुर्द फरमाया और उन्होंने बड़ी बेजिगरी और मर्दानगी से इसको अत्माम पर पहुंचाया, यही व मसनद नशीन फखरे ओवैसी और साहबे सिसादा हसन बसरी है जिसने दौरे पुर फितन और जुल्मत कदा सरासर शिर्क व कुफ़रान में उसने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चिराग रौशन किया और उसकी ज़ियाए ईमान अर्ज़ को एक गोशे से दूसरे गोशा तक पहुंचाया और आज तक हज़रत गौसे आज़म का रौशन किया हुआ वह चिराग दुनियाए इस्लाम के गोशा गोशा में ज़िया बार है, हज़रत गौसे आज़म का मसलक इरशाद व इस्लाह अपने मुआसरीन व अस्लाफ़ से बहुत ज़्यादा मुख़्तलिफ़ था आप का मसलक व नेहज उन हज़रात से बिल्कुल जुदा था। आप अमीरों वज़ीरों और बादशाहों के दरबार दूरेबार से कभी वाबस्ता नहीं हुए आप ने गोशा नशीनी और खलवत गुज़ीनी, रहबानियत को कभी पसन्द नहीं फ़रमाया अगर आप ऐसा करते तो आप का मिशन कामयाब नहीं हो सकता था। आपने बड़ी जसारत और शहामत से अवाम व ख़्वास के लिए अपनी मज्लिस के दरवाज़े खोल दिए जो कुछ कहा बरमला कहा जो तनकीद की वह बराहे रास्त की, इशारों कनायों से कभी काम नहीं लिया, जो कुछ हिदायत फ़रमाई साफ़ साफ़ फ़रमाई। अमीरों, वज़ीरों और बादशाहों के किरदार व गुफ़्तार पर बरमला तनक़ीद की, खुल्लम खुल्ला उनके अफ़आले ज़मीमा और किरदार ना पसन्दीदा को हदफ़े मलामत बनाया। ज़ुल्म व तअ़द्दुदी पर बे धड़क उनको टोका और वाज़ेह तौर पर उनको सय्यात से रोका। आप जो कुछ फरमाते उसका इस्तिदलाल कुरआन व हदीस से फ़रमाते। तसव्वुफ़ के रमूज़ व निकात उमूमी मजालिस में कभी आप का मौज़ू नहीं रहे। आपने अपनी तर तव्वजोह इस अम्र पर मब्ज़ूल फ़रमाई कि लोगों के दिलों में कुरआन व हदीस का जज़्बए एहतराम बेदार किया जाए उनमें हर किस्म की कुरबानी और जिहाद फी सबी लिल्लाह का ज़ौक व शौक पैदा हो,

उमरा व सलातीन मुल्क गीरी की हवस से हट कर अद्ल व इन्साफ़ और अहयाए शरीअ्त के लिए करें जो कुछ करें उन को मजबूर किया कि उनकी जिन्दगी एक सच्चे और बा अमल मुस्लमान की ज़िन्दगी बने ताकि रईयत भी अन्नास अला दीना मलूकेहिम के मिसदाक़ सच्चे और बा अमल मुयलमान बन जाए। उलमा व ज़ुहहाद को हिदायत फ़रमाई की वह हिर्स व आज़ से अपना दामन बचा लें और ज़ुहद फ़रोशी का बाज़ार गर्म न करें। आलिमों को नसीहत फ़रमाई कि किब्र व रिया, नख़ुवत व ग़रुर से अपने दिलों को पाक करें चुनाचे अलल उमूम आप अपने वाज़ में यह अलफ़ाज़ ज़रुर फ़रमाया करते थेः

यानी अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इत्तिबा करो और बिदअ्त न निकालो और इताअ्त करो ना फ़रमानी न करो सब्र करो बे सब्री मत करो, सख़्ती के बाद आसानी और मुराद हासिल होने का इन्तेज़ार करो, न उम्मीद मत बनो। ख़ुदा के ज़िक्र पर भरोसा रखो आपस में फूट मत डालो। गुनाहों से तौबा करके पाक बनो और अपने मौला के दरवाज़े को म छोड़ो।

आप ने अपने इन मवाइज़ व ख़ुतबात में कभी [illegible]नियत और तर्के दुनिया का मशवरा अवाम या ख़्वास को नहीं दिया बल्कि इस बात पर ज़ोर दि[illegible] कि वह अपनी दुनिया की इस्लाह करें ताकि अच्छी आख़िरत का हुसूल मुम्किन हो सके, मेरे इस बयान पर आप के ख़ुत्बात व तक़ारीर (मौसूमा बेह मजालिस) शाहिद हैं जिन के मजमूआ अल[illegible]ब्बानी और फ़ुतूहुल गैब के नाम से आज भी मशहूर हैं। मैं अगर हर दो बलन्द पाया मजमूआ[illegible] मौज़ूआत को पेश करूं तो इस मुख़्तसर सवानेह मुबारका के सफ़्हात मु[illegible]हम्मिल नहीं हो सकते। फ़ुतुहूल गैब से चन्द मौज़ूआत पेश कर रहा हूं ताकि अ[illegible] हो सके [illegible] आप [illegible]सलमानों की दुनियावी इसलाह का किस क़दर ख़्याल फ़रमाते थे आप की नज़र में मुसलमानों की [illegible] कामरानी का राज़ सिर्फ़ इत्तिबाए रसूल और अहकाम शरीअ्त [illegible] पाबन्दी [illegible]मुज़मिर [illegible] लिए आप ने दीन के अहया के लिए इस का राह को इ[illegible]तेयार [illegible]रमाया जिसने बहुत जल्द सिर्फ़ [illegible]दाद वालों ही की नहीं बल्कि इराक़ व अजम और [illegible] हिजाज़ के मुसलमानो की भी काया पलट दी और यह आप ही के मवाइज़े हसना और ज़ोरे बयान का नतीजा था कि मुसलमानों की बे अमली ख़त्म हुई और उन में जज़्बए जिहाद फ़ी स[illegible]ाह एक ऐसा सैल तन्दूर बन गया कि दुनिया ने बहुत जल्द मुजाहिदे आज़म सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी और शहाबुद्दीन गौरी को कुफ़्र व ज़लालत की ना क़ाबिले शिकस्त कूव्वतों को पास पास करते देख लिया। हज़रत गौसे आज़म के मसलके रुश्द व हिदायत में हर नुक्ता पर हम को यह जज़्बए अमल और अहयाए शरीयत कार फ़रमा नज़र आता है इस लिए गौसे आज़म को उस वक़्त मोहीयुद्दीन के लक़ब से नवाज़ा गया और आज तक हुज़ूरे वाला का यह लक़बे जांफ़िज़ा दिलों पर नक़्श है और क़यामत तक सब्त रहेगा।

आइये अब चन्द उन्वानात मजालिसे हुज़ूर गौसे आज़म के मक़ालात से पेश करुं जिन का मजमूआ फ़ुतूहुलगैब के नाम से मौसूम है ताकि अन्दाज़ा हो सके कि हज़रत सय्यदना गौसे आज़म ने अहयाए दीन और इत्तेबाए शरीअ्त की किस क़दर कोशिश फ़रमाई।

फ़तूहुल ग़ैब के चन्द उनवानात

1—मक़ाला अव्वल—मोमिन के लिए तीन चीज़ें ज़रुरी हैं

2—मक़ाला दोम—बेहतर कामों के लिए नसीहत

3—मक़ाला पंजुम—दुनिया का हाल और उसकी तरफ़ इल्तेफ़ात न करने की ताकीद

4—मक़ाला दहुम—नफ़्स और इसके अहवाल

5—मक़ाला सीज़दहुम—अहकामे ख़ुदावन्दी की बजा आवरी

6—मक़ाला पांजदहुम—ख़ौफ़ और रजा

7—मक़ाला नौज़दहुम—ईमान की कूव्वत और ज़ोअ्फ़

8—मक़ाला बिस्ते दोम—मोमिन और उसका ईमान

9—मक़ाला सी दरदम—मोहब्बते इलाही में को[illegible] शिर्क नहीं

10—मक़ाला सी व पंजुम—तक़्वा इख़्तेयार न क[illegible] से हलाकत

11—चहल व शिम—मोमिन को अव्वल क्या काम [illegible]ज़िम है

12—मक़ाला पनजाह व सोम—खुशनूदीए इलाही त[illegible] करने की ता[illegible]द

13—मक़ाला पिन्जाह व नहुम—बला पर स[illegible] और ने[illegible]र शुक्र की ताकीद

14—मक़ाला शुस्त व चहारुम—म[illegible] अबद[illegible] और हयाते अ[illegible]दी

15—मक़ा[illegible] हफ़्ता [illegible]—खुदा के [illegible]थ कि[illegible]स तरह रहे [illegible]र किस मख़लूक़ के साथ किस तरह।

हुजूर सय्यद[illegible] गौसे आ[illegible]म के मक़[illegible]ाते वाल[illegible] मजमुआ अस्सी (80) मक़ालात पर मुश्तमिल है मैंने च[illegible] उन्वा[illegible]त पेश कर दिये हैं। फ़ुतूहुल ग़ैब [illegible]क़ालात के चन्द इक़्तिबासात इन्शा अल्लाह आइन्द[illegible]क में ब सिलसिला तसानीफ़ हुजूर सय्यदना गौसे आज़म पेश करुंगा।

हज़रत की दूसरी [illegible]शहूर तसनीफ़, अल फतहुर्रब्बानी है। इन तक़ारीर में जो मज्लिस के उन्वान से मौसूम हैं हज़[illegible]ास तौर पर उमरा और सलातीन से ख़िताब फरमाया है और उनकी बद अमालियों, रियाकारियों, शक़ावत और ज़ुल्म व सितम पर उनको ललकारा है। अलफ़तहुर्रब्बानी हज़रत की 62 मजालिस या 62 ख़ुतबात पर मुश्तमिल है यह ख़ुतबात बड़े बड़े अवामी जलसों में दिए गए थे और हक़ीक़त यह है कि अवाम के ज़हनी इन्क़ेलाब और उन की सच्ची रहनुमाई में उन ख़ुतबात का बड़ा दख़ल है।

यह था मुख़्तसर सा जाइज़ा हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो के इरशाद व दावत का। अपने तो अपने ग़ैरों यानी मुस्तशरेक़ीन ने भी आप की उन इस्लाही मसाई का ज़िक्र और उनका तआस्सुर और दिल नशीनी का एतराफ़ किया है।

हज़रत सय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी की दावते इरशाद व जिहाद के सिलसिला में मुख़्तसरन मैंने अभी ज़िक्र किया, और इससे क़ब्ल आप की दावत तरीक़त व मारफ़त को मुख़्तसरन पेश कर चुका हूं वहां मैंने एक चीज़ का ज़िक्र नहीं किया था यानी एक ग़ौस की करामतें। हमारे ज़माने ही में नहीं बल्कि क़ुरुने माज़िया में भी पीरे तरीक़त, क़ुतुब, अब्दाल व वली

उल्लाह की सवानेह हयात और उसकी ज़ात सतूदा सिफ़ात को जब तक करामतों से वाबस्त न किया जाए उसके मन्सबे वाला को मुकम्मल नहीं समझा जाता है। हर चन्द कि हूज़ूर गौ आज़म से बहुत सी करामतों का ज़हूर आप के सवानेह निगारों ने बयान किया है और शरह बस्त के साथ उन पर रौशनी डाली है। इन सब का माखज़ आप के पहले सवानेह निगार अब्दुल क़ादिर अश्शतूरी की बहजतुल असरार है जो आप के विसाल के सौ साल बाद लिखी गई थी उन करामतों में तमाम तर करामतें हैरत अंगेज़ और मोहय्यरूल उकूल हैं और उनका सुदूर हज़रत गौसे आज़म जैसे वलीए कामिल और गौसे वक़्त से ना मुम्किन नहीं। लेकिन इस में किसी वलीए कामिल का इरादा शामिल नहीं होता बल्कि जो कुछ होता है वह मन्शाए इलाही के तहत होता है। अल्लाह तआ़ला उन को तमाम कायनात पर मुतसर्रिफ़ फ़रमा देता है। लेकिन मेरी नज़र में हज़रत गौसे आज़म की तमाम करामतों को अगर एक पल्ला में रखा जाए और आप की उन एक्दामात व मसाई मश्कूरा को दूसरे पल्ले में जो अहयाए दीन के लिए आप से ज़हूर में आईं और शरीअ़त के तने बे जान में आपने दोबारा जान डाली। आप के मवाइज़ और आप की तक़ारीर ने हज़ारों भटके हुओं को मंज़िल पर पहुंचाया। हज़ारों मुन्करीने खुदा आप के दस्ते हक़ परस्त पर ईमान की दौलत से मुशर्रफ़ हुए तो क्या इससे बड़ी भी कोई करामत हो सकती है हरगिज़ नहीं। गौसे समदानी की यह सब से बड़ी करामत है कि उन्होंने ज़ालिमों को उनके ज़ुल्म पर टोका। अमारत व बादशाहत के दबदबा और सतवत से मरऊब न हुए और सलातीने वक़्त को भी उसी तरह झिड़का जिस तरह एक आमी को, क्या इससे बड़ी भी कोई करामत हो सकती है कि जाबिरों और सरकशों ने अपने सरों को आप के सामने ख़म कर दिया। इस लिए मैंने आपकी उन करामात का ज़िक्र करना ज़रुरी नहीं समझा जो आम सवानेह उमरियों में मौजूद है। अकीदत केश उन सवानेह उमरियों से इस्तेफ़ादा कर सकते हैं।

सिलसिला क़ादरिया

मसलके तसव्वुफ़ में किसी मुर्शिदे कामिल के हलक़ए इरादत में दाखिल होना उस सिलसिला में दाख़िल होना कहलाता है और औराद व वज़ाइफ़ और मुजाहिदात के बाद अगर पीरे तरीक़त अपने किसी मुरीद को बैअ़त की इजाज़त अता फ़रमा देता है तो उसका इज़हार इस तरह किया जाता है कि मज्लिसे ख़ास में पीरे तरीक़त उसका ऐलान फ़रमाता है और अपना ख़िरक़ा, जुब्बा या दस्तार उसको बतौरे इज़हारे नियाबत अता फ़रमाता है यही नियाबत ख़िलाफ़त कहलाती है। और साहिबे ख़िलाफ़त ख़लीफ़ा। चुनांचे हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी को भी हज़रत शैख़ अबू सईद अल मुबारक अल मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहो अन्हो से ख़िरक़ा शरीफ़ मिला था। हर चन्द कि आप को तसव्वुफ़ की तरफ़ रग़बत दिलाने वाले हज़रत अबूल ख़ैर हम्माद दब्बास (शीरा फ़रोश) हैं जो अपने वक़्त के निहायत मोहतरम और मशहूर सूफ़ी थे और अपने सूफ़ियाना तक़द्दुस और मुजाहिदात के लिए अतराफ़ व अक्नाफ़ में मशहूर थे और ज़ाहिर है कि हज़रत गौसुल आज़म ने उनकी मोहब्बते बा बरकत में जब ही क़दम रखा होगा जब उनके कमालाते बातनी और सिफ़ाते ज़ाहिरी से मुताअस्सिर हुए होंगे जब हज़रत अब्दुल क़ादिर ने हज़रत अबूल ख़ैर हम्माद दब्बास की सोहबत अख़्तियार की तो उस वक़्त वह एक होशमन्द मुफ़्ती ज़र्फ़ निगाह मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, फ़कीह और मुबल्लिग़ बन चुके थे ब ईं हमा ख़िर्क़ा ख़िलाफ़त आप को जैसा

की अभी ज़िक्र किया गया हज़रत शैख़ अबू सईदु अल मुबारक अल मख़ज़ूमी ने अता फ़रमाया और आप का सिलसिला हज़रत अबू सईद ही के वास्ते से हज़रत रिसालत पनाही सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक इस तरह पहुंचता है।

शजरए पेशवाई हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

1–हूज़ूर सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

2–हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहु

3–इमाम आली मक़ाम हसन बसरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

4–हज़रत शैख़ हबीब अजमी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

5–हज़रत शैख़ दाऊद ताई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

6–हज़रत शैख मारुफ़ करख़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

7–हज़रत शैख सिर्री सिक़्ती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

8–हज़रत शैख़ जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

9–हज़रत शैख़ अबू बकर शिब्ली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

10–हज़रत शैख़ अब्दुल वाहिद बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा

11–हज़रत शैख़ अबूल हसन क़रशी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

12–हज़रत शैख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

13–हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक में आप के सिलसिला में शजरए पेशवाई इसी तरह से मशहूर व मारुफ़ है लेकिन आप के सिलसिला और खानदान के अज़ीम फरज़न्द शैख़ ताहिर अलाउद्दीन नक़ीबज़ादा जिन का ज़ाविया और ख़ानक़ाह कोइटा में मरकज़ी हैसियत रखता है अपनी तसनीफ़ "तज़किरा क़ादरीया" में आप का शजरा पेशवाई इस तरह तहरीर फ़रमाते हैं –2

1–हज़रत सय्यदुल अम्बिया सरवरे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

2–हज़रत इमाम अमीरुल मोमेनीन अली इब्न अबी तालिब कर्रमल्लाहु वजहहु

3–हज़रत शहीदे करबला इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

4–हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

5–हज़रत सय्यद मुहम्मद बाक़र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

6–हज़रत सय्यद मुहम्मद जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

7–हज़रत सय्यद मूसा काज़िम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

8–हज़रत सय्यद अबूल हसन अली इब्न मूसा रज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

9–हज़रत शैख़ मारुफ़ करख़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

10–हज़रत शैख़ सिर्री सिक़ती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

11–हज़रत शैख़ अबूल क़ासिम जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

12–हज़रत शैख़ अबू बकर अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

13–हज़रत शैख़ अबूल फ़ज़्ल अब्दुल वाहिद अलमुतबन्ना रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

14–हज़रत शैख़ अबूल फ़रह तरतूसी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

15–हज़रत शैख़ अबूल हसन अली बिन मुहम्मद अलतमरशी अल हंकारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

16–हज़रत शैख़ अबू सईद अलमुबारक अल मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

17–हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी कुद्देस सिर्रहुल अज़ीज़

आप ने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि अव्वल शजरए पेशवाई में सरवरे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक हज़रत ग़ौसे आज़म बारह वास्तों से और इस शजरए पेशवाई में सोलह वास्तों से पहुंचते हैं।

हज़रत ग़ौसे आज़म का हुलिया शरीफ़

हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो अन्हो के मुरीदे बा सफ़ा शैख़ मौकिफुद्दीन तराना अल कुदसी फ़रमाते हैं कि हमारे शैख़ हज़रत मोहीयुद्दीन अबू मोहम्मद अब्दुल क़ादिर जीलानी नहीफुल बदन, उनका क़दे मुबारक सुतवां था अबरू बारीक और बाहम पै[illegible]ता थे आपका सीना गंजीनए मारफ़त था कुशादा था, रेशे मुक़द्दस घनी [illegible]वील व अरीज़ और ख़ु[illegible]नुमा थी। आप की आवाज़ बलन्द और दिल नशीन थी। (तज्किरा क़ादि[illegible]ा अज़ पीर ताहिर अ[illegible]ाउद्दीन साहब)

अल कौकबुज़्ज़ाहिर के मुसन्निफ़ सय्यद मोहम्मद अ[illegible]ल हुदा आफ़[illegible] रिफ़ा[illegible] इस सिलसिला में तहरीर फ़रमाते हैं।

शैख़ुल इस्लाम मोहीयुद्दीन हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादि[illegible]लानी रज़ियल्लाहो अन्हो बदन के लाग़र और मोतवस्सित क़ामत थे आप का सीना कुशादा था और रेशे मु[illegible]रक तवील और अरीज थी आप का रंग गंदुमी [illegible]ौर अबरु[illegible]ली हुई थीं और आ[illegible]ाज़ बहुत बलन्द थी। आप खुश रफ़्तार थे।

हूज़ूर ग़ौसे आज़म के अ[illegible]लाक़ [illegible] आदात

आप बहुत ख़लवत प[illegible]न्द थे अपने मदरसा से सिवाए जुमा [illegible] दिन के कभी बाहर तशरीफ़ नहीं लाते थे और उस [illegible] भी आप सिर्फ़ जामे मस्जिद और रेबात के कहीं और तशरीफ़ नहीं ले जाते। रास्त गोई आप का [illegible] था। उम्र भर में आप ने कभी झूठ नहीं बोला और आप की इस सिद्क़ मक़ाली पर [illegible] के उन्फ़वाने शबाब का वह वाक़ेआ शाहिद है कि जब डाकूओं ने आप को घेर लिया और दरयाफ़्त किया कि तुम्हारे पास कितना माल है तो आप ने साफ़ साफ़ कह दिया कि चालीस दीनार। कुरआन पाक की तरह आप ने जद्दे अमजद अहमदे मुजतबा सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस के भी हाफ़िज़ थे हम्बली मज़हब थे और हनाबिला के शैख़े वक़्त।

आप निहायत सालेह और रक़ीकुल क़ल्ब हमेशा ज़िक्र व फ़िक्र में महव रहते थे शरीअ़त के सख़्ती से पाबन्दी फ़रमाते, ख़लवत गुज़ीनी, मुजाहिदा, मेहनत व मशक़्क़त, मुख़ालफ़ते नफ़्स, कम ख़ोरी और कम ख़्वाबी आप का शेवा था। मदरसा के तदरीसी मन्सब की तफ़्वीज़ और अवामी जलसों के ख़िताब से पहले जंगलों और बयाबानों में रह कर इबादत करना आप का मामूल था। ज़ुहद व रियाज़त के सिलसिला में सख़्त उमूर को अपने नफ़्स के लिए इख़्तेयार फ़रमाते थे। आप बहुत ही सख़ी और साहिबे अख़लाक़े करीमाना थे आप का कलाम बा आवाज़े बलन्द और ब

सुरअ्त हुआ करता था। नेक बात बताने और बुरी बातों से रोकने के सिवाए आप और किसी बात में नहीं बोलते थे।

आप का दस्तरख़्वान बहुत वसीअ् था लेकिन आप हमेशा बहुत कम ग़िज़ा इस्तेमाल फ़रमाते थे इसी तरह लिबास भी मामूली होता था आप हमेशा मेहमानों के साथ बैठ कर खाना तनावुल फ़रमाते थे और उस वक़्त खाना पंसन्द फ़रमाते जब कुर्ब व जवार के नादारों और ज़रुरत मन्दों की एहतियाज पूरी हो जाती। आप गुर्बा और मसाकीन के साथ बैठना पसन्द फ़रमाते थे। तलबा का आप के गिर्द हुजूम रहता था और आप हर एक से ऐसा इलतिफ़ात फ़रमाते कि हर एक यही समझता कि हूज़ूर की नज़रे ख़ास उसी के साथ मख़सूस है आप न कभी उमरा व सलातीन की ताज़ीम के लिए उठे और न कभी उनके दरवाज़े पर तशरीफ़ ले गए न कभी उनके ग़ालीचों और क़ालीनों पर क़दम रखा और न कभी किसी अमीर व वज़ीर या सुलतान के साथ बैठकर खाना खाया। अगर किसी शख़्स की कार बर आरी के लिए ख़लीफ़ए वक़्त को नामा तहरीर फ़रमाते तो सिर्फ़ इस क़दर तहरीर फ़रमाते कि "अब्दुल क़ादिर तुम को इस बात का [illegible]म देता है। तुम पर उसका हुक्म नाफ़िज़ और उस हुक्म की इताअ्त [illegible]ब है रज़ियल्लाहो त[illegible]ला अन्हो

हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म की तसानीफ़

इस सवानेह मुबारक के आग़ाज़ में आप पढ़ चुके [illegible] कि हज़रत ग़ौ[illegible] आज़म का जीलान से क़तअ् मुसाफ़त फ़रमा कर बग़दाद तशरीफ़ लाने का म[illegible] यही था कि तिशनगीए इल्म को बुझायें और कुदरत को आप से यह अज़ीम काम लेना था कि आप अप[illegible] इरशादात और ख़ुतबात से गुम कर्दा राहों की र[illegible] करना है [illegible]ांचे जब आप बग़द[illegible] तशरीफ़ लाए कि उस अहद में ममालिके इस्ला[illegible]या के अज़ीम शहरों में उसको [illegible]कज़ीय[illegible]ासिल थी और यह शहर उलमाए मुतबहहरीन व मु[illegible]देसीन का [illegible]रकज़ ब[illegible] हुआ था [illegible] का मदरसा निज़ामिया की शोहरत दूर दूर तक फैल चुकी थी आप ने भी [illegible]सी मदरसा को इन्तेख़ा[illegible] किया और वहां जिन आसतज़ा किराम से आप को [illegible] का मौक़ा मिला उनमें से हर एक सपहरे इल्म का एक ज़ौ फ़िशां आफ़ताब था चुनांचे आप के असातज़ा में शैख़ अबूल वफ़ा, अली बिन तुफ़ैल, अबू ग़ालिब, मोहम्मद बिन हसन बाके[illegible] अबू ज़क्रिया, यहया बिन अली तबरेज़ी, अबू सईद बिन अब्दुल करीम, अबूल ग़नाइम, मोहम्मद बिन अली बिन मोहम्मद, अबू सईद बिन मुबारक मख़्ज़ूमी रहमहुल्लाहु तआ्ला अजमईन, क़ाबिले ज़िक्र हैं। उनमें से बहुत से असातज़ा हज़रात मुतअददिद गिरांमाया किताबों के मुसन्निफ़ थे। यानी अल्लामा अबु ज़करिया तबरेज़ी, बाक़ेलानी वग़ैरह हज़रात मुतअददिद मज़हबी व अदबी किताबों के मुसन्निफ़ थे। आप ने आठ साल तक उन मशाहीर असातज़ा से कस्बे फ़ैज़ फ़रमाया और जब 496 हि॰ में आपने उलूम की तक्मील की सनद हासिल कि तो ममालिके इस्लामीया में कोई ऐसा आलिम न था कि आप से हमसरी का दावा कर सके।

तहसीले इल्म के बाद जब आपने अपने उस्ताद के मदरसा की तदरीसी ख़िदमात उन की फ़रमाइश पर क़बूल फ़रमा लीं तो आप के औक़ात ज़्यादा तर मदरसा में गुज़रने लगे लेकिन कुद[illegible] को आप से जो काम लेना था अब उसका वक़्त आ गया था आप के दर्स में अब तलबा का हुजूम होने लगा था और हर दूर दराज़ के शहरों से आप के पास फ़तवे आया करते थे और

आप का बहुत सा वक़्त उन के जवाबात तहरीर करने में गुज़र जाता था लेकिन जब आप बग़दाद के अवाम व ख़्वास, वहां के उमरा और रईसज़ादों की बिगड़ी हुई हालत और तबाह हाल मुआशरत मुलाहिज़ा फ़रमाते तो आप को सख़्त तकद्दुर होता। आप चाहते थे कि अवाम व ख़्वास को ख़िताब फ़रमायें लेकिन चूंकि फ़ारसी आप की मादरी ज़बान थी और अरबी कस्बी और बग़दाद में फ़ारसी ज़बान में वाज़ व तज़्कीर का फ़ायदा मालूम। अरबी ज़बान में आप ख़िताबत से कतराते थे इस सिलसिला में अलकौकबुज़्ज़ाहिर के मुसन्निफ़ से एक रिवायत नक़्ल की है कि

शैख़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि बग़दाद में एक शख़्स वारिद हुआ लोग उसको शैख़ यूसुफ़ हमदानी कहते थे और लोग उसके क़ुतुबे वक़्त समझते थे वह रिबात में क़याम पज़ीर थे जब मैंने उनके बारे में सुना तो मैं भी रिबात की तरफ़ गया लेकिन मैंने उनको नहीं पाया। एक शख़्स ने मुझे बताया कि वह रिबात के तह खाने में हैं शैख़ कहते हैं कि मैं उनसे मिलने के लिए वहीं तह ख़ाना में पहुंचा जब उन्होंने मुझको देखा तो खड़े हो गए और मेरा हाथ पकड़कर अपने बराबर बिठाया और सब हाल ज़िक्र कर दिया और मेरी जो मुश्किलात थीं वह सब हल हो गईं फिर उन्होंने मुझ से कहा कि ऐ अब्दुल क़ादिर लोगों को नसीहत कर और वाज़ सुना, मैंने कहा कि मैं अजम का रहने वाला हूं बग़दाद के फुसहा के सामने मैं क्या कलाम करूंगा उन्होंने कहा तुम ने कुरआन मजीद हिफ़्ज़ किया है, इल्म फ़िक्ह, इल्मे वसूल, तफ़सीर, हदीस और इल्मे लुग़त, सर्फ़ व नहव वग़ैरह हासिल किया है। क्या यह तुम्हारा मनसब नहीं है कि लोगों को नसीहत करो (वाज़ सुनाओ) जाओ मिम्बर पर बैठो, और वाज़ कहो मैं तुम में दरख़्ते कमाल की असल देख रहा हूं और क़रीब है कि वह नख़ले बार आवर होगा।

इस ताईदे ग़ैबी के बाद आप से वह तज़बज़ुब रफ़ा हो गया और आप ने वाज़ कहना शुरु किया जिस की सराहत हम हूज़ूर के मामूलात के सिलसिला में कर चुके हैं आप वाज़ में अन्वाए उलूम से कलाम करते थे और हर तरह के इल्मी निकात और असरार बयान करते थे। जब आप मिम्बर पर वाज़ के लिए तशरीफ़ फ़रमा होते तो हाज़रीन में से कोई भी अदब के बाइस न खांसता था न खकारता था और जब आप वाज़ कहते कहते मिम्बर पर बैठने से ख़ड़ा हो जाते और कल्मा ज़बान से अदा फ़रमाते तो उस वक़्त लोगों में इज़्तेराब और बेक़रारी शुरु हो जाती थी। हाज़रीन पर वज्द और हाल की कैफ़ीयत तारी हो जाती थी और यह वह हाल था कि भटके हुए अपनी मन्ज़िल को पहुंचते और ज़लालत में फंसे हुए दीन की रौशनी का मुशाहिदा करते और आप के दस्ते हक़ परस्त पर ताइब होते और इस्लाम क़बूल करते इस कैफ़ीयत में आप जो कुछ कहना चाहते बेग़ैर किसी लिहाज़ के कहते। अमीरों, वज़ीरों, बादशाहों और ग़ासिबों को अलल ऐलान ललकारते और वह दम बख़ुद बैठे रहते, किसी की मजाल न थी, जो उस वक़्त कुछ अर्ज़ कर सके। उस वक़्त आप के लहजा में दरूश्ती पैदा हो जाती और अल्फ़ाज़ व मआनी का एक ऐसा दरिया मौजज़न हो जाता कि जो कुछ फ़रमाते दिलों पर नक़्श होता चला जाता इसी हाल में लोगों के दिली ख़तरात पर भी इशारे से फ़रमाते और क़ूव्वते कश्फ़ से फ़ौरन उन को मुख़ातिब फ़रमाते, ऐसे मौक़े पर हाज़रीन में से हर शख़्स आप के जलाल या कमाल का मुशाहिदा करता, अल्लाह तआला ने अपने महबूब बन्दे को यह ख़ूबी अता फ़रमाई थी कि हज़ारों नफ़ूस के मजमा में आप की आवाज़ दूर व नज़दीक यक्सां पहुंचती और हर एक बक़दरे अहलीयत व सलाहीयत उन नसीहते जान अफ़रोज़ व ईमान परवर से इस्तेफ़ादा करता।

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हज़रत गौसुस्सक़्लैन की मज्लिस वाज़ में चार सौ अफ़राद क़दम दवात लेकर बैठ जाते थे और जो कुछ वह हज़रत से सुनते थे लिखते जाते थे।

चुनांचे बहुत कम मुद्दत में हज़रत गौसे आज़म के मवाइज़ व इरशादात के दो अज़ीम मजमूअे 552हि॰ तक मुरत्तब हो गए एक फ़ुतूहुल गैब और दूसरा अलफ़तहुर्रब्बानी। इन दोनों मजमूओं के सिलसिला में मुख़्तसरन पहले अर्ज़ कर चुका हूं। फ़ुतूहुल गैब के मौज़ूआत को मैंने तफ़सील से गुज़श्ता सफ़्हात में ज़िक्र किया है। अलफ़तहुर्रब्बानी जो आप के मवाइज़ का मजमूआ है जो मुतअददिद मजालिस में तक़सीम है उन मजालिस के मौज़ूआत भी नही अनिल मुनकर और अम्र बिन मारूफ़ हैं बाज़ मजालिस अख़लाक़ी मौज़ूआत पर भी मुश्तमिल हैं। ज़ैल में अलफ़तहुर्रब्बानी की चंद मुतफ़र्रिक़ मजालिस से इक़्तेबासात पेश हैं:

ऐ बाशिन्देगाने बग़दाद! तुम्हारे अन्दर निफ़ाक़ ज़्यादा और इख़्लास कम हो गया और अक़्वाल बिला आमाल बढ़ गए। तुम्हारे आमाल का बड़ा हिस्सा जसदे बे रुह है क्योंकि रुह इख़्लास व तौज़ीह और अल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह पर क़ाइम रहने का नाम है। ग़फ़लत मत करो, अपनी हालत को बदलो ताकि राह पाओ।

ऐ सोने वालो! जाग उठो, बेदार हो जाओ, गफ़लत शिआरो जाग उठो। ऐ सोने वालो, जिस पर भी तुम ने एतमाद किया और जिससे तुम ने ख़ौफ़ किया और तुम ने तवक़्क़ो रखी वह भी तुम्हारा माबूद है और नफ़ा व नुक़्सान जिस पर तुम्हारी नज़र पड़े और तुम यूं समझो कि हक़ तआला उसके हाथों उस नफ़ा व नुक़्सान का जारी रखने वाला है तो वह तुम्हारा माबूद है। अन्क़रीब तुम को अपना अन्जाम नज़र आ जाएगा।

ऐ मौलवीयों, ऐ फ़क़ीहो, ऐ ज़ाहिदो, ऐ आबिदो, ऐ सूफ़ियो! तुम में कोई ऐसा नहीं जो तौबा का हाजत मन्द न हो, हमारे पास तुम्हारी मौत व हयात की तमाम ख़बरें हैं। वह मोहब्बते सादिक़ जिस में तग़य्युर न आए वह मोहब्बते इलाही है वही है जिस को तुम अपने क़ल्ब की आंखों से देखते हो और वही मोहब्बते रुहानी सिद्दीक़ों की मोहब्बत है।

अलफ़तहुर्रब्बानी की यह तमाम बासठ मजाल्सि इन ही रुश्द व हिदायत का मजमूआ हैं आप ने वक़्त की दुखती रग पर दस्ते मुबारक रखा था दिलों के चोर आप ने ज़ाहिर फ़रमाए थे इस लिए आप जो कुछ फ़रमाते थे वह दिल नशीं होता था आप का अन्दाज़े बयान इस क़दर मोअस्सिर और पुर हैबत होता था कि दिल लरज़ उठते थे जिस्मों पर रअ्शा तारी हो जाता था और उनपर दरे तौबा खुल जाता था।

अल फ़तहुर्रब्बानी का अन्दाज़े बयान और इशाअ्ते अव्वल

अलफ़त्हुल रब्बानी का तमाम तर अन्दाज़ बयाने ख़तीबाना है एक वालहियाना जोश है जो हर नुक़्ता में मौजज़न है छोटे छोटे जुम्ले वसीअ् मआनी और मफ़हूम लिए हुए हैं इस्तेआरह और तश्बीहा से ख़ाली। जो कुछ कहते हैं और वाशिगाफ़ फ़रमाते हैं। इजाज़ व इब्हाम को उन में जगह नहीं देते बयान में एक अजीब व ग़रीब दबदबा और तन्तना है अलफ़ाज़ का शोर व ज़ोर बताता है कि उन का क़ातिल एक ऐसी हस्ती है जो ज़माना परसती से बे नियाज़ हो कर सदाक़त के रास्ते पर गामज़न है।

मुझे अफ़सोस है कि इस मुख़्तसर सवानेह हयात में इस क़दर गुंजाइश नहीं कि मैं हूज़ूर सय्यदना गौसे आज़म की इनशा और ज़बान की बारीकियों और उनकी खुसूसीयात को बयान कर सकूं और न मैं अपने क़लम में यह कुदरत पाता हूं कि उन कमालात का इस्तिक़सा कर सकूं जो सय्यदना गौसे आज़म की इनशा में पाए जाते हैं सिवाए इसके कि "जो दिल से जो बात निकलती है असर रखती है" हज़रत गौसे आज़म जो कुछ फ़रमाते थे दिली जोश और ताईदे इलाही से फ़रमाते थे इस लिए आप का कलाम मोअस्सिर और दिल नशीन था।

अलफ़तहुर्रब्बानी की इशाअ़त

अलफ़तहुर्रब्बानी जो सय्यदना गौसे आज़म के उन ख़ुत्बात और इरशादात का मजमूआ है जो आप ने अपनी मज्लिस में शव्वाल 545 हि॰ से रजब 546 हि॰ तक यानी एक साल की मुद्दत में इरशाद फ़रमाए उन मजालिस या ख़ुत्बात की तादाद 62 है। अलफ़तहुर्रब्बानी सब से पहले मिस्र में 1202 हि॰ में शाया हुई इस क़ब्ल उस मख़्तूते की मुतअद्दिद नक़लें अक़ीदतमन्दों के कुतुब ख़ानों में मौजूद थीं। अलफ़तहुर्रब्बानी के अब तक उर्दू फ़ारसी और अंग्रेज़ी में मुतअददिद तर्जमे शाया हो चुके हैं लेकिन अभी तक मत्न के साथ कोई उर्दू तर्जमा मेरी नज़र से नहीं गुज़रा। और न आप के सवानेह निगार हज़रात ने इस तरफ़ कोई तवज्जोह की है चुनांचे अगर आप तफ़हहुस और जुस्तजू करें तब भी आप को हूज़ूर की इनशा परदाज़ी और ज़बान व बयान के सिलसिला में चन्द सतूर भी नहीं मिल सकीं।

फ़ुतूहुल ग़ैब

अलफ़तहुर्रब्बानी की तरह फ़ुतूहुल ग़ैब भी हज़रत सय्यदना गौसे आज़म के ख़ुतबात का मजमूआ है इस में 78 ख़ुतबात हैं यह ख़ुतबात भी अहकामे शरीअ़त और तरीक़त पर मुशतमिल हैं। बाज़ मक़ालात के उन्वानात में साबिक़ा सफ़हात में ज़िक्र कर चुका हूं। फ़ुतूहुल ग़ैब के दो आख़िरी मक़ाले यानी 79 वां और 80 वां हज़रत के साहबज़ादे अब्दुल वहहाब ने अर्ज़ हाल में मुरत्तब किए। गोया आप के असल मक़ालात 78 हैं।

फ़ुतूहुल ग़ैब का अन्दाज़े बयान

अलफ़तहुर्रब्बानी की तरह फ़ुतूहुल ग़ैब का अन्दाज़े बयान भी ख़तीबाना है लेकिन इसमें वह हैबत और शिद्दते ख़िताब नहीं है जो अलफ़तहुर्रब्बानी में है और इसकी वजह यह है कि यह ख़ुतबात तहदीदिया नहीं हैं बल्कि इलामिया हैं उनमें शरीअ़त व तरीक़त के मबाहिस हैं जिन को आपने बड़े दिल नशीन तरीक़े पर बयान फरमाया है मैं यहां सिर्फ़ एक ख़ुतबा से इक़्तेबास पेश कर रहा हूं।

जब तू (मख़लूक़ के) एतबार से मर जायेगा तो तुझे कहा ज़ायेगा तुझ पर अल्लाह की रहमत हो और अल्लाह तआला तुझ को ख़्वाहिशाती नफ़्सानी (के एतबार) से मारेगा और जब तू अपनी ख़्वाहिशात से मर जायेगा तो तेरे लिये कहा जायेगा कि अल्लाह तुझ पर रहमत करे और अल्लाह तुझे तेरी ख़्वाहिश, आरज़ू और इरादा (एतबार से) मार देगा फिर जब तू अपने इरादे और आरज़ू (के एतबार) से मर जायेगा तो तुझे कहा जायेगा कि अल्लाह तुझ पर रहम फ़रमाये फिर तुझे अल्लाह ज़िन्दा करेगा और उस वक़्त तू ऐसी ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा किया जायेगा जिसके बाद

मौत नहीं।

(मकाला चहारूम) सिद्दीकियत का मकाम और मर्गे मानवी इस खुतबा में इरशाद फ़रमाते हैं तेरे पास अबदाला आयेंगे तुझ से (दूसरों की) मुश्किलें हल होंगी तेरी दुआ से मेंह बरसेगा और तेरी बरकत से खेतियां उगाई जायेंगी और तेरी दुआ से हर ख़्वास व आम, अहले सरहद, राई और अइम्मा (सरदाराने उम्मत) और उम्मत और तमाम मख़लूक़ से मुसीबतें और बलायें दूर की जायेंगी।

फ़ुतूहुलग़ैब के अन्दाज़े बयान में भी ज़ोर है लेकिन अलफ़तहुर्रब्बानी के मक़ाबल। में इनशा की खुसूसियात और असलूबे बयान में इस अस्र के महासिन इनशा को ईराद करने के ज्यादा आसान मवाक़े हैं चुनांचे मुन्दर्जा बाला इक़्तेबासात में सीधी साधी तराकीब है बयान में उलझाव नहीं है। अलबत्ता मुसज्जा का इल्तेज़ाम मौजूद है गोया मुक़फ़्फ़ा व मुसज्जा इबारत है लेकिन आवरद नहीं बल्कि आमद है एक दरिया है जो रवानी और ज़ोर शोर से बह रहा है मुझे अफ़सोस है कि मैं इख़्तेसार के बाइस मज़ीद मिसालें पेश करने से क़ासिर हूं वरना मैं आप की इनशा परदाज़ी पर अपनी बिसात और कुव्वते क़लम के [illegible] मज़ीद तहरीर करता।

फ़ुतूहुल ग़ैब की इशाअत और फ़ारसी उर्दू तराजिम

फ़ुतूहुल ग़ैब भी सबसे पहले 1281 हि० में मिस्र में त[illegible] हुई इससे क़ब्ल अतराफ़ व अक्नाफ़ में इस के मख़तूते और क़लमी नुस्ख़े मौजूद थे। हिन्दुस्ता[illegible] हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने अपने मुर्शिदे कामिल और पीरे तरीक़त हज़रत अब्दुल वह[illegible] शाज़ली क़ादरी मक्की के इरशाद की [illegible]मील में [illegible] का फ़ारसी [illegible] में तर्जमा किया यह तर्जमा सतरहवीं सदी ईसवी में किया गया और जिस क़लमी नुस्ख़ा से किया [illegible] है [illegible] कोशिश मुझे वह फ़ारसी नुस्ख़ा दस्तयाब न हो सका। वरना मैं तर्जमा की सही तारी[illegible] करता। हज़रत शैख़ मुहद्दिस देहलवी के फ़ारसी तर्जमा [illegible] फ़ुतूहुलग़ैब के मुतअद्दिद उर्दू और अंग्रेज़ी [illegible]जमे शाय हुए उन उर्दू तर्जमों में मक्तबा मुजतेबाई [illegible] का तर्जमा क़दीम तरीन उर्दू तर्जमा कहा जा सकता है नवल किशोर प्रेस लखनऊ ने भी फ़ुतूहुल ग़ैब का उर्दू तर्जमा 19वीं सदी के आख़िर में शाया किया उस का एक अंग्रेज़ी तर्जमा मेरे सामने मौजूद है डाक्टर आफ़ताबुद्दीन अहमद उस अंग्रेज़ी तर्जमा के मोअल्लिफ़ व मुतर्जिम हैं।

हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म की अहम तरीन तस्नीफ़ अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ (अलमारुफ़ बेह गुनियतुत्तालेबीन) है जिस का तर्जमा सलासत के साथ असरे हाज़िर के तक़ाज़ों के बमोजिब आपके सामने पेश किया जा रहा है और यह सवानेह उमरी बतौरे दीबाचा तहरीर की गई है।

अलगुन्यितुत्तालिब तरीकुलहक़ सभी दूसरे मख़तूतात की तरह 1288 हि० में मिस्र में पहली बार तबअ् हुई मैंने दस मतबूआ नुस्ख़ा के तबअ् सोम से इस का तर्जमा किया है। हिन्दुस्तान में इस का फ़ारसी ज़बान में सबसे पहला तर्जमा मुल्ला अब्दुल हकीम सियालकोटी ने किया है जो हज़रत शैख़ मोहद्दिस देहलवी के मुआसेरीन उलमा में एक मुमताज़ मकाम रखते थे। और आज भी दरसे निज़ामी की किताबों पर उन के हवाशी सनद समझे जाते हैं।

उर्दू में गुनियतुत्तालेबीन का तर्जमा सबसे पहले नवल किशोर प्रेस लखनऊ ने शाया किया

यह उर्दू तर्जमा उसी अरबी मत्न का है जो नवल किशोर प्रेस ने शाया किया था यह तर्जमा मौलवी महबूबुद्दीन और मौलवी जमाल अहमद साहबान ने किया है इस के अलावा भी चन्द और उर्दू तर्जमा देहली और पंजाब में शाया हुए लेकिन सेहत का ख़्याल किसी नुस्ख़ा में नहीं रखा गया। अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ 14–अबवाब पर मुश्तमिल है और हर बाब के तहत मुतअ़ददिद फ़सलें हैं। किताब का एक अहम बाब "अदाबुल मुरीदीन के नाम से मौसूम है अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ का असलूबे बयान बहुत दिलकश है बजाये इजमाल के इसमें तफ़सील मौजूद है हज़रत ने ईमान व अरकाने इस्लाम व इबादात के सिलसिले में जो बयान किया है वह तफ़सील के साथ दिलकश अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है अगरचे आप हंबली मज़हब के पैरौ थे लेकिन आप ने दीगर मज़ाहिब के एख़्तेलाफ़ी मबाहिस को बहुत कम छेड़ा है आप की इस तसनीफ़े गिरां माया ने भी इस्लाही तहरीक में बड़ा काम किया, और फ़ुतूहुल ग़ैब और अलफ़तहुर्रब्बानी से ज़्यादा अवाम व ख़वास में मक़बूल हुई। मैं यहां इस क़दर बयान ही पर इक्तेफ़ा करता हूं कि "हरफ़े आग़ाज़ में ग़ुनियतुत्तालेबीन के सिलसिला में तफ़सील से पहले लिख चुका हूं।

हज़रत के सवानेह निगारों ने इस बात पर इत्तेफ़ाक़ किया है कि उन मशहूर व मारुफ़ ईमान अफ़रोज़ कुतुब के अलावा भी अरबी ज़बान में आप ने मन्दर्जा ज़ैल कुतुब तसनीफ़ फ़रमाई थीं। यानी उनमें एक हिज़्ब नशारूल ख़ैरात है उसमें दरुद शरीफ़ के फ़ज़ाइल व बरकात से बहस फ़रमाई है इस के अलावा अलयवाक़ीत वल हिकम, अल फ़ुयूज़ातुर्रब्बानिया, अल मवाहिबुर्रहमानिया आप की तसानीफ़ हैं हज़रत के मशहूर फ़रज़न्दाने अख़लाफ़ में हज़रत शैख़ ताहिर अलाउद्दीन साहब आप की तसानीफ़ के सिलसिला में मुन्दर्जा बाला कुतुब के अलावा ज़ैल की चन्द कुतुब की भी निशानदेही फ़रमाते हैं (1) अलमवाहिबुर्रहमानिया वलफ़ुतूहातुर्रहमानिया (2) जिलाउल ख़ातिर (3) सिर्रुल असरार हर दो मज़कूरा कुतुब के सामने आपने यह नोट तहरीर किया है। कश्फ़ुल ज़ुनून जामी ने ज़िक्र किया है जो ख़लीफ़ा थे, ग़ालिबन इससे पीर ताहिर अलाउद्दीन साहब की यह मुराद है कि हाजी ख़लीफ़ा ने अपनी किताब कश्फ़ुल ज़ुनून" में इन कुतुब का ज़िक्र किया है। (4) रद्दुर्राफ़िज़ा (मदरसा क़ादरिया में इसका क़ल्मी नुस्ख़ा मौजूद है) तफ़सीरे कुरआन करीम दो जिल्द।

अरबी ज़बान में हज़रत की हर सेह कुतुब यानी अलफ़तहुर्रब्बानी, फ़ुतूहुल ग़ैब और अल ग़ुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ पर तमाम सवानेह निगार और मोअर्रेख़ीन का इत्तेफ़ाक़ है।

हज़रत सय्यदना गौसे आज़म की शायरी

बुज़ुर्गाने दीन व मिल्लत, अकाबरीने सूफ़ियाए कराम मुफ़क्केरीने एज़ाम की शायरी, नाम व नुमू के लिए न थी और न मज़ाके शायरी और मजमूआ अश्आर उन के लिए सरमाये इफ़्तिख़ार व इम्तेयाज़ हो सकता है बल्कि ख़ुद उन हज़रात का शेअरी अदब पर एहसाने अज़ीम है कि उन्होंने अपने पाकीज़ा जज़्बात व एहसासात से ख़्वाह अरबी ज़बान हो या फ़ारसी अदबीयात को सर बलन्दी बख़्शी और अदब इस क़ाबिल बनाया कि पाकीज़ा महफ़िलों और मुक़द्दस मज्लिसों में पढ़ा जा सके। उन हज़रात के लिए फ़न्ने शायरी कोई ऐसा दुशवार गुज़ार मरहला न था कि किसी उस्ताद के सामने ज़ानूए अदब तय किया जाता या उसके हुसूल में उमरे अज़ीज़ को सर्फ़

किया जाता। बल्कि उन हज़रात का तबहहुरे इल्मी दूसरे फ़ुनून की तरह इस फ़न में भी इज़हारे ख़्याल के रास्ते तलाश कर लेता था।

चुनांचे अम्मे मोहतरम रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू तालिब, हज़रते हस्सान बिन साबित, हज़रते कअ्ब बिन ज़ुहैर रज़ियल्लाहो तआ़ला अन्हुम मुतक़द्दमीन शोअ्राए अरब की सफ़े अव्वल में नुमाया हैसियत रखते। हां अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब सय्यदुल अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए इस फ़न को शायाने शान नहीं बनाया वरना हूज़ूर से ज़्यादा बेहतर हम्दे इलाही पैरहने शेअ्र में और कौन पेश कर सकता था। सूरह शोअ्रा में अल्लाह तआ़ला ने दुनिया दार शोअ्रा और फ़िस्क़ व फुजूर से भर पूर शायरी की मज़म्मत फ़रमाई है लेकिन असहाबे ईमान व ईक़ान का इससे इस्तिश्ना फ़रमा दिया है। हज़रत हस्सान व हज़रत कअ्ब बिन ज़ुहैर रज़ियल्लाहो तआ़ला अन्हुमा के बाद पहली सदी हिजरी से पांचवीं सदी हिजरी तक बहुत से अरबी और फ़ारसी ज़बान में शेअ्र कहने वाले अकाबेरीने मिल्लत उलमाए उम्मत मौजूद हैं हज़रत अब्दुर्रहमान जामी, हिजवेरी (दाता गंज बख़्श) हज़रत ख़्वाजा ख़्वाजगान ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी, हज़रत शैख़ सअ्दी शी[illegible] क़ादरी हज़रत शैख़ अकबर मोहीयुद्दीन अल मारुफ़ बेह इब्ने अरबी और हज़रत अमीर ख़ुसरु ब[illegible]सियत आरिफ़े बिल्लाह और बतौरे शायर किसी तआ्रुर्फ़ के मोहताज नहीं। पस हज़रत सय्यदना गौ़से आज़म [illegible]ज़ क़साइद के बारे में बा आसानी यह कह देना कि आप का कलाम नहीं कौ[illegible] निशमंदाना क़ौल नहीं है।

चूंकि अरबी शायरी सिर्फ़ क़सीदे और मरसीया का नाम है इस ज़बान में (बज़माने क़दीम) न ग़ज़ल थी न रुबाई न क़त[illegible] था न मस[illegible]। यह सब असनाफ़े सुख़न फ़ारसी शायरी के पैदा वार है। अरब में मुद्दतों तक क़सीदे की त[illegible]ब ही से ग़ज़ल [illegible] काम लिया जाता था और बस। चुनांचे आरिफ़ बिल्लाह गौ़से आज़म की तमाम त[illegible] हम्दीया क़सीदों पर मुश्तमिल है उन क़सीदों में एक क़सीदा ख़मरीया और एक क़सीदा [illegible]मिया है।

अफ़सोस कि य[illegible] क़सीदा कि मेरे सामने नहीं है वरना बक़द्रे कुव्वत और इदराक व फ़हम इस सिलसिला में कु[illegible] करता। हां क़सीदए गौ़सिया जो हज़रत के वारदाते क़लबी का आईनादार और आप के मनस[illegible]लील का तर्जमान है मेरे पेशे नज़र है इस सिलसिला में इतना अर्ज़ करुंगा कि इस क़[illegible] का तवातुर के साथ हज़रत के तमाम सवानेह निगार हज़रात पेश करते आए हैं और इसके बाज़ अशआ्र के सिलसिला में बहुत से वाक़ियात बुज़ुर्गाने दीन से मन्सूब किए गए हैं वह लोग जो इस क़सीदे को हज़रत की तसनीफ़ नहीं बताते वह अपने क़ौल की ताईद और सबूत में कोई मसकत दलील नहीं पेश कर सके। बजुज़ इसके हज़रत गौ़से आज़म बहुत ही मुतवाज़े और मुन्कसिरुल मिज़ाज थे आप ऐसे अशआ्र जिन में उलूए मरतबत और तरफ़्फ़ो दरजात का ज़िक्र बड़े फ़ख़्रिया अन्दाज़ में किया है किस तरह अवाम के सामने पेश कर सकते थे। ऐसे मोअ्तज़रीन की तादाद बहुत कम है सिर्फ़ एक हस्ती इस सिलसिला में क़ाबिले ज़िक्र है और वह है जनाब रशीद रज़ा मिस्री मुदीर रेसाला अलमनार। लेकिन उन्होंने भी सिर्फ़ इतना कहा है कि यह क़सीदा आप की तरफ़ मन्सूब है" हक़ीक़त यह है कि आप के इस क़सीदे का मानवी रंग आप की तसानीफ़ से बिल्कुल अलग है। मैं ज़बान के बारे में अर्ज़ नहीं कर रहा हूं बल्कि मज़मून की नौईयत की तरफ़ इशारा है। आप अपनी तसानीफ़ में एक मुबल्लिग़, एक हादी व रहनुमा और अज़ाबे अलीम से डराने वाले और ख़ुदावन्द समीअ व बसीर की ताअ्त

व बन्दगी पर आमादा करने वाले एक साहबे दानिश व बीनश मुर्शिद हैं और क़सीदा गौ़सिया में आप जमाअ्ते औलियाए किराम और गरोहे सूफ़ियाए एज़ाम से मुख़ातिब हैं और उस मन्सबे वाला कि तरफ़ इशारा करते हैं जो बारगाहे नुबूव्वत से आप को तफ़वीज किया गया है। हजरत मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने फ़ीह रा फ़ीह में इस क़सीदे के बारे में तहरीर किया है, कि

"क़सीदा गौ़सिया शरीफ़ भी उसी मक़ामे कुर्ब के एक ख़ुद्दार और और सुक्र याफता की आवाज है जिस को सय्यदना गौ़से आज़म के बातनी हाल की एक इजतेमाई तफ़सीर समझना चाहिये।

हज़रत मौलाना रूम ने जो कुछ कहा है वह हर्फ़ ब हर्फ़ बजा है क़सीदा गौ़सिया कि यही हक़ीक़त है निगाहे ज़ाहिर बीं और दिल ज़ाहिर परस्त इस हक़ीक़त का इदराक और इसका फ़हम नहीं कर सकता, अब मैं क़सीदा गौ़सिया को ज़ैल में दर्ज करता हूं, और अपने फ़ितरी मज़ाके शायरी के बदौलत इस का मनजूम तर्जमा पेश करने कि इजाज़त चाहता हूं, हर चंद समझता हूं कि मेरा मनजूम तर्जमा उन मआरिफ़ व हक़ाइक़ को एहाता नही कर सकता जो हज़रत सय्यदना गौ़से आज़म के कलामे मोअजिज़ निज़ाम में मौजूद हैं लेकिन इस लेहाज़ से कि उर्दू शायरी में अब तक यह जसारत किसी शायर ने नहीं कि है शायद मेरी यह कोशीश बारगाहे गौ़सियत में शरफ़े क़बूलीयत पा ले और उस बेकार शायरी का बदल हो सके जिस के लिए हिन्दुस्तान में बहुत से माह व साल मैंने गंवा दिये हैं।

क़सीदा गौ़सिया तर्जमा मनजूम

सागर भरे हैं इश्क़ ने बज़्मे विसाल के
ला जिस क़दर थे खुम [illegible] जमाल के
सागर भरें हैं मेरी जानिब रवां हुये
[illegible] हूं मियाने हलक़ए याराने हाल के
आवाज़ दे रहा हूं कि अकताबे दहर आओ
[illegible] हो तुम अगर अभी इसलाहे हाल के
हिम्मत करो बढ़ो, चले आओ, उठाओ जाम
यह खुम पे खुम भरे हैं शराबे विसाल के
मेरी बची शराब तो पी, तुम ने दोस्तों
लेकिन अभी तो दौर हैं जीने वसाल के
तुम सब का भी बुलंद अगरचे मक़ाम हैं
शायां नहीं हो तुम मेरी शाने कमाल के
मैं तो ग़रीक़ जलवए हुस्ने कदीम हूं
काफी करम हैं मुझ को मेरे जुल जलाल के
हूं जिरह बाज़ सारे शुयूख़ाने दहर का
किस को मिले हैं औज यह फ़ज्ल व कमाल के

पहने हुए हूं अज़्म व अज़ीमत की ख़िलअतें
कहते हैं ताज हैं मेरे सर पर कमाल के
राज़े क़दीम से मुझे आगाह कर दिया
मुझ पर अतायें की हैं एवज़ हर सवाल के
वाली बनाया है मुझे अकताबे दहर का
नाफ़िज़ है मेरा हुक्म अब हर एक के हाल के
पानी समुन्दरों में न बाक़ी रहे कहीं
मैं उन पर खोल दूं जो रमूज़ अपने हाल के
हो जाए उनपे फ़ाश मेरा राज़े इश्क़ गर
हो जाएं रेज़ा रेज़ा यह तोदे जिबाल के
मैं गर करूं बयान मोहब्बत की दासतां
हो जाए आग सर्द [illegible] इश्तेआल के
मुर्दा अगर सुने जो भी [illegible]रे राज़ को
जी उठे यह करम हों मेरे [illegible]ल जलाल के
मुस्तक़बिल जहान के मंज़[illegible] सामने
परदे तमाम उठ ग[illegible]ए माज़ी व [illegible]ाल के
[illegible]ाह कर[illegible] है य[illegible] ज़माना मुझे मदाम
[illegible]री अबस ह[illegible]स्द [illegible] बहसो [illegible]दाल के
है ति[illegible]नगी में [illegible]त्फ़ कि[illegible] है वह
मे[illegible] मुरीद न[illegible] ले बस [illegible]ल जल[illegible] के
[illegible]ल्लाहु रब्बी ख़ौफ़ न कर ऐ मेरे मुरीद
[illegible] मंज़िले मुराद क़रीं मेरे हाल के
[illegible]ू में ख़ैर व करम के नक़ीब हैं
[illegible] हैं आसमां से ज़मीं तक कमाल के
अल्लाह के शहरो मलक हैं सब मेरी मिलकियत
महकूम हैं यह सब माज़ी व हाल के
ख़ामोश शाह से भला डरता है क्यों मुरीद
जौहर नेहां हैं मुझ में जिदाल व क़िताल के
सब मुल्क मेरे सामने यूं हैं कि ख़ाक पर
फ़ेकें हों जैसे राई के दाने उछाल के
सरदार व क़ौमे क़ुत्ब का दर्जा मुझे दिया
मौलाए कुल के लुत्फ़ जो शामिल थे हाल के
हूं औलियाए वक़्त में बेमिस्ल व बे नज़ीर
हैं एख़्तियार इल्म के तसरीफ़े हाल के

तपते दिनों में सौम से रह कर मेरे मुरीद
रख़्शां हैं तैरगी में यह मोती कमाल के
रखतें है औलियाए तक़लीईद नक़्शे पा
रहबर मेरे हैं चांद जहाने कमाल के
यानी नबीए हाशिम, मक्की शहे हेजाज़
सदका उन्हीं का हैं यह मरातिब कमाल के
जीली हूं और दीन का मोही लक़ब मेरा
कूहो जबल पे नस्ब हैं परचम जलाल के
मेरा बड़ा घराना है दादा हसन मेरे
हैं पांव गरदनों पे तमामी रिजाल के
मौसूम हूं मैं बन्दए क़ादिर के नाम से
जद्द मेरे ताजदार हैं ऐनुल कमाल के

हज़रत ग़ौसे आज़म की फ़ारसी शायरी और फ़ारसी मकतूबात

हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म के फ़ारसी मकतूबात भी मौजूद हैं और फ़ारसी शायरी का दीवान भी, फ़ारसी मकतूबात सिर्फ़ चन्द हैं और उनमें भी जा बजा आयाते कुरआनी से इस्तिदलाल है और वही ज़ोरे बयान हैं जो फ़तहुर्रब्बानी और फ़ुतुहुल गैब का अन्दाज है फ़ारसी दीवान के बारे में अकसर हज़रात का यह ख़्याल है कि वह दीवान आप का नहीं है हर चन्द कि क़दीम तज़किरा नवीसों ने इसको आप ही से मनसूब किया है मैं यहां इस बहस को नही छेड़ना चाहता हां यह ज़रूर कहूंगा कि यह कह देना बहुत आसान है कि फ़लां दीवान फ़लां हस्ती से ग़लत मनसूब कर दिया है जिस तरह हाफ़िज़ मोहम्मद शीरानी मरहूम अपने एक दो वरक़ी रेसाला में ख़्वाजा ख़्वाजगाने चिश्त के मौजूदा फ़ारसी दीवान से इन्कार कर दिया और दलाएल निहायत कमज़ोर और बोदे पेश किए, अलहम्दुलिल्लाह कि राक़िमुल हुरूफ़ और मेरे अज़ीज़ दोस्त बिरादरम क़ाज़ी मुईनुद्दीन चिश्ती क़ादरी ने पांच साल की मुतवातिर क़ोशिश से उनके इस ख़्याल को बातिल कर दिया और हर हर पहलू से यह साबित कर दिखाया कि वह दीवान ख़्वाजा अजमेरी ही का है यह किताब लमआते ख़्वाजा के नाम से जल्द आप के हाथों में पहुचेंगी।

हज़रत ग़ौसे आज़म का विसाल

मशअले नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रौशन होने वाला चिराग़ जिसकी ज़ियाबारियां अरब व अजम से रुम व मिस्र व शाम तक पहुंचीं हिन्द व तुरकिस्तान के अंधेरों मैं जिसने रौशनी फैलाई यानी शरीअ़त के अलम बरदार तरीक़त व मारफ़त के इमाम और मज्लिसे रुहानियान के सदर नशीन हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म ने 91साल की उम्र में 11 रबीउस्सानी 561हि॰ मुताबिक़ 1165ई॰ वासिल बहक़ हुए बाज़ सवानेह निगारों ने जिनमें चन्द मुस्तशरेक़ीन शामिल हैं आप की तारीख़े विसाल 9 रबीउस्सानी बताई है आप की वफ़ात नमाज़े ईशा के बाद हुई तमाम अतराफ़ व अक्नाफ़ में रात भर मैं ख़बर फैल गई और लोगों के इज़दहाम का यह आलम हुआ कि दिन में आप की तद्फ़ीन अमल में न लाई जा सकी बल्कि दूसरी शब में आप को दफ़्न किया गया

रात भर और दिन भर लाखों अक़ीदतमन्द आप का आख़िरी दीदार करते रहे। आप का विसाले अब्बासी ख़लीफ़ा अलमुस्तन्जिद बिल्लाह के अहद में हुआ।

विसाल से पहले दुनिया से बे ताल्लुक़ी के कलमात बराबर आप की ज़बान पर आते रहते थे और हर वक़्त अल्लाह से डरने व तक़्वा की वसीयत फ़रमाते रहते थे चुनांचे आप के फ़रज़न्द हज़रत शैख़ अब्दुल वहहाब ने जब आप से वसीयते आख़िरी का सिलसिला में अर्ज़ किया तो आप ने जवाब में फ़रमाया।

"अल्लाह से डरो और उसके सिवा किसी से ख़ौफ़ न करो और अल्लाह के सिवा किसी से उम्मीद न रखो और सब कामों को अल्लाह कि तरफ़ सौंप दो और अल्लाह के सिवा किसी पर भरोसा न करो और सब हाजतें उसी से तलब करो और अल्लाह के सिवा किसी पर वक़ूफ़ न करो, तौहीद को लाज़मी तौर पर इख़्तेयार करो। इस तरह हज़रत सय्यदना ग़ौसे आज़म ने अपने आख़िरी सांसों में भी इस मक़सद की तब्लीग़ का ख़्याल रखा जो आप के सुपुर्द बग़दाद में किया गया था। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहे राजेऊन।

मज़ारे मुबारक

हज़रत ग़ौसे आज़म का मज़ारे मुबारक बग़दाद के मशरिक़ में [illegible] हैं [illegible] वही मोहतरम जगह है जहां वह दर्स देते और वाज़ व इरशाद की मजलिस बरपा फ़रमाते यह जगह मदरसा के नाम से मौसूम थी चूंकि बादे विसाल आप यहीं मदफ़ून हुए इसलिए इसके बाद दरबारे ग़ौसिया (मज़ारे ग़ौसिया) के नाम से मौसूम चला आ रहा है इस इमारत में कई आली शान हस्तियों, आप के बाज़ फ़रज़न्दों के मज़ार हैं मस्जिद लंगर ख़ाना, कुतुब ख़ाना और ग़ैर मुल्कियों और मुल्कि तलबा की एक़ामत गाहें भी हैं 615 हि॰ मे अब्बासी ख़लीफ़ा नासिरुद्दीन ने इस इमारत में मज़ीद तौसीअ् की लेकिन 912 हि॰ में शाह इस्माईल सफ़वी शाह ईरान के हाथों उन इमारात को नुक़्सान पहुंचा उसके बाद 941हि॰ में सुलतान सुलैमान उस्मानी ने यहां पर एक ख़ूबसूरत और आली शान इमारत तामीर कराई 1218 हि॰ में सुलतान अब्दुल अज़ीज़ खां के अहद में अज़ सरे नौ तामीर हुई और आज भी इमारत अपनी शान व शिकोह के साथ हज़रत के फ़ुयूज़े बातनी की निशानदेही कर रही है।

अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़ की तसनीफ़ का सबब

हम्द की सज़ा वार उसी अल्लाह की ज़ात है जिससे हर किताब की इब्तिदा और जिस के ज़िक्र से हर कलाम का आग़ाज़ होता है। आलमे तसर्रुफ़ में राहत व आराम पाने वाले उसी की हम्द व सना का इनाम हासिल करेंगे। उसी के नाम से हर बीमारी से शिफ़ा हासिल होती है और हर ग़म और हर मुसीबत में, सुख हो या दुख हर हाल में उसी के सामने तज़र्रू और सवाल के लिए हाथ फैलाए जाते हैं। उसको बुलाने वाला ख़्वाह किसी ज़बान में उसको पुकारे और बुलाये वह उसकी सुनता है और आजिज़ों की दुआऐं क़बूल करता है। हर शय अता करने वाला और मतलूब व मक्सूद तक पहुंचाने वाला वही है बस उसी का शुक्र है कि उसने नेमत से सरफ़राज फ़रमाया और हक़ का रास्ता वाज़ेह फ़रमा कर उस पर चलाया।

अल्लाह के बर्गुज़ीदा रसूल (हज़रत) मोहम्मद पर रहमत व सलाम [illegible] जो दुनिया में गुमराहों को हिदायत का रास्ता दिखाने के लिए तशरीफ़ लाए [illegible] की आल व असहाबे कराम और बिरादराने रिसालत और मुक़र्रबे मलाइका पर भी दरुद व सलाम हो!!

हम्द व सलात के बाद बाइसे निगारिश यह है कि मेरे बाज़ अहबाब ने जिनको मेरी सिदक़ बयानी के बारे में हुसने ज़न था मुझ से इस किताब की तस्नीफ़ की पुरज़ोर दरख़्वास्त की–अल्लाह तआ़ला ही हम को क़ौली और फ़ेअ्ली लग़ज़िशों से बचाने वाला है और वही नीयतों और इरादों से वाक़िफ़ है और वही मेरे बाज़ अहबाब की इस ख़्वाहिश की तक्मील में सहूलत अता करने वाला है। तफ़रीक़ से दिलों को एक करने और बुराईयों को नेकियों से बदल देने की उससे उम्मीद है। वही गुनाह और क़सूर माफ़ करने और वही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करने वाला है।

जब मुझ पर इस बात की सदाक़त (बज़रिया कश्फ़) ज़ाहिर हो गई कि एक ऐसी किताब की वाक़ई ज़रुरत है जो फ़र्ज़, सुन्नत और इस्लामी आदाब के सिलसिले में अवाम की रहनुमाई करे और लोग दलाइल व बराहीन से ख़ालिक़ की मारफ़त हासिल करें और क़ुरआन मजीद और हदीसे नब्वी से हिदायत याब हो कर राहे हक़ इख़्तेयार करें और इस इसरार से उस दोस्त की ग़रज़ सिर्फ़ यह है कि राहे हक़ पर चलने वाले को अवामिर की तामील और नवाही से गुरेज़ में तआवुन हासिल हो, पस मैंने उसकी दरख़्वास्त क़बूल कर ली।

उख़रवी नजात की आरज़ू और सवाबे आख़िरत की तलब के साथ में तालीफ़े किताब के लि बड़ी मुस्तईदी से तैयार हो गया और यह सब कुछ अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से हुआ। ज दिलों में हक़ बात का इलक़ा फ़रमाता है।

मैंने राहे हक़ के तलबगारों की तमाम दूसरी किताबों से बेनियाज़ बनाने के लिए इस किता को 'अलगुनियतुत्तालिब तरीकुल हक़" के नाम से मौसूम किया।

बाब 1

दीने इस्लाम के वाजिबात व फ़राइज़

ईमान, नमाज़, ज़कात, सदक़ए फ़ित्र, रोज़ा, एतकाफ़, हज और उमरा

ईमान

जो शख़्स इस्लाम क़बूल करना चाहे उस पर सबसे पहले वाजिब है कि वह कलमए शहादत पढ़े यानी ला इलाहा इल्ललाह मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह का ज़बान से इकरार करे और इस्लाम के सिवा तमाम मज़ाहिब से बे ताल्लुक़ हो जाए और उन से बे ज़ारी का इज़हार करे और अल्लाह तआ़ला की वहदानियत का दिल में यक़ीने कामिल रखे, इस एतकाद और यक़ीने कामिल की तशरीह आईन्दा मज़कूर होगी।

दीने इस्लाम

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सच्चा दीन इस्लाम है चुनांचे अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया कि यानी बिला शुबा सच्चा दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है। फिर फ़रमाया: और जिस ने इस्लाम के सिवा कोई और दीन पसन्द किया [illegible] नहीं किया जाएगा।

नौ मुस्लिम के हुक़ूक़

जिस शख़्स ने सच्चे दिल से कलमए शहादत पढ़ लिया और इस्लाम में दाख़िल हो गया, उसको क़त्ल करना, उसकी औलाद को क़ैद करना, उसके माल व मताअ् को लूटना (तमाम मुसलमानों पर) हराम हो गया। इस्लाम लाने से क़ब्ल उससे जो गुनाह सरज़द हुए थे अल्लाह तआ़ला उन सब को माफ़ फ़रमा देगा। अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है: ऐ नबी आप उन काफ़िरों से फ़रमा दें कि अगर यह कुफ़्र से बाज़ आ गए तो उनके पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि: मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक़्त तक जिहाद करुं जब तक वह ला इलाहा इल्ललाह न कह दें, जब उन्होंने कलमए तौहीद पढ़ लिया तो उन्होंने अपनी जानों और अपने मालों को मुझ से बचा लिया बजुज़ इस के कि उन का कोई हक़ वाजिब हो सो उस का हिसाब अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी इरशाद फ़रमाया है कि: इस्लाम मा क़ब्ल के गुनाहों को फ़ना कर देता है।

नौ मुस्लिम का गुस्ल

इस्लाम में दाख़िल होने वाले शख़्स के लिए ग़ुस्ले इस्लाम वाजिब हो जाता है। एक रिवायत

के मुताबिक़ रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शमामा बिन आसाल और क़ैस बिन अस्सम को जब वह इस्लाम लाए तो हुक्म दिया कि गुस्ल करो एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया कि "अपने जिस्म से कुफ़्र के बालों को दूर करके गुस्ल करो"।

नमाज़

इस्लाम में दाख़िल होने वाले पर नमाज़ फ़र्ज़ हो जाती है इस लिए कि इस्लाम क़ौल व अमल दोनों का नाम है, ज़बानी दावा क़ौल है और अमल उस दावा का सबूत है। ब अलफ़ाज़े दीगर क़ौल सूरत है और अमल उसकी रुह है।

शराइते नमाज़

नमाज़ के लिए कुछ शराइत हैं जिन का नमाज़ से क़ब्ल पूरा करना ज़रुरी है और वह यह हैं।

(1) पाक पानी से जिस्म को पाक करना (इस से मुराद वुज़ू है) पानी न मिले तो तयम्मुम करना।

(2) पाक कपड़े से सतर पोशी करना

(3) पाक जगह खड़ा होना (पाक जगह पर नमाज़ पढ़ना)

(4) क़िब्ला की तरफ़ मुंह होना

(5) नमाज़ का वक़्त होना

(6) नमाज़ के लिए नीयत करना

तहारत

(जिस्म की) तहारत के लिए कुछ फ़र्ज़ और कुछ सुन्नतें हैं, इस्लाम में दस फ़र्ज़ यह हैं 1. नीयत करना, यानी नापाकी को दूर करने के लिए नीयत करे और अगर तयम्मुम करना हो तो नमाज़ के मबाह होने का क़सद करे क्योंकि तयम्मुम से हदस़ दूर नहीं होता। पस ज़बानी नीयत के साथ साथ दिल में भी उसकी गवाही दे तो यह अफ़्ज़ल है वरना सिर्फ़ ज़बानी नीयत भी काफ़ी है।

2. तस्मीया (बिस्मिल्लाह पढ़ना) यानी तहारत के लिए पानी लेते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़े

3. कुल्ली करमा यानी मुंह में पानी भर कर और उसे मुंह में फिरा कर मुंह से पानी निकाल देना।

4. नाक में डालना, नाक के दोनों नथनों में पानी चढ़ा कर उन्हें साफ़ करना।

5. मुंह धोना, (पेशानी से लेकर कंपटियों के अर्ज़ में ठोड़ी के नीचे तक) इस तरह कि दाढ़ी के बालों की जड़ों तक पानी पहुंच जाए।

6. हाथ धोना, दोनों हाथों को कोहनियों तक धोना।

7. सर का मसह, मसह करने का तरीक़ा यह है कि दोनों हाथ पानी में डाले और फिर ख़ाली निकाल कर उन्हें सर की अगली जानिब से सर की पिछली जानिब गर्दन तक ले जाए और फिर इसी तरह वहां तक वापस लाए जहां से मसह शुरु किया लेकिन इस तरह कि दोनों अंगूठे कानों के सुराख़ों में रहें इससे फ़ारिग़ होकर कान के दोनों कर्रों और सुराख़ों का उन अंगूठों से मसह करे।

8. पांव धोना, दोनों पांव टख़नों तक धोए जायें। मज़कूरा बाला तमाम फ़राइज़ यके बाद दीगरे एक साथ बजा लाना फ़र्ज़ है।

9. इन तमाम आज़ा को धोते वक़्त उन की तरतीब का ख़्याल रखना। ख़ुदावन्द तआला का इरशाद है। यानी ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ अदा करने के लिए उठो तो अपने मुंह को और अपने हाथों को कोहनियों तक धो लो, सर का मसह करो और दोनों पांव को टख़नों तक धो लो।

10. मवालात यानी हर दूसरे उज़्व को पहले उज़्व का पानी ख़ुश्क होने से पहले धोना।

वुज़ू में दस सुन्नतें हैं

(1) वुज़ू के पानी में हाथ डालने से पहले दोनों हाथों को धो लेना। (2) मिसवाक करना(3)कुल्ली (ग़रग़रा) करना। (4) नाक के दोनों सूराख़ों में पानी डाल कर उनको साफ़ करना, रोज़ा रखा हो तो कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने में एहतियात बरते (कि पानी हल्क़ से नीचे न उतर जाए (5) दाढ़ी का ख़िलाल करना (6) दोनों आँखों के अन्दर पानी डाल कर उनको धोना दायें जानिब से (आंखों का धोना) शुरु करना (7) दोनों कानों के मसह के लिए ताज़ा पानी लेना। (8) गर्दन का मसह करना। (9) दोनों हाथ और दोनों पांव की उंगलियों में ख़िलाल करना (यानी उंगलियों को दूसरी उंगलियों के दर्मियान डालना) (10) वुज़ू में हर उज़्व को तीन दफ़ा धोना।

तयम्मुम

तयम्मुम का तरीक़ा यह है कि दोनों हाथ ऐसी पाक मिट्टी पर मारें कि गर्द मामूली तरीक़ा पर दोनों हाथों पर चिमट जाए। उस वक़्त फ़र्ज़ नमाज़ के [illegible]ाह होने की नीयत करें, तस्मीया पढ़ें, अपनी उंगलियों को फैलाकर मिट्टी पर एक दफ़ा [illegible] हाथों के अन्दर की तरफ़ से चेहरे को, मसह करें, फिर दोनों हाथों की पुश्त का मसह करें। (तहारते कुबरा यानी गुस्ल का बयान आदाबे ख़ला के बाब में इंशा अल्लाह किया जाएगा)

सतरे औरत

किसी पाकीज़ा कपड़े से नाफ़ से लेकर ज़ानू तक और कन्धों तक छुपाना सतरे औरत है, सतरे औरत के लिए कपड़ा रेशमी न हो क्योंकि रेशमी कपड़े में नमाज़ नहीं होती, किसी से छीने हुए या चुराए हुए कपड़े में नमाज़ नहीं होती।

नमाज़ की जगह

नमाज़ (पढ़ने) के लिए ऐसी जगह होना चाहिए जो नजासत और पलीदी से पाक हो और अगर कोई ऐसी जगह हो जिस पर नजासत हो मगर वह नजासत हवा और आफ़ताब की गर्मी (धूप) से ख़ुश्क हो गई हो तो ऐसी जगह को साफ़ करके उस पर कपड़ा बिछा कर उस पर नमाज़ पढ़ी जा सकती है।

नमाज़ की सम्त

मक्का मुकर्रमा और उसके क़रीबी इलाक़े में अगर कोई हो तो वह ऐन क़ाबा की तरफ़ रुख़ कर ले और अगर मक्का से दूर किसी और जगह पर हो तो भी काबा की तरफ़ रुख़ मालूम करने

के लिए अपने इजतेहाद, सितारों आफ़ताब और हवाओं के रुख़ के ज़रिये से सम्ते काबा की तहकीक़ करके उस तरफ़ रुख़ करे।

नमाज़ की नीयत

नीयत का मक़ामे असली दिल है (यानी दिल के इरादे का नाम नीयत है) चूंकि नमाज़ अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़र्ज़ की गई है इस पर दिल से यक़ीन रखना और अल्लाह तबारक व तआला का हुक्म जानते हुये उसको अदा करना वाजिब है। दिखावे और दूसरों के सुनाने के लिये न हों, नमाज़ के दौरान दिल को ख़ुदावंद तआला के हुज़ूर में उस वक़्त तक पूरे तौर पर हाज़िर रखा जाए जब तक नमाज़ से फ़रागत हासिल न हो जाए। हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आएशा रज़ी अल्लाहो अन्हा से फ़रमाया: जिस नमाज़ में तेरा दिल हाज़िर न हो वह नमाज़ ही नहीं।

औक़ाते नमाज़

नमाज़ के वक़्त का अन्दाज़ा अपने यक़ीन से कर लिया जाए (जब कि रोशन और साफ़ हो) और अगर अब्र या आंधी (गुबार) वग़ैरह हो और वक़्त का तऐयुन (अन्दाज़े से) न हो सके तो फिर गुमान ग़ालिब ही से उसका अन्दाज़ा कर लिया जाए।

अजान

वक़्त का तऐयुन या (गुमाने ग़ालिब से) अन्दाज़ा कर लेने के बाद अज़ान इस तरह कही जाए

अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर

अश्हदु अंल्लाइलाहा इल्लल्लाह, अश्हदु अंल्लाइलाहा इल्लल्लाह

अश्हदु अन्ना मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह, अश्हदु अन्ना मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह

हय्या अलस्सलाह, हय्या अलस्सलाह

हय्या अलल फ़लाह, हय्या अलल फ़लाह

अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर,

लाइलाहा इल्लल्लाह

एक़ामत

अज़ान के बाद जब नमाज़ के लिए खड़े हों तो इस तरह एक़ामत कही जाएः

अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर

अश्हदु अंल्लाइलाहा इल्लल्लाह

अश्हदु अन्ना मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह

हय्या अलस्सलाह

हय्या अलल फ़लाह

क़दक़ा मतिस्सलाह, क़दक़ा मतिस्सलाह

अल्लाहो अकबर, अल्लाहो अकबर

लाइलाहा इल्लल्लाह

हंबली और शाफ़ई हज़रात के यहां एक़ामत के अलफ़ाज़ हय्या अ़लल फ़लाह तक एकहरे हैं जबकि अहनाफ़ के यहां दोहरे हैं।

एक़ामत कहकर नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ, अल्लाहो अकबर के अलावा दूसरे ताज़ीमी अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल नमाज़ शुरु करने के लिए जाइज़ नहीं है।

नमाज़ के अरकान

नमाज़ के पन्द्रह रुक्न हैं (1) खड़ा होना (2) तक्बीरे तहरीमा पढ़ना (3) सूरह फ़ातिहा पढ़ना (4) रुकू करना। (5) रुकू में ठहरना (6) रुकूअ् से खड़ा होना (7) थोड़ा ठहरना (8) सजदा करना (9) सजदे में क़दरे ठहरना (10) दोनों सजदों के दर्मियान बैठना (11) इस बैठक में क़दरे तवक़्क़ुफ़ करना (12) क़अ्दा अख़ीरा (आख़िरी मरतबा बैठना) (13) आख़िरी क़अ्दा में तशहहुद पढ़ना (14) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरुद पढ़ना (15) सलाम फेरकर नमाज़ ख़त्म करना।

नमाज़ के वाजिबात

नमाज़ के वाजिबात नौ हैं। (1) तक्बीर कहना (तक्बीरे तहरीमा के सिवा) (2) रुकूअ् से उठते वक़्त समेअल्लाहुलिमन हमिदह कहना और (3) रब्बना लकल हम्द कहना (4) रुकूअ् में सुब्हाना रब्बियल अज़ीम पढ़ना (5) दोनों बार सजदों में सुब्हाना रब्बियल आला कहना (तीन तीन बार) (6) दोनों सजदों के दर्मियान बैठते वक़्त एक बार रब्बिग़ फ़िरली कहना (7) पहला अत्तहियात पढ़ना (8) पहले तशह्हुद के लिए बैठना (9) सलाम इस नीयत से फेरना की मैं नमाज़ से फ़ारिग हुआ।

नमाज़ की चौदह सुन्नतें

नमाज़ की चौदह सुन्नतें हैं–(1) शुरु करते वक़्त इन्नी वज्जहतो वज हेया लिल्लज़ी फ़तरस्समावाते वल अर्ज़ा वमा अना मिनल मुश्रेकीन पढ़ना–(2) अऊज़ूबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़ना (3) बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ना (4) सूरह फ़ातिहा के ख़त्म पर आमीन कहना (5)सूरह फ़ातिहा के बाद कोई सूरत पढ़ना (6) रब्बना लकल हम्द के बाद मिलाअस्समावाति वलअर्ज़ कहना (7) रुकूअ् और सजदे की तस्बीहात को एक मरतबा से ज़्यादा पढ़ना (8)दोनों सजदों के दर्मियान जुलूस की हालत में रब्बिग़ फ़िरली पढ़ना (9) एक रिवायत के मुताबिक़ नाक पर सजदा करे (सजदे में नाक ज़मीन पर लगाये) (10) दोनों सजदों के दर्मियान क़दरे आराम के लिए बैठना (जलसए इस्तराहत करना) (11) चार चीज़ों से पनाह मांगना यानी

अऊज़ूबिल्लाहि मिन अज़ाबे जहन्नमा व मिन अज़ाबिल क़ब्र व मिन फ़ित्नतिल मसीहिददज्जला व मिन फ़ित्नतिल महया वल ममाते पढ़ना (मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं जहन्नम की अज़ाब से, क़ब्र की अज़ाब से, मसीहिद्दज्जाल के फ़ित्ने से और ज़िन्दगी व मौत के फ़ित्ने से) (12) आख़िरी क़अ्दा में दरुद शरीफ़ पढ़ने के बाद वह दुआ पढ़ना जो हदीसों में आई है। (13) वित्रों में दुआए क़ुनूत पढ़ना (14) दूसरा सलाम फेरना (इसका सबूत ज़ईफ़ रिवायत से है)

हैयाते नमाज़

नमाज़ की हैयात पच्चीस हैं–(नमाज़ की हैयत से इन पच्चीस उमूर का ताल्लुक़ है) (1)

नमाज़ शुरु करते वक़्त, रुकूअ् में जाते वक़्त, रुकूअ् से सर उठाने के बाद दोनों हाथों का उठाना (दोनों हाथ इस तरह उठाए जायें कि दोनों हथेलीयां दोनों कंधों के बराबर हों और दोनों अंगूठे कानों के पास और उंगलियों के पोरे कानों की नरमा तक पहुंच जायें) हाथ इस तरह उठाकर फिर छोड़ दिए जायें (2) नाफ़ के ऊपर बायां हाथ हो और उस हाथ के ऊपर दायां हाथ रखा जाए (3) सजदे के मक़ाम पर नज़र रखी जाए (4) जिन नमाज़ों में क़िरात बलन्द आवाज़ से पढ़ी जाती है–उन में बलन्द आवाज़ से क़िरात पढ़ना और आमीन भी बलन्द आवाज़ से कहना और जिन नमाज़ों में क़िरात आहिस्ता पढ़ी जाती है उनमें आहिस्ता पढ़ना और आमीन भी आहिस्ता कहना। रुकूअ् में दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रखना, रुकूअ् के बाद पीठ सीधी करना, सजदे में दोनों बाज़ुओं को दोनों पहलुओं से अलग रखना, सजदे में जाते वक़्त घुटनों को ज़मीन पर पहले रखना, फिर हाथों का रखना, सजदे में दोनों रानों को पेट और पसलियों से अलग रखना, सजदे में दोनों घुटनों को अलग फ़ासला से रखना। दोनों हाथों का दोनों मोंढ़ों के मुक़ाबिल रखना। दोनों सजदों के दर्मियान बैठते वक़्त क़अ्दे ऊला में एक पांव बिछा कर उस पर बैठना और क़अ्दे अख़ीर में सुरीन के बल बैठना, दायें रान पर दायां हाथ और बायें रान पर बायां हाथ रखना। दायें हाथ की उंगलियों को बन्द रखना। बन्द हाथ की अंगुश्ते शहादत से इशरा करना। इस तरह कि अंगूठे से दर्मियानी उंगली के साथ हलक़ा किया हो। बायें हाथ की उंगलियां खुली हुई रान पर रखी हों।

इन शर्तों में से कोई शर्त भी किसी उज़्रे शरई के बिला अगर तर्क कर दी जाएगी तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। अगर किसी रुक्न को क़सदन तर्क कर दिया या ग़लती से किसी रुक्न को छोड़ दिया गया तो नमाज़ न होगी। अगर वाजिब को ग़लती से तर्क कर दे तो सजदा सहू से नमाज़ हो जाएगी और अगर वाजिब को जान बूझ कर छोड़ दिया जाए तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। किसी सुन्नत या नमाज़ की हैयत के तर्क से न नमाज़ बातिल होती है और न सजदा सहू लाज़िम आएगा।

ज़कात

मुसलमान पर ज़कात इस सूरत में वाजिब होती है जब वह साहिबे निसाब हो (जिनके पास मोजिबे ज़कात माल हो) ज़कात का निसाब यह है। तीस मिस्क़ाल सोना या दो सौ दिरहम चांदी या इन दोनों में से किसी एक की क़ीमत के बराबर माल तिजारत या पाँच ऊंट या तीस (रास) गायें या भैसें या चलीस बकरियां, बशर्ते कि यह सब जानवर पूरे साल जंगल में आज़ाद मुफ़्त चरते हों। निसाबे ज़कात हैं, ग़ुलाम और मकातिब पर ज़कात वाज़िब, फ़र्ज़ नहीं है।

निसाब

सोने या चांदी पर चालीसवां हिस्सा ज़कात है यानी बीस दीनार पर निस्फ़ दीनार, दो सौ दिरहम पर पांच दिरहम।

ऊंटों का निसाब

अगर पांच ऊंट हों तो एक भेड़ या बकरी (भेड़ शश माहा और बकरी एक साला) दस ऊंट हों तो दो बकरियां या दो भेड़ें। 150 ऊंटों पर तीन बकरियां (भेड़ें) 20 ऊंटों पर चार भेड़ या

बकरियां दी जाएं छब्बीस ऊंटों के मालिक पर पूरे साल भर की ऊंटनी देना वाजिब है (जो एक साल की पूरी हो) अगर साल भर की ऊंटनी मौजूद न हो तो दो बरस से ज़्यादा उम्र का एक ऊंट दिया जाए।

छत्तीस ऊंटों का मालिक दो साल की एक ऊंटनी ज़कात में दे। छियालिस ऊंटों का मालिक तीन साल की उम्र का एक ऊंट ज़कात दे। इक्सठ (61) ऊंटों पर एक ज़कात दे जो चार साल पूरे करके पांचवें साल में दाख़िल हो गया हो छिहत्तर (76) ऊंटों वाला दो बरस की दो ऊंटनियां ज़कात दे। एकानवे से एक सौ बीस ऊंटों तक तीन तीन बरस तक तीन तीन बरस के दो ऊंट देना होंगे, इससे ज़्यादा अगर एक भी बढ़ जाए तो हर चालीस में से दो बरस की एक ऊंटनी ज़कात दे और हर पचास पर तीन साल का एक ऊंट ज़कात दे।

गाय, भैंस का निसाब

अगर तीस (30) गाय या भैंस का मालिक हो तो एक बरस का बच्चा नर या मादा ज़कात है, अगर चालीस हों तो एक बच्चा (नर या मादा) जो दो साल का हो और साठ गायों पर दो बच्चे जिन की उम्र एक साल है ज़कात है जब गायें सत्तर तक पहुंच जायें तो इसमें से एक बच्चा साल भर का और एक बच्चा दो साल ज़कात है। इसी तरह पर तीस गायों से एक एक बच्चा एक साल का और हर चालीस से हर बच्चा दो बरस का निकाले।

बकरियों का निसाब

चालीस से एक सौ बकरियों तक एक बकरी ज़कात है। अगर तादाद उस से ज़्यादा हो तो दो सौ की तादाद तक दो बकरियां या दो भेड़ें। अगर दो सौ से एक भी ज़्यादा हो जाए तो तीन सौ तक तीन बकरियां या भेड़ें ज़कात हैं। इससे आगे हर सैकड़े पर एक दी जाए।

मसरफ़े ज़कात

ज़कात के मुस्तहिक़

माले ज़कात के हक़दार आठ क़िस्म के (लोग) हैं जिन का ज़िक्र क़ुरआन पाक में आया:

(1) फ़ुक़रा (वह नादार लोग जिन के पास गुज़र बसर के लिए कुछ न हो) (2) मसाकीन (वह मुफ़लिस जिसके पास कुछ तो हो मगर बक़दरे ज़रुरत न हो) (3) ज़कात के आमेलीन, यानी कारिन्दे और कार कुन (ज़कात वसूल करने और बैतुल माल तक पहुंचाने वाले) (4) मोअल्लेफतुल कुलूब (ऐसे काफ़िर जिन को अगर माल दिया जाए तो उनके मुसलमान हो जाने की उम्मीद और तवक़्क़ो हो या कम अज़ कम मुसलमान को उनकी शरारतों से महफ़ूज़ रखा जा सके) (5) गुलामों को आज़ाद कराने में, ऐसे क़र्ज़दारों की इआनत में जिन को अदाए क़र्ज़ की ताक़त न हो। (7) वह मुजाहेदीन जो बेग़ैर किसी एवज़ या तन्ख़्वाह के काफ़िरों के साथ जिहाद में मशग़ूल हैं। (8) ऐसा मुसाफ़िर जिसके पास सफ़रे ख़र्च न हो और वह परदेस में इसकी वजह से पढ़ा हो।

सदक़ए नाफ़िला

फ़र्ज़ ज़कात अदा करने के बाद नफ़्ल ख़ैरात हर ज़माने में हर वक़्त मुस्तहब है, ख़ुसूसन

बरकत वाले महीनों और दिनों में तो और भी अफ़ज़ल है। मसलन रजब, शअ्बान और रमज़ान के महीनों मे, ईद के अय्याम, मोहर्रम के दस दिन, क़हत साली और तंग हाली के दिनों में अफ़ज़ल है। सदक़ए नफ़्ल अदा करने वालों के माल में ख़ैर व बरकत होती है और उसके अहल व अयाल अमन व अमान और आराम से रहते हैं इस के अलावा आख़िरत में बड़ा सवाब मिलता है।

सदक़ए फ़ित्र

जिस शख़्स के पास अपने और अपने बीवी बच्चों की ज़रुरीयात से ज़्यादा रोज़ी हो तो उस पर सदक़ए फ़ित्र वाजिब है। ईद की रात या ईद के दिन अपनी ज़ात, अपनी औलाद, बीवी, गुलाम, बांदी, मां बाप, भाई बहन, चचा और चचा की औलाद और क़रीबी अइज़्ज़ा की तरफ़ से बशर्ते कि उन की किफ़ालत और नान नफ़्क़ा की ज़िम्मेदारी उस पर हो, सदक़ए फ़ित्र अदा करे।

सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार

खूजूर, किशमिश, गेहूं, जौ या उनके सत्तू, आटा एक साअ् है (साअ् एक मुमासिल वज़न हमारे मुल्क में 351 तोले हैं एहतियातन साढ़े चार सेर शुमार किया जाता है) जो वज़न में साढ़े पांच रत्ले इराक़ी है बरक़ौले सही पंसेरी है (सदक़ए फ़ित्र में दिया जाता है) अगर कहीं यह चीज़ें न हों तो शहर में जो ग़ल्ला उमूमन इस्तेमाल होता है मसलन चावल, जवार, चना, वगैरह उसी में से उतनी मिक़्दार अदा करे।

रोज़ा

जब रमज़ान का (मुबारक) महीना आ जाए तो हर मुसलमान पर इसके रोज़े वाजिब हो जाते हैं अल्लाह तआला का इरशाद है (जो शख़्स तुम में से रमज़ान को पाए तो उसमें रोज़े रखे।

अगर चांद देख कर या किसी आदिल सिक़ह आदमी की शहादत से या शअ्बान की तीसवीं रात को बादल या गुबार की वजह से चांद न देखने या माहे शअ्बान के तीस दिन पूरे हो जाने से रमज़ान की आमद साबित हो जाए तो दूसरे दिन से रोज़े रखे और वक़्ते मग़रिब से सुबह सादिक़ के तुलूअ् होने तक जिस वक़्त चाहे नीयत करे। रोज़ाना पूरे महीने इसी तरह नीयत किया करे। एक ज़ईफ़ रिवायत में यह भी आया है कि अगर रमज़ान की पहली रात में महीने भर के रोज़ों की नीयत एक साथ कर ली तो काफ़ी है।

सुबह से लेकर पूरे दिन खाने पीने और जिमाअ् से परहेज़ करे, कोई शय भी बाहर की तरफ़ से पेट के अन्दर दाख़िल न हो न अपने बदन से ख़ून निकाले न किसी दूसरे से निकलवाए।

(पचने न ख़ुद लगाए न दूसरे से लगवाए) ख़ुद कै न करे कोई ऐसी हरकत न करे जिस से इनज़ाल की सूरत पेश आए।

क़ज़ा व कफ़्फ़ारा

ऊपर बयान की हुई एहतियातों को मलहूज़ रखना अज़ बस ज़रुरी है, अगर इन अहकाम में से किसी एक की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा तो क़ज़ा लाज़िम आएगी (रोज़ा बातिल हो जाएगा) और

उस दिन भी शाम तक हर ममनूआ चीज़ से परहेज़ रखना ज़रूरी होगा। रोज़ा के दर्मियान (रोज़े की हालत में) जिमाअ् करने से कफ़्फ़ारा भी वाजिब हो जाता है।(1) यानी किसी मुसलमान बांदी या गुलाम को आज़ाद करना जो तन्दरुस्त और काम काज करने के क़ाबिल हो (अन्धा, लंगड़ा, लूला, लुंजा या बहरा न हो) (2) अगर इसकी ताक़त न हो तो मुतवातिर दो माह तक रोज़े रखे, (3) यह भी न हो सके तो साठ फ़क़ीरों को खाना खिलाए इस तरह इस तरह कि हर मिसकीन या फ़क़ीर कम अज़ कम एक सौ साढ़े तिहत्तर दिरहम वज़नी गेहूं दे या हर एक को निस्फ़ साअ् (175 1/2 तोले) खूजूर या जौ या उस शहर में जो ग़ल्ला खाया जाता हो वह दे दे लेकिन अगर कुछ देने की तौफ़ीक़ न हो तो अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करे और दूसरे रोज़ कोई अच्छा अमल करे।

रमज़ान के महीने में दिन के वक़्त किसी जवान औरत के साथ ख़लवत (तन्हाई) में न रहे न बोसा ले ख़्वाह वह उसकी मोहरम ही क्यों न हो, ज़वाले आफ़ताब के बाद मिस्वाक से परहेज़ करे, गोंद चबाने, थूक मुंह में जमा करके निगलने, पकते वक़्त खाना का मज़ा या नमक चखने से इज्तेनाब करे।

सहर व इफ़्तार

किसी की ग़ीबत, बुराई करने, झूठ बोलने और गाली गलोच से परहेज़ करे। बादल वाले दिन इफ़्तार में ताख़ीर करे वरना इफ़्तार में जल्दी करना मुस्तहब है अगर ऐसे लोगों में से न हो जिन को तुलूए फ़ज्र का अन्दाज़ा नहीं हो सकता। (जैसे नाबीना, कमज़ोर नज़र वाला) तो उसे सहरी ताख़ीर से नहीं खाना चाहिए बल्कि जल्द खाए वरना आखिर रात तक तवक़्क़ुफ़ करके सहरी खाना अफ़ज़ल है।

इफ़्तार

अफ़ज़ल यह है कि खजूर या पानी से इफ़्तार करे और और इफ़्तार के वक़्त वही दुआ करे जो हूज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाई है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी ने रोज़ा रखा है और (इफ़्तार में) शाम का खाना उसके सामने लाया जाए तो (इफ़्तार करते वक़्त) यह दुआ पढ़े

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा ल–क सुमतो व अला रिज़्क़ेका अफ़तरतो सुब्हान–क व बेहम्देका अल्लाहुम्मा तक़ब्बल मिन्ना फ़इन्न–क अन्तस समीउल अ़लीम

यानी मैं अल्लाह के नाम से शुरु करता हूं। ऐ अल्लाह मैंने रोज़ा तेरे लिए रखा और तेरे ही रिज़्क़ से इसे खोला, तू पाक है और तेरे ही लिए हम्द है। ऐ अल्लाह तू हमसे (इस रोज़े को) क़बूल कर। बेशक तू सुनने और जानने वाला है।

एतकाफ़

मुसलमान के लिए एतकाफ़ में बैठना मुस्तहब है, एतकाफ़ के लिए उस मस्जिद में बैठना चाहिए जिस में नमाज़ बा जमाअ़त अदा होती हो, इस मक़सद के लिए सब से बेहतर जामा मस्जिद है कि अगर एतकाफ़ के दौरान जुमा का दिन आ जाए तो मोतकिफ़ नमाज़े जुमा भी अदा

कर सके, एतकाफ़ के लिए रोज़ा दार होना ज़्यादा बेहतर है, मगर रोज़ा रखे बग़ैर भी एतकाफ़ किया जा सकता है। रोज़ा रखना इस लिए बेहतर है कि एतकाफ़ करने वाले को रोज़ा उसके मक़सद बरारी में मदद देता है, यह नफ़्से अम्मारा की ख़्वाहिशों का क़ला क़मा करता है करता है। एतकाफ़ के लुग़वी माना है—"अपने आप को किसी ख़ास मक़ाम में रोके रखना, किसी चीज़ पर जुमा रहना और किसी शय पर पाबन्दी इख़्तेयार करना—"अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इरशाद फ़रमायाः यह क्या मूर्तियां हैं तुम जिन (की पूजा) पर जमे हुए हो।

एतकाफ़ सुन्नते रसूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी और सुन्नते सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम भी, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माहे रमज़ान के आख़िरी अशरा में एतकाफ़ फ़रमाया था और विसाल शरीफ़ के वक़्त तक उसी सुन्नत पर क़याम फ़रमाया और सहाबे कराम को भी इसकी दावत फ़रमाई और फ़रमाया जो क़ोई एतकाफ़ करना चाहे तो रमज़ान के आख़िरी अशरा (दस दिन) में करे। एतकाफ़ करने वाला हालते एतकाफ़ में ऐसे कामों में मश्गूल रहे जो क़ुर्बे इलाही हासिल करने का ज़रिया हैं मसलन तिलावते क़ुरआने पाक, तस्बीह व तहलील (सुब्हानल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ना) सिफ़ाते इलाही में ग़ौर व ख़[illegible] और मुराक़बा में मश्गूल रहे। और बेकार क़ौल व अमल से बचे, अल्लाह की याद के अलावा हर ज़िक्र से ख़ामोश रहे, इल्मे दीन पढ़ना और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाना जाइज़ है चूंकि इसमें दूसरों को भी फ़ायदा पहुंचता है इस लिए यह इस इबादत से अफ़ज़ल है जिसका फ़ायदा तन्हा आबिद को हासिल होता है।

ग़ुस्ले जनाबत (नापाकी), खाने पीने। क़ज़ाए हाजत (बौल व बराज़) के लिए एतकाफ़ से बाहर आना जाएज़ है इसी तरह फ़ित्ना सख़्त बीमारी और जान जाने के अन्देशे की सूरत में एतकाफ़ से बाहर आना जाएज़ है।

हज और उमरा

शराइते हज

एक मुसलमान पर जब तमाम शराइते हज मौजूद हों तो फ़ौरन हज और उमरा उस पर फ़र्ज़ हो जाता है, शराइते हज यह हैं, इस्लाम क़बूल करने के बाद आज़ाद हो या (गुलाम न हो) आक़िल और बालिग़ हो। पागल न हो, हज के इख़राजात मौजूद हूं, सफ़र के दौरान सवारी की ताक़त हो, राह में किसी क़िस्म का शदीद ख़तरा न हो, वक़्त में इतनी गुंजाइश हो कि जाकर हज कर सके, अहल व अयाल के लिए इस क़दर ख़र्च मुहय्या कर दिया हो कि हज करने वाले की ग़ैर हाज़िरी में उन के लिए काफ़ी हो और रहने के लिए मकान हो। अगर क़र्ज़दार हो तो क़र्ज़ अदा कर चुका हो। वापस आने के बाद गुज़र बसर का कुछ सामान मौजूद हो (कुछ अन्दोख़ता हो या जाइदाद का किराया वग़ैरह।)

अगर इन अहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा, अहल व अयाल के हुक़ूक़ की अदाइगी में कोताही करे, मक़रुज़ था और क़र्ज़ अदा किए बग़ैर जाने का इरादा करे तो इन सूरतों में सवाब के बजाए गुनाह कमाएगा, उस पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद हैः आदमी के लिए यही गुनाह काफ़ी है कि जिनकी रोज़ी उसके

ज़िम्मा है उन्हें ज़ाया कर दे। जिसने शराइते मज़कूरा के मुताबिक़ हज़ किया और ख़िलाफ़े शरीअत कोई काम न किया और हज व उमरा अदा किया तो उसका फ़र्ज़ अदा हो गया।

मीक़ाते एहराम

मीक़ात उस मक़ाम को कहते हैं जिससे आगे मक्का जाने वाला बग़ैर एहराम बांधे न जा सके। शरई मीक़ात मग़रिब वालों (मग़रिबी ममालिक के लोगों) के लिए हुजफ़ा, मश्रिक़ वालों के लिंए ज़ाते अर्क़, अहले मदीना के लिए ज़ुल हुलैफ़ा, और अहले यमन के लिए यलमलम और नज्द के रहने वालों के लिए क़र्न मुक़र्रर है।

जब मीक़ाते शरई पर पहुंचे तो गुस्ल करके पाक व साफ़ हो और अगर पानी मयस्सर न हो तो तयम्मुम करे फिर तहबन्द बांध कर चादर ओढ़े। यह दोनों कपड़े सफ़ेद और पाकीज़ा हों, फिर खुशबू लगा कर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर एहराम बांध ले, एहराम [illegible] नीयत दिल में भी करे और ज़बान से भी। अगर तमत्तो करना चाहे [illegible] सिर्फ़ उमरा के लिए [illegible]र सिर्फ़ हज करना चाहे तो सिर्फ़ हज के लिए, और दोनों यकजा करना [illegible]हे तो दोनों के लिए [illegible]कजा नीयत करे,

तमत्तो हज की उस सूरत को कहते हैं जिसमें अय्यामे हज [illegible]हले [illegible]मरा का एहराम बांध कर उमरा अदा की जाए और फिर उसी साल उस [illegible]फ़र में हज [illegible] एहराम बांध कर हज किया जाए ऐसे शख़्स को मुत–मत्ते कहते हैं

नीयत के अलफ़ाज़ यह हैं।

इलाही मैं [illegible]मरा क[illegible] [illegible]हता हूं [illegible]लाही मैं हज करन[illegible] चाहता हूं या इलाही मै उमरा या हज दानो करन[illegible] चाहता हू मु[illegible] इसकी [illegible]फ़ीक़ [illegible]नायत [illegible] और क़बूल फ़रमा।) इसके बाद तलबीह कहे तल[illegible]ह (लब्बैक) के अलफ़ा[illegible] यह है[illegible]

लब्बैक अल्ला[illegible]म्मा लब्[illegible]क ला शरीक ल–क लब्बैक इन्नल[illegible] वन्नेमता ल–क वल मुल्का ल–क ला शरीका [illegible]

(मैं तेरे लिए हाज़ि[illegible] हू, इलाही मैं तेरे लिए हाज़िर हुआ तेरा कोई शरीक नहीं, मैं तेरे लिए हाज़िर हुआ, हम्द और फ़[illegible] [illegible]ही लिए है, और हुकूमत तेरी है और तेरा कोई शरीक नहीं है।

लब्बैक ऊँची आवाज़ [illegible] कहे, एहराम बाँधने के बाद पांचों वक़्त की नमाज़ के बाद रात और दिन के शुरु होने के वक़्त, जब किसी साथी से मुलाक़ात हो या जब किसी से बलन्दी पर चढ़े या बलन्दी से नीचे आए या किसी और को तलबीह पढ़ते सुने तो, मस्जिदे हराम में और हर इज़्ज़त वाले मक़ाम पर तलबीह कहे और नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरुद व सलाम अर्ज़ करके.अपने अइज़्ज़ा व अहबाब के लिए दुआ मांगे।

एहराम के मसाइल

एहराम बांधने के बाद सर को (किसी वक़्त) ना ढांपे न सिला हुआ कपड़ा पहने और ना मोज़ा पहने। अगर इन ममनूआत में से किसी अम्र का मुरतकिब होगा तो एक बकरी की कुरबानी देना लाज़िम होगी लेकीन जब बग़ैर सिला हुआ तहबनद न मिले और न बग़ैर सिलाई के जूते पहनने को मयस्सर आयें तो ऐसी सूरत में सिला हुआ कपड़ा और जूते पहन लें, एहराम बांध लेने के बाद

अपने बदन और कपड़ो पर किसी किस्म की खूंशबू न लगायें अगर क़सदन ऐसा किया तो कपड़ों को धोना होगा और एक बकरी की कुरबानी देना होगी।

नाख़ुन और बाल कटवाना भी मना हैं, तीन नाखुन काटने या तीन बाल मूंडने वाले को एक बकरी कुरबानी देना होगी अगर तीन दिन से कम नाख़ुन काटे या तीन से कम बाल मूंडे, या तिहाई सर से कम मुंडवाया तो हर नाख़ुन और हर बाल के एवज़ दस छटाक गेहूं देना होंगे।

जिन्सी क़यूद

एहराम की हालत में अपना निकाह करना या किसी और के निकाह में शामिल होना दोनों बातें मना हैं अपनी मन्कूहा या लौंडी से एहराम की हालत में जिमाअ् भी ममनूअ् है। अलबत्ता बीवी के पास आना जाना मना नहीं इस के ख़िलाफ़ करने वाले का हज बातिल हो जाएगा बशर्ते की जिमाअ् उक़्बा के संगरेज़े मारने से पहले वाक़ेअ हुआ हो, अगर क़सदन अपनी मनी ख़ारिज करे या बार बार औरत की तरफ़ देखे और उस सूरत से इंज़ाल हो जाएगा तो कफ़्फ़ारा में एक बकरी की कुरबानी देना होगी।

हैवानात का शिकार और कीड़े मकोड़े मारना

और खुद शिकार करना या किसी से शिकार कराना (यानी किसी को शिकार की तरग़ीब देना या शिकार में मदद देना) शिकार के लिए रहनुमाई करना, ज़िबह करने में मदद देना शिकार के लिए हथियार मुहय्या करना, यह सब बातें मना हैं।

अगर इन बातों में से कोई काम करेगा तो शिकार किए हुए जानवर की मानिन्द जानवरों से कफ़्फ़ारा देना होगा यानी अगर शुतुरमुर्ग शिकार किया है तो उसके बदले ऊंट की कुरबानी देनी होगी। इसी तरह गोरखर और नील गाय के एवज़ गाय की कुरबानी हिरन या लोमड़ी के एवज़ बकरी की कुरबानी बिज्जू (कफ़तार) के बदले मेंढा, ख़रगोश के एवज़ बकरी का बच्चा, घूंस (जंगली चूहे) के बदले चार माह की उम्र का बकरी का बच्चा सूसमार(गोह) के बदले बकरी का बच्चा, बड़ी के एवज़ बड़ा और छोटी सूसमार के एवज़ छोटा बच्चा हर कबूतर के एवज़ एक बकरी, अगर मिसली जानवर न हो तो उसकी क़ीमत दो सिक़ह मुसलमानों के तजवीज़ कराके ख़ैरात करना लाज़िम है।

पालतू (अहली) जानवर को मोहरिम के लिए ज़िबह करना और खाना जाइज़ है हर मूज़ी जानवर को बहालते एहराम क़त्ल करना (मार डालना) जाइज़ है जैसे सांप, बिच्छू, कांटने वाला कुत्ता' शेर, चीता, भेड़या, भगड़ा (पलंग) अब्लक़ कौआ, चील, बाज़, इनके अलावा भीड़, मच्छर पिस्सू, खटमल, चिचड़ी, छिपकली, मक्खी और ज़मीन के रहने वाले (हर मूज़ी) जानवर का मारना जाइज़ है चियूंटी अगर इज़ा दे तो उसे भी मारना जाइज़ है जूं और उनके अण्डों का भी एक रिवायत में यही हुक्म है। दूसरी रिवायत में बक़दरे मुम्किन ख़ैरात करना लाज़िम है हरम के जानवर को गैर मोहरिम भी क़त्ल न करे अगर ऐसा करेगा तो बहालते एहराम शिकार को क़त्ल करने पर जो (कफ़्फ़ारा और कुरबानी का) हुक्म है वही इस सूरत में भी जारी रहेगा

दरख़्त

हरम के दरख़्तों को न काटे न उखाड़े वरना बड़े दरख़्त के एवज़ गाय और छोटे दरख़्त

बदले भेड़ की कुरबानी देना होगी।

मदीना मुनव्वरा के जानवरों और दरख़्तों के बारे में भी यही हुक्म है। मगर फ़र्क़ यह है कि तावान में सिर्फ़ उस शख़्स के कपड़े छीन लिए जायें, छिने हुए कपड़े छीनने वाले पर हलाल हैं

मसाइले हज

अगर वक़्त में गुंजाइश हो और यौमे अरफ़ा से कुछ दिन पहले मक्का में दाख़िल होने का इमकान हो तो मुस्तहब है कि ख़ूब अच्छी तरह गुस्ल करके मक्का के बालाई जानिब से दाख़िल हो जब मस्जिदे हराम पर पहुंचे तो बाबे बनी शैबा से हरम के अन्दर दाख़िल हो और ख़ानए काबा जब नज़र के सामने आए तो दोनों हाथ उठा कर बलन्द आवाज़ से यह दुआ पढ़े।

तर्जमाः–इलाही बेशक तू आफ़ियत बख़्शने वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती है ऐ परवरदिगार हम को आफ़ियत के साथ ज़िन्दा रख इलाही इस घर की अज़मत आंरै शरफ़ व वक़ार और ख़ैर में इज़ाफ़ा फ़रमा और जो हज और उमरा करने वाले इस ताज़ीम व तकरीम करें इलाही इन की अज़मत शरफ़ और वक़ार में भी इज़ाफ़ा फ़रमा अल्लाह के लिये बकसरत हम्द व सना है जैसा कि वह इसका मुस्तहिक़ है और जिस तरह की तेरी ज़ात बुज़ुर्गी और इज़्ज़त व जलाल के लिए मुनासिब है अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे अपने घर तक पहुंचाया और मुझे उसके लाएक जाना और हर हाल मे अल्लाह का शुर्क है इलाही तुने मुझे अपने घर का हज करने के लिए बुलाया और हम तेरी बारगाह मे हाज़िर हो गये इलाही मेरे हज को कबूल फ़रमा और मेरी ख़ताओं से दर गुज़र फ़रमा और मेरा हर हाल दुरुस्त फ़रमा दे तेरे सिवा कोई माबूद नहीं

तवाफ़

इसके बाद (यानी यह दुआ पढ़ने के बाद इब्तेदाई तवाफ जिसको तवाफे कुदूम कहते हैं।) बजा लाये अपनी चादर से इज़तबा करे यानी इस तरह ओढ़े की दायां शाना खुला रहे और दायें बग़ल के नीचे से निकाल कर चादर का पल्लू बायें मुंढे पर डाल ले जिस से बायां शाना छुप जाये, फिर हज़रे असवद के पास आये उसे हाथ से छुए और मुमकिन हो तो बोसा दे वरना हाथों को ही बोसा दे अगर हुजूम के बाइस हजरे असवद को ना छू सके और न उसके क़रीब पहुंच सके तो दूर ही से उसकी तरफ हाथ से इशारा ही कर दे और यह अलफ़ाज़ जबान से अदा करे

तर्जमाः–मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बुज़ुर्ग है ऐ अल्लाह मैं तुझ पर ईमान लाया तेरी किताब की दिल से तसदीक़ की और तेरे अहद पर वफ़ा की और तेरे पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तरीक़ की पैरवी की।

तवाफ़ दायें जानिब से शुरु करे, इसके बाद बैतुल्लाह के दरवाज़े की तरफ़ लौटे फिर उस पत्थर की तरफ़ जाए। जिस के ऊपर ख़ाना काबा का परनाला रखा है। तेज़ी और कुव्वत के साथ छोटे छोटे क़दमों के साथ गुज़रे रुक्ने यमानी पर पहुंचे तो उसको हाथ से छू ले उसको बोसा न दे, इसी तरह हजरे असवद तक आए, इस पूरे तवाफ़ को एक फ़ेरा शुमार करे, दोबारा और सह बारा भी इसी सूरत से चक्कर लगाए और हर तवाफ़ के दौरान यह दुआ पढ़े–

तर्जमाः–ऐ अल्लाह हज क़बूल फ़रमा और इसकी कोशिश के एवज़ मुझे जज़ा दे और मेरे

गुनाह माफ़ फ़रमा दे।

इसके बाद आहिस्ता आहिस्ता चल कर बाक़ी चार तवाफ़ पूरे करे इन बाक़ी चार तवाफ़ों के दौरान यह दुआ पढ़े।

तर्जमा:–ऐ परवरदिगार बख़्श दे और रहम फ़रमा और मेरी ख़ता जो तुझे मालूम है उससे दरगुज़र फ़रमा, तू बड़ी इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाला है।

ऐ हमारे रब हम को दोनों जहान की भलाई अता कर और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। इस के अलावा दुनिया और दीन की भलाई के लिए जो दुआ करना हो करे।

जो शख़्स तवाफ़ कुदूम की नीयत करे उसको चाहिए कि वह दुनियावी नजासत और पलीदी से पाक हो, सतरे औरत किए हुए हो। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ख़ाना काबा का तवाफ़ भी नमाज़ ही है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि अल्लाह ने तवाफ़ करने वालों को बोलने की इजाज़त दे दी है और नमाज़ में बोलने की इजाज़त नहीं है।

तवाफ़ के बाद

तवाफ़ से फ़राग़त के बाद मक़ामे इब्राहीम के पीछे पहुंच कर दो रिक़अतें मुख़्तसर पढ़े पहली रिकअ़त में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह काफ़िरून और दूसरी रिकअ़त में सूरह इख़लास पढ़े फिर लौट कर हजरे असवद छू कर दरवाज़ा से निकल कर कोहे सफ़ा की जानिब चला जाए और इतना ऊंचा चढ़ जाए कि बैतुल्लाह नज़र आने लगे ऊपर [illegible] कर तीन बार अल्लाहु अकबर कह कर यह अलफ़ाज़ कहे।

तर्जमा:–तमाम तारीफ़ [illegible] अल्लाह ही के लिए हैं क्योंकि उसी ने हमें हिदायत और रास्ती का रास्ता दिखाया कोई माबूद बरहक़ नहीं मगर अल्लाह, उसकी ज़ात व सिफ़ात मे कोई उसका शरीक नहीं उसने अपना वादा पूरा कर दिया अपने [illegible] मदद की काफ़िरों को शिकस्त दी, वह यकता है उसके सेवा कोई माबूद नहीं और हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं ख़ुलूस के साथ उसकी इताअ़त करते हैं अगरचे ना गवार हो काफ़िरों को।

यह दुआ पढ़ने के बाद कोहे सफ़ा से उतर कर लब्बैक कहे दूसरी और तीसरी मरतबा दुआ पढ़े फिर नीचे उतर कर [illegible] [illegible]ल चले कि उस सब्ज़ मील (मीले अख़ज़र) से जो मस्जिद के क़रीब खड़ा है छः हाथ का फ़ासला रह जाये फिर तेजी के साथ चल कर बाक़ी दो सब्ज़ निशानो (पत्थरों) तक पहुंचे उसके बाद हलकी रफ़्तार से चल कर मरवा तक पहुंच कर ऊपर चढ़ जाये और जो अ़मल सफ़ा पर किया था वही मरवा पर करे फिर उससे उतर कर सई करे और दोनों सब्ज़ सुतूनों के दर्मियान दौड़े यहां तक की कोहे सफ़ा पर आ जायें इसके बाद दोबारा फिर उसी तरह करे ऐसा अमल सात बार करे (पहला चक्कर सफा से शुरू करे और मरवा पर ख़त्म करे) जिस तरह तवाफ़ के वक़्त तहारत ज़रूरी है उसी तरह सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई के वक़्त भी पाक होना लाज़िम है।

8 ज़िलहिज्जा

जब तवाफ़े काबा और सई से फ़ारिग़ हो जाये तो अगर हज्जे तमत्तो की नीयत की है तो अपना सर मुंडा दे या बाल तरशवाये बशर्ते कि कुरबानी का जानवर साथ न हो इस हल्क़ व क़स्र

के बाद वह हर काम उसके लिए जाएज़ है जो ग़ैर मोहरीम आदमी कर सकता है ब तरवीया (8 ज़िलहिज्जा) का दिन आ जाये तो उस रोज़ मक्का से एहराम बांधे और मेना में आये, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, और इशा की नमाज़ें वहीं अदा करे और वहीं रात गुज़ारे, अगले दिन फ़ज्र की नमाज़ भी वहीं अदा करे सूरज तुलूअ होने के बाद दूसरो के साथ चल कर उस जगह पहुंचे जहां अ़रफ़ा के दिन लोग खड़े होते हैं।

सूरज ढल जाय तो इमाम ख़ुतबा पढे, ख़ुतबा मे लोगो को बताये की उनको क्या क्या करना चाहिये मसलन वकूफ़ का हुक्म वकूफ़ का वक़्त वकूफ़ की जगह, अ़रफ़ात से रवानगी मुज़्दलफ़ा मे नमाज़ की अ़दायगी और शब्बाशी, कंकरीयां मारना, कुरबानी करना, सर मुंडाना बैतुल्लाह का तवाफ़ वग़ैरह फिर इमाम के साथ ज़ुहर व अ़स्र की नमाजें (एक साथ जमा कर के) पढे मगर इक़ामत हर नमाज़ की जुदा जुदा कहे फिर इमाम से क़रीब हो कर जबले रहमत और सख़रात (संगरेज़ों) की तरफ़ बढ़े और क़िब्ला रू होकर अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना ख़ूब करे अल्लाह की याद अकसर व बेशतर इन अलफाज मे करे (यह दुआ पढ़े)

तर्जमा:—अल्लाह के सिवा कोइ माबूद नहीं वह [illegible]दहु लाशरिक है उस[illegible]की हुकूमत है उसी के लिए हर तारीफ़ ख़ास है वही ज़िन्दा करता है और [illegible]ही मारता है, [illegible]ही ज़िन्[illegible] है जिसको मौत नहीं आएगी, उसी के हाथ मे हर भलाई है वह सब कु[illegible] कर सकता [illegible]लाही मेरे दिल में नूर पैदा कर दे मेरी आ़खों मे नूर पैदा कर दे मेरे कानों में [illegible]दा कर दे [illegible]र मेरा काम मेरे लिए आसान फ़रमा दे।

अगर दिन के वक़्त [illegible] के साथ [illegible]ड़ा न[illegible] हो सका (य[illegible] वकूफ़ अरफ़ा नहीं मिल सका) मगर अगले दि[illegible] शब कु[illegible]नी की सुब[illegible] सादि[illegible] से पहले [illegible]माम के साथ शामिल हो गया तो वकूफ़ का हुक्म [illegible]रार दिय जा[illegible]गा और [illegible]र उ[illegible] इमाम के पास नही पहुंच सका तो हज फौत हो जाय[illegible]।

मुज़दलफ़ा के [illegible]स्ते [illegible] तरफ इमाम के साथ सुकून और आहिस्तगी के साथ चलना चाहिये मुज़दलफा मे पहुंच क[illegible]माम के साथ मग़रीब व इशा कि नमाज़ बा जमाअ़त अदा करे अगर इमाम के साथ अदा न कर स[illegible] और वह फ़ौत हो जायें तो फिर तन्हा ही अदा करे और अपना सामान वहीं रखे, वहीं रा[illegible]ज़ारे, जहां संगरेज़े आसानी से दस्तेयाब हो जायें वहां से 70(सत्तर) संगरेज़े ले, यह कंकरियां चने से बड़ी और फनदक़ (बादाम) से छोटी हों इन संगरेज़ों को धो लेना मुस्तहब है।

जब सुबहे सादिक़ हो जाये तो तड़के नमाज़ पढ़ कर मशअ़रे हराम के पास जा कर क़याम करे, अल्लाह की हम्द व सना और तहलील व तकबीर और दुआ़ में बहुत ज़्यादा मशगूल रहे, मंदर्जा ज़ैल दुआ़ पढ़े।

ऐ अल्लाह तूने हमें इस जगह खड़ा किया है तूने ही हमें यह जगह दिखाई है, पस जिस तरह तूने हमें यह सीधी राह दिखाई है उस तरह हमको अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ अ़ता कर हमारी बख़्शिश फ़रमा और हम पर रहम फ़रमा जैसा की तूने अपने फ़रमान के मुताबिक़ हम से वादा किया है और तेरा वादा सच्चा है, फिर जब तुम लोग अरफ़ात से वापस आने लगो तो मशअ़रे हराम के पास अल्लाह की याद करो इस तरह याद करो जिस तरह तुम को बतला रखा है और हक़ीक़त में इससे पहले तुम महज़ नावाक़िफ़ थे फिर तुम सब को ज़रूरी है कि उस जगह होकर

वापस आओ जहां और लोग जाकर वापस आते हैं और अल्लाह तआला के सामने तौबा करो बेशक अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देगा और मेहरबानी फरमाएगा।

जब दिन खूब निकल आये तो मिना को वापस जाये और वादिए मुहस्सिर में तेज़ी के साथ चले और जब मिना पहुंच जाये तो जमरए उक़बा पर सात कंकरियां मारे, हर कंकरी मारते वक़्त तकबीर भी कहे और दोनों हाथों को इतना उठाये कि बग़लों कि सफ़ेदी नमूदार हो जाये इस लिए की आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने संगरेज़े इसी तरह मारे थे, यह कंकरिया तुलूअए आफ़ताब के बाद और ज़वाले आफ़ताब के क़ब्ल मारना चाहिये, अलबत्ता अय्यामे तशरीक़ के बक़िया दिनों में कंकरियां ज़वाले आफ़ताब के बाद मारना चाहिये कंकरिया मारने के बाद अगर उसके साथ कुरबानी का जानवर है तो उसे ज़िबह करे फिर सर मुंडवाये या बाल तरशवाये अगर औरत है तो वह अपने सर के बालों की लट अंगूली के पौरे के बराबर कटवाये फिर मक्का को चला जाये और गुस्ल या वुजू करके तवाफ़े ज़ियारत करे (तवाफ़े ज़ियारत की नीयत करना ज़रूरी है) तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहिम के नीचे दो रिकअ्त नमाज पढ़े उसके बाद अगर चाहे तो सफ़ा मरवा क़ा सई करे वरना तवाफ़े कुदूम के वक़्त जो सई कर चुका है वही काफ़ी है अब वह तमाम बातें जो एहराम के वजह से ममनूअ थीं जाएज़ हो जायेंगीं इसके बाद ज़मज़म की तरफ़ जाये और उसका पानी पिये, पानी पीने के वक़्त कहे–

तर्जमा:–बिस्मिल्लाह, इलाही इस पानी को मेरे लिए नफ़ा बख़्श, इल्म, वसीअ रिज़्क़, सैराबी और शिकम सैरी और हर मरज़ से शिफ़ा का बाइस बना दे और मेरे दिल को इससे धोकर अपने मोहब्बत आमेज़ ख़ौफ से भर दे।

मिना में:–इसके बाद को लौट आये और तीन रात वहीं रहे और अय्यामे तशरीक़ में तीनों जमरों पर ककरियां इसी तरह मारे जैसा की जिक्र हो चुका है, हर रोज़ इक्कीस(21)कंकरियां मारे, सात कंकरियां तीनों जमरों पर, जमरए ऊला से शुरू करे यह जमरा दूसरे जमरों की बनिसबत मक्का से ज्यादा फ़ासला पर है। मस्जिदे ख़ैफ़ के क़रीब है सबसे पहले क़िब्ला रू होकर उस जमरा पर कंकरियां मारे, मारते वक़्त जमरए ऊला बायीं जानिब हो ना चाहिये। यहां कंकरिया मारने के बाद जमरा से आगे कुछ पढ़ कर ठहर जाये ताकि दूसरों की कंकरिया उस को लग जायें यहां इतनी देर ठहर कर दुआ करता रहे जितनी देर मे सूरए बक़र पढ़ी जाती है फिर जमरए वुसता के पास पहुंच कर उसके बायीं तरफ़ ठहर कर क़िब्ला रू होकर कंकरिया मारे और हसबे साबिक़ दुआ करे फिर जमरए अख़ीर यानी जमरए उक़बा के पास पहुंचकर उससे बायीं तरफ खड़ा हो और क़िब्ला रू होकर कंकरिया मारे फिर वादी में उतर जाये तवक्कुफ़ न करे मगर जल्द फ़राग़त पाना चाहे तो तीसरे दिन संगरेज़े न फ़ेंके बल्कि जो उसके पास हों उनको ज़मीन मे दफ़्न कर दे, फ़िर उस जगह से मक्का की जानिब रवाना हो, वादीए अब्ता में पहुंच कर ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और एशा की नमाज़ें अदा करे, थोड़ी देर के लिये सो जाए फिर मक्का में दाख़िल हो, फिर मक्का के अन्दर या किसी दूसरी जगह इस तरह ठहरे जैसे ज़ाहिर या अबतह में क़याम किया था।

ख़ाना काबा में

जब ख़ाना काबा में दाख़िल हो तो बरहना पा दाख़िल हो, अन्दर पहुंच कर नमाज़े नफ़्ल अदा

करे इत्मीनान से खूब सैर हो कर आबे ज़म ज़म पिये आबे ज़म ज़म पीते वक़्त ज़्यादती इल्म, बख़्शिशे गुनाह और रज़ाए इलाही के हुसूल की नीयत करे, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "जिस बात के लिए ज़मज़म का पानी पिया जाये उसी के लिए है" अपनी तवज्जोह और निगाह को ज़्यादा तर ख़ानए काबा ही की तरफ़ रखे। बाज़ अहादीस में आया है कि ख़ाना काबा को देखना इबादत है। ख़ाना काबा को विदाअ़ किये बग़ैर उससे बाहर ना आए तवाफ़े विदाअ़ इस तरह है कि सात बार तवाफ करके रूक्ने यमानी और ख़ाना काबा के दरवाज़े के दर्मीयान खड़ा हो कर यह दुआ पढ़े।

तर्जमा:–ऐ अल्लाह यह तेरा ही घर है और मैं तेरा बन्दा हूं और तेरे बंदे और तेरी लौंडी का बेटा हूं जिस चीज़ पर तूने मुझे कुदरत दी उस पर तूने मुझे सवार कराया और तूने मुझे अपने शहरों की सैर कराई यहां तक कि मुझे अपनी नेमत तक पहुंचा दिया और जो इबादत मुझ पर फ़र्ज़ थी उसके अ़दा करने मे मेरी मदद फरमाई अगर तू मुझ से राज़ी हुआ तो और राज़ी हो और अगर मेरी किसी कोताही के बाइस तु मुझसे राज़ी नहीं हुआ तो इससे पहले कि मैं तेरे इस घर से वापस जाऊं तू अपनी रज़ामंदी से मुझ पर एहसान फ़रमा यह मेरे रूख़सत होने का वक़्त है अगर तू मुझे इस हालत में इजाज़त दे दे कि मैं तेरे और तेरे घर के एवज़ न किसी दूसरे घर को इख़्तियार करूंगा और न किसी दूसरे को अपना रब बनाऊंगा इलाही मेरे बदन की आफ़ियत, मेरे जिस्म की सेहत और मेरे दीन की भलाई अ़ता फ़रमा मेरे लिए दुनिया और आख़िरत की ख़ैर को जमा फ़रमा दे, बेशक तू हर शय पर कुदरत रखने वाला है।

इसके बाद रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे और रवाना हो जाये, मक्के में क़याम न करे अगर क़याम करे तो भेड़ ज़िबह करे।

अ़दमे गुंजाइशे वक़्त

अगर वक़्त की गुंजाइश न हो और ख़तरा हो कि अ़रफ़ात का क़याम फ़ौत हो जायगा तो इस सूरत मे इब्तिदा अ़रफ़ात ही से कर दे बशर्ते कि मीक़ात से एहराम बांधा हो और वहां खड़ा रहे यहां तक कि आफ़ताब गुरूब हो जाये गुरूबे आफ़ताब के बाद रवाना होकर वही अ़मल करे जो मुज़दलफ़ा में शब बाशी के ज़िम्न मे बयान हो चुका है फिर मिना में संगरेज़े दाल कर मक्का आ जाये और दो तवाफ़ करे।

अव्वल तवाफ़ में तवाफ़े क़ुदूम की नीयत करे और दूसरे तवाफ़ में ज़ियारत की। फिर सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई करे, अब उसके लिए हर वह चीज़ जो पहल ममनूअ़ थी हलाल हो जायेगी, फिर तीन दिन तक कंकरियाँ मारने के लिए मिना में लौट आए और बक़िया आमाल की तकमील करे (यानी वह तमाम अफ़आ़ले हज बजा लाये जो पहले बयान हो चुके हैं।

उमरा

उमरा की सूरत

उमरा की सूरत यह है कि गुस्ल करके खुशबू लगाये और शरई मीक़ात से एहराम बांधे, फिर मक्का पहुंच कर बैतुल्लाह का सात मर्तबा तवाफ़ करे और सफ़ा मरवा के दर्मियान सई करे, सई

के बाद सर मुंडवाए या बाल छोटे करवाए अगर कुरबानी का जानवर साथ न लाया हो तो एहराम खोल दे। अगर उमरा करने वाला मक्का मुकर्रमा में मौजूद हो तो मक़ामे तनईम में जाकर वहां से एहराम बांध कर आये और मज़कूरा बाला आमाला व अफ़आल बजा लाये।

मुबाशिरत के एहकाम

हज मे औरत के साथ जिमाअ् करना या किसी दूसरे तरीक़े से ऐसी बात करना जिससे इन्ज़ाल हो जाये तो हज बातिल हो जाता है।

हज के अरकान, वाजिबत और सुन्नतें

हज के अरकान

हज के अरकान चार हैं (1)एहराम (2)वकूफ़े अरफात (3)तवाफ़े ज़ियारत (4) सई (बैन सफ़ा व मरवा) अगर किसी ने इन अरकान में से किसी [illegible] रूक्न को तर्क कर [illegible]या तो उसका हज न होगा (और न किसी क़िस्म की कुरबानी देने से [illegible]सकी तलाफ़ी होगी) [illegible]र उसी साल या अगले साल दोबारा एहराम बांध कर हज करना वाजि[illegible] हो जाता है।

वाजिबाते हज

हज के वाजिबात पांच हैं (1) मुज़दलफा में निस्फ़ [illegible] [illegible]क ठहर[illegible] (2)एक रात मिना में कयाम करना (3)संगरेज़े [illegible]कना(4)सर [illegible]ना (5)तवाफ़े विदाअ़, अगर [illegible]न में से कोई वाजिब छूट जाए, तो इस [illegible] एवज़ [illegible] ज़िबह [illegible]ससे [illegible]रके वाजिब की तलाफ़ी उसी तरह हो जाएगी जिस तरह नमा[illegible] में तरके वाजिब पर सजदए [illegible] [illegible] हो जाती है

हज की सुन्नतें

हज में सुन्नते [illegible] (1)एहराम बांढने के लिए, मक्का में दाख़िल होने के लिए, अरफ़ात में क़याम करने के लिए, तवाफ़े ज़ियारत और तवाफ़े विदाअ़ के लिए गुस्ल करना (2)तवाफ़े कुदूम (3) सफ़ा और मरवा के दर्मियान दौड़ना(4)तवाफ़ में अकड़ कर चलना (5)तवाफ़ और सई के वक़्त चादर का इसतबाअ़ करना (6)दोनों रूक्नों को हाथ से छूना (7)संगे असवद को चूमना(8)सफ़ा और मरवा पर चढ़ना (9)मिना में तीन रातें गुज़ारना (10)मशअ़रे हराम के पास खड़ा होना (11) तीनों जमरों के पास खड़ा होना (12)ख़ुतबात के वक़्त ठहरना और खड़ा होना (13)दौड़ने के मक़ामात पर दौड़ना (14)आहिस्ता चलने के मकाम पर आहिस्ता चलना (15)तवाफ़ के बाद दो रिकअ़तें पढ़ना अगर यह तमाम अफ़आल या इनमें से कोई एक सुन्नत तर्क हो गई तो इसका एवज़ (कुरबानी) लाज़िम नहीं आता, फ़ज़ीलत तर्क हो जाएगी।

उमरा के अरकान

उमरा के अरकान तीन हैं (1)एहराम बांधना (2)ख़ाना काबा का तवाफ़ करना (3)सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई करना।

उमरा के वाजिबात:—उमरा में सिर्फ़ एक वाजिब है यानी सर मुंडवाना।

उमरा की सुन्नतें

उमरा की सुन्नतें यह हैं, एहराम के वक़्त गुस्ल करना, तवाफ़ और सई में मशरूआ दुआओं और अज़्कार का पढ़ना सुन्नतों के तर्क पर वही हुक्म है जो हज में तर्क सुन्नत के बारे में आया है।

मदीना (मुनव्वरा) की ज़ियारत

जब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से तन्दरुस्ती और आफ़ियत के साथ मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी नसीब हो तो मुस्तहब है कि मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में यह दरूद पढ़ता हुआ दाख़िल हो।

तर्जमा:—इलाही, हमारे आक़ा मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और हमारे आक़ा की आल पर रहमतें नाज़िल फ़रमा और मेरे लिए अपने रहमत के दरवाज़े ख़ोल दे और अपने अज़ाब के दरवाज़े बंद कर दे, तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं [illegible] जहानों का पालने वाला है।

फिर रौज़ए मुबारक पर हाज़िर हो, मिम्बर शरीफ़ के क़रीब इस तरह [illegible] हो कि मिम्बर (शरीफ़) बायें हाथ पर हो, मज़ारे मुबारक सामने हो और क़िब्ला वाली [illegible]ार पुश्त के पीछे, इस तरह ज़ियारत शरीफ़ ज़ायेर और क़िब्ला के दर्मियान ह[illegible]गी फिर इस तरह अर्ज करे,

तर्जमा:—ऐ अल्लाह के नबी आप पर सला[illegible] हो और अल्लाह की र[illegible]त और बरकत इलाही (हज़रत) मोहम्मद और [illegible] मोहम्मद [illegible] रहमत नाज़िल फ़[illegible]मा, जिस तरह तूने इब्राहीम पर रहमत नाज़िल [illegible]रमाई हक़ीक़त यह है [illegible] तू ह[illegible] हम्द और [illegible]ुर्गी वाला है इलाही हमारे आक़ा और सरदार मोह[illegible]द सल्लल्लाहो अलैहि [illegible]सल्लम [illegible] लिए वसीला बना और दुनिया और आख़िरत में उनका [illegible]लंद द[illegible] और बुज़[illegible] अता फ़रमा उन्हें मक़[illegible] महमूद इनायत कर जिस का तूने वादा किया है, [illegible] (आलम) अरवाह में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह पर (आलम) अजसाम [illegible]प के जिस्मे (अतहर) पर ऐसी ही रहमत नाजिल फ़रमा जैसा उन्होंने तेरा पैग़ाम पहुंचाया और तेरी [illegible]त की तिलावत की और तेरे हुक्म का बलंद आहंगी से ऐलान किया, तेरी राह में जिहा[illegible] [illegible]या, तेरी फ़रमा बरदारी का हुक्म दिया और नाफ़रमानी से रोका, तेरे दुशमन से दुशमनी और तेरे दोस्त से दोस्ती फ़रमाई, वफ़ात के वक़्त तक तेरी इबादत की बेशक इलाही! तूने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाया कि अगर लोग अपनी जानों पर भी ज़ुल्म करके तेरे पास आयें और अल्लाह से बख़्शिश चाहें और रसूल उनके लिए बख़्शिश की दरख़्वास्त करें तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला और मेहरबान पायेंगें और इसमें कोई शुबा नहीं कि मैं तेरे पैग़म्बर के पास अपने गुनाहों से तौबा करता हुआ माफ़ी का तलबगार होकर हाजिर हुआ हूं और तुझ से दरख़्वास्त करता हूं कि तू मेरे लिए मग़्फ़िरत को उसी तरह वाजिब कर दे जिस तरह तूने उन लोगों के लिए वाजिब कर दी थी जो तेरे नबी की हयात में जो उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर माफ़ी के तलबगार हुए और नबी ने भी उनके लिए मग़्फ़िरत तलब फ़रमाई इलाही मैं तेरे नबी के वसीले से जो नबीए रहमत थे तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूं, या रसूलल्लाह मैं आप के वसीले से अपने रब की तरफ़ रुजूअ करता हूं कि वह मेरे गुनाह माफ़

फ़रमा दे और मुझ पर रहम फ़रमा, इलाही मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शफ़ाअत करने वालों में सबसे अव्वल दर्जा वाला और सब दुआ करने वालों से ज़्यादा कामयाब अव्वलीन व आख़िरीन में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला बना इलाही जिस तरह हम बग़ैर देखे उन पर इमान लाए और बग़ैर मिले हमने उनकी तसदीक कर दी तू सभी को उस जगह दाख़िल करना जहां तूने उनको दाख़िल फ़रमाया और हमारा हश्र उन्हीं के गरोह में फ़रमा और हम को उनके हौज़ पर उतार और उनके प्याले से हम को ऐसा पानी हम को पिला कर सैराब कर जो प्यास को दूर करने वाला, लज़ीज़ और खुशगवार हो जिस के बाद हम कभी प्यासे न हों, और हम को रुसवा, अहद शिकन, इताअत से ख़ारिज, और दीन की सदाकत में शक करने वाला न बना हम को उनमें से न बना जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ न हम को गुम करदा राह बना और हम को अपने नबी की शफ़ाअत के मुस्तहक़ीन में से कर दे।

यह दुआ पढ़ कर दायें तरफ़ से होकर आगे बढ़े और यह दुआ पढ़े।

ऐ अल्लाह के रसूल के दोनों दोस्तों आप पर सलाम हो, अल्लाह की रहमत और बरकत हो ऐ (हज़रत) अबू बकर सिद्दीक़ आप पर सलाम हो ऐ (हज़रत) उमर फ़ारूक़ आप पर सलाम हो, ऐ अल्लाह तू इन दोनों हज़रात को इनके नबी और दीने इस्लाम की तरफ़ से नेकी और जज़ा दे मैं और हमारे भाईयों को जो हमसे क़ब्ल ईमान के साथ इस दुनिया से रुख़सत हो गये उन्हें बख़्श दे और हमारे दिलों में ईमान लाने वालों के हक़ में कीना न डाल, ऐ हमारे पालने वाले बेशक तू बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

इस के बाद दो रिकअतें पढ़ कर बैठ जाये, रौज़ए मुतहहरा के अंदर ही मज़ारे अक़दस और मिम्बर शरीफ़ के दर्मीयान अगर नमाज़ अदा करे तो मुस्तहब है हुसूले बरकत के लिए मिम्बर शरीफ़ को छू ले।

मस्जिदे क़ुबा में भी नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है और शोहदा के मज़ारात की ज़ियारत का ख्वास्तगार हो तो ज़ियारत कर सकता है, ख़ूब दुआयें मांगे जब मदीना मुनव्वरा से रुख़सत होने का इरादा करे तो मस्जिदे नब्वी में हाज़िरी दे, रौज़ए मुबारक की तरफ़ बढ़ कर उसी तरह सलाम पेश करे जिस तरह पहले पेश किया था, सलात व सलाम के बाद इजाज़त तलब करे, दोनों सहाबा पर सलाम पेश करे और फिर यह दुआ पढ़े।

इलाही अपने नबी के मज़ार की इस ज़ियारत को मेरे लिए आख़िरी ज़ियारत न बना देना और मरते वक़्त मुझे आप की मोहब्बत और सुन्नत पर क़ाइम रखना, आमीन या अर्रहमर्राहेमीन

बाब 2

आदाब

इस्लामी अख़्लाक़ व तहज़ीब

सलाम

मुलाक़ात के वक़्त पहले सलाम करना सुन्नत है, और सलाम का जवाब देना पहले सलाम करने से ज़्यादा ज़रूरी है।लफ़्ज़े सलाम पर चाहे तो अलिफ़ लाम ज्यादा करके अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु कहे या बग़ैर अलिम लाम दाख़िल किए सलामुन अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु कहे दोनों तरह जाइज़ है।

सलाम के बारे में एक हदीस मरवी है जो हज़रत इमरान बिन हसीन से मनक़ूल है कि "एक शख़्स ने ख़िदमते गिरामी में हाजिर हो कर अस्सलामो अलैकुम कहा हुज़ूर ने जवाब दे दिया वह शख़्स बैठ गिया, हुजूर ने इरशाद फ़रमाया इसको दस नेकियाँ मिलीं, कुछ देर बाद एक दुसरा शख़्स हाज़िरे ख़िदमत हुआ–और उसने अर्ज़ किया अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु हुज़ूर ने जवाब दे दिया और वह बैठ गिया–सरकार ने इरशाद फ़रमाया इसे तीस नेकियाँ मिलीं। सुन्नत यह है कि चलने वाला बैठने वाले को, और सवार पियादा को और बैठे को सलाम करे, जमाअत में से अगर एक ने भी सलाम कर दिया तो सब की तरफ़ से काफ़ी है इसी तरह अगर जमाअत में एक ने जवाब दे दिया तो वह सब की तरफ़ से काफ़ी होगा, मुश्रिक को सलाम करने में इब्तिदा दुरुस्त नहीं, अगर मुश्रिक सलाम में खुद पहल करे तो जवाब में (सिर्फ़) अलैक कहदे लेकिन मुसलमान के सलाम के जवाब में व अलैकुमस्सलाम कहना चाहिए, जिस तरह उसने अस्सलामो अलैकुम कहा है अगर बरकातहुम का लफ़्ज़ बढ़ा दे तो और भी अच्छा है।

अगर कोई मुसलमान दूसरे मुसनमान को सिर्फ़ सलाम कहे तो जवाब न दिया जाए और उसको बता दिया जाए कि यह इस्लामी तरीक़ा नहीं है औरतों को भी बाहम सलाम करना मुस्तहब है लेकिन किसी मर्द का जवान औरत को सलाम करना मकरूह है हाँ अगर औरत का चेहरा खुला हो (बेपर्दा हो) तो ऐसी हालत में अगर उसे किया जाए तो कुछ हरज नहीं है।बच्चों को सलाम करना मुस्तहब है इस (तरीक़ा) से उनमें सलाम की आदत पैदा होती है, जो शख़्स मज्लिस से उठ कर जाए वह जाते वक़्त अहले मज्लिस को सलाम करे यह मुस्तहब है, अगर दरवाज़ा दीवार या कोई और चीज़ हायल हो तब भी सलाम करे, अगर कोई सलाम करके चला गया और फिर दो बारा आकर तब भी सलाम करे।

सलाम करने की मुमानिअत

अगर कुछ लोग शतरंज या नर्द (पाँसा) खेल रहे हों, या जूए में मसरूफ़ हों, शराब पी रहे हों तो उन को अस्सलामो अलैकुम न कहे (उनको सलाम न करे) हाँ अगर वह खुद सलाम करें

तो जवाब दे दे अगर यह क़वी उम्मीद हो कि जवाब न देने से यह लोग मुतनब्बेह होंगे (आमाल पर शर्मिन्दा होंगे) और गुनाहों से बाज़ आ जाएंगे तो सलाम का जवाब (इस सूरत में भी) न दे कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा तर्के सलाम न करे, हाँ अगर वह बिदअती हो, गुम करदा राह हो या मासियत में मुब्तिला हो तो ऐसे शख़्स से तर्के ताल्लुक करे। जिस मुसलमान भाई ने दूसरे मुसलमान भाई से क़तए ताल्लुक़ कर लिया हो और फिर उस को सलाम करे तो वह तर्के ताल्लुक़ के गुनाह से बच जाता है।

मुसाफ़ा

इस्लाम में मुसाफ़ा करना मुस्तहब है, अगर मुसाफ़ा की इब्तिदा ख़ुद की है तो जब तक दुसरा शख़्स मुसाफ़ा से अपना हाथ अलग न करे, अपना हाथ अलग नहीं करना चाहिए, आपस में बग़लगीर हो जाएं या बतौरे तबर्रूक व दीनदारी एक शख़्स दूसरे के हाथों या सर के बोसा ले तो यह जाएज़ है, मूंह चूमना मकरूह है।

ताज़ीम

ताज़ीम के लिए खड़ा होना

बादशाह आदिल, वालिदैन, दीनदार और परहेज़गार [illegible] बुजुर्ग लोगों की ताज़ीम के लिए खड़ा होना मुस्तहब है इस का असले सबूत इस रिवायत से मिलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनी [illegible] के य[illegible] के क़ज़िया के [illegible]सले के लिए हज़रत साद बिन मुआज़ को तलब फ़रमाया हज़रत साद [illegible] पर सवार [illegible] कर (बीमारी की वजह से) आए उनके आने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि [illegible] अहले मज्लिस (हज़रत साद के क़बीला वालों) से फ़रमाया कि अपने सरदार के लिए खड़े हो [illegible]।

उम्मुल मुमेनीन [illegible] आएशा रज़ियल्लाहो अन्हा फ़रमाती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा के यहाँ तशरीफ़ ले जाते थे तो वह आपकी ताज़ीम के लिए [illegible] जाती थीं। इसी तरह जब कभी हजरत फ़ातिमा आंहज़रत की ख़िदमत में तशरीफ़ ले जा[illegible] थीं तो आंहजरत उनकी तरफ़ उठ कर (बढ़ते) और हाथ पकड़ कर चूमते और अपनी जगह पर बिठाया करते।

एक रिवायत में आया है कि हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया जब किसी क़ौम का सरदार (बुज़ुर्ग) तुम्हारे पास आए तो तुम उस की इज़्ज़त करो, इससे दिलों में दोस्ती और मोहब्बत पैदा होती है, इसलिए नेक लोगों की ताज़ीम मुस्तहब है और इसी तरह उनको तोहफ़ा हदाया देना भी मुस्तहब है लेकिन अहले मासियत और अल्लाह के ना फ़रमान बन्दों की ताज़ीम मकरूह है।

छींक और जमाही (जमाई)

छींकने वाले को चाहिए कि छींकते वक़्त मुंह को छुपा ले और आहिस्ता छींके फिर ऊँची आवाज़ से अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन कहे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जब बन्दा (छींक के वक़्त) अल्हम्दो लिल्लाह कहता है तो फ़रिश्ता उसके सा

रब्बुल आलमीन कहता है और बन्दा अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन कहता है तो फ़रिश्ता यरहम–क रब्बोका कहता है।

छींकते वक़्त अपना मुह दायें बायें न फेरे, छींकने वाला अल्हम्दो लिल्लाह कहे तो सुनने वाले के लिए यरहम–कल्लाह कहना मुस्तहब है उसके जवाब में छींकने वाला यहदीकोमुल्लाह व युस्लेह हालोकुम (अल्लाह तुम को हिदायत दे और तुम्हारा हाल दुरुस्त करे) कहे अगर यग़फ़िरूल्लाह लकुम कहे तो यह भी दुरुस्त है। अगर किसी को तीन दफ़ा से ज़्यादा छींकें आयें तो सुनने वाले पर (दुआईया) जवाब देना ज़रुरी नहीं क्योंकि यह मरतूब हवा और ज़ुकाम की वजह से है, हदीस शरीफ़ में इसी तरह आया है, हज़रत सलमा इब्ने अकूअ से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि छींकने वाले को तीन बार जवाब दिया जाए उससे ज्यादा छींके तो ज़ुकाम में मुब्तला है।

जमाही या जमाई

जब किसी को जमाही आए तो मुंह पर हाथ रख ले या आस्तीन से (मुंह को) ढांप ले क्योंकि शैतान मुंह में घुस जाता है। हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि हुजूर वाला ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह छींक को पसन्द फ़रमाता है और जमाही को नापसन्द। तुम में से किसी को जमाही आए तो जहाँ तक हो सके लौटा दे हा हा न कहे इससे शैतान हंसता है, बे पर्दा बूढ़ी औरत की छींक का जवाब देना मर्द के लिए जायज़ है और नक़ाबपोश [illegible] औरत की छींक का जवाब देना मर्द के लिए नाजाएज़ है–बच्चे की छींक के जवाब में यह दुआ पढ़े अल्लाह तुझे बरकत दे, अल्लाह तुझे जज़ा दे, अल्लाह तुझे नेकी दे।

दस फ़ितरी खसाइल

फ़ितरते इंसानी की इन दस ख़सलतों का हर आदमी को इख़्तियार करना ज़रूरी है, इन दस ख़सलतों में से पांच का तअल्लुक़ सर से है और पांच बाक़ी सारे जिस्म से मुताल्लिक़ है।

सर से मुताल्लिक़ ख़सलतें यह हैंः–(1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी डाल कर उसको साफ करना (3) मिस्वाक करना (4) मूंछें कतरवाना (5) दाढ़ी रखना।

सारे जिस्म के मुताल्लिक़ ख़सलतें यह हैंः–(1) ज़ेरे नाफ़ के बाल साफ़ करना, (2) बग़लों के बाल साफ़ करना (3) नाख़ुन कटवाना (4) पानी से इस्तिनजा करना (5) ख़तना कराना।

मूंछें और दाढ़ी

मूंछें तरश्वाने की असल वह हदीस है जो हजरत इब्ने उमर से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया लबें (गहरी) कटवाओ और दाढ़ी बढ़ाओ। हज़रत अबू हुरैरा से मरवी हदीस में आया है कि लबें कतराओ और दाढ़ी बढ़ाओ। दोनों रिवायतों के मानी एक ही हैं, लफ़्ज़ "क़स" यानी काटने या तरश्वाने का मतलब क़ैंची की मदद से बालों को जड़ से काटना है लेकिन मूंछों को उस्तुरे से मूंढना मकरूह है। हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह शख़्स हम में से नहीं जो अपनी मूंछें मुंडाता है, इसकी वजह यह है कि मूंछें मूंडना एक क़िस्म की ख़िलक़त बदलनी है इससे चहरे की रौनक

और ख़ूबसूरती जाती रहती है सहाबा कराम से मरवी है कि वह अपनी मूंछों को कतरवाते थे।

दाढ़ी

दाढ़ी रखने से मुराद दाढ़ी के बालों का वाफ़िर और ज़्यादा करना है, हक़ तआला के इरशाद यानी यहाँ तक कि ज्यादा हो गए, के यही मानी है। रिवायत में आया है कि हज़रत अबू हुरैरा दाढ़ी को मुट्ठी में पकड़ कर मुट्ठी से बाहर निकले हुए बालों के हिस्से को कतर देते थे, हजरत उमर फ़रमाते थे कि मुट्ठी के नीचे का हिस्सा काट दो।

बालों की मीआद

हज़रत अनस बिन मालिक ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि चालीस दिन गुज़रने से क़ब्ल मूंछें कतरवाओ, नाख़ून कटवाओ, बग़ल के बाल उखड़वाओ और शर्मगाह के बाल मूंडो, हमारे बाज असहाब का क़ौल है कि यह इजाजत मुसाफिरों के लिए है मुकीम के लिए बीस रोज से आगे बढ़ना अच्छा नहीं है। इमाम अहमद से इस हदीस के सही और ग़लत होने के मुताल्लिक़ मुख़तलिफ़ रिवायात आई हैं किसी में इस इस की सेहत का इनकार है और किसी में तय्युने वक़्त के लिए इस हदीस को हुज्जत क़रार दिया गया है।

मूए ज़ेरे नाफ़ की सिलसिले में इख़्तियार है चाहे नौरा (चूना और हड़ताल का मुरक्कब) से सफ करें चाहे चूने या उस्तुरे से साफ करें, इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह से रिवायत है कि वह नौरा इस्तेनाल करते थे, मन्सूर बिन हबीब बिन अबी साबित की रिवायत हुजूर अकदस के बारे में यही है कि हजरत अबू बकर सिद्दीक़ ने रसूलुल्लाह के लिए लेप तैयार किया और हुज़ूर ने अपने दस्ते मुबारक से उसे अपने ज़ेरे नाफ़ लगाया। हज़रत अनस बिन मालिक से इसके ख़िलाफ मरवी है, उन्होंने फरमाया कि रसूलुल्लाह ने कभी चूने का लेप इस्तेमाल नहीं किया बल्कि जब बाल बढ़ जाते तो हुजूर उन्हें मूंड दिया करते। मूए ज़ेरे नाफ़ के सिवा दूसरी जगह के बाल दूसरे शख़्स से भी साफ कराये जा सकते हैं। इसके सबूत में हजरत उम्मे सलमा कि रिवायत है कि रसूल को ज़ेरे नाफ तक पहुंचते तो हुजूर इस काम को अन्जाम देते। अबूल अब्बास नसाई कहते हैं कि हमने अबू अब्दुल्लाह के चूने का लेप किया लेकिन ज़ेरे नाफ की हद पर उन्होंने ख़ुद चूने का इस्तेमाल किया ग़रज़ जब ज़ेरे नाफ़, रानों व पिंडलियों की सफाई का जवाज़ चूने से साबित है तो उस्तुरे से भी मूंडना जायज़ है। इस क़यास की ताईद हज़रत अनस की मजकूरा बाला रिवायत से होती है कि रसूलुल्लाह ने चूने का इस्तेमाल कभी नहीं किया, बाल ज़्यादा होते तो मूंड देते थे।

सफ़ेद बालो का उखाड़ना

सफ़ेद बालों का चूनना मकरूह है, है हज़रत अम्र बिन सुयैब ने अपने वालिद से और उन्होंने अपने दादा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफ़ेद बाल उखाड़ने (चुनने) से मना फ़रमाया है और फरमाया सफ़ेदी इस्लाम का नूर है, एक और हदीस में आया है कि हुजूर गरामी ने इरशाद फ़रमाया: सफ़ेद बालों को न निकालो (उखाड़ो) क्योंकि जिस मुसलमान को बहालते इस्लाम लिबासे पीरी पहनाया गया क़ियामत के दिन (बालों की सफ़ेदी) उसके लिए नूर होगी। यहया की रिवायत में आया है कि अल्लाह तआला उसके हर बाल के

एवज़ एक नेकी लिखेगा और एक गुनाह साक़ित कर देगा बाज़ तफ़सीरों में अल्लाह तआला के इस फ़रमान को व जा अकुम अन्नज़ीर इसी बात की ताईद में पेश किया गिया है और कहा है कि नज़ीर से मुराद शैब यानी बुढ़ापा है। सफ़ेद बाल मौत से डराते हैं, मौत की याद दिलाते हैं, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी और दुनिया की लज़्ज़तों से रोकते हैं, आख़िरत की तैयारी और दारेबक़ा की सामान फ़राहम करने परं तैयार करते है। फ़िर किस तरह ऐसी चीज़ का दूर करना जायज़ हो सकता है? सफ़ेद चुनने वाला तक़दीर से मुक़ाबला करना चाहता है, अल्लाह के कामों में दख़ल दे कर उसकी ना ख़ुशी हासिल करता है, जवानी की ताज़गी और नौ उमरी को हमेशा की ताज़गी और बुज़ुर्गी पर तरजीह देना चाहता है। बुज़ुर्गी, बुर्दबारी और इस्लाम के नूरानी लिबास और इब्राहीमी शिआरे जिस्मानी से नफ़रत करता है। बाज़ कुतुब में मंकूल है कि सब से पहले हालते इस्लाम में सफ़ेद बाल हज़रत इब्राहीम के हुए थे। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस है: अल्लाह तआला बूढ़े आदमी से शर्म करता है यानी उसे अज़ाब देने में हया फ़रमाता है।

नाखुन तराश्ना

जुमा के दिन ऊंगलियों की तरतीब के ख़िलाफ़ नाख़ूनों को तराश्ना मुस्तहब है (तरतीब के ख़िलाफ़ तराश्ने से मुराद यह है कि छोटी ऊंगली से अंगूठे तक तरतीबवार न तराशे जाएं) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि ज़ो कोई मुकर्ररा तरतीब के ख़िलाफ़ नाख़ून काटता है वह अपनी आँख में आशोब व रम्द की बीमारी [illegible] दिखगा। हमीद बिन अब्दुर्रहमान ने अपने वालिद से रिवायत नक़्ल की है कि जो शख़्स जुमा के दिन नाख़ून तराशेगा उसके बदन के अंदर शिफ़ा दाख़िल [illegible] और बीमारी निकल जाएगी, जुमेरात के दिन अस्र के बाद नाख़ून तराश्ने की भी यही फ़जीलत और बुज़ुर्गी है।

ऊंगलियों की तरतीब के ख़िलाफ़ का मतलब [illegible] कि अव्वल सीधे हाथ की छंगली से तराश्ना शुरू करे फिर बीच की उंगली, फिर अंगूठा, अंगूठे के बाद छंगली के बराबर वाली उंगली फिर अंगुश्ते शहादत के नाखुन तराशे, बायें हाथ के नाख़ूनों की तराश इस तरह करे कि पहले अंगूठा फिर दर्मियानी उंगली फिर छंगली और उसके बाद अंगुश्ते शहादत और अंगुश्ते शहादत के छंगली के बराबर वाली [illegible] के नाख़ून तराशे। हमारे अकाबेरीन (उलमाए हंबली से अब्दुल्लाह बिन बत्ता की रिवायत इसी तरह है। हज़रत वकी हज़रत आएशा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे इरशाद फ़रमाया ऐ आएशा! जब तू नाखुन तराशे तो बीच की उंगली से शुरू कर फिर छंगली फिर अंगूठा, फिर छंगली के पास वाली उंगली फिर अंगुश्ते शहादत के नाख़ून काट, यह अमल तवंगिरी पैदा करता है।

नाख़ून, क़ैची या चाकू से काटे जायें, दांतों से नाख़ून काटना मकरूह है, नाख़ून तराश कर उनको मिटटी में दबा देना चाहिए। सर और बदन के बालों, भरी हुई सेंगी और फ़स्द के ख़ून का भी यही हुक्म है। रिवायत है कि रसूलूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ून, बाल और नाख़ूनों को मिट्टी में दबाने का हुक्म दिया है।

सर मुंडाना

इमाम अहमद बिन हंबल की एक मरफ़ू रिवायत के बमौजिब हज और उमरा और ज़रूरत

हज़रत अबू मूसा और उबैद बिन उमर से रिवायत है कि हुज़ूर
के अलावा स·· मुंडाना मकरूह है। हज़रत अबू मूसा और उबैद बिन अब्दुल्लाह
ने फ़रमाया: जिसने सर मुंडाया वह हममें से नहीं। दारे क़ुतनी ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह
से रिवायत की है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हज और उमरा के सिवा
बाल न मुंडाये जाएं। इसी बिना पर हुज़ूर ने ख़्वारिज की मज़म्मत फ़रमाई और उनकी पहचान
सर मुंडाना बतलाया, हज़रत उमर ने सब्बीग़ से फ़रमाया "अगर मैंने देखा कि तुमने सर के बाल
मुंडाए हैं तो उसी सर को पिटूंगा। इब्ने अब्बास रिवायत करते हैं कि "अगर किसी का सर मुंडा
हुआ देखो तो समझो उसमें शैतान की सिफ़त है क्योंकि सर मुंडवाने वाला अपने को अजमियों
को हम शक्ल बनाता है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि
जो किसी क़ौम की शक्ल इख़्तियार करेगा वह उसी में से होगा।

जब सर मुंडाने की मुमानिअत ऊपर की रिवायतों से साबित है तो फिर बालों को कतरवाना चाहिए। इमाम अहमद बिन हंबल ऐसा ही करते थे, इख़्तियार है कि बाल जड़ों से कतरवाए या ऊपर से यानी बालों की नोकें कटवा दे।

इमाम अहमद की दूसरी रिवायत है कि सर मुंडाना मकरूह है क्योंकि अबू दाऊद ने अपनी असनाद के साथ नक़ल किया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने फ़रमाया कि हज़रत जाफ़र की शहादत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जाफ़र के घर वालों के पास हज़रत बिलाल को भेजा फिर ख़ुद भी तशरीफ़ ले आए और इरशाद फ़रमाया कि आज के बाद मेरे भाई पर न रोना फ़िर फ़रमाया मेरे भतीजों (उसके लड़कों) को मेरे पास लाओ, हम को आपकी ख़िदमत ले जाया गिया, हुज़ूर ने फ़रमाया नाई को बुलाओ नाई बुलाया गया हुक्म दिया गिया कि उनके सिर मूंड दो, नाई ने हमारे सर मूंड दिये। यह भी रिवायत है कि हुज़ूर के बाल कंधों तक लटकते थे, आपने ज़िन्दगी के आवाख़िर ज़माने में अपने सरे मुबारक के बाल मुंडवा दिये थे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि हुज़ूर के बाल कानों की लौ तक थे। उस ज़माने में बाज़ अफ़राद कभी कभी सर मुंडा लिया करते थे और किसी ने उन पर एतराज़ नहीं किया, इस बिना पर मकरूह नहीं है कि इस में सख़्ती और तंगी है जो माफ़ कर दी गई है। जिस तरह कि बिल्ली और दूसरे हशरातुल अर्ज का झूठा माफ़ कर दिया गिया है।

क़ज़अ़ का हुक्म

क़ज़अ़ यानी कुछ बाल मुंडाना और कुछ हिस्से के बाल छोड़ देना मकरूह है हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से मना फ़रमाया है। इसी तरह गरदन के बाल मुंडाना भी मकरूह। हुज़ूर ने पचने लगवाने की ज़रूरत के सिवा गर्दन के बाल मूंड ने से मना फ़रमाया है कि यह मजूसियों का अ़मल है।

मांग निकालना

बड़े बाल रखना और मांग निकालना सुन्नत है, एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद भी मांग निकाली और सहाबा कराम को भी मांग निकालने का हुक्म दिया, यह रिवायत बीस से ज़्यादा असहाब से मरवी है जिन में हज़रत अबू उबैदा, हज़रत अम्मार और हज़रत अबी मसऊद भी शामिल हैं।

तहज़ीफ़ या ज़ुल्फ़ें निकालना

अपने रुख़सारों पर (औरतों की तरह लंबी) ज़ुल्फ़ें छोड़ना जैसा कि अल्वियों का तरीक़ा है मर्दों के लिए मकरूह है, औरतों के लिए जायज़ है क्योंकि हमारे अकाबेरीन में से अबू बकर जलाद ने हज़रत अली से नक़्ल किया है कि आपने फ़रमाया कि औरतों को ज़ुल्फ़ें रखना जायज़ है मगर मर्दों के लिए मकरूह है।

मोंची से बाल नोचना

मोंची से चेहरे के बाल उखेड़ना मर्द और औरत दोनों के लिए मकरूह है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मोंची के ज़रिये चेहरे के बाल उखेड़ने वालों पर लानत फ़रमाई है। औरतों के लिए पेशानी के बाल शीशे की धार या उस्तुरे से काटना मकरूह है, चेहरे पर अगर बाल निकल आयें तो उन को भी शीशे या उस्तुरे से काटना और मूंडना औरत के लिए मकरूह है इसकी ममानिअत पहले बयान हो चुकी है। लेकिन अगर शौहर अपनी बीवी को इसका हुक्म दे और अंदेशा हो कि हुक्म न मानने की सूरत में [illegible] उससे बे इल्तेफ़ाती बरतेगा और किसी दूसरी औरत से निकाह कर लेगा या इस तरह बिगाड़ और ज़रर पैदा होगा तो मसलेहतन बाज़ लोगों के नज़दीक ऐसा करना जाएज़ है। रंगा रंग कपड़ों से आराइश, [illegible] तरह की ख़ुशबूँ का इस्तेमाल, अपने शौहर से शोख़ी, ख़ूश तबई करना ताकि शौहर का दिल लुभायें और उसको अपनी तरफ़ मायल करें जायज़ है। वह औरतें जो अपने मुंह के बाल मो[illegible] से साफ़ करके अपने आपको इसलिए ख़ूबसूरत [illegible] हैं कि [illegible] के साथ अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात का पूरा करें उन पर आंहज़रत [illegible] लानत की है।

बालों को सियाह करना

सफ़ेद बालों को सियाह रंग में रंगना मकरूह है, हज़रत [illegible] रिवायत करते हैं कि बाज़ लोग अपने सफ़ेद बा[illegible] सियाह में बदल रहे थे, आंहज़रत ने देख कर फ़रमाया "अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उनके मुंह काले करेगा"। हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि आंहज़रत ने फ़रमाया कि [illegible] बहिश्त की ख़ूशबू नहीं सूंघेंगे। सियाह ख़िज़ाब के सिलसिले में जो अहादीस आई हैं उनमें से एक यह है कि हूज़ूर ने इरशाद फ़रमाया सियाह ख़िज़ाब करो इससे बीवी का उन्सियत और जिहाद में दुश्मन को (तुम्हारे जवान होने का) धोका हो जाता है। इस हदीस में सियाह ख़िज़ाब का जवाज़ असल में जंग के लिए है बीवी का ज़िक्र असले मक़सूद नहीं है बल्कि बित्तब्बेअ़ है।

ख़िज़ाब या वसमा

मुस्तहब तरीक़ा यह है कि सर के बालों को मेहंदी (हिना) या वसमा के ख़िज़ाब से रंगे। हज़रत इमाम हम्बल ने तैंतीस बरस की उम्र में मेहंदी वसमा का ख़िज़ाब किया था, उनके चचा ने कहा कि तुमने तो वक़्त से पहले ही ख़िजाब कर लिया, उन्होंने जवाब दिया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी की रिवायत है कि हुज़ूर वाला ने इर्शाद फ़रमाया "सफ़ेद बालों का

रंग बदलने की बेहतरीन चीज़ मेहंदी वसमा है। रसूलुल्लाह के ख़िजाब के मुताल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं। हज़रत अनस का बयान है कि थोड़े से बालों के सिवा हुज़ूर के बाल सफ़ेद ही नहीं थे, लेकिन हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर ने हुज़ूर के बाद मेहंदी वसमा का ख़िजाब लगाया था, यह भी रिवायत है कि हज़रत उम्मे सलमा ने रसूलुल्लाह के चन्द बाल निकाल कर लोगों को दिखाए जो मेहंदी वस्मा से रंगे हुए थे, इस हदीस से रसूलुल्लाह का मेहंदी वसमा का ख़िजाब लगाना साबित होता है।

इमाम अहमद के क़ौल के मुताबिक़ ज़ाफ़रान और दरस (एक क़िस्म की घास) से ख़िजाब करना रवा है और इसकी दलील यह है कि हज़रत अबू मालिक अश्अरी की रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह का ख़िजाब दरस और ज़ाफ़रान का था। पस सर के बालों का ख़िजाब लगाना साबित है तो इसी तरह दाढ़ी में ख़िजाब लगाने का भी हुक्म ऐसा ही होगा कि हुज़ूर वाला ने हुक्म उमूमी दिया था कि "सफ़ेद बालों को बदल दो और यहूदियों से मुशबिहत न करो।" हज़रत अबू ज़र की रिवायत में पहले गुज़र चुका है कि हुज़ूर ने फ़रमाया सफ़ेद बालों को बदलने की बेहतरीन चीज़ मेहंदी वसमा है। यह हुक्म भी आम सर के बाल हों या दाढ़ी के सबको शामिल है।

फ़तेह मक्का के दिन हज़रत अबू बकर अपने वालिद अबू कोहाफ़ा को लेकर रसूले खुदा की ख़िदमते गिरामी में हाज़िर हुए हुज़ूर वाला ने हज़रत अबू बकर के पास [illegible] से फ़रमाया "बड़े मियाँ को तुम घर पर ही रहने देते हम उनके पास पहुंच [illegible] इसके बाद अबू कोहाफ़ा मुसलमान हो गए उस वक़्त उनके सर और दाढ़ी (के बाल) सफ़ेद [illegible] की तरह थे, हुज़ूर ने फ़रमाया इस रंग को बदल दो मगर सियाही से बचना इस इरशाद में साफ़ सराहत है कि दाढ़ी का हुक्म सर की तरह है और सियाह ख़िजाब की [illegible] है। हज़रत अबू उबैदा ने कहा है कि सफ़ामा एक क़िस्म की घास होती है जिसके फूल भी सफ़ेद होते हैं और फल भी।

सुरमा लगाना

ताक़ बार सुरमा [illegible] मुस्तहब है। हज़रत अनस की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताक़ [illegible] सुरमा लगाया करते थे। उलमा का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत अनस फ़रमाते हैं कि नबीए [illegible] सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दाहिनी आंख में तीन और बाएं आंख में दो सलाइयाँ (सुरमे की) लगाया करते थे और हज़रत अब्बास से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर आंख में सुरमें की तीन तीन सलाइयाँ लगाया करत्ते थे।

बालों में तेल लगाना

मुस्तहब है कि एक दिन छोड़ कर बालों में तेल लगाया जाए और अफ़ज़ल यह है कि रौग़न बनफ़्शा इस्तेमाल किया जाए जैसा कि हजरत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की बयान फ़रमूदा इन दो हदीसों से साबित है। (1) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मर्द को रोज़ाना कंघी करने से मना फ़रमाया है। एक दिन छोड़ कर करे। (2) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि रौग़न बनफ़्शा को तमाम तेलों में ऐसी ही फ़ज़ीलत है जैसी मुझे तमाम इंसानों में।

बाब 3

आदाबे मुआशिरत

सफ़र व हज़र, सात उमूर की पाबन्दी, मकरूह आदतें घरों में दाख़िला, रास्त चप का इस्तेमाल और खाने पीने के आदाब

सफ़र और हज़र (क़याम) दोनों सूरतों में हर इन्सान अल्लाह तआला पर तवक्कुल करे और इन सात बातों को मलहूज़ रखे।

(1) सफ़ाई और ज़ाहेरी ज़ेबाईश करे।

(2) कंघी करे।

(3) सुरमें का इस्तेमाल करे।

(4) मिसवाक करे।

(5) अपने पास कैंची रखे।

(6) अपने पास मुदरा रखे। मुदरा एक लकड़ी है जि[illegible] सिरा गोल [illegible]ता है और बालिश्त से छोटी होती है इससे अहले अरब हश्रातुल अर्ज़ म[illegible]रत रसां चीज़ों से अपने [illegible]दन की हिफ़ाज़त करते हैं उन चीज़ों [illegible] इससे र[illegible] देते हैं और [illegible]हां [illegible]स्म में खुजली होती है वहां खुजला देते हैं।

(7) रौग़न [illegible] शीशा [illegible]तल)

हज़रत आ[illegible] रज़ियल्लाह[illegible] अन्हा से [illegible]रवी है [illegible]ता या इक़ामत किसी हाल में यह सात चीज़ें रसूलुल्[illegible]ाह सल्[illegible]लाहो अलै[illegible] वसल्लम [illegible] साथ से [illegible] छूटती थीं।

मकरूह बातें

मंदर्जा ज़ैल बातें मकरूह हैं। (1) सीटी बजाना–(2) ताली बजाना (3) नमाज़ में उंगलियाँ चटख़ाना (4) समा के व[illegible] [illegible]ठ वज्द की हालत बना कर कपड़े फाड़ना (अगर वाक़ेई किसी की वज्द में यह हालत हो तो उससे उस झूठे मुद्दई की हालत का मुक़ाबला नहीं किया जा सकता) (5) रास्ता में खाना (6) अहले मज्लिस के सामने पांव फैला कर बैठना (7) तकिया से सहारा दे कर इस तरह बैठना कि सीधा बैठने की हैयत बाक़ी न रहे। यह फ़ेल गुरूर की अलामत है उससे दूसरे अहले मज्लिस की तौहीन होती है हाँ अगर उज़्र की वजह से ऐसा हो तो मकरूह नहीं है (8) लम्बे लम्बे कपड़े पहनना (9) मसतगी चबाना यह सिफ़लापन है (10) बांछें फाड़ कर हंसना (11) ठट्ठा मारना (12) बग़ैर ज़रूरत चीख़ कर बोलना (13) रफ़्तार में इतेदाल न रखना यानी ऐसी चाल से चलना मुनासिब और मुस्तहब है कि न बहुत तेज़ी हो जिससे ख़ुद थक जाए या राहगीरों से टकराओ न हो, न ऐसी क़दम शुमारी जिससे गुरूर और तमकनत पैदा हो (14) बलन्द आवाज़ से रोना (15) मय्यत के औसाफ़ बयान करना (और बलन्द आवाज़ से रोना) हाँ अगर यह गिरया व ज़ारी अल्लाह के ख़ौफ़ से हो या ज़िन्दगी के गुज़श्ता औक़ात के बेकार जाने पर पशेमानी और ताअस्सुफ़ के बाइस हो या इस वजह से हो कि जिस दरजे पर पहुचना पेशे

नज़र था उस पर पहुंच न सका और इस ख़्याल से दिल शिकस्ता हो कर रोए और रोने में आवाज़ बलन्द हो जाए तो मकरूह नहीं है (16) लोगों के सामने बदन को मैल छुड़ाना (17) हम्माम, पा ख़ाना और दूसरे गंदे मक़ामत पर बातें करना (18) ऐसे मक़ामत पर किसी को सलाम करना या सवाल का जवाब देना (19) लोगों के सामने अपने सर को खोलना और अपने बदन के उन हिस्सों को खोलना जिनको आम तौर पर ढांपा जाता है। यह सब बातें मकरूह हैं और कश्फ़े औरत हराम है। (20) बाप की या अल्लाह के अलावा किसी दूसरे की किसी हाल में भी क़सम खाना (अगर क़सम खाना ही है तो अल्लाह की क़सम खाए वरना ख़ामोश रहे। रसूलुल्लाह का इरशादे गिरामी यही है।

दूसरों के घरों में दाख़िला

दाख़िल होने की इजाज़त तलब करना

दाख़िला के आदाब

मुसलमान के लिए अफ़ज़ल यह है कि जब वह किसी से मिलने जाये तो दरवाज़े पर रूक कर कहे अस्सलामो अलैकुम, क्या मैं अन्दर आ सकता हूं। रिवायत में आया है कि क़बीला बनी आमिर का एक शख़्स हाज़िर हुआ, हुजूर इस वक्त काशानए-- नबुव्वत में तशरीफ फरमा थे उसने आस्ताना मुबारक पर हाज़िर होकर अर्ज़ किया क्या मैं अन्दर आ जाऊँ हुजूर वाला ने गुलाम से फरमाया बाहर जा कर उस को इजाज़त तलब करना सिखाओ और उससे कहो कि यूं कहे "अस्सलामो अलैकुम" क्या मैं अन्दर आ जाऊँ उस शख़्स ने यह इरशाद वाला सुन लिया और अर्ज़ किया अस्सलामो अलैकुम क्या मैं अन्दर आ जाऊँ हुजूर ने उस को इजाज़त मरहमत फ़रमा दी और वह अन्दर आ गया।

दरवाज़े पर जाकर पुकारने वाले को चाहिए कि दरवाज़े की तरफ़ पीठ कर के ज़्यादा फ़ासला पर खड़ा न हो इस तरह (जवाब में दी जाने वाली) आवाज अच्छी तरह सुनाई नहीं देती। इजाज़त तीन बार तलब की जाए अगर मिल जाये तो बेहतर है वरना लौट जाये लेकिन अगर गुमान ग़ालिब यह हो कि [illegible] की वजह से साहबे ख़ाना ने मेरी आवाज़ नहीं सुनी होगी या किसी काम में मशग़ूल होने बाइस आवाज़ न सुन सके होंगे तो तीन मरतबा से ज़्यादा भी इजाज़त तलब करना जाएज़ और इस की दलील हज़रत अबू सईद ख़ुदरी की वह रिवायत है जिस में बयान किया गया है कि हुजूर अकदस ने इरशाद फरमाया कि "घर में दाख़िल होने के लिए तीन बार इजाज़त तलब करना चाहिए अगर इजाज़त मिले तो अन्दर आ जाए वरना वापस हो जाए।" तलबे इजाज़त का हुक्म सब के लिए बराबर है। एक बार किसी शख़्स ने रसूलुल्लाह से अर्ज़ किया कि माँ के पास दाख़िल होने की भी इजाज़त लेना मेरे लिए ज़रूरी है। आप ने इरशाद फ़रमाया हाँ उस ने अर्ज किया कि मैं तो माँ के साथ एक ही घर में रहता हूँ आप ने फ़रमाया फिर भी इजाज़त लो उसने अर्ज़ किया कि मैं तो उस का ख़ादिम हूँ फ़रमाया फिर भी इजाज़त लो क्या तुम उस को बरहना देखना पसन्द करते हो।

अगर घर में उसकी लौंडी या बीवी हो (जिसके लिए कुरबत जाएज़ है) तो फिर इजाज़त लेने

की जरूरत नहीं है। इसलिए अगर वह बरहना हों तब भी उन्हें देख लेना मुबाह है लेकिन फिर भी मुस्तहब यही है कि घर में इस तरह दाखिल हो कि उन्हें उसके आने की ख़बर हो जाए। मिनहा की रिवायत में इमाम अहमद ने इस तरह सराहत की है। घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करे, इससे घर की ख़ैर व बरकत ज़्यादा होती है, हदीस शरीफ़ में इसी तरह आया है। सफ़र से वापस आए तो रात को अचानक घर वालों के पास न पहुंचे। रसूलुल्लाह ने इसकी मुमानिअ़त फरमाई है, दो आदमियों ने ऐसा किया था तो उन्होंने अपनी बीवियों की वह हालत देखी जिस को वह पसन्द नहीं करते थे।

दूसरे के घर में दाख़िले की इजाज़त मिल जाए तो साहबे ख़ाना जहाँ बैठने की इजाज़त दे वहीं बैठ जाए ख़्वाह साहबे ख़ाना ज़िम्मी काफ़िर ही क्यों न हो। अगर लोग खाना खा रहे हों तो जब तक साहबे खाना अपनी ख़ुशी से खाने में शरीक न करे ख़ुद खाने में शरीक न हो।

दस्त व पाए रास्त व चप का इस्तेमाल

दायां हाथ और पांव

कोई चीज़ लेना, खाना पीना, मुसाफ़ा करना, वुजू [illegible]रना, जुता पह[illegible] और [illegible]पड़े पहनने की इब्तेदा दायें हाथ से मुस्तहब है, मुक़द्दस मक़ामात, मस्जि[illegible] दाख़िल होते वक़्त पहले दायां पांव दाख़िल करना चाहिए। गन्दे कामों जैसे मैल दूर करना, नाक साफ़ कर[illegible], इस्तिन्जा करना और पलीदी को धोने का काम [illegible] हाथ से [illegible]ना चाहिए। हाँ अगर किसी के लिए ऐसा करना दुश्वार हो (यानी बाएं [illegible]थ में चोट [illegible] या कट [illegible] हो) [illegible] दायें हाथ [illegible] कर सकता है। एक पांव में जुता पहन कर न चले हाँ अगर थोड़ा सा चलना हो [illegible]ता पहन लिया है और दूसरा कुछ फ़ासले पर है दूस[illegible] जुते का [illegible]तस्मा टूट [illegible]या है तो [illegible] की [illegible]ज़ से क़दरे चल सकता है।

किसी शख़्स को [illegible] ख़त [illegible] फ़रमान वग़ैरह देना हो तो दायें हाथ से देना चाहिए, बलन्द मर्तबा शख़्स के साथ अगर [illegible] हो तो उसके दायें तरफ चले (जिस तरह दो आदमियों की जमाअ़त में इमाम को बायें हाथ की तर[illegible]र लिया जाता है) अगर अपने से कम मरतबा शख़्स के साथ चलना हो तो उसके बाई[illegible]निब चले। बुजुर्गों ने यह भी कहा है कि हर सूरत में दायें हाथ पर चलना मुस्तहब है ताकि बाई सम्त थूकने वग़ैरह के लिए ख़ाली रहे।

आदाबे अक़्ल व शरब

खाने पीने के आदाब

खाने पीने में मुस्तहब यह है कि अव्वल बिस्मिल्लाह कहे (अल्लाह तआला का नाम ले) और फ़ारिग़ होने के पर अल्लाह का शुक्र अदा करे, इससे खाने में बरकत होती है और शैतान दूर भागता है। एक रिवायत में है कि सहाबा ने अर्ज किया "या रसूल अल्लाह हम खाते हैं मगर सैरी नहीं होती, फ़रमाया शायद तुम लोग अलग अलग खाते हो, सहाबा कराम ने अर्ज़ किया जी हाँ! आपने फ़रमाया एकट्ठे हो कर खाया करो और (खाना शुरू करते वक़्त) बिस्मिल्लाह कर लिया करो, ख़ाने में बरकत हासिल होगी। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने ख़ुद सुना,

हुज़ूर वाला इरशाद फ़रमा रहे थे कि जब आदमी अपने घर में दाख़िल हो और वह दाख़िल होने होने और खाने से पहले बिस्मिल्लाह कह ले तो शैतान अपनी जुर्रियत से कहता है कि अब न तुम इस घर में रात रह सकोगे न वहाँ खाने में शरीक हो सकोगे, अब यहाँ से भागो, इसके बर अक्स जब कोई शख़्स घर में दाख़िल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह का नाम नहीं लेता तो शैतान अपनी जुर्रियत से कहता है कि तुम को आज रात रहने को ठिकाना भी मिल गया और रात को खाना भी खा सकोगे ।

हजरत हुज़ैफा फ़रमाते है कि हम खाने के वक़्त जब आँहजरत के साथ शरीक हुए तो हुज़ूर वाला से पहले कोई खाने पर हाथ नहीं डालता था, एक बार हम हुज़ूर के साथ खाने पर मौजूद थे कि इतने में एक आराबी (दिहाती) आया, आते ही खाने पर हाथ डालने लगा हुज़ूर वाला ने उस का हाथ पकड़ लिया, इतने में एक लड़की आई वह ऐसी हालत में थी कि गोया कोई उसको धकेलता ला रहा है, उसने भी आते ही खाने पर हाथ डालना चाहा, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका भी हाथ पकड़ लिया और इरशाद फरमाया "जिस खाने पर अल्लाह का नाम न लिया जाए शैतान उसको हलाल समझता है, उस दिहाती के साथ भी शैतान आया था और खाने को अपने लिए हलाल बनाना चाहता था और उस लड़की के साथ भी आया था ताकि उस लड़की के ज़रिये उस खाने को अपने लिये हलाल बना ले मैंने उस दिहाती का भी हाथ पकड़ लिया और उस लड़की का भी। क़सम है उस जात की जिसके [illegible] क़ुदरत में मेरी जान है कि इन दोनों के हाथों के साथ शैतान का हाथ भी मेरे हाथ में है। इसके [illegible] हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स खाना शुरू करते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना भूल जाए तो याद आने पर इस तरह कहे बिस्मिल्लाहि फ़ी अव्वलिही व आख़िरिही। हजरत आएशा से भी इसी तरह मरवी है।

खाने का तरीक़ा

खाना नमक से शुरू करना और नमक पर ख़त्म करना मुस्तहब है (यानी अव्वल नमकीन खाना खाए और आख़िर में भी कोई नमकीन चीज़ खाए) दायें हाथ से लुक़्मा ले कर छोटा निवाला मुंह में रखे और ख़ूब देर तक चबाए और आहिस्ता आहिस्ता निगले, एक क़िस्म का खाना हो तो अपने सामने से खाए और अगर मुख़्तलिफ क़िस्म के खाने हों या फल वग़ैरह हों तो बरतन में इधर उधर से लेने में कोई हरज नहीं जिस खाने को खाए उसको चोटी या बीच से न ख़ाए बल्कि क़िनारे से शुरू करे अगर सरीद हो तो तीन उंगलियों से खाए और आख़िर में उंगलियां चाट ले। खाने पर फूंके ने मारे (ठंडा करने के लिए) खाने के बरतन में सांस न छोड़े, सांस लेना हो तो बरतन को मुंह से अलग करके सांस ले, तकिया लगा कर खाना पीना मकरूह है, खड़े हो कर खाना पीना दुरुस्त है मगर बाज़ इसको मकरूह बताते हैं। इस लिए बैठ कर खाना पीना ज्यादा अच्छा है अगर अहले मज्लिस से किसी को बरतन देना हो तो दाईं तरफ़ वाले से शुरू करे।

जुरूफ़े तआ़म

सोने चाँदी या सोने चाँदी का मुलम्मा किए हुए बरतनों में खाना पीना नाजाएज़ है। अगर किसी ऐसे बरतन में खाना सामने आए तो खाते वक़्त किसी ऐसे दूसरे बरतन में उसको उलट लेना चाहिए जिस में खाना जाएज़ हो या रोटी पर डाल ले, और जो शख़्स ऐसे बरतन में खाना लाया हो उसको मलामत करे। ऐसे बरतनों में धोनी देना भी जाएज़ नहीं है इसी तरह चाँदी या

सोने का गुलाब पाश भी इस्तेमाल करना मना है, जिस जगह ऐसे बरतन इस्तेमाल होते हैं वहाँ खाना खाने के लिए न जाए, और अगर इत्तेफ़ाक़न पहुंच जाए तो वापस चला आए और साहबे ख़ाना को नरमी से समझाए कि आपको ज़ेबा यह है कि जिस चीज़ को शरीयत ने हलाल किया है और ज़ीनत बढ़ाने वाला क़रार दिया है उसी के मुताबिक़ आराईश करें और जिस चीज की बंदिश की गई उसको ज़ीनत का सबब न बनाए जिस लज़्ज़त का नतीजा गुनाह हो उसमें कुछ भलाई नहीं है। अल्लाह आप पर रहम फरमाये, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद उसको याद दिलाएं कि हुजूर ने इरशाद फरमाया है "जो आदमी सोने या चाँदी के बरतन में खाए या ऐसे बरतन में जिसमें यह दोनों शामिल हों (दोनों का काम हो) तो ऐसा शख़्स अपने पेट में दोज़ख़ की आग भरता है।

खाना खाने में मुंह का निवाला बाहर न निकाले हाँ अगर मजबूर हो जाए मसलन निवाला हल्क़ में फंस जाए, फन्दा लग जाए या जलता हुआ निवाला हो और मुंह ज़लने लगे तो नवाला बाहर निकाल देना जाएज़ है। खाने में छींक आ जाए तो मुंह पर कोई चीज़ रख ले और मुंह को अच्छी तरह छुपा ले, खाने से दूर हो कर छींके।

खाने वाले के पास अगर कोई शख़्स खड़ा हो यानी ख़िदमतगार वग़ैरह तो उस को बैठने की इजाज़त दे दे और वह अगर इन्कार करे तो उमदा खाने से लुक़मा उठा कर दे दे, कोई गुलाम, ख़िदमती लड़का या पानी पिलाने वाला खड़ा हो तो उसके साथ भी यही सुलूक करे, बरतन में अगर कुछ बच जाए तो उसको भी साफ करले। बरतन, तब्बाक़ वग़ैरह के किनारों पर जो खाना लगा रह जाए उसको भी पोंछ कर खा लेना चाहिए। जो लोग खाने में शरीक हों उनके साथ ख़ुश कलामी से पेश आए कि अगर वह रंजीदा हों तो उनकी रंजिश दूर हो जाए। अगर अपने से बलन्द मरतबा लोगों के साथ खाना खाए तो [illegible] मलहूज़ रखे, अगर ग़रीबों (फ़क़ीरों) के साथ खाए तो उनको ख़ुद पर तरज़ीह देते हुए वह [illegible] खिलाए जो उनको मरगूब हों, दोस्तों के साथ खाए तो शगुफ़्ता मिज़ाज़ी के साथ खाए, आलिमों के साथ इस ख़्याल से खाए कि उनकी पैरवी करेगा और उनसे अदब हासिल करेगा। नाबीना के साथ खाए तो उसको जो चीज़ें सामने हों वह बता दे कि बसा औक़ात वह अपनी कोरी व नाबीनाई की वजह से अच्छा खाना (उमदा ग़िज़ायें) खाने से महरूम रह जाते हैं।

ज़ियाफ़त के आदाब

शादी के वलीमा के दावत क़बूल करना मुस्तहब है, जाने के बाद इख़्तियार है खाए या न खाए, अगर न खाए तो दुआए ख़ैर करके चला आए। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह मरवी है कि हुज़ूर वाला ने फ़रमाया जिसकी दावत की गई और उसने क़बूल न किया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल की ना फ़रमानी की। जो बग़ैर बुलाए (दावत वग़ैरह में) जाता है वह चोर हो कर दाख़िल होता है और लुटेरा बन कर वापस आता है। दावत के यह अहकाम उस वक़्त हैं जब मज्लिस बुरी (नाजाएज़) बातों से पाक हो। अगर वहाँ कोई ममनूअ़ चीज़ है मसलन ढोल, सारंगी, बरबत, नफ़ीरी, शबाबह, रूबाब, तंबूरे, सरोद वग़ैरह हो कि यह सब चीज़ें हराम हैं–सिर्फ़ दफ़ का इस्तेमाल निकाह के वक़्त जाएज़ है। उसके साथ नाचना गाना मकरूह है। अल्लाह तआला का इरशाद है लोगों में बाज़ वह हैं जो बेहूदा बातें ख़रीदते हैं, की तफ़सीर में बाज़ अहले तफसीर

ने लिखा है के "लहवल हदीस" से मुराद राग और शेअर है, बाज़ अहादीस में आया है कि राग दिल के अन्दर उसी तरह निफ़ाक़ पैदा करता है जिस तरह सैलाब सब्ज़े को उगाता है।

हजरत शिबली से लोगों ने दरयाफ़्त किया, क्या गाना सुनना दुरुस्त है हज़रत शिबली ने कहा नहीं, लोगों ने पूछा फिर किया है? आप ने फ़रमाया दुरुस्त न होने की सूरत में गुमराही के सिवा और कुछ नहीं है।

राग के नाजाएज़ होने के लिए यही बात काफी है कि उसको सुन कर तबियत में जोश और शहवत में हैजान पैदा होता है, औरतों की तरफ मैलान बे अक़्ली, सुबकी, कमीनगी और बहुत सी नफ़्सानी ख़्वाहिशात इससे बेदार होती है। पस अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान रखने वालों के लिए अल्लाह की याद में मशगूल होना एक ऐसा अमल है जो पाकिज़गी के साथ साथ आफ़ियत बख़्शने वाला है।

दावते ख़तना

दावते ख़तना मुस्तहब है इसलिए दावते ख़त[illegible] क़बूल करना भी ज़रू[illegible] नहीं है। निछावर लेना मकरूह है क्योंकि इसमें लूट से मुशाबेहत पाई [illegible]ती है अलावा अजीं छि[illegible]रा पन और नफ़्स की ज़िल्लत भी है। वलीमा निकाह के अलावा किसी [illegible]र ख़ूशी के [illegible] पर दावत अगर इस तरीक़े से की जाए जो हुजूर वाला के इरशाद फरमाए [illegible]ए तरीक़ा के [illegible]लाफ़ [illegible] यानी ज़रूरत मन्दों को उसमें शिरकत से रोका गया हो और मालदार [illegible]को दावत की ज़रूरत नहीं उसमें मौजूद हों तो ऐसी दावत मकरूह है।

अहले इल्[illegible] व फ़ज़्ल [illegible]लिए दाव[illegible]आम के क़बूल कर[illegible] में उजलत करना बिला झिझक कबूल कर लेना [illegible]करूह है। यह एक तर[illegible] की [illegible]रमी भी [illegible] और नदीदा पन भी। बिन बुलाए किसी दावत में [illegible]रकत करना दोहरा गुन[illegible]ह है। [illegible]र बुलाए किसी के घर में दाख़िल होना दूसरे बग़ैर द[illegible]त के [illegible]ाना और [illegible] तरह किसी की पोशी[illegible] बातों को देखना और जगह में तंगी पैदा करना [illegible] की बातें हैं।

[illegible]ाने के आदाब

खाना खाते वक़्त तहज़ीब का तक़ाज़ा है कि खाना खाने वालों के चेहरों को न तके, इस तरह उनको शर्मिन्दगी होगी खाने पर ऐसी बातें नहीं करना चाहिए जिससे लोग घिन खायें। इसी तरह हंसाने वाली बातें भी नहीं करना चाहिए इससे अन्देशा होता है कि लोगों के हल्क़ में निवाला फंस कर फन्दा लग जाएगा। ऐसी बातें भी नहीं करना चाहिए जिसको सुनकर लोग कबीदा ख़ातिर हों इससे खाने का लुत्फ़ जाता रहता है।

खाने से पहले और खाने के बाद दोनों हाथों का धोना मुस्तहब है, बाज़ लोगों का ख़्याल है कि खाने से पहले हाथ धोना मकरूह है अलबत्ता बाद में धोना मुस्तहब है, प्याज़, लहसन और (गुन्दना) खाना मकरूह है इसलिए कि उनसे बदबू पैदा होती है। आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो शख़्स बदबूदार सब्जियाँ खाए वह हमारी मस्जिदों में न आए।

इतना ज़्यादा खाना जिससे बदहज़मी का ख़तरा हो, मकरूह है। आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया है कि "पेट से बदतर किसी बरतन को आदमी नहीं भरता।"

मेज़बान की इजाज़त के बग़ैर एक मेहमान अपना खाना किसी दूसरे मेहमान को अगर दे तो यह मकरूह है इसलिए कि मेज़बान की चीज़ (खाना वग़ैरह) सिर्फ़ मेहमान के लिए है, दूसरों को देने का उसको हक़ हासिल नहीं है, दावत खाने से इंसान दावत का मालिक नहीं बन जाता। अकसर लोगों ने इस सिलसिले में इख़्तेलाफ़ किया है बाज़ कहते हैं कि जितना खाना मेहमान के पेट में चला जाता है वह उसका मालिक बन जाता है और बाज़ कहते हैं खाने वाला, मेज़बान के खाने का मालिक बन ही नहीं सकता।

जब खाना सामने लाकर रखा जाए तो खाना शुरू करे। उस वक़्त मजीद इजाज़त की जरूरत नहीं। अपनी चीज़ जान कर खाना शुरू कर दे बशर्ते कि उस बस्ती का रिवाज ऐसा ही हो, असल इजाज़त रिवाज ही है। मुंह से कोई चीज़ निकाल कर खाने के बरतन में डालना मकरूह है (हड्डी वग़ैरह को बरतन में रखे) खाते वक़्त ख़िलाल भी नहीं करना चाहिए। यह दोनों बातें मकरूह हैं। आलूदा हाथ रोटी से साफ़ नहीं करना चाहिए (रोटी ख़राब होगी) चन्द अक्साम के खाने यकजा मिला कर न खाए ख़्वाह खाने वाले की तबीयत को यह [illegible] मरगूब ही क्यों न हो इसलिए कि बहुत से लोग उससे कराहत करते [illegible] खाने की बुराई करना नाजाएज़ है। इसी तरह मेज़बान को अपने खाने की तारीफ़ नहीं करना [illegible]हिए। खाने [illegible] कीम[illegible] लगाना भी मना है। इससे रकाकत का इज़हार होता है एक रिवायत है कि रसूलु[illegible] स[illegible]ल्लाहो अलैहि वसल्लम खाने की न तारीफ़ फरमाते और न बुराई।

खाने वाले का अगर पेट भर चुका हो तो [illegible]ब भी उस वक़्[illegible] तक ख[illegible] हाथ ने हटाए। (कुछ न कुछ थोड़ा [illegible]ड़ा ख़ाता [illegible]) जब त[illegible] [illegible]सरे [illegible]ग अपना हा[illegible] न हटा ले हाँ अगर दूसरे लोगों की तरफ़ से बे[illegible]कल्लुफी [illegible]सूस हो तो [illegible] खुद [illegible]ी तकल्लु[illegible] न करे और हाथ खींच ले, मुस्तहब है कि खाने वाल[illegible] एक ही तश्त में हाथ धोए। क्यो[illegible] [illegible]रीफ़ में आया है कि तुम परागन्दा न हो अगर तफ़र्र[illegible] करोगे [illegible] तुम्हारी [illegible]अत भी प[illegible]दा हो [illegible]गी। एक रिवायत में यह भी आया है कि हुजूर [illegible]ल्ल[illegible]हो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "जब तक तश्त धोवन से भर न जाए उसे मत उठा[illegible]

हाथ किन चीजों से [illegible]ना है

खाने की चीज़ों से हाथ धोने या साफ़ करने की भी ममानियत है जैसे आटा (बेसन) बाक़ला, मसूर वग़ैरह से (बतौरे साबुन) हाथ धोने का काम न लिया जाए, भूसी से हाथ धोना जाएज है।

दो खजूरें मिला कर एक साथ न खाए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसकी ममानियत फ़रमाई है। बाज़ लोगों ने कहा है कि तन्हा खा रहा हो या ख़ुद खाने का मालिक हो तो ऐसा करना मकरूह नहीं है। मेहमान को चाहिए कि अपनी मर्ज़ी के खाने साहबे ख़ाना (मेज़बान) से तलब न करे, इससे मेज़बान को तकलीफ़ होगी पस जो कुछ वह पेश कर दे उसी पर इक्तेफ़ा करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है मैं और मेरी उम्मत के परहेज़गार लोग तकल्लुफ़ से बेज़ार हैं, हां अगर मेज़बान, मेहमान से उसकी पसन्द और मर्ज़ी दरयाफ़्त करे तो बता दे कोई हरज नहीं है।

अगर खाने पीने की चीज़ में मक्खी के अलावा कोई और सैयाल ख़ून वाली चीज़ गिर पड़े तो खाना नापाक हो जाता है और उस को खाना नाजाएज़ हो जाता है, हां अगर ख़ुश्क चीज़

हो तो उठा ले अगर सैयाल ख़ून वाली न हो लेकिन ज़हरीली हो तो उसको न खाए।

सांप बिच्छू या कोई और नुक्सान पुंहचाने वाली चीज़ खाने में गिर जाए तो खाना हराम हो जाता है, अगर मक्खी गिर जाए तो उसको इतना गोता दे दे कि उसके दोनों बाजू डूब जायें, फिर उसको निकाल कर फेंक दे खाना पाक रहेगा ख़्वाह मक्खी गिर कर मर ही क्यों न गई हो, ऐसा खाना खाया जा सकता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि तुम में से किसी के बरतन में अगर मक्खी गिर जाए तो उस को गोता दे दे क्योंकि मक्खी के एक बाजू में बीमारी और दूसरे में शिफ़ा है और मक्खी शिफ़ा वाले बाजू को डूबने से बचाए रखती है और बीमारी वाले के डुबो देती है।

पीने के मसाएल

पीने की चीज़ को चूस चूस कर पीना मुस्तहब है यानी घोंट घोंट कर के, जानवर की तरह एक दम सांस खींच कर न पिये बल्कि सांस ले ले कर तीन मरतबा में पिये मगर बरतन में सांस न ले, शुरू में बिस्मिल्लाह कहे और आख़िर में अलहम्दो लिल्लाह।

खुलासाए कलाम

इन तमाम बातों का खुलासा यह है कि खाने पीने की बारह बातें (ज़रूरी) हैं। इन में चार फ़र्ज़ हैं चार सुन्नतें हैं और चार मुस्तहब हैं।

फ़र्ज़ बातें यह हैं :–(1) खाने वाले को मालूम हो कि खाना कहां से और किन ज़राए से हासिल हुआ हो (हलाल ज़रिये से है हराम ज़रिये से तो नहीं) (2) खाना शुरू करते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना। (3) जो मिले और जितना मिले उस पर क़नाअत करना (4) आख़िर में शुक्र बजा लाना।

सुन्नतें यह हैं: (1) खाना खाने में बायां पांव पर बैठना (2) तीन उंगलियों से खाए। (3) खाने से फ़ारिग़ होने पर उंगलियों को चाटे। (4) अपने सामने और क़रीब से खाए।

चार मुस्तहब यह हैं: (1) छोटा लुक़्मा खाए और उसे खूब चबाए। (2) लोगों की तरफ़ कम देखे। (3) रोटी को दस्तरख़्वान की तरह फ़र्श न बनाए कि उस पर सालन रख कर खाए। (4) तकिया लगा कर या चीत लेट कर न खाए।

मेहमानी में रोज़ा इफ़्तार करना

रोज़ादार शख़्स अगर किसी दूसरे शख़्स के यहां (मेहमान बन कर) रोज़ा इफ़्तार करे तो यह दुआ पढ़े–

तर्जमा:–रोज़ादारों ने तुम्हारे पास इफ़्तार किया, नेकों ने तुम्हारा खाना खाया, तुम पर रहमत नाज़िल हो, फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआ करें। अल्लाह का शुक्र है जिसने हम को खाना खिलाया और पिलाया, मुसलमान बनाया। गुमराही से निकाल कर सीधे रास्ते पर लगाया और अपनी कसीर मख़लूक़ पर हम को फ़ज़ीलत अता फ़रमाई इलाही उम्मते मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भूकों का पेट भर दे, जो नंगे हैं उन को कपड़ा पहना दे, बीमारों को तंदुरुस्त फ़रमा दे मुसाफ़िरों को वतन में लौटा दे, घर वालों को (मुक़ीम) की परेशानी दूर कर दे, उनकी

रोज़ी जारी फ़रमा दे और उनके यहां हमारे आने को बाइसे बरकत और यहां से हमारे जाने को मग़फ़िरत का बाइस बना दे, हमको दोनों जहान की भलाई अता फ़रमा और दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रख। ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

हम्माम, बरहंगी, अंगुशतरी, बैतुल ख़ला रफ़ए हाजत और इस्तेन्जा का तरीक़ा, गुस्ल

हम्माम का हुक्म

हम्माम का बनाना, बेचना, ख़रीदना और किराया पर देना हर चीज मकरूह है और इसकी वजह यह है कि वहां सतरे औरत़ नहीं हो सकता बल्कि आम तौर पर बरहंगी की सूरत पाई जाती है, हज़रत अली का फ़रमान मनकूल है कि ''हम्माम [illegible]रा मकाम है जहां ह[illegible] का लिबास उतार दिया जाता है और कुरआन की तिलावत नहीं की जाती है।''

अगर कोई मजबूरी न हो तो हम्माम में न जाना बेहतर है। ए[illegible] रिवाय[illegible] में आया है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर हम्माम से नफ़रत करते थे और उसका सबब यह बताते थे कि (हम्माम में गुस्ल करना) यह ऐश परस्ती है। हसन बसरी [illegible] इब्ने सीरीन हम्माम में नहीं जाते थे। इमाम अहमद के साहबज़ादे अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने अपने वालिद को हम्माम जाते कभी नहीं देखा, लेकिन अगर [illegible]रत ही आ[illegible]ड़े तो हम्माम में दाख़िल होना जाएज है मगर तहबन्द से अपने सतर [illegible] छुपाए हुए और दूसरों के सतर [illegible] आंखें [illegible] हुए हम्माम में दाख़िल हो। अगर अगर हम्माम का ख़ाली होना मुम्किन हो किसी व[illegible] रात को या दिन को ऐसे वक़्त कि गुनाह का अंदेशा [illegible]म हो हम्माम में दाख़िल होने में कोई हरज नहीं है।

इमाम अहमद स[illegible] में दाख़िल होने का मसला दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया ''अगर तुम को मालूम हो कि हम्माम के अंदर जितने लोग हैं सब तहबन्द बांधे हुए हैं तो दाख़िल हो सकते हो वरना नहीं। ह[illegible]शा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो अन्हा से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया, हम्माम बुरा मक़ाम है जहां न परदा होता है और न उसका पानी पाक होता है।

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा ने फरमाया कि अगर कोहे उहद के बराबर सोना मिल जाए और उसके एवज़ हम्माम में जाना पड़े तब भी मुझे हम्माम में जाने की ख़ुशी नहीं होगी, हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत है कि हुज़ूरे गिरामी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो अल्लाह और रोज़े क़यामत पर ईमान रखता हो उसे बग़ैर तहबन्द के (बांधे) हम्माम में नहीं जाना चाहिए।

औरतों का हम्माम में जाना

अग़र औरतें हम्माम में जाना चाहें तो उन शराइत के तहत जा सकती हैं जो मर्दों के लिए बयान किए गए हैं या कोई उज्र या हाजत हो जैसे बीमारी या हैज़ व निफ़ास वग़ैरह की मजबूरी के बाइस उनको जाना पड़े।

हज़रत इब्ने उमर बयान फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया

ऐ मेरी उम्मत के लोगो! सरज़मीने अजम (ईरान) बहुत जल्द फ़तह होगी और वहां तुम ऐसे घर पाओगे जिनको हम्माम कहा जाता है लिहाज़ा मर्द बग़ैर तहबन्द के वहां न जायें और औरतों को वहां बग़ैर हैज़ व निफ़ास की मजबूरी के न जाने दें।

हम्माम के आदाब

जब हम्माम में जाए तो न अस्सलामो अलैकुम कहे और न कुरआन शरीफ़ पढ़े इस सिलसिले में हज़रत अली से मरवी ह़दीस ऊपर पेश की चुकी है। ह़म्माम में किसी हाल में भी बरहना होना जाएज नहीं यहां तक कि गुस्ल की ह़ालत में भी बिल्कुल बरहना होने की ममानियत है। अबू दाऊद ने अपनी असनाद के साथ बहज़ बिन हकीम से और उन्होंने अपने दादा से नक़्ल किया है कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हमको किससे सतर छुपायें और किससे न छुपायें? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अपनी बीवी और बान्दी के सिवा इसको सबसे छुपाओ। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह अगर कोई शख़्स तन्हा हो, [illegible]रमाया आदमियों से ज्यादा अल्लाह हक़दार है कि उसकी शर्म की जाये [illegible]बू दाऊद ने अपनी इ[illegible]ताद से हज़रत अबू सईद ख़ुदरी की रिवायत नक़्ल की है कि हुज़ूर ने इ[illegible]ाद फ़रमाया "मर्द, म[illegible] का सतर न देखे न औरत, औरत का , मर्द, मर्द के साथ एक कपड़ा ओ[illegible] कर न लेटे [illegible]र न[illegible]औरत, औरत के साथ एक कपड़ा ओढ़ कर लेटे, अगर जगह बिल्कुल [illegible] हो और क[illegible] देख[illegible] भी न हो तब भी बग़ैर तहबन्द बांधे नहाना मकरूह है, अबू दाऊद न[illegible]ी असनाद से हज़रत अ़ता बिन यअला बिन उमय्या से रिवायत की है कि रसू[illegible]ल्लाह सल्लल्[illegible]ाहो अ[illegible]ह वसल्लम ने एक बूढ़े शख़्स को बग़ैर तहबन्द [illegible]स्ल करते [illegible] मुल[illegible]हिज़ा फरमाय[illegible] तो आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और अल्लाह त[illegible]ला की ह़म्द व सना के [illegible]द फ़[illegible]या अ[illegible] तआला बड़ा ह़यादार और परदे में रहने वाला है [illegible]या और प[illegible] को पसन्द फ़रमाता [illegible] तुम में से कोई गुस्ल करे तो पर्दा कर लिया करे। अ[illegible]र कोई गुस्ल वगैर[illegible] के लिए पानी (दरिया, [illegible]ज़, चश्मा) में दाख़िल हो तब भी बग़ैर तहबन्द हो[illegible]रूह है, पानी में भी तो बकसरत रहने वाले मौजूद हैं।

ह़ज़रत जाबिर बिन [illegible]ब्दुल्लाह की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बग़ैर तहबन्द के पानी [illegible] होने की ममानिअ़त फरमाई है। हज़रत हसन बसरी का क़ौल है कि पानी में बकसरत रहने वाले हैं उन से परदा करने के हम ज़्यादा हक़दार हैं यानी पानी के अन्दर रहने वाली मख़लूक़ से भी सतरे औरत करना चाहिए।

एक रिवायत में आया है कि हज़रत इमाम अहमद ने बग़ैर तहबन्द के पानी में दाख़िल होने की इजाज़त दे दी थी और इस अम्र को मकरूह नहीं समझा। किसी शख़्स ने इमाम साहब से दरयाफ़्त किया कोई शख़्स नहर में नंगा नहा रहा हो और उसे कोई न देखे तो उसके लिये क्या हुक्म है आपने जवाब दिया कि इस तरह नहाने में कोई हरज नहीं है, ताहम बेहतर यही है कि पानी में भी तहबन्द बांध कर जाए।

अंगुशतरी

अंगुशतरी पहनना और बनवाना

अबू दाऊद अपनी असनाद से लिखा है कि हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब बाज़ अजमी फरमां रवाओं के नाम मकतूब गिरामी इरसाल फ़रमाने का इरादा किया तो आपसे अर्ज़ किया कि वह लोग बग़ैर मोहर के किसी ख़त को नहीं पढ़ते, उस वक़्त आपने चांदी की मोहर बनवाने का हुक्म दिया जिस पर मोहम्मद रसूलुल्लाह कन्दा था। हजरत अनस ने यह भी फ़रमाया कि रसूले ख़ुदा की पूरी अंगूठी चांदी की थी मगर उसका नगीना हबशी अक़ीक़ का था।

अबू दाऊद नाफेअ़ से और वह इब्ने उमर से रिवायत करते हैं कि आंहज़रत ने अपनी अंगूठी सोने की बनवाई थी जिसमें चांदी का नगीना था और उस नगीना पर मोहम्मद रसूलुल्लाह कन्दा था, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मामूल [illegible] कि नगीना का रुख़ हमेशा अपनी कफ़े दस्त की जानिब रखते थे। आपके ज़माने में और लोगों [illegible] भी सोने की अंगूठियां बनवा कर पहनीं, हुजूर वाला ने जब यह हालत मुलाहिज़ा फरमाई तो अपनी अंगूठी उता[illegible]ली और फ़रमाया अब मैं इसको कभी नहीं पहनूंगा, उसके बाद आपने चांदी क[illegible]ठी बनवाई और उस पर "मोहम्मद रसूलुल्लाह" कन्दा कराया। आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम [illegible] विसाल के बाद यही अंगुश्तरी हज़रत अबू बक[illegible] ने पहनी [illegible]के बाद हजरत उमर [illegible] पहनी और उनके बाद हज़रत उस्मान जुन्नूरै[illegible] ने यहां [illegible] कि (एक [illegible]ा प[illegible] यह अंगु[illegible]री आपकी उंगली से निकल कर "चाहे अरीस" म[illegible] गिर गई और फिर हमेश[illegible] उसी

अंगुशतरी कि[illegible] चीज [illegible]का हो

लोहे और पीतल [illegible]ूठी पहनना मकरूह है, अबू दाऊद से रिवायत अब्दुल्लाह बिन बरीदा मरवी है कि एक शख़्स पीतल की अंगूठी पहने रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आपने फ़रमाया कि किया वजह [illegible] मुझे तेरी तरफ़ से बुतों की बू महसूस हो रही है, उस शख़्स ने फ़ौरन अंगूठी उतार कर फेंक दी, दोबारा वही शख़्स लोहे की अंगूठी पहन कर हाज़िरे ख़िदमत हुआ। हुजूर ने फ़रमाया "क्या वजह है कि मैं तुझे दोज़ख़ियों का ज़ेवर पहने देख रहा हूं उसने फ़ौरन अंगूठी उतार कर फेंक दी और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह मैं किस चीज की अंगूठी बनाओं? आपने फ़रमाया, चांदी की मगर एक मिस्काल की पूरी न हो। यानी साढ़े चार माशे से ज़्यादा न हो।

अंगूठी किन उंगलियों में पहनी जाए

दर्मियानी और शहादत की उंगली में अंगूठी पहनना मकरूह है, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को इससे मना फरमाया था, पस बाएं हाथ की छंगुली में पहनना बेहतर है। अबू दाऊद ने इब्ने उमर से रिवायत की है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बायें हाथ में अंगुश्तरी पहना करते थे जिसका नगीना कफ़े दस्त की तरफ़ रखते थे, सल्फ़े सालेहीन का यही तरीक़ा मंक़ूल है इसके ख़िलाफ़ बिदअ़तियों का अमल और उनकी निशानी है।

मुस्तहब अम्र यही है कि दायें हाथ से पकड़ कर चीज़ों को बायें हाथ में लिया जाए बस यही अंगुश्तरी के लिये भी मुस्तहब है। अंगूठी पर हुरूफ और नाम कन्दा होते हैं उनका अदब भी इसी तरीका से होता है। हज़रत अली की रिवायत से यह साबित होता है कि रसूलुल्लाह अपने दाहिने हाथ में अंगुश्तरी पहना करते थे लिहाज़ा इस रिवायत के पेशे नज़र दायें और बायें दोनों हाथों में अंगूठी पहनने का हुक्म मसावी हैसियत रखता है मगर पसन्दीदा बात पहली ही है।

बैतुल ख़ला, रफ़ए हाजत और इस्तेन्जा का तरीक़ा

बैतुल ख़ला में जाना

जब पाख़ाने में जाने का इरादा हो तो सबसे पहले वह तमाम चीजें निकाल कर अलग रख दे जिन पर अल्लाह का नाम हो जैसे मोहर, तावीज़ वगैरह। फिर उलटा पांव आगे बढ़ाये और दायां पांव पीछे रखे (यानी बायां पांव पहले बैतुल ख़ला में रखे फिर दायां) और कहे:

तर्जमा: बिस्मिल्लाह मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं खबीस नर और मादा जिन्नात से और पलीद गन्दे फिटकारे हुए शैतान से।

हदीस शरीफ़ आया है, हुजूरे अक़दस ने फ़रमाया उन पाख़ानों में शैतान होते हैं इसलिए तुम शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो और तुम में से हर शख़्स बैतुल ख़ला में दाख़िल होते वक़्त कहे अऊज़ोबिल्लाहि मिनर्रिज्सेल नजसीन अल ख़बीसिश्शैतानिर्रजीम।

पाख़ाना में दाख़िल होते वक़्त सर ढका होना [illegible] जब तक ज़मीन (बैतुल ख़ला) के क़रीब तक न पहुंच जाए अपने कपड़े न उठाए। रफ़ए हाजत के लिए बैठे तो टाग पर ज़ोर दे कर बैठे इस तरीके से रफ़ए हाजत में सहूलत होती है फ़ारिग़ होने से क़ब्ल किसी से बात न करे, बात करने वाले या सलाम करने वाले का भी जवाब न दे। अगर इस असना में छींक आ जाये तो दिल में अल्लाह की हम्द व सना बयान करे आसमान की तरफ़ न देखे, अपनी या किसी दूसरी शख़्स की गलाज़त या हवा (रियाह) ख़ारिज होने पर न हंसे।

रफ़ए हाजत के लिए लोगों से दूर चला जाए, पेशाब के लिए जगह नर्म व जाज़िब तलाश करे ताकि लौट कर छीटें न पड़ें, किसी को अपनी शर्मगाह न देखने दे, जहां रफ़ए हाजत को बैठता है अगर वह जगह सख़्त हो या हवा का रुख़ मुख़ालिफ हो (सामने से आती हो) तो शर्मगाह का मुंह ज़मीन से मिला कर रखे, जंगल में क़िबला की तरफ मुंह करके या पीठ करके न बैठे, जुनूब रूया या शिमाल रूया बैठे। चांद या सूरज की तरफ मुंह करके बैठना भी मना है, किसी सूराख़ में पेशाब न करे, किसी फल वाले या ग़ैर मेवादार दरख़्त के नीचे पेशाब न करे इसलिए कि कभी कभी लोग दरख़्त के नीचे (आराम के लिए) बैठते हैं तो इस सूरत में उनके कपड़े गन्दे हो जायेंगे, और जो फल उपर से गिरेगा वह भी नापाक हो जाएगा। किसी रास्ते में भी पेशाब ना करे न किसी घाट पर न किसी दीवार के साये में, ऐसा करना मौजिबे लानत से जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है।

रफ़ए हाजत के मकाम पर कुरआन पाक न पढ़े और न किसी तरह अल्लाह का ज़िक्र करे ताकि अल्लाह के नाम की बेअदबी न हो सिर्फ़ बिस्मिल्लाह और अऊज़ोबिल्लाह पढ़े। रफ़ए हाजत के बाद यह दुआ पढे।

तर्जमा:—अल्लाह का शुक्र है जिसने मेरा दुख दर्द दूर किया और मुझे महफ़ूज़ रखा, मैं तुझसे मग़फ़िरत का तालिब हूं

इसके बाद उस जगह से हट कर किसी पाक जगह पर आ जाए और वहां इस्तेन्जा करे ताकि हाथ नजासत से आलूदा न हों और पानी की छींटें बदन और कपड़ों पर न आयें।

अगर बाहर निकलने वाली नजासत ग़ैर मामूली तौर पर मक़ामे ख़ुरूज से इधर उधर न फैली हो बल्कि सिमटी हुई (एक जगह) हो तो इस्तेन्जा करने वाले को इख़्तियार है कि उसी जगह इस्तिन्जा करे लेकिन यह ख़्याल रहे कि नजासत से हाथ आलूदा न हों और बदन या कपड़ों पर छींटें न पड़ें। इस्तिन्जा ख़ुश्क चीज से करे या पानी से (इख़्तियार है) अगर ख़ुश्क चीज से साफ़ करने का इरादा हो तो पत्थर या मिटटी के तीन ऐसे टुकड़े ले जो पाक हों [illegible]नसे पहले इस्तिन्जा न किया गिया हो। इस्तिन्जा करने की तरकीब यह [illegible] कि दायें हाथ में पत्थ[illegible] या मिट्टी का ढेला लिया जाए और ग़लाज़त के ख़ारिज होने वाले मक़ाम को उससे रग[illegible] मगर [illegible]ससे क़ब्ल पेशाब को ऐसा ख़ुश्क कर ले कि फिर कतरा निकलने का इ[illegible]कान न रहे, [illegible] कर इसकी तहक़ीक़ करे इसको इस्तबरा कहते हैं और जो कतरे बर आमद [illegible]को दायें ह[illegible]थ के पत्थर से ख़ुश्क करे, यहां तक कि सूराख़ के मुंह पर तरी का निशान भी बाक़ी न रहे [illegible] तरह तीन पत्थरों से किया जाए।

अगर पत्थ[illegible] के टुकड़[illegible] मयस्सर न आ[illegible] तो ती[illegible] ठिकरियां [illegible] तीन ढेले लेकर उन पर मजकूरा अमल करे। कुछ [illegible]भी न हो तो तीन मुट्ठी मिट्टी ही [illegible]ए या ज़मीन या दीवार से उज़्वए मख़सूस को मस्क [illegible]करके ह[illegible]रतबा देख[illegible] ले कि ख़ुश्क[illegible] आई या [illegible]नीं, इस अमल के बाद यक़ीन करे कि इस्तिनजा [illegible] ह[illegible] पूरा हो गया। सिर्फ़ सोतने से परहेज़ करे बल्कि डंडी के आख़िरी हिस्से से सर की तरफ़ [illegible]त। क्योंकि पेशाब के कतरे अक्सर डंडी ही में रह जाते हैं और वुज़ू से फ़ारिग़ होने के बाद निकल[illegible]ते हैं जिससे वुज़ू टूट जाता है। इसलिए हुक्म है कि पाक करने और खासने से क़ब्ल तीन[illegible] र क़दम ज़मीन पर पैर मारता हुआ चले ताकि पेशाब का कोई क़तरा बाक़ी रह गया हो तो निकल जाए।

पाख़ाने के मकाम (मक़अद) को साफ करने का तरीका यह है कि बायें हाथ में पत्थर ले कर आगे से पीछे की तरफ ख़ुरूज (ग़लाज़त) के मकाम तक खींचे फिर उस पत्थर को फेंक दे अब दूसरा पत्थर लेकर पीछे से आगे की तरफ खींचें फ़िर उसको भी फेंक दे, अब तीसरा पत्थर लेकर मक़ामे ख़ुरूज चारों तरफ किनारों पर मले। फिर उसको भी फेंक दे इस तरह ज़रूरी तहारत हासिल हो जाएगी। अगर तीसरे पत्थर से पूरी तहारत न हो और तरी नमूदार हो तो दो पत्थर और इस्तेमाल करे यानी पत्थरों की तादाद पांच कर दे और इससे भी ज़्यादा सात पत्थर इस्तेमाल कर सकता है लेकिन ताक़ तादाद होना चाहिए। अगर एक या दो पत्थरों से तहारत हो जाए जब भी तादाद तीन तक बढ़ाये शरीअत का यही हुक्म है।

पत्थर इस्तेमाल करने का एक और तरीका भी है वह इस तरह है कि बायें हाथ में एक पत्थर ले कर मक़ामे ख़ुरूज के दायें किनारे पर आगे से पीछे तक ले जाए फिर उसी तरह बायें किनारे

से आगे से पीछे तक ले जाए अब उस पत्थर को फेंक दे। अब दूसरा पत्थर लेकर बायें किनारे के अगले हिस्सा से फेरता हुआ दायें किनारे के अगले हिस्से तक लाये, फिर तीसरे पत्थर से दर्मियानी हिस्से की सफ़ाई करे यह दोनों तरीक़े जाएज़ है।

हदीस में आया है कि एक शख़्स ने किसी देहाती सहाबी से कहा मेरे ख़्याल में तुम को अच्छी तरह रफ़ए हाजत के लिए बैठना भी नहीं आता, सहाबी ने कहा आता क्यों नहीं, तेरे बाप की क़सम मैं उससे अच्छी तरह वाक़िफ़ हूं, उस शख़्स ने कहा अच्छा बयान करो। सहाबी ने कहा कि मैं (रफ़ए हाजत के लिए बैठते वक़्त) कदमों को दूर दूर रखता हूं, ढेले तैयार रखता हूं शह घास की तरफ मुंह और हवा के रुख़ पर पुश्त रखता हूं, हिरन की तरह दोनों पांव पर ज़ोर दे कर बैठता हूं और शुतरमुर्ग की तरह सुरीन को ऊँचा रखता हूं। (शहः अरब की सरज़मीन पर एक ख़ुशबूदार घास होती है)

पानी से इस्तिनजा

पानी से इस्तिनजा करने का तरीक़ा यह है कि उज़्वे मख़सूस को बायें हाथ से थाम कर दायें हाथ से उस पर सात दफ़ा पानी डाल कर धोए, धोने में उज़्वे मख़सूस को सोंते यानी इस्तबरा करे बाकी कतरात भी खारिज हो जायें। फ़ुक़्हाए मदीना ने मर्द की शर्मगाह को जानवर के थन से तशबीह दी है कि जब तक सोंता जाता है कुछ न कुछ बर आमद होता है यहां तक कि जब पानी डाला जाता है तो पेशाब बन्द हो जाता है।

पिछली शर्मगाह की तहारत की शक्ल ये है कि पानी दायें हाथ से डाले और बायें हाथ से सफ़ाई करे, पानी मुसलसल डालता रहे मखरज को किसी क़द्र ढीला छोड़ दे और हाथ से ख़ूब मले यहां तक कि पाकीज़गी और तहारत का यक़ीन हो जाए। अगली और पीछली शर्मगाह के अन्दरुनी हिस्सों का धोना जरुरी नहीं है। हवा ख़ारिज होने के बाद इस्तिन्जा ज़रुरी नहीं।

तहारत के लिए खुश्क चीज़ों को इस्तेमाल भी काफ़ी है मगर उसके साथ पानी भी इस्तिन्जा करे तो बेहतर है, पानी का इस्तेमाल हर हाल में ऊला और अफ़ज़ल है। पानी से अगर इस्तिन्जा न किया जाए तो विसवास पैदा होता है। बाज़ लोगों का क़ौल है कि कुछ शायर पानी से इस्तिन्जा नहीं करते थे। इसी वजह से उनसे बेहूदा और फ़हश कलाम सरज़द होता था। अल्लाह तआला ऐसे गन्दे और फ़हश कलाम से पनाह में रखे। अगर नजासत फैल कर मर्द की शर्मगाह के सर के बेशतर हिस्सा (हश्फ़ा) तक पहुंच जाए या पिछली शर्मगाह के दोनों किनारों पर लग जाए तो ऐसी सूरत में बग़ैर पानी के इस्तिन्जा दुरुस्त नहीं होता। इस लिए कि नजासत रुख़्सत की जगह से बाहर निकल गई है और उस नजासत के मानिन्द होगी जो बाक़ी बदन पर हो जैसे रान और सीना वग़ैरह, इस लिए पानी के बग़ैर पाकी मुमकिन नहीं होगी।

किन चीज़ों से इस्तिन्जा करना चाहिए

जिन चीज़ों से इस्तिन्जा करना जाएज़ है वह ख़ुश्क, पाक और साफ़ हों और अज़्व क़िस्म तआम न हों इसी तरह उन चीज़ों से भी इस्तिन्जा करना दुरुस्त नहीं जिनका ऐहतराम किया जाता है। और न उनसे जो किस जानवर के जिस्म का हिस्सा हों जैसे हड्डी या गोबर वग़ैरह, क्योंकि ये अशिया जिन्नात की ग़िज़ा हैं। ज़ख़्म डालने वाली या ख़राश पैदा करने वाली चीज़ों

से भी इस्तिन्जा करना नहीं चाहिए, जैसे शीशा, कोयला या कंकरिया वग़ैरह।

इस्तिन्जा की ज़रुरत

रीह के अलावा बाक़ी जो भी दोनों रास्तों (उज़्वे मख़सूस और मक़अद) से बर आमद हो इस सूरत में इस्तिन्जा वाजिब है जैसे पाख़ाना, कीड़े पत्थरी, पीप, लहु, बौल।

मर्द की शर्मगाह से (उज़्वे मख़सूस) से निकलने वाली ये पांच चीज़ें हैं।

(1) पेशाब,

(2) मज़ी, वह रक़ीक़ सफ़ेद पानी जो लैसदार होता है, जो शहवानी बातों या शहवत के वक़्त ख़ारिज होता है, इस सूरत में सिर्फ़ पेशाबगाह का काफ़ी नहीं बल्कि फ़ोतों को भी धोना चाहिए। जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो ने रिवायत की है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया यह मर्द का पानी है, हर मर्द से निकलता है और यह जब यह निकले तो उस मक़ाम को और फ़ोतों को धो लोन चाहिए।

(3)वदी, वह सफ़ेद गाढ़ा पानी या रतूबत जो पेशाब के बाद निकलती है इसका हुक्म पेशाब का है।

(4) मनी, यानी वह सफ़ेद पानी जो जिमाअ़ या एहतलाम की ख़ास कैफ़ियत के वक़्त शर्मगाह से कूद कर निकलता है। आदमी में कुव्वत ज़्यादा हो तो इसका रंग ज़र्द होता है और कसरते जिमाअ़ की वजह से इसका रंग सुर्ख़ हो जाता है ज़ोफ़े बदन और कमज़ोरी की वजह से इसमें पतला पन पैदा हो जाता है, इसकी बू खजूर के शगूफे या गुंधे हुए आटे की बू की तरह होती है। एक रिवायत में इसको पाक करार दिया गया है लेकिन इसके निकलने से पूरे बदन को धोना (गुस्ल) वाजिब हो जाता है। औरत का पानी (मनी) ज़र्द रंग का होता है।

(5)कभी मर्द की अगली शर्मगाह से हवा (रीह) निकलती है इसके निकलने पर इस्तिन्जा ज़रुरी नहीं।

तहारते कुबरा (गुस्ल)

गुस्ल की कैफ़ियत और हुक्म

गुस्ल जिसको तहारते कुबरा से ताबीर किया जाता है दो तरह का है एक कामिल और एक बक़दरे ज़रुरत। कामिल गुस्ल ये है कि जनाबत या हदसे अकबर को दूर करने के लिए नीयत के साथ किया जाए, दिल से नीयत करने के बाद ज़बान से भी कह ले तो अफ़ज़ल है। पानी लेते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़े, तीन बार दोनों हाथ धोए, बदन पर जो नजासत लगी हो उसको धो डाले फिर पूरा वुज़ू करे, पांव उस जगह से हट कर दूसरी जगह धोए, तीन चुल्लू (लप) पानी सर पर इस तरह डाले कि बालों की जड़ें तर हो जायें फिर तीन मर्तबा सारे जिस्म पर पानी बहाये, दोनों हाथों से बदन भी मलता जाए, रानों के गोशे को (जिन को जंगासे कहते हैं)। और बदन की खाल की शिकनें भी धोए, इन मक़ामात पर पानी यक़ीनी तौर पर पहुंचाना चाहिए। हुज़ूरे अक़दस का इरशाद है कि बालों को तर करो और जिल्द को ख़ूब साफ़ करो, गुस्ल के दौरान अगर कोई हदस ऐसा सरज़द न हुआ हो जिससे वुज़ू जाता रहता है। तो इसी गुस्ल से नमाज़

पढ़ना जाएज़ है (मज़ीद की ज़रुरत नहीं है) हदसे असग़र और हदसे अकबर को दूर करने के लिए यही गुस्ल काफ़ी होगा अगर गुस्ल के दौरान वुज़ू टूट गया हो तो नमाज़ के लिए दोबारा वुज़ू किया जाए।

गुस्ले जनाबत

गुस्ले जनाबत के सिलसिले में जो तफ़सील पेश की गई इसकी अस्ल सबूत वह रिवायत जो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहो अन्हा से मरवी है। फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गुस्ले जनाबत करना चाहते तो तीन बार दोनों हाथ धोते फिर दायें दस्ते एक़दस में पानी ले कर बाएं दस्ते मुबारक पर पानी बहाते फिर कुल्ली फ़रमाते और बीनी मुबारक में पानी पहुंचाते। तीन बार चेहरा मुबारक व तीन बार दोनों दस्ते मुबारक धोते फिर तीन बार सरे मुबारक पर पानी डालते और इसको धोते जब गुस्ल फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ लाते तो दोनों क़दमे अक़दस धोते।

क़िस्म दोम यानी किफ़ायत करने वाली तहारत यह है कि अपनी शर्मगाह को धो कर नीयत करे और बिस्मिल्लाह पढ़ कर पानी बहाये। नाक में पानी डाले क्योंकि वुज़ू और गुस्ल दोनों में पानी डालना वाजिब है इसके बाद सारे जिस्म पर पानी बहाये। दौराने गुस्ल नाक में पानी डालने और कुल्ली करने के बारे में दो रिवायतें हैं जिससे साबित होता है कि तहारते सुग़रा में भी जाएज़ है लेकिन ऐसे गुस्ल के साथ नमाज़ पढ़ना जाएज़ नहीं जब तक कि गुस्ल और वुज़ू दोनों की नीयत न की हो, अगर वुज़ू की नीयत न हो तो न होगा और उसकी नमाज़ भी सही नहीं होगी, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसका वुज़ू न होगा उसकी नमाज़ न होगी और तहारते कुबरा में गुस्ल भी हो गया और वज़ू भी।

पानी का इस्तेमाल

गुस्ल में पानी बेकार और ज़ाएद इस्तेमाल करना मुस्तहब नहीं, दर्मियानी तौर पर सर्फ़ करना अच्छा भी है और मुस्तहब भी, अगर गुस्ल और वुज़ू की ज़रुरियात पूरी हो सकती हैं तो इसराफ़ के मुक़ाबले में कम पानी इस्तेमाल करना बेहतर है। एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मुद पानी से वुज़ू और एक साअ़ पानी से गुस्ल फ़रमाते।

आज़ा धोने के वक़्त की मुस्तहब दुआयें

इस्तिन्जा के बाद की दुआ:

इस्तिन्जा से फ़ारिग़ हो कर ये दुआ पढ़े

इलाही! मेरे दिल को शक और निफ़ाक़ से पाक रख और मेरी शर्मगाह की बे हयाइयों से हिफ़ाज़त फ़रमा।

बिस्मिल्लाह कहते वक़्त की दुआ:

बिस्मिल्लाह पढ़ते वक़्त कहे।

परवरदिगार मैं शैतानी वसवसों से पनाह मांगता हूं। या अल्लाह! अपने शैतानों के आने से भी तेरी पनाह चाहता हूं।

हाथ धोते वक़्त कहे:

इलाही! मैं तुझसे ख़ैर व बरकत चाहता हूं और नहूसत, बरबादी से तेरी पनाह मांगता हूं।

कुल्ली करते वक़्त की दुआ:

कुल्ली करते वक़्त ये दुआ पढ़े।

इलाही! अपनी किताब कुरआन (पाक) के पढ़ने में और अपनी याद बकसरत करने में मेरी मदद फरमा (ताकि मैं कुरआन ख़ूब पढ़ूं और कसरत से तेरी याद करुं।

नाक में पानी डालते वक़्त:

नाक में पानी चढ़ाते वक़्त कहे।

खुदाया! अपनी ख़ूशनूदी के साथ जन्नत की ख़ूश्बू सूंघा (मुझे जन्नत की ख़ूश्बू और मुझसे राज़ी हो जा)

नाक साफ़ करने के वक़्त:

ये दुआ पढ़े।

इलाही! मैं दोज़ख़ की बू से और आख़िरत के घर की ख़राबी से तेरी पनाह चाहता हूं।

मुंह धोने के वक़्त:

ये दुआ पढ़े।

इलाही! उस रोज़ मेरे मुंह को सफ़ेद (रौशन) करना जिस रोज़ तेरे दोस्तों के मुंह सफ़ेद होंगे और जिस रोज़ तेरे दुश्मनों के चेहरे सियाह होंगे उस रोज़ मेरे चेहरे को सियाही से महफ़ूज़ रखना।

सीधे हाथ धोते वक़्त:

यह दुआ पढ़े:

इलाही! आमाल नामा मेरे सीधे हाथ में देना और मेरा हिसाब आसान कर देना।

दस्ते चप धोते वक़्त:

यह दुआ पढ़े।

इलाही! मैं इस बात से तेरी पनाह मांगता हूं कि तू बायें हाथ में या पुश्त के पीछे से मेरा आमाल नामा मुझे दे।

सर का मसह करते वक़्त:

सर का मसह करते वक़्त यह कहे।

इलाही! मुझे अपनी रहमत में छुपा ले और मुझ पर अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमा और उस दिन अपने अर्श के नीचे मुझे जगह दे जिस दिन तेरे साया के सिवा कोई साया नहीं होगा।

कानों के मसह के वक़्त की दुआ:

कानों के मसह करते वक़्त यह दुआ पढ़े।

खुदाया! मुझे उन लोगों में से कर दे जो अच्छी बात सुन कर उस की पैरवी करते हैं इलाही

मुझे नेकियों के साथ बहिश्त के मुनादी की आवाज़ सुना।

गर्दन का मसह करते वक़्त की दुआ:

गर्दन का मसह करते वक़्त यह दुआ पढ़े।

इलाही! मेरी गर्दन को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा दे ज़ंजीरों और तौक़ों से मैं तेरी पनाह मांगता हूं।

दायां पांव धोते वक़्त:

यह दुआ पढ़े।

इलाही! अहले ईमान के साथ मेरे क़दम को पुल सिरात पर क़ायम फरमा।

बायां पांव धोते वक़्त:

यह दुआ पढ़े।

इलाही! जिस रोज़ मुनाफ़िक़ों के क़दम पुल सिरात से फ़िसल जाएं उस रोज़ मैं अपने क़दम के फिसलने से तेरी पनाह चाहता हूं।

वज़ू से फ़रागत पाने की दुआ

वुज़ू से फ़ारिग़ होकर आसमान की तरफ मुंह उठा कर यह दुआ पढ़े।

मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह एक है और उसका कोई शरीक नहीं और उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मैं शहादत देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, इलाही तू पाक है और अपनी तारीफ़ का मुस्तहिक़, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैंने बदी की और अपनी जान पर ज़ुल्म किया। मैं तुझसे मग़फ़िरत का तालिब हूं और माफ़ी का ख़्वास्तगार, मुझे बख़्श दे और माफ़ी दे दे, तू बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है। इलाही! मुझे तौबा करने वालों में से कर दे और पाकबाज़ों में से बना दे और साबिर शुक्र गुज़ार कर दे और ऐसा कर दे कि मैं तेरी याद किया करुं। और सुबह व शाम तेरी पाकी ब्यान करुं।

लिबास, ख़्वाब और घर से बाहर निकलने के आदाब

लिबास पांच तरह का होता है, (1) हर मोकल्लफ़ (बालिग़ साहबे फ़हम) के लिए हराम (2) बाज़ के लिए हलाल और बाज़ के लिए हराम, (3) मकरुह, (4) मुबाह, (5) वह जिसके इस्तेमाल की माफ़ी है। (यानी इजाज़त है)

(1) छीना हुआ लिबास हर मोकल्लफ़ (बालिग़ और फ़हीम) के लिए हराम है (2) रेशमी लिबास औरतों के लिए हलाल है और बालिग़ मर्दों के लिए हराम है। नाबालिग़ लड़कों को रेशमी लिबास पहनाने के जवाज़ व अदमे जवाज़ की दो रिवायतें हैं। जिहाद में मुजाहिदीन के लिए भी रेशमी लिबास पहनने के जवाज़ व अदम जवाज़ की भी दो मुतज़ाद रिवायतें हैं। उनमें एक

रिवायत में इस लिबास को मुबाह लिखा है। (3) कपड़ा इतना लम्बा पहनना कि ग़रुर व तबख्तुर की हद में दाख़िल हो जाए मकरुह है (4) इसी तरह वह लिबास भी मकरुह है जो रेशम और सूत से मिलकर बना हो लेकिन रेशम और सूत की तादाद मालूम न हो कि कितनी है (निस्फ़ निस्फ़ है या कम व बेश है।) (5) वह लिबास जिसकी माफ़ी (इजाज़त) है लिबास है जो लोगों में मारूफ़ हो और मुस्तअमल हो। लिहाज़ा ऐसा लिबास पहने जेसा उमूमन अहले शहर पहनते हैं ताकि लिबास से बेगानगी का इज़हार न हो। रिवाज से हट कर लिबास पहनने वाले पर लोग उमूमन अंगुश्त नुमाई करते हैं और ग़ीबत करते हैं। इस तरह यह लिबास पहनने वाले के लिए भी तकलीफ़ का बाइस बनता है और दूसरों के लिए ग़ीबत का सबब।

लिबास का अक़साम

लिबास की दो क़िस्में हैं। एक लिबास वाजिब है और दूसरा मुसतहब। फिर वाजिब की भी दो क़िस्में हैं। एक हक़्क़ुल्लाह (वह जो अल्लाह तआला के हक़ की तरफ़ राजेअ़ हो)। दूसरा हक़्क़ुन्नास (वह जो सिर्फ़ इन्सान के हक़ की तरफ़ राजेअ़ हो)।

(1) हक़्क़ुल्लाह यह है कि अपनी बरहंगी को लोगों से इस तरह छुपाये जेसा कि छुपाने का हुक्म है, इसकी तफसील बरहंगी के ब्यान में हो चुकी है। (2) हक़्क़ुन्नास यह है कि गर्मी सर्दी अपनी हिफ़ाज़त के लिए इन्सान लिबास पहने। यह वाजिब है ऐसे लिबास को तर्क करना हराम है क्योंकि उसके तर्क में जान का ख़तरा और ऐसा करना हराम है।

मुसतह़ब लिबास की भी दो क़िस्में हैं। एक हक़्क़ुल्लाह और दूसरी हक़्क़ुन्नास। अव्वलुज़्ज़िक्र वह लिबास है जो चादर की तरह नमाज़ों की जमाअतों, ईदैन के इजतमाआत और जुमों में लोग पहनते हैं, आदमी को चाहिए कि ऐसे इजतमाआत में ख़ूबसूरत कपड़ों से अपने कंधों को बरहना न करे। दूसरी क़िस्म का लिबास यानी हक़्क़ुन्नास यह है कि उमदा और नफ़ीस कपड़े जो मुबाह हैं वह पहने ताकि आदमी की शराफ़ते नफ़्स में कमी न आए लेकिन ऐसे कपड़े पहन कर दूसरे लोगों को हक़ीर न जाने।

अमामा किस तरह बान्धे

अमामा यानी पगड़ी बांधते वक़्त उसका एक सिरा दांतों में दबाने वाले फिर सर पर लपेटे यह तरीक़ा मुसतह़ब है, लिबास की हर वह वज़अ़ मकरूह है जो अहले अ़रब की वज़अ के ख़िलाफ़ और अजमियों से मुशाबेह हो।

तहबन्द

तहबन्द का दामन बहुत ज़्यादा लम्बा न रखे। हदीसा शरीफ़ में आया है। हुज़ूरे सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमान का तहबन्द (एज़ार) आधी पन्डली तक होता है या टख़नों से नीचे हो दोज़ख़ में जलेगा। (यानी जिस क़द्र जामा टख़नों से नीचे होगा वह दोज़ख़ में जलेगा)। जो एज़ार (तहबन्द) को घसीटता हुआ चलता है अल्लाह तआ़ला उसकी तरफ़ रह़मत की नज़र नहीं फरमाएगा। ये हदीस अबू दाउद ने अपनी असनाद के साथ हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहो अन्हो से नक़्ल की है।

नमाज़ पढ़ते वक़्त चादर को इतना तंग न पहने कि हाथ बाहर निकालने में दिक़्क़त हो ऐसा

करना मकरुह है। सदल भी मकरुह है यानी चादर के वस्ती हिस्से को सर पर रखना और इधर उधर के दोनों किनारों को पुश्त पर लटका देना। यह यहुदियों का लिबास है।

अगर अन्दरूनी कपड़े न पहनते हो और सिर्फ़ तहबन्द बांधे हो तो एहतबा भी नाजाएज़ है। एहतबा की सूरत यह है कि दोनों ज़ानू खड़े कर के सीने की जानिब समेट लिए जायें और सुरीन के बल बैठा जाए और चादर को पीछे से घुमा कर सामने लाकर घुटनों को घेरे मे लेकर बांधा जाये ताकि कमर का सहारा हो जाए, इस सूरत में शर्मगाह के खुल जाने का ख़तरा होता है लेकिन अगर कोई कपड़ा अन्दर पहने हो तो एहतबा जायज़ है। नमाज़ में मुंह बिल्कुल लपेट लेना चाहिए और नाक ढांक लेना मकरुह है। (इसको तलतिम कहते हैं।)

मर्दों के लिए औरतों की वज़अ इख़्तियार करना और औरतों के लिए मर्दों के मुशाबेह लिबास नहीं पहनना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने वाले (मर्द और औरत) पर लानत भेजी है और अज़ाब के वईद सुनाई है।

नमाज़ में अक़आ भी मकरुह है, अक़आ की दो सूरतें हैं। एक यह कि पांव के तलवे और ऐड़ियां उपर की तरफ़ और तलवे ज़मीन से लगे हों और आदमी ऐड़ियों पर बैठा हो। दूसरी सूरत यह है कि दोनों सुरीनों की नोकों पर बैठा हो और पांव कुत्ते की तरह आगे की तरफ़ फैले हों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि यह कुत्ते की बैठक है और इस तरह बैठना मना है।

ऐसा लिबास पहनना जिससे बदन नज़र आता हो मकरुह है। अगर कोई क़सदन ऐसा लिबास पहनेगा जिससे बदन का ममनूआ हिस्सा चमकता हो तो ऐसा शख़्स फ़ासिक़ है, ऐसा लिबास पहन कर नमाज़ भी दुरुस्त नहीं।

पायजामा (सराविल)

पायजामा की शरीयत में तारीफ़ की गई है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पायजामा को निस्फ़ लिबास करार दिया है और इसे मर्दों के लिए मौज़ूं बताया है। पायजामा के पांएचों की मोरियां ज़्यादा कुशादा रखना मकरुह है। तंग मोरियां ज़्यादा पसन्द और बेहतर हैं। इससे बेपर्दगी नहीं होती। सत्रे औरत अच्छी तरह होता है।

एक रिवायत में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इलाही! पायजामा पहनने वाली औरतों को बख़्श दे, हुज़ूर ने यह दुआ उस वक़्त फरमाई जब एक औरत जो पांयचे उठाए हुए थी। बलन्दी पर चढ़ते हुए गिर पड़ी। हुज़ूर ने उस की तरफ से मुंह फेर लिया था। उस वक़्त किसी ने अर्ज़ किया कि यी औरत पायजामे पहने है मुन्दर्जा ज़ैल बाला दुआ फ़रमाई। बाज़ हदीसें में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसे ढीले पायजामे को जिन के पांव (ऊपरी हिस्सा) को छुपा दें ना पसन्द है। कुशादा पांएचों वालों ढीले पायजामे को मुख़रफ़ज कहते हैं। चुनांचे मस्ल में आया है कि ऐशुन मुख़रजुन(फराख़ हाली की ज़िन्दगी)। सबसे बेहतर वह लिबास है जो पर्दा पोश हो।

सफ़ेद कपड़े

कपड़ों का सबसे अच्छा रंग सफ़ेद है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि "तुम्हारे सबसे अच्छे कपड़े सफ़ेद हैं।" एक रिवायत में आया है कि आंहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अपने बच्चों को सफ़ेद कपड़े पहनाओ और मुर्दों को भी सफ़ेद कफ़न दो। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया "सफ़ेद रंग के कपड़े पहनो" तुम्हारे लिए यह बेहतरीन लिबास है, इन्हीं मुर्दों को कफ़न दो, बेहतरीन सुर्मा अशमद है, बीनाई को तेज़ करता है और पलकों के बाल लगाता है।

आदाबे ख़्वाब

ख़्वाब के मसाएल

जो शख़्स सोने का इरादा करे तो इसके लिए मुसतहब है कि पानी के बर्तन ढक दे, मश्कीज़ा का मुंह बंद कर दे, चिराग़ गुल कर दे, अगर कोई बू दार चीज़ खाई हो तो मुंह साफ़ करे (कुल्ली करे) ताकि मूज़ी जानवर इज़ा न पहुंचाए। बिस्मिल्लाह पढ़ कर यह दुआ जो अबू दाऊद ने अपनी असनाद के साथ हज़रत सईद बिन उबैदा से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बराअ (बिन आज़िब) से फ़रमाया कि ख़्वाबगाह में जाओ तो पहले नमाज़ की वुज़ु की तरह वुज़ु कर लो फिर दायें करवट से लेट कर यह पढ़ो और अपनी हर बात के आख़िर में इसको पढ़ो। (यानि इसके पढ़ने के बाद कोई बात न करो)

इलाही! मैं अपने आपको तेरा फरमा बरदार बनाता हूं और अपने काम तुझे सोंपता हूं तुझे अपना सहारा क़रार देता हूं और तुझसे उम्मीद करता हू और तुझसे डरता हूं तुझसे भाग कर सिवाये तेरे न बचने का कोई मक़ाम है और न पनाह लेने का। जो किताब तूने नाज़िल फरमाई उस पर मेरा यक़ीन है और जो नबी तूने भेजा है उस पर मेरा ईमान है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अगर इस दुआ को पढ़ने के बाद तुम (सोते में) मर जाओगे तो इस्लाम पर मरोगे। हज़रत बराअ रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि मैंने इस दुआ को याद करना शुरू किया मगर ***नबी यकल्लज़ी अरसलता*** की जगह ***बेरसूलेकल्लज़ी अरसलता*** पढ़ा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं ***व नबी यकल्लज़ी अरसलता*** पढ़ो।

सोने को लेटे तो सीधी करवट पर क़िबला रुख़ सोने को इस तरह लेटे जैसे क़ब्र में मुर्दे को लिटाते हैं। हदीस में इसी तरह आया है, अगर आसमान और ज़मीन की बादशाहत (अल्लाह तआला के एक़तदार) पर ग़ौर करने के लिए चित लेटे (आसमान की तरफ मुंह करके) तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं! औंधा लेट कर सोना मकरुह है।

अगर सोते में डरावने ख़्वाब नज़र आयें तो ख़्वाब की बुरे असरात से अल्लाह से पनाह मांगे और बाई तरफ तीन बार थूक करके यु दुआ पढ़े:

तर्जमाः—इलाही! इस ख़्वाब का नतीजा मेरे लिए अच्छा कर और इसकी शर से मुझे बचा। फिर आयतल कुर्सी, सुरह इख़लास (कुल होवल्लाह) सूरह फ़लक़ और सूरह अन्नास पढ़े। बशर्ते कि नापाक न हो। अपना ख़्वाब सिर्फ नेक शख़्स या दानिशमन्द दोस्त से कहे जो ख़्वाब की ताबीर अच्छी तरह जानते हो किसी दूसरे से ब्यान न करे, अगर ख़्वाब शैतानी ख़्यालात देखे हों तो उन्हें बयान करने की मुतलक़ ज़रुरत नहीं। शैतानी किसी सूरत का जामा पहन कर ख़्वाब में दिखाई देता है।

हज़रत अबू क़तादा का बयान है कि मैंने ख़ूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि सच्चा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से होता है और बेहूदा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से। पस अगर कोई शख़्स ना पसन्दीदा और बेहूदा ख़्वाब देखे तो बेदार होने पर बाईं तरफ़ तीन मरतबा थूके और अल्लाह से उसकी बुराई की पनाह मांगे। ऐसा शख़्स बुरे ख़्वाब से महफ़ूज़ रहेगा।

मोमिन का ख़्वाब

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मामूल था कि फ़ज्र की नमाज़ से फ़रागत के बाद हाज़िरीन की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाते थे क्या आज रात तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है? फिर आप फ़रमाते कि मेरे बाद सिवाये सच्चे ख़्वाब के नुबूव्वत का कोई और हिस्सा बाक़ी नहीं रहेगा। हज़रत उबादा बिन सामत की रिवायत है "हुज़ूरे वाला ने इरशाद फ़रमाया है कि मोमिन का ख़्वाब नुबूव्वत का छियालिसवां हिस्सा है।"

घर से बाहर निकलने के आदाब

घर से निकलते वक़्त की दुआ

घर से बाहर निकलते वक़्त उन कलमात को पढ़े [illegible] रत उम्मे सलमा शअबी की मरवी हदीस में है कि उन्होंने फ़रमाया जब भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे घर से बाहर निकले हमेशा आसमान [illegible] तरफ़ रुए [illegible] रक फ़रमा कर यह अल्फ़ाज़ ज़बाने मुबारक से अदा फ़रमाये।

तर्जमाः—इलाही! मैं तेरी पनाह चाहता हूं उस [illegible] में गुमराह हो जाऊं या मुझे गुमराह कर दिया जाये, मैं फ़िसल जाऊं या मुझे फिसला दिया जाए, मैं [illegible] ज़ुल्म करूं या मुझ पर ज़ुल्म किया जाये, मैं खुद [illegible] हूं या नादान बनाया जाऊं।

और फिर कुल होवल्लाह और सूरह फ़लक़ और सूरह अन्नास (मअउज़ तैन) के साथ सुबह व शाम ये दुआ पढ़े।

तर्जमाः—इलाही! हम [illegible] साथ सुबह करते हैं और तेरे साथ शाम करते, तेरे ही फ़ज़्ल से जीते हैं और तेरी ही हुक्म से मरते हैं।

सुबह की दुआ में आख़िर में व एलैकन्नशहूर कहे और शाम की दुआ के आख़िर में व एलैकल मसीर का इज़ाफ़ा करे, इस दुआ के पढ़ने के बाद यह दुआ भी पढ़े।

तर्जमाः—इलाही! आज और आज के बाद जो ख़ैर तू तक़सीम करे तू मुझे उन बन्दों के बराबर कर दे जो तेरे नज़दीक बड़े हिस्सा वाले हैं। ख़्वाह वह तेरी तरफ़ से हिदायत बख़्शने वाला नूर हो या तेरी रहमते आम्मा हो या तेरा दिया हुआ रिज़्क़े वसीअ़ हो या तेरी तरफ़ से दफ़ा करदा तकलीफ़ या माफ़ किया हुआ गुनाह या दूर की हुई सख़्ती या ज़ाएल की हुई मुसीबत या एहसान के तौर पर दी हुई आफ़ियत हो। बहरहाल जो ख़ैर भी हो मुझे उसमें बड़ा हिस्सा पाने वाले बन्दों के साथ अपनी रहमत में शरीक बना दे, तू सब कुछ कर सकता है।

आदाबे मस्जिद

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ

मस्जिद में दाख़िल होना चाहे तो दायां क़दम आगे बढ़ाये और पीछे बायां क़दम रखे और कहे।

तर्जमाः—बिस्मिल्लाह, अल्लाह की तरफ़ से सलामती हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर। इलाही मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फरमा और उनकी औलाद पर। इलाही! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

मस्जिद में अगर कोई शख़्स मौजूद हो तो उसको सलामुन अलैक करे और अगर मौजूद न हो तो कहे अस्सलामो अलैना मिन रब्बेना अज़्ज़ व जल्ल (अल्लाह बुजुर्ग बरतर की तरफ से हम पर सलामती हो।) मस्जिद में दाख़िल हो जाए तो दो रिकअतें पढ़े बग़ैर न बैठे, इस के बाद दिल चाहे तो नफ़्ल पढ़े या अल्लाह के ज़िक्र में बैठ कर मशगूल रहे या ख़ामोश बैठ जाए। दुनिया किसी बात का तज़किरा न करे बात करे तो बक़द्रे ज़रूरत करे ज़्यादा न करे।

नमाज़ का वक़्त शुरु हो जाए तो सुन्नतें पढ़ कर जमाअत के साथ फ़र्ज़ अदा करे। नमाज से फ़ारिग़ हो कर जब मस्जिद से बाहर निकलना चाहे तो बायां पांव आगे रखे और दायां पीछे और कहे।

तर्जमाः—बिस्मिल्लाह, अल्लाह की तरफ से सलामती हो रसूलुल्लाह पर, इलाही मोहम्मद और आले मोहम्मद पर अपनी रहमत नाज़िल फरमा, मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे लिए अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े खोल दे।

नमाज़ के बाद 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दो लिल्लाह और 34 बार अल्लाहो अकबर पढ़ना सुन्नत है। जब सौ की तादाद मुकम्मल हो जाए तो ख़ातमे पर कहे।

तर्जमाः—अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, उसी की हुकूमत है, उसी के लिए हर तारीफ़ ज़ेबा है वही ज़िन्दा करता है वही मारता वह हमेशा हमेशा के लिए ज़िन्दा है मरेगा नहीं वह अज़मत व बुजुर्गी वाला है। बेहतरी और भलाई उसी के हाथ में है और वह हर शय पर कुदरत रखने वाला है।

हर वक़्त बा वुज़ू रहना मुसतहब है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में आया है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि अपनी उम्र में हर वक़्त बा तहारत रहो। जितना हो सके रात और दिन में नमाज़ पढ़ते रहो, निगहबान फ़रिश्ते तुम से मोहब्बत रखेंगे। चाश्त की नमाज़ पढ़ा करो। क्योंकि यह नमाज़ अल्लाह की तरफ रुजूअ करने वालों की है। घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम किया करो, इससे घर की बरकत ज़्यादा होती है। बड़ी उम्र वाले मुसलमान की इज़्ज़त करो और छोटों पर शफ़क़त रखो तो तुम जन्नत में मेरे रफ़ीक़ बन जाओगे। इस हदीस में बकसरत (अख़लाक़ी और समाजी) आदाब को जमा फ़रमा दिया गया है।

बाब- 4

घर में दाख़िले, कसबे हलाल और ख़लवते नशीनी इख़्तियार करने का बयान

घर में दाख़िला

घर में दाख़िल होने से क़ब्ल दरवाज़े पर खड़ा हो कर खंकारे और कहे ***अस्सलामो अलैना मिन रब्बेना*** बाज़ अहादीस में आया है कि जब मोमिन अपने घर से निकलता है तो अल्लाह उसके दरवाज़े पर दो फ़रिश्तों को मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उसके माल और घर वालों की निगहदाश्त करते हैं और शैतान सत्तर सरकश शैतानों को मुक़र्रर कर देता है वापस हो कर जब मोमिन अपने दरवाज़े के क़रीब पहुंचता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि इलाही अगर यह हलाल कमाई करके लौटा है तू इसको तौफ़िक़ दे। फिर जब वह खंकारता है तो फ़रिश्ते क़रीब आ जाते हैं और जब ***अस्सलामो अलैना मिन रब्बेना*** कहता है तो शैतान रूपोश हो जाते हैं और दोनों फ़रिश्ते आ कर उसके दायें और बायें आकर खड़े होते हैं। जब दरवाज़ा खोल कर कहता है तो तो शैतान चले जाते हैं और फ़रिश्ते उसके साथ अन्दर दाख़िल होते हैं, उसके घर की हर चीज़ संवार देते हैं और उसका दिन आसाइश से गुज़रता है, आराम से बैठता है फ़रिश्ते उसके सर के ऊपर होते हैं, जो कुछ वह खाता पीता है वह पाक और हलाल होता है दिन रात जितना अर्सा भी वह घर में रहता है उसकी जान भी पाक रहती है।

अगर कोई मुसलामन इन बातों पर अमल नहीं करता तो फ़रिश्ते वहां से चले जाते हैं और शैतान उस आदमी के साथ घर में घुस जाते हैं और हर चीज़ उसकी नज़र में क़बीह बना देते हैं घर वालों की तरफ से ऐसी बातें सुनवाते हैं जो उसको नागवार गुज़रती है यहां तक कि उसके घर वालों के साथ उसके झगड़े शुरु होते हैं, अगर वह बग़ैर बीवी के है तो उस पर औंघ और सुस्ती तारी हो जाती है। मुरदार की तरह सोता है, उठ कर बैठता है तो ग़ैर मुफ़ीद चीज़ों की आरज़ू करता है। वह ख़बीसुन नफ़्स हो जाता है, उसका खाना पीना सोना सब कुछ अपने लिए बिगाड़ लेता है।

मईशत

कस्ब व मआश के सिलसिले में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स सवाल से बचने घर वालों की रोज़ी हासिल करने और हमसाये पर मेहरबानी करने के लिए हलाल देना तलब करता है, क़यामत के दिन जब अल्लाह उसको उठायेगा तो उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह (रौशन) होगा। और जो शख़्स दूसरों के मुक़ाबले में अपने दिल को बढ़ाने, फ़ख़्र करने और लोगों पर अपना

तमव्वुल ज़ाहिर करने के लिए माल तलब करता है, क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने जाएगा तो अल्लाह उससे ना खुश होगा।

गदागरी

हज़रत साबित बनानी की रिवायत करते हैं कि आसाईश दस चीज़ों में है। नौ तो वह हैं जिनका ताल्लुक़ तलबे मआश से है और एक इबादत से है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो अन्हो रावी हैं, सरकार ने फ़रमाया है कि जो शख़्स अपने लिए सवाल का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह उसके लिए मोहताजी का दरवाज़ा खोल देता है और जो सवाल करने से बचता है अल्लाह भी उसे सवाल से बचाता है। जो शख़्स लोगों से मुसतग़नी हो जाता है। अल्लाह तआ़ला उसको भी ग़नी कर देता है। अगर तुम में से कोई रस्सी लेकर जंगल को जाकर लकड़ियां जमा करके बाज़ार में ला कर एक मद खजूरों के एवज़ में फरोख़्त कर दे तो लोगों के सामने दस्ते सवाल दराज़ करने से बेहतर है कि लोग दें या न दें। एक रिवायत में आया है कि जो शख़्स अपने लिए सवाल का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए मोहताजी और फ़क़ीरी के सत्तर दरवाज़े खोल देते हैं। एक दूसरी रिवायत में आया है कि हुज़ूर वाला ने फ़रमाया कि अयाल्दार कमाने वाले मोमिन को अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाता है और जो तन्दुरुस्त शख़्स निकम्मा है, न दुनिया के काम न दीन के काम का, अल्लाह तआ़ला उसको न पसन्द फ़रमाता है।

रिवायत में आया है कि अल्लाह के ख़लीफ़ा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दरख़्वास्त की कि मेरी मआश का ज़रिया मेरे हाथ की कमाई को बना दे। अल्लाह ने उनके हाथ में लोहे को नर्म कर दिया उनके हाथ में लोहा नर्म और गूंधे हुये आटे की तरह हो गया। चुनांचे हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम लोहे की ज़िरहें बनाकर बेचते थे और उनकी क़ीमत से अपने और अपने अहल व अयाल की रोज़ी कमाते थे।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि परवरदिगार मैंने तुझसे दरख़्वास्त की थी कि मेरे बाद ऐसी हुकूमत किसी और को अता न फरमाई जाये तूने मेरी इस दरख़्वास्त को भी क़बूल फरमा लिया इसके बावजूद मैं अगर तेरा पूरा पूरा शुक्र अदा करने से क़ासिर हूं तू मुझे ऐसा कोई बन्दा बता दे जो मुझसे ज़्यादा तेरा शुक्र अदा करने वाला हो।

अल्लाह तआ़ला ने वही भेजी कि ऐ सुलेमान! मेरा एक बन्दा अपने हाथ से कमा कर अपने पेट पालता है, उसी से अपना बदन ढांकता है और मेरी बन्दगी में लगा रहता है यही वह बन्दा है जो तुझसे ज़्यादा शुक्र गुज़ार है। तब हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि इलाही! मुझे अपने हाथ से कमाना सीखा दे। पस हज़रत जिब्रईल तशरीफ़ लाए और आप को खजूर के पत्तों से टोकरे बनाना सीखाया चुनांचे सबसे पहली ज़ंबील (टोकरी) जिसने बनाई वह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम थे।

दीन व दुनिया की दुरुस्ती चार क़िस्म के लोग से है

एक दानिश मन्द का क़ौल है कि दीन व दुनिया की दुरुस्ती सिर्फ़ चार क़िस्म के लोग होती है। 1. आलिम, 2. हाकिम, 3. मुजाहिद, सिपाही और 4. पेशावर। हुक्काम निगरां हैं यानी चरवाहे की मानिन्द हैं। ख़ुदा के बन्दों की निगरानी इस तरह करते हैं जिस तरह चरवाहा अपने रेवड़

की। आलिम पैग़म्बरों के वारिस हैं, गुमराहों को आख़िरत का रास्ता दिखाते हैं और लोग उनकी अच्छी आदतें इख़्तियार करते हैं। मुजाहिद सिपाही (ग़ाज़ी) ज़मीन पर ख़ुदा का लश्कर है जो काफ़िरों का बेख़ कुनी करता है। और कस्ब करने वाला अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किये हुए अमीन हैं। उन्ही से मसालेह ख़ल्क़ की फ़राहमी और ज़मीन की आबादी वाबस्ता है, अगर चरवाहे भेड़िये बन जाएं तो बकरियों का हिफ़ाज़त कौन करे। अगर उल्मा इल्म को छोड़ कर दुनिया में मशग़ूल हो जाएं तो लोग किसकी पैरवी करें, अगर मुजाहिद फ़ख़्र व ग़ुरुर के लिए सवार हों या लोगों को लूटने की नीयत से सवार हो कर निकलें तो दुश्मन पर फ़तह कैसे पाएं। कस्बे हलाल करने वाले ख़ाइन हो जाएं तो लोग उनको किस तरह अपना अमीन समझें।

अगर ताजिर तीन बातें ना होंगी तो वह दीन व दुनिया दोनों में मोहताज रहेगा। अव्वल यह कि ज़बान को तीन चीज़ों से बचाये, झूट बोलने से, बेहुदा गुफ़्तगू करने से और झूटी क़सम खाने से। दोम ये कि अपनी हमसायों और दोस्तों के सिलसिले में अपने दिल को धोके और हसद से पाक करे। सोम ये कि अपने आपको तीन बातों का आदी बनाये, नमाज़े जुमा और जमाअत का। रात और दिन के किसी हिस्से में इल्म हासिल करके और हर शय पर अल्लाह की रज़ामन्दी को तजवीज़ देना, कस्बे हराम से बचने का।

रिवायत है कि बन्दा जब नापाक कमाई करके उससे कुछ खाना चाहता है और बिस्मिल्लाह कहता है तो शैतान कहता है जब तूने कमाई की थी तो मैं तेरे साथ था अब तुझसे अलग न हूंगा तेरे साथ शरीक रहूंगा चुनांचे हर हराम खाने वाले के साथ शैतान शरीक रहता है इस इरशादे खुदावन्दी के बमौजिबः

तर्जमा:—शैतान को ख़िताब करके फ़रमाया गया तू इंसानों के साथ उनके माल व औलाद में शरीक हो जा।

माल से मुराद हराम माल है और औलाद में शैतान की शिरकत से मुराद वह औलाद जो ज़िना की औलाद है। तफ़सीरे आयत में यही सराहत की गई है।

हज़रत इब्न मसऊद रिवायत करते हैं कि जो शख़्स कस्बे हराम से माल कमा कर उससे कुछ सदक़ा करता है उसके सवाब के बजाए अज़ाब होता है और जो कुछ उस माल से वह ख़र्च करता है हरगिज़ बरकत का बाइस नहीं होता है और ऐसे हराम माल से अगर कुछ छोड़ जाता है तो यह उसके लिए दोज़ख़ का तोशा होता है। हराम माल से वही बचता है जिसको अपने ख़ून और गोश्त के बारे में दोज़ख़ में जाने का अंदेशा लगा रहता है, आदमी की ज़ीनत गोश्त और ख़ून ही से है इस लिए लाज़िम है कि ख़ुद भी हराम से बचे और घर वालों को भी बचाए और हराम कमाई खाने वालों के पास भी न बैठे न उनका खाना खाए न किसी को हराम कमाई का रास्ता बताए वरना उसको भी उसका शरीक माना जाएगा। परहेज़गारी दीन की असल है, इबादत का क़वाम (राब्ता) है और आख़िरत का काम पूरे होने का ज़रिया है।

गोशा नशीनी और ख़ामोशी

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गोशा नशीनी के मुताल्लिक़ इरशाद है "गोशा नशीनी इख़्तियार करो" गोशए तन्हाई में बैठना भी इबादत है, आपने फ़रमाया "मोमिन वह है जो

अपने घर में बैठा रहे"। यह भी इरशाद फरमाया "सबसे अफ़ज़ल आदमी वह है जो गोशागीर हो कर लोगों से अपनी बुराई को रोके रखे (लोग उसकी बुराई से महफूज़ रहें)"। हदीस के बाज़ अल्फ़ाज़ में आया है कि आपने फरमाया मुसाफ़िर वह है जो अपने दीन से भागता है।

हज़रत बिश्र हाफी रहमतुल्लाह अलैह जो सोलहाए सल्फ़ में से हैं, फरमाते हैं कि यह ज़माना ख़ामोशी रहने और घर में बैठ रहने का ज़माना है।

जब हज़रत सअ्द इब्न वक़ास रज़ियल्लाहो अन्हो अक़ीक़ में अपने घर के अन्दर सबसे अलग हो कर बैठ रहे (निकलना और मिलना जुलना बन्द कर दिया) तो लोगों ने कहा आप ने बाज़ार का जाना, और इजतेमा में शिर्कत करना क्यों छोड़ दिया और आप तन्हाई पसन्द क्यों हो गए? फ़रमाया मैंने बाज़ार को बेहूदा और लोगों के जलसों को लह्व व लईब की जगह पाया, इस लिए मैंने गोशा नशीनी ही में आफ़ियत समझी।

वहब बिन अलवर्द रहमतुल्लाह अलैह का क़ौल है मैं पचास बरस तक लोगों से मिलता जुलता रहा मगर इतनी मुद्दत में एक शख़्स भी ऐसा नहीं मिला जो मेरा एक क़सूर माफ़ कर देता, मेरा एक ऐब छुपाता, गुस्सा की हालत में मुझसे द[illegible]र करता, न कोई ऐसा शख़्स नज़र आया जो हिर्स व हवा में मुब्तला न हो (हर शख़्स को अपनी ख़्वाहिशात के घोड़े पर सवार पाया)।

शअ्बी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि एक मुद्दत तक लोगों का [illegible] जोल (मुआशरा) दीन के ज़ेरे असर रहा। दीन गया तो मुअ्शरा शराफ़ते नफ़्[illegible] ज़ेरे असर आ गया, शराफ़ते नफ़्स भी गई तो शर्म व हया के तहत रहा। जब वह भी रुख़सत हो गई तो अब लोग रग़बत और ख़ौफ़ से ज़िन्दगी बसर करते हैं और मेरा ख़[illegible] है कि इससे ज़्यादा सख़्त हालात पेश आने वाले हैं।

एक दाना [illegible]क़ौल है कि इबादत के द[illegible] हिस्से हैं। नौ हि[illegible] तो ख़ामोशी में हैं और एक गोशा नशीनी में। मैंने ख़ामोश रहने पर नफ़्स को आम[illegible] मगर मेरा क़ाबू न चला तो गोशा नशीनी की तरफ़ [illegible]यल हो [illegible] तो मुझे [illegible]ह नौ हिस्से [illegible] मिल [illegible]। उसी दाना का क़ौल है कि क़ब्र से बड़ा कोई वा[illegible] किताब से ज़्यादा दिल बस्तगी के लिए कोई चीज़ नहीं और तन्हाई (गोशा नशीनी) से ज़्या[illegible] किसी शय में आफ़ियत नहीं।

बिश्र बिन हारिस कहते [illegible] कि इल्म की तलब दुनिया से फ़रार के लिए होती है, दुनिया को तलब करने के लिए नही[illegible]ती।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहा अन्हा फ़रमाती हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया कि किस शख़्स की हम नशीनी बेहतर है? फ़रमाया उस शख़्स की जिसके देखने से तुम को ख़ुदा याद आ जाये और उसके इल्म से आख़िरत याद आ जाए और जिस की गुफ्तगू से तुम्हारे इल्म में इज़ाफ़ा हो।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम नसीहत फ़रमाते हैं! ऐ हवारियो!! अल्लाह से मोहब्बत करना चाहते हो तो गुनेहगारों से नफ़रत करो, उस का क़ुर्ब चाहते हो तो नाफ़रमानों से दूर रहो, अल्लाह की ख़ुशनूदी उस के दुशमनों की नाराज़गी है।

अगर मेलजोल के चारा नहीं होता तो उलमा की सोहबत इख़्तियार करो क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है उलमा की हम नशीनी इबादत है यह भी हुज़ूर ने फ़रमाया है कि आदमी को चाहिए कि अपने दिल को फ़िक्र में जिस्म को सब्र में और आँखों

को गिरया वज़ारी में मसरूफ रखे कल कि रोज़ी की फ़िक्र न करो इस लिए कि यह गुनाह है जो आमाल नामा में लिखा जाता है।

मस्जिदों में चिमटे रहो (मस्जिदों में जाना लाज़मी रखो) अल्लाह के घर को आबाद रखने वाले अहलुल्लाह हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मस्जिदों में ज़्यादा आमद व रफ़्त रखने वाला कभी अपने ऐसे भाई से मुलाक़ात कर लेता है जिसके गुनाह बख़्शे जा चुके होते हैं, कभी वह उस रहमत को पा लेता है जिसका वह मुन्तज़िर होता है, कभी हिदायत का रास्ता बताने वाला और हलाकत से बचाने वाला लफ़्ज़ उसको मिल जाता है (ऐसी बातें हासिल हो जाती हैं जो हिदायत का रास्ता बताने वाली और हलाकत से बचाने वाली हैं) उमदा और अजीब इल्म हासिल होता है, मोहब्बत और ख़ुदा के ख़ौफ़ का बाइस वह गुनाहों को तर्क कर देता है।

गोशा नशीनी इख़्तियार करने वाले के लिए यह हरगिज़ जाइज़ नहीं है कि (वह अपनी गोशा नशीनी के बाइस बा जमाअत नमाज़े जुमा और जमाअत (पन्जगाना) को तर्क कर दे। नमाज़े जुमा को बतौरे दवाम (हमेशा के लिए) तर्क कर देने वाला काफ़िर है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स बिला उज़्र तीन जुमा तर्क कर देता है अल्लाह उस के दिल पर मोहर लगा देता है,, हज़रत जाबिर की रिवायत करदा हदीस है कि हुज़ूर ने हुज्जतुल विदा के ख़ुतबा में इरशाद फ़रमाया: जान लो कि इस जगह इस महीने में इस साल में अल्लाह तआला ने क़ियामत के दिन तक के लिए तुम पर जुमा फ़र्ज़ कर दिया है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स इमाम ज़ालिम या आदिल होने के बावजूद नमाज़े जुमा को हक़ीर समझे या फ़र्ज़ का इनकार करे या इसको तर्क कर दे तो अल्लाह तआला उसकी परेशानी दूर न करेगा। न ही उसके काम पूरे फ़रमाएगा। सुन लो! न उस की नमाज़ क़बूल होगी और न उसकी ज़कात अदा होगी, न उसका हज क़बूल होगा, और न रोज़ा ता वक़्तेकि वह तौबा न करे, अल्लाह तआला तौबा करने वालों की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है। (मंदरजा बाला सज़ा इस लिए है कि) नमाज़े जुमा का तारिक दावते इलाही की तहक़ीर व तौहीन करता है इस लिए कि अल्लाह तआला का इरशाद है।

ऐ ईमान वालो! जब तुम को जुमा की नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो अल्लाह को याद करने के लिए तेज़ी के साथ बढ़ो।

गोशागरी और ख़वलत नशीनी के सिलसिले में कहा गया है कि लोगों पर तअन न करो और न उनकी जमाअतों को छोड़ो, बस जहाँ तक हो सके उन से कनारा कश हो जाओ इस लिए लाज़िम है कि जहाँ तक मुमकिन हो सके लोगों से अलग थलग रहने की कोशिश करे, क्योंकि झूठी बात दो आदमियों ही के दर्मियान होती है (एक कहता है दूसरा सुनता है) ज़िना भी दो के मिलने से होता है इसी तरह क़त्ल भी दो के बग़ैर नहीं होता (एक क़ातिल दूसरा मक़तूल) रहज़नी भी दो आदमियों के दर्मियान वाक़ेअ होती है (एक राहगीर दूसरा राहज़न) बस सबसे अलग थलग और तनहाई इख़्तियार करने में सलामती है अलबत्ता दीनी मआमलात में अगर कोई तआवुन करे तो गोशागिरी और तनहाई मुनासिब नहीं।

आदाबे सफ़र व रिफ़ाक़ते सफ़र

सफ़र का इरादा

किसी सफ़र का इरादा हो या कोई शख़्स, हज, जिहाद या किसी काम की ग़रज़ से एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए इरादा करे तो सफ़र शुरु करने से पहले दो रिकअ़त नमाज़ पढ़ कर यह दुआ़ पढ़े।

तर्जमाः—इलाही ! मुझे अपनी रज़ा, मग़फ़िरत और भलाई की जगह पहुंचा दे, तेरे ही दस्ते क़ुदरत में ख़ैर है तू ही हर चीज़ पर क़ादिर है, इलाही! तू सफ़र में मेरा साथी है। मेरे जाने के बाद मेरे अहल व अयाल और माल का तू ही निगहबान है। ऐ अल्लाह हमारे लिए सफ़र को असान कर दे, इलाही! सफ़र की दुशवारी और वापसी की बदहाली से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ , और इस बात से भी पनाह चाहता हूँ कि अहल व अयाल और माल की कोई नागवार हालत का मुशाहिदा करूं।

सफ़र का इरादा पंज शंबा, हफ़्ता या दो शंबा के रोज़ सुबह के वक़्त करे जब सवारी पर ठीक तरह से बैठ जाये तो कहे।

तर्जमाः—पाक है वह ज़ात जिसने इस सवारी को [illegible] मुतीअ़ बनाया हम में इसको क़ाबू रखने की ताक़त नहीं थी और बिलाशुबा हम अपने रब की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं।

सफ़र से वापस आए तो दो रिक[illegible] नफ़्ल नमाज़ पढ़ कर यह दुआ़ माँगे ।

तर्जमाः—हम अल्लाह की तरफ़ लौ[illegible] वाले, तौबा करने वाले, उसकी इबादत करने वाले और उसके सना[illegible]ख़्वांह हैं।

रिवायत में आया है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसा ही करते थे, सफ़र में अगर कोई [illegible] अमीरे जमाअ़त (अमीरे कारवाँ) न हो तो ख़ुद उनका अमीर या राहबर न बने न किसी जगह [illegible]म (पड़ाव) करने का मशवरा दे, अगर कोई शख़्स रास्ता जानने वाला सफ़र में साथ हो तो उसकी पैरवी करे। सफ़र में ख़ामोश रहे, साथियों रिफाक़त अच्छी तरह करे और उनको ख़ूब फ़ाइदा [illegible]चाये। बेकार बातों से गुरेज़ करे, रास्ता पर और ग़मनाक जगह पर पड़ाव न करे, क्योंकि ऐसी जगह साँपों और दरिन्दों की गुज़रगाह होती है, ऐसे मक़ामात से हट कर उतरे, रात के आख़िरी हिस्से में रास्ते में न ठेहरे कि यह अम्र भी मकरूह है। सफ़र में ना पसंदीदा तरीक़ेकार इख़तियार न करे ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को तर्क कर के रज़ाऐ इलाही का तालिब रहना चाहिए।

शहर से निकलने और सफ़र पर जाने का जब इरादा हो तो सबसे पहले ज़रूरी है कि जिन लोगों से ताल्लुक़ात ख़राब हैं उनको राज़ी करे वालिदैन और अपने दूसरे बुज़ुर्ग अज़ीज़ों की रज़ामन्दी हासिल करे, अहल व अयाल को साथ ले जाए या किसी ऐसे शख़्स को मुक़र्रर कर के जाए जो (ग़ैर हाज़री में) सारे उमूर अंजाम दे सके।

मुसाफ़िर का सफ़र अगर सफ़रे ताअ़त हो ज़्यादा मुनासिब है, जैसे हज या रौज़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत या किसी बुज़ुर्ग की मुलाक़त या मक़ामाते मुकद्दसा में से किसी की ज़ियारत या मुबाह उमूर के लिए जैसे तिजारत, तहसीले इल्म वग़ैरह। मगर यह

सफ़र इबादाते पंजगाना के मसाइल सीखने के बाद होना चाहिए। क्योंकि इबादात का इल्म फ़र्ज़ है, इसके अलावा दूसरा इल्म मुबाह है बाज़ इसको फ़र्ज़े कफ़ाया कहते हैं।

सफ़र में रफ़ीक़ाने सफ़र के साथ ख़ुश ख़लकी और नर्मी का बरताव करे किसी की मुख़ालफ़त न करे, अपने रफ़ीकों की ख़िदमत करता रहे और बग़ैर मजबूरी के किसी से ख़िदमत न ले। सफ़र में हर वक़्त पाक रहे, आदाबे रिफाक़त में यह भी कि अगर साथी थक जाए तो ख़ुद भी ठहर जाए, प्यासा हो तो पानी पिलाए अगर (रफ़ीके सफ़र) सख़्ती के साथ पेश आए तो उसके साथ नर्मी का बरताव करे, वह नाराज़ हो तो उसको मनाये अगर वह सोता हो तो उसकी और उसके सामान की हिफ़ाज़त करे अगर उसके पास ज़ादेराह कम हो तो उसको अपनी ज़ात पर मुक़द्दम रखे, अगर माली कशाईश हासिल हो तो तन्हा ही न ले ले उसकी हमदर्दी भी करे, उससे कोई राज़ न छुपाए और न उसका राज़ फ़ाश करे, उसकी ग़ैबत में भलाई के साथ उसका तज़किरा करे, उसकी ग़ीबत रद कर दे, न किसी से उसकी शिकायत करे बल्कि अच्छे अलफ़ाज़ में उसका ज़िक्र करे। वह मशवरा तलब करे तो ख़ैर ख़्वाही के साथ मशवरा [illegible] अगर रफ़ीके सफ़र मरतबा में उससे बड़ा है तब भी उसकी भलाई के [illegible] उसको नसीहत क[illegible] से गुरेज़ न करे, उसका नाम व निसबत और वतन दरयाफ़्त कर ले।

अगरचे ख़ुद सब रफ़ीको के सरदार हो मगर [illegible]बसे यही [illegible] क[illegible] मैं ताबेअ और फ़रमांबरदार हूं जो लोग उसके ताबेअ हों, अज़ रूए ख़ै[illegible]ही उनको [illegible]के [illegible]यूब से वाक़िफ़ कर दे, मलामत और सख़्ती का रवय्या इख़तियार न करे, [illegible] किसी चीज़ का डर हो या किसी जगह पड़ाव करे ता यह दुआ पढ़े।

मंज़िल पर ठहरने की दुआ

मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ और उसके [illegible]लमात (कला[illegible]) की पनाह लेता हूँ जिनके दायरे से न कोई नेक बाहर निकल सकता है और न [illegible] बद और उसके तमाम छुपे नामों की पनाह लेता हूँ [illegible]ाह वह मुझे मालूम हों या न हों, उन तमाम चीज़ों के शर से जो अल्लाह ने पैदा कीं, बि[illegible] और ईजाद कीं। और उन चीज़ों के शर से जो ऊपर से उतरती हैं और जो आसमान पर च[illegible] [illegible]र हर उस चीज़ की शरारत से जो उसने ज़मीन पर फैलाई हैं और रोज़ व शब की मु[illegible]बतों से और शबाना रोज़ के हवादिस से, उन हवादिस के सिवा जो ऐ अरहमुर राहेमीन तेरी तरफ से ख़ैर लेकर आयें और हर उस जानवर के शर से जो पूरे तौर पर अल्लाह के क़ब्ज़े में है, यक़ीनन मेरा रब ही सीधा रास्ता है।

सवारी के जानवरों के गले में घंटियाँ

सवारियों (ऊटों) की गरदनों पर घंटियाँ न बाँधे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर घंटी (जरस) के साथ शैतान होता है। आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद भी है कि उन मुसाफ़िरों के साथ फ़रिश्ते नहीं रहते जिनके साथ (ऊटों के गले में) घंटियाँ हों। मुसतहब है कि सफ़र में अपने साथ लाठी रखे और कोशिश करे कि किसी वक़्त इस से ख़ाली न हो। मैमून बिन मेहरान ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि असा साथ रखना अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत और मुसलमानों की आदत है।

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि असा में छः ख़ूबियाँ हैं। (1) अम्बिया

अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है, नेक लोगों की रविश, मूज़ी जानवरों (साँप बिच्छू वग़ैरह) के मुक़ाबला के लिए हथियार है, कमज़ोर का सहारा है, मुनाफ़िक़ों को ज़लील करने वाला है, नेकियों में इज़ाफ़ा का सबब है, कहते हैं, जिस मोमिन के पास लाठी होती है उससे शैतान भागता है, मुनाफ़िक़ और बदकार उससे डरता है, नमाज़ का वक़्त वह क़िब्ला का काम देती है (नमाज़ी लाठी को सामने रख लेता है और) वह सुतरा बन जाती है, थक जाता है तो उससे सहारा लेता है और अपनी ताक़त बहाल करता है इसी तरह लाठी (असा) के और बहुत फ़ायदे हैं। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के क़िस्से में बयान फ़रमाया है।

तर्जमा:—और यह मेरी लाठी है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ और अपनी बकरियों के लिए दरख़्तों से पत्ते (इससे) झाड़ता हूँ, इससे मेरी और जरूरतें भी वाबस्ता हैं।

जानवरों और गुलाम को ख़स्सी करना

जानवरों और गुलाम को ख़स्सी करने की मुमानिअत

किसी जानवर या गुलाम को ख़स्सी करना जाएज़ नहीं है, हरब और अबू तालिब की रिवायत में इमाम अहमद ने यही तसरीह फ़रमाई है, इसी तरह जानवर के चेहरे को दागना भी नाजाएज़ है। अबू तालिब ने इमाम अहमद का यही क़ौल नक़्ल किया है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी जानवर, चौपाया को ख़स्सी न करो। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो और अनस बिन मालिक रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़रूरत के लिए कानों को दागने की इजाज़त मरहमत फ़रमाई है। और चेहरे पर दाग़ लगाने की मुमानिअत फ़रमाई है। अगर दूसरे जानवरों से शनाख़्त की ज़रूरत हो (यानी गल्ले में अपना जानवर पहचानने के लिए) तो चेहरे के अलावा किसी और उज़्व मसलन रान या कोहान को दाग़ देना जाएज़ है।

आदाबे मसाजिद

मस्जिदों में काम करने के मसाएल

मसाजिद में कोई नापाक और पलीद काम करना जाएज़ नहीं दूसरे काम मसलन कपड़ा सीना, बेचना, ख़रीदना और इसी तरह दूसरे काम भी मस्जिदों में करना मकरूह हैं, ज़िक्रे ख़ुदा के अलावा किसी क़िस्म की आवाज़ बलन्द करना भी मकरूह है। मस्जिद में थूकना मकरूह है। इसका तदारुक इस तरह करे कि थूक पर मिट्टी डाल दे, मस्जिद को नक़्श व निगार से मुज़य्यन करना भी मकरूह है। पक्का पलास्तर और कहगल करने में कोई हरज नहीं है। मुसाफ़िर या मोअतकिफ़ के सिवा मस्जिद को शबबाशी की जगह बनाना मकरूह है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनी अब्दे क़ैस के वफ़्द को और एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ क़बीला सक़ीफ़ के नुमाइंदो को मस्जिद में ठहराया था मसाजिद में ऐसे अश्आर और क़सीदे से पढ़े जा सकते हैं जो बेहूदगी और मुसलमानो की हिज्व से ख़ाली हों यों शेअर ख़्वानी से मस्जिदों को मसऊन व महफ़ूज़ रखना औला है अलबत्ता ऐसे अश्आर पढ़े जा सकते हैं जो

ज़ुहद की तरफ़ माएल करने वाले दिलों को गुदाज़ और शौक (मोहब्बत) को बढ़ाने वाले और ख़ौफे ख़ुदा से रूलाने वाले हों ऐसे अश्आर अगर बार बार पढ़े जायें जब भी जाएज़ है लेकिन इन सब से बेहतर और अफज़ल यह है कि कुरआन की तिलावत और तसबीह व तहलील की जाए क्योंकि मस्जिदों की बिना ही ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के लिए हुआ करती है लिहाज़ा मुनासिब यही है कि इसके अलावा और कोई काम मस्जिदों में न किया जाए मस्जिद की ज़मीन से मिट्टी निकाल कर मुन्तक़िल करना भी मकरूह है हां मस्जिदों का कूड़ा करकट साफ़ करना और झाड़न बाहर निकाल कर फेंक देना जाएज़ है और इस काम का बड़ा सवाब है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मस्जिद का कूड़ा करकट साफ़ करना हूरों का महर है बच्चों और दीवानों को मस्जिदों में ना जाने दिया जाये उनका जाना मकरूह है। हां जुन्बी जनाबत वाला शख़्स अगर मस्जिद से गुज़र जाये तो कुछ कबाहत नही है अगर अगर ऐसी हालत में मस्जिद के अन्दर दाख़िल होना पड़े तो वुजू करके दाख़िल हो।

मस्जिद में हाएज़ा औरत को दाख़िल से रोक दिया जाये कि इस सूरत में मस्जिद का नजासत से आलूदा हो जाने का अंदेशा है बवक्ते ज़रूरत जनाबत वाले के लिए वुजू करके मस्जिद के अन्दर इतनी देर ठहरना जाएज़ है कि वह गुस्ल कर सके मगर बेहतर यह है कि वुजू के साथ जनाबत के लिए तयम्मुम करे अगर मस्जिद के कुएं में पानी न मिले तो कुएं तक पहुंचने के लिए तयम्मुम करके मस्जिद में से गुज़रना जाएज़ है जब कुएं तक पहुंच जाये तो गुस्ल करे।

अशआर ख़्वानी और कुरआन ख़्वानी

अशआर

अशआर दो किस्म के होते है मुबाह और ममनूअ, जिन अशआर में कोई बेहूदगी न हो उनका पढ़ना जायज़ है और बेहूदा (बा एतबारे अल्फाज़ व मौजू) अशआर का पढना ना जायज़ है जिन अशआर में लहव व लईब की आमेज़िश हो (बा एतबारे मौज़ू) उनका पढ़ना बहरहाल ममनूअ है जिन अशआर में हिमाकत की बातें हों या उन में सुबकी (रकाकत) भरी हो ऐसे अशआर भी पढ़ना दुरूस्त नहीं है।

तरतील कुरआन

कुरआने पाक के ताज़ीम व तक़दीस के पेशे नज़र इसको गवैयों की तरह गाकर पढना मकरूह है, इसकी कराहत की वजह यह है कि गाकर पढ़ने से कलाम अपनी असली हालत से तजावुज़ हो जाता है यानी मद और हमज़ा साकित हो जाते हैं। जिन हुरूफ़ को लम्बा करके पढ़ना होता है गाने के तर्ज़ पर वह मुख़्तसर हो जाते हैं और जिन्हें मुख़्तसर करना होता है वह तवील हो जाते है अक्सर हुरूफ मदग़म हो जाते हैं।

कराहत की एक वजह यह भी है कि कुरआन पाक पढ़ने का असले मकसद तो यह है कि इससे ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो नसीहत की बातें सुन कर सामेअ को ना फरमानी से डर लगे, कुरआनी दलाएल व बराहीन , किसस और अमसाल सुनकर इबरत हासिल हो। अल्लाह तआला के उन वादों का जो कुरआन में किये गये हैं उम्मीदवार बने यह तमाम फ़वाएद गाकर पढ़ने में ख़त्म हो

जाते हैं अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जमा:–मोमिन वही हैं कि अल्लाह के याद के वक़्त उनके दिल डर जाते हैं जब अल्लाह का कलाम उनके सामने पढ़ा जाता है तो यह तिलावत उनके ईमान में इज़ाफ़ा का सबब बन जाती है और वह अपने रब पर ही भरोसा करते है। दूसरी जगह इरशाद है:

तर्जमा:–यह लोग कुरआन पर ग़ौर क्यों नही करते

इस सिलसिले की एक और आयत है

तर्जमा:–जो लोग इस कलाम को सुनते है जो रसूल पर उतारा गया है तो तुमको नजर आयेगा कि हक़ को पहचान लेने की वजह से उनकी आंखों से आसू जारी होंगे (वह रोते होंगे)

चूंकि तफ़रीही नग़में इन चीजों के हुसूल से मानेअ़ होते है उस लिए मकरूह है।

कुरआन की एहतियात

काफ़िरों से जंग के लिए निकला हो तो इसको साथ न रखे इस लिए कि अगर वह काफ़िरो के हाथ लग जायेगा तो वह इसकी बे हुरमती करेंगे अगर कोई ना वाकिफ़ जवान औरत कुरआन पढ़ रही हो तो उसकी तरफ कान न लगाये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर नमाज़ में नमाज़ी को कोई हादसा पेश आ जाये तो मर्द सुब्हानल्लाह कहे और औरत ताली बजा दे (आवाज़ न निकाले कि इस सूरत में अजनबी आवाज़ मर्द के कान में पड़ेगी) जबकि नमाज़ के लिए यह हुक्म है तो ऐसे अशआर और ऐसी बातें जिन में आशकी व माशूकी के तज़करे हो और मोहब्बत के रम्ज़ व किनाये हो जिससे लोगों की तबीयत बर अंगेख़्ता होती हो इस लिए उसका सुनना किसी के लिए जाएज़

मुहर्रिक जज़बाते अशआर

अगर कोई शख़्स कहे कि मैं ऐसे अशआर सुनकर उनको ऐसे मानी पर महमूल करता हूं जिसमें मै इन्दल्लाह गुनाह से महफूज़ रहता हूं तो हम इस बात को सही नही मानेंगे। शरीयत ने हुरमत की कोई तफ़सील नहीं की है (जो चीज़ हराम है बस वह हर सूरत में हराम है) अगर किसी के लिए जाएज़ होता तो अंबिया अलैहमुस्सलाम के लिए जाएज़ होता अगर यह उज़्र सही होता तो अगर कोई शख़्स यह दावा करे कि मुगन्निया के गाने सुनने से मेरे अन्दर शहवानी ज़ोश पैदा नही होता तो क्या उसके लिए रंडियों का गाना सुनना मुबाह हो जायेगा कोई शख़्स यह दावा करे कि उसे शराब पीने से नशा नही होता तो क्या उसके लिए शराब पीना उसके लिए हलाल हो जायेगा। अगर कोई यह भी कहे कि मेरी आदत ही यह है कि शराब पीने के बाद मैं हराम से रूक जाता हूं तब भी उसके लिए शराब पीना हलाल नहीं हो सकता या अगर कोई शख़्स कहे कि अमरदों, नौ खेज़ लड़कों और औरतों को इस लिए देखता हूं और उनसे उस लिए ख़लवत करता हूं (तन्हाई में मिलता जुलता हूं) कि मैं उनके हुस्न से सबक़ हासिल करता हूं तब भी यही कहा जायेगा कि ऐसा कहना जाएज़ नही बल्कि इसका तर्क वाजिब है। इबरत तो ऐसी चीज़ों से भी बहुत कुछ हासिल की जा सकती है। जो हराम नहीं है हकीक़त में यह उन लोगों का है जो हराम का इरतिकाब करना चाहते हैं और अपने नफ़्स के मुतीअ हैं हम ऐसे लोगो की बात कबूल नही कर सकते और न उनकी तरफ इलतेफ़ात कर सकते है। अल्लाह तआला

का इरशाद है–

तर्जमा:—अहले ईमान से कह दीजिए कि अपनी आंखों को बन्द रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ज़त करें यह उनके लिए पाकीज़ा तरीन फ़ेअ्ल है।

पस जो शख़्स कहे कि ना महरम को देखना पाकीज़ा अमल है वह क़ुरआन को झुठलाता है।

किस जानवर को मारना जायज़ है और किस को नाजायज़

सांप का मारना

घर के अन्दर अगर सांप दिखाई दे तो तीन बार उसको ख़बरदार कर दे अगर उसके बाद भी वह सामने आये तो मार डाले। जंगल में बग़ैर ख़बरदार किये मार डालना जाएज़ है अगर ऐसा सांप नज़र आ जाये जिसकी दुम इतनी छोटी है कि वह कटी हुई नज़र आये या उसकी पुश्त पर दो सियाह ख़त हो या जैसा कि लोगों में मशहूर है उसकी आंखों में सियाह बाल भी नज़र आये ऐसे सांप (या सांपों) को बग़ैर ऐलान के हलाक कर दे ।

ख़बरदार करने के मानी यह हैं कि उससे कहे कि [illegible] ले कर चला जा हम को आज़ार न दे। हदीस शरीफ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से घरैलू सांपों की बाबत दरयाफ़्त किया गया आप ने इरशाद फरमाया जब तुम अपने घर में सांप देखो तो उससे कहो

मैं तुम्हें उस क़ौल कि क़सम देता हों जो पैग़म्बर [illegible] हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तुम से लिया था और उस अहद की क़सम देता हूं जो हज़रत सुलेमान [illegible] तुम से लिया था कि तुम यहां से चले जाओ और हमें आज़ार न पहुंचाओ।

अगर वह न जाएं तो फिर उनको मार डाले इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो सांप नज़र आए उसे मार डालो और जो शख़्स सांप के मारने से इस लिए डरता है कि वह उसके दुश्मन हो जाएंगे तो ऐसा शख़्स मेरी उम्मत में से नहीं है।

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रिवाएत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "सांपों को मार दो" दो ख़त वाला सांप और कटी दुम (छोटी दुम) का सांप यह दोनों अंधा कर देते हैं और हमल को भी गिरा देते हैं रावी कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह जिस सांप को भी देख लेते थे उसे मार डालते थे चुनांचे हज़रत अबु लबाबा ने उन को इस हाल में देखा कि वह एक सांप की घात में बैठे थे उन्होंने कहा कि हुजूर ने घरो में रहने वाले सांपों को मारने से मना फ़रमाया है और बतौरे दलील अबू साएब की यह रिवायत पेश की कि एक दफा मैं अबू सईद के पास गया हम तख़्त पर बैठे थे कि के नीचे कोई शय हरकत करती हुई महसूस हुई देखा तो सांप था मैं ने कहा मैं उसे मार डालना चाहता हूं हज़रत अबूसईद ने अपने घर के सामने वाली कोठरी की तरफ़ इशारा करते हुए फरमाया यहां मेरा चचा ज़ाद भाई रहता था नई नई शदी हुई

थी जंग एहज़ाब के दिन उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से घर आने की इजाज़त मांगी हुज़ूर ने उसको इजाज़त मरहमत फ़रमा दी और हुक्म दिया कि हथियार साथ ले कर जाए वह घर पहुंचा तो बिवी को दरवाज़ा पर खढ़ा पाया मेरे भतीज़े ने यह देख कर बीवी की तरफ़ नीज़ा सीधा किया (ताकि उसे मार डाले) उस की बीवी ने कहा कि जल्दी न करो पहले अन्दर जाकर देख लो (कि मेरे बाहर की आने की क्या वजह है) वह कोठरी के अन्दर गया तो बड़ा हैबत नाक सांप वहां मौजूद था उसने नेज़े से उसको छेंद लिया और नेज़े में चुभा हुआ फड़कता हुआ सांप लेकर बाहर निकला लेकिन ख़ुद भी फ़ौरन गिर कर मर गया। हज़रत अबू सईद कहते हैं कि मैं यह नहीं कह सकता कि पहले कौन मरा। सांप या मेरा इब्ने अम्म उसके क़बीले के लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया अल्लाह से दुआ फ़रमाइये कि वह हमारे आदमी को वापस कर दे हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि तुम सांप मारने वाले के लिए मग़फ़िरत की दुआ मांगो फिर फरमाया मदीना में जिन्नों की एक जमाअत ईमान लाई है उन्हें तुम सांपों की शक्ल में देखोगे जब देखो तो तीन मरतबा उनको मुतनब्बेह करो, तंबीह के बाद भी अगर वह सामने आए तो मार डालो। बाज़ अहादीस में यह अल्फ़ाज़ आए हैं कि उस को तीन मरतबा ख़बरदार कर दो फिर भी सामने आये तो उसको मार डालो वह शैतान है।

गिरगिट का मारना

गरगिट का हलाक कर देना भी जाएज़ है। आमिर बिन सईद ने अपने वालिद का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गिरगिट को मार डालने का हुक्म दिया था।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि हुज़ूर ने फ़रमाया पहली ज़र्ब में मार डालने वाले के लिए सत्तर नेकीयां है।

चींटी का मारना

चींटियां जब तक आज़ार न पहुचायें उनको मारना मकरूह है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियलल्लाहो अन्हो की रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया किसी चींटी ने एक पैग़म्बर के काट लिया पैग़म्बर ने चींटियों का बिल जला देने का हुक्म दे दिया हुक्म के ब मौजिब चीटियों का बिल ज़ला दिया गया अल्लाह तआला ने उन पर वही नाजिल की कि एक चींटी ने तुम्हारे काटा था मगर तुम ने अल्लाह की तसबीह करने वाली पूरी उम्मत को हलाक कर दिया।

मेंढक का मारना

मेंडक (ज़गदअ) का मारना भी मारना मकरूह है हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उसमान से रिवायत है कि किसी शख़्स ने दवा के लिए मेंढक को मार डालने के बारे में हुज़ूर से दरयाफ़्त किया आप ने फरमाया मेंढक को मत मारो और जिन जानवरों को मार डालना जाएज़ है उन को आग में न जलाओ मसलन जूं, पिस्सू, मच्छर चींटियां। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि किसी जानवर को आग का अज़ाब न दिया जाए कि आग का अज़ाब सिवाये आग

के ख़ालिक के और कोई नहीं दे सकता।

मूज़ी जानवर

जो जानवर ख़िलकतन मूज़ी हैं ख़्वाह उससे इज़ा पहुची हो या न पहुंची हो मगर उस को मार डालना जाएज़ है क्योंकि अज़ीयत पहुंचाना उसकी फ़ितरत है जैसे सांप (इसके बारे में पहले बयान किया जा चुका है) बिच्छू, काटने वाला कुत्ता, चूहा वग़ैरह। बहुत ज़्यादा काले कुत्ते का भी यही हुक्म है इस लिए कि वह शैतान है।

प्यासे जानवर को पानी पिलाना सवाब है बशर्ते कि वह मूज़ी न हो। रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया है हर सोख़्ता जिगर को पानी पिलाने का सवाब है बशर्ते कि वह मूज़ी जानवर न हो। मूज़ी ज़ानवर को पानी पिलाने से उसकी शरारत और ईज़ा रसानी में और इज़ाफ़ा होगा।

कुत्ता

शिकार, खेती या चौपाओं की हिफ़ाज़त के लिए अगर कुत्ता पाला जाए तो जाएज़ है वरना नहीं। काटने वाले कुत्ते को आज़ाद छोड़ रखना मकरूह है लोगों को ज़रर से बचाने के लिए काटने वाले कुत्ते को मार डालना जाएज़ है बाज़ रिवायत में आया है कि शिकार और चौपाओं की हिफ़ाज़त के सिवा जिसने कुत्ता पाल रखा है उसकी नेकियों के सवाब से रोज़ाना दो कीरात की कमी हो जाती है।

जानवरों पर बोझ लादना

जनवरों पर उनकी बरदाश्त से ज़्यादा बार डालना जाएज़ नहीं हैं ख़्वाह वह जानवर ज़मीन जोतने का हो या बोझ ढोने या सवारी का। अगर ज़ानवर को बक़दरे किफ़ायत चारा न देगा तो गुनहगार होगा जानवर को उनकी ख़्वाहिश से ज़्यादा खिलाना भी मकरूह है जैसा कि बाज़ लोग मोटा करने के लिए उनको ऐसी ख़ूराक देते हैं।

पछने लगाना, सिंगी लगाना

पछने लगाने का पैसा एख़्तियार करना और इसकी रोज़ी खाना मकरूह है इस लिए कि यह सिफ़ला पन है। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही इरशाद है पछने लगाने वाली की कमाई पलीद है। हमारे बाज़ असहाब ने (उलमाए हंबली) ने इस को हराम क़रार दिया है क्योंकि इमाम अहमद हंबल से यही मरवी है

हुक़ूके वालिदैन

माँ बाप के हुक़ूक़

मां बाप के साथ हुसने सलूक (भलाई) से पेश आना वाजिब है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है:

तर्जमा:—अगर तेरी ज़िन्दगी में वालिदैन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उनको उफ़ भी न कह और कोई झिड़की भी [illegible] एख़्तियार कर।

एक और जगह इरशाद हुआ है: **तर्जमा**:—और दुनिया में उन दोनों का अच्छा साथ दो। एक और जगह इरशाद है: **तर्जमा**:—मेरा और अपने वालिदैन का शुक्र अदा कर और तुझे मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है।

हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि अगर कोई शख़्स मां बाप को रात भर नाराज़ रखे यहां तक कि सुबह हो जाए तो उसके लिए दोज़ख़ के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और सुबह से शाम तक मां बाप को नाराज़ रखे उसके लिए भी दोज़ख़ के दो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं अगर मां बाप में किसी एक को नाराज़ करे तो उसके लिए दोज़ख़ का एक दरवाज़ खोल दिया जाता है ख़्वाह उस नाराज़गी में ज़्यादती मां बाप ही की तरफ़ से क्यों न हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से मरवी है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की रज़ामंदी मां बाप की रज़ामंदी में है और अल्लाह की नाराज़गी मां बाप नाराज़गी में है। यह भी हज़रत अब्दुलाह इब्ने उमर से मरवी है कि एक शख़्स ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमते गिरामी में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया मैं जिहाद का इरादा रखता हूं हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया क्या तेरे वालिदैन हैं? उसने जवाब दिया हां आप ने फ़रमाया उन्ही की ख़िदमत में जिहाद है। वालिदैन के साथ भलाई करने की सूरत यह है कि उनकी ज़रूरतों को पूरा करे उन्हें तकलीफ़ न पहुंचने दे, वालिदैन के साथ बच्चों जैसी नरमी और मोहब्बत की बातें करे, उन की ख़िदमत करने में कोताही न करे, वालिदैन से खिचकर न रहे सच्चे दिल और मोहब्बत से उनकी ख़िदमत करे, उनकी तरफ़ से दुख बर्दाश्त करे उनकी आवाज़ से अपनी आवाज़ ऊंची न करे। शरई मुख़ालफ़त न हो तो किसी काम में उनकी मुख़ालफ़त न करे। अगर वह किसी ऐसे काम के लिए कहें (जो ख़िलाफ़े शरअ हो) तो उस हुक्म को न माने जैसे हज नमाज़, ज़कात, कफ़्फ़ारा और अल्लाह तआला की [illegible] तर्क करने का हुक्म न माने अगर वालिदैन के हुक्म से किसी हराम काम का इरतेकाब लाज़िम आता हो जैसे ज़िना, शराब नोशी, क़त्ले ज़िना की तोहमत लगाना नाजाएज़ माल लेना यानी चोरी और डाका वग़ैरह तो इस हुक्म की इताअत न करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि इन बातों या कामों में मख़लूक़ की ताबेदारी न करो जो ख़ालिक़ की नाराज़गी का बाइस हैं और अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जमा:—और अगर तेरे वालिदैन तुझे इस लिए तकलीफ़ में डालें कि तू उस चीज़ को ख़ुदा का शरीक क़रार दे जिस का तुझे इल्म ही नहीं तो तू उनका कहना न मान, हां दुनियां में उनका सिर्फ़ नेकी में साथ दे।

मन्दरजा हदीस और इरशादाते रब्बानी से मालूम होता है कि जो भी अल्लाह की ना फ़रमानी या अल्लाह की इताअत तर्क करने का हुक्म दे उसकी बात न मानी जाए। इमाम अहमद, अबू तालिब से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स को उसके वालिदैन नमाज़े बा जमाअत में शिरकत से मना किया करते थे तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस शख़्स से फ़राएज़ को तर्क करने के बारे में मां बाप के हुक्म की इताअत मत करो।

इताअते वालिदैन के मज़ीद अहकाम

वालिदैन की फ़रमांबरदारी के लिए नफ़्लों को तर्क किया जा सकता है और यह अफ़ज़ल है।

वालिदैन के साथ भलाई की एक सूरत यह भी है कि वालिदैन ने जिन लोगों से मिलना जुलना छोड़ दिया उनसे खुद भी तर्के ताल्लुक करे और जिन लोंगो से वालिदैन के ताल्लुकात हों उनसे खुद भी ताल्लुक रखे। वालिदैन के मामले में मुख़ालिफ़ों पर ऐसा ही गुस्सा करे जैसा अपनी ज़ात के लिए करता है। अगर वालिदैन की किसी बात पर गुस्सा आये तो उस वक़्त वालिदैन की उन तकालीफ, उनके ईसार कुरबानी और खुलुस व मोहब्बत को याद करो जो उन्होंने तुम्हारी परवरिश के दौरान की हैं और उस वक़्त अल्लाह के उस फरमान को भी याद करो "वालिदैन के साथ इज़्ज़त के साथ बात करो" अगर वालिदैन की शफ़कत की याद भी गुस्सा को फुरू न कर सके तो समझ ले कि वह बद नसीब है और अल्लाह की नाराज़गी में गिरफ़्तार है।

अगर तुमने अल्लाह तआला के हुक्म के ख़िलाफ मां बाप के साथ कोई सुलूक किया है तो गुस्सा फुरू हो जाने के बाद अल्लाह तआला से इसकी माफ़ी चाहो और तौबा करो।

अगर किसी ऐसे सफ़र पर चाहो जो तुम पर वाजिब नहीं है तो वालिदैन की रज़ामन्दी के बग़ैर मत जाओ। मां बाप की रज़ामन्दी के बग़ैर जिहाद पर भी न जाओ, वालिदैन को कोई दुख न पहुंचाओ इस का ख़्याल रखो कि तुम्हारी वजह से तुम्हारे वालिदैन को कोई शख़्स आज़ार पहुंचाने का बाइस न बने।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस शख़्स पर लानत की है जो मां और बच्चे में जुदाई का बाइस हो अगर कहीं से खाने पीने की चीजें लाओ तो सबसे अच्छा खाना मां बाप को दो क्योंकि वह भी (तुम्हारी ख़ातिर) अक्सर भूके रहे हैं और तुम को अपने ऊपर तरजीह दी है और तुम्हारा पेट भरा है खुद बेदार रहे हैं और तुम को सुलाया है।

मुआशरत की मुतफर्रिक़ बातें

मुस्तहब और मकरूह नाम और कुन्नियत

किसी मौलूद बच्चे का नाम मअ कुन्नियत वह रखना जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस्मे मुबारक मअ कुन्नियत था मकरूह है लेकिन अगर सिर्फ़ मोहम्मद या अबुल क़ासिम रख लिया जाए तो मकरूह नहीं है। इमाम अहम्द के इस बारे में दो क़ौल मरवी हैं एक तो ब सूरते जवाज़ मौजूद है और दूसरी रिवायत ब सूरते अदमे जवाज़ मंक़ूल है रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नामे मुबारक रख लेना और कुन्नियत न रखना हज़रत अबू हुरैरा और अनस की रिवायतों से साबित है कि हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरा नाम रख लिया करो मेरी कुन्नियत न रखा करो।

नाम मअ कुन्नियत रखने का जवाज़ हज़रत आएशा रज़ियल्लाहो अन्हा की रिवायत से साबित होता है कि एक औरत ने ख़िदमते वाला में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे एक लड़का पैदा हुआ है मैंने उस का नाम मोहम्मद और कुन्नियत अबुल क़ासिम मुक़र्रर की है, मुझे बताया गया है कि हुजूरे वाला को यह बात पसन्द नहीं है हुजूर ने इरशाद फ़रमाया वह कौन सी चीज़ है जिस ने मेरे नाम को हलाल और मेरी कुन्नियत को हराम किया है और कौन सी चीज है जिस ने मेरी कुन्नियत को हलाल और मेरे नाम को हराम किया है (यानी मेरी कुन्नियत के

जवाज़ और नाम के अदमे जवाज़ का मौजिब क्या है)

अबू यहया और अबू ईसा के साथ कुन्नियत रखना मकरूह है अपने गुलाम का नाम अफ़लह, नजाह, यसार, नाफ़ेअ, रेबाह और कनीज़ के नाम बरकह, बर्रह, हिज़्न और आसिया रखना मकरूह है। हजरत उमर फ़ारूक़ से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया अगर मैं ज़िन्दा रहा तो गुलामों के नाम यसार, बरकत रेबाह, नजाह या अफ़लह रखने की मुमानीअ़त कर दूंगा।

ऐसे नाम और लक़ब जो अल्लाह तआला के नामों के मिस्ल हों रखना मकरूह है जैसे मालिकुल मुलूक शहंशाह वग़ैरह क्योंकि यह अहले फ़ारस में राएज़ हैं। वह नाम रखना भी मकरूह है जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए सज़ावार हैं जैसे कुददूस, एलाह, ख़ालिक़, मुहैमिन। अल्लाह तआला का इरशद है: मुशरिकों ने अल्लाह के शरीक बना रखे हैं फरमा दीजिये यह उनके मन घड़त नाम हैं बाज़ मुफ़स्सेरीन इस आयत तफ़सीर इस तरह करते हैं, आप उनसे कह दीजिए कि उन शरीकों के नाम भी मेरे नामों की तरह रखो फिर देखो कि शरीकों के ऐसे नाम रखना मुनासिब है या ना मुनासिब।

अपने भाई या गुलाम को करीह लक़ब से पुक[illegible] हराम है इस लिए [illegible] अल्लाह तआ़ला ने इससे मना फ़रमाया है अल्लाह तआ़ला का इरशाद है[illegible] यानी बुरे अ[illegible]ब से [illegible] बुलाओ अल्लाह तआ़ला ने इसे फ़िस्क़ फ़रमाया है और मुसतहब यह है कि अपने भाई [illegible] ऐसे नामों से पुकारे जो उसे सबसे ज़्यादा पसन्द है।

गुस्सा की हालत के अहकाम

गुस्से के वक़्त अगर कोई आदमी [illegible] हो तो बैठ जाए (इससे गुस्सा कुछ फुरू हो जाता है) और बैठा हो तो लेट जाए गुस्से में ठंडे पानी [illegible] पड़ने से गुस्सा ठंडा पड़ जाता है। हज़रत इमाम [illegible]सन की [illegible]यत है कि हुज़ूर ने [illegible] गुस्सा एक अंगारा है जो आदमी के दिल में दहकता है अगर किसी की ऐसी कैफ़ियत हो और खड़ा हो तो बैठ जाए और बैठा हो तो तकिया के सहारे [illegible] लगा ले।

अगर कुछ लोग अपने रा[illegible] की बातों में मशग़ूल तो उनके दर्मीयान घुस कर नहीं बैठना चाहिए रसूलूल्लाह ने इस[illegible] मुमानिअ़त फ़रमाई है धूप और साया के दर्मियान यानी कुछ धूप और कुछ साया दार में बैठना भी मकरूह है बायें हाथ पर सहारा दे कर बैठना मकरूह है बैठे हुए लोगों के दर्मियान लेटना मकरूह है और जब मज्लिस से उठे तो कफ़्फ़ारए मज्लिस के तौर पर यह दुआ पढ़ना मुस्तहब है।

तर्जमा:–ऐ अल्लाह तू पाक है सब तारीफ़ तेरे ही लिए है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैं तेरी बख़्शिश चाहता हूं और तेरी ही तरफ़ तौबा करता हूं।

क़ब्रिस्तान में जाने के आदाब

क़ब्रिस्तान से जूते पहन कर गुज़रना मकरूह है क़ब्रिस्तान में जाने वाले के लिए यह दुआ पड़ना मुस्तहब है:

तर्जमा:–ऐ अल्लाह उन पुराने जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के मालिक जो दुनिया से निकलते वक़्त ईमानदार थे मोहम्मद और आले मोहम्मद पर अपनी रहमत और अपनी तरफ़ से

राहत नाज़िल फ़रमा और मेरा सलाम उनको पहुंचा दे।

जब क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो तो कहे

तर्जमा:—मोमिनों की बस्ती के रहने वालो तुम पर सलाम हो इन्शा अल्लाह हम भी तुम्हारे पास पहुंचने वाले हैं। एक रिवायत में यही आया है।

किसी क़ब्र की ज़ियारत के वक़्त क़ब्र पर हाथ न रखे यह यहूदियों का तरीक़ा है न क़ब्र पर बैठे न उससे टेक लगाये न क़ब्र को पांव से ठोकर मारे, सख़्त मजबूरी की हालत इससे मुस्तसना है। क़ब्र से इतने फ़ासले पर और ऐसी जगह खडा होना जहां साहबे क़ब्र की ज़िन्दगी में खड़ा हाता हो और वैसा ही उसका एहतराम करे जैसे अगर वह ज़िन्दा होता तो करता।

ग्यारह मरतबा सूरह इख़लास (कुल होवल्लाह) और कुछ दिगर आयाते कुरआनी पढ़ कर साहबे क़ब्र पर उसका सवाब पहुंचाये और अल्लाह से इस तरह अर्ज़ करे कि इलाही अगर सूरत को पढ़ने का सवाब तूने मेरे लिए मुक़र्रर किया है तो मैं वह सवाब इस साहबे क़ब्र के लिए हदिया करता हों इस के बाद अल्लाह से अपनी मुराद मांगों। मुर्दे की हडडी न तोड़े और न उसको पामाल करे अगर वह ऐसा करने पर मजबूर हो गया या इत्तेफ़ाक़न ऐसा हो जाए तो इस्तिग़फार पढ़े और अहले कब्र के लिए बख़्शिश की दुआ करे।

बदशुगूनी

बदशुगूनी करना मना है नेक फ़ाल की मुमानिअत नहीं है।

दूसरों के साथ बरताव

हर शख़्स से आजिज़ी और इन्केसारी के साथ पेश आना चाहिए बूढ़ों की इज़्ज़त और बच्चों पर शफ़क़त करना मुस्तहब है छोटों के क़सूर और [illegible] से दर गुज़र करना भी मुस्तहब है मगर अदब आमोज़ी तर्क न करे।

रहमत की दुआ

हर एक के लिए यह कहना कि अल्लाह तआ़ला तुम पर अपनी रहमत नाज़िल करे या फ़लां बिन फ़लां पर अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत भेजे, जाएज़ है। मनकूल है कि हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाह वजहहु ने हज़रत उमर फ़ारूक़ से फ़रमाया "सल्लल्लाहो अलैका" (अल्लाह तआ़ला तुम पर रहमत नाज़िल करे) आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी एक मरतबा इरशाद फ़रमाया था अब औफ़ा की औलाद पर रहमत नाज़िल फ़रमा।

मुसाफ़ा

ज़िम्मी काफ़िर से मुसाफ़ा करना मकरूह है हजरत अबूहुरैरा की रिवायत के बमौजिब हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया ज़िम्मीयों से मुसाफ़ा न करो।

दुआ़ का तरीक़ा

दुआ़ मागने का तरीका यह है कि दोनों हाथ फैलाये अल्लाह की हम्द व सना के बाद आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे फिर अपनी मुराद मागें। दुआ मागते वक़्त

आसमान की तरफ़ नज़र उठाए। दुआ मागने के बाद दोनों हाथ मुंह पर फेर ले। हुजूरे अकदस का इरशाद है दोनों हाथ फैला कर अल्लाह से दुआ मांगो फिर उन्हें मुंह पर फेर लो

कुरआनी तावीज़

कुरआन शरीफ़ के साथ तावीज़ (पनाह चाहना) जाएज़ है। अल्लाह तआला का इरशाद है शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांग। अल्लाह तआला ने मऊज़तैन में भी फ़रमाया है। हदीस शरीफ़ में आया है कि हुजूर जब बीमार होते तो ये दोनो सूरतें पढ़ कर अपने ऊपर दम फ़रमा लेते थे हुजूरे वाला ये दुआ भी पढ़ते थे।

तर्जमाः—मैं खुदाए बुर्जुग व बरतर और उसके पाक कलमो के साथ पनाह मांगता हूं उस शर से जिसको उसने पैदा कर के फैला दिया है और हर चौपाये के शर से क्योंकि मेरा रब उसको पेशानी के बालों से पकड़ने वाला है।

कुरआन मजीद और अल्लाह तआला के असमाए हुस्ना बतौरे अफसूं पढ़ना भी जाएज़ है अल्लाह तआला फ़रमाता हैः हम ने कुरआन में उन चीज़ों को नाज़िल किया है जो मुसलमानों के लिए शिफ़ा और रहमत का बाइस है।

दूसरी आयत में इरशाद होता हैः यह किताब है जो हमने उतारी और जो बरकत वाली है। हजरत हसन और हजरत हुसैन के सिलसिले में हुजूरे अकदस ने फ़रमाया था कि उनको (यानी नज़रे बद) झाड़ा करो अगर तक़दीर से कोई चीज़ सबकत करती तो वह नज़रे बद होती।

तप ज़दा शख़्स के लिए तावीज़ लिख कर गले में डाला जा सकता है इमाम अहमद ने फ़रमाया कि मुझे बुख़ार आ गया तो मेरे लिए बुख़ार का यह तअवीज़ लिखा गया

अल्लाह के नाम से शुरू है जो रहमान व रहीम है अल्लाह के नाम से, मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ऐ आग तू सलामती के साथ हज़रत इब्राहीम पर ठंडी होजा और उन्होंने उनसे फ़रेब करने का इरादा किया था मगर हमने उनको ज़लील व ख़्वार कर दिया ऐ जिब्रील, मीकाईल और ईस्राफ़ील के रब इस [illegible] वाले को अपनी कुव्वत से शिफ़ा दे दे ऐ अरहमर्राहेमीन।

वज़ऐ हमल का तावीज़

बाज़ उलमा (असहाब हज़रत मुसन्निफ़) का क़ौल है जिस औरत के बच्चा पैदा होने में दुशवारी का सामना हो तो वज़अ हमल की आसानी के लिए किसी प्याले या दूसरे पाक बरतन में मन्दर्जा ज़ैल दुआ लिख कर पानी से धो कर कुछ पानी उस औरत को पिलाया जाए और कुछ उसके सीने पर छिड़क दिया जाए तावीज़ यह हैः

तर्जमाः—उस खुदा के नाम से शुरू करता हूं जो रहमान और रहीम है अल्लाह तआला के सिवा कोई दूसरा इबादत के लाएक़ नहीं है वह अल्लाह जो अर्श अज़ीम का परवर दिगार है सब तारीफ़ उसी के लिए है जो जहानों का पालने वाला है गोया वह (कुफ़्फ़ार) उसको उस दिन देखेंगें जिस का वादा किया गया है वह नहीं ठहरेगें मगर एक घड़ी दिन के बराबर कुरआन का पहुंचाना हुक्म है पस काफ़िरों की क़ौम के सिवा कोई हलाक नहीं होता।

दम करना

चींटी, सांप, बिच्छू, पिस्सू, मच्छर वगैरह के काटे में मंत्र का पढ़ना (दम करना) जाएज़ है।

चुनांचे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर ज़हरीले जानवर के काटने में दम करने (मंत्र पढ़ने की) इजाज़त दी और इरशाद फ़रमाया है कि जो शख़्स शाम को तीन बार ***सल्लल्लाहु अ़ला नूहीन व अ़ला नूहिस्सलामो*** (अल्लाह तआला नूह पर दरूद भेजे और नूह पर सलाम हो) पढ़ेगा तो उस रात उस को बिच्छू नहीं काटेगा।

हुज़ूर का यह भी इरशादे गिरामी है कि जो शख़्स शाम को तीन बार ***अऊज़ो बेकलेमातिल्लाहित्ताम्माती कुल्लेहा मिन शर्रे मा ख़—ल—क़*** (यानी हर शय की बदी से जो पैदा की गई है मैं अल्लाह के सिवा इन कलेमात के साथ जो पूरे और कामिल हैं पनाह मांगता हूं) उस रात उसको कोई डंक (ज़हर) दुख नहीं पहुंचाएगा मंत्र पढ़ कर दम करना जाएज़ है थुथकारना मकरूह है।

नज़रे बद का इलाज

नज़रे बद लगाने वाला अपने चेहरे, अपने हाथों को कोहनियों तक धोये और अपने घुटने और और पैरों के साथ तहबंद के अन्दुरूनी आज़ा को भी [illegible] बरतन में धोये फिर उस धोवन को उस शख़्स पर डाले जिसको नज़रे बद लगी वह सेहतया[illegible] हो जाएगा अबू अमा[illegible] बिन सहल बिन हुनीफ़ से रिवायत है कि मैं गुस्ल कर रहा था कि आमि[illegible] बिन रबीआ [illegible] बद[illegible] को देख लिया और ताज्जुब से कहने लगा ख़ुदा की क़सम आज जैस[illegible] मैंने कभी [illegible] देखा, किसी पर्दा नशीन औरत की जिल्द भी मैं ने ऐसी (हसीन) नहीं देखी [illegible] फ़ालिज [illegible] गया ऐसा कि मैं सर भी नहीं उठा सकता था लोगों ने इस बात का तज़किरा सरकारे का[illegible]त सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया। आप[illegible] इरशाद फ[illegible] तुम किसी को [illegible]ज़िम ठहराते हो लोंगो ने अर्ज़ किया या रसूल[illegible]ह आमिर बिन रबीअ ने ऐसा [illegible] कहा [illegible] हुज़ूर ने आमिर को बुलवाया और मुझे भी तलब फ़रमाया और [illegible] किया सुब्हानल्[illegible] अपने भाई को क्यों मारे डालता है अगर कोई चीज़ किसी को [illegible]संद हो (देखकर ताज्जुब करे) तो [illegible] के लिए बरकत की दुआ करे फिर आप आंहजरत [illegible] को हुक्म दिया कि गुस्ल करो आमिर ने अपना चेहरा धोया ऊपरी हाथ धोये दोनों कोहनियां धोईं फिर सीना और अपनी शर्मगाह को धोया इसके बाद दोनों ज़ानू दोनों पांव मअ़ पिंडलियों [illegible] आज़ा इस तरह धोए कि पानी एक बरतन में धोवन का जमा हो गया हुज़ूर ने इरशाद के ब मौजिब वह तमाम पानी मेरे ऊपर से बहा दिया गया अबू अमामा कहते हैं कि हस्बुल हुक्म कुछ पानी मेरे बदन पर मल दिया गया था इस पर अमल के फ़ौरन बाद ख़ुद सवारों के साथ चल कर लौट आया।

अगर पूरा गुस्ल करके नज़र ज़दा पर पानी डाला जाए तो फ़ौरन बेहतर होगा

सेंगी लगवाना, फ़स्द खुलवाना

बीमारियों के इलाज़ के लिए सेंगी लगवाना, फ़स्द खुलवाना, दाग़ लगवाना, दवायें, शरबत और उरूक़ पीना, रगों का काटना, जख्मों को चीरना, सारे बदन में कीड़े पड़ जाने के ख़ौफ़ से किसी उज़्व का काटना बवासीर के मस्सों का काटवाना (अमले जर्राही कराना) ग़रज़ ऐसे काम करना जिनसे जिस्म की इसलाह मक़सूद है जाएज़ है अलबत्ता तंदरूस्त और सही बदन को काटने से बचाना चाहिए।

रिवायत है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सेंगी लगवाई और तबीब से मशवरा फ़रमाया और तबीबों से फ़रमाया तुम्हारी राय ही इलाज़ है तबीबों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या तिब में कुछ फ़ायदा है आपने फ़रमाया जिसने बीमारी उतारी है उसने दवा भी उतारी है हज़रत इमाम अहमद से जिस्म दाग़ने का मसला दरयाफ़्त किया गया आप ने फ़रमाया, देहात के लोग ऐसा करते हैं। बिलाशुबा हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा ने दाग़ से इलाज किया है (दाग़ लगाया है) एक और मक़ाम पर हज़रत इमाम अहमद ने फ़रमाया कि हज़रत इमरान बिन हसीन ने अरकुन्निसा को चीरा था। इमाम साहब से एक और रिवायत में दाग़ने की कराहत मन्कूल है।

हराम चीज़ का बतौर दवा इस्तेमाल दुरूस्त नहीं, जैसे शराब, ज़हर मुरदार, नापाक चीज़ वग़ैरह। गधी के दूध से भी इलाज दुरूस्त नहीं है हुजूर का इरशाद है: हराम चीज़ों में मेरी उम्मत की शिफ़ा नहीं रखी गई है। अशद ज़रूरत के सिवा हकना करना मकरूह है।

ताऊन से भागना जाएज़ नहीं लेकिन कहीं ताऊन फैला हो तो उस जगह जाना नहीं चाहिए अपने आप को ख़ुद हलाकत में न डाले।

अजनबी औरत के साथ तन्हाई में बैठना

ना महरम के साथ तन्हाई में न बैठे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की मुमानिअत फ़रमाई है और इरशाद फ़रमाया है कि वहां तीसरा शैतान होता है क्योंकि शैतान उनको गुनाह की तरफ़ माएल करता है।

किसी जवान औरत की तरफ मजबूरी के सिवा नज़र उठा कर न देखे, मजबूरी की सूरत इलाज या गवाही वग़ैरह है बूढ़ी और खुले चेहरे वाली औरत को देख लेना जाएज़ है। जवान औरत को देखने से फितने में पड़ जाने का अन्देशा है। दो मर्द या दो औरतों को बरहना एक लिहाफ़ में या एक चादर में बहम न होना चाहिये रसूलुल्लाह ने इसकी मुमानिअत फ़रमाई है इस तरह बरहना लेटने से एक की नज़र दूसरे के सतर पर पड़ती है और यह मना है फिर शैतान के वरग़लाने से इरतिकाबे गुनाह का भी डर है।

बांदी और गुलामों से नर्मी बरतना

अपने गुलाम और बांदी के साथ नर्मी से पेश आए, उनसे ना क़ाबिले बरदाश्त काम न ले, उनको कपड़ा पहनाए, खाना खिलाए अगर वह ख़्वाहिशमन्द हों तो उनका निकाह भी कर दे लेकिन उनको निकाह पर मजबूर न करे इसमें अगर कोई कोताही करेगा तो गुनहगार होगा अगर चाहे तो उनको फ़रोख़्त कर दे चाहे आज़ाद कर दे अगर गुलाम आज़ादी का मुतालबा करे तो कुछ रूपया (रक़म) मुक़र्रर करके उन्हें आज़ाद कर दे (यानी वह मज़दूरी के ज़रिये मुक़र्ररा रक़म जब अदा कर दे तो आज़ाद कर दिया जाये) हदीस शरीफ़ में आया है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आख़िरी वसीयत यह थी कि नमाज़ के पाबन्द रहना और गुलामों का ख़्याल रखना।

कुरआन पाक को साथ रखना

दुश्मन के मुल्क में दौराने जिहाद कुरआन को साथ ले जाना मकरूह है, मुबादा वह काफ़िरों के हाथ लग जाए और वह कुरआन की बे अदबी करें। हां अगर मुसलमानों का ग़ैर मामूली

दबदबा और ग़लबा हो तो पढ़ने के लिए साथ ले जाना जाएज़ है ताकि पढ़ा हुआ भूल न जाए।

मुतफ़र्रिक़ दुआयें

आईना देखते वक्त क्या दुआ पढ़े

आईना को देख कर यह दुआ पढ़ना मुसतहब है

तर्जमा:—अल्लाह के लिए हम्द व सना है जिसने मुझे दुरूस्त पैदा किया और मेरी बनावट दुरूस्त की मुझे ख़ूबसूरती अता की और मुझे ऐसे आज़ा दिये जो ऐबदार आज़ा के मुक़ाबले में ख़ुशनुमा दिखाई देते हैं। यह रिवायत आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है।

कान बजना

आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर किसी के कान बजने लगें तो वह दरूद शरीफ पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़े:

तर्जमा:—जिसने मुझे भलाई से पाक किया अल्लाह तआला उसको याद करे।

दर्द दूर करने की दुआ

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर किसी शख़्स के किसी उज़्व में दर्द हो तो यह दुआ पढ़ कर दम करे

तर्जमा:—हमारा अल्लाह वह है जिसका नाम आसमानों में मुक़द्दस है इलाही तेरा हुक्म आसमान और ज़मीन में ऐसा ही नाफ़िज़ व जारी है जैसे तेरी रहमत आसमान व ज़मीन में आम है इलाही हमारे गुनाह और क़सूर माफ़ कर दे ऐ पाकीज़ों के रब अपनी रहमत का छींटा और अपनी शिफ़ा में से इस दर्द को जो लाहिक़ है शिफ़ा दे।

बद शगूनी का दफ़ीआ

बद शगूनी पैदा करने वाली कोई चीज़ देखे तो कहे

तर्जमा:—इलाही भलाईयों को तेरे सिवा कोई नहीं लाता और न तेरे सिवा कोई बुराईयों को दफ़ा करता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यही दुआ मरवी है।

कलीसा, आतिशकदा या बुतकदा देखने पर

अगर कोई शख़्स यहूदियों का इबादत ख़ाना (हैकल) देखे बातरी या संघ (बूक़) की आवाज़ सुने या किसी जगह यहूदियों मुश्रिकों और ईसाईयों की जमाअत देखे तो उसको यह अल्फ़ाज़ कहना चाहिए।

तर्जमा:—मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं कोई उसका शरीक नहीं उसके सिवा और मैं किसी और की बन्दगी नहीं करता हूं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि जो शख़्स मज़कूरा बाला

अल्फ़ाज़ कहेगा मुश्रिकों की तादाद के बराबर अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ फ़रमा देगा

रअ़द और कड़क की आवाज़

रअ़द और गरज की आवाज़ सुन कर कहे

तर्जमाः—इलाही हम को अपने ग़ज़ब से क़त्ल न कर देना और अपने अज़ाब से हलाक न कर देना और उससे पहले हम को बचाना।

आंधी के वक़्त की दुआ

आंधी आती देख कर यह दुआ पढ़े

तर्जमाः—इलाही मैं तुझ से इसकी ख़ैर का तलबगार हूं और जिस काम के लिए इसको भेजा गया है इस की ख़ैर का भी, और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इसके शर से और उस चीज़ के शर से जिसके लिए इस को भेजा गया है।

बाज़ार में जाना

बाज़ार में जाने वाले को चाहिए कि वह यह दुआ पढ़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यही पढ़ते थे। हुजूर यह फ़रमाया करते थे

तर्जमाः—इलाही मैं तुझ से बाज़ार और जो कुछ बाज़ार में मौजूद है उससे भलाई का ख्वहसतगार हूँ और बाजार की बुराई और उसमें जो कुछ मौजूद है उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। इलाही में उस बात से तेरी पनाह मांगता हूँ कि मैं बाज़ार में झूठी क़सम में मुब्तला हो जाऊँ या कोई नुक़सान का सौदा मुझ पर आ पड़े। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं है। उसी की हुकूमत है उसी के लिए तमाम तारीफ़ है, वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है। वह ज़िन्दा है, जिसके लिए मौत नहीं है। उसी के क़ब्ज़े में भलाई है। वह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

रूईयते हलाल की दुआ

महीने का नया चाँद देख कर पढ़े

तर्जमाः—इलाही, इस चांद को बरकत, ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ हम पर नमूदार फ़रमा! अल्लाह मेरा और तेरा रब है।

मुसीबत ज़दा को देख कर

जब किसी को दुख और मुसीबत में मुब्तला देखे तो यह दुआ पढ़े

तर्जमाः—अल्लाह का शुक्र है कि जिसने मुझे इस दुख से महफ़ूज़ रखा, जिसमें तुझे मुब्तला किया और मुझे तुझ पर और बहुत सी मख़लूक़ पर बरतरी और फ़ज़ीलत अता फ़रमाई।

जब तक यह दुआ पढ़ने वाला ज़िन्दा रहेगा, अल्लाह तआला उसको उस दुख से महफ़ूज़ रखेगा (ख़्वाह कोई दुख हो)

हाजी से मुलाक़ात पर

हाजी सफ़रे हज से वापस आयें तो उनसे मुलाक़ात के वक़्त कहे

तर्जमा:—अल्लाह तेरे हज को क़बूल फ़रमाए, तुझे बड़ा अज्र अता फ़रमाये और जो कुछ तेरा ख़र्च हो गया है उसका एवज़ तुझको अता करे।

रिवायत में आया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो हाजी से मुलाक़ात के वक़्त यही फ़रमाया करते थे।

बीमार की अयादत के मौक़ा पर दुआ

किसी मुसलमान बीमार की अयादत को जाए और उसको हालते नज़्अ में देखे या उसे मुर्दा पाए तो यह दुआ पढ़े जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मौत घबराहट का वक़्त है लिहाज़ा जब तुम अपने किसी रफ़ीक़ को इस हालत में देखो तो यह दुआ पढ़ो।

तर्जमा:—बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की तरफ़ हम लौटने वाले हैं अपने रब के पास ही हमको पलटकर जाना है। इलाही अपने पास इसको नेकोकारों में लिख ले, और इसका नामए आमाल इल्लिईन में रख दे और इसके पस्मांदगान की तू निगहबानी फ़रमा। हम को इसके सवाब से महरूम न कर और इसके बाद हमको मुसीबत में न डाल।

यह मुसतहब है कि मरने वाला शख़्स अपने गुनाहों के लिए इस्तिग़फ़ार करे और अपने वारिसों को मशवरा दे कि जो कुछ हुकूकुल इबाद उसके ज़िम्मे हैं उनको अदा करें, जो ग़रीब रिश्तेदार उसके वारिस नहीं हैं अपने कुल माल का तिहाई हिस्सा उनको देने की वसीयत करे, अगर ऐसे रिश्तेदार न हों तो मोहताजों, मिसकीनों, मस्जिदों, पुलों और दूसरे नेकी के कामों में माल का तिहाई हिस्सा ख़र्च करने की वसीयत कर दे।

मुर्दों को क़ब्र में रखते वक़्त की दुआ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है, मुर्दों को क़ब्रों में रखते वक़्त कहो ***बिस्मिल्लाहि व अला मिल्लते रसूलिल्लाहि*** आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मय्यत को क़ब्र में रखते वक़्त यह अलफ़ाज़ इरशाद फ़रमाये थे। क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त कहे

तर्जमा:—मैं तुझ पर ईमान लाया और मैंने तेरे पैग़म्बर की तसदीक़ की मैं हश्र पर ईमान लाया हूँ, यह वह है जिसका अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने वादा किया है।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु से मरवी है कि जो शख़्स ऐसा करेगा उसे ख़ाक के ज़र्रों के बराबर नेकियाँ मिलेंगी।

बाब 5

निकाह, मुबाशरत, हमल, बीवी और इताअ़त गुज़ारी, वलीमा, निकाह का ख़ुत्बा

निकाह के आदाब

निकाह के अहकाम

निकाह करने से निकाह करने वाले का अस[illegible] मक़सूद अल्लाह के हु[illegible] की तामील होना चाहिए जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

तर्जमा:—अपनी बेवाओं का निकाह कर दो, उसी त[illegible]ह नेक लौंडि[illegible] और [illegible]लामों का निकाह कर दो।

दूसरी जगह इरशादे रब्बानी है:

तर्जमा:—उन औ़रतों से निकाह करो जो [illegible]म्हें पसन्द हो, दो दो [illegible]न तीन चार चार।

रसूलुल्ला[illegible] सल्लल्[illegible] अलैहि व[illegible]म क[illegible] इरशादे गिर[illegible] है कि निकाह करो और अपनी औलाद बढ़ाओ, [illegible]व्वाह हमल सा[illegible]कित क्योंकि न हो [illegible]ाए क्यों[illegible] मैं अपनी कसरते उम्मत पर फ़ख़्र करने वाला हूँ। इ[illegible] दोनों आ[illegible]ों और हदी[illegible]ों से सा[illegible] [illegible]क ज़िना का डर हो या न हो निकाह करना बहरे सूरत [illegible]जिब है।

इमाम अह़मद [illegible]यत की रू से अबू दाऊद के नज़दीक निकाह का मुत़लक़न वाजिब है। (ज़िना का डर हो [illegible] न हो) पस वाजिब की अदाएगी की नीयत करने वाले के लिए हुक्मे खुदावंदी की तामील का [illegible]गा। इरशादे खुदावंदी की तामील के साथ साथ अपने दीन की तकमील और हिफ़ाज़त [illegible]ी मक़सूद हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है "जिसने निकाह़ कर लिया उसने अपना निस्फ़ दीन महफूज़ कर लिया। दूसरा फ़रमाने नबवी है "जब बन्दे ने निकाह़ कर लिया तो उसने अपना निस्फ़ दीन मुकम्मल कर लिया।"

निकाह के लिए ऐसी औरत का इंतेख़ाब करे जो आ़ली नसब हो, क़राबतदार न हो और ऐसी औरत में से हो जो कसीरुन नस्ल मशहूर हैं (उस ख़ानदान की हो जिस ख़ानदान की औरत के ज़्यादा औलाद पैदा होती हो) हज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह ने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताया कि मैंने रान्ड(बेवा) से शादी किया है तो हुज़ूर ने फ़रमाया तुमने दोशीज़ा से निकाह क्यों नहीं किया कि तुम्हारा बहलाव उससे होता और उसका तुम से।

कसीरुन नस्ल होने की शर्त इसलिए है कि रसूलूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बाहम निकाह करो नसलें बढ़ाओ, मैं तुम्हारी कसरत की वजह से दूसरी उम्मतों पर फ़ख़्र करूँगा अगरचे बच्चा कच्चा ही हो। बाज़ अहादीस में आया है कि ऐसी औरत से निकाह

करो जो बहुत बच्चे पैदा करने वाली और ज़्यादा मेहनत करने वाली हो। मैं तुम्हारी कसरत पर फ़ख्र करूँगा।

औरत के क़राबतदार (रिश्ते दार) न होने की शर्त इस लिए है कि अगर बाहम नफ़रत व अदावत हो जाए तो उस क़राबत को क़तअ न करना पड़े जिसको जोड़े रखने का हुक्म दिया गया है। इसी लिए शरीअत ने निकाह के अन्दर दो बहनों को जमा करने से मना फ़रमाया है। ज़बान दराज़, तलाक़ की ख़्वास्तगार और बदन गुदवाने वाली औरत से भी निकाह न करना चाहिए। निकाह करने के बाद औरत से खुश अख़लाक़ी से पेश आए, उसको दुख न दे और उस पर सख़्ती न करे कि वह ख़ुलअ की ख़्वास्तगारी करे और अपने महर को ख़ुलअ के बदल में महसूब कर दे। बीवी के वालिदैन को गाली न दे अगर ऐसा करेगा तो उससे अल्लाह और अल्लाह के रसूल बेज़ार होंगे।

रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाय' है औरतों से भलाई करने का मेरा आख़िरी हुक्म मानो, वह तुम्हारे पास क़ैदी हैं। बाज़ अहादीस में आया है कि जो शख़्स किसी औ[illegible] से महर के साथ निकाह करे और नीयत महर अदा करने की न हो [illegible] वह क़यामत के दिन [illegible]ज़ानी की हालत में आएगा, औरत अगर अपनी ज़बान दराज़ी से शौहर को दुख पहुँचाये तो मर्द [illegible] चाहिए कि उस औरत से अलाहिदा हो जाए या अल्लाह की तरफ़ रूजू करे और तज़[illegible] व ज़[illegible]ी के साथ दुआ करे, अल्लाह उसके काम को पूरा कर देगा और अगर [illegible]ंज और दुख में सब्र करेगा तो राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले की तरह होगा। अ[illegible]र औरत [illegible]ा व रग़[illegible] जब्र के बग़ैर अपना कुछ माल शौहर को दे दे तो खुशी से लेना चाहिए। उसका [illegible]ाना म[illegible]द के लिए जाइज़ है।

बीवी पसन्द [illegible]ा पसन्[illegible] करने का [illegible]ला

मुनासिब है [illegible] निकाह से पहले औरत का चेह[illegible]ाहिरी बदन देख ले (यानी मुँह और हाथों को अच्छी त[illegible]ह देख [illegible]) ताकि ब[illegible]द को मुफ़ारिक़त या त[illegible] की नौबत न आए क्योंकि तलाक़ और मुफ़ारि[illegible] [illegible]ल्लाह तआला के नज़दीक मकरूह और ना पसन्दीदा है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व[illegible]म का इरशाद है कि अल्लाह तआला के नज़दीक मुबाह चीजों में तलाक़ सबसे ना पसन्दीद[illegible] [illegible]है।

औरत के चेहरे वग़ैरह [illegible] देख लेने के सिलसिले में असल दलील यह हदीस है, हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अगर तुम में किसी के दिल में किसी औरत को पैग़ाम भेजवाने का इरादा अल्लाह तआला पैदा कर दे तो पहले उस औरत के चेहरे और दोनों हथेलियों को देख लेना चाहिए। यह सूरत आपस में मोहब्बत पैदा करने के लिए निहायत मुनासिब है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई किसी औरत को निकाह का पयाम दे तो अगर उस औरत के उन आज़ा का देखना मुम्किन हो जो निकाह की तरफ़ रग़बत दिलाते हैं देख ले। हज़रत जाबिर कहते हैं कि मैंने एक लड़की को निकाह का पैग़ाम दिया और छुप कर उतना हिस्सा भी देख लिया जिसने मुझे निकाह करने पर आमादा किया था। अबू दाऊद ने यह रिवायत अपनी सुनन में नक़्ल की है।

बीवी की ख़ुसूसियात:

औरत को दीनदारी और ज़ी फ़हम होना चाहिए। हज़रत अबू हुरैरा रिवायत करते हैं कि

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया औरत से निकाह चार ख़ूबियों के पेशे नज़र किया जाता है दौलत, हुस्न, आली नसबी और दीनदारी। कामयाबी उस शख़्स की है जो महज़ दीनदारी की बिना पर औरत से निकाह करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दीनदार औरत से निकाह करने की सराहत इस लिए फ़रमाई है कि दीनदार औरत शौहर की मददगार होती है और थोडी रोज़ी पर कनाअत कर लेती है इसके बर ख़िलाफ़ दीनदारी से ख़ाली औरतें गुनाह और मुसीबत में मुब्तला कर देती हैं। ऐसी औरतों से वही बचता है जिसे अल्लाह तआला बचाये।

अल्लाह तआला का इरशाद है: यानी अब उनसे मुबाशरत करो और अल्लाह तुम्हारे लिए जो कुछ लिख दिया है उसकी तलब करो, इस आयते करीमा की तफ़सीर में अकसर मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मुबाशिरत से मुराद जिमाअ और इबतग़ा से मुराद तलबे औलाद है, औरत के लिए भी यही मुनासिब है कि निकाह करने में उसका मक़सूद भी अपनी इसमत [illegible]ा तहफ़्फ़ुज़, औलाद की तलब और अल्लाह की तरफ़ से दिया हुआ अ[illegible] अज़ीम हो। वह इसी [illegible]ीयत से शौहर की कुरबत में रहकर हमले विलादत और औलाद की पर[illegible]श को सब्र से बरदाश्त करे। ज़ियाद बिन मैमून ने हज़रत अनस बिन मालिक का क़ौल नक़्ल कि[illegible]ा है कि मदी[illegible] की रहने वाली एक इत्र फ़रोश औरत जिसका नाम हौला था, हज़रत आईशा की ख़िदमत में हा[illegible] हुई और अर्ज़ किया, उम्मुल मोमेनीन मेरा शोहर फ़लाँ शख़्स है। मैं [illegible]र रात इ[illegible]आकर और सिंगार शबे ज़फ़ाफ़ की दुलहन की तरह हो जाती हूँ। जब वह आकर [illegible]पने बिस्तर में लेट जा[illegible] है तो मैं उसके लिहाफ़ में घुस जाती [illegible]। इन क[illegible] से मेरा [illegible]द अ[illegible]ल्लाह तआला की रज़ामन्दी होता है मगर मेरा शोहर मेरी तरफ़ से मुँह फेर लेता है मेरे [illegible]याल [illegible] उसको [illegible] से नफ़रत है, हज़रत आएशा ने फ़रमाया बैठ जा[illegible]। रसूलु[illegible]ह तशरीफ़ ले आये [illegible]ना में सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम त[illegible]रीफ़ ले आए और फ़रमाया यह ख़ुशबू कैसी [illegible] क्या हौला आई है? क्या तुम ने इससे कुछ ख़री[illegible] हज़रत आएशा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लह, बख़ुदा मैंने कुछ नहीं ख़रीदा है, फिर हौला ने [illegible]पना किस्सा अर्ज़ किया, हुज़ूर गिरामी ने फ़रमाया, जा उसकी बात सुन और उसका हुक्म मान! [illegible] अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं ऐसा ही करूँगी मुझे इसका क्या सवाब मिलेगा? आंहज़रत [illegible] जवाब दिया जो औरत अपने ख़ाविन्द की आरास्तगी और दुरुस्ती के लिए कोई चीज़ उठा कर रखती है, उसके एवज़ उसको एक नेकी का सवाब मिलता है और उसका एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है और एक दर्जा बलन्द कर दिया जता है और जो हामला औरत हमल की कोई तकलीफ़ बरदाश्त करती है उसके लिए क़ाइमुल लैल और साइमुन नहार और अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाला अज्र मिलता है और जब उसे दर्द ज़ेह लाहक़ होता है तो हर दर्द के एवज़ उसको एक जान (गुलाम) आज़ाद करने का सवाब मिलता है और जब बच्चा माँ की पिसतान से दूध का चुसकी लेता है तो हर चुसकी के एवज़ उस औरत को इस क़दर सवाब मिलता है जितना गुलाम को आज़ाद करने का। जब औरत अपने बच्चा का दूध छुड़ाती है तो आसमान से निदा आती है ऐ औरत तूने माज़ी के सब काम पूरे कर दिए अब जो ज़माना बाक़ी है उसका काम शुरू कर। (यानी पिछली ज़िन्दगी के सारे गुनाह माफ़ हो गए अब अज़ सरे नौ ज़िन्दगी शुरू कर)

हज़रत आएशा यह सुन कर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मर्दों का सवाब का क्या हाल है औरतों को तो इस क़दर सवाब का हिस्सादार बना दिया गया? यह सवाल सुन कर हुज़ूर ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद किया कि जो मर्द अपनी बीवी का हाथ उसको बहलाने के लिए पकड़ता है अल्लाह तआला उसके लिए एक नेकी लिख देता है। जब मर्द प्यार से औरत के गले में हाथ डालता है उसके हक़ में दस नेकियाँ लिखी जाती हैं और जब वह औरत के साथ मुबाशरत करता है तो दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर हो जाता है। और जब गुस्ल (जनाबत) करता है तो बदन के जिस बाल पर से पानी गुज़रता है उस हर बाल के एवज़ उसकी एक नेकी लिखी जाती है और एक गुनाह कम कर दिया जाता है और एक दर्जा ऊँचा कर दिया जाता है और गुस्ल के एवज़ जो कुछ सवाब उसको दिया जाएगा वह दुनिया और माफ़ीहा से बेहतर होगा। अल्लाह तआला उस पर फ़ख़्र करता है और फ़रिश्तों से कहता है कि मेरे बन्दे की तरफ़ देखो कि इस सर्द रात में गुस्ले जनाबत के लिए उठा है। इसे मेरे परवरदिगार होने का यक़ीन है। तुम भी इस बात पर गवाह रहना कि मैंने इस बख़्श दिया।

इब्ने मुबारक बिन फ़ुज़ाला ने इमाम हुसैन [illegible]ियल्लाहो अन्हो से [illegible]वायत की है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, औरतों के साथ भला[illegible] करने की मेरी वसीय[illegible] मानों वह तुम्हारे पास क़ैद हैं, खुद मुख़तार नहीं हैं, तुमने उनको अल्लाह तआला की [illegible]त के तौर पर हासिल किया है और अल्लाह के हुक्म से उनके शर्मगाहों को [illegible] लिए हलाल बनाया है।

अ़बादा बिन कसीर ने ब हवाला अ़ब्दुल्लाह, उम्मुल मो[illegible] हज़रत मै[illegible]ना रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत है कि है कि रसूलल्लाह ने इरशाद फ़रमाया मेरी उ[illegible]मत के मर्दों में बेहतरीन मर्द वह हैं जो अपनी औरतों के [illegible] अच्छा सु[illegible] करते है और मेरी उम्मत की औरतो में सबसे बेहतर वोह औरत है जो अपने शौहर के साथ अच्छा सुलू[illegible] करती [illegible] ऐसी औरत को रात दिन में एसे एक हज़ार शहीदों का सवा[illegible] मिलता है। जो खुदा [illegible] में स[illegible] के साथ शहीद होते हैं और उसके अज्र की उम्मीद अल्लाह से रखते है। उन औरतों में से [illegible] औरत जन्नत की हूरे ऐन पर ऐसी ही फ़ज़ीलत रख[illegible] है जैसी मोहम्मद को तुममें से अदना मर्द पर। मेरी उम्मत की औरतों में वह औरत सब से बेहतर है जो अपरे शौहर की उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ फ़रमांबरदारी करती है, गुनाहों के कामों [illegible] सिवा। फ़रमाया मेरी उम्मन के मर्दों में बेहतर वह मर्द है जो अपने अहल के साथ उसी तरह मेहरबानी से पेश आता है जिस तरह एक मां अपने बच्चे के साथ, ऐसे मर्द के लिए हर दिन रात में सब्र व शुक्र के साथ अल्लाह की राह में शहीद होने वाले सौ मर्दों का सवाब लिखा जाता है। इस मौक़ा पर हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया या रसूल्लाह यह किया बात है कि औरत को हज़ार शहीदों का सवाब और मर्द को सौ शहीदों का सवाब है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि तुम को मालूम नहीं कि अज्र और सवाब में औरत मर्द से बढ़कर है और अफ़ज़ल है। जन्नत में अल्लाह तआला मर्द के दरजात में मज़ीद दरजात का इज़ाफ़ा इस लिए फ़रमाएगा कि उसकी बीवी उससे खुश है और उसके लिए दुआ करती है। क्या तुम को नहीं मालूम कि औरत के लिए शिर्क के बाद सबसे बड़ा गुनाह शौहर की नाफ़रमानी है, ख़बरदार कमज़ोरों के हक़ की बाबत अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तआला उन दोनों के बारे में बाज़ पुर्स करेगा। यतीम और औरत जिसने इन दोनों से भलाई की वह अल्लाह और उसकी रज़ामन्दी तक पहुंच गया और जिसने इन दोनों से बुराई की वह अल्लाह की ग़ज़ब

का सज़ावार हो गया है। शौहर का हक़ बीवी पर ऐसा है जैसा मेरा हक़ तुम पर है जिसने मेरी हक़ तलफ़ी की उस ने अल्लाह का हक़ ज़ाया किया और वह अल्लाह के ग़ज़ब में मुब्तला होकर लौटा, उसका ठिकाना जहन्नम है और जहन्नम बहुत बुरी जगह है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह के हवाले से हज़रत अबू जाफ़र बिन मोहम्मद बिन अली ने बयान किया कि मैं और चन्द बुज़ुर्ग सहाबा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे कि एक औरत आई और सलाम कहकर आप के सरहाने खड़ी हो गई और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह यहां से काफ़ी मुसाफ़त पर कुछ औरतें हैं मैं उनकी तरफ़ से एलची (नुमाइन्दा) बन कर आप की ख़िदमत में आई हूं और उन की तरफ़ से यह पैग़ाम लाई हूं कि मर्दों और औरतों का रब अल्लाह तआला है, आदम अलैहिस्सलाम मर्दों के बाप थे और औरतों के भी, हव्वा मर्दों की भी मां थीं और औरतों की भी, मर्द जब भी राहे ख़ुदा में मारे जाते हैं तो वह अपने रब के पास ज़िन्दा रहते है और उनको वहां रोज़ी दी जाती है और ज़ख़्मी हो जाते हैं तब भी उनके ऐसा ही सवाब है जैसा कि आप आगाह हैं और हम मर्दों पर (बंधी) बैठी रहती हैं और उनकी ख़िदमत में मशग़ूल रहती है तो क्या हमारे [illegible] भी कुछ अज्र है? रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मेरी तरफ़ से औरतों सलाम कहना और उनसे कहना कि शौहर की इताअत और उस के हक़ का इक़रार मर्दों के जिहाद के सवाब के बराबर है मगर तुम में से कम औरतें ऐसा करती हैं।

हजरत साबित बिन अनस का बयान है, मुझे औरतों ने रसूलुल्लाह की ख़िदमत के भेजा मैंने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर [illegible] औरतों की [illegible] से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मर्द बुज़ुर्गी में बढ़ गये है और ख़ुदा की राह में जिहाद करने का अज्र पा गए हम औरतों के लिए किसी ऐसे अमल का तज़किरा नहीं है जिसके बाइस हम अल्लाह [illegible] जिहाद करने वालों के अमल की बराबरी कर सकें। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया घर में बैठ कर तुम में से हर एक का कामकाज करना ख़ुदा की राह में जिहाद करने वालों के अमल के बराबर है।

हज़रत इमरान [illegible] हसीस फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया क्या औरतों पर भी जिहाद फ़र्ज़ है फ़रमाय हां उनका जिहाद ग़ैरत है, वह अपने नफ़्सों से जिहाद करती है पस अगर वह सब्र करें तो वह जिहाद करने वाली हैं और अगर वह (रोज़ी की कमी व बेशी पर) राज़ी रहेंगी तो वह गोया जिहाद की तैयारी करने वाली है पस औरतों के लिए दोहरा अज्र है। लिहाज़ा मर्द और औरत दोनों के लिए मुनासिब है कि वह सवाब मिलने पर एतक़ाद रखें। मियां बीवी पर लाज़िम है कि अक़्द और जिमाअ के वक़्त के उस सवाब पर भी एतक़ाद रखें जिस का ज़िक्र हदीस में आ चुका है।

ज़ौजेन के हुक़ूक़

मियां बीवी में से हर एक का हक़ दूसरे पर वाजिब है इस का सबूत इस आयत से होता है

तर्जमाः–जैसा तुम्हारा हक़ औरतों पर है ऐसा ही उनका हक़ भी मर्दों पर है। यह बात इस लिए है कि दोनों अल्लाह तआला के फ़रमांबरदार बन जायें। औरत को यह एतक़ाद भी रखना चाहिए कि उस के लिए इन्तज़ाम ख़ाना दारी और शौहर की इताअत जिहाद से बेहतर है। हदीस शरीफ़ में आया है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया औरत के लिए शौहर या क़ब्र से बेहतर कोई चीज़

नहीं है। हुजूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया हां मिसकीन है मिसकीन है वह मर्द जिसकी बीवी न हो, अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह ख़्वाह वह मर्द ग़नी हो आपने इरशाद फ़रमाया हां अगरचे वह माल के लिहाज़ से ग़नी हो फिर इरशाद फ़रमाया मिसकीन है मिसकीन है वह औरत जिस का शौहर न हो, अर्ज़ किया गया ख़्वाह वह मालदार हो हुजूर ने फ़रमाया अगरचे माल के लिहाज़ से ग़नी हो।

निकाह जुमेरात या जुमा को करना मुसतहब है सुबह की बजाये शाम के वक़्त निकाह करना औला व अफ़ज़ल है, ईजाब व क़ुबूल से पहले ख़ुतबए निकाह पढ़ना मसनून है अगरचे बाद में भी पढ़ा जा सकता है।

निकाह में इख़्तियार है कि ख़ुद करे या वकील के मारफ़त करे, निकाह हो चुके तो हाज़िरीन के लिए यह अल्फ़ाज़ कहना मुसतहब है

तर्जमा:—अल्लाह तुम को बरकत दे और तुम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाये नेकी और तंदुरूस्ती के साथ तुम को इकट्ठा रखे।

निकाह के बाद

निकाह के बाद अगर औरत के घर वाले मोहलत तलब करें तो उनको मोहलत दे दी जाए ताकि इस मुद्दत में वह दुल्हन का सामान दुरूस्त कर लें (जहेज़, सामाने आराइश और ज़ेवरात वग़ैरह)

जब औरत मर्द के घर आये तो इस रिवायत पर अमल करे जिस के रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद हैं वह फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने उनसे बयान किया कि मैंने एक दोशीज़ा से निकाह कर लिया है और मुझे डर है कि वह मुझे पसन्द नहीं करेगी या न करे, हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया है उलफ़त अल्लाह की तरफ़ से होती है और नफ़रत शैतान की जानिब से जब तुम बीवी के पास जाओ तो सबसे पहले उसको कहो कि वह तुम्हारे पीछे दो रिकअत नमाज़ पढ़े नमाज़ के बाद तुम इस तरह दुआ करना:

इलाही मेरे लिये मेरे अहल में बरकत अता फ़रमा, मुझ से मेरे अहल के लिये बरकत दे, ऐ अल्लाह मुझे इससे और उसको मुझसे रोज़ी दे। या अल्लाह जब तू हमको यकजा करे या अलग करे तो हुसूले ख़ैर ही के लिये करना।

जब बीवी से मुबाशरत करे कि यह दुआ पढ़े:

आली मर्तबा, अज़मत वाले अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं इलाही अगर तूने मुक़द्दर कर दिया है कि मेरी पुश्त से (कोई औलाद) बर आमद हो तो उसको पाकीज़ा नस्ल बना, इलाही शैतान को मुझ से दूर रख और जो औलाद तू मुझे रोज़ी करे उससे भी शैतान से दूर रख।

जिमाअ से फ़राग़त के बाद बग़ैर लब हिलाये दिल यह दुआ पढ़े:

बिस्मिल्लाह उस अल्लाह के लिये तारीफ़ है जिसने आदमी को पानी से पैदा किया फिर उसके लिये (बाहम मोहब्बत पैदा करने के लिये) रिश्ता और सुसराल को बनाया और तेरा रब हर शय पर क़ादिर है।

इस मज़मून कि असल वह हदीस है जो कुरैब ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम अपनी बीवी के साथ

यकजा होने का इरादा करो तो कहो ऐ अल्लाह हमें और उस बच्चे को जो हमें अता करना है, शैतान से दूर रखना है अगर उनके मुकद्दर में बच्चा की विलादत है तो शैतान उस बच्चे को कभी ज़रर नहीं पहुंचा सकेगा।

हमल के ज़माने में

हमल ज़ाहिर होने पर मर्द को लाज़िम है कि औरत कि ग़िज़ा को हराम और हराम के शुबा से भी पाक रखे ताकि बच्चे की पैदाईश इस बुनियाद पर हो कि शैतान की वहां तक रसाई ही न हो सके बल्कि ज़ियादा बेहतर यह है कि हलाल की ग़िज़ा की पाबन्दी ज़फ़ाफ़ (अव्वल रोज़ की मुबाशरत) ही से की जाए ताकि वह खुद और उस की बीवी और बच्चे (पैदा होने वाले) दुनिया में शैतान की दसतरस से और आख़िरत में दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहें।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है।

तर्जमाः—ऐ ईमान वालो! अपनी जानों और घर वालों को दोज़ख़ से बचाओ।

इस के अलावा बच्चा नेकोकार और वालिदैन का फरमांबरदार और अल्लाह का मुतीअ़ होता है और यह सब कुछ पाक साफ़ ग़िज़ा की बरकत है।

जिमाअ़ के बाद

जिमाअ़ से फ़ारिग़ होने के बाद औरत के पास से [illegible] जाए और बदन को धोकर नजासत दूर करे और वुज़ू करे बशर्ते कि यह है कि दोबारा जिमाअ़ का क़स्द हो, अगर क़स्द न हो तो गुस्ल करे, नापाकी की हालत के ना सोये ऐसा करना मकरूह है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा ही मरवी है, अलबत्ता अगर शदीद सर्दी की वजह से नहाना दुशवार हो या हम्माम दूर हो पानी दूर हो या गुस्ल करने में कुछ ख़ौफ़ हाएल हो तो बग़ैर गुस्ल के सो जाए और उस वक़्त तक बग़ैर गुस्ल रहे जब तक यह उज़्र दूर न हो जाये (मवाकेअ़ फ़राहम होते हुए ग़स्ल करे।

जिमाअ़ के वक़्त

जिमाअ़ के वक़्त कि[illegible] हो, पोशीदा जगह पर मुजामेअ़त करे (किसी की नज़र सामने न हो) यहां तक की छोटे बच्चे के सामने भी न हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है आप ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई अपनी बीवी से क़ुरबत करे तो परदा कर ले, बे परदा होगा तो मलाएका हया की वजह से बाहर निकल जायेंगे और शैतान आ जायेंगे अगर कोई बच्चा हुआ तो शैतान की उसमें शिर्कत होगी, बुज़ुर्गाने सल्फ़ से मनकूल है कि जिमाअ़ के वक़्त अगर बिस्मिल्लाह न पढ़ें तो इस सूरत में मर्द के शर्मगाह से लिपट जाता है और उस मर्द की तरह वह भी जिमाअ़ करता है।

जिमाअ़ से पहले औरत को जिमाअ़ की तरफ़ राग़िब करना मुस्तहसन है अगर ऐसा ना किया जाए जो औरत को ज़रर पहुंचने का अन्देशा है जो अकसर और अदावत और जुदाई तक पहुचा देता है।

उज़्ल करना

शर्मगाह से बाहर इंज़ाल करना जाएज़ नहीं है, अगर औरत आज़ाद है तो उसकी इजाज़त

लेना ज़रूरी है और अगर वह किसी की बांदी हो तो उसके आक़ा की इजाज़त ज़रूरी है, हां अगर खुद अपनी बांदी है तो इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं उसको खुद इख़्तियार है। एक शख़्स ने रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मेरी एक बांदी है जो हमारी ख़िदमतगार भी है मैं उससे मुजामेअत करता हूं मगर उसका हामला होना मुझे पसंद नहीं है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया अगर चाहो तो उज़्ल कर लिया करो लेकिन जो उसके लिए मुक़द्दर हो चुका है उस को ज़रूर मिलेगा।

जिमाअ़ से परहेज़

हैज़ व निफ़ास की हालत में जिमाअ़ से परहेज करना चाहिए एक क़ौल के लिहाज़ से हैज़ का ख़ून ख़त्म होने के बाद गुस्ल से पहले जिमाअ़ नहीं करना चाहिए और निफ़ास की सूरत में निफ़ास के चालीस रोज़ गुज़रने से पहले अगर ख़ून का आना बन्द हो गया है तब भी जिमाअ़ न करना मुस्तहब है, औरत को अगर गुस्ल के लिए पानी न मिले तो तयम्मुम कर ले। अगर हैज़, निफ़ास की इस मुद्दत के अन्दर जिमाअ किया तो एक रिवायत के बमूजिब एक या निस्फ़ दीनार बतौरु कफ़्फ़ारा खैरात करे और दूसरी रिवायत के लिहाज़ से (कफ़्फ़ारा मुकर्रर नहीं है बल्कि) अल्लाह से तौबा और इस्तिग़फ़ार करे और आइन्दा ऐसा न करने का अहद करे।

औरत को ग़ैर मख़सूस़ मकाम में जिमाअ़ नही करना चाहिए, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मलऊन है वह शख़्स जो औरत से लिवातत करता है।

औरत की ख़्वाहिशे जिमाअ़

अगर मर्द को जिमाअ़ की ख़्वाहिश न हो तब भी तर्के जिमाअ जाएज़ नहीं है क्योंकि इस मामला में औरत का भी हक़ है। और तर्के जिमाअ से औरत को ज़रर पंहुचने का अंदेशा है क्योंकि औरत की ख़्वाहिशे जिमाअ़ मर्द की ख़्वाहिश से बहुत ज़्यादा होती है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ी यल्लाहो तआला अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया "औरत की ख़्वाहिशे जिमाअ़ मर्द की ख़्वाहिशे जिमाअ) से (99) दर्जा ज़ाएद है मगर अल्लाह ने उस पर हया को मुसल्लत फ़रमा दिया है यह भी कहा गया है कि शहवत (ख़्वाहिशे जिमाअ़) के दस हिस्से हैं नौ औरतों के लिए है और एक मर्दों के लिए । बग़ैर उज़्र के चार माह से ज्यादा औरत से अलग रहना जाएज़ नही अगर चार माह से ज़्यादा मुद्दत गुज़र जाये तो औरत जुदाई का मुतालबा कर सकती है। अगर मर्द सफ़र में छः माह से ज़्यादा रहे तो और औरत उसको वतन में वापस बुलाये और मर्द कुदरत रखने के बावजूद जाने से इन्कार करे उस सूरत में औरत हाकिम से तफ़रीक़ (अलाहिदगी)की ख़्वाहिश करे तो हाकिम दोनों में तफ़रीक़ करा दे।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने जिहाद के सफ़र पर जाने वालों के लिए यही मुद्दत मुक़र्रर फरमायी थी यानी चार माह सफ़र में रहे और चार माह घर पर रहे दो दो माह सफ़र में आमद व रफ़्त के रखे गये थे।

बुराई से बचाव

अगर ग़ैर औरत को देखकर उसका हुस्न पसन्द आये (उसकी तरफ रग़बत हो) तो घर आकर अपनी बीवी से कुरबत करे ताकि जोशे शहवानी का हैजान खत्म हो जाये एक रिवायत

में आया है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी को कोई अजनबी औरत अच्छी लगे तो अपनी बीवी से कुरबत करे क्योंकि औरत की शक्ल में शैतान उसके सामने आने जाने लगता है। अगर अपनी बीवी न हो तो अल्लाह की तरफ़ रूजूअ़ करे और उसी से गुनाह से महफ़ूज़ रखने की दरख़्वास्त करे, शैतान मरदूद से उसी की पनाह मांगे।

राज़ की बातों का बयान न करना

अपनी बीवी से जिमाअ़ करने की हालत व कैफ़ियत का किसी से तज़किरा करना मर्द के लिए जाएज़ नहीं, न औरत के लिए जाएज़ है कि वह किसी दूसरी औरत से इसका ज़िक्र करे यह रज़ालत और छिछोरापन है अक़लन व शरअन भी बुरा है हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हो से एक तवील हदीस मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मर्दों की तरफ़ मुतवज्जह हो कर फ़रमाया कि क्या तुम में कोई शख़्स ऐसा है कि जो बीवी से जिमाअ़ करता है और दरवाज़ा बन्द कर लेता है और अपने ऊपर परदा डाल लेता है और अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक परदे में छुप जाता है, सहाबा [illegible]राम रज़ी अल्लाहो अन[illegible] ने अर्ज़ किया जी हां या रसूलुल्लाह ऐसे लोग हैं, तब रसूलुल्लाह ने फ़[illegible]माया क्या तुम में को[illegible] ऐसा शख़्स भी है कि जो अपने इस फ़ेअ़ल को लोगो में बयान करता फि[illegible]रे कि मैंने ऐ[illegible] किया! [illegible]सा किया। यह सुन कर लोग ख़ामोश हो गये, इस के बाद हुज़ूर ने औ[illegible] की तरफ़ मु[illegible]वज्जा होकर फ़रमाया क्या तुम में कोई औरत ऐसी है जो (इस राज़ क[illegible]) बयान [illegible] है औरतें [illegible]ामोश रहीं लेकिन एक जवान औरत ज़ानू के बल खड़े हो कर और आ[illegible] बढ़कर अर्ज़ किया कि[illegible]या रसूलल्लाह ऐसी बातें मर्द भी करते है और औ[illegible] करती [illegible]ब अ[illegible]हजरत सल्ल[illegible]ाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मर्द या और[illegible] ऐसी बाते करती हैं उनकी मि[illegible] ऐसी [illegible] के जो एक शैतान एक शैतानिया से किसी गली में मिला और [illegible]ससे जिमा[illegible] कर लि[illegible] लोग उनको देखते रहे ख़बरदार !! मर्दों की खुशबू वह है जिस की बू फैलती है रंग ज़ाहिर नहीं [illegible] और औरतों की खुशबू एक ऐसी चीज़ है जिस [illegible]तो नुमाया होता हैं मगर बू नहीं फैलती।

शौहर की इताअत ग[illegible]

अगर कोई मर्द अप[illegible]वी को अपनी ख़्वाहिश पूरी करने (जिमाअ़) के लिए बुलाये और वह न माने तो वह अल्लाह की ना फ़रमान होगी और उस पर गुनाह होगा। हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहो अन्हो फ़रमाते है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो औरत अपने शौहर को उसके काम (जिमाअ़) से रोक देती है उस पर दो क़ीरात गुनाह होता है और जो मर्द अपनी औरत की हाजत पूरी नही करता उस पर एक क़ीरात गुनाह होता है।

बाज़ हदीसो में वारिद है कि अगर शौहर अपनी हाजत पूरी करने के लिए औरत को बुलाये तो उसे फ़ौरन आ जाना चाहिए ख़्वाह वह तंवर पर ही क्यों न हो हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमायाः अगर तुम में से कोई अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाये और वह न आये और मर्द तमाम रात ग़म व गुस्से में बसर करे तो फ़रिश्ते सुबह तक उस औरत पर लानत भेजते रहते हैं।

शौहर का मरतबा

कैस बिन सअद रज़ियल्लाहो अन्हो का बयान है कि मैं हीरा गया वहां मैंने लोगों को देखा कि वह अपने बादशाह को सजदा करते हैं ,जब मैं मदीना (मुनव्वरा) लौट कर आया और ख़िदमते गिरामी में हाज़िर हुआ तो मैंने कहा या रसूलल्लाह! आप तो सजदा किये जाने के ज़्यादा मुस्तहिक़ है हुजूर ने इरशाद फ़रमाया बताओ कि अगर तुम मेरी क़ब्र की तरफ़ से गुज़रोगे तो क्या मेरी क़ब्र को सजदा करोगे? मैंने अर्ज़ किया कि नहीं! फ़रमाया तो ऐसी सूरत में मुझे भी सजदा न करो, फिर हुजूर ने फ़रमाया कि अगर मैं चाहता कि किसी को सजदा किया जाये तो औरतों को हुक्म देता कि वह अपने शौहरों को सजदा किया करें क्योंकि अल्लाह तआला ने औरतों पर मर्दों के बहुत से हुकूक़ मुक़र्रर फ़रमाये हैं।

औरतों के हुकूक़

हकीम बिन माविया कुशैरी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि मेरे वालिद ने आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि हम पर हमारी बीवीयों का क्या हक़ है? आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम खाना खाओ तो औरत को भी अपने साथ खिलाओ।तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ। (मार से) उसके चेहरे को न बिगाड़ो उससे अलाहिदगी इख़्तियार न करो अगर औरत नशूज़ (कुरबत और मुजामेअत से इन्कार) पर अड़ी हुई है या राज़ी भी हो तो झगड़े और नागवारी के साथ तो अव्वल शौहर उसे नसीहत करे अल्लाह के अज़ाब से डराये अगर वह फिर भी अपनी ज़िद पर कायम रहे तो ख़्वाबगाह में उसको तन्हा छोड़ दें और (तीन रोज़ से कम तक) कलाम करना भी तर्क कर दे इस तरह अगर वह बाज़ आ जाये तो फ़ब्बेहा वरना फिर उसको मारने का हक है लेकिन इस तरह कि ज़र्ब का निशान न उभरे दुर्रे या कोड़े न मारे क्योंकि औरत को मारने से गरज़ उस का हलाक करना नहीं है बल्कि मकसूद यह है कि वह सरताबी से बाज़ आ जाये और फ़रमा पज़ीर बन जाये अगर इस तरह भी वह बाज़ न आये तो फिर औरत अपने क़राबतदारों से एक शख़्स और मर्द अपने अज़ीज़ों से एक शख़्स को अपना वकील और पंच मुक़र्रर कर ले और दोनों पंच मामला ग़ौर करे और जैसी मसलेहत हो ख़्वाह सुलह या तफ़रीक़े माल के साथ हो या बग़ैर माल के अपना फ़ैसला दे दें उनका फ़ैसला ज़ौजेन के लिए क़तई होगा।(दोनों को इस की तामील करनी होगी)

दावते वलीमा

दावते वलीमा कब करना चाहिए

शादी का वलीमा मुस्तहब है। सुन्नत यह है कि कम अज़ कम एक बकरी ज़िब्ह की जाये वलीमे में हर क़िस्म का खाना देना जायज़ है (यानी किसी खाने की तख़्सीस नहीं है) अगर पहले दिन वलीमा की दावत दी जाये तो क़बूल करना वाजिब है दूसरे दिन की दावत क़बूल करना मुस्तहब है और तीसरे दिन मुबाह मगर तीसरे दिन की दावत क़बूल करना एक तरह का सुबुकपन है।

कम अज़ कम एक बकरी ज़िब्ह करने की दलील यह है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान से फ़रमाया था कि वलीमा करो ख़्वाह एक ही बकरी का हो हुज़ूर ने (इस सिलसिला में) यह भी फ़रमाया था कि अव्वल दिन वलीमा करना हक़ है दूसरे दिन वलीमा करना शोहरत और इसके बाद सुबकी का बाइस।

हज़रत इब्ने उमर रज़िअल्लाहो अन्हो से यह हदीस मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि जिस को शादी के दिन वलीमा की दावत दी जाये वह क़बूल कर ले अगर रोज़ा न हो तो ख़ाना खा ले और रोज़ादार हो तो बग़ैर ख़ाये वापस चला आये। (शिरकत बहरहाल करे)

निकाह में छुहारे लुटाना

निकाह के बाद छुहारे लुटाना मकरूह है क्योंकि इसमें छिछोरापन है कम ज़र्फ़ी और सिफ़ला पन का अन्दाज़ पाया जाता है लूट ही हिरसे नफ़्स है इस लिए इससे बचना औला है और अज़रूये तक़वा व परहेज़गारी इसको तर्क करना ही मुनासिब है मगर एक दूसरी रिवायत में इसको मकरूह नहीं बताया गया है क्योंकि रिवायत में आया है कि हुज़ूर ने [illegible]क ऊँट की कुरबानी फ़रमायी और ग़रीबों और मिस्कीनों को बुला कर [illegible]माया जो चाहे इसका गोश्त काट कर ले जाये ,निछावर में और इसमें कोई फ़र्क़ नहीं है सबसे [illegible]तर यह है कि हाज़[illegible] में तक़सीम कर दे इस लिए यह फ़ेअल ज़्यादा पसन्दीदा, निहायत हलाल और परहे[illegible]राना [illegible]मल है।

निकाह का त[illegible]का

निकाह का तरीक़ा [illegible]र शराय[illegible]

निकाह के [illegible]रायत यह हैं कि पहले [illegible]ली अ[illegible]ल मौ[illegible] हो, गवाह भी आदिल हो, ज़ौजैन हम कुफ़ू भी हो, [illegible]ई मुरतद [illegible] हो , औ[illegible] इद्दत [illegible], गरज़ कोई मानेअ न हो। निकाह करने वाला औरत [illegible] निका[illegible] की रज़ाम[illegible]दी हासिल करे, बशर्ते [illegible]स पर जब्र न किया गया हो यह शर्त इस सूरत [illegible] औरत रांड हो या ऐसी बाकरा जिसका बाप ज़िन्दा न हो या उसके तरफ़दारो ने उसको महर की [illegible]दाद बता दी हो ।

जब औरत इज़्न दे[illegible] निकाह ख़्वां खुतबा (निकाह) पढ़े और अल्लाह से ख़ुद भी इस्तिगफ़ार करे मुस्तहब यह है कि औरत के वली से खुत्बा पढ़वाया जाये फिर वली को चाहिए कि निकाह करने वाले से कहे कि मैंने अपनी लड़की की या बहन की (जैसी भी सूरत है) तेरे निकाह में दी है जिसका नाम यह है इसके बाद तय शुदा मिक़दार महर की बताए उसके जवाब में नाकेह कहे कि मैनें यह निकाह क़बूल किया, जो शख़्स अरबी नही जानता उसका निकाह उसी की ज़बान (मादरी ज़बान) में पढ़ाया जाये। जो शख़्स अच्छी तरह अरबी नहीं जानता निकाह के लिए उस का अरबी सीखना ज़रूरी है या नही इस सिलसिला में दो क़ौल हैं एक रिवायत है कि नाकेह को अरबी ज़बान सीखना लाज़िम है और दूसरी रिवायत में लाज़िम नहीं है।

खुतबए निकाह

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का ख़ुत्बा पढ़ना मुस्तहब है ,एक रिवायत में आया है कि इमाम अहमद बिन हंबल निकाह की मजलिस में जाते और वहां हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद का खुत्बा नहीं पढ़ा जाता तो आप उस मजलिस को छोड़कर चले आते मुझे (साहबे गुनिय्यतुत्तालेबीन)

हज़रत इब्ने मसऊद का ख़ुत्बा मुनदर्जा ज़ैल सिलसिलए रिवायत से पहुंचा है।

शैख़ इमाम हिब्तुल्लाह बिन मुबारक बिन मूसा सक़फी ने बग़दाद में बहवालए क़ाज़ी मुज़फ़्फ़र हिनाद बिन इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन नसर नस्फ़ी बयान फ़रमाया क़ाज़ी मुज़फ़्फ़र ने बहवालए क़ाज़ी अबू उमर क़ासिम बिन जाफ़र बिन अब्दुल वाहिद हाशमी बसरी बयान फ़रमाया और क़ाज़ी अबू उमर ने बहवालए मोहम्मद बिन अहमद लोलवी से और लोलवी ने बहवालए अबू दाऊद और अबू दाऊद ने बहवालए मोहम्मद बिन सुलैमान अंबारी मुफ़्ती और मोहम्मद बिन सुलैमान बहवालए वकीअ़ और वकीअ़ ने इस्राफ़ील से सुना और इस्राफ़ील ने अबू इस्हाक़ से और अबू इस्हाक़ ने अबीइल हूस से बहवालए अबू ऊबैदा और अबू ऊबैदा ने बहवालए हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद बयान किया। हज़रत इब्ने मसऊद ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ने हम को यह ख़ुत्बा निकाह सिखाया।

तर्जमा:—अल्लाह के लिए ही तमाम तारीफ़ें हैं ,हम उसी की ह़म्द व सना करते हैं और उसी से मदद मांगते हैं और उसी से माफ़ी चाहते हैं। अपने नफ़्सों और अपनी बद आमालियों से उसकी पनाह मांगते हैं जिसको वह हिदायत कर दे उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसको वह गुमराह छोड़ दे उसको राहे रास्त पर लाने वाला कोई नहीं है मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और गवाही देता हूं कि मोहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं ऐ लोगों अपने उस रब से डरो जिसने तुमको एक शख़्स से पैदा किया उसी से उसके जोड़े को पैदा किया और दोनों से बहुत मर्द और औरतें पैदा कीं और अल्लाह से डरो जिस के वास्ते से तुम से सवाल करते हो (रिश्ता मांगते हो) सिला रहमी का [illegible] करने से बचते रहो बिला शुबा अल्लाह तुम्हारा निगरां है ऐ अहले ईमान अल्लाह से डरो और पक्की बात कहो अल्लाह तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिये दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानेगा उसको बड़ी कामयाबी हासिल होगी।

मुस्तहब है कि इसके बाद यह पढ़े

अपनी रान्डो और नेकोकार, गुलामों और बांदियों का निकाह कर दो अगर वह मिसकीन वफ़ादार हैं तो अल्लाह [illegible] फ़ज़्ल से उनको ग़नी कर देगा अल्लाह बड़ी कशाईश वाला है और ख़ूब जानने वाला है वह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है।

इस मज़कूरा ख़ुत्बा [illegible] अगर कोई यह ख़ुत्बा पढ़े तो इसका पढ़ना भी जाएज़ है।

अल्लाह तआ़ला के लिए स़ना है जो अपने इनामात में यगाना व यकता और बख़्शिश में बड़ा सख़ी है अपने नामों से मुमताज़ है अपनी बुज़ुर्गी में यकता व अकेला है बयान करने वाले उस की शान बयान नहीं कर सकते और ना उसकी सिफात का इज़हार करने वाले हक़्क़े नअ़त अदा कर सकते हैं। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह वाह़िद बेनियाज़ है वही माबूद है उसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं, वह ख़ूब सुनता और देखता है, बा बरकत है वह अल्लाह जो ग़ालिब है और गुनाहों का बख़्शने वाला है उसने मुह़म्मद को बरहक़ बरगुज़ीदा और ख़राबियों से पाक नबी बना कर भेजा, आप रौशन चिराग़ और चमकता दमकता नूर थे आप ने वह पैग़ाम पहुंचा दिया जिसके पहुंचाने के लिए आप भेजे गए थे। आप पर और उनकी तमाम आल पर दरूद व सलाम हो। यह तमाम उमूर अल्लाह के हाथ में हैं। वही उनके रास्तों पर उन को चलाता और मुनासिब मक़ामात जारी फ़रमाता है वह जिस चीज़ को पीछे कर दे उसको कोई आगे बढ़ाने वाला नहीं है और जिस चीज़ को आगे कर दे उसको कोई पीछे करने वाला नहीं है और अल्लाह के हुक्म

और तक़दीर के दो भी जमा नहीं हो सकते हर फ़ैसले का पहले से अन्दाज़ा है और हर अन्दाज़े की एक मुद्दत लिखी हुई है अल्लाह जिस तहरीर को चाहता है मिटा देता है जिसको चाहता है बाक़ी रखता है उसी के पास असल किताब है।

खुत्बा पढ़ने के बाद कहे कि अल्लाह के हुक्म और उस के क़ज़ा व क़द्र के मुताबिक़ फ़लां बिन फ़लां (नाम ले) तुम्हारी खातून (बहन या बेटी) से निकाह करना चाहता है और बरग़बते ख़ातिर तुम्हारी इस ख़ातून से निकाह करने आया है यह मुक़र्ररा महर भी अदा कर चुका है पस तुम इस दरख़्वास्त गुज़ार से जो निकाह का तालिब है निकाह कर दो। अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जमा:—तुम अपनी रांडों, गुलामों और बांदियों में से जो नेक हैं उनका निकाह कर दो अगर वह मोहताज हैं तो अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से उन्हें मालदार कर देगा यक़ीनन अल्लाह कशाईश वाला और जानने वाला है।

खुत्बा से फ़ारिग़ होने के बाद मज़कूरा बाला तरीक़े निकाह बांध दे।

बाब 6

भलाई का हुक्म और बुराई की मुमानिअ़त

अल अम्र बिल मारूफ़ वन्नही अनिल मुनकर

अवामिर व नवाही

अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में भलाई का हुक्म देने और [illegible] से [illegible]कने वालों ज़िक्र किया है और उनकी तारीफ़ इस तरह फ़रमाई है:

तर्जमाः—भलाई का हुक्म देने वाले, बुराई से रोकने [illegible] अल्लाह की क़ायम करदा हुदूद की निगरानी करने वाले हैं।

दूसरी आ[illegible]त में इस [illegible] इरशाद [illegible] है।

तर्जमाः—तु[illegible] लोगों की हिदायत के [illegible] बे[illegible]रीन [illegible] बनाकर भेजे गये हो भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से [illegible]ते हो और अल्लाह [illegible] रखते हो।

एक और आय[illegible] में इस तरह फ़रमाया गया है।

तर्जमाः—मोमिन [illegible]र मोमिन औरतें बाहम एक दूसरे के दोस्त हैं भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं।

एक रिवायत में आय[illegible]लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम क़तअ़न भलाई का हुक्म दो और बुरी बातों की मुमानिअ़त करो वरना अल्लाह तआ़ला तुम्हारे नेकों पर तुम्हारे बुरों को ज़रूर मुसल्लत कर देगा। फिर नेक लोग दुआ करेंगे मगर उनकी दुआ क़बूल नहीं होगी।

हज़रत सालिम अबदुल्लाह हज़रत उमर से रिवायत करतें हैं कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया है अच्छी बातों का हुक्म दो और बुरी बातों से रोको क़ब्ल अज़ीं कि तुम्हारे नेक लोगों की दुआयें क़बूल न हों और तुम इस्तिग़फ़ार करो मगर तुम्हें माफ न किया जाए, ख़ूब समझ लो कि अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना न रिज़्क़ को दूर करता है न उम्र की मुद्दत कम करता है ख़ूब सून लो यहूदी उलमा और इसाई आ़बिदों ने नेकी का हुक्म देना और बदी से रोकना जब तर्क कर दिया तों अल्लाह तआ़ला ने उन के पैग़म्बरों की ज़बान से उन पर लानत भेजी और सब को मुसीबत में डाल दिया।

हर मुसलमान आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़ पर जो मारूफ और मुनकर से वाक़िफ़ हो (यानी

आलिम हो) लाज़िम है कि लोगों को अच्छी और नेक बातों का हुक्म दे और बुरी बातों से रोके अगर मना करने की ताकत रखता हो और ऐसा करने से कोई बिगाड़ और फ़साद पैदाना हों जिससे उसके माल या उसके अहल व अयाल को कोई नुक़सान पहुंचे। इन अहकाम को पहुंचाने के लिए कोई तख़सीस नहीं हाकिम हो या आलिम ख़लीफ़ा (हाकिमे वक़्त) हो या आलिम रईयत का कोई फ़र्द हो हमने बदी के साथ इल्म और उसके कतई तौर पर आगाही का जो शर्त लगायी है उस की बुनियाद यह है कि बग़ैर इल्म गुनाह में मुब्तला हो जाने का अंदेशा है इस लिए कि बदी करने वाला महफ़ूज़ नहीं कि उसने जो गुमान किया है मुमकिन है कि हक़ीक़त उसके ख़िलाफ़ हो। अल्लाह तआला का इरशाद है मुसलमानों! बहुत बद गुमानी करने से बचो बेशक बाज़ बद गुमानी गुनाह है।

अल्लाह तआला का इरशाद है

तर्जमा:—ऐ ईमान वालों बहुत बदगुमानी से बचो बेशक बाज़ बदगुमानी गुनाह है।

पर्दादरी

किसी पर जो बात पोशीदा है उस का इज़हार उस पर वाजिब नहीं क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है: टोह में मत रहा करो। बदी से रोकने वाले का फ़र्ज़ है कि जो बदी ज़ाहिर में हो सिर्फ़ उसी को दूर करे और उसे तर्क करने की तलक़ीन करे, जो बदी पोशीदा है उसे पर्दे ही में रहने दे।

मना करने पर कुदरत

नेकी का हुक्म करने के लिए ताक़त की शर्त इस लिए लगायी गयी है कि रसूलुल्लाह का इरशाद है: अगर किसी क़ौम में कोई शख़्स गुनाह [illegible] और लोग उसके बदलने की कुदरत रखते हों और उसको न बदलें (न रोकें) तो अल्लाह तआला की तरफ से तौबा करने से पहले ही अज़ाब नाज़िल हो जाता है। इस हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने कुदरत व ताक़त की क़ैद (शर्त) लगायी है और कुदरत उस वक़्त हासिल होती है जब नेक लोगों (अहले सलाह) का ग़लबा हो, हाकिम आदिल हो और अहले ख़ैर की मदद भी हासिल हो लेकिन ऐसी हालत में जब कि जान का ख़तरा हो या माल का ज़रर हो तो बाज़दाश्त वाजिब नहीं है।

अल्लाह तआला का इरशाद है :

तर्जमा:—अपने हाथों से अपने आपको हलाकत में न डालो।

दूसरी आयत में है:

तर्जमा:—खुदकुशी न करो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अपने आप को बेइज़्ज़त करना मोमिन के लिए ज़ेबा नहीं। सहाबा कराम ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह कोई ख़ुद अपने को कैसे बेइज़्ज़त करता है? फ़रमाया ऐसी बात के दर पै न हो जिस की उसको ताक़त न हो। हुजूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया है। जब तुम ऐसी बात देखो जिस के बदलने पर तुम क़ादिर ने हो तो तुम सब्र करो यहां तक कि अल्लाह तआला ही उसे बदल दे, क्योंकि वही उसे बदल सकता है।

पस जब किसी पर यह साबित हो जाये कि मना करने की कुदरत नहीं रखता तो उस पर मना करना वाजिब नही, ख़ौफ़ के ग़ालिब होने पर यह सोचना कि मना करना जायज़ है या नहीं। तो हमारे नज़दीक मना करना जायज़ है बल्कि अगर मानेअ़ उलूल अज़्म और साबिर है तो और अच्छा है कि इस सूरत में मना करना जिहाद की तरह है। अल्लाह तआ़ला ने लुक़मान के क़िस्से में फ़रमाया है।

तर्जमाः—अच्छाई का हुक्म दो, बुरी बात से रोको और जो कुछ तुम को दुख पहुंचे उस पर सब्र करो।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा को हुक्म दियाः ऐ अबू हुरैरा! नेकी का हुक्म करो और बदी से बाज़ रखो और जो मुसीबत आये उस पर सब्र करो। जाबिर हाकिम के सामने या कलिमए कुफ़्र के ग़लबा के वक़्त ईमान का कलिमा ज़बान पर लाना रवा है इन दोनों मक़ामात पर इज़हारे हक़ करने पर फुक़हा का इत्तेफ़ाक़ है इख़्तेलाफ़ के मवाक़ेअ़ इससे अलग हैं।

मना करने वालों के गरोह

अम्र मुनकर से रोकने वाले तीन किस्म के होते है [illegible]यह तीन गरो[illegible]) अ[illegible]ल बादशाह और हाकिम जो मना करने की ताक़त और कुदरत रखते हैं [illegible]) जबान से [illegible] करने [illegible]ाले यह उलमा होते हैं (3) दिल से बुरा जानने वाले यह आम लोग है। [illegible] अबू सईद[illegible] खुदरी रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम [illegible] फ़रमायाः अ[illegible]र तुममे[illegible] कोई शख़्स ख़िलाफ़े शरअ़ बात देखे तो उसे [illegible] से रोक [illegible]सा न[illegible] कर सके तो [illegible]बान से उसको रोके और अगर ऐसा भी न कर[illegible]सके तो दिल से उसे बुरा[illegible] जाने [illegible]ह ज़ईफ़[illegible]ान ईमान है (ईमान का कमज़ोर तरीन पहलू) बाज़[illegible] सहाबा का [illegible]ौल है कि[illegible] अगर क[illegible] कोई अम्र ममनूअ देखे और उसको रोकने (मना) की त[illegible]क़त न [illegible]खता हो त[illegible] तीन मरतबा कहः इल[illegible] बिला शुबा यह बुरा काम है अगर ऐसा कह देगा[illegible] बिल मारूफ और नही अनिल मुनकर का सवाब उसको मिलेगा।

ज़न्ने ग़ालिब

अगर इस बात का ग़[illegible]ालिब है कि मना करने से भी बुराई दूर न होगी और बुराई करने वाला उस पर जमा रहेगा तो ऐसी सूरत में उसे मना करना चाहिए कि नहीं? इस सिलसिला में इमाम अहमद रहमतुल्लाह अलैह से दो कौल मरवी हैं एक से वुजूब साबित है क्योंकि मुमकिन है मना करने से वह बाज़ आ जाये उसके दिल में नरमी पैदा हो जाये उसको अल्लाह की तरफ़ से तौफ़ीक़ मिल जाये, मना करने वाले की सच्चाई की बरकत से उसको हिदायत मिल जाये और वह अपने बुरे अमल से बाज़ आ जाये पस गुमान मना करने की राह में हाएल नहीं।

दूसरी रिवायत में है कि जब तक इस बात का यक़ीने कामिल न हो कि मना करने से बुराई दूर हो जायेगी उस वक़्त तक मना करना वाजिब नहीं क्योंकि रोकने का मक़सद ही यह है कि बुराई दूर हो जाये पस अगर क़वी गुमान है कि बुराई दूर न होगी तो तर्के नसीहत औला है।

अम्र बिल मारूफ और नही अनिल मुनकर की शरायत

अम्र बिल मारूफ और नही अनिल मुनकर की शरायत पांच हैं।

1–जिस नेकी का हुक्म करता है और जिस बदी से रोकता है उसका ख़ुद आलिम हो

2–अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल करने दीन को क़वी करने और अल्लाह का बोल बाला करने के लिए हो दिखावट, शोहरत और अपने नफ़्स की बेजा तारीफ़ मक़सूद न हो अगर मना करने वाला सच्चा और मुख़लिस होगा तो अल्लाह की तरफ़ से उसकी मदद होगी तौफ़ीके ख़ुदावन्दी शामिले हाल होगी। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि: अगर तुम अल्लाह के दीन की हिमायत करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को जमा देगा। फिर इरशाद फ़रमाया अल्लाह परहेज़गारों और एहसान करने वालों की मदद करता है लिहाज़ा पस जब तुम शिर्क से बचोगे और इससे बाज़ रखने में लोगों का दिखावा छोड़ दोगे और इख़लास के साथ अमल करोगे तो तुमको कामयाबी हासिल होगी इसके बर अक्स किया तो बेइज़्ज़ती, रूसवाई ,जग हसाई और बुराई अला हालेही बाक़ी रहेगी बल्कि इसमें बराबर इज़ाफ़ा होता रहेगा, उसका ग़लबा होगा और अहले मआसी उसकी तरफ़ दौड़ेंगे। अल्लाह तआला की मुख़ालिफ़त, ना फ़रमानी , ममनूआत के इरतिकाब पर जिन्न व इन्स के शयातीन इत्तेफ़ाक़ करेंगे।

3–अम्र व नही नरमी और मोहब्बत के साथ हो [illegible] खुल्की और सख़्ती [illegible] साथ न हो ताकि नेक मक़सद हासिल हो और बुराई करने वाले को शै[illegible]न के चंगुल से आज़ा[illegible] हासिल हो जो रब की ना फ़रमानी को उस की नज़र में आरास्ता कर [illegible] लाया और [illegible] कर[illegible] वाले की आंखों पर पर्दा डाल दिया। इससे शैतान का मक़सद सिर्फ़ यह [illegible] कि उस गुन[illegible]गार को तबाह कर दे और दोज़ख़ में पहुंचा दे अल्ल्लाह तआला का इरशाद है। शै[illegible]न अप[illegible] गरोह वालों को दावत देता है कि वह दोज़ख़ी [illegible] जायें।

अल्लाह त[illegible]ला आंहज़रत सल्लल्ला[illegible] अल[illegible] वसल्लम [illegible] ख़िताब करके फ़रमाता है:–

अल्लाह की [illegible]तनी रहमत है कि आप उनके [illegible] हैं और अगर आप बदखुल्क़ और सख़्त दिल होते त[illegible] यक़ीनन यह लोग [illegible]प के गिर्द [illegible] से [illegible]गन्दा हो जाते है।

अल्लाह तआल[illegible] [illegible]रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम को पैग़म्बर बना कर फ़िरऔन के पास भेजा [illegible] फ़रमाया।

इससे नरमी से बात [illegible] [illegible]यद वह नसीहत क़बूल कर ले या (या अल्लाह की ना फरमानी से) डर जाये।

हज़रत ओसामा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हों की रिवायत करदा हदीस में है हुजूर ने फ़रमाया कि जब तक किसी में यह तीन बातें न हों, अच्छाई का हुक्म देना और बुरी बातों से रोकना उसके लिए ज़ेबा नहीं। वह तीन ख़सलतें यह हैं कि जिस बात का हुक्म करे ख़ुद उस का आमिल हो, जिस बुरी बात से मना करे उस से अच्छी तरह वाक़िफ़ हो और जो कुछ कहे नरमी और शफ़क़त के साथ कहे।

4–अम्र व नही नरमी के साथ करे ,वह साबिर हो ,बुर्दबार कुव्वते बर्दाश्त का मालिक हो, मुतवाज़ेअ ख़ुश ख़ुल्क़ और नर्म मिज़ाज का मालिक हो, अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर क़ाबू रखता हो, तबीब हो ताकि बीमार का इलाज कर सके, दानिशमन्द होता कि उसकी दीवानगी दूर कर सके, पेशवा और रहनुमा हो। अल्लाह तआला का इरशाद है कि हम ने एक जमाअत बनाई जो हमारे हुक्म के मुताबिक़ करती है।

तर्जमा:—जब उन्होंने अपनी क़ौम की अज़ीयतों के बरदाश्त करने पर अल्लाह के दीन की नुसरत और उसके ग़लबा और उस पर क़ायम रहने की ख़ातिर सब्र किया तो अल्लाह ने उनको रहनुमा हिदायत करने वाले, दीन के हकीम और मोमिनों का सरदार बनाया।

हज़रत लुक़मान के क़िस्से में अल्लाह तआला फ़रमाया कि: अच्छे काम का हुक्म दे, बुरी बात से रोक, जो कुछ तुझे (उसके बदले में) दुख़ पहुंचे उस पर सब्र कर यह बड़े हौसला का काम है।

5—जिस नेक काम की तलक़ीन करे ख़ुद भी उस पर कारबन्द हो और जिस मुनहयात (ममनूआत) से दूसरों को रोके ख़ुद भी उनसे बचे ताकि दूसरे लोग अपने फ़ेअ़ल के लिए उसको दलील न बनाए और वह अल्लाह के नज़दीक ज़लील और क़ाबिले मलामत न ठहरे।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है—

तुम दूसरों को नेकी का हुक्म देते हो मगर अपने आप को भूल जाते हो हालांकि तुम किताब (इलाही) पढ़ते हो क्या इतना भी नहीं समझते?

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत कर्दा ह[illegible] में आया है कि हुज़ूरे [illegible]क़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मैंने शबे मेराज [illegible] कुछ लोग देखे जिन[illegible] होंठ कैंचियों से काटे जा रहे थे, मैंने जिब्रील से कहा कि यह कौन लो[illegible] हैं? जिब्रील [illegible] कहा [illegible] यह आप की उम्मत के ख़तीब है जो दूसरो को नेकी का हुक्म देते [illegible] मगर अपने [illegible]प [illegible] भूल जाते थे हालांकि वह किताब (इलाही) पढ़ते थे।

एक शायर का क़ौल है

जि[illegible]त को तू [illegible] कर[illegible] है उसससे [illegible]सरों को न रोक
अगर ऐ[illegible]ा करेगा त[illegible] तेरे [illegible] की बात होगी

हज़रत क़ताद[illegible] फ़रमाते [illegible] कि एक [illegible]तबा लोगों [illegible] मुझ से [illegible]ा कि तौरैत में आया है कि ऐ आदम के बेटे तू [illegible] या[illegible] दिलाता है और ख़ुद को भूल जाता [illegible], दूसरो को मेरी तरफ़ बुलाता है और ख़ुद मुझसे भा[illegible] तेरा यह डराना बेकार है इस आख़िरी फ़ेक़रे से मुराद यह है कि जो दूसरों को अच्छे काम कर[illegible]ा हुक्म देता है और बुरी बात से रोकता है मगर अपनी ज़ात को छोड़ देता है उसका [illegible]सीहत करना बेकार है अल्लाह तआला बुज़ुर्ग व बरतर है इसे ख़ूब जानता है।

अम्र व नही तन्हाई में करना बेहतर है

अगर मुमकिन हो तो अम्र व नही तन्हाई में करे क्योंकि तन्हाई में नसीहत का दिल पर ज़्यादा असर होता है और आदमी बुरी बातों से बच जाता है। हज़रत अबू दरदा फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी को अलाहदगी में नसीहत करता है वह उसे संवारता है और जो लोगों के सामने नसीहत करता है वह गोया उसका ऐब बयान करता है।

अगर अलाहदगी में नसीहत करने का असर न हो तो ऐसे शख़्स से खुल्लम खुल्ला नसीहत करना चाहिए और इस सिलसिला में दूसरे लोगों से भी मदद ले, अगर यह सूरत भी कारगर न हो तो फिर हुकूमत के आदमियों से मदद ले बहरहाल ग़ैर मशरूअ़ कामों से मना करने का काम किसी तरह न छोड़े। जिस क़ौम ने यह रोक टोक ख़त्म कर दी और इस की तरफ़ से ग़ाफ़िल

हो गयी अल्लाह ने उसकी मज़म्मत की है। फ़रमाया है कि जो लोग बुरे काम करते थे उनसे एक दूसरे को नहीं रोकते थे वह यह बुरी हरकत करते थे।

तर्जमाः–जो लोग बुरे काम करते थे और आपस में एक दूसरे को मना नहीं करते थे वह बहुत ही बुरा काम करते थे। दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया है।

दरवेशों और आलिमों ने लोगों को झूठ बोलने और हराम खाने से मना क्यों नहीं किया, उनका ऐसा करना बहुत ही बुरा और क़बीह था।

यानी उलमा, मशाइख़ और वाएज़ो ने इनको बेहयाई की बातें कहने, हराम खाने और गुनाह के काम करने से क्यों नही रोका?

रिवायत यह है कि अल्लाह तआला ने हजरत यूशअ बिन नून पर वही नाज़िल फ़रमायी कि "मैं तुम्हारी क़ौम में से चालीस हज़ार नेकों और साठ हजार बदी करने वालों को हलाक करूंगा" हजरत यूशअ बिन नून ने अर्ज़ किया, बुरे तो ख़ैर अपने किये की सज़ा पाते हैं लेकिन नेकों को हलाक करने की क्या वजह है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस लिए कि मेरी नाराज़गी पर नाराज़ नहीं हुए और बदों के साथ खाने पीने में बराबर शरीक रहे।

पांचवीं शर्त की मज़ीद तौज़ीह व तशरीह

हम ने तबलीग़ के सिलसिला में पांचवीं शर्त के तहत बयान किया है कि बुराई से रोकने और नेकी की हिदायत करने वालों के लिए ज़रूरी है कि ख़ुद भी वह उन नेकियों का हामिल हों जिनकी वह तबलीग़ करते हैं लेकिन हमारे बुज़ुर्गों और मशाइख़ का कहना है कि अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर हर शख़्स पर वाजिब है ख़्वाह वह फ़ासिक़ हो सालेहुल आमाल!! इसके बारे में साबिक़ा आयात व अहादीस में जो हुक्म बिला तफ़रीक़ आया है यानी आम हुक्म दिया गया है उस हुक्म के तहत में यह बुज़ुर्ग यह [illegible] पेश करते है

तर्जमाः–बाज़ लोग ऐसे है जो अल्लाह तआला की रज़ा के लिए अपनी जानें बेच देते हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते है कि एक शख़्स यह आयत पढ़ रहा था मैंने कहा कि हम सब अल्लाह के लिए हैं और उस की तरफ़ लौटने वाले हैं एक आदमी उठा और अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर करने लगा उसे उसी वक़्त शहीद कर दिया गया।

अबू उमामा फ़रमाते है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने "बेहतरीन जिहाद" ज़ालिम, हाकिम, बादशाह के सामने हक़ बात कहना कहा है हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमायाः "क़यामत के दिन तमाम शहीदों में अफ़ज़ल हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब होंगे और वह आदमी होगा जिस ने एक ज़ालिम बादशाह के सामने खड़े हो कर उसको भलाई का हुक्म दिया और बुराई से रोका और बादशाह ने उसको क़त्ल करा दिया। जिस शख़्स को बुरे कामों से रोका जाये और वह उससे बाज़ न आये तो ऐसे शख़्स के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है:

तर्जमाः–वह है जो बुराई से रूकता है और उसे इज़्ज़त पकड़ लेती है मगर बाज़ नहीं रहता एक और आयत में इरशाद है।

तर्जमाः–और जब उस से कहा जाए कि अल्लाह से डरो तो उसे इज़्ज़त, गुनाह के साथ पकड़ ले।

हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं अल्लाह के नज़दीक सब से बड़ा गुनाह यह है कि किसी बन्दे

से कहा जाए कि अल्लाह से डरो और वह जवाब दे कि तुम अपनी तो ख़बर लो यह हुक्म सब के लिए आम है।

हज़तर अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छी बात का हुक्म दो ख़्वाह खुद अमल न किया हो और बुरी बात से रोको ख़्वाह ख़ुद न रूके हो क्योंकि कोई शख़्स गुनाह से ख़ाली नहीं है ख़्वाह वह मआसियत ज़ाहिर में हो या बातिन में। लिहाज़ा अगर हम यह कहें कि बराई की मज़म्मत का हक़ सिर्फ़ उसी को है जो बुराई से इजतेनाब करता है तो अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर दुश्वार हो जाएगा इस तरह नसीहत करने का हुक्म ही मिट जाएगा और नाबूद हो जाएगा।

नेक व बद आमाल

जो बात किताब (कुरआन) व सुन्नत (अहादीस) और अक़्ल के मवाफ़िक़ हो वह मारूफ़ (अच्छी) है और जो बात उसके ख़िलाफ हो वह मुनकर है और बदी है मारूफ व मुनकर की दो किस्में हैं एक वह जिसका वजूब या हुरमत अवाम व ख़्वास सब जानते हैं जैसे पांचों वक़्त की नमाज़, रमज़ान के रोज़े, ज़कात, हज वग़ैरह की फ़र्ज़ीयत इस सब से वाक़िफ़ हैं और ज़िना शराब नोशी, चोरी, रहज़नी, सूद ख़्वारी, डाका ज़नी की हुरमत (हराम होना) ऐसे गुनाहों से रोकना अवाम की ज़िम्मा भी उसी तरह है जैसे ख़्वास के ज़िम्मे।

दूसरी क़िस्म वह है जिसे ख़्वास के सिवा अवाम नहीं जानते मसलन उन बातों पर एतक़ाद जो बारी तआला के बारे में जाइज़ और ना जाइज़ हैं। इस किस्म में अम्र बिल मारूफ ख़ास उलमा का काम है और बातें जो ममनूअ हैं अगर कोई आलिम अवाम को उनसे मना करे तो उन्हें अच्छी तरह खबरदार कर दे। आम आदमी को लाज़िम है अगर वह कुदरत रखता है तो उस से बाज़ रहे, आम आदमी को जाइज नहीं कि आलिम से मालूमात हासिल करने से पहले ऐसे उमूर का रद या इनकार करे।

जिन उमूर में उलमा और फुकहा का इख़तलाफ़ है और इजतेहाद की गुंजाइश हो उनका रद या इनकार भी जाइज़ नहीं जैसे इमाम अबू हनीफा के मुक़ल्लिद का तहबन्द पहनना और बग़ैर वली के औरत का निकाह करना जैसा कि इमाम अबू हनीफा के मज़हब का मशहूर मसलक है तो इमाम अहमद और इमाम शाफई के मुक़ल्लिद के लिए इसके ख़िलाफ आवाज़ उठाना जाइज़ नहीं। इमाम अहमद फरमाते हैं की किसी फ़कीह के लिए जाइज़ नहीं है कि वह लोगों को अपने मज़हब पर उभारे और (इस सिलसिला में) उन पर सख़्ती करे। हक़ीक़त में मुख़ालफ़त की आवाज़ सिर्फ़ इस सूरत में उठाना दरूस्त है जब इजमाअ (उलमा) के ख़िलाफ़ हो रहा हो इमाम अहमद फ़रमाते हैं कि मुख़तलिफ फ़ीह मसाइल में मना करना जाइज़ है। इस सिलसिला में मैमूनी की रिवायत में आया है कि अगर कुछ लोग शतरंज खेल रहे हों और कोई शख़्स उधर से गुज़रे तो उनको मना करे और रोके और ज़ाहिर है कि इमाम शाफ़ई के नज़दीक शतरंज खेलना जाइज़ है।

मना करने के आदाब

हर मोमिन पर वाजिब है कि बहरहाल आदाबे मज़कूरा पर अमल करे और तर्क न करे। मरवी

है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया है पहले बा अदब हो जाओ फिर इल्म हासिल करो। अबू अब्दुल्लाह बलख़ी फ़रमाते हैं कि अदब पहले इल्म बाद में। अब्दुल्लाह बिन मुबारक फरमाते हैं कि जब मुझ स बयान किया जाता है कि फ़लां आलिम को तमाम अगलों और पिछलों के बराबर इल्म है तो मुझे उससे मुलाक़ात न होने का अफ़सोस नहीं होता है लेकिन अगर मुझे मालूम हो कि फ़लां शख़्स को अदबे नफ़्स हासिल है तो मुझे उससे मिलने की आरज़ू होती है और मुलाक़ात न होने का अफ़सोस।

इस मौक़ा पर एक मिसाल पेश की जाती है। एक शहर है जिसके पांच क़िले हैं एक सोने का, दूसरा चांदी का, तीसरा लोहे का, चौथा पुख़्ता ईंटों का और पांचवां कच्ची ईंटों का। जब तक हिसार वाले कच्ची ईंटों के क़िला की हिफ़ाज़त करेंगें तब तक दुश्मन दूसरे क़िलों की तरफ़ राग़िब नहीं होगा लेकिन अगर अहले क़िला उसकी हिफ़ाज़त छोड़ देगें तब दुश्मन दूसरे क़िलों की लालच करने लगेगा यहां तक की सारे क़िलों को वीरान कर देगा। यही मिसाल ईमान की है। इस के पांच क़िले हैं। पहला क़िला यक़ीन का है, दूसरा इख़लास का, तीसरा फ़राइज़ का, चौथा ईमान व सुनन का और आख़िरी क़िला हिफ़्ज आदाब'व (मुस्तहब्बात की पाबन्दी) का। जब बन्दा मुस्तहब्बात (आदाब) की पाबन्दी तर्क कर देगा तब शैतान सुनन व ईमान, फिर फ़राइज़ फिर इख़लास और फिर यक़ीन पर हमला कर देगा। लिहाज़ा हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह वुज़ू, नमाज़, ख़रीद व फरोख़्त ग़रज़ हर बात में मुस्तहब (आदाब) का पाबन्द रहे।

(मुनदर्जा बाला सतूर में) हमने अपनी मुराद, अपने पसंदीदा मक़सद और आदाबे शरीयत का खुलासा बयान कर दिया इस मौज़ू पर हमारे बयान का आख़िरी हिस्सा यही है पांचो इबादतों के जुमला अहकाम की तामील से हर मुसलमान पक्का मुसलमान बन जाता है और इन आदाब को एख़तियार करने से सुन्नत का पैरो और आसारे सानेअ का तालेअ बन जाता है और इस सूरत में उसको कुछ मारफ़त हासिल हो जाती है। बक़िया मारफ़त सानेअ का ताल्लुक तो क़लबी आमाल से है और इन (क़लबी आमाल) का जिक्र हमने आख़िर (मज़मून) में इस लिए किया है कि दीने इस्लाम में दाख़िल होने में दुश्वारी न हो। इंसान जब ज़ाहिरी तौर पर इस्लाम का लिबास पहन लेगा तो फिर हम उससे कहेंगे ईमान का बातिनी लिबास पहनने के लिए कहेंगे (मारफ़ते ख़ालिक़ के लिए क़लबी आमाल के लिए रुजू करेंगे)

सानेअ आलम की मारफ़त

आयात और दलाइल की रौशनी में इख़तेसार के साथ अल्लाह तआला की मारफ़त यह है कि इन चीज़ो की यक़ीन और उन की मारफ़त हासिल हो कि अल्लाह एक ही है, अकेला है, तन्हा है, बाप नहीं, बेटा नहीं, उसका कोई हमसर नहीं, कोई चीज़ उसकी मिसाल नहीं, वह समीअ है बसीर है, न उसकी कोई नज़ीर है न कोई उसका मददगार है और न कोई शरीक, न कोई पुश्त पनाह है और न कोई उसका वज़ीर है, कोई बराबर का मुख़ालिफ नहीं, कोई सलाहकार नहीं वह जिस्म नहीं जिसे छुआ जा सके, जौहर नही कि उसे समझा जाये अरज़ नहीं कि उसको जिस्म की एहतियाज हो न उसके अजज़ा है न ज़राये , न तालीफ़, है न माहीयत है, न हद है।

हम्द व सना

वही अल्लाह है जिसने आसमान को ऊंचा किया और ज़मीन को बिछाया, न वह तबीयत **आम्मा है, न तालेअ है , न वह हर चीज़ पर छा जाने वाला अंधेरा है और न जगमगाती** रौशनी **है, उसको हर चीज़ का इल्मे हुजूरी हासिल है, छूये बग़ैर वह हर चीज़ का मुशाहिदा** करता है, **ग़ालिब है तसल्लुत वाला है और सब पर हाकिम व क़ादिर है, रहमत करने वाला गुनाहों** को **बख़्शने वाला है और पर्दापोश है, वही इज़्ज़त देता है, वही मदद करता है बहुत मेहरबान** है, **ख़ालिक़ है, नीस्त से हस्त करने वाला है सबसे अव्वल है और सब से आख़िर है, ज़ाहिर** भी है **और बातिन भी अकेला है, वही माबूद है, ऐसा ज़िंदा है जो मरने वाला नहीं बल्कि हमेशा** रहने **वाला है उसे फ़ना नहीं उसकी बादशाहत हमेशा से क़ायम है हमेशा से है और हमेशा** रहेगा, **सबको थामने वाला है, सोता नहीं, ऐसा कुव्वत वाला जिसे कोई ज़रर नहीं पहुंचा सकता** वह **मज़बूत है उसे क़ाबू में नहीं किया जा सकता है, उसके अज़मत वाले नाम है, ज़्यादा अता** करने **वाला है, उसने तमाम मख़लूक़ को फ़ना होने का [illegible]सला कर दिया और [illegible]रमाया**

तर्जमा:—आसमान व ज़मीन पर जो कुछ है [illegible] होने वाला है सिर्फ़ तुम्हारे इज़्ज़त व करामत वाले ख़ुदा की ज़ात बाक़ी रहेगी, वह बा इतबा[illegible] उलू मुस्तवी [illegible]र्श है सारे आलम को उसकी ज़ात ने अपने अन्दर समो रखा है, उस का इल्म हर शय पर मु[illegible] है पाकीज़ा कलिमात उसी की तरफ़ चढ़ते हैं, पाकीज़ा अमल उनको ऊपर उठ[illegible] आसमान से ज़मीन तक हर अम्र की तदबीर करता है फिर हर एक चीज़ ऐसे एक दिन में जिसकी [illegible]दाद तुम्हारी गिनती के लिहाज़ से हज़ार बरस [illegible]राबर होगी [illegible]सी की तरफ लौट जायेगी, उसने तमाम मख़लूक़ को और उनके अफ़आल को पैदा किया उनके रिज़्क और उनके [illegible]यात की मुद्दत मुक़र्रर फ़रमायी, जिस चीज़ को उसने पीछे किया उसको कोई आ[illegible]स को आगे किया है उसको कोई पीछे करने वाला नहीं है वही सारी दुनिया और उसके कामों का [illegible]दा करता है अगर वह उनको ना फ़रमानी से बचा[illegible] [illegible]ता तो कोई उसके इरादे की मुख़ालिफ़त नहीं कर सकता था और अगर चाहता कि सब उ[illegible]के फरमा बरदार बन जाये तो सब फरमा बरदार हो जाते वह छुपी हुई और पोशीदा बातों को जानने [illegible] है, वह दिलों के भेदों से वाक़िफ़ है, जिसको उसने खुद पैदा किया है भला वह उससे [illegible]किस तरह से वाक़िफ़ न होगा। वह बड़ा ख़बरदार बारीक बीं है। वही हरकत देने वाला और ठहराने वाला है हम उसका तसव्वुर नहीं कर सकते और न ज़ेहन में उसका अन्दाज़ा कर सकते हैं।

उसका क़यास इंसानों पर नहीं किया जा सकता जिस चीज़ को उसने खुद बनाया उसके साथ मुशाबेहत से वह पाक है वह इस बात से बरतर है कि जिस चीज़ को उसने ईजाद किया और आलमे नीस्ती से आलमे हस्त में लाया उससे उसकी निस्बत की जाये। हर शख़्स जो कुछ करता है वह उस पर क़ाबू और कुदरत रखता है सबको उसने अपने इल्म के इहाता में रखा है और उसके शुमार में हैं।

हर एक क़यामत के दिन उसके सामने तन्हा जायेगा ताकि हर एक को उसकी सई का बदला मिल जाये, क़यामत की ग़रज़ व ग़ायत यह है कि बदकारों को उनकी बदकारी और नेको कारों को उनकी नेकी का बदला अता फरमाये। वह मख़लूक़ का मोहताज नहीं वह अपनी

मख़लूक़ को रिज़्क़ देता है वह दूसरो को खिलाता है उसे कोई नहीं खिलाता वह रोज़ी देता है उसे रोज़ी नहीं दी जाती वह पनाह देता है उसके खिलाफ़ किसी को पनाह नहीं दी जा सकती मख़लूक उसकी मोहताज है, उसने मख़लूक को इस लिये पैदा नहीं किया कि ख़ुद वह उनसे नफ़ा हासिल करे या अपने ज़रर को दफ़ा करे या किसी ने इस तख़लीक़ के लिये दरख़्वास्त की न उस के दिल में पैदा करने का कोई ख़्याल आया या कुछ सोच पैदा हुई बल्कि वह हर चीज़ से पाक ख़ालिस इरादा है उसने खुद ही इरशाद फ़रमाया और वह हर सादिक़ुल क़ौल से ज़्यादा सादिक़ुल क़ौल है

तर्जमाः—वह बुजुर्ग हस्ती मालिके अर्श है जो चाहता है करता है।

वह अकेला कुदरत रखता है आमाल को नीस्त से हस्त करने, दुख और मुसीबत को दूर करने, अशिया को बदल डालने और हालात को मुतग़य्यर कर देने की वह रोज़ाना नई शान है। जो कुछ उसने मुक़र्रर किया है उस के मुक़र्रर करदा वक़्त की जानिब वही चलाता है।

सिफ़ाते इलाही

बिला शुबा वह ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा है कुदरत के साथ कादिर है, इरादा के साथ साहबे इरादा है, बग़ैर कानों के सुनता है और बग़ैर आंखों के देखता है इल्म से इदराक करने वाला है वह कलाम के साथ मुतकल्लिम है, अम्र के साथ आमिर है और नही के साथ मना करने वाला है (नाही) और ख़बर के साथ ख़बर देने वाला है। बिला शुबा अल्लाह अपने हुक्म और फ़ैसला पर आदिल है, इनाम व अता तो महज़ उसकी मेहरबानी और एहसान है (किसी पर उस पर हक़ नहीं है) पहली बार भी वही पैदा करने वाला है और दुबारा भी वही पैदा करेगा, वही ज़िन्दगी अता करने वाला है, वही मौत देने वाला है, वह अदम से वजूद में लाने वाला और वही ईजाद करने वाला है, वही जज़ा व सज़ा देने वाला है

वह बड़ा सख़ी है, बुख़्ल नहीं करता, वह बुर्दबार है इन्तेक़ाम में जल्दी नहीं करता, याद रखने वाला है भूलता नहीं उसका इल्म उसको हाज़िर है सहव से पाक है, ख़बर रखने वाला है, ग़फ़लत से बरी है, वही रोज़ी तंग करता है वही फ़राख़ करता है हंसता है और ख़ुश होता है, मोहब्बत करता है और नापसंद करता है ना पसंद करता है और पसंद फरमाता है, राज़ी होता है और नाराज़ होता है, मेहरबानी करता है और गुनाहों को बख़्शता है वही देता है वही रोक लेता है उस के दो हाथ हैं उस के दोनों हाथ दायें हाथ हैं उसने खुद फ़रमाया है:

तर्जमाः—उसके दायें हाथ में आसमान लिपटे हुये हैं।

हज़रत इब्ने उमर से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा होकर यह आयत तिलावत फ़रमाई और फ़रमाया आसमान उसके दायें हाथ में होंगे और वह उनको इस तरह फेंक देगा जिस तरह बच्चा गेंद को फेंक देता है फिर इरशाद फ़रमायेगा मैं ही ग़ालिब हूं। रावी का बयान है कि यह फ़रमाते वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिम्बर शरीफ पर लरज़ां थे और क़रीब था की आप गिर पड़ें।

हजरत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया अल्लह तआला तमाम ज़मीन व आसमान को मुट्ठी में इस तरह पकड़ेगा की उनका कोई किनारा भी मुट्ठी से बाहर नहीं होगा। हजरत अनस बिन मालिक और हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है की हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद

फ़रमायाः इन्साफ़ करने वाले (आदिल हज़रात) क़यामत के दिन नूर के मिम्बरों पर रहमान के दाईं जानिब होंगे और उसके दोंनों हाथ दायें हैं।

अल्लाह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अपने हाथ से अपनी शक्ल पर बनाया और अदन के बाग को अपने हाथ को अपने हाथ से लगाया और तूबा का दरख़्त भी अपने हाथ से लगाया। तौरैत अपने हाथ से लिखी और हज़रत मूसा के हाथ में अपने हाथ से दी। बिला वास्ता बग़ैर किसी तर्जमान के उनसे ख़ुद कलाम फ़रमाया बंदों के दिल रहमान की दो उंगलियों में हैं वह जिस तरह चाहता है उन को फेर देता है। और जो कुछ चाहता है उनमें भर देता है। क़यामत के दिन आसमान व ज़मीन उस की मुट्ठी में होंगे जैसा की हदीस शरीफ़ में आया है अल्लाह तआला अपना क़दम जहन्नम में रखेगा तो जहन्नम के तबक़े आपस में सिमट जायेंगे और कहेंगे बस बस। उसके बाद एक कौम आग से बाहर निकलेगी अहले जन्नत अल्लाह के चेहरे को देखेंगे उस के देखने में उन को कुछ इशतेबाह नहीं होगा और न कुछ तकलीफ़ होगी। हदीस शरीफ़ में ऐसा ही आया है अल्लाह तआला उन पर जलवा अंदाज होगा और उन की तमन्नाए दीदार पूरी करेगा। अल्लाह तआला का इरशाद है

तर्जमाः नेक काम करने वालों के लिए अच्छा बदला है आर कुछ ज़्यादा भी।

बाज़ असहाब का ख़्याल है कि अलहुस्ना से मुराद जन्नत है और ज़्यादा से मुराद अल्लाह का दीदार है। एक दूसरी आयत में हैः कुछ चेहरे उस रोज़ तरो ताज़ा होंगे और अपने रब की तरफ देख रहे होंगे। फ़ैसला और जज़ा (कयामत) के दिन अल्लाह के सामने बन्दो की पेशी होगी वह ख़ुद ही उनका हिसाब लेने का ज़िम्मेदार होगा कोई दूसरा उसका ज़िम्मेदार न होगा।

सात आसमान

अल्लाह तआला ने सात आसमान एक के ऊपर [illegible] सात ज़मीने एक के नीचे दूसरी तह ब तह पैदा की हैं ऊपर की ज़मीन से निचले आसमान तक पांच सौ बरस का रास्ता है और हर आसमान से दूसरे आसमान तक भी उतना ही फ़ासला है। पानी सातवें आसमान पर है। अल्लाह तआला का अर्श पानी पर है। और अल्लाह तआला अर्श पर है उससे वरा सत्तर हज़ार हिजाब हैं यह हिजाब नूर के भी हैं और तारीकी के भी और उन चीज़ो के भी जिन से वही वाक़िफ़ है।

अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते

अर्श को उठाने वाले (फ़रिश्ते) अर्श को उठाये हुए हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है अर्श की हद है लेकिन उससे अल्लाह ही वाक़िफ़ है। फ़रिश्ते अर्श की अतराफ़ को घेरे हुए हैं। अर्श सुर्ख़ याक़ूत का है उस की वुसअत आसमानों और ज़मीनो की वुसअत के मानिन्द है। अर्श के मुक़ाबले में कुर्सी की मिसाल ऐसी है जैसे कि मैदान मे एक छल्ला पड़ा हो जो कुछ सातों आसमानों में उनके दर्मियान और उनके नीचे है और जो कुछ तहतुस्सरा में है और जो कुछ समन्दरों की गहराईयों में है अल्लाह तआला उसको जानता है वह हर बाल के निकलने और हर दरख़्त और हर खेती के उगने की जगह से वाक़िफ़ है, हर पत्ते के गिरने की जगह उसके इल्म में है और उनके पूरे शुमार को भी जानता है, पत्थर के रेज़ों, रेत और मिट्टी के ज़र्रों, पहाड़ के वज़नों से वह वाक़िफ़ है और समन्दरों की नाप उस के इल्म में है, बन्दों के आमाल और उन के भेद उन की सांसें और उन के अक़वाल को वह जानता है, हर चीज़ से वह वाक़िफ़ है इसमें कोई चीज़

उससे पोशीदा नहीं, उसके इल्म से कोई जगह ख़ाली नहीं वह मख़लूक़ की मुशाबेहत से पाक व मुनज़्ज़ा है। यह कहना जायज़ नहीं कि वह हर जगह है बल्कि यह कहा जाये कि वह अर्श पर है क्योंकि उस ने ख़ुद फ़रमाया है। अर्रहमानो अलल अर्शिस्तवा और यह भी फ़रमाया है सुम्मस्सतवा अलल अर्शिर्रहमान। उसी की तरफ पाकीज़ा अल्फ़ाज़ चढ़ते है और अच्छे आमाल उन को ऊंचा करते हैं। एक बांदी से हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि अल्लाह कहां है? उसने आसमान की तरफ़ इशारा कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके मुसलमान होने का फ़ैसला फ़रमा दिया। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में आया है हुजूर गिरामी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब अल्लाह ने मख़लूक़ को पैदा किया तो अपने ज़िम्मा एक तहरीर लिख ली और वह तहरीर उसके पास अर्श के ऊपर है और वह तहरीर यह है

तर्जमाः—बिला शुबा मेरी रहमत मेरे गज़ब पर ग़ालिब है।

हदीस शरीफ़ के दूसरे अल्फ़ाज़ इस तरह आये हैं कि "जब अल्लाह तआला तख़लीक़ को कामिल कर चुका तो उस ने अपनी ज़ात को तहरीर में लिखा कि बिला शुबा मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब से आगे है" वह तहरीर उसके पास अर्श के ऊपर है।

यह ज़रूरी है कि लफ्ज़ इस्तवा का इतलाक़ अल्लाह पर किसी तावील के बग़ैर किया जाये। इस्तवा से मुराद अर्श पर ज़ात का मुसतवी (हम[illegible]) होना ही है लेकिन यह इस्तवा उस क़ूद (बैठक) और लम्स के बग़ैर है जिसका क़ायल फिरक़ा मुजस्समा और कर्रामिया है। इसके मानी ग़लबा और तसल्लुत के नही जिसके क़ायल मुतज़ला हैं इसके माने बलंदी और उलू नहीं जिसके क़ायल अशायरा हैं ऐसे मानी न शरीअत में कहीं आये हैं न किसी सहाबी, ताबई, मोहद्दिस और सलफ़े सालिहीन में से किसी से मनकूल बल्कि उनसे सिर्फ़ लफ्ज इस्तवा का इतलाक़ मनकूल है।

अलल अर्श इस्तवा

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सलमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा ने आयत ***अर्रहमानो अलल अर्शिस्तवा*** की तशरीह में फ़रमाया वह कैफ़ियत है जो ग़ैर मनकूल है। इस्तवा (का मानी) मालूम है, इस का इक़रार वाजिब है और इन्कार कुफ़्र है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत से मुस्लिम ने (सहीह मुस्लिम में) इस हदीस को मरफ़ूअन नक़्ल किया है और फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम होने की सराहत की है। हज़रत इमाम अहमद हंबल ने अपने इन्तक़ाल से कुछ पहले फ़रमाया सिफ़ाते इलाही की ख़बरों को वैसा ही रखा जाये जैसी वह आयी हैं ऐसी तावील उनकी न की जाये कि अल्लाह की तशबीह मख़लूक़ से लाज़िम आये न ऐसी तौज़ीह की जाये कि अल्लाह का सिफ़ात से ख़ाली होना लाज़िम आये। बाज़ रिवायतों में इमाम अहमद का यह क़ौल भी आया है कि मैं साहबे कलाम नहीं और न इन मक़ामात के मुताल्लिक़ अल्लाह की किताब, हदीसे रसूल, अक़वाले सहाबा व ताबाईन (रज़ियल्लाहो अन्हुम अजमईन) में किसी जगह मुझे कलाम मिलता है इस के अलावा भी कलाम (इस मौज़ूअ पर) अच्छा नहीं, अल्लाह की सिफ़ात में चूं व चरां न की जाये न बतौर शक ऐसा कहा जाये। हज़रत इमाम अहमद ने एक और जगह भी कहा है हम ईमान रखते हैं कि अल्लाह अर्श पर है जैसी और जिस

तरह की उसकी मशीयत है न कोई हद है कि कोई हद बन्दी करने वाला उसकी हद बन्दी कर सके न कोई ऐसी सिफ़त है कि बयान करने वाला उस को बयान कर सके क्योंकि सईद बिन मुसैइब ने काब अहबार का कौल नक्ल किया है कि अल्लाह ने तौरैत में फ़रमाया है "मैं अल्लाह हूं अपने बन्दों के ऊपर मेरा अर्श तमाम मख़लूक़ से ऊपर है और मैं अर्श के ऊपर हूं अपने बन्दों का इन्तज़ाम मैं अर्श के ऊपर से करता हूं मेरे बन्दों की कोई चीज़ मुझसे पोशीदा नहीं है"। अल्लाह का अर्श पर बग़ैर किसी कैफ़ियत के होना हर उस किताब में मज़कूर है जो अल्लाह की तरफ से किसी पैग़म्बर पर नाज़िल हुई है।

एक बात यह भी है कि अर्श हो या ग़ैर अर्श अल्लाह को मख़लूक़ पर उलूए कुदरत, तसल्लुत और ग़लबा हमेशा से हासिल है। इस लिए "इस्तवा अलल अर्श" को ख़ास तौर पर इस मानी पर महमूल नहीं किया जायेगा पस इस्तवा अल्लाह की ज़ाती सिफ़त है उसकी ख़बर सराहत और ताकीद सात आयतों में और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस में आयी है। इस्तवा अल्लाह की सिफ़ते लाज़िमा है और उसके लिए मौजू है जैसे हाथ, चेहरा, आंख, समअ, बसरे, हयात, कुदरत, मोही और ममीत होना उसकी सिफ़ते लाज़िमा में से है उसी तरह एक यह भी सिफ़ते लाज़िमा है) हम कुरआन और हदीस से बाहर नहीं जायेंगे, हम कुरआन और हदीस पढ़ते हैं और जो कुछ इन दोनों में है हम उस पर ईमान रखते हैं पस सिफ़ात की कैफ़ियात को हम अल्लाह के सुपुर्द करते हैं।

हज़रत सुफियान बिन उईनिया रज़ियल्लाहो अन्हो ने [illegible] या कि अल्लाह ने अपनी ज़ात की जो सिफ़त अपनी किताब में बयान कर दी है वह वैसा ही है, उस की तफ़सीर बस उसका पढ़ना है इसके अलावा उसकी तफ़सीर कोई [illegible] हम इसके अलावा किसी और बात के मुकल्लफ़ भी तो नहीं है क्योंकि वह ग़ैब है उस के फ़हम में अ[illegible] की [illegible]इश नहीं है। हम अल्लाह तआला से उफ़्व व आफ़ियत के ता[illegible] है और उस की ज़ा[illegible]सिफ़ात के मुताल्लिक़ हम ऐसी बात कहने से जिसकी न खुद उसने इत्तेला दी है और न उसके रसूल ने, हम उसकी पनाह मांगते हैं।

अल्लाह तआला हर रात को दुनिया के आसमान पर जिस तरह और जिस कैफ़ियत के साथ चाहता है उतरता है और [illegible] बन्दों में से जिस गुनहगार, ख़ताकार, मुजरिम नाफ़रमान को पसन्द करता है और चाहता है बख़्श देता है। वह बाबरकत बुजुर्ग आली मरतबत है और सबसे बाला है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस के अच्छे नाम हैं।

आसमाने दुनिया पर अल्लाह के नुजूल के यह माना नहीं है कि उस की रहमत या उस का सवाब उतरता है , यह मुतज़ला और अशायरा का खुद साख़्ता दावा है। हज़रत उबादा बिन सामत से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अल्लाह बुजुर्ग व बरतर हर रात को जबकि आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है, आसमाने दुनिया पर नुजूल फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है कि क्या कोई मांगने वाला है कि उसका सवाल पूरा किया जाये? क्या कोई गुनाहों की माफ़ी का तलबगार है कि उस को माफ़ किया जाये? क्या कोई क़ैदी है कि उस की कैद ख़त्म कर दी जाये?। यह निदा सुबह की नमाज़ तक रहती है फिर हमारा रब ऊपर चला जाता है। हज़रत उबादा बिन सामत की दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं है कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह [illegible] व [illegible] जब आख़िरी

हिस्सा बाक़ी रह जाता है आसमान से दुनिया की जानिब नुज़ूल फ़रमाता है और कहता है कि क्या मेरे बन्दों में से कोई बन्दा है जो मुझ से मांगे और मैं उसकी दुआ क़बूल करूं क्या अपने नफ़्स पर कोई ज़ुल्म करने वाला है जो मुझे पुकारे और मैं उसे बख़्श दूं, क्या ऐसा शख़्स है जिस का रिज़्क़ तंग कर दिया गया हो और वह मुझ से (फ़राख़ी) तलब करे और मैं उसका रिज़्क़ उस की जानिब लौटा दूं, क्या कोई क़ैदी है जो मुझे पुकारे और मैं उस को क़ैद से आज़ाद कर दूं। ऐसा तुलूए फ़ज्र तक रहता है फिर अल्लाह अपनी कुर्सी पर उलू फ़रमाता है।

पिछली रात की नमाज़ इब्तदाई रात की नमाज़ से क्यों अफ़ज़ल है?

हज़रत अबू हुरैरा , हज़रत जाबिर, हज़रत अली, हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद, हज़रत अबू दर्दा, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत आईशा से यह हदीस रिवायत करते हैं (ब इख़तेलाफ़े अल्फाज़) इसी लिए यह सब हज़रात पिछली रात की नमाज़ को इब्तेदाई रात की नमाज़ से अफ़ज़ल क़रार देते थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया "अल्लाह तआला निस्फ़ शाबान की रात को आसमान से दुनिया की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाता है और उस शख़्स के सिवा जिस के दिल में कीना या शिर्क हो हर शख़्स को बख़्श देता है। हजरत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो का क़ौल है कि मैंने खुद सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे, जब रात का निस्फ़ अव्वल हिस्सा गुज़र जाता है तो अल्लाह तबारक व तआला आसमान दुनिया की तरफ़ नुज़ूल फरमाता है और फ़रमाता है कि क्या कोई इस्तिग़फार करने वाला है कि मैं उसके गुनाह बख़्श दूं , क्या कोई साएल है कि मैं उस को अता करूं, क्या कोई तौबा करने वाला है कि मैं उसकी तौबा कबूल करूं तुलूए फ़ज्र तक यही कैफ़ियत रहती है।

हज़रत इसहाक़ बिन राहविया से कहा गया कि यह वह हदीसे हैं जो आप बयान करते हैं कि "अल्लाह तआला आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाता है फिर सऊद करता है और हरकत करता है"" इसहाक़ ने साइल से कहा किया तुम क़ाएल हो कि अल्लाह तआला बग़ैर हरकत के नुज़ूल व सऊद पर क़ादिर है साइल ने कहा जी हां यह सुन कर इसहाक़ ने कहा फिर तुम हरकत करने से क्यों इनकार करते हो।

हजरत यहया बिन मोईन ने कहा कि अगर कोई जहमी (जहम बिन सफवान मुतज़ली का पैरो) तुम से कहे कि मैं ऐसे रब को नहीं मानता जो नुजूल करता है तो तुम उससे कहो कि मैं ऐसे रब पर ईमान रखता हूं कि जैसा चाहता है वह करता है। हज़रत शरीक बिन अब्दुल्लाह से कहा गया कि हमारे पास कुछ ऐसे लोग हैं जो इन अहादीस का इनकार करते हैं तो शरीक़ ने की कि हमारे पास सलात, सियाम, ज़कात और हज के नाम कौन लाया है? क्या यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मन्कूल नहीं हैं हमने तो उन्हीं अहादीस से अल्लाह को पहचाना है।

कुरआन मजीद अल्लाह की किताब है

हमारा अक़ीदा है कि कुरआन मजीद अल्लाह का कलाम है, अल्लाह की किताब है, अल्लाह का ख़िताब है, और वह वही है जो अल्लाह ने हज़रत जिब्रीइल अलैहिस्सलाम के ज़रिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाई थी (जिस को लेकर हज़रत जिब्रीइल रसूलुल्लाह पर नाज़िल हुए थे) अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाता है।

तर्जमा:—रूहुल अमीन ने उसको आप के दिल पर उतारा वाज़ेह अ़रबी ज़बान में ताकि आप लोगों को डराने वाले हों।

रसूलुल्लाह ने अल्लाह तआला के उस हुक्म की तामील में यह कुरआन अपनी उम्मत को पहुंचा दिया जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है।

तर्जमा:—ऐ पैग़म्बर जो कुछ आप के रब की तरफ़ से आप पर उतारा गया उस को पहुंचा दीजिये।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मौक़िफे हज में लोंगों के सामने अपने आप को पेश करते हुए फरमा रहे थे "कोई शख़्स है जो मुझ अपनी क़ौम के पास ले जाए कि कुरैश ने तो मुझे कलामुल्लाह पहुंचाने से रोक दिया है।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

तर्जमा:—अगर कोई मुशरिक तुम्हारी पनाह में आ जाए तो तुम उसको पनाह दो ताकि वह (इस त़रह पनाह में आकर) अल्लाह का कलाम सुन ले।

कुरआन शरीफ़ अल्लाह का कलाम है, मख़लूक़ नहीं जिस त़रह भी इसको पढ़ा जाए लिखा जाए और जिस तरह भी इस की तिलावत की जाए और जैसा भी क़ारियों की क़िरत, तलफ़्फ़ुज़ करने वालों के तलफ़्फ़ुज़ और हाफ़िज़ों की याददाश्त से इस में इख़तेलाफ़ हो (जब भी) बहरहाल वह अ़ल्लाह का कलाम है और अल्लाह की सिफ़ाते जातिया में से है, न इस में हुदूस़ है और न तग़य्युर व तबद्दुल है न इस में कमी व बेशी होती है न किसी इन्सान की तालीफ़ और तसनीफ़ का इस में दख़ल है अल्लाह ही की त़रफ़ से इस के नुजूल का आग़ाज़ हो और उसी की तरफ़ से उसका हुक्म लौटेगा। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस़ में आया है कि हुजूर ने फ़रमाया, कुरआन की फ़ज़ीलत तमाम किताबों पर ऐसी ही है जैसी अल्लाह की तमाम मख़लूक़ पर है। अल्लाह ही की त़रफ़ से नुजूले कुरआन का आग़ाज़ हुआ और उसी की त़रफ़ से उसके हुक्म का रुजूअ़ होगा। इस इबारत का मतलब यह है कि कुरआन मजीद का नुजूल और इस का ज़हूर अल्लाह की त़रफ़ से हुआ और कुरआन के तमाम अहकाम व फ़राएज़ और तर्क ममनूआ़त अल्लाह ही के फ़रमान के तहत हैं। उसी की वजह से हर फ़ेअ़ल व हर तर्क, तमाम अहकाम का रुजूअ़ अल्लाह ही की त़रफ़ है। इसी बिना पर बाज़ लोगों ने कहा है कि अल्लाह ही की तरफ़ से कुरआन मजीद का ज़हूर बतौरे हुक्म हुआ और उसी की तरफ़ कुरआन का रुजूअ़

...रे इल्म होता है। बहरहाल कुरआन पाक अल्लाह का कलाम है वह हाफिज़ों के सीनों में ...फ़ीदा) हो या हाफ़िज़ों के ज़बानों पर या लिखने वालों के हाथों में या देखने वालों की नज़र ... मुसलमानों के मुसहफ़ों पर हो या बच्चों की तख़्तियों पर जहां भी देखा जाए और पाया जाए ... अल्लाह का कलाम है)।

...आन को मख़लूक़ कहने वाला काफ़िर है

जो शख़्स कुरआन को मख़लूक़ कहता है या उसकी इबारत या तिलावत को कुरआन नहीं ...ता या कहता है कि कुरआन को मेरा तलफ़्फ़ुज़ करना मख़लूक़ है वह ख़ुदा की क़सम काफ़िर ... उससे मेल जोल रखना, उसके साथ खाना मना है, न उसके साथ निकाह जाएज़ हैं न उस ... हमसाएगी एख़्तियार की जाए बल्कि उसको बिल्कुल छोड़ दिया जाए उससे कलाम तर्क कर ... जाए ऐसा कहने वाले की इहानत की जाए उसके पीछे नमाज़ न पढी जाए न उस की ...ही कबूल की जाए, उस का वलीए निकाह होना भी दुरूस्त नहीं है, अगर वह मर जाए तो ...के जनाज़ा की नमाज़ भी न पढ़ी जाए अगर ... पर काबू मिल जाए तो मुरतद की तरह ...से तीन मरतबा तौबा कराई जाए अगर तौबा करे तो दुरूस्त है वरना उस को कत्ल कर दिया ...।

हज़रत इमाम अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो से दरयाफ़्त किया गया कि जो शख़्स कहता है कि ...आन को मेरा तलफ़्फ़ुज करना मख़लूक़ है उसका क्या हुक्म है आप ने फ़रमाया कि वह ...फ़िर हो गया। यह भी इमाम अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो का कौल है कि जो शख़्स कहता है ...आन कलामे इलाही है मख़लूक़ नहीं है लेकिन तिलावते कुरआन मख़लूक़ है वह भी काफ़िर ... गया है। हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि ...ल्लम से कुरआन के बारे में दरयाफ़्त किया, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया वह अल्लाह का कलाम ... मख़लूक़ नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल गफ़्फ़ार जो रसूले ख़ुदा के आज़ाद करदा गुलाम ... कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब अल्लाह की याद की ...ए (यानी कुरआन पढ़ा जाए) तो तुम कहो अल्लाह का कलाम है मख़लूक़ नहीं है, जिसने इस ... मख़लूक़ कहा वह काफ़िर है। अल्लाह तआला का इरशाद है: अला लहुल ख़ल्को वल अम्र, ... आयत में अल्लाह तआला ने अम्र को ख़ल्क से अलग बयान किया है, अगर अम्रे ख़ुदा (जिसने ...ख़लूक़ को पैदा किया) भी मख़लूक़ होता तो उसको अलख़ल्क़ से जुदा बयान नहीं किया जाता ...र इस तरह यह तकरार बेसुद होती गोया यह एबारत यूं हो जाएगी अला लहुल ख़ल्को वल ...ल्क यह तकरार बे फ़ायदा और बेसुद है और अल्लाह तआला इससे पाक है (कि वह ऐसी ...सुद व बे फ़ायदा बात बयान फ़रमाये)।

आयत कुरआनन अरबीयन ग़ैरा ज़ी एवजिन में लफ़्ज़ ग़ैरा ज़ी एवजिन की तफ़सीर में हज़रत ...ने मसऊद और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा से ग़ैरा मख़लूक़ मनकूल है। वलीद ...बिन मुग़ीरा मख़ज़ूमी ने जब कुरआन को इन्सान का कलाम करार दिया तो अल्लाह तआला ने ...उसको दोज़ख़ की वईद सुनाई। अल्लाह तआला का इरशाद है

तर्जमा:—उस ने कहा यह तो महज़ मन्कूल जादू है यह इंसानी कलाम के सिवा कुछ और ...हीं, मैं अनक़रीब उसको जहन्नम में झोंकूंगा।

अब जो शख़्स भी कुरआन को इबारत या मख़लूक़ कहता है या यह कहता कि कुरआन को मेरा तलफ़्फ़ुज़ करना मख़लूक़ है उस के लिए सक़र मक़र है इस आयत व इन अहदुन मिनल मुशरेकीना अस्तजा रका फ अजेरहू हत्ता यस्मऊ कलामल्लाह, में कलामुल्लाह कहा गया है आप का कलाम नहीं फ़रमाया दूसरी आयत में है (तर्जमा: वह कुरआन जो सीनों और वरक़ों में है उस को हम ने लैलतुल क़द्र में नाज़िल फ़रमाया। एक और आयत में इस तरह इरशाद है (तर्जमा: जब कुरआन पढ़ा जाए तो उस को बग़ौर सुनो और उस की तरफ़ कान लगाओ)।

एक और जगह इरशाद फ़रमाया है: हम ने कुरआन को अलाहिदा अलाहिदा कर दिया ताकि तुम लोगों के सामने ठहर ठहर कर पढ़ो, मुसलमानों ने सिर्फ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़िरत और तलफ़्फ़ुज़ को सुना पस आप का तलफ़्फ़ुज़ कुरआन ही कुरआन है। अल्लाह तआ़ला ने उन जिन्नात की तारीफ़ फ़रमाई है जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़िरत सुनी थी।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: जिन्नात ने कहा कि हम ने अरबी कुरआन सुना जो हिदायत का रास्ता दिखाता है। अल्लाह तआला का यह भी [illegible]शद है: हम ने जिन्[illegible] के एक गरोह का रूख़ आप की तरफ़ फेर दिया ताकि वह कुरआन सु[illegible] लें।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के कुरआन पढ़ने क[illegible] भी अल्लाह [illegible]ला [illegible] फ़रमाया है:

तर्जमा:—कुरआन को याद करने के लिए तुम अपनी [illegible] मत हिला[illegible] कुर[illegible]न को (तुम्हारे सीने में) जमा करना हमारे ज़िम्मा है जब हम पढ़ें तो हम[illegible]ढ़ने के पी[illegible] तुम पढ़ो।

एक और जगह इरशा[illegible] है: कुरआ[illegible] का जि[illegible]तना हिस्सा (तु[illegible]हारे [illegible]ए) आसान हो वह पढ़ो।

मुसलमानों का इस[illegible] इजमा [illegible]के जिसने नमाज़ [illegible] सूरह फ़ातिहा पढ़ी उस को किताबुल्लाह का क़ारी कहा जाएगा। जिसने बात [illegible] क़सम खाई है वह अगर कुरआन पाक पढ़े उस पर क़सम शिक[illegible] का जुर्म [illegible]एद नहीं [illegible] यह त[illegible]म उमूर बताते हैं कि कुरआन (इंसानी) इबारत न[illegible] है। ह[illegible]रत मुआविया बिन हकम से मरवी [illegible]स में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया था कि हमारी इस न[illegible] आंदमियों का कोई कलाम दुरूस्त नहीं है नमाज़ तो सिर्फ़ क़िरत (कुरआ़न) तसबीह व तहलील [illegible] तिलावते कुरआ़न है। इस हदीस़ में हुज़ूर ने तिलावते कुरआ़न को कुरआ़न फ़रमाया है [illegible]मालूम हुआ कि तिलावत और मतलू (जिसको तिलावत किया जाए) दोनों एक हैं। अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने मुसलमानों को नमाज़ में क़िरत का हुक्म दिया है और बात करने से मना किया है। अगर हमारी क़िरत हमारा कलाम हो अल्लाह का कलाम न हो तो फिर हम अम्रे ममनूआ के मुरतकिब होंगे।

कुरआन के हुरूफ़ और आवाज़

हमारा अक़ीदा है कि कुरआ़न पाक समझे जाने वाले हुरूफ़ और सुनी जाने वाली आवाज़ में है क्योंकि उन्हीं हुरूफ़ और आवाज़ों से गूंगा और ख़ामोश शख़्स मुतकल्लिम और गोया हो जाता है। अल्लाह का कलाम हुरूफ़ और आवाज़ों से अलग नहीं हो सकता। ऐसी बदीही बात का मुनकिर महसूस का मुख़ालिफ और बसीरत से महरूम है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है।

अलिफ़ लाम ज़ालिका, हा मीम, ता सीन मीम, तिलका आयातुल किताब, ग़ौर कीजिए

अल्लाह तआ़ला ने हुरूफ़ ज़िक्र फ़रमाये और फिर उनका किनाया किताब से फ़रमायाः

एक जगह इरशादे बारी तआ़ला यूं हैः

ज़मीन में जितने दरख़्त हैं अगर वह क़लम बन जाये और समन्दर रौशनाई बन जाए और इस को सात और समन्दर मदद पहुंचाए तब भी अल्लाह के कलेमात ख़त्म न होंगे।

इसी तरह एक और दूसरी आयत में है

अगर समन्दर मेरे रब के कलेमात तहरीर करने के लिए रौशनाई बन जायें तो रब के कलेमात ख़त्म होने से पहले समन्दर ख़त्म हो जाएंगे।

तिलावत क़ुरआन

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम क़ुरआन पढ़ा करो तुम को हर हर्फ़ के एवज़ दस नेकियां मिलेंगी, सुन लो मैं यह नहीं कहता कि अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़ दस नेकियां लाम दस नेकियां और मीम दस नेकियां, [illegible]ह तीस नेकियां हुईं। हुज़ूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि क़ुरआन को [illegible] हरफ़ों (किरअ़तों) प[illegible]नाज़िल किया गया है जिनमें से हर एक शिफ़ा अ़ता करने वाला है।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा के बारे में इरशाद फ़रमाया।

आप के रब ने मूसा को पुकारा हम ने उन को तू[illegible] दाईं जानिब से पुकारा।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़[illegible]ा था।

बिला शुबा मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई और माबूद नहीं, प[illegible] मेरी इबादत करो।

यह निदा और कौ़ल[illegible]र आवाज़[illegible] मुमकिन नहीं और [illegible] यह मुमकिन है की अल्लाह के अ़लावा यह नाम और यह सिफ़त (इलाह) किसी [illegible]रिश्ते [illegible] किसी दूसरी मख़लूक़ की हो।

हज़रत अबू [illegible]रा रज़िय[illegible]ाहो अन्हो[illegible] मरवी [illegible] कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद [illegible]रमाय[illegible] क़यामत के दिन होगा तो अल्लाह [illegible]ला बादलों के साये में जलवा फ़रमा होगा और [illegible]सीह कलाम करेगा और फ़रमाएगा (वह तमाम सच बोलने वालों से ज़्यादा सच बोलने वाला है)। [illegible] तवील मुद्दत तक चुप रहो, जब से मैंने तुम को बनाया था मैं तुम्हारे लिए ख़ामोश रहा [illegible]आमाल को देखता रहा, तुम्हारी बातें सुनता रहा अब यह तुम्हारे आमाल नामे हैं जो तुम को पढ़ कर सुनाये जाएंगे, जिस को उनके अन्दर जो ख़बर मिले वह उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और जिस को कुछ और मिले वह अपनी जान ही को मलामत करे।

सहीह बुख़ारी में अ़ब्दुल्लाह बिन अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे अल्लाह के बन्दों को उठाएगा और ऐसी आवाज़ पुकारेगा कि उस को दूर वाला भी क़रीब वालो की तरह सुनेगा, मैं बादशाह हूं मैं बदला देने वाला हूं।

तकल्लुमे इलाही

हज़रत मुस्लिम बिन मसरूक़ ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह का क़ौल नक़्ल किया है कि जब अल्लाह तआ़ला वही से मुतकल्लिम होता है तो उसकी आवाज़ आसमान वाले सुनते हैं और सजदा में गिर जाते हैं जब दिलों से हैबत दूर कर दी जाती है तो अहले आसमान पुकारते हैं तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया है दूसरे जवाब देते हैं हक़ फ़रमाया ऐसा ऐसा फ़रमाया।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला वही से मुतकल्लिम होता है तो आसमान वालों को ऐसी आवाज़ सुनाई देती है जैसे पत्थर की चट्टान पर लोहे के गिरने से पैदा होती है सब फ़ौरन सजदे में गिर पड़ते हैं जब दिलों से अल्लाह तआला हैबत दूर फ़रमा देता है तो कहता है तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया? यह सब जवाब देते हैं हक़ फ़रमाया वह बुज़ुर्ग व बरतर है।

मोहम्मद बिन कअब फरमाते हैं बनी इसराईल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि जब अल्लाह तआला ने आप से कलाम किया था तो आप ने अपने रब की आवाज़ को मख़लूक़ में किस से मुशाबेह पाया हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैंने अपने रब की आवाज़ को रअ़द के मुशाबेह पाया जब कि उसमें बाज़गश्त न हो। यह आयात व अहादीस़ इस बात पर दलालत करती है कि कलामुल्लाह आवाज़ है मगर आदमियों की अवाज़ की त़रह नहीं जिस त़रह उसका इल्म क़ुदरत और तमाम दूसरी सिफ़ात इन्सान की सिफ़ात की तरह नहीं हैं उसी त़रह उसकी आवाज़ भी इंसानों की आवाज़ की मानिन्द नहीं है।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहो अन्हो के असहाब की बयान करदा एक रिवायत के पेशे नज़र अल्लाह तआला के लिए आवाज़ की सराहत की गयी है (इस रिवायत से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह तआला की आवाज़ है) अशाअरा इसके ख़िलाफ़ है, अशायरा का क़ौल है कि कलामुल्लाह एक मानी (मफ़हूम) है जो ज़ाते इलाही के साथ क़ायम है (अल्लाह तआला हर बिदअती, गुमराह और गुमराह करने वाले की हिसाब [illegible] करने वाला है)

अल्लाह तआला हमेशा से मुतकल्लिम है और (सिफ़ते कलाम क़दीम है) और उसका कलाम अम्र, नही और इस्तिफ़हाम से तमाम मानी को हावी है। इब्ने ख़ुज़ैमा का इरशाद है कि अल्लाह का कलाम पैहम है उसमें वक़्फ़ा और ख़ामोशी नहीं है। हज़रत इमाम अहमद से लोगों ने दरयाफ़्त किया कि क्या यह कहना जायज़ है कि अल्लाह [illegible] है और सकूत उसके लिए दुरुस्त है, आप ने फ़रमाया हम इजमालन यह कहते हैं कि अल्लाह हमेशा से मुतकल्लिम है। अगर कोई हदीस ऐसी आती जिससे ज़ाहिर होता कि अल्लाह ख़ामोश हो गया तो हम भी कहते, अब तो हम यही कहते हैं कि वह मुतकल्लिम है बग़ैर किसी ख़ास कैफ़ियत और तशबीह़ के जिस तरह वह चाहे कलाम करता है।

हुरूफ़े हिज्जा मख़लूक़ है कि ग़ैर मख़लूक़

हुरूफ़े हिज्जा मख़लूक़ नहीं

हुरूफ़े हिज्जा भी मख़लूक़ नहीं हैं। अल्लाह के कलाम में हों या वह इंसान के कलाम में हों, अहले सुन्नत में से एक गरोह का यह अक़ीदा है कि क़ुरान मजीद के हुरूफ़ क़दीम हैं और इसके अलावा जितने हुरूफ़ हैं वह हादिस हैं लेकिन यह उनकी ग़लती है। अहले सुन्नत का बग़ैर किसी फ़र्क़ के सही तरीन क़ौल यही है कि हुरूफ़े हिज्जा मख़लूक़ नहीं हैं अल्लाह तआला का इरशाद है

लफ़्ज़ कुन दो हरफ़ी है (काफ़ नून) अगर यह लफ़्ज़ मख़लूक़ होगा तो फिर अल्लाह तआला

दूसरे कुन के कहने का मोहताज होगा और इस तरह ग़ैर मोतनाही सिलसिला लाज़िम आयेगा।

कुरआन पाक के ग़ैर मख़लूक़ होने की आयात कुरानिया से बहुत सी दलीलें ऊपर गुज़र चुकी हैं हम उनको दोबारा पेश नही करेंगे। हदीसे नबवी में आया है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अलिफ़ बा ता सा के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आप ने हज़रत उसमान से फ़रमाया अलिफ़ अल्लाह का इस्म है और बा अल्लाह के नामे बारी का और ता अल्लाह के नाम अल मुतकब्बिर का और सा अल्लाह के नाम अल बाइस और अल वारिस का है और इसी तरह हुजूर ने तमाम हुरूफ़ को अल्लाह के अस्माए सिफ़ाती का जुज़्व क़रार दिया चूंकि अल्लाह तआला के अस्मा मख़लूक़ नहीं हैं इसी लिए हुरूफे हिज्जा भी मख़लूक़ नहीं हुए।

हजरत अली कर्रमल्लाहू वजहहु से मरवी हदीस में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जब आप ने अबजद हव्वज हुत्ती के माने दरयाफ़्त किये तो आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अली! क्या तुम अबी जाद (अबजद)की तशरीह से वाक़िफ़ नहीं अबजद में अलिफ़ अल्लाह का और बा अल्लाह के नाम अलबारी जीम अल्लाह के नाम जलील का है। इसी तरह हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम हुरूफ़ (हिज्जा) को अल्लाह का अस्मा का जुज़्व होना क़रार दिया हालांकि यही हुरूफ़ आदमियों के कलाम के भी अजज़ा हैं।

हज़रत इमाम अहमद ने हुरूफ़े हिज्जा के क़दीम होने की इस [illegible] में सराहत की है जो नीशापुर और जिरजान के बाशिन्दों को आप ने इरसाल [illegible] था और उस में आप ने लिखा था कि जो शख़्स हुरूफे हिज्जा को हादिस कहता है वह अल्लाह का मुनकिर है जब वह इस बात का क़ायल हो कि हुरूफ़े हिज्जा मख़लूक़ हैं तो वह कुरआन के मख़लूक़ होने का कायल हुआ। (यानी कुरआन को उसने मख़लूक़ क़रार दिया)

हुरूफे कुरआन क़दीम हैं या हादिस

आप से कहा गया कि एक शख़्स कहता है जब अल्लाह तआला ने हुरूफ़ (हिज्जा) पैदा किए तो लाम लेट गया और अलिफ खड़ा हो गया और कहने लगा कि जब तक मुझे हुक्म नहीं दिया जायेगा मैं सजदा नहीं करूंगा। इमाम अहमद ने फ़रमाया कि यह क़ायल का कुफ़्र है (ऐसा कहने वाला काफ़िर है) इमाम श[illegible] रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि तुम हुरूफ़ के हुदूस के क़ायल न बनो, सबसे पहले यहूदी इसके क़ायल होकर हलाक हुए जो शख़्स किसी एक हर्फ़ के हुदूस का कायल हुआ वह कुरआन के हुदूस का क़ायल हुआ। इस सिलसिला में एक दलील यह भी है कि जब हुरूफ कुरआन में क़दीम है तो कुरआन के अलावा भी क़दीम होंगे यह कैसे हो सकता है कि एक चीज़ बेऐनही क़दीम भी हो और हादिस भी. जब कुरआन में हुरूफ (हिज्जा) का हादिस न होना साबित हो गया तो ग़ैरे कुरआन में भी यह क़दीम होंगे।

नौ दूना असमाए हुसना
(निनानवे पाक नाम)

अल्लाह तआला के पाक नामों की तादाद

हमारा एतकाद है कि अल्लाह तआला के निनानवे नाम है जो उनको याद करेगा जन्नत में दाख़िल होगा यह तमाम अस्मा कुरआन मजीद की मुखतलिफ सूरतों में मौजूद हैं। इन में से सिर्फ़ पांच तो सूरह फ़ातिहा में हैं वह यह है (या) अल्लाह, (या) रब, (या) रहमान, (या) रहीम, (या) मालिक और छब्बीस सूरह बक़रा में हैं (या) मोहीत, (या) क़दीर, (या) अलीम, (या) हलीम, (या) तव्वाब, (या) बसीर, (या) वासेअ, (या) बदीअ, (या) रऊफ़, (या) शकिर, (या) अल्लाह, (या) वाहिद, (या) ग़फूर, (या) हकीम, (या) क़ाबिज़, (या) बासित, (या) ला इलाहा इल्लल्लाह, (या) हय्य, (या) क़य्यूम, (या) अली, (या) अज़ीम, (या) वली, (या) गनी, (या) हमीद, सूरह आले इमरान में यह चार असमाए हुसना हैं। (या) कायम, (या) वहहाब, (या) सरीअ, (या) ख़बीर, सूरह निसा में यह छः असमा हैं (या) रक़ीब, (या), हसीब, (या) शहीद, (या) वकील, (या) ग़फूर, (या) मोकीत, पांच असमा सूरह अनआम में हैं। (या) फ़ातिर, (या) क़ाहिर, (या) [illegible], (या) लतीफ़, (या) ख़बीर, सूरह आराफ़ में यह असमा हैं। (या) मोही, (या) मोमीत, सूरह अनफ़ाल में भी दो हैं। (या) नेअमल मौला, (या) नेअमन नसीर, सूरह [illegible] में सात असमाए हुसना हैं। (या) हफ़ीज़, (या) रक़ीब, (या) मजीद, (या) क़वी, (या) मुजीब, (या) वदूद, (या) फ़अआल, सूरह रअद में दो हैं। (या) कबीर, (या) मतआल। सूरह इब्राहीम में एक नाम है (या) मन्नान, सूरह हज्र [illegible] नाम है (या) ख़ल्लाक़, सूरह नहल में भी एक नाम है (या) बाइस, सूरह मरियम में दो हैं (या) साबिक़, (या) वारिस, सूरह मोमिनून में एक है (या) करीम, सूरह नूर में तीन असमाए हुसना हैं (या) हक़, (या) मतीन, (या) नूर, सूरह फुरक़ान में सिर्फ़ एक [illegible]) हादी। सूरह सबा में भी एक नाम है (या) फ़त्ताह, सूरह मोमिन में चार हैं (या) ग़ाफ़िर, (या) [illegible], (या) शदीद, (या) ज़ततौल, सूरह ज़ारियात में तीन हैं (या) रज़्ज़ाक़, (या) ज़लकूव्वा, (या) मतीन, सूरह अक़्तरबत में एक है (या) मुक़तदिर, सूरह रहमान में (या) बाक़ी, (या) जुल जलाल, (या) वल इकराम, यानी तीन असमाए हुसना हैं। सूरह हदीद में चार हैं। (या) अव्वल, (या) आख़िर, (या) ज़ाहिर, (या) बातिन। सूरह हश्र में दस असमाए हुसना हैं। (या) कुद्दूस, (या) सलाम, (या) मोमिन, (या) मोहैमिन, (या) अज़ीज़, (या) जब्बार, (या) मोतकब्बिर, (या) ख़ालिक़, (या) बारी, (या) मुसव्विर। सूरह बुरूज में यह असमाए हुसना हैं। (या) मुबदी, (या) मोईद, सूरह कुल हो वल्लाह (अख़लास) में (या) अहद (या) समद यह दो नाम आये हैं।

हजरत सुफ़ियान ओऐनिया ने इसी तरह (अस्माये हुसना) ज़िक्र किये हैं और अब्दुल्लाह बिन इमाम अहमद ने कुछ मज़ीद नाम बयान किये है मज़ीद नाम यह है (या) मोजीब, (या) क़ाहिर, (या) फ़ाज़िल, (या) ख़ालिक़, (या) रक़ीब, (या) माजिद, (या) जव्वाद, (या) अहकमुल हाकेमीन।

अबू बकर नक़्क़ाश ने किताब तफ़सीरूल अस्मा वस्सिफ़ात में हज़रत जाफ़र बिन मोहम्मद का क़ौल नक़्ल किया है कि अल्लाह के 360 नान हैं। एक रिवायत में एक सौ चालीस आये हैं उन

अकवाल की बिना इस पर है कि कुरआन पाक में जो अस्माए हुसना मुकर्रर आये हैं उन को भी लोगों ने दाख़िले शुमार कर लिया है और उनको अस्मा क़रार दे दिया है हालांकि सही वही हैं जो हज़रत अबू हुरैरा से मरवी हैं।

ईमान की तारीफ़

ईमान किसे कहते हैं

हमारा एतक़ाद है कि ज़बान से इक़रार दिल से यक़ीन और अरकान पर अमल करने का नाम ईमान है। ईमान ताअत से बढ़ता है और मासियत से कम होता है इल्म से ईमान में कुव्वत आती है और जहालत से कमज़ोर होता है और तौफ़ीक़ ईलाही से वक़ूअ पज़ीर होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है :

तहक़ीक़ जो लोग ईमान लाए तो उनका ईमान ज़्यादा होता है और ख़ुश होते हैं।

इस तरह जो चीज़ ज़्यादा होती है वह घट भी सकती है अल्लाह तआला का इरशाद है

जब उन के सामने आयात पढ़ी जाती हैं तो उन का ईमान बढ़ता है

एक और जगह इरशाद होता है

ताकि वह लोग जिन को किताब दी गई यक़ीन करें और वह लोग जो ईमान लाए उन का ईमान मजबूत हो जाए।

हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत अबू दरदा से मरवी है कि ईमान कम भी होता है और ज़्यादा भी होता है इस के अलावा इस सिलसिले में दीगर अकवाल भी हैं जिन की तफ़सील तवालत का बाइस है। अशायरा कहते हैं कि ईमान में कमी व बेसी नहीं होती।

ईमान के मानी

लोग़त में ईमान के मानी दिल से किसी चीज़ के तसदीक़ करने और जिस पर यक़ीन हो उसे हासिल करने के हैं। शरीअत में ईमान के मानी हैं अल्लाह तआला के वजूद का यक़ीन करना उसके असमा व सिफ़ात को पहचानना और उन पर यक़ीन रखना, फ़राइज़, वाजिबात और नवाफ़िल का अदा करना, गुनाहों और मआसी से इजतेनाब करना, अगर ईमान को मज़हब, शरीयत और मिल्लत से मौसूम किया जाए तो जाएज़ है इस लिए कि दीन वही है जिस का इत्तेबा किया जाए और ताआत के साथ मुहर्रमात व ममनूआत से इजतेनाब किया जाए यही ईमान की तारीफ़ है।

इस्लाम की तारीफ़

इस्लाम की तरीफ अगरचे ईमान के साथ की जा सकती है क्योंकि हर ईमान यक़ीनन इस्लाम है लेकिन हर इस्लाम ईमान नहीं इस लिए कि इस्लाम के मानी मुतीअ और फ़रमाबरदार होने के हैं हर मोमिन अहकामे ईलाही का मुतीअ व फ़रमाबरदार है लेकिन हर मुसलमान अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाला नहीं क्योंकि अकसर मुसलमान तलवार के ख़ौफ़ से इस्लाम क़बूल कर लेते हैं।

ईमान का लफ़्ज बहुत से क़ौली और फ़ेअ्ली सिफ़ात पर हावी है और इसके दायरे में अल्लाह तआ़ला की तमाम इबादतें शामिल हैं। लफ़्ज़ इस्लाम का मतलब है ज़बान से कलमए शहादत अदा करना और दिल से इसकी तस्दीक़ करना और पांचों इबादतें अदा करना। हज़रत इमाम अहमद ने ईमान को इस्लाम से अलग क़रार दिया है क्योंकि हजरत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स वारिद हुआ जिस के कपड़े बहुत सफ़ेद और बाल बहुत सियाह थे सफ़र की कोई अलामत उससे ज़ाहिर नहीं थी हम में से कोई शख़्स उस को नहीं पहचानता था वह शख़्स आते ही रसूले ख़ुदा के सामने बैठ गया और अपने ज़ानू रसूल के ज़ानू से मिला कर बैठ गया अपने दोनों हाथ अपने घुटनो पर रख लिए और कहा ऐ मोहम्मद! अल्लाह के रसूल! इस्लाम क्या है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस्लाम यह है कि तू कलमए शहादत पढ़े यानी अश्हदु अल ला इलाहा इल्लल्लाह व अश्हदु अन्ना मोहम्मदन अब्दहु व रसूलहु कहे, नमाज़ पन्जगाना अदा करता रहे, ज़कात अदा करता रहे, रमज़ान के रोज़े रखे, ताक़त हो तो हज भी अदा करे।

यह सुन कर उस शख़्स ने जवाब दिया ऐ मोहम्मद! आप ने बिल्कुल सच फ़रमाया उसके इस जवाब से लोग बहुत हैरान हुए कि खुद ही पूछता है और खुद ही तसदीक़ करता है फिर उस ने कहा मुझे ईमान के मुताल्लिक़ बताइये। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ईमान यह है कि तू अल्लाह तआ़ला उसके फ़रिश्तों, उस की किताबों, उसके पैग़म्बरों, क़यामत और नेकी व बदी की तक़दीर (अनदाज़े) पर ईमान लाए, उसने यह सुन कर कहा आप ने सच फ़रमाया।

उस शख़्स ने फिर कहा ऐ अल्लाह के रसूल एहसान (ख़ूबी) क्या है? हुज़ूर ने जवाब में फ़रमाया एहसान यह है कि तुम अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसको देख रहे हो अगर ऐसा न हो सके तो दिल में यह ज़रूर यक़ीन करो कि अल्लाह तआ़ला तुम को देख रहा है। उस ने फिर दरयाफ़्त किया या रसूलल्लाह क़यामत के दिन का हाल बयान फ़रमाया आपने जवाब दिया क़यामत का हाल जिससे दरयाफ़्त किया जा रहा है वह दरयाफ़्त करने वाले से ज़्यादा क़यामत का हाल नहीं जानता। उस शख़्स ने कहा क़यामत की कुछ निशानियां ही बता दीजिए हुजूर ने फ़रमाया क़यामत की अलामतों में से यह है कि लौंडिया अपने आक़ाओं को जनेंगी और मुफ़लिस पांव से नंगे बदन से बरहना बकरियों के चराने वाले आलीशान इमारतों पर फ़ख़्र करते नज़र आयेंगे। रावी फ़रमाते हैं इस के बाद हम कुछ देर ठहरे रहे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ देर के बाद मुझ से फ़रमाया, उमर! जानते हो यह साइल कौन था? मैंने जवाब दिया अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानता है, आप ने फ़रमाया यह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे और तुम लोगों को दीन सिखाने आये थे। हदीस के दूसरे अलफ़ाज़ यह हैं वह जिब्रील थे तुम को तुम्हारे दीनी उमूर सिखाने आए थे इससे पहले वह जब कभी जिस शक्ल में आए मैंने उन को पहचान लिया लेकिन उस मरतबा मैं उस शक्ल में उन को फ़ौरन नहीं पहचान सका।

ग़ौर तलब अम्र यह है जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ईमान और इस्लाम के मुताल्लिक़ अलग अलग सवाल करके दोनों में तफ़रीक़ कर दी चुनांचे रसूलुल्लाह ने दोनों सवालों के अलग अलग

जवाबात इरशाद फ़रमाये। इमाम अहमद के पेशे नज़र एक आराबी वाली हदीस भी थी। एक आराबी ने रसूलुल्लाह से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आप ने फ़लां को अता किया और मुझे मना फ़रमाया उसके इस सवाल पर हुजूरे वाला ने इरशाद फ़रमाया कि वह मोमिन था। आराबी ने अर्ज़ किया कि मैं भी तो मोमिन हूं। हुजूर ने फ़रमाया कि तुम मुस्लिम हो। इमाम अहमद अल्लाह तआला के उस इरशाद को भी सनद के तौर पर लाते हैं।

आराब (देहाती) कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं ऐ पैग़म्बर आप उन से कह दीजिए कि तुम लोग ईमान नहीं लाए कहो हम इस्लाम लाए हैं अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ है

ईमान में ज़्यादती (इज़ाफ़ा) सिर्फ़ रोज़े नमाज़ से नहीं होती बल्कि दिली यक़ीन के बाद अवामिर व नवाही की पाबंदी, तक़दीर को मानना, अल्लाह के किसी फ़ेअल पर एतराज़ न करना, अल्लाह ने तक़सीमे रिज़्क़ का जो वादा फ़रमाया है उस पर एतेमाद रखना और शक न करना, अल्लाह पर भरोसा रखना और अपनी कुव्वत और ताक़त पर तकिया न करना, मुसीबतों पर सब्र और नेमतों पर शुक्र बजा लाना, अल्लाह को आयूब से पाक जानना और किसी किस्म की किसी हाल में उस पर तोहमत न लगाना।

इमाम अहमद से दरयाफ़्त किया गया कि ईमान मख़लूक़ है या ग़ैर मख़लूक़। आप ने जवाब दिया जिस ने ईमान को मख़लूक़ कहा वह काफ़िर हो गया क्योंकि ऐसा कहने वाला लोगों को वहम में मुब्तला करता है (क्योंकि इस क़ौल से कुरआन के मख़लूक़ होने का वहम होता है और इस में कुरआन के साथ ईहाम और तअरीज़ है, जो यह कहे कि ईमान ग़ैर मख़लूक़ है वह मुबतदेअ (बिदअती) है इस लिए कि इस क़ौल से यह वहम लाहिक़ होता है कि रास्ते से अज़ीयत रसां चीज़ का दूर करना और आज़ा के तमाम अफ़आल ग़ैर मख़लूक़ हैं इस तरह इस जवाब से इमाम मौसूफ़ ने दोनों गरोहों की तरदीद फ़रमाई दी है और इमाम साहब ने एक हदीस बयान फ़रमाई कि हुजूर ने इरशाद फ़रमाया ईमान की सत्तर से कुछ ज़्यादा खसलतें हैं जिन में सब से अफ़ज़ल कलमए तौहीद और सबसे अदना ख़सलत रास्ते से ईज़ा दूर करने वाली चीज़ का हटा देना है।

इमाम साहब का मसलक है कि जिस चीज़ का ज़िक्र न कुरआन में हो न आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस बारे में कुछ फ़रमाया हो (हदीस मौजूद न हो) न सहाबा कराम ने इस सिलसिले में कुछ कहा हो उसमें (अपनी तरफ़ से) राय देना बिदअत और दीन में नई बात पैदा करना है।

मोमिन होने का दावा

किसी मोमिन के लिए जाएज़ नहीं कि वह कहे "मैं यक़ीनन मोमिन हूं" बल्कि कहे मैं इनशा अल्लाह मोमिन हूं। मोतज़ला के नज़दीक यह कहना कि मैं सच्चा मोमिन हूं जाइज़ है, यक़ीनन मोमिन कहने से इस लिए मना किया गया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया, जो शख़्स यक़ीनी तौर पर कहे कि मैं मोमिन हूं वह काफ़िर है। हज़रत हसन बसरी से रिवायत है कि हज़रत अब्दूल्लाह बिन मसऊद के सामने बयान किया गया कि फ़लां शख़्स कहता है कि मैं कतई मोमिन हूं, हज़रत ने फ़रमाया उससे पूछो जन्नत में जाएगा या दोज़ख़ में, लोगों ने उससे पूछा तो उसने कहा कि अल्लाह ही ख़ूब वाक़िफ़ है। इब्ने मसऊद ने फ़रमाया दूसरी बात को

अल्लाह के सुपुर्द कर दिया पहली बात (मामिन होने को) को भी अल्लाह के सुपुर्द क्यों नहीं कर दिया (यानी पहले ही कह देता कि मेरा मोमिन होना अल्लाह ही को मालूम है)।

यकीनन सच्चा मोमिन वही होगा जो अल्लाह तआला के नज़दीक मोमिन है और वही जन्नती भी होगा और इस का एतबार उस वक़्त है जब ईमान पर ख़ात्मा हो और किसी को ईमान पर ख़ात्मा होने की ख़बर नहीं। इस लिए मुनासिब यही है कि डरता भी रहे और उम्मीद भी रखे, आमाल की दुरूस्ती भी करता रहे और अन्देशा के साथ साथ उम्मीदवार भी रहे यहां तक कि नेक आमाल पर ख़ात्मा हो जाए, लोग जिन आमाल में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन्हीं पर उनका ख़ात्मा होता है और जिन आमाल पर ख़ात्मा होगा उन्हीं पर हश्र होगा। हदीस शरीफ़ में आया है हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया जैसे ज़िन्दा रहोगे वैसे ही मरोगे और जैसे मरोगे वैसे ही उठाए जाओगे।

हमारा भी एतक़ाद है कि बन्दे के तमाम आमाल अल्लाह के पैदा करदा हैं और उनके कमाये हुए हैं ख़्वाह नेक हों या बद, अच्छे हों या बुरे, जो आमाल ताअत व मासियत के हैं उस का यह मतलब नहीं कि अल्लाह ने मासियत का हुक्म दिया है बल्कि मानी यह हैं कि अल्लाह ने किसी के गुनहगार होने का फ़ैसला और अंदाज़ा कर लि[illegible] है। अफ़आल मुक़द्दर [illegible]नके क़स्द व इरादे के मुताबिक़ कर दिया है।

क़िसमत व तक़दीर

हमारा अक़ीदा है कि अल्लाह ने रिज़्क़ पैदा फ़रमा क[illegible] को तक़सीम कर दिया जो रिज़्क़ मुक़द्दर में कर दिया है उस को न कोई बन्द कर सकता है और न कोई उसका रोकने वाला है। रिज़्क़ (मक़सूम) न कोई [illegible] सकता है [illegible] उसे कोई कम कर सकता है न उस का नर्म सख़्त हो सकता है और [illegible] सख़्त नर्म, कल का रिज़्क़ आज [illegible]हीं खाया [illegible] सकता। ज़ैद की क़िसमत उमर की तरफ़ मुन्तक़िल नहीं हो सकती, अल्लाह हराम [illegible] देता है और हलाल भी। इस का मतलब यह नहीं कि उसने हराम को मुबाह कर दिया है बल्कि [illegible] मतलब है कि हराम (रिज़्क़) को भी वह बदन की [illegible] और जिस्म की कुव्वत बना देता है। उसी तरह क़ातिल मक़तूल की ज़िन्दगी मुनक़तअ़ कर[illegible] बल्कि मक़तूल अपनी मौत आप मरता है यही हाल उस शख़्स का है जो पानी मे डूब जाता है या [illegible] पर दीवार गिर जाती है या पहाड़ की बुलन्दी से फेंक दिया जाता है या कोई दरिन्दा [illegible] को खा जाता है (यह सब अपनी मौत से मरते हैं) मुसलमानों और मोमिनों की हिदायत याबी और काफ़िरों की ज़लालत और गुमराही अल्लाह ही की तरफ़ से है यह सब उसी का फ़ेअ़ल और उसी का सन्नाई है उस के मिल्क में कोई शरीक नहीं। अल्लाह तआला का इरशाद है।

उन आमाल का बदला है जो वह करते रहे हैं

इसी के साथ मज़ीद इरशाद फ़रमाया

तुम्हारे सब्र करने के एवज़ में जैसा तुम करते हो वैसा ही बदला दिया जाएगा और जैसा करोगे वैसा ही सवाब पाओगे।

दोज़खियों से पूछा

तुम का दोज़ख़ में किस चीज़ ने दाख़िल किया उन्होंने कहा हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे और न हम मिस्कीन को खाना देते थे।

फिर इरशाद फ़रमाया।

यह वह आग है जिस को तुम झुटलाते थे।

इसी सिलसिले में इरशाद फ़रमाया: उसके एवज़ जो तेरे दोनों हाथ पहले कर चुके हैं। इन आयात के अलावा दूसरी आयात हैं जिनमें अल्लाह तआला ने जज़ा को इन्सान के अफ़आल से मुताल्लिक फ़रमाया है, बन्दे का कसब करना इस से साबित होता है। जहमीया फ़िरक़े के लोग इस के ख़िलाफ़ है। वह कहते हैं कि बन्दों के कसब का वजूद नहीं, इन्सानी अमल ऐसा है जैसे दरवाज़ा का खुलना और बन्द होना यानी ग़ैर एख़्तियारी, खोलने वाला चाहता है तो दरवाज़ा खुलता है और बन्द करना चाहता है तो बन्द कर देता है। वह उस दरख़्त की मानिन्द हैं जो हिलाया जाता है और हरकत दिया जाता है (दरख़्त मजबूर है उस की हरकत उस के एख़्तियार में नहीं होती) यह लोग हक़ के मुनकिर हैं और किताब व सुन्नत की तरदीद करते हैं।

क़दरिया का नज़रिया

क़दरिया (मुअतज़ला) क़ाइल हैं कि इंसान अपने आमाल का खुद ख़ालिक़ है अल्लाह उन्हें ग़ारत करे। यह उम्मत मोहम्मदिया के मजूसी हैं उन्होंने इन्सानों को अल्लाह का शरीक ठहराया और अल्लाह की तरफ़ इज्ज़ की निसबत करते हैं। उन्होंने अल्लाह के मुल्क में ऐसी चीजों के वजूद को तसलीम किया है जो अल्लाह की कुदरत और इरादे से बाहर है हालांकि अल्लाह उससे बहुत बुलन्द और बरतर है। इरशाद फ़रमाता है अल्लाह ने तुम को और तुम्हारे आमाल को पैदा किया है। जब बदला इंसान के आमाल पर वाक़ेअ है तो अल्लाह की तरफ़ से तख़लीक़ भी आमाल पर होगी (यानी जब जज़ा व सज़ा का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है तो आमाल की तख़लीक़ भी अल्लाह तआला ही का काम होगा) यह जाइज़ नहीं की कहा जाए उस (मुन्दर्जा बाला नस) से मुराद वह काम हैं जो बन्दे पत्थरों पर करते हैं (बुतों की मूरतें) क्योंकि पत्थर तो जिस्म हैं, किसी जिस्म को करने का कुछ मफ़हूम नहीं बल्कि करने का ताल्लुक़ उन आमाल से है जो इन्सान करता है। बस आमाल वह हैं जो इन्सान करता है (न कि जामिद अजसाम) हक़ीक़त में तख़लीक़े इलाही इन्सान के आमाल की राजेअ़ है वह हरकत हो या सुकूत। खुदावन्दे आलम का इरशाद है:

वह लोग हमेशा इख़तेलाफ़ में पड़े रहेंगे सिवा उन लोगों के जिन लोगों पर आप का रब रहम फ़रमाये उन को तो अल्लाह ने उसी (इख़तेलाफ़ करने के) लिए पैदा किया है।

दूसरी जगह इस तरह इरशाद होता है:

क्या उन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक बना रखे हैं जिन्होने अल्लाह की तख़लीक़ की तरह मख़लूक़ को पैदा किया जिसकी बिना पर अल्लाह तआला की मख़लूक़ और मफ़रूज़ा शरीकों की मख़लूक़ में इम्तियाज़ नहीं रहा, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है।

इस सिलसिले में इरशाद हुआ

क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक़ है जो ज़मीन और आसमान से तुम को रिज़्क़ देता है।

मुशरिकों की हालत बयान फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया।

अगर उन्हें कोई भलाई पहुंच जाए तो यह कहें यह अल्लाह की तरफ़ से है और अगर बुराई पहुंच जाए तो कहें यह तुम्हारी जानिब से है उन से कह दीजिए कि सब ख़ुदा की जानिब से है,

उन लोगों को क्या हुआ है कि यह बात समझने की कोशिश नहीं करते।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है "अल्लाह ने हर कारीगर को और उस की सनअत को पैदा किया यहां तक की क़साब को और उसके ज़िबह करने के फ़ेअ़ल को भी।

हज़रत इब्ने अब्बास ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत बयान की कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैंने ही ख़ैर व शर को पैदा किया, उन लोगों की खुश ख़बरी हो जिन के हाथों पर मैंने नेकी मुक़द्दर फ़रमाई और उन की ख़राबी हो जिन के हाथों पर मैंने शर पैदा किया।

हज़रत इमाम अहमद से दरयाफ़्त किया गया कि जिन आ़माल की वजह से लोग अल्लाह की रज़ामन्दी या नाराज़गी के मसतौजिब होते हैं क्या उन में कोई अ़मल अल्लाह की त़रफ से होता है या बन्दों की तरफ से? इमाम अहमद ने जवाब में फ़रमाया वह पैदा किये हुए अल्लाह के हैं और किए हुए बन्दों के।

मुसलमान गुनाह से काफ़िर नहीं होता

हमारा भी अक़ीदा यही है कि मोमिन कितने ही सग़ीरा या कबीरा गुनाह करे लेकिन वह काफ़िर नहीं होता ख़्वाह वह तौबा के बग़ैर ही मर जाए बशर्ते कि तौहीद व ईमान को तर्क न किया हो। इस सूरत में उस का मामला अल्लाह के सुपुर्द होगा चाहे वह बख़्श दे और जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे और चाहे तो सज़ा दे और दोज़ख़ में भेज दे। लिहाज़ा तुम को अल्लाह तआ़ला और उस की मख़लूक़ के दर्मियान दख़ल न देना चाहिए जब तक अल्लाह उसके अन्जाम की ख़बर ख़ुद न दे।

बाब 7

मआद से मुताल्लिक़ अक़ाइद

अज़ाब व सवाब, मुनकर नकीर, मेराज, शहीद और मोमिन शफ़ाअत, पुल सिरात, कौसर, हश्र और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

अज़ाब व सवाब

हमारा अक़ीदा है कि मोमिन गुनाहे कबीरा के बाइस दोज़ख़ में तो जाएगा लेकिन वह हमेशा दोज़ख़ में नहीं रहेगा बल्कि आख़िर में वहां से रिहाई पाएगा दोज़ख़ उसके हक़ में क़ैद ख़ाने की तरह होगा। बक़दरे जुर्म व गुनाह रहने के बाद वहां से रिहाई मिल जाएगी। उसके चेहरे पर आग की लपट नही पहुंचेगी उसके आज़ाए सुजूद को आग नहीं जलाएगी, यह आज़ा आग पर हराम कर दिए गये हैं। जब तक वह दोज़ख़ में रहेगा अल्लाह से उस की उम्मीद नहीं टूटेगी आख़िरकार वह दोज़ख़ से निकल कर जन्नत में दाख़िल हो जाएगा। दुनिया में उस ने जैसी और जिस क़दर ताअत की होगी उसी के मुताबिक़ उसको जन्नत में दरजात दिए जाएंगे।

मुतज़ला का क़ौल इस के ख़िलाफ़ है वह कहते हैं की कबीरा गुनाह से नेकियां बरबाद हो जाती हैं, उन को कोई सवाब नहीं मिलेगा, ख़्वारिज का भी यही क़ौल है, मोमिन पर लाज़िम है कि तक़दीर की भलाई, बुराई और क़ज़ाए इलाही के तल्ख़ व शीरीं (अच्छाई, बुराई) पर ईमान रखे और इस बात पर भी ईमान रखे कि जो कुछ असबाबे रहमत उस को मयस्सर हैं वह महज़ अल्लाह तआला का फ़ज़्ल व करम हैं न कि उसकी कोशिशों का नतीजा और समरा।

हमारा अक़ीदा है कि जो कुछ (कल तक) हुआ और क़यामत तक आइन्दा होगा वह क़ज़ा व तक़दीर से हुआ और आइन्दा होगा। लौहे महफ़ूज़ में अल्लाह तआला ने जो तक़दीर लिख दी है उससे कोई बंदा भाग नहीं सकता, क़ज़ाए इलाही के ख़िलाफ़ सख़्त कोशिश के बाद भी न कोई शख़्स किसी को नुक़सान पहुंचा सकता है और न फ़ाइदा। हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी हदीस में यही आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है।

अगर अल्लाह तुम को कोई ज़रर पहुंचाए तो उसी के सिवा कोई दूसरा उस दुख का दूर करने वाला नहीं अगर वह तुम को भलाई पहुंचाना चाहे तो उस के फ़ज़्ल को कोई रद करने वाला नहीं वह अपने बन्दों में जिसको चाहता है अपने फ़ज़्ल से नवाज़ता है।

हज़रत ज़ैद बिन वहब ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम से हर एक की तख़लीक़ इस तरह हुई है कि चालीस दिन मां के पेट में बसूरत नुतफ़ा रहता है। (एक रिवायत में चालीस रातें आता है) फिर वह उतनी ही मुद्दत वह मुनजमिद ख़ून की शक्ल में फिर उतनी ही मुद्दत गोश्त के लोथड़े की

शक्ल में रहता है फिर उसके बाद अल्लाह तआला फ़रिश्ते को इन चार बातों के साथ उसके पास भेजता है, सूरत, रिज़्क़, अमल, सआदत या शक़ावत। इंसान उम्र भर दोज़ख़ियों के से अमल करता है यहां तक कि उसके और दोज़ख़ के दर्मियान एक हाथ का फ़ासला रह जाता है अचानक तक़दीर का लिखा ग़ालिब आ जाता है और वह जन्नतियों का काम करके जन्नत में दाख़िल हो जाता है और इसी तरह आदमी जन्नतियों के काम करता है यहां तक कि उसके और जन्नत के दर्मियान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है कि यकायक तक़दीर का लिखा ग़ालिब आ जाता है और वह दोज़ख़ियों के काम करके दोज़ख़ में दाख़िल हो जाता है।

हश्शाम बिन उरवह कहते हैं कि मेरे वालिद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई शख़्स अहले बहिश्त के से काम करता है मगर लौहे महफ़ूज़ में उस के मुक़द्दर में दोज़ख़ लिखा है चुनांचे मौत के क़रीब पहुंच कर वह उन कामों से फिर कर दोज़ख़ियों के से काम करने लगता है यहां तक की उस हाल में मर कर दोज़्रख़ में पहुंच जाता है और किसी मुक़द्दर में लिखा होता है कि यह अहले बहिश्त से है मगर वह दोज़ख़ियों के से काम करता है फिर जब मरने कि क़रीब होता है तो उन कामों को छोड़ कर अहले बहिश्त के से काम करने लगता है यहां तक की उस हाल में मर कर वह जन्नत में चला जाता है।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान सलमी हज़रत अ़ली कर्रमलाहो वजहहु से रिवायत हैं कि एक दफ़ा हम लोग बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे हुजूर ज़मीन कुरैद रहे थे अचानक सर उठा कर फ़रमाया कोई ऐसा नहीं जिसकी जगह दोज़ख़ या जन्नत मुक़र्रर न हो चुकी हो। यह सुनकर सहाबा ने अर्ज़ किया हम मुतवक्किल न हो जाएं? हुजूर ने फ़रमाया अ़मल करो जिस के लिए उस को पैदा किया गया है वह उस पर आसान कर दिया गया है।

सालिम बिन अब्दुल्लाह अपने वालिद हज़रत अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम जो कुछ करते हैं क्या यह पहले से तय शुदा चीज़ है या अज़ सरे [illegible] की जाती है, हुजूर ने इरशाद फ़रमाया तय शुदा चीज़ है। हज़रत उमर ने अर्ज़ किया तो फिर इसी पर एतमाद करके न बैठ जायें? हुज़ूर ने फ़रमाया तुम अ़मल करो, हर एक को उसी बात की तौफ़ीक़ दी जाती है जिस के लिए उस को पैदा किया गया है जो अहले सआ़दत में होता है वह सआ़दत के काम करता है और जो बदबख़्त है वह बदबख़्तों जैसा अ़मल करेगा।

मेराज और दीदारे इलाही

शबे मेराज

हम ईमान रखते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शबे मेराज में अपनी रब को जिस्मानी आंखों से देखा दिल की आंखों से नहीं और न ख़्वाब में। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने अपने रब को रूबरू देखा इसमें कोई शक व शुबा नहीं और फ़रमाया कि मैंने उसको सिदरतुल मुन्तहा के पास देखा यहा तक की रब के चेहरे का नूर मेरे सामने ज़ाहिर हुआ।

हज़रत इब्ने अब्बास ने आयत

तर्जमाः—(यानी हम ने आप को जो ख़्वाब दिखाया है उससे हमने लोगों का इम्तेहान किया है) की तफसीर में फ़रमाया है कि रूया से मुराद आंखों का देखना है जो शबे मेराज में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिखाया गया है। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़ुल्लत मिली, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम और मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दीदारे इलाही हासिल हुआ। हज़रत इब्ने अब्बास ने यह भी फ़रमाया कि मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब को अपनी आंखों से दो मरतबा देखा। यह रिवायत हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो अन्हा के उस रिवायत से मआरिज़ नहीं जो रोइत के इनकार में मरवी है इस लिए कि इस में नफ़ी है और उन अहादीस (मज़कूरा बाला) में इस्बात है और मुसबत को मनफ़ी पर मुक़द्दम रख जाता है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने लिए रोइत का इस्बात फ़रमाया है। हज़रत अबू बकर बिन सुलैमान का क़ौल है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रब का दीदार ग्यारह मरतबा किया, नौ बार का सबूत अहादीस [illegible] मिलता है जब कि आप हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और अल्लाह तआला के माबैन तख़फ़ीफ़ नमाज़ के लिए बार बार आए गए और पचास वक़्त की नमाज़ के बजाये पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई। (45 बार की तख़फ़ीफ़ हो गई) यह सुनन नबवी से साबित है और दो बार अल्लाह तआला [illegible] दीदार क़ुरआन से साबित है।

मुनकर नकीर

हमारा ईमान है कि अम्बिया अलैहमुस्सलाम के सिवा हर शख़्स के पास क़ब्र में मुनकर नकीर आते हैं मुर्दे में रूह डाली जाती है मुनकर नकीर उससे सवाल करते हैं और उसका इम्तेहान लेते हैं कि वह किस दीन का मुअतक़िद था मुर्दा को बिठाया जाता है जब सवाल ख़त्म हो जाता है तो बग़ैर तकलीफ़ के उसकी रूह फिर खींच ली जाती है।

मुर्दा ज़ाइर को पहचानता है

हमारा ईमान है कि मुर्दा की क़ब्र पर आने वाले को मुर्दा पहचानता है। जुमा के दिन तुलूए फ़ज्र के बाद तुलूए आफ़ताब तक यह शिनाख़्त और ज़्यादा क़वी होती है।

जुगता क़ब्र या फ़िशारे क़ब्र

गुनाहगारों और काफ़िरों के लिए क़ब्र के दबाव और क़ब्र के अज़ाब पर ईमान लाना भी वाजिब है। ईमानदारों और नेको कारों को क़ब्र में राहतें मयस्सर होंगी इस पर भी ईमान रखना लाज़िम है। मोतज़ला का क़ौल है इस के ख़िलाफ़ है वह क़ब्र के अज़ाब, राहत और मुनकर नकीर के सवालात को नहीं मानते। अहले सुन्नत के क़ौल का सबूत इस आयत से होता है अल्लाह तआला का इरशाद हैः अल्लाह अहले ईमान को मज़बूत बात पर क़ाएम रखता है, दुनयवी ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी।

तफ़सीर में मनकूल है कि इस आयत में दुनयवी ज़िन्दगी से मुराद रूह के निकलने का वक़्त (वक़्ते इन्तेक़ाल) है और आख़िरत से मुराद क़ब्र के अन्दर मुनकर नकीर के सवाल का वकत है हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि जब तुम में से

किसी को क़ब्र में रखा जाता है तो दो काले रंग के नीली आंखों वाले फ़रिशते आते हैं उन में से एक मुनकर दूसरा नकीर है वह दोनों मुर्दे से पूछते हैं तू इस हस्ती यानी मोहम्द रसुलुल्लाह के मुताल्लिक़ क्या कहता है? मुर्दा ज़िन्दगी में जो कुछ करता था वही बयान कर देगा अगर मर्दे मोमिन है तो कहेगा अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। इस जवाब को सुन कर वह दोनों फ़रिश्ते कहेंगे हम को मालूम था तू ऐसा ही कहेगा उसके बाद मुर्दे की क़ब्र को 70 70 हाथ कुशादा कर दिया जाएगा और उस की क़ब्र रौशन कर दी जाएगी फिर वह दोनों फ़रिश्ते कहेंगे सो जा कहेगा मुझे इजाज़त दो कि मैं अपने अहल व अयाल के पास जाकर यह ख़ुशख़बरी दूं लेकिन फ़रिश्ते जवाब देगें उस दुलहन की तरह सो जा वही बेदार करते हैं जो घर वालों में उस को सब से ज़्यादा प्यारा होता है चुनांचे वह सो जाएगा यहां तक कि अल्लाह तआला उसे उसकी ख़्वाबगाह से उठाएगा।

अगर मुर्दा मुनाफिक़ होगा तो सवाल के जवाब में कहेगा मैं नहीं जानता लोगों को जो कुछ कहते सुनता था वही मैं कह देता था फ़रिश्ते कहेंगे हम तो पहले ही जानते थे कि तू ऐसा कहेगा उसके बाद वह ज़मीन को हुक्म देंगे कि इस पर तंग हो जा, ज़मीन मुर्दे पर ऐसी तंग होगी कि मुर्दे की पसलियां इधर उधर निकल जाएंगी और वह हमेशा उसी अज़ाब में रहेगा यहां तक कि अल्लाह तआला उसको उसकी क़ब्र से उठाएगा।

मोमिन का नेक अंजाम

इस मसला के सबूत के लिए अता बिन यसार की रिवायत से तमस्सुक किया गया है वह कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से फ़रमाया उमर उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब तेरे लिए तीन हाथ (गज़) एक बालिश्त लंबी और एक हाथ एक बालिश्त चौड़ी, ज़मीन दुरुस्त की जाएगी फिर तेरे घर वाले तुझे गुस्ल दे कर कफ़न पहनायेंगे खुशबू लगायेंगे ज़नाज़ा उठायेंगे फिर दफ़न कर देंगे और लौट आएंगे फिर क़ब्र में तेरे पास सवाल करने वाले मुनकर नकीर आयेंगे जिनकी आवाज़ें कड़क की तरह और आंखें चुंधिया देने वाली बिजली की तरह होगी उन के बाल लटके हुए होंगे वह तुझे डरायेंगे और पूछेंगे तेरा रब कौन है और तेरा दीन क्या है ? हज़रत उमर ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह यह दिल जो मेरे पास आज है क्या यही दिल मेरे पास उस वक़्त भी होगा हुज़ूर ने फ़रमाया हां। हज़रत उमर ने अर्ज़ किया तो फिर वह उन दोनों के लिए काफ़ी होगा।

यह हदीस इस अम्र पर दलील है कि रूह दोबारा बदन में डाली जाएगी क्योंकि हज़रत उमर ने जब अर्ज़ किया था कि क्या मेरे साथ मेरा दिल होगा तो हुज़ूर ने फ़रमाया। हां

हज़रत मिन्हाल बिन अम्र ने हज़रत बरअ बिन आज़िब से रिवायत की है कि हम लोग एक बार हुज़ूर के हमराह एक अंसारी के जनाज़ा में गए जब क़ब्र के नज़दीक पहुंचे तो देखा लहद तैयार नहीं है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठ गए हम भी गिरदा गिर्द बैठ गए (अज़ रूए ताज़ीम व हैबते रसूलुल्लाह) हम सब ऐसे बेहिस व हरकत बैठे थे गोया हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हैं। हुज़ूर दस्ते मुबारक की लकड़ी से ज़मीन कुरेदने लगे फिर सरे मुबारक उठा कर दो या तीन बार फ़रमाया मैं अज़ाबे क़ब्र से अल्लाह की पनाह मांगता हूं फिर इरशाद फ़रमाया जब बन्दए

मोमिन आख़िरत की तरफ़ मुंह किये दुनिया से क़तअ़ ताल्लुक़ करता है तो उस पर गोरे रंग के फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं उन के चेहरे पर आफ़ताब की तरह ताबां होते हैं उनके पास जन्नत का कफ़न और जन्नत की ख़ुशबू होती है यह फ़रिश्ते उस बन्दए मोमिन बफ़ासला हद्दे नज़र बैठ जाते हैं उसके बाद मौत का फ़रिश्ता उसकी बालेन पर बैठ कर कहता है ऐ आराम पाने वाले पाकीज़ा नफ़्स बाहर निकल आ। अल्लाह की दी हुई ख़ुशनूदी और मग़फ़िरत की तरफ़ आ। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि उस वक़्त वह जान इस तरह बाहर आ जाती है जैसे बरतन से पानी का क़तरा बहता है फ़ौरन वह फ़रिश्ते उसको ले लेते हैं और पल भर के लिए मलकुल मौत के हाथ में नहीं छोड़ते उसे उस जन्नत वाले कफ़न और ख़ुशबू में लपेट देते हैं वह ख़ुशबू मुश्क की ख़ुशबू से बेहतर होती है। उस ख़ुशबू का वजूद रूए ज़मीन पर कहीं नहीं है उसके बाद वह फ़रिश्ते उसको लेकर ऊपर आसमान पर चढ़ते हैं मलाइका की जिस सफ़ से भी गुज़रते हैं सब मलाइका कहते हैं कि यह किस की पाकीज़ा तरीन ख़ुशबू है? फ़रिश्ते सबसे अच्छा नाम लेकर बताते हैं कि यह फ़लां बिन फ़लां की रूह है जब आसमान पर पहुंचते हैं तो उनके लिए दरवाज़ा खूल जाता है फ़रिश्ते उस का इस्तक़बाल करते हैं और इसी तरह सातवें आसमान तक उसको पहुंचाया जाता है उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस बन्दे का नामए आमाल इल्लीईन में लिखो और इसे उस ज़मीन की तरफ ले जाओ जिससे हमने इस को पैदा किया था हमने ज़मीन से उनको पैदा किया और उसी में उठाएंगे।

चुनांचे रूह को दोबारा जिस्म में लौटा दिया जाता है फिर दो फ़रिश्ते मुनकर नकीर आते हैं और पूछते हैं कि तेरा रब कौन है और तेरा दीन क्या है? बन्दए मोमिन कहता है मेरा रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम है दोनों फ़रिश्ते फिर सवाल करते हैं कि इस ज़ाते वाला के बारे क्या कहते हो जिस को अल्लाह तआ़ला ने तुम में मबऊस किया? बन्दा जवाब देता है कि वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं जो हमारे पास हक़ ले कर आए फिर फ़रिश्ते सवाल करते हैं कि तुम को यह बात किस तरह मालूम हुई बन्दा कहेगा मैंने अल्लाह की किताब यानी कुरआन पढ़ा उस पर ईमान लाया और उस की तसदीक़ की। उस वक़्त आसमान से एक पुकारने वाला पुकार उठेगा कि मेरे बन्दे ने ठीक कहा इस के लिए जन्नत का फ़र्श बिछाओ और इस को जन्नत का लिबास पहना दो और इस के लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दो। उस वक़्त बन्दे को जन्नत की हवा और ख़ुशबू आने लगेंगी उस की क़ब्र मुन्तहाए नज़र तक कुशादा कर दी जाएगी उस वक़्त एक शख़्स ख़ूबरू ख़ुशबू में बसा हुआ उसके पास आकर कहेगा तुझे बशारत हो इस मुसर्रत आफ़रीं चीज़ की। यह वही दिन है जिस का तुझ से वादा किया गया था वह कहता है कि तू कौन है आने वाला कहता है मैं तेरा अमले सालेह हूं उस वक़्त बन्दा कहेगा इलाही क़यामत क़ायम फ़रमा दे।

काफ़िरों का अंजामे बद

हुज़ूर ने फ़रमाया कि जब काफ़िर बन्दा दुनिया छोड़ता है और आख़िरत की तरफ़ जाता है तो उस के लिए आसमान से दो काले चेहरे वाले फ़रिश्ते उतरते हैं वह एक टाट साथ लेकर आते हैं और उसकी हद्दे निगाह पर जाकर बैठ जाते हैं फिर मौत का फ़रिश्ता उसके सरहाने आकर बैठ जाता है और कहता है ऐ ख़बीस रूह बाहर निकल अल्लाह की नाराज़गी और उस के ग़ज़ब

की तरफ़ आ। रूह ख़ौफ़ से तमाम आज़ा में फैल जाती है मलकुल मौत उस रूह को इस तरह खींचता है जैसे भीगी हुई ऊन से मेख़ खीची जाती है चुनांचे उसकी तमाम रगें और आसाब टूट जाते हैं फ़रिश्ते उस को टाट में लपेट देते हैं उससे सड़े हुए मुरदार की बू आती है।

फ़रिश्ते उस को ऊपर चढ़ा कर ले जाते हैं और मलाइका की जिस सफ़ से गुजरते हैं वह यही कहते हैं यह ख़बीस बू कहां से आई है। उसको ले जाने वाले फ़रिश्ते उसका सबसे बुरा नाम लेकर कहता है यह फ़लां इब्ने फ़लां है। जब दुनिया के आसमान का दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं नहीं खोला जाता है उसके बाद हुजूर ने आयत ***ला तो फ़त्तेहो लहुम अब्वाबुस्समा*** तिलावत फ़रमाई अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि इसकी किताब को सिज्जीन में लिख दो उस के बाद उसकी रूह को ज़मीन की तरफ़ फेंक दिया जाता है यह इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर ने ये आयत तिलावत फ़रमाई:

तर्जमा:—जो शख़्स अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता है उस का यही हाल होता है कि वह आसमान से गिराया जाता है और परिन्दे उसे उचक लेते हैं या हवा उसे दूर जगह फेंक देती है यानी उस की रूह दोबारा बदन में डा[illegible] जाती है और दो फ़[illegible]ते आकर उस को बिठाते हैं और दरयाफ़्त करते हैं तेरा रब कौन हैं? वह [illegible]हता है हाय हाय मुझे [illegible]लूम नहीं फ़रिश्ते कहते हैं तेरा दीन क्या है वह कहता है ऐ वाए मैं नहीं [illegible]नता फ़रिश्ते [illegible]ते हैं [illegible]ह ज़ाते गिरामी जिस की बेअसत तुम लोंगों में हुई थी उस के मुताल्लिक [illegible] कहता है [illegible]ह कहता है हाय हाय में नहीं जानता उस वक़्त एक मुनादी आवाज़ [illegible]ता है मेरे [illegible] झूट बो[illegible] उसके लिए आग का बिस्तर कर दो और आग के कपड़े पह[illegible] दो और दोज़ख़ का एक द[illegible]वाज़ा उस के लिए खोल दो चुनांचे दोज़ख़ की कु[illegible]रमी और [illegible] उस की तरफ़ आ[illegible]ी है क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि इधर उधर प[illegible]लियाँ निकल जाती हैं और एक [illegible] सूरत बद लिबास बदबूदार आकर कहता है तुझे इस तकलीफ़ [illegible] हालत [illegible] बशारत [illegible] वह दिन है जिस का तुझ से वादा किया जाता था वह कहता है तू कौन है आने वाला कहता है [illegible] तेरा अमले बद हूं वह कहता है परवरदिगार क़याम[illegible]ा न करना।

हजरत अब्दुल्लाह इब्न उ[illegible] का क़ौल है कि जब मोमिन को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उस की क़ब्र सत्तर हाथ [illegible]र सत्तर हाथ चौड़ी कर दी जाती है उस पर फूल बिखेरे जाते हैं और जन्नत के रेशमी कपड़ों से उस पर परदा डाल दिया जाता है अब अगर उस के पास कुरआन का कोई हिस्सा हिफ़्ज़ है (यानी कुरआन का कुछ हिस्सा ऐसा याद हो जिस को वह पढ़ा करता था) तो उस का नूर उस के लिए काफ़ी होता है वरना आफ़ताब की नूर की तरह उसके लिए क़ब्र में रौशनी कर दी जाती है और उस की हालत उस दुल्हन की तरह होती है जिस को बेदार करने वाला उस के सिवा कोई नहीं होता वह सो कर उठती है तो ऐसा मालूम होता है कि उस की नींद अभी पूरी नहीं हुई है।

काफ़िर की क़ब्र में हालत

काफ़िर को जब क़ब्र में रखा जाता है तो उस पर क़ब्र ऐसी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां पेट के अन्दर टूट कर घुस जाती है और ऊंट के बराबर सांप उस पर डसने के लिए छोड़े जाते हैं जो उस का गोश्त इस तरह खाते हैं और नोचते हैं कि जिस्म की सिर्फ़ हड्डियां बाक़ी

रह जाती है और कुछ गूंगे, बहरे, अन्धे शैतान उस पर छोड़े जाते हैं उन्ही को शैताने मरदूद कहा गया है उन के पास लोहे के घन होते है उन घनों से वह उस को मारते हैं और यह न उसकी आवाज़ सुनते हैं न उस को देखते हैं कि उन पर रहम खायें सुबह व शाम यह काफ़िर आग के सामने पेश किया जाता है।

इन तमाम अहादीस से क़ब्र का अज़ाब और क़ब्र की राहतें साबित हैं अगर कोई एतराज़ करे कि जिस शख़्स को सूली दे दी गई हो और दरिन्दे परिन्दे उस का गोश्त नोच कर खा गये हों या कोई शख़्स जल गया हो या डूब गया हो या दरिन्दों ने उस को फाड़ खाया हो तो उस का क्या होगा? उस पर अज़ाब किस तरह होगा? तो जवाब यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ब्र के अज़ाब के बारे में फ़रमाया है और क़ब्र मुनकर नकीर के सवाल व जवाब को लोगों की आदत और तरीक़े के हसबे हाल बयान फ़रमाया है कि लोग मुर्दों को क़ब्रों में दफन करते हैं अगर किसी मुर्दा के अज्ज़ा परागंदा हो जायें तो अल्लाह तआला उस की रूह को ज़मीन पर भेजता है अगर वह अज़ाब के लाएक़ है तो रूह को अज़ाब होता है और अगर नेक है तो रूह को राहत व नेमत मयस्सर होती है।

काफ़िरों की रूहों को दिन में दो मरतबा यानी सुब्ह व शाम अज़ाब दिया जाता है यह अज़ाब क़यामत तक नाज़िल होता रहेगा जब क़यामत क़ायम होगी तो उन के जिस्मों के साथ दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। अल्लाह तअला का इरशाद है: सुब्ह व शाम आग पर उन की पेशी होती है और क़यामत के दिन हुक्म होगा फ़िरऔनों को सख़्त तरीन अज़ाब में दाख़िल करो।

अरवाहे शोहदा

हमारा यह अक़ीदा है कि शहीदों और मोमिनों की रूहें सब्ज़ परिन्दों के हौसलों (पोटों) में रहती हैं और जन्नत की सैर करती है और अर्श के [illegible] की किनदीलों में लौट कर क़याम करती है। दूसरी मरतबा सूर फूंके जाने पर वह हिसाब व किताब के लिए ज़मीन पर उतर कर अपने जिसमों दाख़िल [illegible] जाएंगी। हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुजूर ने फ़रमाया जब तुम्हारे भाई ग़ज़वए उहद में शहीद हो गए ता उन की रूहों को अल्लाह तआला ने सब्ज़ परिन्दों के पोटों (हवासिल) में दा[illegible] दिया वह जन्नत में आज़ाद फिरते हैं और अर्श के साए में सोने की किन्दीलों में बसेरा करते हैं जब उन्होंने अच्छा खाना पहनना और पाकीज़ा आराम गाहें पाईं तो कहने लगे हमारे भाईयों को कोई मुत्तला कर दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं हम को रिज़्क़ दिया जाता है पस वह जिहाद से गुरेज़ और जंग से एराज़ न करें अल्लाह तआला ने उनकी उस ख़्वाहिश पर फ़रमाया और वह बड़ा सच्चा है कि मैं उन को मुत्तला कर दूगां।

चुनांचे यह आयत नाज़िल हुई:

जो लोग अल्लाह की राह मारे गए उन को मुर्दा ख़्याल न करो बल्कि वह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं उन को रिज़्क़ दिया जाता है और अल्लाह ने उनको अपने फ़ज़्ल से जो कुछ अता किया है उस पर वह ख़ुश हैं।

यह हो सकता है कि मोमिन और काफ़िर के जिस्म के बाज़ हिस्से से हो और बाज़ से न हो और जो सूलूक अज्ज़ा से हुआ है कुल से हो। जवाब में यह भी कहा गया है कि अल्लाह तआला तमाम अज्ज़ाए मुतफ़र्रक़ा को तंगीए क़ब्र और मुनकर नकीर के सवाल के लिए जमा कर

देता है जिस तरह हश्र और हिसाब किताब के लिए अल्लाह मुतफर्रिक़ अज्ज़ा को जमा कर देगा।

हश्र अजसाद

क़ब्रों से मुर्दों के उठने और मुर्दों के मुनतशिर अज्ज़ा के जमा होने पर ईमान लाना वाजिब है। जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है:

और क़यामत आने वाली है इसमें कोई शक नहीं है और अल्लाह क़ब्रों वालों को जरूर उठाएगा जिस तरह अल्लाह ने तुम को पहली बार पैदा किया वैसी ही तुम दोबारा लौटोगे।

अल्लाह तआला का इरशाद है

इसी ज़मीन (मिट्टी) से हमने तुम्हें पैदा किया है और इसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और इसी से हम तुम को दोबारा उठाएंगे।

अल्लाह क़ब्रों से निकालेगा और जमा करेगा इस लिए कि हर शख़्स को उसकी कोशिश का बदला मिल जाए बदी करने वालों को अल्लाह उनके अमल की सज़ा दे और जिन्होंने नेकी की हो उनको नेकी सवाब अता फ़रमा दे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है

वह अल्लाह जिस ने तुम को पैदा किया वही फिर तम को मौत देता है और फिर जिन्दा करेगा

बेशक जो पहली बार पैदा करने पर क़ादिर है वह इस पर भी क़ादिर है कि उन्हें दोबारा जिला दे।

सय्यदे कौनैन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत

आंहज़रत का शफ़ाअत फ़रमाना

इस बात पर भी ईमान लाना वाजिब है कि अल्लाह तआल हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शफ़ाअत को कबीरा और सग़ीरा गुनाह करने वालों के हक़ में हिसाब के वक़्त क़बूल फ़रमाएगा, हिसाब के वक़्त दोज़ख़ में जाने से पहले हुज़ूर तमाम उम्मतों के मोमिनों की शफ़ाअत फ़रमाएंगे और दोज़ख़ में दाख़िल होने के बाद सिर्फ़ अपनी उम्मत की शफ़ाअत फ़रमाएंगे। अल्लाह तआला हुज़ूर की और दूसरे अहले ईमान की शफ़ाअत से गुनहगार दोज़ख़ से निकलेंगे यहां तक की जिस के दिल में ज़र्रा भर भी ईमान होगा और जिसने ख़ुलूस के साथ एक बार भी कलमए तौहीद पढ़ा होगा वह भी दोज़ख़ में नहीं रहेगा।

फ़िरक़ा क़दरिया (मुतज़ला) इस का मुनकिर है लेकिन अल्लाह तआला के इन इरशादात में उन के क़ौल की तकज़ीब मौजूद है

(1) हमारा न कोई सिफ़ारशी है और न कोई गहरा दोस्त।

(2) क्या हमारे कुछ सिफ़ारशी हैं जो हमारी सिफ़ारिश करें।

(3) सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उनको फ़ायदा नहीं देगी।

इन तमाम आयात मुन्दर्जा बाला से साबित है कि आख़िरत में शफ़ाअत का वजूद होगा हर चंद कि काफ़िर इस से महरूम रहेंगे। इसी तरह हदीस शरीफ़ से भी साबित है हजरत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे पहले मैं ही वह शख़्स हूंगा जो क़यामत के दिन ज़मीन के शिगाफ़्ता होने के बाद बर आमद हूंगा मगर मैं यह बात फ़ख़्र के तौर पर नहीं कह रहा हूं मैं ही औलादे आदम का सरदार हूं और मुझे इस पर फ़ख़्र नहीं। लिवाइल हम्द मेरे ही हाथ में ही होगा में फ़ख़रिया नहीं कहता सबसे पहले मैं ही बिला फ़ख़्र बहिश्त में जाऊंगा मगर इस पर भी मुझे फ़ख़्र नहीं। सबसे पहले बहिश्त की ज़ंजीर मैं ही हिलाऊंगा मुझे ही सबसे पहले बारगाहे इलाही में हाज़िर होने की इजाज़त दी जाएगी और दीदार हक़ नसीब होगा। मैं अल्लाह तआला के हुज़ूर में सजदा में गिर पड़ूंगा उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सर उठाओ और शफ़ाअत करो तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल की जाएगी सवाल करो तुम्हारा सवाल पूरा किया जाएगा मैं सर उठा कर अर्ज़ करूंगा ***या रब्बे उम्मती उम्मती*** मैं बराबर अपने अल्लाह की तरफ़ रूजूअ करता रहूंगा। अल्लाह तआला फ़रमाएगा जाओ देखो जिस के दिल में दाना के बराबर भी ईमान पाओ उस को दोज़ख़ से निकाल लो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के इस क़दर लोगों को दोज़ख़ से निकालूंगा कि वह पहाड़ की बलन्दी के बराबर होंगे फिर दूसरे पैग़म्बर मुझ से कहेंगे कि अल्लाह के हुज़ूर में फिर मग़फ़िरत और बख़्शिश की दुआ करें मैं कहूंगा

कि इतने बार अपने रब से मैं सवाल कर चुका हूं कि अब मुझे सवाल करते शर्म आती है।

हज़रत जाबिर की रिवायत करदा हदीस में है कि हुजूर ने फ़रमाया, उम्मते मोहम्मदिया के कबीरा गुनाहों करने वालों के लिए मेरी सिफ़ारिश होगी। हजरत अबू हुरैरा की रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हर नबी की एक दुआ क़बूल होती है चुनांचे हर एक नबी ने अपनी दुआ करने में उजलत से काम लिया लेकिन मैंने अपनी दुआ को महफ़ूज़ रख छोड़ा ताकि क़यामत के दिन अपनी उम्मत की सिफ़ारिश करूं चुनांचे मेरी शफ़ाअत इन्शा अल्लाह उम्मत के उन लोगों के लिए होगी जिस ने अपनी ज़िन्दगी में अल्लाह के साथ किसी और को शरीक न किया हो। इन्शा अल्लाह मेरी दुआ उस के हक़ में ज़रूर कबूल होगी।

हज़रत अनस की रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ज़मीन पर जिस क़दर पत्थर और ढेले पाए जाते हैं उनसे भी ज़्यादा लोगों की क़यामत में मैं शफ़ाअत करूंगा। आप की शफ़ाअत मीज़ाने अद्ल के पास भी होगी और पुल सिरात पर भी, इस तरह हर नबी की शफ़ाअत साबित है।

हज़रत हुज़ैफ़ा की रिवायत है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम क़यामत के दिन कहेंगे ऐ मेरे रब अल्लाह तआला फ़रमाएगा लब्बैक, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कहेंगे परवर दीगार तूने औलादे आदम को जला दिया अल्लाह तआला फ़रमाएगा जिस के दिल में एक गन्दुम या जौ के बराबर ईमान हो उसको आग से निकाल लो। इसी तरह हर उम्मत के अबरार और सिद्दीक़ की शफ़ाअत क़बूल होगी। हज़रत अबू सईद खुदरी से मरवी है कि हुजूर ने फ़रमाया हर आदमी को एक दुआ करने का हक़ अता किया गया है और मैंने अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिए उसे महफ़ूज़ रखा है मेरी उम्मत के लोग ऐसे होंगे कि एक शख़्स अपने क़बीले की शफ़ाअत करेगा उस का क़बीला बख़्श दिया जाएगा और जन्नत में दाख़िल होगा बाज़ लोग एक जमाअत की शफ़ाअत करेंगे और उनकी शफ़ाअत से अल्लाह उन को जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा इसी तरह बाज़ लोग तीन आदमियों की, बाज़ दो आदमियों की और बाज़ एक आदमी की सिफारिश करेंगे।

हज़रत इब्ने मसऊद से मरवी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुसलमानों के एक गरोह को दोज़ख़ का अज़ाब दिया जाएगा लेकिन अल्लाह की रहमत और शफ़ाअत करने वालों की शफ़ाअत से उन को जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। हजरत ओवैस क़रनी की मशहूर रिवायत है कि जब लोग दोज़ख़ आग से जल कर कोयला हो चुके होंगे तो जिस पर अल्लाह तआला मेहरबानी, रहमत, करम और एहसान करना चाहेगा उसको दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर देगा।

हजरत हसन बसरी ने ब रिवायत हज़रत अनस बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं बराबर शफ़ाअत करता रहूंगा मेरा रब मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमाता रहेगा यहां तक कि मैं अर्ज़ करूंगा ऐ रब मेरी शफ़ाअत हर उस शख़्स के लिए कबूल फ़रमा जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मोहम्मद यह शफ़ाअत न आप के लिए है और न किसी और के लिए, मुझे अपनी इज़्ज़त व रहमत की कसम मैं ला इलाहा इल्लल्लाह के क़ाएल को आग में नहीं छाडूंगा।

सिरात

सिरात की कैफ़ियत

जहन्नम के ऊपर सिरात होने पर यक़ीन रखना वाजिब है। सिरात एक पुल है जो जहन्नम की पुश्त पर बिछा हुआ है वह पुल जिसे अल्लाह चाहे जहन्नम की तरफ़ खींच लेगा और जिसे चाहे उस उतार देगा। पुल से गुज़रने वालों को उनके अमाल के मुताबिक़ नूर अता होगा कुछ यहां चलने वाले होंगे कुछ दौड़ने वाले, कुछ सवार, कुछ जानू के बल और कछ चूतड़ों के बल घिसटने वाले होंगे।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तवील हदीस में फ़रमाया है कि सिरात में आंकड़े होंगे ऐसे जैसे सअदान के कांटे। (सअदान एक ख़ार दान घास है जिसे ऊंट बड़ी रग़बत से खाता है, इसके कांटे बहुत लम्बे लम्बे होते हैं) हुज़ूर ने सहाबा से दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुम सअदान के कांटों से वाक़िफ़ हो? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह जी हां हम वाक़िफ़ हैं। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया तो वह आंकड़े सअदान की तरह होंगे जिन की लम्बाई का अल्लाह तआला के सिवा किसी को अन्दाज़ा नहीं, यह कांटे लोगों को खींच लेंगे पस बाज़ लोग अपने आमाल की वजह की वजह से हलाक हो जाएंगे बाज़ लोग गहरे ज़ख्म खाएंगे और दोज़ख़ में फैंक दिये जाएंगे और बाज़ लोग ज़ख्मी होने के बाद नजात पा जाएंगे। वह आंकड़े अपनी धार के बाइस काटने के लिए भी होंगे। हुज़ूर ने यह भी फ़रमाया कि क़ुरबानी के जानवरों को फ़रबा बनाओ वह सिरात पर तुम्हारी सवारियां हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया सिरात बाल से ज़्यादा बारीक, शोला से ज़्यादा गर्म और तलवार से ज़्यादा तेज़ है उस की लम्बाई आख़िरत के सालों के हिसाब से तीन सौ सालों की मुसाफ़त है नेक लोग तो सिरात से पार हो जाएंगे और बदकार उस से फिसल पड़ेंगे एक क़ौल यह भी है कि आख़िरत के सालों के हिसाब से सिरात की मुसाफ़त तीन हज़ार साल है।

हौज़े कौसर

अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि क़यामत के दिन हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक हौज़ होगा जिससे अहले ईमान सैराब होंगे और काफ़िर महरूम रहेंगे। पुल सिरात से गुज़रने के बाद और जन्नत में दाख़िल होने से पहले यह हौज़ आप को अता किया जाएगा उस का पानी एक बार पीने के बाद कभी प्यास नहीं लगेगी। हौज़ की चौड़ाई एक माह की मसाफ़त के बाद होगी उस का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा शीरीं होगा। उस के चारों तरफ़ कूज़े होंगे जो शुमार में सितारों के बराबर होंगे हौज़ में दो नल होंगे उसमें कौसर से आकर दो नालों के दहाने मिलते हैं उस पानी का मम्बा जन्नत है और उस की शाख़ मैदाने हिसाब में होंगी।

हौज़ का तज़किरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस हदीस में फ़रमाया है [illegible] हज़रत सौबान से मरवी है रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया क़यामत के दिन मैं हौज़ के पास हूं [illegible] हुज़ूर वाला से हौज़ की वुसअत की दरयाफ़्त की गई? आप ने फ़रमाया जितनी इस मक़ाम से [illegible] अम्मान तक है। उस का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा उसमें जन्नत [illegible] दो नाले आकर मिल जाते हैं एक चांदी का दूसरा सोने का। जो एक बार उसका पानी पी [illegible]

लेगा वह फिर कभी प्यासा नहीं होगा।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम से मिलने का मुकाम मेरा हौज़ है जिस की चौड़ाई उस की लम्बाई के बराबर होगी मरब्बा होगा। मक्का से एलिया तक जितना फ़ासला है उसकी वुसअत इस से भी ज़्यादा यह फ़ासला एक माह की मुसाफ़त के ब क़द्र है। उस पर कूज़े सितारों की मानिन्द होंगे उस का पानी चांदी से ज़्यादा सफ़ेद होगा जो एक मरतबा उस का पानी पी लेगा फिर कभी प्यासा नहीं होगा। उसी तरह हर पैग़म्बर को एक एक हौज़ दिया गया है सिवाये सालेह पैग़म्बर के, उनका हौज़ ऊंटनी के थन होंगे, हर उम्मत के अहले ईमान हौज़ का पानी पियेंगे मगर काफ़िरों को पीना नसीब न होगा।

हौज़े कौसर की वुसअत

इसी सिलसिले की एक और हदीस में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरा हौज़ इतना है जितना अदन से उम्मान तक फ़ासला है उस के दोनों किनारों पर मोतियों के ख़ेमे नस्ब हैं और उसके कूज़े तादाद में आसमान के सितारों के बराबर हैं उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क की है उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद बर्फ से ज़्यादा ठंडा शहद से ज़्यादा शीरीं है जो उस को एक बार पी लेगा फिर कभी प्यासा नहीं होगा, क़यामत के दिन हौज़ पर मेरे पास आने से इस तरह अलग रखा जाएगा जिस तरह ग़ैर ऊंट को दूसरे अपने ऊंटों से हंका दिया जाता है। हुजूर ने फ़रमाया मैं कहूंगा कि मेरे पास आओ मेरे पास आओ उस वक़्त मुझे बताया जाएगा कि आप नहीं जानते कि आप के बाद इन लोगों ने कैसी कैसी नई बातें कीं मैं कहूंगा कि क्या नई बातें निकाली थीं कहा जाएगा इन्होंने आप की तालीम को बदल डाला था तब मैं कहूंगा कि दूर ही दूर हो (फ़िरक़ा मोतज़ली ने इस हौज़ से इन्कार किया है लिहाज़ा वह इस हौज़ के पानी से महरूम रहेंगे) अगर यह लोग हौज़ के इन्कार से तौबा न करेंगे और आयात व हदीस व अक़वाले सहाबा को रद्द करने से तौबा नहीं करेंगे तो दोज़ख़ में प्यासे दाख़िल होंगे।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी हदीस में है कि हुजूर ने फ़रमाया कि जिसने शफ़ाअत की तकज़ीब की उसको शफ़ाअत नसीब नहीं होगी और जिस ने हौज़ की तकज़ीब की उसके नसीब में उसका पानी न होगा।

रोज़े हश्र हुजूर का कुर्ब व इख़्तेसास

अहले सुन्नत का यह अक़ीदा है कि अल्लाह तआला अपने नबी मुख़्तार सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़यामत के दिन अपने तमाम अंबीया व मुर्सलीन से बलन्द तर अपने कुर्ब में अर्श पर बिठाएगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने एक आयत की तशरीह के तहत रिवायत की है कि हुजूर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला आप को अपने कुर्ब में तख़्त पर बिठाएगा और हश्शाम बिन उरवा ने हज़रत आएशा रज़ी अल्लाहो अन्हा से रिवायत बयान की है कि उन्होंने कहा हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मकामे महमूद के बारे में दरयाफ़्त किया गया, हुजूर ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझे अर्श पर बिठाने का वादा फ़रमाया है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से भी ऐसा ही मरवी है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम से मरवी है कि हुजूर ने फ़रमाया जब क़यामत का दिन होगा तो तुम्हारे नबी को बुला कर अल्लाह की कुर्सी पर बिठाया जाएगा लोगो

ने दरयाफ़्त किया ऐ अबा मसऊद (रावी) जब अल्लाह तआला कुर्सी पर जलवा अफ़रोज़ होगा तो क्या हुज़ूर हक़ तआला के कुर्ब में होंगे उन्होंने कहा हां तुम्हारी समझ पर अफ़सोस है आप उसी के साथ ही होंगे।

मुसलमानों का हिसाब और अल्लाह तआला की परदा पोशी

अहले सुन्नत का यह भी अक़ीदा है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला मोमिन को हिसाब के लिए बुलाएगा तो उन्हें अपने क़रीब करके उन पर पर दस्ते करम रखेगा यहां तक कि उसे लोगों से छुपा लेगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से मरवी है कि उन्होंने आप आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह इरशाद फ़रमाते हुए सुना कि क़यामत के दिन मोमिन को लाया जाएगा उस पर अल्लाह अपना दस्ते करम रखेगा यहां तक कि उसको लोगों से छुपा लेगा बन्दए मोमिन अपने तमाम गुनाहों को इक़रार करेगा और दिल में सोचेगा कि मैं हलाक हो गया मगर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल फ़रमाएगा मेरे बन्दे यह तेरे गुनाह हैं चूंकि मैंने दुनिया में उन्हें छुपा रखा था आज मैं तेरे लिए उन को बख़्शता हूं।

हिसाब लेने के मानी यह हैं कि बन्दे के सामने बुराईयों और नेकीयों की फ़ेहरिस्त पढ़ कर उस के आमाल की जज़ा व सज़ा की मिक़दार से वाक़िफ़ किया जाएगा और जो चीज़ उस को नुक़सान पहुंचाने वाली है उससे आगाह कर दिया जाएगा। मोतज़ला हिसाब लेने के मुनकिर हैं वह अल्लाह तआला के इस इरशाद को झुटलाते हैं: बेशक हमारी ही तरफ़ उनकी वापसी होगी और हमारे ही ज़िम्मा उन का हिसाब है।

मीज़ान

अहले सुन्नत का यह भी अक़ीदा है अल्लाह की एक मीज़ाने अद्ल भी है जिसमें क़यामत के दिन लोगों की नेकियां और बुराईयां वज़न की जाएंगी। मीज़ान के दो पलड़े और एक ज़बान डंडी जिसे पकड़ कर तौलते हैं होगी।

फ़िरक़ए मोतज़ला, फ़िरक़ा मरजिया व ख़वारिज ने उस मीज़ाने अद्ल से भी इनकार किया है वह कहते हैं मीज़ान के मानी आमाल को तौलना नहीं है बल्कि अद्ल व इन्साफ़ के हैं। हालांकि अल्लाह की किताब और सुन्नत में उनकी तकज़ीब मौजूद है। अल्लाह तआला फ़रमाता है।

हम क़यामत के दिन अद्ल की तराज़ूयें रखेंगे और किसी जान पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा उस का अमल राई के दाना के बराबर होगा तो हम उसे देंगे और हम हिसाब करने वाले काफ़ी हैं।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया है:

जिस के वज़न भारी होंगे वह पसंदीदा ऐश में रहेगा और जिस के वज़न हल्के होंगे वह हावीया (तबक़ए जहन्नम) की गोद में जाएंगे।

हल्का भारी अद्ल की सिफ़त नहीं है यह तराज़ू अल्लाह तआला के अपने हाथ में होगी। क्योंकि बंदों का हिसाब अल्लाह तआला ने अपने हाथ में रखा है नवास बिन समआन कुलाबी की रिवायत की है कि उन्होंने हुज़ूर को इरशाद फ़रमाते सुना कि रोज़े क़यामत तराज़ू रहमान के हाथ में होगी वही कुछ को ऊंचा करेगा और कुछ पस्त। एक रिवायत यह भी है कि तराज़ू जिब्रील अलैहिस्सलाम के हाथ में होगी हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान से मरवी है कि हज़रत जिब्रील साहबे

मीज़ान होंगे। अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील से फ़रमायेगा। ऐ जिब्रील इनका तवाज़ुन करो इनके आमाल तौलो जब वह तौलेंगे तो बाज़ के पलड़े भारी होंगे और बाज़ के हलके।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तराज़ू रखी जायेगी एक आदमी को लाया जायेगा और उसे तराज़ू के पलड़े में रखा जायेगा और दूसरे पलड़े में उसके तमाम आमाल को। आमाल का पलड़ा अगर हलका होगा तो उसे दोज़ख़ की तरफ़ ले जायेंगे। उस वक़्त आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि इसे ले जाने में जल्दी न करो इसकी एक चीज़ वज़न होने से रह गई है। चुनांचे एक चीज़ लाई जाएगी जिस पर ला इलाहा इल्लल्लाह लिखा होगा उसको आदमी के आमाल के पलड़े (नेकियों के पलड़े) में रख दिया जायेगा उसकी वजह से तराज़ू (पलड़ा) झुक जायेगी और उसको जन्नत में भेजने का हुक्म दे दिया जायेगा।

एक और हदीस (मरफ़ूअ) में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया क़यामत के दिन एक आदमी को मीज़ान के पास लाया जायेगा फिर निनान्वे तूमार (दफ़्तर) लाये जायेंगे। हर तूमार की लम्बाई हद्दे निगाह के बराबर होगी उन सब में उसके गुनाहों और ख़ताओं का इंदराज होगा चुनांचे उसकी बदियां नेकियों पर ग़ालिब आ जायेंगी। और उसको दोज़ख़ की तरफ़ भेजने का हुक्म हो जायेगा जब वह पुश्त फेरेगा तो अचानक एक बलन्द आवाज़ से पुकारने वाला पुकार कर कहेगा अभी इसका कुछ हिस्सा रह गया है चुनांचे कोई चीज़ अंगूठे के सरे (पोर) के बराबर लाई जायेगी (हुज़ूर ने अंगूठे का निस्फ़ हिस्सा का पकड़ कर बताया) जिस पर ला इलाहा इल्लल्लाह व अन्न मोहम्मद रसूलुल्लाह (कलमए शहादत) तहरीर होगा। उसको उसकी नेकियां के पलड़े में रख दिया जायेगा तो नेकिया बुराईयां से भारी हो जायेंगी और उसको जन्नत की तरफ भेज देने का हुक्म हो जायेगा। एक हदीस के अल्फ़ाज़ इस तरह हैं कि हुज़ूर वाला ने अंगूठा पकड़ कर बताया फिर इतना काग़ज़ उसके लिये निकाला जायेगा जिस पर ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मद रसूलुल्लाह की शहादत तहरीर होगी बाज़ अक़्वाल में आया है कि क़यामत के दिन ज़र्रात और राई के दानों के बराबर आमाल की सूरत होगी नेकियां अच्छी सूरत होंगी जिन को नूर के पलड़े में डाला जायेगा और अल्लाह की रह़मत के साथ मीज़ान भारी हो जायेगी। बुराईयां बुरी और भौंडी सूरतों में होंगी उनको तारीक पलड़े में डाला जायेगा और अल्लाह के [illegible] के साथ मीज़ान भारी हो जायेगी।

मीज़ान के भारी हो जाने के मानी पलड़े का ऊंचा हो जाना है और हलके होने के मानी नीचा हो जाना है जो दुनियावी तौल के बर ख़िलाफ़ है। ईमान और शहादत का कलिमा पलड़ा भारी होने का बाइस होगा और पलड़े के हलके होने का बाइस अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना है। जो पलड़ा भारी होता है वह अपने मालिक को बहिश्त में ले जाता है और हलका पलड़ा मालिक को दोज़ख़ में पहुंचाता है, उस दोज़ख़ का नाम हाविया है, हाविया दोज़ख़ का सबसे निचला दर्जा है, अल्लाह तआला का इरशाद है:

तर्जमा:—जिसके वज़न भारी होंगे वह पसंदीदा ज़िन्दगी यानी बहिश्त बरीं में होगा और जिसके वज़न हलके होंगे उसका ठिकाना वहां हाविया होगी।

अहले हिसाब के अक़्साम

आमाल के वज़न किए जाने के एतबार से तीन तरह के लोग होंगे (1) वह लोग जिन की

नेकियां बुराइयों से ज़्यादा होंगी उनको जन्नत में जाने का हुक्म होगा (2) वह लोग जिनकी बदियां और बुराइयां नेकियों पर ग़ालिब आएंगी उन को दोज़ख में जाने का हुक्म होगा (3) वह लोग जिन की नेकियां और बदियां बराबर होंगी यह लोग आराफ़ वाले होंगे फिर जब अल्लाह चाहेगा उन को जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा। ***व अलल आराफ़े रिजालुन*** का यही मतलब है मुकर्रब बन्दे बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि 70 सत्तर हज़ार बन्दे बे हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे।

अहले ईमान में से बाज़ लोगों को थोड़ा सा हिसाब लेकर जन्नत में दाख़ला का हुक्म दे दिया जाएगा बाज़ लोगों का पूरी तरह हिसाब लिया जाएगा फिर उन का मामला अल्लाह के सुपुर्द होगा वह चाहेगा तो जन्नत मे भेज देगा चाहेगा तो दोज़ख में जाने का हुक्म देगा अल्लाह तआला का इरशाद है।

जिसके दाहिने हाथ मे नामए आमाल दिया जाएगा उस का हिसाब आसानी से हो जाएगा मज़ीद इरशाद फ़रमाया है

हर इन्सान का आमाल नामा उस की गरदन में लटका दिया जाएगा वह उसे खुला हुआ देख लेगा और उसे हुक्म दिया जाएगा इसे पढ़ आज तेरी ज़ात ही हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।

हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहु से मरवी हदीस में है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला तमाम मख़लूक़ का सिवाए मुशरिकों के हिसाब लेगा। मुशरिक का हिसाब नहीं लिया जाएगा और उस को बिला हिसाब ही दोज़ख में भेज देने का हुक्म होगा।

जन्नत और दोज़ख़

जन्नत और दोज़ख़

अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि जन्नत और दोज़ख़ दोनों पैदा हो चुके हैं। यह दो घर हैं एक को अहले ताअत व अहले ईमान के सवाब व राहत के लिए अल्लाह ने बनाया है और दुसरा गुनहगारों और ना फ़रमानों के सज़ा और अज़ाब के लिए। यह दोनों घर अज़ल से हैं और अबद तक रहेंगे, कभी फ़ना नहीं होंगे। यह जन्नत वही है जिसमें हज़रत आदम हज़रत हव्वा थे और इब्लीस लईन ने उन्हें वहां से निकलवाया और खुद भी निकाला गया। मोतज़ला इसके मुनकिर हैं। यह लोग जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे। अपनी जान की क़सम यह हमेशा दोज़ख में रहेंगे जो मोमिन मोवहिहद सत्तर बरस तक अल्लाह की इताअत करता रहा सिर्फ़ एक गुनाहे कबीरा के इरतेकाब की वजह से उसको यह लोग दोज़ख़ी क़रार देते हैं। अल्लाह तआला की किताब और रसूलुल्लाह के इरशाद में उन लोगों के बातिल अक़ीदे की तकज़ीब मौजूद है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

जन्नत की वुसअत चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बराबर है वह मत्तक़ियों के लिए तैयार की गई है।

और फरमायाः

उस दोज़ख़ से डरो जो काफ़ीरों के लिए तैयार की गई है।

हर ज़ी फ़हम जानता है कि जो चीज़ तैयार हो चुकी है वह यक़ीनन पैदा हो चुकी है। इस

से साबित हुआ कि जन्नत व दोज़ख पैदा हो चुके हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत करदा हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं जन्नत के अन्दर गया तो मैंने वहां एक नहर बहती हुई देखी जिस के दोनों किनारों पर मोतियों के ख़ेमे थे, बहते पानी की तरफ़ हाथ मार कर देखा तो वह ख़ालिस मुश्क था। मैंने कहा जिब्रील यह क्या है? उन्होंने कहा यह वही कौसर है जो अल्लाह ने आपको अता फ़रमाया है।

बहिश्त की सूरत

हज़रत अबू हुरैरा रिवायत करते हैं कि मैंने आंहज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि बहिश्त किस चीज़ से बनाई गई है आप ने इरशाद फ़रमाया उस की ईटें सोने और चांदी की हैं और ख़ालिस मुश्क उस का गारा है उस के संगरेजें याक़ूत और मरवारीद के हैं ज़ाफ़रान और दरस की तरह इस की जमीन खुशबू दार है।

बहिश्त में दाख़िल होने वाला उस में हमेशा रहेगा उस को कभी मौत नहीं आएगी, आराम से रहेगा। दुख नहीं होगा अहले बहिश्त के कपड़े कभी नहीं फटेंगे उन की जवानी पर ज़वाल नहीं आएगा। उनका शबाब मुबद्दल ब पीरी न होगा।

यह हदीस शरीफ़ इस बात की दलील है कि जन्नत और दोज़ख पैदा हो चुके हैं और जन्नत की राहत दवामी और ग़ैर फ़ानी है। अल्लाह तआला की [illegible] है जन्नत का मेवा दवामी है और उस का साया भी।

दूसरी आयत में है: वह नेमतें न कभी ख़त्म होंगी और न इस्तेमाल पर रोक टोक होगी।

हूराने बहिश्त

जन्नत की नेमतें में बड़ी आंखों वाली हूरें भी हैं अल्लाह तआला ने उनको जन्नत के अन्दर हमेशा रहने के लिए पैदा किया है वह फ़ना नहीं होंगी।

अल्लाह तआला का इरशाद है

उन में नज़र बन्द रखने वाली हूरें है जिनको इससे पहले न किसी इंसान ने छुआ है और न किसी जिन्न ने।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया है: ख़ेमों में हूरें महफ़ूज़ हैं।

हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे आयत ***क अमसालिल लूउल ईल मकनून*** के बारे में बताइये हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया उनकी सफ़ाई ऐसी होगी जैसे सीप में मोती। इस इरशाद के बाद आप ने फ़रमाया हूरें कहेंगी हम हमेशा रहने वाली हैं हम कभी नहीं मरेंगी और हम ख़ुश रहने वाली हैं कभी गुस्से नहीं होंगी। हुज़ूर ने फ़रमाया हूरें सच्चे घर में होंगी सच्ची ही बात कहेंगी। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चूंकि सादिक़ हैं हक़ बात के सिवा फ़रमाते ही नहीं, आप ने फ़रमाया कि हूरें हमेशा रहेंगी, कभी नही मरेंगी।

आख़िरत की बीवी

हज़रत मआज़ बिन जबल की रिवायत है हज़रे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया जब कभी कोई औरत अपने शौहर को ईज़ा देती है तो हूरे ऐन में से वह हूर जो आख़िरत में उस की बीवी होगी उस औरत से कहती है ख़ुदा तुझे हलाक करे, इस को दुख न दे यह तो तेरे पास मेहमान है अन्क़रीब तुझ से जुदा होकर मेरे पास आएगा। इस हदीस से यह साबित हुआ कि जन्नत और दोज़ख़ फ़ना नहीं होंगे और न वह चीज़ें फ़ना होंगी जो जन्नत और दोज़ख़ में हैं जो उसमें दाख़िल होंगे उनको फिर वहां से नहीं निकाला जाएगा न अल्लाह तआला अहले जन्नत पर मौत को तसल्लुत करेगा न जन्नत की राहत को ज़वाल होगा। जन्नती हमेशा हमेशा बढ़ती हुई राहतों में रहेंगे। अल्लाह तआला के हुक्म से जन्नत व दोज़ख़ की दर्मियानी दीवार पर मौत को ज़िबह कर दिया जाएगा और एक मुनादी पुकार कर कहेगा ऐ अहले जन्नत अब तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे तुम्हें कभी मौत नहीं आएगी और ऐ दोज़ख़ के मकीनो! तुम भी हमेशा ज़िन्दा रहोगे और मरोगे नहीं रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हदीस सहीह में इसी तरह मनकूल है।

बाब 8

हुज़ूर की रिसालत और आप की फ़ज़ीलत उम्मते रसूल, बिदअ़त , सिफ़ात इलाही , गुमराह फ़िरके

सय्यदुल अंबिया नबीए आख़िरीन

तमाम अहले इस्लाम का अक़ीदा है कि मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम अल्लाह के रसूल, तमाम रसूलों के सरदार और आख़िरी नबी थे। अल्लाह तआ़ला ने सब इंसानों और तमाम जिन्नात के लिए भेजा था। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: हम ने आप को तमाम आदमियों के लिए भेजा है। हम ने आप को जहाने वालों के लिए रहमत बना भेजा है।

हज़रत अबू अमामा की रिवायत करदा हदीस में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझे दूसरे अंबिया पर चार बातों में बरतरी अता फ़रमाई है मुझे तमाम लोगों के लिए भेजा गया (आख़िरी हदीस तक) और यह कि आप को वह तमाम मोजज़ात दिए गए हैं जो आप के सिवा किसी को नहीं दिये गये। बाज़ अहले इल्म ने इन मोजज़ात की तादाद एक हज़ार बताई है उन तमाम मोजज़ात में से एक मोजज़ा कुरआन शरीफ़ है।

हज़रत इब्ने अमामा से मरवी हदीस में है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे तमाम नबियों पर चार बातों में फ़ज़ीलत दी है यह की मुझे तमाम इंसानों की तरफ़ भेजा गया (आख़िरी हदीस तक) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह मोजज़ात दिये गये जो आप के सिवा किसी पैग़म्बर को नहीं दिये गए बाज़ उलमा ने इन मोजजात की तादाद एक हज़ार शुमार की है उन तमाम मोजज़ात में से एक मोजज़ा कुरआन हकीम है। कुरआने करीम की तरतीब इबारत ऐसे निराले तरीके से है जो कलाम अरब के तमाम असालीबे बयान और उनके नज़्म व तरतीब से जुदा है इसकी तरतीब व तरकीब, इस की फ़साहत, बलाग़त हर फ़सीह व बलीग़ की फ़साहत व बलाग़त से बलन्द तर है। अहले अरब इस की एक सूरत की नज़ीर पेश करने से आजिज़ हो गए। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है: कुरआन जैसी दस सूरतें अज खुद बना कर ले आओ और अगर ला सकते हो लेकिन लोग न ला सके। फिर फ़रमाया कि एक ही सूरत बना लाओ कुरआन के मान्निद एक सूरत ही बना लाओ।

चुनांचे एक सूरत भी लाने में आजिज़ रहे पूरा कुरआन लाना तो बड़ी बात थी बावजूद यह कि तमाम आलम से उनकी फ़साहत व बलाग़त बढ़ चढ़कर थी। फ़ुसहाए अरब गुंग हो गए अपनी ज़बानें कटवा बैठे। इससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत तमाम लोगों पर

ज़ाहिर हो गई और कुरआन पाक का उसी तरह एक मोजज़ा क़रार पाया जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा था। हज़रत मूसा ऐसे ज़माने मे मबऊस हुए थे कि हर तरफ़ साहिरों की धाक बैठी हुई थी जादूगरों का तूती बोल रहा था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से जब उन साहिरों को मुक़ाबला हुआ और उन्होंने अपने जादू के कमालात दिखाये तो हज़रत मूसा के अज़दहा बन कर उन रस्सियों को सांपों को निगल गया जादूगर मग़लूब हो गए वह ज़लील होकर पलटे और बे एख़्तियार होकर सजदे में गिर पड़े या जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दों को ज़िन्दा कर देते और मादर ज़ाद नाबीना और कोढ़ में गिरफ़्तार लोगों को तन्दरूस्त कर देते थे क्योंकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बेअसत ही ऐसे ज़माने में हुई थी जो बड़े माहिर फ़न अतिब्बा का दौर था लोग उन के सामने ऐसे ला इलाज बीमारों को पेश करते थे जो हाज़िक़ तबीबों के इलाज से शिफ़ायाब नहीं हो सके थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का यह मोजज़ा देख कर तमाम तबीब उन के फ़रमाबरदार हो गए और ईमान ले आए इस लिए कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़न्ने तिब और महारते फ़न में उन सबसे आगे बढ़ गए थे और साहबे मोजज़ा साबित हुए।

चुनांचे कुरआन पाक की फ़साहत और उसका एजाज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मोजज़ा है बिलकुल उसी तरह जैसे हज़रत मूसा का असा और हज़रत ईसा का मुर्दों का ज़िन्दा करना मोजज़ा था।

हुजूर के मोजज़े

हुजूर के उंगलियों से पानी का चश्मा जारी होना, थोड़ा खाना बकसरत लोगों के लिए काफ़ी हो जाना, ज़हरीली बकरी के गोश्त का यह कहना कि हम को तनावुल न फ़रमाएं हम ज़हरीले हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मोजज़े हैं। चांद के दो टुकड़े हो जान, ऊंट का कलाम करना, खजूर के तने का रोना आप की जानिब दरख़्त का आना भी आपके मोजज़ात हैं, इसी क़बील के बहुत से मोजज़े आप के हैं।

आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत मूसा के असा की मानिन्द या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह मरीज़ों को अच्छा कर देना अन्धों को बीनाई वापस कर देना, कोढ़ियों को जज़ाम से सेहतयाब कर देना, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी जैसे मोजज़े आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस लिए अता नहीं हुए थे कि हुजूर की उम्मत उन की तकज़ीब करके हलाकत में न पड़े जिस तरह पहली उम्मतें (तकज़ीब करके) हलाक हो गई।

अल्लाह तआला का इरशाद है:

हम को साबिक़ा मोजज़ों की तरह अपनी निशानियां भेजने से सिर्फ़ इस मसलेहत ने रोका कि अगर यह भी तकज़ीब करेंगे तो हलाक हो जाएंगे।

एक और वजह यह भी थी कि अगर साबिक़ा नबियों की तरह अगर आप भी ऐसे ही मोजज़े पेश फ़रमाते तो लोग कहते कि आप कोई नई बात तो नहीं लाए, आप ने खुद ही हज़रत मूसा और हज़रत ईसा के बारे में यह बातें फ़रमाई हैं इस लिए आप भी उन के मुत्तबईन में से हैं, जब तक आप ऐसी कोई चीज़ न लायें जो अंबियाए साबिक़ीन न लाए हों उस वक़्त तक हम आप पर ईमान नहीं लाएंगे इस लिए अल्लाह तआला ने किसी नबी को वह मोजज़ा अता नहीं फ़रमाया जो दूसरे नबी को अता फ़रमाया गया था।

चुनान्चे हर नबी को एक मख़सूस मोजज़ा अता किया गया।

उम्मते मुहम्मदिया की अफ़ज़लियत

अहले सुन्नत इस बात के मोतक़िद हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत तमाम उम्मतों से बेहतर है और उनमें उस ज़माने के लोग तमाम लोगों से बेहतर और अफ़ज़ल हैं जिन्होंने हुज़ूर को देखा, आप की तसदीक़ की आप की बैअत की और आपकी पैरवी की जिहाद किया, अपना माल और अपनी जानें कुरबान कीं। और उन लोगों में हुदैबिया वाले अफ़ज़ल हैं जिन्होंने एक दरख़्त के नीचे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक पर बैअत की, यह अस्हाब एक हज़ार चार सौ हैं, उन में अफ़ज़ल अहले बदर हैं जिन की तादाद तीन सौ तेरह (313) है जो अस्हाबे तालूत की तादाद के बराबर हैं और उन 313 में अफ़ज़ल वह दारूलख़ैज़ान वाले अस्हाब हैं जिन की तादाद बशमूल हज़रत उमर चालीस हो जाती है। और उन चालीस में अफ़ज़ल वह दस अस्हाब हैं जिनके जन्नती होने की आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गवाही दी वह दस अस्हाब यह हैं

1.हज़रत अबू बकर सिद्दीक़
2.हज़रत उमर
3. हज़रत उसमान
4. हज़रत अली
5. हज़रत तलहा
6. हज़रत [illegible]ज़ुबैर
7. हज़रत [illegible]ब्दुर्रहमान बिन औफ़
8. हज़रत स[illegible]द
9. हज़रत सइ[illegible]
10. हज़रत अबू[illegible] बिन जर्राह

रज़ियल्लाहो अन्हु[illegible]

उन में पहले चार हज[illegible]फ़ाए राशिदीन सबसे अफ़ज़ल थे और उन चारों में हज़रत अबू बकर को फिर हज़रत उम[illegible] को फिर हज़रत उसमान को फिर हज़रत अली को फ़ज़िलत हासिल है। उन चारों हज़रात ने आंहजरत के बाद (बतौर मजमूई) तीस साल तक ख़िलाफ़त के फ़रायज़ अंजाम दिए। हज़रत अबू बकर ने दो साल से कुछ ऊपर, हज़रत उमर ने दस साल, हज़रत उसमान ने बारह साल और हज़रत अली छे साल ख़लीफ़ा रहे। खुलफ़ाए राशिदीन के बाद अमीर मुआविया को नौ साल तक ख़िलाफ़त का वाली बनाया दिया गया। उससे पहले हज़रत उमर ने अमीर मुआविया को शाम का अमीर बनाया था उस उहदा पर आप बीस साल तक फ़ायज़ रहे।

ख़िलाफ़ते राशिदा

खुलफ़ाए राशिदीन ने ख़िलाफ़त बज़ोर शमशीर या जब्र के ज़रिया हासिल नहीं की थी न अपने फ़ज़्ल से छीनी थी बल्कि मुआसरीन पर उन को फ़ज़िलत हासिल थी और सहाबा कराम के इत्तेफ़ाक़ व इन्तेख़ाब और रज़ा मन्दी से उन को ख़िलाफ़त मिली थी।

हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त

हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त के मनसब पर मुहाजरीन व अंसार के इत्तेफ़ाके आरा से फ़ायज़ हुए थे। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद अंसार से चन्द मुक़र्रेरीन ने अपनी तक़रीरों में कहा कि एक अमीर हम में से और एक तुम में से हो लेकिन हज़रत उमर ने (उस के जवाब में) फ़रमाया ऐ गरोहे अंसार क्या तुम वाक़िफ़ नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर को इमामत करने का हुक्म दिया था? अंसार ने बयक ज़बान हो कर कहा हां यह सच है हज़रत उमर ने कहा कि बताओ अबू बकर से बेहतर आगे बढ़ने को किस का जी चाहता है (कौन है जो अबू बकर से आगे बढ़े?) अंसार ने कहा मआज़ल्लाह कि हम अबू बकर से आगे बढ़ें।

एक दूसरी रिवायत में इस तरह है कि हज़रत उमर ने फ़रमाया कि तुम में से किस का जी चाहता है कि हज़रत अबू बकर को जिस मक़ाम पर रसूलुल्लाह ने खड़ा किया था वहां से उनको हटा दे, सब ने बिल इत्तेफ़ाक़ कहा कि हम यह नहीं चाहते हम अल्लाह से माफ़ी चाहते हैं उसके बाद अंसार व मुहाजिरीन मुत्तफ़िक़ हो गए और सबने हज़रत अबू बकर से बैअत कर ली। बैअत करने वालों में हज़रत अली भी थे। एक सहीह रिवायत में है कि बैअत मुकम्मल हो जाने के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ तीन रोज़ तक लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाते रहे लोगों! मैं तुम्हारी बैअत वापस करता हूं क्या तुम में से कोई मेरी बैअत को न पसंद करता है और उसके जवाब में हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो सबसे आगे खड़े हो कर फ़रमाते थे न हम आप से बैअत वापस लेते हैं न कभी हम बैअत लेने की ख़्वाहिश करेंगे इस लिए कि आप को रसूलुल्लाह ने आगे किया है अब आप को पीछे कौन कर सकता है।

मोतबर असहाब और राविओं ने कहा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ की इमामत के हक़ में सब सहाबा से सख़्त थे। एक रिवायत है कि जंगे जमल के बाद अब्दुल्लाह बिन अलकव्वा ने हज़रत अली से दरयाफ़्त किया कि क्या आप से तरह इस अम्र (ख़िलाफ़त) के सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई अहद किया था? आप ने जवाब दिया कि मैंने इस बारे में बहुत ग़ौर व खौज़ किया और इस नतीजा पर पहुंचा कि नमाज़ ईलाम का बाज़ू है पस हम ने अपनी दुनिया के लिए उस चीज़ को पसन्द किया जो रसूलुल्लाह ने हमारे दीन के लिए पसंद फ़रमाई थी इस लिए हम ने हज़रत अबू बकर को अपना रहबर बना लिया और यह इस लिये कि हुज़ूर ने अपनी अलालत के दौरान अपनी जगह उन्हें इमाम बनाया। हज़रत बिलाल हर नमाज़ के वक़्त हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो कर नमाज की इत्तेला देते थे तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते कि अबू बकर से कहो कि वह नमाज़ पढ़ा दें।

अपनी हयाते मुबारका में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर के बारे में ऐसी गुफ़्तगू फ़रमाया करते थे जिससे सहाबा कराम को यूं मालूम होता था गोया आंहज़रत के बाद हज़रत अबू बकर ही ख़िलाफ़त के सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं इब्ने बतहा ने अपनी असनाद से हज़रत अली का क़ौल नक़्ल किया है कि आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह हम हुज़ूर के बाद किस का अपना ख़लीफ़ा बनायें। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया अगर तुम अबू बकर को अमीर बनाओगे तो उनको अमानत दार, दुनिया से

बे रग़बत और आख़िरत का तालिब पाओगे और अगर उमर को अमीर बनाओगे तो उनको ताक़तवर और ऐसा अमानतदार पाओगे जो अल्लाह के मामले में किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा नहीं करेगा और अगर तुम अली को अमीर बनाओगे तो उन को हिदायत याफ़्ता हादी पाओगे। चुनांचे इन्ही इरशादात की बिना पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो ख़िलाफ़त पर तमाम सहाबा का इज्मा हो गया।

हमारे इमाम हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन हम्बल ने यह एक रिवायत नक़्ल की है कि हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त इशारए इलाही से साबित है और यही मज़हब हज़रत हसन बसरी और सहाबे कराम की एक जमाअत का है कि इस की बिना वह रिवायत है जो हज़रत अबू हुरैरा ने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवाले से बयान की है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब मुझे मेराज हुई तो मैंने अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से अर्ज़ किया कि मेरे बाद अली इब्ने अबी तालिब को ख़लीफ़ा बना दे उस पर फ़रिश्तों ने कहा ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला वही करता है जो वह चाहता है आप के बाद ख़लीफ़ा हज़रत अबू बकर हैं।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इब्ने उमर की हदीस में फ़रमाया कि वह शख़्स जो अबूबकर है मेरे बाद बहुत कम अरसा ज़िन्दा रहेगा। मुजाहिद से मरवी है कि हज़रत अली ने मुझ से फ़रमाया कि हुजूर इस दुनिया से उस वक़्त तक तशरीफ़ नहीं ले गए जब तक आप ने मुझ से अहद नहीं ले लिया कि हुजूर के बाद हजरत अबू बकर सिद्दीक़ अमीर होंगे फिर उमर फिर हज़रत उस्मान और फिर मैं (अली इब्न अबी तालिब)।

हज़रत उमर की ख़िलाफ़त

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त इस बिना पर क़ाएम हुई कि उनको हज़रत अबू बकर ने ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया। इसके बाद तमाम सहाबा कराम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से बैअत कर ली और अमीरूल मोमिनीन का ख़िताब दे दिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं कि सहाबा कराम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ से कहा कि आप ने उमर को ख़लीफ़ा बनाया है हालांकि आप उन की दुरूश्त मिज़ाजी से वाक़िफ़ हैं कल आप अल्लाह तआला को क्या जवाब देंगे? आप ने फ़रमाया कि मैं जवाब दूंगा कि तेरे बन्दों में से सब से बेहतर को मैंने लोगों का अमीर बनाया था।

हज़रत उसमान की ख़िलाफ़त

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो सहाबा कराम के इत्तेफ़ाक़ राय से खलीफह मुक़र्रर हुए। हज़रत उमर ने अपनी औलाद को ख़िलाफ़त के इस्तिहक़ाक़ से महरूम करके छः असहाब की एक मजलिसे शूरा मुक़र्रर कर दी थी कि वह ख़लीफ़ा का इंतख़ाब करें वह असहाब यह हैं हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास, हजरत उसमान, हज़रत अली हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम।

हज़रत जुबैर और हज़रत सअद रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा ने अपने आप को ख़िलाफ़त की उम्मीदवारी से अलग कर लिया सिर्फ़ चार हजरात बाक़ी रह गए थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने हज़रत अली और हज़रत उसमान से कहा कि मैं अल्लाह, अल्लाह के रसूल और मुसलमानों के लिए तुम से किसी एक को मुंतख़ब कर लूंगा फिर आप ने हज़रत अली का हाथ

पकड़ कर कहा कि अली तुम पर अल्लाह के अहदे मीसाक़, ज़िम्मेदारी और अल्लाह के रसूल की ज़िम्मा की पासदारी लाज़िम है। जिस वक़्त मैं तुम्हारे हाथ पर बैअत कर लूंगा उस वक़्त तुम को अल्लाह और उसके रसूल और तमाम मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करना होगी और रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा की सीरत पर चलना पड़ैगा। हज़रत अली ने अपनी ज़ात में इस काम को पूरा करने की ताक़त नहीं पाई जो कि मज़कूरा असहाब में थी इस लिए आप ने उस दावत को क़बूल नहीं फ़रमाया। आप के इनकार पर हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान का हाथ पकड़ कर वही शर्तें दुहराईं वही बातें कही जो हज़रत अली से कही थीं। हज़रत उसमान ने उन बातों को क़बूल कर लिया। हज़रत अबदुर्रहमान ने हज़रत उसमान का हाथ छोड़ कर बैअत कर ली उसके बाद हज़रत अली ने भी हजरत उसमान की बैअत कर ली फिर दूसरे रोज़ बैअत आम ली गई। इस तरह हज़रत उसमान इत्तफ़ाके आरा से ख़लीफ़ा मुक़र्रर हो गए और शहादत के वक़्त तक इमामे बरहक़ रहे। कोई ऐसी बात आप से सरज़द नहीं हुई जो तअन का मौजिब या आप के फ़िस्क़ का सबब हो या उससे आप के क़त्ल (शहादत) का जवाज़ पैदा [illegible] सके। राफ़ज़ियों का [illegible]ल इसके ख़िलाफ़ है अल्लाह उन को हलाक करे।

हज़रत अली की ख़िलाफ़त

हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त भी [illegible] के इत्तेफ़ाक़ और सहाबा कराम के इजमा से हुई। अबू अब्दुल्लाह बिन बत्तह ने मोहम्मद बिन [illegible]फ़िया की रिवायत नक़्ल की है। मोहम्मद बिन [illegible]नफ़िया [illegible] रमाया जि[illegible] ज़माने में हज़रत उ[illegible]मान महसूर थे मैं अली के साथ था एक शख़्स ने आकर कहा कि अनक़री[illegible] अमी[illegible] मोमि[illegible] (हज़रत उसमान) को शहीद कर दिया जाएगा। हज़रत अली [illegible] सुनकर [illegible]रन खड़ [illegible] ने उस वक़्त आप की हिफ़ाज़त की ग़रज़ से आप की कमर पकड़ ली आप ने फ़रमाया मुझे छो[illegible] फिर हज़रत अली हज़रत उसमान के घर पहुंचे [illegible] उस वक़्त तक अमीरूल मोमिनीन शहीद हो चुके थे हजरत अली वहां से वापस आकर मकान [illegible] दाख़िल हुए और अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया लोगों ने आकर दरवाज़ा खटखटाया और [illegible] घर में दाख़िल होकर आप को ख़बर दी की हज़रत उसमान शहीद कर दिये गए और मुसलमानों को ख़लीफ़ा को ज़रूरत है और इस वक़्त आप से ज़्यादा ख़िलाफ़त का हक़दार हमारी नजर में कोई और नहीं है। हज़रत अली ने जवाब में इरशाद फ़रमाया मुझे ख़लीफ़ा बनाने का ख़्याल तर्क कर दो मैं अमीर होने से बेहतर तुम्हारे लिए वज़ीर हूं। लोगों ने जवाब दिया ख़ुदा की क़सम आप से ज़्यादा हक़दार ख़िलाफ़त का हम और किसी को नहीं जानते। फ़रमाया अगर तुम नहीं मानते तो मेरी बैअत पोशीदा तौर पर नहीं होगी मैं मस्जिद में जाता हूं जो मेरी बैअत करना चाहे वहां आकर मेरी बैअत करे यह फ़रमाकर आप मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गए और लोगों ने आप की बैअत कर ली पस आप शहादत के वक़्त इमामे बरहक़ थे। ख़ारजियों का क़ौल इसके ख़िलाफ़ है अल्लाह उनको हलाक करे। वह कहते हैं हज़रत अली कभी इमामे बरहक न थे। अब रहा यह मामला कि आप की हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा और अमीर मुआविया से जंग हुई तो इमामे अहमद ने इस सिलसिले में सराहत फ़रमाई है कि इस मामले में बल्कि उन तमाम झगड़ों, इख़्तलाफ़ात और

नजाआत के बारे में ख़ामोश रहा जाए जो सहाबा कराम के दर्मियान वाकेअ हुए क्योंकि कयामत के दिन अल्लाह तआला उन के बाहमी तनाज़आत को दूर कर देगा। इरशादे रब्बानी है। उन के दिलो में जो बाहमी रंजिश होगी हम उस को दूर कर देंगे और वह भाई भाई हो जाएंगे वह आमने सामने तख़्तों पर बैठे होंगे।

अलावा अजीं यह बात भी है कि अहले हल्लो अक़्द (मदीना) ने हज़रत अली की ख़िलाफ़त पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया था इस लिए आप को खुद अपनी ख़िलाफ़त के सहीह होने का यक़ीन था और मुख़ालफ़ीन से जंग करने में वह हक़ पर थे इस लिए कि जो भी इताअ़ते अमीर से बाहर हुआ और लड़ाई का झन्डा बलन्द किया वह बाग़ी हो गया और बाग़ी से जंग करना जाइज़ था।

रहा अमीर मुआविया और हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहो अन्हुम का मामला तो वह भी हक़ पर थे। इस लिए की वह ख़लीफ़ए मज़लूम के ख़ून का बदला लेना चाहते थे और क़ातिल हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो के लश्कर में मौजूद थे पस हर फ़रीक़ के पास जंग के जवाज़ की एक वजह मौजूद थी लिहाज़ा हमारे लिए सकूत इस सिलसिला में सबसे अच्छी बात है, उनके मामले को अल्लाह की तरफ़ लौटा देना चाहिए वह सबसे बड़ा हाकिम और बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। हमारा काम तो यह है कि हम अपने ओयूब पर नज़र डालें और दिलों को गुनाहो की चीज़ों से और अपनी ज़ाहिरी हालतों को तबाही अंगेज़ कामों से पाक और साफ़ रखें।

हज़रत अमीर मुआविया की ख़िलाफ़त

हज़रत अमीर मुआविया बिन अबू सुफियान रज़ियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो की शहादत और हज़रत इमाम हसन इब्ने अली का ख़िलाफ़त से दस्त बरदार होकर अमरे ख़िलाफ़त हज़रत अमीर मुआविया को सौंपने के बाद साबित व सहीह है। इमाम हसन के इस एक़दाम से रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वह फ़रमान सहीह साबित हो गया जिसमें हुज़ूर ने फ़रमाया था कि मेरा यह बेटा सय्यद है अल्लाह इस के ज़रिये से मुसलमानों के दो बड़े गरोहों में सुलह कर देगा। इमाम हसन के सुलह करने से अमीर मुआविया की ख़िलाफत वाजिब हो गई। उस साल का नाम सन जमाअत इस लिए रखा गया है कि मुसलमानों का इख़्तिलाफ़ ख़त्म हो गया और सबने अमीर मुआविया से रूजूअ कर लिया और कोई तीसरा मुद्दई ख़िलाफ़त बाक़ी नहीं रहा।

अमीर मुआविया की ख़िलाफ़त का ज़िक्र आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद में मौजूद है हुजूर ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे बाद 35,36 या 37 साल इस्लाम की चक्की घूमेगी चक्की से मुराद दीन की कुव्वत है, तीस साल से ऊपर की जो पंजसाला मुद्दत है वह अमीरे मुआविया की मुद्दते ख़िलाफ़त में आती है (यह ख़िलाफ़त 3 साल चंद माह बाक़ी रही) 30 साल तो हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो पर पूरे हो गये थे (ख़िलाफ़ते राशिदा की मुद्दत 30 साल है।)

उम्महातुल मोमिनीन और अहले बैते रसूल

हम नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुतह्हरात के साथ हुस्ने ज़न रखते हैं और हमारा यह एतक़ाद है कि वह सब उम्महातुल मोमिनीन (मुसलमानों की माएं)

है। सय्यदा आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहो अन्हा तमाम दुनिया की औरतों से अफ़ज़ल है।

अल्लाह तआला ने अपने कलामे पाक के ज़रिये (जिस की हम रोज़ाना तिलावत करते और क़यामत तक करते रहेंगे) तोहमत तराशों के क़ौल से हज़रत आइशा की पाकी का इज़हार फ़रमाया है।

इसी तरह हज़रत फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह (अल्लाह उनसे और उनके शौहर और उनकी औलाद से राज़ी हो) भी सारे जहां की औरतों से अफ़ज़ल है। जिस तरह आप के वालिदे माजिद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की मोहब्बत वाजिब है उसी तरह आप से मोहब्बत और दोस्ती रखना भी वाजिब है। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है फ़ातिमा मेरे जिस्म का एक टुकड़ा है जिस चीज़ से उस को रंज पहुंचता है इससे मुझे भी रंज पहुंचता है।

अज़मते सहाबा कराम

तमाम सहाबा कराम वह कुरआन वाले हैं जिन का तज़किरा अल्लाह तआला ने अपनी कुतुब में फ़रमाया है और उनकी तारीफ़ की है। यही मुहाजिरीन व अंसार हैं जिन्होंने दोनों क़िबलों की तरफ़ नमाज़ पढ़ी उन के बारे में हक़ तआला फ़रमाता है।

जिन लोगों ने फ़तहे मक्का से पहले राहे ख़ुदा में माल सर्फ़ किया और जिहाद किया वह दूसरों के बराबर नहीं बल्कि वह मरतबे में उन लोगों से बहुत बढ़ कर हैं जिन्होंने फ़तहे मक्का के बाद राहे ख़ुदा में माल सर्फ़ किया और जिहाद किया और अल्लाह ने हर फ़रीक़ से भलाई का वादा फ़रमाया है।

एक और आयत में फ़रमाया है:

तुम से वह लोग जो ईमान लाए और नेक अमल किये उनसे अल्लाह ने वादा फ़रमा लिया है कि उनको ज़मीन पर उसी तरह ख़लीफ़ा बनाएगा जिस तरह उससे पहले के लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके उस दीन को मज़बूत कर देगा जो अल्लाह ने उनके लिए पसंद फ़रमाया है और ख़ौफ़ के बाद बदले में उन को अमन अता कर देगा।

एक जगह और इरशाद फ़रमाया गया है।

रसूलुल्लाह के असहाब वह काफ़िरों पर दीनी उमूर में बहुत सख़्त और आपस में नर्मी का सलूक करने वाले हैं तुम उन को रुकूअ और सजदा करने वाले देखोगे। वह उससे उसके फ़ज़्ल के हर वक़्त ख़्वाहां हैं और उस की रज़ा के ख़्वास्तगार हैं उन की पेशानियों पर सजदों के निशान हैं

यह ऐसे हैं जिन की सिफ़त तौरैत में भी है और इन्जील में भी।

हज़रत जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस आयत की तफ़सीर में अपने वालिद मोहम्मद बाक़र का क़ौल नक़्ल किया है कि अल्लज़ीना मा अहू हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो हैं जो तंगी और फ़राख़ी में, ग़ार में और बद्र दिन झोपड़ी में रसूलुल्लाह के साथ रहे और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब हैं और हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान हैं और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब हैं। रसूलुल्लाह के दोनों गहरे दोस्त हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर हैं और हज़रत सअद, हज़रत सईद, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहो अन्हुम अजमईन यह दसों हज़रात ऐसे हैं जिन की सिफ़त तौरैत में भी है और इन्जील में भी है। खेती

की सबसे पहली निकलने वाली कोंपल या अगवा से मुराद रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हो के ज़रिये अल्लाह ने अपने रसूल को कुव्वत अता फ़रमाई और हज़रत उमर के ज़रिया उस सूई यानी रसूलुल्लाह की मोटाई यानी ताकत बढ़ी फिर हज़रत उसमान के ज़रिया वह खेती अपनी डंडी पर खड़ी हो गई और हज़रत अली इब्ने अबी तालिब की वजह से वह अच्छी मालूम होनी लगी और रसूलुल्लाह और आप के असहाब है मतलब यह है कि आयात मज़कूरा के हर टुकड़े का मिसदाक उन दस सहाबा में कोई न है जो अशरए मुबश्शरा कहे जाते है।

अहले सुन्नत व जमाअत का इत्तेफाक है कि जिन बातों में सहाबा कराम कि दर्मियान इख्तेलाफ है उन से ज़बान को रोका जाए उसमें बहस गुफ़्तगू न की जाए। सहाब की बद गोई से ज़बान को बन्द रखा जाए उनके फ़ज़ाएल व महासिन को बयान करना और उनके बाहमी इख्तेलाफी मामला को खुदा के सुपुर्द करना वाजिब है। जिस तरह भी उनका वकूअ हुआ है। जैसे हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो और हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर हज़रत आइशा और अमीर मुआविया के दर्मियान इख्तेलाफ़ वाकेअ हुआ जिस का ज़िक्र पहले हो चुका है उस इख्तेलाफ़ पर बहस न करें और ज़बान को बन्द रखे। हर सहाबी बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत का एतराफ़ करना ज़रूरी है।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

और वह लोग जो उनके बाद आए है कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार हमें बख्श दे और हमारे उन भाईयों को भी जो ईमान में हमसे पहले गुज़र चुके हैं उन की बाबत हमारे दिल में कोई बुराई पैदा न हो ऐ हमारे रब तू ही शफ़कत और रहम करने वाला है।

एक और आयत में इरशाद फ़रमाया है

यह उम्मत वह है जो गुज़र चुकी उस गरोह ने जो कुछ किया उस का जवाब उन्ही के जिम्मे है जो कुछ तुम करोगे उस के तुम ज़िम्मेदार होगे उन लोगों के बारे तुम से नहीं पूछा जाएगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जब मेरे असहाब का ज़िक्र हो तो तुम ज़बान रोको यानी किसी को बुरा न कहो। हदीस शरीफ़ के दूसरे अल्फ़ाज इस तरह है मेरे सहाबा के बाहमी नज़ाअत से अपने को बचाए रखो किसी को बुरा न कहो अगर तुम में से कोई शख़्स भी उहद पहाड़ के बराबर सोना राहे खुदा में सर्फ़ कर देगा जब भी सहाबा के एक मुद बल्कि आधे मुद का भी सवाब नहीं मिलेगा।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी हदीस में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया है कि वह शख़्स कितना खुश नसीब है जिसने मुझे देखा और वह शख़्स जिस ने मेरे देखने वाले को देखा। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे सहाबा को गाली न दो जो उन को गाली देगा उस पर खुदा की लानत।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो कि रिवायत में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझे चुन लिया और मेरे लिये मेरे सहाबा को चुन लिया है उनको मेरे लिये अंसार और मेरा रिश्तादार बना दिया। आख़िर ज़माना में एक ऐसा गरोह पैदा होगा जो सहाबा के मरतबे को घटाएगा। ख़बरदार तुम उन के साथ न खाना, न निकाह का सिलसिला करना, न उन के साथ नमाज़ पढ़ना, ना उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना ऐसे लोगों पर लानत करना जाएज़ है।

हज़रत जाबिर की रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दरख़्त हुदैबिया के नीचे जिसने मुझ से बैअत की वह कभी दोज़ख़ में नहीं जाएगा। हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि आंहज़रत ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने अहले बद्र की हालत को देख कर ही फ़रमाया कि जो चाहो करो मैंने तुम को बख़्श दिया।

हज़रत इब्ने उमर कि रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं तुम उनमें जिस किसी का भी क़ौल ले लोगे सीधा रास्ता पाओगे।

हज़रत बरीदा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जिस ज़मीन पर मेरा कोई सहाबी फ़ौत होगा उस को उस ज़मीन वालों के लिए क़यामत के दिन शफ़ीअ बनाया जाएगा। हज़रत सुफ़ियान बिन ऐनिया का क़ौल है कि रसूलुल्लाह के असहाब के मुताल्लिक़ जो शख़्स एक लफ़्ज़ (बद) भी कहेगा वह गुमराह और बद राह होगा।

अइम्माए कराम और हाकिम की पैरवी

अहले सुन्नत का इस बात पर इजमाा है कि अइम्माए मुसलेमीन और उनकी पैरवी करने वालों का हुक्म सुनना औ मानना वाजिब है और हर नेक व बद, आदिल व ज़ालिम हाकिम की इक़तेदा और उन लोगों के पीछे जो ऐसे लोगों की तरफ़ मामूर हो नमाज़ पढ़ना चाहिए। अहले सुन्नत का इस बात पर भी इजमा है कि अहले क़िब्ला में से किसी के क़तई जन्नती या दोज़ख़ी होने का हुक्म नहीं लगाना चाहिए ख़्वाह वह मुतीअ हो या आसी, नेक राह हो या कजरौ यह हुक्म न लगाया जाए सिर्फ़ उस सूरत में जब कि उस कि बिदअत व गुमराही से मुत्तेला हो जाए तब यह हुक्म लगाया जा सकता है।

अहले सुन्नत का इस बात पर भी इजमा है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम की मोजज़ात और औलियाए कराम की करामतें बरहक़ हैं उनको तसलीम करना वाजिब है। अशया की गिरानी और अरज़ानी अल्लाह तआला की तरफ़ से है। न किसी सितारे की तासीर के सबब है और न बादशाहों या ज़माने के हाकिमों कि नुहूसत या बरकत कि वजह से। फ़िरक़ा क़दरिया और नुजूमी तासीरे कवाकिब के क़ाएल हैं। हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्ललाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बिला शुबा गिरानी और अरज़ानी अल्लाह के दो लशकर हैं एक का नाम तमअ है और दूसरे का ख़ौफ़। अल्लाह तआला को जब गिरानी मंजूर होती है तो वह ताजिरों के दिलों में लालच डाल देता है और वह अशिया रोक लेते हैं और जब वह चाहता है कि अरज़ानी हो तो सौदागरों के दिलों में ख़ौफ़े इलाही पैदा कर देता है और वह चीज़ों को अपने हाथों से बाहर निकाल देते हैं, जमा शुदा अजनास फ़रोख़्त कर देते हैं।

सुन्नत व जमाअत की पैरवी

साहबे अक़्ल व बीनश मोमिन के लिए बेहतर है कि वह सुन्नत व जमाअत की पैरवी करे, बिदअत से इजतेनाब करे और दीन में ज़्यादा गुलू न करे, न गहराई में जाए न तसन्नुअ से काम न ले ताकि गुमराही से बचे और उसके क़दम को लग़ज़िश न हो जो हलाकत का बाइस है।

हज़रत अबदुल्लाह बिन मसऊद का इरशाद है इत्तेबाअ करो और बिदअत से बचों यह तुम्हें काफ़ी है।

हज़रत मआज़ बिन जबल ने फ़रमाया तुम पोशीदा बातों की टोह लगाने से बचो और यह बात मत कहो कि यह बात क्यों है? जब मुजाहिद को हज़रत मआज़ के इस क़ौल की इत्तेला मिली तो उन्होंने कहा कि पहले हम बाज़ चीज़ों के अहकाम के मुताल्लिक़ कहा करते थे यह क्या है? मगर अब ऐसा नहीं कहेंगे, लिहाज़ा ईमान्दार शख़्स पर लाज़िम है कि सुन्नत का इत्तेबा और जमाअत की पैरवी करे, सुन्नत उस तरीक़े को कहते हैं जिस को रसूले ख़ुदा सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने शुरु किया फ़रमाया और उस पर गामज़न रहे और जमाअत उसे कहते हैं जिस पर चारों ख़ुल्फ़ाए कराम की ख़िलाफ़त के ज़माने में असहाबे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इत्तेफ़ाक़ किया।

अहले बिदअ़त से इजतेनाब

दानिशमन्द मोमिन पर यह भी लाज़िम है कि अहले बिदअ़त से ताल्लुक़ न रखे और न उनकी मोहब्बत व क़ुरबत इख़्तेयार करे, न उनको सलाम करे, हमारे इमाम अहमद बिन हंबल ने फ़रमाया कि जिसने किसी अहले बिदअ़त को सलाम किया वह गोया उससे मोहब्बत रखता है इस लिए कि रसूलुल्लाह का इरशाद है कि बाहम सलाम की कसरत करो ताकि मोहब्बत बढ़े यह भी लाज़िम है कि बिदअ़तियों का हमनशीन न बने न उनके पास जाए और न उनको ईदों और ख़ुशी के मवाक़ेअ पर मुबारक दे न उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़े। जब उनका ज़िक्र आ जाए तो उनके लिए दुआए रहमत भी न करे बल्कि उनसे अलग रहे और महज़ अल्लाह के लिए उन से अदावत रखे अहले बिदअत का मज़हब बातिल होने का यक़ीन रखे और उस पर अज़ीम अज्र व सवाब का यक़ीन रखे।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाय कि जिसने अहले बिदअ़त को महज़ अल्लाह के लिए अपना दुशमन जाना उसके दिल को अल्लाह तआला ईमान से भर देता है और जो शख़्स उनको ख़ुदा का दुशमन जान कर मलामत करे अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस को अमन व अमान से रखेगा और जो शख़्स ऐसे लोगों को ज़लील करे उसको बहिश्त में सौ दर्जे मिलेंगे और जो बिदअ़ती से कुशादा रवी और ख़न्दा पेशानी से मिला उसने उस दीन की तौहीन की जो अल्लाह तआला ने मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाया था।

अबू मुग़ीरा ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि आंहज़रत सलल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जब तक बिदअ़ती बिदअ़त को तर्क न कर दे अल्लाह उसके नेक अमल को क़बूल करने से इन्कार करता है। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रिवायत करते हैं कि अहले बिदअ़त के साथ दोस्ती रखने वाले के नेक आमाल ज़ाया कर दिये जाते हैं और अल्लाह ताआला उसके दिल से नूरे ईमान निकाल देता है और जो शख़्स अहले बिदअत से दुशमनी रखता है उसे अल्लाह तआला बख़्श देता है ख़्वाह उसके नेक आमाल थोड़े ही क्यों न हों जब तुम किसी बिदअ़ती को रास्ते में देखो तो दूसरा रास्ता इख़्तेयार कर लो। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ कहते थे कि मैं ने ख़ुद हज़रत सुफ़ियान बिन अनिया को यह कहते सुना कि जो शख़्स किसी बिदअ़ती के जनाज़े के साथ जाता है तो वह जब तक वापस नहीं लौट आता अल्लाह का ग़ज़ब उस पर नाज़िल होता रहता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिदअ़ती पर लानत फ़रमाई है और इरशाद

फ़रमाया है जिसने दीन में कोई नई बात पैदा की या किसी बिदअ़ती को पनाह दी उस पर अल्लाह की, उस के फ़रिश्तों की और तमाम इन्सानों की लानत, अल्लाह तआ़ला न उसके सिर्फ़ यानी फ़र्ज़ को क़बूल फ़रमाता है और न उसके अद्ल यानी नफ़्ल को, हज़रत अबू अय्यूब सजिस्तानी ने फ़रमाया कि अगर तुम किसी से रसूलुल्लाह की हदीस बयान करो और वह कहे इसको रहने दो कुरआन में जो कुछ है वह बयान करो तो समझ लो कि वह गुमराह है।

अहले बिदअ़त की निशानियां

अहले बिदअ़त की बकसरत निशनियां हैं जिनसे वह पहचाने जाते हैं, एक अलामत तो यह है कि वह मोहद्देसीन को बुरा कहते हैं और उनको हशविया जमाअ़त का नाम देते हैं, अहले हदीस को फ़िरका हशविया क़रार देना ज़िन्दीक़ की अलामत है। इससे उनका मक़सद अबताले हदीस है। फ़िरका क़दरिया की अलामत यह है कि वह मोहद्देसीन (अहलुल असार) को मुजब्बरा (जबरिया) कहते हैं। अहले सुन्नत को मुशब्बेहा क़रार देना फ़िरका जहमिया की अलामत है, अहलुल आसार (अहले हदीस) को नासबी कहना राफ़्ज़ी की अलामत है। और तमाम बातें अहले सुन्नत के साथ उनके तआस्सुब और उनके ग़ैज़ व ग़ज़ब के बाएस है, हालांकि उसका तो सिर्फ़ एक नाम अहले हदीस है। बिदअ़ती उनको जो लक़ब देते हैं वह उनसे चिमटे नहीं जाते जिस तरह मक्का के काफ़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जादूगर, शाएर, मजनून मफ़तून और काहिन कहते रहते थे मगर अल्लाह तआ़ला, उसके मलाएका, इन्स व जिन्न और तमाम मख़्लूक के नज़दीक आप उन तमाम ऐबों से पाक थे और कोई लक़ब मौजू न था आप का लक़ब रसूल और नबी था। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया "देखो उन्होंने तुम्हारे लिए कैसी मिसालें गढ़ रखी हैं पस यह गुमराह हैं, रास्ता नहीं पा सकते।"

अहले सुन्नत व जमाअ़त के अक़ीदे और सानेअ़ की मारिफ़त के सिलसिले में बक़दरे ताक़त हमने इख़्लेसार के साथ जो कुछ जमा कर दिया है यह हमारे बयान का तितिम्मा था। इसके बाद (इस सिलसिले में) हम दो फ़स्लें और बयान करते हैं जिनसे नावाक़िफ़ (ग़ाफ़िल) रहना किसी साहबे ख़िरद और ज़ि फ़हम और ईमानदार शख़्स के लिए जाएज़ नहीं जबकि वह दलील व बुरहान के रास्ता पर चलना चाहता है। अव्वल फ़स्ल में उन सिफ़ाते इन्सानी, इन्सानी अख़्लाक़ और उयूब का बयान है जिनका इतलाक़ ज़ाते बारी तआ़ला पर सही नहीं और दूसरी फ़स्ल में उन गुमराह फ़िरक़ों का बयान है जो हिदायत के रास्ते से भटक गए हैं और जिनकी हुज्जत क़यामत और मुहासबा के दिन बातिल होगी।

वह सिफ़ात जिन का इतलाक़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात के साथ ना रवा और ना जाएज़ है

मुन्दरजा ज़ैल सिफ़ात से अल्लाह तआ़ला को मुत्तसिफ़ क़रार देना जाएज़ नहीं है। जिहालत, शक, तरद्दुद, ग़लबए ज़न, सहव व निसयान, ऊंघ, नींद, मरज़, ग़फ़लत इज्ज़, मौत, बहरापन, गूंगापन, नाबीनाई, शहवत, नफ़रत, ख़्वाहिश, गुस्सा (ज़ाहिरी) ग़ज़ब (बातिनी), ग़म

अफ़सोस, मलाल, पशेमानी, तास्सुफ़, दुख, लज़्ज़त, नफ़ा, नुक़सान, आरज़ू, मक़सद और फ़िक्र।

अल्लाह तआ़ला का नाम ईमान रखना भी जाएज़ नहीं है। फ़िरका सालमिया इसके जवाज़ का क़ाएल है, उन्होंने मुन्दरजा ज़ैल आयत से इस्तिदलाल किया है जिस ने ईमान के साथ कुफ़्र किया यक़ीनन उसके अमल ज़ाया हुये, (उनके ख़्याल के मुताबिक़ इस आयत में अल्लाह को ईमान कहा गया है) और हमारे नज़दीक ईमान से वजूबे ईमान मुराद है। यानी जिसने वजूबे ईमान का इंकार किया वह ऐसा ही है जैसे किसी ने रसूल और रसूल के लाए हुए अवामिर व नवाही को मानने से इंकार कर दिया।

अल्लाह तआ़ला को फ़रमांबरदार (मुतीअ) कहना भी जाएज़ नहीं, न उसको औरतों को हामला करने वाला कहना जाएज़ है, अल्लाह की हद्दे इन्तेहा नहीं, न वह आगे है न पीछे, न नीचे है न ऊपर, न पहले है न बाद में, जहाते सित्ता (छे तरफ़ों) से उसके लिए कोई तरफ़ नहीं। उस की ज़ात में चगूंगी (कैसी और कयोंकर) को दख़ल नहीं है, अल्लाह तआ़ला की यह सिफ़तें नहीं हैं सिवाए इसके कि वह "मुस्तविए अर्श" है जैसा कि कुरआन और अहादीस में आया है, सब अतराफ़ का पैदा करने वाला वही है, वह कैफ़ (कैसा) और कम (कितना) दोनों सिफ़ात से पाक है।

इस बारे में कि अल्लाह तआ़ला को शख़्स कहना जाएज़ है या नहीं उलमा का इख़्तेलाफ़ है जो लोग जवाज़ के क़ाएल हैं वह हज़रत मुग़ीरा बिन शोअबा से मरवी उस हदीस को सनद लाते हैं कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अल्लाह से ज़्यादा कोई शख़्स ग़ैरत वाला नहीं और अल्लाह से ज़्यादा किसी शख़्स को माज़रत पेश करना महबूब नहीं।

अदमे जवाज़ के हामी कहते हैं कि हदीस में खुदा के लिए शख़्स की तसरीह नहीं है एहतेमाल है कि इसके मानी यह हों (कोई शख़्स अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरत मन्द नहीं है) बिला शबहा बाज़ हदीस में "ला अहद" के अल्फ़ाज़ भी वारिद हुए हैं। (मतलब यह है कि अल्लाह से ज़्यादा कोई शख़्स, जिन्न, इंसां, फ़रिश्ता या कोई दूसरी मख़लूक़ ग़ैरत मन्द नहीं है)

अल्लाह तआ़ला को फ़ाज़िल, आज़ाद (अतीक़) फ़क़ीह, फ़हीम, फ़ित्तीन (ज़ीरक) मुहक़्क़िक़, आक़िल, मोअक़्क़िर (दूसरे की ताज़ीम करने वाला) तय्यब कहना जाएज़ नहीं, बाज़ के नज़दीक तय्यब कहना जाएज़ है। अल्लाह को आदी (पुराने ज़माने का) कहना भी जाएज़ नहीं क्योंकि आदी आद की तरफ़ मन्सूब है और क़ौमे आद क़दीम नहीं बल्कि हादिस है, अल्लाह तआ़ला को मुतीक़ (ताक़त वाला) भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि हर ताक़त महदूद होती है, अल्लाह तआ़ला ताक़त वाला नहीं बल्कि हर ताक़त का ख़ालिक़ है। उसको महफ़ूज़ भी नहीं कहा जा सकता बल्कि वह हाफ़िज़ है, उसको किसी का मुरतकिब (मुबाशरा) भी नहीं कह सकते और न उसका वस्फ़ मुक्तसिब हो सकता है इसलिए कि मुक्तसिब उसको कहते हैं जो कुदरत मुहद्देसा के ज़रिया किसी दूसरी चीज़ को ईजाद करे (यानी कस्ब पैदा करदा मख़्लूक़ की कुदरत से हादिस है) और अल्लाह तआ़ला उससे पाक व मुनज़्ज़ा है। अल्लाह तआ़ला पर अदम का इतलाक़ भी जाएज़ नहीं क्योंकि वह क़दीम है और उसके वजूद के लिए इब्तेदा नहीं है।

इब्ने कुलाब ने इसके बर ख़िलाफ़ कहा है यानी वह कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला क़दीम है सिफ़त क़िदम के साथ और वह बाक़ी है कभी फ़ना नहीं होगा, वह आलिम है तमाम मालूमात ग़ैर मुतनाहिया का और वह क़ादिर है तमाम ग़ैर मुतनाहिया मुक़दूरात का। मोतज़ला इसके ख़िलाफ़ कहते हैं कि सब सिफ़तें इन्तेहा पज़ीर हैं (ग़ैर मुतनाही नहीं है)

वह सिफ़ात जिनसे अल्लाह तआ़ला को मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है

अल्लाह तआला को इन सिफ़तों से मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है। सिफ़त फ़रह, ज़हक, ग़ज़ब, सख़त, रज़ा और इस सिलसिले में हम (तफ़सील से पहले बयान कर चुके हैं) अल्लाह तआला को मौजूद होने के साथ मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है, अल्लाह तआला का इरशाद है और ख़ुदा को अपने पास ही मौजूद पाया। उसको शइ के साथ मुत्तसिफ़ करना जाएज़ है, अल्लाह तआला का इरशाद है पूछिए सबसे बढ़ कर शहादत देने वाली कौन सी चीज़ है, खुद ही बता दीजिये वह अल्लाह है।

अल्लाह के लिए नफ़्स, ज़ात, ऐन (आंख) का सबूत भी जएज़ है बशर्ते कि इंसानी आज़ा से तशबीह न दी जाए। अल्लाह की सिफ़त काइन [illegible] तअय्युने हद के बया[illegible] करना जाएज़ है। अल्लाह तआला का इरशाद है वकानल्लाहो बेकुल्[illegible] शैइन अलीमा दूस[illegible] जगह फ़रमाया वकानल्लाहो अला कुल्ले शैइन रक़ीबा। यह भी जाएज़ [illegible] कि उसको [illegible]म, बा[illegible]ी और मुस्ततीअ कहा जाए। उस को आरिफ़, मतीन, वासिक़, दर्री, दारी (दरायत वाला) [illegible]हा जाए इस लिए कि यह तमाम सिफ़ात ब मानी आलिम राजेअ हैं और इसक[illegible]निअ़त न [illegible]रअ में वारिद है और लोग़त में बल्कि एक शायर का क़ौल है। इला[illegible]ी मैं नहीं जान[illegible]ा और [illegible]ू जानने वाला है।

अल्लाह त[illegible]आला के [illegible] (देखने व[illegible]) भी [illegible]ह सकते हैं [illegible]सके मानी भी आलिम के हैं और जाएज़ है कि उ[illegible]को अपनी ख़ल्क़ और अ[illegible]ने बन्[illegible] से मुत्तल[illegible] मौसूफ़ करें क्योंकि इस के मानी भी आलिम के ह[illegible] यही हुक्म [illegible]जिद (पाने वाला) [illegible] मानी आलिम। अल्लाह को जमील (ख़ूबसूरत) कहना [illegible] सही [illegible]र दुरुस्त [illegible] और मुजमल [illegible] मुत्तसि[illegible] करना भी सहीह है। अल्लाह को दैयान (बन्दों क[illegible] की जज़ा व सज़ा देने वाला) कहना भी सही है। दैन के मानी हैं हिसाब। एक मशहूर [illegible] है जैसा तुम करोगे वैसा बदला दिया जएगा, हिसाब के दिन का मालिक। दैयान इन मानी में [illegible]कता है यानी अपने बन्दों के लिए शरीयत और इबादत मुक़र्रर करने वाला और उसकी [illegible] वह दावत देता है और उसे अपने बन्दों पर फ़र्ज़ करता है उसके बाद हक़ तआला उन बन्दों का बदला देगा जो उस की शरीयत पर अमल पैरा होंगे।

अगर अल्लाह तआला की सिफ़त मुक़द्दिर (अन्दाज़ा करते वाला) से करें तो यह भी जाएज़ है जैसा कि फ़रमाया हम ने हर चीज़ का अन्दाज़े के साथ पैदा किया, और ख़ुदा ने अन्दाज़ा किया और हिदायत दी, और ख़बर देने के मानी फ़रमाया हमने लूत को ख़बर दी कि सिर्फ़ उसकी औरत यानी बीवी उसके अहल के सिवा अज़ाब के लिए पीछे रह जाने वालों में से है । तक़दीर के मानी गुमाने ग़ालिब या शक के नहीं हैं अल्लाह तआला की ज़ात उससे बरतर है।

अलल्लाह तआला को नाज़िर कहना दरुस्त है यानी अशिया की देखने वाला और उस का जानने वाला। नाज़िर के मानी ग़ौर करने वाला और सोचने वाला नहीं हैं। अल्लाह तआला की ज़ात वाला इससे बरी और मुन्ज़्ज़ा है। उसको शफ़ीक़ कहना दरुस्त है यानी मख़लूक़ पर रहम करने वाला और लुत्फ़ व करम करने वाला, अल्लाह का शफ़ीक़ होना डरने और ग़मगीन होने वाले की मानी में नहीं है।

अल्लाह तआला को रफ़ीक़ कहना दरुस्त है यानी मख़लूक़ पर रफ़्क़ व मेहरबानी करने वाला। इन मानी में नहीं यानी उमूर में जमाव पैदा करने वाला, चीजों की इस्लाह करने की फ़िक्र करने वाला और नताएज से महफ़ूज़ रहने वाला। इन मानी के एतबार से लफ़्ज़े रफ़ीक़ से उसको मुत्तसिफ़ नहीं किया जा सकता।

अल्लाह तआला को सख़ी, करीम और जव्वाद कहना भी दुरुस्त है इन सब अल्फ़ाज़ के मानी हैं मख़्लूक़ पर फ़ज़्ल व एहसान और करम करने वाला और लोग़त में जो सख़ावत के मानी नरमी के आए हैं जिस तरह कहते हैं नर्म काग़ज़ इन मानी का अल्लाह पर इतलाक़ दुरुस्त नहीं। अल्लाह तआला को आमेरून हुक्म देने वाला, नाही मुमानियत करने वाला, मुबीहुन जाएज़ बना देने वाला, मुसिद्दुन बंदिश कर देने वाला, मुहल्लेलुन हलाल करने वाला, मोहर्रेमुन हराम करने वाला, फ़ारिज़ुन फ़र्ज़ कर देने वाला, मुलज़ोमुन लाज़िम कर देने वाला, मुर्शिदुन सीधा रास्ता दिखाने वाला, क़ाज़िउन और हाकिमुन कहना जाएज़ और दुरुस्त है।

इसी तरह अल्लाह तआला को वाएदुन जज़ा का वादा करने वाला, मुतवाएदुन सज़ा से डराने वाला, मोख़फ़्वेफ़ुन दिलाने वाला, मोहज़्ज़ेरून अज़ाब से डराने वाला, ज़ाम्मून मज़म्मत करने वाला, मादेहुन किसी की तारीफ़ करने वाला, मुख़ातेबुन [illegible]ाब करने वाला, मुत[illegible]ल्लमुन बात करने वाला, यानी सिफ़ते कलाम से मुत्तसिफ़ होना और [illegible]यलुन कहने वाला, [illegible] मुत्तसिफ़ करना जाएज़ नहीं है।

उस को मुग़देमुन से मुत्तसिफ़ करना इस मानी में ज[illegible] नहीं है कि उसने मौजूद नहीं किया और उस ने मादूम नहीं किया और इस मानी [illegible] कि जिस [illegible] को उ[illegible] मौजूद किया उससे वजूद में आने के बाद बक़ा को जुदा कर दे और उसे ना पैद कर दे दरुस्त और सहीह है। इसी तरह जाएज़ है कि उसको [illegible]ाऐल के [illegible] मुत्तसिफ़ करें ब ईं मानी कि अपनी पैदा की हुई चीज को अदम से वजूद में लाने वाला और पैदा करने वाला और अपनी कुदरत से उसको बना देने वाला है, फ़ाएल के मानी काि[illegible] के नहीं [illegible] कसब ता[illegible] के मिलने (फ़ाएल व मुन्फ़इल)और बाहमी मोहासिब के बग़ैर नहीं होता और अल्लाह तआला इससे [illegible]ाक व मुन्ज़्ज़ा है।

अल्लाह तआला [illegible]एलून यानी फ़ाएल कहना दुरूस्त है यानी अपने फेअ़ल को करने वाला। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: हम ने दिन और रात को दो निशनियां बनाया। जाअ़ला हुक्म के माना में भी आया [illegible] आयत में है अल्लाह तआ़ला को जिस तरह फ़ाएल कहा जाता है उसी तरह वाक़ेई तौर पर उसको तारिक भी कहा जा सकता है यानी अपनी कुदरते शामला व आमला के तहत फ़ेअ़ल अव्वल के बजाए कोई ऐसा दूसरा फ़ेअ़ल करने वाला जो फ़ेअ़ले अव्वल की ज़िद हो। तारिक के माना यह नहीं कि वह अपने नफ़्स को किसी फ़ेअ़ल के दवाअ़ी व अस्बाब से रोकना और बाज़ रखना है फ़ेअ़ल की तरह तर्क भी अल्लाह तआ़ला की मुसबत सिफ़त है मन्फ़ी वस्फ़ नहीं है। इंसान के लिए तर्क की सिफ़त अदी है और अल्लाह तआला के लिए वजूदी।

अल्लाह तआ़ला को मोजिदून बमानी ख़ालिक और मोकव्विनून बमानी मोजिद कहना भी जाएज़ है उस को मुसब्बेतून ब माना बरक़रार रखने वाला, चीज़ों को सबात व बक़ा अता करने वाला भी कहना जाएज़ है एक आयत में है।

अहले ईमान को अल्लाह तआ़ला पक्की बात पर साबित क़दम रखेगा।

एक दूसरी आयत में इरशाद है: अल्लाह जिस चीज़ को चाहता है मिटा देता है और जिस चीज़ को चाहता है बरक़रार रखता है उम्मूल किताब उसी के पास है।

अल्लाह तआला को आमिलून और सानिउन ब मानी ख़ालिक़ कहना भी दुरूस्त है अल्लाह तआला को मुसीबून कहना दुरूस्त है यानी उस के अफ़्आल उस के इरादे और मक़सद के मुताबिक़ होते हैं उनमें कोई कमी व बेशी या तफ़ावुत नहीं होता क्योंकि अल्लाह तआला अपने तमाम अफ़आल की हक़ायक़ और कैफ़ियात से वाक़िफ़ है अल्लाह तआला के मुसीब होने के यह मानी नहीं कि वह किसी हाकिम के हुक्म के मुताबिक़ अमल करता है, हां बन्दे पर इस लफ़्ज़ का जब इतलाक़ होता है तो उसके यह माना होते हैं कि बंदा अपने रब का फरमांबरदार उस के हुक्म पर कारबन्द और उस की मुमानियत के बाइस किसी काम से बाज़ रहने वाला है, किसी सरदार या हाकिम बालादस्त का मुतीअ़ होने के बाइस बन्दा को मुसीब कहा जाता है। अल्लाह तआ़ला के अफ़्आ़ल को सवाबुन बमानी हक़ व सहीह कहना दुरूस्त है। अल्लाह तआला को मुसीबुन (सवाब देने वाला) और मुनईम (नेअ़मत देने वाला कहना भी दुरुस्त है यानी जिस शख़्स को सवाब देता है उस को इन्आ़म याफ़्ता बना देता है।

अल्लाह तआ़ला को मुआकेबुन और मुजाज़ियून (सज़ा और जज़ा देने वाला) कहना दुरूस्त है यानी वह नाफ़रमान को ज़लील करता है और [illegible] की मआसियत के मुताबिक़ उस को दुख देता है उस को क़दीमुल एहसान कहना भी दुरूस्त [illegible] यानी तख़लीक़ और [illegible]ए रिज़्क़ उस की क़दीमी सिफ़ात हैं अल्लाह तआला का इरशाद है **इन्[illegible]ल लज़ीना [illegible] ब-[illegible]त लहुम मिन्ना अल हुस्ना।** अल्लाह तआला को दलीलुन कहना भी [illegible]रूस्त है हज़[illegible] इमाम अहमद से एक शख़्स ने कहा कि मुझे कुछ तोशए दुआ़ मरहमत फ़रमाइ[illegible] [illegible]रतूस जा रहा हूं इमाम ने फ़रमाया इस तरह कहो ऐ हैरानों के राहनुमा (दलील) [illegible]झे अहले सिद्[illegible] का रास्ता दिखा दे और अपने सालेह बन्दों में से कर [illegible]

अल्लाह त[illegible]ाला को त[illegible]बीबुन कहना [illegible] दुरू[illegible] है अबू [illegible]ना तमीमी से मरवी है कि उन्हों ने कहा में अपने वालिद के हमराह नबी करीम [illegible] अलैहि वसल्लम की मजलिस में मौजूद था मैंने हुज़[illegible] के शा[illegible] मुबारक [illegible] सीप (सद[illegible]) [illegible] तर[illegible] कोई चीज़ देखी मेरे वालिद ने अर्ज़ किया या रसूल[illegible]लाह [illegible] तबीब हूं क्या इस का इलाज कर दूं हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया इस का तबीब वही है जि[illegible] इसको पैदा किया है।

अबू अस्सफ़र की रिवायत[illegible] कि हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो अलील हुए कुछ लोग आप की अयादत के लि[illegible] हुए और कहने लगे क्या हम आप के लिए तबीब को बुला लें आप ने इरशाद फ़रमाया तबीब ने मुझे देखा था लोगों ने दरयाफ़्त किया फिर तबीब ने क्या कहा? हज़रत अबू बकर ने फ़रमाया उसने कहा जो में चाहता हूं करता हूं। हज़रत दाऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के मुताल्लिक़ भी ऐसी ही एक रिवायत आई है कि आप बीमार हुए और लोग अयादत के लिए आए और पूछा आप को क्या बीमारी है? उन्होंने जवाब दिया कि गुनाहों की, लोगों ने कहा आप क्या चाहते हैं? फ़रमाया जन्नत लोगों ने कहा क्या हम आप के लिए तबीब को बुला लें उन्होंने जवाब दिया कि तबीब ही ने तो मुझे बीमार किया है।

इस फ़स्ल में हम ने उन अस्मा को बयान किया है जिन के साथ अल्लाह तआ़ला को पुकारना जाएज़ है इससे क़ब्ल हम अल्लाह तआला के निनानवे अस्माए हुस्ना बयान कर चुके है उन नामों से अल्लाह तआ़ला को दुआ़ में पुकारना ज़्यादा मुनासिब है उन अस्माए वस्फ़ी के साथ भी जो इस फ़स्ल में बयान किए गए हैं अल्लाह तआला को पुकारना जाएज़ है मगर दुआ में या साहिरो, या मुस्तहज़ियो, या माकिरो, या ख़ारिओ, या मुग़ीज़ो, या ग़ज़बानो, या मुनतक़िबो, या माअ़दियो, या

मोअदमो, या मोहलिको कह कर पुकारना मना है अगरचे मुजरिमों के जुर्म की पादाश और सजा देने के लिहाज़ से अल्लाह का इन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ होना सहीह और दुरूस्त है।

हिदायत के रास्ते से भटके हुए फ़िरक़ों का बयान

उन गमराह फ़िरक़ों के बयान में जो राहे हिदायत से भटक गए हैं उस की असल वह हदीस है जिस को कसीर बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद और जद की सनद के साथ साथ बयान किया है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम अपने से पहले लोगों के रास्ते पर क़दम ब क़दम ज़रूर चलोगे और उनही चीज़ों को इख़्तेयार करोगे जिन को उन्होंने इख़्तेयार किया था। एक एक बालिश्त एक एक हाथ और एक एक गज़ (उनकी पैरवी करोगे) यहां तक कि अगर वह सोसमार (गोह) के बिल में भी धुसे थे तो तुम भी उनकी पैरवी के लिए सोसमार के भट में दाख़िल होगे। अच्छी तरह सुन लो कि हज़रत (मूसा अलैहिस्सलाम)की हिदायत के बरअक्स बनी इस्राईल 71फ़िरक़ों में बट गये थे जिनमें एक फ़िरक़ा के सिवा सब गुमराह थे और वह एक फ़िरक़ा मुसलमानों की जमाअत का था। फिर ईसा इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम की हिदायत के ख़िलाफ़ ईसाई फट कर 72 फ़िरक़ों में हो गए और उनमें एक फ़िरक़ा के सिवा तमाम फ़िरक़े गुमराह और बेदीन थे वह एक फ़िरक़ा इस्लाम और मुसलमानों की जमाअत का था इसके बाद तुम 73 फ़िरक़े हो जाओगे और उनमें सिवाए एक फ़िरक़ा के बाक़ी सब गुमराह होंगे और वह फ़िरक़ा इस्लाम और मुसलमानों की जमाअत का होगा।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन जुबैर से मरवी है कि सरकारे आली ने इरशाद फ़रमाया: मेरी उम्मत फट कर 73 फ़िरक़े बन जाएगी। उम्मते मोहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए सबसे बड़ा फ़ितना वह फ़िरक़ा होगा जो अहकामे (दीनी)का फ़ैसला सिर्फ़ अपनी राए से करेगा, खुद ही हलाल को हराम बनाएगा और खुद ही हराम को हलाल ठहराएगा।

अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बनी इस्राईल फट कर 71 फ़िरक़ों में हो गए एक के सिवा सब दोज़ख़ी हुए और मेरी उम्मत फट कर 73 फ़िरक़े हो जायेंगे जिनमें से एक के सिवा सब दोज़ख़ी होंगे। सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह वह एक ऐसा होगा आप ने फ़रमाया जो मेरे और मेरे सहाबा के सीधे रास्ते पर चलेगा।

जिस तफ़रक़ा का ज़िक्र आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया न आपके ज़माने में हुआ, न हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर, हज़रत उसमान, हज़रत अली के ज़माने में हुआ! बल्कि यह इख़्तेलाफ़ सहाबा कराम और ताबईन हज़रात की वफ़ात के कई सौ साल बाद जुहूर में आया यानी उस वक़्त जबकि मदीना मुनव्वरा में सातों फक़ीह हज़रात वफ़ात पा चुके थे। मुख़्तलिफ़ शहरों के उलमा और फ़क़ीह भी दुनिया से रूख़सत हो चुके थे और उनके इन्तेक़ाल से इल्म भी मर गया और सालहा साल बीत गए और सदियां गुज़र गईं तो आम तौर पर दीन में इफ़्तेराक़ व इख़्तेलाफ़ पैदा हो गया और सिर्फ़ एक छोटा गरोह अहले हक़ का रह गया, नजात पाने वाला गरोह यही है अल्लाह ने अपने दीन की हिफ़ाज़त इसी के जरिये से फ़रमाई।

हज़रत इब्ने उमर की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआला लोगों को इल्म अता फ़रमाने के बाद उनके सीनों से नहीं निकालेगा बल्कि उलमा वफ़ात पा जायेंगे। जब कोई आलिम मर जाएगा तो उसका इल्म भी उसी के साथ चला जाएगा यहां तक कि जुहला बाकी रह जायेंगे जो खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। हज़रत इब्ने उमर से मरवी एक दूसरी रिवायत में हदीस शरीफ़ के अल्फ़ाज़ इस तरह हैं: हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला इल्म को इस तरह क़ब्ज़ नहीं फ़रमाएगा कि लोगों के दिलों से खींच कर निकाल ले बल्कि उलमा के वफ़ात पा जाने से इल्म भी मर जाएगा, जब कोई आलिम बाक़ी नहीं रहेगा तो लोग जाहिलों को अपना पेशवा बना लेंगे उनसे मसाएल दरयाफ़्त किए जायेंगे और वह न जानने के बावजूद फ़तवा (जवाब) देंगे नतीजा यह कि वह खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह कर देंगे। हज़रत कसीर बिन अब्दुल्लाह बिन औफ़ अपने वालिद और दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस तरह सांप सिमट कर अपने बिल में आ जाता है उसी तरह दीन सिमट कर हिजाज़ में आ जाएगा। दीन की हिफ़ाज़त हिजाज़ से होगी जिस तरह [illegible] की हिफ़ाज़त पहाड़ की चोटी पर पहुंच जाने से होती है, दीन का ज़ुहूर गुरबत की हालत में हुआ था लौट कर दोबारा दीन ग़रीब हो जाएगा। ग़रीबों के लिए यह खुशख़बरी का बाइस है। अर्ज़ किया गया ग़ुरबा कौन लोग हैं? हुज़ूर ने फ़रमायाः वह लोग कि जब लोग मेरी सुन्नत को बिगाड़ देंगे तो वह [illegible] देंगे। हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया हर ज़माने में लोग एक सुन्नत को मुर्दा और एक बिदअत को ज़िन्दा करेंगे। हज़रत अली कर्रमल्लाह वजहहू ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ने फ़ितनों का ज़िक्र फ़रमाया तो हमने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह फ़ितनों से [illegible] निकलने का क्या रास्ता होगा? फ़रमाया अल्लाह की किताब कि यही पुर हिकमत व मोअज़्ज़त नामा है यही सिरात मुस्तकीम है यही वह किताब है जिसमें ज़बानों को इशतबाह पैदा नहीं होता इसी को [illegible] जिन्नात ने सुना तो वह इन्ना समेअना कुरआनन अजबन कहे बग़ैर न रह सके, जो इस के मवाफ़िक़ [illegible]गा वह सच्चा होगा और जो इसके मुताबिक़ फ़ैसला करेगा वह इन्साफ़ करेगा।

हज़रत अरबाज़ बिन सारिया ने फ़रमाया हम ने रसूलुल्लाह की इक़्तिदा में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी हुज़ूर ने ऐसा दिल नशीन [illegible] फ़रमाया कि आंखों से आंसू रवां हो गए दिलों पर ख़ौफ़ तारी हो गया और बदन गरमा गए। हमने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हुज़ूर की यह नसीहत तो ऐसी है कि हम को मालूम होता है जैसे हुज़ूर हम को छोड़ रहे हों हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया मैं तुम को अल्लाह से डरते रहने और हाकिम की इताअत व फ़रमां पज़ीरी की नसीहत करता हूं ख़्वाह वह हाकिम हबशी गुलाम ही क्यों न हो। मेरे बाद ज़िंदा जो रहेगा वह बड़े इख़्तेलाफ़ात देखेगा, तुम्हारे लिए मेरी सुन्नत और मेरे उन खुल्फ़ा की सुन्नत पर क़ाएम रहना लाज़िम है जो मेरे बाद होंगे और तुम को सीधा रास्ता दिखायेंगे उस को मज़बूती से पकड़े रखना और दांतों से पकड़ लेना। दीन में नई बातों से बचना क्योंकि दीन में पैदा की हुई हर नई बात बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो दावत देने वाला सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाए और उसकी दावत की पैरवी की जाए तो पैरवी करने वालों की तरह उस रहनुमा को भी सवाब मिलेगा मगर पैरवी करने वालों के सवाब में कमी नहीं की जाएगी और जो ज़लालत की दावत दे और उसकी पैरवी की जाए तो उसकी पैरवी करने वालों के बराबर उस पर वबाल होगा जब कि पैरवी करने वालों के गुनाहों में कमी न होगी।

बाब 9

तिहत्तर फ़िरक़े

नाजी, ख़ारजी, शीया, राफ़ज़ी, मोतज़ला क़दरिया और दूसरे फ़िरक़े

यह तमाम तिहत्तर फ़िरक़े दर असल दस गरोहों से निकले हैं (1) अहले सुन्नत (2) ख़ारजी (3) शीया (4) मोतज़ला (5) मरजिया (6) मोशब्बह (7) जहमिया (8) ज़र्रारिया (9) नज्जारिया (10) कुलाबिया।

अहले सुन्नत का एक ही तबक़ा है, ख़्वारिज या ख़ारिजया के पन्द्रह, मोतज़ला के छः मरजिया के बारह, शीया के बत्तीस, मुशब्बह के तीन फ़िरक़े हैं। ज़र्रारिया, कुलाबिया, बुखारिया और जहमिया का एक एक फ़िरक़ा है इस तरह कुल बहत्तर फ़िरक़े हुए। फ़िरक़ा नाजिया सिर्फ अहले सुन्नत का है, उसका मसलक और अक़ीदा पहले बयान किया जा चुका है। क़दरिया और मोतज़ला फ़िरक़ा के लोग इस फ़िरक़ा नाजिया को मुजबरह कहते हैं क्योंकि उसका अक़ीदा है कि तमाम मख़लूक़ अल्लाह तआला की मशीयत, क़ुदरत, इरादा और तख़लीक़ के ताबेअ है मरजिया उस फ़िरक़ा नाजिया को शकाकिया कहते हैं क्योंकि इस गरोह के लोग ईमान को मशीयत इलाही की शर्त से मशरूत करने के क़ाइल हैं और कहते हैं कि अगर कोई शख़्स यूं कहे कि मैं इन्शाअल्लाह मोमिन हूं तो इस तरह कहना दुरूस्त है (जैसा कि इससे क़ब्ल बयान किया जा चुका है।)

राफ़ज़ी इस नाजिया फ़िरक़ा नासबिया कहते हैं क्योंकि उनका उसूल है कि अपने इमाम को जमाअत की राए से मुकर्रर करते हैं। जहमिया व नज्जारिया दोनों इस फ़िरक़ा को मुशब्बह कहते हैं।

इस लिहाज़ से कि वह अल्लाह तआला की सिफ़ात में इल्म, क़ुदरत और हयात वग़ैरह सिफ़ात का असबात करते हैं। बातनिया इसको हशविया कहते हैं चूंकि यह गरोह अहादीस का क़ाइल और आसार के साथ ताल्लुक़ रखता है हालांकि उनका कोई और नाम नहीं है बजुज़ इसके कि वह असहाबे हदीस और अहले सुन्नत हैं जैसा कि हम ने पहले बयान किया है।

ख़ारजियों के नाम और अल्क़ाब मुख़तलिफ हैं, उस गरोह को ख़ारजी कहने की असल वजह यह है कि उन्होंने हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहू के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया था, उनका नाम हकमिया भी है इस लिए कि उन्होंने अबू मूसा अशअरी और उम्र बिन अलआस के हकम होने से इंकार किया था और जब हज़रत अली ने उन दोनों को हकम मान लिया तो ख़ारजियों ने कहा हुक्म देना सिर्फ अल्लाह के साथ मख़सूस है (किसी को ख़लीफ़ा के तक़र्रुर के मुताल्लिक फ़ैसला सादिर करने का हक़ नहीं है) उनको हरोरिया भी कहा जाता है इसकी वजह यह है कि यह लोग हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहू का साथ छोड़ कर मक़ामे हरूरा में जाकर ठहर गए थे उनको

शरात (बेचने वाला) इस लिए कहा जाता है कि उनका दावा था कि हमने अल्लाह तआला के रास्ता में अपनी जानें फ़रोख़्त कर दी हैं। उनके मारिक़ा भी कहा जाता है। मारिक़ा कहने की वजह यह है कि यह लोग दीन से ख़ारिज हो गए थे। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यही हालत बयान की थी और फ़रमाया था वह लोग दीन से इस तरह निकल जायेंगे जिस तरह कमान से तीर निकल जाता है, फिर वह दीन में वापस नहीं अयेंगे। चुनांचे यह लोग दीने इस्लाम से बाहर हो गए मिल्लते इस्लामिया को छोड़ दिया और जमाअत से अलग हो गए और राहे रास्त से भटक गए। हुकूमते इस्लामिया से ख़ारिज हो गए ख़ुलफ़ाए के ख़िलाफ़ उन्होंने तलवार उठाई और उनके ख़ून और माल को हलाल क़रार दिया, अपने मुख़ालिफ़ों को काफ़िर कहा रसूलुल्लाह के असहाब और अंसार पर सब्बो शत्म किया और उनसे तबर्रा (बेज़ारी का इज़हार) किया, उन हज़रात को काफ़िर हो जाने और कबीरा गुनाहों के मुरतकिब होने की निस्बत की, उनकी मुख़ालिफ़त को जाइज़ क़रार दिया यह लोग अज़ाबे क़ब्र और हौज़े कौसर पर ईमान नहीं रखते, न यह रसूलुल्लाह की शफ़ाअत पर ईमान रखते हैं और कहते हैं कि एक दफ़ा जो दोज़ख़ में दाख़िल हो गया वह फिर ख़ारिज नहीं [illegible] और कहते हैं कि जिसने एक दफ़ा झूट बोला या गुनाहे सग़ीरा या कबीरा का मुरतकिब हुआ और बग़ैर तौबा किये मर गया तो वह काफ़िर है और वह हमेशा हमेशा दोज़ख़ में रहेगा यह एक जमाअत [illegible] नमाज़ नहीं पढ़ते सिर्फ़ इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हैं यह नमाज़ को उसके व[illegible] ताख़ीर में अदा करने को जाइज़ समझते हैं। इसी तरह बग़ैर चांद देखे रोज़े और इफ़्तार को जाइज़ समझते हैं, नज़्र करने, बग़ैर वली के निकाह करने को भी जाइज़ समझते हैं दस्त बदस्त एक दिरहम के बदले दो दिरहम लेना जाइज़ समझते हैं सूद नहीं जानते [illegible]मड़े के मोज़े पहन कर नमाज़ पढ़ना उनके नज़दीक दुरुस्त नहीं है। चमड़े के मोज़ों पर मसह को भी दु[illegible] जानते उनका अक़ीदा है कि बादशाह की इताअत दुरुस्त नहीं, ख़िलाफ़त क़ुरैश के साथ म[illegible]सूस नहीं।

इस फ़िरक़ा के लोगों की ज़्यादा तादाद जज़ीरा उम्मान, मौसिल, हज़र मौत और अतराफ़े अरब में है। अबदुल्लाह [illegible] ज़ैद, मुहम्मद बिन हिज़्ब, यहया बिन कामिल और सईद बिन हारून उनके लिए मज़हबी कुतुब त[illegible] कीं।

उनके पन्द्रह फ़िरक़ों [illegible] एक फ़िरक़ा नजदात है जो नजदह बिन आमिर हनफ़ी साकिन यमामह की तरफ़ मनसूब है यही गरोह अबदुल्लाह बिन नासिर के साथियों का है। इस गरोह का अक़ीदा है कि जिसने एक मर्तबा झूट बोला या कोई सग़ीरा गुनाह किया और उस पर क़ाइम रहा (तौबा न की) तो वह मुशरिक है और जिसने ज़िना किया, चोरी की, शराब पी मगर उन गुनाहों पर क़ाइम न रहा (तौबा कर ली) तो वह मुसलमान है उनकी नज़र में इमामे वक़्त की ज़रूरत नहीं है सिर्फ़ किताबुल्लाह से वाक़फ़ियत ज़रूरी है।

इनमें से एक गरोह का नाम अज़ारक़ा है यह नाफ़ेअ बिन अरज़क़ के साथियों का गरोह है इनका अक़ीदा है कि यह गुनाहे कबीरा कुफ़्र है और दुनिया दारूल कुफ़्र है, उनका अक़ीदा है कि हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहू ने जब हज़रत मूसा अशअरी और हज़रत अम्र बिन अलआस को अपने और अमीर मुआविया के दर्मियान इस्तिहक़ाक़े ख़िलाफ़त का झगड़ा फ़ैसल करने के लिए पंच और हकम माना था तो उन दोनों ने हकम बन कर कुफ़्र किया। यह मुशरिकों के बच्चों को (जिहाद) में क़त्ल करना जाइज़ [illegible] हैं, यह ज़िना की सज़ा संगसारी (रज्म) को हराम

कहते हैं। पाक दामन मर्द पर ज़िना की तुहमत लगाने वाले पर हद्दे शरई लगाना यह जाइज़ नहीं समझते और पाक दामन शौहर वाली औरत पर ज़िना की तुहमत लगाने वाले पर हद लगाना जाइज़ ख़्याल करते हैं।

ख़ारजियों का एक गरोह फ़िदकिया भी है यह गरोह इब्ने फ़िदयक की तरफ़ मनसूब है, एक गरोह अतविया है यह अतिया इब्ने असवद की तरफ़ मनसूब है, एक उजारवा भी है यह अबदुर्रहमान बिन अजर से निसबत रखता है उजारवा के मुख़्तलिफ़ गरोह हैं यह सब मैमूनिया कहलाते हैं यह लोग पोती, नवासी, भतीजी और भांजी से निकाह जाइज़ करार देते हैं। इनका अक़ीदा है कि सूरह यूसुफ़ असल कुरआन में नहीं है बल्कि इलहाक़ी है। उनका एक फ़िरक़ा जाज़मिया कहलाता है। उनके अहले इस्लाम से अलग ख़ारिज होने का बाएस उन का यह अक़ीदा है कि दोस्ती और दुशमनी अल्लाह तआला की दो सिफ़तें हैं, फ़िरक़ा जाज़िया से भी एक गरोह अलग हो गया उसका नाम मालूमिया है उनका अक़ीदह है जो शख़्स अल्लाह तआला को उसके नामों से नहीं पहचानता है वह जाहिल है, यह लोग कहते हैं कि बन्दों के अफ़आल अल्लाह के पैदा किए हुए नहीं हैं, किसी फ़ेअल की कुदरत [illegible]कूए फ़ेअल के वक़्त [illegible]ती है उससे पहले नहीं होती है।

ख़ारिजयों के असली पन्द्रह फ़िरक़ों में से एक फ़िरक़ा मजहूलिया [illegible] जो इस बात का क़ाइल है कि अगर कोई किसी एक नाम से भी अल्लाह को जानता है वह आलिम है जाहिल बिल्लाह नहीं है। ख़ारजियों का एक फ़िरक़ा सलीता है वह उसमान [illegible] सलत से निसबत रखता है और इस बात का मुद्दई है कि जो शख़्स हमारे नज़रियात मान ले और मुसलमान भी हो जाए तब भी उसकी नाबालिग़ औलाद को मुसलमान नहीं कह सकते जब तक वह औलाद (बालिग होने के बाद हमारे नज़रियात और अक़ाइद को न मान ले [illegible]

ख़ारजियों का एक गरोह अख़नसिया है जो अ[illegible] की तरफ़ मनसूब है यह क़ाइल है कि आक़ा गुलाम की और गुलाम आक़ा की ज़कात ले सकता है [illegible]र्तेकि मुहताज मिसकीन हो। ख़ारजियों का एक फ़िरक़ा ज़फ़रिया है जिस की एक शाख़ हफ़सिया है उसका अक़ीदा है कि जो शख़्स अल्लाह को पहचानता हो उसका इक़रार करता हो वह शिर्क से पाक हो जाता है, ख़्वाह वह रसूल का, जन्नत का, दोज़ख़ का सबका मुनकिर हो और तमाम जराइम का मुरतकिब हो, क़ातिल हो, ज़िना को हलाल जानता हो, मुशरिक सिर्फ़ वह है जो अल्लाह को न पहचाने और उसका इंकार करे, उस गरोह का अक़ीदा है कि कुरआन मजीद की आयत में जो लफ़्ज़ हीरान आया है उससे मुराद हज़रत अली और उनका गरोह है और अस्हाबहू यदऊनहू एलल हुदा—से मुराद अहले नहरवान हैं (यानी ख़ारजी हैं।) ख़रजियों का एक फ़िरक़ा अबाज़ियह है जिस का ख़्याल है कि तमाम फ़राइज़ इलाहिया ईमान हैं, गुनाहे कबीरा कुफ़राने नेमत है कुफ़्र नहीं है।

ख़्वारिज का फ़िरक़ा बहन्सिया अबी बहनस से मनसूब है, यह फ़िरक़ा इस अम्र का मुद्दई है कि जब तक आदमी अल्लाह के हर हलाल और हर हराम के हुक्म से तफ़सीली तौर पर वाक़िफ़ न हो मुसलमान नहीं होता, उसी गरोह के कुछ लोग इस बात के क़ाइल हैं कि अगर किसी ने कोई फ़ेअले हराम किया तो उसको उस वक़्त तक काफ़िर नहीं कहा जा सकता जब तक उस का मामला हाकिम के सामने पेश न कर दिया जाए और वह उस पर हद्दे शरई जारी न कर दे।

शरई सज़ा जारी होने के बाद उसको काफ़िर क़रार दिया जाएगा।

ख़ारजियों का एक और गरोह शराख़िया है, यह अब्दुल्लाह बिन शमराख़ से मनसूब है, उस गरोह का अक़ीदा है कि मां बाप को क़त्ल कर देना हलाल है। इब्ने शमराख़ ने जब दारूल तक़ीया (ख़्वारिज का मरकज़ी मक़ाम) में इस अक़ीदा के दावा किया तो तमाम ख़ारजी इससे अलग हो गये।

ख़ारजियों का एक फ़िरक़ा बदिया भी है जिस का अक़ीदा अराज़क़ा जैसा है, यह लोग अराज़ाक़ा से सिर्फ़ इतनी बात में अलग और मुनफ़रिद हैं कि उनके अक़ीदे की बिना पर दो वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है यानी दो रकअत सुबह की और दो रकअत शाम की, वह कहते हैं कि अल्लाह तआला का हुक्म हैः दिन के दोनों अतराफ़ (सुबह व शाम) में नमाज़ क़ायम करो। अराज़क़ा की तरह काफ़िरों की औरतों को क़ैद करना और उनके बच्चों को क़त्ल करना उनके अक़ीदे में जाएज़ है क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है रुए ज़मीन पर किसी काफ़िर को बाक़ी ना छोड़ो।

फ़िरक़ा नजदात के अलावा तमाम ख़ारजी बिल इत्तेफ़ाक़ गुनाहे कबीरा के मुरतकिब को काफ़िर कहते हैं। अबू मूसा अशअ़री और उमर बिन अलआस की तहकीम पर रज़मन्दी के बाइस हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहु की भी तकफ़ीर करते हैं।

शीया फ़िरक़ा

शीया फ़िरक़ा मुख़्तलिफ़ नामों से मौसूम है इस को राफ़ज़ी, ग़ालिया, शीया, तय्यारा भी कहते हैं इस फ़िरक़ा को शीया कहने की वजह यह है कि यह लोग हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहु की पैरवी का दावा करते हैं और आप को तमाम सहाबा कराम से अफ़ज़ल मानते हैं। राफ़ज़ी की वजहे तसमिया यह है कि उन्होंने अकसर सहाबा कराम को छोड़ दिया और हजरत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ की ख़िलाफ़त को तसलीम नहीं किया। बाज़ लोगों ने राफ़ज़ी को वजहे तसमिया यह बताई है कि जब ज़ैद बिन अली (हज़रत ज़ैनुल आबिदीन) ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर से मुवद्दत का इज़हार किया और दोनों बुज़ुर्गों की दोस्ती का एतराफ़ किया तो उन लोगों (राफ़ज़ियों) ने हज़रत ज़ैद बिन अली को छोड़ दिया। हजरत ज़ैद ने फ़रमाया उन लोगों ने मुझे छोड़ दिया इस लिए इन को राफ़ज़ी कहा जाएगा है। यह भी कहा गया है कि शीया वह होता है जो हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो को हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो से अफ़ज़ल न करार दे यानी राफ़ज़ी हज़रत अली को हज़रत उसमान से अफ़ज़ल क़रार देता है।

शीया का एक फ़िरक़ा कतइया है उस ने मूसा बिन जाफ़र की मौत पर कतई इजमा कर लिया है। एक फ़िरक़ा ग़ालिया है यह गरोह हज़रत अली के बारे में बहुत ज़्यादा ग़ुलू करता है नाज़ेबा बातें कहता है। हज़रत अली के अन्दर रबूबियत और नबुव्वत की सिफ़ात को तसलीम करता है हश्शाम बिन हेकम, अली बिन मन्सूर, हुसैन बिन सईद, फ़ज़ल बिन शाज़ान, अबू ईसा वर्राक़, इब्ने रावन्दी, फ़सीही इस फ़िरक़े के मज़हबी मुसन्नफ़ीन हैं इस फ़िरक़े के लिए मज़हबी किताबे लिखी हैं इस फ़िरक़े के बेशतर आबादी कुम, काशान, बिलादे इदरीस और कूफ़ा में हैं।

हज़रत मुसन्निफ़ पीराने पीर के मुबारक दौर में उनकी तादाद उन शहरों में ऐसी ही थी जैसा कि इरशाद फ़रमाया। यह तादाद पन्द्रह होती है हज़रत मुसन्निफ़ ने चौदह बताई है ग़ालिबन

आप ने इमामिया को पहले बयान फ़रमाया है और दोबारा शुमार नहीं फ़रमाया।

राफ़ज़ियों के फ़िरक़े

राफ़ज़ियों के असल तीन गरोह हैं ग़ालिया, ज़ैदिया और राफ़ज़ा, ग़ालिया के बारह फ़िरक़े हो गए जो इस तरह हैं।

बनानीतिया, तय्यारिया, मन्सूरिया, मुग़ीरिया, ख़त्ताबिया, मुअम्मरिया, बज़ामिया, मुफ़ज़्ज़लिया, मुतनासिख़ा, शरीईया, सबैइया, मुक़व्वज़ा। फ़िरक़ा ज़ैदिया के छः शाख़ें हो गईं जारूदिया, सुलेमानिया, बर्रीया, नईमिया, याक़ूबिया, तनासुख़िया (दोबारा दुनिया में वापस आने का क़ाइल यानी तनासुख़ का।)

राफ़ज़िया के चौदह गरोह हैं क़तऐया, केसानिया, करैबिया, उमैरिया, मुहम्मदिया, हुसैनिया, नावसिय्या, इस्माइलिया, करामज़िया, मुबारकिया, शमीतिया, अम्मादिया, मतमूरिया, मूसविया इमामिया।

राफ़ज़ियों के तमाम गरोह और फ़िरक़े इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ है कि ख़िलाफ़त का सबूत अक़्ली है इजमाई नहीं बल्कि नस का मोहताज है। तमाम इमाम हर ग़लती और निसयां और ख़ता से पाक है मफ़ज़ूल की इमामत अफ़ज़ल की मौजूदगी में जाइज़ नहीं सहीह क़ौल वही जो हम ख़ुलफ़ाए कराम के ज़िक्र में पहले बयान कर चुके हैं।

हज़रत अली को तमाम सहाबा पर तरजीह देने में भी यह सब मुत्तफ़िक़ है इन का दावा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अली की ख़िलाफ़त मन्सूस है और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारुक़ और दूसरे सहाबा कराम तबर्रा करते हैं (बेज़ारी का इज़हार) सिर्फ़ ज़ैदिया इस हुक्म से मुस्तसना हैं (वह इस बात के मुख़ालिफ़ हैं)

तमाम राफ़ज़ी इस बात पर भी मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु की ख़िलाफ़त न देने के बाइस (उनसे बैअते ख़िलाफ़त न करने के सबब से) सिवाए छः आदमियों के तमाम सहाबी मुरतद हो गए वह छः अफ़राद यह हैं हज़रत अली , हज़रत अम्मार, हज़रत मक़दाद बिन असवद, हज़रत सलमान फ़ारसी और दो और आदमी। इस फ़िरक़ा का यह भी अक़ीदा है ख़ौफ़ की हालत में इमाम यह कह सकता है कि मैं इमाम नहीं हूं उनका यह भी एतक़ाद है कि किसी चीज़ के मौजूद होने पहले अल्लाह तआला को उसका इल्म नहीं होता है। वह यह भी कहते हैं कि यौमे हिसाब से क़ब्ल मुर्दे दुनिया में दोबारा लौट आएंगे मगर राफ़ज़ियों का फ़िरक़ा ग़ालिया इस का क़ाइल नहीं वह हिसाब किताब और हश्र का भी मुनकिर है।

राफ़ज़ियों के तमाम फ़िरक़ों का अक़ीदा है कि जो कुछ दुनिया में हो चुका है या आइन्दा जो कुछ होगा इमाम को उन सब का इल्म होता है (ख़्वाह वह दीनी चीज़ हो या दुनयवी) यहां तक कि ज़मीन पर जिस क़दर ख़ज़फ़ रेज़े हैं और बारिश के जितने क़तरे ज़मीन पर गिरते हैं उनका भी उसे इल्म होता है और उन का शुमार जानता है इसी तरह इमाम दरख़्त की पत्तियों की तादाद से भी वाक़िफ़ होता है। अंबिया अलैहिमुस्सलाम की तरह है अइम्मा के हाथों से भी मोजज़ात ज़ाहिर होते हैं उनमें से बाज़ का यह ख़्याल है कि जिन लोगों ने हज़रत अली से जंग की वह काफ़िर हो गए इसी तरह के उनके और भी बहुत से अक़ाइद व अक़वाल हैं।

ग़ालिया

ग़ालिया गरोह (जो राफ़ज़ियों से अलग है) तो यह भी कहता है कि हज़रत अली तमाम अंबिया से अफ़ज़ल है वह कहते हैं कि हज़रत अली दूसरे सहाबे की तरह ज़मीन में दफ़न नहीं हुए बल्कि वह अब्र में हैं वह वहीं से अल्लाह के दुशमनों से जंग करेंगे और आख़िरी ज़माना में फ़िर आएंगे और दुशमनों को क़त्ल करेगें।

हज़रत अली और दूसरी तमाम अइम्मा फ़ौत नहीं हुए हैं बल्कि यह सब क़यामत तक ज़िन्दा रहेंगे उन की तरफ़ मौत को रास्ता नहीं मिलेगा (उनको मौत नहीं आएगी) ग़ालिया फ़िरक़ा का यह भी दावा है कि अली नबी है, जिब्रील ने वही के पहुंचाने में ग़लती की है यह इस बात के भी क़ाइल हैं कि अली इलाह थे। अल्लाह और उसकी मख़लूक़ की क़यामत तक उन पर लानत हों अल्लाह उन की बस्तियों को उजाड़ दे और वीरान कर दे उन की खेतियां बरबाद कर दे और ज़मीन पर उनकी कोई बस्ती बाक़ी न छोड़े। उन्होंने गुलू की हद कर दी और कुफ़्र पर जम गए इस्लाम को तर्क कर दिया ईमान से कनारा कशी एख़्तेयार करली अल्लाह उसके अंबिया और कुरआन के मुनकिर हो गए हम ऐसे अक़वाल एख़्तेयार करने वालों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

बुनानिया

फ़िरक़ा ग़ालिया की एक शाख़ बुनानिया यह गरोह बुनान बिन समआन से मनसूब है उन की तोहमत तराशियों और लग्व बातों में से एक यह है कि अल्लाह तआला इंसान की तरह है यह झूटे हैं अल्लाह तआला उस तशबीह मुनज़्ज़हा से और पाक है उसने खुद फ़रमाया है उस जैसी कोई शय नहीं।

तय्यारिया

ग़ालिया फ़िरक़ा ही की एक शाख़ तय्यारिया है यह फ़िरक़ा अब्दुल्लाह बिन मुआविया बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तय्यार से मनसूब है यह तनासुख़ के क़ाइल हैं और कहते हैं कि आदम की रूह अल्लाह की रूह थी जो आदम के अन्दर हुलूल कर गई थी उसी गरोह के बाज़ लोग यह अक़ीदा रखते हैं कि मौत के बाद आदमी की रूह जब दोबारा दुनिया में आती है तो सबसे पहले बकरी के बच्चे के जौन में आती है फिर उसके बाद उससे भी ज़्यादा हक़ीर जौन में आती है फिर हक़ीर से हक़ीर तर क़ालिबों में दौरा करती रहती है यहां तक की गंदगी और नजासत के कीड़ों में जन्म लेती है, जौन बदलने की यह आख़री हद है इस गरोह के बाज़ लोग तो यहां तक की अक़ीदा रखते हैं कि गुनहगारों की रूहें लोहे, कीचड़, और कच्चे बरतनों की शक्ल एख़्तेयार कर लेती हैं और फिर वह अपने गुनाह की सज़ा इस तरह पाती हैं कि आग में जलाई जाती हैं कूटा पीटा जाता है, गलाया जाता है, इस तरह ज़लील व ख़्वार करने के लिए उन पर जिस्मानी अज़ाब होता रहता हैं।

मुग़ीरिया

यह फ़िरक़ा मुग़ीरा बिन सअद की तरफ़ मनसूब है इस फ़िरक़ा के सरबराह मुग़ीरा ने नबुव्वत का दावा किया था उस का क़ौल था कि अल्लाह नूर है लेकिन इन्सानी शक्ल में, उसने यह भी

दावा किया था कि वह मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है।

मन्सूरिया

फ़िरक़ा मन्सूरिया अबू मनसूर से निसबत रखता है, अबू मनसूर का दावा था कि मुझ आसमानी मेराज हुई भी और परवरदिगार ने मेरे सर पर हाथ फेरा था उस का अक़ीदा था कि हज़रत ईसा अव्वल तरीन मख़लूक़ थे, फिर उसके बाद हज़रत अली की पैदाइश हुई अल्लाह के पैग़म्बरों का सिलसिला ख़त्म नहीं होगा जन्नत दोज़ख की कोई हक़ीक़त नहीं है, इस गरोह का अक़ीदा है कि जो शख़्स हमारे चालीस मुख़ालेफ़ीन को क़त्ल कर दे वह जन्नती होगा। लोगों का माल लूटना इनके नज़दीक मुबाह है इनका अक़ीदा है कि जिब्रील ने नबुव्वत पहुंचाने में ग़लती कर दी इस फ़िरक़ा का यह कुफ़्र इतना अज़ीम है कि इसके बराबर कोई और कुफ़्र नहीं।

ख़त्ताबिया

यह फ़िरक़ा अबी ख़त्ताब से मन्सूब है इस गरोह का अक़ीदा है कि इमाम नबी और अमीन है हर ज़माने में दो पैग़म्बर ज़रूर होते हैं एक नातिक़ होता है और एक ख़ामोश रहता है। चुनांचे हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैग़म्बर नातिक़ थे और हज़रत अली ख़ामोश पैग़म्बर थे।

मुअम्मरा

मुअम्मरा का भी अक़ीदा वही है जो ख़त्ताबिया का है ख़त्ताबिया से यह इस अम्र में बढ़कर है यह नमाज़ के भी तारिक़ हैं।

बज़ीऐआ

बज़ीऐआ फ़िरक़ा बज़ीअ से मनसूब है इस फ़िरक़ा का अक़ीदा है कि हज़रत जाफ़र अल्लाह हैं अल्लाह उसी शक्ल व सूरत में दिखाई देता है यह गरोह कहता है कि हमारे पास भी वही आती है और हम को आलमे फ़रिश्तगान (आलमे मलकूत) की तरफ़ उठाया जाता है उन की यह इफ़तरा परदाज़ी, दरोग़बानी और तोहमत तराशी कितनी अज़ीम है अल्लाह इनको असफ़लुस साफ़ेलीन हाविया के अन्दर फेंक दे।

मुफ़ज़्ज़लिया

मुफ़ज़्ज़लिया फ़िरक़ा मुफ़ज़्ज़ल सैरफ़ी से मनसूब है यह फ़िरक़ा भी झूटी रिसालत और नबुव्वत के दाई हैं इमामों के मुताल्लिक़ उनके अक़वाल भी वही हैं जो मसीह (हज़रत अलैहिस्सलाम) के बारे में ईसाइयों की हैं।

शरीऐया

शरीऐआ फ़िरक़ा (नामी शख़्स) से मन्सूब है इस गरोह का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ने पांच हस्तियों में हुलूल किया था नबी अलैस्सिलाम, अली, अब्बास, जाफ़र और अक़ील रज़ियल्लाहो अन्हुम

सब्बाइया

फ़िरक़ा सब्बाइया अबदुल्लाह बिन सबा से मनसूब है इस फ़िरक़ा का दावा है कि अली

रज़ियल्लाहो अन्हो ने वफ़ात नहीं पाई है क़यामत से पहले दुनिया में वापस आएंगे मशहूर शायर सय्यद हुमैरी इसी फ़िरक़ा में से था।

मुफ़व्विज़िया

फ़िरक़ा मुफ़व्विज़िया का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ने मख़लूक़ का इन्तेज़ाम इमामों के सुपुर्द फ़रमाया दिया है वह कहते हैं कि अल्लाह तआला ने किसी चीज़ को पैदा नहीं किया बल्कि हर चीज़ तख़लीक़ और उसके इन्तेज़ाम के कुदरत रसूलुल्लाह की तफ़वीज़ फ़रमा दी थी हज़रत अली के बारे में भी उनका यही ख़्याल है उनमें से बाज़ लोग जब अब्र को देखते हैं तो कहते हैं अली इसमें है और उन पर सलाम भेजते हैं।

ज़ैदिया

इस फ़िरक़ा का नाम ज़ैदिया इस मुनासिबत से रखा गया कि यह लोग ज़ैद बिन अली के उस क़ौल की तरफ़ राग़िब कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ से तवल्ला दुरूस्त है।

जारूदिया

फ़िरक़ा जारूदिया की निसबत अबुल जारूद से है इस गरोह का ख़्याल है कि हज़रत अली रसूलुल्लाह की वसी थे और वही ख़लीफ़ए अव्वल थे उनका क़ौल था कि रसूलुल्लाह ने हज़रत अली के सिफ़ात की अपने ख़लीफ़ा के सिलसिले में सराहत कर दी थी लेकिन नाम का तअय्युन नहीं फ़रमाया था यह लोग इमामते मनसूसा का सिलसिला हज़रत इमाम हुसैन तक चलाते हैं उस के बाद ख़िलाफ़त के शूराई होने के क़ाएल है।

सुलैमानिया

यह फ़िरक़ा सुलैमान बिन कसीर की तरफ़ मनसूब है ज़रफ़ानी का क़ौल है कि इस फ़िरक़ा का गुमान है कि इमाम हज़रत अली थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर की बैअत ग़लत हुई यह दोनों हज़रात अली से सबक़त के मुसतहिक़ न थे और उम्मत ने अम्रे असले का छोड़ दिया।

अबतरिया

यह फ़िरक़ा अबतर नामी शख़्स की तरफ़ मनसूब है अबतर का असल नाम नवा था लेकिन अबतर के नाम से मशहूर था इस गरोह का ख़्याल है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर की बैअत ग़लत नहीं हुई क्योंकि हज़रत अली ने ख़िलाफ़त को छोड़ दिया था। हज़रत उसमान के मामले में यह लोग तवक़्क़ुफ़ करते हैं और कहते हैं कि जब उनसे बैअत की गई तो हज़रत अली इमाम थे।

नईमिया

फ़िरक़ा नईमिया नईम बिन यमान की तरफ़ मनसूब है इस फ़िरक़ा का अक़ीदा भी अबतरिया की तरह है लेकिन फ़र्क़ यह है कि यह हज़रत उसमान से तबर्रा करते हैं और आप को (मआज़

अल्लाह) काफ़िर कहता है।

याक़ूबिया

यह फ़िरक़ा याक़ूब की तरफ़ मनसूब है यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर की इमामत के क़ाइल थे और रजअत के इनकार करते हैं इस गरोह के बाज़ लोग और हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर से तबर्रा करते हैं और रजअत के क़ाइल हैं।

राफ़ज़ियों के मुख़्तलिफ़ फ़िरक़े

राफ़ज़ियों के शाख़ दर शाख़ चौदह फ़िरक़े हो गए

क़तइया

चूंकि क़तइया फ़िरक़े पैरूओं को हज़रत मूसा बिन जाफ़र की मौत का क़तई यक़ीन था इसी लिए इसको क़तइया कहते हैं यह लोग इमामत का सिलसिला मोहम्मद बिन हनफ़िया तक ले जाते हैं और आप को ही क़ाइम मुनतज़िर मानते हैं।

केसानिया

इस फ़िरक़ा की निसबत केसान की तरफ़ है यह मोहम्मद बिन हनफ़िया की इमामत के क़ाइल थे क्योंकि बसरा में अलम आप ही को दिया गया था।

करीबिया

यह लोग इब्ने करीब ज़रर के साथी थे (इसी लिए इनको करीबिया कहा गया है।)

उमैरिया

इस फ़िरक़ा के लोग उमर के साथी थे और जब उन्होंने मेहदी पर ख़ुरूज किया तो उमर ही उनका इमाम था।

मोहम्मदिया

यह गरोह इस बात का दावा करता है मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन हसन बिन हुसैन इमाम क़ाइम हैं और इमाम क़ाइम ने तमाम बनी हाशिम को छोड़ कर अपना वसी अबू मन्सूर को बनाया था जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी और हज़रत हारून (अलैहिमस्सलाम) की औलाद को छोड़ कर यूशअ़ बिन नून को अपना वसी बनाया था।

हुसैनिया

इस गरोह का ख़्याल है कि अबू मन्सूर ने अपने बेटे हुसैन को अपना वसी बनाया था, इस लिए अबू मन्सूर के बाद हुसैन ही इमाम हुए।

नावसिया

यह फ़िरक़ा नावस बसरी की तरफ़ मनसूब है वही इस गरोह का सरदार था। यह लोग इमाम जाफ़र की इमामत के और उनके ज़िन्दा होने के क़ाइल हैं और कहते हैं वही क़ाइम और मेहदी हैं।

इस्माईलिया

इस्मालिया कहते हैं कि जाफ़र का इन्तकाल हो गया उनके बाद इस्माईल इमाम हुए। यही बादशाह बनेंगे इमाम मुनतज़िर वही हैं।

क़रामज़िया

यह फ़िरक़ा सिलसिलए इमामत को जाफ़र तक चलाते हैं और इस के क़ाइल हैं कि इमाम जाफ़र ने मोहम्मद बिन इस्माईल की इमामत की सराहत की थी, मोहम्मद ज़िन्दा हैं पस वही इमामे महदी हैं।

मुबारकिया

मुबारकिया दसवां फ़िरक़ा है यह मुबारक नामी शख़्स से मनसूब है जो उन लोगों का सरदार था उनका अक़ीदा है कि मोहम्मद बिन इसमाईल ज़िन्दा नहीं, वफ़ात पा चुके हैं लेकिन उनके बाद उनकी औलाद में इमामत में जारी है।

शमीतिया

यह फ़िरक़ा यहया बिन शमीत से मनसूब है जो उनका सरदार था उनका अक़ीदा है हज़रत जाफ़र इमाम हैं उनके बाद इमामत उनके बेटे, पोतों में जारी व सारी है।

मुअम्मरिया

यह फ़िरक़ा फ़तहिया भी कहलाता है उनका अक़ीदा है कि इमाम जाफ़र के बाद उनके बेटे अबदुल्लाह इमाम हैं अबदुल्लाह के पांव बहुत लम्बे और मोटे थे उस गरोह की तादाद बहुत ज़्यादा हुई।

मतमूरिया

इस फ़िरक़ा की वजह तसमिया यह है कि इन लोगों ने यूनुस बिन अब्दुर्रहमान से मुनाज़रा किया उनको फ़िरक़ा क़तइया से ताल्लुक़ था यूनुस ने उनके बारे में कहा कि तुम लोग कुलाब मतमूरिया से भी ज़्यादा गंदे हो (कुलाबे मतमूरिया बारिश में भीगे हुए कुत्ते को कहते हैं) इसी वजह से इस फ़िरक़ा का नाम मतमूरिया पड़ गया इस फ़िरक़ा का अक़ीदा है कि मूसा बिन जाफ़र ज़िन्दा हैं न मरे हैं न मरेंगे वही इमाम महदी है इस फ़िरक़ा को वाक़िफ़ा भी कहते हैं क्योंकि यह लोग सिलसिलए इमामत में मूसा बिन जाफ़र पर ठहर जाते हैं।

मौसविया

यह लोग सिलसिलए इमामत मे मूसा बिन जाफ़र पर रूक जाते हैं इस वजह से मौसविया से मुलक़्क़ब हैं लेकिन मतमूरिया के बर अक्स यह लोग कहते हैं कि हम को मालूम नहीं कि मूसा ज़िन्दा है या मर गए अगर किसी दूसरे की इमामत सही व दुरूस्त होती तो लोग उसको नाफ़िज़ करते।

अमामिया

यह फ़िरक़ा सिलसिलए इमामत को मोहम्मद बिन हसन की तरफ़ चलाता है और उनको

इमाम काइम मुन्तजिर (महदी) तसलीम किया है यह लोग कहते हैं कि इमाम काइम जाहिर होकर ज़मीन को अद्ल से भर देंगे जिस तरह अब वह जुल्म से भरपूर है।

ज़रारिया

यह फ़िरक़ा ज़रारा नामी शख़्स के साथियों का है जो अक़ीदा मुअम्मरिया का था वही उनका है, बाज़ लोगों का ख़्याल है कि ज़रारा ने मुअम्मरिया की मुख़ालफ़त तर्क कर दी थी जिस का बाइस यह हुआ कि अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से कुछ मसाइल दरयाफ़्त किए गए अब्दुल्लाह उनका जवाब न दे सके तो लोगों ने उनको छोड़ दिया और मूसा बिन जाफ़र की तरफ़ रूजूअ किया।

राफ़ज़ियों के अक़वाल (बातिला)

राफ़ज़ियों के अक़वाल यहूदियों से मुशाबेहत रखते हैं। शअबी कहते हैं कि राफ़ज़ियों की मोहब्बत यहूदियों की मोहब्बत है यहूदी इस बात के क़ाएल है कि इमामत हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की औलाद के अलावा किसी दूसरे के लिए दुरुस्त नहीं इसी तरह राफ़ज़ी कहते हैं कि इमामत हज़रत अली की औलाद के अलावा किसी और की सहीह नहीं है। यहूदी इस बात के क़ाएल हैं कि जब मसीह दज्जाल ख़ुरूज करेगा और ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से ज़मीन पर रस्सी पकड़ कर उतरेंगें उस वक़्त जिहाद होगा इससे पहले जिहाद नहीं हो सकता। राफ़ज़ी भी कहते हैं कि जब तक मेहदी बर आमद नहीं होंगे और एक मुनादी आसमान की तरफ़ से निदा न करेगा उस वक़्त तक जिहाद नहीं हो सकता। यहूदी मग़रिब की नमाज़ इतनी ताख़ीर से पढ़ते हैं कि आसमान पर सितारों का इज्तेमा एक जाल की शक्ल में नज़र आने लगे (काफी सियाही न फैल जाए) राफ़ज़ी भी मग़रिब की नमाज़ में इसी क़दर ताख़ीर करते हैं। यहूदी किबला की तरफ़ से कुछ फिरे हुए नमाज़ में होते हैं राफ़ज़ी भी ऐसा ही करते हैं। यहूदी फ़ज्र की नमाज सुबह के ख़ूब रौशन हो जाने के बाद अदा करते हैं राफ़ज़ी भी ऐसा ही करते हैं यहूदी नमाज़ में कपड़े लटकाए रहते हैं राफ़ज़ियों की भी यही हालत है। यहूदी हर मुसलमान के ख़ून को हलाल समझते हैं राफ़ज़ी भी यही ख्याल करते हैं। यहूदी औरतों की इद्दत के क़ाएल नहीं हैं राफ़ज़ी भी इसके क़ाएल नहीं हैं यहूदी तीन तलाक़ को बे मानी समझते हैं राफ़ज़ियों का भी यही हाल है यहूदियों ने तौरात में तहरीफ़ की है राफ़ज़ियों ने कुरआन में तहरीफ़ की। राफ़ज़ी कहते हैं कुरआन पाक में तग़य्युर व तबद्दुल कर दिया गया है तरकीब व तरतीब में उलट फेर कर दिया गया है नुजूल की तरतीब बाक़ी नहीं है और कुरआन में कमी व बेशी कर दी गई है कुरआन की किरअत ऐसे तरीक़ों से की गई है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है।

यहूदी जिब्रील अलैहिस्सलाम से बुग्ज़ रखते हैं और कहते हैं वह हमारे दुशमन हैं राफ़ज़ियों का एक गरोह भी इस का क़ाएल है कि जिब्रील ने वही पहुंचाने में ग़लती की। अली के बजाए मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को वही पहुंचा दी अल्लाह ने उनको वही दे कर अली के पास भेजा था। अल्लाह करे यह हमेशा तबाह और ग़ारत रहें।

मरजिया के फ़िरक़े

मरजिया के 12 फ़िरक़े हैं

(1) जहमिया (2)सालेहिया (3) शमरीया (4) यूनिसिया (5) यूनानिया (6) नज्जारिया(7) गीलानिया (8) शबीबिया (9) हनफ़िया (10) मुआज़िया (11) मोरिसिया (12) कर्रामिया

मरजिया की वजह तसमिया यह है कि इस फ़िरक़ा के ख़्याल में ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मद रसूलुल्लाह का क़ाएल ख़्वाह कितने ही गुनाह करे मगर वह दोज़ख़ में नहीं जाएगा। ईमान क़ौल का नाम है अ़मल का नहीं, आमाल अहकाम हैं ईमान सिर्फ़ क़ौल है लोगों के ईमानों में बाहम कमी बेशी नहीं होती, पस आम आदमियों का ईमान, अंबिया का ईमान और मलाएका का ईमान एक ही है इसमें न कोई ज़्यादा है न कोई कम।

इज़हार ईमान के साथ इन्शा अल्लाह नहीं कहना चाहिए (बल्कि यक़ीन के साथ ईमान का दावा किया जाए और कहा जाए मैं यक़ीनन मोमिन हूं इस तरह न कहे मैं इन्शा अल्लाह मोमिन हूं) जो शख़्स ज़बान से ज़रूरियाते दीन का इक़रार करे और अमल न करे जब भी वह मोमिन है।

जहमिया

जहमिया फ़िरक़ा जहम बिन सफ़्वान से मन्सूब है जहम का क़ौल है कि अल्लाह को, अल्लाह के रसूल को और उन चीजों को जो अल्लाह की तरफ़ से आई हैं सिर्फ़ जानने और मानने का नाम ईमान है। इस फ़िरक़ा का दावा था कि कुरआन मख़लूक़ है अल्लाह तआला ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कलाम नहीं किया अल्लाह तो कलाम करता ही नहीं है न उस को देखा जा सकता है और न उस की जगह जानी जा सकती है उसके लिए न अर्श न कुर्सी और न वह अर्श पर है, उन्होंने नामए आमाल तौले जाने और अज़ाबे क़ब्र और जन्नत व दोज़ख़ के पैदा हो जाने का इन्कार किया है उनका दावा है कि जब वह दोनों पैदा होंगे तो फ़ना हो जाएंगे। अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ से कलाम नहीं फ़रमाएगा और न रोज़े क़यामत उनकी तरफ़ नज़र करेगा और न अहले जन्नत अल्लाह तआला की तरफ़ नज़र उठाएगें और न उस का दीदार जन्नत में होगा। ईमान सिर्फ़ एतराफ़े क़ल्ब का नाम है न कि ज़बान से इक़रार करने का। उस गरोह ने अल्लाह तआला की तमाम सिफ़ात से इन्कार किया है।

सालहिया

इस फ़िरक़े का यह नाम इस वजह से पड़ा कि यह लोग ख़ुद को अबूल हसन सालेही के मज़हब का पैरू कहते हैं उन लोगों का अक़ीदा है कि मारफ़त का नाम ईमान और जिहालत का नाम कुफ़्र है और यह कि जिस ने सालिस सलासा (यानी तीन में से एक तीसरा ख़ुदा) कहा सो यह कहना कुफ़्र नहीं है मगर ऐसी बात वही कहेगा जो काफ़िर हो अगरचे वह ज़ाहिर न करे और यह कि ईमान के सिवा कोई और इबादत नहीं है।

यूनिसिया

यह फ़िरक़ा यूनुस बर्री से मन्सूब है उनका अक़ीदा है कि मारेफ़त और अल्लाह तआला से

मोहब्बत और ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ का नाम ईमान है जिसने इन बातों में से एक बात भी तर्क कर दी वह काफ़िर हो गया।

शिमरिया

यह फ़िरक़ा अबू शिमर की तरफ़ मन्सूब है इस गरोह का ख़्याल है कि ईमान, मारेफ़त, ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ और मोहब्बत के साथ साथ ज़बान से यह इक़रार करना भी है कि ख़ुदा के मिस्ल कोई नहीं है। इन सब बातों का मजमूआ का नाम ईमान है अबू शिमर ने कहा है कि जो कबीरा गुनाह का मुरतकिब हुआ है उसको मुतलक़न फ़ासिक़ नहीं कह सकता बल्कि इतना कह सकता है कि वह फ़लां फ़लां अमल से फ़ासिक़ है।

यूनानिया

यह फ़िरक़ा यूनान से मनसूब है उनका अक़ीदा है कि मारफ़त और अल्लाह और रसूल का इक़रार और जिसे अक़्ल जाएज़ नहीं समझती उस काम को न करना (कि ख़ुदा उसको माफ़ नहीं करता) इन सब के मजमुआ का नाम ईमान है।

नज्जारिया

फ़िरक़ा नज्जारिया हसन बिन मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह नज्जार से मनसूब है वह कहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों की मारफ़त और उसके मुत्तफ़िक़ अलैह फ़राएज़ और उसके साथ ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ और ज़बान के साथ इक़रार करने का नाम ईमान है पस जो शख़्स इनमें से किसी बात से नावाकिफ़ हो और उस पर हुज्जत क़ाएम हो जाए और वह उसका इक़रार न करे तो वह काफ़िर है।

गीलानिया

यह फ़िरक़ा गीलान से मनसूब है और यी शिमरिया का हम ख़्याल है इस का अक़ीदा है कि अशिया के हुदूस से आगाह होना ईमान के लिए ज़रूरी है और तौहीद का इल्म ही सिर्फ़ ज़बानी इक़रार है क़ल्बी शहादत जरूरी नहीं। ज़रक़ान का क़ौल है कि ग़ीलान ने कहा है कि ज़बानी इक़रार का नाम ही ईमान है और यही तसदीक़ है।

शबीबिया

यह फ़िरक़ा मोहम्मद बिन शबीब से मनसूब है इनके साथी इसके क़ाएल हैं कि अल्लाह का इक़रार करना, अल्लाह की वहदानियत का पहचानना और अल्लाह की ज़ात की हर तशबीह से नफ़ी करना (यानी लैसा कमिसलेही शैइन) ईमान है। मोहम्मद का यह भी अक़ीदा था कि इब्लीस में ईमान था लेकिन वह अपने गुरूर और तकब्बुर के बाइस काफ़िर हो गया।

हनफ़िया

अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित के बाज़ उन पैरूओं और साथियों को हनफ़िया मरजिया कहा जाता है जिन का अक़ीदा है कि अल्लाह और अल्लाह के पैग़म्बरों को पहचानने और उन तमाम चीज़ों का इक़रार करने का जो अल्लाह की तरफ़ से आई हैं उसका नाम ईमान है। बरहूती ने

अपनी किताब अश्शजरा में इस का ज़िक्र किया है।

मुआज़िया

यह फ़िरका मआज़ मूसी की तरफ़ मनसूब है मआज़ कहता था कि जिसने अल्लाह की इताअत कर दी उसको फ़ासिक़ नहीं कहा जाएगा बल्कि कहा जाएगा कि उस शख़्स ने फ़िस्क़ किया है फ़ासिक़ न अल्लाह का दोस्त होता है न दुश्मन।

मुरीसिया

यह फ़िरका बिश्र मुरीसी का है इस फ़िरका का अक़ीदा है कि ईमान तसदीक़ का नाम है और तसदीक़ दिल और ज़बान दोनों से होती है इब्ने रावन्दी का भी यही मस्लक था उसका कौल था कि सूरज को सजदा करना कुफ़्र नहीं है बल्कि एक अलामते कुफ़्र है।

कर्रामिया

यह फ़िरका अबू अब्दुल्लाह बिन कर्राम से मनसूब है इस का अक़ीदा है कि ज़बानी इक़रार ही ईमान है, क़ल्ब की तसदीक़ इसके लिए ज़रूरी नहीं मुनाफ़िक़ हक़ीक़त में मोमिन थे। कुदरते फ़ेअल को यह वजूदे फ़ेअल से मुक़द्दम जानते हैं ख़्वाह कुदरते फ़ेअल वकूए के साथ मुत्तसिल व मुआविन हो इसके बर ख़िलाफ़ अहले सुन्नत कहते हैं कुदरत फ़ेअल वकूए फ़ेअल के साथ है और बग़ैर शर्त के इसको मुक़द्दम कहना जाएज़ नहीं। उन की किताबें अबुल हसन सालही, इब्ने रावन्दी, मोहम्मद बिन शबीब और हुसैन बिन मोहम्मद नज्जार ने तसनीफ़ की हैं। इस फ़िरका के मानने वाले ज़्यादातर मशरिक़ में और ख़ुरासान में आबाद हैं।

मोतज़ला या क़दरिया के अक़्वाल

मोतज़ला की वजहे तसमीया

1. मोतज़ला की वजह तसमीया यह है कि यह लोग हक़ से किनारा कश हो गए थे (एतज़ाल किनारा कश हो जाने को कहते हैं) दूसरे यह कि

2. यह लोग मुसलमानों के अक़्वाल से अलग थलग हो गए थे यानी मुसलमानों में गुनाहे कबीरा के मुरतकिब के बारे में इख़्तेलाफ़ था बाज़ कहते थे कि मुरतकिबे गुनाहे कबीरा मोमिन है क्योंकि उसमें ईमान मौजूद है बाज़ कहते हैं कि वह काफ़िर हो गया वासिल बिन अता ने तीसरा क़ौल ईजाद किया और कहा कि गुनाहे कबीरा का मुरतकिब न मोमिन है न काफ़िर। इस क़ौल की बिना पर वह सब मुसलमानों से अलग हो गया और अहले ईमान से किनारा कश हो गया इस वजह से उनको मोतज़ला कहा जाने लगा।

3. मोतज़ला कहने की यह वजह भी बताई गई है कि यह लोग हज़रत हसन बसरी की मजलिस से अलग हो गए थे जब हसन बसरी का उनकी तरफ़ गुज़र हुआ तो उन्होंने फ़रमाया यह लोग मोतज़ला (अलग हो जाने वाले) हैं उस वक़्त यह लोग अम्र बिन उबैद की पैरवी करते थे हसन बसरी ने जब अम्र बिन उबैद पर अताब किया तो लोगों ने हसन बसरी को इस गुस्सा पर आप को टोका आप ने फ़रमाया क्या तुम ऐसे शख़्स के सिलसिले में मुझ से बिगड़ते हो जिस

को मैंने खुद ख्वाब में सूरज को सजदा करते देखा था।

4. मोतजला को कदरिया भी कहते हैं कदरिया कहने की वजह यह है की यह लोग इन्सान के गुनाहों को कजा व कद्र के तहत नहीं समझते बल्कि खुद इन्सान को उसके गुनाहों का खालिक समझते हैं।

मोतजला, जहमिया और कदरिया सिफाते खुदावन्दी के इन्कार में यकसां मसलक रखते हैं हम इस सिलसिला में उनके कुछ अकाइद पहले बयान कर आए हैं। इस मसलक की किताबों के मसन्निफ अबूल हुजैल, जाफर बिन हरब, खयात, कअबी, अबूल हाशिम, अबू अब्दुल्लाह बसरी अब्दुल जब्बार बिन अहमद हमदानी हैं, इनका मजहब अमवाज, असकर और जहजम में ज्यादा फैला। मोतजला के मुन्दरजा जैल छः फिरके हैं।

हजलिया, निजामिया, मुअम्मरिया, जबाईया, कअबिया और बहीशमिया वह बातें जिन पर मोतजला के तमाम फिरके मुत्तफिक हैं वह जाते बारी की नफी पर मुशतमिल है यानी अल्लाह तआला के इल्म, कुदरत, हयात, समअ और बसर के नफी करते हैं इसी तरह वह उन सिफात की नफी करते हैं जो शरीअत से साबित हैं मसलन इसतवा व नुजूल वगैरह वह सब इस पर मुत्तफिक है कि अल्लाह का कलाम हादिस (नौ पैदा शुदा) है और उसका इरादा भी हादिस है नीज यह कि उसने उस कलाम से तकल्लुम फरमाया जिसको उसने अपने गैर में पैदा किया (मसलन दरख्त वगैरह) अल्लाह इरादा करता है और उसका इरादा हादिस है जो महल का मोहताज नहीं है। अल्लाह तआला अपने मालूम के खिलाफ इरादा करता है (यानी जानता है कि एक फेअल नहीं होगा और फिर उस फेअल का इरादा करता है।)

बन्दों की तरफ से जो फेअल होने वाला नहीं है अल्लाह उसका इरादा करता है और जो बात हो गई है वह नहीं चाहता अल्लाह तआला अपने बन्दों के मकदूरात पर कादिर नहीं है बल्कि यह मोहाल कि उसने अपने बन्दों के अफआल को पैदा नहीं किया बल्कि बन्दे ही उन अफआल के खालिक हैं। बकसरत ऐसी चीजें हैं जिन को इनसान खाता है लेकिन अल्लाह तआला ने उनको बन्दों को रिज्क नहीं बनाया है जब कि वह हराम हों, हकीकत है कि अल्लाह तआला हलाल ही रिज्क बनाता है न कि हराम को। आदमी कभी अजले मोअय्यन से पहले कत्ल कर दिया जाता है और कातिल वक्त से पहले उसकी जिन्दगी खत्म कर देता है।

मोमिन गुनाहे कबीरा के इरतकाब से अगरचे का काफिर नहीं हो जाता लेकिन ईमान से खारिज हो जाता है उसकी तमाम नेकियां बरबाद हो जाएंगी और वह हमेशा दोजख में रहेगा। मोतजला गुनाहे कबीरा के मुरतकिब के लिए रसूलुल्लाह की शफाअत के भी मुनकिर हैं। मोतजला में अकसर ऐसे ही हैं जो अजाबे कब्र को नहीं मानते और मीजान का इनकार भी करते हैं। यह लोग खलीफए वक्त की इताअत तर्क करने और उसके खिलाफ खुरूज को भी जाइज समझते हैं। उनका अकीदा है कि जिन्दा की दुआ या खैरात से मुर्दे को फायदा और नफा नहीं पहुंचता है यह लोग हुसूले सवाब को नहीं मानते। उनका यह भी अकीदा है कि न अल्लाह ने आदम से कलाम किया और न नूह से और न इब्राहीम (अलैहिमुस्सला) से न हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से और न जिब्रील, मिकाईल और न इस्राफील से, न उन मलाइका से कलाम किया जो अर्श को उठाए हुए हैं कयामत के दिन अल्लाह तआला उनमें से किसी की तरफ भी नहीं देखेगा, न इब्लीस, यहूदियों और नसरानियों से कलाम करेगा।

हज़लिया

फ़िरक़ा हज़लिया का बानी और सरदार अबुल हज़ील इस अक़ीदे में मोतज़ला के दूसरे फ़िरक़ों से मुन्फ़रिद है कि अल्लाह तआला के लिए इल्म भी है और क़ुदरत भी, समअ भी है और बसर भी। अल्लाह तआला का कुछ कलाम मख़लूक़ है और कुछ ग़ैर मख़लूक़। लफ़्ज़ कुन ग़ैर मख़लूक़ है, अल्लाह अपनी मख़लूक़ का दुशमन नहीं है, अल्लाह के मक़दूरात की एक ख़ास हद है। अहले जन्नत जन्नत में रहेंगे लेकिन वह हरकत पर क़ादिर न होंगे और न अल्लाह उनको हरकत देने पर क़ादिर होगा। इसका अक़ीदा है कि मुर्दे, मादूम और आजिज़ से फ़ेअल का सुदूर हो सकता है। अबुल हज़ील का अक़ीदा था कि अल्लाह तआला हमेशा के लिए समीअ़ नहीं है।

निज़ामिया

यह फ़िरक़ा निज़ामिया का बानी और सरदार निज़ाम था उसका अक़ीदा था कि जमादात तख़लीक़ी अम्र (नेचर) के मुवाफ़िक़ अमल करते हैं वह सिवाए हरकत एतमादिया के तमाम अग़राज़ की नफ़ी करता है यानी किसी अर्ज़ का [illegible]जूद तस्लीम नहीं करता सिवाए हरकते एतमादिया के। वह कहता है कि इन्सान रूह का नाम है और किसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं देखा बल्कि इन्सान के जिस्म को देखा इज्मा[illegible] ख़िलाफ़ उसका क़ौल यह भी था जिसने क़सदन नमाज़ को तर्क कर दिया तो [illegible]ना उसके ज़िम्मा वाजिब नहीं है। निज़ाम इजमाए उम्मत का क़ाएल नहीं था वह कहता था कि उनका इज्मा बातिल पर था वह इसका भी क़ाइल था कि [illegible]मान कुफ़्र [illegible] तरह है और ताअ़त गुनाह के मानिन्द और हुज़ूर का फ़ेअल इब्लीसे [illegible]ईन की तरह है और ह[illegible]रत उ[illegible]र रज़ियल्लाहो अन्हो की सीरत हुज्जाज की सीरत के मानिन्द है उसने इस क़ौल को इस द[illegible]थ एख़्तेयार किया था कि तमाम जानदार एक ही [illegible]न्सीयत रखते हैं (इ[illegible]लिए हर फ़ेअल अच्छा [illegible]ा बुरा दूसरे फ़ेअल की तरह है) निज़ाम का यह [illegible] क़ौल था कि क़ुरआने हकीम अपनी तरतीब इबारत के एतबार से मोजज़ा नहीं है। उस का क़ौल [illegible]कि बच्चा अगर दोज़ख़ के किनारे पर हो तब भी अल्लाह तआला में यह क़ुदरत नहीं कि उसको [illegible] डाले या दोज़ख़ में फेंक दे। अहले क़िब्ला में यही वह पहला शख़्स है जिसने यह अक़[illegible] कुफ़्र कहे हैं यह कहता था कि जिस्म की तक़सीम किसी हद पर भी जाकर ख़त्म नहीं हो सकती (ला मुतनाही है) उसका क़ौल था कि सांप, बिच्छू, गोबर के कीड़े, कुत्ते और सुअर भी जन्नत में हैं।

मुअम्मरिया

फ़िरक़ा मुअम्मरिया का बनी मुअम्मर था उसके क़ौल माद्दा परस्तों की तरह थे बल्कि उनसे कुछ बढ़ कर। यह कहता था कि अल्लाह ने न रंग पैदा किया है और न ज़ाएका, न बू, न ज़िन्दगी, न मौत बल्कि यह सब जिस्म के तबई ख़्वास हैं (नेचर ने उन्हें ऐसा ही पैदा किया है) वह कहता था कि क़ुरआन भी अल्लाह का फ़ेअल नहीं है बल्कि जिस्म के अफ़आल हैं उसने अल्लाह तआला के क़दीम होने का भी इन्कार किया है, अल्लाह उसका नास करे और इस उम्मत से उसके ख़्यालात को दूर रखे।

जबाईया

जबाईया फ़िरक़ा का सरदार जबई था चन्द उमूर में उसने इज्मा के ख़िलाफ़ किया और सब से अलग हो गया उन उमूर में से एक यह है कि वह कहता था बन्दे अपने अफ़आल के ख़ालिक़ है और उस बात में से कोई सबक़त नहीं ले जा सका यानी उससे पहले किसी ने यह बात नहीं कही थी। वह यह भी कहता था कि अल्लाह तआला औरतों में हमल की तख़लीक़ करता है वह कहता था कि बन्दे जब किसी काम के करने का इरादा करते हैं तो अल्लाह तआला अपने बन्दों की इताअत करता है उसका क़ौल था कि अगर कोई सख़्स यह कहे कि इन्शा अल्लाह मैं कल को अपना क़र्ज़ अदा कर दूंगा और क़र्ज़ अदा न करे तो वह हानिस (क़सम तोड़ने वाला) होगा और इन्शा अल्लाह कहने से उसको कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचेगा वह कहता था कि पांच दिरहम की चोरी करने से अदमी फ़ासिक़ हो जाता है और अगर उससे एक हब्बा भी कम है तो फ़ासिक़ नहीं होगा।

बहशमिया

बहशमिया फ़िरक़ा अबूल हाशिम से मनसूब है अबूल हाशिम जबाई का फ़रज़न्द था उसका क़ौल था कि मुकल्लफ़ क़ादिर होता है फ़ाएल और तारिक़ नहीं होता अल्लाह तआला उसको उस के फ़ेअ़ल पर अज़ाब देगा अगर गुनहगार तमाम गुनाहों से तौबा कर ले और एक गुनाह से न करे तो जिन गुनाहों से उसने तौबा की है वह तौबा भी सहीह न होगी।

काबिया

यह फ़िरक़ा अबुल क़ासिम काबी बग़दादी से मनसूब है उसने अल्लाह तआला के समीअ़ व बसीर होने से इन्कार किया है और इसका भी मुनकिर था कि अल्लाह हक़ीक़त में साहबे इरादा है वह कहता था कि बन्दों के अफ़आल के मुताल्लिक़ अल्लाह के इरादा करने के मानी हैं उन अफ़आल का हुक्म देना और अपन फ़ेअ़ल के इरादा करने के मानी हैं फ़ेअ़ल को जानना और मजबूर न होना। अबुल क़ासिम कहता था कि आलम में ख़ला महाल है और जिस्म की सिर्फ़ बैरूनी सतह हरकत करती है गोया कोई सख़्श अगर जिस्म पर तेल लगा कर चले तो इस नज़रिया का मुताबिक़ वह ख़ुद मुतहर्रिक न होगा बल्कि तेल मुतहर्रिक होगा यह कुरआन को हादिस तो कहता था मगर इसके मख़लूक़ होने का क़ाएल नहीं था।

फ़िरक़ा मुशब्बा के अक़ाएद व अक़वाल

मुशब्बा के तीन फ़िरक़े हैं हश्शामिया, मकातिलियाा, वासमिया

यह तीनों फ़िरक़े इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि अल्लाह जिस्म है इस लिए कि किसी मौजूद का इल्म बग़ैर जिस्म के नहीं हो सकता। राफ़ज़ियों और कर्रामिया फ़िरक़ों पर मुशब्बा के अक़ाइद का बहुत ग़ल्बा था हश्शाम बिन हेकम ने मुशब्बा फ़िरक़े की किताबें तालीफ़ की हैं अल्लाह तआला की जिस्मानियत के इस्बात में ख़ुसूसियत से एक किताब तालीफ़ की है।

हश्शामिया

यह फ़िरक़ा हश्शाम बिन हेकम की तरफ़ मनसूब है इस फ़िरक़े का अक़ीदा था कि अल्लाह

तआला जिस्म है जिसमें तूल, अर्ज़ और अमक़ मौजूद है वह एक चमकदार नूर है लेकिन उसकी उक मिक़दार मुक़र्रर है वह खड़ा होता है और बैठता है वह मुतहर्रिक भी होता है और साकिन भी वह सियाल चादी की तरह है। एक रिवायत में आया है कि हश्शाम ने कहा कि अल्लाह के लिए सबसे अच्छी मिक़दार (क़ामत) सात बालिश्त है पूछा क्या तेरा रब बड़ा या कोहे उहद? उसने जवाब दिया मेरा रब बड़ा है।

मक़ातिलया

यह फ़िरक़ा मक़ातिल बिन सुलैमान की तरफ़ मनसूब है मक़ातिल का अक़ीदा था कि अल्लाह इन्सान की शक्ल में जिस्म है उसके गोश्त भी है और ख़ून भी, सर, ज़बान, गरदन और दूसरे आज़ा व जवारेह भी हैं लेकिन उसकी कोई चीज किसी चीज़ के मुशाबेह नहीं है न कोई शय उससे मुशाबेह है।

जहमीया के अक़वाल

जहम बिन सफ़वान इस क़ौल में सबसे मुन्फ़रिद और अलग [illegible]लग है कि जो अफ़आल इन्सान से सरज़द होते हैं उनका हक़ीक़ी फ़ाएल वह नहीं है बल्कि मज[illegible] उसकी तरफ़ निसबत की जाती है जैसे मिसालन कहा जाता है कि दरख़्त लम्[illegible]या, खजूर [illegible]क गई यह सब बतौरे मजाज़ है। यह अल्लाह को शय कहने का म[illegible]किर और अल्लाह के [illegible]म के हादिस होने का क़ाएल था उसका अक़ीदा [illegible] कि चीज़[illegible] पैदा[illegible]श से पहले [illegible]नका इल्म अल्लाह के लिए महाल है, वह जन्नत [illegible]र दोज़[illegible] दोनों को फ़[illegible] कहत[illegible] था, अल्ल[illegible] तआला के सिफ़ात के वजूद की नफ़ी करत है ज[illegible] के मसलक के लोग ज[illegible]मी श[illegible]के हैं। मर्व में भी इसके हम ख़्याल लोग पाए जाते है[illegible] नफ़ी सि[illegible] पर उ[illegible] एक किता[illegible] लि[illegible] है उसको मुस्लिम बिन अहूर मारवानी ने क़त्ल [illegible] दि[illegible]।

ज़[illegible]रिया के अक़वाल

ज़रारिया फ़िरके का [illegible]रार बिन अम्र से निसबत है। ज़रार उस अम्र का क़ाएल था कि अजसाम मजमूआ एराज़ का नाम है अजसाम का एराज़ बिन जाना उसके नज़दीक जाएज़ था। इस तरह जौहर अर्ज़ में उनके नज़दीक कोई फ़र्क़ नहीं हुआ ज़रार का अक़ीदा था कि क़ुदरत क़ादिर का जुज़ है और यह फ़ेअ़ल के सुदूर से पहले होती है हज़रत इब्ने मसऊद और हज़रत अबी बिन कअब की किरअतों का मुनकिर था।

नज्जारिया के अक़वाल

नज्जारिया फ़िरक़ा हुसैन बिन मोहम्मद नज्जार की तरफ़ मनसूब है नज्जार बन्दों के फ़ेअ़ल का हक़ीक़ी फ़ाएल अल्लाह को भी क़रार देता है और बन्दों को भी और इरादा इलाही के सिवा मोतज़िला की तरह बाक़ी तमाम सिफ़ाते इलाहिया की नफ़ी करता है चुनांचे उसने साबित किया है कि अल्लाह तआला अपने लिए क़दीम इरादा करने वाला है वह ख़लक़े कुरआन का क़ाएल

था और कहता था कि अल्लाह तआला के साहबे इरादा होने के लिए मानी हैं अल्लाह का मजबूर व मग़लूब न होना। इसी तरह अल्लाह के मुतकल्लिम होने के मानी हैं कलाम करने से आजिज़ न होना। इसी तरह अल्लाह के जव्वाद और सख़ी होने के मानी हैं बख़ील न होना। नज्जार का मसलक इब्ने औन और युसूफ राज़ी के मसलक को मुताबिक़ है उसके पैरू ज़्यादा तर काशान में आबाद हैं।

कुलाबिया के अक़वाल

कुलाबिया फ़िरक़ा अबू अब्दुल्लाह बिन कुलाब की तरफ मनसूब है उस का अक़ीदा था कि अल्लाह की सिफ़ात न क़दीम हैं न हादिस, न ऐने ज़ात हैं न ग़ैरे ज़ात, आयत अर्रहमान अलल अर्शिस्तवा में इस्तवा होने के मानी हैं कज न होना, अल्लाह तआला जिस हाल पर पहले था उसी पर हमेशा से है। अल्लाह तआला की कोई मख़सूस जगह नहीं उस का क़ौल था कि कुरआन के हुरूफ नहीं हैं।

सालमिया फ़िरक़े के अक़वाल

फ़िरक़ा सालमिया इब्ने सालिम की तरफ़ मनसूब है [illegible] बहुत से अक़वाल में से एक क़ौल यह भी है कि क़यामत के रोज़ अल्लाह तआला मोहम्मदी [illegible] की शक्ल में देखा जाएगा, जिन्न व इन्स, मलाएका और हैवान हर एक के सामने उसी की हैसियत [illegible] अल्लाह नमूदार होगा, अल्लाह की किताब में उ[illegible] तकज़ीब [illegible]द है: अल्लाह की तरह कोई चीज़ नहीं है, वही सुनने वाला और देखने वाला है।

इस फ़िरक़ा का एक क़ौल यह यह [illegible] है कि अ[illegible]आला की हस्ती एक राज़ सरबस्ता है अगर वह उसको ज़ाहिर कर दे तो निज़ामे आलम दरहम व [illegible]हम हो जाए और अंबिया का भी एक राज़ सरबस्ता [illegible]र इसका इज़हार हो जाए तो नबूव्वत तबाह हो जाए और उलमा का भी एक राज़ है अगर वह खुल जाए तो इल्म ज़ाया हो जाए मगर यह क़ौल ग़लत है, अल्लाह तआला हकीम है उसका [illegible] नाक़ाबिले ज़वाल है, तबाही और बर्बादी उसकी तरफ़ रुख़ भी नहीं कर सकती। अगर इस गरोह के इस क़ौल को सच मान लिया जाए तो हिकमते इलाही बे सूद और बातिल क़रार देने तक पहुंचा देती है और हिकमते इलाही को बातिल क़रार देना कुफ़्र है, इस फ़िरक़ा का यह भी क़ौल है कि क़यामत के दिन काफ़िर अल्लाह तआला का दीदार करेंगे और अल्लाह तआला उनका हिसाब किताब लेगा।

उनका क़ौल है कि दूसरी मर्तबा इब्लीस ने आदम को सजदा कर लिया था, कुरआन मजीद में उनके इस क़ौल की तकज़ीब मौजूद है, अल्लाह तआला फ़रमाता है: इब्लीस ने इन्कार किया और तकब्बुर किया और वह काफ़िरों में से था। दूसरी आयत में है: सिवाए इब्लीस के कि वह सजदा करने वालों में से न था।

उस फ़िरक़ा का यह क़ौल भी है कि इब्लीस जन्नत में दाख़िल नहीं हुआ, इस बात की तकज़ीब भी कुरआन हकीम में मौजूद है, अल्लाह तआला का इरशाद है: जन्नत से निकल जा बे शुबहा तू मरदूद है।

उस फ़िरक़ा का यह क़ौल भी है कि जिब्रील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए थे मगर अपनी असल जगह से हटे भी नहीं थे यह लोग इसके क़ाएल हैं कि जब अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम फ़रमाया तो हज़रत मूसा में कुछ गुरूर (खुदनग्ही) पैदा हो गया। अल्लाह ने वही भेजी कि मूसा! तुम खुद पसंद हो गए हो, आंखें उठा कर तो देखो, मूसा ने नज़र उठा कर देखा तो सामने सौ तूर नज़र आए और हर तूर पर एक मूसा मौजूद था, असहाबे हदीस और अहले रिवायत के नज़दीक उनका यह क़ौल बिल्कुल लग्व, ग़लत और बातिल है, अल्लाह के रसूल पर दरोग़ बन्दी करने वाले के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वईद के तौर पर फ़रमाया था कि जिसने मुझ पर क़सदन झूट लगाया उसको अपना ठिकाना दोज़ख़ में लेना चाहिए।

उन का यह क़ौल भी था कि अल्लाह बन्दों से ताअत का इरादा करता है मासियत व गुनाह का इरादा नहीं करता बल्कि उनकी नाफ़रमानियां उन ही के साथ रखना चाहता है, यह सब खुराफ़ात है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: अल्लाह जिस के फ़ितना यानी कुफ्र का इरादा करे तो अल्लाह से तुम उसको बिल्कुल नहीं बचा सकते और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह कुफ़्र न करत, अगर अल्लाह चाहता तो वह न लड़ते।

उनका एक ख़्याल यह भी है कि नबूव्वत से क़ब्ल और हज़रत जिब्रील के आने से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुरआन पाक याद था, इस क़ौल की तकज़ीब भी कुरआन में मौजूद है, अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ रसूल तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या है और न ईमान से वाकिफ़ थे, इससे पहले न तुम कोई किताब पढ़ते थे न अपने हाथ से लिखते थे।

यह फ़िरक़ा इस बात का भी क़ाएल है कि अल्लाह हर क़ारी की ज़बान पढ़ता है जब यह लोग किसी क़ारी की ज़बान से कुरआन सुनते थे यह क़ौल हुलूल के अक़ीदा तक पहुंचा देता है और इससे लाज़िम आता है कि अल्लाह कभी कुरआन पढ़ता और ग़लत तलफ़्फ़ुज़ करता है क्योंकि कभी कभी क़ारी से ऐसा हो जाता है। उनका एक क़ौल यह भी है कि अल्लाह हर जगह है, अर्श वग़ैरह की तख़्सीस नहीं। कुरआन पाक में उनके इस क़ौल की भी तकजीब मौजूद है।

अल्लाह तआला का इरशाद है: खुदा ने अर्श पर क़रार पकड़ा।

अल्लाह तआला ने अर्श पर मुस्तवी होना फ़रमाया है, ज़मीन पर, पहाड़ों पर या हामिला औरतों के पेटों पर मुस्तवी होना नहीं फ़रमाया।

अक़ाइद और उसूल के बारे में यह आख़री बयान है जो इशारा व इख़्तेसार के साथ पेश किया गया। दर हक़ीक़त हमने गुमराह फ़िरक़ों के मज़ाहिब मुख़्तलफ़ा के हर मज़हब के अबताल की तरफ़ इशारा नहीं किया महज़ इस ख़ौफ़ से कि किताब ज़ख़ीम न हो जाए। बस मैं ने उनके चन्द अक़वाल का ज़िक्र ही कर दिया ताकि उनकी शिनाख़्त हो जाए। अल्लाह तआला हम को और तुम सब को इन मज़ाहिबे (बातेला) और उनके मोतक़ेदीन के शर से बचाए और हमें इस्लाम और सुन्नत पर और फ़िरक़ा नाजिया में अपनी रज़ा से मौत अता फ़रमाए (आमीन)

बाब 10

मवाएज़ कुरआन व हदीस के बयान में

चन्द मजालिस

पहली मज़लिस

तर्जमा: तो जब तुम कुरआन पढ़ो तो अल्लाह की पनाह चाहो मरदूद शैतान से, की तशरीह।

यह सूरह नहल की एक आयत है, सूरह नहल मक्की है और सूरह नहल की सिर्फ़ तीन आख़री आयतों का नुज़ूल मदीना में हुआ इस की कुल आयात 128 हैं और कुल अल्फ़ाज़ एक हज़ार आठ सौ इक्तालिस और कुल हुरूफ़ 7709 (सात हज़ार सात सौ नौ) हैं इस सूरह की शाने नुज़ूल अहले तफ़सीर ने यह बयान की है कि एक बार मक्का मोअज़्ज़मा में रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़े फ़ज्र में सूरत अन्नज्म और वल्लैल इज़ा यग़शा तिलावत फ़रमाई और दोनों सूरतों की क़िरात बुलन्द आवाज़ से फ़रमाई। सूरत अन्नज्म में जब आप आयत तर्जमा: भला आप ने लात व उज़्ज़ा और तीसरे मनात को देखा, पर पहुंचे तो आप को उंघ आ गई और शैतान ने आप की क़िरात में हम आवाज़ हो कर यह अल्फ़ाज़ मिला दिए, तर्जमा: यह आली क़द्र बुत हैं जिन की शफ़ाअत की उम्मीद है, मुशरिक यह सुन कर बहुत खुश हुए वह तो बुतों की शफ़ाअत साबित ही करते थे और कहते थे यह अल्लाह के पास हमारे शफ़ीअ हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने उनके क़ौल को नक़ल फ़रमाया

हम तो उनकी परस्तिश सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह के क़रीब पहुंचा दें।

मुशरिकीन कहा करते थे कि बुत एक पाक अजसाम हैं उनके लिए कोई गुनाह नहीं है बस यह बादशाहों और मलाइका के मुक़ाबला में इबादत के लिए ज़्यादा मौज़ूं और बेहतरीन हैं इस लिए कि उनके लिए गुनाह का इमकान है और वह ज़ी रूह हैं। उन्होंने बुतों को ग़रानीक़ से तशबीह दी है, ग़रनीक़ या ग़रनूक़ की जमअ हैं ग़रनूक़ नर परिन्दे को कहते हैं, बुलन्दीए मरतबा के बाइस कुफ़्फ़ार बुतों को ग़रानीक़ कहा करते थे। इस वजह से भी कि नर परिन्दा ज़्यादा ऊंचा उड़ता है। बाज़ का क़ौल है कि ग़रनूक़ एक सफ़ेद आबी रंग का परिन्दा होता है बाज़ लोग इसको नरगिस या कलिंग कहते हैं। गुदाज़ बदन वाले जवान आदमी को भी ग़रनूक़ कहा जाता है। हज़रत अली से मरवी हदीस इस मफ़हूम को वाज़ेह करती है कि आप ने फ़रमाया कि मैं कुरैश के एक ग़रनूक़ (गुदाज़ जिस्म के नौजवान) को देख रहा हूं कि वह कुरैश को अपने ख़ून में लथेड़ रहा है और मक़ातिल का क़ौल है कि ग़रनूक़ से मुराद फ़रिश्ते हैं। काफ़िरों का एक गरोह मलाइका की परस्तिश करता और वह मलाइका का अपना शफ़ीअ समझता था। ग़रज़ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब सूरत अन्नज्म ख़त्म की तो सजदा किया उस वक़्त वहां जो मुसलमान या मुशरिक मौजूद थे सब ने सजदा किया सिर्फ़ वलीद बिन मुग़ीरा ने सजदा नहीं किया वलीद एक बूढ़ा शख़्स था उसने एक मुट्ठी मिट्टी उठाई और अपनी पेशानी पर लगाकर

सजदा कर लिया और कहने लगा क्या हम इस तरह झुक जाएं जिस तरह उम्मे ऐमन और उसके साथी वाली औरतें झुकती हैं ऐमन रसूलुल्लाह के ख़ादिम थे जो यौमे हुनैन में शहीद हो गए।

मज़कूरा दोनों जुमले हर काफ़िर के दिल मे घर कर गए हालांकि यह शैतान की मुकफ़्फ़ा इबारत थी और उसी का उठाया हुआ फ़ितना था उसी ने उन जुमलों को रसूलुल्लाह की क़िरअत में शामिल कर दिया था। सब लोगों के सजदा करने पर फ़रीक़ैन (मुसलमानों और मुशरिकों) को ताज्जुब हुआ मुसलामनों को तो इस वजह से कि बग़ैर ईमान व ईक़ान के मुशरिकों ने सजदा किया और रसूलुल्लाह की पैरवी की और मुशरेकीन इस वजह से खुशी हुई कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने और अपनी क़ौम के अव्वल मज़हब की तरफ़ वापस आ गये। उन्होंने अपने माबूदों की ताज़ीम के लिए सजदा किया था। शैतान की शैतीनियत से यह दोनों जुम्ले लोगों में ख़ूब फैल गए यहां तक की हब्श में भी इनकी ख़बर जा पहुंची। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह बात बड़ी शाक़ गुज़री। शाम को जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और कहने लगे मैं इन दोनों जुमलों से अल्लाह की पनाह मांगता हूं, मेरे रब ने यह दोनों कलमे नहीं उतारे न मुझे इनके पहुंचाने का हुक्म दिया। हुज़ूर पर जब यह बात वाज़ेह हुई तो आप को बहुत रंज हुआ और फ़रमाया क्या मैंने शैतान का कहा माना और उसका कलाम अपनी ज़बान से अदा किया और शैतान के कलाम को अल्लाह के कलाम के साथ मिला दिया। इसके बाद अल्लाह तआला ने इन शैतानी इलक़ा करदा जुमलों को अन्नज्म से अलग कर दिया और रसूलुल्लाह पर आप की तमानियते ख़ातिर के लिए यह आयत उतारी।

हम ने आप से पहले जो रसूल और नबी भी भेजा तो जब उसने अल्लाह का कलाम पढ़ा तो शैतान ने उसकी क़िरअत में ज़रूर ही दख़ल अंदाज़ी की पस जो कुछ शैतान डालता है खुदा उसको दूर कर देता है और वह अपनी आयात को मुस्तहकम करता है, खुदा दाना और हकीम है

जब अल्लाह तआला ने शैतान की मुसज्जा इबारत और उसके फ़ितने से अपने नबी को बरी कर दिया तो मुशरिक फिर उसी गुमराही और अदावत पर लौट आए इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह से पनाह तलब करने का हुक्म दिया गया और यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

जब कुरआन पढ़ो तो फटकारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो।

हज़रत इब्ने अब्बास का इरशाद है कि इस आयत का मतलब यह है जब कुरआन पढने का इरादा करो तो तऊज़ पढ़ो **अऊज़ोबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम**। रजीम के मानी रान्दा, फटकारा हुआ और मरदूद हैं।

इब्ने अब्बास फ़रमाते है कि इबलीसे लईन के लिए अऊज़ोबिल्लाह पढ़ने से ज़्यादा सख़्त चीज़ और कोई नही है।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है

जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए हैं और उस पर भरोसा रखते हैं शैतान का उन पर क़ाबू नहीं चल सकता (कि वह उनको सीधे रास्ते से भटका सके) शैतान का क़ाबू तो सिर्फ़ उन लोगों पर होता है जो उससे दोस्ती रखते हैं (उसकी पैरवी करते हैं) पस वह उनको उनके दीन से बहका देता है और शैतान का तसल्लुत उन लोगों पर होता है जो अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक करते हैं

अऊज़् की तशरीह

अऊज़ के मानी हैं मैं पनाह चाहता हूं, पनाह लेता हूं, रूजूअ करता हूं। मआज़ पनाह की जगह अऊज़ और अयाज़ मसदर है। आज़ा बेही (सीग़ा माज़ी) बमानी उसने उसकी पनाह ली, यअऊज़ोबेही (सीग़ा मजारेअ) वह उसकी पनाह लेता है, मआज़ अल्लाह मैं अल्लाह की पनाह लेता हूं हाज़ा अऊजुन ली मिम्मा अख़ाफ़ा के मानी हैं जिस चीज़ का मुझे ख़ौफ़ है उससे मेरे लिए यह पनाह है, या मुझे पनाह देने वाला है, इस तरह गोया बन्दा अल्लाह की पनाह लेता है ताकि वह अल्लाह की पनाह में शैतान के शर से महफ़ूज़ रहे वत्ताअव्वुज़ू बिल कुरआन के मानी हैं कुरआन के ज़रिये शिफ़ा हासिल करना, इस्तेआज़ा के मानी बाज़ लोगों ने बचाव एख़्तेयार करने के लिये हैं, अल्लाह तआला ने हज़रत मरियम की वालिदा के क़ौल को इस तरह नक़्ल फ़रमाया है

मैं उसको यानी मरियम को और उसकी नस्ल को शैतान मरदूद से तेरी हिफ़ाज़त में देती हूं।

शैतान की लफ़्ज़ी तशरीह

शैतान शतनुन से बना है शतनुन के मानी हैं रस्सी मुतहर्रिक व दराज़, और दूर होना, शैतान चूंकि ख़ैर से दूर है और शर के अन्दर तवील व मुतहर्रिक है। इन्सान को शैतान कहने से मुराद है कि उससे शैतान की तरह अफ़आल का सुदूर हो। हर बुरी चीज़ शैतान से मुशाबेह है। अरब का एक मुंहावरा है क अन्ना वज्हहु वज्हुश्शैतान (इसका चेहरा शैतान के चेहरे की तरह है) व काना रा सोहु रासुश्शैतान, और उसका सर शैतान के सर की मानिन्द था।

अल्लाह तआला का इरशाद है: उस दरख़्त की शाख़ें शैतानों के सरों की मानिन्द हैं।

इस आयत में शयातीन की यही उरफ़ी मानी हैं। बाज़ हज़रात का ख़्याल है कि शयातीन बड़े बदसूरत सांप होते हैं, शयातीने अयाल यानी घोड़े की गरदन के बालों को भी कहते हैं। यह भी कहा गया है कि शैतान एक मशहूर घास का नाम है। रजीम बमानी मरजूम (फटकारा हुआ) जिस पर अल्लाह की लानत की मार है। अल्लाह ने उसको नाफ़रमानी और हज़रत आदम को सजदा न करने की वजह से अपनी बारगाह से लानत के साथ दूर कर दिया है उसे फ़रिश्तों ने नेज़ों से हांका और आसमान से ज़मीन की तरफ़ फेंका फिर उस पर सितारों के शरारों की भी मार पड़ती रहेगी और उसी के साथ साथ फिटकार भी।

शैतान की हक़ीक़त

शैतान अल्लाह तआला से दूर है और हर भलाई से दूर है वह जन्नत से दूर और दोज़ख़ से बहुत क़रीब है अल्लाह तआला ने नबी मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मते मुकर्रमा को शैतान से पनाह मांगने का हुक्म दिया ताकि दोज़ख़ से दूर और जन्नत से नज़दीक हो जाएं और जज़ा व सज़ा के मालिक के चेहरे की तरफ़ देख सकें गोया कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल इरशाद फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दे शैतान मुझ से दूर है और तू मुझ से क़रीब है लिहाज़ा हर हाल में हुस्ने अदब को मलहूज़ रख यहां तक कि तुझ पर शैतान का दांव न चले और किसी बहाने वह तुझ पर क़ाबू न पा सके।

हुस्ने अदब अहकामे खुदावन्दी को बजा लाना, ममनूआत से बचना, अपनी जान व माल औलाद और तमाम मख़लूक़ में हत्तल मक़दूर खुदावन्द तआला की रज़ा को मलहूज़ रखना है।

अगर बन्दा इन चीज़ों पर पाबन्दी के साथ अमल पैरा हो और उन पर हमेशा गामज़न रहे तो उसको नजात हासिल हो जाती है। शयातीन के फ़ितनों और वसवसों, नफ़्स के ख़तरों और दग़दग़ों, क़ब्र के फ़िशार व अज़ाब, क़यामत की शिद्दत और हौल, दोज़ख़ के अज़ाब और उसके कुर्ब से नजात हासिल होगी। ऐसा बन्दा अल्लाह तआला के कुर्ब में जन्नतुल मावा के अन्दर पैग़म्बरों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेहीन के साथ होगा जो निहायत उम्दा रफ़ीक़ और साथी हैं। ऐसा बन्दा हर हाल में हमेशा अल्लाह तआला की नेमतों से बहरायाब होता रहेगा।

अल्लाह तआला का इरशाद है: मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा क़ाबू नहीं चल सकेगा।

जब बन्दे पर अल्लाह की बन्दगी और ऊबूदियत का निशान हो ज़ईफ़ और रज़ील कम तर शैतान को उस पर ग़लबा का मौक़ा नहीं मिलेगा, न जलवत न ख़लवत में, न ख़्यालात पर न दिल पर, न ख़्वाहिशात पर, न आसाब पर शैतान का असर क़ाइम हो सकेगा। बल्कि बन्दा उस वक़्त इस क़िस्म की आवाज सुनेगा कि "इसी तरह हमने उन लोगों के साथ किया जिन्होंने ख़्वाहिशात को छोड़ा और हक़ की पैरवी की और हिदायत पाई" ऐसे शख़्स के हक़ में फ़रिश्ते बाहम झगड़ते हैं और आलमे मलकुत में उसको इज़्ज़त के नाम के साथ पुकारते हैं अल्लाह तआला मुसतवीए अर्श होने की सूरत में अपने कलामे क़दीम के साथ जो शैतान की मिलावट और बातिल की आमेजिश से क़ारी की क़िरअत के वक़्त महफ़ूज़ कर दिया गया अपने उस बन्दा पर फ़ख़्र फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया है।

ऐसा इस लिए है कि हम इस बन्दे से बुराई और बेहयाई का रफ़ा फ़रमा दें बिला शुबा वह हमारे मुन्तख़ब बन्दों में से है।

इस की वजह सिर्फ़ यह है कि वह बन्दा ज़ाहिर व बातिन में ख़ुदा से डरा और शैतान मरदूद से भागा और उसकी पुकार बचा चुनांचे यह डर जो अल्लाह की तरफ़ से आ चुका है।

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम भी उससे दुश्मनी रखो। शैतान ने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया क्या तुम नहीं समझते।

ग़रज़ शैतान की पैरवी हर बद बख़्ती और मुसीबत की असल है और शैतान की मुख़ालफ़त में ख़ुश नसीबी, आराम, राहत हिदायत और ला ज़वाल जन्नत का (हुसूल) है।

तऊज़ के फ़ायदे

अऊज़ोबिल्लाह पढ़ने से पांच फ़ायदे बन्दे को हासिल होते हैं। अव्वल दीन व हिदायत पर इस्तेक़ामत, दोम शैतान मरदूद के शर और फ़साद से बचाव, सोम अल्लाह की पनाह के मज़बूत क़िला और क़ुर्ब के मक़ाम पर दाख़िला, चहारुम पैग़म्बरों, सिद्दिक़ीन, शोहदा और सालेहीन के साथ मक़ामे अमन तक रसाई, पन्जुम मालिके ज़मीन व आसमान की इमदाद का हुसूल।

बाज़ कुतुबे साबिक़ा में आया है कि जब शैताने लईन व मरदूद ने अल्लाह से कहा कि मैं तेरे बन्दों के आगे पीछे और दायें बायें से आऊंगा तो अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे अपनी इज़्ज़त व अज़मत की क़सम उनको मैं हुक्म दूंगा कि वह तेरे इग़वा से बचने के लिए मेरी पनाह में आने की दरख़्वास्त करें जब वह मुझ से यह दरख़्वास्त करेंगे तो मैं अपनी हिदायत के ज़रिये दायें जानिब से और अपनी इनायत के ज़रिये बाईं तरफ़ से, अपनी निगहदाश्त के ज़रिये उन की पुश्त से और अपनी इआनत के ज़रिये उनके सामने से उनकी हिफ़ाज़त करूंगा। ऐ

मलऊन तेरा बहकाना उनको नुक़सान न पहुंचा सकेगा। बाज अहादीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो बन्दा एक मरतबा अल्लाह की पनाह मांगता है तो अल्लाह तआला दिन भर उस की हिफ़ाज़त फ़रमाता है। हुज़ूर का यह भी इरशाद है कि अल्लाह की पनाह तलब करके गुनाहों के दरवाज़ों को मुक़फ़्फ़ल कर दो और बिस्मिल्लाह पढ़ कर ताअत व बन्दगी के दरवाज़ों को खोल दो। रिवायत है कि मोमिन को गुमराह करने के लिए इब्लीस (लईन) रोज़ाना 360 लश्कर भेजता है जब मोमिन अल्लाह की पनाह मांगता है तो अल्लाह तआला उसके दिल की तरफ़ तीन सौ साठ मरतबा नज़र फ़रमाता है और हर मरतबा फ़रमाने से शैतान का एक लश्कर तबाह हो जाता है।

शैतान किन चीज़ों से डरता है

वह चीज़ जिससे शैतान डरता और भागता है वह या तो इस्तआज़ा (अल्लाह की पनाह तलब करना) है या आरिफ़ों के दिलों की नूरे मारफ़त की शुआ है, अगर तुम आरिफ़ों में से नहीं हो तो तुम पर मुत्तक़ियों का इस्तअज़ा लाज़िम है यहां तक कि तुम आरिफ़ों के दर्जा तक पहुंचो, जब तुम आरिफ़ों में से हो जाओगे तो तुम्हारे दिल की नूरानी शुआ शैतान की शौकत को तोड़ डालेगी और उसके शर को नीस्त कर देगी और उसके असरात फ़ना हो जायेंगे और तुम्हारी ज़ात के अन्दर उसका जो लश्कर कारफ़रमाई के लिए मौजूद है उसके पांव उखड़ जाएंगे और फिर बस औक़ात ऐसा होगा कि तुम अपने भाईयों और अपने पैरूओं के लिए निगहबान बन जाओगे जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़ के बारे में इरशाद फ़रमाया कि ऐ उमर! शैतान तुम्हारे साया से भागता है। आप ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि जिस वादी से उमर गुज़रते हैं शैतान उस वादी को छोड़ कर दूसरी वादी में चलता है। एक ज़ईफ़ रिवायत में यह भी आया है कि उमर को देख कर शैतान बदहवास हो जाता है।

शैतान जब किसी बन्दे में अपनी अदावत और मुख़ालफ़त की तसदीक़ कर लेता है और बन्दे की सच्चाई उस पर ज़ाहिर हो जाती है तो वह उससे मायूस हो कर उसको छोड़ देता है और दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होता है लेकिन पोशीदा तौर पर छिपता छिपता आता रहता है लिहाज़ा बन्दे को चाहिए कि सिदक़ पर सख़्ती से क़ाएम और शैतान के वार से होशियार रहे इसलिए कि उसका सुराख़ बारीक है और उसकी दुश्मनी पुरानी और हक़ीक़ी है, वह गोश्त पोस्त में ख़ून की तरह रवां दवां रहता है। हज़रत अबू हुरैरा के बारे में रिवायत है कि वह किब्र सिनी में दुआ मांगा करते थे कि इलाही मैं तेरी पनाह मांगता हूं उससे कि मैं ज़िना करूं या किसी को क़त्ल करूं, किसी ने उनसे दरयाफ़्त किया कि आप को यह ख़ौफ़ क्या है? आप ने फ़रमाया क्यों न ख़ौफ़ करूं जबकि शैतान ज़िन्दा है।

शैतान से बचने की तदाबीर

जिन कलेमात के साथ शैतान से जंग करने और उसको दूर करने पर इस्तेक़ामत हासिल होती है वह कलेमा इख़्लास और रब्बुल इज़्ज़त का ज़िक्र करना है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशादे रब्बानी को नक़्ल करते हुए फ़रमाया: ला इलाहा इल्लल्लाह मेरा क़िला है जो शख़्स यह कलेमा कहेगा मेरे क़िला में दाख़िल हो जाएगा जो मेरे उस क़िला में दाख़िल हो जाएगा वह मेरे हर अज़ाब से महफ़ूज़ हो जाएगा।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने पूरे इख़्लास के साथ ला इलाहा इल्लल्लाह कहा वह जन्नत में दाख़िल हो गया। शैतान अज़ाब का वसीला है, बन्दा जब कलेमए तौहीद पढ़ता है और कलमए तौहीद के तक़ाज़े यानी वाजिबात के अदा करने और ममनूआत के तर्क का लिबास पहन लेता है और शैतान यह लिबास उसको पहने देखता है तो उससे दूर भाग जाता है और उसके पास आने की जुरअत नहीं करता जिस तरह जंग में सिपाही सपर के ज़रिये दुश्मन के असलहा से महफ़ूज़ हो जाते हैं उसी तरह बन्दा शैतान के फ़ितने से बच जाता है (गोया यह चीज़ें उसके लिए सपर बन जाती हैं)

बिस्मिल्लाह का ज़िक्र भी बकस्रत करना चाहिए, रिवायत में आया है कि अंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुना कि एक कह रहा था कि "शैतान हलाक हो" आप ने फ़रमाया ऐसा न कहो क्योंकि इस तरह शैतान अपने आप को बड़ा समझने लगता है और कहता है मुझे अपनी इज़्ज़त की कसम! मैं ने तुझ पर ग़लबा पा लिया बल्कि इसके बजाए तुम बिस्मिल्लाह कहो क्योंकि उससे शैतान छोटा बनता है यहां तक कि वह एक च्यूंटी के बराबर बन जाता है।

शैतान से मुक़ाबला करने की एक अहम सूरत यह भी है कि अल्लाह के फ़ज़्ल के अलावा दुनिया वालों से किसी क़िस्म की तमअ़ न रखे न दुनिया वालों की मदद की न उनके माल की न उनकी तारीफ़ की न उनके जत्थे और गरोह की न उनके तुहफ़ा व हदिया की, क्योंकि दुनिया और दुनिया वाले सब शैतान की फ़ौज और उसका जत्था है। दुनिया में आदमी अपने माल के साथ और बादशाह अपने लशकर के साथ होता है लिहाज़ा बन्दे पर लाज़िम है कि हर एक से उम्मीद मुनक़तअ़ कर ले, अल्लाह पर तवक्कुल और भरोसा कर के हर एक से बे नियाज़ हो जाए। अपने तमाम मामलात और तमाम हालात में सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ रूजू करे, हराम और हराम के शुबा से भी गुरेज़ करे, मख़्लूक़ का एहसान न ले, मुबाह और हलाल चीज़ों के इस्तेमाल में भी कमी कर दे, ख़्वाहिशे नफ़्स और हिर्स के साथ खाना न खाए और उस लकड़हारे की तरह कमाई न करे जो बग़ैर देखे भाले और तमीज़ के रात के अंधेरे में लकड़ियां जमा किया करता था (तर व ख़ुश्क का उसे तमीज़ न था) जो शख़्स इसकी परवाह नहीं करता कि उसका खाना कहां से आता है (हलाल ज़रिये से या हराम से) तो अल्लाह तआला भी परवा नहीं करता कि उसको दोज़ख़ के कौन से दरवाज़े से दाख़िल करे, लिहाज़ा बन्दे को चाहिए कि इन तमाम बातों का ख़्याल रखे और इस तरह कारबन्द हो कि शैतान उससे ना उम्मीद हो जाए और अल्लाह तआला की रहमत और करम से वह महफ़ूज़ हो जाए। अगर बन्दे ने इन बातों पर अमल नहीं किया तो शैतान उसके दिल और सीने पर सवार होगा। अल्लाह तआला का इरशाद है।

जो शख़्स रहमान के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाता है हम उस पर शैतान को मुसल्लत कर देते हैं पस शैतान उसका साथी बन जाता है, कभी नमाज़ में वसवसा डालता है कभी ऐसी बातिल नफ़सानी ख़्वाहिशों में मुब्तला कर देता है जो हराम या मुबाह होती हैं और कभी वह बन्दे को फ़राएज़ की बजा आवरी, नेक आमाल, सुनन व वाजिबात, इबादात और ताआत के बजा लाने में रख़ना डालता है जिस के नतीजे में बन्दे को दुनिया और आख़िरत का ख़सारा उठाना पड़ता है और उसका हश्र शैतान के साथ होता है, बसा औक़ात आख़िर उम्र में उसका ईमान भी छीन लेता है जिस के बाइस वह क़यामत के दिन जहन्नम के अन्दर फ़िरऔन, हामान और क़ारून की मईयत में होगा। हम अल्लाह तआला से ईमान के छिन जाने से और ज़ाहिर व बातिन में शैतान

की पैरवी करने से पनाह मांगते हैं।

शैतान के अहवाल

मकातिल ने बरिवायत ज़हरी बवासता उमर, हज़रत आइशा से बयान किया कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम एक रात हुज़ूर की तलाश में आए, उन सहाबा में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत सलमान और अम्मार बिन यासिर शामिल थे। उन असहाब के पहुंचने पर रसूलुल्लाह बाहर तशरीफ़ लाए और हालत यह थी कि बुख़ार की वजह से आप की मुबारक पेशानी पर पसीने के क़तरात मोतियों की तरह चमक रहे थे फिर हुज़ूर ने अपनी मुबारक पेशानी पर हाथ फेर कर फ़रमाया: अल्लाह तआला मलऊन पर लानत करे आप ने तीन मरतबा फ़रमाया, इसके बाद सरे अक़दस झुका लिया, हज़रत अली मुर्तज़ा ने अर्ज़ किया मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों, इस वक़्त आप ने किस पर लानत फ़रमाई? हुज़ूर ने फ़रमाया ख़ुदा के दुशमन इब्लीस ख़बीस पर!! उसने अपनी दुम दुबुर में डाल कर सात अंडे निकाले और उनसे उसकी औलाद हुई फिर उनको बनी आदम के बहकाने पर उसने मामूर किया उन सात में से एक का नाम मदहश है जिस को उलमा (के वरग़लाने) पर मुक़र्रर किया गया चनान्चे वह उलमा को मुख़्तलिफ़ ख़्वाहिशात की तरफ़ ले जाता है, दूसरे का नाम हदबस है जो नमाज़ पर मुक़र्रर है नमाज़ियों को ज़िक्रे इलाही से हटा कर इधर उधर लहव व लइब में लगा देता है और उनको जमाही और औंघ में मुब्तला कर देता है। पस इस तरह नमाज़ियों में से कोई सो जाता है और जब कोई कहता है कि सो गए? तो वह कहता है नहीं मैं तो नहीं सोया! इस तरह वह नमाज़ में बग़ैर वज़ू के रह जाता है। क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ा में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है कि उनमें से कोई नमाज़ी इस हाल में निकलता है कि उसको आधी नमाज़ क्या बल्कि चौथाई नमाज़ के दसवें हिस्से का भी सवाब नहीं मिलता बल्कि ऐसी नमाज़ का गुनाह सवाब से बढ़ जाता है।

शैतान की तीसरी औलाद का नाम ज़लबनून है। बाज़ारों में मुकर्रर है वह लोगों को कम तौलने और झूट बोलने पर उकसाता है, माल बेचते वक़्त दुकानदारों को माल की झूटी तारीफ़ पर उभारता है ताकि अपना माल फ़रोख़्त कर के रोज़ी कमाए। चौथे का नाम बतर्रर है वह लोगों को गिरेबान चाक करने, मुंह नोचने और मुसीबत के वक़्त वावैला कराने पर मुक़र्रर है (लोग मुसीबत पड़ने पर हाए वावैला करते हैं) ताकी मुसीबत के अज्र व सवाब को (फ़रयाद व फ़ुग़ां करा के) ज़ाया करा दे। पांचवें का नाम मनशूत है, यह दरोग़ गोई, चुग़ुल ख़ोरी, तअ़न व तशनीअ़ करने पर मुक़र्रर है। छटे का नाम वासिम है। यह शर्मगाहों पर मुकर्रर है। चुनान्चे यह मर्द और औरत की शर्मगाहों पर फूंक मारता है ताकि वह एक दूसरे के साथ ज़िना में मुब्तला हों, सातवें का नाम अऊर है, यह चोरी पर मामूर है यह चोर से कहता है कि (माल चोरी कर) कि चोरी तेरे फ़ाक़ा को दूर कर देगी, तेरा क़र्ज़ अदा हो जाएगा और तेरे तन पोशी भी हो जाएगी बाद को तौबा कर लेना, लिहाज़ा हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह किसी हालत में भी शैतान से ग़ाफ़िल न रहे और अपने कामों में उससे बे ख़ौफ़ हो कर न बैठ जाए।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि वज़ू

पर एक शैतान मुकर्रर है जिस का नाम वलहान है तुम उससे अल्लाह की पनाह मांगो। नमाज़ की सफ़ों में मिल कर खड़े होनं की भी आप ने हिदायत फ़रमाई है ताकि शैतान बकरी के बच्चे की (हज़फ़) की तरह सफ़ों में न घुस आए।

हज़फ़ हिजाज़ की उन छोटी छोटी बकरियों को कहते हैं जिनके न दुम होती है और न कान, ऐसी बकरियां यमन के मकाम जर्श में पैदा होती हैं।

हज़रत उसमान बिन आस ने फ़रमाया कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया मेरी नमाज़ और मेरी किरअत में शैतान ख़लल डालता है, हुजूर ने इरशाद फ़रमाया, उसका नाम ख़नज़ब है जब तुम को उसका एहसास हो तो अल्लाह की पनाह मांगो (अऊज़ोबिल्लाह पढ़ो) और बाईं तरफ़ को तीन बार धुतकार दो। हज़रत उसमान ने अर्ज़ किया कि मैंने ऐसा ही किया है और अल्लाह ने उसको मझ से दूर कर दिया है।

एक मशहूर हदीस में रसूलुल्लाह का इरशाद इस तरह आया है कि तुम से हर एक के लिए एक शैतान है सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या हुजूर के लिए भी है? फ़रमाया मैं भी उसके बग़ैर नहीं मगर अल्लाह तआला ने उसके मुकाबला में मेरी मदद फ़रमाई है और मुझे उससे महफ़ूज़ व मामून कर दिया है। एक दूसरी हदीस में है कि हुजूर ने फ़रमाया तुम में से हर एक पर उसका एक जिन्न साथी मुकर्रर है अर्ज़ किया गया कि क्या हुजूर भी उसके बग़ैर नहीं हैं? हुजूर ने इरशाद फ़रमाया हां मैं भी उसके बग़ैर नहीं मगर अल्लाह ने उसके मुकाबला में मेरी मदद फ़रमाई है और वह मेरा ताबेअ हो गया है अब मुझे वह नेकी के सिवा कुछ और मशवरा नहीं देता।

मन्कूल है कि जब अल्लाह तआला ने अपनी बारगाह से इब्लीस को निकाल दिया तो उसकी शैतान बीवी को उसी की बाईं पसली से पैदा किया जिस तरह हव्वा को हज़रत आदम से पैदा किया गया था। फिर उस औरत से शैतान ने जिमाअ किया वह हामला हो गई और उसने इकत्तीस अन्डे दिये उसकी सारी नस्ल की असल यही 31 अन्डे हैं फिर उस से शैतान की तमाम जुर्रियात फैली जिस से खुश्की और समन्द्र पट गए यहां तक कि हर अन्डे से दस हज़ार नर व मादा पैदा हुए जिन्होंने पहाड़ों पर, जजीरों, वीरानों, जंगलों, दरियाओं, रेगिस्तानों, बयाबानों, चश्मों, चौराहों, हम्मामों, पाखानों, फुरजों, जंग व जिदाल के मैदानों, करना फूंकने के मैदानों, कब्रस्तानों, घरों, काठियों, बद्दुओं के ख़ेमों गरज कि जुमला जगहों को भर दिया, अल्लाह तआला फ़रमाता है!

तो क्या तुम शैतान और उसकी जुर्रियत को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालांकि वह तुम सब का दुश्मन है और ज़ालिमों के लिए कितना बड़ा बदला है।

हलाकत है उन लोगों के लिए जो शैतान और उसकी जुर्रियत की इताअत, अल्लाह की इबादत के बजाए इख़्तियार करते हैं। बिला शुबहा उन्ही के साथ यह भी दोज़ख़ में रहेंगे बशर्ते कि उन्होंने तौबा न की, नसीहत को कबूल नहीं किया अपने नफ़्स की रिहाई और ख़लासी की कोशिश न की। बुरे आमाल, बुरे रूफ़का और शैतानी लशकर को न छोड़ा पस लाज़िम है कि अल्लाह की तरफ़ रूजूअ करे और इताअते इलाही की पाबान्दी करे, उन उलमा और अहले मारफ़त की सोहबत इख़्तियार करे जो अल्लाह के हुक्म के मुवाफ़िक अमल करने वाले और अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले, उसकी रज़ा की तरफ़ राग़िब करने वाले, उसके फ़ज़्ल के उम्मीदवार और उसके कहर से डरने वाले हैं आर जिन को अल्लाह की तरफ़ का ख़ौफ़ रहता है, दुनिया से रग़बत नहीं रखते, आख़रत

के तालिब रहते हैं। जो रातों को नमाज़ों में खड़े रहने वाले, दिन को रोज़ा रखने वाले और गुज़श्ता बेकार ज़िन्दगी पर नौहा करने वाले, आइन्दा के लिए तौबतुन नसूह करने वाले, तमाम गुनाहों और ख़ताओं से तौबा करने वाले, ख़ालिके काइनात पर तवक्कुल करने वाले, शब व रोज़ के औकात में इबादत करने वाले हैं। यही वह लोग हैं जो तौक़ व सलासिले दुनियवी मसाइब और जहन्नम की आग की ख़ौफ़ से महफ़ूज़ व मामून हैं इस लिए कि उन्होंने शैतान की पैरवी से मुंह मोड़ा और ज़ाहिर व बातिन में अल्लाह के अहकाम की पैरवी की। पस जज़ा दने वाला उनके आमाल के मुताबिक उनको जज़ा और एहसान फ़रमाने वाला अल्लाह उनको सवाब अता फ़रमाएगा वैसा ही सवाब जैसा कि उसने खुद इरशाद फ़रमाया है।

पस अल्लाह तआला ने उन लोगों को उस दिन के शर से बचा लिया, ख़ुशहाल ताज़गी और सुरूर उनके सामने लाया और सब्र रखने के एवज़ उनको जन्नत और हरीर का लिबास अता फ़रमाया।

बिला शुबहा परहेज़गार लोग जन्नत में अपने कुदरत वाले बादशाह के पास सिद्क़ के मुकाम में होंगे और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता है खुसूसियत के साथ उसको दो जन्नतें मिलेंगी।

अल्लाह के जो बन्दे मुत्तक़ी होने के बाद आज़माइश में मुब्तला हो जाते हैं, उनका ज़िक्र अल्लाह तआला इस तरह फ़रमाता है:

जब कभी शैतान परहेज़गारों के दिलों में वसवसे डालता है तो उस वक़्त वह खुदा को याद करते हैं और उनको हक़ व बातिल का फ़र्क़ मालूम हो जाता है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने बताया है कि अल्लाह की याद से दिलों को जिला हासिल होती है और ज़िक्र से परदए ग़फ़लत दूर हो जाता है और बेचैनियों का तदारुक हो जाता है खुदावन्द तआल की याद परहेज़गारी की कुंजी है और तक़वा आख़िरत का दरवाज़ह है उसी तरह जैसे कि ख़्वाहिशातें दुनिया का दरवाज़ा हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है:

और जो कुछ कुरआन में है उसे याद करो ताकि तुम मत्तक़ी बन जाओ।

इस आयत में बताया गया है कि यादे इलाही से इन्सान मुत्तक़ी बन जाता है।

इन्सान के मुवक्किल

इन्सान के मोवक्कलीन

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से मरवी है कि इन्सान के दिल में हर वक़्त दो मशवरा देने वाले मौजूद रहते हैं एक वह फ़रिश्ता है जो नेकी और हक़ पर उभारता है दूसरा दुशमने शैतान है जो बुरे कामों पर उभरता है और हक़ की तकज़ीब करता है और नेकी से बाज़ रखता है। हसन बसरी फ़रमाते हैं हकीक़त में यह दो तरह के ख़्यालात होते हैं एक अल्लाह की तरफ़ से (इरादए ख़ैर) और दूसरा शैतान की तरफ़ से तकज़ीबे हक़। अल्लाह अपने उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जो इरादे के वक़्त तवक्कुफ़ करे अगर वह अल्लाह की तरफ़ से हो तो उसको अमल में लाए और शैतान की तरफ़ से हो तो उससे जिहाद करे, आयत मिन शर्रिल वसवासिल ख़न्नास की तशरीह

करते हुए मक़ातिल ने बयान किया है कि वसवसा आदमी के दिल पर फैलता है अगर इन्सान अल्लाह को याद करता है तो यह वसवसा डालने वाला ख़न्नास पीछे हट जाता है और अगर इन्सान ग़फ़लत बरतता है तो यह दिल पर छा जाता है यहां तक की आदमी के दिल को हर तरफ़ से घेर लेता है और जब इन्सान ज़िक्रे इलाही करता है तो वह उसके दिल से जुदा हो कर उससे दूर हो जाता है बल्कि उसके दिल से निकल जाता है। हज़रत इकरमा का इरशाद है कि वसवसों के मक़ाम मर्द का दिल और आंखें हैं और औरत की सिर्फ़ आंखें हैं जब वह सामने हो और अगर औरत पुश्त फेर कर जाए तो उसके सुरीनों में उसका मक़ाम है।

इलक़ाहाए क़ल्ब

दिल में छः तरह के इलक़ा होता हैं अव्वल इलक़ाए नफ़्स, दोम इलक़ाए शैतान, सोम इलक़ाए रूह, चहारुम इलक़ाए मलक, पन्जुम इलक़ाए अक़्ल, शशुम इलक़ाए यक़ीन। इलक़ाए नफ़्स, ख़्वाहिशात की तहसील, जाइज़ व नाजाइज़ रुजहानात व मैलानात के दर पै हो जाने का हुक्म देता है इलक़ाए शैतान, अक़ीदा के एतबार से कुफ़्र व शिर्क का हुक्म देता है, नीज़ वादए खुदावन्दी पर झूटे होने का बोहतान और उसके पूरा न होने की शिकायत पर उभारता है, आमाल में गुनाह करने, तौबा में ताख़ीर और दुनिया व आख़िरत को तबाह करने वाले उमूर को इख़्तियार करने का मशवरा देता है। यह दोनों इलक़ा, इलक़ाए बद हैं उनके बुरा होने का हुक्म दिया गया है और यह दोनों ख़तरे या इलक़ाए आम मुसलमानों को लाहक़ होते हैं।

इलक़ाए रूह और इलक़ाए मलक दोनों हक़ तआला की इताअत और उसका हर हुक्म बजा लाने का जिस का नतीजा दुनिया व आख़िरत में सलामती की सूरत में होता है, हुक्म देते हैं और यह हर उस चीज़ को लाते हैं जो शरीअत के मुताबिक़ होती है यह दोनों इलक़ा मामूर और क़ाबिले सताईश हैं और यह ख़्वासुल मुसलमीन में पैदा होते हैं (आम नहीं) इलक़ाए अक़्ल कभी इस बात का हुक्म देता है जो नस और शैतान के मवाफ़िक़ होती है और कभी ऐसी बात का हुक्म देता है जो इलक़ाए रूह व मलक के मवाफ़िक़ होती है यह इलक़ा अल्लाह तआला की हिकमत है और इससे तख़लीके काइनात का इस्तेहकाम वाबस्त है ताकि अक़्ल सेहत मुशाहिदा और नेक व बद की तमीज़ के साथ ख़ैर या शर का इख़्तियार करे और नतीजा में अज़ाब या सवाब उस के लिए मोजिबे ज़ियां या बाइस सूदमन्दी हों।

चूंकि जिस तरह अल्लाह तआला ने इन्सान के जिस्म को अपने अहकाम के नुज़ूल का महल और ला मुतनाही वारदातों का मरकज़ बनाया उसी तरह अक़्ल को नेक व बद की कसौटी (मेआर) बनाया है। अक़्ल भलाई बुराई को लेकर जिस्म के अन्दर दाख़िल होती है, अक़्ल और जिस्म दोनों मुकल्लफ़ होने के महल हैं, अहवाल की तबदीली का मक़ाम है और राहत की लज़्ज़त या अज़ाब अलीम की करबुत की तअय्युन के ज़राये हैं (अज़ाब की तकलीफ़ और सवाब की लज़्ज़त उसके ज़रिये से पहचानी जाती है।)

इल्क़ाए यक़ीन रूहे ईमान है, मन्ज़िल इल्म है अल्लाह तआला की तरफ़ से उसका नुज़ूल और सुदूर होता है, यह इलक़ा सिर्फ़ उन सीनों में पैदा होता है जो मर्तबाए ईक़ान पर पहुंच जाते हैं। जैसे सिद्दीक़ीन, शुहदा, अबदाल और मख़सूस औलियाए कराम। यह इलक़ा मख़्फ़ी तौर पर नाज़िल होता है और उसकी आमद बहुत अदक़ होती है मगर बरहक़ ज़रूर होती है। उसका

सुदूर इल्मे ज़दुन्नी, अख़बार बिलग़ैब और असरारिल उमूर के साथ होता है, यह मक़ाम उन बन्दों को मिलता है जो अल्लाह को महबूब व मरगूब हों, उसके मुनतख़ब हों, फ़ना फ़िल्लाह हों और अपने ज़वाहिर से भी ग़ाफ़िल हो गए हों, फ़र्ज़ और सुन्नतहाए मुअक्किदा की अदाएगी के अलावा उन की ज़ाहिरी इबादात का रूख़ बातिन की तरफ़ हो गया हो (हर वक़्त बातिनी इबादात में ग़र्क़ हों सिवाए फ़र्ज़ों और मुअक्किदा सुन्नतों की अदाएगी के) यह लोग हर वक़्त बातिनी कैफ़ियात की निगहदाश्त करते हैं और अल्लाह तआला उनकी ज़ाहिरी तरबीयत का खुद ही कफ़ील होता है जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है (कि वह इस तरह कहते हैं)

मेरा कारसाज़ तो अल्लाह है जिस ने किताब नाज़िल फ़रमाई वही नेकों का कारसाज़ है।

पस अल्लाह तआला उनका ज़िम्मदार होता है, वही उनके काम पूरे करता है वही असरारे ग़ैब के मुताले में उनके कुलूब को मशग़ूल रखता है वही अपने कुर्ब के जलवों से उनके दिलों को रौशन रखता है। उसने उन हज़रात को अपने साथ मुकालमे के लिए इन्तख़ाब कर लिया है अपनी ज़ाते पाक ख़ास तौर से उनके सुकून व तमानियत का मरजअ़ बना दिया है पस हर रोज़ उनके इल्म में अफ़ज़ूनी, मारफ़त में ज़्यादती, नूरानियत में कसरत और कुर्बे इलाही में इज़ाफ़ा होता है यह हज़रात हमेशा बाक़ी रहने वाली और कभी ख़त्म न होने वाली सेहत ग़ैर मुनक़तअ नेमत और ना मुतनाही मुसर्रत में ग़रीक़ रहते हैं फिर जब अरबी अज़ली तहरीर (मद) अपनी आख़िरी मुद्दत पर पहुंच जाती है और इस दारे फ़ना में उनके क़याम की मुद्दत इख़्तेताम का जाती पहुंचती है तो उनका इंतक़ाल बड़ा पुर शिकोह होता है जैसे एक दुल्हन हुजलए उरूसी से निकल कर सेहन में आ जाए ओर एक अदना हालत से आला में पहुंच जाए। दुनिया उनके लिए जन्नत होती है और आख़िरत में उनको आंखों की ठंडक का कैफ़ मयस्सर होगा यानी उनको अल्लाह तआला की तरफ़ देखना मयस्सर आएगा न दरबान होगा, न डर, न हाजिब होगा, न दरबान, न कोई रोकने वाला होगा, न टोकने वाला, न कोई एहसान रखने वाला होगा, न एहसान उठाया जाएगा, न दुख होगा, न तकलीफ़ और न उस लज़्ज़त का इख़्तेताम होगा और न इनक़ेतअ़। अल्लाह तआला का इरशाद है:

बेशक परहेज़गार बाग़ों और नहरों में सिद्क़ के मक़ाम में कुदरत रखने वाला बादशाह के पास होंगे।

जिन लोगों ने दुनिया में नेक काम किए अल्लाह तआला की ताअ़त व बन्दगी की तो आख़िरत में उसके एवज़ वह उनको जन्नत, इज़्ज़त की नेमत और सलामती अता फ़रमाई गई और चूंकि दुनिया में उन्हों ने अल्लाह तआला के लिए पाकी व सफ़ाई में ज़्यादती की और उसके बर ख़िलाफ़ अमल से इजतेनाब किया तो अल्लाह तआला ने उनको बक़ा व अता के घर में ज़्यादा अता फ़रमाया और वह हमेशा हमेशा रब्बे करीम की तरफ़ नज़र करता है जैसा कि अल्लाह तआला ने अरबाबे बसीरत और अहले दानिश को इसकी ख़बर दी है।

नफ़्स और रूह

नफ़्स और रूह इलक़ाए शैतान व मलक के दो मक़ामात हैं, मलक दिल में तक़वा का इलक़ा करता है और शैतान नफ़्स में बदकारी की तहरीक करता है, नफ़्स बदकारी में आज़ा को इस्तेमाल करने की दिल से ख़्वास्तगारी करता है अक़्ल और ख़्वाहिश जिस्म के अंदर नफ़्स के लिए मक़ाम

है और दोनों अपने हाकिम की रज़ा के मुताबिक़ जिस्म में अपना अमल करते हैं तौफ़ीक़े ख़ैर या तौफ़ीक़े शर। दिल में दो रौशने नूर हैं इल्म और ईमान यह सब दिल के कारिन्दे, उसके आलात हैं, इन आलात व असबाब के दर्मियान दिल बादशाह की तरह है यह सब उसके लशकरी हैं जो उसके पास आकर उतरते हैं। दिल एक रौश्न आईना की मानिन्द हैं और यह आलात उस आईना के गिर्दा गिर्द हैं जब दिल उनकी तरफ़ देखता है यह सब उसमें जलवा फ़गन होते हैं यानी आईनाए क़ल्ब उन सबका इदराक कर लेता है।

ख़ुदा की पनाह मांगना

मैं कज रौ शैतान से, बुरे ख़्यालात से, नफ़्स के ख़तरात से, हर जिन व इन्स के फ़ितना से, रिया और निफ़ाक़ से, खुद पसंदी और तकब्बुर से, शिर्क से, दिल में पैदा होने वाली बुरी ख़स्लतों से, हलाक़त की मंज़िल तक पहुंचाने वाली नफ़्स की शहवत व हर लज़्ज़त से, बिदअ़त व गुमराही से, उन ख़्वाहिशों से जो आतिशे दोज़ख़ को जिस्म पर मुसल्लत कर देने वाली हैं और उस क़ौल व फ़ेअ़ल और फ़िक्र से जो अर्श से नाज़िल होने वाले गैबी उलूम के लिए दिल की रुकावट बन जाएं, गुमराह की रग़बतों के इत्तिबा से, नफ़्सानी जज़्बात और ख़राब अख़लाक़ से, अर्श व कुर्सी के मालिक की पनाह मांगता हूं अगर मैं ताअत व बन्दगी ग़ाफ़िल हो जाऊं तो रब्बे वदूद की पनाह मांगता हूं और उसके अज़ाब से जो मेरी रग व जान से भी ज़्यादा मुझसे क़रीब है।

मैं अल्लाह की पनाह तलब करता हूं उसके उस वक़्त के क़हर से जब वह गुनाहगारों पर ग़ज़बनाक होता है मैं उसकी पनाह मांगता हूं अपने गुनाहों की परदा दरी से और खुशकी व तरी में उसकी मासीयत करने से, कज रवी और हिमाक़त से, शेख़ी और तकब्बुर से, इताअत व इबादत न करने से और इसके न करने पर क़सम खाने से, झूटी क़सम के खाने और क़समों के तोड़ने के गुनाह से, नीज़ बुरे ख़ातमा से, हर नेकी की दौलत से तही दामां होने से, मरते वक़्त बुरी मौत से।

शैतान से जिहाद करना

शैतान से जिहादे बातिनी होता है जो दिल और ईमान की ताक़त से किया जा सकता है पस तुम शैतान से जिहाद करोगे तो हक़ तआला की मदद तुम्हारे शामिले हाल होगी और अल्लाह तआला तुम्हारा मददगार होगा। काफ़िरों से जिहाद ज़ाहिरी तौर पर नेज़े और तलवार से होता है और बादशाहे दो जहां उस जिहाद में तुम्हारा मददगार होता है और उस जिहाद में तुम्हारा मरकज़े उम्मीद हुसूले जन्नत है। अगर काफ़िरों से जिहादा के दौरान तुम शहीद हो गए तो तुम्हारी जज़ा दारूल बक़ा है (बहिश्ते जाविदां है) अगर तुम शैतान से जिहाद करते हुए फ़ना हो गए और तुम्हारी तमाम उमर उसकी मुख़ालिफ़त में सर्फ़ हो जाए तो तुम्हारी जज़ा यह होगी कि तुम रब्बुल आलिमीन के दीदार से सरफ़राज़ हो गए। अगर काफ़िर तुम को मार डाले तो तुम शहीद होगे और अगर शैतान की पैरवी व इताअत की हालत में शैतान ने तुम को रान्दए दरगाहे हक़ हो जाओगे। काफ़िरों से जिहाद की तो एक हद व निहायत है लेकिन शैतान और नफ़्स से जिहाद की कोई हद व ग़ायत नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है: अपने रब की इबादत यक़ीन यानी मौत आने तक करो। शैतान और ख़्वाहिशे नफ़्स की मुख़ालफ़त का नाम इबादत है अल्लाह तआला फ़रमाता है वह और सब ... और शैतान का लश्कर सब के सब उस जहन्नम में

सर के बल डाले जाएंगे।

गज़वए तबूक से वापसी में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था: हम जिहाद असगर से जिहाद अकबर की तरफ वापस हुए। यहां जिहादे अकबर से हुजूरे वाला की मुराद शैतान और नफ़्स से जिहाद करना था क्योंकि यह जिहाद दवामी है और इसकी मुद्दत तवील है, पुर ख़तर है और इसमें नतीजा की ख़राबी का ख़तरा रहता है कि कामयाबी हो या न हो।

दूसरी मजलिस

अल्लाह तआला के इस इरशाद की तशरीह में

इन्नहु मिन सुलैमाना व इन्नहु बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(बेशक यह सुलैमान की जानिब से है और मेहरबान और [illegible]म करने वाले अल्लाह के नाम [illegible] शुरू है)

यह सूरह नमल की एक आयत है सूरह नमल म[illegible] है इसकी आयात क[illegible]तादाद 93 है, इस सूरत के अल्फ़ाज़ 1149 है और इसके हुरूफ़ की तादाद 4799 है (इस[illegible]यत [illegible] जिस वाकेअ की तरफ इशारा है वह इस तरह है कि) हज़रत सुलैमान बिन दाऊद [illegible] पर और हमारे नबी रसूलुल्लाह और तमाम अंबिया मोमिनीन, अल्लाह के [illegible]न्दों और [illegible]क़र्रबीने मलाएका पर अल्लाह की रहमत हो। बैतुल मुक़द्दस से यमन [illegible]ाते हुए वादीए गुल ([illegible]पूटी की वादी) से गुज़रे लोगों को प्यास महसूस [illegible] हज़रत सु[illegible]न अ[illegible]हिस्सलाम ने हुद हुद को तलब फ़रमाया, उस उस वक़्त आपके साथ सिर्फ़ एक ही हुद [illegible]द था [illegible]कलिंग [illegible] बुलवा कर आपने उससे हुद हुद के बारे में दरयाफ़्त किया कलिं[illegible] तमाम प[illegible]न्दो का [illegible] उसने अपनी ला इल्मी का इज़हार किया और कहा कि मैंने तो उस को को[illegible] हुक्म नहीं दिया (कि[illegible]काम पर मामूर नहीं किया है) हज़रत सुलैमान अलै[illegible]म को हुद हुद की तलाश इस लिए थी कि वह अपनी मनक़ार ज़मीन पर लगाकर (ज़मीन खो[illegible]कर) यह बता दे कि पानी ज़मीन के अन्दर कितनी दूर है और कितने फ़ासले पर है, हुदहुद उ[illegible]के लिए मख़सूस था। जब उसको पानी की तलाश का हुक्म दिया जाता है तो अव्वल [illegible] हवा में उड़ता फिर कुछ देख कर उसी ख़ित्तए ज़मीन पर टूट कर गिर जाता जहां पानी मौजूद होता और फिर वह अपनी मनक़ार पानी के मक़ाम पर रख देता (इस तरह वह पानी के मक़ाम की निशानदेही किया करता था) जिन्नात जल्दी जल्दी उस जगह को खोदते और पानी निकल आता। जिन्नात हौज़, तालाब और बाउलियां तैयार कर देते यह सब भर लिये जाते अलावा अज़ी पखालें, मशकीज़े और पानी के तमाम बरतन भर लिए जाते। इस तरह तमाम जानवर जिन्नात और इंसान पानी से खूब सैराब होते और फिर कूच हो जाता, मंज़िल की तरफ़ रवाना हो जाते। ग़रज़ हुद हुद का उस वक़्त कुछ पता न चला, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बहुत गुस्सा आया और कहा कि मैं उसको इस नाफ़रमानी की सख़्त सज़ा दूंगा उसके पर नोच डालूंगा ताकि साल भर तक परिन्दों के साथ न उड़ सके या उसको ज़िबह कर डालूंगा या वह मेरे सामने अपनी ग़ैर हाज़िरी की कोई वाज़ेह दलील (माकूल वजह) पेश करे। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का दस्तूर था कि जब किसी परिन्दे को सख़्त सज़ा दी जाती तो

उसके पर उखाड़ दिया जाते थे और उसको लुण्डवरा करके छोड़ देते थे।

अभी आप वादीए नमल में ठहरे हुए कुछ ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि सामने से हुदहुद आ गया (हुदहुद ज़्यादा देर ग़ैर हाज़िर नहीं रहा) किसी ने उसको बताया कि हज़रत सुलैमान ने तेरे लिए सज़ा का हुक्म सुनाया है कहने लगा कि कोई इस्तिसना भी इस सज़ा में किया है कहने वाले ने कहा हां।

हुदहुद हज़रत हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के सामने जाकर खड़ा हो गया और ताज़ीमन सजदा किया और बोला कि आप की सलतनत दाएम व क़ाएम रहे और अल्लाह आपको उमर अबदी अता फ़रमाए उसके बाद चोंच से ज़मीन कुरेदने लगा और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को तरफ़ इशारा करके कहा कि मैं ऐसी चीज़ मालूम करके आया हूं जिसकी आप को ख़बर नहीं है (वह आप के इहातए इल्म से बाहर है) और वह यह कि सरज़मीने सबा से मैं एक यक़ीनी ख़बर लाया हूं। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने दरयाफ़्त किया वह क्या ख़बर है? हुद हुद ने अर्ज़ किया मैंने वहां एक औरत को हुकमरान पाया जिसका नाम बिलक़ीस बिन्ते अबी सरह हुमैरी है उसको कुदरत ने हर चीज़ अता की है उसके पास इल्म है, माल है, लश्कर है और क़िस्म क़िस्म के घोड़े हैं, उसके पास एक बहुत बड़ा तख़्त है वह तख़्त बहुत ही ख़ूबसूरत है उसकी बलन्दी तीस गज़ (एक रिवायत में अस्सी गज़ भी आया है) और चौड़ाई अस्सी गज़ है तरह तरह के जवाहिर और मोती उस तख़्त में जड़े हैं लेकिन बिलक़ीस और उसकी क़ौम को अल्लाह के सिवा सूरज को सजदा करते हुए मैंने देखा है यह दीन मजूसियों और आतिश परस्तों का है, शैतान ने उनको शिर्क में डाल रखा है और राहे रास्त से उनको हटा दिया है वह इस्लाम से ना आशना हैं।

क्या वजह है कि वह अल्लाह की इबादत नहीं करते जो आसमान व ज़मीन की पोशीदा चीज़ों को ज़ाहिर करता है और लोग जिस चीज़ को छुपाते हैं वह सब से वाक़िफ़ है उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह अर्श का मालिक है।

यह हाल सुनकर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने हुद हुद से फ़रमाया कि पहले तुम पानी तलाश करो उसके बाद हम तुम्हारी बात पर ग़ौर करेंगे (कि तुम सच कहते हो या ग़लत) यह हुक्म मिलते ही हुद हुद ने पानी तलाश करके जगह बता दी सारे लश्कर ने सैराब होकर पानी पिया और सबकी ज़रूरत पूरी हो गई तब हज़रत सुलैमान ने हुद हुद को तलब किया और ख़त लिख कर उसे सर ब मोहर किया और हुद हुद को दे कर फ़रमाया इस ख़त को ले जा और अहले सबा (मलका से मुराद है) के पास पहुंचा दे। और उनके जवाब का इंतज़ार करना।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने ख़त में लिखा था बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम यह ख़त सुलैमान इब्ने दाऊद की जानिब से है। मैं तुम को जता देना चाहता हूं कि तुम मुझ पर बरतरी और बड़ाई के ख़्वास्तगार न बनो (मेरी इताअत करने में अपनी बड़ाई को रूकावट न बनाओ) और तुम सब फ़रमां बरदार बन कर यानी मसालेहत के रंग में मेरे पास आओ अगर तुम जिन्नात से हो तो तुम मेरे ख़िदमतगार हो (कि क़ौमे जिन्नात मेरी ताबेअ़ है) और अगर तुम इंसानों से हो तो तुम पर मेरे हुक्म का सुनना और उसे मानना लाज़िम है।

यह नामा सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक उस अल्लाह के नाम से शुरू है है जो मेहरबान और रहीम है कि तुम मुझ से सरकशी न करो और मुतीअ होकर (मुसलमान होकर) मेरे पास चली आओ।

हुद हुद यह ख़त लेकर दोपहर को बिलक़ीस के महल में पहुंचा बिलक़ीस अपने महल में सो

रही थी महल के तमाम दरवाजे बंद हो चुके थे कोई उसके पास नहीं पहुंच सकता था पहरे वाले महल के गिर्द पहरा दे रहे थे और उसकी क़ौम के बारह हज़ार जंगजू सवार निगरानी के लिए उसकी फ़ौज में मौजूद थे उन बारह हज़ार जंगजू सवारों में से हर एक सवार (जवान) एक लाख जवानों पर हाकिम था (औरतों और बच्चों का उनमें शुमार नहीं था) हफ़्ता में एक दिन क़ौम के मामलात और मुल्की मुहिम्मात का फ़ैसला करने के लिए बिलक़ीस बाहर निकलती थी उसका तख़्त सोने के चार पायों पर क़ायम था वह उस तख़्त पर इस तरह आकर बैठती थी कि खुद तो लोगों को देखती थी लेकिन उसको कोई नहीं देख सकता था। जब कोई शख़्स अर्ज़े मतलब के लिए उसके हुजूर में पहुंचता तो सामने पहुंच कर कुछ देर सर झुकाए खड़ा रहता और फिर सजदा करता वह सजदे से उस वक़्त तक सर नहीं उठा सकता था जब तक मलका बिलक़ीस उसको सर उठाने की इजाज़त नहीं दे देती थी। जब तमाम मामलात और मुहिम्मात का फ़ैसला हो जाता तो वह फिर अपने महल में वापस चली जाती और फिर हफ़्ता भर तक उसे कोई नहीं देख सकता था फिर दूसरे हफ़्ता को उसी सूरत में देख सकता था। बिलक़ीस का मुल्क (यमन) बहुत ही बड़ा मुल्क था।

हुद हुद जब ख़त लेकर पहुंचा तो उसने महल के दरवाज़े बंद पाए और चारों तरफ़ पहरे वाले पहरे पर मौजूद थे हुद हुद ने बिलक़ीस के पास पहुंचने के लिए महल के गिर्द चक्कर लगाए आख़िरकार वह एक कमरे से दूसरे और से तीसरे कमरे से होता हुआ एक रौशनदान के ज़रिये बिलक़ीस के कमरे में पहुंच गया बिलक़ीस तीस गज़ ऊंचे तख़्त पर चित लेटी सो रही थी और उसके जिस्म पर एक चादर के सिवा कोई और लिबास नहीं था और वह भी उसके ज़ेरे नाफ़ पड़ी थी ऊपर का जिस्म बिल्कुल बरहना था चादर सिर्फ़ सतरे औरत के लिए थी और बिलक़ीस हमेशा इसी ढंग से सोती थी, हुद हुद ने वह ख़त उस के पहलू में रख दिया खुद उड़ कर रौशनदान में जा बैठा और बिलक़ीस की बेदार होने का इंतज़ार करने लगा कि जब वह बेदार हो तो ख़त पढ़ ले लेकिन बिलक़ीस देर तक सोती रही जब उसको सोते हुए बहुत देर हो गई तो हुद हुद रौशनदान से उतर कर अपनी चोंच से बिलक़ीस को ठोंग मारी बिलक़ीस की आंख खुल गई और उसने अपने पहलू में ख़त पाया, उसने ख़त को उठाया और आंखें मलकर (अच्छी तरह बेदार होकर) उस ख़त को देखा और सोचने लगी कि महल के तमाम दरवाज़े बन्द थे यह ख़त यहां कैसे आ गया, कमरे से निकल कर महल के पहरे वालों से दरयाफ़्त किया क्या तुम ने किसी को मेरे कमरे में दाख़िल होते हुए देखा है चौकीदारों ने कहा कि दरवाज़े उसी तरह बन्द हैं जैसे बन्द किये गये थे और हम महल के इर्द गिर्द पहरा दे रहे हैं (किसी के अन्दर दाख़िल होने का इमकान ही नहीं) मलका सबा पढ़ी लिखी औरत थी उसने ख़त खोल कर पढ़ा उसमें सबसे पहले **बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** तहरीर था ख़त पढ़ कर उसने (अमाएदीन) क़ौम को तलब किया जब वह सब जमा हो गए तो उसने कहा एक इज़्ज़त वाला ख़त मुझे पहुंचाया गया है (यानी एक शाही मकतूब सर ब मोहर) मुझे मिला है। इस ख़त में तहरीर है:

यह ख़त सुलैमान की तरफ़ से है और उस अल्लाह के नाम से शुरू है जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है कि तुम मुझ से ऊंचे न बनो और मेरे पास फ़रमांबरदार बनकर आओ

मलका ने ख़त का मज़मून सुनाकर सरदरों से कहा ऐ सरदारों मुझे मेरे इस मामले में मशवरा दो। पस उसने कहा कि ऐ सरदारों मुझे मेरे मामला में मशवरा दो कि मैं क्या करूं।

मेरा तो यह हमेशा से मामूल रहा कि जब तक तुम मौजूद न हो और मशवरा में हाज़िर न हो तो मैं किसी बात का फ़ैसला नहीं किया करती हूं। सरदारों ने जवाब दिया कि हम बड़े ताक़तवर, जंगजू और बहादुर हैं। जंग, कुव्वत और कसरते अफ़राद में कोई हम पर ग़ालिब नहीं हमने किसे से शिकस्त नहीं खाई है ऐ बिलक़ीस तू हम सब सरदारों की सरदार है तू अपने मामला को ख़ूब समझती है सरदारों को नसीहत नहीं की जाती बल्कि हुक्म किया जाता है तू हम को हुक्म दे, हम तेरे हुक्म पर चलेंगे, मलका ने सरदारों का यह जवाब सुन कर कहा कि दस्तूरे आम यह है कि बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं उसे बरबाद कर देते हैं और मुअज्ज़ेज़ीन को रुसवा करते हैं, लोगों का माल छीन लेते हैं और क़त्ल व ग़ारतगरी करते हैं, क़ैदी बनाते हैं ग़रज़ कि हर तरह बरबाद करके छोड़ते हैं उसके बाद मलका सबा ने कहा कि मैं सुलैमान की जनाब में एक हदिया भेजती हूं और आज़माती हूं कि क़ासिद मेरे पास क्या जवाब लाते हैं और वहां के क्या हालात सुनाते हैं उसके बाद बिलक़ीस ने बारह ऐसे गुलाम इन्तख़ाब किए जिनमें ज़नाना पन नुमायां थे उनके हाथों पर मेहंदी लगवाई और बालों में कंघी कराई गई बनाव सिंगार किया गया और लड़कियों का लिबास पहना दिया गया मलिका ने उनको नसीहत कर दी कि जब उनसे कुछ पूछा जाए और सुलैमान उनसे कुछ गुफ़्तगू करें तो वह इस तरह जवाब दें जिस तरह औरतें जवाब देती हैं फिर मलका ने ऐसी बारह लड़कियां मुनतख़ब कीं जिनमें मरदाना अलामतें नुमायां थीं मर्दों की तरह उनके आज़ा सख़्त थे उनके सरों के बाल मर्दों की तरह बनवा कर उनको मर्दाना कपड़े पहना दिये गए और जूतियां भी पहना दीं उनको अच्छी तरह समझा दिया गया कि तुम से जब गुफ़्तगू हो तो मर्दों के लहजा में बे हिजाबाना जवाब देना। उन बान्दियों और गुलामों के साथ यलन्जूज की लकड़ी, मुश्क, अंबर और रेशम यह तमाम चीज़ें तब्बाक़ों में सजा दी गई बहुत ज़्यादा दूध वाली अरबी नस्ल की ऊंटनियां, दो ख़र मोहरे (बड़ी कौड़ियां) जिनमें एक बलदार सूराख़ वाला था और दूसरा बग़ैर सूराख़ के। एक ख़ाली प्याला इन तमाम तोहफ़ा व हदाया के साथ एक औरत को भी हज़रत सुलैमान की ख़िदमत में भेजा और उसको ताकीद कर दी कि हज़रत सुलैमान जो बात कहें उसे याद रखें और जो वाक़ेआत वहां गुज़रें उनको लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ यहां आकर बयान करे, साथ ही साथ यह भी हिदायत की कि दरबार में सब खड़े रहें जब तक बैठने की इजाज़त न मिले न बैठें अगर वह जब्बार बादशाह होंगे तो तुम को बैठने का हुक्म नहीं देंगे और फिर मैं उनको माल दे कर राज़ी कर लूंगी ताकि वह हमारी तरफ़ से ख़ामोश हो जायें (हमला न करें) और अगर बुर्दबार, साहिबे इल्म और फ़हीम होंगे तो वह तुम को बैठने का हुक्म देंगे।

मलका सबा ने उस औरत को ताकीद की कि वह हज़रत सुलैमान से कहे कि सूराख़ वाले ख़र मोहरा (बड़ी कौड़ी) में किसी जिन्न या इंसान की मदद के बग़ैर धागा पिरो दें और बग़ैर सुराख़ के ख़र मोहरे में लोहे और जिन्न व इन्स की मदद के बग़ैर सूराख़ कर दें दूसरे यह कि गुलाम और बांदियों को अलग अलग कर दें (औरतों को अलग और मर्दों को अलग कर दें) प्याला को ऐसे पानी से भर दें जो झाग वाला मीठा हो और वह पानी न ज़मीन का हो न आसमान का, इस के साथ ही और हज़ारों इल्मी सवालात पर मुश्तमिल ख़त लिख दिया अलग़रज़ यह सब लोग तोहफ़े और हदिये लेकर रवाना हुए जब यह सब लोग हज़रत सुलैमान के दरबार में पहुंचे और बिलक़ीस के मुरसला करदा तमाम तहाएफ़ पेश किए, हज़रत सुलैमान ने जब उन हदाया

को देखा तो न उनकी तरफ़ क़दम बढ़ाया और न उनको लेने के लिए हाथ बढ़ाया न उनको हक़ीर व कमतर बताया यानी न किसी ख़ुशी का इज़हार किया और न नागवारी का। क़ासिदों ने आप की तरफ़ से किसी ऐसी बात का मुशाहिदा नहीं किया जिससे उनको तोहफ़ों की क़बूलीयत या अदमे क़बूल का अंदाज़ा होता अलबत्ता आप ने अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया और क़ासिदों की तरफ़ देख कर फ़रमायाः ज़मीन भी अल्लाह की है और आसमान भी, उसने आसमान को बलंद किया और ज़मीन को बिछाया लिहाज़ा जो चाहे खड़ा रहे और जो चाहे बैठ जाए और सबके बैठने की इजाज़त दे दी।

मलका बिलक़ीस की नुमाइंदा और मीरे कारवां ख़ातून ने दोनों ख़र मोहरे हज़रत सुलैमान के हुज़ूर में पेश कर के कहा कि मलका बिलक़ीस ने इस्तेदा की है जिन्न व इन्स की तदबीर के बग़ैर सूराख़ वाले ख़र मोहरे में धागा आर पार पिरो दें और दूसरे ख़र मोहरे में लोहे और जिन्न व इन्स की मदद के बग़ैर आर पार सूराख़ कर दें। उसके बाद उसने प्याला पेश किया और कहा के मलका ने दरख़्वास्त की है कि इसको ऐसे झाग वाले मीठे पानी से भर [illegible] दें जो न ज़मीन का हो न आसमान का। इसके बाद ग़ुलामों और बांदि[illegible] को पेश कर के दरख़[illegible]स्त की कि औरतों को अलग और मर्दों को उनमें से अलग अलग फ़रमा[illegible] दें।

हज़रत सुलैमान ने आयाने मम्लिकत और उमराए [illegible]लतनत को [illegible] किय[illegible] और दोनों ख़र मोहरों में से सूराख़ वाला ख़र मोहरा लेकर फ़रमाया [illegible]स ख़र मोह[illegible] में क[illegible]न इस पार से धागा डाल कर उधर निकाल सकता है (लेकी[illegible] जिन्न व [illegible] में से को[illegible] इसको मस न करे। यह हुक्म सुन कर खजूर [illegible] रहने वाले [illegible] रं[illegible] के एक कीड़े [illegible]ने अर्ज़ [illegible]किया के ऐ सुलतान! मैं आप की यह [illegible]दमत ब[illegible]लाता हूं ब[illegible] कि [illegible]आप मेरी रोज़[illegible] रुत्ब (छुहारा, खजूर) से मुक़र्रर फ़रमा दें आप ने उसकी अर्ज़[illegible]श्त मंजूर [illegible]र ल[illegible] रावी [illegible] बयान है कि कीड़े ने सरसे धागा लपेट लिया और [illegible]र मोहरे में [illegible]ख़िल हो [illegible]या और दू[illegible] जानिब [illegible]गा लेकर निकल गया चुनांचे इस ख़िदमत के एव[illegible] आप[illegible] उस की रोज़ी रुत्ब से मुक़र्रर फ़[illegible] दी फिर उाप ने दूसरा ख़र मोहरा लिया और फ़[illegible]के कौन है जो इस में सूराख़ कर दे लेकिन लोहे की मदद के बग़ैर यह सुन कर लकड़ी के कीड़े [illegible] आगे बढ़ कर कहा कि मैं यह ख़िदमत बजा लाऊंगा मगर इस शर्त के साथ के मेरी रोज़[illegible] में मुक़र्रर कर दी जाए उसकी भी दरख़्वास्त मंजूर हुई। बस लकड़ी के कीड़े ने ख़र मोहरे में सुराख़ करना शुरू किया और उसमें आर पार सूराख़ कर दिया और इस ख़िदमत के एवज़ उसकी रोज़ी लकड़ी में मुक़र्रर कर दी गई। इसके बाद प्याला आप के सामने रखा गया (ताकि मीठे और झाग वाले पानी से जो न ज़मीन का हो न आसमान का उसको पुर कर दिया जाए। आपने अपने अरबी घोड़ों को तलब किया और उनको दौड़ा दिया जब दौड़ते दौड़ते उनके पसीने बहने लगे उस वक़्त उनके पसीने उस प्याले को भर लिया गया यही वह झाग वाला मीठा पानी था जो न ज़मीन का था और न आसमान का। उसके बाद आप ने पानी मंगवाया तो उन ख़िदमतगारों को जिसमें औरतें और मर्द शामिल थे वज़ू करने का हुक्म दिया गया ताकि लड़कों और लड़कियों में इमतियाज़ हो जाए अव्वल लड़कियों ने जो लड़कों की शक्ल में थीं हाथों पर पानी इस तरह बहाना शुरू किया एक लड़की ने बायें हाथ में पानी लेकर दायें हाथ की हथेली पर पानी लेकर अपना बायां बाज़ू धोया फिर उसी तरह दायें हाथ में पानी का बरतन लेकर दायां बाज़ू धोया इससे मालूम हो गया कि यह लड़कियां हैं उनको आपने एक

तरफ़ कर दिया फिर उसके बाद उन गुलामों को पानी दिया गया जो लड़कियों की शक्ल में थे उन्होंने पहले दायां हाथ धोया उसके बाद बायां जिससे पता चल गया कि यह मर्द गुलामों हैं उनको भी अलग कर दिया गया यह तादाद में बारह थे इस तरह लड़कों को और लड़कियों को आप ने अलग अलग कर दिया। फिर सवालात पर ग़ौर फ़रमा कर आप ने बिलक़ीस के एक हज़ार सवालात के जवाबात दे दिए फिर आप ने बिलक़ीस के हदियों को वापस कर दिया और पैग़ाम रसां औरत से फ़रमाया कि क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो हालांकि अल्लाह तआला ने जो हुकूमत और नबुव्वत मुझे अता फ़रमाई है वह इस माल से कहीं बेहतर है जो अल्लाह ने तुम को दिया है मुझे इस माल से क्या ख़ुशी हो सकती है तुम्हारे हदिये तुम्हारे लिए ही बाइसे मुसर्रत हो सकते हैं फिर बिलक़ीस के नाम एक ख़त लिखकर हुद हुद को दिया कि यह ख़त बिलक़ीस तक पहुंचा दे हम उन पर ज़रूर ऐसे फ़ौजों से हमला करेंगे जिसके मुक़ाबला की उनमें ताक़त नहीं है और उनको ज़लील व ख़्वार करके सबा से निकाल देंगे और ज़्यादा ज़लील व ख़्वार होंगे।

हुद हुद ने हज़रत सुलैमान का ख़त लेकर दोबारा बिलक़ीस के पास पहुंचा बिलक़ीस ने ख़त पढ़ा उस असना में क़ासिद भी लौट आए उन्होंने हज़रत सुलैमान का वाक़िआ और तोहफ़ा व हदाया के सिलसिले में आप ने जो कुछ फ़रमाया था और लौटा कर जो जवाब दिया था वह सब बिलक़ीस को सुनाया उस वक़्त बिलक़ीस ने अपने क़ौम से कहा कि हम पर यह हुक्म आसमान से नाज़िल हुआ है इसकी मुख़ालिफ़त मुनासिब नहीं है और न इस की मुख़ालिफ़त की हम में ताक़त है। फिर मलका सबा अपने तख़्त की हिफ़ाज़त की तरफ़ मुतवज्जेह हुई और उसके सात कमरों में बन्द करवा के ऊपर पहरे दार मुक़र्रर कर दिए और सुलैमान की ख़िदमत में रवाना हो गई। हुद हुद ने फ़ौरन हज़रत सुलैमान की ख़िदमत में हाज़िर होकर इत्तेला दे दी कि बिलक़ीस आप की ख़िदमत में आ रही है हज़रत सुलैमान ने अमाइदे सलतनत को जमा करके फ़रमाया कि सरदारो इससे क़ब्ल कि बिलक़ीस एक फ़रमां पज़ीर की हैसियत से मेरे पास पहुंचे उनका तख़्त मेरे पास कौन ला सकता है क्योंकि सुलह हो जाने के बाद उनके तख़्त को लेना जाइज़ नहीं होगा। उमरा ना[illegible]क तुन्द ख़ू और ग़ज़बनाक जिन्न ने अर्ज़ किया आप अपने इजलासे अदालत न उठ जाएंगे कि उतने अर्सा में बिलक़ीस का तख़्त मैं यहां लाकर हाज़िर होगा हज़रत सुलैमान की मजलिस अदालत सुबह से दोपहर तक रहती थी मुझ में उस तख़्त को उठाने की ताक़त है मैं ताक़तवर भी हूं और अमानतदार भी, जो सोना चांदी और जवाहिरात उस तख़्त में लगे हैं मैं उन में ख़यानत नहीं करूंगा। आप आगाह हैं कि हद्दे नज़र मेरा एक क़दम है इस लिहाज़ से मैं इतने वक़्त में यक़ीनन तख़्त आप की ख़िदमत हाज़िर कर दूंगा। हज़रत सुलैमान फ़रमाया कि मैं तो इससे भी कम वक़्त में तख़्त यहां चाहता हूं यह सुनकर एक शख़्स ने जिसको किताबुल्लाह का कुछ इल्म था और अल्लाह के इसमे आज़म या हय्यो या क़य्यूमो से वह आगाह था अर्ज़ किया कि मैं अपने रब से दुआ करूंगा और उसकी तरफ़ रुजूअ हूंगा अपने रब की किताब पर ग़ौर करूंगा तो उम्मीद है आप की नज़र की वापसी (पलक झपकने में) से पहले तख़्त को हाज़िर कर दूंगा। उस शख़्स का नाम आसिफ़ बिन बरख़िया बिन शअया था उसकी वालिदा का नाम बातूरा था यह बनी इसराईली था चूंकि वह इसमे आज़म से वाक़िफ़ था इस लिए हज़रत सुलैमान ने कहा कि अगर तुमने यह काम अंजाम दे लिया तो तुम ग़लबा और

बलन्दी (मरतबत) पाओगे और अगर तुम इस काम को अंजाम न दे सके तो तुम मुझे इन दरबारियों के सामने शर्मिन्दा न करना क्योंकि मैं जिन्न व इन्स दोनों का सरदार हूं यानी नाकामी की सूरत में मेरे हुजूर में मत आना।

तख़्ते बिलक़ीस सुलेमान के हुजूर में

चुनांचे हज़रत आसिफ़ बरख़या उठे और वजू करके अल्लाह तआ़ला की जनाब में सजदा किया और इस्मे आज़म पढ़ कर दुआ करने लगे। हज़रत अली मुर्तज़ा से मरवी है कि इस्मे आज़म के साथ जिसने भी दुआ की उसकी दुआ अल्लाह तआ़ला ने क़बूल फ़रमाई और इस्मे आज़म के वसीले से जिसने कुछ मांगा उसे अल्लाह तआ़ला ने अता फ़रमा दिया। वह जुलजलाले वल इकराम है।

रावी का बयान है कि आसिफ़ बरखया के दुआ मांगते ही मलका बिलक़ीस का तख़्त ज़मीन के नीचे ग़ाएब होकर हज़रत सुलैमान की कुर्सी के पास नमूदार हो गया, एक रिवायत यह भी है कि उस कुर्सी के नीचे नमूदार हुआ जिस पर हज़रत सुलैमान तख़्त नशीनी के वक़्त अपने पांव रखते थे। जब तख़्त हाज़िर हो गया तो जिन्नात ने कहा कि वाक़ई आपके सहाबी आसिफ़ बरख़या तख़्त को लाने की तो क़ुदरत रखते हैं लेकिन वह मलका [illegible] बिलक़ीस को नहीं ला सकते। हज़रत आसिफ़ ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से अर्ज किया कि हुक्म हो तो) मैं मलका सबा को भी ला सकता हूं।

रावी का ब्यान है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के हुक्म से एक शीश महल तैयार किया गया और उसके नीचे पानी जारी किया गया और उसमें मछलियां छोड़ दी गईं शीशा की सफ़ाई की वजह से फ़र्श के ऊपर से पानी और मछलियां साफ़ नज़र आती थीं फिर हुक्म के बमौजिब हज़रत की कुर्सी महल के वस्त में रख दी गई और मसाहिबीन की कुर्सियां भी बिछा दी गईं ख़ुद आप भी तशरीफ़ फ़रमा हो गए तरतीब यह थी कि हज़रत की कुर्सी के क़रीब आदमियों की, उस के बाद जिन्नात की, उसके बाद शयातीन की, नशिस्त थी। हज़रत सुलैमान की नशिस्त का यही तरीक़ा होता था, जब आप कहीं सफ़र में तशरीफ़ ले जाना चाहते तो आप अपनी कुर्सी पर और मसाहिबीन अपनी अपनी कुर्सी पर बैठ जाते थे फिर आप हवा को हुक्म देते थे वह सबको उठा कर फ़िज़ा में ले जाती थी और जब ज़मीन पर चलने का क़स्द होता तो हस्बुल हुक्म हवा सब को ज़मीन पर ले आती और आप ज़मीन पर चलते, हज़रत सुलैमान की मजलिस ऐसी ही होती थी जैसी उस ज़माने में बादशाहों की होती थी।

अल ग़रज़ जब मजलिस की नशिस्त दुरस्त हो गई तो हज़रत सुलैमान ने आसिफ़ बरख़या को बिलक़ीस के लाने का हुक्म दिया, आसिफ़ ने दोबारा सजदे में गिर कर दोबारा इस्मे आज़म या हय्यो या क़य्यूमो पढ़ कर अल्लाह से दुआ मांगी, दुआ करते ही बिलक़ीस सामने आ मौजूद हुई। बाज़ लोग कहते हैं कि इस्मे आज़म का इल्म रखने वाला हज़रत के अस्तबल का दारोग़ा ख़ब्बा बिन औ था बाज़ कहते हैं कि हज़रत ख़िज़्र हैं।

हज़रत सुलैमान और मलका बिलक़ीस की मुलाक़ात

हज़रत सुलैमान ने बिलक़ीस को अपने सामने देख कर फ़रमाया कि यह मेरे रब की मेहर

बानी है वह मुझे इस अम्र में आज़माना चाहता है कि मुझे जो हुकूमत दी गई है उसका शुक्र अदा करता हूं या अपने उस मातेहत के इल्म को देखकर जो इल्म में मुझसे अफ़ज़ल है उस नेमत की नाशुक्री करता हूं (इल्म में अफ़ज़ल से इशारा आसिफ़ बरख़या की तरफ़ है) हक़ीक़त यह है कि अगर कोई शुक्र करेगा तो उसी को फ़ाइदा होगा और ना शुक्री करेगा तो उसमें ख़ुदा को कुछ नुक़सान नहीं है। वह तो बे नियाज़ और करीम है वह सज़ा देने में जल्दी नहीं करता। जब जिन्नात को यह ख़बर हुई कि बिलक़ीस आ गई हैं तो उनको यह ख़तरा लाहिक़ हुआ कि कहीं हज़रत सुलैमान बिलक़ीस से निकाह न कर लें अगर ऐसा हो गया तो बिलक़ीस क़ौमे जिन्नात के तमात वाक़ेआत हज़रत सुलैमान को बता देगी, चूंकि बिलक़ीस की मां एक परी थी इसलिए उसको जिन्नात के बारे में तमात बातों का इल्म था, बिलक़ीस की मां का नाम अमीरा बिन्त उमरिया रवाहा बिन्त सक्कन था और वह जिन्नात की मलिका थी इसलिए जिन्नात उसकी ऐब जूई करने लगे ताकि हज़रत सुलैमान उससे नुफूर हो जाएं पस वह कहने लगे, हज़रत वाला! बिलक़ीस कोताह अक़्ल है और उसके पावं गधे के सुमूं की मानिन्द हैं और हक़ीक़त भी यह थी कि बिलक़ीस के पावं कज थे और उनकी पिंडलि[illegible]र बाल थे। यह सुनकर हज़रत सुलैमान ने बिलक़ीस के अक़्ल व फ़हम का इम्तेहान लेना चाहा और उनके पावं भी देखना चाहे और उस का इन्तेज़ाम यह किया था कि शीश महल के नीचे आपने पानी [illegible] दिया था और उसमें मेंढकियां और मछलियां छुड़वा दी थीं, बिलक़ीस की द[illegible] के इम्तेहान के लिए आपने उनके तख़्त में कुछ तबदीलियां कर दी थीं। अल्लाह तआला के इ[illegible]शादः बिलक़ीस के तख़्त में कुछ तबदीलियां कर दो, के य[illegible] मानी हैं।

जब बिलक़ीस महल [illegible] पहुंच गई [illegible] उनसे कहा गया [illegible] महल के अन्दर दाख़िल हों, जब बिलक़ीस ने मह[illegible] के अन्दर नज़र डाली [illegible] उनको [illegible] का गुमान हुआ, उनको डर हुआ कि शायद मुझे डुब[illegible]ने का इ[illegible]ज़ाम किया गया है, अगर [illegible] का [illegible] कोई तरीक़ा होता तो अच्छा था यानी सुलैमान [illegible] और किसी तरह मार डालते, बिल आख़िर आगे बढ़ने के लिए अपनी पिंडलियों से कपड़ा उ[illegible] तो उनकी दोनों पिंडलियों पर बाल नज़र आए बाक़ी बदन के लिहाज़ से बिलक़ीस बहुत ही हसीन [illegible] ख़ूबरू थीं और जो कुछ उनके बारे में कहा गया था वह उन ऊयूब से बहूत दूर थीं। [illegible] ने कहा कि यह शीश महल है इसमें ग़ुबार का कोई निशान नहीं है। यह ऐसा चिकना है जैसे अमरद, जिसके रूख़सार पर बाल न हों। उस महल की छत, ज़मीन और दीवारें सब शीशा की हैं, बिलक़ीस हज़रत सुलैमान कि तरफ़ रवाना हुई, हज़रत सुलैमान उनकी पिंडलियों पर बाल देख चुके थे और आपको वह भी भले लगे थे जब बिलक़ीस हज़रत सुलैमान के सामने पहुंचीं तो बार बार अपने तख़्त को देखती थीं, उनसे दरयाफ़्त किया गया कि क्या तुम्हारा तख़्त भी ऐसा ही है उन्होंने तख़्त को देख कर कुछ पहचाना कुछ नहीं पहचाना, वह दिल में कहने लगीं कि वह तख़्त यहां कैसे पहुंच सकता है वह तो सात कमरों के अन्दर बन्द है और उसकी निगरानी पर चौकीदार भी मुक़र्रर हैं ग़र्ज़ कुछ पहचाना कुछ नहीं पहचाना कोई क़तई फ़ैसला न कर सकीं और कहा कि ऐसा मालूम होता है गोया वही है। हज़रत सुलैमान ने कहा हम को इससे पहले ही ख़बर दे दी गई है और हम उससे पहले अल्लाह के फ़रमांबरदार बन गए थे। (बिलक़ीस इस्लाम लाने से क़ब्ल मजूसी मज़हब की पैरू थीं) बिलक़ीस कहने लगीं मैंने ख़ुद अपने [illegible] ज़ुल्म किया (यानी मैंने ख़्वाह मख़्वाह हज़रत सुलैमान के बारे में बदगुमानी

की कि वह मुझे डूबोना चाहते हैं) यह भी मुराद हो सकती है कि मैंने आफ़ताब परस्ती करके अपने ऊपर ज़ुल्म किया अब मैं सुलैमान के साथ अल्लाह की फ़रमांबरदार बनती हूं, यह भी मतलब हो सकता है कि मैं सुलैमान के साथ रब्बुल आलमीन की ख़ालिस इबादत करूंगी। इसलिए मैं मुसलमान होती हूं (यह बयान किया जा चुका है कि पहले बिलक़ीस काफ़िरा थी) हज़रत सुलैमान ने उसको अल्लाह के सिवा दूसरे की इबादत से रोका) फिर हज़रत सुलैमान ने उनसे निकाह कर लिया उनके (पिंडलियों) के बाल साफ़ करने के लिए नूरा तैयार करने का हुक्म दिया जब नूरा (चूने का पाउडर) तैयार हो गया तो हज़रत सुलैमान और बिलक़ीस ने उसका इस्तेमाल किया हज़रत सुलैमान ही नूरा के मौजिद थे।

हज़रत सूलैमान की औलाद बिलक़ीस के बतन से

रावी का बयान है कि हज़रत सुलैमान ने बहुत सी बातें बिलक़ीस से दरयाफ़्त कीं और इस तरह बहुत सी बातें बिलक़ीस ने हज़रत सुलैमान से मालूम कीं (यानी बहुत देर तक दोनों बाहम गुफ़तफ़ू करते रहे) फिर हज़रत सुलैमान ने बिलक़ीस से मुबाशरत की और उनके बतन से हज़रत सुलैमान के एक लड़का पैदा हुआ जिसका नाम दाऊद रखा गया लेकिन वह बाप की हयात ही में मर गया उसके कुछ अर्सा बाद हज़रत सुलैमान की वफ़ात हो गई उसके एक माह बाद बिलक़ीस का भी इन्तेक़ाल हो गया, एक रिवायत यह भी है कि हज़रत सुलैमान ने शाम के मुल्क में एक गावं बिलक़ीस को दे दिया था मरते दम तक बिलक़ीस उसका लगान लेती रहीं और उसी से अपना गुज़ारा करती रहीं। एक रिवायत में यूं भी आया है कि मुबाशरत के बाद हज़रत सुलैमान ने बिलक़ीस को उनके मुल्क सबा वापस कर दिया था और वह ख़ुद महीने में एक बार बैतुल मक़द्दस से सवार हो कर यमन पहुंच जाते थे।

हज़रत सुलैमान और बिलक़ीस के क़िस्से से इबरतें हासिल होती हैं

हमने इस मजलिस में हज़रत सुलैमान का पूरा क़िस्सा तफ़सील के साथ इसलिए पेश कर दिया है कि इसमें आक़ेबत बीनों, दानिश्मन्द मोमिन के लिए बड़ा सरमायए नसीहत पिन्हां है जो गुज़िश्ता नेकों और बदों की सीरत से इबरत हासिल करना चाहता है। साबिक़ा उम्मतों में अल्लाह तआला का इक़्तिदार नाफ़िज़ था, जो फ़रमान पज़ीर बन्दे थे उनको उसने इज़्ज़त अता फ़रमाई और नाफ़रमानों को अपने फ़रमांबरदारों का मुतीअ बना दिया। नाफ़रमानों को ख़्वार व ज़लील किया और उनके इख़्तियार की बाग डोर अपने इताअत केशों के हाथ में दे दी और अपने दोस्तों और मोहिब्बों को मख़्लूक़ का मालिक बना दिया तो दानिश्मन्द मोमिन इन तमाम बातों से नसीहत हासिल करता है। ग़ौर करने का मक़ाम है कि हज़रत सुलैमान ने अल्लाह की इताअत की और अल्लाह तआला ने उनको बिलक़ीस और उसके मुल्क (सबा) का मालिक बना दिया जबकि बिलक़ीस की सलतनत में बारह हज़ार जंगजू सरदार ऐसे मौजूद थे जिनमें से हर एक की कमान में एक लाख फ़ौज थी और हज़रत सुलैमान की फ़ौज की कुल तादाद 4 लाख थी, जिसमें दो लाख जिन्नात थे और दो लाख इन्सान। देखो दोनों फ़ौजों की तादाद में अज़ीमुश्शान फ़र्क़ था।

कहां बारह करोड़ फ़ौज और कहां चार लाख, लेकिन सुलैमान को उनकी इताअत गुज़ारी के बाएस ग़ालिब व मालिक और कुफ़्र व इस्यान की वजह से बिलक़ीस को मग़लूब व ममलूक बना दिया पस आदमी को समझ लेना चाहिए कि इस्लाम हमेशा सरबलन्द रहता है। सरनिगूं नहीं होता, अल्लाह तआला अहले ईमान पर कभी काफ़िरों को मुसल्लत नहीं करेगा, ऐ मर्दे मोमिन ! अल्लाह तआला तुझे हज़रत सुलैमान की तरह तौफ़ीक़ दे अगर तू सुलैमान की तरह साहिबे ईमान होगा तो दुनिया में दुशमनों से महफ़ूज़ रहेगा और आख़िरत में जहन्नम की भड़कती हुई आग से बचेगा, दोज़ख़ तेरा ख़िदमत गुज़ार होगा और ख़ादिमों की तरह तेरे आगे आगे चल कर तुझे (जन्नत का) रास्ता बताएगा और अपने मौला के हुक्म की तामील करते हुए दोज़ख़ तुझ से बहुत ही नर्म अल्फ़ाज़ में कहेगा ऐ मर्दे मोमिन मेरे ऊपर से गुज़र जा, तेरे (ईमान) के नूर ने मेरे शोलों को ठंडा कर दिया है ग़रज़ यह कि तेरी बड़ी तौक़ीर होगी और तेरा चेहरा पुरनूर होगा, हुल्ला शाही तेरे जिस्म पर होगा और अज़मत व बुजुर्गी की निशानियां तुझ से नुमायां होंगी। इस बिना पर ख़ादिमों और ग़ुलामों पर तुम्हारी तौक़ीर व ताज़ीम और ख़िदमत फ़र्ज़ है इसके बरअक्स काफ़िरों और नाफ़रमानों पर वह आग अपना गैज़ व ग़ज़ब दिखाएगी जैसे कोई ग़ालिब आने वाला दुशमन अपनी कामयाबी के बाद मग़लूब से इन्तेक़ाम लेता है, उसी तरह वह तुम से बदला लेगी। अल्लाह तआला का इरशाद है:

जब वह उसे (आतिशे जहन्नम) दूर से देखेंगे तो उसके गैज़ व ग़ज़ब की आवाज़ सुनेंगे

लिहाज़ा अगर तुम दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़त के ख़्वाहां हो तो तुम पर अल्लाह तआला की इताअत व फ़रमांबरदारी लाज़मी और नाफ़रमानी से इजतेनाब ज़रूरी है, अल्लाह की रहमत तुम को उसी वक़्त हासिल होगी। अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो इज़्ज़त चाहता है सो वह जान ले कि तमाम तर इज़्ज़त अल्लाह ही की जानिब से है इज़्ज़त तो अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों के लिए है लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते।

पस ऐ ईमान का दावा करने वाले! तेरा निफ़ाक़ और ऐ इख़लास के मद्दई तेरा (अमली) शिर्क तेरे लिए अल्लाह तआला की इज़्ज़त और उसके बरगुज़ीदा नबी और मोमिनीने अख़ियार की इज़्ज़त को देखने में मानेअ है और एक हिजाब व पर्दा है, हां अगर तू ईमान के तक़ाज़ों के मुताबिक़ अमल पैरा होगा और इख़लास की शराइत के मुताबिक़ यक़ीन रखेगा तो दुनिया में हर दुख और हर जिन्नी व इन्सी शैतान से और आख़िरत में (दौज़ख़ की) आग के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा, तुझे कामयाबी और तेरे दुशमनों को ख़्वारी नसीब होगी, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

अगर तुमने अल्लाह की मदद की तो वह तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हें साबित क़दम रखेगा।

एक दूसरी आयत में इरशाद है कि सुस्त व कमज़ोर न बनो और (ज़िल्लत और शिकस्त के साथ) सुलह के ख़्वाहां न हो तुम ही ग़ालिब रहोगे अल्लाह तुम्हारे साथ है लेकिन ग़फ़लत तुम्हारे दिलों पर छा गई है और ज़ंग की तहें चढ़ गई हैं उसके गिर्द सियाही और ज़ुलमत फैल गई है। हाए अफ़्सूस! हाए नदामत! ऐसे दिल वालों के लिए जिस दिन क़यामत में भेद खुल जाएंगे, वह दिन वाक़ेअ होना हक़ है, बड़ी मुसीबत का दिन होगा तुम्हारी कोई छुपी बात छुपी नहीं रहेगी उस रोज़ लोग परागन्दा परेशान होकर क़ब्रों से निकलेंगे ताकि उनको उनके आमाल दिखाए

जायें पस जिसने जर्रा भर नेकी की है वह उसे देख लेगा और जिसने जर्रा भर बदी की है वह उसे देख लेगा। कहा गया है कि चार ज़र्रे मिल कर राई के दाने के बराबर होते हैं। बाज़ का क़ौल है कि एक ज़र्रा उस सुर्ख़ चियूंटी के बराबर होता है जो ब मुशकिल ग़ौर करने पर नजर आती है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (रज़ी अल्लाहो अन्हुमा) ने फ़रमाया कि जब तुम अपना हाथ ज़मीन पर रख कर उठाओ तो हथेली में मिट्टी लग जाए वही ज़र्रा है, बाज़ कहते हैं कि ज़र्रा जौ के हज़ारवें हिस्से का नाम है, बाज़ कहते हैं कि ज़र्रा गुबार के उस हिस्से को कहते हैं जो शुआए ख़ुर्शीद से सूई के नाके की तरह चमकता है। पस कितना हैबतनाक होगा वह दिन जिस में ऐसे हल्के वज़न वाले आमाल (यानी ज़र्रों के बराबर आमाल भी) तौले जायेंगे, उसी दिन के बारे में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है उस रोज़ हम परहेज़गारों को मेहमान के तौर पर रहमान की तरफ़ ले जाने का हुक्म देंगे और मुजरिमों को सख़्त प्यास की हालत में जहन्नम की तरफ़ हंकायेंगे।

उस वक़्त पर्दा हट जाएगा, पोशीदा बातें अयां हो जाएंगी, मोमिन और काफ़िर, सिद्दीक़ व मुनाफ़िक़, मोवहहिद व मुशरिक दोस्त दुशमन, वाक[illegible]कदार और झूटे दावेदार में इम्तियाज़ होगा (अलग अलग कर दिया जऐगा)

ऐ नातवां इन्सान! उस दिन की हैबत से डर और ग़ौर कर कि तू [illegible] दो गरोहों में से किस गरोह में शामिल होगा। अगर तूने बुजुर्ग व बर्तर माबूद [illegible] आमाल किए हैं और अपने अमल में ख़ुदाए अलीम व ख़बीर से ख़ौफ़ खाया है और अमल [illegible] उन तमाम चीज़ों से पाक रखा है जो परखने वाले बसीरत रखने वाले, रब की नज़र में बुरी और नापसन्द हैं।तू तो उस गरो में शामिल होगा जो क़यामत के दिन उसका मेहमान होगा। तुझे इज़्ज़त और सलामती हासिल होगी और बशारत तेरे लिए मौजूद होगी और अगर तेरा अमल [illegible] बरअक्स है तो फिर यक़ीनन तू उसी गरोह के साथ होगा और उन हलाक होने वालों के साथ होगा जो दोज़ख़ में फ़िरऔन व हामान और क़ारून के साथ हलाक किए जायेंगे।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: जो शख़्स यह उम्मीद रखता हो कि अपने परवरदिगार से मुलाक़ात करे पस (उससे कह दो कि) नेक अमल करे और अल्लाह की इबादत में किसी को शरीक न करे।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की फ़ज़ीलत

फ़ज़ाइल

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि जब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नाज़िल हुई तो बादल और मशरिक़ की तरफ़ भागती हुई हवायें ठहर गई, समन्द्रों में तमव्वुज हुआ, जानवरों ने सुनने के लिए कान लगा दिए और शैतानों पर आसमान से अंगारों की मार पड़ी, अल्लाह तआ़ला ने अपने इज़्ज़त व जलाल की कसम खाई कि जिस बीमार पर उसका नाम लिया जाएगा वह

उसको ज़रूर शिफ़ा देगा और जिस चीज़ पर उसको पढ़ा जाएगा उसमें बरकत अता फ़रमाएगा और जो शख़्स बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ेगा वह जन्नत में जाएगा।

अबू वाइल कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने फ़रमाया कि जो शख़्स चाहता है कि उसको अल्लाह तआला दोज़ख़ के उनीस फ़रिश्तों से बचा ले तो वह बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर रहीम पढ़े उसके हुरूफ़ 19 है। अल्लाह तआला हर हर्फ़ को अज़ाब के एक फ़रिश्ते के लिए सपर बना देगा। हज़रत इब्न अब्बास ने बक़ौल ताऊस फ़रमाया है कि हज़रत उसमान इब्न अफ़्फ़ान ने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि यह अल्लाह के नामों में से एक नाम है, अल्लाह के इस्मे आज़म और इस इस्म में ऐसा ही ताल्लुक़ व इत्तेसाल है जैसे आंख की सफ़ेदी और सियाही में।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, जिस शख़्स ने ज़मीन से ऐसा कागज़ जिस पर बिस्मिल्लाह तहरीर थी अल्लाह तआला के नाम की ताज़ीम करते हुए इस डर से उठा लिया कि पामाल न हो तो अल्लाह तआला के यहां उसका नाम सिद्दीक़ीन की फ़ेहरिस्त में लिख दिया जाता है और उसके वालिदैन का ख़्वाह वह मुशरीक ही क्यों न हों अज़ाब हल्का कर दिया जाता है।

रिवायत है कि तीन मरतबा शैतान इस तरह चीख़ चीख़ कर रोया कि ऐसा कभी नहीं रोया एक तो उस वक़्त जब उसको मरदूद व मलऊन बना कर आलमे मलाइका से ख़ारिज कर दिया गया, दूसरे सरवरे कौनैन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विलादते मुबारक के मौक़ा पर, तीसरे उस वक़्त जब सूरह फ़ातिहा नाज़िल की गई जिसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम मौजूद है। सालिम बिन अलजअद के क़ौल के मुताबिक़ हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहो वजहहू ने फ़रमाया कि जब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नाज़िल हुई तो रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे पहले जब यह आयत हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई तो आपने इरशाद फ़रमाया कि मेरी नस्ल जब तक इसकी तिलावत करती रहेगी अज़ाब से महफ़ूज़ रहेगी। उसके बाद उसे उठा लिया गया फिर वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई तो उन्हों ने उस को उस वक़्त पढ़ा जब वह (आग में फेंके जाते वक़्त) मुनजनीक़ के पलड़े में थे और (उस की बरकत से) अल्लाह तआला ने आग को सलामती के साथ ठंडा कर दिया, फिर उसे उठा लिया गया, फिर वह हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम तक किसी पर नाज़िल न हुई। जब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई तो फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ सुलैमान बख़ुदा आप की हुकूमत तमाम हो गई फिर वह उठा ली गई अब अल्लाह तआला ने उसे मुझ पर नाज़िल फ़रमाया है, मेरी उम्मत क़यामत के दिन इस हाल में आएगी कि वह बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ते होंगे और जब उनके आमाल मीज़ान में तौले जायेंगे तो उनकी नेकियां वज़नी हो जायेंगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग उस (बिस्मिल्लाह) को अपनी किताबों और ख़तों में लिखो और जब तहरीर करो तो उसको ज़बान से भी पढ़ो।

बिस्मिल्लाह की फ़ज़ीलत के बारे में मज़ीद वज़ाहत व तसरीह

हज़रत इकरमा से मरवी है कि जब अल्लाह तआला ने लौह व क़लम को पैदा किया तो सब से पहले क़लम को हुक्म दिया कि लिख क़लम लौह पर चला और उस पर वह सब कुछ लिख

दिया जो कयामत तक होने वाला है, क़लम ने लौह पर सबसे पहले बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तहरीर किया जब तक लोग इस आयत की तिलावत करते रहेंगे अल्लाह तआला उनके लिए अमान मुक़र्रर फ़रमा दी है।

बिस्मिल्लाह का नुजूल

सातों आसमान वाले, बुलन्द मरतबा रखने वाले, बुजुर्गी वाले, परदों वाले और सफ़ बस्ता मुक़र्रब फ़रिश्ते (सबके सब) और अल्लाह तआला की तस्बीह पढ़ने वाले (करों बयान) इसको पढ़ते हैं। यह सबसे पहली आयत है जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई थी, उन्होंने इरशाद फ़रमाया था कि (इसकी बरकत से) मेरी औलाद अज़ाब से महफ़ूज़ रहेगी जब तक वह इसका विर्द करती रहेगी। फिर हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह पर यह सूरत नाज़िल हुई और उन्हों ने इसकी तिलावत उस वक़्त फ़रमाई जब वह मुनजनीक़ के पलड़े में बैठे थे (आग में फेंके जा रहे थे) और अल्लाह तआला ने उन पर आग को सलामती के साथ सर्द फ़रमा दिया, उसके बाद उसको उठा लिया गया फिर मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई उसकी बरकत से वह फ़िरऔन और उसके जादूगरों पर, हामान और उसके लश्कर, क़ारून और उसके पैरूओं पर ग़ालिब आए उसके बाद उसको फिर उठा लिया गया फिर वह चौथी बार हज़रत सुलैमान पर नाज़िल हुई उस वक़्त मलाइका ने कहा, बख़ुदा आज आप की सलतनत कामिल हो गई चुनान्चे जिस चीज़ पर हज़रत सुलैमान बिस्मिल्लाह पढ़ते वह उनकी ताबअे फ़रमान बन जाती।

जिस रोज़ हज़रत सुलैमान पर बिस्मिल्लाह उतारी गई थी अल्लाह ने सुलैमान अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया था कि बनी इस्राईल के तमाम लोगों में मुनादी करा दो कि जो शख़्स अल्लाह की अमान की आयत सुनना चाहता हो वह हज़रत दाऊद के हैकल (महराबे दाऊद) में सुलैमान के पास आ जाए वह राज़ कहना चाहते हैं, चुनान्चे हर एक शख़्स जो अल्लाह की इबादत का शौक़ रखता था उनकी ख़िदमत में दौड़ता हुआ हाज़िर हुआ। चुनान्चे तमाम अहबार बनी इस्राईल और ज़ोहाद व उब्बाद बनी इस्राईल के तमाम क़बाइल और गरोह मेहराबे दाऊद में हाज़िर हो गए (कोई आबिद व ज़ाहिद बाक़ी न रहा) उस वक़्त हज़रत सुलैमान उठे और मिम्बरे इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर तशरीफ़ ले गए और उनके सामने आयते अमान बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तिलावत की जिसने भी इसको सुना वह ख़ूशी से झूम उठा, सबने यक ज़बान होकर कहा कि हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूले बरहक़ हैं ग़र्ज़कि इस आयते करीमा के ज़रिया हज़रत सुलैमान रूए ज़मीन के सलातीन पर ग़ालिब आए और उसी के ज़रिया से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का फ़तह करवा दिया।

हज़रत सुलैमान के बाद इस आयत को फिर उठा लिया गया, उसके बाद जब हज़रत ईसा इब्ने मरियम पर नाज़िल की गई तो वह बहुत ख़ूश हुए और आपने अपने हवारियों को इसकी ख़ुश ख़बरी सुनाई, अल्लाह तआला ने उनपर वही नाज़िल फ़रमाई ऐ कुंवारी मरियम (बतूल) के फ़रजन्द तुम जानते हो कि कौन सी आयत तुम पर नाज़िल की गई है, यह आयते अमान है यानी यह फ़रमाने बारी बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम है इसको तुम खड़े, बैठे, लेटे, आते जाते, चढ़ते उतरते हर हाल में कसरत से पढ़ा करे क्योंकि जो शख़्स इसका विर्द रखेगा वह क़यामत के दिन इस हाल में उठेगा कि उसके नामए आमाल में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम आठ दर्जा दर्ज होगा

और वह शख़्स मुझ पर ईमान लाने वाला और मेरी रूबूबियत का इक़रार करने वाला होगा मैं उस को दोज़ख़ से आज़ाद कर के जन्नत में दाख़िल कर दूंगा। लिहाज़ा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को अपनी क़िरअत और अपनी नमाज के शुरू में पढ़ना चाहिए क्योंकि जिसने अपनी क़िरअत और अपनी नमाज़ के शुरू में इसको पढ़ा तो जब वह मरेगा तो उसको मुन्कर नकीर का कुछ ख़ौफ़ न होगा, उसपर मौत की सख़्ती और फ़िशारे क़ब्र आसान हो जाएगा और मेरी रहमत उसके शामिले हाल होगी मैं उसके लिए क़ब्र को कुशादा और ता हद्दे नज़र रौशन कर दूंगा, मैं उसको क़ब्र से उस हाल में निकालूंगा कि उसका बदन गोरा और चेहरा ऐसा नूरानी होगा कि वह चमकता होगा मैं उससे बहुत नर्म हिसाब लूंगा, उसकी नेकियों को वज़नी कर दूंगा और सिरात पर उसको नूरे कामिल अता कर दूंगा यहां तक कि वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और मैदाने हश्र में मुनादी से निदा कराऊंगा कि वह सईद और मग़फ़ूर है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! ऐ मेरे रब! क्या यह इनाम मेरे लिए ख़ास है, इरशाद हुआ तुम्हारे लिए भी और उन लोगों के लिए भी जो तुम्हारे पैरू हैं और तुम्हारे तरीका पर चलेंगे, तुम्हारे बाद अहमद (मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) औ[illegible]की उम्मत के लिए [illegible] (यह इनाम) ख़ास है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने इसकी इत्तेला अप[illegible] पैरूओं को दी और [illegible]को बशारत देते हुए फ़रमाया मेरे बाद एक पैग़म्बर आयेंगे जिनका नाम अहमद (सल्ल[illegible]हो अ[illegible]हि वसल्लम) है उनके औसाफ़ और कमालात ऐसे ऐसे है, हज़रत ईसा अ[illegible]सलाम ने अपने ताबईन और पैरूओं से हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाने का पुख़्ता अहद [illegible]या और जब अल्लाह तआला आप को आसमान [illegible] तरफ़ उ[illegible] लगा तो आपने अपने असहाब (हवारीन) से उस अहद को ताज़ा किया (उस अ[illegible] की तजदी[illegible]की) चुनान्चे जब [illegible]म हवारीन और आपके मुत्तबईन गुज़र गए और उनके बाद दूसरे लोग आए तो खुद[illegible] हो गए और दूसरों को भी गुमराह कर दिया और दी[illegible] को बद[illegible] कर दुनि[illegible] को ले लिया [illegible] उस व[illegible] यह आयते अमान नसारा के सीनों से उठा ली ग[illegible]। सि[illegible] उन चन्द लोगों के दिलों में बाक़ी रह गई जो इंजील के पैरूओं में साहिबे इस्लाम थे ज[illegible]रा राहिब वगैरह। उसके बाद जब अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम [illegible]मबऊस फ़रमाया और मक्का में सूरह फ़ातिहा बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम उतारी गई [illegible] रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि कुरआन करीम की सूरतों ख़ुतूत और किताबों के शुरू में लिखी जाए और इस आयत का नुज़ूल रसूले ख़ुदा के लिए अज़ीम फ़तह व कामरानी का बाएस हुआ। रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी इज़्ज़त की क़सम खाकर फ़रमाया कि जो मुसलमान, साहिबे यक़ीन अपने किसी काम को शुरू करने से पहले इसको पढ़ लेगा मैं उसमें ज़रूर बरकत पैदा करूंगा और जब भी कोई मुसलमान इसको पढ़ता है तो जन्नत उससे कहती है लब्बैक व सअदी क इलाही अपने इस बन्दे को बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम के सदक़ा में जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे और जन्नत किसी बन्दे के हक़ में दुआ करे तो उसका जन्नत में जाना ज़रूरी हो जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐसी कोई दुआ रद नहीं होती जिसके आग़ाज़ में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम हो, आपने फ़रमाया क़यामत के दिन बिला शुबा मेरी उम्मत बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहती हुई आगे बढ़ेगी और मीज़ान में उसकी नेकियां वज़नी हो जायेंगी [illegible] दूसरी उम्मतें कहेंगी कि उम्मते मोहम्मदी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की

तराज़ुओं में किस क़दर वज़नी आमाल हैं, अम्बिया उनके जवाब में कहेंगे कि उम्मते मोहम्मदिया के कलाम का आग़ाज़ अल्लाह तआला ने तीन ऐसे नामों से है कि अगर उनको तराज़ू के एक पल्ले में रख दिया जाए और तमाम मख़लूक़ की बुराईयां (गुनाह) दूसरे पल्ला में रख दिये जायें तब भी यक़ीनन नेकीयां ही भारी होंगी।

हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा को हर मरज़ की शिफ़ा हर दवा का मददगार (शिफ़ा) हर फ़क़ीर के लिए तवनगरी, आतिशे दोज़ख़ से, पर्दए ज़मीन में घंसने से अमान, सूरत मस्ख़ होने और सख़्ती में पड़ने से महफ़ूज़ रहने का ज़रीया बताया है जब तक लोग इसकी तिलावत करते रहेंगे।

बिस्मिल्लाह की तफ़्सीर

अतीया औफ़ी ने अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को उनकी वालदा माजदा हज़रत मरियम ने उस्ताद के पास तहसीले इल्म के लिए भेजा तो उस्ताद ने उनसे कहा पढ़िये बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हज़रत ईसा ने फ़रमाया आपको मालूम है यह क्या है? उस्ताद ने जवाब दिया कि मुझे नहीं मालूम, आपने फ़रमाया कि बे तो अल्लाह की रौशनी, सीन उसकी बलन्दी और मीम उसकी मम्लिकत है।

हज़रत अबू बकर वर्राक ने फ़रमाया कि बिस्मिल्लाह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है उसके हर हर्फ़ की तफ़्सीर अलग अलग है चुनान्चे बा के छः मानी हैं, एक बारी के मानी, यानी अर्श से तहतुस्सरा तक अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है और इसका सबूत अल्लाह का यह इरशाद है: हुवल्लाहुल ख़ालिक़ुल बारिऊ। (2) बसीर के मानी में अल्लाह अर्श से ज़मीन तक तमाम मख़लूक़ का देखने वाला है। वल्लाहो बसीरुम बिमा तअमलून (3) बासित के मानी में इस्तेमाल हुआ है यानी अल्लाह अर्श से फ़र्श तक मख़लूक़ के रिज़्क़ में कुशादगी करने वाला है, इरशाद है इन्नल्लाहा यबसुतुल रिज़्क़ा लिमैंय्यशाओ। (4) बाक़ी के मानी में मुस्तअमल है यानी अर्श से ज़मीन तक तमाम मख़लूक़ फ़ना हो जाएगी और सिर्फ़ अल्लाह बाक़ी रहने वाला है। कुल्लो मन अलैहा फ़ानिंव व यबक़ा वजहु रब्बेका ज़ुल जलालि वल इकराम (5) बाएसुन के मानी में इस्तेमाल किया है यानी अर्श से फ़र्श तक की मख़लूक़ को मरने के बाद अज़ाब व सवाब (हिसाब किताब) के लिए उठाने वाला है जैसा कि इरशाद फ़रमाया इन्नल्लाहा यब असु मन फ़िल क़ुबूर (6) बर्रून के मानी हैं यानी वह अर्श से फ़र्श तक तमाम मोमिनों के साथ एहसान करने वाला है। हुवल बर्रुर रहीम

सीन की पांच सूरतें (यानी सीन से अल्लाह तआला के पांच अंसमा की तरफ़ मिस्ल बा के इशारा है) (1) समीऊन की तरफ़ यानी अर्श से फ़र्श तक अपनी तमाम मख़लूक़ की आवाज़ सुनने वाला है जैसा कि इरशाद फ़रमाया है :क्या वह यह गुमान रखते हैं कि हम उनकी आहिस्ता और पोशीदा बात को नहीं सुनते। दूसरे सय्यद के मानी में यानी अर्श से फ़र्श तक अल्लाह तआला की सरदारी है इस का सबूत अल्लाहुस्समद में मौजूद है। तीसरे मानी हैं सरीउल हिसाब के, यानी अर्श से तहतुस्सरा तक तमाम मख़्लूक़ का मुहास्बा अल्लाह तआला जल्द करने वाला है जिसका सबूत वल्लाहु सरीउल हिसाब है चौथे मानी हैं सलामुन के यानी अर्श से फ़र्श तक उसने अपनी तमाम मख़लूक़ को सलामती अता फ़रमाई है और इसका सबूत अस्सलामुल मोमिनो भी है। पांचवें

मानी सातेरून के हैं यानी अल्लाह तआला अपने बन्दों के गुनाहों पर परदा डालने वाला है जैसा कि उसका इर्शाद है ग़ाफ़ेरूज़्ज़ंबे व क़ाबिलुत तूबे इस में लफ़्ज़ ग़ाफ़िर के मानी हैं सातिर यानी परदा डालने वाला।

मीम की बारह सूरतें हैं, मीम से अल्लाह तआला के बारह अस्माए हुस्ना की जानिब इशारा है अव्वल मलेकुल ख़ल्क़, मख़लूक़ का बादशाह या हाकिम जिस की वज़ाहत अल मलेकुल कुद्दूस में मौजूद है। दोम मालेकुल ख़ल्क़ मख़लूक़ का मालिक जिस की वज़ाहत मालेकुल मुल्क में की गई है सोम मन्नानुन अलल ख़ल्क़, मख़लूक़ पर एहसान करने वाला, इसकी तशरीह बलिल्लाहो य मुन्नू अलैकुम में मौजूद है। चहारुम मजीदुन यानी अल्लाह बुज़ुर्गी और मज्द व ओला वाला है इसकी वज़ाहत ज़ुल अर्शिल मजीद से फ़रमाई गई पंजुम मोमिनून का इशारा है यानी अर्श से फ़र्श तक अपनी मख़लूक़ को अमन व अमान देने वाला जैसा कि इरशाद फ़रमाया व आमनहुम मिन ख़ौफ़। शशुम मोहय्यमेनून यानी अर्श से फ़र्श तक अपनी मख़लूक़ से आगाही रखने वाला। इरशाद हुआ है अल मोमिनून मोहय्यमेनून। हफ़्तुम मुक़तदेरून यानी अर्श से फ़र्श तक अपनी मख़लूक़ पर क़ुदरत रखने वाला। जैसा कि इरशाद फ़रमाया फ़ी मक़अदे सिद्क़िन इन्दा मलिकीन मुक़तदिर। हश्तुम मुक़ीतुन की तरफ़ इशारा है यानी अर्श से फ़र्श तक अपनी मख़लूक़ की निगहबानी करने वाला। इरशादे रब्बानी इसकी वज़ाहत में मौजूद है वकानल्लाहा अला कुल्ले शैइन मोक़ीता। नहुम मुकर्रमुन यानी सारे आलम में अपने दोस्तों को इज्जत देने वाला, जिस की वज़ाहत वल क़द कर्रमना बनी आदमा। दहुम मुनइमुन यानी कुल जहाँ को नेमत देने वाला, इरशाद फ़रमाता है व असबग़ा अलैकुम नेअमहू ज़ाहिरनव व बातिनह। याज़्दहुम मुफ़ज़्ज़ेलून की तरफ़ इशारा है यानी अर्श से फ़र्श तक अपनी मख़लूक़ पर मेहरबानी करने वाला, इरशाद फ़रमाया है इन्नल्लाहा लज़ु फ़ज़लिन अलन्नास। दोआज़्दहुम मोसव्विरून की तरफ़ इशारा है यानी मख़लूक़ का सूरत गर, इस आयत में इसकी वज़ाहत मौजूद है अल ख़ालिकुल बारिउल मुसव्विरो।

अहले मारफ़त व हक़ीक़त का इरशाद है कि कुरआन मजीद को बिस्मिल्लाह से शुरू करने का मक़सद है कि इंसान अपने तमाम अफ़आल व आमाल की इब्तिदा अल्लाह के नाम से करे और उस नामे पाक से बरकत हासिल करे और इसी की तरग़ीब उस का मक़सूदे आला है।

लफ़्ज़ अल्लाह के मानी में मुख़्तलिफ़ अक़वाल

इस्मे अल्लाह के मानी और उसकी तन्क़ीह व तसरीह में उलमा का इख़्तिलाफ़ है चुनान्चे ख़लील बिन अहमद और उलामए अरब की एक जमाअत ने कहा है कि अल्लाह, ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर का ऐसा नाम है जिसमें उसका कोई शरीक नहीं है। चुनान्चे अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: क्या उसका कोई हमनाम तुमको मालूम है) इससे ख़लील का मतलब यह है कि इस्मे अल्लाह के अलावा अल्लाह के दूसरे नाम मुशतरक हैं अल्लाह तआला पर उन नामों का इतलाक़े हक़ीक़ी होता है और दूसरे पर बतौर मजाज़ मगर लफ़्ज़ अल्लाह मुशतरक ही नहीं है बतौर मजाज़ भी इसका इतलाक़ किसी और पर नहीं हो सकता क्योंकि उसके अन्दर हमागीर मालकीयत का मफ़हूम पिन्हां है बाक़ी तमाम मआनी उसके तेहत हैं।

अगर अल्लाह का अलीफ़ हज़फ़ कर दें तो लिल्लाह रह जाता है अब अगर पहले लाम को भी हज़फ़ कर दें तो लहू रह जाता है फिर दूसरा लाम भी गिरा दिया जाए तो हू रह जाता है

बाज़ उलमा लफ़्ज़ अल्लाह को अलम नहीं कहते बल्कि इसको इस्मे मुशतक़ कहते हैं। अल्लाह
को इस्मे मुशतक़ तसलीम करने के बाद उसके माख़ज़ व इश्तिक़ाक़ के तअय्युन में भी उलमा
के मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं चुनान्चे नसर बिन शमील का क़ौल है कि लफ़्ज़ अल्लाह तअल्लाहु से
बना हैं जिसके मानी बन्दगी और इबादत के हैं अलाहू, इलाहतुन (बाबे फ़तहा से) इस्तेमाल होता
है जैसे: उसने इबादत करने के तरीक़ा से इबादत की) बाज़ उलमा कहते हैं कि यह लफ़्ज़
अलहुन से मुशतक़ है जिसके मानी एतमाद करने के हैं जैसा कि कहते हैं अलहत इला फ़लानिन
अलहा, मैं ने फ़लां शख़्स पर भरोसा किया, इस सूरत से अल्लाह को इलाह कहने की वजह यह
है कि मसाइब और अग़राज़ के तेहत बन्दे घबरा कर अल्लाह की तरफ़ रूजुअ करते हैं और
उसके सामने तज़र्रोअ़ व ज़ारी करते हैं। अल्लाह उनको पनाह देता है पस इलाह के मानी हुए
वह ज़ात जिस की पनाह ली जाए जिस तरह इमाम उसको कहते हैं जिसकी लोग पैरवी करें,
बन्दे नफ़ा व नुक़सान में नाचार व मजबूर होकर उसी की तरफ़ रूजूअ़ करते हैं।

अबू अम्र बिन उला का क़ौल है कि लफ़्ज़ इलाह अलहत फिश शय से मुशतक़ है यानी जब बन्दा हैरान व परेशान होता है और जब कोई राह न [illegible] पाता तो वह उसको [illegible] नाम से पुकारता है, तमाम इन्सानी उकूल, अल्लाह तआ़ला की अज़मत व इंसाफ़ की कुनह और हक़ीक़त की मारफ़त में हैरान हैं पस उसका नाम इलाह यानी हैरत में डालने वाला क़रार पाया जिस तरह मकतूब के लिए कातिब और महसूब के लिए हिसाब नाम [illegible] गया यानी किताब बमानी मकतूब और हिसाब बमानी महसूब।

मोबर्रद (नहवी) कहते हैं कि यह लफ़्ज़ अलहत से मुशतक़ है। अरब कहते हैं अलहत इला फुलानिन यानी मैं ने फ़लां शख़्स के पास आराम व सुकून हासिल किया, चुनान्चे मख़्लूक़ को भी अल्लाह की याद से आराम और सुकून हासिल होता है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: आगाह हो कि अल्लाह के ज़िक्र से [illegible] चैन और आराम [illegible] बाज़ लोग कहते हैं कि इलाहुन की असल वलहुन से मुशतक़ है और इसकी असल माद्दा वलहुन है जिसके मानी हैं किसी अज़ीज़ के न मिलने से होश व हवास का ग़ाइब हो जाना या अक़्ल से आजिज़ रहना, चूंकि अल्लाह की याद के वक़्त शौक़ की शिद्दत, मोहब्बत के ग़लबा और दिली बेक़रारी के बाएस होश व हवास जाते रहते हैं। अक़्ल आजिज़ रह जाती है पस उसमें गुम होने की बिना पर उसका यह नाम रखा गया, बाज़ ने कहा है कि इसका असल माद्दा लूहुन है इसकी असल सिर्फ़ लाहुन थी और वलहुन के मानी हैं परदा में छुप कर आने वाला चूंकि अहले अरब जब किसी चीज़ को पहचानते हों फिर वह नज़र से ओझल हो जाए तो उस वक़्त लाहुन बोलते हैं चुनान्चे जब उरूस नौ परदे में चली जाती तो उस वक़्त वह कहते है लाहतुलउरूस तलवह लौहन चूंकि अल्लाह तआ़ला की रूबूबीयत दलाइल व शवाहिद के साथ ज़ाहिर है और बएतेबारे कैफ़ीयत, औहाम से वह परदे में छुपा है। बाज़ लोग कहते हैं इलाहुन के मानी हैं बलन्द व बरतर लाहा (ज़ाद) बलन्द हो गया इसी मानी के एतबार से सूरज को इलाहतुन कहा गया है बाज़ उलमा इस बात के क़ाएल हैं इलाहुन के मानी हैं इजाद की क़ुदरत रखने वाला। बाज़ ने इसके मानी सरदार बयान किये हैं।

अर्रहमानिर्रहीम के मानी में बाज़ उलमा का यह ख़याल है कि यह दोनों अल्फ़ाज़ हम मआनी हैं यानी रहमत, रहमान और रहीम दोनों सिफ़ाते ज़ातिया हैं गोया रहमते सिफ़त ज़ाती है। बाज़ उलमा कहते हैं कि रहमत के मानी मुस्तहिक़े अज़ाब को अज़ाब न देना और जो मुस्तहिक़े ख़ैर

न हो उसके साथ भलाई करने के हैं इस लिहाज़ से यह दोनों असमाए सिफ़ात फ़ेअ़ल में से हैं यानी सिफ़ते फ़ेलिया (सिफ़ते मुशब्बा) बाज़ उलमा ने दोनों में फ़र्क़ बयान किया है चुनान्चे वह कहते हैं कि अर्रहमान मुबालग़ा का सीग़ा है जिसके मानी यह हैं कि उसकी रहमत हर चीज़ को अपने अन्दर समाए हुए है और रहीम का दर्जा रहमान से (मआनन) कम है। बाज़ उलमा कहते हैं कि अर्रहमान के मानी अपनी तमाम मख़लूक़ पर मेहरबानी करने वाले के हैं ख़्वाह वह मख़लूक़ मोमिन हो या काफ़िर, ख़्वाह नेक हो या बदकार, रहमत व मेहरबान यह है कि वह सब ही को रोज़ी देता है, अल्लाह तआला का इरशाद है: मेरी रहमत हर शइ को अपने अन्दर समोए हुए है और अर्रहीम के मानी हैं कि वह ख़ास मोमिनों पर रहम करने वाला है चुनान्चे दुनिया में हिदायत व तौफ़ीक़ और आख़िरत में जन्नत और दीदार के इनामात मोमिनों के लिए मख़सूस हैं। इस लिहाज़ से रहमान का लफ़्ज़ ख़ास है और मानी आम और रहीम का लफ़्ज़ आम है और मानी ख़ास। लफ़्ज़ रहमान का इतलाक़ अल्लाह के सिवा किसी और पर नहीं हो सकता इसलिए यह लफ़्ज़ ख़ास है और चूंकि तमाम मख़लूक़ को अल्ला[illegible] ही ने पैदा किया है [illegible] वही उसको रिज़्क़ देता है, वही हर क़िस्म के नफ़ा व नुक़्सान का मा[illegible] है और उसकी रहम[illegible] तमाम मौजूदात के शामिले हाल है पस माअनी की इस हमागीरी के बाए[illegible] उसको रह[illegible] कह[illegible] हैं लेकिन लफ़्ज़ रहीम मुशतरक है यानी दूसरों पर भी इसका इतलाक़ [illegible]ता है इसलि[illegible] लफ़्[illegible] आम है लेकिन इसके मानी मख़सूस हैं यानी ख़ास मेहरबानी और हिदा[illegible] तौफ़ीक़। [illegible]स माअनी के लिहाज़ से यह ख़ास हुआ।

हज़रत इ[illegible] अब्बास [illegible]ते हैं कि [illegible] दोनों [illegible]समा (रहमान [illegible] रहीम) दक़ीक़ हैं और एक दूसरे से दक़ीक़ तर। [illegible]जाहिद [illegible]माते हैं कि [illegible] वा[illegible] पर मेहरब[illegible] फ़रमाने के लिहाज़ से वह रहमान है और आख़िरत [illegible]लों पर (करम [illegible] व राहत फ़[illegible]माने [illegible]म है। दुआ में या रहमानुद्दुनिया और या रहीमुल आख़िर[illegible] कहा ग[illegible] है। ज़हह[illegible] कहते हैं [illegible] आ[illegible] वालों पर रहमान है उनको आसमानों में रखा [illegible] को उनकी गरदन का तौक़ बना दिया गुनाहों से उनको महफ़ूज़ रखा और तमाम दुनियावी [illegible] और खाने पीने से उनको दूर रखा, वह अर्रहीम ज़मीन वालो पर है कि उनके पास (हिदायत के [illegible]) पैग़म्बरों को भेजा और किताबें उतारीं।

इकरमा का क़ौल है [illegible] अल्लाह अर्रहमान है। एक ही हमागीर रहमत के साथ और रहीम सौ मुतफ़र्रिक़ रहमतों के साथ है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहो अन्हो से मरवी है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की सौ रहमतें हैं उनमें से एक रहमत (बिला शुबा) उसने ज़मीन पर भेजी और उसे अपनी तमाम मख़लूक़ में तक़सीम फ़रमाया इसी एक रहमत के बाएस वह एक दूसरे पर मेहरबानी और शफ़क़त करते हैं और रहमत के बाक़ी निन्नानवे हिस्से अपनी ज़ात के लिए मख़सूस फ़रमाए जिससे वह क़यामत के दिन अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएगा।

एक दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह तआला अपनी उस एक रहमत को अपनी बाक़ी निन्नानवे (हिस्से) रहमतों के साथ मिलाने वाला है और इस तरह अपनी सौ रहमतें पूरी करके क़यामत के दिन उनके ज़रिये अपने बन्दों पर रहम फ़रमाएगा। रहमान वह है कि जब उससे कोई मांगे वह अता फ़रमाए और रहीम वह है जब उससे न मांगा जाए तो ग़ज़ब फ़रमाए। हज़रत अबु हुरैरा से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो अल्लाह तआला से नहीं मांगता वह उसपर ग़ज़ब फ़रमाता है।

अर्रहमान वह है जो नेमतों के साथ मेहरबानी फ़रमाता है, अल्लाह रहीम है जिसने तकालीफ़ को रोका और दफ़ा फ़रमाया, अल्लाह रहमान है उसने दोज़ख़ से बचाया। अल्लाह का इरशाद है: और तुम आतिशे जहन्नम के किनारे पर थे तो उसने तुमको उससे नजात बख़्शी। उसी नेमत की तरफ़ इशारा है और अर्रहीम वह है जो जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। जैसा कि ख़ुद फ़रमाया तुम जन्नत में सलामती और अमन के साथ दाख़िल हो जाओ। अल्लाह तआला रहमान है उसकी रहमत जानों पर है और रहीम है कि उसकी रहमत दिलों पर है।

अल्लाह रहमान है वह मुसीबतों को दूर करता है रहीम है कि गुनाहों को माफ़ फ़रमाता है, अल्लाह रहमान है कि सही और ग़लत रास्ता वाज़ेह कर देता है और इस एतबार से रहीम है कि (ग़लत रास्ता से) बचाता है और (राहे रास्त पर चलने की) तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है, अल्लाह रहमान है गुनाह माफ़ फ़रमाता है ख़्वाह वह कबीरा ही क्यों न हों, ताअ़तों को क़बूल फ़रमाता है ख़्वाह ख़ालिस न हों इसलिए कि इस एतबार से रहीम है। अल्लाह रहमान है कि वह मआश की दुरुस्ती के अस्बाब फ़राहम करता है और रहीम है कि आख़िरत को दुरुस्त करने के ज़राये इनायत करता है। रहमान वह है जो रहम फ़रमाता है और दुख, दर्द और ग़म को दूर करने की कुदरत रखता है, रहीम वह है जो रिज़्क़ देता है और दूसरों को खाना खिलाता है और ख़ुद नहीं खाता, बिला शुबा अल्लाह तआला ही रिज़्क़ देने वाला और मज़बूत कुव्वत का मालिक है। वह उस पर भी रहमान है जो उसका मुनकिर है और उसपर भी रहीम है जो उसको न माने, वह उस पर भी रहमान है जो उसकी न शुक्री करे और वह उसपर भी रहीम है जो उसका शुक्र बजा लाए, वह उसपर भी रहमान है जो दूसरे को उसका शरीक ठहराए, मुशरिक पर भी रहम फ़रमाता है और उसपर भी रहीम है जो उसके मालिक होने का क़ाएल है।

बिस्मिल्लाह के फ़ाइदे

तुम बिस्मिल्लाह पढ़ा करो ताकि अल्लाह की तरफ़ से गुनाहों की माफ़ी पाओ, यह फ़ाइदा तो लोगों की ज़बानी (यानी मगफ़िरत व माफ़ी) सुनने पर है जब हक़ तआला से यह सुनोगे तो क्या कुछ फ़ाइदा होगा। तुम्हारा यह सुनना तो इस हाल में है कि ग़मे दुनिया मौजूद है लेकिन उस वक़्त यह सुनना कैसा होगा जब वह ख़ुद साक़ी होगा। अब तो तुम्हारा यह सुनना वास्ते के साथ है लेकिन बग़ैर वास्ता के सुनना कैसा होगा। तुम्हारा अब सुनना तो धोके के घर में सुनना है लेकिन वह सुनना क्या होगा जब तुम सरवर (दारूल आख़िरत) के घर में सुनोगे तो, अब तो तुम्हारा यह सुनना शैतान के घर में है लेकिन तुम्हारा वह सुनना कैसा होगा जो रहमान के साया में होगा। तुम्हारा अब सुनना तो एक कमज़ोर बन्दे से सुनना है लेकिन तुम्हारा यह सुनना उस वक़्त कैसा होगा जो बादशाह रब्बुल जलील की तरफ़ से होगा, यह तो सिर्फ़ ख़बर की लज़्ज़त है तो नज़र की लज़्ज़त कैसी होगी, यह तो मुजाहदे की लज़्ज़त है तो मुशाहदे की लज़्ज़त कैसी होगी? यह बयान की लज़्ज़त है तो ईमान की लज़्ज़त कैसी होगी? यह मग़ाइबा (ग़याब) की लज़्ज़त है तो अन्दाज़ा करो कि हुज़ूरी की लज़्ज़त कैसी होगी।

बिस्मिल्लाह की मज़ीद तशरीह

तुम उस अल्लाह का नाम लो जो अज़दाद से पाक है, उस ख़ुदा के नाम के साथ शुरू करो

जो शरीकों से मोनज़्ज़ा है, उस ख़ुदा का नाम ले कर जो औलाद के बनाने से पाक है, उस ख़ुदा के नाम की बरकत से जिसने नूरों को रौशनी बख़्शी, उस ख़ुदा के नाम की मदद से जिसने नेक लोगों को इज़्ज़त बख़्शी, उस ख़ुदा का नाम लो जिसने तमाम अंदाज़े मुक़र्रर फ़रमाए दिलों और आंखों को रौशनी अता की और उस ख़ुदा के नाम से ज़ो नेकों के दिलो में सहर के वक़्त जलवा अंदाज़ होता है, उस ख़ुदा के नाम की बरकत से जिसने दोस्तों को अपने असरार का इल्म अता फ़रमाया। उनके कुलूब को अनवार से ढांप लिया और उनके दिलों में अपने राज़ बतौर अमानत रखे, उनके कुलूब से ख़तरात दूर किए और ग़ैरों की बन्दगी से महफ़ूज़ व मामून रखा, उनसे बोझों, बन्दिशों और गुनाहों के अम्बारों को दूर रखा क्योंकि अल्लाह तआ़ला अज़ल ही से मेहरबानी करने और मग़फ़िरत चाहने वालों के गुनाह माफ़ कर देने की सिफ़त के साथ मुत्तसिफ़ है।

कहो बिस्मिल्लाह उसका नाम है जिसने दरिया जारी किये, दरख़्त उगाए, यह उसका नाम है जिसने इताअ़त शिआर बन्दों के साथ शहरों को आबाद किया और उन बन्दों को पहाड़ों की तरह औताद (मीख़ें) बनाया जिन की वजह से ज़मीन अपने सुक्कान के लिए फ़र्श की तरह हो गई, यह लोग चालीस बरगुज़ीदा अबदाल हैं यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की पाकी बयान करते हैं। उसकी ज़ात में किसी के शरीक और उसका हमसर होने से (यह अबदाल अल्लाह की पाकी बयान करते हैं और उसके शरीक और हमसर होने की नफ़ी करते हैं) यह अबदाल दुनिया में बादशाह हैं और क़यामत के दिन सिफ़ारिश करने वाले हैं इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने उन को जहान की तदबीर करने और बन्दों पर लुत्फ़े करम करने के लिए पैदा किया है।

बिस्मिल्लाह की बरकत

बिस्मिल्लाह अपने ज़ाकिरों का ज़ख़ीरा है, ताक़तवर लोगों के लिए इज़्ज़त है कमज़ोरों के लिए मलजा व मावा, महबूबों के लिए नूर और मुशताक़ों के लिए समन्दर है। बिस्मिल्लाह अरवाह की राहत है और जिस्मों की नजात है, सीनों का नूर है और तमाम कामों की दुरूस्ती का निज़ाम है, बिस्मिल्लाह अहले [illegible] का ताज और अहले विसाल का चिराग़ है। आशिक़ों को बिस्मिल्लाह सारे जहां से बे नियाज़ कर देने वाली है। बिस्मिल्लाह उस ज़ात का नाम है जिसने कुछ बन्दों को इज़्ज़त और कुछ बन्दों को ज़िल्लत दी। यह उसका नाम है जिसने अपने दुशमनों के लिए जहन्नम को मुन्तज़िर बनाया और अपने दोस्तों के लिए अपने दीदार का वादा फ़रमाया यह उसका नाम है जो वाहिद है और गिन्ती से ख़ारिज है। यह उसका नाम है जो बाक़ी है और बे ग़ायत (निहायत) है, बिस्मिल्लाह उसका नाम है जो बग़ैर किसी सहारे के क़ाइम है।

बिस्मिल्लाह हर सूरत का आग़ाज़ है यह उसका नाम है जिसके (ज़िक्र की) बदौलत ख़ल्वतें पुर कैफ़ हो जाती हैं, उसका नाम है जिसके नाम से नमाज़ें तमाम होती हैं, उसका नाम है जिस पर सबको हुस्ने ज़न है, उसका नाम है जिसके लिए आंखें बेदार रहती हैं, उसका नाम है जिस के कुन फ़रमाने से वह चीज़ फ़ौरन (मौजूद) हो जाती है। बिस्मिल्लाह उसका नाम है जो लम्स से मोनज़्ज़ा व पाक है, उसका नाम है जो लोगों से बे नियाज़ है, उसका नाम है जो क़यास से बरतर है। लिहाज़ा तुम बिस्मिल्लाह पढ़ो। हर हर्फ़ के बदले एक एक हज़ार अज्र तुम को मिलेंगे और तुम्हारे सबके सब गुनाह मिटा दिए जायेंगे जिसने उसको अपनी ज़बान से कहा दुनिया उस की गवाह बनी है जिसने उसे अपने दिल में कहा आख़िरत उसकी शाहिद होती है और जिसने

उसको पोशीदा तौर पर कहा मौला (अज़्ज़ा व जल्ला) उसका गवाह होता है, उस में वह हलावत है कि पढ़ने वाले का दहन शीरीं बन जाता है, उसके पढ़ने से दिल में कोई ग़म बाक़ी नहीं रहता, सब नेमतें इस कलिमा पर तमाम हो गईं, जलाल और जमाल दोनों बिस्मिल्लाह में यकजा हैं, लफ़्ज़ बिस्मिल्लाह जलाल अन्दर जलाल है और अर्रहमानिर्रहीम जमाल दर जमाल है। जिसने जलाल का मुशाहिदा किया फ़ना हो गया और जिसने जमाल का नज़ारा किया जिन्दा हो गया। बिस्मिल्लाह ऐसा कलिमा है जो कुदरत और रहमत दोनों का जामेअ़ है उसमें कुदरत भी है और रहमत भी। कुदरत ने मुतीअ़ व फ़रमांबरदार बन्दों को जमा किया और रहमत ने गुनहगारों के गुनाह धो डाले।

अल्लाह तआ़ला का हुक्म है कि बिस्मिल्लाह पढ़ो। गोया वह फ़रमाता है कि जिसने मेरी ताअ़त की वह मेरी हुज़ूरी में बारयाब हो गया और नूरे ताअ़त के बदौलत उसको मुआइना हासिल होता है और जिसको मुआइना (की दौलत) नसीब हो वह, बयान से बे नियाज़ हो जाता है, उस का दिल असरार और उलूमे अदयान का ज़र्फ़ बन जाता है, जिसने अपने महबूब का विसाल पाया वह अश्कबारी और इज़्तेरार से आज़ाद हो गया, जिसने नज़र से उसके जमाल का मुशाहिदा किया वह ख़बर (आगाही) से बे परवा हो गया, जो बारगाहे समदियत तक पहुंच गया वह रन्ज व ग़म से नजात पा गया। जिसको ज़ाते अक़दस का क़ुर्ब हासिल हो पाया उसको फ़िराक़ व जुदाई से नजात मिल गई और जिसने दौलते दीदार पा [illegible] शक़ावत के बद बख़्ती से मसऊन व मामून हो गया।

बिस्मिल्लाह की सिफ़त

तुम बिस्मिल्लाह कहो क्योंकि बा मख़लूक़ को पैदा करने वाले बारियुन (अल बराया) की है, सीन ख़ताओं की परदा पोशी करने वाले (सत्तार [illegible]) और मीम नेमत व अता के साथ एहसान करने वाले (मन्ना [illegible] अतायाः)। एक क़ौल है कि बा औलाद से बरी होती है, सीन आवाज़ों (पकारों) के सुनने वाले और मीम दुआओं के क़बूल करने वाले से मुराद है। मीम की तशरीह व तसरीह में कहा गया है कि मैं बाक़ी (ग़ैर फ़ानी) हूं, मेरी तरफ़ देखो तुम दूसरों को पिलाओ मैं तुम्हारा साक़ी हूं तुमको पिलाऊंगा तुम दूसरों को खिलाओ मैं तुम्हारा मुतईम हूं तुम को खिलाउंगा।

एक क़ौल है कि बा से बका ताएबीन (तौबा करने वालों की गिरया व ज़ारी) और सीन से सुजूदुल आबेदीन (इबादत करने वालों के सज्दे) और मीम से मुज़नेबून (गुनाहगारों) की उज़्र ख़्वाही है यह भी कहा गया है कि बा बलाया की मीम मोअ़ती और सीन सातिर की है यानी अल्लाह तआ़ला मसाइब को दूर करने वाला, रहमान, बख़्शीशें और इनामात देने वाला और रहीम गुनाहों को छुपाने वाला है। यह भी कहा गया है कि अल्लाह अहले इरफ़ान के लिए अल्लाह है और इबादत गुज़ार बन्दों के लिए रहमान और गुनहगारों के लिए रहीम है।

अल्लाह वह है जिसने तुमको पैदा किया और वह कितना अच्छा पैदा करने वाला है, अर्रहमान है जिसने तुमको रोज़ी दी और वह कितना अच्छा रोज़ी देने वाला है। अर्रहीम है जो तुम्हारे गुनाहों को बख़्शने वाला है और वह कितना अच्छा बख़्शिश करने वाला है।

यह भी कहा गया है कि अल्लाह वह है जो भरपूर नेमतों का देने वाला है वह रहमान व रहीम

है जूद व अता करता है वह अल्लाह है जो माओं के पेटों से हमको बाहर निकालता है, वह रहमान है क़ब्रों से बाहर निकाल कर लाएगा, रहीम है तारीकी से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाता है।

शैतान की मुख़ालफ़त रहमते इलाही

अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहम फ़रमाए जिसने शैतान के ख़िलाफ़ किया और गुनाहों से दूर रहा वह दोज़ख़ से बचा, अल्लाह तआला उसको नेकियों की मज़ीद हिम्मत दे और रहमान के ज़िक्र में हमेशा उसको मशगूल व मसरूफ़ रखे क्योंकि उसने बिस्मिल्लाह कहा है।

अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहम फ़रमाए जिसने अल्लाह को मज़बूत पकड़ा उसकी तरफ़ रुजू हुआ, उसने अल्लाह पर तवक्कुल किया और उसके ज़िक्र में मशगूल रहा क्योंकि उसने बिस्मिल्लाह पढ़ी है, अल्लाह तआला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जिसने दुनिया से नफ़रत की और आख़िरत का शाइक़ रहा और तकलीफ़ों पर सब्र और अल्लाह की नेमतों पर शुक्र अदा किया, मौला के ज़िक्र में हमेशा महव रहा क्योंकि उसने बिस्मिल्लाह कहा है।

तबरीक व तहनीयत है उस बन्दे के लिए जिसने शैतान से परहेज किया और कुव्वते ला यमूत पर क़नाअत की (बक़द्र ज़रूरत रोज़ी हासिल करने पर) और उस ख़ुदा के ज़िक्र में मसरूफ़ व मशगूल रहा जो हय्यो ला यमूत है, लिहाज़ा तुम भी बिस्मिल्लाह कहो।

मजलिस सोम

व तूबू इलल्लाहि जमीअन

की तशरीह व तफ़सीर

तौबा के मानी

अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह की तरफ़ रुजू हो ताकि तुम फ़लाह पाओ। यह ख़िताब तौबा करने के बारे में आम है। लुग़वी एतबार से तौबा के मानी रुजू करना है। चुनान्चे कहते हैं ताब फ़लां मिन कज़ा यानी फ़लां शख़्स इस बात से बाज़ आ गया, इस्तेलाहे शरअ में तौबा हर शरई मज़मूम से बाज़ रह कर शरई महमूद की तरफ़ पलट आने का नाम है यानी जो चीज़ शरअन बुरी है उसको छोड़ कर जो चीज़ शरअन अच्छी और पसन्दीदा है उसकी तरफ़ रुजू करना तौबा है।

इस बात का यक़ीन रखना कि गुनाह और नाफ़रमानियां हलाकत में डालने वाली, अल्लाह और जन्नत से दूर करने वाली हैं। नीज़ गुनाहों को तर्क करना जो अल्लाह और जन्नत से कुरबत का मौजिब है, तौबा है गोया अल्लाह तआला हुक्म देता है कि ख़्वाहिशात परस्ती न करो हवा व हवस को छोड़कर मेरी तरफ़ लौटो, उम्मीद रखो कि आख़िरत में मेरे पास मुराद पाओगे, हमेशा रहने वाले घर में मेरी नेमतों के अन्दर तुम हमेशा रहोगे फ़लाह व कामयाबी नजात से हमकिनार हो कर मेरी रहमत के साथ जन्नत के ऐसे बुलन्द दर्जों पर जिनको नेको कारों के लिए तैयार

किया गया है, फायज़ होगे, यह ख़िताब अल्लाह तआला ने मुसलमानों से ख़ुसूसियत के साथ फ़रमाया है।

ऐ ईमान वालों! ख़ालिस तौबा के साथ अल्लाह की तरफ़ रुजू हो जाओ, क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाहों को तुम से बदल दे (माफ़ फ़रमा दे) और तुमको उन बाग़ों में भेज दे जिनके नीचे नहरें रवां हैं।

नसूह के मानी ख़ालिस के हैं तौबतन्नसूह का मतलब यह है कि तुम अल्लाह की तरफ़ इस तरह रुजू हो कि वह मक्र व फ़रेब के शायेबा से ख़ाली हो। नसूह नसाह से माख़ूज़ है जिसके मानी धागे के है पस तौबतन्नसूह वह ख़ालिस तौबा है जो न किसी दूसरी चीज़ से वाबस्ता हो और न कोई दूसरी चीज़ उससे मुताल्लिक़ हो, बन्दा ताअ़त पर क़ाएम हो जाये, गुनाह की तरफ़ माएल न हो ख़ुलूस के साथ अल्लाह की तरफ़ माएल हो जाए जिस तरह कि (पहले) उसने ख़ालिसन हवाए नफ़्स की ख़ातिर गुनाह का इर्तिकाब किया था यहां तक कि (उस हाल में) उस का ख़ातमा हो जाए। ब इजमाए उम्मत तमाम गुनाहों से तौबा करने वाजिब है, अल्लाह तआला ने गुनाहों से तौबा करने वालों का ज़िक्र मुतअद्दिद जगह (कुरआन हकीम में) फ़रमाया है: अल्लाह तौबा करने वालों को पसन्द फ़रमाता है और गुनाहों से पाक रहने वालों को पसन्द फ़रमाता है। इस आयत में यह सराहत फ़रमाई है कि तौबा करने वालों को तौबा करने और अल्लाह से दूर कर देने वाले गुनाहों से पाक होने की वजह से अल्लाह उनको पसन्द फ़रमाता है। एक और जगह इरशाद फ़रमाया है:

वह तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द बजा लाने वाले, रुजू करने वाले, रुकूअ करने वाले, सजदा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, बुराई से मना करने वाले, हुदूदे इलाही की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, मोमिनों को आप ख़ुश ख़बरी सुना दीजिए।

इस आयत में अल्लाह तआला ने तौबा करने वालों का ज़िक्र किया और फिर उनके आला और उम्दा औसाफ़ का ज़िक्र फ़रमाया कि तौबा करने वाले वह हैं जो इन ख़ुसूसियात और औसाफ़ के हामिल हैं और बशरुल मोमिनीन फ़रमा कर बताया कि जब बन्दा उन औसाफ़ का हामिल हो जाता है तो वह ईमान और बशारत का मुस्तहिक़ हो गया।

गुनाहे सग़ीरा और कबीरा

कौन से गुनाह सग़ीरा और कौन से गुनाह कबीरा हैं जिन गुनाहों से तौबा करने का हुक्म दिया गया है उनमें सग़ीरा भी हैं और कबीरा भी। कौन कौन से गुनाह कबाइर में शुमार होते हैं उनकी तादाद की तअय्युन में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ उलमा ने तीन, बाज़ के चार, किसी ने सात, किसी ने नौ और किसी ने उनकी तादाद ग्यारह बताई है। हज़रत इब्ने अब्बास तक जब हज़रत उमर का यह क़ौल पहुंचा कि कबाइर सिर्फ़ सात हैं तो आपने फ़रमाया कि सात कहने से तो सत्तर कहना बेहतर था। आप फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआला ने जिसकी मुमानियत फ़रमा दी है वह कबीरा है। बाज़ उलमा ने कहा है कि कबीरा की तादाद मुबहम है उनकी सही तादाद को कोई नहीं जानता, उसी तरह जैसे कि लैलतुलक़द्र और जुमा के दिन की ख़ास मक़बूल साअ़तों को कोई नहीं जानता (इसमें राज़ यह है कि) ताकि लोग कोशिश और हुसूले

तलब में ज़्यादा से ज़्यादा रागिब हों यही हाल कबाइर का है (कि सही तादाद नहीं बताई गयी) ताकि लोग तमाम गुनाहों से बचने के लिए ज़्यादा सख़्ती से काम लें।

बाज़ का क़ौल है कि हर वह गुनाह जिसकी सज़ा में दोज़ख़ की वईद है वह कबीरा है, बाज़ का क़ौल है कि कबीरा वह गुनाह है जिसकी दुनयवी सज़ा (हद्दे शरई) मुक़र्रर कर दी गई है। बाज़ उलमा ने कहा है कि कबाइर सतरह हैं उनमें चार का ताल्लुक़ दिल से है (1)शिर्क (2)गुनाह पर जमे रहना (3)ख़ुदा की रहमत से मायूसी (4)अल्लाह ने जो ढील और छूट दे रखी है उससे बे ख़ौफ़ बन जाना। चार का ताल्लुक़ ज़बान से है यानी झूटी गवाही देना, पाक दामन पर ज़िना की तोहमत लगाना (ख़्वाह मर्द हो या औरत) झूटी क़सम खाना जिसकी वजह से हक़ को बातिल और बातिल को हक़ क़रार दिया जाये या उस झूटी क़सम की वजह से किसी मुसलमान का माल मारा जाए (ख़्वाह वह बक़द्र एक मिसवाक ही क्यों न हो) चौथे जादू, तीन कबाइर का ताल्लुक़ पेट से है शराब और दूसरी नशा आवर चीज़ें पीना। यतीम का माल बग़ैर हक़ के खाना, दानिस्ता और जान बूझ कर सूद खाना, दो का ताल्लुक़ उज़्वे मख़सूस से है। ज़िना और लिवातत (फ़ेअल ग़ैर वज़अ फ़ितरी) दो का ताल्लुक़ हाथों से है क़त्ल करना और चोरी करना, एक का ताल्लुक़ पावं से है। जिहाद मे दुशमन के मुक़ाबले से भागना (एक का दो के मुक़ाबले से और दस का बीस के मुक़ाबिल से, सौ का दो सौ के मुक़ाबले से फ़रार करना) एक गुनाह ऐसा है जिसका ताल्लुक़ तमाम बदन से है, मां बाप की नाफ़रमानी करना (यानी के वालदैन से रुगरदानी) वालदैन के हुक़ूक़ यह हैं कि जब वह तुम्हारे एतमाद पर क़सम खा लें तो तुम उनकी क़सम को नीचा न करो, अगर वह तुमको गाली दे तो तुम उसके बदला में उनको न मारो। अगर वह तुम से कुछ मांगें तो तुम देने से इंकार करो अगर वह भूके हों और तुम से खाना मांगे तो तुम उनको न खिलाओ यह तमाम बातें वालदैन के हुक़ूक़ से रुगरदानी और उनकी अदाएगी से फ़रार है।

सग़ीरा गुनाह

सग़ाएर

गुनाहे सग़ीरा बेशुमार हैं इनकी शिनाख़्त और इनकी तादाद के इज़हार का कोई तरीक़ा नहीं है सिर्फ़ शरई शहादत और बसीरत से इनको शिनाख़्त किया जा सकता है। शरअ का मक़सद तो यही है कि इन्सान का दिल गुनाहों से बाज़ रह कर मुतवज्जेह इलल्लाह हो जाए और अल्लाह तआला का क़ुर्ब उसे हासिल हो। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: ज़ाहिरी और बातिनी गुनाह छोड़ दो।

मन्दर्जा ज़ैल गुनाहे सग़ीरा में शुमार होते हैं किसी ख़ूबरु अजनबी औरत या मर्द की तरफ़ (जिन्सी तहरीक के तहत) देखना , उसका बोसा लेना, उसके साथ लेटना मगर जिमअ न करना, मुसलमान भाई को गाली देना और तोहमते ज़िना के अलावा किसी क़िस्म की और शर्म व आर दिलाने वाली बात कहना, मारना, ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, झूठ बोलना, इसके अलावा और ऐसी ही बहुत सी बातें सग़ीरा गुनाह में शुमार होती हैं।

अगर मोमिन कबीरा गुनाहों से तौबा कर लेता है तो सग़ीरा गुनाह उसके ज़िम्न में आ जाते हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है: अगर तुम गुनाहे कबीरा से इजतेनाब करोगे तो तुम्हारी छोटी

बुराईयां (सग़ीरा गुनाह) हम ख़ुद ही माफ़ कर देंगे।

लेकिन माफ़ी के इस इरशाद से किसी को लालच में न आना चाहिए बल्कि तमाम सग़ाएर व कबाएर से तौबा करना चाहिए। एक शायर का क़ौल है—वह जो छोटे और बड़े गुनाहों से पाक हो गया तो यह तक़वा और इस्तेक़ामते दीनी में शुमार होगा।

और इस तरह मोहतात रह कर जैसे ख़ारदार ज़मीन पर चलने वाला होता है तेरे लिये यही बेहतर है कि तुझको जो कांटा यानी गुनाह ज़िन्दगी की राह में नज़र आए उससे परहेज़ करे। तू सग़ीरा गुनाहों को हक़ीर न समझ बेशक पहाड़ पत्थरियों से ही बनते हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि एक मैदान में जहां न लकड़ियां मौजूद थीं और न कोई दूसरी चीज़ (लक़ व दक़ चटियल मैदान था) वहां रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने असहाब के साथ फ़रोकश हुए। हुज़ूर वाला ने लकड़ियां जमा करने का हुक्म दिया। सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हमें लकड़ियां तो नज़र ही नहीं आतीं। फ़रमाया किसी चीज़ को हक़ीर न जानो जो चीज़ मिले उसे ले आओ चुनांचे सहाबा कराम इधर उधर गए और कुछ न कुछ उठा लाए और एक जगह जमा कर दिया चुनांचे एक बड़ा ढेर हो गया। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुमको मालूम नहीं कि यही हाल उस ख़ैर व शर का है जिसको हक़ीर समझा जाता है, छोटा छोटे से और बड़ा बड़े से मिल कर और ख़ैर ख़ैर से, शर शर से मिल कर एक अंबार हो जाता है।

कहा गया है कि बन्दा जब गुनाहों को छोटा (और हक़ीर) जानता है तो वह अल्लाह के नज़दीक बड़ा होता है और बन्दा उसको बड़ा जानता है तो वह अल्लाह के नज़दीक छोटा होता है, बन्दए मोमिन का गुनाहे सग़ीरा को गुनाहे अज़ीम (गुनाहे कबीरा) जानना उसके ईमान के बड़े होने और मारफ़ते इलाही से ज़्यादा क़रीब होने के बाइस होता है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं: मोमिन अपने गुनाह को अपने ऊपर पहाड़ की तरह समझता है उसको डर होता है कि वह कहीं उसके ऊपर गिर न पड़े और मुनाफ़िक़ अपने गुनाह को नाक पर बैठी हुई मक्खी की तरह (हक़ीर) जानता है जिसको वह हाथ से उड़ा देता है, बाज़ उलमा ने कहा है कि यह ना क़ाबिले माफ़ी गुनाह है।

इन्सान का यह क़ौल कि काश मेरा अमल ऐसा ही होता (गुनाहे सग़ीरा की तरह) ऐसी बात कहना आदमी के ज़ोअफ़े ईमान, मारफ़त की कमी और अल्लाह तआला की अज़मत को न जानने की दलील है। अगर उसको अल्लाह तआला की अज़मत का इल्म (कुछ भी) होता तो वह छोटे (गुनाह) को बड़ा और हक़ीर को अज़ीम जानता, अल्लाह तआला ने किसी पैग़म्बर (अलैमिस्सलाम) के पास वही भेजी कि "हदिया की कमी का ख़्याल न करो बल्कि उसके भेजने वाले की अज़मत की तरफ़ देखो", तुम गुनाह के मामूली और छोटे होने को न देखो बल्कि जिस के सामने तुमने गुनाह किया है उसकी अज़मत का लिहाज़ करो इसी लिये कहा गया है कि जिसकी मंज़िलत और जिसका मरतबा बारगाहे इलाही में ज़्यादा वह किसी गुनाह को हक़ीर और छोटा नहीं समझता बल्कि हर उस अमल को जिससे अल्लाह तआला की हुक्म की मुख़ालफ़त होती है, कबीरा समझता है।

बाज़ सहाबा कराम ने ताबेईन से फ़रमाया "जो गुनाह तुमको बाल से ज़्यादा बारीक (हक़ीर) नजर आते हैं वह गुनाह हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में

पहाड़ की तरह हलाकत अंगेज़ नज़र आते थे"। इसकी वजह यह थी कि उनको रसूलुल्लाह और बारगाहे इलाही से क़ुर्ब हासिल था। इसी तरह आलिम से जो गुनाह सरज़द हो वह बड़ा समझा जाएगा और जाहिल अगर यही गुनाह करे तो उसको हक़ीर माना जाएगा। इसी तरह आसी से उन बातों (लग़ज़िशों) में दर गुज़र किया जाता है जिन बातों में आरिफ़ से दर गुज़र नहीं की जाती। आरिफ़ और आसी के इल्म, मारफ़त और उनके मरातिब में जिस क़दर तफ़ावुत है उसके लिहाज़ से यह फ़र्क़ व इम्तियाज़ है।

तौबा फ़र्ज़े ऐन है

लिहाज़ा तौबा हर शख़्स के हक़ में फ़र्ज़े ऐन है क्योंकि कोई शख़्स भी हाथ पांव के गुनाहो से ख़ाली नहीं (वह आलिम हो कि आमी) और अगर कोई उन आज़ा के गुनाह से ख़ाली है तो दिल ही से उसने गुनाह किया होगा और अगर यह भी न होगा तो उन शैतानी वसवसों से ख़ाली न होगा जो अल्लाह याद ग़ाफ़िल कर देने वाले होंगे और अगर ऐसा भी न होगा तो अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात की मारफ़त हासिल करने में कोताही और ग़फ़लत बरतने से तो कोई भी ख़ाली नहीं होगा। यह तमाम सूरतें अहले ईमान के अहवाल व मक़ामत के एतबार से अला क़दर मरातिब हैं। लिहाज़ा हर हाल के लिये ताआत, गुनाह और हुदूद व शरायत जुदा जुदा हैं, उन्ही हुदूद की (जो जिसके लिये मोअय्यन हैं) पाबन्दीए ताअत व बन्दगी है और उनसे ग़फ़लत या उनकी मुख़ालफ़त गुनाह है। इसलिये हर शख़्स तौबा का मोहताज है। यानी ज़रुरी है कि कजरवी उसके अंदर पैदा हो गई है उससे लौट जाए और शरीअत ने जो सीधा रास्ता उसके लिये मुक़र्रर कर दिया है जो मकाम उसको अता हुआ है और जो मंज़िल उसके लिये बना दी गई है उसी की तरफ़ मुतवज्जेह हो। चूंकि लोगों के मरातिब मुख़्तलिफ़ हैं इसलिये हर शख़्स की तौबा जुदागाना है, यानी तौबा की ज़रुरत में तो फ़र्क नहीं अलबत्ता नौईयत व मिक़दार में फ़र्क़ है। अवाम की तौबा तो गुनाहों से होती (यानी वह गुनाहों से तौबा करते हैं) लेकिन ख़्वास की तौबा ग़फ़लत से होती और खासूल ख़ास बन्दों की तौबा है, अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के सिवा किसी और तरफ़ दिल के मैलान से (यानी मासिवा की तरफ़ दिल का मैलान तौबा का बाइस होता है) जैसा कि हज़रत जून्नून मिसरी ने फ़रमाया कि अवाम गुनाहों से तौबा करते हैं और ख़्वास ग़फ़लत से। हज़रत अबूल हसन नूरी फ़रमाते हैं कि तौबा यह है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के अलावा हर चीज़ से तौबा करे। पस तौबा करने वालों के माबैन फ़र्क़ व इम्तियाज़ है कुछ तो गुनाहों से तौबा करते हैं और कुछ ताएबीन ऐसे हैं जो अपने हसनात (नेकियों) के देखने से तौबा करते हैं (यानी अपनी नेकियों का इज़हार व एतबार नहीं करते) और कुछ बन्दे ऐसे हैं जो ग़ैरे खुदा की तरफ़ तमानियते क़ल्ब से तौबा करते हैं (यानी मासिवा अल्लाह से अगर उनको तमानियतें क़ल्ब और सुकून व आसूदगी मयस्सर होती है तो उनके लिये तौबा का मौजिब बन जाती है) ग़ौर करो कि अंबीया कराम अलैहिमुस्सलाम भी तौबा से मुस्तग़नी नहीं हैं, देखो! हदीस शरीफ़ में आया है हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लभ ने इरशाद फ़रमाया मेरे क़ल्ब पर अब्र सा आ जाता है तो मैं दिन रात में अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल से सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूं।

हज़रत आदम की तौबा

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जब शजरे ममनूआ से कुछ खाया (शजरे ममनूआ का फल

खाया) और जिस्मे मुबारक से बहिश्ती लिबास उतर गया, आपका सतर खुल गया, सिर्फ़ ताज व कलग़ी सर पर बाक़ी रह गए। फ़रिश्तों ने उन दोनों को उतारने से हया की उस वक़्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और उन्होंने आपके सर से ताज और पेशानी से कलग़ी (पट्टी) को उतार लिया फिर आपको और हव्वा को हुक्म हुआ कि तुम और हव्वा मेरे कुर्ब से दूर हो जाओ (यहां निकल जाओ) ना फ़रमान मेरे कुर्ब में नहीं रह सकता। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने शरमाते हूए हज़रत हव्वा की तरफ़ देखा और फ़रमाया कि यह पहली शामते गुनाह है, कुर्बे हबीब (की मंज़िल) से हमको निकाल दिया गया, आराम बख़्श ज़िन्दगी और ख़ुशगवार ऐश के बाद, तज़र्रोअ़ और इलहाह व ज़ारी का मोहताज होना पड़ा है, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की यह हालत, अजीम सतवत, ज़बरदस्त फ़ज़ीलत, इज़्ज़त व नाज़ और सबसे ज़्यादा मामून व महफ़ूज़ जगह पर बलंद मरतबा रखने और अल्लाह तआला से बहुत ज्यादा कुरबत रखने के बावजूद हुई। अगर कोई भी तौबा से मुसतग़नी हो सकता था और दुश्मन (शैतान) की दुश्मनी, नफ़्स की नहूसत, शैतान की मक्कारी और दसीसा कारी से महफ़ूज़ रह सकता और मरतवा की बलंदी, इसमत व पाक दामनी और अल्लाह की कुरबत पर किसी को नाज़ हो सकता था तो यह बात हज़रत आदम के लिए सबसे ज़्यादा मौजू और मुनासिब थी (कि आप उन तमाम खुसूसियात व औसाफ़ से मुत्तसिफ़ थे) लेकिन बईं हमा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी तौबा से बेनियाज़ न रह सके यहां तक उन्होंने तौबा की और अल्लाह तआला ने उनकी तौबा क़बूल फ़रमा लिया। अल्लाह तआला का हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा के सिलसिला में इरशाद है

आदम ने अपने रब से कलिमाते तौबा सीखे तो रब ने उनकी तौबा क़बूल फ़रमाई बेशक वही तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।

हजरत इमाम हसन बिन अली मुर्तजा से मरवी है कि आप ने फ़रमाया जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्लाम की तौबा क़बूल फ़रमायी तो फ़रिश्तों ने उन्हें मुबारकबाद पेश की और जिब्रील, मिकाइल, इसराफ़ील (अलैहिमुस्सलाम) ने ख़िदमत में हाजिर होकर कहा! ऐ आदम! आप की आंखें ठंडी हों (दुआइया कलमात) कि अल्लाह तआला ने आप की तौबा क़बूल फ़रमा ली। यह सुनकर आदम अलैहिस्लाम ने फ़रमायाः ऐ जिब्रील! इस तौबा के क़बूल करने के बाद भी अगर बाज़ पुर्स हुई तो फिर मेरा ठिकाना नहीं। उसी वक़्त वही नाज़िल हुई अल्लाह तआला ने फ़रमाया! ऐ आदम तुम ने अपनी नस्ल को मशक़्क़त, तकलीफ़ और तौबा का वारिस बनाया है तो अब कोई मुझे पुकारेगा मैं लब्बैक फ़रमाऊंगा जिस तरह मैंने तुम्हारे लिए लब्बैक कहा था और जो कोई मुझ से मांगेगा मैं उस अता में बुख़्ल नहीं करूंगा क्योंकि मैं तो क़रीब हूं और क़बूल करने वाला हूं। ऐ आदम! मैं गुनाहो से तौबा करने वालो को जन्नत में जमा करुंगा और उनको उनकी क़ब्रों से शादा व फ़रहां उठाऊंगा और उनको उन दुआओं की क़बूलियत के बाइस (क़ब्रों से) शाद काम निकालूंगा।

हज़रत नूह अलैहिस्लाम का वाक़ेआ भी इसी तरह का है कि उनको अपनी आबरु बचाने के लिए ग़ैरत आई, काफ़िरो ने जब आप पर झुठलाया तो आप को उन पर सख़्त गुस्सा आया और आप की बददुआ से अल्लाह तआला ने तमाम अहले मशरिक़ व अहले मग़रिब (तमाम दुनिया) को ग़र्क़ कर दिया, आप ही आदमे सानी थे, आप ही की नस्ल से यह इंसान (तमाम दुनिया में) फैले

क्योंकि जो लोग आप की कश्ती में डूबने से महफ़ूज़ व मामून रहे उनमें से आप के तीनों फ़रज़न्द साम, हाम, और याफ़िस के अलावा किसी और के औलाद नहीं हुई इस शान और मरतबा के बावजूद आप ने बारगाहे इलाही में इस तरह दुआ की थी।

ऐ मेरे रब! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं कि मैं तुझ से ऐसी दरख़्वास्त करुं (ऐसा सवाल करुं) जिसका मुझे इल्म न हो और अगर तूने मुझे न बख़्शा और मुझ पर रहम न किया तो मै ज़ियाकारों में रहूंगा।

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह जलीलुल क़द्र (पैग़म्बर) थे। अल्लाह तआला ने उनको अपनी दोस्ती के लिए मुन्तख़ब फ़रमा लिया था उनको पैग़म्बरो और नबियो का बाप बनाया। एक और रिवायत में आया है उनकी औलाद और औलाद की औलाद में चार हज़ार पैग़म्बर हुए। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि हमने उन की औलाद को बाक़ी रखा (हम ने उनकी औलाद को बाक़ी रहने वाला बनाया) यहां तक कि हमारे पैग़म्बर सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान भी उन्ही की औलाद में हैं। वह भी बईं जलालते शान तौबा, इज़हारे इज्ज़ और अल्लाह तआला के सामने एहतियात से बेनियाज़ न थे चुनांचे हज़रत इब्राहीम ने मुनाज़ात इस तरह की:

वह ख़ुदा जिसने मुझे पैदा किया, वही मुझे रास्ता दिखाता है, वह ख़ुदा मुझे खिलाता पिलाता है और जब बीमार हो जाता हूं तो मुझे शिफ़ा अता करता है और वह ख़ुदा जो मुझे मौत देगा फ़िर मुझे ज़िन्दा करेगा वही ज़ात जिससे मैं क़यामत के दिन अपनी ख़ताओं की बख़्शिश का उम्मीद रखता हूं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सिलसिले में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है (हज़रत इब्राहीम के क़ौल को इस तरह बयान फ़रमाया है)

ऐ रब! हम को हमारी इबादत के तरीक़े सिखा और हम पर रहमत नाज़िल फ़रमा तू बडा तौबा करने वाला मेहरबान है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम एक जलीलुल क़द्र नबी थे वह ख़ुदा की हम कलामी से सरफ़राज़ हुए, अल्लाह तआला ने उनको अपने लिए पसन्द फ़रमाया और अपनी मोहब्बत उन पर इल्क़ा फ़रमाई (आप के दिल में डाल दी) ज़ाहिरी और बातिनी मोजज़ों से आप की ताईद फ़रमायी थी। जैसे यदे बैज़ा (चमकता हुआ हाथ) असा (जो ज़मीन पर डालने से अज़दहा बन जाता था) और वह नौ निशानियां जो सहराए तीह में अता हुईं जैसे रात में नूर का सुतून, मन व सलवा का नुज़ूल वग़ैरह यह वह मोजज़ात थे जो आप से पहले किसी नबी को अता नहीं हुए मगर आप ने इस तरह दुआ की थी:

इलाही! मुझे और मेरे भाई (हारुन) को बख़्श दे और हम को अपनी रहमत में दाख़िल कर तू ही तौबा करने वाला सबसे ज़्यादा मेहरबान है।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम जलीलुल क़द्र नबी थे और अल्लाह तआला ने उनको अज़ीम मुल्क अता फ़रमाया उनके दरबान तीस हज़ार अफ़राद थे और वह जब ज़ुबूर की तिलावत फ़रमाते थे तो उनके सर पर परिन्दे सफ़ बस्ता रुक जाते थे और पानी अपनी रवानी में बढ़ जाता था उनके गिर्द तमाम जिन्न व इन्स और दरिन्दे गज़िन्दे जानवर इस तरह परे के परे बांध कर

खड़े हो जाते थे और एक दूसरे को गज़न्द न पहुंचाते, पहाड़ तस्बीह करने लगते उनकी जलालते शान और उनके मनसब की हिफ़ाज़त की ख़ातिर आप की इज़्ज़त व अफ़ज़ाई के लिए और रोज़ी फ़राहम करने के लिए लोहे को नर्म कर दिया गया। इन तमाम कमालात के बावजूद आप सजदे में चालीस दिन तक रोये यहां तक की आप के आंसुओं की नमी से घास उग आयी तो अल्लाह तआला ने उन पर रहम फ़रमाया और उनकी तौबा क़बूल करते हुए इरशादे बारी तआला हुआ।

तो हम ने उनको माफ़ कर दिया और यक़ीनन हमारे पास उन को तक़र्रुब और एक अच्छा मक़ामे रूजु हासिल था।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम अज़ीम तर बादशाह हुए हैं हवा भी उनकी फ़रमाबरदार थी एक महीना का रास्ता दिन के निस्फ़े अव्वल में और एक महीना की राह दिन के निस्फ़े आख़िर में तय कर लिया करते थे और उनको ऐसी हुकूमत हासिल थी कि आप के बाद किसी को हासिल नहीं हुई इसके बावजूद जब उन पर उस लग़ज़िश की बिना पर अताब फ़रमाया गया। उनके इल्म के बग़ैर उनके घर में चालीस दिन तक एक [illegible] की पूजा की गई [illegible] चालीस रोज़ तक उनकी हुकूमत छीन ली गयी आप हैरान व परेशान होकर जिधर को मुंह [illegible] भाग खड़े हुए, हाथ फैला फैला कर सवाल करते थे मगर ख़ाने को कुछ नहीं मिलता [illegible] जब वह कहते कि मैं सुलैमान बिन दाऊद हूं मुझे कुछ खाने को दो तो उनका [illegible] फोड़ दिया जाता था, उन पर पत्थर फेंके जाते थे और तरह तरह की तौहीन की जाती, उनको झूठा समझा जाता था। एक रोज़ किसी के घर पर आप ने खाना मांगा तो धक्के दे कर वहां से निकाल दिये गये एक औरत ने आप के मुंह पर थूक दिया। रिवायत मे आया है कि एक ज़इफ़ा पेशाब से भरा हुआ आबख़ोरा लेकर निकली और सुलैमान के सर से उसको फोड़ दिया। ग़र्ज़ कि उस कस मपुरसी में आप चालीस रोज़ तक रहे, आख़िरकार अल्लाह तआला ने मछली के पेट से आप की अंगूठी बर आमद कर दी आपने उसको पकड़ लिया उस वक़्त परिन्दे आपके पास आकर खड़े हो गये तमाम जिन्नात, शयातीन और चरिन्दे [illegible] सब के सब आप के गिर्द हाज़िर हो गये आप की तज़लील करने वालों ने जब आप को पहचान लिया तो साबिक़ा सुबकी आमेज़ सुलूक के माज़रत ख़्वाह हुए, आपने जवाब में फ़रमाया जो कुछ तुमने इससे पहले किया मैं उस अमल पर तुम को मलामत नहीं करता और अब जो कुछ कर रहे हो उसको भी अच्छा नहीं कहता यह सब कुछ मेरे रब की तरफ़ से था और उससे कुछ और चारए कार ही न था। पस अल्लाह तआला ने उनका मुल्क उनको वापस कर दिया और फिर अपनी पनाह में ले लिया।

जब ऐसे बड़े बड़े सरदारों, पेशवाओं और साहिबाने हकम व वालियाने शरअ़ और अल्लाह के ख़ुल्फ़ा (पैग़म्बरों) का यह हाल था तो बेचारे तेरी क्या हस्ती! ऐ मिस्कीन और तेरा क्या इतराना! तू धोके के घर में शैतान के पास है। तुझे तो दुश्मनों का लश्कर घेरे हुए हैं, कहीं हवाए नफ़्स है तो कहीं शहवत, कहीं तमन्नाएं हैं, कहीं वसवसे, कहीं शैतान की मुलम्मअ़ कारी है लेकिन तो अपनी ज़ाहिरी इबादत, रोज़ा, नमाज़ और हज व ज़कात पर मग़रूर, अपने आज़ा को ज़ाहिरी डर से गुनाह से बाज़ रखने पर नाज़ां है, हालांकि तेरा बातिन, रुहानी इबादत से ख़ाली है, और वह कामिल परहेज़गारी, तक़वा, ज़ुहद, शक्र, सब्र व रज़ा बक़ज़ा, क़नाअ़त, तवक्कुल, तसलीम, तफ़वीज़, यक़ीन, मा सिवा अल्लाह से दिल का बचाओ, दिल की सख़ावत, एहसान शनासी, हुस्ने

नीयत, हुसने सुलूक, हुसने ज़न, हुसने अख़लाक़, हुसने सोहबत, हुसने मारफ़त, हुसने ताअत, सिद्क़ व इख़लास और दूसरे महासिन व फ़ज़ाईल अख़लाक़ से ख़ाली है। इसके बजाये तेरा बातिन बुरी ख़सलतों से भरपूर और ऐसे गुनाहों की जड़ों में जकड़ा हुआ है जिनसे हर क़िस्म की तकालीफ़, मसाएब और दुनिया व आख़िरत में हलाक करने वाली बलाएं फूटती हैं यानी तुझे मुफ़लिसी और मोहताजी का डर है, अल्लाह तआला की तक़दीर (तक़दीरे इलाही) से बेज़ारी व नाराज़गी, क़ज़ा व क़द्र पर एतराज़ और इस सिलसिले में तू ख़ुदा पर बोहतान बांधता है, उसके वादों पर तुझे शक है। तेरा दिल खोट, कीना, हसद, धोका फ़रेब, जाह तलबी, ख़ुद सताई, दुनिया में मंज़िलत की आरज़ू और उस पर ख़ुशनूदी और इतमिनाने क़ल्ब। अल्लाह के बन्दों पर तकब्बुर करता है, इतराता है जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो उसे इज़्ज़त गुनाह के साथ पकड़ लेती है।

हद से ज़्यादा ग़ैज़ व ग़ज़ब, असबीयत (बेजा तरफ़दारी), आर (नक चढ़ापन) सरदारी की मोहब्बत, बाहमी एनाद, अदावत, तमअ बुख़्ल, ख़ौफ़, इतराना, शैख़ी बघारना, दौलतमन्दों की ताज़ीम, मुफ़लिसों की तहक़ीर, फ़ख़्र, दुनयावी हि[illegible] मुबाहात, रिया, तअल्ली (शेख़ी) के बाइस हक़ से रूगरदानी, बेहुदा बातों में ग़ौर व फ़िक्र, यावा गोई की कसरत, लाफ़ ज़नी, दूसरों के अहवाल की टोह, और अपनी हालत से बे ख़बरी (हालांकि ख़ुद ख़बरी और अपनी हालत की निग्हदस्त भी एक गू ना इबादत है) अपनी मिलकियत [illegible], ख़ुदा के हाकिमों में अपनी क़ुव्वत और अपने ज़ोर पर ग़ौर करना, ख़ल्के ख़ुदा की हद से ज़्यादा (दुनियावी मामलात में) ताज़ीम करना और उसकी ख़ातिर से हक़ को छुपाना, अपने आमाल पर मग़रूर होना, झूठी तारीफ़ से ख़ुश होना, दूसरों की ऐब जूई करना, अपने ऐबों से चश्म पोशी, ख़ुदा की नेमतों को फ़रामोश कर देना, हर नेमत को अपनी ज़ात या किसी दूसरी मख़लूक़ से निसबत करना हालांकि तमाम मख़लूक़ अल्लाह ही अहकाम के ताबेअ और उसी की आलाए कार है, ज़ाहिर परस्ती करना उसूल और मुक़र्ररा हुदूद के तहफ़्फ़ुज़ का ख़्याल न करना, बेजा काम करना, ख़ुशी को पसन्द और ग़म से नफ़रत करना हालांकि ग़म व मलाल के बग़ैर दिल वीरान है जो दिल इससे आरी हैं उनमें हिकमत का फ़रोग़ और नूरे इलाही बुझ जाता है, हालांकि हिकमते इलाही नूर की फ़रावानी से हक़ तआला की क़ुरबत हासिल होती है, अल्लाह से दिल का लगाव पैदा हो जाता है, तवज्जोह के साथ बगोशे होश उसका कलाम सुनते हैं और उसके अहकाम का फ़हम पैदा हो जाता है तमाम मख़लूक़ से बे नियाज़ी हासिल हो जाती है, सआदते दवाम और लाज़वाल नजात और कामिल नेमत मयस्सर आती है। यही हिज़्न व मलाल नफ़्स की फ़रेब कारीयों से बचाने में मुआविन व मददगार होता है क्योंकि जब नफ़्स को ज़िल्लत पहुंचती है और बन्दा सब्र व शुक्र करता है तो उसको नेक बख़्ती हासिल होती है और अल्लाह तआला दोस्तों, उसके असफ़िया मुहिब्बीन, शोहदा, सालेहीन, उलमा व आरेफ़ीन और अंबीया अलैहिस्समुलाम के ज़ुमरा में उसको महसूब किया जाता है।

मगर तेरा हाल तो यह है कि तेरा बातिन दीन से तआवुन में सुस्ती करता है और हामियाने दीन, औलीयाए कामिलीन को (जिनकी दावत ख़ल्क़ के लिये हुज्जत है उनका अल्लाह की ताअत की तरफ़ बुलाना और ख़ुदावन्द तआला के अज़ाब व अताब से डराना और उसकी रहमत व जन्नत के वादे [illegible] ज़ाहिर में अपना भाई [illegible] है (भाई की

तरह उनकी मोहब्बत का मुद्दई है) मगर बातिन में उनसे मुख़ालफ़त रखता है और उन नेक और मुक़द्दस लोगों की मुवाफ़िक़त से गुरेज़ करता है हालांकि उनके दिल अल्लाह की मोहब्बत से चूर चूर हैं वह रहमान के दोस्त हैं और सारे जहां से मुंह मोड़ कर सिर्फ़ अल्लाह पर तवक्कुल किये बैठे हैं, शिद्दत के साथ मसाइब को बर्दाश्त करते हैं और इताअते इलाही से कभी ग़ाफ़िल नहीं होते वह अल्लाह तआला के एहसान के मरहून और उसकी दोस्ती का ख़िलअत पहने हुए हैं। उनका नाम रब्बुल इज़्ज़त के मुख़लेसीन में तहरीर है, दुनिया में उमरा के दरवाज़ों का तवाफ़ करने, दुनियावी फ़ितनों और क़ब्रों में बरज़ख़ के ख़ौफ़ और उसके फ़िशार से मामून व मसऊन हैं, क़यामत में उनको हिसाब देने की वहशत आर डर नहीं है वह जन्नत में नेमत व सुरुर और ताज़गी व फ़रहत के साथ हमेशा रहने वाले हैं।

तुझको दुनिया में जो माल व दौलत दिया गया, मुसीबतों से आज़ादी दी गई, तकलीफ़ के बदले तुझे राहत से नवाज़ा गया तो उस पर तू फ़रेब ख़ूर्दा और मग़रूर हो गया और अल्लाह तआला की उस बख़्शिश, फ़ज़्ल व करम के छीने जाने का ख़ौफ़ तेरे दिल से जाता रहा जो तुझसे पहले दूसरों को अता की गई थीं और उनसे मुनत[illegible]ल हो कर तेरे पास [illegible]ई थीं यह माल व मनाल, फ़िरऔन, हामान, क़ारुन, शद्दाद, आ़द, क़ैसर व किसरा और दूसरे शा[illegible] माज़ी और उन अक़वाम को हासिल था जो सफ़हए हस्ती से मिट गई, यह दुनिया उनके लिये [illegible]ज़ीचए अतफ़ाल बन गई थीं, उम्मीदों और आरज़ूओं ने फ़रेब में मुब्तला [illegible] रखा था और शैतान ने अल्लाह तआला से उनको बरगश्ता कर रखा था यहां तक कि [illegible] तआला का हुक्म आ गया और वह माल व मनाल जिससे उनकी दिलचस्पियां वाबस्ता थीं उनसे वापस ले लिया, नर्म बिस्तरों से उनका उठा दिया गया, [illegible]न्द ऐवानों [illegible] कोशकों से उनको निकाला मिल गिया, वह इज़्ज़त जो उनो हासिल थी उनसे छीन ली गई, वह मुल्क जिस [illegible] उनको नाज़ था उनकी मिल्कियत था उनसे ले लिया गया और [illegible] अमानतें (माल व म[illegible]दुनिया) जो आरज़ी तौर पर उनके पास रखी गई थीं उनसे वापस [illegible] ली गई, अल्लाह तरफ़ से उन्हें [illegible] हुक्म पहुंचा जिसका उनको गुमान तक न था (या[illegible] का हुक्म) फिर उनकी बद आमालियां उनके सामने लाई गई और मामूली सी मामूली आमाल का [illegible] के साथ मुहासबा किया गया, जिन तंग क़ैद ख़ानों में वह दुनिया के अंदर दूसरों [illegible] किया करते थे उनसे भी ज़्यादा तंग व तारीक क़ैद ख़ानों में उनको बन्द किया गया और जो सख़्ती दूसरों पर करते थे उससे कहीं ज़्यादा तशद्दुद से उनको दो चार होना पड़ा और जो अ़ज़ाब वह दूसरों को देते थे उससे भी ज़्यादा सख़्त उनको दिया गया, उनके हाथ पैरों को ज़ंजीरों से जकड़ कर दोज़ख़ में जलाया गया, ज़क़ूम और थूहड़ उनको खाने दिया गया और फिर कचलहु और पीप पिलाया गया। क्या अहदे माज़ी के उन अफ़राद के अहवाल से तुझे कुछ भी इबरत हासिल नहीं हुई? क्या उन लोगों के अन्जाम से कुछ नसीहत हासिल नहीं हुई जिन को उनके घर वालों से अलग करके क़ैद कर दिया गया और तू उनके तरका का मालिक बन बैठा है और उनके बनाये हुए मकानों मे आज आबाद है हालांकि उनके बानियों को उनसे निकाल बाहर कर दिया गया क्योंकि उनकी तामीर में उन्होंने ज़ुल्म व सितम को अपना शेआ़र बनाया था, बहुत से लोगों की उन महल्लात में तौक़ीर की थी और बहुत से लोगों की तज़लील, उनके रुख़सारों, पेटों और सरों पर पर मार मारी गयी थी, बहुत सी ग़रीब मुसीबत ज़दा और बद हाल आंखों को रुलाया था, बहुत से शरीफ़ [illegible] को उनका

सब कुछ छीन कर मोहताज बनाया था बहुत सी नयी रस्में जारी की थीं और मज़मूम तरीके राएज किये थे, दानिशमन्दो और दानाओं को पस्त हौसला बनाया उनके दिल तोड़े और अपने से नाराज़ किया। बहुत से अहले दिल हज़रात अल्लाह के हुजूर में आधी आधी रात को उनके मज़ालिम की शिकायतें पेश कीं आह व जारी और फ़रयाद की ताकि अल्लाह तआला उन हज़रात की मुसीबतों को दूर कर दे चूंकि अहले दिल ने अपनी फ़रयाद सबसे बाख़बर हस्ती (ख़ुदावन्दे दो जहां) से की थी इस लिए मुअज़्ज़ज़ फरिश्तों ने (उनको हाथों हाथ) लिया और उस अज़ीमुल मरतबत शहंशाह और सबसे बड़े मुन्सिफ़ के सामने पेश कर दिया जो ज़ालिम नहीं।

अज़ीज व हकीम, ग़ालिब व बरतर रब्बुल इज़्ज़त ने उन दुनिया परस्तों के सीनों में जो कुछ था देख लिया इस लिए कि वह हर खुली और छुपी चीज़ से बाख़बर है इस लिए उन नेक बन्दों की शिकायत और फ़रियाद पर तवज्जोह फ़रमाई और उनकी दुआ को क़बूल फ़रमाकर जवाब में फ़रमाया मैं ज़रूर ज़रूर तुम्हारी मदद करूंगा अगरचे वह मदद कुछ देर बाद हो। चुनांचे उन ज़ालिमों को उनके जुल्म की पादाश में ऐसी कटी हुई खेती की तरह कर दिया जिस का अब कहीं निशान भी बाक़ी नहीं। किसी क़ौम को ग़रक़ाब कर के हलाक किया गया, किसी को ज़मीन धंसा कर फ़ना के घाट उतार दिया गया और किसी पर संग बारी करके नीस्त व नाबूद कर दिया, किसी को क़त्ल करा के किसी क़ौम की सूरते मस्ख़ फ़रमाकर बरबाद कर दिया गया और किसी क़ौम की अक़्ल व ख़िरद को इस तरह सल्ब किया गया कि उनके दिलों को पत्थर की तरह सख़्त कर दिया उन पर कुफ़्र की मोहरें लगा दीं और शिर्क और ज़ुलमत के पर्दो से उनको सर बन्द कर दिया गया। चुनांचे उनके दिलों में न ईमान दाख़िल हुआ न इस्लाम के बाद उनको एक सख़्त मुआख़ज़ा ने पकड़ लिया और सख़्त तरीन पंजए अक़ूबत में लेकर ऐसी हलाकत खेज़ जगह पर झोंका गया जहां उनकी खालें झुलस जाती हैं फिर उसकी जगह दूसरी खाल बदल दी जाती है इस तरह वह हमेशा अज़ाब में, दहकती आग में मुसीबत में मुब्तला रहेंगे और उनको खाने को वह कुछ दिया जायेगा जो उनके हल्क़ से नीचे नहीं उतरेगा उनका वहां रहना दाइमी है, जब तक यह ज़मीन व आसमान मौजूद है वह न मरेंगे और न वहां से छुटकारा पायेंगे उनके अज़ाब की न कोई इन्तेहा है न उनकी हलाकत का कोई हद। दोज़ख़ में भी उनके लिए रुसवाई की ज़िन्दगी है उनकी तरफ़ ख़ुशी का गुज़र न होगा, न वहां से उनकी सांस निकलेगी न रुह, उनकी सारी उम्मीदें टूट जायेंगी और उनका नाला व शेवन बेकार होगा, उनके दिल गले में फंसे होंगे और उनकी ज़बानों में बोलने की सकत नहीं होगी उनसे कहा जाएगा दूर रहो, बात न करो।

ऐ मिस्कीन! (ऐ मुख़ातिब) उस अज़ाब से डर! अगर तू उन जैसे आमाल का मुरतकिब है उनकी रविश पर चल रहा है, उनकी पैरवी करता है, कहीं ऐसा न हो कि तू बग़ैर तौबा के मर जाये और ग़फ़लत व फ़रेब में मुब्तला होकर उनकी हालत में पकड़ा जाये तो अपने नफ़्स के लिए तू कोई उज़्र या जवाब पेश न कर सके। पस रिहाई, मुख़लिसी और नजात की तदबीर कर और आगे के लिए ज़ादे राह तैयार कर और वरना वहीं अज़ाब व अक़ूबत जो उनके लिए है तेरे लिये भी होगी।

तौबा की शर्तें और उनकी नोअ़्यत

तौबा की तीन शर्तें:

तौबा की तीन शर्तें हैं पहली शर्त अह़कामे इलाही के ख़िलाफ़ आमाल पर शर्मिन्दगी व नदामत है नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम का इरशाद है पशेमानी व नदामत तौबा है सही नदामत व पशेमानी की पहचान यह है कि दिल में रिक़्क़त पैदा हो और कसरत से आंसू बहाये जायें। इस लिए हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तौबा करने वालों की मजलिस में बैठो क्योंकि वह लोग नर्म दिल हैं।

दूसरी शर्त यह है कि हर आन और हर घड़ी गुनाहों से बाज़ रहा जाये। तीसरी शर्त है कि मआ़सी और ख़ताओं का दोबारा इरतेकाब न करे जिस तरह कि पहले मुरतकिब हुआ है। अबू बकर वास्ती से जब तौबतुन नसूह़ के मानी दरयाफ़्त किये गये तो फ़रमाया कि गुनहगार पर गुनाह का कोई बैरुनी और अन्दरूनी असर बाक़ी न रहे जिसकी तौबा ख़ालिस होती है और परवाह नहीं करता कि किस तरह शाम होती है और किस तरह सुबह। तौबतुन नसूह पशेमानी (गुनाह न करने का) पुख़्ता इरादा पैदा कर देती है, पुख़्ता इरादा और अ़ज़्म इस बात का होता है कि जो गुनाह पहले किये हैं दोबारा उनमें मुब्तला न हो क्योंकि पशेमानी और नदामत से उसको मालूम होता है कि उसके और उसके रब के दर्मियान मआ़सी हाएल हो जाते हैं और यह गुनाह उसको उस आख़िरत से बाज़ रखते हैं जो दुनिया की मोहब्बत और बुरे अन्जाम से महफ़ूज़ है। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि गुनाह करने से बन्दा रिज़्क़ कसीर से महरूम हो जाता है चुनांचे ज़िना अफ़लास का मोजिब और सबब बनता है।

बाज़ आरिफ़ों ने फ़रमाया है ज़ब तुम किसी में तग़य्युर, रिज़्क में तंगी, परेशानी और बदहाली देखो तो जान लो कि वह अपने मौला के हुक्म का बजा लाने वाला नहीं है बल्कि वह हवाए नफ़्स का ताबेअ़ है। जब तुम देखो कि लोगों की दराज़ दस्ती ज़बान दराज़ी तुम पर ग़ालिब है और ज़ालिमों का पंजा तुम्हारी जान व माल और औलाद पर मुसल्लत है तो सभझ लो तुम ममनूआत के मुरतकिब, हुक़ूकुल इबाद में कोताही करने वाले, हुदूदे इलाही से तजावुज़ करने वाले और आदाब व तरीक़त को बरबाद करने वाले बन गये हो। जब तुम देखो कि अन्दोह व ग़म और हिज्र व मलाल के बादल तुम्हारे दिलों पर मंडला रहे हैं (दिल ग़म में गिरफ़्तार है) तो जान लो कि तुम्हारे रब ने जो क़ज़ा व क़द्र मुक़द्दर फ़रमा दी थी तुम उससे एराज़ कर रहे हो और अल्लाह के वादे को झुठला रहे हो तुम को उस पर एतमाद नहीं है और ज़ो तदबीर ख़ुदा ने तुम्हारे और अपनी मख़लूक़ के लिए की है तुम उससे राज़ी नहीं हो तो जब तौबा करने वाला अपने हाल पर ग़ौर व फ़िक्र करके जान लेता है तो वह उस पर पशेमान होता है।

पशेमानी और नदामत के मानी यह हैं कि महबूब के जुदा होने से उसके दिल को दुख पहुंचता है दिल से हूक उठती है और वह ग़मज़दा रह जाता है। इसी बिना पर उसका हिज्र व

मलाल बढ़ता है और उसकी हसरत में इज़ाफ़ा होता है वह बकसरत गिरया व ज़ारी करता है उसके साथ ही वह इरादा कर लेता है फिर ऐसी हरकत (गुनाह) नहीं करेगा गुनाह ज़हर से ज़्यादा हलाकत आफ़रीं है और वह हमला आवर दरिन्दे, जला देने वाली आग और टुकड़े टुकड़े कर देने वाली तलवार से ज़्यादा ज़रर रसां है। मोमिन की यह शान नहीं है कि एक सुराख़ से दोबारा डसा जाए लिहाज़ा वह गुनाहों से ज़रूर भागता है और इस तरह भागता है जिस तरह मोहलिक और मुज़रत रसां चीज़ों से लोग भागते हैं। लिहाज़ा यह बात गिरह में बांध लेनी चाहिए कि गुनाहों (के इरतिकाब) में पूरी पूरी हलाकत है और इताअते खुदा वन्दी में कुल्ली तौर पर बक़ा, अब्दी सलामती की लज़्ज़त। गुनाह, तवील हिज्न व मलाल पैदा करते हैं और बाद में ज़हमत बीमारी, उम्र गुनाहों से घटती है और लोगों को आग का ईंधन बनना पड़ता है।

सेहते तौबा की शर्त

तौबा से जो नतीजा पैदा होता है उससे जज़्बए तदारुक पैदा होता है उसका ताल्लुक़ हाल से भी है और माज़ी से भी। हाल से ताल्लुक़ का तक़ाज़ा यह है कि उन तमाम ममनूआत (मआसी) को तर्क कर दे जिनका मुरतिकब हो रहा है और जिनको करता चला आ रहा है और जिस फ़र्ज़ की अदाएगी की तरफ़ मुतवज्जेह है उसको फ़ौरन अदा कर दे और माज़ी से ताल्लुक़ यह है कि ज़माना माज़ी में जो कोताही हो गई है उसको अईन्दा पूरा कर दे, तर्के मआसी और इताअत पर मरते दम तक क़ाएम रहे। सेहते तौबा का माज़ी से मुताल्लिक़ होने की एक शर्त यह भी है कि अपने ख़्याल को उस दिन की तरफ़ मुनअतिफ़ करे जिस दिन बालिग़ हुआ था और उस दिन तक ग़ौर करे जिस दिन उसने तौबा की है और फ़िर हिसाब लगाये कि उस उम्र के कितने साल कितने दिन, कितनी घड़ियां, और कितने सांस गुज़रे हैं और ग़ौर करे कि उस अर्सा में उससे कितनी कोताहियां हुई हैं और किस क़द्र मआसी का इरतिकाब हुआ है, ताआत व इबादात में उस तरह ग़ौर करे कि उसने कितनी नमाज़ें उसके शरायत व अरकान के बग़ैर पढ़ी हैं और कितनी नमाज़ें सिरे से पढ़ी ही नहीं, कितनी नमाज़ें बग़ैर वज़ू अदा की हैं और कितनी नाकारह वज़ू के साथ पढ़ी हैं (मसलन वज़ू में नीयत नहीं की) या यह कि वाजिबाते वज़ू को तर्क किया, कुल्ली नहीं की, नाक में पानी नहीं चढ़ाया, पैर धोना भूल गया या टाल दिया या नापाक कपड़ों या रेशमी लिबास ग़सब किये हुए कपड़ों और मग़सूबा ज़मीन पर नमाज़ अदा की। (अब ऐसा जो शख़्स सिन बलूग़त के दिन से अपनी तौबा के दिन तक तमाम फ़राएज़ की क़ज़ा करे तो सबसे पहले उन तमाम फ़राएज़ की अदाएगी में मसरुफ़ हो जो उससे क़ज़ा हुए हैं और उस वक़्त तक क़ज़ा अदा करता रहे जब तक मौजूदा वक़्त की नमाज़ का वक़्त न आ जाए, मौजूदा नमाज़ का वक़्त आ जाने पर उसको अदा करे फिर क़ज़ा पढ़ना शुरु कर दे यहां तक कि तमाम नमाज़ें अदा हो जायें। जब जमाअत होने लगे तो उसके साथ भी ब नीयते क़ज़ा शरीक हो जाए और जमाअत के बाद फिर हसबे मामूल तन्हा लौटाता रहे यहां तक कि जब उस वक़्त की नमाज़ का वक़्त तंग होने लगे तो वक़्ती नमाज़ तन्हा ब नीयते अदा पढ़े और इमाम के साथ पढ़ी हुई नमाज़ को फ़ौत शुदा नमाज़ की क़ज़ा क़रार दे ले। यह तमाम इहतियात क़ज़ा में इसलिये करे कि उसे तरतीब हासिल हो जाए इसलिये कि हमारे नज़दीक तरतीबे क़ज़ा वाजिब है अगरचे वक़्ती नमाज़ जमाअत से इमाम के साथ अदा की नीयत से पढ़ ली तो उसकी अदा है दोबारा वक़्ती नमाज़

तन्हा लौटाने की ज़रुरत नहीं है मगर ज़्यादा सही पहली सूरत ही है लेकिन अगर उसका शमूल उन लोगों में रहा और उन लोगों में उसकी ज़िन्दगी गुज़री जिनके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:

और दूसरे लोग वह हैं जो अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं और उनके अमल नेक व बद के साथ मिले जुले होते हैं तो क़रीब है कि अल्लाह तआ़ला उनकी तौबा क़बूल फ़रमा ले

यानी जब उन लोगों पर ईमान का ग़लबा होता है तो रोज़ा नमाज़ ख़ूब अच्छी तरह अदा करते हैं, नजासत और हराम शरई से इजतेनाब करते हैं और अपने दीन में एहतियात करते हैं और जब उन पर बदबख़्ती का ग़लबा होता है तो उनको शैतान बहकाता है, वह नमाज़ में कोताही और उसके शराइत व अरकान अदा करने में काहिली और सुस्ती बरतते हैं कुछ अदा करते हैं और कुछ छोड़ देते हैं। या किसी दिन नमाज़ पढ़ी किसी दिन नहीं पढ़ी, या दिन रात में दो एक नमाज़ें पढ़ लीं, बाक़ी छोड़ दीं, नहीं पढ़ीं उनके लिये इस सूरत में लाज़िम यह है कि ख़ूब कोशिश करके यक़ीन के मरतबे तक पुहंचे और नमाज़ों को तमाम व कमाल तरीक़े से जिस तरह शरीअ़त ने शुरू किया है बजा लाए (यानी तकमील हासिल करने की कोशिश करे) वरना जिस नमाज़ के कामिल अदा करने का यक़ीन हो उसको दोबारा न लौटाए लेकिन अगर औला और बेहतर का ख़्वाहां है तो अगरचे दुशवारी बहुत है मगर सब नमाज़ें लौटाए इस सूरत में जो कोताही अदा की तकमील व तामील में हो गई है उसकी तलाफ़ी हो जाएगी और यह नमाज़ें उन अहकाम में कोताही का कफ़्फ़ारा बन जायेंगी जो उससे हो चुकी है। (मसलन कभी झूट बोला था या नाजाइज़ तौर पर रोज़ी कमाई थी तो उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा उन नमाज़ों से अदा हो जाएगा) ऐसी सूरत में जन्नत के अंदर उसके बलन्द मरातिब होंगे बशर्तेकि तौबा की हालत में इस्लाम और सुन्नते रसूल(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर उसका ख़ातमा हो (उसकी मौत वाकेअ़ हो)

जब ताएब तमाम फ़ौत शुदा फ़राएज़ की क़ज़ा (लौटाने) से फ़ारिग़ हो जाए और अल्लाह तआ़ला उसको मुहलत और उम्र अता फ़रमाए (और अपनी ताअ़त व बन्दगी की तौफ़ीक़ उसको मुरहमत फ़रमाए और अपनी ताअ़त के लिये उसको मुन्तख़ब फ़रमाए और उसको इस्तिक़ामत बख़्शे अपने मुहब्बत करने वालों में उसको महसूब करे, ज़लालत व गुमराही से उसे बचाए, शैतान की पैरवी, उसकी दोस्ती और हवा व हवस की लज़्ज़त से उसे महफ़ूज़ रखे, उसका मुंह दुनिया से मोड़ कर आख़िरत की जानिब उसे मुतवज्जेह कर दे) तो उसे चाहिए कि मोवक्कदा सुन्नतों की अदाएगी की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए (जो सन्नत हाए मुवक्कदा फ़ौत हो चुकी हैं, उनकी क़ज़ा पूरी करे) और फ़ौत शुदा मुताल्लिक़ात नमाज़ के अदा करने में उसी तरह मशग़ूल हो जिसकी तफ़सील फ़राएज़ के ज़िम्न में हम बयान कर चुके हैं, उसके बाद वह तहज्जुद, रात की नमाज़ और उन औराद में मशग़ूल हो जाए जिनका ज़िक्र मुफ़स्सल इंशाअल्लाह आख़िर किताब में करेंगे।

रोज़े की क़ज़ा

अब रहा रोज़े की क़ज़ा क मसला तो जिसने सफ़र या मरज़ की वजह से रोज़ा छोड़ दिया,

कसदन रोज़ा नहीं रखा या रात से क़सदन या सहवन नीयत को छोड़ दिया (रोज़ा बग़ैर नीयत रख लिया) तो ऐसे तमाम रोज़ों की क़ज़ा करे, लेकिन अगर यक़ीनी तौर पर कुछ याद न हो तो याद करे, सोचे और ग़ौर करे, जिस रोज़े के छूट जाने का ज़्यादा गुमान है उसको दोबारा रखे बाक़ी छोड़ दे हां अगर इहतियात मलहूज़ है तो सबकी क़ज़ा करे यह ज़्यादा बेहतर अगर ऐसा करे तो सिम्ने बुलोग़त से यौमे तौबा तक हिसाब करे (यानी तमाम रोज़ों को शुमार करे) अगर दस साल गुज़रे हों तो दस माह के और अगर बारह साल गुज़रे हों तो बारह महीने के रोज़े रखे। ग़र्ज़ाकि हर साल के लिये एक माह के रोज़ों की क़ज़ा अदा करे (यह क़ज़ा माहे रमज़ान के रोज़ों की क़ज़ा होगी।

ज़कात की अदमे अदाएगी के अदा का तरीक़ा

नमाज़ और रोज़ों की तरह अदाएगीए ज़कात का हिसाब वक़्ते बलोग़ से नहीं लगाया जाएगा बल्कि उस वक़्त से लगाया जाएगा जबसे वह मालिके निसाब हुआ है हरचन्द कि हमारे नज़दीक नाबालिग़ बच्चे और दीवाने के माल पर भी ज़कात वाजिब है (बशर्तकि वह मालिके निसाब हो) वह उस वक़्त से तमाम सालों और कुल माल का हिसाब करे फिर तमाम सालों की ज़कात निकाल कर फ़ुक़रा और मसाकीन और हक़दारों को दे दे अगर उसने बाज़ सालों की ज़कात अदा कर दी है और बाज़ सालों की अदा न की हो (उनमें कोताही की हो) तो उन सालों का हिसाब करे (जिनमें ज़कात नहीं दी है) फिर उन बरसों की ज़कात अदा करे (अदा किये हुए सालों को छोड़ दे) जैसा कि हम पहले नमाज़ और रोज़े के सिलसिले में बयान कर चुके हैं।

क़ज़ा हज की अदाएगी

हज की अदाएगी के बारे में यह समझ लेना चाहिए कि अगर हज के तमाम शराएत उसके हक़ में पूरे हो गए हों तो फ़ौरन उसे हज अदा कर लेना चाहिए, सुस्ती और कोताही में अगर कुछ मुद्दत गुज़र गई और उस मुद्दत में हज की कुछ शरतें मफ़क़ूद हो गईं, मुहताज हो गया लेकिन कुछ मुद्दत के बाद फिर इस्तेताअत हासिल हो गई तो उस वक़्त फ़ौरन अदा कर लेना चाहिए और हज के सफ़र पर चल देना चाहिए अगर दोबारा माली इस्तेताअत हासिल न हुई लेकिन सफ़र हज के लिये जिस्मानी ताक़त मौजूद है तब भी हज कर इरादा कर लेना और सफ़र पर निकल खड़ा होना वाजिब है, अगर माल (ज़ादे राह) मौजूद नहीं है लेकिन जिस्मानी ताक़त मौजूद है तो उस पर लाज़िम है कि कस्बे हलाल करे और उससे सफ़रे ख़र्च और सवारी वग़ैरह का इन्तिज़ाम करे अगर खाने पर कुदरत नहीं है तो दूसरों से इम्दाद तलब करे ताकि दूसरे अपने ज़कात व सदक़ात से अदाए हज के लिये उसकी मदद करें और उसको ज़कात व ख़ैरात से इस क़दर माल मिल जाए कि वह हज कर सके। अल्लाह तआला ने मसारिफ़े सदक़ात के हुक्म में (आयत में) जो आठ क़िस्मे मुस्तहक़्क़ीन की बयान फ़रमाई हैं उनमें फ़ी सबीलिल्लाह भी एक क़िस्म है और हमारे नज़दीक हज करना, फ़ी सबीलिल्लाह के ज़ुमरे में है। अगर ऐसा शख़्स हज के बग़ैर मर गया तो वह गुनहगार और आसी रहेगा इसलिये कि उसने अदाएगीए हज में कोताही की, हमारे नज़दीक साहिबे इस्तेताअत होते ही हज के लिये रवाना हो जाना वाजिब है। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है जो शख़्स ख़ानए काबा तक पहुंचने के लिये सवारी और ज़ादे राह के लिये पैसे अदा ... है और फिर वह हज न करे तो वह अपने दीन

पर नहीं और कोई अफ़सोस नहीं कि वह यहूदी, नसरानी होकर मरे, यह सब कुछ अदाएगीए हज के हुक्म की ताकीद, तहफ़्फ़ुज़े हज की इहतियात और हज के ज़ाया होने के अन्देशा के तौर पर फ़रमाया गया है।

कफ़्फ़ारो की अदाएगी

अगर किसी शख़्स पर कफ़्फ़ारा या नज़रें वाजिब हैं तो सबसे पहले उनकी अदाएगी से उहदा बरआ हो जो कुछ बयान किया जा चुका है उसके मुताबिक़ ज़रुरी है। उन तमाम फ़राएज़, वाजिबात और सुनने मोअक्किदा की अदाएगी के बाद गुनाहों के बारे में ग़ौर करे और सोचे कि अव्वल बलूग़ से तौबा के वक़्त तक आंख, कान, ज़बान, हाथ, पांव, आलाते जिन्सी और दूसरे तमाम आज़ा से क्या क्या गुनाह सादिर हुए हैं उसके बाद तमाम दिनों, घड़ियों पर ग़ौर करे और अपने सामने अपने गुनाहों की तफ़सील का दफ़्तर लाये (तमाम गुनाहों का जायज़ा ले) यहां तक कि अपने तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से बाख़बर हो जाये (सब उसको याद अस जायें) गुनाहों की याद उन लोगों के देखने से भी आ जाती है जो गुनाहों के साथी और शरीक थे और उन तमाम मक़ामात और जगहों को भी याद करे जहां अपने गुमान में उसने लोगों की निगाहों से छुप कर गुनाह किये और उन आंखों (के देखने) से ग़ाफ़िल रहा जो न सोती हैं और न पलक झपकाती हैं यानी करामन कातेबीन जो नामए आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते हैं, तुम जो कुछ करते हो और जो कुछ मुंह से निकालते हो वह सब जानते हैं वह हर हाल में बन्दा के पास उसके निगहबान व मुहाफ़िज़ हैं और बंदा उन इज़्ज़त वाले निगहबान फ़रिश्तों से ग़ाफ़िल है हालांकि वह आगे पीछे दायें बायें मौजूद रहते हैं और अल्लाह के हुक्म से उसकी निगरानी करते हैं और हर फ़ेअ़ल और उसकी हर सांस का शुमार करते रहते हैं बन्दा उस ख़ुदा से छुप कर गुनाह करता है जो हर राज़ और बहुत ही पोशीदा बात को भी जानता है। जो दिलों के राज़ों से आगाह है और ज़ाहिर व बातिन उससे कुछ भी पोशीदा नहीं (यानी तमाम ज़ाहिर व बातिन से बाख़बर है) पस अपने गुनाहों पर ग़ौर करना चाहिए अगर वह महज़ अल्लाह तआला (हुकूकुल्लाह) की नाफ़रमानियां हों और बन्दों के हुकूक़ से उनका कुछ ताल्लुक न हो जैसे ज़िना, शराब ख़ोरी, बाजा और गाना सुनना और ग़ैर महरम की तरफ़ देखना, मस्जिद में नापाकी की हालत में बैठना, बग़ैर वजू के कुरआन पाक छूना, कोई बुरा अक़ीदा रखना तो उन गुनाहो की तौबा इस तरह होगी कि नदामत के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर में माज़रत ख़्वाह हो और उन गुनाहों की तादाद, कसरत व मुद्दत को शुमार करके बक़द्र उनके नेकियां करें और हर गुनाह व मासियत का बदल उस की नौइयत के एतबार से नेकियों से करे, अल्लाह तआला का इरशाद है

नेकियां बदियों को फ़ना कर देती है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि हर हालत में अल्लाह से डरो और हर बदी के एवज़ नेकी करो क्योंकि नेकी बदी को ज़ाएल कर देती है।

अल ग़रज़ हर बदी का कफ़्फ़ारा वैसी ही नेकी या उससे मिलती जुलती नेकी के ज़रिया से होता है। मसलन शराब नोशी का कफ़्फ़ारा हर हलाल मशरूब के ज़रिया हो सकता है लेकिन वह मशरूब ऐसा हो जो उस के नज़दीक बहुत ही पसन्दीदा और मरग़ूब हो। गाने बजाने के कफ़्फ़ारा यह है कि कुरआन करीम और अहादीसे नबविया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और

हिकायतुस्सालेहीन को सुना जाये। मस्जिद में हालते जनाबत बैठने का कफ्फ़ारा यह है कि मस्जिद में इबादत में मशगूल होने के अलावा एतकाफ़ भी करे। बे वजू कुरआन करीम को छूने का कफ्फ़ारा कुरआन करीम की बहुत ज़्यादा इज़्ज़त व तौक़ीर और उसे कसरत से पढना और बावजू हो कर उस को ख़ूब छुये और तालीमाते कुरआन से इबरत हासिल करे। इस का इक़रार करे और उन अहकाम पर अमल करे नीज़ यह कि कुरआन करीम खुद लिख कर उसको दूसरों के लिए वक़्फ़ कर दे।

बन्दगाने ख़ुदा के हुक़ूक़ का अदा न करना

अब रहे बन्दगाने ख़ुदा पर चीरा दस्ती और उनकी हक़ तलफ़ी तो उनमें अल्लाह तआला की नाफ़रमानी और उसके अहकाम के ख़िलाफ़ वरज़ी होती है। अल्लाह ने ज़िना, शराब, सूद वग़ैरह की तरह बन्दों की हक़ तलफ़ी की भी मुमानियत फ़रमाई है। अल्लाह तआला के अहकाम की नाफ़रमानी का कफ्फ़ारा वही पशेमानी नदामत, अफ़सोस और आइन्दा ऐसा न करने का अहद और नेकी करना है लेकिन बन्दों के हुकूक तल्फ़ करने का तदारुक और उनकी तलाफ़ी यह है कि अगर लोगों को दुख दिया है तो उनके साथ भलाई करे ताकि उनका कफ्फ़ारा अदा हो जाये गोया ज़्यादतियों और हक़ तलफ़ियो का कफ्फ़ारा लोगों के साथ नेकियां करना और उनके लिए दुआये ख़ैर करना है। अगर वह शख़्स जिस को इज़ा दी थी फ़ौत हो चुका है तो उसके लिए रहमत की दुआ मांगे उसकी औलाद और उसके वुरसा के साथ मेहरबानी और हुस्ने सलूक करे यही उसका कफ्फ़ारा है बशर्ते कि वह अज़ीयत ज़बान से पहुंची हो या मार पीट से अगर अज़ीयत अमवाल के ग़सब करने से पहुंची है तो उसका कफ्फ़ारा इस तरह होगा कि जो हलाल माल उसके पास है उसको लेवजहिल्लाह सदका करे और अगर उसको बे आबरू किया है यानी किसी ग़ीबत की है, चुग़ली खाई है, ऐब जोई की हो तो इसका कफ्फ़ारा यह है अगर वह शख़्स दीनदार और अहले सुन्नत हो तो उसके दोस्तों और उसके अहबाब के सामने मुख़्तलिफ़ मजलिसों और महफ़िलों में उसकी तारीफ़ व तौसीफ़ करे और जो कुछ ख़ूबियां उसकी मालूम हों उनको बयान करे। किसी को क़त्ल करना अल्लाह तआला के हक़ से मुताल्लिक़ है उसका कफ्फ़ारा गुलाम आज़ाद करना है इस लिए कि गुलाम की आज़ादी उसकी ज़िन्दगी है (गोया इस तरह ज़िन्दगी बख़्शना हुआ) क्योंकि गुलाम अपने ज़ाती हुकूक़ में बिलकुल मुर्दे की तरह होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह एक गुलाम ममलूक की मिसाल देता है जो किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं है। उसकी तमाम कमाई उसके आक़ा की है उसके तसर्रुफ़ात व हरकात व सकनात उसके मालिक की मिलकियत है पस उसको आज़ाद कर देना गोया उसको नीस्त से हस्त कर देना और मुर्दे को ज़िन्दा कर देना है (मजाज़न) उसी तरह गोया क़ातिल एक इबादत गुज़ार बन्दे को मादूम कर देता है और अल्लाह की वह इताअत जो वह करता था उसके फ़ेअल से मोअत्तल हो जाती है इस सूरत में वह अल्लाह तआला का भी ख़ताकार है। इस सूरत में अल्लाह ने उसको हुक्म दिया है कि मक़तूल के बजाए किसी इबादत गुज़ार बन्दे को पेश कर जिस सूरत सिर्फ़ यही मुमकिन है कि किसी गुलाम को गुलामी से नजात दिलाए ताकि फिर वह बग़ैर किसी रुकावट के अपने लिए जो चाहे करे इस तरह मादूम का मुआवज़ा मौजूद से हो जायेगा। गुनाह की यह तमाम कैफ़ियात हुक़ूक़ुल्लाह से ताल्लुक़ रखती है।

हक तलफ़ी और क़त्ले ख़ता

बन्दो की हक़ तलफी ख़्वाह वह जानी हो या माली हो या उसको बे आबरू किया जाये सबके सब ख़ालिस इज़ाऐं हैं। जानी हक़ तलफ़ी की सूरत यह है कि किसी को बग़ैर इरादा क़त्ल किया जाये तो उसकी तौबा की शक्ल उसकी ख़ून बह (दैत) की अदाएगी है। मक़तूल वुरसा या उस का आक़ा या हाकिम उस ख़ून बहा के वसूल करने के मुस्तहिक़ हैं। क़त्ले में (यानी भूल चूक से किसी को क़त्ल कर देने में) हमारे नज़दीक क़ातिल के ख़ानदान पर दैत अदा करना लाज़िम है जब तक ख़ून बहा अदा न होगा यानी मुस्तहक़ीन को नहीं पहुंचे क़ातिल ज़िम्मेदार है लेकिन अगर क़ातिल के रिश्ते कुम्बे वाले (आक़िला) न हो और क़ातिल अदाएगी की इस्तेताअत हो तो एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करे। बेहतर यह है कि क़ातिल दैत खुद ब रज़ा व रग़बत अदा कर दे इस लिए हमारे नज़दीक दैत का अदा करना सिर्फ़ वारि (आक़िला) की ज़िम्मेदारी है। क़ातिल का अदाएगीए दैत से कोई ताल्लुक़ नहीं (क़ातिल तो सूरत में एक बुरदा आज़ाद कर देगा जब कि उसके वुरसा न हो) यही क़ौल सही है।

इमाम शाफ़ई का इरशाद

एक क़ौल यह भी है कि अगर क़ातिल साहिबे हैसियत है और उस के वुरसा नहीं है क़ातिल अपने पास से दैत अदा कर दे यह मसलक इमाम शाफ़ई का है उनकी दलील यह कि दैत इबतेदा अन क़ातिल ही पर वाजिब होती है उसके बाद उसकी आसानी (और इमदाद) के लिए उसके रिश्तेदारों पर यह बोझ डाल दिया जाता है और बतौर तावान वुरसा उस को बर्दाश्त करते हैं वुरसा (आक़िला) और क़ातिल में बाहम तवारुस पाया जाता है। आक़िला न हो तो क़ातिल पर उसकी अदाएगी ज़रूरी है खुसूसन जब कि वह तौबा की हा में हो और ज़ुल्म व तअद्दुदी और गुनाहों से ओहदा बरआ होना चाहता हो और हुक़ूके इन्सानी बार से रूस्तगारी का ख़्वास्तगार और तक़वा का आर्जुमन्द है।

क़त्ले अमद से तौबा

क़त्ले अमद से बग़ैर क़सास के ख़लासी न मुमकिन है। अगर क़त्ल नहीं किया बल्कि जगह ज़र्ब लगाई गई है जिस का एवज़ (क़सास) लेना मुमकिन हो उस ज़र्ब से जान जाने ख़तरा था तो बदला के लिए वारिसों से गुफ़्तगू की जाये और अगर ज़र्ब में (तलाफ़े जान का ख़ नहीं) तो फिर मज़रूब से बात की जाये अगर वुरसा क़सास से दस्तबदार हो जायें और उसको कर दें तो क़सास साक़ित हो जायेगा और अगर माल लेकर माफ़ करना चाहें (ख़ून बहा क़बूल तो माल अदा करना होगा इस तरह वह अपने गुनाहों से नजात हासिल कर लेगा।

ना मालूम क़ातिल

अगर किसी इंसान को क़त्ल किया और किसी को नहीं मालूम कि क़ातिल कौन है क़ातिल पर लाज़िम है कि मक़तूल के वारिसों के सामने खुद क़त्ल का इक़रार व एतराफ़ और अपनी जान का एख़तियार उनको दे दे ख़्वाह वह माफ़ कर दे ख़्वाह क़सास ले ले या तलब करे। इख़्फ़ाए क़त्ल जायज़ नहीं, क़त्ल का जुर्म सिर्फ़ तौबा से माफ़ नहीं होगा अगर कि

शख़्स ने एक जमाअत को मुख़्तलिफ़ जगहों पर क़त्ल किया और मक़तूलीन के वुरसा का पता नहीं और न मक़तूलीन की सही तादाद का पता है तो इस सूरत में पुख़्ता तौबा करे और अपने किरदार को सज़ा दे और अल्लाह तआला की मुक़र्रर करदा सज़ा ख़ुद अपनी जान को दे यानी गू ना गूं नफ़्सानी मुजाहिदे करे और जान सोज़ी के काम करे। अगर कोई शख़्स तुझ पर ज़ुल्म करे या उसे ईज़ा पहुंचाए (तो अपने किये क़त्ल के बदले में) तू उसे माफ़ कर दे, गुलाम आज़ाद करे, माल का सदक़ा दे और बकसरत नवाफ़िल अदा करे ताकि उसके उन आमाल ख़ैर की जज़ा क़यामत के दिन उसके उन मुतअद्दिद व जुर्म हाये क़त्ल के बराबर हो जाए (और उस को) अज़ाब से नजात हासिल हो जाये अल्लाह तआला अपनी रहमत से जन्नत इनाम फ़रमाए इस लिए कि उसकी रहमत हर शै को अपने आगोश में लिए है वह अर्राहेमीन है।

ऐसी सूरत में जब कि वह मक़तूलीन के वुरसा से वाक़िफ़ नहीं मक़तूलीन को मजरुह करने की वज़ाहत, उनको लूटने की सराहत लोगों के सामने बे फ़ायदा है इस लिए कि अदमे आगाही के बाइस वारिसों को उनका हक़ तो पहुंचा ही नहीं सकता या उनसे उज़्र तक़सीर कर सके, अपना गुनाह माफ़ कराये बल्कि जो कुछ हमने बयान किया है वैसा ही अमल करे।

ना मालूम अफ़राद का गुनाह

इसी तरह अगर किसी ने ज़िना किया, शराब पी, चोरी की और वह उसके मालिक को नहीं पहचानता, डाका डाला लेकिन साहिबे माल से वाक़िफ़ नहीं, रास्ता में लूटा, लूटे जाने वाले से ना बलद है या जिमाअ के अलावा किसी अजनबी औरत से कोई ऐसी हरकत की जिस की कोई शरई ताज़ीर नहीं है तो उन जराएम से सहीह तौबा करे इस बात पर मौक़ूफ़ नहीं है कि वह गुज़श्ता वाक़ियात का तज़करा करके ख़ुद अपने आप को रुसवा करे और आप अपनी पर्दा दरी या उन जुर्मो पर हुदूद (शरई सज़ायें) क़ायम कराने के लिए इमामे वक़्त या हाकिम को तलाश करे बल्कि अल्लाह तआला ने जो पर्दा डाल दिया है उस पर्दा में छुपा रहे और दरे पर्दा अल्लाह तआला से तौबा करे नफ़्सानी जिहाद करे, रोज़े रखे, मुबाह चीज़ों और लज़्ज़तों से महज़ूज़ होने में कमी कर दे तस्बीह व तहलील बकसरत करे, तक़वा और परहेज़गारी एख़्तेयार करे। हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अगर कोई शख़्स उन गुनाहों में से कोई गुनाह कर बैठे तो उसको चाहिए कि अल्लाह तआला की पर्दा पोशी के साथ उसे पोशीदा रखे और हमारे रुबरू अपने गुनाहों को ज़ाहिर न करे अगर उसने अपने क़सूर बता दिए तो हम उस पर अल्लाह की हद नाफ़िज़ करेगें और अगर इसके बर अक्स उसने हाकिम के पास जाकर अपना जुर्म पेश कर दिया और हाकिम उसके लिए सज़ा तजवीज़ करदे उसको सज़ा दे दे तो फिर उस मुजरिम की तौबा और मक़बूल होगी और वह गुनाह की ज़िम्मेदारी से ओहदा बरा हो जायेगा और जुर्म की नजासत से उसको पाकी हासिल हो जायेगी।

माली हुक़ूक़ का ग़सब करना

माली हुक़ूक़ का ग़सब और उनसे तौबा

अब रहा यह सवाल कि अमवाल में तौबा की सूरत क्या है? (यानी अगर किसी ने किसी

शख़्स के अमवाल ग़सब किये हैं तो वह सही तौबा किस तरह करे) अगर किसी ने किसी इन्सान का माल छीना है या चोरी की है या किसी के माल पर डाका डाला है या अमानत में ख़्यानत की है या मामलए माली में धोका दिया है, ख़राब माल फ़रोख़्त किया है या बेचे जाने वाले माल के ऐब छुपाया है, या मज़दूर की उजरत में कमी की या सिरे से उसकी उजरत ही न दी तो इन तमाम सूरतों में हिसाबी नज़र डालना चाहिए और उस वक़्त से उसका हिसाब करे जब से वह आक़िल और तमीज़दार हुआ है। इसमें बालिग़ होने के वक़्ते आग़ाज़ की शर्त नहीं है बल्कि उस वक़्त से शुमार करे जब कि यह किसी वसी की ज़ेरे निगरानी था और वसी ने उसके माल को अपने माल के साथ ख़लत मलत कर दिया था और वसी ने अपनी दीनी सुस्ती (जोअ़फ़े दीनदारी) के बाइस उसकी कोई परवा नहीं की थी क्योंकि वसी तो ख़ुद हक़ तलफ़ी करने वाला था और उससे मज़हब (की शराइत) की ख़िलाफ़ वरज़ी हुई इसलिये वसी का हराम माल लड़के के माल में मिल गिया कुछ तो वसी की ना इन्साफ़ी और बद दियानती और ज़ुल्म की वजह से और कुछ ख़ुद लड़के की जानिब से ख़यानत के बाइस माल में मिलावट हुई तो बालिग़ होने के बाद जब यह लड़का ताइब हुआ तो उसको इस मामला पर तफ़्तीशी नज़र डालना चाहिए और ग़ैर का हक़ उसको वापस देना चाहिए और अपने माल को हराम और शुबा रखने वाले माल से पाक करना चाहिए।

इरतेकाबे जुर्म से तौबा के दिन तक ज़र्रा ज़र्रा का दिल में हिसाब लगाना चाहिए ऐसा न हो कि हिसाब के बग़ैर ग़फ़लत की हालत में मौत आ जाए और उसके लिये रोज़े हिसाब आ जाए कि वह न सवाब हासिल कर सका और न उसका आमाल नामा पाक हुआ और बाज़ पुर्स के वक़्त कोई जवाब काबिले पज़ीराई न हो उस वक़्त यह पशेमान होगा लेकिन पशेमानी से उसको कोई फ़ायदा नहीं पहुंचेगा। रब की रज़ा हासिल करना चाहेगा मगर अताबे इलाही से महफ़ूज़ न होगा, मोहलत का तालिब हो गा मगर मोहलत नहीं मिलेगी शफ़ीअ ढूंढेगा लेकिन कोई शफ़ीअ न होगा। यह तमाम नताइजे बद उस वक़्त मुरत्तब होंगे जब ज़िन्दगी में शरई हुदूद से पार क़दम रखेगा, पसन्दीदा चीज़ों और लज़्ज़तों के हुसूल के लिये अपने नफ़्स और शैतान की पैरवी करेगा, अल्लाह तआला की इताअत और उसकी बारगाह से मुनहरिफ़ होगा, दावते हक़ को क़बूल करने से पीछे हटेगा, परवरदिगार की ना फ़रमानी और ख़िलाफ़ वरज़ी की तरफ़ उसके क़दम तेज़ी से बढ़ेंगे, इसलिये क़यामत के दिन उसका हिसाब किताब बहुत तवील होगा और उसकी गिरया व ज़ारी और वावैला बहुत कुछ होगा (बारे गुनाह से) उसकी कमर टूट जाएगी उसका सर नदामत से झुका होगा, बड़ी शर्मिन्दगी उठाना पड़ेगी, कोई हुज्जत और दलील पेश नहीं की जाएगी। दोज़ख़ के फ़रिश्ते उसको पकड़ कर उस अज़ाब की तरफ़ ले जाएंगे जो उसने ख़ुद अपने लिये पहले ही से तैयार कराया होगा, वह ख़ुद ही अपने नफ़्स को हलाकत में डालने और दोज़ख़ में दाख़िल करने का मौजिब और बाइस होगा और क़ारुन, फ़िरऔन, हामान के बराबर के दर्जा में दोज़ख़ में दाख़िल होगा। इसलिये कि हुक़ूक़ुल इबाद की तरफ़ से रोज़े हिसाब चश्मे पोशी नहीं की जाएगी और न उनसे दर गुज़र किया जाएगा। हदीस शरीफ़ में आया है कि बन्दा को अल्लाह के सामने खड़ा किया जाएगा और उसकी नेकियां पहाड़ के बराबर होंगी अगर वह नेकियां बाक़ी बचीं तो यक़ीनन वह अहले जन्नत से होगा मगर हुक़ूक़ का मुतालबा करने वाले खड़े होंगे, उसने किसी को गाली दी होगी, किसी का माल मारा होगा, किसी को ज़द व कोब किया होगा पस उन

हुकूक के बदले यह नेकियां उन लोगों को दे दी जाएंगी और उसके पास नेकियों का कुछ हिस्सा भी बाकी नहीं रहेगा उस वक़्त फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कि इलाहल आलमीन! इसकी नेकियां तो ख़त्म हो गईं और हुकूक के तलब करने वाले बहुत से बाक़ी हैं, अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि इन मुतालबा करने वालों (हुकूक़ तलब करने वालों) की बुराइयां (बदियां) इसकी बदियों में डाल दो और उसे दोज़ख़ में धक्के देते हुए ले जाओ ग़रज़ वह दूसरों के गुनाहों की वजह से जो बदले के तौर पर उसके ज़िम्मे डाले जाएंगे हलाक और तबाह हो जाएगा इस तरह मज़लूम ज़ालिम की नेकियों के ज़रिये नजात पा जाएंगे क्योंकि ज़ालिम की नेकियां बतौरे तावान मज़लूम के हक़ में मुन्तक़िल कर दी गई हैं।

आमाल के तीन दफ़्तर

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो अन्हा से मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आमाल के तीन दफ़्तर होंगे, एक दफ़्तर ऐसा होगा जिसका लिखा हुआ अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देगा, एक दफ़्तर ऐसा होगा जिसका लिखा हुआ अल्लाह तआला माफ़ नहीं फ़रमाएगा और एक दफ़्तर का नविश्ता बग़ैर बदला लिये माफ़ नहीं किया जाएगा।

वह दफ़्तर जिसका लिखा अल्लाह तआला माफ़ नहीं फ़रमाएगा वह शिर्क (का गुनाह) है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया बिला शुबा उस पर जन्नत हराम है और उसका ठिकाना दोज़ख़ है। और जिस दफ़्तर का नविश्ता अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देगा वह हुकूक़ अल्लाह है यानी वह ज़ुल्म जो उसने अपने और अपने रब के हुकूक़ के माबैन अपनी जान पर किये हैं, और तीसरा दफ़्तर जिसका नविश्ता बग़ैर बदला के नहीं रहेगा वह हुकूक़ल इबाद हैं यानी बन्दों की बाहम हक़ तलफ़ी है, हज़रत अबू हुरैरा से मरवी कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जानते हो कि क़यामत के दिन मेरी उम्मत में से कौन मुफ़लिस होगा सहाबा कराम ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह हम में से मुफ़लिस वह है जिसके पास माल व दौलत न हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से मुफ़लिस वह होगा जो अपने रोज़ों और नमाज़ के साथ तो आएगा लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का ख़ून (ना हक़) बहाया होगा और किसी को मारा होगा पस वह मज़लूम ज़ालिम की नेकियों से बदला हासिल करेगा और ज़ालिम की नेकियां उसकी होंगी, अगर नेकियां (बदला के लिये) ख़त्म हो जाएंगी तो मज़लूम की बुराईयां उसके नामाए आमाल में लिख दी जाएंगी, फिर उस (मुफ़लिस) को जहन्नम में फेंक दिया जाएगा इसलिये ज़ालिम के लिये ज़रुरी है कि तौबा में जल्दी करे।

तौबा में उजलत की जाए

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐसे ताख़ीर करने वाले लोग हलाक हो गए जो कहते हैं कि हम कुछ अर्सा बाद तौबा कर लेंगे। हज़रत इब्ने अब्बास आयते करीमा: "बल्कि आदमी चाहता है कि वह गुनाह करता चला जाए" की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि इन्सान चाहता है कि गुनाहों को बढ़ाता रहे और तौबा में ताख़ीर करता रहे, और फिर कहे अनक़रीब तौबा कर लूंगा यहां तक कि उसे मौत आ जाती है और बद तरीन हालत में आती है। लुक़मान हकीम ने अपने बेटे से कहा! तौबा को कल पर न टालना क्योंकि मौत

नागेहानी तौर पर आ जाएगी। पस हर एक शख़्स पर वाजिब है कि सुबह व शाम तौबा करता रहे। मुजाहिद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स सुबह व शाम तौबा न करे वह ज़ालिम है।

तौबा दो किस्म (नौइयत) की है एक वह जिसका ताल्लुक़ हक़्क़ुल इबाद से है उसका मुफ़सलन ज़िक्र हम कर चुके दूसरी वह है जिस का ताल्लुक़ बन्दा और अल्लाह तआला से है यानी हक़्क़ुल्लाह से है। हक़्क़ुल्लाह से इनहेराफ़ और अतलाफ़ से तौबा की शक्ल यह है कि ज़बान से इस्तिग़फ़ार करे और दिल में अपने किये पर शर्मिन्दा हो और यह पुख़्ता इरादा करे और वह गुनाह (जिन की तरफ़ हम पहले इशारा कर चुके हैं) नहीं करेगा लिहाज़ा तौबा करने वाले को इंतेहाई कोशिश करनी चाहिए और अपनी पूरी कुव्वत उस पर सर्फ़ कर देना चाहिए कि उसकी नेकियां ज़्यादा हो जायें ताकि क़यामत के दिन जबकि उसकी लेकर मज़लूमों के पलड़े में रख दी जायें तो यह ख़ाली हाथ न रह जाये। चुनांचे बन्दों के जितने ज़्यादा हुक़ूक़ उसके ज़िम्मा हों उतनी ही ज़्यादा नेकियां उसको करनी चाहिए वरना दूसरों के गुनाहो की वजह यह हलाक व तबाह हो जायेगा। पस यह ज़रूरी है कि तमाम उम्र नेकियां हासिल करने में मसरुफ़ रखे और तौबा के बाद बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी भी तवील हो तो ख़ूब नेकियां कमा सके वरना मौत तो घात में है और अकसर मौत क़रीब आ जाती है और तकमीले आरज़ू इख़लासे अमल और दुरुस्तीए नीयत से पहले ही मौत ज़िन्दगी को काट देती है तो अगर ऐसी सूरत वाक़ेअ हो गई तो तेरा क्या हाल होगा। इस लिए नेकियों के करने मे अपनी पूरी कोशिश करे उनसे माफ़ी तलब करे और उनके हुक़ूक़ अदा कर दे अगर वह लोग न मिलें जिनके हुक़ूक़ तल्फ़ किये है तो उनके वुरसा से रूजूअ करे तमाम हुक़ूक़ अदा करने के बाद भी ज़ालिम अल्लाह से डरता रहे और उसकी रहमत का उम्मीदवार रहे। ख़ुदावन्द बुज़ुर्ग व बरतर की ना पसन्दीदा बातों से बचता रहे उसकी इताअत व रजा के हुसूल में लगा रहे ऐसी हालत में अगर मौत आ जायेगी तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे हो जायेगा अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की जानिब हिजरत करके घर से निकला फिर उसे मौत आ गई इस हाल में तो उसका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे है।

सहीह बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में बरिवायत हज़रत अबू सईद ख़ुदरी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया तुमसे पहली उम्मतों में एक शख़्स था जिसने निन्नानवे ख़ून किये थे उसने रुए ज़मीन के सबसे बड़े आलिम के बारे में दरयाफ़्त किया किसी शख़्स ने उसे एक राहिब का पता बता दिया यह शख़्स उस राहिब के पास पहुंचा और उससे दरयाफ़्त किया कि किसी शख़्स ने निन्नानवे ख़ून किये हैं क्या उसके लिए तौबा मुमकिन है? राहिब ने कहा नहीं। यह जवाब सुनकर उस शख़्स ने राहिब को भी क़त्ल कर दिया, इस तरह सौ ख़ून पूरे कर देने पर उसने फिर सबसे बड़े आलिम का पता दरयाफ़्त किया उसे फिर एक आलिम का पता बता दिया गया वह वहां पहुंचा और उस आलिम से दरयाफ़्त किया कि मैंने सौ ख़ून किये हैं, क्या मेरे लिए तौबा मुमकिन है और क्या वह तौबा क़बूल हो सकती है? उस आलिम ने कहा हां हो सकती है। तेरे और तौबा के दर्मियान कौन हाएल हो सकता है फ़लां मकाम पर जा वहां कुछ लोग अल्लाह तआला की इबादत में मसरूफ़ हैं उनके साथ मिलकर तू भी इबादत कर और अपने इलाक़ा की तरफ़ लौट कर फिर कभी न जाना क्योंकि वह बहुत बुरी सरज़मीन है, चुनांचे यह शख़्स बताए हुए मकाम की तरफ़ चला अभी निस्फ़ रास्ता ही तय किया था

कि उसको मौत ने आकर दबोच लिया, रहमत और अज़ाब के फ़रिशतों के माबैन उसके लिए इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, रहमत के फ़रिशतों ने कहा कि यह तौबा करता हुआ अल्लाह की तरफ़ रुजू हुआ है, अज़ाब के फ़रिशतों ने कहा इसने कभी नेकी नहीं की थी, इस असना में एक फ़रिशता आदमी की शक्ल में आया, तमाम फ़रिशतों ने उसको हकम बना लिया, उसने कहा दोनों तरफ़ ज़मीन नाप लो जो जगह क़रीब हो यही इसके लिए है। चुनांचे दानों तरफ़ की ज़मीन नापी गई उस तरफ़ ज़मीन कम निकली जिधर तौबा करने जा रहा था (यानी उससे करीब थी) चुनांचे रहमत के फ़रिशतों ने उसे ले लिया।

एक रिवायत में आया है कि नेक आबादी का फ़ासला सिर्फ़ एक बालिश्त कम था दूसरी रिवायत में है कि गुनाहों की आबादी को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि उससे दूर हो जा और दूसरी आबादी (यानी नेकी की आबादी) को हुक्म हुआ कि उससे क़रीब हो जा और फिर फ़रमाया अब दोनों ज़मीनों का फ़ासला नाप लो, फ़रिशतों ने नेक आबादी की फ़ासला कम पाया (यानी उससे क़रीब पाई) और उसकी मग़फ़िरत कर दी गई, यह इस अम्र की खुली और रौशन दलील है कि नीयत करके तौबा का इरादा करना, तौबा की तरफ़ दौड़ना और तौबा की नीयत करना भी मुफ़ीद है और इस अम्र की भी दलील है कि नेकियों का पलड़ा वज़नी हुए बग़ैर भी ख़्वाह वह ज़र्रा भर ही क्यों न हो उसकी नजात नहीं है। पस तौबा करने वालों के लिए नेकियों की कसरत ज़रुरी है और उसको नवाफ़िल भी कसरत से पढ़ने चाहियें ताकि क़यामत के दिन हुकूक़ के दावेदारों को वह राज़ी कर सके और फ़राएज़ भी मुरतफ़ा हो जायें जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया नफ़्ल की कसरत करो उनके ज़रिये फ़राएज़ बलंद किये जायेंगे। अल्लाह से पोख़्ता और मुस्तहकम वादा और मज़बूत अहद कर लो कि आइन्दा यह और इस जैसे दूसरे गुनाह कभी नहीं करूंगा और इस वादे को इस तरह तक़वीयत पहुंचाये कि तंहाई और ख़ामोशी इख़्तियार करे ख़ोराक कम करदे कम सोए हलाल रोज़ी का इंतिज़ाम करे और शुबहा की रोज़ी से बचे ख़्वाह कमाई करके या मीरास से या किसी और हलाल ज़रिया से रोज़ी हासिल करे अगर मीरास के माल मे शुबहा हो या हराम का जुज़्व हो तो उसको दूर कर दे, उसे न खाये न पहने क्योंकि गुनाहों की जड़ हराम नर और दीन की बुनियाद हलाल रोज़ी पर है, तक़वा के साथ हलाल और पाक लुक़्मा दीन की असल है, इंसान में नेकी और बदी की जो ख़सलत पैदा होती है वह उसी लुक़्मा से पैदा होती है। पस याद रखो कि हलाल लुक़्मा नेकी पैदा करता है और हराम लुक़्मा बदी जैसे कि हांडी उसी चीज़ की खुशबू देती है जो उसमे पकाई जा रही है।

तौबा करने वाले को चाहिए कि उलमा और फ़ुक़हा की सोहबत में ज़्यादा बैठे और उनसे अपने दीन के बारे में इस्तिफ़सार करे और राहे ख़ुदा में चलने की मारफ़त हासिल करे, अल्लाह की इताअत में हुस्ने अदब और दीनी उमूर मे इस्तिक़ामत उनसे सीखे, उलमा उसको वह तमाम मख़्फ़ी बातें सिखायेंगे जो तरीक़त और सुलूक के लिए ज़रुरी हैं क्योंकि हर नावाक़िफ़े राह के लिए दलीले राह की ज़रुरत होती है और हादी की ज़रुरत है कि वह हिदायत करे। तौबा करने वाला उन तमाम बातों में सच्चाई इख़्लास और मुजाहदा को काम में लाए। अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो हमारी राह में कोशिश करते हैं हम उनको रास्ता बताते हैं।

बिला शुबहा हिदायत की राह में सच्ची कोशिश करने वाले का ख़ुदा हादी है, जब उस राह

मे सादिक़ होगा तो हिदायत को वह मादूम नहीं पायेगा (ज़रुर हिदायत पायेगा) इसलिए कि अल्लाह तआला ने उसका वादा फ़रमाया है और अल्लाह तआला न वादा ख़िलाफ़ है और न बन्दों पर जुल्म करने वाला है वह अर्रहमर्राहेमीन है, रऊफ़ व रहीम है, अपनी मख़लूक़ पर मेहरबानी करने वाला है, वह अपनी तरफ़ मुतवज्जेह होने वालों का मददगार और तौफ़ीक़ देने वाला है और जो उससे रुगरदान होते हैं और उससे पीठ मोडते हैं उनको मेहरबानी के साथ बुलाता है और उनकी तौबा से खुश होता है उसी तरह जैसे एक मेहरबान मां तवील सफ़र से अपने बटे की वापसी पर खुश होती है।

अल्लाह तआला की रज़ा मन्दी की एक मिसाल

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला बन्दे की तौबा से इस तरह खुश होता है जैसे तुम में से कोई शख़्स हलाकत ख़ेज़ बयाबान में सफ़र कर रहा हो और उसके साथ एक सवारी हो जिस पर ज़रूरियाते ज़िन्दगी लदी हों और वह सवारी मअ तमाम सामान के गुम हो जाये फिर वह उसकी तलाश में इस क़द्र मारा मारा फिरे कि जान लबों पर आ जाये उस वक़्त वह दिल में कहे कि अब वहीं चलना चाहिए जिस जगह सवारी गुम हुई है और वहीं मुझे मरना चाहिए और फिर वह उस जगह वापस आए, उसकी आंखें नींद से बोझल हों। चुनांचे एक लम्हा के लिए वह आंखें बन्द कर ले और एक लम्हा बाद जब आंखें खोले तो देखे कि उसकी सवारी मअ सामान के उसके सरहाने मौजूद है। उस वक़्त उस मुसाफ़िर की खुशी का क्या ठिकाना होगा (पस जैसी उस मुसाफ़िर की खुशी होगी वैसी ही खुशी अल्लाह तआला को होती है।)

हज़रत अली ने फ़रमाया कि मैंने अबू बकर सिद्दीक़ से सुना कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई बन्दा अगर गुनाह करे फिर उठ कर वजू करे और अपने गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह पर उसको बख़्श देने का हक़ हो जाता है क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

जिस शख़्स ने कोई गुनाह किया हो या अपने नफ़्स पर जुल्म किया हो वह अल्लाह से माफ़ी मांगे तो वह अल्लाह को बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला पाएगा।

अगर मौजूदा माल (जो तरके में मिला है) उसमें छीना हुआ माल शामिल हो (तो तौबा से पहले) उस माल को उसके मालिक को वापस कर दे इस सूरत में कि वह उसके ख़ास मालिक को जानता हो अगर मालिक न मिल सके तो उसके वुरसा को वापस कर दे, अगर यह सूरत न हो तो लाज़िम है कि उसके मालिक की तरफ़ से उस माल को सदक़ा कर दे, अगर हलाल माल के साथ हराम माल मिल गया है तो ग़ौर से हिसाब लगाए और हराम माल की क़िदार जानने की कोशिश करे फिर उतना माल सदक़ा कर दे बक़िया माल अपने और अहल व अयाल के खर्च में लाये।

किसी की बे आबरुई करना जैसे किसी को गाली देना या किसी को बुरा कहना दिल आज़ारी है और यह गुनाह है उसी तरह किसी को पीठ पीछे बुरा कहना (ग़ीबत करना) या इस तरह बुराई के साथ उसका ज़िक्र करना कि (अगर वह सुने तो) उसको बुरा मालूम हो, ग़ीबत में दाख़िल है उसका एवज़ या कफ़्फ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की है उससे वह बात कह दे जो

उसके पीछे कही गई है और उससे उस बात की माफ़ी मांगे अगर किसी जमाअत को बुरा कहा है तो उसके हर फ़र्द से माफ़ी मांगे अगर कोई फ़र्द उस जमाअत का फ़ौत हो गया तो मरने वाले की नेकियों का कसरत से ज़िक्र करे जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं। अगर जिस शख़्स की ग़ीबत की हो उसकी इत्तेला उसको न पहुंची हो तो ऐसी सूरत में उससे माफ़ी न मांगे कि उस सूरत में उसके दिल को दुख पहुंचेगा बल्कि जिन लोगों की मौजूदगी में ग़ीबत की हो उन के सामने खुद को झूठा क़रार दे और जिसकी ग़ीबत की हो उसकी तारीफ़ करे।

मज़ालिम का तदारूक और बदला लेने का बयान

गुनहगार ने जिसकी ग़ीबत की है या बुराई की है उसके रुबरु तमाम मज़ालिम को सराहत व तफ़सील से बयान करने और उसकी मिक़दार बताने की ज़रुरत नहीं है बल्कि मुबहम तरीक़े से कह दे कि तफ़सील की सूरत में उसका नफ़्स ज़ालिम को बख़्शने पर रज़ामन्द नहीं होगा बल्कि वह उसे क़यामत के दिन के लिए उठा रखेगा ताकि मज़लूम उसका बदला उसकी नेकियों से ले ले या मज़लूम की बुराईयां ज़ालिम के दफ़्तरे आमाल में शामिल कर दी जायें हां अगर इस क़िस्म का गुनाह है जिसके बयान करने से मज़लूम को अज़ीयत पहुंचेगी और उसका दिल दुखेगा जैसे उसकी बीवी या बांदी से ज़िना करने की ख़बर या किसी पोशीदा ऐब से उसे मनसूब करने का गुनाह अगर किया है तो मुबहम तरीक़े पर माफ़ी तलब करे इसके सिवा कोई और चारए कार नहीं है और फिर जो कुछ हक़ उसका रह जाये उसका इज़ाला नेकियों से करे जैसे मैय्यत या मफ़क़ूद की हक़ तलफ़ी। इज़ाला की सूरत यह है कि ज़्यादा से ज़्यादा नेकियां कमाये कि क़यामत के दिन अगर मज़लूम अपने हक़ के एवज़ ज़ालिम की नेकियां भी ले ले तब भी उतनी नेकियां बच जायें कि उसको (ज़ालिम को) जन्नत में जगह मिल जाये (बख़्श दिया जाये।)

अगर साहिबे हक़ को अपनी हक़ तलफ़ी का इल्म न हो और गुनहगार और मुजरिम को यह शुबहा हो कि मैं अगर साहिबे हक़ के सामने उसकी हक़ तलफ़ी बयान करुंगा तो वह जल्द माफ़ नहीं करेगा या मुक़ाबला पर आमादा हो जायेगा या उसके इज़हार में एक जान के ज़ियां का अन्देशा है तो कफ़्फ़ारा का तरीक़ा यह है कि उसके साथ नर्मी का बरताव करे, उसकी मुश्किलात को दूर करे और उसके ज़रूरी कामों की तकमील में सई करे, इस तरह मुहब्बत और शफ़क़त के बरताव से उसका दिल उसकी तरफ़ माएल हो जायेगा क्योंकि इंसान बन्दए एहसान है, हर शख़्स बुराई देख कर भागता और बचता है और हुस्ने सुलूक के बाएस उसका दिल माएल होता है अगर ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करना भी दुशवार हो तो इसका कफ़्फ़ारा यह है कि कसरत से नेकियां करे ताकि उसके गुनाह के एवज़ उसकी नेकियां बदला बन सकें, मसलन किसी ने किसी का माल तल्फ़ कर दिया है और तल्फ़ शुदा माल के एवज़ दूसरा माल उसको देना चाहा मगर उसने क़बूल करने से इंकार कर दिया (और हक़ उसी तरह बाक़ी रहा) लेकिन हाकिम हुक्म देता है कि उस माल को क़बूल करना होगा इसी तरह मैदान क़यामत में अल्लाह तआला एवज़ क़बूल करने का हुक्म देगा वह सबसे बड़ा हाकिम और सबसे बड़ा आदिल है।

ज़ोहद व तक़्वा

तौबा करने वाला जब हुकूकुल इबाद से बेबाक़ हो जाये और उसके ज़िम्मे कोई ज़ुल्म न रहे और खुसूसियत के साथ इबादात में मशगूल हो तो फिर तक़्वा का रास्ता इख़्तियार करे, तक़्वा ही के बाएस बन्दे को दुनिया और आख़िरत में बन्दों के हुकूक़ से और अल्लाह के अज़ाब से नजात हासिल होगी और उसी के बदौलत रोज़े हिसाब उससे आसान हिसाब लिया जायेगा इस लिए कि बराज़े क़यामत हुकूकुल इबाद और इंसानों के उन बाहमी मामलात का ज़रुर हिसाब होगा जो शरीयत के ख़िलाफ़ सरज़द हुए हैं। जिस शख़्स ने दुनिया में भी अपना हिसाब कर लिया और अपना हक़ मख़लूक़ से हासिल कर लिया और उस चीज़ को छोड़ दिया जिस पर उसका हक़ नहीं था और वह क़यामत के दिन हिसाब किताब की तवालत से डरा तो उसके हिसाब में सख़्ती नहीं की जायेगी। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला को परहेज़गारों का हिसाब करते शर्म आयेगी, इसलिए हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इससे क़ब्ल कि तुमसे हिसाब लिया जाये अपना मुहासबा ख़ुद करो और आमाल को वज़न करो क़ब्ल इसके कि उनको तौला जाये। नीज़ हुजूर ने फ़रमाया कि इंसान के इस्लाम की ख़ूबियों में से यह भी एक ख़ूबी है (यानी हुस्ने इस्लाम है) कि वह ग़ैर ज़रूरी बातों से इजतेनाब करे, इस हदीस शरीफ़ में इस तरफ़ इशारा है कि हर मामला में सोच विचार से काम ले और शरई इजाज़त के बग़ैर किसी काम की तरफ़ कदम न बढ़ाए अगर शरीयत में उसको इख़्तियार करने की गुंजाइश मौजूद है तो करे वरना बाज़ रहे और शरीयत के मुताबिक़ दूसरे काम की तरफ़ रुजू हो, इस इरशाद में इसी जानिब हुजूर का इरशाद है कि जो बात तुम को शक में डाले उसको छोड़ दो और उस चीज़ को इख़्तियार करो जिसमें शक शुबहा न हो।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मोमिन तवक्कुफ़ करने वाला है और मुनाफ़िक़ उजलत करने वाला होता है। (यानी मोमिन सोच समझ कर उस वक़्त काम करता है जबकि उसको शरीयत के मुताबिक़ पाता है और अगर ख़िलाफ़े शरअ़ होता है तो उसको तर्क कर देता है) आप ने इरशाद फ़रमाया, अगर तुम इतनी नमाज़ें पढ़ लो कि कमान की तरह ख़मीदा हो जाओ और इतने रोज़े रख लो कि तांत की तरह (दुबले पतले) बन जाओ तब भी बग़ैर तक़्वा के तुम को यह इबादत कोई नफ़ा न देगी।

एक हदीस शरीफ़ में है की जिसको यह परवाह नहीं कि उसका खाना पीना कैसा है (हलाल तरीक़ा से हासिल हुआ है या हराम तरीक़ा से) तो अल्लाह तआला भी परवाह नहीं करेगा कि उसे जहन्नम के किस दरवाज़े से दाख़िल किया जाए।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया की जो बन्दा हराम माल खाता है और उसी माल से सदक़ा देता है तो उसको (उस सदक़ा पर) कुछ अज्र नहीं मिलेगा और न हराम माल के ख़र्च में बरकत होती है और जो कुछ हाराम माल वह अपने पीछे छोड़ जाएगा वह उसके लिए जहन्नम के रास्ते का तोशा है। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तआला बदी को बदी से नहीं मिटाता बल्कि बदी को नेकी से मिटाता है।

हज़रत इमरान बिन हुसैन से मरवी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दो! मैंने तुम पर जो फ़र्ज़ किया है उसे बजा लाओ ताकि तुम लोगों में सबसे बढ़कर आबिद बनो और जिन बातों से मैंने मना किया है उन से बाज़ रहो ताकि तुम लोगों में ज़्यादा मुत्तक़ी बनो और जितना रिज़्क़ मैंने तुम को दिया है उसपर क़नाअत करो ताकि तुम लोगों में सबसे ज़्यादा ग़नी बन जाओ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा से फ़रमाया परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि लोगों मे सबसे ज़्यादा आबिद बनो।

तक़्वा के सिलसिले मे अस्लाफ़े कराम के अक़्वाल

हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया ज़र्रा भर परहेज़गारी, हज़ार रोज़े और नमाज़ (नफ़्ल) से बेहतर है अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को वही फ़रमाई कि अहले कुरबत को कोई चीज़ परहेज़गारी की तरह मुझसे क़रीब नहीं करती (परहेज़गार मुझसे सबसे ज़्यादा क़रीब हैं।) एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला के नज़दीक दिरहम का 1/6 मालिक को वापस कर देना (उसमें ख़यानत न करना) सौ मक़बूल हजों से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है। एक रिवायत में सत्तर मक़बूल हज आये हैं। हज़रत अबू हुरैरा ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बारी तआला का कुर्ब पाने वाले अहले तक़्वा और जुह्हाद होंगे।

इब्ने मुबारक ने फ़रमाया कि हराम का एक पैसा न लेना (रद्द कर देना) सौ पैसे सदक़ा करने से बेहतर है। इब्ने मुबारक के बारे में मनक़ूल है कि वह मुल्के शाम में हदीस (शरीफ़) की किताबत कर रहे थे, उनका कलम टूट गया उन्होंने आरियतन किसी से क़लम मांगा जब किताबत से फ़ारिग़ हो गए तो क़लम वापस करना भूल गये और क़लमदान में वह क़लम पड़ा रह गया जब वह शाम से मर्व पहुंचे तो क़लमदान में वह क़लम नज़र पड़ा फ़ौरन पहचान गये और फिर उन्होंने क़लम वापस करने के लिए मुल्के शाम के सफ़र की तैयारी शुरु कर दी और वापस जा कर दे दिया।

हज़रत लुक़मान बिन बशीर से मरवी है वह फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि हराम वाज़ेह है और हलाल भी वाज़ेह है लेकिन इन दोनों के दर्मियान बकसरत शुबहात हैं जिनको बहुत से लोग नहीं जानते लिहाज़ा जिसने शुबहात से इजतेनाब किया उसने अपना दीन महफ़ूज़ कर लिया और अपनी इज़्ज़त बचा ली जिसने ऐसा नहीं किया वह हराम मे मुब्तला हुआ, जिस तरह चरवाहा बकरियां चराता है और ख़्याल रखता है कि दूसरे के खेत में न जाने पायें कि हर बादशाह की एक महफ़ूज़ चरागाह होती है, अच्छी तरह सुन लो कि अल्लाह तआला की महफ़ूज़ चरागाह उसकी हराम कर्दा चीज़ें हैं (तहरीमी अहकाम हैं) सुनो! जिस्म में एक पारह गोश्त है, जब वह दुरुस्त होता है तो सारा जिस्म सही व सालिम (सेहत मन्द) रहता है और जब वह ख़राब हो जाता है तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है। जानते हो वह पारह गोश्त क्या है? वह दिल है।

हज़रत अबू मूसा अशअरी फ़रमाते हैं कि हर चीज़ की एक ख़ास हद मअय्यन है और इस्लाम की हुदूद हैं। परहेज़गारी, तवाज़ोअ, सब्र और शुक्र। तक़्वा और परहेज़गारी उन सब की जड़ है, सब्र दोज़ख़ से नजात का बाएस है और शुक्र जन्नत के हुसूल का ज़रिया। हज़रत हसन बसरी मक्का को गये तो देखा कि हज़रत अली की औलाद में से एक साहबज़ादे ख़ानए काबा से पुश्त

लगाए लोगों को नसीहत कर रहे हैं (वाअज़ कह रहे हैं) हज़रत हसन बसरी वहां रुक गये और उनसे दरयाफ़्त किया, मियां साहबज़ादे! दीन का सुतून क्या है? उन्होंने जवाब दिया तक़वा, फिर हज़रत हसन बसरी ने दरयाफ़्त किया दीन को तबाह करने वाली चीज़ क्या है? उन्होंने जवाब दिया लालच, यह सूनकर हज़रत हसन बसरी को कमाले तआज्जुब हुआ।

तक़वा की दो क़िस्में

हज़रत इब्राहीम अदहम ने फ़रमाया कि तक़वा की दो क़िस्में हैं एक वह जो फ़र्ज़ है दूसरा वह जो डर और ख़ौफ़ से हो। ग़रज़ तक़वा तो मआसी से बचना है और ख़ौफ़ और डर का तक़वा अल्लाह तआला के मुहर्रमात में शुबहात से बचनां, आवाम की परहेज़गारी तो हराम व शुबहा की उन तमाम चीज़ों से बचना है जिनका मख़लूक़ की नज़र में बुरा अंजाम और शरीयत की तरफ़ से उनपर मवाख़ज़ा है और ख़्वास की परहेज़गारी है उन तमाम चीज़ों से अलग रहना जिनमें ख़्वाहिश (नफ़्स) का दख़ल और नफ़्स की लज़्ज़त व रग़बत का शाएबा है और जो हज़रात ख़्वास में ख़ास है यानी ख़ासुल ख़ास है उनका तक़वा है उन चीज़ों से बचना जिनमें इंसान के इरादे और राय का दख़ल हो, गोया अवाम का तक़वा है तर्के दुनिया में, ख़्वास का तक़वा है तर्के जन्नत में और ख़ासुल ख़ास का तक़वा है मासिवा अल्लाह से हर शय का तर्क कर देना।

यहया बिन मआज़ राज़ी का क़ौल है कि तक़वा दो क़िस्म का है। एक ज़ाहिरी और दूसरा बातिनी। ज़ाहिरी तक़वा यह है कि तेरा इरादा और हर हरकत अल्लाह के लिए हो और बातिनी तक़वा यह है कि तेरे दिल में अल्लाह के सिवा किसी का दख़ल मुमकिन न हो। यहया बिन मआज़ ने यह भी फ़रमाया कि जो शख़्स तक़वा के दक़ाएक़ और बारीकियों पर नज़र नहीं करता उसे कुछ हासिल नहीं होता न ख़ुदा की तरफ़ से उसको कुछ अता होता है। कहा गया है कि जिसकी नज़र तक़वा में बारीकबीन है क़यामत में उसका मरतबा बलन्द व अरफ़अ होगा। एक क़ौल यह भी है कि गुफ़तगू का तक़वा सोने चांदी के तक़वा से ज़्यादा सख़्त है और सरदारी में तक़वा, सोने चांदी के तक़वा से ज़्यादा सख़्त है। इसलिए कि इन दोनों को तो उसके हुसूल के लिए ख़र्च किया गया है।

अबू सुलैमान दारानी फ़रमाते हैं कि तक़वा ज़ोहद का पहला दर्जा है जिस तरह क़नाअत रज़ा की आख़िरी मंज़िल है। हज़रत अबू उसमान ने फ़रमाया तक़वा का सवाब हिसाब में हल्का होता है और यहया बिन मआज़ राज़ी नें फ़रमाया तक़वा बग़ैर तावील के इल्म के मर्तबा पर फ़ायज़ होना है। इब्नुल जला का क़ौल है कि जिसकी दरवेशी में तक़वा नहीं है वह ज़ाहिर में हराम खाता है। युनुस बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि तक़वा हर मुशतबहा चीज़ से गुरेज़ करने (बच निकलने) और हर आन नफ़्स का मुहासबा का नाम है। हज़रत सुफ़ियान सूरी फ़रमाते हैं कि तक़वा से ज़्यादा आसान चीज़ मैंने नहीं देखी कि जो चीज़ दिल में खटकी (ज़रा भी मुशतबहा मालूम हुई) उसको मैंने छोड़ दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस फ़रमान का भी यही मतलब है कि जिस चीज़ के हलाल होने में तुम्हारे दिल में शुबहा हो और उसपर दूसरे लोगों का आगाह होना तुम पर गिरां गुज़रे, तुम्हारे सीने में उसके लिए कुशादगी पैदा न हो और दिल में कुछ शुबहा हो तो ऐसी चीज़ गुनाह है।

इसी तरह हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि गुनाह दिलों

में ख़राश पैदा करने वाला है यानी जो चीज़ में ख़राश और खटक पैदा करे उसपर दिल मुतमईन न हो तो उससे परहेज़ करो, इसी सिलसिला की एक और हदीस भी है जिसमें हुजूर ने फ़रमाया कि दिल में ख़राश पैदा करने वाली चीज़ों से बचो वह गुनाह हैं। यह भी इरशाद फ़रमाया है कि दिल में शक व शुबहा डालने वाली चीज़ को छोड़कर उस चीज़ को इख़्तियार करो जो शक व शुबहा पैदा करने वाली नहीं है।

हज़रत मारुफ़ करख़ी का क़ौल है कि जिस तरह मज़म्मत से ज़बान रोकते हो उसी तरह दूसरों की मदह से भी रोको। बिश्र हाफ़ी ने फ़रमाया: तीन काम मुशकिल तरीन हैं, अव्वल नादारी में सख़ावत, तन्हाई में परहेज़गारी और ऐसे शख़्स के सामने हक़ बात कहना जिससे उम्मीद भी हो और ख़ौफ़ भी (नुक़सान पहुंचाने का ख़ौफ़ और इनाम व अलताफ़ की उम्मीद) बिश्र बिन हारिस हाफ़ी की बहन हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया कि ऐ इमाम! हम छत पर बैठ कर सूत कातते हैं जब (नीचे) मशअलें गुज़रती है तो उसकी रौशनी हम पर पड़ती है क्या उसकी रौशनी मे हमें सूत कातना जायज़ है, हज़रत इमाम ने यह सुनकर फ़रमाया! खुदा तुम्हें माफ़ करे तुम कौन हो, उन्होंने कहा कि मैं बिश्र बिन हारिस की बहन हूं यह सुनकर हज़रत इमाम अहमद रोने लगे और फ़रमाया कि तुम्हारे घर से तो परहेज़गारी और तक़वा का दरिया बहता है तुम मशअलों की रौशनी में सूत न काता करो।

हज़रत अली अत्तार ने फ़रमाया मैं बसरा के एक कूचे से गुज़र रहा था मैंने देखा चन्द ज़ईफ़ लोग बैठे हैं और बच्चे खेल रहे हैं, मैंने उन बच्चों से पूछा तुमको इन बुजुर्गों के सामने खेलते शर्म नहीं आती, यह सुनकर एक बच्चा बोला चूंकि इन बुजुर्गों में तक़वा कम हो गया है इसलिए इनकी हैबत भी कम हो गई है।

हज़रत मालिक बिन दीनार चालीस साल बसरा में रहे लेकिन मरते दम तक बसरा का छुहारा या खुजूर नहीं चखी, जब खजूर की फ़स्ल ख़त्म हो जाती तो फ़रमाते बसरा वालो! न मेरे इस पेट का नुक़सान हुआ और न तुम्हारी खजूरों में कुछ कमी व बेशी हुई। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम से कहा गया कि हज़रत! आबे ज़म ज़म क्यों नहीं पीते, फ़रमाया मेरे पास डोल नहीं है मेरा डोल होता तो पीता।

रिवायत है हारिस मुहासबी जब मुशतबहा खाने ही तरफ़ हाथ बढ़ाते थे तो उंगुलियों के पोरों पर पसीना आ जाता था, इससे आप समझ जाते थे कि खाना हलाल नहीं है, कहते हैं कि हज़रत बिश्र हाफ़ी के सामने मुशतबहा खाना लाया जाता तो आप का हाथ खाने की तरफ़ बढ़ता ही नहीं था। हज़रत बायज़ीद बुस्तामी जब शिकमे मादर में थे उस वक़्त आप की वालिदा के सामने अगर मुशतबहा खाना आ जाता और वह और वह उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाना चाहतीं तो हाथ बढ़ता ही नहीं था। बाज़ बुजुर्गों के सामने जब मुशतबहा खाना लाया जाता तो खाने से बदबू निकलने लगती जिससे वह समझ जाते कि खाना मुशतबहा है और वह उसे न खाते, बाज़ हज़रात के मुताल्लिक़ मनकूल है कि जब वह मुशतबहा खाने का लुक़्मा मुंह में रखते तो लुक़्मा चबाया ही न जाता था बल्कि वह लुक़्मा उनके दहन में रेत की तरह हो जाता था। अल्लाह तआला ने यह सूरते उनका बोझ हल्का करने, उनकी आसानी और उनकी हिफ़ाज़त के लिए कर दी थी जब इन लोगों ने अपने लुक़्मों को हराम से पाक रखा, तलबे हलाल और तर्के हराम की कोशिश की

तो अल्लाह ने भी उनको मुशतबहा और ना मरगूब खानों से महफ़ूज़ रखा और खाने की शिना
उन पर आसान कर दी। फ़रोख़्त करने वालों की तलाश और उनके अहवाल की जुस्तजू अ
हराम व हलाल की तनक़ीह की उनको ज़रुरत बाक़ी नहीं रही और अल्लाह तआ़ला ने उन
पहचान अता कर दी। यह निशानियां और अलामात उन अकाबिरीन को अता हुई जिनके ह
पर हक़ तआ़ला की इनायत मबजूल और उसकी रहमत उनके शामिले हाल हुई, आम मुसलमा
के लिए हर वह चीज़ हलाल है जिसका नतीजा मख़लूक़ की नज़र मे क़ाबिले मज़म्मत न हो अ
न उस पर शरई मुवाख़ज़ा हो जैसा कि हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी के बारे में मनकू
है कि जब उनसे रिज़्क़ हलाल के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया हलाल वह है जिस
अल्लाह की ना फ़रमानी न हो। एक क़ौल यह भी उसके जवाब में उनसे मनकूल है कि उन्हों
फ़रमाया हलाल और पाक वह है जिसमें अल्लाह को फ़रामोश न किया गया हो।

हलाले ऐन अंबिया का खाना है

आम मुसलमानों के लिए हर वह चीज़ हलाल है जिसमें किसी मख़लूक़ का हक़ न हो अ
उस पर कोई शरई मुतालबा भी न हो जैसा कि हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी ने ए
सवाल के जवाब मे फ़रमाया हलाल हर वह चीज़ है जिसमें अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी
हो। दूसरी मरतबा फ़रमाया कि हलाल वह साफ़ माल है जिसमें कि हलाले ऐनी ही अगर हला
होता (उसके सिवा हर चीज़ हराम) तो किसी के लिए मुरदार खाना हलाल न होता और न व
खाना हलाल होता जिसे किसी सिपाही ने अपने हराम माल से ख़रीदा और फिर जिससे ख़री
उसको वापस करके अपने दाम वापस ले लिए, ऐसा खाना मुत्तक़ी मोमिन के लिए जायज़ न
इसलिए कि ख़रीदने और वापस करने के दर्मियान उस खाने पर एक ऐसी हालत भी गुज़री
जिसमें वह खाना हराम था और वह हुरमत सिपाही ख़रीदार के हाथ में जाने से पैदा हुई अगर
तमाम मुसलमान बिला इत्तेफ़ाक़ वापसी के बाद उस खाने को हलाल जानते हैं, इस तरह य
बात ज़ाहिर हो गई कि हलाल व हराम वह है जिस पर शरीयत ने हुक्म दिया न कि वह श
बज़ाते ख़ुद हलाल व हराम है। हलाले ऐन अंबिया अलैहिमुस्सलाम का खाना है जैसा कि हदी
शरीफ़ में वारिद है रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को यह दुआ मांग
सुना कि इलाही! मझे हलाले मुतलक़ रोज़ी अता फ़रमा। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
फ़रमाया हलाले मुतलक़ रोज़ी का रिज़्क़ अंबिया का रिज़्क़ है, तू ऐसा रिज़्क़ अल्लाह से मां
जिस पर तुझे अज़ाब न हो।

यहूदी, नसारा, और ज़िम्मीयों के बारे में हराम चीज़ों की फ़रोख़्त का हुक्म

शरीयत में है कि अगर कोई काफ़िर, ज़िम्मी, यहूदी, नसारानी और मजूसी, हराम चीज़ों क
तिजारत करे मसलन शराब, ख़िन्ज़ीर वग़ैरह तो उसको उसकी इजाज़त दे दी जाएगी उस
क़ीमत का उश्र (दसवां) ले लिया जाएगा यह बात हज़रत उमर से साबित है कि आपने हु
फ़रमा दिया था कि इन ज़िम्मीयों को ऐसी तिजारत करने की इजाज़त दे दो और उनसे उसक
क़ीमत का दसवां हिस्सा ले लो। अब सवाल यह पैदा होता है कि उस उश्र (दसवां) का क्
किया जाता था? क्या उससे मुसलमान फ़ायदा उठाते थे, (ज़रुर उठाते थे), अब अगर सि
हलाले ऐनी (वह जो अपनी ज़ात के एतबार से हलाल हो) ही को हलाल क़रार दिया जा

तो शराब और ख़िन्ज़ीर हराम हैं, उनकी क़ीमत का उश्र (दसवां) किस तरह हलाल हो सकता है। हालांकि मिक़दार और क़ब्ज़ा के तग़य्युर के बाएस उसको हज़रत उमर ने हलाल क़रार दे दिया था, पस जिस शख़्स ने अपने हाथ में शरीयत की मशअल ले कर उसकी रौशनी में लेन देन किया और उस लेन देन में कुछ तग़य्युर व तबद्दुल नहीं किया और शरीयत के दायरा से क़दम बाहर न रखा और वही लिया जिसकी शरीयत ने इजाज़त दी है और वही दिया जिसका हुक्म शरीयत ने दिया है और शरीयत के मुताबिक़ ही तमाम तसर्रूफ़ात किये तो ऐसे शख़्स को हलाल खाने वाला कहा जाएगा और हलाले मुतलक़ की तलब और तलाश उसके लिये ज़रुरी नहीं है। नीज़ यह कि हलाले मुतलक़ का दस्तयाब होना तक़रीबन ना मुमकिन है। बजुज़ उसके कि अल्लाह तआला अपने बाज़ औलिया व असफ़िया को उससे सरफ़राज़ फ़रमा दे और अल्लाह तआला के लिये यह अम्र कुछ दुशवार नहीं।

रोज़ी कमाने के लिहाज़ से तीन क़िस्म के लोग

रोज़ी कमाने के लिहाज़ से लोग तीन तरह के हैं, अव्वल मुत्तक़ी, दूसरे वली, सोम अहले मारफ़त। मुत्तक़ी के लिये बस वह चीज़ हलाल है जो अपने नतीजा के एतबार से मख़्लूक़ की नज़र में ऐब के क़ाबिल न हो और न उसपर कोई शरई मुवाख़ज़ा हो। वलीए कामिल मोमिन के लिये वह खाना हलाल है जिसमें नफ़सानी ख़्वाहिशात का शाएबा और उसकी आमेज़िश न हो महज़ अम्रे इलाही के ताबेअ हो (जो कुछ मयस्सर आ गया वह खा लिया)

आरिफ़ों और अहले मारफ़त का खाना वह है जिसमें उनके क़स्द व इरादा को मुतलक़ दख़ल न हो बल्कि सिर्फ़ तक़दीरे इलाही कारफ़रमा होती है, अल्लाह तआला का फ़ज़्ल हमेशा उनके शामिले हाल रहता है, वही उनकी रोज़ी फ़राहम करता है और वही उस रोज़ी तक उनकी रहनुमाई फ़रमाता है। अल्लाह तआला अपनी कुदरते कामिला और मशीयत से उनके लिये हर शय मुहय्या करता है और अपनी नेमतों से सरफ़राज़ करता है और वह अल्लाह के फ़ज़्ल के तहत इस तरह परवरिश पाते हैं जिस तरह एक शीर ख़्वार बच्चा मां की आग़ोश में परवरिश पाता है, पस जब तक पहला मरतबा हासिल न हो दूसरे दरजा तक रसाई हासिल नहीं होती, और जब तक दूसरे दरजा पर न पहुंच जाए तीसरे मक़ाम का हुसूल नहीं हो सकता।

मुत्तक़ी का खाना बे नफ़्स आदमी के लिये मुशतबहा है और बे नफ़्स शख़्स का खाना उस शख़्स के हक़ में मुशतबहा है जिसने अपने इरादों को मशीयते इलाही के ताबेअ कर दिया और राहे इलाही में फ़ना कर दिया है जैसा कि कहा गया है सय्यातुल मुक़र्रेबीन हसनातुल अबरार है यानी अहले कुरबत की बुराईयां नेक लोगों की नेकियों के बराबर हैं, पस शैख़ का खाना मुरीद के लिये मुबाह है मगर शैख़ के लिये मुरीद का तआम शैख़ के तज़किया हाल, पाकीज़गीए नफ़्स क़ुर्बे इलाही और मंज़िलत की बलन्दी के बाएस हराम है।

तक़्वा की एक और मिसाल

हक़ाइक़े तक़्वा के सिलसिला में एक और मिसाल कहश से मनक़ूल है, कहते हैं कि मुझसे एक ऐसा गुनाह हो गया जिसकी नदामत में मैं चालिस साल से रोता हूं, मेरा एक भाई मुझसे मिलने को आया मैंने उसकी मदारात के लिए एक दांग की भुनी हुई मछली ख़रीदी, जब वह खाने से फ़ारिग़ हो गया तो हाथ साफ़ करने के लिये पड़ोसी की दीवार से (उसकी इजाज़त के बग़ैर

एक ढेला तोड़ कर मैंने उसको दे दिया उसने उस मिट्टी से हाथ मल कर साफ़ कर लिये और मैंने इस फ़ेअल पर पड़ोसी से उसकी माफ़ी तलब नहीं की।

दूसरी मिसाल

मनकूल है कि एक मकान में किराएदार रहता था उसने किसी को ख़त लिखा, (रौशनाई ताज़ा थी) उसने चाहा कि उस मकान से थोड़ी सी मिट्टी लेकर सियाही को ख़ुश्क करदे फ़ौरन उसके दिल में ख़तरा गुज़रा कि मकान उसकी मिल्क में नहीं है बल्कि किराया पर है, चन्द लम्हे बाद उसने दिल को यह कह कर बहला लिया कि थोड़ी मिट्टी लेने में क्या डर, चुनांचे मिट्टी ले कर ख़त ख़ुश्क कर लिया फ़ौरन ग़ैब से आवाज़ आई कि ऐ मिट्टी को हक़ीर व ख़फ़ीफ़ समझने वाले! तुझे बहुत जल्द पता चल जाएगा जब कल तू तवील हिसाब में गिरफ़तार होगा।

तीसरी मिसाल

उतबा को लोगों ने देखा कि वह मौसमे सरमा में पसीने से शराबोर हैं, किसी ने वजह पूछी तो कहा कि यह मकान वह है जिसमें मैंने अपने रब की नाफ़रमानी की थी, जब उनसे गुनाह के बारे दरयाफ़्त किया गया तो बताया गया कि हाथ साफ़ करने के लिये मिट्टी का ढेला दीवार से उखाड़ लिया था और मालिक मकान से उसकी इजाजत नहीं ली थी।

चन्द और मिसालें

मनकूल है कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल ने मक्का मुकर्रमा में एक दुकानदार के पास अपना तश्त गिरवी रख दिया जब उसको वापस लेने का वक़्त आया तो दोकानदार ने दो तश्त आपके सामने रख दिये और कहा कि इन दोनों में जो आपका हो ले लीजिए, हज़रत इमाम ने फ़रमाया कि अपने तश्त का पहचानना मेरे लिये मुश्किल है लिहाज़ा यह दोनों तश्त तुम ही अपने पास रहने दो। इमाम साहब ने रेहन का रुपया उसको दे दिया, दोकानदार ने कहा कि हज़रत मैं तो आपकी आज़माईश कर रहा था, यह रहा आपका तश्त। इमाम साहब ने फ़रमाया, अब मैं नहीं लूंगा यह कहकर तश्त छोड़ कर चले गए।

मरवी है कि हज़रत राबिआ अदविया ने शाही मशअल की रौशनी में अपनी फटी हुई क़मीज़ सी ली उसके नतीजा में उनके दिल की हालत बदल गई (दिल को खोया खोया सा पाने लगी) उनको कुछ मुद्दत बाद अपनी फटी हुई क़मीज़ का ख़्याल आया फ़ौरन ही क़मीज़ को फाड़ डाला और रख दिया दिल की हालत दुरुस्त हो गई और फिर नूर पैदा हो गया।

किसी ने सुफ़ियान सूरी को ख़्वाब में देखा कि परिन्दे की तरह आपके दो बाज़ू हैं और जन्नत में वह एक दरख़्त से उड़ कर दूसरे दरख़्त पर पहुंच जाते हैं उनसे पूछा कि आपको यह मर्तबा कैसे मिला आपने जवाब दिया कि तक़वा के बाएस।

हस्सान इब्ने सुफ़ियान के बारे में रिवायत है कि वह साठ बरस तक न लेट कर सोये न चरबी (चिकनाई) खाई और न ठंडा पानी पिया। आपके इन्तेक़ाल के बाद किसी शख़्स ने आपको ख़्वाब में देखा आपसे पूछा कि अल्लाह तआला ने आपके साथ क्या मामला किया, फ़रमाया अच्छा सुलूक किया लेकिन मैं एक सूई के बाएस जिसे मैंने आरियतन लिया था और उसे वापस नहीं किया जन्नत से रोक दिया गया हूं।

हज़रत अब्दुल वाहिद बिन जैद का एक गुलाम चन्द साल से उनकी ख़िदमत में था वह चालीस साल तक इबादत गुज़ार रहा, अब्दुल वाहिद के पास वह ग़ल्ला नापने की ख़िदमत पर मामूर था उसके इन्तेक़ाल के बाद किसी शख़्स ने देखा और पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या मामला किया उसने जवाब दिया कि मेरे साथ बेहतर हुआ है लेकिन मुझे जन्नत से रोक दिया है क्योंकि जब मैं ग़ल्ला नाप के देता था तो मेरे पैमाने से चालीस पैमाने गर्द व गुबार (मेरे ज़िम्मा) निकाली गई यानी हर नाप के साथ जो गर्द व गुबार ग़ल्ला के साथ मिलकर जाता था वह चालीस पैमाने निकला और उसकी सज़ा में मुझे जन्नत में जाने से रोक दिया गया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक कब्रस्तान से गुज़र हुआ आपने उन मुर्दों में से एक मुर्दे को पुकारा हुक्मे इलाही से वह ज़िन्दा हो गया आपने उससे दरयाफ़्त किया तू कौन है? उसने अर्ज़ किया हज़रत मैं हम्माल (कुली) हूं लोगों के बोझ उठाया करता था एक रोज़ एक आदमी का गट्ठा मैंने पहुंचाया, असनाए राह में उन लकड़ियों में से एक तिन्का दांत कुरेदने के लिए तोड़ लिया, उसका मुतालबा मरने के वक़्त से अब तक मुझ से किया जा रहा है।

तक़वा की तकमील के शराएत

तक़वा की तकमील की दस शर्तें

इंसान जब तक इन दस बातों को पूरा न करे उस वक़्त तक कामिल तक़वा हासिल नहीं होगा।

अव्वल: ग़ीबत से ज़बान को रोकना, अल्लाह तआला का इरशाद है: तुम में से कोई किसी की ग़ीबत न करे।

दोम: बद गुमानी से बचना और परहेज़ करना, अल्लाह तआला का हुक्म है: बहुत गुमान करने से बचो बाज़ गुमान गुनाह होते हैं। हदीस शरीफ़ मे वारिद है कि हूज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया गुमान से परहेज़ करो, गुमान बड़ी झूठी बात है।

सोम: मज़ाह (ठठ बाज़ी) से इजतेनाब करो, अल्लाह का इरशाद है: कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाये।

चहारुम: ना महरम से आंखें बन्द रखना, अल्लाह तआला का इरशाद है: अहले ईमान से कह दीजिए कि वह अपनी आंखें नीची रखें।

पंजुम: ज़बान (गुफ़्तगू) की सच्चाई, अल्लाह तआला फ़रमाता है: जब बात चीत करो तो सच बोलो (इंसाफ़ करो)।

शशुम: अल्लाह के एहसान को पहचानना ताकि मग़रूर न हो जाये, अल्लाह का इरशाद है: बल्कि यह तो अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुमको मोमिन होने की हिदायत की।

हफ़्तुम: राहे हक़ मे माल को ख़र्च करना नाजायज़, रास्ता में ख़र्च न करना, अल्लाह तआला फ़रमाता है: और वह लोग जब ख़र्च करते है तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं और न बुख़्ल करते हैं। नेक कामों में ख़र्च में बुख़्ल नहीं करते और मासीयत में ख़र्च नहीं करत।

हश्तुम: दुनिया में उरूज और ग़ुरूर का तालिब न हो, अल्लाह तआला का इरशाद है:

आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिए रखेंगे जो ज़मीन पर न इतराते हैं और न फ़साद बरपा करते हैं।

नहुमः नमाज़ पंजगाना की उनके औक़ात में हिफ़ाज़त करना (उनको अदा करना) और उनके रुकूअ व सुजूद में पाबन्दी करना क्योंकि इरशादे रब्बानी हैः तमाम नमाज़ों को निगाह रखो (नमाज़ों की पाबन्दी करो) खुसूसन दर्मियानी नमाज़ अस्र को और अल्लाह के हुज़ूर खुज़ूअ के साथ खड़े रहो।

दहमः मज़हब सुन्नत पर क़ायम रहना, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः और यक़ीनन यह मेरी सीधी राह है तुम इस (सुन्नत) पर चलो दूसरी राहें मत इख़्तियार करो अगर दूसरे रास्तों में दाख़िल होगे तो अल्लाह के सीधे रास्ते से भटक जाओगे।

बाज़ गुनाहों से तौबा

बयक वक़्त तौबा

बयक वक़्त अगर तमाम गुनाहों से मुमकिन न हो तो बाज़ गुनाहों से तौबा करना और बाज़ से न करना जायज़ है। मसलन कबीरा गुनाहों से तौबा करे आर सग़ीरा से न करे कि वह जानता है अल्लाह तआला के नज़दीक कबाइर बड़े गुनाह होते हैं और यह अल्लाह तआला के अताब और सख़्त अज़ाब में मुब्तला करने वाले हैं और सग़ीरा गुनाहों का दर्जा कमतर है इसलिए उनकी माफ़ी का रास्ता क़रीबी है। यह ख़्याल करके कबाइर से तौबा करना दुशवार नहीं है इसके बाद जब दिल में ईमान व यक़ीन मुस्तहकम हो जाएगा और हिदायत के अनवार ज़ाहिर हो जायें और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ होने में बन्दे का सीना खुल जाये तो उस वक़्त तमाम सग़ाइर गुनाहों की बारीकियों, शिर्क ख़फ़ी, दिलों के गुनाह और मक़ामात व हालात के तमाम गुनाहों तौबा करे बल्कि उसके बाद तो हर मक़ाम और हालत के गुनाह से भी तौबा करता रहेगा, जब बन्दा को किसी मक़ाम (इरफ़ान) पर तरक़्क़ी होती है तो वहां पहुंचकर वह खुद जान लेता है कि उसे क्या करना चाहिए। इस बात को वही समझ सकता है जो उसका मज़ाक़ रखता है और उस रास्ता पर गामज़न है। उस राह के राह रौं से मिलता जुलता है इसलिए बारे अव्वल ही उन लोगों की गिरफ़्त उस चीज़ पर न बढ़ने लगे जो इन्तहा दर्जा की चीज़ है। तुम को आसानी पैदा करने के लिए भेजा गया है, दुशवारियां और नफ़रत पैदा करने के लिए नहीं भेजा गया है। बिला शुबहा दीने इस्लाम एक मज़बूत दीन है यह कच्चा दीन नहीं है आहिस्तगी और नर्मी के साथ इस पर चलो, जिसने तरक़्क़ी की राह छोड़ी उसके लिए कोई सवारी नहीं है और न उसका कोई राहबर है।

जिस शख़्स ने बाज़ कबीरा गुनाहों से तौबा की और बाज़ से नहीं की और यह ख़्याल किया कि अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा सख़्त और ज़्यादा अज़ाब का बाएस हैं यह समझकर वह उन बाज़ कबाइर से ताइब हो गया और बाज़ से नहीं हुआ। उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स क़त्ल लूट मार और लोगों पर ज़ुल्म व सितम करने से इसलिए तौबा कर लेता है कि वह जानता है कि बन्दों के हुक़ूक़ (बदला के बग़ैर) नहीं छोड़े जायेंगे और वह गुनाह जिन का ताल्लुक़ बन्दे और अल्लाह के दर्मियान है जल्द तर माफ़ हो जायेंगे या एक शख़्स शराब पीने से तो तौबा कर लेता है लेकिन ज़िना से नहीं करता इस ख़्याल से कि शराब तमाम बुराइयों की जड़ है और इससे

अक़्ल ज़ाये हो जाती है और बन्दा तमाम गुनाहों का मुरतकिब होता है, मदहोश हो कर इंसान मुग़ल्लज़ात बकने लगता है, अल्लाह से मुनकिर हो जाता है, तोहमत पर उतर आता है, ज़िना करता है उसे बुत परस्ती से रुकने का भी होश नहीं रहता ग़र्ज़कि वह तमाम गुनाह कर गुज़रता है क्योंकि शराब तमाम गुनाहों की जड़ है और उनका सरचश्मा है जैसे कोई शख़्स चन्द सग़ीरा गुनाहों से तो तौबा कर लेता है मगर कबीरा गुनाहों पर डटा रहता है जैसे ग़ीबत या ना महरम को देखने से तो तौबा कर लेता है मगर मय नोशी पर क़ायम रहता है क्योंकि वह उसका बहुत ज़्यादा आदी है और उसका खूगर है या उसका नफ़्स उसको धोका देता है और वह समझता है कि यह मेरी बीमारी का इलाज है और दवा के तौर पर इस्तेमाल की हमको इजाज़त है, शैतान भी उसको वरग़लाता है और शराब की अच्छाइयां उसके सामने पेश करता है और ख़ुद भी उसको मय नोशी का बड़ा शौक़ है जानता है कि पीने से सुरूर व कैफ़ हासिल होता है तमाम ग़म दूर हो जाते हैं अलावा अज़ीं सेहते जिस्मानी का फ़ायदा भी हासिल होता है हलाकत आफ़रीन नताइज और बुरे अवाक़िब उसकी नज़र से छुप जाते हैं और वह अल्लाह के अज़ाब की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो जाता है न दीन की ख़राबियों की तरफ़ उसकी नज़र जाती है और न दुनिया की। उसको यह ख़्याल नहीं आता कि शराब अक़्ल को बरबाद कर देती है और अ[illegible] ही से दीन और दुनिया के तमाम काम सर अंजाम होते हैं।

हमने अभी ऊपर बयान किया है कि बाज़ गुनाहों से [illegible] करना दरुस्त होता है उसकी वजह यह है कि हर मुसलमान आम हालत में अल्लाह तआला की इताअत और नाफ़रमानी से ख़ाली नहीं होता हां हालात में [illegible]वुत होता है। अल्लाह तआला की कुरबत के लिहाज़ से गुनाहों का छोटा बड़ा होना अलग अलग चीज़ है, [illegible]सिक़ [illegible] यह कहता है कि हवा व हवस के ग़लबा की वजह से शैतान अगर मुझ पर ग़ालिब आ गया [illegible] और उसने मुझसे गुनाह सरज़द कराए थे तो यह तो मुझे क[illegible] ज़ेब नहीं देता कि न[illegible]स को आज़ाद[illegible] छो[illegible] और गुनाहों में आलूदा होता रहूं बल्कि जिन गुना[illegible] का तर्क करना मेरे लिए आसान है उनको कोशिश करके छोड़ दूं मेरी यह कोशिश मेरे दूसरे गुना[illegible] कफ़्फ़ारा बन जायेगी और शायद अल्लाह तआला यह देखकर कि मैं उसके ख़ौफ़ से बाज़ गुनाह [illegible] कर रखा हूं और अपने नफ़्स और शैतान से जिहाद में मसरूफ़ हूं मेरी मदद फ़रमाए औ[illegible] अपनी रहमत से दूसरे गुनाहों के तर्क की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमा दे और मैं जो दूसरे गुनाह करता उनके दर्मियान रुकावट डाल दे।

फ़ासिक़ की इबादात

अगर हमारा यह क़ौल दुरुस्त क़रार नहीं दिया जायेगा तो फिर फ़ासिक़ की नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज ग़र्ज़ कि कोई ताअत व इबादत भी सही नहीं होगी और उससे बस यह कह दिया जाये कि तू फ़ासिक़ है, अल्लाह की ताअत से ख़ारिज है, हुक्मे इलाही की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने वाला है इस लिए तेरी ताअतें और इबादतें अल्लाह के लिए नहीं हैं बल्कि ग़ैर अल्लाह के लिए हैं। अगर तू अल्लाह की इबादत का दाई है तो फ़िस्क़ को छोड़ दे इस राह में बस अल्लाह का एक ही हुक्म है और जब तक तू फ़िस्क़ को तर्क न कर दे यह ख़्याल नहीं किया जा सकता कि तू अपनी नमाज़ो से अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल करना चाहता है यह महाल है ऐसा नहीं किया जायेगा।

एक मिसाल

इस दलील की मिसाल यह है कि एक शख़्स पर दो लोगों के दो दीनार क़र्ज़ है और मक़रुज़ इतनी इस्तेताअत रखता है कि दोनों का क़र्ज़ अदा कर दे लेकिन वह शख़्स दो में से एक का क़र्ज़ चुकता कर देता है (एक दीनार अदा कर देता है) और दूसरे का क़र्ज़ अदा करने से इन्कार कर देता है और क़सम खा लेता है बावजूद कि वह जानता है और दिल में क़र्ज़दार होने का भी इक़रार करता है तो इस सूरत में बिला शुबहा जिसका उसने क़र्ज़ अदा कर दिया उसके बारे में वह सुबुक दोश हो गया लेकिन दूसरे शख़्स का क़र्ज़ जिससे वह मुनकिर है उस पर बाक़ी रहा। इसी तरह वह शख़्स जो अल्लाह तआला के बाज़ अहकाम बजा लाता है और उसका मुतीअ है लेकिन जब वह ममनूआत के इरतेकाब से नाफ़रमानी करता है तो वह उस मआसीयत की वजह से गुनहगार बनता है और उसका इमान नाक़िस रहता है क्योंकि वह एक ही वक़्त में कुछ उमूर में अल्लाह का मुतीअ व फ़रमाबरदार है और बाज़ बातों में ना फ़रमान है, दीनी उमूर में ताअत व मआसियत का ख़लत मलत करने वालों का यही तरीक़ा है। अब अगर यह शख़्स (तरक़्क़ी करके) उस दर्जा पर पहुंच जाये कि नफ़सानी ख़्वाहिशात ज़ाएल हो जाये उस वक़्त वह तमाम गुनाहों से बाज़ आ जाता है बशर्ते ख़ुदावन्द तआला यह सिलसिला मुनक़तअ करना चाहे, अगर अल्लाह तआला की मर्ज़ी नहीं है और बन्दा पर गुनहगार होने का आख़िरी फ़ैसला वह कर दे तो किसी के बस की बात नहीं क्योंकि गुनाहों से महफ़ूज़ रहना हमारे बस की बात नहीं मगर जो अल्लाह तआला से तौबा करता है उस पर अल्लाह तआला रहम भी फ़रमाता है और जो उसकी तरफ़ रुजूअ करता है उसकी मेहरबानी उसके शामिले हाल होती है।

तौबा के बारे में अहादीस व आसार

तौबा के मुताल्लिक़ अहादीस

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि जुमा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुत्बा में हम से इरशाद फ़रमाया कि ऐ लोगों! मरने से पहले तौबा करो और क़ब्ल इस के कि ज़ोअफ़ या बीमारी की वजह से आजिज़ हो जाओ नेक आमाल में उजलत करो, अल्लाह से अपना ताल्लुक़ जोड़ लो कामयाब हो जाओगे। ख़ैरात ज़्यादा करो तुम्हारे रिज़्क़ में अफ़ज़ूनी होगी, दूसरों को भलाई का हुक्म दो महफ़ूज़ रहोगे, बुरी बातों से लोगों को रोको तुम्हारी मदद की जायेगी। हुज़ूरे अक़दस अकसर यह दुआ फ़रमाया करते थेः इलाही मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा बेशक तू ही तौबा करने वाला और मेहरबानी करने वाला है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है किः इब्लीस को जब ज़मीन पर उतारा गया तो कहने लगा इलाही! तेरी इज़्ज़त और जलाल की क़सम! आदमी के बदन में जब तक जान रहेगी मैं बराबर उसको बहकाता रहूंगा, परवरदिगार ने फ़रमाया मुझे अपने इज़्ज़त व जलाल की क़सम!

जब तक मौत की आख़िरी हिचकी उसे न आ जाये मैं उसकी तौबा भी फरमाऊंगा।

हज़रत मोहम्मद बिन मतरफ़ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि आदमी पर रहमत हो कि वह गुनाह करता है और मुझसे माफ़ी मांगता है और मैं उसको बख़्श देता हूं, उस पर रहमत हो कि वह दोबारा गुनाह करता है और मुझ से मग़फ़िरत तलब करता है और मैं उसे माफ़ कर देता हूं रहमत हो उस पर कि न तो वह गुनाह के इरतेकाब से बाज़ आता है और न मेरी रहमत से मायूस होता है मैं तुम को गवाह बनाता हूं कि मैंने तुम को बख़्श दिया!

हजरत अनस ने फ़रमाया कि आयते करीमा **व अनिस तग़फ़ेरू रब्बकुम सुम्मा तुबू अलैहे** के नूज़ूल के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा कराम सौ मरतबा इस्तिग़फ़ार करते और कहते थे :हम अल्लाह से मगफ़िरत चाहते हैं और तौबा करते है। हज़रत अनस ने फ़रमाया कि एक शख़्स हुज़ूर की मजलिस में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मुझसे एक बड़ा गुनाह सरज़द हो गया है, आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करो उसने अर्ज़ किया मैं इस्तिग़फार कर लेता हूं फिर दोबारा वैसा करता हूं आपने फ़रमाया जब भी गुनाह का इरतेकाब किया करे तौबा किया कर यहां तक कि शैतान ज़लील व ख़्वार हो जाये उसने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह और मेरे गुनाह ज़्यादा हो जायें तो? हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह तआला की माफ़ी तेरे गुनाहों से बहुत ज़्यादा है।

बग़ैर तौबा के मग़फ़िरत नहीं

हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि बग़ैर तौबा के मग़फ़िरत की और बग़ैर अमल सवाब की उम्मीद न रखो इसलिए कि अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल होना उसके ग़ज़ब में मुबतला कर देता है और ऐसे आमाल का इरतेकाब करना जिससे वह राजी न हो और उस पर मग़फ़िरत की आरज़ू करना तेरी आरज़ू की फ़रेब ख़ुरदगी है यहां तक कि (उसी हालत में) मौत आ जायेगी क्या तूने अल्लाह तआला का यह इरशाद नहीं सुना यानी बेकार उम्मीदों ने तुम को फ़रेब दिया आख़िर तुम को ख़ुदा का हुक्म आया और अल्लाह के मुताल्लिक़ तुम को शैतान ने धोके में रखा दूसरी जगह (इसी बारे में) इरशाद होता है जिसने तौबा की, ईमान लाया और नेक काम किये और सीधी राह इख़तेयार की मैं उसे बख़्श देता हूं। यह भी इरशाद फ़रमाया मेरी रहमत हर चीज़ को अपने अन्दर समाये हुए है मैं अपनी रहमत उन लोगों के लिए मुक़द्दर करुंगा जो तक़्वा रखते हैं और ज़कात देते हैं और मेरी आयात पर इमान रखते हैं।

पस बग़ैर तौबा व तक़्वा रहमत और जन्नत की आरज़ू व हिमाक़त, नादानी और नफ़्स का फ़रेब है क्योंकि रहमत और जन्नत की शर्तें इन मज़कूरा आयतों में बयान कर दी गई हैं यानी रहमत व जन्नत तौबा व तक़्वा के साथ मरबूत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है मोमिन अपने गुनाहों को पहाड़ के मानिन्द समझता है और डरता है कि वह पहाड़ कहीं सर पर न आ गिरे और फ़ाजिर अपने गुनाहों को उस मक्खी के मानिन्द समझता है जो नाक पर बैठी हुई है कि इशारे से उसको उड़ाया जा सकता है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बन्दा गुनाह करता है और वह गुनाह उसको बहिश्त में ले जाता है? आप ने फ़रमाया गुनाह उसकी नज़र के सामने रहता है जिससे उसको निदामत और शर्मिन्दगी महसूस होती है वह अल्लाह से मग़फ़िरत चाहता है बिल आख़िर

वही गुनाह उसे बहिश्त में ले जाने का मौजिब बन जाता है।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने किसी चीज़ को तलब में इतना हसीन और तासीर में तेज़ नहीं पाया जितनी पुराने गुनाह के लिए नई नेकी होती है। बिला शुबहा नेकियां गुनाहों को दूर कर देती है यह फ़रमान नसीहत हासिल करने वालों के लिए एक अज़ीम नसीहत है जब कोई बन्दा गुनाह करता है तो गुनाह से दिल में एक सियाह नुक़्ता पैदा हो जाता है वह तौबा करता है घबराकर अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करता है और इस्तिग़फ़ार करता है उस वक़्त वह नुक़्ता दिल से साफ़ हो जाता है। अगर वह तौबा, ज़ारी और इस्तिग़फ़ार नहीं करता तो गुनाह बालाए गुनाह दाग़ पर दाग़ तह ब तह हो जाते हैं यहां तक कि तमाम दिल सियाह हो कर मुर्दा हो जाता है और यही मानी हैं इस आयत के यानी "ऐसा नहीं है बल्कि जो काम वह करते थे उन कामों के बाइस उनके दिल पर ज़ंग आ गया है" उनके आमाल का ज़ंग उनके दिल पर चढ़ गया है। हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया गुनाह न करना, तलबे तौबा से ज़्यादा आसान है इस लिए मौत की ताख़ीर को ग़नीमत जानो।

आदम बिन ज़ियाद का क़ौल है कि अपने आप को ऐसा समझो कि मौत सामने आ गई है और तुम अल्लाह से माफ़ी तलब कर रहे हो और अल्लाह तआला ने माफ़ी दे दी है इस लिए हर वक़्त अल्लाह की इताअत के काम करो।

हज़रत दाऊद अलैहिस्लाम के पास वही आई कि डरते रहो, कही ऐसा न हो कि ग़फ़लत की हालत में तुम को मैं पकड़ लूं और मेरे सामने आओ तो कोई हुज्जत काम न आये, कोई मर्दे सालेह अब्दुल मलिक बिन मरवान के पास गये, अब्दुल मलिक ने उनसे कहा कि मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये, मर्दे सालेह ने फ़रमाया अगर तुम्हारे पास मौत आये तो क्या तुम मरने के लिए तैयार होगे? अब्दुल मलिक ने कहा नहीं। तब बुजुर्ग ने फ़रमाया क्या तुम इतनी कुदरत रखते हो कि इस हालत को ऐसी हालत की तरफ़ लौटा सको जो तुम को पसन्द है? (यानी मौत को वापस कर सकते हो?) अब्दुल मलिक ने नफ़ी में जवाब दिया। बुजुर्ग ने फ़रमाया क्या तुम इससे महफ़ूज़ हो कि तुम को मौत अचानक आ दबोचे? अब्दुल मलिक ने नफ़ी में जवाब दिया। उस वक़्त उन बुजुर्ग ने फ़रमाया कि मैंने किसी ज़ी फ़हम शख़्स को उन बातों से राज़ी और खुश होते नहीं देखा जिन पर तुम मग़रूर हो (यानी मुल्क व मताए दुनिया)

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि (गुनाह पर) नदामत और पशेमानी तौबा है आपने यह भी इरशाद फ़रमाया कि जिसने गुनाह किया फिर उस पर पशेमान हुआ तो पशेमानी उस गुनाह का कफ़्फ़ारा हो गया। हसन बसरी ने फ़रमाया है कि तौबा के चार सुतून हैं 1–ज़बान से माफ़ी का तालिब होना 2– दिल से पशेमान होना 3– आज़ा को गुनाह से रोकना 4–यह नीयत रखना कि आइन्दा ऐसा गुनाह नहीं करुंगा। यह भी फ़रमाया कि तौबतुन्नसूह यह है कि तौबा करे और जिस गुनाह से तौबा की है उसकी तरफ़ फिर न लौटे।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि गुनाह से तौबा करने वाला बेगुनाह क़ी तरह हो जाता है और गुनाह का इरतेकाब करने के बावजूद रब से माफ़ी तलब करने वाला गोया अपने रब से मज़ाक़ करता है। जब कोई बन्दा अस्तग़फ़िरोका व अतूबू एलैका कहता है और उसके बाद फिर गुनाह करता हैं फिर यही कहता है और फिर गुनाह करता है तो तीन

बार (इसी तरह) गुनाह करने के बाद चौथी बार उसके गुनाह को (सग़ीरा होने के बावजूद) कबीरा की फ़ेहरिस्त में लिख दिया जाता है।

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ ने फ़रमाया कि तुम अपनी ज़ात के ख़ुद वसी बनो और दूसरे लोगों को अपने लिए वसी न बनाओ, जब कि ख़ुद तुम ने अपने ज़िन्दगी में अपने नफ़्स की वसीयत ज़ाया कर दी तो फिर तुम उन दूसरों को इस बात पर किस तरह बुरा कह सकते हो कि उन्होंने तुम्हारी वसीयत राएगां कर दी।

हज़रत अबू उमामा बाबली से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दाहिने बाज़ू का फ़रिश्ता बायें बाज़ू के फ़रिश्ते पर हाकिम है जब बन्दा नेकी करता है तो दायें बाज़ू का फ़रिश्ता उसकी दस नेकियां लिख लेता है और जब बन्दा बुराई (गुनाह) करता है और बायें बाज़ू का फ़रिश्ता उसकी बुराईयां लिखने लगता है तो दायें बाज़ू का फ़रिश्ता कहता है ठहर जाओ चुनांचे वह छः सात घड़ी तक (लिखने से) रुका रहता है अब अगर उस अर्सा में बन्दा ने अपना गुनाह अल्लाह से बख़्शवा लिया तो गुनाह नहीं लिखा जाता वर्ना बदी लिख ली जाती है। हदीस शरीफ़ के दूसरे अल्फ़ाज़ इस तरह से हैं कि बन्दा जब गुनाह करता है तो वह नहीं लिखा जाता है यहां तक कि वह दूसरा गुनाह करे जब उसके पांच गुनाह हो जाते हैं और उनके बाद वह एक नेकी कर लेता तो उसके लिये पांच नेकियां लिखी जाती हैं। और वह पांच नेकियां उन पांच गुनाहों का बदल हो जाती हैं, उस वक़्त इब्लीस चीख़ता है और कहता है कि मेरा इब्ने आदम पर क़ाबू किस तरह चले मैं कितनी ही कोशिश क्यों न करूं वह एक नेकी करके मेरी सारी कोशिश पर पानी फेर देता है।

हज़रत इमाम हसन से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर बन्दे पर दो फ़रिश्ते मुकर्रर हैं, दाईं तरफ़ वाला बाईं तरफ़ के फ़रिश्ते पर हाकिम है। बन्दा जब कोई गुनाह करता है और बाईं तरफ़ का फ़रिश्ता कहता है कि मैं इसको लिख लूं तो दाईं तरफ़ वाला (हाकिम) फ़रिश्ता कहता है अभी ठहर कि वह पांच गुनाह कर ले (तब लिखना) जब बंदा पांच गुनाह कर लेता है और बाईं तरफ़ का फ़रिश्ता उनको लिखना चाहता है तो दाईं तरफ़ का फ़रिश्ता कहता है अभी ठहर जा कि वह कोई नेकी कर दे। जब बंदा कोई नेकी कर लेता है तो दाईं तरफ़ का फ़रिश्ता कहता कि हमको बताया गया है कि हर नेकी का एवज़ दस गुना है बस आओ हम पांच गुनाहों को पांच नेकियों से मिटा दें और बाक़ी पांच नेकियां इसकी लिख लें, उस वक़्त शैतान चीख़ता है और कहता है कि मैं इन्सान पर किस तरह ग़ालिब आ सकता हूं। मैं जितनी कोशिश और मेहनत करता हूं उसकी एक नेकी मेरी तमाम कोशिशों को मलिया मेट कर देती है।

मज़ीद अहादीस

हज़रत इब्ने अब्बासब से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बन्दा जब तौबा करता है और अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल कर लेता है तो बारी तआला करामन कातेबीन को उस बन्दे के लिये गुनाह फ़रामोश करा देता है और बन्दा के वह आज़ा जिनसे गुनाह किये और वह ज़मीन जहां उसने गुनाह किये, वह आसमान जिसके नीचे उसने गुनाह किये सब फ़रामोश करा दी जाती हैं (आज़ा ज़मीन और आसमान सब फ़रामोश कर देते हैं) इसी

तरह क़यामत के दिन जब वह बन्दा आएगा तो उसके गुनाहों पर कोई गवाही देने वाला न होगा और न उस पर गुनाह का बोझ होगा।

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "गुनाह से तौबा करने वाला उस शख़्स की मानिन्द है जिसने कोई गुनाह नहीं किया। एक रिवायत में इस हदीस में इतना और ज़्यादा है अगरचे दिन में सत्तर बार गुनाह करे और तौबा करे। हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स तीन बार ***अस्तग़फ़िरुल्लाह ला हल अज़ीमल्लज़ी ला इलाहा इल्ला होवल हय्युल क़य्यूमो व अतूबू इलैह*** पढ़ेगा उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे ख़्वाह वह मिक़दार में समन्दर के झाग के बराबर हों। यह भी हज़रत इब्ने मसऊद से मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आदमी क़यामत के दिन अपने आमाल नामा में अव्वल गुनाहों को मुंदरिज और आख़िर में नेकियों को दर्ज पाएगा लेकिन जब दोबारा आमाल नामा के आग़ाज़ पर नज़र डालेगा तो उसको सब नेकियां ही नेकियां तहरीर नज़र आएंगी। आयते करीमाः यह वह लोग ही होंगे कि अल्लाह उनकी बुराईयों को नेकियों से बदल देगा, के यही मानी हैं और यह उस तौबा करने वालों के हक़ में है जिसका ख़ातिमा अनाबत और तौबा पर हुआ हो।

बाज़ अकाबरीने सल्फ़ का क़ौल है कि बन्दा जब गुनाहों से तौबा कर लेता है तो उसके तमाम गुज़श्ता गुनाह नेकियों से बदल जाते हैं। हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन कुछ लोग तमन्ना करेंगे कि उनके गुनाह ज़्यादा होते, हज़रत इब्ने मसऊद ने यह बात इस लिये फ़रमाई कि अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसके गुनाह चाहेगा नेकियों से बदल देगा।

हज़रत हसन बसरी ने नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया "तुम में से जब कोई गुनाह करता है तो ज़मीन से आसमान तक फ़िज़ा गुनाहों से पुर हो जाती है और जब वह अल्लाह तआला से तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फ़रमा लेता है इसी लिये हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला कहता है कि ऐ इब्ने आदम अगर तू सतहे ज़मीन को गुनाहों से भर कर मुझसे मिलेगा तो मैं उसके बराबर मग़फ़िरत के साथ तुझसे मिलूंगा।

एक रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद कूफ़ा की एक गली से गुज़र रहे थे कि एक फ़ासिक़ के घर में बहुत से औबाश जमा थे और शराब पी जा रही थी, उन लोगों में एक गाने वाला भी था जिसका नाम ज़ावान था वह बरबत पर उमदा आवाज़ से गा रहा था। हज़रत इब्ने मसऊद ने उसकी आवाज़ सुन कर फ़रमाया, कैसी अच्छी आवाज़ है, काश यह क़ुरआन की तिलावत करता तो कितना अच्छा होता फिर आप अपनी चादर सर पर डाल कर आगे बढ़ गए, ज़ावान ने आपकी आवाज़ सुन ली, लोगों से पूछा यह कौन साहब थे लोगों ने बताया कि यह रसूलुल्लाह के सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद हैं ज़ावान ने कहा यह क्या फ़रमा रहे थे लोगों ने कहा कि वह कह गए हैं "कितनी अच्छी आवाज़ है काश गाने के बजाए क़ुरआन की तिलावत की जाती तो कितना अच्छा होता"। यह सुनते ही ज़ावान के दिल पर हैबत तारी हो गई फ़ौरन उठ खड़ा हुआ, बरबत को ज़मीन पर मार कर तोड़ डाला और दौड़ता हुआ हज़रत तक पहुंचा और गले में चादर डाल कर (ख़ताकार की शक्ल बना कर) रोने लगा आपने ज़ावान को गले लगा लिया और उसके साथ ख़ुद भी रोने लगे और फ़रमाया "मैं कैसे उससे मोहब्बत न करूं

जिससे अल्लाह को मोहब्बत है" उसके बाद ज़ावान ने बरबत बजाने और गाने से तौबा कर ली और हज़रत इब्ने मसऊद की ख़िदमत में रहने लगा। यहां तक कि क़ुरआन पाक पढ़ लिया और इतना इल्म हासिल किया कि इल्मे दीन का इमाम बन गया। चुनांचे ज़ावान ने बहुत सी हदीसें हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद और हज़रत सलमान फ़ारसी से रिवायत की हैं।

इस्राइली रिवायत में आया है कि एक रन्डी गाने का पेशा करती थी लोगों को अपने हुस्न व जमाल से फ़ितना में डाल रखा था, उसके घर का दरवाज़ा हमेशा खुला रहता था और वह खुद खुले दरवाज़े के पास तख़्त पर बैठा करती थी, जो शख़्स उधर से गुज़रता और उसको देखता फ़रेफ़्ता हो जाता मगर उसके पास आने से इजाज़त उस वक़्त मिलती जब दस दीनार या उससे ज़्यादा रक़म पेश करता। एक रोज़ कोई इस्राइली ज़ाहिद उधर से गुज़रा अचानक उस आबिद की नज़र उस फ़ाहशा औरत पर पड़ी वह आबिद भी उसे देखते ही फ़रेफ़्ता हो गया लेकिन आबिद ने अपने नफ़्स से जंग शुरु कर दी यहां तक कि उसने अल्लाह तआला से दुआ मांगी कि वह इस गुनाह की ख़्वाहिश उसके दिल से दूर कर दे वह बराबर अपने दिल को क़ाबू में किये रहा मगर आख़िरकार दिल बेक़ाबू हो गया यहां तक कि उसके पास जिस क़दर माल व मताअ़ था वह सब उसने फ़रोख़्त कर दिया और जिस क़दर दीनारों की ज़रूरत थी जमा कर के उस फ़ाहशा औरत के दरवाज़े पर आया, फ़ाहशा ने आबिद से कहा कि दीनार उसके वकील के सुपुर्द कर दे फिर उसके पास आए, आबिद ने उसके कहने के मुताबिक़ किया, वह उसके सामने तख़्त पर बनी संवरी बैठी थी आबिद दीनार दे कर उसके पास बैठ गया जब आबिद ने हाथ बढ़ा कर उससे लुत्फ़ अंदोज़ होने का क़स्द किया तो अल्लाह तआला ने उसकी साबिक़ा इबादत की बरकत और अपनी रहमत से उसको इस तरह बचा लिया कि आबिद के दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ कि अल्लाह तआला अपने अर्श [illegible] इस ना गुफ़्तनी हालत देख रहा है और वह इस फ़ेअ़ले हराम में मसरूफ़ है, हाय हाय मेरे तमाम आमाल ज़ाया हो गए पस उसी वक़्त आबिद के दिल में ख़ौफ़ [illegible] और वह सारे बदन से कांपने लगा और उसका रंग फ़क़ हो गया, बदकार औरत ने उसका उड़ा रंग देख कर पूछा क्या बात है? आबिद ने कहा मैं अपने रब से डर रहा हूं, वापस जाने दो, औरत ने कहा तुम भी ख़ूब हो, सैंकड़ों लोग तो मेरी आरज़ू करते हैं कि मुझे पालें और तुम मेरी मोहब्बत से मुंह मोड़ रहे हो, आबिद ने कहा मैं अपने अल्लाह से डरता हूं रहा वह माल जो मैंने तुम को दिया है वह मुझे वापस नहीं चाहिए वह तुम्हारे लिये हलाल है। वह तुम ही ले लो और मुझे जाने दो। फ़ाहशा ने कहा मालूम होता है कि कभी तुमने अब से पहले यह लुत्फ़ (सोहबत) नहीं उठाया है। आबिद ने कहा हां। फिर फ़ाहशा ने उसका नाम और पता दरयाफ़्त किया, आबिद ने अपना और अपना गांव का नाम बता दिया उसके बाद औरत ने उसको जाने की इजाज़त दे दी। आबिद उफ़्तां व ख़ेज़ां, अपनी हालत पर गिरया कुनां वहां से वापस आया, उसके बाद आबिद की बरकत से औरत के दिल में भी अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा हुआ और दिल में कहने लगी उस शख़्स का पहला गुनाह था और उसके दिल में अल्लाह का इस क़दर ख़ौफ़ पैदा हुआ, मैं तो इतने बरसों से यह गुनाह कर रही हूं और मेरा रब भी वही है जो उस शख़्स (आबिद) का है, डरना तो मुझे चाहिए था, उसके बाद फ़ाहशा औरत ने अपना दरवाज़ा लोगों पर बन्द कर दिया, शरीफ़ाना लिबास पहन कर अल्लाह की याद में मसरुफ़ हो गई। एक दिन उस औरत ने सोचा कि अब मुझे उस आबिद के पास चलना चाहिए क्या ताज्जुब कि वह

मुझसे निकाह कर ले! अगर ऐसा हो जाए तो मैं अपने दीन की बातें उससे सीख लूंगी और वह अल्लाह की इबादत में मेरा मुआविन व मददगार होगा। यह सोच कर उसने अपना तमाम सामान और रुपया व पैसा अपने साथ लिया और आबिद के बताए हुए पता पर पहुंच कर आबिद के मुताल्लिक़ लोगों से पूछा, लोगों ने आबिद को बताया कि एक औरत आई है और आपको दरयाफ़्त कर रही है, आबिद उठ कर उस औरत के पास पहुंचा तो औरत ने अपने चेहरे से नक़ाब उलट दिया ताकि आबिद उसको पहचान ले, आबिद ने उसको पहचान लिया और उसी के साथ उसको अपना गुनाह भी याद आ गया, एक चीख़ मारी और गिर पड़ा गिरते ही उसकी रुह क़फ़से उनसरी से परवाज़ कर गई, अब तो वह औरत बहुत घबराई और बहुत कुढ़ी और कहने लगी मैंने जिसके लिये घर छोड़ा वह ख़ुद ही दुनिया छोड़ कर चला गया, उसने लोगों से पूछा क्या इसके रिश्तेदारों में कोई ऐसा शख़्स है जो मुझसे शादी कर ले, लोगों ने बताया कि आबिद का एक नेक और सालेह भाई है लेकिन वह मुफ़लिस और तंगदस्त है औरत ने कहा कुछ मज़ाएक़ा नहीं मेरे पास काफ़ी माल है चुनांचे आबिद के भाई ने उस औरत से निकाह कर लिया। निकाह के बाद उस सालेह औरत के बतन से सात लड़के पैदा हुए [illegible] सारे के सारे बनी इस्राईल के नबी हुए।

सिदक़ व ताअ़त का असर

तुमने सिद्क़, ताअ़त और हुसने नीयत की बरकत [illegible]खी, हज़रत [illegible]ल्लाह बिन मसऊद के ज़रिये अल्लाह तआला ने ज़ावान को किस तरह हिदाय[illegible] बख़्शी चूंकि हज़रत अब्दूल्लाह ख़ुद सादिक़ और नेक दिल थे (इसलिये उनकी बात ने ज़ावान पर यह असर किया) लिहाज़ा तुम उस वक़्त तक किसी बद कार [illegible] नेक नहीं [illegible] सकते जब तुम अपनी ज़ात में ख़ुद नेक न बनो और रब का ख़ौफ़ तुम्हारे दिल में न हो। अगर तुम मुख़लिस हो [illegible]र अपनी हरकात व सकनात में रियाकार नहीं हो, हर हाल में अल्लाह को वाहिद व [illegible] समझोगे तो तुम को नेकी की तौफ़ीक़ और ज़बान मिलेगी और अल्लाह तआला तुम्हारी राह रास्त पर [illegible]दा रहनुमाई फ़रमाएगा और तुम्हारे बाइस (दूसरे [illegible]) [illegible]ाई बग़ैर किसी तकलीफ़ के ज़ाएल हो जाएगी और मौजूदा ज़माने की तरह नेकी बुराई की सूरत में रूनुमा नहीं होगी, इस ज़माने में तो अगर कोई किसी एक बुराई को रोकने की कोशिश करता [illegible] लोग उसके दर पै आज़ार हो जाते हैं और फ़सादे अज़ीम बरपा करके रोकने वाले [illegible] गालियां देते हैं, उस पर ज़िना की तोहमत लगाते हैं और मार धाड़ करते हैं, उसको लूट लेते हैं ग़र्ज़ कि हर तरह से उसको सताते हैं यह सारी बुराईयां इसलिये हैं कि उनके ईमान व यक़ीन में नक़्स है और उनके अंदर सिद्क़ की कमी है क्योंकि वह अपनी ख़्वाहिशात से मग़लूब हैं और सारी बुराईयां उनमें मौजूद हैं, पस उन बुराईयों के दूर करने का फ़र्ज़ उन पर आएद होता है लेकिन वह कैसे यह फ़र्ज़ अदा करें कि उनके नफ़ूस तो बड़े बड़े मशग़लों में लगे हुए हैं वह दूसरों को तो बुराई से मना करते हैं मगर उन पर जो फ़र्ज़े ऐन है उसको छोड कर फ़र्ज़े कफ़ाया में मसरूफ़ हैं, वह अपने फ़र्ज़ को छोड कर ऐसी बातों में मशग़ूल होते हैं जो उनके लिये मोज़ूं नहीं हैं।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि आदमी के इस्लाम की ख़ूबी इसमें है कि जो चीज़ उसके लाएक़ न हो उसको तर्क कर दे, अगर वह चाहता है कि दूसरे जल्द बुराई को तर्क कर दें तो ख़ुद उस पर लाज़िम है कि पहले वह अपने से उस बुराई को

दूर करे और अपने आप को नसीहत करके उससे बचा रहे और तमाम गुनाहों को छोड़ दे ख़्वाह वह ज़ाहिरी गुनाह हो या बातिनी! जब वह खुद उन गुनाहों से पाक साफ़ हो जाए उस वक़्त दूसरों की (इसलाह की) तरफ़ मुतवज्जेह हो और हुसने तदब्बुर के साथ उनसे बुराईयों को दूर करे जिस तरह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद के ज़रिये ज़ावान की बुराई ज़ाएल हुई, बनी इस्राईल की आबिद की इबादत और उसके इख़लास और सिदक़े दिली पर ग़ौर करो कि किस तरह अल्लाह तआला ने उसे गुनाहे कबीरा और बदकारी के इरतकाब से बचा लिया, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

वाक़ेआ यूं ही हुआ ताकि हम उसको बुराई और बे हयाई से दूर रोकें यक़ीनन वह हमारे मुख़लिस बन्दों में से था चूंकि साबिक़ा अय्याम में ख़लवतों और तन्हाइयों में उनके अंदर ख़ुलूस, सच्चाई और हुसने ताअ़त था इसलिए अल्लाह की मदद उनके और उस फ़ाहशा औरत के दर्मियान हाएल हो गई इस पर भी ग़ौर करो कि अल्लाह तआ़ला ने उस आबिद की बदौलत उस बदकार औरत को (बदकारी से) किस तरह नजात दी और किस तरह आबिद के बरकत से आबिद के भाई को क्या कुछ मयस्सर आ गया। अल्लाह तआ़ला ने उसकी मुफ़लिसी और [illegible]कलीफ़ (उसरत) को दूर ही नहीं किया बल्कि एक हसीन तरीन बीवी भी [illegible] अता फ़रमा दी उसको अल्लाह तआला ने इस तरह रिज़्क़ दिया और इस तरह ग़नी किया कि वह उसका शान व गुमान [illegible] नहीं कर सकता था फिर उसे सात नबियों का बाप और उस औरत को उनकी मां बना[illegible]।

खुलासा यह कि तमाम भलाईयां अल्लाह तआला [illegible]अत फ़रमांबरदारी में हैं और तमाम बुराईयां उसकी नाफ़रमानी और मासीयत में। लिहाज़ा तुम को किसी हालत में भी मासीयत शेआर नहीं बनना चाहिए अगर [illegible] ईसयां ग[illegible] हुए तो न हम होगें न ईसियां रहेंगे!

तौबा की शिनाख़्त

तौबा की शिनाख़्त चार बातों से होती है

तौबा करने वाले [illegible]बा की शिनाख़्त चार बातों से होती है अव्वल ज़बान को बेहूदा बातों, ग़ीबत, चुग़लख़ोरी और झूट से [illegible] ले, दोम—अपने दिल मे किसी के तरफ़ से हसद और दुश्मनी न रखे, सोम—बुरे लोगों [illegible] रहे क्योंकि यह लोग बुराई की तरफ़ उसको राग़िब करेंगे इस तरह तौबा की पुख़्तगी में फुतूर डालेंगे और उसकी तौबा टूट जायेगी। उन बातों को अपनाते रहे जिनसे तौबा में पुख़्तगी आती है और उन बातों से परहेज़ करे जिनसे तौबा में लचक पैदा होती है। लिहाज़ा उम्मीद, कुव्वत और क़लबी इरादे को मज़बूत करे क्योंकि इस तरह इसमें कुव्वत और वलवला पैदा होगा और यह इरादा तौबा को बरक़रार रखने का मुहर्रिक होगा पस ममनूआते शरइया से दूर रहे और नफ़्से अम्मारा को ख़्वाहिशों की तकमील से बाज़ रखे और उसको रोके रहे ताकि वह दोबारा गुनाह का इरतेकाब न करे। चहारुम—बन्दा तौबा करने वाला खुद को उन कामों से अलग रखे जिनका ज़िम्मा खुद हक़ तआला ने लिया है मसलन रिज़्क़ वग़ैरा और उन कामों में (इताअत व बन्दगी) में मसरुफ़ हो जाये जिसकी अदाएगी का हुक्म अल्लाह तआ़ला ने दिया है। जब तुम किसी तौबा करने वाले में यह अलामते मौजूद पाओ तो जान लो कि वह उन लोगों में से है जिन के बारे में हक़ तआला ने इरशाद फ़रमाया है तौबा करने वालों को अल्लाह दोस्त रखता है।

लोगों पर भी चार बातें आएद होती हैं इसी तरह तौबा कबूल करने वाले (हक़ तआ़ला) की तरफ़

से चार बातें दूसरे लोगों के ज़िम्मा है अव्वल यह कि लोगों को चाहिए कि ऐसे शख़्स से मोहब्बत करे क्योंकि उस बन्दे ने अल्लाह से मोहब्बत करनी शुरू कर दी है दोम–लोग अपनी दुआओं के ज़रिये उसकी तौबा की हिफ़ाज़त करें और कहें कि अल्लाह तआला उसे तौबा पर क़ायम रखे सोम–लोग उसको उसके गुज़िश्ता (साबिक़ा) गुनाहों पर मलामत न करे, ताना न दें। नबी मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसने किसी मोमिन (तौबा करने वाले) को उसकी बुराई (गुनाह) के साथ मलामत की तो वह बुराई उस मोमिन के लिए कफ़्फ़ारा बन जायेगी और अल्लाह तआला अगर चाहेगा तो बुराई करने वालों को उस बुराई में मुबतला कर देगा।

और जो शख़्स किसी मुसलमान के किसी गुज़रे हुए गुनाह से उस पर ताना ज़न हो तो वह दुनिया से उस वक़्त तक नहीं जायेगा जब जक वह ख़ुद उस जुर्म पर इरतेकाब न कर ले और उसके बाइस रूसवा न हो इस लिए कि कोई मोमिन इरतेकाबे गुनाह का इरादा नहीं करता न अपने दिल से क़सदे गुनाह करता है न गुनाह को दीन का जुज़्व समझता है कि उसे दीनदारी के तौर पर करता हो सिर्फ़ शैतान के फ़रेब दही, जोशे शहवत और नफ़्सानी शौक़ की फ़रावानी गफ़लत व फ़रेब खुरदगी की वजह से उससे गुनाह वक़ूअ होता है। अल्लाह तआला का इरशाद है और अल्लाह ने कुफ़्र, फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए ना पसन्दीदा बना दिया है। इस आयत में अल्लाह तआला ने वज़ाहत फ़रमा दी है कि अहले ईमान के नज़दीक मआसीयत इन्तेहाई नागवार चीज़ है इस लिए मोमिन जब तौबा करे और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हो जाये तो उसको तौबा करदा गुनाह याद दिला कर शर्मिन्दा करना जाएज़ नहीं बल्कि उसके लिए दुआ करना चाहिए कि अल्लाह तआला उस तौबा पर उसको क़ायम रखे और उसको तौफ़ीक़ दे और उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाये चहारुम–लोगों पर वाजिब है कि उसके साथ बैठें उठें, उससे बात चीत करें, उसके मआविन व मददगार हों और उसकी [illegible] करें।

तौबा करने वाले को भी अल्लाह तआला चार [illegible] सरबलन्द व मोअज़्ज़ज़ फ़रमाता है 1–गुनाहों से उसको इस तरह निकाल लेता है जैसे उसने गुनाह ही नहीं किया 2–अल्लाह तआला को अपना दोस्त बना लेता है 3–शैतान उस पर ग़ालिब नहीं होता 4–दुनियां से रुख़्सत होने से क़ब्ल उसको ख़ौफ़ से अम्न व अमान बख़्शता है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है उन पर फ़रिश्तों का नुज़ूल होता है और वह कहते हैं कि तुम ख़ौफ़ न करो और न हिज़्न व मलाल। तुम को उस जन्नत की ख़ुशख़बरी हो जिसका तुम से वादा किया गया है।

तौबा के बारे में मशाइख़े तरीक़त के अक़वाल:

तौबा के दर्जे

शैख़े तरीक़त अबू अली दक़्क़ाक ने फ़रमाया है कि तौबा क तीन दर्जे हैं (1) तौबा (2) एनाबत (3) अदबत, तौबा इब्तेदाई दर्जा है, दर्मियानी दर्ज़ा एनाबत है और आख़िरी या इन्तेहाई दर्जा अदबत है। जिसने अज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से तौबा की वह साहिबे तौबा है, जिसने सवाब की ख़ातिर या

अज़ाब से बचने लिये तौबा की वह साहिबे एनाबत है और जिसने महज़ अल्लाह तआला के हुक्म की तामिल में तौबा की, सवाब की उम्मीद और अज़ाब के अंदेशा से नहीं वह साहिबे अदबत है। मशाइख़े कराम ने यह भी फ़रमाया है कि तौबा आम अहले ईमान की सुन्नत है, अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ ईमान वालो! अल्लाह से तौबा किया करो ताकि तुम फ़लाह पाओ।

एनाबत औलियाए मुक़र्रबीन की सिफ़त है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होने वाले दिल के साथ आया है। अदबत अंबिया मुर्सलीन अलैहिमुस्सलाम की सिफ़त है इरशादे बारी है: कितना अच्छा बन्दा है क्योंकि वह अल्लाह की तरफ़ रुजू होने वाला है।

हज़रत जुनैद ने फ़रमाया कि तौबा तीन मानी पर हावी है (1) गुनाह पर पशेमानी (2) जिस चीज़ को अल्लाह ने मना फ़रमाया है उसको दोबारा न करने का पुख़्ता इरादा (3) हुक़ूक़े इन्सानी को अदा करने की कोशिश।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि तौबा नाम है आइन्दा गुनाह को तर्क कर देने का (आइन्दा गुनाह न करने का) हज़रत जुनैद से मरवी है कि मैंने हारिस को यह कहते हुए सुना कि मैं कभी अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोकत्तौबा नहीं कहता हूं बल्कि कहता हूं अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोका शवतत्तौबा यानी ऐ अल्लाह मैं तुझ से तौबा की आरज़ू तलब करता हूं।

हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं हज़रत सिर्री सिक़्ती के पास पहुंचा तो मैंने उनका रंग परीदा पाया मैंने वजह दरयाफ़्त की तो आपने फ़रमाया कि एक जवान ने मुझसे तौबा के बारे में दरयाफ़्त किया, मैंने उसको बताया कि तौबा यह है कि तू अपने गुनाहों को न भूले, वह नौजवान मुझसे झगड़ने लगा और कहा तौबा यह है कि तू अपने गुनाहों को भुला दे, मैंने कहा कि मेरे नज़दीक तो तौबा के यही मानी हैं जो उस जवान ने बताए हैं। हज़रत सिर्री सिक़्ती ने पूछा क्यों यह मानी क्योंकर हैं? मैंने जवाब दिया कि मैं इस लिये कहता हूं कि जब मैं रंज व अलम के आलम में होता हूं तो वह मुझे आराम व राहत की हालत में ले जाता है और आराम व राहत की हालत में रंज व अलम को याद करना ज़ुल्म है यह सून कर वह ख़ामोश हो गए।

तौबा के मज़ीद मानी

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि तौबा यह है कि तू अपने गुनाहों को न भूले। हज़रत जुनैद बग़दादी ने किसी शख़्स के सवाल के जवाब में फ़रमाया कि तौबा यह है कि अपने गुनाहों को भूल जाओ, हज़रत अबू नसर सर्राज ने मज़कूरा बाला (दोनों मुतज़ाद) क़ौलों की तशरीह की है वह फ़रमाते हैं कि हज़रत सहल के क़ौल में मुरीदों और उन दूसरे लोगों के अहवाल की तरफ़ इशारा है कि वह कभी तो अपने नफ़ा के सिलसिले में सोचते हैं और कभी नुक़सान पर अफ़सोस करते हैं लेकिन हज़रत जुनैद ने मुहक़्क़क़ीन की तौबा की तरफ़ इशारा किया है क्योंकि जब मुहक़्क़क़ीन के दिलों पर अज़मते इलाही का ग़लबा होता है और वह हमेशा ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल रहते हैं इस लिए वह अपने गुनाहों को याद ही नहीं कर पाते। हज़रत जुनैद का यह क़ौल हज़रत रोयम के क़ौल के मानिन्द है जब उनसे तौबा के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्होंने फ़रमाया कि तौबा की याद से तौबा करना चाहिए।

हज़रत जुन्नून मिसरी

हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि अवाम की तौबा गुनाहों से होती है और ख़्वास की

ग़फ़लत से। हज़रत अबुल हसन नूरी ने फ़रमाया कि तौबा यह है कि मा सिवा अल्लाह से तौबा की जाये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद बिन अली ने फ़रमाया कि एक तौबा करने वाला तौ अपनी लग़ज़िशों से तौबा करता है और एक ताएब ग़फ़लत से तौबा करता है और एक तौबा करने वाला नेकियों के देखने से तौबा करता है ज़ाहिर है कि इन तीनों में कितना अज़ीम फ़र्क़ है।

हज़रत अबू बकर वासती तौबा किसे कहते हैं

हज़रत अबू बकर वासती ने फ़रमाया कि ख़ालिस तौबा यह है कि ताएब के ज़ाहिर व बातिन में मआसीयत का शाएबा भी बाक़ी न रहे जिसकी तौबा ख़ालिस होती है वह परवाह नहीं करता कि तौबा के बाद उसकी शाम कैसी गुज़री और सुबह कैसी हुई! हज़रत यहया बिन मआज़ राज़ी ने मुनाजात में कहा इलाही! मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैंने तौबा की है न यह कहता हूं कि अब ऐसा नहीं करूंगा क्योंकि मै अपनी सरिश्त को पहचानता हूं और न मैं इसकी ज़मानत दे सकता हूं कि आइन्दा गुनाह नहीं करुंगा क्योंकि मैं अपनी कमज़ोरियों को जानता हूं फ़िर भी मैं यह कहता हूं कि आइन्दा ऐसा नहीं करुंगा क्योंकि शायद मैं दोबारा ऐसा करने से पहले मर जाऊं।

हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि गुनाहों को छोड़े बग़ैर तौबा करना झूटों की तौबा है। आपने यह भी फ़रमाया कि तौबा की हक़ीक़त यह है कि ज़मीन अपनी वुसअत व फ़ुसहत के बावजूद तुझ पर तंग हो जाये यहां तक कि तेरे लिए फ़रार की राह बाक़ी न रहे इसके बाद तेरी जान तुझ पर तंग हो जाये जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन करीम में इरशाद फ़रमाता है।

फ़राख़ होने के बावजूद ज़मीन उन पर तंग हो गई और उनकी जानें उन पर तंग हो गईं और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह के सिवा और कोई ज़रिया अल्लाह से बचाव का नहीं है फिर अल्लाह ने उनकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई ताकि वह उसी की तरफ़ लौट आयें।

इब्ने अ़ता का इरशाद

इब्ने अता ने फ़रमाया कि तौबा दो तरह की है तौबा एनाबत और तौबा इस्तजाबत, तौबा एनाबत यह है कि बन्दा अल्लाह तआला के अज़ाब से तौबा करे। तौबा इस्तजाबत यह है कि बन्दा खुदावन्द तआला के लुत्फ़ व करम से ह़या करते हुए तौबा करे।

हज़रत यहया बिन मआज़ राज़ी ने फ़रमाया कि तौबा के बाद का एक गुनाह तौबा, तौबा के पहले सत्तर (70) गुनाहों से बदतर है।

हज़रत अबू उमर अन्ताई ने फ़रमाया कि अली बिन ईसा वज़ीर एक अज़ीम लश्कर के साथ जा रहा था अवाम पूछने लगे कि यह कौन शख़्स है? सरे राह खड़ी हुई एक ज़ईफ़ा ने कहा कि क्या तुम यह पूछते हो कि यह कौन है? यह एक बन्दा है जो ख़ुदा की नज़रों से गिर गया है और ख़ुदा ने इसको दुनिया में मुबतला कर दिया है जिसमें तुम इसे देख रहे हो, ज़ईफ़ा की यह बात अली बिन ईसा ने सुन ली घर वापस जाकर उन्होनें वज़ारत से इस्तीफ़ा दे दिया और मक्का मुकर्रमा में पहुंच कर मुक़ीम हो गये।

बाब 11

आयत, इन्ना अकरमकुम इन्दल्लाहे अतक़ाकुम
अल्लाह के नज़दीक तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी है
की तशरीह व तफ्सीर

उलमाए रब्बानी ने तक़्वा के मानी और मुत्तक़ी की हक़ीक़त के बारे में इख़्तेलाफ़ किया है (उलमा के अक़्वाल मुख़्तलिफ़ हैं) रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी है कि मुकम्मल तक़्वा अल्लाह तआ़ला के इस इरशाद में है:

बेशक अल्लाह तआ़ला तुमको अद्ल, एहसान और क़राबत वालों को म[illegible] देने का हुक्म देता है और तुम्हें बदकारी, बेहयाई और नाफ़रमानी से म[illegible] करता है ताकि तुम [illegible]सीहत क़बूल करो।

हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया है कि मुत्तक़ी हर वह शख़्स है जो किसी दूसरे शख़्स को देखे तो यह कहे कि यह मुझसे बेहतर है। हज़रत उमर इब्न ख़त्ताब [illegible]ज़रत कअ़ब अहयार से फ़रमाया मुझे तक़्वा के बारे में कुछ बताओ तो उन्होंने [illegible]या क्या आप कभी ख़ारदार राह से गुज़रे हैं, हज़रत उमर ने फ़रमाया, हां! हज़रत कअ़ब ने फ़रमाया! उस वक़्त आप उस राह से कैसे गुज़रे? आपने फ़रमा[illegible] दामन समे[illegible]ए गुज़रा हूं, हज़रत कअ़ब ने कहा कि यही हाल तक़्वा का है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया [illegible] रोज़ा रखना, रात को नमाज़ें पढ़ना और उनके दर्मिया[illegible] गड़बड़ करना। (ना[illegible]मुनासिब आमाल का इर[illegible]ब) तक़्वा नहीं है, तक़्वा तो यह है कि जिसको [illegible] ने हराम किया है उससे बचे और जो फ़र्ज़ किया है उस पर अमल करे, उसके बाद अल्ला[illegible] तआ़ला तुझे जो रिज़्क़ अता फ़रमाये वह ख़ैर ही ख़ैर है।

मनकूल है कि तलक़ बिन [illegible]बीब से दरयाफ़्त किया गया कि तक़्वा क्या है? उसकी तारीफ़ बयान फ़रमाईये तो उन्हों[illegible] कहा अल्लाह तआ़ला की दी हुई रौशनी में सवाब की उम्मीद पर अल्लाह से शर्म करते हुए अहकामे इलाही की ताअ़त और उनपर अमल करना तक़्वा है। यह भी कहा कहा गया है कि अल्लाह के दिए हुए नूर के मुताबिक़ उसके अज़ाब से डरते हुए मआसीयत को तर्क कर देना तक़्वा है। बकर बिन उबैदुल्लाह फ़रमाते हैं कि इंसान उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं हो सकता जब तक उसका खाना हराम और मुशतबह से पाक न हो और वह ग़ज़ब से बचने की कोशिश न करे।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुत्तक़ी को लगाम दी गई है जिस तरह हरम में अहराम बांधने वाले को यानी जिस तरह मुहरिम पर बहुत सी हलाल चीज़ें हराम हो जाती हैं उसी तरह मुत्तक़ी के लिए बहुत सी चीज़ों से बचना ज़रूरी है। हज़रत शहर बिन मौशिब ने फ़रमाया कि मुत्तक़ी वह है जो ऐसे काम को छोड़ दे जिसके करने में कुछ मज़ाएक़ा न हो और उसका यह तर्क उस ख़ौफ़ से हो कि वह किसी ख़तर वाले काम में न पड़ जाये।

हज़रत सिर्री सिक़ती का सलाम

हज़रत सुफ़ियान सूरी और फुज़ैल ने फ़रमाया कि मुत्तक़ी वह है जो लोगों के लिए वह चीज़ पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है क्योंकि मुत्तक़ी वही होता है जो दूसरों के लिए दिल में ज़्यादा वुसअत रखता है (उसी तरह जिस तरह अपने लिए) तुम्हें मालूम है मेरे उस्ताद मोहतरम सिर्री सिक़ती को एक वाक़ेआ पेश आया, एक रोज़ किसी दोस्त ने आपको सलाम किया आपने उनके सलाम का जवाब दे दिया लेकिन आप तेवरी चढ़ाए रहे और शगुफ़्ता रवी का इज़हार नहीं हुआ, मैंने इसकी वजह दरयाफ़्त की तो आपने फ़रमाया मुसलमान जब अपने मुलसमान भाई को सलाम करता है और वह जवाब देता है तो दोनों पर सौ रहमतें तक़सीम की जाती हैं, नव्वे उस शख़्स को मिलती हैं जो ज़्यादा शगुफ़्जा रौ हाता है और दस दूसरे को दी जाती हैं। मैं चीं बजबीं इसलिए रहा कि यह नव्वे रहमतें उसको मिल जायें।

हज़रत मोहम्मद बिन अली तिर्मिज़ी ने फ़रमाया मुत्तक़ी वह है जिससे झगड़ा करने वाला कोई न हो। हज़रत सिर्री सिक़ती ने फ़रमाया मुत्तक़ी वह है जो अपने नफ़्स से बुग़्ज़ रखता है। हज़रत शिब्ली ने कहा कि मुत्तक़ी वह है जो अल्लाह के सिवा हर चीज़ से बचे।

नातिक़ सादिक़ ने फ़रमाया आगाह रहो अल्लाह के सिवा हर चीज़ बातिल है। मोहम्मद बिन हनीफ़ ने फ़रमाया कि हर वह चीज़ जो तुझे अल्लाह से दूर कर दे उससे किनारा कश होने का नाम तक़वा है। क़ासिम बिन क़ासिम ने फरमाया आदाबे शरीअत की मुहाफ़ज़त का नाम तक़वा है। हज़रत नूरी ने फ़रमाया मुत्तक़ी वह है कि जो दुनिया और उसकी आफ़तों से बचे। अबू यज़ीद ने फ़रमाया तमाम शुबहों से बचने का नाम तक़वा है, नीज़ फ़रमाया तक़वा यह है कि जो कुछ तू कहे खुदा के लिए कहे और जब ख़ामोश रहे तो खुदा के लिए ख़ामोश रहे और जब ज़िक्र करे तो अल्लाह का ज़िक्र करे।

दुशमन भी महफ़ूज़ रहें

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ फ़रमाते हैं कि बन्दा उस वक़्त तक मुत्तक़ियों में से हरगिज़ नहीं हो सकता जब तक उसके दुश्मन उससे इस तरह अमन व अमान में न हो जायें जैसे उसके दोस्त। हज़रत सहल फ़रमाते हैं कि मुत्तक़ी वह है जो अपनी वजूद की ताक़त और कुव्वत से बेपरवाह हो जाये यह भी कहा गया है कि तक़वा यह है कि अल्लाह तआला तुझे उस जगह न देखे जिस जगह के लिए तुझे मना किया गया है और उस जगह तू ग़ैर मौजूद न हो जहां मौजूद होने का तुझे हुक्म दिया गया है। एक क़ौल है कि नबी मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी का नाम तक़वा है। यह भी कहा गया है कि ग़फ़लतों से दिल को, ख़्वाहिशात से नफ़्स को, लज़्ज़तों से हल्क़ को और बुरी बातों से आज़ा को बचाना और महफ़ूज़ रखना तक़वा है उस वक़्त यह उम्मीद हो सकती है कि ज़मीन व आसमान के मालिक तक तेरी रसाई हो जाये। हज़रत अबुल क़ासिम फ़रमाते हैं कि हुस्ने ख़ुल्क़ तक़वा है। बाज़ हज़रात का क़ौल है कि मर्द का तक़वा तीन चीज़ों से मालूम होता है। (1) जो चीज़ उसे न मिले न उस तक पहुंचे उस पर तवक्कुल। (2) जो चीज़ उसे मिल गई है उस पर रज़ामन्दी। (3) जो चीज़ जाती रही उस पर ख़ूबसूरती के साथ सब्र।

कहा गया है कि जो शख़्स अपनी ख़्वाहिशात का ताबेअ़ नहीं वही मुत्तक़ी है। मालिक ने कहा कि मुझसे वहब बिन कीहान ने कहा कि मदीना के किसी फ़क़ीह ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को लिखा कि अहले तक़वा की चन्द अलामतें होती हैं उनके ज़रिये उनकी शिनाख़्त की जाती है। मुसीबत पर सब्र, हुक्मे इलाही पर राज़ी, नेमतों पर शाकिर, अहकामे इलाही की इताअ़त और फ़रमांबरदारी करते हैं।

नफ़्स से हिसाब फ़हमी तक़वा है

मैमून बिन महरान कहते हैं कि आदमी उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं हो सकता जब तक वह अपने नफ़्स से उससे भी ज़्यादा हिसाब फ़हमी न करे जिस तरह से एक बख़ील शरीक तिजारत अपने शरीक से करता है या एक ज़ालिम बादशाह (अपने दीवान से)।

हज़रत अबू तोराब ने फ़रमाया मंज़िले तक़वा से पहले पांच घाटियां आती हैं जब तक तू उन को उबूर नहीं करेगा, मंज़िले तक़वा तक नहीं पहुंच सकता। (1) नेमत पर फ़क़्र पर तरजीह (2) बक़द्रे किफ़ायत रोज़ी को कसीर रोज़ी पर तरजीह (3) ज़िल्लत को इज़्ज़त पर तरजीह। (4) रंज को राहत पर तरजीह। (5) मौत को ज़िन्दगी पर तरजीह देना।

बाज़ मशाइख़ ने फ़रमाया है कि आदमी जब तक ऐसे मकाम पर न पहुंच जाये कि उसकी दिली आरज़ुओं और ख़्वाहिशात को तश्त में रखकर बाज़ार में फिराने के लिए कहा जाये तो उसको झिझक महसूस न हो (क्योंकि उसके ख़्यालात और आरज़ूयें ख़िलाफ़े तक़वा नहीं होंगी)। उस वक़्त वह तक़वा की चोटी पर पहुंच सकता है वरना उसकी रसाई वहां तक नहीं हो सकती। यह भी कहा गया है कि जिस तरह तुम अपना ज़ाहिर मख़लूक़ के लिए आरास्ता करते हो उसी तरह अपना बातिन हक़ तआला के लिए आरास्ता करो यही तक़वा है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से मरवी है कि एक शख़्स ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे कुछ हिदायत फ़रमाईये, आपने इरशाद फ़रमाया ख़ुदा से डरते रहो यह तमाम भलाईयों का मजमुआ है, जिहाद के पाबन्द रहो यह इस्लाम की (जाएज़) रहबानियत है, ख़ुदा की याद पाबन्दी से करो यह तुम्हारे लिए रौशनी है।

अबी हरमज़ नाफ़ेअ बिन हरमज़ का बयान है कि मैंने हज़रत अनस से सुना है कि उन्होंने इरशाद फ़रमाया किसी शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप की आल कौन है? इरशाद ने इरशाद फ़रमाया हर मोमिन मुत्तक़ी मेरी आल है। अलग़र्ज़ तक़वा तमाम ख़ूबियों का मजमूआ है और तक़वा की हक़ीक़त यह है कि अल्लाह की फ़रमांबरदारी के साथ साथ उसके अज़ाब से बचा रहे, अरब का मुहावरा है फ़लां शख़्स ने अपनी ढाल से पनाह ली। तक़वा की असल शिर्क से बचना उसके बाद मआसी व सईयात से बचना फिर शुबहात से बचना और उसके बाद फ़ुज़ूल और बेकार बातों को तर्क कर देना है।

अल्लाह से डरो जितना डरने का हक़ है, की तफ़सीर में बताया गया है कि अल्लाह की इताअ़त की जाये नाफ़रमानी न की जाये, उसको याद किया जाये, फ़रामोश न किया जाये, उसका शुक्र अदा किया जाये नाशुक्री न की जाये।

हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं है रसूलुल्लाह के सिवा कोई दलील व [illegible] नहीं तक़वा के सिवा कोई तोशा नहीं और सब्र करने

के सिवा कोई अमल नहीं। कनानी ने फ़रमाया दुनिया को मुसीबतों पर तक़सीम किया गया है और जन्नत को तक़वा पर। जो शख़्स अपने और अल्लाह के माबैन तक़वा और मुराक़बा को काम में न लाये वह कश्फ़ और मुशाहदा तक नहीं पहुंच सकता।

नसराबाज़ी ने फ़रमाया कि तक़वा यह है कि बन्दा मासिवा अल्लाह से बचे और (अल्लाह के सिवा हर चीज़ से गुरेज़ करे) सुहैल फ़रमाते हैं कि जो चाहता है कि उसका तक़वा दुरुस्त हो जाये उसको चाहिए कि तमाम गुनाहों को छोड़ दे और यही क़ौल है नसरआबाज़ी का कि जिसने तक़वा को इख़्तियार कर लिया और दुनिया को छोड़ने का मुशताक़ बन गया, इसलिए कि अल्लाह तआला फ़रमाता है बेशक आख़िरत का घर मुत्तक़ी लोगों के लिए बेहतर है।

बाज़ मशाइख़ उज़्ज़ाम ने फ़रमाया कि जिसका तक़वा दुरुस्त हो गया अल्लाह तआला उसके दिल से दुनिया की किनारा कशी को सहल व आसान बना देता है। हज़रत अब्दुल्लाह रूदबारी फ़रमाते हैं कि तक़वा हर उस चीज़ के तर्क कर देने का नाम है जो तुझे अल्लाह तआला से दूर करने वाली है। हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि जो अपने ज़ाहिर को मुख़ालिफ़े शरअ बातों से और अपने बातिन को ख़ुदा से ग़ाफ़िल रखने वाली बातों से आलूदा न करे, मौकिफ़ुल इत्तेफ़ाक़ में अल्लाह तआला के साथ खड़े होंगे। इब्ने अतिया ने फ़रमाया मुत्तक़ी के लिए ज़ाहिर भी है और बातिन भी, उसका ज़ाहिर हुदूदे शरई की मुहाफ़िज़त है और उसका बातिन हुस्ने नीयत और अख़लास है। हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि ज़िन्दगी उसी की है जो ऐसे मरदाने ख़ुदा के साथ हो जिनके दिल तक़वा के आरज़ू मन्द हों और अल्लाह के ज़िक्र में ख़ुशहाल हों। अबू हफ़्स ने फ़रमाया परहेज़ हलाल महज़ को इख़्तियार करने में है किसी दूसरी चीज़ में नहीं है। हज़रत अबुल हसन ज़न्जानी ने फ़रमाया जिसका सरमाया तक़वा है उसकी तारीफ़ से ज़बानें गुंग हैं (उसकी तारीफ़ नहीं की जा सकती)। वास्ती ने कहा कि तक़वा यह है कि अपने तक़वा की दीद से परहेज़ करे (ऐसी सूरत पैदा न करे कि उसके तक़वा के इज़हार के मवाक़ेअ पैदा हों और उसकी निगाहों से गुज़रें, लोग उसके सामने उसके तक़वा की तारीफ़ करें)।

मरवी है कि इब्ने सीरीन ने घी के चालीस कुप्पे ख़रीदे उनके गुलाम ने किसी कुप्पे से चूहा निकाला, इब्ने सीरीन ने गुलाम से दरयाफ़्त किया कि चूहा किस कुप्पा से निकाला? गुलाम ने कहा मुझे याद नहीं रहा तो आपने तमाम कुप्पों का घी फेंकवा दिया।

बाज़ अइम्मए केबार से मनकूल है कि वह अपने मक़रुज़ के दरख़्त के साये में भी नहीं बैठते थे और फ़रमाते थे कि हदीस शरीफ़ में आया है जिस क़र्ज़ से कुछ नफ़ा हासिल हो वह सूद है। मनकूल है कि हज़रत बायज़ीद बुस्तामी ने अपने एक रफ़ीक़ के साथ जंगल में कपड़े धोये, धोने के बाद उनके साथी ने कहा कि इन कपड़ों को अंगूर की बाढ़ (अंगूर की टट्टी) पर फैला दें आप ने कहा हम लोगों की दीवार पर मेख़ नहीं गाड़ते, साथी ने कहा अच्छा दरख़्त से लटका दें तो आपने फ़रमाया नहीं, इसकी टहनियां टूट जायेंगी, साथी ने कहा कि फिर अज़ख़र (मिरचिया गन्द) घास पर फैला दें तो आपने फ़रमाया कि यह चौपायों का चारा है हम जानवरों से इसको नहीं छुपा सकते (कपड़ों के फैलाने से घास छुप जायेगी) आख़िरकार आपने अपनी पीठ पर कपड़े डाल लिए और सूरज की तरफ़ पीठ करके खड़े हो गये, जब कपड़े एक रुख़ से सूख गये तो उनको उलट दिया फिर दूसरा रुख़ भी सूख गया इस तरह आप ने कपड़े ख़ुश्क कर लिए।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम ने फ़रमाया कि मैं एक रात ज़हरा बैतुल मुक़द्दस के नीचे ठहर गया, कुछ रात गये दो फ़रिश्ते उतरे एक ने दूसरे से कहा यहां कौन है? दूसरे ने जवाब दिया इब्राहीम बिन अदहम, पहले फ़रिश्ते ने कहा यह वही इब्राहीम अदहम है जिसके मरातिब में से अल्लाह तआला ने एक मतर्बा कम कर दिया है, दूसरे ने पूछा उसकी क्या वजह हुई, पहले ने कहा इब्राहीम ने बसरा में कुछ छुहारे ख़रीदे थे, मेवा फ़रोश के छुहारों में से एक छुहारा (तौल के अलावा) उसके छुहारों में गिर गया था (वह उन्होंने रख लिया)। हज़रत इब्राहीम बिन अदहम का बयान है कि सुनते ही मैं बसरा वापस आया उसी दुकानदार से छुहारे ख़रीदे एक छुहारा दुकानदार के छुहारों में डाल दिया और फिर बैतुल मुक़द्दस लौट आया और ज़हरा के नीचे आकर सोया। कुछ रात गये वही दोनों फ़रिश्ते वहां उतरे और एक ने दूसरे से पूछा यहां कौन है? दूसरे फ़रिश्ते ने जवाब दिया इब्राहीम अदहम है, पहले ने कहा यह वही शख़्स है जिसने चीज़ को उसकी जगह वापस कर दिया (यानी छुहारा) और उसका दर्जा जो कम कर दिया था फिर बलंद कर दिया गया।

कहा गया है कि तक़वा की कई किस्में हैं उनमें से अवाम का तक़वा तर्के शिर्क है, ख़[illegible] का तक़वा तर्के मआसी के बाद ख़्वाहिशाते नफ़्स का तर्क कर देना और हर हाल में नफ़्स की मुख़ालफ़त करना है, औलियाए ख़्वास का तक़वा है हर चीज़ में अपने इरादा का तर्क कर देना, नफ़्ली इबादात का ख़ालिस अल्लाह के लिए बजा लाना, असबाब से दिल बस्तगी को ख़त्म कर देना और मासिवा अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह और मै[illegible] से किनारा कश हो जाना, हाल व मक़ाम की पाबन्दी को तर्क करके तकमीले फ़राएज़ के साथ तमाम बातों पर अल्लाह तआला के अहकाम की पाबन्दी करना।

अंबिया अ[illegible]हिमुस्सलाम का तक़वा [illegible] है कि कोई गैब उनसे गैब में तजावुज़ नहीं करता (यानी आलमे गैब में हर गैब उनकी ज़िन्दगी का [illegible] होता है और वही पर हर वक़्त उनकी नज़र होती है। बस यह तक़वा मिनल्लाह (अल्लाह की तरफ़ से) होता है अल्लाह ही उनको हुक्म देता है और अल्लाह ही [illegible] फ़रमाता है, वही उनको तौफ़ीक़ अता करता है और अदब सिखाता है, वही उनको पाकीज़ा [illegible] है, वही उनको बीमारी और शिफ़ा देता है, वही उनसे कलाम और गुफ़्तगू करता है, वही उनको [illegible]यत देता और रहनुमाई फ़रमाता है, वही उनको बरकत अता करता है, वही उनको अ[illegible] करता है, वही उनको साहिबे बसीरत बनाता है, अक़्ल को इसमें मजाल नहीं (कि मदाख़लत कर सके)। अंबिया तमाम इंसानों बल्कि फ़रिश्तों से भी अलग होते हैं अलबत्ता उन उमूर में जिनका ताल्लुक़ उम्मत और आम मोमिनीन के जो ज़ाहिरी अहकाम और वाज़ेह उमूर है उनमें अंबिया आम लोगों के साथ शरीक हैं इन बातों के अलावा दूसरे उमूर में वह मुनफ़रिद हैं अलबत्ता मख़सूस औलियाए कराम और अज़ीमुल मरतबत अब्दालों को इस तक़वा का कुछ हिस्सा मिल जाता है, यह हज़रात तक़वा की अपने अलफ़ाज़ में ताबीर नहीं कर सकते न उन उमूर का उनसे ज़हूर होता है, लोगों के फ़हम व इदंराक और हिस्से सामेआ में सिर्फ़ वही चीज़ आ जाती है, जो उन औलियाए किराम की ज़बान पर आ जाये। पस अक्सर ऐसा होता है कि बग़ैर इरादा बेसाख़्ता कोई लफ़्ज़ या चन्द अलफ़ाज़ उनकी ज़बान से निकल जाते हैं बस फ़ौरन ही उनके उस जोश को साकिन और उनके हैजान को साकित कर दिया जाता है और उस पर पर्दा डाल दिया जाता है वह इस सुकून व सकूत के बाद फ़ौरन बेदार हो जाते हैं और अपनी ज़बानों को (बयान से) रोक लेते हैं और जो कुछ हो चुका है (या वह कह चुके हैं) उससे

अल्लाह से माफ़ी मांगते हैं, इबारत को बदल देते हैं और अदाशुदा अलफ़ाज़ को माकूल तरीक़े पर दुरुस्त कर लेते हैं। इस तरह कि मामूल के मुताबिक़ उनका मफ़हूम पैदा हो जाये।

हुसूले तक़्वा की इब्तिदाई सूरत

तक़्वा किस तरह हासिल किया जाये

हुसूले तक़्वा की इब्तिदाई सूरत यह है कि सबसे पहले उन मज़ालिम की माफ़ी मांगे जो उसने लोगों पर किये हैं और उनके हुक़ूक़ के मुतालबात से उहदा बरआ हो जाये उसके बाद सग़ीरा और कबीरा गुनाहों से आज़ादी हासिल करे और अपने दिल के गुनाहों को तर्क करने में मशगूल हो कि दिल के गुनाह ही तमाम गुनाहों की असल बुनियाद हैं। दिल ही से दूसरे आज़ा में गुनाहों की तहरीक होती है जैसे रिया व निफ़ाक़, उज्ब व तकब्बुर, हिर्स व तमअ़, मख़लूक़ से उम्मीद, जाह व मरतबत अपने हम जिन्सयों पर तफ़व्वुक़ व बरतरी के गुनाह (कि उनकी जड़ दिल ही है) जिनकी तफ़सील बहुत तवील है, उन तमाम को तर्क करने की ताक़त, ख़्वाहिशाते नफ़्स की मुख़ालफ़त से पैदा होती है, पस नफ़सानी ख़्वाहिशात की मुख़ालफ़त करे ताकि तमाम क़लबी गुनाहों को तर्क करने की तरफ़ क़दम बढ़ा सके।

अल्लाह तआ़ला के हुक्म की मौजूदगी में (उसके हुक्म के ख़िलाफ़) किसी चीज़ को पसन्द न करे और न अल्लाह तआ़ला की तदबीर के साथ अपनी किसी तदबीर को काम में लाये और न अपनी तदबीर को तदबीरे इलाही पर तरजीह दे, अपने रिज़्क़ में किसी सबब और वजह को तलाश न करे बल्क के इन्तिज़ाम में अल्लाह के किसी हुक्म पर ऐतराज़ न करे, हर चीज़ को अल्लाह के सुपुर्द कर दे और अल्लाह का मुतीअ़ और फ़रमांबरदार बन जाये, अपने आपको उसके हवाले कर दे और अल्लाह तआ़ला के दस्ते कुदरत में ऐसा बन जाये जैसे एक शीर ख़्वार बच्चा अपनी आका (दूध पिलाई) की गोद में होता है, जैसे मुर्दा ग़साल के हाथ में मसलूबुल इख़्तियार होता है, बन्दों की नजात और रुस्तगारी सिर्फ़ इसी तरीक़ा में है।

तक़्वा का हुसूल

अगर कोई यह कहे कि इस तरीक़े को किस तरह हासिल किया जाये तो उसको बता दिया जाये कि इस रास्ता के हुसूल का मदार है सच्चे दिल से अल्लाह की पनाह हासिल करना, सबसे अलग होकर अल्लाह का हो जाना, उसके अवामिर व नवाही की तामील करके उसकी ताअ़त व बन्दगी की पाबन्दी, अपने आपको तक़दीरे इलाही के सुपुर्द कर देना, उसके हुदूद की हिफ़ाज़त करना और हमेशा अपने हाल की निगहदाश्त करना।

नजात

नजात के बारे में मशाइख़ के अक़्वाल

नजात के बारे में मशाइख़ के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं, हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं कि जिसको भी नजात मिली उसको बग़ैर इसके नहीं मिली जब तक वह सिद्क़ दिल से अल्लाह अज़्ज़ व

अल्ला की पनाह में न आ जाये।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

अल्लाह ने अपनी रहमत फ़रमाई उन तीन शख़्सों पर जो पीछे रह गये थे यहां तक कि ज़मीन उनपर तंग हो गई अपनी वुसअत के बावजूद और उनके नुफ़ूस भी उनपर तंग हो गये (जान से आजिज़ आ गये) और उन्होंने गुमान किया इसके सिवा कि अल्लाह ही की तरफ़ रुजू किया जाये इससे बचने का कोई और तरीक़ा नहीं है।

हज़रत अदहम ने फ़रमाया कि जिसने भी नजात पाई वह सिद्क व सफ़ा के बजुज़ नहीं पाई, अल्लाह तआ़ला का इरशाद है अल्लाह तआ़ला अहले तक़वा को उनकी कामयाबी के साथ नजात देता है।

हज़रत हरीरी ने फ़रमाया कि कोई शख़्स वादा पूरा किये बग़ैर (ईफ़ाए अहद के बग़ैर) नजात नहीं पा सकता जिसने ईफ़ाए वादा का पास किया वह नजात पा गया। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है वह लोग जो अल्लाह के अहद को पूरा करते हैं और अहद व पैमान को नहीं तोड़ते।

हज़रत अता का इरशाद है कि जब तक हया मौजूद न हो कोई नजात नहीं पा सकता, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह तआ़ला देखता है।

बाज़ मशाइख़े उज़्ज़ाम फ़रमाते हैं कि बग़ैर हुक्मे इलाही और क़ज़ाए साबिक़ के (जो अल्लाह के इल्म में पहले से थी) किसी नजात पाने वाले ने नजात नहीं पाई। अल्लाह फ़रमाता है:

जिनके लिए हमारी तरफ़ से पहले ही भलाई मुक़द्दर हो चुकी है (वह दोज़ख़ में नहीं जायेंगे)

हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया कि दुनिया और दुनिया से रुगरदानी के बग़ैर किसी नजात पाने वाले को नजात मयस्सर नहीं आई। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

दुनियावी ज़िन्दगी तो निरा लहव व लइब है। रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है। कुरबते इलाही हासिल करने वालों के लिए कुर्ब के हुसूल का ज़रिया अदाए फ़र्ज़ से ज़्यादा बेहतर और कोई ज़रिया नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जब से अल्लाह ने दुनिया को पैदा किया है उसको कभी पसन्दीदगी की नज़र से नहीं देखा। इस हदीस की तशरीह व तफ़सीर मे हज़रत बसरी फ़रमाते हैं कि इसका मतलब यह है कि यह दुनिया मकरुह है। अल्लाह तआ़ला ने निगाहे रहमत से उसकी तरफ़ कभी नहीं देखा यह दुनिया अल्लाह और बन्दे के दर्मियान बड़ा हिजाब है। यह खोटे खरे का मेयार (कसौटी) है जिनको दुनिया से लगाव होता है वह हक़ सुब्हानहू तआ़ला की मुनाजात में लज़्ज़त नहीं पाते इसलिए कि दुनिया अल्लाह और उसकी पसन्दीदा चीज़ों की ज़िद है और ज़िद को अल्लाह तआ़ला दोस्त नहीं रखता।

तौहीद व ताअ़त और वादा व वईद

वादा व वईद

जिस तरह अल्लाह तआला ने सवाब का वादा फ़रमाया और अज़ाब से डराया है, जन्नत व राहत उक़बा की तरफ़ रग़बत दिलाई है और दोज़ख़ से डराया है, इसी तरह मख़्लूक़ को अपनी

तौहीद व ताअत की तरफ़ बुलाया है पस उसने डराया, धमकाया, मुतनब्बेह फ़रमाया ताकि हुज्जत पूरी हो जाये और मख़लूक़ को कोई उज़्र बाक़ी न रहे। बारी तआला का इरशाद है:

हमने पैगम्बरों को भेजा जो लोगों को बहिश्त की खुशख़बरी देते हैं और दोज़ख़ से डराते हैं ताकि रसूलों को भेजने के बाद लोगों को अल्लाह के ख़िलाफ़ कोई हुज्जत बाक़ी न रहे।

और एक दूसरी आयत में फ़रमाया :

अगर इससे क़ब्ल हम उनको अज़ाब से हलाक कर देते तो (क़यामत के दिन) वह कहते कि परवरदिगार तूने हमारे पास पैग़म्बर क्यों नहीं भेजा कि हम ज़लील व ख़्वार होने से पहले तेरा हुक्म बजा लाते।

एक जगह इरशाद फ़रमाया: बग़ैर पैग़म्बर भेजे हम अज़ाब नहीं दिया करते।

और यह भी इरशाद फ़रमाया:

ऐ लोगो! बेशक तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत और शिफ़ा उसके लिए है जो सीनों में है और मोमिनीन के लिए हिदायत और रहमत आ चुकी है।

वईदे इलाही

अल्लाह तआला ने ख़ौफ़ दिलाने और अज़ाब से डराने के लिए इरशाद फ़रमाया।

अल्लाह तुम को अपने (ज़ाती) अज़ाब से डराता है और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा शफ़क़त करने वाला है।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया: जान लो जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उससे वाकिफ़ है पस उससे डरते रहो

और

जान लो अल्लाह हर चीज़ से वाकिफ़ है

और फ़रमाया

ऐ! दानिशवरो! मुझसे डरो।

और भी ज़्यादा वाज़ेह तौर पर इरशाद फ़रमाया।

उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ़ लौटोगे फिर वह नफ़्स (जान) को बदला देगा जो उसने कमाया और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा

इरशाद फ़रमाया

और उस दिन से डरो जब कोई किसी के काम न आएगा और न उससे बदला क़बूल किया जाएगा और न कोई सिफ़ारिश उसके लिए नफ़ा बख़्श होगी।

और इरशाद फ़रमाया:

ऐ लोगो! अपने अल्लाह से डरो और उस दिन से डरो जब बाप अपने बेटे को नजात न दिला सकेगा और न बेटा बाप को, खुदा का वादा सच्चा है पस दुनिया की ज़िन्दगी से धोखा न खाओ! और शैतान अल्लाह के मुताल्लिक़ तुम को धोखे में न रखे।

मज़ीद फ़रमाया:

ऐ लोगो! अपने उस मालिक से डरो जिसने तुम को एक शख़्स से पैदा किया उसके जोड़े को पैदा किया फिर दोनों से बहुत से मर्द और औरतों को पैदा किया और उस अल्लाह से डरते

रहो जिस के नाम पर तुम बाहम मांगते हो और रिश्तेदारियों को मुनक़तअ करने से डरते रहो, बेशक अल्लाह तुम्हारा निगेहबान है।

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच बात कहो।

ऐ ईमान वालो! ख़ुदा से डरो और हर शख़्स उस चीज़ को देखे जो उसने कल के लिए भेजी है, और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे आमल से बाख़बर है।

और इरशाद फ़रमायाः

और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है!

अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।

इसी सिलसिले में मज़ीद फ़रमाया गयाः

क्या तुम्हारा ख़्याल है कि हमने तुम्हें यूँही बे फ़ायदा पैदा किया है और तुम हमारी तरफ़ नहीं लौटोगे।

क्या इन्सान यह गुमान करता है कि वह यूंही [illegible]ड़ दिया जाएगा

इरशादे बारी तआला हैः

क्या बस्ती वालों को इस बात का डर नहीं कि रात के वक़्त उन [illegible]मारा अज़ाब आए और वह सोते हों या वह इस बात से बेख़ौफ़ हो गए हों कि च[illegible]के वक़्त उन पर हमारा अज़ाब आए और वह ख़ेल में लगे हों।

ख़्वाहिशात की पैर[illegible] अंजा[illegible]

ऐ मिसकीन[illegible] इन आयात (मज़कूरा बा[illegible]ला) का तेरे पा[illegible]या जवाब है? और इन इरशादात के मुताबिक़ तेरा [illegible]या अमल [illegible] क्या तू [illegible]पनी नफ़[illegible]हिशों की पैरवी से बाज़ आ गया? यह ख़्वाहिशात ना[illegible]क हैं दुनिया और आख़िरत में तुझे हलाक[illegible]रने वाली हैं, तुझे बद बख़्ती और ख़्वारी की जगह[illegible]किने वाली हैं वह जगहा ऐसी है जिसकी आग तुझे जलाएगी और जिसके सांप तुझे डसेंगे, और जहाँ के बिच्छू तुझे गज़न्द पहुंचाएंगे, अज़ीयत, तकलीफ़ देने वाली चीज़ें तुझे अज़ीयत व त[illegible] मुबतला करेंगी, जहाँ के कीड़े मकोड़े तुझे खाएंगे, जहाँ के फ़रिश्ते और निगेहबान तुझे मारेंगे और हर रोज़ नौ बनो क़िस्म क़िस्म के अज़ाब तुझे दिए जाएंगे, जहाँ फ़िरऔन, हामान, क़ारून और शैतान के साथ साथ तू भी होगा।

तरग़ीब (तक़वा) के सिलसिले में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया हैः

और जो अल्लाह से डरता है तो अल्लाह उसके लिए निकास (बचाओ) का रास्ता निकाल देता है और ऐसी जजगा से उसको रिज़्क़ पहुंचाता है जिसका गुमान भी नहीं होता।

मज़ीद इरशाद फ़रमायाः

और जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके गुनाह साक़ित कर देता है।

और फ़रमायाः

ऐ इन्सान! तुझे किस शय ने धोखा दिया? तेरा परवरदिगार वह अल्लाह करीम है जिसने तुझे पैदा किया और ठीक किया और संवारा (तेरे सही और मुकम्मल आज़ा बनाए)

मज़ीद इरशाद फ़रमाया

जो लोग ईमान लायें हैं, क्या उनके लिये (अभी) वक़्त नहीं आया है कि उनके दिल डर और आजज़ी से अल्लाह को याद करें।

बिला शुबह अल्लाह तआला ने तुम्हें इसकी रग़बत दिलाई है कि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो, उसकी वसीअ़ रहमत को ढूंढो, उसके पाक रिज़्क़ की जुस्तजू करो और तक़्वा की राहों पर चल कर और उस पर मदावमत करके राहत पज़ीर और तमानियत अंदोज़ हो। तुम्हारे लिए उसने तक़्वा की राहों को वाज़ेह कर दिया है और हुज्जत बयान फ़रमा दी है, उसके बाद तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देने, ख़ताओं को साक़ित फ़रमा देने और अज्र व सवाब को बढ़ाने का ज़िम्मा लिया है और इरशाद फ़रमाया है:

फ़िर उसने तुम्हारी ग़फ़लत, फ़रामोश कारी और राहे इलाही से आँखें बन्द कर लेने और उसकी आयात व नसाएह के सुनने पर बहरा बन जाने पर ख़बरदार किया है और इरशाद फ़रमाया:

म ग़र्रका बे रब्बेकल्ल करीमिल्लज़ी ख़ल–क़–क़ फ़सव्वका फ़अ–द–ल–क इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने अपने आप को सिफ़ते [illegible]म से मौसूफ़ फ़रमाया है ताकि तुम उसके मामले में रूगरदानी इख़्तियार न करो, और उसके [illegible] से नफ़रत न करने लगो और दूसरी मख़लूक़ की तरफ़ राग़िब न हो जाओ इसके बाद उसने तुम को पैदा किया और अ़दम से तुम को वजूद में लाया साथ ही ज़िन्दगी अता फ़रमाई। इससे बाद तुम कुछ भी न थे, तुम्हारी तंगदस्ती के बाद तुम्हें ग़नी किया और तुम्हारी ज़ईफ़ी के बाद तुमको क़वी किया, तुम्हारे अंधे पन के बाद अपने मामलात में तुम्हें बसीरत बख़्शी, जहालत के बाद इल्म दिया और गुमराही के बाद हिदायत मरहमत फ़रमाई, [illegible] ऐ ग़ाफ़ि[illegible] उसके इस फ़ज़्ले अज़ीम को तलब करने से बैठ रहा है और क्यों उसके ताअ़त की पाबन्दी से सुस्ती [illegible] उसकी ताअ़त तो तुझे दुनिया में मुअज़्ज़ज बना देगी और आख़िरत में सआदत तेरे [illegible] होगी और तेरे बुलन्द दरजात को मज़ीद बुलन्द कर देगी। क्या तुझे दुनियावी हयात पसन्द है? क्या तू बेहतर के एवज़ हक़ीर चीज़ के लिए तैयार है? क्या [illegible] दुनिया को, दुनिया वालों को, और इसकी ज़ाहिरी ज़ेब व ज़ीनत को जो सबके सब फ़ना होने वाले हैं फ़िरदौसे आला पर, पैग़म्बरों, सिद्दीकों और शहीदों की रिफ़ाक़त पर तरजीह दी है?

क्या तू ने अल्लाह तआला का यह इरशाद नहीं सुना:

क्या तुमने आख़िरत के बजाए दुनियावी ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया है? हयाते दुनिया का सामान तो आख़िरत में बहुत हक़ीर होगा।

एक और जगह इरशाद फ़रमाया है:

बल्कि तुम तो दुनयावी ज़िन्दगी ही पसन्द करते हो हालांकि आख़िरत बेहतर और लाज़वाल है।

इरशाद फ़रमाया है:

जिसने सरकशी की और दुनियावी जिन्दगी को इख़्तियार किया तो उसके लिए दोज़ख़ है और वही उसका ठिकाना है।

बाब 12

जन्नत और दोज़ख़

जन्नत और दोज़ख़ में दाख़ला

वाज़ेह रहना चाहिए कि दोज़ख़ में दाख़िल होना कुफ़्र के सबब से है और वहाँ अज़ाब की ज़्यादती और जहन्नम के तबक़ात का फ़र्क़ और उनकी तक़सीम बुरे आमाल व अख़लाक़ के मुताबिक़ होगी, और जन्नत में दाख़िला ईमान की वजह से होगा और वहाँ का ऐश (जावे दानी) और उसकी फ़रावानी और जन्नत के तबक़ात की तक़सीम फ़जाइले अख़लाक़ और आमले हसना के मुताबिक़ होगी। अल्लाह तआला ने जन्नत को पैदा फ़रमाया और अहले जन्नत के सवाब के लिए उसको नेमतों से मामूर फ़रमा दिया और दो[illegible] को पैदा करके दो[illegible]ख़ियों के अज़ाब के लिए उसको अज़ाब से भर दिया है, दुनिया को पैदा [illegible]रमा कर आज़माइश [illegible] इम्तहान के लिए इसको आफ़तों और नेमतों से भर दिया फिर हक़ तआ[illegible]ला ने मख़लूक [illegible] फ़[illegible]माया और उनसे जन्नत व दोज़ख़ को छुपा दिया। इन्सान ने उन दोनों [illegible] नहीं देखा, [illegible]हाज़ा दुनिया में जिस क़दर दुख सुख हैं वह आख़िरत की राहत व [illegible]कलीफ़ [illegible] नमूना हैं और जो कुछ आख़िरत में है उसका ज़ाएक़ा हैं।

अल्लाह त[illegible]आला ने [illegible] पर अप[illegible] में से बादशाह [illegible]ए और उनको सुलतानी क़ुदरत और ग़लबा अत[illegible] फ़रमाया लोगों के दिलों [illegible] उनक[illegible] हैबत [illegible], ताकि वह उन पर हुकूमत करें। यह एक नमूना [illegible] मिसाल [illegible] अल्लाह [illegible] तदबीर [illegible] और उसके निफ़ाज़े हुक्म की, इन सब बातों की ख़ब[illegible] उसने क़ुरआन म[illegible]द में दे दी। दुनिया [illegible] आख़िरत की हालत बयान फ़रमादी, अपनी हुकू[illegible]तेदार, इंतज़ाम, एहसान और अपनी सनअत गरी को भी वाज़ेह फ़रमा दिया और मिसालें भी [illegible]यान [illegible]रमा दीं (ताकि फ़हम को आसानी हो) चुनांचे इरशाद फ़रमायाः

वह मिसालें हम लो[illegible]ए बयान करते हैं जिसे दाना लोग ही समझते हैं।

मिस्ल का फ़ायदा

बस अल्लाह के जानने वाले अल्लाह की बयान फ़रमूदा मिसालों को समझते हैं, मिस्ल के मानी हैं कि देखी हुई चीज़ के ज़रिये किसी अंदेखी चीज़ की हालत को तुम समझ सको, और जिस चीज़ को आंखों से देख रहे हो उसके वास्ते से उस चीज को पहचान लो जो आंखों के सामने नहीं उस तरह तुम उन चीजों का इदराक कर लोगे जो आंखों से नज़र नहीं आती हैं, ताकि तुम अल्लाह तआला की हक़ीक़ी बादशाहत और दोनों जहाँ की भलाईयों और उसके मामलात को ख़ूब अच्छी तरह समझ लो।

जन्नत की मिसाल

पस दुनिया की हर राहत और लज़्ज़त जन्नत का नमूना है और उसका ज़ाएक़ा है, जिस को न किसी आंख ने देखा है और न किसी कान ने सुना न किसी इन्सान के दिल में इसका तसव्वुर

आया। अगर बन्दों के सामने अल्लाह तआला उन नेमतों में से किसी नेमत का नाम ज़ाहिर भी फ़रमा देता तो नाम से किसी को कोई फ़ायदा नहीं पहुंचता कि न किसी ने उसको समझा है और न देखा है और न दुनिया में उसका कोई नमूना मौजूद है। मसलन इस्लाम ने बताया है कि जन्नत के सौ दरजे हैं और उनमें से सिर्फ़ तीन दरजों की हालत और कैफ़ियत बयान की गई है यानी सोना, चाँदी, और नूर के दरजात, इससे आगे बयान नहीं फ़रमाया क्योंकि वह अक़्ल में नहीं आ सकते।

दोज़ख़ की मिसाल

इसी तरह दुनिया में जो तकालीफ़ और आलाम हैं वह भी दारे आख़िरत का नमूना हैं, इनके अलावा अज़ाब की जो और शक्लें हैं अक़्ल उनको बरदाश्त नहीं कर सकती। यह तमाम अक़ूबतें और दोज़ख़ के अज़ाब उन पर होंगे जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब और अताब होगा और जन्नत की तमाम नेमतें उनके लिए होंगी जो अल्लाह की रहमत की मुस्तहिक़ हैं। जो बन्दें दुनिया चीज़ों में से मुबाह नेमत को इस्तेमाल करते हैं और उस पर अल्लाह का शुक्र बजा लाते हैं उसको उस शुक्र के एवज़ जन्नत में ऐसी नेमत मिलेगी जिसके सामने यह दुनियावी नेमत बहुत ही हक़ीर है और जो दुनिया की ममनूआ नेमत को इस्तेमाल करेगा वह आख़िरत के दरजात (और उसकी नेमतों) से अपने आप को महरूम कर देगा और जो आख़िरत को सच्चा (हक़ीक़त) नहीं समझेगा वह अपने नफ़्स को जन्नत की हर नेमत से महरूम कर देगा।

अहले जन्नत के इनामात

अहले जन्नत के लिये जन्नत में उर्स, वलीमे और मेहमानियां होंगी। अराइस, दावतें वग़ैरह इस लिए होंगी कि अल्लाह तआला ने उनको दारुस्सलाम की जानिब बुलाया ताकि उनको ख़ूबसूरत, तरोताज़ा और अबदी ज़िन्दगी अता फ़रमाए। शादियों की दावतें और ज़ियाफ़तें मुलाक़ात के लिये होंगी क्योंकि अहले जन्नत बाहम मुलाक़ात भी करेंगे और आपस में बातें करने लिए अच्छी अच्छी जगह भी होंगी। तूबा के साए में उनका इजतमा भी होगा जहाँ पैग़म्बरों की ज़ियारत और मुलाक़ात से मुशर्रफ़ होंगे, फ़रिश्तों के आपस में जलसे भी होंगे, उन सब पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जल्ला व आला का सलाम होगा, वहाँ बाज़ार होंगे, वहाँ वह अपनी अपनी पसन्द की चीज़ें मुन्तख़ब करेंगे और नमाज़ के औक़ात में सुबह व शाम अल्लाह तआला की जानिब से अलवाने नेमत मतऊमात व मशरूबात और फ़वाकिहात तोहफ़ा में दिये जाएंगे। उनको इनना वाफ़िर रिज़्क़ दिया जाएगा कि वह कभी कम नहीं होगा और न उसकी कमी महसूस होगी बल्कि अल्लाह की जानिब से रोज़ ब रोज़ उसमें इज़ाफ़ा होगा। जब अहले जन्नत के सामने यह उम्दा, लज़ीज़, ताज़ा ब ताज़ा नेमतें आएंगी तो वह पहली चीज़ों को भूल जाएंगे फिर वह ऐसे मक़ाम पर ले जाए जाएंगे जहाँ नहरे कौसर के किनारे बाग़ों में मोतियों के ख़ेमें नसब होंगे, उनमें से ख़ेमा साठ मुरब्बा को होगा और उसमें कोई दरवाज़ा नहीं होगा, उन ख़ेमों के अंदर इत्र बेज़ जिस्म वाली बांदियां होंगी ऐसी जिनको न कभी फ़रिश्ते ने देखा होगा न जन्नत के किसी ख़ादिम ने न हूर ने फ़ी हिन्ना ख़ैरातुन हेसान, का मतलब यही है। उन ख़ेमों के अंदर (एन बांदियों के अलावा) ख़ूबसूरत और हसीन बीवियां होंगी, उनकी ख़ूबसूरती की तारीफ़ जब ख़ुद अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाई है तो फिर किसकी मजाल है कि उनकी तारीफ़ कर सके। इरशाद

फ़रमाया: ख़ेमों के अंदर महफ़ूज़ हूरें होंगी। यह हूरें अल्लाह तआला की मुनतख़ब करदा होंगी अल्लाह तआला ने उन्हें ख़ूबसूरत और नेक बनाया है, उन्हें अबरे रहमत से पैदा किया है जब अबरे रहमत बरस्ता है तो यह ख़ूबसूरत हूरें पैदा होती हैं, उनके चेहरों को नूर अर्श के नूर से मुस्तनीर व मुस्तफ़ाद है फिर उन हूरों के गिर्द मोतियों के ख़ेमें नसब कर दिए जाते हैं। ताकि उन्हें कोई न देख सके गोया उन्हें उन ख़ेमों में परदे में रखा गया है। बस वह सिर्फ़ अपने शौहरों के लिए ख़ेमों के अंदर महफ़ूज़ होंगी। अहले जन्नत महलों के अंदर अपनी उन बीवियों (अज़्वाज) के साथ लुत्फ़ अंदोज़ होंगे और जब तक अल्लाह तआला चाहेगा, वह इस नेमत को पाते रहेंगे। जब मशीयते इलाही के मुताबिक़ उन नेमतों और राहतों की तजदीद का दिन आएगा तो बहिश्त के दरजात में उनको पुकारा जाएगा कि ऐ अहले जन्नत! आज ख़ुशी, मसर्रत और सुरूर का दिन है तुम अपनी तफ़रीह गाह की तरफ़ निकलो उस वक़्त वह लोग मोती और याक़ूत के घोड़ों पर सवार हो कर अपने अपने महलों के दरवाज़ों से निकलेंगे और फ़रहत व सुरूर के मैदानों में पहुंचेंगे यह लोग वहाँ पहुंचकर उन बाग़ों की सैर करेंगे जो नहरे कौसर के किनारे वाक़ेअ हैं उसके बाद अल्लाह तआला हर जन्नती की उसकी मंज़िल की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाएगा और फिर हर शख़्स अपने आप को अपने ख़ेमे के पास खड़ा हुआ पाएगा, उस ख़ेमे का कोई दरवाज़ा नहीं होगा उसी वक़्त वह ख़ेमा अल्लाह के महबूब बन्दे के सामने शक़ हो जाएगा और उससे दरवाज़ा नमूदार होगा ताकि उसको मालूम हो जाए कि अंदर की नेमतों (हूर) को किसी ने नहीं देखा है इस तरह उस वादा की तकमील हो जाएगी जो अल्लाह तआला ने दुनिया में फ़रमाया था कि फ़ी हिन्ना ख़ैरातुन हेसान और फ़रमाया था हुरून मक़सूरातुन फ़िल ख़्याम और जिसकी सिफ़त यह बयान फ़रमाई थी लम यतमिसहुन्ना इन्सुन क़ब्लहुम वला जान(जन्नतियों से पहले उन हूरों को न किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने) फिर यह लोग जन्नती हूरों के साथ नुज़हत के तख़्तों पर मुतमक्किन होंगे, उनके सामने इज़्देवाज के वलीमा का खाना पेश होगा वलीमा के खाने के फ़रागत के बाद अल्लाह तआला उनको शराबे तहूर (पाकीज़ा शरबत) से सैराब फ़रमायेगा और वह ताज़ा फल खायेगें जो नौ बनौ अल्लाह तआला उनको मरहमत फ़रमायेगा उनको ज़ेवर और आला जोड़े (ख़िलअत) भी पहनाये जायेंगे और यह अपनी ख़ूबसूरत बीवियों से राहत अन्दोज़ होंगे अपनी हाज़त उनसे पूरी करेंगे फिर उन बाग़ों में नहरों के किनारे मनबत कारी से आरास्ता पैरास्ता नफ़ीस नशिस्त गाहों की तरफ आयेगें वहां यह सब्ज़ मोटे गद्दों पर बैठ जायेंगे और उनसे सहारा लगायेंगे, मुत्तकईना अला रफ़रफ़ीन ख़ुज़रीन व अबक़री हेसान के यही मानी हैं।

रफ़रफ़ की तारीफ़

जब अल्लाह तआला ख़ुद किसी शय के बारे में हेसान फ़रमा दे तो फिर कौन सी ख़ूबसूरती बाक़ी रह जाती है। रफ़ रफ़ वह चीज़ है कि आदमी उस पर बैठे तो वह लचक जाती है और जिधर को झुके तो बैठने वाला भी उधर को झुक जाये (स्प्रींग वाला गद्दा, सूफ़ा या झुलना उसकी उसकी मुशाबेहत कामिल तो नहीं हां मिसाल के तौर पर कह सकते हैं।)

जब जन्नती इन सोफ़ों पर बैठ जायेंगे तो हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम नग़मा सराई शुरू करेंगे। हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह की मख़लूक़ में हज़रत इस्राफ़ील से ज़्यादा और

कोई खुश आवाज़ नहीं, ज़ब हज़रत इस्राफ़ील नग़मा सराई शुरू करेगें तो सातों आसमान वालों की तसबीह व नमाज़ें रूक जायेंगी। हज़रत इस्राफ़ील अल्लाह तआला की तसबीह व तक़दीस के रंगा रंग नग़में सुनायेंगे उनकी नग़मा सराई के वक़्त जन्नत का हर दरख़्त फूलों से भर जायेगा हर पर्दा और दरवाज़ा गून्ज उठेगा और खुल जायेगा दरवाज़े की ज़न्जीर भी बसूरत नग़मा बजने लगेगी। सोने और चांदी के झाड़ी वाले नीस्तानों (गंजान झाड़ियों के जंगल) में जब इस्राफ़ील के नग़मों की गून्ज पहुंचेगी तो उनसे भी तरह तरह के ज़मज़मे पैदा होंगे उस वक़्त हर हूर अपने मख़्सूस राग में और हर परिन्दा अपनी आवाज़ में नग़मा सरा हो जायेगा, उस वक़्त अल्लाह तआला मलाइका को हुक्म देगा कि तुम भी उन नग़मा सराओं को जवाब दो और मेरे उन बन्दों को अपने नग़में सुनाओ जिन्होंने दुनिया में शैतान के बाजों से अपने कान बन्द कर लिए थे। फ़रिशते जवाब में अपने रुहानी नग़मे सुनायेंगे उन तमाम आवाज़ों से (मिलकर) एक हमहमा पैदा होगा उस वक़्त अल्लाह तआला हुक्म देगा ऐ दाऊद उठो साक़े अर्श के पास खड़े होकर मेरी तक़दीस बयान करो। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह त[illegible]ला की तक़दीस व तमजीद ऐसे लहन से बयान करेंगे कि आपकी अ[illegible]ज तमाम आवाज़ों प[illegible]ालिब आ जायेगी और उन आवाज़ों की लज़्ज़त चन्द दर चन्द हो जा[illegible]गी। ख़ेमे वाले अपन[illegible]पने गदीलों पर मुतमक्किन होंगे रंगा रंग लज़्ज़तें और राग गाने उनक[illegible] महजूज़ कर[illegible] होंगे, [illegible]ूनागूं नग़मों के सुरों से उनके कान भर जायेंगे। पस वह नग़मे की ल[illegible] से भर जाये[illegible], के यही मानी हैं।

यहया बिन कसीर रहमतुल्लाह अलैहि फ़र[illegible]ाते हैं कि [illegible] से मुराद [illegible]क क़िस्म की लज़्ज़त है और यह समाअ का नाम भी है ग़र्ज़ कि अहले जन्नत उसी लज़्ज़त व सुरुर में होंगे इतने में जन्नते अदन क[illegible] तरफ़ से [illegible]लकुल कुद्दू[illegible] अल्लाह तआला) की रहमत का दरवाज़ा) खुल जायेगा फ़ौरन ही बाबे [illegible]दन से लेकर तमाम जन्[illegible]तियों [illegible] तमाम [illegible]रजात तक रुहानियों की आवाज़े अल्लाह तआला क[illegible] तमजीद [illegible] तक़दीस [illegible]नसरूफ़ [illegible]यगी और गूंजने लगेंगी अदन से एक हवा तरह तरह की [illegible]शबू [illegible] साथ हयात बख़्श और कैफ़ आफ़री[illegible]के लेकर चलेगी उसका नाम नसीमे कुरबत होगा उ[illegible]छे एक नूर चमकेगा उस नूर से अहले जन्नत के बाग़ात, उनके ख़ेमे और नहरों के किनारे रौशन [illegible] जायेंगे और हर चीज़ पुर नूर हो जायेगी। उसके बाद रब्बुल इज़्ज़त की आवाज़ उनके [illegible] ऊपर से आयेंगी तुम सलामती रहो ऐ मेरे महबूबो! मेरे दोस्तो! मेरे बरगुज़ीदा बन्दो! जन्नत वालो! तुम ने अपनी तफ़रीह गाह कैसी पाई, यह तुम्हारी ईद का दिन है दुश्मनों ने नौ रोज़ के बजाए मेरे दुश्मनों ने नेमतों की तजदीद के लिए दुनिया में एक दिन मुक़र्रर किया था मगर अपनी बदबख़्ती और ख़बासत की वजह से उन्होनें ख़ुद इस नेमत को ख़राब बना दिया इस लिए वह अपने लिए मतलूबा लज़्ज़त न पा सकें और जो कुछ उन्होनें उस दुनिया में तलब किया था उसके मुक़ाबिल वह आख़िरत में घाटे में रहे और उनसे इतना सब्र न हो सका कि जो चीज़ मैंने आख़िरत में अपने इताअत गुज़ारो के लिए मुहय्या की है उसको वह हासिल कर लेते। तुम ने उनसे किनारा कशी की और दुनिया परस्तों ने जिस चीज़ की हिर्स की थी तुम उससे बाज़ रहे, आज वह अपने क़िए का वबाल चखेंगे। दारे फ़ना (दुनिया) में उनकी वह लज़्ज़त और ख़्वाहिश जल्दी ही फ़ना हो गई थी और आज वह ज़िल्लत व ख़्वारी में मुब्तला हो गए। तुम को उस सब्र के एवज़ जन्नत हुल्लाह बहिश्ती, तफ़रीह गाह और सलामती हासिल हुई। पस यह तुम्हारा "योमे नौ रोज़" है मेरे घर में जन्नते अदन के अंदर यह तुम्हारी बाहमी मुलाक़ात

का दिन है, दुनिया में तुम को आज के दिन अकसर इबादत करते और गुनाहों से एराज़ करते देखा था जबकि लोग दुनिया के लहव व लइब, भासियतों और ऐश व इशरत के मज़े उड़ा रहे थे और दुनिया के लेन देन में मस्त व मग़रूर थे, तुम मेरे हुदूद की पाबन्दी करते रहे थे, मुझसे किए हुए अहद के पाबन्द थे और मेरे हुक़ूक़ को ज़ाया करने से डरते थे यह सब कुछ उसका सिला है।

दोज़ख़

दोज़ख़ और दोज़ख़ियों के हालात

उसके बाद दोज़ख़ के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खोल दिया जाएगा जिससे आग के शोले और धुआँ उठेगा, दोज़ख़ी चीख़ते चिल्लाते और फ़रयाद करते होंगे ताकि (इस हालत को देख कर) अहले जन्नत अपनी जन्नत और अपनी नशिस्तों पर बैठे हुए उन नेमतों को देखेंगे जो अल्लाह तआला ने उनको अता फ़रमाई हैं ताकि उनकी क़ाबिल रश्क हालत और कैफ़ व सुरूर में इज़ाफ़ा हो!

दोज़ख़ी अपने क़ैद ख़ानों और जेल ख़ानों से इस हाल में कि वह तौक़ों और बेड़ियों से कसे हुए हैं अपने हाथ से खोई हुई नेमतों को देख कर तास्सुफ़ करें, चूँकि उस वक़्त अहले जन्नत का रूख़ अल्लाह तआला की तरफ़ होगा इसलिये वह अहले जन्नत का वसीला लेकर अल्लाह तआला से फ़रयाद करेंगे और अहले जन्नत को उनके नामों से पुकारेंगे, अल्लाह तआला फ़रमाएगा:

अहले जन्नत बिला शुबहा आज के दिन चैन (मज़े) करते हैं वह और उनकी बीवियां गदेलों पर तकिया लगाए सायों में हैं, उनके लिये जन्नत में मेवे और हर वह शय है जिसकी वह ख़्वाहिश व तलब करें। रहम वाले रब की जानिब से उन पर सलामती है, मेहरबान रब का फ़रमाया हुआ आज पूरा होगा और कहा जाएगा कि ऐ मुजरिमो! आज छट जाओ, ऐ औलादे आदम क्या मैंने तुमसे अहद नहीं लिया था कि शैतान को न पूजना, बिला शुबहा वह तुम्हारा खुला दुशमन है और मेरी बन्दगी करना कि यही सीधी राह है।

इसके बाद आतिशे जहन्नम में जोश पैदा होगा, दोज़ख़ियों की जमाअत मुन्तशिर हो जाएगी उनकी फ़रयाद व वावैला बन्द हो जाएगा और उनको आग के जजीरों में फेंक दिया जाएगा जब यह दोज़ख़ी वहाँ पहुंचेंगे तो खजूर के मानिन्द डंक रखने वाले बिच्छू उन्हें दौड़ दौड़ कर डंक मारेंगे फिर आग का सैलाब उन पर चढ़ आएगा, यह ख़ुदा का अज़ाब होगा यह सैलाब उनको आग के समन्दर में ग़र्क़ कर देगा अल्लाह की तरफ़ से एक मुनादी पुकारेगा "यह वही दिन है जिसके झुटलाने के लिये मेरे मुक़ाबले में जंग करते रहे हो और मेरी ही नेमतों में मस्त हो कर मेरे ख़िलाफ़ सरकशी करते आए हो। तुम दारूल महन और उबूदियत के घर में (यानी दुनिया में) उस तकज़ीब पर ख़ुश होते थे, आज हम ने अपने फ़रमांबरदार बन्दों के लिये जो नेमतें फ़राहम की हैं तुम अपनी दुनियावी नेमतों को उनके मुशाबेह और मिस्ल क़रार देते थे, अब तुम्हारी लज़्ज़तें ख़त्म हो गईं, जिस चीज़ को तुमने दुनिया में पसन्द किया था उसका मज़ा चखो, अहले जन्नत बेशक तुमसे अलाग थलग हैं। वह वलीमों की दावतों, अनवा व अक़्साम के मेवों, तरो ताज़ा तहाएफ़, दोशीज़ा हूरों की क़ुर्बत से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे हैं, गदेलों पर बैठे हैं तरह तरह के नग़मात

सुनने में मश्गूल हैं, मेरा उन पर सलाम है, मैं उन पर मज़ीद लुत्फ व करम के साथ मुतवज्जेह हूँ। मेरी नेमतों का उन पर रोज़ ब रोज़ इज़ाफ़ा होता जाएगा ताकि वह मसरूर व शाद काम रहें। तो ऐ अहले जन्नत! तुम्हारा यह दिन मेरे दुशमनों के उस दिन का बदल है जिस दिन वह एक दूसरे को मुबारक बाद पेश करते थे और अपने (दुनियावी) बादशाह के हुज़ूर में नज़रें पेश करते थे। तुम यक़ीनन अपनी मंज़िले मक़सूद पर पहुंच गए।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि एक रोज़ एक शख़्स रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मुझे अच्छी आवाज़ से बहुत रग़बत है किया जन्नत में भी अच्छी आवाज़ें होंगी, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया ज़रूर होंगी, क़सम है उस पाक ज़ात की जिसके क़ब्ज़े मेरी जान है कि जन्नत में अल्लाह तआला दरख़्तों को हुक्म देगा कि मेरे उन बन्दों को गाना सुनाओ जो मेरी इबादत और मेरे ज़िक्र में (दुनिया में) मश्गूल रहे और चंग व रूबाब से दुनिया में बचते रहें, तो दरख़्त ऐसी आवाज़ से नग़मा सरा होंगे कि ऐसी आवाज़ मख़्लूक़ ने कभी नहीं सुनी होगी, दरख़्त अल्लाह तआला की तमजीद व तक़दीस में नग़मा सराई करेंगे।

हज़रत अबू क़ुलाबा से मरवी है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ कि या रसूलसल्लाह! क्या जन्नत में रात भी होगी? हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया तुम्हें इस सवाल की ज़रूरत क्यों महसूस हुई? उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैंने सुना है कि अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में इरशाद किया है!

जन्नत में अहले जन्नत को सुबह व शाम उनका रिज़्क़ मिलेगा।

मैंने यह ख़्याल किया कि सुबह व शाम के दर्मियान रात होगी, हुज़ूर ने इर्शाद फ़रमाया बहिश्त में रात नहीं है वहाँ तो रौशनी ही रौशनी है सुबह के बाद शाम और शाम के बाद सुबह होगी। अहले जन्नत जिन औक़ात में दुनिया में नमाज़ें पढ़ते थे उन औक़ात में जन्नत में अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको ताज़ा और उमदा तोहफ़े मिलेंगे और फ़रिश्तें उनको सलाम करेंगे। पस जो शख़्स चाहता है कि दवामी पुर कैफ़ ज़िन्दगी उसको हासिल हो उसे चाहिए कि तक़्वा के हुदूद की पाबन्दी करे और उन्हें महफ़ूज़ रखे, अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में परहेज़गारी की यह शर्तें बयान की हैं:

मशरिक़ व मग़रिब को मुंह कर लेना ही (बस) नेकी नहीं है, नेकी तो उनकी नेकी है जो अल्लाह पर, रोज़े आख़िरत पर, मलाइका पर, अल्लाह की किताबों पर और उसके नबियों पर ईमान रखतें हैं।माल की मोहब्बत होते हुए उसको यतिमो, मिसकीनों, मुसाफ़िरों, मांगने वालों को और गर्दनें छुड़ाने के लिये देते हैं। नमाज़ें अदा करते हैं, ज़कात देते हैं और जब कोई वादा कर लेते हैं तो उसके पूरा करते हैं, तकलीफ़ और दुख में और ख़ौफ़ के वक़्त सब्र करते हैं। यही लोग सच्चे हैं और यही लोग मुत्तक़ी और परहेज़गार हैं।

पस अहले तक़्वा पर लाज़िम है कि वह इस्लाम के अरकान और उनके शराएत को बजा लाए

रिवायत है कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ने आयते करीम "ऐ ईमान वालो! इस्लाम पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ" की तफ़सीर में फ़रमाया कि इस्लाम के आठ हिस्से हैं। (1) एक हिस्सा नमाज़

है (2) एक ज़कात है (3) एक रोज़ा (4) एक हज (5) एक उमरा (6) एक जिहाद (7) एक अम्र बिल मारूफ़ (8) और एक हिस्सा नही अनिल मुन्कर है। वह शख़्स बड़ा ही ना मुराद है जिस के पास इस्लाम का कोई हिस्सा न हो।

आसिम अहूल ने ब रिवायत हज़रत अनस बिन मालिक बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम की मिसाल ऐसी है जैसे ज़मीन जमा हुआ दरख़्त, अल्लाह का मानना उस दरख़्त की जड़ है, पांचों वक़्त की नमाज़ उसकी शाख़ें हैं, रोज़े उसकी छाल हैं और हज व उमरा उसके पके हुए फल (जो तोड़ने के क़ाबिल हैं) वजू और गुस्ले जनाबत उसकी सैराबी के लिये पानी है। माँ बाप की फ़रमांबरदारी और अक़रबा परवरी उसकी नाज़ूक टहनियाँ हैं, ममनूआते शरयी से ख़ुद को बाज़ रखना (रोके रखना) उसके पत्ते हैं और आमले सालिहा उसके फल और अल्लाह की याद उसके रेशे (सोतें) हैं, इसके बाद हुज़ूर ने फ़रमाया जिस तरह दरख़्त की ख़ूबसूरती और दुरूस्ती उसके सब्ज़ पत्तों के बग़ैर नहीं होती उसी तरह इस्लाम का हुस्ने तर्के मनाही और आमले हुसना की अदाएगी के बग़ैर नहीं पाया जाता।

दोज़ख़ और दोज़ख़ के अज़ाब

अल्लाह ने दोज़ख़ियों के लिये जो अज़ाब रखे हैं

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, जब क़यामत का दिन होगा और उस यक़ीनी दिन में सब मख़लूक़ एक मैदान में इकट्ठा होगी तो एक काला साएबान उन पर छा जाएगा उसकी सियाही की शिद्दत ऐसी होगी कि एक दूसरे को देख नहीं सकेगा, सब लोग अपने अपने पैरों पर खड़े होंगे, उनके और अल्लाह तआला के दर्मियान का फ़ासिला सत्तर साल की मुसाफ़त होगी लोग उसी हालत में होंगे कि अचानक अल्लाह तबारक तआला फ़रिश्तों पर तजल्ली फ़रमाएगा उस वक़्त अल्लाह के नूर से तमाम ज़मीन रौशन हो जाएगी तमाम तरीकी दूर हो जायेगी और नूर तमाम मख़लूक़ को इहाता कर लेगा फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह व तहमीद में अर्श के गिर्दा गिर्द तवाफ़ में मशग़ूल हो जायेंगे हुज़ूर ने फरमाया कि उस असना में तमाम मख़लूक़ सफ़ बस्ता खड़ी होगी हर उम्मत की एक मख़सूस जगह होगी उस वक़्त सहीफ़े और मीज़ान लाई जायेगी यह मीज़ान एक फ़रिश्ते के हाथ पर मुअल्लक़ होगी और वह कभी एक पलड़े में उठायेगा कभी झुका देगा आमाल नामे उसमें रखे जायेंगे उसी हालत में जन्नत का पर्दा उठाया जायेगा और फिर जन्नत क़रीब लाई जायेगी फिर भी उसका फ़ासला अहले ईमान से पांच सौ बरस की राह होगा, जन्नत से एक हवा चलेगी जिस की ख़ुशबू ईमान वाले मुश्क की तरह महसूस करेंगे फिर दोज़ख़ के ऊपर से पर्दा उठाया जायेगा दोज़ख़ की बदबूदार हवा उसके धुएं से आलूदा होगी मुजरिम उसकी बू को महसूस करेगे हालांकि उनके और दोज़ख़ के दर्मियान पांच सौ बरस की राह का फ़ासला होगा फिर दोज़ख़ को बड़े बड़े ज़ंजीरों से ख़ींच कर करीब लाया जायेगा उस पर उन्नीस फ़रिश्ते मुवक्किल होगें और हर मुवक्किल के मददगार सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे तमाम मुवक्किल और उनके मददगार फ़रिश्ते दोज़ख़ के दायें बायें और पीछे पीछे चलते हुए उसका घेरे में लिए हुए ख़ींच कर लायेंगे हर फ़रिश्ते के हाथ में लोहे का एक गुर्ज़ होगा जिसकी ... दोज़ख़ ... की आवाज़ ... की पहली और आख़िरी

आवाज़ की तरह इन्तेहाई करीह होंगी दोज़ख़ में मुसीबतें होंगी, तारीकी होगी, बदबूदार धुंआ होगा, शोर होगा, दोज़ख़ दोज़ख़ियों पर ग़ज़बनाक होगा और शिद्दते ग़ज़ब के बाइस उसके शोले उठेंगे, फ़रिश्ते दोज़ख़ को खींचते हुए जन्नत और महशर के दर्मियान नस्ब कर देंगे उस वक़्त दोज़ख़ आंख उठा कर सारी मख़लूक़ को देखेगा फिर उन पर हमला आवर होगा ताकि सब मोमिनों व दोज़ख़ियों को निगल ले मगर दारोगाए दोज़ख़ (मालिक) और उसके मुवक्किल उसको ज़ंजीरों से रोके रखेंगे। दोज़ख़ जब देखेगा कि उसको बांध लिया गया है तो उसमें सख़्त जोश आयेगा और ग़ज़ब की शिद्दत की वजह से क़रीब होगा कि वह फट जाये फिर वह दोबारा दहाड़ेगा तमाम मख़लूक़ उसके दांत पीसने की आवाज़ सुनेगी मख़लूक़ के दिल दहल जायेंगे और धड़क कर सीनों से निकलने लगेंगे। लोगों के होश उड़ जायेंगे, आंखें खुली की खुली रह जायेंगी, दिल सीनों से तड़प कर हल्क़ तक आ जायेंगे।

मनकूल है कि एक शख़्स ने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज किया कि या रसूलल्लाह हम को दोज़ख़ की हालात से आगाह फ़रमाइये आपने फ़रमाया दोज़ख़ ज़मीन से सत्तर गुना बड़ा है, काला है, तारीक है, उसके सात सर हैं, हर सर प[illegible]तीस दरवाज़े हैं, हर [illegible]वाज़े का तूल तीन रोज़ की राह के बराबर है उसका बालाई लब नथने से [illegible]गता है और ज़ेरीन ल[illegible] (इस क़दर लम्बा होगा कि वह उसे) घसीटता हुआ चलेगा उसके हर नथने में एक बड़ी ज़ंजीर और सख़्त बंदिश पड़ी होगी उस ज़ंजीर को सत्तर हज़ार फ़रिश्ते थामे होंगे [illegible] वह फ़रिश्ते भी बहुत तुन्द ख़ू और हैबतनाक होंगे, उनके दांत बाहर निकले हुए होंगे, आंखे [illegible] की तरह [illegible]हकती हुई होगी, आग के शोलों की तरह रंग होगा, नथनों से शोले निकलते होंगे और उनसे धुआं उठता होगा और यह सबके सब अल्लाह तआ[illegible] के हुक्म की [illegible]मील के लिए तैयार होंगे। उस वक़्त दोज़ख़ अल्लाह के हुज़ूर में सजदा करने की इजाज़त तलब करेगा जो [illegible] मिल जायेगी और दोज़ख़ उस वक़्त तक सजदा में रहेगा [illegible] तक अल्लाह तआला [illegible] मर्ज़ी [illegible] फिर अल्लाह तआला उसे सर उठाने का हुक्म देगा दोज़ख़ सर उठा कर कहेगा कि [illegible] अल्लाह तमाम तारीफ़ों का सज़ावार है जिसने मु[illegible] बनाया कि मेरे ज़रिये से वह अपने नाफ़रमानों से इन्तक़ाम लेता है और किसी दूसरी मख़लूक़ को ऐसा नहीं बनाया कि वह मुझसे इन्तक़ाम ले सके। फिर वह रवा और साफ़ शुस्ता ज़बान [illegible] हम्द ख़ुदा ही के लिए है वही उसके लायक़ है वह यह हम्द बा आवाज़े बलन्द बजा लायेगा फिर बड़े जोर से फ़रियाद करेगा उस वक़्त मुक़र्रब फ़रिश्ता, नबी, रसूल और मौक़िफ़ (महशर) में खड़े हुए अफ़राद में से कोई ऐसा बाक़ी न रहेगा वह ज़ानू के बल ख़ुदा के हुज़ूर में न गिर पड़े उसके बाद दोज़ख़ दोबारा फ़रियाद करेगा उस वक़्त हर फ़र्द की आंखों में आंसू छलक पड़ेंगे फिर वह तीसरी बार फ़रियाद करेगा उस वक्त अगर किसी जिन्न व इंसान के आमाल 72 पैग़म्बरो के बराबर भी होंगे तो वह यही ख़्याल करेगा कि मै दोज़ख़ में गिर पड़ूंगा फिर वह चौथी बार फ़रियाद करेगा उस वक़्त कोई फ़र्द ऐसा बाक़ी नहीं रहेगा जो ख़ामोश न हो जाये सिर्फ़ जिब्रील, मीकाईल और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्लाम अर्श को पकड़े होंगे और उनमें से हर एक मुनाजात में मशगूल होगा हर तरफ़ नफ़्सी नफ़्सी का आलम होगा। हर एक यही कहता होगा कि मैं अपने नफ़्स और जान के सिवा तुझसे कोई सवाल नहीं करता। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके बाद इरशाद फ़रमाया कि उसके बाद दोज़ख़ आसमान के सितारो के बराबर चिंगारियां फेकेगा। उसकी हर चिंगारी इतने बड़े बादल के बराबर होगी जो

मग़रिब से उमडता चला आता हो और यह चिंगारियां मख़लूक़ के सरों पर आकर गिरेंगी।

इसके बाद दोज़ख़ पर पुल सिरात नस्ब किया जायेगा, उसपर सात सौ गुज़रगाहें बनाई जायेंगी, हर गुज़रगाह के दर्मियान सत्तर साल की मुसाफ़त होगी। एक रिवायत में है कि उस पर सात गुज़रगाहें होंगी और पुल की चौड़ाई एक रास्ता से दूसरे रास्ता के माबैन पांच सौ साल की मुसाफ़त होगी। सातवां तबक़ा या रास्ता अपनी गर्मी और तपिश के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा गर्म होगा और उसकी गहराई भी दूसरे तबक़ों के मुक़ाबिल में बहुत ज़्यादा होगी यही तबक़ा अज़ाब में दूसरे तमाम तबक़ों से ज़्यादा शदीद, इन्तहाई, भयानक और हौलनाक होगा, उसकी चिंगारियां भी सत्तर गज़ लम्बी होंगी।

क़रीब तरीन दर्जे के शोले पुल सिरात से गुज़र कर इधर उधर जायेंगे और उनकी ऊंचाई तीन तीन मील होगी, दोज़ख़ का हर दर्जए हरारत की तेज़ी, अंगारों की लम्बाई और नूअ ब नूअ अज़ाब की कसरत के लिहाज़ से अपने बालाई तबक़े में सत्तर गुना ज़्यादा होगा हर तबक़े में समन्दर, दरिया, पहाड़ भी होंगे, पहाड़ की ऊंचाई सत्तर हज़ार साल की मुसाफ़त के बराबर होगी। दोज़ख़ के हर दर्जा में से सत्तर सत्तर पहाड़ होंगे [illegible] हर पहाड़ के सत्तर दुर्रे होंगे, हर दुर्रे में सत्तर हज़ार दरख़्त, थूहड़ (इन्दराइन) के होंगे, हर दरख़्त के सत्तर हज़ार शाख़ें होंगी, हर शाख़ पर सत्तर सत्तर सांप और बिच्छू होंगे, हर सांप की लम्बाई तीन मील की मुसाफ़त के बराबर की होगी। हर बिच्छू बड़े बड़े बुख़ती ऊंट के बराबर होगा। [illegible] दरख़्त में सत्तर हज़ार फल होंगे और हर फल देव के सर के बराबर का होगा हर फल के अन्दर सत्तर हज़ार कीड़े होंगे और हर कीड़ा तीर की मुसाफ़त के बक़द्र लम्बा होगा, [illegible] फलों में कीड़े नहीं होंगे बल्कि कांटे होंगे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके बाद फ़रमाया कि दोज़ख़ के सात दरवाज़े होंगे हर दरवाज़े की सत्तर वादियां होंगी हर वादी का अमक़ (गहराई) [illegible] साल के मुसाफ़त के बक़द्र होगी, हर वादी में सत्तर हज़ार दर्रे और हर दर्रे में सत्तर हज़ार [illegible] और [illegible] ग़ार की सत्तर हज़ार शाख़ें होंगी हर शाख़ सत्तर हज़ार साल की मुसाफ़त के बराबर होगी, हर शाख़ के अन्दर सत्तर हज़ार अज़दहे होंगे हर अज़दहे की बाछ में सत्तर हज़ार बिच्छू पोशीदा होंगे, हर बिच्छू के सत्तर हज़ार गुरिये होंगे हर गुरिये या मन[illegible] में मटका भर ज़हर भरा होगा जो काफ़िर या मुनाफ़िक़ उसमें पहुंचेगा उसको यह तमाम ज़हर पीना होगा।

हुजूर ने इरशाद फ़रमाया तमाम मख़लूक़ घुटनों के बल खड़ी होगी और जहन्नम उन पर बार बार इस तरह हमला करेगा जैसे मस्त ऊंट हमला करता है उस वक़्त एक मुनादी पुकारेगा और तमाम अंबिया, सिद्दीक़ीन, शोहदा और सालेहीन उठ खड़े होंगे उसके बाद तमाम मख़लूक़ की पेशी होगी और हर शख़्स अपने अपने मज़ालिम और आमाल के एवज़ कैफ़रे किरदार को पहुंचेगा उसके बाद दूसरी पेशी होगी और अरवाह व अजसाम में झगड़ा होगा (कि कौन पेश हो) बिलआख़िर अजसाम अरवाह पर ग़ालिब आयेंगे, उसके बाद तीसरी पेशी होगी उस वक़्त नामाए आमाल उड़ उड़ कर लोगों के हाथों में जाकर गिरेंगे कुछ लोग ऐसे होंगे जिनके दाहिने हाथ में नामाए आमाल होगा और कुछ के बायें हाथ में, कुछ लोगों का नामाए आमाल उनकी पुश्त पर होगा। जिनके नामाए आमाल दाहिने हाथ में होंगे (अस्हाबुल यमीन) उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से नूर अता होगा, उनकी इस इज़्ज़त अफ़ज़ाई पर फ़रिश्ते उनको मुबारकबाद देंगे और वह लोग अपने रब की रहमत के साथ पुल सिरात (बआसानी) उबूर कर जायेंगे और जन्नत में

दाख़िल हो जायेंगे। जन्नत के दरबान जन्नत के दरवाज़ा पर उनकी सवारियों और उनके हुल्ला हाय बहिश्ती के साथ उनसे मुलाक़ात करेंगे (उनको सवारियां और जिन्नती ख़िलअतें पेश करेंगे) यहां से सब जन्नती अलग अलग हो कर अपने अपने मख़सूस ऐवानों और ख़ुश ख़ुश अपने अपने महलों की तरफ़ जायेंगे, अपनी बीवियों (हूरों) के पास पहुंचेंगे और ऐसी नेमतें देखेंगे जिनके बयान से ज़बान क़ासिर होगी न उनकी आंखों ने इससे पहले यह नेमतें देखी होंगी और न दिल में उनका तसव्वुर आया होगा फिर यह मुक़र्ररा अन्दाज़ा के मुताबिक़ खायें और पियेंगे, ज़ेवर और ख़िलअतें पहनेंगे, बीवियों को गले लगायेंगे फिर अपने ख़ालिक़ की हम्द करेंगे जिसने उनके ग़म को दूर कर दिया। इज़्तेराब से अमन बख़्शी और उनके हिसाब को आसान फ़रमा दिया, यह अल्लाह का दी हुई नेमतों का शुक्र अदा करेंगे और कहेंगे कि तमाम हम्द अल्लाह ही को सज़ावार है जिसने इस राह की तरफ़ हमारी राहनुमाई फ़रमाई अगरचे हमारे अन्दर ऐसी ताक़त न थी अगर उसकी हिदायत शामिले हाल न होती तो हम राह से भटक गये होते।

उस वक़्त उनकी आंखें लाये हुए तोशा से ठंडी होंगी, वह दुनिया में यक़ीन व ईमान रखते थे तसदीक़ करते थे, अज़ाब से डरते थे, अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार थे और सवाब (आख़िरत) से उनको रग़बत थी उस वक़्त नजात पाने वालों को नजात मयस्सर आ जायेगी और काफ़िर तबाह हो जायेंगे।

जिन लोगों को उनके आमाल नामे बायें हाथ या पीठ के पीछे से दिए गये होंगे उनके हाथ सियाह होंगे उनकी आंखों की सफ़ेदी फिर जायेगी (आंखे बे नूर हो जायेंगी) उनकी नाक पर दाग़ लगा दिया जायेगा उनके बदन बड़े और बदन की खालें मोटी पड़ जायेंगी। जब वह अपने आमाल नामे को देखेंगे तो वावैला करेंगे और उन्हें मालूम होगा कि कोई छोटे से छोटा गुनाह भी बग़ैर दर्ज हुए नहीं बचा, वह लोग होंगे जिनके दिल खोटे होंगे और ख़्यालात बुरे, वह उस वक़्त ज़बरदस्त ख़ौफ़ व हरास में मुब्तला होंगे उनको सरों के बल औंधा कर दिया जायेगा, शर्म से उनकी आंखें झुकी होंगी और गर्दनें लटकी हुई होंगी, दोज़ख़ की तरफ़ देखने से उनकी आंखें पथरायेंगी और एक लहज़ा के लिए भी उस तरफ़ नज़र न उठा सकेंगे क्योंकि उनके सामने बड़ा भयानक मंज़र होगा। सख़्त दुश्वार, हर तरफ़ मुसीबत ही मुसीबत इज़्तराब आफ़रीं हालत और घबरा देने वाली दहशत, ग़म पैदा करने वाली, ज़लील बनाने वाली, दिलों को फ़िक्र में डालने वाली और आंखों को रूलाने वाली फ़िज़ा होगी।

उस वक़्त वह अपने रब की बन्दगी का इक़रार करेंगे और अपने गुनाहों का एतराफ़ भी मगर उस वक़्त उसका इक़रार व एतराफ़ उन पर आग, शर्म, ग़म, बंदबख़्ती, इलज़ाम और ग़ज़ब में और भी इज़ाफ़ा कर देगा। (बजाए फ़ायदे के और नुक़सान होगा)

यह रब के सामने दो ज़ानू बैठे गुनाहों का इक़रार करते होंगे, आंखें नीली होंगी कुछ दिखाई न देगा, दिल गढ़ों में गिर रहे होंगे, कुछ उनकी समझ में न आयेगा, उज़्व उज़्व कांप रहा होगा, कुछ बोल न सकेंगे बाहमी रिश्तादारियां कट चुकी होंगी न नसब बाक़ी होगा ना बिरादरी, कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा, सब अपनी अपनी मुसीबत में मुब्तला होंगे और उसका दूर करना उनसे मुमकिन न होगा दुनिया में लौट जाने की दरख़्वास्त करेंगे तो वह क़बूल न होगी, उस वक़्त उनको उस चीज़ का यकीन हो जायेगा जिसको वह दुनिया में तसलीम नहीं करते थे, वहां

उनको प्यास बुझाने को न पानी मिलेगा न पेट भरने को खाना, न तन ढाकने को कपड़ा। पस वह प्यासे, भूके, नंगे बे यार व मददगार, ग़मगीन, परेशान हाल फिरते होंगे, जान, माल, कमाई, बीवी, बच्चों, ग़र्ज़ कि हर तरफ़ से घाटे ही घाटे में होंगे उस हालत में अल्लाह तआ़ला दोज़ख के मुवक्किलों को हुक्म देगा कि अपने कारिन्दों को साथ ले कर जहन्नम से बाहर आयें और तमाम ज़ंजीरें और बेड़ियां, तौक़ और गुर्ज़ साथ लायें। चुनांचे सब उस सामान के साथ हाज़िर हो जायेंगे, जब लोग अज़ाब की उन चीज़ों को देखेंगे तो अपने हाथ और अपनी उंगलियां चबा डालेंगे, मौत को पुकारेंगे, आंसू बहायेंगे और उनके पांव लड़खड़ा जायेंगे और उस वक़्त वह हर भलाई और बेहतरी से नाउम्मीद हो जायेंगे (उनकी तमाम उम्मीदें मुनक़तअ़ हो जायेंगी) बारी तआ़ला का हुक्म होगा उनको पकड़ लो उनकी गरदनों में तौक़ डाल कर जहन्नम में ढकेल दो और वहां ज़ंजीरों में जकड़ दो, उसके बाद अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स को जहन्नम के जिस दर्जा में दाख़िल करना चाहेगा उस दर्जा के मुवक्किलों को बुला कर हुक्म देगा उसको गिरफ़्तार कर लो। चुनांचे एक एक आदमी की तरफ़ सत्तर सत्तर मुवक्किल बढ़ेंगे उसको खूब जकड़ कर बाधेंगे, भारी तौक़ गरदनों में और भारी ज़ंजीरें नथनों में डालेंगे जिससे दम घुटने लगेगा फिर पीठ की तरफ़ से उनको तौक़ों से मिला दिया जायेगा जिसके बाएस पीठ की हड्डियां टूट जायेंगी, इस तकलीफ़ से आंखें फट जायेंगी, रगें फूल जायेंगी, गरदनों का गोश्त तौक़ की गर्मी से जल जायेगा, रगों से ख़ाल उतर जायेगी, सरों के अन्दर भेजे पिघल जायेंगे, अन्दर से बह कर बाहर आ जायेंगे बहते हुए पैरों तक पहुंच जायेंगे। बदन की खाल उधड़ कर गिर पड़ेगी, गोश्त नीले पड़ जायेंगे और ख़ून उससे बहने लगेगा, उनकी गरदनें मोंढों से कानों तक बहुत से तौक़ों से भरी होंगी सारा गोश्त जल जायेगा होंठ कट जायेंगे दांत और ज़बानें बाहर निकल आयेंगी वह वावैला करेंगे, चीखेंगे, तौक़ों से शोले निकलेंगे उनकी गर्मी रगों में इस तरह दौड़ेगी जिस तरह ख़ून दौड़ता है उनके तौक़ खोखले होंगे उनके अन्दर तपिश गर्दिश करती होगी, उन तौक़ों की गर्मी दिलों तक पहुंचेगी और दिलों की ख़ाल को उधेड़ देगी, दिल छिल कर हल्क़ तक आ जायेंगे, दम बहुत ज़्यादा घुटेगा यहां तक की आवाज़ें निकलना बन्द हो जायेंगी, इसी असना में अल्लाह तआ़ला जहन्नम के मुवक्किलों को हुक्म देगा कि उनको (जहन्नम का) लिबास पहनाओ, मुवक्किल उनको कपड़े पहनायेंगे उनको इन्तहाई काले बदबूदार खुरदरे जहन्नम की गर्मी से दहकते हुए कुर्ते पहनाये जायेंगे, वह इस क़दर दहकते होंगे कि अगर पहाड़ पर उनको रख दिया जाये तो वह भी पिघल जायें। फिर अल्लाह तआ़ला हुक्म देगा कि इनको उनके ठिकाने पर ले जाओ उस वक़्त उनको ले जाने के लिए दोज़ख़ से और ज़ंजीरें आयेंगी जो पहली ज़ंजीरों मुक़ाबला में बहुत ज़्यादा भारी औ बड़ी होंगी, फ़रिश्ते उन ज़ंजीरों को पकड़ेंगे और उनसे हर एक (नाफ़रमान) उम्मत को अलग अलग बाधेंगे फिर फ़रिश्ता ज़ंजीरों के सिरों को अपने कांधों पर रख कर पीठ फेरकर मुंह के बल खींचता हुआ ले चलेगा, पीछे से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हर गरोह को पीछे से गुर्ज़ों से मारते हुए हंकायेंगे, जब जहन्नम पर पहुंच जायेंगे तो यह मुवक्किल कहेंगे यह वह आग है जिसको तुम नहीं मानते थे क्या यह कोई जादू है क्या तुमको दिखाई नहीं देता, अब तो तुम को इसमें दाख़िल होना है तुम सब्र करो या न करो दोनों बराबर हैं, तुम्हारे आमाल की तुम को सज़ा दी जाए उस वक़्त जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जायेंगे ताकि वह उस आग में दाख़िल हो जायें, दरवाज़ों के पर्दे उठा दिए जायेंगे उस वक़्त आतिशे दोज़ख़ जोश मारेगी और

लपटें भड़कने लगेंगी, धुंआ बलन्द होगा, शरारे बलन्द होंगे, हर एक शरारा सत्तर साल में तय होने वाली मुसाफ़त के बक़द्र बलन्द होगा यह शरारे बलन्द हो कर फिर पलटेंगे और इन दोज़ख़ियों के सरों पर गिरेंगे, इनके बाल जलकर भसम हो जायेंगे और खोपड़ियां टूट जायेंगी उस वक़्त दोज़ख़ बड़े ज़ोर से चिल्लायेगा और कहेगा! ऐ दोज़ख़ वालो! मेरी तरफ़ जल्दी आओ क़सम है मेरे रब की कि मैं तुमसे ज़रूर बदला लूंगा। फिर दोज़ख़ कहेगा कि तमाम हम्द उसी को सज़ावार है जिसने अपने ग़ज़ब के बाएस मुझे ग़ज़बनाक बनाया और अपने दुश्मनों से मेरी आग के ज़रिया इन्तेक़ाम लेता है, ऐ परवरदिगार! मेरी गर्मी में और मेरी कुव्वत में और इज़ाफ़ा फ़रमा दे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसके बाद कुछ फ़रिश्ते जहन्नम से बाहर आयेंगे, हर फ़रिश्ता, हर उम्मत को अपनी हथेली पर उठा कर औन्धा जहन्नम में फेंक देगा यह लोग सरनिगूं हालत में सत्तर साल की मुसाफ़त तक लुढकते हुए चले जायेंगे आख़िरकार यह जहन्नम के पहाड़ों की चोटियों पर पहुंचेंगे तो वहां भी उनको आराम मयस्सर नहीं आयेगा हर जहन्नमी की सत्तर खालें तह ब तह हो जायेंगी, पहाड़ों की चोटियों पर पहुंचने के बाद सबसे पहले उनको थूहड़ (ज़क़ूम) खाने को मिलेगा जिसकी गर्मी उसके (ऊपर) पोसत से नमूदार होगी वह बहुत ज़्यादा कड़वा और कांटों दार होगा, दोज़ख़ी ज़क़ूम चबा रहे होंगे कि यक बारगी गुर्ज़ बरदार मुवक्किल उनको गुरज़ों से मारना शुरू कर देंगे गुर्ज़ की ज़रबात से उनकी हड्डियां रेज़ा रेज़ा हो जायेंगी। फिर उन को पावं से पकड़ कर घसीट घसीट कर दोज़ख़ में फेक देंगे, फिर सत्तर साल के रास्ता के बराबर फ़ासला तक दोज़ख़ की गहराई में लुढ़कते चले जायेंगे और आख़िरकार फिर उन पहाड़ों के दर्रों में जा पहुंचेंगे, इस असना में 70 मरतबा इनका पोस्त बदला जाएगा और वहां भी उनकी ग़िज़ा ज़क़ूम (थोहड़) ही मिलेगी लेकिन उनकी यह ख़ुराक उनके मुंह ही में रहेगी (हल्क़ से नीचे उतारने की इनमें ताक़त नहीं होगी) उनका मुंह और उनका दिल दोनों उनके गले में फंस जायेंगे जिससे उनका दम घुटने लगेगा उस वक़्त वह शोर व वावैला करेंगे आर पानी मांगेंगे उन घाटियों में कुछ नदियां और नहरें होंगी, यह जहन्नमी पानी के लिए उन नहरों के तरफ़ बढ़ेंगे और उनके किनारों पर पहुंच कर औन्धे गिर पड़ेंगे ताकि किसी सूरत से पानी पी लें, उस वक़्त उनके मुंह की खालें अलग हो कर नहरों में गिर पड़ेंगी और वह पानी न पी सकेंगे, वह मायूस होकर नहरों से पलटना चाहेंगे कि दोज़ख़ के फ़रिश्ते फिर आ मौजूद होंगे दोज़ख़ के फ़रिश्ते उन्हें आते ही मारना शुरू कर देंगे, मार मार कर उनकी हड्डियां चूर चूर कर देंगे फिर उनको पांव से पकड़ कर घसीट लेंगे आर बाहर लाकर फिर दोज़ख़ में फेंक देंगे फिर यह लोग औंधे मुंह चालीस साल की राह तक आग के शोलों और उनके सख़्त धुएं में फंसे हुए अज़ाब भुगतते रहेंगे जहन्नम की वादियों में उतरने से पहले हर जहन्नमी की सत्तर बार खाल बदली जायेगी।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरशाद फ़रमाया कि दोज़ख़ की यह नदियां वादियों में जाकर ख़त्म होंगी, यह लोग उन नदियों का पानी पियेंगे मगर वह इतना गर्म होगा कि पेट में नहीं ठहरेगा (उनके पेट की खाल जल जायेगी) उस वक़्त अल्लाह तआला उनको सात नई खालें अता फ़रमायेगा तब कहीं कुछ पानी उनके पेट में ठहरेगा लेकिन पेट में पहुंच कर आंतों को टुकड़े टुकड़े कर देगा और यह कटी हुई आंतें मक़अद की राह से निकल जायेंगी पानी का कुछ बाक़ी हिस्सा रगों में फैल जायेगा जिससे उनका गोश्त पिघल जायेगा और हड्डियां चटख़

जायेंगी, अब फिर उनको फ़रिश्ते जा पकड़ेंगे उनकी पीठ, मुंह और सरों पर गुर्ज़ मारेंगे हर गुर्ज़ की 260 धारें होंगी गुर्ज़ की ज़रबात से उनकी पुश्तें टूट जायेंगी उसके बाद फिर उन्हें खींचकर फिर औन्धे मुंह में दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा जब यह दोज़ख़ के बीचों बीच पहुंचेंगे तो उनकी खालों में आग भड़क उठेगी, कानों में पहुंचेगी, नाक के नथनों और शोले निकलने लगेंगे और सारे बदन से कचलियो (खूनाबा) बहने लगेगा आंखें निकल कर रुख़्सारों पर लटक जायेंगी उस वक़्त उनको उन शैतानों के साथ जिन्होंने उनको बहकाया था और उन (झूठे) माबूदों के साथ जिनसे यह मुसीबत के वक़्त मदद मांगा करते थे मिला कर बांध दिया जायेगा और तंग जगहों पर उनको डाल दिया जायेगा उस वक़्त वह (तंग आकर) मौत को पुकारेंगे मगर मौत नहीं आयेगी फिर उनके दुनयवी माल को आग में तपा कर उनकी पेशानियों और पहलुओं पर दाग़ लगाये जायेंगे और उन की पीठों पर वह गर्म गर्म सोना और चांदी रखवाया जायेगा जो उनकी पीठ फाड़ कर बाहर निकल आयेगा, यह लोग जहन्नम के मुस्तहिक़ होंगे और अपने शैतानों और पत्थरों (माबूदों) के साथ बंधे पड़े होंगे उस वक़्त गुनाहों के बाएस उनके बदन पहाड़ों की तरह कर दिए जायेंगे ताकि अज़ाब की शिद्दत और ज़्यादा हो जाये एक एक पहाड़ की लम्बाई एक महीने की मुसाफ़त के बक़द्र और चौड़ाई तीन रातों की मुसाफ़त के बक़द्र होगी। हर एक पहाड़ का सिरा क़रअ (शाम की सरहद के क़रीब एक पहाड़ का नाम) के बराबर होगा, 32 दांत रखने वाले दोज़ख़ी के दांत बाज़ उसके सर से बाज़ उसकी ठोड़ी से निकल आयेंगे, नाक एक बड़े टीले जैसे हो जायेगी, बालों की लम्बाई और उनकी सख़्ती सनोबर के दरख़्त की तरह होगी, बाल अपनी कसरत और ज़्यादती में दुनिया के घने जंगलो ऐसे जायेंगे, ऊपर का होंट खींचा हुआ होगा और नीचे का होंट नब्बे हाथ का हो जायेगा, हाथ दस शबाना रोज़ मुसाफ़त के बराबर और उनकी मोटाई एक दिन रात की मुसाबत के बराब होगी, दोज़ख़ी की रान दुरकान (यह भी एक पहाड़ नाम है) की तरह और ख़ाल की मोटाई चालीस हाथ होगी, पिंडली का तूल पांच रात की मुसाफ़त के बराबर होगा और मोटाई एक दिन की मुसाबत के बराबर होगी। हर आंख कोहे हिरा की तरह बन जायेगी जब उनके सर पर तारकोल डाला जायेगा तो आग भड़क उठेगी और उसकी शोला बारी बढती ही चली जायेगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है कि अगर आदमी इस हैयत कदाई में दोज़ख़ से बाहर आ जाये कि उसके दोनों हाथ गरदन से बंधे हों, गरदन में बहुत से तौक़ पड़े हों और पांव में बेड़ियां और ज़ंजीरें खड़खड़ाता बाहर निकल आये और लोग उसको इस हालत में देख लें तो (डर कर) भाग खड़े हों और जहां तक उनसे भागा जाये वह भागते चले जायें।

हुजूर ने फ़रमाया कि दोज़ख़ की गर्मी, तारीकी, गूनागूं अज़ाबों और ठिकानों की तंगी की वजह से दोज़ख़ियों के गोश्त नीले पड़ जायेंगे हड्डियां टूट जायेंगी, दिमाग़ खौलने लगेगा, भेजा पिघल पिघल कर बाहर निकल कर जिस्म पर बहता होगा, जहां से गुज़रेगा उस जगह को (अपनी हिद्दत और तपिश से) जला देगा। जोड़ जोड़ पारा पारा हो जायेंगे उनसे कचलहु बहने लगेगा इन टूटे हुए जोड़ो में कीड़े पड़ जायेंगे उनमें एक एक कीड़ा गोरख़र के बराबर होगा, गोहों और शाहीन की तरह उनके नुकीले नाख़ून होंगे यह नाख़ून खाल और गोश्त के अन्दर पेवस्त हो जायेंगे इधर उधर दौड़ेंगे, यह कीड़े काटेंगे सहमे हुए यह जंगली जानवरों की तरह इधर उधर

जायेंगे, दोज़ख़ियों का गोश्त खायेंगे, उनका ख़ून पियेंगे, गोश्त और ख़ून के सिवा उनकी कोई गिज़ा नहीं होगी।

फिर फ़रिश्ते दोज़ख़ियों को पकड़ कर अंगारों पर नेज़ो के भालों जैसे नुकीले पत्थरों पर बड़ी कुव्वत और सख़्ती के साथ घसीटेंगे और इसी तरह घसीटते हुए जहन्नम के समन्दर तक जो यहां से सत्तर मील के मुसाफ़त पर होगा ले जायेंगे उस असना में उनका जोड़ खुल जायेगा और पारा पारा हो जायेगा उनको रोज़ाना सत्तर हज़ार नई खालें (अज़ाब सहने के लिए) दी जायेंगी, बहरे जहन्नम पर पहुंचकर उनको जहन्नम के मुवक्किलों के सुपुर्द कर दिया जायेगा वह उन दोज़ख़ियों की टांगे पकड़ कर जहन्नम के समन्दर में फेंक देगे जहन्नम के समन्दर की गहराई अल्लाह तआला के सिवा किसी को मालूम नहीं।

बाज़ रिवायात में आया है कि तौरैत में मरकूम है कि बहरे जहन्नम के मुक़ाबले में दुनिया का समन्दर ऐसा ही है जैसे इस दुनियावीं समन्दर के मुकाबले में एक छोटा चश्मा। बहरे जहन्नम में फेंके जाने के बाद जब वह अज़ाब उठायेंगे और अज़ाब का मज़ा चखेंगे तो एक दूसरे से कहेगा कि पहले हमको जो कुछ अज़ाब दिया गया था वह तो इस अज़ाब के मुक़ाबिल में महज़ एक ख़्वाब था (कुछ भी नहीं था)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक बार उस जहन्नम के समन्दर में ग़र्क़ होने के बाद समन्दर उन्हें उछाल कर सत्तर हाथ दूर फेंक देगा हर हाथ का फ़ासला आधा गज़ का नहीं होगा बल्कि इतना होगा जितना मशरिक से मग़रिब तक है, फिर फ़रिश्ते उन दोज़ख़ियों को गुर्ज़ों से मारेंगे, इसके बाद उन्हें सत्तर साल की मुद्दत में तय होने वाली गहराई में ग़र्क़ कर दिया जायेगा उनका खाना पीना उसी दरिया से होगा फिर वह एक सौ चालीस साल के मुसाफ़त के बक़द्र ऊपर उभरेंगे और उनमें से हर एक चाहेगा ज़रा दम ले ले, मगर फ़ौरन ही फ़रिश्ते गुर्ज़ मारने के लिए आ जायेंगे यह अज़ाब उस अज़ाब के अलावा होगा जो उन पर जारी है, जब वह दम लेने को सर ऊपर उठायेंगे तो सत्तर हज़ार गुर्ज़ उनके सरों पर पड़ेंगे और फिर उनको सत्तर हाथ की गहराई में गोता दे दिया जायेगा। जब तक अल्लाह तआला को मन्ज़ूर होगा वह उसी हाल में रहेंगे यहां तक कि उनका गोश्त और हड्डियां सब गल सड़ जायेंगी, सिर्फ़ जान बाक़ी रह जायेगी उस वक़्त एक मौज उठ कर उनको सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़द्र दूरी पर ले जाकर किसी साहिल की तरफ़ उनको उछाल देगी उस साहिल में सत्तर हज़ार ग़ार होंगे और हर ग़ार की सत्तर हज़ार शाख़े होंगी और हर शाख़ का तूल सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़द्र होगा। हर शाख़ में सत्तर हज़ार अज़दहे होंगे और हर अज़दहे की लम्बाई सत्तर गज़ होगी उसके सत्तर दांत होंगे और हर दांत मे एक मटका ज़हर भरा होगा उन ग़ारों में आने के बाद उनकी रूहों को नई खालें और नये बदन दिए जायेंगे लोहे के तौक़ पहनाये जायेंगे सांप और बिच्छू उन तौक़ो से लिपट जायेंगे, हर दोज़ख़ी पर अज़ाब के लिए सत्तर हज़ार सांप और सत्तर हज़ार बिच्छू मुक़र्रर किये जायेंगे पहले तो यह सांप उनके घुटनों तक ऊपर चढ़ेंगे दोज़ख़ी उस अज़ीयत को बरदाश्त करेंगे फिर यह सीनों तक आ जायेंगे उस पर भी यह सब्र करेंगे फिर हंसुली तक चढ़ आयेंगे उस पर भी यह सब्र करेंगे यहां तक कि यह ऊपर चढ़ कर उनके नथनों, लबों ज़बानों और कानों को पकड़ कर लटक जायेंगे, इसी तरह बिच्छू अमल करेंगे बिच्छू और सांप अपना काम तमाम ज़हर उनको पिलायेंगे उस वक़्त जहन्नम की तरफ़ भागेंगे और उसमें गिर

वड़ने के सिवा कोई चारएकार न होगा, कोई उस वक़्त उनकी मदद को नहीं आयेगा, सांप उनका गोश्त चबायेंगे, ख़ून चूसेंगे और बिच्छू उनको डसेंगे, उस वक़्त उनका सारा गोश्त गल गल कर गिर पड़ेगा और हर जोड़ अलग हो जायेगा जब यह उस अज़ीयत से बचने के लिए भाग कर दोज़ख़ में जा गिरेंगे तो सत्तर बरस तक उन सांपों और बिच्छुओं के ज़हर की वजह से आग का उन पर असर नहीं होगा। फिर आग में जलने के बाद उनको नई खालें दी जायेंगी। उस वक़्त वह खाना मांगेंगे, फ़रिश्ते खाना ले कर आयेंगे जो वलीमा से मौसूम होगा यह खाना लोहे से ज़्यादा सख़्त होगा वह उसे चबा न सकेंगे और उगल देंगे और भूक की शिद्दत में अपनी उंगुलियों और हाथों को चबा डालेंगे वह अपनी हथेलियों को खा जायेंगे उसके बाद कलाईयां फिर कोहनियां और उसके बाद मोंढें खा जायेंगे सिर्फ़ शाने बाक़ी रह जायेंगे इससे आगे उनका मुंह नहीं पहुंचेगा इसलिए वह मज़ीद न खा सकेंगे फिर लोहे के आंकड़ों में उनकी कूंचे (एड़ियों के ऊपर का हिस्सा) फंसा कर थुहड़ के दरख़्तों में उलटा दिया जायेगा ज़क़ूम की हर शाख़ में अगरचे यह दोज़ख़ी सत्तर सत्तर साल लटके होंगे लेकिन उनके बोझ से शाख़ नीचे को नहीं झुकेगी, नीचे से उनको जहन्नम की लपटें पहुंचेगी [illegible] सत्तर बरस तक यह अज़ाब उन पर होता रहेगा यहां तक कि उनके जिस्म पिघल जायेंगे और [illegible]ाने बाक़ी रह जायेंगी फिर अज सरे नौ उनके जिस्म और खालें पैदा की जायेंगी उस वक़्त हाथ के पोरों के बल [illegible]नको लटकाया जायेगा उनके सुरीनों से आग उनके जिस्मों के अन्दर दाख़िल [illegible] और उनके दिलों को खाती हुई उनके नथनों और कानों से निकल जायेगी, इस अज़ाब की मुद्दत सत्तर साल होगी जब इस मरतबा में हड्डियां और गो[illegible] पिघल जायेंगे और सिर्फ़ जाने बाक़ी रह जायेंगी तो फिर अज़ सरे नौ बदन और [illegible]लें पैदा की जायेंगी। इस[illegible]ार उनकी आंखों में आंकड़े डाल कर उनको लटकाया जायेगा और बरा[illegible]र अज़ाब होता रहेगा ग़र्ज़ कि कोई [illegible] उज़्व और सर का कोई बाल ऐसा नहीं रहेगा जहां आंकड़ा डाल कर थुहड़ [illegible] दरख़्त से [illegible] साल [illegible] न लटकाया जाये। पस वह हर उज़्व और हर [illegible] से मौत का मज़ा चखेंगे लेकिन उनको मौत नहीं आयेगी इन अज़ाबों के बाद उन पर तरह तरह [illegible] अज़ाब होंगे जब फ़रिश्ते इन दोज़ख़ियों को यह तमाम अज़ाब दे चुकेंगे और उनको छोड़ देंगे तो हर [illegible]न्नमी हर दोज़ख़ी को ज़ंजीर में बांध कर मुंह के बल घसीटते हुए दोज़ख़ में उनके ठि[illegible] पर ले जायेंगे। हर दोज़ख़ी का ठिकाना उसके आमाल के मुताबिक़ होगा किसी के ठिकाने का तूल एक महीने मुसाफ़त का बक़द्र होगा और वहां आग दहकती होगी और सिवाए उस शख़्स के कोई दूसरा वहां नहीं होगा, किसी की फ़ुरूदगाह का तूल 19 दिन की मुसाफ़ते राह के बक़द्र होगा और फिर यह ठिकाने तंग और छोटे होना शुरू होंगे और बाज़ ठिकानों का तूल सिर्फ़ एक दिन की मुसाफ़त के बक़द्र रह जायेगा इन ठिकानों के वुसअत और तंगी के तनासुब से ही मकीनों पर अज़ाब किया जायेगा, किसी को उलटा लटका कर अज़ाब दिया जायेगा और किसी को चित लिटाकर, किसी को बिठाकर किसी को घुटनों के बल झुकाकर, किसी को खड़ा करके अज़ाब दिया जायेगा। यह तमाम मक़ामात अज़ाब पाने वालों के लिए नेज़े की नोक से भी ज़्यादा तंग होंगे, आग किसी के टख़नों तक होगी और किसी के घुटनों तक, किसी की रानों तक पहुंचेगी, किसी की नाफ़ तक और किसी के हल्क़ तक, कोई आग में गोता खाता होगा और कोई उसमें ग़र्क़ होगा कोई आग में (गिरदाब की तरह) चक्कर खायेगा यह आग उन[illegible] की मुसाफ़त के बक़द्र गहराई तक पहुंचा देगी फिर जब वह अपने अपने

ठिकानों पर पहुंच जायेंगे तो हर एक को उसके साथी के साथ मिला दिया जायेगा। यह वहां इतना रोयेंगे कि उनके आंसू सूख जायेंगे उस वक़्त वह ख़ून के आंसू रोयेंगे उनके आंसू इस क़दर होंगे कि अगर जमा हो जायें तो उनमें कश्ती रानी हो सकती है।

दोज़ख़ की तह में दोज़ख़ियों को जमा होने का एक दिन होगा और उस दिन के बाद फिर वह कभी एक जगह जमा नहीं हो सकेंगे। ख़ुदा के हुक्म से मुनादी दोज़ख़ की तह में निदा देगा। उस मुनादी की आवाज़ दूर नज़दीक दोज़ख़ के बालाई हिस्से और ज़ेरीं हिस्से वाले सब ही सुन लेंगे। उस मुनादी का नाम हश्र होगा। हश्र पुकारेगा ऐ दोज़ख़ियो! जमा हो जाओ! सब के सब जहन्नम के बुनियादी हिस्से में जमा हो जायेंगे उनके अज़ाब के फ़रिश्ते साथ होंगे यह सब दोज़ख़ी आपस में मशवरा करेंगे दुनिया में जिन लोगो को कमज़ोर और हक़ीर समझा जाता था वह बड़े लोगों से कहेंगे हम दुनिया में तुम्हारे मुतीअ और फ़रमांबरदार बने रहे क्या आज तुम हम को ख़ुदा के अज़ाब से बचा सकोगे? दुनिया के यह बड़े (मग़रुर मुतकब्बिर) लोग कहेंगे कि हम सब दोज़ख़ में पड़े हैं, अल्लाह अपने बन्दों का फ़ैसला कर चुका है।(फिर तुम हमसे क्या मदद तलब करते हो) अल्लाह तुम को समझे तुम हमसे फ़रयाद कर रहे हो, यह कमज़ोर लोग जवाब देंगे ख़ुदा करे तुम कभी ख़ुशी का मुंह न देखो। तुम ही तो यह अज़ाब हम पर लाये हो (तुम्हारी बदौलत यह अज़ाब हम पर नाज़िल हुआ है।) फिर यह लोग ख़ुदावन्दे आलम से अर्ज़ करेंगे! ऐ हमारे रब जिनकी बदौलत हमें इस अज़ाब का सामना करना पड़ा है उन पर अपना अज़ाब दोगूना कर दे। (बद्दुआ सुनकर) यह मुनकिर और मग़रूर लोग कहेंगे कि अगर अल्लाह हम को हिदायत देता तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करते, ग़रीब और कमज़ोर लोग जबाब देंगे कि तुम झूट कहते हो तुम रात दिन मक्र व फ़रेब में मुबतला रहे कि हम अल्लाह की ना फ़रमानी करे और उसका शरीक बनाये आज हम तुम से और उन झूटे माबूदों से जिनकी परस्तिश की तुम हमको दावत देते थे बेज़ार हैं।

इसके बाद सब दोज़ख़ी अपने साथ के शैतानों की तरफ़ तवज्जोह करेंगे और कहेंगे तुम्हारे गुमराह होने से हम भी गुमराही के गढ़े में गिर पड़े। सबसे आख़िर में शैतान मलऊन बलन्द आवाज़ से कहेगा! ऐ दोज़ख़ियो! बेशक अल्लाह तआला ने तुम से सच्चा वादा किया था उसने तुम को दावते हक़ दी थी मगर तुम ने उसको क़बूल नहीं किया और उसके वादे को सच न जाना और उसकी तसदीक़ नहीं की और मैंने तुमसे जो वादा किया था आज उसके ख़िलाफ़ किया। मेरा तुम पर कोई ज़ोर तो था नहीं सिर्फ़ इतनी बात थी कि मैंने तुम को (बातिल की दावत दी) तुम ने वह दावत क़बूल कर ली अब मुझे तुम बुरा न कहो बल्कि ख़ुद अपने आप को मलामत करो अब तो मैं न तुम्हारी फ़रयादरसी कर सकता हूं और न अपनी मदद पर क़ादिर हूं। अल्लाह के सिवा जिनकी तुम परस्तिश करते थे मैं आज उनका इनकार करता हूं। उसके बाद मुनादी ऐलान करेगा ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत, उस वक़्त कमज़ोर मुतकब्बिरों पर और मुतकब्बिर व मग़रूर उन कमज़ोर लोगों पर लानत भेजेंगे, यह सब अपने साथ वाले वाले शैतानों पर और उनके साथी शैतान उन सब पर लानत भेजेंगे और अपने साथी शैतानों से कहेंगे काश ! हमारे और तुम्हारे दर्मियान फ़ासला, मशरिक़ व मग़रिब के फ़ासला के बराबर हो जाये तुम आज भी बुरे साथी हो और कल दुनिया में भी बुरे साथी थे।

बाद अज़ीं लोग अपने अपने जमाअत और गरोह पर नज़र डालेंगे और एक दूसरे से कहेंगे

आओ! इन मुवक्किलों से कहें कि यह अल्लाह से हमारी सिफ़ारिश करे ताकि एक दिन का अज़ाब ही अल्लाह तआला हल्का कर दे, अपने मुवक्किलों से गुफ़्तगू करने में उनको सत्तर साल लग जायेंगे और उस तमाम मुद्दत में वह अज़ाब में मुबतला रहेंगे। आख़िरकार मुवक्किलों से यह बात कहेंगे वह उनको जवाब देंगे कि क्या अल्लाह के अहकाम लेकर तुम्हारे पास नहीं आये थे, सब कहेंगे बेशक आये थे। उस वक़्त मुवक्किल कहेंगे बस तो अब तुम यूंही फ़रयाद करते रहो मगर काफ़िरों की पुकार अब बेकार है। जब मुवक्किलों के जवाब से वह मायूस हो जायेंगे और उनको अच्छा जवाब नहीं मिला तो वह मालिक (दारोगए जहन्नम) से फ़रयाद करेंगे और कहेगे कि ऐ मालिक तुम ही हमारे लिए अल्लाह तआला से दुआ करो कि वह हमको मौत दे दे। मालिक अव्वल तो बक़द्रे मुद्दते दुनिया उनकी बात का जवाब नहीं देंगे, कोई बात ही नहीं करेंगे, फिर जवाब देंगे भी तो कहेंगे, मौत के फ़ैसले से पहले मुद्दतों तक तुम को यहां रहना होगा। जब वह मालिक के जवाब से भी मायूस हो जायेंगे तो उस वक़्त अपने रब से फ़रयाद करेंगे और कहेंगे इलाही! तू अब हम को अब यहां से निकाल दे अगर हम दोबारा हम तेरी नाफ़रमानी करे तो बेशक हम ज़ालिम होंगे। अल्लाह तआला उनकी इस फ़रयाद का बक़द्रे ज़माना 70 साल जवाब नहीं देगा फिर जिस तरह कुत्तों को धुतकारते हैं उसी तरह (धुधकारते हुए) जवाब देगा कि जहन्नम में ज़िल्लत के साथ पड़े रहो, मुझसे फ़रयाद न करो। जब वह देखेंगे कि उनका रब भी रहम नहीं फ़रमाता और कोई उम्मीद अफ़ज़ा जवाब नहीं दिया गया तो एक दूसरे से (मायूसी के साथ) कहेंगे कि अब हम इस अज़ाब पर सब्र करे या न करे दोनों बातें बराबर हैं अब तो रिहाई तो नसीब नहीं होगी, इस वक़्त न हमारा कोई सिफ़ारिशी है और न कोई दिलसोज़ी करने वाला दोस्त है अगर एक बार हम दुनिया में लौट जायें तो ज़रूर ईमान वालों में शामिल हो जायें।

बाद अज़ीं फ़रिश्ते उनको लौटा कर उनके ठिकानों पर ले जायेंगे उस वक़्त उनके क़दम डगमगाते होगे उनकी तमाम हुज्जतें नाकारा बन चुकी होंगी, अल्लाह का अज़ाब देख चुके होंगे और उसकी रहमत की उम्मीद मुनक़तअ हो चुकी होगी सख़्त इज़्तिराब का आलम होगा, रूसवाई और एक अज़ीम ज़िल्लत उन पर मुसल्लत होगी वह अपनी उस कोताही पर जो उनसे दुनिया में सरज़द हुई बहुत कुछ फ़रयाद व फुग़ां करेंगे और आमाल के उन बोझों पर हसरत व अफ़सोस करेंगे जो अपनी गरदनों पर दुनिया से लाद कर लाये थे उनकी गरदनों पर न सिर्फ़ उनके बोझें होंगे बल्कि उनकी गरदनों पर उनकी पैरवी करने वालों के बोझें होंगे। उनका अज़ाब उनकी ज़मीन के ज़र्रों और उनके दरियाओं के क़तरे से भी ज़ाएद होंगे उनके इर्द गिर्द अज़ाब देने वाले सफ्फ़ाक व तर्रार फ़रिश्ते होंगे जो अज़ाब देने में कोई रू रियायत नहीं करेंगे उनका हुक्म बहुत सख़्त और बात अटल होगी उन अज़ाब देने वाले फ़रिश्तों के जिस्म बड़े बड़े बिजली की तरह कूंदते चेहरे अंगारों सी दहकती आंखें और शोला आतिशें की तरह सुर्ख़ भभूका रंगत, दांत बाहर निकले हुए, बैल की सींगो की तरह (लम्बे लम्बे) नाख़ून, हाथों में आग के भारी भारी लम्बे लम्बे गुर्ज़ लिए हुए ऐसे कि अगर उनको पहाड़ों पर मारें तो वह भी रेज़ा रेज़ा हो जायें (ऐसी डरावनी सूरत) और ऐसे गुर्ज़ों से वह अल्लाह के नाफ़रमानों को मारेंगे उन ज़र्बात से अगर सर शके चश्म के बजाए ख़ून के आंसू बहें तो कुछ तअज्जुब नहीं। वह अगर उन फ़रिश्तों को पुकारेंगे तो उनका जवाब नहीं देंगे वह गिरया व ज़ारी करेंगे और उनको रहम नहीं आयेगा ठंडे पानी के लिए चीख़ेंगे तो उसके बजाए पिघले हुए ताबे की तरह उनको खौलता हुआ पानी मिलेगा जो उनके दहनों को

झुलस डालेगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि दोज़ख़ियों पर रोज़ाना एक ऐसा बादल छायेगा जिसकी बिजली के कौंधने से उन की बीनाई जाती रहेगी और उसकी कड़क उनकी कमर तोड़ देगी उन पर ऐसी गहरी तारीकी मुसल्लत हो जायेगी कि वह अज़ाब के फ़रिश्तों को भी नहीं देख सकेंगे फिर बादल उनसे मुख़ातिब होगा कि ऐ जहन्नम वालो! क्या तुम चाहते हो कि मैं पानी बरसाऊं? सब मिलकर कहेंगे कि हां हम पर ठंडा पानी बरसा दे! बादल उन पानी के बजाए इस तरह पत्थर बरसायेगा कि उनकी खोपड़ियां चकनाचूर हो जायेंगी। उसके बाद बादल उनपर खौलता हुआ पानी, शोले, लोहे, कांटे और मेख़े बरसायेगा। फिर सांप बिच्छू दूसरे हशरातुल अर्ज़ और ज़ख़्मों का धोवन बरसायेगा, बादल के छाने पर दोज़ख के दरिया इतना जोश मारेंगे कि उनकी लहरें उबल पड़ेंगी यह लहरें बड़ी ग़ज़बनाक होगी उस वक़्त कोई जगह ऐसी बाक़ी नहीं होगी जहां दरिया का पानी न चढ़ आया हो। उस सैलाब (बला) में तमाम दोज़ख़ी ग़र्क़ हो जायेंगे मगर उनको ख़ौफ़ नहीं आयेगा। नाफ़रमानों पर जो उसके अन्दर होंगे, जहन्नम का जोश और उसका दर्जा हरारत, उसकी हैबतनाक आवाज़, शोले, धुआं, तारीकी, गर्म लपटें, गर्म पानी, भड़कती और दहकती आग, परवरदिगार के ग़ज़ब के बाइस और भी ज़्यादा तेज़ हो जायेगी। हम सब दोज़ख़ से दोज़ख़ में जाने वाले कामों से दोज़ख़ियों की हमराही से अल्लाह की पनाह तलब करते हैं (आमीन)

इलाहल आलमीन! तू हमारा भी मालिक है और दोज़ख़ का भी, इलाही हमको दोज़ख़ की हौज़ में न उतारना, हमारी गरदनों में उसकी तौक़ न डालना, हमको उसका लिबास न पहनाना, हमको उसका थूहड़ न खिलाना, उसका गर्म पानी हम को न पिलाना, उसके मुवक्किलों को हम पर मुक़र्रर न फ़रमाना, उसकी आग का हमको निवाला न बनाना, अपनी रहमत से पुल सिरात से हम को गुज़ारना, हमको उसके शोले और शरारों से दूर रखना, अपनी रहमत से उसके धुएं से उस सख़्ती और उसके अज़ाब से बचा लेना आमीन। या रब्बुल आलमीन।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर जहन्नम का सबसे छोटा दरवाज़ा मग़रिब की तरफ़ से खोल दिया जाये तो उसकी हिद्दत व हरारत से मशरिक़ के पहाड़ इस तरह पिघल जाये जिस तरह तांबा पिघलता है अगर उसकी एक चिंगारी उड़ कर मग़रिब में जाकर गिरे और आदमी मशरिक़ में हो तो उसका दिमाग़ खौलने लगे यहां तक कि मग्ज़ जिस्म पर बहने लगे।

दोज़ख़ियों पर सबसे कम दर्जे का अज़ाब यह होगा कि उनको आग के जूते पहनाये जायेंगे जिस की आग नथनों और कानों के सुराख़ो से निकल कर बहने लगेगी, उनके दिमाग़ खौलने लगेंगे उनके क़रीब जो लोग होंगे वह उसकी तपिश से एक पत्थर से तड़प कर दूसरे पत्थर पर गिरेंगे तमाम दोज़ख़ियों को उनके आमाल के मुताबिक़ अज़ाब दिया जायेगा हम उनके आमाल और उनके मक़ामे आख़िरीं से अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

गुनाहों के साथ मख़्तस अज़ाब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो लोग अपनी शर्मगाहों को फ़ेअले हराम से महफ़ूज़ नहीं रखते (ज़िना से मुरतकिब होते हैं) उनका अज़ाब यह होगा कि उनकी

शर्मगाहों को आंकड़ों मे फंसा कर दुनिया की मुद्दत के बक़द्र दोज़ख़ में लटका दिया जायेगा यहां तक कि उनके जिस्म पिघल जायेंगे सिर्फ़ उनकी जानें बाक़ी रह जायेंगी फिर उनको उतार लिया जायेगा और अज़ सरे नौ जिस्म और खालें दी जायेंगी फिर उनको उसी अज़ाब में मुब्तला कर दिया जायेगा और बक़द्र मुद्दते दुनिया सत्तर हज़ार फ़रिश्ते कोड़े मारेंगे यहां तक कि उनके बदन गल जायेंगे और सिर्फ़ जानें रह जायेंगी।

चोर का अज़ाब

जो चोरी के गुनाह का मुरतकिब है उसका अज़ाब यह है कि उसका बन्द बन्द काटा जायेगा फिर अज़ सरे नौ जिस्म दिया जायेगा सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके बन्द काटने के लिए छुरियां हाथ में लिए उसकी तरफ़ बढ़ेंगे।

झूठी गवाही देने पर अज़ाब

झूठी गवाही देने वालों पर अज़ाब की कैफ़ियत यह होगी कि उनकी ज़बानों में आंकड़े डालकर उनको उलटा लटका दिया जायेगा फिर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उनपर कोड़े बरसायेंगे यहां तक कि उनके जिस्म पिघल जायेंगे सिर्फ़ रूहें बाक़ी रह जायेंगी।

मुशरिक पर गुनाह

वह लोग जो शिर्क में मुब्तला रहे हैं उनको जहन्नम के ग़ारों में डाल दिया जायेगा फिर ग़ारों के दहाने बन्द कर दिए जायेंगे, उन ग़ारों में सांप और बिच्छू कसरत से होंगे, आग के शोले और उसका धुआं होगा और हर दोज़ख़ी को हर घड़ी सत्तर हज़ार बार जिस्म तबदील किया जायेगा।

ज़ालिम और जाबिर और मुतकब्बिरों का अज़ाब

ज़ालिम, सरकशों और मुतकब्बिरों जैसे फ़िरऔन, हामान वग़ैरह पर इस तरह से अज़ाब होगा कि उनको आग के सन्दूकों में डाल कर मुक़फ़्फ़ल कर दिया जायेगा। फिर उन सन्दूक़ों को जहन्नम के सबसे ज़ेरीं हिस्सा में रख दिया जायेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐसे हर दोज़ख़ी को एक लम्हा में 99 क़िस्म का अज़ाब दिया जायेगा और दिन में हज़ार मरतबा उनकी खालें तबदील की जायेंगी।

ख़यानत करने वालों का अज़ाब

जो लोग ख़यानत करते हैं उनको उन चीज़ों के साथ लाया जायेगा जिनमें उन्होंने ख़यानत की होगी, फिर उनको जहन्नम के दरिया में उन चीज़ों के साथ डाल दिया जायेगा फिर उनसे कहा जायेगा कि दरिया में ग़ोता लगाओ और उन चीज़ों को निकालो जिनमें तुमने ख़यानत की थी वह दरिया की तह तक जायेंगे। सिर्फ़ अल्लाह तआला को उसकी गहराई का इल्म है और किसी को नहीं, वह उस दरिया में ग़ोता लगायेंगे और जब सांस लेने के लिए सर उठायेंगे तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते लोहे के गुर्ज़ से उन्हें मारेंगे यह अज़ाब उन पर हमेशा होता रहेगा।

रावी का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि अल्लाह तआला ने फ़ैसला कर दिया है कि अहले दोज़ख़ जहन्नम में क़रनों (अहक़ाब) तक रहेंगे, मुझे उन क़रनों (अहक़ाब) की तादाद नहीं मालूम हां आख़िरत का क़र्न (हक़ब) अस्सी हज़ार बरस

का, एक बरस तीन सौ साठ दिन का और दिन हज़ार बरस का होगा, पस अहले दोज़ख़ की हलाकत ही हलाकत है। उनके चेहरों की हलाकत यह है कि वह आफ़ताब की गर्मी और हिद्दत को तो बर्दाश्त नहीं कर सकते मगर दोज़ख़ की आग में उनको जलना पड़ेगा। उन सरों की हलाकत है जो सर का दर्द तो बर्दाश्त नहीं कर सकते थे मगर दोज़ख़ में उन पर खौलता पानी डाला जायेगा और हलाकत है उन आंखों की जो आशोबे चश्म को बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं मगर दोज़ख़ में उनसे आग के शोले निकलेंगे और हलाकत है उन नथनों की जो बदबू को सूंघना गवारा नहीं करते थे मगर वहां आग उनको खायेगी। उन कानों की हलाकत है जो ख़ुशगवार आवाज़ें सुनना पसन्द करते थे मगर जहन्नम में उनसे शोले निकलेंगे, हलाकत है उन गरदनों को जो दर्द व अलम तो बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं मगर उस वक़्त उनमें तौक़ डाले जायेंगे, हलाकत है उन खालों की जो मोटा लिबास पहनना बर्दाश्त नहीं करती थीं मगर जहन्नम में उनको आग के खुरदरे बदबूदार और सख़्त कपड़े पहनाये जायेंगे, हलाकत है उन पेटों की जो ज़रा सी तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं कर सकते थे मगर दोज़ख़ में ज़कूम (थूहड़) के खौलते पानी से उनको भरना पड़ेगा जिससे अंतड़ियां भी कट जायेंगी, उन पैरों की हलाकत है जो बरहना पांव बर्दाश्त नहीं कर सकते थे मगर उन्हें आग की जूतियां पहनाई जायेंगी, पस अहले दोज़ख़ के लिए हलाकत ही हलाकत और अज़ाब ही अज़ाब है जिसमें वह मुब्तला होंगे। इलाही अपने हिल्मे अज़ीम और फ़ज़्ले अमीम की बरकत से दोज़ख़ी न बनाना। (आमीन सुम्मा आमीन)

दोज़ख़ के पुल उबूर करने के बाद

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहो अन्हो से मरवी है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि जहन्नम के सात पुल हैं और हर दो पुलों के दर्मियान सत्तर साल का फ़ासला है, हर पुल की चौड़ाई तलवार की धार बराबर है, लोगों का पहला गरोह पलक झपकने की तेज़ी की तरह उस पुल पर से गुज़र जायेगा, दूसरा गरोह बिजली के कूंदने की तरह, तीसरा गरोह तेज़ हवा के झोंके की मानिन्द, चौथ गरोह परिन्दे की परवाज़, पांचवा गरोह दौड़ते हुए घोड़ों की तरह, छठा तेज़ रफ़्तारों की मानिन्द उस पुल से गुज़र जायेगा, सातवां गरोह पयादा पा लोगों की तरह उससे गुज़रेगा, पुल से गुज़रने वालों में जब आख़िरी आदमी रह जायेगा तो उसको हुक्म दिया जायेगा कि गुज़र, वह अपने दोनों पांव जैसे ही पुल पर रखेगा उसका पांव फिसल जायेगा तो वह घुटनों के बल चलने की कोशिश करेगा आग फ़ौरन उसके बालों और खाल पर असर अंदाज़ होगी। वह पेट के बल चलने की कोशिश करेगा और घिसटता हुआ चलेगा जब पांव भी सहारा नहीं देगा तो एक हाथ पकड़ कर चलेगा और दूसरा हाथ उसका लटकता रहेगा। दोज़ख़ की आग उस पर अज़ाब करती रहेगी वह खुद यह गुमान करेगा कि अब मैं अज़ाब से बच नहीं सकता मगर पेट के बल सरकते सरकते वह पुल को पार कर लेगा, पुल पार करने के बाद वह पुल की तरफ़ देखेगा और कहेगा कि कैसी बरकत वाली है वह ज़ात जिसने अपने अज़ाब से नजात बख़्शी, मुझे यक़ीन नहीं आता कि मेरे रब ने अगलों या पिछलों में से किसी पर ऐसी रहमत व बख़्शिश फ़रमायी हो जैसी उसने मुझ पर फ़रमाई।

हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि एक फ़रिश्ता आयेगा और उसका हाथ पकड़ कर उस हौज़

के पास ले जायेगा जो जन्नत के दरवाज़े के सामने है आर कहेगा कि इसमें गुस्ल कर लो और इसका पानी पी लो वह गुस्ल करेगा और पानी पियेगा। उससे बहिश्त वालों की खुशबू आयेगी और उसका रंग निखर जायेगा फिर वही फ़रिश्ता उसे जहन्नम के दरवाज़े पर लाकर खड़ा कर देगा और कहेगा उस वक़्त तक यहां खड़े रहो जब तक अल्लाह तआला की इजाज़त तुम्हारे बारे में न आ जाये उस वक़्त वह दोज़ख़ियों की तरफ़ देखेगा दोज़ख़ी कुत्तों की तरह भौंकते होंगे उस वक़्त वह शख़्स रो रो कर अर्ज़ करेगा, इलाही! मेरा मुंह उन दोज़ख़ियों की तरफ़ से फेर दे (ताकि मैं उन्हें न देख सकूं) ऐ मेरे रब! इसके सिवा मैं तुझ से कुछ और तलब नहीं करूंगा वही फ़रिश्ता रब्बुल आलमीन की बारगाह से आयेगा और उसका मुंह जहन्नम की आग की तरफ़ से फेर देगा उस वक़्त वह बन्दा जहां खड़ा होगा वहां से जन्नत सिर्फ़ एक क़दम के फ़ासला पर होगी, वह जन्नत के दरवाज़े और उसकी वुसअत की तरफ़ देखेगा, दरवाज़े के दोनों दरवाज़ों के माबैन फ़ासला तेज़ उड़ने वाले परिन्दे की चालीस साल की मुसाफ़त के बक़द्र होगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया वह बन्दा अपने रब से अर्ज़ करेगा ऐ मेरे रब! यक़ीनन तूने मुझ पर एहसानाते अज़ीम फ़रमाये हैं, तुने मुझे आग से नजात दी, मुंह फेर कर जन्नत की रूख़ पर कर दिया। अब मेरे और जन्नत के दर्मियान सिर्फ़ एक क़दम का फ़ासला है। ऐ परवरदिगार! तेरे जलाल व इज़्ज़त की क़सम मैं तुझसे अर्ज़ करता हूं कि तू मुझे जन्नत के दरवाज़े में दाख़िल कर दे मैं तुझसे और कुछ तलब नहीं करुंगा सिवाए इसके कि जन्नत के दरवाज़े को मेरे और अहले दोज़ख़ के दर्मियान हायल फ़रमा दे ताकि मैं उनकी आवाज़ भी न सुन सकूं और न उन्हें देखूं, फिर वही फ़रिश्ता रब्बुल आलमीन की बारगाह से आयेगा और कहेगा कि ऐ इब्ने आदम! तू किस क़द्र झूठा है? क्या तूने सवाल न करने का वादा नहीं किया था? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा कहेगा और क़सम खायेगा कि इज़्ज़ते रब की क़सम मैं कुछ और नहीं मांगूंगा, उस वक़्त फ़रिश्ता उसका हाथ पकड़ कर जन्नत के दरवाज़े में दाख़िल कर देगा और खुद बारगाहे इलाही मे वापस चला जायेगा वह शख़्स उस वक़्त अपने दायें बायें और सामने [illegible] साला मुसाफ़त के बक़द्र जन्नत को देखेगा तो उसे सिवाए दरख़्तों और फलों के कुछ नज़र नहीं आयेगा। जन्नत क़रीब तरीन दरख़्त का उसके मक़ाम से फ़ासला एक परतीर होगा वह उस पेड़ को देखेगा तो उसकी जड़ सोने की, शाख़ें चांदी की, और पत्ते उन हसीन कपड़ों की तरह नज़र आयेंगे जिन्हें इंसान ने देखा है, उसके फल मक्खन से ज़्यादा नर्म शहद से ज़्यादा शीरीं और मुश्क से ज़्यादा खुशबूदार हैं। बन्दा यह देख कर हैरान रह जायेगा और फिर अर्ज़ करेगा! इलाही तूने मुझे जहन्नम से नजात दी और जन्नत के दरवाज़े में दाख़िल कर दिया, तूने मुझ पर बड़े एहसानात किये हैं लेकिन मेरे और इस दरख़्त के दर्मियान सिर्फ़ एक क़दम का फ़ासला है इसको भी दूर फ़रमा दे। इसके सिवा मैं तुझसे और कोई सवाल नहीं करूंगा फिर वही फ़रिश्ता आयेगा और कहेगा तू भी बड़ा झूठा है। तूने तो मज़ीद सवाल न करने का वादा किया था। फिर यह मज़ीद इस्तदा क्यों कर रहा है, तेरी क़सम कहां गई तुझे शर्म नहीं आती, आख़िरकार उसका हाथ पकड़ कर जन्नत के अन्दर क़रीब तरीन महल तक ले जायेगा, यकायक उसे एक साल की मुसाफ़त के बक़द्र दूरी पर मोती का एक महल दिखाई देगा उस महल को अपने सामने और अपनी क़याम गाह को अपने अक़ब में देखकर उसे ऐसा मालूम होगा कि पिछली जगह बिल्कुल हेच थी उस वक़्त वह बेसाख़्ता अर्ज़ करेगा, इलाही! मैं यह मकान तुझसे

मांगता हूं उसके बाद किसी चीज़ की दरख़्वासत नहीं करूंगा, फ़ौरन एक फ़रिश्ता आयेगा व कहेगा ऐ इंसान! क्या तूने अपने रब की क़सम इससे पहले नहीं खाई थी? तू किस कदर काज़ि है ख़ैर जा तुझे वह महल दे दिया। जब यह बन्दा उस महल में पहुंचेगा तो उसके मुक़ाबिल क समा और मंज़र देखकर यह मकान और महल तो बे वक़अत मालूम होगा, महल देखकर बेक़ा हो जायेगा और अर्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैं तुझसे इस महल का ख़्वास्तगार हूं इसके बाद को और सवाल नहीं करूंगा फ़रिश्ता फिर आकर कहेगा कि ऐ इब्ने आदम क्या तूने क़सम नहीं खा थी? आख़िर तू कितना दोग़ गो है? फ़रिश्ता उसे उस महल में दाख़िल कर देगा तो वह ख़ुश हो कर इधर उधर देखेगा तो उसे ख़्वाब जैसा मालूम होगा और बन्दा फिर मुक़ाबिल के महल के लिए इस्तदा करेगा फिर फ़रिश्ता आयेगा और उसको उसका वादा और क़सम याद दिलायेग लेकिन इस बार मलामत नहीं करेगा क्योंकि वह महसूस करेगा कि जन्नत के अज़ाएब व ग़राइब इंसान के लिए हैरान कुन हैं जिन्हें देख कर इंसान क़ाबू में नहीं रह सकता फिर उसे एक और महल नज़र आयेगा जिसे देख कर मौजूदा महल भी उसे ख़्वाब व ख़्याल मालूम होगा मबहूत हो कर रह जायेगा और फिर उसमें दरख़्वास्त की स[illegible] न रहेगी। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया फिर वही फ़रिश्ता आयेगा और उससे कहेगा अपने रब से मांगते क्यों नहीं? बन्दा जवाब देगा कि तुम पर ख़ुदा की रहमत हो मैंने रब्बुल इ[illegible] की क़सम इतनी बार खाई है कि अब उससे डरता हूं मुझे उससे हया आती [illegible] वक़्त अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ मेरे बन्दे! क्या तू इसपर राज़ी है कि अज़ल से अबद [illegible] कुल दुनिया में जो कुछ है उससे दस गुना तुझे देदूं? बन्दा अर्ज़ करेगा परवरदिगार क्या तू मुझसे इस्तिहज़ा फ़रमा रहा है तू तो रब्बुल आलमीन है, अल्लाह तआला फ़रमायेगा मैं ऐसा कर सकता हूं तू जो मांगना चाहता है मांग, उस वक़्त बन्दा अर्ज़ करेगा कि मुझे आदमियों [illegible] से मिला दे, फ़ौरन एक फ़रिश्ता उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में पयादा पहले जायेगा [illegible] वक़्त वह ऐसी चीज़ देखेगा जो उससे पहले उसने कभी नहीं देखी होगी। बन्दा सजदे में गिर पड़ेगा और कहेगा बिला शुबहा मेरे रब जल्ला व उला ने मुझे [illegible] जलवा से नवाज़ा (मुझे अपना जलवा दिखाया) फ़रिश्ता कहेगा सर उठा कर देख यह तेरा घर है, यह तेरी मंज़िल है और सबसे कम दर्जा की मंज़िल है।

बन्दे के हज़ार महल

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा कहेगा कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अगर मेरी नज़र की हिफ़ाज़त न फ़रमाता तो यक़ीनन इस क़स्र के नूर से ख़ीरा हो कर मेरी बीनाई जाती रहती, फिर वह अपने महल में रहने लगेगा, तब उससे एक दूसरा बन्दा मुलाक़ात करेगा उस मुलाक़ाती के चेहरे और लिबास को देख कर वह ख़्याल करेगा कि शायद वह फ़रिश्ता है, आने वाला क़रीब आकर कहेगा अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू आपके आने का अब वक़्त आया, वह सलाम का जवाब देने के बाद दरयाफ़्त करेगा कि बन्दए ख़ुदा तुम कौन हो? वह जवाब देगा मैं आप का मुहाफ़िज़ हूं और मेरी तरह आपके एक हज़ार मुहाफ़िज़ और हैं और हर एक के ज़िम्मे आपके एक महल की निगरानी है, आपके हज़ार महल हैं और हर महल में हज़ार ख़ादिम और एक हूर आपके लिए मख़सूस है। यह शख़्स महल में दाख़िल होगा तो देखेगा कि मोती के सत्तर कमरे हैं, हर कमरे में सत्तर दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े

में मोती का एक कुब्बा है, वह उन कुब्बों को खोलेगा जिसे आज तक किसी मख़लूक़ ने नहीं खोला होगा दर्मियानी कुबा में उसको सुर्ख़ मोती (याकूत) का एक गुंबद नज़र आयेगा जिसका तूल सत्तर गज़ होगा और उसके सत्तर दरवाज़े होंगे और कोई मोती आपस में हमरंग नहीं होगा। हर लोलवी गुंबद में हूरे ऐन मौजूद होंगी, उनकी जलवा गाहें आरास्ता व पैरास्ता होगी, तख़्त बिछे होंगे क़स्र के अन्दर दाख़िल होगा तो एक हूर मिलेगी वह उसको सलाम करेगी यह शख़्स सलाम का जवाब देकर मुतहय्यर खड़ा रह जायेगा। हूर कहेगी आपको मेरी मुलाक़ात के लिए अब वक़्त मिला मैं आपकी बीवी हूं यह शख़्स हूर के मुंह को देखेगा उस वक़्त उसके चेहरे में (आईना की तरह) उसको अपना अक्स नज़र आयेगा हूर सत्तर जोड़े पहने होगी, हर जोड़े का अलग अलग रंग होगा, हूर का जिस्म इस क़दर शफ़्फ़ाफ़ होगा कि लिबास के बाहर से उसकी पिंडली की हड्डी का गूदा तक नज़र आयेगा जब यह बन्दा उसकी तरफ़ से ज़रा देर को भी ग़ाफ़िल हो कर दोबारा उसके जमाल को देखेगा तो उसको हूर का जिस्म पहले से सत्तर गुना ज़्यादा हसीन नज़र आयेगा, हूर उसके लिए आईना होगी और वह हूर के लिए।

जन्नत के महल की कैफ़ियत

हर महल के तीन सौ साठ दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर तीन सौ साठ मोती, याक़ूत और दीगर जवाहिर के कुब्बे होंगे और हर कुब्बे का रंग एक दूसरे से मुख़तलिफ़ होगा जब वह महल से सर निकाल कर झांकेगा तो बक़द्र मुसाफ़ते ज़मीन उसको अपनी मिल्कियत नज़र आयेगी और जब वह उसकी सैर करेगा तो सौ बरस तक अपनी ही मिल्कियत (सरज़मीन) में चलता रहेगा मगर उसकी हद ख़त्म नहीं होगी। हर दरवाज़े पर फ़रिश्ते मौजूद होंगे यह अल्लाह तआला की तरफ़ से सलाम और तोहफ़े लायेंगे, हर फ़रिश्ते के पास ऐसा हदिया होगा जो दूसरे के पास नहीं होगा यह फ़रिश्ते अपने हदियों और तोहफ़ों के साथ रोज़ाना दिन चढ़े उस बन्दे को सलाम करने आयेंगे, अल्लाह की किताब (कुरान शरीफ़) में उसकी तसदीक़ इस तरह मौजूद है।

हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनसे सलाम अलैकुम कहते हुए आयेंगे यह बदला है उसका जो तुमने सब्र किया तो आख़िरत का घर, (जन्नत) कितना अच्छा है।

मज़ीद इरशाद फ़रमाया और जन्नत में उनके लिए सुबह व शाम रिज़्क़ है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि यह बन्दा जो सबसे आख़िर में दाख़िल हुआ था अहले जन्नत उसे मिस्कीन के नाम से पुकारेंगे। उसकी वजह यह है कि दूसरों के मरतबे उससे कहीं ज़्यादा अफ़ज़ूं होंगे उस मिस्कीन के खाने के लिए सिर्फ़ 80 हज़ार ख़ादिम मुक़र्रर होंगे जब वह खाने की ख़्वाहिश करेगा तो उसके सामने खाना ऐसे ख़्वानों में पेश होगा जो ज़र्द और सुर्ख़ याक़ूत के मरस्सा होंगे उन ख़्वानों के पाये मरवारीद के होंगे हर पाये की लम्बाई बीस मील होगी उन ख़्वानों में सत्तर क़िस्म के लज़ीज़ और रंगा रंग खाने होंगे। प्यालों में मुख़तलिफ़ क़िस्म के शरबत होंगे खाने का मज़ा शुरू से आख़िर तक यकसां क़ायम रहेगा, अगरचे बाज़ खाने एक दूसरे मिलते जुलते होंगे लेकिन उनका रंग व रूप एक दूसरे से अलग होगा हर ख़ादिम को उसका हिस्सा खाने से ज़रूर दिया जायेगा लेकिन जब यह बन्दा खा चुकेगा तब उसके पस ख़ुरदा से दिया जाएगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते थे कि ऊंचे दर्जे वाले उस मिस्कीन

जन्नती की ज़्यारत करेंगे (बलन्दी से उसको देखेंगे) लेकिन यह उन लोगों को नहीं देख सकेगा। ऊंचे दर्जे वाले हर जन्नती की ख़िदमत में आठ लाख ख़िदमतगार होंगे हर ख़ादिम के हाथ में एक ख़्वान होगा जिसमें खाना होगा और जो खाना एक ख़्वान में होगा वह दूसरे में नहीं होगा। जन्नती हर क़िस्म के खाने में से कुछ न कुछ ज़रूर खायेगा, जब यह खाने से फ़ारिग़ होगा तो हर ख़ादिम को उस पस खुर्दा खाने और शरबत से हिस्सा मिलेगा, हर जन्नती को बहत्तर हूरें और दो इंसानी बीवीयां अता होंगी हर बीवी का महल याक़ूते सब्ज़ का होगा जो सुर्ख़ याक़ूत से मरस्सा होगा हर क़स्र के सत्तर हज़ार दरवाज़े (किवाड़) होंगे, हर किवाड़ पर मोती का एक क़ुब्बा होगा हर बीवी सत्तर हज़ार जोड़े पहने होगी हर जोड़े के सत्तर हज़ार रंग होंगे और कोई जोड़ा एक दूसरे के मानिन्द मुशाबेह न होगा। हर बीवी की ख़िदमत में एक हज़ार लौंडियां होंगी और सत्तर हज़ार ख़्वातीन सहेलियां होंगी, हर लौंडी के हाथ में खाने से भरा हुआ ख़्वान और शरबत से पुर प्याला होगा और एक ख़्वान का खाना और प्याला का शरबत दूसरे ख़्वान के खाने और शरबत से मुशाबेह नहीं होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि जब वह बन्दा ख़्वाहिश करेगा कि अपने उस भाई से मुलाक़ात करे जिससे दुनिया में अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के वास्ते मोहब्बत करता था वह कहेगा कि काश मुझे अपने भाई का हाल मालूम होता कि वह किस हाल में है उसको ख़तरा होगा कि कहीं वह तबाह न हो गया हो अल्लाह तआला उसके दिल के इस ख़तरे से वाक़िफ होगा वह फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि मेरे बन्दे को उसके भाई के पास पहुंचा दो, इस हुक्म के बाद फ़रिश्ता उसके पास एक अदद ऊंटनी लेकर आयेगा जिस पर पालान के बजाए नूर के गद्दे (नमदे) पड़े होंगे, जन्नती उसको सलाम करेगा फ़रिश्ता सलाम का जवाब देने के बाद कहेगा कि उठो सवार हो और अपने भाई के पास मुलाक़ात के लिए चलो जन्नती ऊंटनी पर सवार हो कर बहिश्त का वह रास्ता जो हज़ार बरस में तय हो सकता था इतनी जल्दी तय कर लेगा जितनी देर में तुम ऊंटनी पर सवार हो कर तेज़ रफ़्तारी से एक क़दम का रास्ता तय करते हो यह राह तय करके अपने भाई के घर पहुंच जायेगा और उसको सलाम करेगा वह सलाम का जवाब देगा और उसे ख़ुश आमदीद कहेगा वह दरयाफ़्त करेगा कि ऐ भाई तुम कहां थे? मुझे तो तुम्हारे बारे में अंदेशा लाहक़ हो गया था, दोनों मुआनक़ा करेंगे और कहेंगे उस ख़ुदा का शुक्र व एहसान है जिसने हमको मिलाया फिर दोनों अल्लाह तआला की हम्द ऐसी ख़ुश अलहानी से करेंगे कि किसी ने ऐसी आवाज़ कभी नहीं सुनी होगी।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि उस वक़्त अल्लाह तआला उन दोनों से फ़रमायेगा कि ऐ मेरे बन्दो! यह वक़्त इबादत और बन्दगी का नहीं है बल्कि हमसे तहाएफ़ मांगने का वक़्त है लिहाज़ा तुम दोनों की जो ख़्वाहिश हो हमसे तलब करो वह दोनों अर्ज़ करेंगे कि इलाही! हम दोनों को इस दर्जा (नज़लत) में यकजा कर दे, अल्लाह तआला उन दोनों को एक ख़ेमा में यकजा कर देगा (दोनों को एक साथ रहने का हुक्म फ़रमा देगा) उस ख़ेमा के चारों तरफ़ मोती और याक़ूत होंगे उनकी बीवीयों के लिए अलग मक़ाम होंगे फिर वह दोनों एक साथ खाये पियेंगे और हर तरह का लुत्फ़ उठायेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नती जब कोई लुक़्मा अपने मुंह मे रखेगा और उसके दिल में किसी दूसरे खाने की ख़्वाहिश होगी तो अल्लाह

तआला उसी लुक्मा को उसके मुंह मे उसी मरगूब व मतलूब खाने में तबदील फ़रमा देगा।

जन्नत की ज़मीन

रसूले खुदा सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह जन्नत की ज़मीन कैसी होगी? हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया उसकी ज़मीन सफ़ेद व नर्म चांदी की और उसकी मिट्टी मुश्क की होगी और टीले ज़ाफ़रान के होंगे उसकी चहार दीवारी मरवारीद, याकूत और सोने चांदी की होगी और ऐसी शफ़्फ़ाफ़ कि अन्दर से बाहर की चीज़ और बाहर से अन्दर की चीज़ नज़र आयेगी। जन्नत में ऐसा कोई महल न होगा जिसकी अन्दर की चीज़ें बाहर से और बाहर की चीज़ें अन्दर से नज़र न आती हों, जन्नत में हर शख़्स का लिबास तहबन्द (इज़ार) और चादर और बग़ैर सिले हुए जोड़े होंगे। मोतियों का ताज सर पर होगा, ताज में चारों तरफ़ मोती, याकूत और ज़मुर्रद होंगे और उससे सोने की दो जंज़ीरें लटकती होंगी, गरदन में सोने का गुलूबन्द होगा जिसके किनारे याकूते सब्ज़ और मरवारीद के होंगे। हर जन्नती के हाथ में तीन कंगन होंगे, एक कंगन सोने का एक चांदी का एक मोतियों का होगा। ताज के न[illegible] मोतियों और याकूत [illegible]सर बन्द होंगे जोड़ो के ऊपर बारीक रेशम का लिबास होगा जिनके अस्तर [illegible]ब्ज़ हरीर के होंगे स[illegible]तकिये लगाये ऐसे बिस्तरों पर बैठे होंगे जिनका अस्तर मोटे रेशम का और [illegible]बरह उमदा [illegible] तफ़ी[illegible] कपड़े का होगा उसपर सुर्ख़ याकूत की धारियां पड़ी होंगी उनके तख़्त सु[illegible] [illegible]कूत के और [illegible]नके [illegible]ाये मरवारीद के होंगे, हर तख़्त पर हज़ार फ़र्श बिछे होंगे और [illegible]र फ़र्श म[illegible] रंग होंगे कोई रंग एक दूसरे से मुशबेह नहीं होगा। हर तख़्त के सामने सत्तर हज़ार बिस्तर होंगे और ह[illegible] बिस्तर के सत्तर रंग होंगे और कोई बिस्त[illegible] दूसरे से[illegible]बेह नहीं [illegible] हर [illegible]स्तर के दायें [illegible]यें सत्तर हज़ार कुर्सियां होगी और हर कुर्सी नई ह[illegible]ी और एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ [illegible]

अहले जन्नत [illegible]ी हैयत

रसूलुल्लाह स[illegible] अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम अहले जन्नत ख़्वाह वह दुनिया में पस्त क़द ह[illegible] न हों जन्नत में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के क़द के बराबर होंगे हज़रत आदम अलैहिस्सला[illegible] [illegible] साठ हाथ का होगा तमाम जन्नती जवान होगे रेश व बरूदत (दाढ़ी मूंछ के) बग़ैर, उन[illegible]हरी सुरमगीं आंखें होंगी उनकी बीवियां सब यकसां क़द की होंगी। इस एहतमाम के बाद मुनादी ऐसी आवाज़ में पुकारेगा जो दूर व नज़दीक नीचे और ऊपर यकसां सुनी जायेगी कि ऐ जन्नत वालो! क्या तुम को अपने यह घर पसन्द आये? सब जवाब में अर्ज़ करेंगे खुदा की क़सम हमारे रब ने हमें इज़्ज़त और करामत की जगह उतारा है हम यहां से कहीं और मुनकतिल नहीं होना चाहते और न इसके बदले दूसरा घर हम चाहते हैं। हम अपने रब के जवार में खुश हैं। ऐ अल्लाह! हमारे परवरदिगार! हमने तेरी मुनादी सुनी और उसका सच्चा जवाब अर्ज़ कर दिया।

दीदारे इलाही

इलाही हम तेरे दीदार के तालिब हैं तू हमें अपना जलवा दिखा दे क्योंकि तेरा दीदार ही तो सबसे बढ़ कर है। उस वक़्त अल्लाह तआला उस जन्नत को जिसका नाम दारूस्सलाम है और जहां अल्लाह तआला की मजलिस और मकाम है हुक्म देगा कि खुद को सजा ले और आरास्ता

कर ले और उसके के लिए तैयार हो जा कि मैं अपना दीदार मैं अपना दीदार अपने बन्दों को करारूं जन्नत दारूस्सलाम रब का हुक्म सुनेगी बात ख़त्म होने से पहले ही खुद को आरास्ता कर लेगी और अल्लाह तआला का दीदार करने वालों के लिए तैयार हो जायेगी उस वक़्त अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को हुक्म देगा कि मेरे दीदार के लिए मेरे बन्दों को बुलाओ वह फ़रिश्ता बारगाहे इलाही से रवाना हो कर बहुत पुर कैफ़ बलन्द और लम्बी आवाज़ में पुकारेगा ऐ अहले जन्नत ! ऐ अल्लाह के दोस्तो! आओ अपने रब का दीदार करो, उसकी आवाज़ हर जन्नती सुन लेगा ख़्वाह वह ऊपर के तबक़े में या नीचे के तबक़े में। तमाम जन्नती ऊंटो और घोड़ों पर सवार हो जायेंगे, सफ़ेद कस्तूरी और ज़र्द जाफ़रान के टीलों की तरफ़ चलेंगे और दरवाज़े के क़रीब पहुंचकर सलाम पेश करेंगे और इस तरह कहेंगे अस्सलामो अलैना मिन रब्बना (हम पर हमारे रब की तरफ़ से सलाम हो) फिर वह दाख़िले की इजाज़त चाहेंगे उनको इजाज़त दे दी जायेगी। जूंही वह दरवाज़े में दाख़िल होने का इरादा करेंगे कि अर्श के नीचे से मशीरा नामी हवा चलेगी वह हवा मुश्क व ज़ाफ़रान के टीलों को उठा लेगी और नबार बन कर उन तालिबाने दीदार के सरों, गरेबानों और कपड़ों पर डाल देगी फिर वह अन्दर दाख़िल होकर अपने रब और उसके अर्श व कुर्सी पर नज़र डालेंगे उनको एक नूरे ताबां नज़र आयेगा मगर रब जलवा फ़रमा न होगा उस वक़्त यह यक ज़बान हो कर कहेंगे: ऐ हमारे परवरदिगार तू हर [illegible] से पाक है तू कुद्दूस है तू फ़रिश्तो और हूरो का रब है तू बरकत वाला और आली मरतबा है। हमें अपने जमाल के दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमा! उस वक़्त अल्लाह तआला हिजाबाते नूर को हुक्म देगा कि हट जाओ फ़ौरन यके बाद दीगरे हिजाबात उठते चले जायेंगे इस तरह सत्तर हिजाबात उठ जायेंगे और ज़ेरीन हिजाब अपने बालाई हिजाब से नूरानियत में सत्तर गुना ज़्यादा होगा उसके बाद अल्लाह तआला जलवा अफ़रोज़ होगा तालबाने दीदार सब सजदे में गिर पड़ेंगे और जितनी देर अल्लाह चाहेगा सजदे रेज़ रहेंगे सब सजदे में कहेंगे हम तेरी पाकी बयान करते हैं तेरे ही लिए तमाम हम्द व सना है तूने हमको दोज़ख़ से बचाया और जन्नत में दाख़िल किया। यह मकान हमारे लिए कितना अच्छा है हम तुझ से पूरे पूरे राज़ी हैं तू भी हम से राज़ी हो जा। अल्लाह तआला फ़रमायेगा मैं तुमसे पूरे तरह से राजी हूं यह बन्दगी और हम्द व सना बयान करने का वक़्त नहीं है यह ऐश व शादकामी का वक़्त है मुझसे मांगो मैं तुम्हें अता करूंगा आरजू करो मैं तुम्हारे आरजू से बहुत ज्यादा तुमको दूंगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अहले जन्नत दिल ही दिल में आरजू करेंगे कि अल्लाह तआला ने उनको जो कुछ अता फ़रमाया है वह हमेशा क़ायम रखे अल्लाह तआला (उनकी आरज़ू के जवाब में) फ़रमायेगा कि जो कुछ मैंने तुझ को अता किया है उसी की मिस्ल व मानिन्द जो कुछ और अता करूंगा वह सब तुम्हारे लिए क़ायम व दायम रखूंगा। अहले जन्नत अल्लाहु अकबर कहते हुए सर उठायेंगे और रब्बुल इज़्ज़त के नूरे पाक की शिद्दत से उस तरफ़ नज़र न उठा सकेंगे उस मजलिस का नाम "मशरिक़ी कुब्बए अर्श रब्बुल आलमीन" होगा इसके बाद रब्बुल इज़्ज़त उनसे फ़रमायेगा ऐ मेरे बन्दो! ऐ मेरी कुरबत वालो! मेरे दोस्तो! मेरे मुहिब्बो! मुझसे मुहब्बत रखने वालो! ऐ वह लोगों जिनको मैंने अपनी मख़लूक़ और इताअत गुज़ार बन्दों में से मुनतख़ब किया है, मरहबा मरहबा।

अर्शे इलाही और मेम्बर

इसके बाद उन लोगों को रब्बुल इज़्ज़त के अर्श के सामने कुछ नूरानी मेम्बर नज़र आयेंगे उन मेम्बरों के नीचे नूर की कुर्सियां होंगी, उन कुर्सियों के नीचे फ़र्श पर ग़ालीचे और ग़ालीचों के नीचे मसनदें होंगी। अल्लाह जल्ला व जलालहु फ़रमायेगा! आओ और हस्बे मरातिब बैठो सबसे आगे रसूलाने कराम (अलैहिमुस्सलाम) तशरीफ़ लायेंगे और मेम्बरों पर तशरीफ़ फ़रमा हो जायेंगे फिर अंबिया अलैहिमुस्सलाम कुर्सियों पर जलवा अफ़रोज़ होंगे और हज़राते सालेहीन आगे बढ़ कर मसनदों पर बैठ जायेंगे उसके बाद नूरानी ख़्वान बिछाये जायेंगे, हर ख़्वान के सत्तर रंग होंगे और हर एक मरवारीद व याक़ूत से मुरस्सअ़ फिर हक़ तबारक व तआला अपने ख़ुद्दाम को हुक्म देगा कि सबको खिलाओ यह ख़ुद्दाम सबके आगे ख़्वानों में सत्तर प्याले याक़ूत व मरवारीद के रखेंगे हर एक प्याले में सत्तर क़िस्म का खाना होगा आगे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल इरशाद फ़रमायेगा कि खाओ हर एक जितना चाहेगा खायेगा खाते वक़्त आपस में यह हज़रात कहेंगे आज के खाने के मुक़ाबिल में हमारे घर का खाने [illegible]कुल हेच था वह उसके मुक़ाबले में ख़्वाब व ख़्याल है फिर अल्लाह तआला के हुक्म से यह हज़[illegible] शराबे तहूर से सैराब किये जायेंगे उस वक़्त अहले जन्नत आपस में कहेंगे कि हमारे मशरुबात [illegible] इस मशरू[illegible] मुक़ाबिल में एक ख़्वाब वा ख़्याल (हेच) हैं फिर रब्बुल इज़्ज़त फ़रमायेगा कि तु[illegible]नको खिला पिला दिया अब इनको फल और मेवे खिलाओ, ख़ुद्दाम फल लेकर आयें[illegible]। अहले [illegible] उन फलों में से कुछ खायेंगे और कहेंगे कि इन फलों के मुक़ाबले में हमारे (दु[illegible]या के) फल [illegible]लकुल हेच और बे हक़ीक़त है अल्लाह तआल[illegible] ख़ादिमों[illegible] हुक्म दे[illegible] तुम[illegible] इनको खि[illegible] पिला दिया मेवे भी खिला दिए अब इन्हें लिबा[illegible] बहिश्ती औ[illegible] ज़ेवर से आरा[illegible] करो[illegible]दिम लिबास और ज़ेवर उनको पहनायेंगे उस वक़[illegible] यह लोग [illegible]पस में क[illegible]गे कि इ[illegible]बले में हमारे ज़ेवर और लिबास तो बिल्कुल हेच थे। य[illegible] लोग कुर्सियों पर [illegible] बैठे होंगे कि अल्लाह[illegible]आला अर्श से एक हवा भेजेगा जिस का नाम मैसरा [illegible]ह हवा ज़ेरीने अर्श से मुश्क व काफ़ूर का गुबार (जो बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद होगा) साथ लाकर उनके सरों, गरेबानों और कपड़ो पर डाल देगी जिससे यह सब मुअत्तर हो जायेंगे फिर तमाम ख़[illegible] हुए ख़ानों के साथ उठा लिए जायेंगे।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रमायेगा ऐ मेरे बन्दो! मुझसे सवाल करो मैं अता करूंगा और जो आरज़ू करोगे उससे ज़्यादा दूंगा यह सब जन्नती मुत्तफ़ेक़ा तौर पर कहेंगे ऐ अल्लाह हमारे रब ! हम तुझसे तेरी रज़ा के तालिब हैं, अल्लाह तआला फ़रमायेगा मेरे बन्दो मैं तुम से राज़ी हूं सब सजदे में गिर पड़ेंगे और तस्बीह व तकबीर में मशग़ूल हो जायेंगे उस वक़्त रब्बुल इज़्ज़त फ़रमायेगा मेरे बन्दो! सर उठाओ यह इबादत का वक़्त नहीं है यह वक़्त ऐश व इशरत और राहत नसीबी का है बन्दे सजदे से सर उठायेंगे अनवारे रब्बी की वजह से उनके चेहरे ताबां होंगे। अल्लाह तआला फ़रमायेगा अब अपने महलों को वापस जाओ यह सब जन्नती बारगाहे इलाही से निकल आयेंगे, ख़ुद्दाम सवारियां ले आयेंगे यह तमाम जन्नती अपनी अपनी ऊंटनी या ख़च्चर पर बैठ जायेंगे हर एक की रकाब में सत्तर हज़ार गुलाम होंगे यह गुलाम भी उसी जैसी सवारी पर सवार होंगे। रास्ते में से जो चाहेगा अपने इलाक़े और महल की तरफ़ चला जायेगा बाक़ी सब उसके हमरकाब रहेंगे यहां तक कि उसका क़स्र आ

जायेगा क़स्र में पहुंच कर जन्नती अपनी बीवी की तरफ़ जायेगा वह खड़े होकर उसका इस्तक़बाल करेगी, ख़ुश आमदीद व मरहबा कहेगी और कहेगी मेरे महबूब आप तो अपने रब के पास हुस्न व जमाल और नूर लेकर ख़ुशबूदार लिबास और हसीन ज़ेवर के साथ आये मैं भी आपसे जुदा न थी (आप के साथ थी) अल्लाह तआला के तरफ़ से एक फ़रिश्ता बलन्द आवाज़ से पुकार कर कहेगा ऐ अहले जन्नत! तुम हमेशा इसी हाल में रहोगे और तुम को इसी तरह नौ ब नौ नेमतें मिलती रहेंगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि फ़रिश्ते हर दरवाज़े से सलामून अलैकुम बिमा सबरतुम फ़नेअ़मा उक़बेयद्दार कहते हुए आयेंगे उनके साथ हदिये के तौर पर मतऊमात, मशरूबात, मलबूसात और ज़ेवरात होंगे।

हुज़ूर फ़रमाते थे कि जन्नत के सौ दर्जे होंगे हर दो दर्जों के दर्मियान एक सरदार मुअय्यन है जिस की बुर्ज़ुगी और फ़ज़ीलत का सब इक़रार करेंगे जन्नत में सफ़ेद कस्तूरी और ज़ाफ़रान के पहाड़ है अहले जन्नत की डकार से कस्तूरी की और पसीने से मुश्क की ख़ुशबू आती है वह न थूकते हैं और न उन्हें बौल व बराज़ की ज़रूरत पेश आती है न उनकी नाक बहती है और न वह बीमार होते हैं न उनके सर में दर्द होता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते थे कि तमाम [illegible] दर्जे और कम दर्जा वाले जन्नती चाश्त के वक़्त खाना खाते हैं फिर दो घड़ी आराम करते हैं और दो घड़ी आपस में मुलाक़ातें करते हैं। चार घड़ी अपने ख़ालिक़ की तमजीद [illegible] करते हैं फिर दो घड़ी आपस में मिलते जुलते हैं जन्नत में रात और दिन भी हैं लेकिन जन्नत की रात की तारीकी दिन की रौशनी से सत्तर गुना ज़्यादा होगी हुज़ूर फ़रमाते थे कि तोहफ़ा व हदिया देने के एतबार से अदना दर्जा का शख़्स भी ऐसा होगा कि अगर उसके पास जिन्न व इन्सान मेहमान हों तब भी उसके पास अपने मेहमानों के लिए कुर्सियां, फ़र्श तकिए और बिस्तर होंगे और मेहमानों को खिलाने के लिए काफ़ी सामाने ख़ोराक होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत में बाज़ दरख़्तों के तने सोने के, बाज़ चांदी के और बाज़ याक़ूत और जबरजद के होंगे उनकी शाख़ें भी ऐसी ही होंगी और उनके पत्ते दुनयवी ज़ेवरों से ख़ूबसूरत होंगे उनके फल मक्खन से ज़्यादा नर्म और शहद से ज़्यादा शीरीं होंगे। हर दरख़्त की लम्बाई पांच सौ साल और मोटाई सत्तर साल की मुसाफ़त के बक़द्र होगी देखने वाले की नज़र दरख़्त के आख़िरी पत्ते और फल तक पहुंचेगी। हर दरख़्त के फल सत्तर हज़ार क़िस्म के होंगे और कोई फल हम रंग नहीं होगा जन्नती को जिस क़िस्म के फल की ख़्वाहिश होगी वही फल रखने वाली शाख़ पांच सौ पचास या उससे कम मुसाफ़त की राह से नीचे झुक जायेगी उस फल का तालिब अगर उस फल को हाथ तोड़ना चाहेगा तो उसको तोड़ लेगा और अगर मुंह में लेना चाहेगा तो अपना मुंह खोल देगा वह फल उसके मुंह में आ जायेगा, जब फल को तोड़ेगा फ़ौरन उसके एवज़ एक दूसरा ख़ूबसूरत और उम्दा फल अल्लाह तआला पैदा कर देगा जब जन्नती तोड़ने और खाने की ख़्वाहिश पूरी कर लेगा तो शाख़ (उचक कर) फिर वहीं ऊपर लौट जायेगी जहां से झुकी थी। जन्नत में बाज़ दरख़्त समरदार नहीं होंगे बल्कि उनमें सिर्फ़ शगूफ़ों के ग़िलाफ़ और आसतीनें होंगी जिनमें हरीर, ख़ूबसूरत नफ़ीस रेशम बारीक रेशमी कपड़े होंगे और बाज आस्तीनों में मुश्क और काफ़ूर होंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम फ़रमाते थे कि अहले जन्नत हर जुमा को अपने रब के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे नीज़ इरशाद फ़रमाया कि अगर बहिश्त का एक ताज आसमान के नीचे लटका दिया जाये तो उसकी ताबानी सूरज की चमक दमक को मांद कर दे।

हुज़ूर फ़रमाते थे कि जन्नत (बहुत से) महल हैं हर महल में चार नहरें रवां हैं एक आबे शीरीं की दूसरी दूध की, तीसरी शराब तहूर की और चौथी शहद मुस्फ़्फ़ा की। अगर जन्नती किसी नहर का पानी पीयेगा तो आख़िर में उस पानी से मुश्क की ख़ुशबू आयेगी। जन्नती उन चश्मों का पानी मिलाये बग़ैर नहरों का पानी पियेंगे। एक चश्मा का नाम ज़न्जबील है, दूसरे का नाम तस्नीम, तीसरे का काफ़ूर। चश्मा काफ़ूर से सिर्फ़ मुक़र्रबीन हज़रात सैराब होंगे। रसूलुल्लाह फ़रमाते थे कि अगर अल्लाह तआला यह फ़ैसला सादिर न फ़रमा चुका होता कि अहले जन्नत शराबे तहूर के प्याले लेने में एक दूसरे पर पेश क़दमी करेंगे तो अहले जन्नत उन कासों को कभी अपने मुंह से न हटाते। हुज़ूर फ़रमाते थे कि अहले जन्नत एक लाख साल या उससे भी ज़्यादा दूर की मुसाफ़त से बाहम मुलाक़ात के लिए जायेंगे और जब वह मुलाक़ात के बाद अपने अपने महल्लात को वापस जायेंगे तो सीधे अपने अपने ठिकानों पर [illegible] भटके और भूले बग़ैर वापस आ जायेंगे।

वापसी पर अल्लाह की तरफ़ से तोहफ़े

अहले जन्नत जब दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होकर वापसी का क़स्द करेंगे तो अल्लाह तआला हर शख़्स को, एक सब्ज़ रंग का अनार मरहमत फ़रमायेगा जिसमें सत्तर दाने होंगे और हर दाने में सौ रंग होंगे और कोई दाना हम रंग नहीं होगा। बारगाहे इलाही से मराजेअत के वक़्त वह जन्नत के बाज़ारों से गुज़रेंगे उन बाज़ारों में ख़रीद व फ़रोख़्त नहीं होगी बल्कि वहां ज़ेवर, कपड़ो के जोड़े बारीक और मोटा रेशमी कपड़ा, ख़ूबसूरत मुनक़्क़श मोती और याक़ूत और मुरस्सअ ताज लटके होंगे वहां से जन्नती इतनी चीज़ें लेंगे जितनी वह ले जाना चाहेंगे मगर उन बाज़ारो में कुछ कमी नहीं आयेगी वहां हसीन तरीन तस्वीरें भी होंगी। ऐसी ही जैसी आदमियों की तस्वीरें होती हैं उन तस्वीरों के सीने पर तहरीर होगा कि जो शख़्स मुझ जैसा हसीन होना पसन्द करेगा अल्लाह तआला उसको मुझ जैसा बना देगा पस जो उन तस्वीरों जैसा हसीन होना पसन्द करेगा उसके चेहरे को [illegible] उस तस्वीर की तरह हसीन हो जायेगा। जब यह लोग लौट कर अपने अपने महल्लात में आयेंगे तो ग़िलमान सफ़ बांधे खड़े होंगे और उन वापस आने वालों को ख़ुश आमदीद मरहबा कहते हुए आगे बढ़ेंगे। हर एक अपने बराबर वालों को उन जन्नतियों की वापसी का बशारत देगा इस तरह सिलसिला ब सिलसिला यह ख़ुश ख़बरी उसकी बीवी (हूर) तक पहुंच जायेगी, बीवी फ़रते इनबेसात से दरवाज़े तक आयेगी और उसको सलाम व मरहबा कहेगी दोनों गले मिलेंगे और मुआनका करते हुए अन्दर आ जायेंगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि जन्नती की बीवी इतनी हसीन व जमील होगी कि अगर उसे कोई फ़रिश्ता, नबी या रसूल देख ले तो उसके हुस्न पर फ़रेफ़्ता हो जाए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अहले जन्नत खाने के बाद जो आख़िरी शरबत पियेंगे उसका नाम तहूरो धेहाक़ होगा (पाक लबरेज़) होगा उसका एक घूंट पीने के बाद जो कुछ खाया पिया है सब हज़्म हो जायेगा। उसकी डकार मुश्क की ख़ुशबू की तरह होगी अहले जन्नत के पेट में कभी कोई तकलीफ़ नहीं होगी शराबे तहूर पीने के बाद उन्हें फिर

खाने की ख़्वाहिश होगी और हमेशा उनका यही तरीक़ा रहेगा।

जन्नत की क़िस्में

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि अहले जन्नत की सवारियां सफ़ेद याक़ूत से बनाई गई हैं आप फ़रमाते थे जन्नतें तीन क़िस्म की हैं एक का नाम अलजन्ना दूसरी का अदन और तीसरी का दारूस्सलाम है। जन्नत अदन, अलजन्ना से सत्तर करोड़ गुना बड़ी है, अलजन्ना के महल बाहर से सोने के और अन्दर से ज़बरजद के होंगे। उसके बुर्ज सुर्ख़ याक़ूत के और उसके झरोके (खिड़कियां) मोतियों के लड़ियों के होंगे, जन्नती अपनी बीवी से सात सौ साल की मुद्दत के बक़द्र लुत्फ़ अंदोज़ होगा फिर उसकी दूसरी बीवी जो पहली बीवी से ज़्यादा हसीन व जमील होगी दूसरे महल से उसको पुकारेगी कि ऐ दोस्त! अब वक़्त आ गया है कि मैं तुम से दौलते विसाल हासिल करूं ! वह पूछेगा कि तुम कौन हो? वह जवाब देगी कि मैं वह हूं जिसके बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया था।

कोई नहीं जानता कि उनकी आंखों की ठंडक के लिए क्या क्या छुपा कर रखा गया है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे जन्नत में एक जन्नत दरख़्त उसका साया इतना है कि सवार सात सौ साल तक चले तब भी उसका साया ख़त्म न हो उसके नीचे नहरे रवां है उसकी हर शाख़ पर शहर तामीर हैं हर शहर की लम्बाई दस हज़ार मील है। एक शहर से दूसरा शहर मशरिक़ व मग़रिब के फ़ासला पर है उनके महलों से सलसबील के चश्मे शहरों की तरफ़ जारी हैं उस दरख़्त का पत्ता इतना बड़ा है कि उसके साये में पूरी एक उम्मत आ जाये। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि जब जन्नती मर्द अपने बीवी के पास जायेगा तो वह कहेगा कि क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे आप की मुलाक़ात की इज़्ज़त बख़्शी कि जन्नत की कोई चीज़ मुझे आप से ज़्यादा महबूब नहीं है जन्नती भी ऐसा ही जवाब देगा हुज़ूर फ़रमाते थे कि जन्नत में ऐसी ऐसी चीज़े मौजूद हैं जिनकी तारीफ़ बयान करने वाले बयान नहीं कर सकते न सारी दुनियां उनका तसव्वुर कर सकती है न किसी सुनने वाले कानों ने उनको सुना और न मख़लूक़ की आंखों ने उनको देखा है।

जन्नते अदन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ऐसे दो शख़्सो को जो महज़ अल्लाह के लिए आपस में मोहब्बत रखते थे अदन की जन्नत में ऐसे सुर्ख़ याक़ूत के मीनार पर उतारेगा जिस का अर्ज़ सत्तर हज़ार साल की मुसाफ़त के बक़द्र है उस मीनार पर सत्तर हज़ार कमरे होंगे और हर कमरा एक महल की सूरत में होगा महज़ अल्लाह के लिए मोहब्बत करने वाले ऊपर से तमाम अहले जन्नत को देखेंगे उन अहले मीनार की पेशानियों पर लिखा होगा हम लेवजहिल्लाह मोहब्बत करने वाले हैं, जब उनमें से कोई अपने महल से अहले जन्नत को देखेगा तो उसके चेहरे के नूर से अहले बहिश्त के महल्लात इस तरह मामूर हो जायेंगे जिस तरह ख़ुरशीद के नूर से अहले ज़मीन के घर भर जाते हैं उस वक़्त एक जन्नती दूसरे जन्नती से कहेगा यह रौशनी उन चेहरों की हैं जिन्होंने महज़ अल्लाह के लिए आपस में दोस्ती की है यह कहते ही उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह दरख़्शां और फ़रोज़ां हो जायेगा।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि जन्नती अपने हुस्न में जन्नत के ख़ादिमों पर ऐसी फ़ज़ीलत व बरतरी वाला होगा जैसे सितारों पर माहे कामिल को फ़ज़ीलत हासिल है आपने फ़रमाया कि जब अहले जन्नत खाने से फ़ारिग़ हो जायेंगे तो जन्नत की बीवियां कैफ़ आफ़रीं लै के साथ गायेंगी और कहेंगी कि हम हमेशा रहने वाली हैं हम को कभी मौत नहीं आयेगी हम अमन व अमान में रहने वाली हैं हम को कभी ख़ौफ़ व दामनगीर नहीं होगा हम ख़ुश व ख़ुर्रम रहने वाली हैं हम कभी नाख़ुश नहीं हूंगी हम हमेशा जवान रहने वाली हैं हमको बुढ़ापा लाहक़ न होगा हम हमेशा लिबास में मलबूस रहने वाली हैं कभी बरहना नही होंगी हम नेक और हसीन तरीन औरतें इज़्ज़त वाली क़ौम की बीवियां हैं।

जन्नत के परिन्दे

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि जन्नत के हर परिन्दे के सत्तर हज़ार पर है उनका हर पर दूसरे से अलग रंग का है हर परिन्दा की जसामत तूल व अर्ज़ में एक एक मील होगी अगर जन्नती उन परिन्दों में से किसी के खाने का ख़्वास्तगार होगा तो उस परिन्दे को एक ज़र्फ़ में लाकर रख दिया जायेगा उस वक़्त वह अपने पर फड़ फड़ायेगा जिससे सत्तर रंग के खाने गिरेंगे उनमे कुछ कच्चा गोश्त होगा और कुछ भुना हुआ हर गोश्त का रंग अलग अलग होगा उस का मज़ा "मन" की मानिन्द होगा यह गोश्त मन के मज़े के तरन्जीन से ज़्यादा लज़ीज़ और मक्खन से ज़्यादा नर्म व लतीफ़, छाछ से ज़्यादा सफ़ेद होंगे। जब जन्नती खाने से फ़ारिग़ हो जायेगा तो यह परिन्दा फड़फड़ा कर उड़ जायेगा और उसका एक पर भी कम न होने पायेगा। जन्नतियों के परिन्दे और उनके घोड़े जन्नत के बागों में और उन जन्नतियों के महलों के आस पास चरागाहों में चरेंगे।

मज़ीद इनामात

हुजूर फ़रमाते थे कि अहले जन्नत को अल्लाह तआला सोने की अंगूठियां मरहमत फ़रमायेगा (जिन्हें वह पहनेंगे) यह बहिश्त की अंगुशतरियां होंगी इसके बाद मज़ीद याकूत और लूलू की अंगुशतरियां होंगी यह अंगुशतरियां दारूस्सलाम में दीदारे इलाही के वक़्त अता होंगी अहले जन्नत जब अपने रब की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होंगे तो अल्लाह तआला की तरफ़ से अता फ़रमूदा मेहमानी के खानों को खायेंगे, मशरूबात पियेंगे और उनकी लज़्ज़तों से महज़ूज़ होंगे उस वक़्त रब्बुल इज़्ज़त फ़रमायेगा कि ऐ दाऊद! अब ख़ुश अलहानी से मेरे अज़मत के तराने गाओ हज़रत दाऊद हुक्म की तामील फ़रमायेंगे आप की ख़ुश अलहानी से जन्नत की हर चीज़ पर एक सकूत का आलम तारी हो जायेगा और हमा तन गोश हो जायेंगी फिर रब्बुल इज़्ज़त अहले जन्नत को लिबास और ज़ेवरात अता फ़रमायेगा और यह लोग अपने अपने मकानों में वापस आ जायेंगे।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हर जन्नती के लिए एक दरख़्त मख़सूस होगा जिसका नाम तूबा होगा जब उसको आला लिबास पहनने की ख़्वाहिश होगी तो वह तूबा के पास जायेगा दरख़्त अपने शगूफ़ों के ग़िलाफ़ खोल देगा वह छः रंग के होंगे हर ग़िलाफ़ में सत्तर रंग के कपड़े होंगे हर एक रंग और नक़्श दूसरे के नक़्श और रंग से जुदागाना होगा, जन्नती जो लिबास चाहेगा मुनतख़ब कर लेगा, मुनतख़ब लिबास का टुकड़ा लाला के फूल की पंखुड़ियों से ज़्यादा नर्म व नाज़ुक और लतीफ़ होगा। हुजूर फ़रमाते थे कि जन्नत में बीवीयों के

गलो में तहरीर होगा तुम मेरे हबीब हो और मैं तुम्हारी महबूबा हूं तुम्हारी तरफ़ से मेरे दिल में न कदूरत होगी और न शिकायत। जन्नती जब अपने बीवी के सीने की तरफ नज़र डालेगा तो (जिस्म इस क़दर शफ़्फ़ाफ़ होगा कि) गोश्त और हड्डियों के अक़ब से जिगर की सियाही नज़र आयेगी। औरत का जिगर मर्द के लिए आईना होगा और मर्द का जिगर बीवी के लिए आईना होगा। जिगर की सियाही से उस बीवी के हुस्न में कोई नक़्श पैदा नहीं होगा जिस तरह याकूत में धागा पिरोने से कोई नक़्श पैदा नहीं होता उनकी सफ़ेद मोती की तरह और चमक दमक याकूत की तरह होगी अल्लाह तआला का इरशाद है: गोया वह याकूत और मरजान की तरह हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि जन्नती लोग मोती और याकूत की ऊंटनियों और ख़च्चरों पर सवार होंगे उनके क़दम मुन्तहाये नज़र पर पड़ेंगे जो चौपायों की जसामत सत्तर मील की होगी उनकी मुहारें और लगामें मोती और ज़बरजद की होंगी।

फ़वक़ा हुमुल्लाहो शर्रा ज़ालेकल यौमे व लक़्क़ा हुम नज़रतौं व सुरूरा

जहन्नम की हौलनाकियां

यानी अल्लाह तआला ने अहले जन्नत को उस दिन की बुराई से बचा लिया और उनको ताज़गी और मुसर्रत से हमकिनार किया मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने जन्नतियों को क़यामत के दिन हिसाब की सख़्ती और दोज़ख़ की शिद्दत और तकलीफ़ से महफ़ूज़ रखा था।

दोज़ख़

क़यामत के मैदान में उन्नीस फ़रिश्ते ऐसे होंगे जिनमें से हर एक के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते बतौर मददगार मौजूद होंगे ताकि रब्बुल इज़्ज़त के हुक्म की तामील करें। यह फ़रिश्ते दोज़ख़ को ख़ींच कर लायेंगे यह बड़े ही भयानक और बदख़ू होंगे बहुत ही सख़्त मिज़ाज़ होंगे, उनके दांत बाहर को निकले होंगे आंखें शोला की तरह और उनके नथनों से धुआं निकलता होगा वह कभी दोज़ख़ के दायें बायें और कभी उसके पीछे चलेंगे हर एक के हाथ में लोहे का एक गुर्ज़ होगा उस गुर्ज़ से वह दोज़ख़ को हांकेंगे दोज़ख़ की फुंकारे, दहाड़े, तारीकी, कड़क और शिद्दते ग़ज़ब के बाइस शोले उठते होंगे। फ़रिश्ते दोज़ख़ को मख़लूक़ की क़यामगाह और बहिश्त के दर्मियान लाकर खड़ा कर देंगे। दोज़ख़ मुंह उठाकर देखेगा सामने मख़लूक़ खड़ी होगी, दोज़ख़ दौड़ करके आगे बढ़कर उनको खाना चाहेगा मगर मुवक्किल अपनी ज़ंजीरों से उसको रोक लेंगे (अगर उसको न जाये तो वह हर मोमिन व काफ़िर को निगल ले) जब उसको रोक दिया जायेगा तो उसमें (गुस्सा) एक ज़बरदस्त जोश पैदा होगा। यह मालूम होगा कि शिद्दते ग़ज़ब से फट पड़ेगा उस वक़्त वह इस ज़ोर की सांस खींचेगा कि उसके दांत बजने की आवाज़ सारी मख़लूक़ को सुनाई देगी उस हौलनाक आवाज़ से लोगों के दिल दहल जायेंगे सीने से बाहर निकलने लगेंगे, आंखे पथरा जायेंगी, दिल सीनों से उछल कर हल्क़ में आ जायेंगे उस वक़्त मैदाने हश्र में हर मुक़र्रिब फ़रिश्ता और नबीए मुरसल दो ज़ानू बैठ जायेगा। दोज़ख़ फ़िर सांस को बाहर

फेंकेगा तो हर शख़्स की आंखों में जितने क़तरे हैं वह सबके सब बाहर निकल पड़ेगे (हर एक की आंख अश्क बार हो जायेंगी) फिर दोज़ख़ तीसरी सांस लेगा तो अगर किसी जिन्न व इंसान के आमाल बहत्तर नबियों के बराबर भी कर दिए जायें तब भी वह ख़्याल करेगा कि वह कहीं दोज़ख़ की गिज़ा न बन जाये, जब वह फिर सांस लेगा तो ज़बानें गुंग हो जायेंगी। हज़रत जिब्रील, मीकाईल और हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम अर्शे इलाही से चिमट जायेंगे और उस वक़्त हर शख़्स नफ़्सी नफ़्सी पुकारता होगा और अपनी जान की सलामती के सिवा कोई और दुआ न मांग सकेगा फिर दोज़ख़ सितारों जितने शोले फेंकेगा यह शरारे मख़लूक़ के सरों से गुज़रेंगे। यही वह शर है जिससे उन मोमिनों को अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखेगा जो अपनी नज़रो को पूरा करते और अल्लाह के अज़ाब से डरते थे।

बेशक व शुबहा अल्लाह तआला अपने उस अज़ाब से तमाम अहले तौहीद व ईमान और अहले सुन्नत व जमाअत को महफ़ूज़ रखेगा और उस दिन अपनी रहमत से पेश आयेगा और उनका हिसाब आसान करके उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा और फिर वहां हमेशा हमेशा रखेगा।

काफ़िरों, मुशरिकों और बुत परस्तों पर उसकी [illegible]दी और शर को ज़्यादा फ़रमायेगा उनके लिए ख़ौफ़ व अज़ाब को भी दूना कर देगा और फिर उन्हें दोज़ख़ में हमेशा हमेशा के लिए डाल देगा। (यह थी तसरीह व तफ़सीर फ़वा क़ाहा मुल्लाहो शर्रा ज़ालिकल यौम की।)

इसके बाद इरशादे बारी है व लक़्क़ा हुम नज़रतौं व [illegible] (और उनको ताज़गी, फ़रहत और मसर्रत से हम किनार करेगा इसकी सूरत यह होगी कि हर मोमिन बरोज़े क़यामत जब अपनी क़ब्र से बाहर आयेगा और अपने सामने देखेगा तो उसको एक ऐसा शख़्स (आदमी) नज़र आयेगा जिसका चेहरा चांद की तरह चमकता होगा और वह मुस्कराता और हंसता होगा उसके कपड़े सफ़ेद होंगे और सर पर ताज होगा वह मोमिन के [illegible] कहेगा ऐ अल्लाह के दोस्त (वली) आप के लिए सलामती है, मोमिन जवाब में कहेगा कि आप पर भी सलामती हो, ऐ बन्दए ख़ुदा आप कौन हैं? क्या फ़रिश्ता हैं? वह कहेगा नहीं, मोमिन बंदा कहेगा कि क्या आप पैग़म्बर हैं? वह जवाब नफ़ी में देगा मोमिन कहेगा कि क्या आप मुक़र्रबीने इलाही से हैं? वह कहेगा नहीं, तब बन्दए मोमिन कहेगा ख़ुदा की क़सम फिर आप क्या हैं वह कहेगा मैं आप का अमले सालेह हूं, मैं आप के लिए दोज़ख़ से नजात और बहिश्त के इनाम की ख़ुशख़बरी ले कर आया हूं मोमिन कहेगा कि क्या आप इन दोनों बातो से आगाह है जो मुझे ख़ुशख़बरी और बशारत दे रहे हैं वह कहेगा कि जी हां मैं आगाह और वाक़िफ़ हूं। बन्दए मोमिन कहेगा फिर आप मुझसे क्या चाहते हैं तो वह जवाब देगा आप मुझ पर सवार हो जायें। मोमिन कहेगा कि आप जैसे (नूरानी और बुज़ुर्ग फ़र्द) पर सवार होना मैं मुनासिब नहीं समझता, वह जवाब देगा कि इस में क्या हरज है मैं भी तो दुनिया में मुद्दतो आप के ऊपर सवार रहा हूं। अब मैं आपको ख़ुदा का वास्ता देकर दरख़्वास्त करता हूं कि आप मेरे ऊपर सवार हो जायें, ख़ुदा का वास्ता पाकर मोमिन उसके ऊपर सवार हो जायेगा उस वक़्त वह कहेगा कि आप डरिये नहीं मैं आप को जन्नत की तरफ़ ले जाऊंगा मोमिन यह सुनकर इस क़दर ख़ुश होगा कि उस ख़ुशी का असर चेहरे से नुमायां होगा, चेहरा जगमगाने लगेगा और दिल में कैफ़ व सुरूर पैदा होगा व लक़्क़ा हुम नज़रतौं व सुरूरा का यही मतलब है।

काफ़िरों की बद अंजामी

काफ़िर जब क़ब्र से उठेगा तो वह अपने सामने एक बद हैबत शख़्स को देखेगा जिसकी आंखे नीली और रंग उस काफ़िर से भी ज़्यादा सियाह होगा जैसे तारीक रात में क़ब्र की तारीकी। उसका लिबास भी सियाह होगा उसकी दाढ़ें ज़मीन से लगी होंगी (बड़े बड़े दांत होंगे) गरज की तरह गरजता हुआ आगे आयेगा उससे मुरदार से भी बदतर सड़ांड आती होगी। काफ़िर उसे देखकर कहेगा कि तू कौन है और उससे मुंह फेरना चाहेगा तो वह कहेगा कि ऐ उदवुल्लाह! आ मेरी तरफ़ आ! आज मैं तेरे लिए हूं और तू मेरे लिए है काफ़िर कहेगा। अरे तू ग़ारत हो। क्या तू कोई शैतान है, वह कहेगा नहीं, ख़ुदा की क़सम मैं तेरा अमले बद हूं काफ़िर कहेगा मुझ से क्या चाहता है वह कहेगा कि मैं तुझ पर सवार होना चाहता हूं, काफ़िर कहेगा मैं तुझे अल्लाह की क़सम देता हूं मुझे छोड़ दे और मुझे सारी मख़लूक़ के सामने रूसवा न करो। वह कहेगा ख़ुदा की क़सम इसके बग़ैर कोई चारा ही नहीं, मुद्दतों तक (दुनिया में) तू मुझ पर सवार रहा है आज मुझे तुझ पर सवार होना है, यह कहकर वह काफ़िर पर सवार हो जायेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि: काफ़िर अपनी पीठों पर अपने गुनाहों का बोझ लादेंगे, आगाह रहो वह क्या बुरा बोझ उठायेंगे, का यही मतलब है। इसके बाद अल्लाह तआला ने अपने दोस्तों का ज़िक्र किया है कि उन मोमिन बन्दों के बशारत के बाद बलाऊं पर सब्र करने और अवामिर को बजा लाने और ममनूआत से बचने और तक़दीर पर राज़ी रहने की वजह से उनको जन्नत और रेशमी लिबास अता किया जायेगा, वह जन्नत में रहकर लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे और (आला ख़िलअ़तें पहनेंगे)।

अहले जन्नत पर मज़ीद इकराम

वह जन्नत में परदे वाली मसहरियों (छप्परखट) पर तकिया लगाये बैठे होंगे जहां वह न सूरज की गर्मी को देखेंगे और न ठिठुराने वाली सर्दी को। इसलिए कि जन्नत में न गर्मी का मौसम होगा न सर्दी का। उनपर जन्नत के दरख़्तों के साये होंगे और मेवे उनके क़रीब लाये जायेंगे, अहले जन्नत, जन्नत के फल अगर चाहेंगे तो खड़े होकर, चाहेंगे तो बैठकर, जी चाहेगा तो लेट कर खायेंगे (उनका जिस तरह जी चाहेगा वह फल खायेंगे) उनपर चांदी के बरतनों और कूज़ों का दौर चलेगा, यह कूज़े गोल होंगे पकड़ने के लिए उनमें कुंडे नहीं होंगे वह कूज़े शीशे के होंगे लेकिन जन्नत में मीना (शीशा) चांदी का होगा। वह कूज़े ऐसे बरतनों के अन्दाज़ पर बने होंगे कि ख़ुद्दाम के हाथों में आ जायें और सैराब करने की गुंजाईश उनमें हो (यानी जब जन्नती ऐसे कूज़े से शराबे तहूर पियें तो सैराब हो जाये) और बरतन में कुछ बाक़ी न रहे, गोया अंदाज़े से मुराद है बरतन का ख़ादिम के हाथ में गिरफ़्त और सैराबी के मुताबिक़ होना व युसक़ू न फ़ीहा कासन, कास से मुराद शराब है जो शराब बरतन में हो वह ख़मर नहीं है बल्कि कास है और जो बरतन में नहीं है वह ख़मर है, कास नहीं है। यानी और प्याले से शराब पिलायेंगे जिसमें चश्मा ज़ंजबील का पानी आमेख़ता होगा, हक़ तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया: वह चश्मा जिसका नाम सलसबील है वह जन्नते अदन से निकल कर हर जन्नत से गुज़र कर फिर जन्नते अदन की तरफ़ लौट आयेगा। इस तरह तमाम जन्नतियों में उसका बहाव होगा। विलदान से मुराद

ग़िलमान हैं जो कभी बूढ़े नहीं होंगे, नौ ख़ेज़ ही रहेंगे (उन पर हमेशा जवान रहने वाले ग़िलमान गश्त करते हैं यानी ख़िदमत के लिए हाज़िर रहते हैं) वह ग़िलमान ऐसे हसीन हैं कि देखने वालों को वह बिखरे हुए मोती नज़र आयेंगे (उन बिखरे हुए मोतियों की तादाद सिवाये अल्लाह के कोई नहीं जानता) तुम जन्नत में जाकर देखोगे तो वह तुमको एक अज़ीम नेमत और एक बड़ा मुल्क दिखायेगा क्योंकि हर जन्नती को एक क़स्र मिलेगा उस क़स्र में सत्तर महल होंगे और फिर हर महल में सत्तर घर होंगे और हर घर एक मजूफ़ मोती का होगा, हर मोती की बलंदी, चौड़ाई और लम्बाई एक फ़रसख़ होगी। मोती के हर मकान में चार हज़ार सोने के दरवाज़े हैं हर घर में याक़ूत और याक़ूत के क़लमों से बना हुआ एक तख़्त है उस तख़्त के दायें बायें चार हज़ार सोने की कुर्सियां होंगी जिनके पाये सुर्ख़ याक़ूत के होंगे, इस एक तख़्त पर सत्तर फ़र्श हैं हर एक जुदागाना रंग का होगा जन्नती उस तख़्त पर अपनी बाईं जानिब तकिया लगाये बैठे होंगे सबके अन्दर बदन से लगा हुआ सफ़ेद रेशम का लिबास होगा, पेशानी पर याक़ूत, ज़मुर्रद और रंगा रंग जवाहिर की जीगा पट्टी होगी हर जवाहिर का रंग जुदा होगा सर पर सोने का ताज होगा, उस ताज के सत्तर गोशे होंगे हर एक गोशा पर एक मोती होगा जिसकी क़ीमत मशरिक़ व मग़रिब के तमाम माल व मताअ़ के बराबर होगी हाथों में कंगन होंगे हाथों और पैरों की उंगलियों में सोने की अंगूठियां होंगी उन अंगूठियों में रंग बिरंग के नगीने होंगे, उस जन्नती के पास दस हज़ार गुलाम होंगे, यह न कभी बड़े होंगे न कभी बूढ़े (हमेशा आरास्ता रहेंगे) सामने याक़ूत सुर्ख़ का एक ख़्वान रखा जायेगा जिसकी लम्बाई चौड़ाई एक मील होगी। उस ख़्वान में सोने चांदी के सत्तर हज़ार बरतन होंगे और हर बरतन में सब्ज़ रंग का खाना होगा। जन्नती अगर कोई लुक़्मा किसी खाने का उठायेगा और उतनी देर मे किसी दूसरे रंग के खाने की ख़्वाहिश पैदा होगी तो वह लुक़्मा फ़ौरन उसी खाने के ज़ायके के मुताबिक़ हो जायेगा जन्नती के सामने ग़िलमान खड़े होंगे उनके हाथों में चांदी के कूज़े और बरतन होंगे उनके पास शरबत और पानी भी होगा, जन्नती चालीस आदमियों के खाने के बराबर खाना तमाम खानों में से खायेगा। खाने से फ़राग़त के बाद ग़िलमान उसको उसकी पसन्द का शरबत पिलायेंगे जब वह डकार लेगा और जब पानी पी कर उसको पसीना आयेगा तो अल्लाह तआला खाने की ख़्वाहिश के हज़ार दरवाज़े उसपर खोल देगा (यानी तमाम खाना हज़्म हो जायेगा और फिर शिद्दत के साथ भूक लगेगी) जो परिन्दे जन्नती के हुज़ूर में आयेंगे वह बख़्ती ऊंटों के बराबर होंगे यह परिन्दे जन्नती के सामने आकर खड़े हो जायेंगे हर एक परिन्दा दुनिया के हर गाने से ज़्यादा सुरीली आवाज़ में अपनी तारीफ़ बयान करेगा और कहेगा कि ऐ अल्लाह के दोस्त! आप मुझे खा लें! मैं मुद्दतों तक जन्नत के बाग़ों में चुगता रहा हूं और मैंने फ़लां फ़लां चश्मे का पानी पिया है, यह तमाम परिन्दे बड़ी खुश अलहानी के साथ गायेंगे उस वक़्त जन्नती उनकी तरफ़ नज़र उठा कर देखेगा तो वह सबसे ज़्यादा खुश अलहान परिन्दा को पसन्द करेगा। अल्लाह ही जानता है कि यह ख़्वाहिश कितनी देर उसके दिल में रहेगी कि वह परिन्दा उसके ख़्वान पर गिर जायेगा। उसका कुछ हिस्सा क़दीद (नमकीन ख़ुश्क किया हुआ गोश्त) बन जायेगा और बाज़ शवी यानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा शीरीं भुना हुआ गोश्त होगा जन्नती उसमें से कुछ खायेगा उसके सैर हो जाने के बाद वही परिन्दा पहला जैसा बनकर उसी दरवाज़े से निकल कर वापस चला जायेगा जिससे वह दाख़िल हुआ था।

जन्नती मसहरी पर आराम फ़रमा होगा और उसकी बीवी सामने मौजूद होगी, जन्नती को

इन्तहाई सफ़ाई के बाएस अपने चेहरे का अक्स बीवी के चेहरे में नज़र आयेगा जन्नती के दिल में कुर्बत (मजामेअत) की ख़्वाहिश पैदा होगी तो उसकी तरफ़ नज़र उठा कर देखेगा लेकिन हया के बाएस उसको इस मक़सद से अपने पास बुलाने से शर्मा जायेगा बीवी उसके इस मक़सद को समझ जायेगी और वह ख़ुद उसके क़रीब आ जायेगी और कहेगी आप पर कुर्बान जाऊं! ज़रा मेरी तरफ़ तो देखिए आज आप मेरे लिए हैं और मैं आपके लिए। जन्नती उस वक़्त उससे जिमाअ करेगा जिमाअ के वक़्त उसमें सौ मर्दों की ताक़त और चालीस मर्दों की ख़्वाहिशें जमा होंगी। जिमाअ के वक़्त उस बीवी को बाकरा पायेगा उसकी वजह से उसके दिल में मुहब्बत और बढ़ जायेगी और बराबर चालीस दिन तक उससे मजामेअत में मशगूल रहेगा। जिमाअ से फ़ारिग़ होगा तो बीवी के मुंह से मुश्क की ख़ुशबू आयेगी उस ख़ुशबू के बाएस जन्नती के दिल में उसकी मोहब्बत और बढ़ जायेगी उस जन्नती के लिए ऐसी चार हज़ार आठ सौ बीवीयां होंगी हर बीवी के सत्तर ख़िदमतगार और लौंडियां होंगी।

हज़रत अली रज़िअल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि अगर एक ख़िदमत[illegible]र लौंडी को दुनिया में भेज दिया जाये तो तमाम दुनिया वाले उसके [illegible] कट मरेंगे और अग[illegible] एक हूर जमीन पर अपने गेसू दिखा दे तो उसके नूर से सूरज की रौश[illegible] मांद हो जाये।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ज[illegible] जन्नती अप[illegible]ख़्त [illegible] बैठा होगा तो अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता को उसके पास भेजेगा जि[illegible] पास सत्तर [illegible]ड़े क[illegible]ड़ों के होंगे हर जोड़े का रंग दूसरे से अलग होगा यह सब जोड़े फ़रिश्त[illegible] दो उंगलि[illegible]ों में दबे होंगे (उनकी नर्मी और नज़ाक़त का य[illegible] आलम हो[illegible]) फ़रि[illegible]ता दरवाज़े प[illegible] आक[illegible] दरबान से कहेगा कि मैं रब्बुल आलमीन[illegible] का क़ासि[illegible] हूं अल्लाह[illegible] वली [illegible] मेरे लिए [illegible]ाज़त तलब करो, दरबान कहेगा कि मैं उस अल्लाह के वली से ख़ुद ख़िता[illegible] करन[illegible] [illegible] नहीं रखता हूं मैं अपने बराबर के दरबान से कह देत[illegible] हूं इस [illegible] सत्तर द[illegible]ज़ों तक [illegible]ब द[illegible]न यह सिलसिला चलेगा तब उस जन्नती को इत्त[illegible]ा मिलेगी कि अल्लाह का क़ासिद दाख़िला [illegible] इजाज़त चाहता है। जन्नती उसको अन्दर आने [illegible] इजाज़त दे देगा फ़रिश्ता अन्दर आकर कहेगा अस्लामु अलैकुम या वलीअल्लाह! रब्बुल इज़्ज़त आ[illegible] राज़ी है और आप को सलाम कहता है इस पयाम को सुनकर जन्नती इतना खुश होगा [illegible] अ[illegible] अल्लाह ने उसको हयाते जाविदां अता न की होती तो उसको शादी मर्ग हो जाता: बन्दे के लिए सबसे बड़ी नेमत अल्लाह की तरफ़ से अल्लाह की रज़ा मन्दी, का यही मतलब है ऐ मोहम्मद आप जन्नत में देखेंगे कि जन्नती को अज़ीम नमतें हासिल होंगी और अड़ी हुकूमत देखेंगे, का यही मतलब है।

इसके बाद रब्बुल इज़्ज़त ने इरशाद फ़रमाया: उनका बालाई लिबास सब्ज़ रेशम का बारीक और दबीज़ होगा, बालाई लिबास की तख़सीस इस वजह से है कि उनके बदन से चिमटे हुए कपड़े सफ़ेद रेशम के होंगे। उनको चांदी के कंगन पहनाये जायेंगे दूसरी जगह इरशाद है यानी यह कंगन जो उनको पहनायें जायेंगे सोने और मोतियों के होंगे। उनका रब उन्हे शराब तहूर पिलायेगा।

जन्नत के दरवाज़े पर एक दरख़्त है उसकी जड़ से दो चश्मे निकलते हैं, बन्दा जब सिरात से गुज़र कर उन चश्मों की तरफ़ जायेगा तो एक में दाख़िल होकर गुस्ल करेगा उसके पानी की ख़ुशबू कस्तूरी से भी ज़ायद [illegible] होगी [illegible] ग[illegible] [illegible] क़दे आदम होगी और

अहले जन्नत के क़द की दराज़ी साठ हाथ होगी। जन्नत का हर मर्द और हर औरत क़द में बराबर होंगे और उसका सन व साल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सन व साल के मुताबिक़ होगा यानी 33 साल। गोया सबके सब जवान होंगे कमसिनी को बढ़ाकर 33 साल कर दिया जायेगा हर मर्द व औरत हज़रत यूसुफ़ बिन याकूब अलैहिस्सलाम के मानिन्द हसीन होगा, उस चश्मा से गुस्ल करने बाद जब दूसरे चश्मा से पानी पियेंगे तो उनके दिलों से कुदूरत हिज़्न व मलाल और हसद व नफ़रत दूर हो जायेगा उस चश्मा के पानी से अल्लाह तआला उनके दिल को अग़राज़े नफ़सानिया से पाक करके हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के दिल तरह कर देगा और उनकी ज़बान मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरह (अरबी) होगी। उसके बाद सब जन्नती चल कर जन्नत के दरवाज़े पर पहुंचेंगे उनसे जन्नत के दरबान कहेंग तुम राज़ी और खुश हो आप के मिजाज़ ठीक हैं, जन्नती कहेंगे हां! हम राज़ी और खुश हैं, उस वक़्त दरबान कहेंगे कि आप हमेशा के लिए जन्नत के अन्दर आ जाइये। जन्नत के अन्दर दाख़िल होने से पहले ही जन्नत के दरबान उनको बशारत दे देंगे और कि [illegible]ब वह कभी जन्नत से [illegible]हीं निकलेंगे, सबसे अव्वल जब जन्नती अन्दर दाख़िल होगा और आमा[illegible] लिखने वाले दो फ़रिश[illegible] करामन कातिबीन उसके साथ होंगे तो सामने से एक फ़रिश्ता आयेगा [illegible]सके साथ स[illegible] याकू[illegible] की एक ऊंटनी होगी जिसकी महार सुर्ख़ याकूत की होगी कुजावह क[illegible] अगला और [illegible]ला [illegible]स्सा मोती और याकूत का होगा, पालान के दोनों अतराफ़ सोने और च[illegible] होंगे उस [illegible]रिश्ता के साथ सत्तर जोड़े होंगे, जन्नती उन जोड़ों को पहनेगा उसक[illegible] सर पर ताज [illegible]खेगा ज[illegible]ती के आगे आगे सीप में छिपे हुए साफ़ व शफ़्फ़[illegible] मोती की [illegible]ह दस हज़ार ग़िलमा[illegible] होंगे उस वक़्त फ़रिश्ता कहेगा, ऐ अल्लाह के [illegible]स्त इस [illegible]टनी पर सवा[illegible]ो जा[illegible]ये यह आप[illegible]ी है और इस तरह आप के लिए और भी चीज़ें है, जन्नती उस ऊंटनी पर [illegible]वार [illegible] [illegible]स ऊंटनी के परिन्दे की तरह दो बाजू होंगे और क़[illegible]म उसक[illegible] मुतहाए न[illegible]र पर पड़ेगा।

उसकी सवारी [illegible] आ[illegible] आगे दो फ़रिश्ते और दस हज़ार ग़िलामन होंगे (यह दोनों फ़रिश्ते वही दुनिया वाले करा[illegible]तिबीन होंगे) इस तरह उसकी सवारी चलती हुई उसके महल्लात के पास पहुंचेगी (वह अपने महल[illegible] के पास पहुंच जायेगा) वह अपने महल्लात के पास पहुंचकर सवारी से उतर आयेगा, [illegible]लाह तआला का इरशाद है:

मैंने तुम्हारे इनाम का सिला जो कुछ इस सूरत में बयान किया है वही तुम्हारा सिला है बेशक तुम्हारी मसाई काबिले तारीफ़ थीं तो तुमको उसके एवज़ जन्नत अता फ़रमाई।

बाब 13

अय्यामे मुतबर्रका और फ़ज़ाइले शुहूर

मजलिसे अव्वल

माहे रजब के फ़ज़ाइल

चार बुज़ुर्ग महीने

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: अल्लाह के किताब में साल के महीनों की तादाद बारह है और जिस रोज़ से अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन व आसमान को पैदा किया उसी रोज़ से चार महीनों को हुरमत वाला बनाया है।

इस आयत की शाने नुज़ूल यह है कि फ़तह मक्का से क़ब्ल मुसलमानों ने मदीना से मक्का का क़स्द किया आपस में यह हज़रात कहने लगे कि हमें अंदेशा है कि कुफ़्फ़ारे मक्का कहीं हुरमत वाले महीने में हमसे अमादए जिदाल व क़िताल न करें उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आयते मज़कूरा नाज़िल फ़रमाई और बताया कि अल्लाह के नज़दीक महीनों की गिनती लौहे महफ़ूज़ में जिस दिन आसमानों और ज़मीन को पैदा किया गाया बारह महीने लिख दिए गये, उन बारह महीनों में चार महीने हुरमत वाले हैं यानी माहे रजब ज़ि क़ादा ज़िल हिज्जा और मुहर्रम। रजब का महीना सबसे अलग है बाक़ी तीन महीने यके बाद दीगरे (मुसलसल है) यानी यह सीधा हिसाब है तो उन हुरमत वाले महीनों में तुम अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो, अल्लाह तआ़ला ने मुमानिअत में इन चार महीनों को ख़ास फ़रमाया ताकि उन महीनों की अज़्मत व हुरमत ज़ाहिर हो जाये। अगर्चे दूसरे महीनों में भी हमारे लिए ज़ुल्म ममनू है लेकिन इन महीनों का बाक़ी महीनों से इमतियाज़ वाज़ेह हो जाये जैसा आयत: अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ास तौर पर दर्मियानी नमाज़ "अस्र" यानी इस आयत में जिस दर्मियानी नमाज़ की तख़सीस फ़रमाई है वह अस्र की नमाज़ है अगर्चे हिफ़ाज़त व निगाह रखने का सब पर इतलाक़ होता है लेकिन अस्र की नमाज़ की हिफ़ाज़त का हुक्म अलग बयान फ़रमाया ताकि हमें उसका ख़ास होना मालूम हो जाये इसी तरह इन चार महीनों में ख़ास तौर पर ज़ुल्म की मुमानिअत फ़रमाई और फ़रमाया कि मुशरिकीने अरब में से किसी एक को भी इन हुरमत वाले महीनों में क़त्ल न करो मगर यह कि वह लड़ाई की इब्तिदा ख़ुद करें।

हज़रत बायज़ीद ने फ़रमाया कि अल्लाह की इताअ़त को तर्क कर देना और अल्लाह की ना फ़रमानियां करना ज़ुल्म है बाज़ लोगों का क़ौल है कि चीज़ को उसके महल के ख़िलाफ़ रख देना ज़ुल्म है, पहले क़ौल से भी यही नतीजा निकलता है। इसके बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया अगर मुशरिक मिलकर तुम से माहे हराम में लड़ें तो तुम भी मिलकर तमाम कुफ़्फ़ार से इस माह में लड़ो और इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह की मदद परहेज़गारों के साथ है।

मुफ़स्सरीन हज़रात ने अद्दीनल क़य्यम मानी में एख़तिलाफ़ किया है मक़ातिल ने कहा दीने क़य्यम दीने हक़ है और दीगर मुफ़स्सरीन ने कहा कि वह दीने सादिक़ है यानी दीन इस्लाम और बाज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि दीने क़य्यम वह है जिसका अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को हुक्म दिया है।

लफ़्ज़ रजब की तहक़ीक़

रजब इस्मे मुशतक है और "तरजीब" से बना है, अहले अरब के नज़दीक तरजीब के मानी ताज़ीम के हैं, अहले अरब का एक मुहावरा है रजबतो हाज़ल शहर (मैंने इस महीने को अज़ीम जाना) जब किसी महीना को अज़ीम व बुज़ुर्ग बनाना मक़सूद होता है तो यह जुमला इस्तेमाल करते हैं **हब्बाब बिन मंज़र निब जमूअ** का भी यही क़ौल है वह कहते हैं कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विसाल हुआ उस वक़्त सहाबा कराम बनी साएदा के ख़ेमे में जमा हुए और अमीर के तक़र्रुर में मुहाजरीन व अन्सार के दर्मियान एख़्तलाफ़ पैदा हुआ यह दोनों गरोह (अंसार व मुहाजरीन) मुसिर थे कि एक अमीर हम में से हो और एक तुम में से हो। यह तारीख़ी वाक़ेआ है **हब्बाब बिन मंज़र** बिन जमूअ ने उस वक़्त ग़ज़बनाक हो कर तलवार नियाम से निकाल ली और कहा कि मैं अपने क़बीला की छली (सुडौल तराशी हुई) लकड़ी हूं और मैं इस क़बीले की अज़ीम खजूर हूं, मुद्दुआ यह कि मैं अपनी क़ौम में अज़ीमुल मरतबत हूं, उनमें मेरी बात मानी जाती और तसलीम की जाती है।

लफ़्ज़ अजीक़, अज़क़ की तस्ग़ीर है अज़क़ उस खजूर के दरख़्त को कहते हैं जिसके खजूर के खोशे बड़े बड़े हों और अपने मालिक को खूब खजूरें दे, खजूर का दरख़्त जब बड़े बड़े ख़ोशों की कसरत से नीचे को झुक जाता है तो उसके टूट कर गिर पड़ने के डर से उसके नीचे लकड़ी के सुतून लगा दिए जाते हैं रोहबा उन ही टेकियों को (सहारा) कहते हैं जो खजूर के दरख़्त के आस पास लगा दी जाती है। जुज़ैल दरख़्त का तना, मोटी कड़ी और खजूर का तना जिससे खारशी ऊंट अपने आप को रगड़ते थे। बाज़ का क़ौल है कि जज़ल एक लकड़ी होती है जो एक जगह गाड़ दी जाती है ताकि शुतूर बच्चे उससे खुद को खुजाएं, उनको पुश्ते ख़ार का काम दें।

फ़रा ने कहा कि रजब की वजहे तसमिया यह है कि इस महीने में अरब खजूर के ख़ोशों को सहारों के ज़रिये रोकते थे और शाख़ों के साथ पत्तों को भी बांध देते थे ताकि हवा से टूट न जायें चुनांचे जो शख़्स इस क़िस्म की नख़ल बन्दी या ख़ोशा बन्दी करता था उस मौक़ा पर कहता कि मैंने खजूर के इर्द गिर्द सहारे खड़े कर दिए।

बाज़ लोगों का क़ौल है कि तरजीब के मानी हैं खजूर के दरख़्त के नीचे इर्द गिर्द कांटों की बाढ़ रख देना ताकि लोग ख़ोरमा न तोड़ सकें और ख़ोरमा महफ़ूज़ रहें, यह बाढ़ तरजीब कहलाती है बाज़ उलमा का कहना है कि तरजीब के मानी हैं खजूर के दरख़्त को टेकियां लगा कर झुकने से रोक देना बाज़ लोगों का ख़्याल है कि रजब का लफ़्ज़ अरब के क़ौल रज्जबतुश शई से माखूज़ है यानी मैंने उसे डराया। बाज़ ने कहा कि तरजीब आमादा व तैयार करने के मानी में आता है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया माहे रजब में शाबान के लिए ख़ैर कसीर की तैयारी की जाती है। बाज़ लोगों का क़ौल है तरजीब के मानी बार बार ज़िक्रे ख़ुदा करना और अल्लाह की अज़मत का इज़हार करना क्योंकि माहे रजब में फ़रिश्ते अल्लाह तआला

की तसबीह, तमजीद और तक़दीस बार बार करते है इस लिए उसका यह नाम पड़ा। लफ़्ज़ रजब को रजम, मीम के साथ भी कहा गया है इस सूरत में इसके मानी यह होंगे कि इस महीने में शयातीन को दूर किया जाता है ताकि मुसलमानों को इस महीने में अज़ीयत न दे।

रजब में तीन हर्फ़ है रा, जीम और बा । रा रहमतुल्लाह, जीम, जव्वादुल्लाह और बा, बर्रुल्लाह की है। इस माह में शुरू से अख़ीर तक अल्लाह तआला की जानिब से बन्दों के लिए तीन अतियात होते हैं बग़ैर अज़ाब के ख़ुदा की रहमत, बग़ैर बुख़्ल के बख़्शिश और बग़ैर जफ़ा के उसका एहसान।

माहे रजब के दूसरे नाम

माहे रजब के और नाम भी हैं इसे रजब मुज़र, मुनसिलून अस्सना, शहरुल्लाहिल असब्बो, शहरे मुतहर, शहरे साबिक़, शहरूल फ़रद।

शहरे मुज़र के सिलसिले में एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने एक खुतबए मुबारक में इरशाद फ़रमाया कि ज़माना घूम कर उसी तरीके पर आ गया है जिस पर आसमान व ज़मीन की आफ़रीनश के वक़्त था। साल बारह महीनों का है जिसमें चार हुरमत वाले महीने हैं यके बाद दीगरे आते हैं। ज़ीकअदा, ज़ील हिज्जा और मोहर्रम और एक अकेला है रजब मुज़र जो जमादिउस्सानी और शाबान के दर्मियान आता है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रजब के महीने को जमादिउस्सानी और शाबान के दर्मियान फ़रमाकर हक़ीक़त में महीनों की तक़दीम व ताख़ीर का अबताल फ़रमाया है। अहले अरब अय्यामे जाहिलियत में ऐसा किया करते थे। चुनांचे अल्लाह तआला का इरशाद है: बेशक नसीई (महीनों को आगे पीछे करना) इसके सिवा नहीं कि वह कुफ़्र में इज़ाफ़ा है।

इसकी सूरत यह थी कि ज़माना जाहिलियत में [illegible] मिना से वापसी का इरादा करते थे तो कबीला कनाना का एक शख़्स जो कबीला का सरदार था और जिसका नाम नईम बिन सअलबा था, खड़े होकर ऐलान करता था कि मैं वह हूं जिस की बात मानी जाती है और जिस पर कोई ऐब नहीं लगाया जा सकता और न उसका फ़ैसला रद्द किया जा सकता हैं। लोग उसका यह दावा सुनकर कहते आप सच कहते हैं। आप हमारे लिए एक महीना पीछे कर दीजिए इस तरह उनकी ख़्वाहिश यह होती थी कि मोहर्रम के महीने को हम से मोअख़्ख़र कर दें और माहे सफ़र को माहे हराम क़रार देकर असल माहे मोहर्रमुलहराम में जंग व जिदल को हलाल बना दें (लौंद का ऐलान कर देने से एक महीना बाक़ी महीनों से पीछे हो जायेगा इस तरह बाक़ी तमाम महीने खुद ब ख़ुद एक महीना पीछे आ जायेंगे) यह ताख़ीर वह इस लिए चाहते थे कि अरब जाहिलियत की मआश का मदार लूट और ग़ारत गरी पर था तीन माह मुसलसल क़त्ल व ग़ारत गरी से बाज़ रहना उनके लिए दुश्वार और सख़्त मुश्किल था (इस लिए वह चाहते थे कि मोहर्रम को माहे सफ़र क़रार दे दिया जाये और उनको लूट मार की खुली छुट्टी मिल जाये) उनकी इस दरख़्वास्त पर नईम कनआनी ऐसा ऐलान कर देता था और फिर दूसरे साल इसी तरह उनको हुरमत वाले महीने में क़त्ल व ग़ारत की इजाज़त मिल जाती थी—इन्साउन के मीनी यही हैं यानी ताख़ीर, देर इसी मानी में अहले अरब का यह मुहावरा है :नसा अल्लाहो फ़ी अजलेही, अल्लाह तआला ने उसकी मौत में ताख़ीर कर दी।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माहे रजब के दो वस्फ़ बयान किये हैं और इसको दो सिफ़्तों से मुक़य्यद फ़रमाया है अव्वल तो रजब मुज़र फ़रमाया चूंकि क़बाइल मुज़रा माहे रजब की बहुत ज़्यादा ताज़ीम व तकरीम करते थे। दूसरी सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि इसे जमादीउस्सानी व शाबान के दर्मियान मुक़य्यद फ़रमाया (ताकि तक़दीम व ताख़ीर का अंदेशा रहे) ताकि माहे मोहर्रम की हुरमत को माहे सफ़र से न बदल दिया जाए। इसी लिये हुज़ूर ने ख़ुसूसीयत के साथ रजब मुज़र फ़रमाया और जमादी व शाबान के दर्मियान मुक़य्यद फ़रमा कर इसकी हुरमत को दवामी और पुख़्ता फ़रमाया दिया। (ताकि इसको लौंद का महीना न बनाया जा सके)।

बाज़ ने इसको रज़ब मुज़र कहने की वजह यह बताई है कि बाज़ काफ़िरों ने इस महीने में किसी क़बीला के लिये बद्दुआ की थी। अल्लाह तआला ने उनकी बद्दुआ से उस क़बीले को तबाह कर दिया था। कहते हैं कि इस महीने में ज़ालिमों और सितमगारों के हक़ में बद्दुआ क़बूल हो जाती है इसी लिये अरब जाहिलियत को जब बद्दुआ करना होती तो इस महीना का इंतज़ार करते और जब यह महीना आ जाता तो बद्दुआ करते और उनकी बद्दुआ करते और उनकी बद्दुआ हमेशा कामयाब और मोअस्सिर होती थी।

माहे रजब को "मुन्सिलूल अस्सन्ना" यानी नेज़ों से भालों को निकाल देने वाला। इसकी वजहे तसमीया यह है कि अहले अरब (अरब जाहिलियत) इस माह की इसकी इज़्ज़त व हुरमत के पेशे नज़र नेज़ों से उनकी भालों को अलग कर देते और तलवारों और नेज़ों को नियामों और तरकशों में डाल देते थे।

इश्तिक़ाक़ की मिसालें

मैंने तीर में फ़ल या बोरी लगाई, मैंने तीर से उसकी भाल अलग की। पस मुंसिल इस्मे फ़ाएल है, बाबे इफ़आल से।

इस माह को शहरुल्लाहुल असम (अल्लाह का ख़ामोश महीना) भी कहते हैं। वजहे तसमीया के बारे में मरवी है कि जब रजब का चाँद दिखाई दिया तो जुमा के दिन हज़रत उसमान ने मेम्बर पर तशरीफ़ लाकर ख़ुतबा दिया और फ़रमाया! लोगो! यह सुनो! अल्लाह का यह असम (बहरा) महीना है यह ज़कात देने का महीना है जिस पर क़र्ज़ हो वह क़र्ज अदा करके बाक़ी माल की ज़कात दे। इब्ने अंबारी ने कहा कि हज़रत उसमान के असम फ़रमाने की वजह यह थी कि अरब हमेशा आपस में जंग व जिदल में मसरूफ़ होते थे लेकिन जब रजब का महीना आता तो वह नेज़ों के फल बांसों से अलग कर देते। पस उस महीने में न हथियारों की झंकार सुनाई देती थी न नेज़ों की खटाखट। अगर कोई शख़्स अपने बाप के क़ातिल की तलाश में निकल खड़ा होता और वह क़ातिल रजब के महीने में मिल जाता तो उससे कुछ तअर्रुज़ न करता गोया यह मालूम होता था कि उसने क़ातिल को देखा ही नहीं और न उसकी उसे कोई ख़बर मिली है। बाज़ ने असम की वजह तसमिया यह बताई है कि इस महीने में किसी क़ौम पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होने की ख़बर कभी नहीं सुनी गई। अक़वामे साबिक़ा पर इस महीने के सिवा तमाम महीनों में अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ।

इसी महीने में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने कश्ती में सवार होने का हुक्म दिया चुनांचे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और उनके साथियों को लेकर यह कश्ती छः महीने

तक इधर उधर तैरती रही। हज़रत इबराहीम नख़ई का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने माहे रजब में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कश्ती में सवार होने का हुक्म दिया। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने रजब के रोज़े रखें और अपने साथियों को भी रखवाए। अल्लाह ने आपको और आप के हमराहियों को तूफ़ान से महफ़ूज़ व मामून रखा और तमाम रुए ज़मीन को ज़ालिमों और मुश्रिकों से पाक कर दिया बाज़ ने इस क़िस्सा को मरफ़ूअन बयान किया है। चुनांचे हिबतुल्लाह ने अपनी सनद के साथ अबू हाज़िम से उन्होंने सहल बिन सअद से और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से। रिवायत करदा यह हदीस सुनाई कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सुनो! रजब हुरमत वाले महीनों में से है, इसी महीने में अल्लाह तआला ने हज़रत नूह को कश्ती सवार कराया, उन्होंने और उनके तमाम साथियों ने कश्ती ही में इस माह का रोज़ा रखा और अल्लाह तआला ने उन्हें नजात बख़्शी और ग़र्क़ होने से महफ़ूज़ रखा और सैलाब के बाद ज़मीन को कुफ़्र और मअ़सियत से पाक फ़रमा दिया।

असम की वजहे तसमिया:

असम कहने की यह वजह भी बयान की गई है कि मोमिन के ज़ुल्म और उसकी ज़िल्लत को सुनने से यह महीना बहरा है, हाँ मोमिन की बुज़ुर्गी और उसके शरफ़ को ख़ूब सुनता है यानी अल्लाह ने मोमिन को ज़ुल्म और ज़िल्लत के तज़किरे सुनने से इस महीने को बहरा बना दिया ताकि क़यामत के दिन यह मोमिन के ज़ुल्म और ज़िल्लत की शहादत न दे सके बल्कि यह मोमिन के हुसने किरदार व फ़ज़ीलत का तज़किरा जो उसने सुना है, उस पर क़यामत के दिन शाहिद होगा। इस मक़ूला का हासिल यह है कि मोमिन रजब के महीने में ख़ुसूसियत के साथ किसी पर ज़ुल्म नहीं करता, न कोई उस पर ज़ुल्म करता है कि उसकी ज़िल्लत हो बल्कि दूसरों के साथ वह हुसने सुलूक और हुसने ख़ुल्क़ से पेश आता है इसलिये माहे रजब क़यामत के दिन उसकी मुवाफ़िक़त में शहादत देगा (उसके ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहेगा)।

असब्बुन कहने की वजह

माहे रजब को असब्बुन कहने की वजह यह है कि इस माह में बन्दों पर ख़ुदा की रहमत बहाई जाती है, सब्बुन के मानी हैं बहाना, अल्लाह तआला इस माह में बन्दों को ऐसी अज़मतें और सवाब अता फ़रमाता है जो न आंखों ने देखी और न कानों ने सुना है, न किसी शख़्स के दिल में उनका तसव्वुर आया।

रजब में सवाब

इस माह में सवाब की तफ़सील में जो अहादीस आई हैं उनमें से एक हदीस वह है जो शैख़ इमाम हिबतुल्लाह बिन मुबारक सिक़ती ने अपनी सनद के साथ आमश से और उन्होंने इब्राहीम नख़ई से और उन्होंने अलक़मा से और उन्होंने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "महीनों की गिनती जिस दिन से अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा फ़रमाया अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं, इन बारह महीनों में से चार हुरमत वाले हैं, एक रजब है और उसके बाद तीन मुसलसल हैं यानी ज़ीक़दा, ज़ील हिज्जा और मोहर्रम, रजब अल्लाह का महीना है और शाबान मेरा है और रमज़ान मेरी

उम्मत का। पस जिस ने रजब में एक दिन का रोज़ा रखा (यक़ीन व इख़लास के साथ) तो उसने अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की ख़ुशनूदी अपने ऊपर वाजिब कर ली, उसे फ़िरदौसे आला में ठहराया जाएगा और जिसने रजब के दो दिन के रोज़े रखे तो उसे दो गुना अज्र दिया जाएगा। हर अज्र (सवाब) का वज़्न दुनिया के पहाड़ों के बराबर होगा और जिसने तीन दिन के रोज़े रखे तो अल्लाह तआला उसके और जहन्नम के दर्मियान एक ख़न्दक़ हाएल कर देगा जिसकी मुसाफ़त एक साल की मुसाफ़त के बक़द्र लम्बी होगी। जिसने चार रोज़े रखे, अल्लाह तआला उसको जज़ाम और जुनून और बर्स के अमराज़ से और दज्जाल के फ़ितनों से महफ़ूज़ रखेगा जिसने पांच रोज़े रखे उसे क़ब्र के अज़ाब से बचाया जाएगा जिसने छः दिन के रोज़े रखे तो वह अपनी क़ब्र से इस तरह उठेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं के चाँद की तरह ताबां व दरख़शां होगा और जिसने सात रोज़े रखे तो उसके लिये दोज़ख़ के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे और जिसने आठ रोज़े रखे तो जन्नत के आठों दरवाजे उसके लिए खोल दिए जाएंगे और जिसने नौ दिन के रोज़ रखे तो वह अपनी क़ब्र से **अशहदु अल ला इलाहा इल्लल्लाह** कहता हुआ उठेगा उसका मुंह जन्नत की तरफ़ होगा। जो दस रोज़े रखेगा अल्लाह तआला उसके लिए पुल सिरात के हर मील पर एक बिस्तर आराम के लिए मुहय्या फ़रमा देगा, और जो रजब के ग्यारह रोज़े रखेगा क़यामत के दिन उससे अफ़ज़ल और कोई उम्मती नज़र न आएगा सिवाए ऐसे शख़्स के जिसने उसके बराबर या उससे ज़्यादा रजब के रोज़े रखे हों, और जो शख़्स इस माह के बारह रोज़े रखेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन ऐसे दो जोड़े पहनाएगा कि उसका एक जोड़ा दुनिया और दुनिया के तमाम चीज़ों से अफ़ज़ल और बेहतर होगा और जो रजब के तेरह रोज़े रखेगा क़यामत के दिन अर्श के साया में उसके लिये दस्तरख़्वान बिछाया जाएगा और उससे वह जो दिल चाहेगा खाएगा जब कि और दूसरे लोग सख़्त तकालीफ़ में मुब्तला होंगे, जिसने रजब के चौदह रोज़े रखे तो क़यामत के दिन अल्लाह उसे वह चीज़ अता करेगा जो न कभी देखी और न उसके बारे में आज तक किसी से सुना न किसी दिल में उसका ख़्याल गुज़रा होगा। जिसने पन्द्रह दिन के रोज़े रखे तो अल्लाह तआला मौक़िफ़ (हश्र) में उसे अमन के साथ खड़े होने वालों में शामिल कर देगा जहाँ जब किसी मुक़र्रब फ़रिश्ता का गुज़र होगा या किसी नबी या रसूल का तो उसे कहा जाएगा मुबारक हो तू अमन वालों में से है। एक और रिवायत में है पन्द्रह दिन से ज़ाएद रोज़ों का भी ज़िक्र आया है, इस तरह पर कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने सोलह दिन के रोज़े रखे तो वह अल्लाह तआला का दीदार करने और कलाम करने वालों की पहली सफ़ में होगा और जिसने सतरह दिन के रोज़े रखे तो अल्लाह तआला उसके लिए पुल सिरात के हर मील पर एक आरामगाह मुक़र्रर कर देगा, जिसमें वह आराम करेगा और जिसने माहे रजब के अठरह रोज़े रखे वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के कुब्बा में क़याम करेगा, जिसने उन्नीस रोज़े रखेगा तो उसके लिए अल्लाह तआला एक ऐसा महल मुहय्या फ़रमा देगा जो हज़रत आदम और हज़रत इब्राहीम के महल्लात के रुबरू होगा और वह उन दोनों नबियों को सलाम नियाज़ पेश करेगा वह दोनों नबी उसको जवाब देंगे और जिसने रजब के महीने के बीस रोज़े रखे तो आसमान से एक मुनादी निदा देगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! तेरे तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गए, तू बख़्श दिया गया, अब जिस क़दर तेरी उम्र बाक़ी है उनमें नेक अमल कर।

माहे रजब का नाम "मुतहहर" रखने की वजह यह है कि यह महीना अपने रोज़ादार को

गुनाहों और ख़ताओं से पाक कर देता है, इस सिलसिले में दूसरी रिवायतों के मिन जुमला एक रिवायत वह है जो शैख़ इमाम हिबतुल्लाह बिन मुबारक सिक़ती ने हसन बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह मक़री के हवाले से और उन्होंने हारुन बिन अन्ज़ा और उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो के हवाले से बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "रजब का महीना अज़मत व बुज़ुर्गी वाला महीना है जो शख़्स इसका एक रोज़ा रखेगा उसको एक हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब होगा और जो दो रोज़े रखेगा अल्लाह तआला उसके लिये दो हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब लिखेगा, जो तीन रोज़े रखेगा उसको तीन हज़ार साल के रोज़ों का सवाब अता फ़रमाएगा और जिसने सात रोज़े रखे उस पर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जाएँगे और जो आठ रोज़े रखेगा उस पर जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे वह जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत के अंदर दाख़िल हो और जो बन्दा पन्द्रह रोज़े रखेगा उसके गुनाह नेकियों से बदल दिये जाएंगे और आसमान से निदा आएगी कि तुझे बख़्श दिया गया अब आइन्दा के लिये तू अज़ सरे नौ अमल कर और जो बन्दा इससे ज़्यादा रोज़े रखेगा अल्लाह उसको ज़्यादा सवाब देगा।

शैख़ इमाम हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने अपनी असनाद के साथ ब रिवायत यूनुस बिन हसन रज़ियल्लाहो अन्हो रिवायत की उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने माहे रजब का एक रोज़ा रखा उसको अल्लाह तआला तीस साल के रोज़ों के बराबर सवाब देगा।

इमाम हिबतुल्लाह बिन मुबारक, हसन बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह मक़री से असनाद के साथ ब रिवायत अला बिन कसीर अज़ मकहूल बयान किया कि उन्होंने एक शख़्स को हज़रत अबू दरदा से माहे रजब के रोज़ों के बारे में सवाल करते सुना, हज़रत अबू दरदा ने जवाब में फ़रमाया कि तुम ने ऐसे महीने के बारे में पूछा है जिसकी अहदे जाहिलियत में भी लोग अज़मत करते थे और इस्लाम ने इसकी अज़मत व मरतबत में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया कि जिस शख़्स ने इख़लास के साथ सवाब की उम्मीद और अल्लााह की ख़ुशनूदी के लिए इस माह में एक दिन का रोज़ा रखा तो वह रोज़ा क़यामत के दिन अल्लााह तआला के ग़ज़ब की आग को सर्द कर देगा और वह दोज़ख़ का एक दरवाज़ा उसकी तरफ़ से बन्द कर देगा, अगर ज़मीन के बराबर उसको सोना मिल जाए तब भी वह इस अज्र का बदल न हो सकेगा न दुनिया की किसी चीज़ से उसका अज्र पूरा हो सकेगा सिवाए क़यामत के दिन के। माहे रजब के उस रोज़ादार की जब शाम होती है तो उस वक़्त उसकी दस दुआयें क़बूल होती हैं अगर दुनिया की वह कोई चीज़ मांगता है तो वही उस को अता कर दी जाती है वरना उसके लिये ख़ैर का इतना ज़ख़ीरा जमा कर दिया जाता है जो उन दुआओं के ज़ख़ीरा से बेहतर होता है जो औलिया और असफ़ियाए सादेक़ीन करते हैं।

जिसने रजब के दो रोज़े रखे उसको मज़कूरा सवाब के अलावा ऐसे दस सिद्दिक़ों का सवाब मिलेगा जो अपने तवील तर उम्रों के साथ सिद्दीक़ रहे और सिद्दिक़ीन की शफ़ाअत के बराबर उसकी शफ़ाअत और सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी, वह ख़ुद सिद्दिक़ीन के साथ जन्नत में जाएगा। जिसने तीन दिन के रोज़े रखे तो उसको मज़कूरा बाला सवाब का दोगुना सवाब मिलेगा उसके इफ़्तार के वक़्त अल्लाह तआला फ़रमाएगा बेशक मेरे बन्दे का हक़ वाजिब हो चुका है और मेरी

मोहब्बत और दोस्ती उसके लिये वाजिब हो चुकी है। ऐ मेरे फ़रिश्तो! मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैंने इसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये, और जब बन्दा चार रोज़े रखेगा उसको यह तमाम सवाब मिलेगा और मज़ीद बरआं उन आबिदों और बसीरत वालों का सवाब भी मिलेगा जो अल्लाह से बहुत ज़्यादा तौबा करते हैं, उसका आमाल नामा दायें हाथ में दिया जाएगा और कामयाब होने वाले अव्वल तरीन गरोह में शामिल होगा और जो शख़्स पांच रोज़े रखेगा उसको यह सब कुछ मिलेगा जो बयान हो चुका और मज़ीद बरआं यह कि जब उसको क़यामत के दिन उठाया जाएगा तो उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह ताबां और दरख़्शां होगा, उसकी नेकियां उतनी लिखी जाएगी जितनी आलिज के रेगिस्तान में रेत के ज़र्रे हैं वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और उससे कहा जाएगा कि अल्लाह पर भरोसा करते हुए जो आरज़ू तू करना चाहता है कर वह पूरी होगी। जो छः रोज़े रखेगा उसको भी यही कुछ मिलेगा और उसके अलावा ऐसा नूर भी अता होगा जिससे क़यामत में जमा होने वाले लोग रौशनी हासिल करेंगे और उसको अमन व अमान वाले लोगों के साथ उठाया जाएगा यहां तक कि वह बग़ैर हिसाब के पुल सिरात से गुज़र जाएगा नीज़ वालिदैन की नाफ़रमानी और क़तअ़ रहमी के गुनाह से भी उसको माफ़ी दे दी जाएगी, क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला के हुज़ूर में उसकी पेशी होगी तो रब्बुल इज़्ज़त बज़ाते ख़ुद उसकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाएगा। जो सात रोज़े रखेगा उसको मुंदजा बाला अज्र भी अता होगा और मज़ीद बरआं और अज्र भी मिलेगा। दोज़ख़ के सातों दरवाज़े उसके ऊपर बन्द कर दिये जाएंगे, अल्लाह तआला जहन्नम की आग को उस पर हराम कर देगा और जन्नत को उसके लिये वाजिब फ़रमा देगा वह जहां चाहे क़याम करे और जो आठ रोज़े रखेगा उसके लिये मज़कूरा बाला अज्र भी होगा और मज़ीद बरआं और अज्र भी मिलेगा। बहिश्त के आठों दरवाज़ें उस पर खोल दिये जाएंगे जिस दरवाज़े से चाहे उस दरवाज़े से दाख़िल हो, जो नौ रोज़े रखेगा उसको इस अज्र के अलावा और भी मिलेगा। उसका अमल नामा इल्लिइन में उठाया जाएगा, क़यामत के दिन अंबिया के साथ होगा, क़ब्र से निकलते वक़्त उसका चेहरा ऐसा ताबां और नूरपाश होगा कि तमाम अहले जन्नत के चेहरे जगमगा उठेंगे, यहां तक कि लोग कहेंगे कि क्या यह कोई बरगुज़ीदा नबी है? जो दरजात उस बन्दे को अता होंगे उनमें सबसे कम दर्जा यह होगा कि वह बग़ैर हिसाब दिये जन्नत में दाख़िल होने वालों में से होगा और जो दस रोज़े रखेगा उसका तो क्या ही कहना, वह हर तरह तारीफ़ व तौसीफ़ का मुस्तहिक़ होगा उसको दस गुना ज़ाएद सवाब मिलेगा वह उन लोगों में से होगा जिनकी बदियों को नेकियों से बदल दिया जाएगा वह अल्लाह के मुक़र्रबीन और अल्लाह के लिये अद्ल व इन्साफ़ पर क़ायम रहने वालों में से होगा वह उस शख़्स के मानिंद होगा जिसने हज़ार साल तक रोज़ादार रह कर ख़ुलूस और जज़्बा के साथ इबादत की हो।

जिसने बीस दिन के रोज़े रखे उसको बीस गुना सवाब मिलेगा वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़ुब्बा के रुबरू होगा और वह क़बीलए रबीआ और मुज़र के लोगों के बराबर ख़ताकारों और गुनाहगारों की शफ़ाअत करेगा।

जो शख़्स माहे रजब के तीस रोज़े रखेगा उसको उनके सवाब के अलावा तीस गुना और मज़ीद सवाब और अज्र मिलेगा। एक मुनादी आसमान से निदा करेगा कि ऐ अल्लाह के वली! करामते उज़मा की और की बशारत की। हुज़ूर ... अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया

गया कि हुजूर करामते उज़मा क्या है? फ़रमाया कि अल्लाह तआला के वजहे जमील की तरफ़ नज़र करना (दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ होना) और अंबिया, सिद्दिकीन और शोहदा की रिफ़ाक़त (जो बहुत ही अच्छे रफ़ीक़ हैं) करामते उज़मा है, ऐ माहे रजब के रोज़े रखने वाले! कल को जब हिजाबात उठ जाएंगे तू अपने रब के अज्रे अज़ीम तक पहुंचेगा और फिर तेरे लिये मुसर्रत ही मुसर्रत होगी।

मरते दम उस रोज़ादार पर जब मौत का फ़रिश्ता उतरेगा तो नज़अ के वक़्त अल्लाह तआला हौज़े फ़िरदौस का शरबत उसको पिलाएगा इस तरह मौत उस पर इस क़दर आसान हो जाती है कि उसकी तकलीफ़ उस को कतई महसूस नहीं होती। क़ब्र में वह सैराब रहता है और क़यामे महशर में भी सैराब रहेगा यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हौज़ (हौज़े कौसर) पर वह पहुंच जाएगा जब वह क़ब्र से उठेगा तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते, मोती और याकूत की ऊंटनियां, क़िस्म क़िस्म के ज़ेवर और ख़िलअतें साथ लेकर आएंगे और उससे कहेंगे कि ऐ अल्लाह के दोस्त अपने रब के पास जल्द चलो, जिसकी ख़ुशनूदी के लिये तुमने अपने आप को दिन भर प्यासा रखा और जिसकी रज़ा तलबी के लिए तुम ने अपने जिस्म को कमज़ोर और मुज़महिल किया, वह क़यामत के दिन फ़ाएज़ीन के साथ जन्नते अदन में सब से पहले दाख़िल होने वालों में होगा। अल्लाह उनसे और वह अल्लाह से राज़ी होंगे और अल्लाह की रज़ामन्दी सबसे बड़ी कामयाबी और फ़ौज़ व फ़लाह है। अगर कोई शख़्स रोज़ाना के रोज़ों के साथ अपनी रोज़ी के हम वज़्न ख़ैरात भी करेगा तो उसका क्या ठिकाना, उसका क्या ठिकाना, उसका क्या ठिकाना! हुजूर ने यह कलमात तीन मरतबा अदा फ़रमाए जो सवाब उसको दिया जाएगा अगर तमाम मख़लूक़ उसका अंदाजा करना चाहे तो उसके दसवें हिस्से का भी अंदाज़ा नहीं कर सकती।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर से मरवी है, उन्होंने फ़रमाया जिसने अपने मुसलमान भाई से रजब के महीने में जो अल्लाह का माहे असम है ग़म दूर किया तो अल्लाह उसको फ़िरदौस में निगाह की रसाई के बक़द्र वसीअ महल मरहमत फ़रमाएगा, ख़ूब सुन लो! तुम माहे रजब की इज़्ज़त करोगे अल्लाह तआला तुम्हें हज़ार दर्जा बुज़ुर्गी अता फ़रमाएगा।

हज़रत उक़बा बिन सलामा बिन क़ैस ने मरफ़ूअन रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने माहे रजब में सदक़ा दिया तो अल्लाह तआला उसको आग (जहन्नम) से इतना दूर कर देगा जितना कौआ हवा में परवाज़ करके अपने आशियाना से इस क़द्र दूर हो जाए कि उड़ते उड़ते बूढ़ा होकर मर जाए (बयान किया जाता है कि कौए की उम्र पांच सौ साल है) मुद्दआ यह कि कौआ पांच सौ बरस में जितना फ़ासिला अपने आशियाना से तय करेगा और उससे दूर होगा बक़द्र उस फ़ासिले के बन्दा दोज़ख़ से दूर हो जाएगा!

साबिक़ की वजहे तसमिया

रजब को साबिक़ कहने की वजह यह है कि हुरमत वाले महीनों में यह सबसे पहले आता है और फ़र्द कहने वजह यह है कि यह हुरमत का अकेला महीना है कोई दूसरा माहे हराम इसके साथ नहीं है जैसा कि हज़रत सौर बिन ज़ैद से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदाअ के मौक़ा पर अपने खुतबा में इरशाद फ़रमाया कि "ज़माना गर्दिश करके उसी मक़ाम पर आ गया जैसा कि ज़मीन व आसमान की आफ़रीनश के दिन था, साल

बारह महीने का है जिन में चार महीने हुरमत वाले हैं उनमें से तीन तो पै दर पै आते हैं ज़ीक़ादा, ज़िल हिज्जा और मोहर्रम और एक फ़र्द है यानी सबसे अलग वह रजब मुज़र है जो जमादीस सानी और शाबान के दर्मियान है।

हुरमत वाले महीनों के ख़ास औसाफ़

रजब की मज़ीद खुसूसियात

हज़रत इकरमा ने ब रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि आपने इरशाद फ़रमाया: रजब का महीना अल्लाह का महीना है, शाबान मेरा महीना है और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है। हज़रत मूसा बिन इमरान ने कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक से खुद सुना वह फ़रमा रहे थे कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया है कि जन्नत में एक नहर है जिस का नाम रजब है उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा शीरीं है। जिसने रजब का एक दिन का भी रोज़ा रखा अल्लाह उसको उस नहर का पानी पिलाएगा, हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुज़ूरे सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत में एक महल है उसमें सिर्फ़ वही दाख़िल होगा जिसने रजब के रोज़े रखे हैं।

हज़रत अबू हुरैरा का क़ौल है कि हुज़ूर ने रमज़ान के अलावा रजब और शाबान के सिवा किसी और महीने के पूरे रोज़े नहीं रखे हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि हुज़ूर इरशाद फ़रमाया जिस ने माहे हराम के तीन दिनों के रोज़े रखे यानी जुमेरात, जुमा, और हफ़्ता तो अल्लाह तआला उस के लिये सौ सौ साल की इबादत लिखेगा।

बाज़ असहाब का मकूला है कि रजब का महीना जुल्म छोड़ने के लिए, माहे शाबान आमाल दीन के अहद के लिए और रमज़ान का महीना सिद्क़ व सफ़ा के लिए है। रजब तौबा का महीना है, शाबान मोहब्बत का रमज़ान कुरबे इलाही का। रजब इज़्ज़त का महीना है, शाबान ख़िदमत का और रमज़ान नेमते इलाही का। रजब माहे इबादत है, शाबान दुनिया से क़तअ़ ताल्लुक़ और बेनियाज़ी का और रमज़ान कसरते सवाब (और नेकी में ज़्यादती) का महीना है, रजब ऐसा महीना है जिसमें अल्लाह तआला नेकियां दो चन्द कर देता है, शाबान के महीने में अल्लाह तआला बुराईयों को दूर कर देता है और रमज़ान अताए एजाज़ का महीना है। रजब नेकियों में सब से आगे बढ़ जाने वाले का महीना है, शाबान मियाना रवी एख़तियार करने वालों का और रमज़ान गुनाहगारों की माफ़ी का महीना है।

हज़रत जुन्नून मिसरी ने फ़रमाया कि रजब आफ़तों को तर्क करने के लिए, शाबान इबादत करने के लिए और रमज़ान करामतों की अता का इंतज़ार करने के लिए है, जो आफ़तों को तर्क न करे, इबादात बजा न लाए और करमातों का इन्तज़ार न करे वह अहले बातिल से है। हज़रत जुन्नून ने यह भी फ़रमाया, रजब खेती बोने का महीना है और शाबान खेत को सैराब करने और रमज़ान खेती काटने का महीना है, हर शख़्स वही काटेगा जो उसने बोया है और उसी का बदला पायेगा जो अमाल उस ने किए हैं पस वह जिसने खेती बोई नहीं वह काटते वक़्त शर्मसार होगा और उसी के साथ उसका अंजाम बुरा होगा।

बाज़ सालेहीन ने फ़रमाया कि साल एक दरख़्त है और रजब के अय्याम उसके पत्ते हैं, शाबान के अय्याम उस के फल हैं और रमज़ान के दिन मेवा चीनी के दिन हैं, एक क़ौल यह भी है कि रजब को अल्लाह तआला की तरफ़ से मोजज़ात के साथ, शाबान को शफ़ाअत के साथ और रमज़ान को नेकियां बढ़ाने के साथ, शबे क़द्र को नुज़ूले रहमत के साथ और यौमे अरफ़ा को दीन की तकमील के साथ मख़सूस किया गया है, अल्लाह तआला का इरशाद है: आज मैंने तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया। यह आयत यौमे अरफ़ा में नाज़िल हुई थी, इसी तरह जुमा का दिन दुआओं के मक़बूल होने के लिये और यौमे ईद को आतिशे दोज़ख से रूस्तगारी के लिये और मोमिनों की गरदनें (गुलामी से) आज़ाद करने के लिए मख़सूस कर दिये गये हैं। माज़नी रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत इमाम हुसैन का क़ौल नक़्ल किया है कि आप ने फ़रमाया कि रजब के रोज़े रखा करो क्योंकि रजब के रोज़े बारगाहे इलाही की तरफ़ से एक तौबा है (नाज़िल करदा) हज़रत सलमान फ़ारसी से मरवी है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना कि आप ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने रजब का एक रोज़ा रखा गोया उसने हज़ार बरस के रोज़े रखे और हज़ार गुलाम आज़ाद किये और जिसने माहे रजब में कुछ भी ख़ैरात की उसने गोया हज़ार दीनार ख़ैरात किये। अल्लाह तआला बदन के हर बाल के मुक़ाबिल उसके लिये नेकी लिखेगा और हज़ार दर्जा बलन्द करके उसकी हज़ार बुराईयां (गुनाह) महव फ़रमा देगा उसके हर रोज़े और हर सदक़े के मुक़ाबला में हज़ार हज और हज़ार उमरे लिखेगा उसके लिये जन्नत में हज़ार मकान, हज़ार महल, हज़ार कमरे और हर कमरे में हज़ार ख़ेमे में हज़ार ऐसी हूरें जो आफ़ताब से हज़ार दर्जा ज़्यादा हसीन होंगी अता फ़रमायेगा।

माहे रजब के पहले रोज़े और पहली रात के क़याम की फ़ज़ीलत

इमाम हिब्तुल्लाह सिक़ती ने अपनी इसनाद के साथ हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि उन्होंने कहा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदते करीमा थी कि जब रजब का महीना शुरु होता तो आप दुआ फ़रमाते: इलाही हमारे लिये रजब और शाबान में बरकत दे और हमें रमज़ान तक पहुंचा। इमाम हिब्तुल्लाह ने अपनी इसनाद के साथ हज़रत अबू ज़र की हदीस मरफ़ूअन बयान की कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने रजब का पहला रोज़ा रखा उसका यह रोज़ा महीना भर के रोज़ों के बराबर होगा और जिसने सात दिन के रोज़े रखे उस पर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जायेंगे और जो आठ रोज़े रखेगा उस पर जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जायेंगे, जिसने दस दिन के रोज़े रखे अल्लाह तआला उसकी बुराईयों को नेकियों से बदल देगा और जिसने रजब के अठारह रोज़े रखे तो एक मुनादी आसमान से पुकारेगा कि ऐ बन्दो! बिला शुबहा तुझे बख़्श दिया गया अब अज़ सरे नौ अमल शुरु कर।

हमारे इमाम हज़रत हिब्तुहल्लाह सिक़ती ने अपनी इसनाद के साथ बरिवायत हज़रत सलामा बिन क़ैस मरफ़ूअन बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्ल्म ने फ़रमाया जो शख़्स रजब का पहला रोज़ा रखेगा अल्लाह तआला उसके दस साल के गुनाह माफ़ फ़रमा देगा और जो पन्द्रह दिन के रोज़े रखेगा अल्लाह तआला उसके हिसाब में बहुत आसानी फ़रमा देगा और जिसने तीस रोज़े रखे अल्लाह तआला अपनी ख़ुशनूदी उसके लिये लिख देगा और उसको

अज़ाब नहीं देगा।

रिवायत है कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने हुज्जाज बिन अरताह हाकिमे बसरा को, और एक रिवायत है कि अदी बिन अरताह को लिखा कि साल में चार रातों में इबादत ज़रुर करो, इन रातों में अल्लाह तआला अपनी रहमत बहाता है। वह चार रातें यह हैं: रजब की पहली रात, शाबान की पन्द्रहवीं रात, रमज़ान की सत्ताइसवीं रात और ईदुलफित्र की रात। हज़रत ख़ालिद बिन मअदान ने फ़रमाया कि साल में पांच रातें ऐसी हैं कि जिसने उनका इल्तिज़ाम किया, उनके सवाब के हुसूल की कोशिश की और उन वादों की तसदीक़ की, तो अल्लाह तआला उस को जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा (1) रजब की पहली रात, उस रात को क़याम करे और उसके दिन का (दूसरे दिन का) रोज़ा रखे (2) ईदैन की दो रातें, रातों को क़याम करे लेकिन दिन में रोज़ा न रखे (3) एक रात आशूरह की रात को क़याम करे और दिन में रोज़ा रखे।

साल की वह रातें जिनमें क़याम करना मुस्तहब है

बाज़ उलमा ने साल भर की उन रातों को जमा किया है जिनमें इबादत करना मुस्तहब है, उन्होंने बताया है कि यह कुल चौदह रातें हैं जिनकी तफ़सील इस तरह है।

1–माहे मुहर्रम की पहली रात	1
2–आशूरह की रात	1
3–माहे रजब की पहली रात	1
4–रजब की पन्द्रहवीं शब	1
5–रजब की सत्ताईसवीं रात	1
6–शाबान की चौदहवीं रात	1
7–अरफ़ा की रात	1
8–ईदैन की दो रातें (ईदुलफित्र और ईदुलअज़हा)	2
9–रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अशरह की पाँच ताक़ रातें(21–23–25–27–29)	5
कुल चौदह रातें	

इसी तरह साल में उन्नीस दिन ऐसे हैं जिनमें इबादत करनी और औराद व विज़ाइफ़ में मशगूल रहना मुस्तहब है यानी

1–यौमे अरफ़ा	1
2–यौमे आशूरह	1
3–शाबान का पन्द्रहवां दिन	1
4–जुमा का दिन	1
5–ईदैन के दोनों दिन	2
6–ज़िलहिज्जा के इब्तिदाई दस दिन (अय्यामे मालूमात)	10
7–अय्यामे तशरीक़, 11, 12, 13, ज़िलहिज्जा (अय्यामे मादूदात)	3

इनमें सबसे ज़्यादा ताकीद रोज़े जुमा की और माहे रमज़ान की है, हज़रत अनस से मरवी

है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब जुमा का दिन सलामत रहता है तो दूसरे तमाम दिन सलामत रहते हैं और जब माहे रमज़ान सलामत रहता है तो पूरा साल सलामत रहता है, इसके बाद तमाम दिनों से ज़्यादा दो शंबा और पन्जशंबा की ताकीद और फ़ज़ीलत है, इन्हीं दोनों दोनों में अल्लाह के सामने बन्दों के आमाल पेश होंगे।

माहे रजब की अदिइय्या मासूरह

रजब की पहली रात में पढ़ी जाने वाली दुआयें

मुस्तहब है कि माहे रजब की पहली रात में नमाज़ से फ़ारिग़ होकर यह दुआ पढ़े:

इलाही इस रात में बढ़ने वाले तेरे हुजूर में बढ़े और तेरी तरफ़ क़स्द करने वालों ने क़स्द किया और तालिबों ने तेरी बख़्शिश और तेरे एहसान की उम्मीद रखी, इस रात में तेरी तरफ़ से मेहरबानियां, अतिये और बख़्शिशें हैं, तू ही उन पर एहसान करता है जिन को चाहता है और जिन पर तेरी इनायत न होगी उनसे रोक लेगा, मैं तेरा मोहताज बन्दा हूं तेरे फ़ज़्ल व करम का उम्मीदवार हूं। मेरे मौला इस रात अगर तू कसी मख़लूक़ पर फ़ज़्ल करे और अपनी इनायत से किसी को नवाज़े तो सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और अपने फ़ज़्ल व एहसान से मुझ पर नवाज़िश फ़रमा, या रब्बुलआलमीन!

रिवायत है कि हज़रत अली का दस्तूर था कि आप साल में चार रातें हर काम से ख़ाली कर के इबादत के लिए मख़सूस फ़रमाया करते थे (उन चार रातों में ख़ास तौर पर इबादत फ़रमाते थे) माहे रजब की पहली रात ईदुलफ़ित्र की रात, ईदुलअज़्हा की रात और माहे शाबान की पन्द्रहवीं रात।

उन रातों में आप यह दुआ पढ़ा करते थे:

या अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप की आल पर दरूद और रहमत भेज, यह लोग हिकमत व दानाई के चिराग़ हैं, नेमत के मालिक हैं, इस्मत व पाकी की कानें हैं, मुझे भी उनके साथ हर बदी से महफ़ूज़ रख, गुरुर और तकब्बुर के सबब मुझे न पकड़, मेरे अंजाम को हसरत व नदामत वाला न बना, तू मुझसे राज़ी होजा, बेशक तेरी मग़फ़िरत ज़ालिमों के लिए है और मैं ज़ालिमों में से हूं, इलाही! मुझे वह चीज़ अता फ़रमा जो तुझे ईज़ा नहीं देती और मुझे वह चीज़ बख़्श दे जो मुझे फ़ाएदा देने वाली है, तेरी रहमत वसीअ़ है, तेरी हिकमत नादिर और अजीब है, मुझे राहत और कुशादगी अता फ़रमा, अमन व तन्दुरुस्ती बख़्श दे, अपनी नेमत पर शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ मरहमत कर, आफ़ियत व परहेज़गारी और सब्र इनायत कर, अपने और अपने दोस्तों के नज़दीक मुझे रास्ती और लुत्फ़ इनायत फ़रमा, सख़्ती के बाद आसानी दे, मेरे अहल मेरे फ़रज़न्दों और मेरे भाईयों पर जो तेरी राह पर चलने वाले हैं और मुसलमानों के बेटों और बेटियों पर, मुसलमान मर्द और औरतों पर अपनी रहमत आम फ़रमा दे और सबको अपनी रहमत में शामिल फ़रमा।

माहे रजब की नमाज़ें

रजब के महीने में बीस रकअत नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

शैख़ इमाम हिब्तुल्लाह बिन मुबारक सिक़ती ने हमसे हदीस बयान जो चन्द असनाद से उन तक पहुंची थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ सलमान! रजब का चांद तुलू हो गया अगर इस महीने में कोई मोमिन मर्द या औरत बीस रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा और सूरह इख़लास तीन बार और सूरह अल काफ़िरुन तीन बार पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसके तमाम गुनाहों को महव फ़रमा देता है और उसको इतना अज्र अता फ़रमायेगा कि जैसे उसने पूरे महीने के रोज़े रखे और उसका शुमार आईन्दा साल तक नमाज़ पढ़ने वालों में होगा (यानी उसको साल भर की नमाज़ों का सवाब मिलेगा) और शहीदे बद्र के अमल के बराबर उसके आमाल को रोज़ाना बलन्द से बलन्द तर किया जायेगा और हर दिन के रोज़ा के एवज़ साल भर की इबादत का सवाब उसके लिये लिखा जायेगा और उसके हज़ार दरजे बलन्द किये जायेंगे और अगर उसने पूरे महीने (माहे रजब के) रोज़े रखे और यही नमाज़ पढ़ी तो अल्लाह तआ़ला उसको दोज़ख़ से बचा लेगा और उसके लिये जन्नत वाजिब कर देगा वह खुदावन्दे दो जहां के कुर्ब व जवार में होगा, मुझे इसकी ख़बर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने दी है, जिब्रील ने कहा था कि यह आपके और मुशरिकों और मुनाफ़िक़ों के दर्मियान फ़र्क़ पैदा करने वाली निशानी है। मुनाफ़िक़ यह नमाज़ नहीं पढ़ते हैं। हज़रते सलमान कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे बताइये कि मैं यह नमाज़ किस तरह पढूं।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अव्वल माह में दस रकअतें पढ़ो और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार, सूरह इख़लास तीन बार और कुल या अय्युहल काफ़िरून तीन बार और जब सलाम फेरो तो हाथ उठाकर यह दुआ पढ़ोः

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह यकता व यगाना है, उसका कोई शरीक नहीं सब मुल्क उसी का है, उसी के लिये हम्द है वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है वह खुद हमेशा ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आती, नेकी उसी के हाथ में है वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है, जिसे तू अता करता है कोई उसे रोक नहीं सकता और जिसे तू रोक दे उसे कोई देने वाला नहीं, तेरी मर्ज़ी के अलावा कोई शख़्स कोशिश करे तो वह लाहासिल है।

हुज़ूर ने फ़रमाया और दस रकअतें वस्त माह में पढ़ो इस तरह कि हर रकअत में अलहम्द एक बार, सुरह इख़लास तीन बार और कुल या अय्युहल काफ़िरून तीन बार, सलाम फेरने के बाद हाथ उठाकर कहोः

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है उसका कोई शरीक नहीं तमाम मुल्क उसी का है, उसी के लिये तमाम मुल्क है, उसी के लिये हम्द है वही सबको ज़िन्दा करता है और मारता है वह हमेशा से है उसे कभी मौत नहीं आयेगी, सब नेकियां उसी के हाथ में हैं, वह हर चीज़ पर क़ादिर है, वह यकता है, उसका कोई नज़ीर नहीं वह यकता व यगाना है, न उसकी कोई बीवी है और न कोई औलाद।

यह दुआ पढ़कर दोनों हाथ मुंह पर फेर लो। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद

फ़रमाया कि महीने के आखिर में दस रकअतें पढ़ो हर रकअत में सूरह फ़ातिहा, सूरह इख़्लास और कुल या अय्युहल काफ़िरून तीन बार, सलाम फेरने के बाद आसमान की तरफ़ हाथ उठा कर कहो।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता है उस का कोई शरीक नहीं उसी की हुकूमत है वही तारीफ़ का सज़ावार है वह ज़िन्दा करता है और मौत देता है, उसी के हाथ में हर भलाई है वही हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है, हमारे आक़ा (हज़रत)मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और आप की पाक आल पर अल्लाह की रहमत हो, उंचे मर्तबा वाले, अल्लाह के बग़ैर न कोई कूव्वत है और न ताक़त।

इसके बाद मूराद मांगो तुम्हारी दुआ क़बूल होगी, अल्लाह तआला तुम्हारे और जहन्नम के दर्मियान सत्तर ख़न्दकें हाएल फ़रमा देगा हर ख़न्दक़ इतनी वसीअ व तवील होगी जैसे ज़मीन से असमान तक का फ़ासला, हर रकअत के एवज़ दस लाख (हज़ार दर हज़ार) रकअतें लिखी जायेंगी (दस लाख रकअतों का सवाब मिलेगा) जहन्नम से आज़ादी और पुल सिरात से (बग़ैर किसी स ख़तरे) के उबूर तुम्हारे लिये मुकर्रर कर दिया जायेगा। हज़रत सलमान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम जब यह बयान फ़रमा चुके तो मैं इस अज़ीम अज्र पर अल्लाह का शक्र अदा करने के लिये रोता हुआ सजदे में गिर पड़ा। मैंने यह हदीस किताबुल अमल बिस्सुन्नह में पढ़ी थी।

रजब की पहली जुमेरात के रोज़े और अव्वल शबे जुमा की नमाज़ की फ़ज़ीलत

रजब की नौ चन्दी जुमेरात का रोज़ा

हम से शैख इमाम हिब्तुल्लाह सिकती ने और उनसे क़ाज़ी अबुलफ़ज़्ल मक्की जाफ़र बिन यहया बिन कमाल ने बयान किया और उनसे अबू अब्दुल्लाह हुसैन जरज़ी बिन अब्दुल करीम बिन मुहम्मद ने मक्का में मस्जिदे हराम में बयान किया और जरज़ी से अबुल हसन अली हमदानी ने बरिवायत अबुल हसन अली सअदी बसरी बिन मुहम्मद सईद बयान किया और उनसे उनके वालिद ख़लफ़ बिन अब्दुल्लाह ज़आई ने बयान किया और ख़लफ़ बिन अब्दुल्लाह ने बरिवायत हमीद तवील हज़रत अनस बिन मालिक का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया रजब का महीना अल्लाह का महीना है और शाबान मेरा महीना है और रमज़ान का महीना मेरी उम्मत का महीना है। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह अल्लाह के महीने से क्या मतलब है? हुज़ूर ने फ़रमाया इस माह में ख़ास तौर पर मग़फ़िरत होती है, इस माह में ख़ूंरेज़ी से बचाया गया है, इस महीने में अल्लाह ने अपने नबियों की दुआयें क़बूल फरमाईं और इसी माह में अपने दोस्तों को दुश्मनों से रिहाई अता की जिसने इस माह के रोज़े

रखे तो उसने अल्लाह तआला के ज़िम्मा तीन चीजें वाजिब कर लीं। तमाम गुज़िश्ता गनाहों की माफ़ी आईन्दा उम्र में होने वाले गुनाहों से बाज़दाश्त और तीसरे यह कि क़यामत के दिन (बड़ी तेशी के दिन) प्यासे होने का अन्देशा बाक़ी नहीं रहेगा, यह सुनकर एक ज़ईफ़ शख़्स ने खड़े हो कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं (बुढ़ापे के बाएस) पूरे महीने के रोज़े रखने से आजिज़ व क़ासिर हूं आप ने फ़रमाया अव्वल तारीख़, दर्मियानी तारीख़ और आख़िरी तारीख़ का रोज़ा रख लिया करो तुम को पूरे महीने के रोज़ों का सवाब मिलेगा, क्योंकि इस माह में हर नेकी का सवाब दस गुना है, मगर रजब के पहले जुमा की रात से ग़ाफ़िल न रहना क्योंकि यह रात ऐसी है कि फ़रिश्ते इस रात को लैलतुर्रग़ाएब (मक़ासिद की रात) कहते हैं। जब इस शब की अव्वल तिहाई गुज़र जाती है तो तमाम आसमानों और ज़मीनों में कोई फ़रिश्ता ऐसा बाक़ी नहीं रहता जो काबा या अतराफ़ काबा में जमा न हो जाये, उस वक़्त अल्लाह तआला तमाम मलाइका को अपने दीदार से नवाज़ता है और फ़रमाता है मुझसे मांगो जो चाहो, फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं, ऐ रब! हमारी अर्ज़ यह है कि तू रजब के रोज़ादारों को बख़्श दे, अल्लाह तआला फ़रमाता है मैंने उन्हें बख़्श दिया, इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने रजब की पहली रात जुमेरात का रोज़ा रखा और उसकी रात (शबे जुमा) में मग़रिब व इशा की नमाज़ के दर्मियान बारह रकअतें पढ़ीं और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरतुल क़द्र तीन बार और सूरह इख़लास बारह मरतबा पढ़ी और हर दो रकअत के बाद सलाम फेरा और नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद सत्तर बार मुझ पर दरुद पढ़ा और, और अल्लाहुम्मा सल्ले अला सय्यदना मुहम्मदिन नबीइल उम्मी व अला आलेहि वसल्लम पढ़ कर एक सजदा किया और सजदे में सत्तर मर्तबा, सुब्बूहुन कुद्दुसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूहि पढ़ कर सजदे से सर उठाया और सत्तर मरतबा यह दुआ पढ़ी रब्बिग़ फ़िर वरहम तजावज़ अम्मा नअल म फ इन्न क अन्तल अज़ीज़ुल आज़मो यह दुआ पढ़ कर पहले सजदा की तरह दूसरा सजदा किया और सजदा की हालत में ही अल्लाह से अपनी मुराद मांगी तो उसकी मुराद पूरी कर दी जायेगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि जो बन्दा पाबन्दी से यह नमाज़ पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देगा, ख़्वाह वह समुन्दर के झागों, रेत के ज़र्रों के बराबर या पहाड़ों के हम वज़्न हों या बारिश के क़तरों और दरख़्तों के पत्तों के बराबर गिन्ती में हों। क़यामत के दिन अपने घर के (कुंबा के) सात सौ आदमियों के हक़ में उसकी शफ़ाअत अल्लाह तआला क़बूल फ़रमायागा और जब क़ब्र में उसकी पहली रात होगी तो उस नमाज़ का सवाब शगुफ़ता रवी और फ़सीह ज़बान के साथ उसके सामने आयेगा और उस से कहेगा, ऐ मेरे प्यारे तुझे बशारत हो यक़ीनन हर शिद्दत और सख़्ती से तू नजात में रहेगा, वह शख़्स पूछेगा तू कौन है? मैंने तेरे चेहरे से ज़्यादा हसीन कोई चेहरा नहीं देखा, तुम्हारी शीरीं गुफ़तार से ज़्यादा किसी की गुफ़तार नहीं पाई और न तुम्हारी खुशबु से बढ़कर किसी की मैंने खुशबु सूंघी, वह जवाब देगा, ऐ मेरे प्यारे! मैं तेरी उस नमाज़ का सवाब हूं जिसे तू ने फ़लां साल फ़लां महीना में पढ़ा था आज मैं इसलिए आया हूं कि तेरी हाजत पूरी करूं और तेरी तन्हाई का शरीक बनूं तुझ से वहशत को दूर करूं, जब क़यामत के दिन सूर फूंका जायेगा तो अरसए महशर में तेरे सर पर मैं साया करुंगा पस तू खुश हो जा तू अपने आक़ा की तरफ़ से अपनी नेकी को कभी ज़ाया नहीं देखेगा (तेरी नेकी कभी ज़ाया नहीं होगी)।

27 रजब के रोजे की फ़ज़ीलत

शैख़ अबुल बरकात हिब्तुल्लाह सिक़ती ने असनाद के साथ बरिवायत हज़रत अबू हुरैरा बयान किया कि हुज़ूर सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने सत्ताईसवीं रजब का रोज़ा रखा उसको साठ महीनों के रोज़ों का सवाब मिलेगा। उसी दिन हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बारगाह में रिसालत ले कर नाज़िल हुए।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास का मामूल

इमाम अबुल बरकात हिब्तुल्लाह ने अपनी असनाद के साथ हज़रत हसन बसरी से रिवायत की कि उन्होंने कहा हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास का मामुल था कि जब सत्ताईसवीं रजब आती तो वह ऐतकाफ़ में बैठे होते थे और बाद नमाज़े ज़ोहर नफ़्ल पढ़ने में मशगूल हो जाते इसके बाद वह चार रकअतें पढ़ते और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक मरतबा सूरतुल क़द्र तीन बार और सूरह इख़लास पचास मरतबा पढ़ते थे फिर अस्र तक दुआओं में मशगूल रहते उन्होंने फ़रमाया कि सरवरे कौनेन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मामूल था।

शैख़ हिब्तुल्लाह ने अपनी असनाद से बरिवायत अबू सलमा हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत सलमान फ़ारसी नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि माहे रजब में एक दिन और एक रात ऐसी है कि अगर उस दिन का कोई रोज़ा रखे और उस रात को इबादत करे तो उसको एक सौ बरस रोज़े रखने वाले और सौ साल की रातों में इबादत करने वाले के बराबर अज्र मिलेगा। यह रात वह है जिसके बाद रजब की तीन रातें रह जाती हैं (यानी सत्ताईसवीं शब) और यह वह दिन है जिस दिन अल्लाह तआला ने रसूले करीम को रिसालत अता फ़रमाई।

रोज़ा के आदाब और गुनाहों से एहतराज़ की फ़ज़ीलत

रोज़ादार के लिए ज़रुरी शरायत

रोज़ादार के लिऐ ज़रुरी है कि उसका रोज़ा गुनाहों से ख़ाली हो, अल्लाह तआला के तक़वा के साथ उसको पूरा करे। हम से शैख़ हिब्तुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत ब्यान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रजब हुरमत वाले महीनों में से है, इसके तमाम दिन छटे आसमान पर तहरीर हैं अगर कोई शख़्स रजब के किसी दिन का रोज़ा रखता है और अल्लाह के ख़ौफ़ से अपने रोज़े को गुनाहों से महफ़ूज़ रखता है तो वह रोज़ा भी कलाम करता है वह दिन भी उससे बोलता है और दोनों उसके हक़ में दुआ करते हैं कि परवरदिगार!! इस रोज़े रखने वाले को बख़्श दे और अगर किसी के रोज़ा की तकमील अल्लाह के तक़वा के साथ नहीं होती तो दोनों इसके लिये दुआए मग़फ़िरत नहीं करते

और कहते हैं, ऐ शख़्स तुझे तेरे नफ़्स ने फ़रीब दिया।

बरिवायत अअ़रज हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा जहन्नम की आग के लिये ढाल है अगर किसी का रोज़ा हो तो वह जिहालत की हरकतें न करे अगर उसको कोई गाली दे या उससे लड़े तो उसको चाहिए कि वह उससे कह दे कि मैं रोज़ादार हूं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसने रोज़ा में झूट बोलना और झूट पर अमल करना न छोड़ा तो उसके खाना पीना छोड़ देने की अल्लाह को कोई ज़रुरत नहीं है।बरिवायते हसन बसरी हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया रोज़ा जहन्नम की ढ़ाल है जब तक रोज़ादार उसके टुकड़े टुकड़े न कर दे, किसी ने अर्ज़ किया कि ढाल को कौन सी चीज़ टुकड़े टुकड़े कर डालती है? हुज़ूर ने फ़रमाया झूट और ग़ीबत।

हज़रत अबू हुरैरा से यह हदीस भी मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि सिर्फ़ खाना पीना तर्क कर देने से रोज़ा नहीं होता बल्कि बेहूदा और लग़वियात से बचना रोज़ा है। शैख़ अबू नस्र मोहम्मद बिन अलबन्ना से बिल असनाद हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पांच चीज़ें रोज़े को ख़राब कर देती हैं और उन ही पांच चीज़ों से वज़ू नाक़िस हो जाता है और वह यह हैं:

(1) झूठ बोलना (2) चुग़ली खाना (3) ग़ीबत करना (4) शहवत से किसी औरत या मर्द को देखना (5) झूठी क़सम खाना। शैख़ अबू नस्र ने बहवाला अबू अला बिल असनाद हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो लोगों का गोश्त खाता रहा (ग़ीबत करता रहा) उसका रोज़ा नहीं है। अबू नस्र ने अपने वालिद से उन की उनकी असनाद के साथ बयान किया कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ने फ़रमाया कि जिसने किसी औरत के अक़ब से भी उसके कपड़ों के ऊपर नज़र जमा कर देखा उसका रोज़ा बेकार हो गया, (बातिल हो गया)।

शैख़ अबू नस्र ने असनाद के साथ रिवायत की है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया जब तुम रोज़ा रखो तो याद रखो कि तुम्हारे कानों, आंखों और ज़बानों का भी रोज़ा झूठ बोलने और हराम चीज़ों के देखने से है, अपने पड़ोसी को ईज़ा न दो और रोज़े में वक़ार और संजीदगी को क़ायम रखना चाहिए, अपने रोज़े के दिन को बग़ैर रोज़े के दिन की तरह न बनाओ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बहुत से रोज़ादार ऐसे हैं कि उनका रोज़ा भूके पड़े रहने के सिवा कुछ नहीं। बहुत से इबादत गुज़ार और शबे ज़िन्दादार ऐसे हैं जिनकी बेदारी जागने के सिवा कुछ और नहीं ऐसे आमाल से अर्श लरज़ जाता है और अल्लाह तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाता है, इस इरशादे गिरामी से हुज़ूर की मुराद यह थी कि ताअ़त व इबादत अगर लिवजहिल्लाह न हो सिर्फ़ महज़ दिखावे के लिये हो तो यह बात पैदा हो जाती है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं शरीक से बेतर हूं जिसने अपने अमले ख़ैर में मेरे सिवा किसी और को शरीक किया तो वह अमल मेरे लिए नहीं होगा बल्कि उसी शरीक के लिये होगा, मैं तो उसी अमल को क़बूल करता हूं जो कुल्लियतन मेरे लिये हो, ए इब्ने आदम! मैं सबसे बेहतर तक़सीम करने वाला हूं तू अपने अमल को देख जो तूने मेरे लिए किया है तेरे इस अमल के बदला में ज़िम्मेदारी उसी की है जिस

के लिये तूने अमल किया है।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी दुआ में यह अलफ़ाज़ फ़रमाया करते थे: इलाही! मेरी ज़बान को झूठ से पाक रख, मेरे दिल को निफ़ाक़ से बचा, मेरे अमल को रिया कारी और ख़यानत से पाक रख क्योंकि तू आंखों की ख़यानत और उन बातों को जो सीने में पोशीदा हैं जानता है।

पस रोज़ादार का लाज़िम है कि रोज़े के आदाब (शराइत) को मलहूज़ रखे, रोज़े में दिखावट (नमूद) नुमाईश और मख़लूक़ को अपने रोज़े से बा ख़बर करने से परहेज़ करे उसी तरह और दूसरी इबादतों में इन आदाब को मलहूज़ रखे ताकि दीन व दुनिया में नुक़सान ये महफ़ूज़ रहे।

शैख़ अबू नस्र ने बिल असनाद बयान किया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमा रहे थे कि मैंने खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते सुना कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने यौमे ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा के सिवा तमाम उम्र रोज़े रखे। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने भी निस्फ़ उम्र रोज़े रखे, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हर माह में तीन दिन यानी 13,14,15 को रोज़े रखे इस तरह तमाम उम्र रोज़े रखे और तमाम न रखे।

शैख़ अबू नस्र ने बिल असनाद जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि एक बदवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में आया और कहा या रसूलल्लाह! मुझे आप अपने रोज़ों के बारे में बताइए, यह सुन कर हुजूर को इस क़दर गुस्सा आया कि हुजूर के दोनों पाक रुख़सार सुर्ख़ हो गए, हज़रत उमर ने जब यह हाल देखा तो उस बदवी को बहुत झिड़का और झिड़का यहां तक कि वह खामोश हो गया, जब रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुस्सा फरू हो गया तो हज़रत उमर ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं आप पर कुरबान! मुझे उस शख़्स के बारे में बताइए जिसने तमाम रोज़े रखे? आपने फ़रमाया कि, न तो वह रोज़ादार है और न ग़ैर रोज़ादार, हज़रत उमर ने फिर पूछा कि जो तीन दिन रोज़ा से रहे? आप ने फ़रमाया। उसने तमाम उम्र का रोज़ा रखा, फिर दरयाफ़्त किया कि उस शख़्स के बारे में इरशाद फ़रमाइए जो दो शंबा और पंज शंबा को रोज़ा रखता है, हुजूर ने फ़रमाया कि पंज शंबा तो ऐसा दिन है जिस दिन आमाल उठाए जाते और दो शंबा ऐसा दिन है कि उस दिन मैं पैदा हुआ और यह वही दिन है जिस दिन मुझ पर वही नाज़िल की गई।

इफ़्तारे सौम

रोज़ा इफ़्तार करने की दुआ

जब रोज़े के इफ़्तार का वक़्त हो जाए तो इफ़्तार से पहले यह दुआ पढ़े।

ऐ अल्लाह! मैंने तेरे लिए ही रोज़ा रखा और तेरे ही रिज़्क़ से इसको इफ़्तार करता हूं (खोलाता हू) तेरे लिए पाकी है और तेरे ही लिए हम्द है, हमारी दुआ क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही सुनने वाला और जानने वाला है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अलआस रोज़ा खोलते वक़्त यह दुआ पढ़ते थे: इलाही मैं तुझसे तेरी उस रहमत के सदक़े में जो तमाम चीज़ों पर मुहीत है, तुझसे मग़फ़िरत का तलबगार हूं

अबुल आलिया का क़ौल है कि जो शख़्स इफ़्तार के वक़्त यह दुआ पढ़ेगा

तमाम तरीफ़ें उस ख़ुदा को (सज़ावार हैं) जो बरतर है और ग़ालिब है और हम्द उसी ख़ुदा को है जिसने देखा और पसन्द किया और हम्द उसी ख़ुदा को जो मालिक है और क़ादिर है और हम्द उसी ख़ुदा को जो मुर्दे को ज़िन्दा करता है।

तो गुनाहों से ऐसा पाक हो जाएगा जैसे मां के पेट से पैदाईश के दिन (गुनाहों से पाक व साफ़) था।

(हज़रत) मुसअब बिन सईद ने बरिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर हज़रत सईद बिन मालिक से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी सहाबी के यहां रोज़ा इफ़्तार करते तो इरशाद फ़रमाते:

रोज़ादारों ने तुम्हारे पास इफ़्तार किया और नेकियों ने तुम्हारा खाना खाया और फ़रिश्तों ने तुम पर रहमत भेजी।

माहे रजब की बरकतें

माहे रजब ऐसा महीना है कि इसमें दुआयें क़बूल और ख़तायें माफ़ होती हैं और जिसने इस महीना में गुनाह किया उसपर उसका दो गुना अज़ाब किया जाता है, इस सिलसिला में शैख़ हिब्तुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत हुसैन बिन अली कर्रमल्लाह वजहहू से रिवायत की, हज़रत हसन ने फ़रमाया कि हम तवाफ़ में मशगूल थे कि एक आवाज़ सुनी, कोई शख़्स कह रहा है।

ऐ वह ज़ात जो तारीकियों में ग़म ज़दा की दुआ क़बूल करता है, ऐ वह ज़ात जो बीमारियों के साथ ग़म व बला दूर करता है। बेशक तेरे गरोह ने काबा और हरम के गिर्द रात गुज़ारी और मैं दुआ कर रहा हूं और चश्मे इलाही नहीं सोती है। अपने फ़ज़्ल व करम के सदक़ा में मेरे गुनाहों को बख़्श दे। ऐ वह कि जिसकी बख़्शिश की तरफ़ लोग इशारा करते हैं। अगर तेरी माफ़ी गुनहगार की जानिब सबक़त न करे। कौन है जो गुनहगारों पर बख़्शिश करे।

हज़रत हुसैन फ़रमाते हैं कि मुझसे मेरे वालिद ने फ़रमाया! ऐ हुसैन तुम सुन रहे हो कि वह अपने गुनाहों पर किस तरह रो रहा है और अपने रब को किस तरह पुकार रहा है तुम उधर जाओ शायद वह तुम को मिल जाये उसे बुला लाओ, हज़रत हुसैन फ़रमाते हैं कि मैं उस तरफ़ गया और वह मुझे मिल गया, मैंने उसे देखा कि वह एक खूबसूरत छरेरे बदन का आदमी है उसके कपड़े साफ़ थे और ख़ुशबू आ रही थी मगर उसका दाहिना बाजू शल था मैंने उससे कहा कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहो वजहहू तुमको बुला रहे हैं यह सुनकर वह शख़्स उठा और मफ़लूज हिस्सा को खींचता हुआ हज़रत अमीरूल मोमिनीन की ख़िदमत में पहुंचा उन्होंने उसका हाल दरयाफ़्त किया और पूछा तुम कौन हो, उसने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन आप इसका हाल क्या दरयाफ़्त फमाते है, जो अज़ाब में गिरफ़्तार हो और अहल व अयाल के हुक़ूक़ की अदायगी से रोक दिया गया हो (अपाहिज हो) आप ने उसका नाम दरयाफ़्त फ़रमाया, उसने अपना नाम" मनाज़िल बिन लाहक़" बताया, हज़रत अली ने फ़रमाया तुम्हारा क़िस्सा क्या है? उसने कहा मैं लहव व लइब में और ऐश व तुरब के मामले में सारे अरब में मशहूर था, मैदानों में घोड़े दौड़ाने के सिवा कुछ काम न था ग़फ़लत ने मदहोश कर रखा था कि न मेरी तौबा का एतबार था और न माफ़ी मांगने का (तौबा करता और तौबा तोड़ देता जिस फ़ेअल से माफ़ी मांगता

दोबारा उसी को करता) मेरी हालत यह थी कि रजब और शाबान के महीने में भी गुनाहों के इरतिकाब से बाज़ न आता (बराबर गुनाह किये जाता) मेरा मेहरबान और शफ़ीक़ बाप मुझे जहन्नम के अज़ाब से डराता था और गुनाहों के हौलनाक अंजाम से बराबर मुतनब्बेह करता था वह कहते कि बेटे? अल्लाह की गिरफ़्त और उसकी सज़ा बड़ी सख़्त है, उस ख़ुदा की ना फ़रमानी क्यों करता है जो आग के अज़ाब में मुब्तला करने वाला है, तेरे मज़ालिम से बहुत से हाथ फ़रयादी हैं, इज़्ज़त वाले फ़रिश्ते हुरमत वाला महीना (रजब) और बहुत सी रातें तुझसे नालां हैं, उन नसीहतों के जवाब में उसको मैं मारता पीटता, आख़िरकार एक दिन उसने (मेरे मज़ालिम से) तंग आकर कहा कि ख़ुदा की क़सम मैं रोज़ा रखूंगा और कभी नही खोलूंगा, बराबर नमाज़ पढूंगा (रात को भी नहीं सोऊंगा) चुंनाचे एक हफ़्ता अपनी क़सम के बमौजिब उन्होंने किया और फिर ऊंटनी पर सवार हो कर मक्का मोअज़्ज़मा में हज्जे अकबर के दिन पहुंच गये और कहने लगे कि मैं अब हरम में जाकर तेरे ख़िलाफ़ अल्लाह से मदद मांगूगा (तेरे लिए बद दुआ करूंगा)

चुनांचे हरम में पहुंचकर उन्होंने काबा के पर्दे पकड़ कर इस तरह फ़रियाद की कि:

1) ऐ वह ज़ाते पाक जिस की तरफ़ दूर दूर से हाजी आते हैं और उस बेनियाज़ और यकता ज़ात के लुत्फ़ व करम की आस लगाते हैं मेरी फ़रियाद सुन! मनाज़िल (मेरा बेटा) मेरी नाफ़रमानी से बाज़ नहीं आता, ऐ रहमान! मेरे बेटे से मेरा हक़ ले ले, ऐ पाक ज़ात मुझ पर बख़्शिश कर और (मेरी बद दुआ से) मनाज़िल का एक पहलू (बदन का एक रुख़) मफ़लूज कर दे, मनाज़िल ने कहा कि उस ज़ात की क़सम जिसने आसमान को बलन्द किया है और पानी को चश्मों से निकाला है कि मेरे वालिद अभी यहीं तक कहने पाये थे कि मेरा दायां हिस्सा (पहलू) मफ़लूज हो गया और मैं उन तख़्तों की तरह (बे हस व हरकत) होकर रह गया जो हरम के कोनों में पड़े रहते हैं लोग सुबह व शाम मेरे पास से गुज़रते तो कहते यह वही है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने इसके बाप की बद दुआ कबूल फ़रमा ली।

यह सुन कर हज़रत अली ने फ़रमाया फिर तुम्हारे बाप ने क्या किया? मनाज़िल ने कहा कि अमिरुल मुमिनीन मैंने अपने बाप को राज़ी कर लिया, जब वह मुझसे राज़ी हो गए तो मैंने दरख़्वास्त की कि जिस जगह खड़े हो कर आपने मेरे लिये बद दुआ की थी उसी जगह खड़े हो कर आप मेरे लिए दुआ कीजिये उन्होंने मेरी दरख़्वास्त कबूल कर ली, हम रवाना हो गए असनाए सफ़र एक ऊंटनी मिल गई, मैंने वालिद को उसपर सवार करा लिया और उनको ले चला, वादीए अराक़ में जब हम पहुंचे तो दरख़्त से एक परिन्दा (पर फड़ फड़ा कर इस तरह) उड़ा कि उसकी आवाज़ से ऊंटनी बिदक गई, मेरे वालिद ऊंटनी से गिर कर हलाक हो गए।

यह तमाम किस्सा सुन कर हज़रत अली ने फ़रमाया मैं तुझे एक दुआ बताता हूं जिस को मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है हुजूर ने फ़रमाया था कि ऐसा कोई ग़म ज़दा नहीं जिसने इन अलफ़ाज़ से दुआ की और अल्लाह ने उसके ग़म दूर न कर दिए हों और न कोई ऐसा मुज़तरिब है जिसने अल्लाह से इन अलफ़ाज़ में दुआ की और अल्लाह तआला ने उसके इज़्तिराब को ख़त्म न फ़रमा दिया हो मनाज़िल ने कहा बहुत बेहतर (मैंने ज़रुर यह दुआ पढूंगा)

हज़रत हुसैन फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुमिनीन ने मनाज़िल को यह दुआ सिखा दी, मनाज़िल ने अल्लाह से वही दुआ की और उसको मरज़ से नजात मिल गई, चुनांचे वह हमारे पास दूसरे दिन सुबह को तंदुरुस्त हो कर आया, मैंने उससे पूछा कि मनाज़िल! तूने क्या अमल किया? मनाज़िल

ने जवाब दिया कि जब तमाम लोग (रात को) सो गए तो मैंने वही दुआ तीन मरतबा पढ़ी, ग़ैब से निदा आई "तेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, तूने इस्मे आज़म के साथ अल्लाह से दुआ की है" अल्लाह को जब भी इस्मे आज़म ले कर पुकारा जाता है अल्लाह तआला दुआ क़बूल फ़रमा लेता है और जो चीज़ उससे तलब की जाती है वह उसको मिल जाती है, उसके बाद मेरी आंख लग गई, मैं ख़्वाब में सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ मैंने वह दुआ अर्ज़ की, हुज़ूर ने फ़रमाया मेरे इब्ने अम्मे अली ने सच कहा है, इसी दुआ में वह इस्मे आज़म है कि अगर इसको लेकर अल्लाह से दुआ की जाए तो वह ज़रुर क़बूल होती है। इसके बाद मेरी आंख खुल गई, कुछ देर बाद मैं दोबारा फिर सो गया मैंने रसूलुल्लाह की फिर ज़ियारत की, मैंने हुज़ूर से गुज़ारिश की मैं हुज़ूर वाला से इस दुआ के सुनने का मुश्ताक़ हूं हुज़ूर ने फ़रमाया इस तरह पढ़ो:

इलाही! ऐ पोशीदा चीज़ों के जानने वाले! ऐ वह ज़ात जिस की कुदरत से आसमान बनाये गये और ऐ वह ज़ात जिसकी कुदरत से ज़मीन बिछाई गयी। ऐ वह ज़ात जिसके नूरे जलाल से सूरज और चांद रौशन और पुर नूर हैं। ऐ वह ज़ात जिसकी तवज्जोह हर पाक नफ़्स की तरफ़ होती है, ऐ वह ज़ात जो हरासां और तरसां लोगों को ख़ौफ़ से तसकीन देने वाली है, ऐ वह ज़ात जिसके यहां मख़लूक़ की हाजतें पूरी होती हैं, ऐ वह ज़ात जिसने नजात बख़्शी यूसुफ़ को गुलामी की ज़िल्लत से, ऐ वह ज़ात कि जिसका कोई दरबान नहीं कि जिसको पुकारा जाये और न कोई मसाहिब है जिसके पास हाज़िरी दी जाये और न कोई वज़ीर है कि जिस को नज़र पेश की जाये और न उसके अलावा कोई रब (परवरदिगार) है कि जिससे दुआ की जाये ऐ वह कि जिसका करम और जूद हाजतों की कसरत के बावजूद बढ़ता ही जाता है, मैं तुझसे दरख़्वास्त करता हूं कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे मेरी मुराद अता कर, बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है।

मनाज़िल ने कहा कि यह ख़्वाब देख कर मैं बेदार हो गया बेदार हुआ तो मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त था।

हज़रत अली ने फ़रमाया कि इस दुआ को मज़बूती के साथ हासिल कर लो यह अर्श के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है। हज़रत उमर के ज़माने का भी एक ऐसा ही वाक़ेआ मनकूल है, बवजहे तवालत हम यहाँ ज़िक्र नहीं करते हैं। हासिल कलाम यह कि किसी ज़ी होश व ख़िरद के लिये ज़ेबा नहीं कि वह गुनाहों को, मज़ालिम हो और मज़लूम की बद्दुआ को हक़ीर समझे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि ज़ुल्म क़यामत के दिन तारीकियां बन जाएगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि जब बन्दा अपने हाथ (सवाल के लिए) अल्लाह के आगे फैलाता है तो अल्लाह तआला उसको ख़ाली हाथ फेरने से हया फ़रमाता है। इस लिए उसको जल्द या ब देर दुनिया ही में दे देता है या आख़िरत में क़यामत के दिन के लिए जमा कर देता है। इस सिलसिले में दो अशआर हैं:

क्या तू दुआ को सुन का उसे हक़ीर समझता है?
दुआ की तासीर तो तेरे अंदर नुमायां और ज़ाहिर
रात के तीर (नाले) ख़ाता नहीं करते मगर
उनके लिए एक वक़्त है और वक़्त को गुज़रना है

मजलिस

माहे शाबान की फ़ज़ीलत

माहे शाबान और शाबान की पन्द्रहवीं शब

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद अबू सलमा से और उन्होंने उम्मुल मोमेनीन हजरत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहो अन्हा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम माहे शाबान के रोज़े इस तरह रखते थे कि हम कहते थे हुजूर अब कोई दिन नागा नहीं फरमाएंगे और जब हुज़ूर नागा फरमाते थे तो हम कहते थे कि अब (इस माह में) हुजूर रोजा नहीं रखेंगे और मैंने यह भी कभी नहीं देखा कि सिवाए माहे रमजान के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी महीने के पूरे रोजे रखे हों और मैंने यह भी नहीं देखा कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शाबान से ज्यादा किसी महीने में रोजे रखे हों (अलावा रमजान के) यह हदीस सहीह है इसको इमाम बुखारी ने बरिवायत अब्दुल्लाह इब्ने यूसुफ इमाम मालिक से रिवायत की है।

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हजरत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहो अन्हा से रिवायत की है कि आपने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस तरह मुसलसल रोजे रखते थे कि हम ख्याल करने लगते कि आप किसी दिन का रोजा नहीं छोडेंगे और जब आप रोजादार न होते तो हम ख्याल करते कि आप अब रोजा नहीं रखेंगे। आपको शाबान के रोजे बहुत ज्यादा महबूब थे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या सबब है कि आप माहे शाबान में रोजे रखते हैं? आपने फरमाया, आएशा! यह ऐसा महीना है कि साल के बाकी अर्सा में मरने वालों के नाम मलकुल मौत को लिख कर इस माह मे दे दिये जाते हैं मैं चाहता हू कि मेरा नाम ऐसी हालत में नक्ल करके दिया जाए कि मेरा रोजा हो।

अबू नसर ने अपने वालिद मोहम्मद की असनाद से बरिवायत अता बिन यसार हजरत उम्मे सलमा से नक्ल किया है कि आपने फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रमजान के अलावा किसी महीने में इतने रोजे नहीं रखते थे जितने माहे शाबान में। इसकी वजह यह है कि (साल में) मरने वालों के नाम जिन्दों की फेहरिस्त से निकाल कर मुर्दों की फेहरिस्त में शामिल कर दिये जाते हैं, आदमी सफर में होता है हालांकि उसका नाम मरने वालों की फेहरिस्त मे लिख लिया जाता है।

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हजरत आएशा रजियल्लाहो अन्हा से रिवायत की है कि उन्होंने फरमाया हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नजदीक सबसे ज्यादा महबूब महीना शाबान का था चूंकि वह रमजान से मुत्तसिल है।

हजरत अब्दुल्लाह ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो माहे शाबान के आखिरी दो शम्बा रोजा रखेगा तो उसकी मगफिरत कर दी जाएगी। आखिरी दो शम्बा से मुराद है शाबान का वह दो शम्बा जो आखिरी दिनों में वाकेअ हो या न हो कि महीना के आख़िरी दिन इसलिए कि रमजान से एक या दो दिन पहले (शाबान में) रोजा रखना मना है।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस माह का नाम शाबान इसलिए रखा गया कि इस माह में रमज़ान के लिए बेशुमार नेकियां तक़सीम की जाती हैं और रमज़ान नाम इसलिए रखा गया कि यह महीना गुनाहों को जला देता है।

अल्लाह तआ़ला का इन्तेख़ाब और बुजुर्ग महीने

अल्लाह तआ़ला की तख़लीक़ात

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: तेरा रब जो चाहता है पैदा करता है और उससे इन्तेख़ाब कर लेता है। पस अल्लाह तआ़ला ने हर नौअ से चार का इन्तेख़ाब फ़रमाया और फिर उन चार से एक का इन्तेख़ाब फ़रमा लिया। मलाइका से अल्लाह तआ़ला ने चार को मुन्तख़ब फ़रमाया यानी हज़रत जिब्रील, हज़रत मीकाईल, हज़रत इस्राफ़ील, हज़रत इज़राईल अलैहिमुस्सलाम, फिर इन चार में से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को मुन्तख़ब फ़रमा लिया इसी तरह अम्बिया में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और सय्यदे आलम मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पसन्द फ़रमाया और उनमें से हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुन्तख़ब फ़रमाया। सहाबा कराम से चार को पसन्द फ़रमाया यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत उसमान ज़ुन्नूरैन और हज़रत अली मुर्तज़ा रिज़वानुल्लाह तआ़ला अलैहिम अजमईन, फिर उनमें से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को मुन्तख़ब फ़रमाया।

मसाजिद में चार मस्जिदें पसन्द फ़रमाईं यानी मस्जिदे हराम, मस्जिदे अक़सा, मस्जिदे मदीना और मस्जिदे तूरे सीना, फिर उनमें से मस्जिदे हराम को मुन्तख़ब फ़रमाया। दिनों में चार दिनों को पसन्द किया, यानी यौमुल फ़ित्र, यौमुल अज़्हा, यौमुल अरफ़ा और यौमे आशूरा। फिर इन चारों में से यौमे अरफ़ा को पसन्द फ़रमाया। चार रातें पसन्द फ़रमाईं यानी शबे बरात, शबे क़द्र, शबे जुमा और शबे ईद, इन चारों से शबे क़द्र को इन्तेख़ाब फ़रमाया। बस्तियों में से चार बस्तियों को पसन्द फ़रमाया। मक्का मुकर्रमा, मदीना तय्यबा, बैतुल मुक़द्दस और मसाजिदुल अशाएर, इन चारों से मक्का मुकर्रमा को चुन लिया। पहाड़ों से चार पहाड़ इन्तेख़ाब फ़रमाए, उहद, तूरे सीना, लुक्काम और लुबनान, उनमें से तूर को मुन्तख़ब फ़रमा लिया। दरियाओं में से चार दरिया पसन्द फ़रमाए, जिहून, सिहून, नील और फ़रात, उनमें से फ़रात को मुन्तख़ब फ़रमाया। महीनों में से चार महीने पसन्द फ़रमाए, रजब, शाबान, रमज़ान और मुहर्रम। इनमें से शाबान को इन्तेख़ाब फ़रमा लिया और इसको रसूलुल्लाह का महीना क़रार दिया। पस जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तमाम अंबिया में अफ़ज़ल हैं उसी तरह तमाम महीनों में माहे शाबान अफ़ज़ल है।

शाबान रसूलुल्लाह का महीना है

हज़रत अनस से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया शाबान

मेरा महीना है, रजब अल्लाह का और रमज़ान मेरी उम्मत का। शाबान गुनाहों को दूर करने वाला है और रमज़ान बिल्कुल पाक कर देना वाला। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रजब और रमज़ान के दर्मियान शाबान का महीना है लोग इसकी तरफ़ से ग़फ़लत करते हैं हालांकि इस माह में बन्दों के आमाल रब्बुल आलमीन के हुज़ूर पेश किये जाते हैं इस लिये मैं पसन्द करता हूँ कि मेरे आमाल अल्लाह के हुज़ूर में इस तरह पेश हों कि मेरा रोज़ा हो।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया रजब का शरफ़ और फ़ज़ीलत बाक़ी महीनों पर ऐसी है जैसे दूसरे कलामों पर क़ुरआन मजीद की फ़ज़ीलत और तमाम महीनों पर शाबान की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम अंबिया पर मेरी फ़ज़ीलत है और दूसरे महीनों पर रमज़ान की फ़ज़ीलत ऐसी है जैसे तमाम काएनात पर अल्लाह की फ़ज़ीलत।

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के असहाब जब शाबान का चांद देख लेते तो कलाम मजीद की तिलावत में मुन्हमिक और महव हो जाते और मुसलमान अपने अमवाल की ज़कात निकालते ताकि मिसकीन और ग़रीब मुसलमानों में भी रोज़े रखनने की सकत पैदा हो जाये। हुक्काम क़ैदियों को तलब करते जिस पर हद क़ायम होना होती उस पर हद क़ायम करते बाक़ी मुजरिमों को आज़ाद कर देते। सौदागर अपने क़र्ज़े अदा करते, दूसरों से अपना क़र्ज़ उसूल कर लेते और रमज़ान का चांद उनको नज़र आ जाता तो (दुनिया के तमाम कामों से फ़ारिग़ होकर) एतकाफ़ में बैठ जाते।

माहे शाबान के फ़ज़ाएल

लफ़्ज़ शाबान की तहक़ीक़

शाबान में पांच हुरुफ हैं। शीन शरफ़ का है, ऐन उलू का, बा बिरून (एहसान और भलाई) का, अलिफ़ उलफ़त का और नून नूर का है। इस महीने में यह पांचों हुरुफ बारगाहे इलाही से बन्दे के लिये मख़सूस होते हैं, इस माह में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, बरकतों का नुज़ूल होता है, ख़ताओं को माफ़ किया जाता है, रसूलुल्लाह पर दरुद की कसरत की जाती है (कसरत से आप पर दरुद भेजा जाता है) दरुद भेजने का यह ख़ास महीना है अल्लाह तआला का इरशाद है:

बेशक अल्लाह और उसके फ़रिशते नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजते हैं ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दरुद व सलाम भेजो।

अल्लाह तआला की तरफ़ से सलात के मानी रहमत के हैं, मलाएका की तरफ़ से सलात के मानी, मदद, नुसरत और इस्तिग़फ़ार के और मोमिनों की तरफ़ से सलात के मानी हैं दुआ और सना के! मुजाहिद का क़ौल है कि सलात के मानी अल्लाह तआला की तरफ़ से तौफ़ीक़ व रहमत के हैं, फ़रिश्तों की जानिब से मदद व नुसरत के और मुसलमानों की तरफ़ से पैरवी करने और इज़्ज़त व एहतराम पहुंचाने के हैं।

इब्ने अता कहते हैं कि सलात के मानी अल्लाह की तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर, ताल्लुके इत्तेसाल की बक़ा के हैं और मलाइका की तरफ़ से ताज़ीम का इज़हार

करने और उम्मत की तरफ़ से सलात के मानी हैं, शफ़ाअत तलब करना।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जो एक बार मुझ पर दरूद भेजता है अल्लाह तआला उसपर दस बार रहमत नाज़िल फ़रमाता है। इस लिये हर दानिशमंद मोमिन के लिये ज़रुरी है कि वह इस महीने में ग़ाफ़िल न रहे बल्कि रमज़ान के इस्तिक़बाल की तैयारी शुरु कर दे। गुज़िशता आमाल से तौबा करके गुनाहों से पाक हो जाए, माहे शाबान ही में अल्लाह के सामने ज़ारी करे, रसूलुल्लाह का वसीला पकड़े कि अल्लाह उसके दिल की ख़राबी को दूर फ़रमा दे और दिल की बीमारी का इलाज हो जाये, इस सिलसिला में ताख़ीर और लैत वा लअ़ल से काम न ले यह न कहे कि कल कर लूंगा इसलिये कि दिन तो सिर्फ़ तीन हैं, एक कल जो गुज़र गया, एक आज जो अमल का दिन है एक आने वाला कल जिसकी बस उम्मीद ही उम्मीद है, कहा नहीं जा सकता कि वह उसके लिये आयेगा या नहीं, गुज़रा हुआ कल एक नसीहत है, आज का दिन ग़नीमत है, आने वाला कल सिर्फ़ एक ख़याली चीज़ है। इसी तरह महीने तीन हैं, रजब तो गुज़र गया, वह लौट कर अभी नहीं अयेगा, रमज़ान का इन्तेज़ार है (आने वाला है) मालूम नहीं कि इस महीने तक ज़िन्दा रहे या न रहे, बस शाबान ही इन दोनों के दर्मियान है इसलिये इस ताअ़त वा बन्दगी को ग़नीमत समझना चाहिये।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया और उसे नसीहत फ़रमाइ यह साहब हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर अलख़त्ताब थे, आप ने फ़रमाया कि पांच बातों को पांच बातों के वाक़ेअ़ होने से पहले ग़नीमत जानो।

(1)बुढ़ापे से पहले जवानी को (2)बीमारी से पहले सेहत को (3) मुफ़लिसी से पहले तवंगरी को (4) शग़्ल से पहले फ़ुरसत को (5) मरने से पहले ज़िन्दगी को।

फ़ज़ाइल व बरकाते शबे बरात

अल्लाह तआला का इरशाद है: क़सम है रौशन किताब की जिसे हमने बरकत वाली रात में
उतारा है। हज़रते इब्ने अब्बास ने फ़रमाय कि हा मीम यानी रोज़े क़यामत तक जो कुछ होने
वाला है अल्लाह उसका फ़ैसला फ़रमा चुका है वल किताबुल मुबीन क़सम है किताबे मुबीन की
(यानी क़ुरआन मजीद की)इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिम मुबारकहू हमने यह क़ुरआन (किताबे
मुबीन) बरकत वाली रात में उतारा, यानी निस्फ़ शाबान की रात में। इकरमा के अलावा अकसर
मुफ़स्सेरीन का यही क़ौल है। इकरमा का क़ौल है कि लैलतूल मुबारका से शबे क़द्र मुराद है।

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में बुहत सी चीज़ों को मुबारक फ़रमाया है। क़ुरआन को
भी मुबारक कहा गया है फ़रमाया है: यह क़ुरआन मुबारक ज़िक्र है जिस को हमने नाज़िल किया।
क़ुरआन की बरकतें तरह तरह की हैं मसलन जिसने इसको पढ़ा और उसको माना उसने नार
जहन्नम से नजात पाई। यह बरकत उस से बढ़ कर उसके आबा व अजदाद और औलाद तक
पहुंचती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने क़ुरआन पाक की
तिलावत और औराक़ देख कर की अल्लाह तआला उसके मां बाप से अज़ाब हलका कर देता है।
ख़्वाह वह काफ़िर ही क्यों न हों।

इसी तरह पानी को भी बरकत वाली चीज़ों में फ़रमाया है: हम ने ऊपर से बरकत वाला पानी

नाज़िल किया, यह पानी ही की बरकत है कि चीजें उससे ज़िन्दा हैं जैसा कि इरशादे रब्बानी है: हम ने सब चीज़ों को पानी से ज़िन्दा किया है फिर भी तुम ईमान नहीं लाते। कहा गया है कि पानी में दस खूबियां हैं, यानी, (1) रिक्क़त (पतलापन) (2) नर्मी (3) ताक़त (4) पाकीज़गी (5) सफ़ाई (6) हरकत (7) तरी (8) ख़ुनकी (9) तवाज़ुअ (10) ज़िन्दगी। यह सब खूबियां अल्लाह तआला ने दानिशमंद मोमिन को भी अता फ़रमाई हैं दिल में नर्मी भी है और रिक्क़त भी, ताअत व बन्दगी की ताक़त भी है और लताफ़ते नफ़्स भी, अमल की सफ़ाई भी है और भलाई की तरफ़ हरकत भी है आंखों में तरी, गुनाहों से अफ़सुरदगी, मख़लूक़ से तवाज़ुअ भी है और हक़ बात सुनने से ज़िन्दगी भी।

पानी की तरह अल्लाह तआला ने ज़ैतून को भी मुबारक फ़रमाया है। इरशादे रब्बानी है: बरकत वाले ज़ैतून के दरख़त से) यही वह पहला दरख़त है जिसका फल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने उतारे जाने के बाद सबसे पहले खाया इसमें गिज़ा भी है और रौशनी बख़्शने वाला तेल भी। अल्लाह तआला ने इस बारे में इरशाद फ़रमाया: यह दरख़्त खाने का काम देता है (खाने वालों के लिये सालन है) यह भी कहा गया है कि शजरए मुबारका से मुराद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। एक क़ौल यह है कि इससे मुराद कुरआन करीम है। या ईमान है या मोमिन का वह नफ़्से मुतमइन्ना है जो नेकी का हुक्म करने वाला है और ममनूआत से बचने वाला और क़ज़ा व क़द्र को क़बूल करने वाला है और अल्लाह तआला ने जो कुछ लिखा और हुक्म फ़रमाया वह उसकी मुवाफ़िक़त करने वाला है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का भी अल्लाह तआला ने मुबारक नाम रखा। हज़रत ईसा का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हुए अल्लाह तआला का इरशाद है और मुझे बरकत वाला बनाया गया जहां कहीं भी मैं हूं)

यह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही बरकत थी कि हज़रत की वालदा मरियम अलैहिस्सलाम के लिये अल्लाह तआला ने खजूर के ख़ुश्क दरख़्त में फल पैदा कर दिये थे और नीचे चश्मा रवां फ़रमा दिया था, चुनांचे इरशाद फ़रमाया:

दरख़्त के नीचे से मरियम को (हमने) पुकारा कि ग़मगीन न हो, तेरे रब ने तेरे नीचे चश्मा जारी कर दिया है और खजूर के दरख़्त के तने को हिला तेरे ऊपर पक्के फल गिरेंगे बस बच्चा (के दीदार) से आंखें ठंडी कर।

मादरज़ाद नाबीना और कोढ़ियों को तंदुरूस्त कर देना दुआ से मुर्दों को ज़िन्दा कर देना और दूसरे मोजज़ात भी ईसा अलैहिस्सलाम की बरकतों में से हैं। काबा शरीफ़ को भी मुबारक फ़रमाया गया है।

बेशक सबसे पहला घर जो लोगों की इबादत के लिए क़ायम किया गया वह घर है जो मक्का में है बरकतों वाला है।

यह काबा ही की बरकत है जो कोई उसमें दाख़िल हो उस पर गुनाहों का कितना ही बोझ क्यों न हो जब वह उस (घर) से बाहर आता है तो उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गये होते हैं (हो चुकते हैं) अल्लाह तआला का इरशाद है:

यानी जो मोमिन गुनाहों से तौबा करने के लिए काबा में दाख़िल होता है अल्लाह उसको अज़ाब से मामून व महफ़ूज़ कर देता है उसकी तौबा क़बूल कर लेता है और उसको बख़्श दिया

आता है। बाज़ उलमा ने मज़कूरा आयत में मामून होने से मुराद यह ली है कि हरम के अन्दर किसी को कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचाई जा सकती ता वक़्तेकि वह बाहर निकल कर न आ जाये। चुनांचे यही वजह है कि हुरमते काबा का लिहाज़ व पास करते हुए हरम के जानवरों का शिकार करना वहां के दरख़्त काटना हराम क़रार दिया गया है यह ख़ाना काबा की हुरमत की वजह से है और मस्जिदे हराम की हुरमत ख़ाना काबा की हुरमत के बाएस है, मक्का मुकर्रमा की हुरमत मस्जिदे हराम की हुरमत के बाएस है हरम की हुरमत मक्का मुर्कमा की बिना पर है जैसा कि मनकूल है कि काबा मस्जिदे हराम वालों का क़िब्ला है और मस्जिदे हराम अहले मक्का का क़िब्ला है मक्का मुर्कमा अहले हरम का क़िब्ला है और हरम तमाम अहले ज़मीन का क़िब्ला है इसका नाम मक्का इसलिए रखा गया है कि वहां क़ौमों का हुजूम व इज़दहाम होता है और आदमी उस हुजूम में एक दूसरे पर रौंदे जाते हैं बक्का और मक्का एक ही लफ़्ज़ हैं।

इसी तरह शबे बरात भी बरकत वाली चीज़ों में से है अल्लाह तआला ने इसको भी मुबारक फ़रमाया है क्योंकि अहले ज़मीन के लिए इस रात में रहमत, बरकत, ख़ैर, गुनाहों से माफ़ी और नुज़ूले मग़फ़िरत है इसके सबूत में दूसरी रिवायात के मिनजुमला एक रिवायत वह भी है जो अबूनसर ने अपने वालिद से नक़्ल की है कि जो उन्होंने बिला असनाद हज़रत अली से बयान की कि आपने फ़रमाया कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि निस्फ़ शाबान की रात में अल्लाह तआला क़रीब तरीन आसमान की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाता है और मुशरिक, दिल में कीना रखने वाले और रिश्तादारियों को मुनक़तअ करने वाले और बदकार औरत के सिवा तमाम लोगों को बख़्श देता है।

शैख़ अबूनसर ने अपने वालिद से बिला असनाद बयान किया कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाह तआला अन्हा ने बयान फ़रमाया कि निस्फ़ शाबान की रात में रसूलुलाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी चादर के अन्दर से ख़ामोशी के साथ बाहर निकल गये ख़ुदा की क़सम मेरी यह चादर न हरीर की थी न कज़ की न कतान की थी और न ख़ज़ की। नरवह ने अर्ज़ किया फिर किस कपड़े की थी हज़रत सिद्दीक़ा ने फ़रमाया उसका ताना बालों का था और बाना ऊंट के बालों का। इसके बाद आपने फ़रमाया कि इस तरह हुज़ूर के निकल जाने से मुझे यह गुमान हुआ कि हुज़ूर वाला किसी और बीवी के पास तशरीफ़ ले गये हैं मैंने उठकर आप को हुजरे में तलाश किया तो मेरे हाथ हुज़ूर के पावं से छू गये आप उस वक़्त सजदे में थे मैंने दुआ के अलफ़ाज़ याद कर लिए थे आप सजदे में फ़रमा रहे थे:

या अल्लाह! मेरा जिस्म और मेरा दिल तुझे सजदा करता है मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया और मैं तेरी नेमतों का शुक्र अदा करता हूं अपने गुनाहों का एतराफ़ करता हूं मैंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया तू मुझे बख़्श दे तेरे सिवा कोई गुनाहों का बख़्शने वाला नहीं है मैं तेरे अज़ाब से बचने के लिए तेरी पनाह में आता हूं तेरे ग़ज़ब से बचने के लिए तेरी रज़ा का तालिब हूं तेरे अज़ाब से अमन में रहने के लिए तुझ ही से दरख़्वास्त करता हूं तेरी हम्द व सना कोई बयान नहीं कर सकता तूने आप अपनी सना की है तू ही आप अपनी सना कर सकता है और कोई नहीं कर सकता।

हज़रत आइशा फ़रमाती है कि सुबह तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इबादत में मसरूफ़ रहे कभी आप खड़े हो जाते थे और कभी बैठ कर इबादत फ़रमाते यहां तक कि आप

के पाए मुबारक मुतवर्रम हो गये, मैं आप के पांव को दबाते हुए कहने लगी मेरे मां बाप आप पर कुरबान! क्या अल्लाह तआला ने आप के अगले पिछले तमाम गुनाह माफ़ नहीं कर दिए हैं क्या अल्लाह तआला ने आप के साथ ऐसा करम नहीं किया और आप पर लुत्फ़ व करम नहीं किया? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ आइशा! क्या मैं ख़ुदा का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनू? तुम्हें मालूम है यह रात कैसी है? मैने अर्ज़ किया आप फ़रमायें यह रात कैसी है? हुज़ूर ने फ़रमाया इस रात में साल भर में पैदा होने वाले हर बच्चे का नाम लिखा जाता है और इसी के साथ हर मरने वाले का नाम भी लिखा जाता है इसी रात मख़लूक़ का रिज़्क़ तक़सीम होता है इसी रात उनके आमाल व अफ़आल उठाये जाते हैं। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! क्या कोई शख़्स ऐसा नहीं है जो अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल हो? आप ने फ़रमाया कि कोई शख़्स भी अल्लाह की रहमत के बग़ैर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। मैंने अर्ज़ किया क्या आप भी? आप ने फ़रमाया हां मैं भी मगर अल्लाह तआला ने मुझे अपनी रहमत में ढांप लिया है, उसके बाद हुज़ूर ने अपना दस्ते मुबारक चेहरे और सर पर फेरा।

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत आइशा [illegible]दीका रज़ियल्ललाहो [illegible]न्हा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ[illegible] फ़रमाया, आइशा य[illegible] कौन सी रात है? उन्होंने फ़रमाया अल्लाह और उसके रसूल ही बख़ूबी [illegible]किफ़ हैं। हु[illegible]ने फ़[illegible]माया यह निस्फ़ शाबान की रात है इस रात में दुनिया के आमाल, बन्दों [illegible]मामाल ऊपर [illegible]ठाये जाते हैं (उनकी पेशी बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में होती है।) अल्लाह तआला [illegible] रात बनी कल्ब की बकरियों के बालों की तादाद में लोगों को दोज़ख़ से आज़ाद करता है तो क्या तू मुझे आज की रात इबादत की आज़ादी देती हो? मैंने अर्ज़ किया [illegible]र! फिर आप ने न[illegible]ज़ पढ़ी और क़याम में तख़फ़ीफ़ की सूरः फ़ातिहा और एक छोटी सूरत पढ़ी फिर [illegible] आप सजदे में रहे फिर खड़े हो कर दूसरी रकअत पढ़ी और पहली रकअत की तरह [illegible] क़िरअत फ़रमाई (छोटी सूरत पढ़ी) और फिर आप सजदे में चले गये, यह सजदा फ़ज्र तक रहा मैं देखती रही मुझे यह अंदेशा हो गया कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल की रूह (मुबारक) क़ब्ज़ फ़रमा ली है फिर जब मेरा इंतजार तवील हुआ (बहुत देर हो गई) तो मैं आप के क़रीब पहुंची और मैंने हुज़ूर के तलवों को छुआ तो हुज़ूर ने हरकत फ़रमाई मैंने ख़ुद सुना कि हुज़ूर सजदे की हालत में यह अल्फ़ाज़ अदा फ़रमा रहे थेः

इलाही मैं तेरे अज़ाब से तेरी उफ़्व और बख़्शिश की पनाह में आता हूं तेरे क़हर से तेरी रज़ा की पनाह में आता हूं तुझसे ही पनाह चाहता हूं तेरी ज़ात बुज़ुर्ग है मैं तेरी शायाने शान सना बयान नहीं कर सकता तू ही आप अपनी सना कर सकता है और कोई नहीं।

सुबह को मैंने अर्ज़ किया कि आप सजदे में ऐसे कलमात और फ़रमा रहे थे कि वैसे कलमात मैंने आपको कहते कभी नहीं सुना, हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुम ने याद कर लिये हैं? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ! आपने फ़रमाया ख़ुद भी याद कर लो और दूसरों को भी सिखाओ क्योंकि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे सजदे में इन कलमात को अदा करने का हुक्म दिया था।

अबू नसर ने बिल असनाद मरवा से रिवायत की कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि एक रात मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बिस्तर पर नहीं पाया मैं

(आपकी तलाश में) घर से निकली, मैंने देखा कि आप बक़ीअ (के क़ब्रिस्तान) में मौजूद हैं और आपका सर आसमान की जानिब उठा हुआ है। हुज़ूर ने मुझे देख कर फ़रमाया क्या तुम्हें इस बात का अंदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारी हक़ तलफ़ी करेंगे, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरा गुमान यही था कि आप किसी बीबी के यहाँ तशरीफ़ ले गए हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाह तआला निस्फ़ शाबान की रात में दुनिया के आसमान पर जलवा फ़रमा होता है और बनी कल्ब की बकरियों के बालों के शुमार से ज़्यादा लोगों की बख़्शिश फ़रमा देता है।

हज़रत इब्ने अब्बास के आज़ाद करद गुलाम (मौला) इक्रमा ने आयत फ़ीहा युफ़रको कुल्लो अमरीन हकीम की तफ़सीर में फ़रमाया कि निस्फ़ शाबान की रात में अल्लाह तआला आइन्दा साल के तमाम उमूर का इन्तेज़ाम फ़रमा देता है, बाज़ ज़िन्दों का मुर्दों की फ़ेहरिस्त में लिख देता है और बैतुल्लाह के हाजियों के नाम लिख देता है (हज करने वालों के नाम लिख दिये जाते हैं) फिर उस लिखी हुई तादाद में कमी बेशी नहीं होती।

हकीम बिन केसान ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला निस्फ़ शाबान की रात में अपनी मख़लूक़ की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाता है जो उससे पाकी का तलबगार होता है उसको पाक फ़रमा देता है और आइन्दा (इसी रात तक पाक रखता है) अता बिन यसार से मरवी है कि निस्फ़ माहे शाबान की रात में तमाम साल के उमूर पेश हो जाते हैं कुछ लोग सफ़र को जाते हैं और उनका नाम ज़िन्दों से निकाल कर मुर्दों में लिख दिया जाता है। कोई निकाह करता है हालांकि वह भी ज़िन्दों की फ़ेहरिस्त से निकाल कर मुर्दों की फ़ेहरिस्त में शामिल कर दिया जाता है।

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत आइशा सिद्दीक़ा से रिवायत की कि आप ने फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना कि अल्लाह तआला चार रातों में ख़ैर व बरकत के दरवाज़े सुबह तक खुला रखता है यानी शबे ईदुल अज़्हा, शबे ईदुल फ़ित्र, शबे निस्फ़ माहे शाबान, इस रात मख़लूक़ की उम्र, उनकी रोज़ी और हाजियों के नाम लिखे जाते हैं, शबे यौमे अरफ़ा। हज़रत सईद ने फ़रमाया कि मुझसे इब्राहीम बिन अबी बख़ीअ ने फ़रमाया कि वह पांच रातें है यानी पांचवीं रात शबे जुमा है।

शबे बरात के इन्आमात

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लहो अन्हो से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे पास निस्फ़ माहे शाबान की शब जिब्रील आए और फ़रमाया या रसूलल्लाह! आसमान की तरफ़ अपना सरे मुबारक उठाइए, मैंने उनसे दरयाफ़्त किया कि यह कौन सी रात है, उन्होंने कहा यह वह रात है जिस रात अल्लाह तआला रहमत के तीन सौ दरवाज़े खोल देता है और हर उस शख़्स को बख़्श देता है जिसने उसके साथ किसी को अपना शरीक नहीं ठहराया बशर्ते कि वह वह जादूगर न हो, काहिन न हो और सूद ख़्वार न हो, ज़ानी न हो, आदी शराबी न हो, उन लोगों की अल्लाह तआला उस वक़्त तक बख़्शिश नहीं फ़रमाता जब तक वह तौबा न कर लें। फिर जब रात का चौथाई हिस्सा गुज़र गया तो जिब्रील अलैहिस्सलाम फिर आए और कहा या रसूलल्लाह! अपना सरे मुबारक उठाइये, आपने ऐसा ही किया, आप ने देखा कि जन्नत के दरवाज़े खुले हैं और पहले दरवाज़े पर एक फ़रिश्ता पुकार रहा है, ख़ुशी हो उस शख़्स के लिए जिसने रात को रुकूअ किया, दूसरे दरवाज़ा पर और एक फ़रिश्ता निदा दे रहा है, ख़ुशी

हो उसके लिए जिसने इस रात में सजदा किया। तीसरे दरवाज़ा पर एक और एक फ़रिश्ता निदा दे रहा था, ख़ुशी हो उसके लिए जिसने इस रात दुआ की, चौथे दरवाज़े पर एक फ़रिश्ता दे रहा था ख़ुशी हो इस रात में उन लोगों को जो ज़िक्र करने वाले हैं, पांचवें दरवाज़े पर फ़रिश्ता पुकार रहा था ख़ुशी हो उसके लिए जो अल्लाह के ख़ौफ़ से इस रात में रोया, छठे दरवाज़े पर फ़रिश्ता पुकार रहा था इस रात में तमाम मुसलमानों के लिए ख़ुशी, सातवें दरवाज़े पर फ़रिश्ता निदा दे रहा था क्या है कोई मांगने वाला कि उसकी आरज़ू और तलब पूरी की जाए, आठवें दरवाज़े पर फ़रिश्ता पुकार रहा था क्या कोई माफ़ी का तलबगार है कि उसके गुनाह माफ़ किये जायें। हुज़ूर फ़रमाते हैं कि मैंने कहा कि जिब्राईल यह दरवाज़े कब तक खुले रहेंगे? जिब्राईल ने कहा कि अव्वल शब से तुलूअ फ़ज्र तक। उसके बाद जिब्राईल ने कहा ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस रात में दोज़ख़ से रिहाई पाने वाले की तादाद बनी कल्ब की बकरियों के बालों के बराबर होगी।

शबे बरात की वजहे तस्मीया

दो बरअतें

इस रात को शबे बरात इसलिये कहा जाता है कि इस रात में दो बेज़ारिया हैं (1)बदबख़्त लोग अल्लाह तआला से बेज़ार होते हैं और दूर हो जाते हैं और औलिया अल्लाह ज़िल्लत और गुमराही से दूर हो जाते हैं। रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब निस्फ़ शाबान की रात होती है तो अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ पर नज़र फ़रमाता है (मुतवज्जेह होता है) मोमिनों को तो बख़्श देता है और काफ़िरों को और ढील दे देता है और और कीना रखने वालों को उस वक़्त तक छोड़े रखता है जब तक वह कीना परवरी से बाज़ न आ जायें। रिवायत है कि फ़रिश्तों के लिये आसमान में दो रातें ईद की हैं जिस तरह ज़मीन पर मुसलमानों के लिए दो दिन ईद के हैं। फ़रिश्तों की ईद की रातें हैं शबे बरात और शबे क़द्र। मुसलमानों की ईदों के दिन हैं ईदुल फ़ित्र और इदुल अज़हा। फ़रिश्तों की ईदें रात में इस लिए रखी गई हैं कि वह सोते नहीं हैं, मुसलमानों की ईदें दिन में इसलिए रखी गई हैं कि वह सोते हैं, बाज़ उलमा ने कहा है कि इसमें हिकमते इलाही यह है कि शबे बरात को तो ज़ाहिर फ़रमा दिया और शबे क़द्र को पोशीदा रखा। शबे क़द्र रहमत व बख़शिश और जहन्नम से आज़ादी की रात है इसे अल्लाह तआला ने पोशीदा इसीलिए रखा कि लोग इसी पर तकिया न कर लें और आमाले सालेह से ग़ाफ़िल न हो जायें। शबे बरात को इसलिए ज़ाहिर कर दिया कि यह रात हुक्म व फ़ैसला की रात है और ख़ुशी व अलम की रात है, रद्द व क़बूल की रात है, रसाई और ना रसाई की रात है (विस्ल व एराज़ से मुराद है) ख़ुश नसीबी और बदबख़्ती की रात है, हुसूले शरफ़ और अंदेशए अज़ाब की रात है। किसी को इसमे सआदत नसीब होती है और किसी को शक़ावत, किसी को जज़ा दी जाती है किसी को रूसवा किया जाता है, किसी को सरफ़राज़ किया जाता है और किसी को सर निगूं किया जाता है, किसी को अज्र दिया जाता है और किसी को जुदा किया जाता है। बहुत से कफ़न धोये हुए तैयार रखे होते हैं लेकिन कफ़न

पहनने वाले बाज़ारो में घूमते फिरते हैं (अपनी ला इल्मी और ग़फ़लत के बदौलत) बहुत से लोग ऐसे हैं जिन की क़ब्रें खुदी हुई तैयार होती हैं और क़ब्रों वाले खुशी में मगन ग़फ़लत में पड़े होते हैं। बहुत से चेहरे हंसते हुए होते हैं हालांकि उनकी हलाकत का वक़्त बहुत क़रीब होता है, बहुत से मकानों की तामीर क़रीबे तकमील होती है लेकिन साहबे मकान की मौत क़रीब लगी हुई है। बहुत से बन्दे सवाब के उम्मीदवार होते हैं लेकिन नाकामी उठाना पड़ती है बहुत से लोग जन्नत का यक़ीन रखे हुए होते हैं लेकिन दोज़ख़ का सामना करना पड़ता है, बहुत से बन्दो का विस्ल का यक़ीन होता है लेकिन फ़िराक़ का मुंह देखना पड़ता है, बहुत से लोग अता के उम्मीदवार होते है और मुसीबत का सामना करना पड़ता है, बहुत से लोग हुकूमत की आस लगाये होते हैं और उन्हें हलाकत से दो चार होना पड़ता है।

हज़रत हसन बसरी का वाक़ेआ

रिवायत है कि हज़रत हसन बसरी निस्फ़ शाबान की शब को अपने मकान से बाहर निकल रहे थे उस वक़्त उनके चेहरे से ऐसा ज़ाहिर हो रहा था कि जैसे उनको क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया था और वह उससे बाहर निकल कर आये हैं, आप से इसकी वजह दरयाफ़्त की गई, आप ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम जिस शख़्स की कश्ती (वस्त समन्दर) में टूट गई हो उसकी मुसीबत मेरी मुसीबत से कठिन नहीं है। आप से पूछा गया कि ऐसा क्यों है, आप ने फ़रमाया मुझे अपने गुनाहों का तो यक़ीन है लेकिन मेरी नेकियां मारिजे ख़तर में है मालूम नहीं वह क़बूल होती हैं या मेरे मुंह पर मार दी जायेंगी।

शबे बरात में नमाज़

शबे बरात में जो नमाज़ (सल्फ़ से मनकूल और) वारिद है उसमें सौ रकअतें है एक हज़ार मरतबा सूरह इख़लास के साथ यानी हर रकअत में दस मरतबा कुल हो वल्लाह अल्लाहु अहद पढ़ी जाये। इस नमाज़ का नाम सलातुल ख़ैर है इसके पढ़ने से बरकतें हासिल होती हैं। सल्फ़ सालेहीन यह नमाज़ ब जमाअत पढते थे इस नमाज़ की बड़ी फ़ज़ीलत आई हैं इसका सवाब कसीर है। हसन बसरी ने फ़रमाया कि मुझसे सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीस सहाबा का ने बयान किया कि इस रात को जो शख़्स यह नमाज़ पढ़ता है अल्लाह तआला उसकी तरफ़ सत्तर बार देखता है और हर बार के देखने में सत्तर हाजतें उसकी पूरी करता है जिनमें सबसे अदना हाजत उसके गुनाहों की मग़फ़िरत है। मुस्तहब है कि इस नमाज़ यानी सलातुल ख़ैर को उन चौदह रातों में भी पढ़े जिनमें इबादत करना और शब बेदारी करना मुस्तहब है। इन रातों का ज़िक्र माहे रजब के फ़ज़ाएल में गुजर चुका है ताकि नमाज़ पढ़ने वाले को इज़्ज़त व फ़ज़ीलत और सवाब हासिल हो।

बाब 14

रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाएल में

अल्लाह तआला का इरशाद है:

ऐ इमान वालो! तुम पर रोज़े (उसी तरह) फ़र्ज़ किये गये जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर ताकि तुम मुत्तक़ी बनो।

हसन बसरी फ़रमाते हैं कि जब सुनो कि अल्लाह तआला या अय्योहल लज़ीना आमनू फ़रमा रहा है तो अपने कानों को उसकी समाअत के लिए ख़ाली कर दो (हमातन गोश बन जाओ) इसके बाद जो इरशाद होने वाला है उसमे या तो हुक्म होगा जिस को बजा लाना होगा या मुमानिअत होगी जिससे इजतिनाब ज़रूरी होगा। इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहो अन्हो का इरशाद है कि वह लज़्ज़त जो ख़िताब (निदा) से हासिल होती है वह इबादत की मशक़्क़त और कुलफ़त को दूर कर देती है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया या अय्योहल लज़ीना आमनू इसमें "या" हर्फ़े निदा है, आलिम (ज़ाते बारी) की तरफ़ से इस हर्फ़ के ज़रिये निदा की गई है। अय्यो वह इस्म निदा है जो मुनादी, मालूम के लिए इस्तेमाल होता है। "हा" हर्फ़े तंबीह है मुनादी को (इस तंबीह से) निदा की तरफ़ मुतवज्जेह किया गया है। अल्लज़ी इस्मे मौसूल है और इसके ज़रिये मोहब्बते क़दीमा और मारफ़ते साबिक़ा की तरफ़ इशारा किया गया है और "आमनू" में उस बातिनी हालत की तरफ़ इशारा है जो पुकारने वाले और जिसको पुकारा गया है दोनों के दर्मियान एक राज़ की तरह पोशीदा है। (जैसे कोई कहे कि ऐ वह शख़्स जो मेरे बातिनी राज़ से वाक़िफ़ है और वह उसे जानता हो) कुतेबा अलैकुम यानी तुम पर फ़र्ज़ किये गये अस्सियामो रोज़ा रखना यह मसदर है जैसे तुम कहो सुमतो सियामन और सुमतो क़यामन। असल लुग़त में सय्याम के मानी हैं रूक जाना जैसे सामतिर्रीह (हवा रूक गई) सामतुल ख़ैल (घोड़े दौड़ने से रूक गये) सामतुन नहार (दिन ठहर गया, दोपहर हो गई) यानी जब सूरज आसमान के बीच में पहुंच जाता है तो ठहर जाता है और सैर से रूक जाता है। सामर रजलो, मर्द बात करने से रूक गया। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया (हज़रत मरियम का क़ौल) इन्नी नदज़फ़ुर्रहमान सौमन, मैंने आज ख़ामोश रहने की अल्लाह से मन्नत मानी है। शरीयत में रोज़ा के मानी हैं इंसान का खाने पीने और जिमअ से बाज़ रहना और गुनाहों से रूक जाना।

कमा कोतेबा अलल लज़ीना मिन क़ब्लेकुम यानी दूसरे अंबिया और उनकी उम्मतों पर जैसे रोज़ा रखना फ़र्ज़ किया गया था। सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर रोज़ा फ़र्ज़ हुआ। अब्दुल मलिक ने उनके वालिद हारून बिन अन्तरा ने बिल असनाद हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो का क़ौल नक़्ल किया कि हज़रत अली ने फ़रमाया, एक रोज ठीक दोपहर के वक़्त जबकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुजरा में तशरीफ़ फ़रमा थे मैं हाज़िरे ख़िदमत हुआ और सलाम अर्ज़ किया आपने सलाम का जवाब देने के बाद फ़रमाया: यह जिब्रील अलैहिस्सलाम है तुम को सलाम कर रहे हैं मैंने कहा अलैका व अलैहिस्सलाम या रसूलल्लाह। हुज़ूर ने फ़रमाया मुझसे क़रीब हो जाओ (मेरे नज़दीक आ जाओ) मैं हुज़ूर के क़रीब पहुंच गया आप ने फ़रमाया

अली जिब्रील तुम से कह रहे हैं कि हर महीने में तीन दिन रोज़े रखा करो पहले दिन के रोज़े के एवज़ दस हज़ार साल के रोज़े, दूसरे रोज़े के एवज़ तीस हज़ार साल के और तीसरे दिन के रोज़े के एवज़ एक लाख बरस के रोज़े तुम्हारे लिए लिखे जायेंगे (उनका सवाब मिलेगा) मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह इस सवाब की तख़सीस मेरे ही साथ है या सब लोगों के लिए यह आम है आप ने फ़रमाया अली! तुम को भी इस का सवाब मिलेगा और तुम्हारे बाद जो (इस पर अमल) करेगा उसको भी यही सवाब मिलेगा। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह वह कौन से दिनों के रोज़े हैं हुजूर ने फ़रमाया अय्यामे बैज़ के यानी हर महीने का तेरह, चौदह ,और पन्द्रह तारीख़ के रोज़े है।

रावी हदीस अन्तरा ने हज़रत अली से दरयाफ़्त किया कि इन दिनों को अय्यामे बैज़ क्यों कहते हैं? हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम को जन्नत से ज़मीन पर उतारा तो आप का जिस्म अक़्दस तमाज़ते आफ़ताब से जल गया और सारा जिस्म सियाह पड़ गया उस वक़्त जिब्रील अलैहिस्सलाम आये और हज़रत आदम से दरयाफ़्त किया, क्या आप चाहते हैं कि आप का जिस्म फिर गोरा हो जाये, हज़रत आदम ने कहा हां। तब आप से कहा गया कि आप 13, 14, और 15 तारीख़ को रोज़ा रखा करें। हज़रत आदम ने पहला रोज़ा रखा तो आप का 1/3 जिस्म सफ़ेद हो गया दूसरा रोज़ा रखा तो 2/3 और तीसरे रोज़ा पर कुल जिस्म की खाल गोरी हो गई। इस सबब इन दिनों को अय्यामे बैज़ कहते हैं पस हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ही वह पहले शख़्स हैं ज़िन पर तीन रोज़े फ़र्ज़ हुए थे।

हज़रत हसन बसरी और दूसरे उलमाए मुफ़स्सरीन की एक जमाअत का क़ौल है कि अल्लज़ीना मिन क़ब्लेकुम से मुराद नसारा है, हमारे रोज़े नसारा के रोज़ों से इसलिए मुशाबेह हैं कि नसारा और मुसलमानों के रोज़ों का महीना और उनकी तादाद यकसां थीं। उन पर भी माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ थे मगर सख़्त गर्मी और सख़्त सर्दी में रोज़े रखना उन पर बहुत दुश्वार था फिर रोज़े सफ़र की हालत और कसबे मआश में भी ख़लल अन्दाज़ होते थे इस लिए उनके उलमाए (क़िस्सीयीन) और सरदारों ने बइत्तेफ़ाक़े राय यह तय कर लिया कि हर साल सर्दी और गर्मी के मौसमों के दरमियान (मौसमे बहार) रोज़ों का वक़्त मुक़र्रर कर लिया जाये चुनांचे उन्होंने मौसमे बहार को मौसमे सियाम ठहरा लिया उन्होंने जो यह तब्दीली की थी इसके कफ़्फ़ारा में दस रोज़े ज़्यादा कर लिए। इस तरह उनके चालीस रोज़े हो गये, कुछ मुद्दत के बाद ईसाइयों का बादशाह दर्दे देहन की बीमारी में मुब्तला हुआ उसने अल्लाह तआला से मन्नत मानी कि अगर उसे शिफ़ा हो जाये तो वह इस तादाद में सात दिन का इज़ाफ़ा कर देगा चुनांचे उसके हुक्म से एक हफ़्ते का इज़ाफ़ा कर दिया गया। उसके बाद के बादशाह ने (47) के बजाए पूरे 50 दिन के रोज़े कर दिए। मुजाहिद ने फ़रमाते हैं कि जब उनमें वबा फैली और बहुत से लोग मर गये तो बादशाह ने कहा कि रोज़ों की तादाद बढ़ा दो इस तरह लोगों ने दस बढ़ा दिए फिर उसके बाद दस और बढ़ा लिए। शअबी फ़रमाते हैं कि अगर मैं तमाम साल रोज़े रखूं तो यौमुश्शक में नहीं रखूंगा (यौमे शक से मुराद है शाबान की तीस तारीख़ ऐसी सूरत में मतलअ अब्र आलूद था चांद नज़र नहीं आया था तो कोई उसको शाबान की तीस तारीख़ कहेगा और उसको रमज़ामुन मुबारक की पहली तारीख़ कहेगा) इसकी वजह यह है कि हमारी तरह नसारा पर भी माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किये गये थे तो उन्होंने उन रोज़ों को मौसमे बहार में कर दिया यानी रमज़ान के दूसरे मौसम से तब्दील कर लिया क्योंकि गर्मी के ज़माने में तो यह गिन कर तीस रोज़े रख लिया

करते थे। इनके बाद जब दूसरे लोग आये (दूसरी नस्ल) तो उनको अपनी ताक़त पर बड़ा एतमाद था इस लिए उन्होंने रमज़ान से पहले एक या दो दिन के रोज़े रखना शुरू कर दिए इस तरह उनके बाद आने वालों ने भी अगले लोगों की पैरवी में एक एक दो दो रोज़ों का इजाफ़ा करना शुरू किया यहां तक कि पूरे पचास दिन के कर लिए। आयत कमा कोतेबा अलल लज़ीना मिन क़बले कुम का मतलब यही है और लअल्लकुम तत्तकून के मानी हैं कि तुम खाने पीने और जिमाअ से (इन अय्याम) में बाज़ रहो।

मुफ़स्सरीने कराम का इरशाद है। कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिजरत फ़रमा कर मदीना मनव्वरा तशरीफ़ ले आये तो अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आम मुसलमानों पर आशूरा के दिन का और हर महीने में तीन दिन के रोज़े फ़र्ज़ किये। जंगे बदर से एक माह और चन्द रोज़ क़ब्ल रमज़ान के रोज़ों की फ़रज़ीयत का हुक्म नाज़िल हुआ जिससे मज़कूरा रोज़े मनसूख़ हो गये। हक़ तआला के इरशाद अय्यमा मादूदातिन (गिनती के दिन हैं) से यही माहे रमजान के 29 या 30 दिन मुराद हैं।

सईद बिन अम्र बिन सईद बिन अलआस से मरवी है कि उन्होंने इब्ने उमर से मरफ़ूअन बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं और मेरी उम्मत उम्मी है हम न हिसाब कर सकते हैं और न लिख सकते हैं कि महीना इतना, इतना, या इतना है। हुज़ूर ने दस्ते मुबारक की तमाम उंगुलियां खोल कर सामने बताया कि महीना इतना, इतना, और इतना होता है। (यानी 30 दिन का)

शहर के मानी महीने हैं यह लफ़्ज़ शोहरत से बना है और इसके मानी हैं मशहूर होना और सफ़ेदी, तलूअ और ऊँचा करना। चुनांचे कहते हैं शहरतुश्शैन मैंने तलवार नियाम से निकाल ली और उंची की। शहरल हिलाल पहली तारीख़ का चांद निकल आया।

लफ़्ज़े रमज़ान की तशरीह व तहक़ीक़

लफ़्ज़े रमज़ान की तहक़ीक़ व तशरीह में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। बाज़ उलमा कहते हैं कि रमज़ान अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम है और "शहरे रमज़ान" कहा जाता है (यानी अल्लाह का महीना) जब कि रजब के लिए "शहरुल असम" कहा गया यह हज़रत अब्दुल्लाह का क़ौल है।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ ने बिल असनाद अपने अजदाद से रिवायत किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रमज़ान अल्लाह का महीना है। हज़रत अनस बिन मालिक ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह का फ़रमान है लफ़्ज़ "रमज़ान" न कहो बल्कि इसको निसबत के साथ कहो जिस तरह अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में इसकी निसबत फ़रमाई है और शहरे रमज़ान (माहे रमज़ान) कहा है। असमई ने अबू उमर बिन अस्साद का क़ौल नक़्ल किया है कि रमज़ान की वजहे तस्मिया यह है कि इस महीने में ऊँट के बच्चे गरमी की वजह से झुलस जाते हैं।

बाज़ असहाब का ख़्याल है कि चूंकि इस माह में गर्मी की वजह से पत्थर तपने लगते हैं और रमज़ा गरम पत्थर को कहते हैं इसलिए इसको रमज़ान कहने लगे। एक क़ौल यह भी है कि चूंकि इस माह में गुनाह जला दिये जाते हैं या रमज़ान गुनाहों को जला देता है इसलिए रमज़ान

कहा गया। "रम्ज़" के मानी हैं जलाना, असमई और दूसरे वह लोग जिन्होंने गर्मी की शिद्दत वजहे तस्मिया बताई है शायद उन लोगों के ज़माने में रमज़ान मौसमे गरमा ही में वाक़ेअ हुआ होगा (वरना वह तो हर मौसम में आता है।) यह तीसरा क़ौल भी सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही से मरवी है। बाज़ उलमा व मुहक़्क़ेक़ीन का कहना है कि रमज़ान में नसीहत और आख़िरत की फ़िक्र की गर्मी से दिल इस तरह मुतास्सिर होते हैं जैसे रेग और पत्थर गर्मी से तपते और मुतास्सिर होते हैं। एक क़ौल यह भी है कि यह लफ़्ज़ रम्ज़ से बना है और रम्ज़ के मानी हैं बरसाती बारिश (मौसमे बरश्गाल की बारिश) चूंकि रमज़ान बदन से गुनाह बिल्कुल धो डालता है और दिलों को इस तरह पाक कर देता है जैसे बारिश से चीज़ें धुल कर पाक व साफ़ हो जाती हैं।

माहे रमज़ान और नुज़ूले कुरआन

शहरो रमज़ानल्लज़ी उन्ज़ेला फ़ीहिल कुरआन की तशरीह व तफ़सीर

आतिया बिन असवद कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो से दरयाफ़्त किया कि मुझे आयत इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिन मुबारकतिन के मानी में कुछ शक पैदा होता है, आयत के मानी हैं कि हमने कुरआन को बरकत वाली रात में उतारा और कुरआन मजीद तो तमाम महीनों में उतरा है, अल्लाह तआला का इरशाद है हम ने कुरआन को जुदा जुदा करके उतारा ताकि आप वक़्फ़े वक़्फ़े के बाद लोगों को सुनायें पस जब मुख़्तलिफ़ औक़ात में उसका नुज़ूल हुआ तो एक मुबारक रात में नुज़ूल के क्या मानी (यह तआरुज़ किस तरह रफ़ा हो) हज़रत इब्ने अब्बास ने जवाब दिया कि माहे रमज़ान के अंदर शबे क़द्र में पूरा कुरआन यक बारगी लौहे महफ़ूज़ से उतरा था और आसमाने दुनिया में बैतुल इज़्ज़त में रख दिया गया था फिर थोड़ा थोड़ा तेइस साल में हज़रत जिब्रील के ज़रिये रसूलुल्लाह पर उतारता रहा।

कुरआन पाक किस तरह नाज़िल हुआ

दाऊद बिन अबू हिन्द ने कहा मैंने शअबी से दरयाफ़्त किया कि माहे रमज़ान वह महीना है जिस में कुरआन नाज़िल हुआ तो क्या आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कुरआन पाक बरसों में नाज़िल नहीं हुआ? उन्होंने जवाब दिया कि कुरआन बरसों ही में नाज़िल हुआ, अलबत्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पूरा कुरआन दोहराते थे उसमें से अल्लाह को जिस क़द्र और जितना मंजूर होता महकम और बर क़रार रखता और जितना हिस्सा अल्लाह को मंसूख़ करना होता वह रसूलुल्लाह को फ़रामोश करा देता।

शहाब बिन तारिक़ ने बरिवायत हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी बयान किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर माहे रमज़ानुल मुबारक की तीन रातों में सहीफ़े नाज़िल किये गए और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरेत माहे रमज़ान के जुमा की रातों में नाज़िल हुई। हज़रत दाऊद अलैहिससलाम पर ज़ुबूर माहे रमज़ान की अठारहवीं शब को उतरी, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील माहे रमज़ान की तेरह तारीख़ को नाज़िल

हुई और रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कुरआन मजीद रमज़ानुल मुबारक की चौदहवीं तारीख़ को उतरा।

इसके बाद (यानी नुजूले कुरआन के महीने की तसरीह के बाद) अल्लाह तआला ने कुरआन पाक की सिफ़त बयान फ़रमाई कि वह हुदल लिन्नास है (लोगों को गुमराही से निकालने वाला है) हलाल व हराम और अहकाम की रौशन दलीलें हैं और वह हक़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ कर देने वाला है।

माहे रमज़ान के फ़ज़ाएल व ख़साइस

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि शाबान के आख़िरी दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खुतबा इरशाद फ़रमाया. आपने फ़रमाया:

ऐ लोगो! एक अज़ीमुल मरतबत और बरकतों वाला वह महीना सायाफ़[illegible]गन हो रहा है जिस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है, अल्लाह तआला ने इस महीने के रोज़े फ़र्ज किये हैं और इस महीने की रातों में इबादत को अफ़[illegible] क़रार दिया है, जिस [illegible]ख़्स ने इस महीने में एक नेकी की या एक फ़र्ज़ अदा किया उसका अज्र उस शख़्स की तरह ह[illegible]ा जिसने किसी दूसरे महीने में 70 फ़र्ज़ अदा किए। यह महीना सब्र का है और सब्र [illegible] सिला जन्नत है यह महीना नेकी पहुंचाने का है, इस महीने में मोमिन की रोज़[illegible] इज़ाफ़ा किया जाता है, जिस शख़्स ने किसी रोज़ादार को इफ़्तार कराया उसके गुनाह बख़्श दिये [illegible]ए उसकी गरदन आतिशे दोज़ख़ से आज़ाद की जाएगी औ[illegible]ज़ादार [illegible]ोज़े क[illegible] सवाब कम [illegible]ये बग़ैर इफ़्तार कराने वाले को भी रोज़ेदार की[illegible] बराबर सवाब मिलेगा।

सहाबा करा[illegible] ने अर्ज़ किया कि हम [illegible]से हर [illegible] इस्तेताअत इतनी नहीं है कि इफ़्तार कराये, हुज़ूर ने फ़[illegible]ाया कि अल्लाह त[illegible]ला हर उस शख़्स को [illegible] मरहमत फ़रमायेगा जिसने एक खजूर या एक [illegible] या एक घूंट पानी से भी रोज़ा खुलवाया। यह महीना ऐसा है कि इसका अव्वल (हिस्सा) [illegible]मत है, दर्मियानी (हिस्सा) मग़फ़िरत है और आख़िरी (हिस्सा) दोज़ख़ से आज़ादी है, पस जिसने [illegible]ीने में अपने ग़ुलाम पर आसानी की अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़[illegible] अता फ़रमायेगा पस इस महीने में यह चार बातें ज़्यादा से ज़्यादा करना चाहिए उनमें से दो बातें ऐसी है जिनसे तुम अपने रब को राज़ी कर सकते हो अव्वल यह कि इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, दोम अपने रब से मग़फ़िरत तलब करना; दो बातें वह हैं जिनकी तुमको ज़रूरत है, वह यह हैं अव्वल यह है कि अल्लाह तआला से जन्नत की तलब करो, दोम अल्लाह तआला से जहन्नम से नजात (पनाह) मांगो जिसने इस महीने में शिकम सैर करके खिलाया अल्लाह तआला उसको मेरे हौज़ (कौसर) से एक घूंट पिलायेगा और फिर कभी उसे प्यास नहीं महसूस होगी।

कलबी ने अबू नसर से और अबू नसर ने हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि माहे रमज़ान की पहली रात को आसमान और जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और आख़िर माह (मुबारक) रमज़ान तक बन्द नहीं किये जाते और जो बन्दए मोमिन ख़्वाह मर्द हो या औरत इस माह की रातों में नमाज़ें पढ़ता

है अल्लाह हर सजदे के एवज़ एक हज़ार सात सौ नेकियां उसके लिए लिखता है उसके लिए जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का ऐसा मकान तामीर फ़रमाता है जिस के हज़ार दरवाज़े हैं और दरवाज़ों के पट (किवाड़) सुर्ख़ याक़ूत से मुरस्सअ हैं और जिस शख़्स ने अव्वल से आख़िर तक (इस माह में) रोज़े रखे अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा देता है और (उन रोज़ों को) दूसरे माहे रमज़ान का कफ़्फ़ारा बना देता है उसके लिए हर रोज़ जन्नत में महल तामीर कराता है जिसके एक हज़ार सोने के दरवाज़े होते हैं और उसके लिए सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुबह व शाम इन्तज़ार करते रहते हैं और हर सजदे के बदले उसको इतना तनावर सायादार दरख़्त अता होता है कि शहसवार उस के नीचे सौ बरस तक चल कर भी मुसाफ़त को तय न कर सकेगा।

मुझ (हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी) से अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से बरिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब रमज़ान की पहली रात होती है तो अल्लाह जल्ला जलालहु अपनी मख़लूक़ की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाता है और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे पर नज़र (तवज्जोह) फ़रमाता है तो उसको कभी अज़ाब नहीं देता, अल्लाह तआला के हुक्म से हज़ारों आदमी दोज़ख से आज़ाद हो जाते हैं।

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है।

नाफ़ेअ बिन मरवा से बरिवायत हज़रत अबू मसऊद ग़फ़ारी बयान किया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि जो बन्दा माहे रमज़ान का रोज़ा रखता है उसका निकाह किसी हूरे ऐन से एक खोखले मोती के खेमे में किया जाता है और यह हूर उन औसाफ़ से आरास्ता होती हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने हूरून मक़सूरातुन फ़िल ख़ियाम फ़रमाया है। हूरे ऐन के बदन पर सत्तर जोड़े होंगे हर जोड़ा दूसरे जोड़े से मुख़तलिफ़ होगा, यह जोड़े सत्तर क़िस्म के ख़ुशबू से बसे होंगे हर एक की ख़ुशबू दूसरी ख़ुशबू से अलग होगी हर हूर को सत्तर मुरस्सअ तख़्त सुर्ख़ याक़ूत के दिये जायेंगे, हर तख़्त सत्तर बिस्तरों से आरास्ता होगा हर बिस्तर पर एक मसनद होगी हर हूरे ऐन की ख़िदमत के लिए सत्तर हज़ार ख़िदमतगार और सत्तर हज़ार कनीज़ें होंगी। हूरे ऐन अपने इन तमाम ख़िदमतगारों के साथ शौहर की ख़िदमत के लिए होगी हर कनीज़ के पास सोने का एक प्याला होगा जिसमें ऐसा खाना होगा जिसके हर लुक़्मा का मज़ा पहले लुक़्मे से मुख़तलिफ़ होगा और लज़्ज़त में दोबाला होगा इन तमाम लवाज़िम के साथ हूरे ऐन का शौहर भी (रोज़ादार) सुर्ख़ याक़ूत के तख़्त पर मौजूद होगा यह जज़ा रमज़ान के हर रोज़ा की होगी रोज़ा के अलावा जो नेक आमाल उसके हैं उनका सवाब अलग मिलेगा।

माहे रमज़ान की बरकतें

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास रिवायत की है कि मैंने खुद सुना है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे कि माहे रमज़ान के इस्तिक़बाल के लिए जन्नत एक साल से दूसरे साल तक (यानी तमाम साल) मुज़य्यन व आरास्ता की जाती है, फिर जब माहे

रमज़ान की पहली शब आती है तो अर्श के नीचे से एक हवा चलती है जिसका नाम मशीरा है यह हवा जन्नत के दरख़्तों के पत्तों और किवाड़ों की ज़ंजीरों से मस होती है और उनको हिलाती है उस हवा के लगने से ऐसी आवाज़ पैदा होती है कि उससे अच्छी आवाज़ सुनने वालों ने कभी नहीं सुनी होगी फिर हूरें आरास्ता होकर जन्नत के ग़रफ़ों (झरोकों) में आकर खड़ी हो जाती हैं और आवाज़ देती हैं कि क्या कोई है कि जो हमको अल्लाह से मांग ले और अल्लाह तआला उसका निकाह हमसे कर दे फिर वह रिज़वाने जन्नत से कहती है आज की रात कैसी है? रिज़वान जवाब देता है ऐ बेमिसाल हसीनो! यह माहे रमज़ान की पहली रात है हक़ तआला फ़रमाता है कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में से रोज़ादारों के लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए गये हैं ऐ मालिक (दारोग़ए जहन्नम) उम्मते मुहम्मदिया की तरफ़ से दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दो ऐ जिब्रील! ज़मीन पर जाओ और शयातीन को मुक़य्यद कर दो। उनको ज़ंजीरों से जकड़ दो उनको समन्द्र के गिरदाबों में फेंक दो ताकि मेरे हबीब मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत के रोज़ों को ख़राब न करे। हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया कि माहे रमज़ान की हर रात में अल्लाह तआला तीन मरतबा फ़रमाता है क्या कोई मांगने वाला है कि मैं उसका सवाल पूरा करूं? क्या कोई तौबा करने वाला है कि मैं उसकी तौबा क़बूल करूं! क्या कोई मग़फ़िरत का तालिब है कि मैं उसको बख़्श दूं कोई है जो ऐसे ग़नी को क़र्ज़ दे जो नादार नहीं है और पूरा बदला देने वाला है और वह किसी की हक़ तल्फ़ी करने वाला नहीं है आप ने फ़रमाया कि माहे रमज़ान में हर रोज़ इफ़्तार के वक़्त हज़ारों दोज़ख़ी दोज़ख़ से आज़ाद कर दिए जाते हैं हालांकि उनमें से हर एक अज़ाब का मुस्तहिक़ होता है और जब जुमा का दिन और जुमा की शब आती है तो लाखों दोज़ख़ी दोज़ख़ से आज़ाद हो जाते हैं जिनमें से हर एक अज़ाब का सज़ावार होता है। जब रमज़ान का आख़िरी दिन आता है तो अव्वल तारीख़ से आख़िर तारीख़ तक मजमूई तौर से जितने अफ़राद दोज़ख़ से आज़ादी पा चुके हैं उनकी तादाद के बराबर (उस आख़िरी रोज़) आज़ाद किये जाते हैं।

शबे क़द्र

शबे क़द्र को अल्लाह तआला जिब्रील को हुक्म देता है हज़रत जिब्रील हस्बुल हुक्म फ़रिश्तों की जमाअत के साथ ज़मीन पर उतरते हैं उनके साथ एक सब्ज़ परचम होता है उसको वह ख़ानए काबा की छत पर गाड़ देते हैं और वह अपने छः सौ पर फैला देते हैं जो मशरिक़ से मग़रिब तक फैल कर निकल जाते हैं। यह परचम लैलतुल क़द्र के अलावा नहीं लहराया जाता जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि उम्मते मोहम्मदिया में फैल जाओ फ़रिश्ते हर नमाज़ी इबादत गुज़ार और ज़िक्रे इलाही करने वाले को सलाम करते हैं उनसे मुसाफ़ा करते हैं और दुआ के वक़्त उनके साथ आमीन कहते हैं यह हालत सुबह तक क़ायम रहती है उसके बाद जिब्रील अलैहिस्सलाम एलान करते हैं कि ऐ अल्लाह के लश्करयो वापसी के लिए कूच करो उस वक़्त वह फ़रिश्ते कहते हैं ऐ जिब्रील तुम ने उम्मते मोहम्मदिया की हाजतों के बारे में क्या किया? जिब्रील जवाब देते हैं अल्लाह ने उन पर रहमत की नज़र फ़रमाई उनको माफ़ कर दिया और बख़्श दिया बजुज़ चार क़िस्म के लोगों के जो यह हैं:

(1) मै ख़्वार (2) वालदैन के नाफ़रमान (3) रिश्तों को मुनक़तअ करने वाले (4) मुशाहिन

(बुग्ज़ रखने वाला) अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुशाहिन कौन है आपने फ़रमाया मुसलमानों से क़तअ ताल्लुक़ करने वाला।

जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है जिस को शबे जाएज़ा कहते हैं यानी शबे इनाम उसके बाद सुबह को अल्लाह तआला फ़रिश्तों को तमाम शहर व अमसार में फैल जाने का हुक्म देता है चुनांचे फ़रिश्ते उतर कर गलियों और कूचों के शुरू में खड़े हो कर ऐसी आवाज़ से पुकारते हैं जिसको इन्स और जिन्न के अलावा तमाम मख़लूक़ सुनती है वह कहते हैं ऐ उम्मते मोहम्मद के लोगो! अपने रब्बे करीम की तरफ़ चलो ताकि वह तुम को जज़ा अता फ़रमाए और तुम्हारे बड़े बड़े गुनाहों को बख़्श दे, फिर वह ईदगाह की तरफ़ रवाना होते हैं, अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि ऐ फ़रिश्तों! मैं तुम्हें शाहिद बनाता हूं कि इन बन्दों के रोज़ों और रात की इबादतों का सवाब मैंने अपनी रज़ा और मग़फ़िरत क़रार दिया है इसके बाद फ़रमाता है ऐ बन्दो! मुझसे सवाल करो मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम है अपनी इस जमाअत के अन्दर रह कर मुझसे जो कुछ आख़िरत के मुताल्लिक़ मांगोगे मैं ज़रूर अता करूंगा और जो कुछ दुनिया से मुताल्लिक़ मांगोगे मैं तुम्हारे लिए उस पर नज़र रखूंगा अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम जब तक तुम मुझसे डरते रहोगे मैं तुम्हारी लग़्ज़िशों की पर्दा पोशी करूंगा अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं तुम को दुनियवी सज़ा पाने वालों (असहाबे हुदूद) के सामने ज़लील और रूसवा नहीं करूंगा, जाओ तुम्हारी बख़्शिश हो गई, तुमने मुझे राज़ी किया और मैं तुम से राज़ी हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह इनामात सुनकर फ़रिश्ते ख़ुश होते हैं और इफ़्तारे सौम के वक़्त अल्लाह तआला उम्मत को जो कुछ अता फ़रमाता है उसकी बशारत और मुबारक बाद देते हैं। ज़हाक बिन मज़ाहिम ने हज़रत इब्ने अब्बास से जो हदीस नक़्ल की है उसके अल्फ़ाज़ इस हदीस के अल्फ़ाज़ से ममासिल और यकसां हैं।

शैख़ अबू नस्र ने बिल असनाद हज़रत मसऊद ग़फ़ारी से रिवायत की कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माहे रमज़ान का चांद देखने के दिन फ़रमाया कि अगर बन्दों को मालूम हो जाता कि माहे रमज़ान में कितनी ख़ैर व बरकत है तो यक़ीनन बन्दे तमन्ना करते कि काश माहे रमज़ान तमाम साल का होता। यह सुनकर एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह हमें रमज़ानुल मुबारक की फ़ज़ीलत से आगाह फ़रमाइये, आपने फ़रमाया कि माहे रमज़ान के इस्तिक़बाल के लिए जन्नत आग़ाज़े साल से मुज़य्यन और आरास्ता की जाती है यहां तक कि रमज़ान की पहली शब को अर्श के नीचे से एक हवा चलती है जो जन्नत के दरख़्तों के पत्तों से टकराती है हूरें उस हवा को महसूस करके कहती हैं परवरदिगार इस महीना में तेरे जो बन्दे रोज़े रखें उनको हमारे शौहर मुक़र्रर फ़रमा दे ताकि उनसे हमारी आंखें और हमसे उनकी आंखें ठंडी हों (हिज़ उठायें) पस जो बन्दा रमज़ान के रोज़े रखता है अल्लाह एक मिजूफ़ (खोखले मोती) के ख़ेमा के अन्दर उसका निकाह किसी ऐसी हूर से जो उन हूरों में से होगी जिनके बारे में अल्लाह तआला ने हूरूम मक़सूरातून फ़िल ख़याम फ़रमाया है, ज़रूर कर देता है उनमें से हर हूर के जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग और ख़ुशबू दूसरे जोड़े से अलग और मुख़तलिफ़ होगी हर एक को सत्तर क़िस्म की ख़ुशबू अता होगी हर हूर सुर्ख़ याक़ूत के ऐसे तख़्त पर जलवा फ़गन होगी जो मोतियों से मुज़य्यन और आरास्ता होगा उस तख़्त पर सत्तर फ़र्श होंगे हर फ़र्श का अस्तर इस्तबरक़ (एक आला रेशम) का होगा हर एक के ऊपर सत्तर मसनदें होंगी,

हर हूर के सत्तर हज़ार ख़ादिम होंगे और शौहर के भी इतने ही ख़ादिम होंगे, हर ख़ादिम के हाथ में सोने का एक प्याला होगा जिसमें खाना तो एक रंग का होगा लेकिन हर लमक़्मा का मज़ा दूसरे लुक़्मा से जुदा होगा। हर हूर के शौहर को भी ऐसा ही कुछ इनाम मिलेगा वह भी सुर्ख़ याकूती तख़्त पर मुतमक्किन होगा और सोने के दो कंगन याकूत से मुरस्सअ वह पहने होगा यह इनाम हर उस शख़्स के लिए होगा जिसने माहे रमज़ान के रोज़े रखे, दूसरी नेकियों जो उसने की हैं उसका अज्र अलग होगा।

हज़रत कतादा ने हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया माहे रमज़ान की जब पहली रात होती है तो रिज़वान जन्नत से अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उम्मत मोहम्मदिया के रोज़ादारों के लिए जन्नत को आरास्ता करो उसके दरवाज़ों को बन्द न करो जब तक उनका यह महीना ख़त्म न हो जाये फिर दारोगए जहन्नम (मालिक) से ख़िताब फ़रमाता है कि ऐ मालिक! वह कहता है लब्बैक (मैं हाज़िर हूं) अल्लाह तआला फ़रमाता है मोहम्मद के उम्मत के रोज़ेदारों की तरफ़ से दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दो और जब तक यह महीना न गुज़र जाये उनको न खोलो, फिर जिब्रील को निदा फ़रमाता है जिब्रील कहते हैं मैं हाज़िर हूं अल्लाह फ़रमाता है ज़मीन पर उतरो और सरकश शयातीन को जकड़ कर बांध दो ताकि उम्मत मोहम्मद के रोज़ों और रोज़ों की इफ़्तार में वह ख़लल न डाल सकें।

माहे रमज़ान में हर रोज़ तुलूए आफ़ताब से इफ़्तार के वक़्त तक अल्लाह तआला अपने कुछ बन्दों को ख़्वाह मर्द हों या औरत जहन्नम से आज़ादी अता फ़रमाता है, हर आसमान पर एक निदा देने वाला फ़रिश्ता होता है जिसकी चोटी अर्श के नीचे और पावं ज़मीन के सातवें तबके की इन्तहा पर होते हैं उसका एक बाज़ू मश्रिक़ में और एक मग़रिब में होता है उसके सर पर लू लू मरजान और जवाहर का ताज होता है यह निदा देने वाला फ़रिश्ता पुकारता है क्या कोई तौबा करने वाला है कि उसकी तौबा क़बूल की जाये कोई मांगने वाला है जिस की दुआ क़बूल की जाये कोई मज़लूम है जिसकी दाद रसी की जाये कोई मग़फ़िरत चाहने वाला है जिस की मग़फ़िरत की जाये कोई सायल है जिसके सवाल को पूरा किया जाये।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला तमाम माहे रमज़ान में इसी तरह निदा फ़रमाता रहता है कि मेरे बन्दो! और मेरी बन्दियो! तुम को बशारत हो सब्र करो (खाने पीने वग़ैरा से) और पाबन्दी करो (अहकामे रोज़ा की) मैं अनक़रीब तुम्हारी मशक़्क़तें दूर कर दूंगा और तुम मेरी रहमत और करामत तक पहुंच जाओगे (तुम को मेरी रहमत हासिल होगी)

शबे क़द्र को जिब्रील फ़रिश्तों के साथ उतरते हैं और हर ज़िक्रे इलाही करने वाले (ख़्वाह वह खड़ा हो या बैठा हो) के लिए दुआए रहमत करते हैं। हज़रत अनस बिन से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर अल्लाह तआला आसमानों और ज़मीन को बात करने की इजाज़त देता तो यक़ीनन वह माहे रमज़ान के रोज़ादारों को जन्नत की बशारत देते। हज़रत अब्दुल्लाह बिल ऊफ़ी की रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि रोज़ादार की नीन्द इबादत है वह ख़ामोश तस्बीह है उसकी दुआ मक़बूल है और उसका अमल दूना किया जाता है।

अमश ने अबू ख़ीसमा का क़ौल नक़्ल किया है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कराम कहते थे कि एक रमज़ान दूसरे रमज़ान तक, एक हज दूसरे हज तक, एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक जो गुनाह इस अर्सा में सरज़द होते हैं वह उनका कफ़्फ़ारा बन जाते हैं जब माहे रमज़ान आता तो हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर बिन अलख़त्ताब फ़रमाते कि ऐ लोगो तुम्हें यह महीना मुबारक हो क्योंकि यह महीना सरापा ख़ैर व बरकत है इसके दिन रोज़े के और रातें इबादत की हैं इसमें ख़र्च करना राहे ख़ुदा में ख़र्च करना है। हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने माहे रमज़ान के रोज़े रखे यक़ीन व हुसूले सवाब के ख़ातिर रात में क़याम किया तो अल्लाह तआला उसके अगले पिछले तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा देगा।

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत का जब एक फ़र्द नेकी करता है तो उसको दस से सात सौ गुना तक सवाब दिया जाता है सिवाए रोज़ा के (अज्र के)। इसके मुताल्लिक़ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है रोज़ा मेरे लिए है मैं ही इसकी जज़ा दूंगा रोज़ादार अपना खाना पीना मेरे लिए छोड़ता है रोज़ा ढाल है (दोज़ख़ और गुनाहों से बचाने के लिए) रोज़ादार के लिए दो मुसर्रतें हैं एक मुसर्रत इफ़्तार के वक़्त और दूसरी अपने रब के दीदार के वक़्त, अबुल बरकात सिक़ती ने बिला अस्नाद बयान किया कि मुझे मसऊदी से यह हदीस पहुंची है कि माहे रमज़ान की किसी रात में अगर कोई इन्ना फ़तहना लक फ़तहम मुबीना आख़िर सूरत तक) नफ़्ल नमाज़ में पढ़े तो पूरे साल वह हर क़िस्म के शर और बलाओं से महफ़ूज़ रहेगा।

रमज़ान के हुरूफ़ और इनकी बरकतें

रमज़ान के हुरूफ़

रमज़ान के पांच हुरूफ़ हैं। र रिज़वानुल्लाह (अल्लाह की ख़ुशनूदी) है, मीम मुहाबतुल्लाह की है (अल्लाह की मोहब्बत) ज़ाद ज़मानुल्लाह का है यानी अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी अलीफ का है और नून नूर और नवाल (मेहरबानी और बख़्शिश) का है, यानी अल्लाह के औलिया और सुलहा और अबरार के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की तरफ़ नून का इशारा है।

कहते हैं कि तमाम महीनों में रमज़ान के महीने की मिसाल ऐसी है जैसे सीना में दिल या इंसानों में अंबियाए कराम या शहरों मे हरम। हरम ऐसी बुज़ुर्ग जगह है कि उसके अन्दर दज्जाले लईन को दाख़िला नहीं मिलेगा और माहे रमज़ान में सरकश शैतानों को जकड़ दिया जाता है, अंबिया गुनहगारों की सिफ़ारिश करते हैं माहे रमज़ान ख़ुद भी गुनहगारों की सिफ़ारिश (शफ़ाअत करेगा) दिल की जिला मारफ़त और ईमान के नूर से होती है इसी तरह माहे रमज़ान की ज़ीनत तिलावते कुरान पाक से होती है जो शख़्स माहे रमज़ान में नहीं बख़्शा गया फिर उसके लिए कौन सा महीना होगा जिसमें वह बख़्शा जायेगा। बन्दे पर लाज़िम है कि तौबा के दरवाज़े बन्द होने से क़ब्ल अल्लाह की तरफ़ सच्चे दिल से रूजू करे और गिरया वज़ारी का वक़्त गुज़रने से पहले ही (बद आमाली पर) गिरया वज़ारी करे।

रमज़ान की हुरमत मिल्लत की इज़्ज़त है

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि जब तक मेरी उम्मत माहे रमज़ान की हुरमत बाक़ी रखेगी वह रूसवा नहीं होगी। एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह रूसवाई कैसी? हुजूर ने इरशाद किया कि रमज़ान में जिसने हराम अमल का इरतिकाब किया या कोई गुनाह किया, शराब पी या ज़िना किया उसका रमज़ान (कोई रोज़ा) क़बूल नहीं किया जायेगा और आइन्दा साल तक उस पर अल्लाह की उसके फ़रिश्तों की और आसमान वालों की लानत होगी अगर उस अर्सा में (आइन्दा साल की रमज़ान तक) मर जायेगा तो अल्लाह तआ़ला के हुजूर में उसकी कोई नेकी, नेकी (की सूरत में क़बूल) न होगी।

सरदारी और सरवरी

कहा गया है कि सय्यदुल बशर आदम अलैहिस्सलाम हैं और सय्यदुल अरब हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और हज़रत सलमान फ़ारसी तमाम अहले फ़ारस के सरदार थे इसी तरह सय्यदुल रूम हज़रत सुहैब रूमी सय्यदुल हब्श, हज़रत बिलाल हब्शी हैं। इसी तरह तमाम बस्तियों में सरवरी मक्का मुकर्रमा को, वादियों में सबसे बरतरी वादीए बैतुल मुकद्दस को हासिल है, दिनों मे जुमा सय्यदुल अय्याम है रातों में शबे क़द्र को सरवरी हासिल है, किताबों में कुरआन करीम को, सूरतों मे सूरतुल बक़र को, सूरतुल बक़र में आयतल कुर्सी को, सब आयात में सरदारी और बुजुर्गी हासिल है, पत्थरों में संगे असवद तमाम पत्थरों मे बुजुर्ग है और चाहे ज़मज़म हर कुएं से अफ़ज़ल है, हज़रत मूसा का असा हर असा से बरतर था और जिस मछली के शिकम में हज़रत यूनूस अलैहिस्सलाम रहे थे वह तमाम मछलियों में अफ़ज़ल थी। हज़रत सालेह की ऊंटनी तमाम ऊंटनियों में अफ़ज़ल थी और इसी तरह बुराक़ हर घोड़े से अफ़ज़ल था, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की अंगुश्तरी तमाम अंगुश्तरियों से बरतर और अफ़ज़ल थी और माहे रमज़ान तमाम महीनों का सरदार और उनसे बुजुर्ग व अफ़ज़ल है।

शबे क़द्र के फ़ज़ाइल

सूरह क़द्र की तफ़्सीर

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़द्र (आख़िर सूरत तक) यानी हमने इसे (कुरआन) शबे क़द्र में उतारा, कुरआन उतारने से इस तरफ़ इशारा है कि लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर लिखने वाले फ़रिश्तों के पास भेजा पस कुरआन मजीद का जिस क़दर हिस्सा पूरे साल में बहुक्मे इलाही हज़रत जिब्रील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लेकर आते थे उतना हिस्सा ही शबे क़द्र में आसमाने दुनिया पर नाज़िल हो जाता था इसी तरह दूसरे साल शब क़द्र में इतना नाज़िल होता जितना कि उस साल हज़रत जिब्रील को लाना होता यहां तक कि तमाम कुरआन मजीद लैलतुल क़द्र में रमज़ान के अन्दर लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर नाज़िल कर दिया गया।

हज़रत इब्ने अब्बास और दूसरे मुफ़स्सरीन ने आयत इन्ना अन्ज़लनाहो की तफ़सीर में फ़रमाया है कि मुराद यह है कि हमने इस सूरत और पूरे कुरआन के साथ जिब्रील को लिखने वाले फ़रिश्तों के पास शबे क़द्र में उतारा उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर थोड़ा थोड़ा 23साल की मुद्दत मे मुख़तलिफ़ दिनों, मुख़तलिफ़ औक़ात और मुख़तलिफ़ महीनों में नाज़िल होता रहा।

लैलतुल क़द्र के मानी

लैलतुल क़द्र के मानी हैं अज़ीम रात या फ़ैसला वाली रात। इसको लैलतुल क़द्र कहने की एक वजह यह भी हो सकती है कि इस रात में आइन्दा साल तक होने वाले तमाम वाक़ियात मुक़द्दर कर दिए जाते हैं इसके बाद हक़ तआला फ़रमाता है:

ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर अल्लाह आप को शबे क़द्र की अहमियत और अज़मत न बताता तो आप को क्या मालूम होता कि शबे क़द्र क्या है? कुरआन मजीद में जिस मक़ाम पर भी वमा अदराका आया है तो अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को उस चीज़ की इत्तेला दे दी है जहां वमा युदरिका आया है तो अल्लाह ने आप को इसकी इत्तेला नहीं दी जैसे किस ने तुम्हें बताया कि क़यामत अंक़रीब आने वाली है) चुनांचे क़यामत का वक़्त रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मुनकशिफ़ नहीं हुआ था।

लैलतुल क़द्र से मुराद अज़मत और फ़ैसला वाली रात है बाज़ उलमा का ख़्याल है यह वही रात है जिसके मुताल्लिक़ आयत हमने कुरआन मजीद को बरकत वाली रात में नाज़िल फ़रमाया, हम की डराने वाले हैं, इसी रात में हिकमत व दानाई से भरे हुए फ़सले किए जाते हैं यानी शबे क़द्र में अमल करना उन हज़ार महीनों के अमल से बेहतर है जिनमें शबे क़द्र न हो। रिवायत है कि सहाबा कराम को जितनी खुशी ख़रूम मिन अल्फ़े शहरुन से हुई किसी चीज़ से हासिल नहीं हुई, वाक़िया यह है कि एक रोज़ सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम के रूबरू बनी इसराईल के चार हज़रात यानी हज़रत अय्यूब, हज़रत ज़करिया, हज़रत हिज़क़ील और हज़रत यूशअ़ बिन नून अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र फ़रमाया और इरशाद किया कि उन्होंने अस्सी बरस तक अल्लाह तआला की इबादत की और कभी लम्हा भर के लिए भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी नहीं की। सहाबा कराम को यह सुनकर ताज्जुब हुआ इस असना में जिब्रील अलैहिस्सलाम आ गये और कहने लगे कि ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप को और आप के सहाबा को यह सुनकर ताज्जुब हुआ कि उन हज़रात ने अस्सी बरस इबादत की और एक लम्हा को नाफ़रमानी नहीं की, अल्लाह तआला ने तो आप पर इससे बेहतर इरशाद नाज़िल फ़रमाया है इसके बाद हज़रत जिब्रील ने सूरत इन्ना अन्ज़लनाहो पढ़ी और कहा कि जिस चीज़ पर आप और आप के अस्हाब को ताज्जुब हुआ था यह उससे अफ़ज़ल है यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत मसरूर हुए।

यहया बिन बख़ीह का क़ौल है कि बनी इसराईल में एक शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा और खुशनूदी के लिए एक हज़ार महीने तक हथियार बन्द रहा और जिस्म से हथियार अलग नहीं किये यह बात हुज़ूर ने सहाबा कराम से बयान फ़रमाई तो इस पर सहाबा को ताज्जुब हुआ उस वक़्त अल्लाह तआला ने आयत लैलतुल क़द्रि ख़ैरुम मिन अल्फ़े शहर नाज़िल फ़रमाई मतलब

यह है कि इस शख़्स के हज़ार महीनों से तुम्हारे लिए एक शबे क़द्र अफ़ज़ल व बरतर है। बाज़ अस्हाब ने उस मुजाहिद का नाम शमऊन बताया है किसी ने शमसून भी कहा है।

तनज़्ज़लुल मलाएकतो यानी शबे क़द्र में गुरूबे आफ़ताब से तुलूए आफ़ताब तक फ़रिश्ते और रूह यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम उतरते रहते हैं वर्रूहो यानी हज़रत जिब्री अलैहिस्सलाम।

ज़हाक ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया अर्रूहो इंसानी सूरत पर एक क़वियुल जुस्सा ख़िलक़त है इसके बारे में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: आप से रूह के बारे में दरयाफ़्त करते हैं तो रूह वह फ़रिश्ता है जो सफ़ बस्ता फ़रिश्तों के साथ क़यामत के दिन तन्हा खड़ा होगा (अकेली सफ़ में खड़ा होगा)। मक़ातिल का क़ौल है कि अल्लाह तआला के नज़दीक वह फ़रिश्ता तमाम मलाइका से बरतर यानी अशरफुल मलाइका है। दीगर उलमा ने इस सिलसिला में कहा है कि यह वह फ़रिश्ता है कि उसकी सूरत तो इंसानी है लेकिन जिस्म फ़रिश्तो के मानिन्द है वह अर्श के पास है आज़मे मख़लूक़ (मख़लूक़ में सबसे अफ़ज़ल) वह सफ़ बस्ता फ़रिश्तों के साथ खड़ा होता है चुनांचे अल्लाह तआला का यह इरशाद उसी के मुताल्लिक़ है।

शबे क़द्र में (फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं) हर अम्र यानी हर भलाई के साथ (उन फ़रिश्तों का नुज़ूल होता है) वह रात सलामती वाली है (उसमें कोई बीमारी व जादू टोने का असर, काहिनों की कहानत मोअस्सिर नहीं) तुलूए फ़ज्र तक अगर मतला का लाम मकसूर पढ़ा जाये मतलीए पढ़ा जाये तो उसके मानी होंगे मक़ामे तुलूअ सलामुन के मानी यह भी कहे गये हैं कि रूए ज़मीन के मुसलमानों पर मलाइका की तरफ़ से सलाम होता है यानी तुलूए फ़ज्र तक फ़रिश्ते सलाम सलाम कहते रहते हैं।

कौन सी रात लैलतुल क़द्र है

शबे क़द्र की तलाश

शबे क़द्र को रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अशरा में तलाश किया जाये (यानी 20 तारीख़ से आख़िरी तारीख़ तक) उन तारीख़ों में ज़्यादा मशहूर 27 वीं शब है। इमाम मालिक के नज़दीक किसी तारीख़ का तअय्युन वसूक़ के साथ नहीं किया जा सकता, आख़िरी अशरा की सब रातें बराबर हैं। इमाम शाफ़ई के नज़दीक 21 वीं शब ज़्यादा क़ाबिले एतमाद है। एक क़ौल है कि 29वीं शब। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा का यही मसलक था (वह इसी रात को ख़्याल फ़रमाती थीं) हज़रत अबू मरवा 23वीं शब के क़ाएल थे। हज़रत अबूज़र और हज़रत हसन ने फ़रमाया कि यह 25वीं शब है। हज़रत बिलाल ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि वह 24 वीं शब है। हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत अबी बिन कअब ने फ़रमाया कि वह 27वीं शब है इस तअय्युन पर उनकी दलील यह है कि 27वीं शब ज़्यादा मोअक्किद है मुख़्तसर यह कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह कौन सी शब है।

इमाम हंबल बिल असनाद हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहे अन्हो से रिवायत की है कि सहाबा कराम अपने अपने ख़्वाब आख़िरी अशरा (रमज़ान) में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान किया करते थे उस पर हुज़ूर ने फ़रमाया मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम लोगों के ख़्वाब 27 वीं शब के मुताल्लिक़ मुतवातिर हैं। इसलिए जो शख़्स शबे क़द्र की तलाश करे वह 27 वीं

रात को करे। यह भी मरवी है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने हज़रत उमर फ़ारूक़ से कहा मैंने ताक़ अददों पर तो सात से ज़्यादा किसी ताक़ अदद को लाएके एतमाद नहीं पाया। फिर जब सात के अदद पर ग़ौर किया तो आसमानों को भी सात, ज़मीन को भी सात, रात को सात, दरिया भी सात, सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई भी सात बार है, ख़ाना कसबा का तवाफ़ भी सात बार है, रमई जमार भी सात है, इंसान की तख़लीक़ भी सात आज़ा से है, उसके चेहरे में भी सात सुराख़ हैं कुरआन मजीद में हा मीम से शुरू होने वाली सूरते सात हैं सुरह अलहम्द की आयत सात हैं, कुरआन पाक की क़िरअतें सात हैं, नीज़ मांज़िले भी सात हैं, सजदा भी सात आज़ा से होता है, जहन्नम के दरवाज़े सात हैं, जहन्नम के नाम सात और उसके दर्जे भी सात हैं असहाबे कहफ़ सात थे, सात दिन की मुसलसल लगातार आंधी से क़ौम आद हलाक हो गई, हज़रत युसूफ़ अलैहिस्सलाम सात साल जेल ख़ाना में रहे, बादशाहे मिस्र ने ख़्वाब में जो गायें देखी थीं वह सात थीं, कहत के भी सात साल थे और अरज़ानी के भी के भी सात साल, पंजगाना नमाज़ के फ़राएज़ की रिकअते 17 हैं। अल्लाह तअला का इरशाद है: जब हज से फ़ारिग़ होकर लौटो तो सात रोज़े रखो नसबी औरतें भी सात ही हराम हैं और सुसराली औरतें भी सात हराम हैं। कुत्ता अगर किसी बरतन में मुह डाल दे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के बमौजिब वह उसको सात बार पाक करने का हुक्म है जिसमे पहली बार मिट्टी से मांजना है। सूरतुल क़द्र के आग़ाज़ से लफ़्ज़ सलाम तक हुरूफ़ की तादाद 27 है। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम अपनी आज़माइश में सात साल मुबतला रहे। हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा ने फ़रमाया कि मैं सात साल की थी कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे निकाह फ़रमाया, सर्दी के आख़िरी दिन सात हैं तीन दिन शबात (फागुन) के और चार दिन आज़र (चैत) के। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के शोहदा सात तरह के हैं (1) राहे खुदा (जिहाद) में मारा जाने वाला, (2) ताऊन से मरने वाला (3) सिल के मरज़ में मरने वाला (4) डूब कर मरने वाला (5) जल कर मर जाने वाला (6) पेट के मरज़ (हैज़ा) से मरने वाला (7) वज़अ हमल में मरने वाली औरत। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का तूल उस ज़माने के सात गज़ के बराबर था और आप के असा का तूल भी सात गज़ था, जब यह साबित हो गया कि अकसर चीज़ें सात हैं तो अल्लाह तआला ने सलामुन हेया हत्ता मत–ल–इल फ़ज्र फ़रमाकर बन्दों को आगाह कर दिया कि शबे क़द्र 27 वीं शब को है (कि इस में सात का हिन्दसा शामिल है) इस रिवायत से यह साबित होता है कि शबे क़द्र 27 तारीख़ को होती है।

शबे जुमा अफ़ज़ल है या शबे क़द्र

हमारे उलमाए कराम के दर्मियान इस अम्र में इख़तेलाफ़ है कि शबे जुमा अफ़ज़ल है या शबे क़द्र। हज़रत शैख़ अबू अब्दुल्लाह बिन बत्ता, शैख़ अबुलहसन जज़री और अबुल हफ़्स उमर बरमक्की शबे जुमा को अफ़ज़ल कहते हैं अबुल हसन तमीमी के नज़दीक शबे जुमा से वह रात अफ़ज़ल थी जिसमें कुरआने पाक का नुज़ूल हुआ उसके बाद आइन्दा सालों में (रमज़ान में आने वाली) शबे क़द्र से शबे जुमा अफ़ज़ल है (यानी सिर्फ़ वह शबे क़द्र शबे जुमा से अफ़ज़ल थी) जिसमें कुरआन का नुज़ूल हुआ इसके बाद हर शबे जुमा आने वाली शबे क़द्र से अफ़ज़ल है

लेकिन अक्सर उलमाए का इस पर इख़्तेलाफ़ है उनका मज़हब यह है कि शबे क़द्र जुमा की रात और दीगर तमाम रातों से अफ़ज़ल व बरतर है।

हमारे असहाब यानी अकाबरीन उलमाए हनाबला (या हंबली मज़हब) के क़ौल की दलील वह रिवायत है जिसको काज़ी इमाम अबुल याला ने अपनी असनाद के साथ हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अल्लाह तआला जुमा की रात में तमाम मुसलमानों को बख़्श देता है। यह फ़ज़ीलत ऐसी है कि किसी और रात के बारे में हुजूर ने ऐसी फ़ज़ीलत बयान नहीं फ़रमाई यह भी हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि आप ने फ़रमाया मुझ पर फ़ज़ीलत वाली रातों में रौशन दिनों में, जुमा के दिन और उसकी रात में कसरत से दुरूद भेजा करो। एक वजह यह भी है कि शबे जुमा अपने दिन के ताबेअ़ है बिला शुबहा शबे जुमा की फ़ज़ीलत में इतनी रिवायत है। कि उतनी लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत में नहीं है उन्ही रिवायाते फ़ज़ाइल में एक रिवायत यह है जिसके रावी हज़रत अनस है उन्होंने फ़रमाया कि हुजूर ने इरशाद किया कि आफ़ता[illegible] किसी ऐसे दिन पर कभी तुलूअ नहीं हुआ जो अल्लाह तआला के नज़द[illegible] जुमा के दिन से अफ़[illegible]ल हो।

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है कि हुजूर सल्ल[illegible]ाहो अलैहि वसल्लम [illegible] इरशाद फ़रमाया यौमे जुमा से अफ़ज़ल दिन पर सूरज न तुलूअ होता है न गुरूब और [illegible] दो [illegible]ड़े फ़िरको यानी जिन्न व इन्स का हर जानदार अल्लाह से डर कर जुमा [illegible]दिन अल्लाह [illegible]ी तर[illegible] रूजूअ करता है। हज़रत अबू हुरैरा से यह भी मरवी है कि रसूले खु[illegible] इरशाद [illegible]रमाया रोज़े क़यामत अल्लाह तआला हर दिन को उसकी [illegible]रत में उठायेगा लेकि[illegible] जुमा के दिन को इस हाल में उठायेगा कि व[illegible] रौशन [illegible] ताबां होगा [illegible] अह[illegible] जुमा उस[illegible] गिर्दा गिर्द इस तरह चलेंगे जैसे दुल्हन को झुरमु[illegible] में उसके शौहर की जानिब [illegible]जाते [illegible]ब लोग उसकी रौशनी में चलेंगे, उनके रंग बर्फ़ की तरह सफ़े[illegible] और उनकी खुशबू मु[illegible]मानि[illegible] होगी वह सब काफ़ूरी पहाड़ों में दाख़िल होंगे अह[illegible] महश[illegible] में तमाम जिन्न व इन्स उनको ता[illegible] से देखेंगे यहां तक कि वह लोग जन्नत में दाख़ि[illegible] जायेंगे।

शबे क़द्र पर शबे जुमा की अफ़ज़लियत

अगर कोई यह एतराज़ करे कि अल्लाह तआला तो शबे क़द्र को हज़ार महीनों से बेहतर और अफ़ज़ल फ़रमाता है तो उसके जवाब में कहा जायेगा कि हज़राते मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया है कि इसका मतलब यह है जिन हज़ार महीनों में शबे क़द्र न हो उन हज़ार महीनों से बेहतर एक शबे क़द्र है। यह मतलब नहीं कि जिन महीनों में शबे जुमा भी न हो उनसे शबे क़द्र अफ़ज़ल है ब अलफ़ाज़े दिगर मुराद यह है कि शबे क़द्र ऐसे हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है जिनमें शबे जुमा न हो नीज़ यह वजह है कि शबे जुमा जन्नत में भी बाक़ी रहेगी क्योंकि उस दिन में अल्लाह तआला का दीदार वाक़ेअ होगा और यह शबे जुमा दुनिया में क़तई और यक़ीनी तौर पर मुतअय्यन व मालूम है और शबे क़द्र का तअय्युन महज़ जन्नी है।

शबे क़द्र अफ़ज़ल है शबे जुमा से

इमाम अबुल हसन तमीमी और दीगर उलमाए कराम का मज़हब यह है कि शबे क़द्र अफ़ज़ल है इसकी वजह (दलील) यह है कि अल्लाह तआला का इरशाद है कि यह हज़ार महीनों से

अफ़ज़ल है और हज़ार महीने 83 साल और चार महीने के हैं। एक क़ौल यह भी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुज़ूर में जब आप की उम्मत की उमरें पेश की गईं तो वह आप को बहुत कम मालूम हुईं जिस पर आपको शबे क़द्र पेश की गई (यानी अ़ता की गयी)

इमाम मालिक बिन अनस ने फ़रमाया कि मैंने एक क़ाबिले एतमाद शख़्स से सुना है कि गुज़िश्ता लोगों की उर्में बड़ी तवील थीं हुज़ूर वाला ने उनके मुक़ाबले में अपनी उम्मत की उम्रों को कम पाया और ख़्याल फ़रमाया कि जितने आमाल (हुस्ना) गुज़िश्ता लोग अपनी तवील उम्रों में कर चुके उस हद तक मेरी उम्मत के लोग अपनी कोताह उम्रों में नहीं कर सकेंगे तो अल्लाह तआ़ला ने आपको शबे क़द्र अता फ़रमाई जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है।

इमाम मालिक बिन अनस ने सईद बिन मुसैयब का क़ौल नक़्ल किया है कि जो शख़्स शबे क़द्र में इशा की नमाज़ बा जमाअ़त में हाज़िर हुआ उसको शबे क़द्र (की इबादत) का एक हिस्सा मिल गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी है कि जिसने इशा और मग़रिब जमाअ़त के साथ पढ़ी उसने शबे क़द्र से अपना हिस्सा हासिल कर लिया। हुज़ूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि जिसने सूरतुल क़द्र की तिलावत की उसने चौथाई क़ुरआन की तिलावत की। इस सूरह को माहे रमज़ान की आख़िरी नमाज़े इशा में पढना मुस्तहब है।

शबे क़द्र के गै़र मुतअय्यन होने का सबब

अगर कोई कहे कि इसकी क्या वजह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को क़तई और यक़ीनी तौर से शबे क़द्र को क्यों नहीं बताया (कि वह कौन सी रात है) जिस तरह शबे जुमा की इत्तेला तअय्युन के साथ फ़रमा दी है, इसका जवाब उनको यह दिया जायेगा कि अदमे तअय्युन की वजह यह है कि लोग इस बात पर एतमाद न कर लें कि हम ऐसी रात में इबादत कर चुके जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है और अल्लाह ने हमारी मग़फ़िरत कर दी, हम को बारगाहे इलाही से बड़े बडे मरातिब हासिल हो गये, जन्नत मिल चुकी। यह ख़्याल करके वह अमल से किनारा कश हो जायेंगे और मुतमईन हो कर बैठ जायेंमे और उम्मीद में फंस कर रह जायेंगे जिस का नतीजा बरबादी होगा। शबे क़द्र को तअय्युन से मुत्तला न करने की यही वजह है जो मौत के वक़्त से मुत्तला न करने की है ताकि अपनी मौत का वक़्त जानने वाला यह न कहने लगे अभी तो मेरी उम्र बहुत बड़ी है दुनिया में तो अभी ऐश कर लूं, लज़्ज़तें और ख़्वाहिशें पूरी कर लूं जब ज़िन्दगी की ख़ातमे का वक़्त आयेगा तो उस वक़्त तौबा कर लूंगा और इबादत में मशगूल हो जाऊंगा और नेकोकारों की हालात में मेरा ख़ातमा हो जायेगा इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उनसे उनके मरने का वक़्त पोशीदा रखा ताकि उनको हमेशा मौत का धड़का लगा रहे और नेक अमल में मसरूफ़ रहे हमेशा तौबा करते रहें और आमाल की इसलाह में मशगूल रहें और उन पर मौत इस हाल में आये कि वह नेकी पर क़ायम हों इस तरह दुनिया में भी वह जाएज़ लज़्ज़तो से महज़ूज़ हों और आख़िरत में अल्लाह की रहमत के बाइस अज़ाब से बच जायें।

एक मकूला है कि अल्लाह तआला ने पांच चीजो को पांच चीज़ों के अन्दर छुपा रखा है बन्दा की ताअ़त में अपनी रज़ा को, बन्दा की नाफ़रमानियों में अपने ग़ज़ब को, दर्मियानी नमाज़ को दूसरी नमाज़ों में, मख़्लूक़ में अपने औलिया को और माहे रमज़ान में शबे क़द्र को।

पांच मख़सूस रातें

अल्लाह तआला ने हुजूर को पांच रातें मरहमत फ़रमाई

अल्लाह तआला ने अपने हबीब मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पांच मख़सूस रातें अता फ़रमाई हैं पहली रात कुदरत और मोजज़ा वाली रात है जिसमें आप की अंगुश्ते मुबारक के इशारे से चांद दो टुकड़े हो गया। अल्लाह तआला का इरशाद है: वह साअत क़रीब आ गई और चांद शक़ हो गया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए उनके असा के ज़र्ब से समन्दर शिगफ़्ता हो गया लेकिन हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अंगुश्ते मुबारक के इशारे से चांद शक़ हो गया। यह सबसे बड़ मोजज़ा था दूसरी रात दावत और दावत की क़बूलियत की थी अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हमने आप की तरफ़ जिन्नों की एक जमाअत को भेजा वह कुरआन सुनने लगे। तीसरी रात हुक्म और फ़ैसला की रात थी। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हमने कुरआन को बरकत वाली रात में नाज़िल किया हम ही डराने वाले हैं उसी रात में हर हिकमत वाला काम तक़सीम किया जाता है। चौथी रात कुर्ब और नज़दीकी की थी यानी शबे मेराज थी, अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: पाक है वह ज़ात जिसने अपने बन्दे को रात के एक हिस्सा में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा तक सैर कराई। पांचवी रात तहय्यत व सलाम की है, इरशादे ख़ुदावन्दी है इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़द्र——तनज़्ज़लुल मलाइकतो वर्रूहो फ़ीहा तक, यह शबे क़द्र है।

बदकारों के लिए नेकोकारों की शफ़ाअत

हुजूर इब्ने अब्बास से मरवी है कि जब शबे क़द्र होती है तो अल्लाह तआला जिब्रील को ज़मीन पर उतरने का हुक्म देता है। जिब्रील के साथ सिदरतुल मुन्तहा पर रहने वाले सत्तर हज़ार फ़रिश्ते भी होते हैं जिनके पास नूरी झंडे होते हैं। ज़मीन पर नुज़ूल के बाद जिब्रील और फ़रिश्ते अपने अपने झंडे चार जगह गाड़ देते हैं 1—ख़ाना काबा के पास 2—हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रौज़े अक़दस के पास 3—मस्जिद बैतुल मुक़द्दस के पास 4—मस्जिदे तूरे सीना के पास। इसके बाद जिब्रील फ़रिश्तों से कहते है कि तुम फैल जाओ, फ़रिश्ते सारी ज़मीन पर फैल जाते हैं कोई घर, कोई कमरा, कोई कोठरी और कोई कश्ती ऐसी बाक़ी नहीं रहती जहां मोमिन मर्द और औरत मौजूद हो और फ़रिश्ते वहां दाख़िल न हों अलबत्ता जिस घर में कुत्ता, सुअर तस्वीर या वह पलीद मौजूद हो जिसकी पलीदगी ज़िना से हुई हो वहां यह फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते। दाख़िल होने के बाद तमाम फ़रिश्ते तस्बीह, तक़दीस और तहलील में मसरूफ़ हो जाते हैं और उम्मते मोहम्मदिया के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं (तमाम रात रह कर) फ़ज्र के वक़्त आसमान पर चढ़ जाते हैं आसमाने दुनिया के रहने वाले दरयाफ़्त करते हैं कि आप कहां से आये, फ़रिश्ते जवाब देते हैं हम दुनिया में थे क्योंकि यह रात उम्मते मोहम्मदिया के लिए शबे क़द्र थी, वही फ़रिश्ते फिर पूछते हैं कि अल्लाह तआला ने उनकी हाजतों की बाबत क्या हुक्म फ़रमाया, उस वक़्त जिब्रील कहते हैं कि अल्लाह तआला ने अच्छे अमल करने वाले को बख़्श दिया और बदकारों के लिए नेकोकारों की शफ़ाअत क़बूल फरमाई यह सुनते ही आसमाने दुनिया के फ़रिश्ते

अपनी अपनी आवाज़ में तस्बीह व तक़दीस और रब्बुल आलमीन की हम्द व सना करने लगते हैं और इस अम्र पर अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाते हैं कि अल्लाह तआला ने उम्मते मोहम्मदिया की मग़फ़िरत फ़रमा दी और अपनी रज़ामन्दी का इज़हार फ़रमाया। इसके बाद आसमाने दुनिया के फ़रिश्ते उन फ़रिश्तों के साथ दूसरे आसमान तक जाते हैं वहां भी इसी तरह सवाल व जवाब व हम्द व सना का ग़लग़ला बलन्द होता है यहां तक यह फ़रिश्ते सातवें आसमान तक पहुंच जाते हैं उसके बाद जिब्रील फ़रमाते हैं कि ऐ आसमान के रहने वालो! लौट जाओ, फ़रिश्ते अपनी अपनी जगह वापस चले जाते हैं सिदरतुल मुन्तहा के रहने वाले फ़रिश्ते भी चले जाते हैं सिदरा के रहने वाले दरयाफ़्त करते हैं कि तुम कहां गये थे यह भी वैसा ही जवाब देते हैं जैसा कि आसमाने दुनिया पर रहने वाले फ़रिश्तों ने दिया था उनका जवाब सुनकर सिदरतुल मुन्तहा के रहने वाले फ़रिश्ते भी तस्बीह व तहलील व तक़दीस बलन्द आवाज़ में करने लगते हैं उनकी आवाज़ें जन्नतुल मावा सुनती है उसकी आवाज़ जन्नते नईम, उसकी आवाज़ जन्नते अदन, उसकी आवाज़ जन्नतुल फ़िरदौस और उसकी आवाज़ अर्शे इलाही तक जाती है तो वह भी हम्द व सना व तस्बीह व तहलील में मसरूफ़ हो जाता और और उन इनाम[illegible] पर शुक्र बजा लाता है जो अल्लाह तआला ने उम्मते मोहम्मदिया पर फ़रमाये हैं फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है।

ऐ मेरे अर्श! तूने किस लिए अपनी आवाज़ बलन्द की? वह अर्ज़ करता है कि ऐ मेरे माबूद! मुझे मालूम हुआ है कि तूने आज रात उम्मते मोहम्मदि[illegible] सालेहीन को बख़्श दिया है और उनकी शफ़ाअत गुनहगारों के हक़ में क़बूल फ़रमा ली है। हक़ तआला कहता है कि ऐ मेरे अर्श तू ठीक कहता है! मेरे नज़दीक उम्मते मोहम्मदिया की इतनी इज़्ज़त व करामत है कि न किसी आंख ने देखी और न किसी कान ने सुना और [illegible] किसी दिल में उसका वहम व गुमान गुज़रा।

रिवायत है कि जब हज़रत जिब्रील अलैहिस्स[illegible] कद्र में जब आसमान से उतरते हैं तो कोई मुसलमान ऐसा बाक़ी नहीं रहता जिससे उन्होंने सलाम करके मुसाफ़ा न किया हो। इसकी अलामत यह [illegible] कि [illegible]स शख़्स की जिल्द की रौंगटे खड़े होंगे, उसका दिल नर्म होगा और उसकी आंख से आंसू [illegible] यही वजह है उस रिवायत की जिसमें आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्[illegible] के लिए परेशान थे अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मोहम्मद! सल्लल्लाहो अलैहि वसल्[illegible] ग़मगीन न हो मैं जब तक तेरी उम्मत को अंबिया की मरातिब व दरजात अता नहीं करूंगा उनको दुनिया से नहीं निकालूंगा और इसकी सूरत यह है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम के पास चूंकि फ़रिश्ते कलाम, पयाम, वही और एजाज़ लेकर आते थे उसी तरह शबे क़द्र में अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते सलाम व रहमत के साथ उम्मते मोहम्मदिया पर नाज़िल होंगे।

शबे क़द्र की अलामतें

शबे क़द्र की पहचान यह है कि उस शब में न गर्मी होगी न सर्दी (मौसम मोअ़तदिल होगा) बाज़ हज़रात ने कहा है कि इस रात में कुत्ते की भोंकने की आवाज़ नहीं सुनी जायेगी और उस रात की सुबह को सूरज इस तरह तुलूअ होगा कि उसकी शुआयें तश्त के मुशाबेह होंगी (यानी सूरज बग़ैर किरनों के तुलूअ होगा) शबे क़द्र के अजाएबात का इन्कशाफ़ तो उन्ही दिल वालों पर होता है जो इताअत गुज़ार और साहबे विलायत होते हैं उन हज़रात में जिस बुर्जुग का जैसा हाल, दरजा और मरतबए क़ुर्ब होता वैसे ही इन्केशाफ़ात उन पर होते हैं।

नमाज़े तरावीह

नमाजे तरावीह, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है आप ने एक दो या तीन रातें (ब इख़तेलाफ़ रिवायत) तरावीह की नमाज़ पढ़ी इसके बाद सहाबा कराम हुज़रए मुक़द्दस से आप के बाहर तशरीफ लाने के मुनतज़िर रहे मगर हुजूर काशानए नुबूव्वत से बाहर तशरीफ़ नहीं लाये, आपने फ़रमाया कि अगर मैं (तरावीह के लिए) बाहर आ जाता तो तुम पर तरावीह फ़र्ज़ हो जाती। हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर के ज़माने में तरावीह की नमाज़ हमेशा पढ़ी गई इस बिना पर इस की निसबत आप से की जाती है इस लिए भी कि इसकी जमाअत की इब्तेदा आप ही ने की।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा से मरवी है कि माहे रमज़ान की वस्त रात में एक बार हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ी लोगों ने भी हुजूर की इक़तेदा में नमाज़ अदा की दूसरी रात आदमियों की इतनी कसरत हुई कि मस्जिद तंग हो गई लेकिन हुज़ूर वाला हुजरे नबवी से बरआमद नहीं हुए, सुबह को फ़ज्र की नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाये फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग हो कर लोगों से ख़िताब फ़रमाया तुम्हारी रात की हालत मुझसे पोशीदा न थी लेकिन अंदेशा यह था कि नमाज़े तरावीह तुम पर फ़र्ज़ हो जाये और तुम इसके अदा करने से आजिज़ हो जाओ। हज़रत आइशा सिद्दीका फ़रमाती हैं कि हुजूर लोगों को रमज़ान की रातों को ज़िन्दा रखने (नमाज़ पढ़ने) की तरग़ीब दिया करते थे बग़ैर इसके कि आप उन पर लज़ूम के साथ हुक्म फ़रमाये (यानी वजूबी हुक्म हुजूर नहीं देते थे) आप के विसाल के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और अहदे फ़ारूकी के इब्तेदाई के दौर में तरावीह का मामला यूं ही रहा।

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया कि हज़रत उमर बिन अल ख़त्ताब ने मुझसे तरावीह की नमाज़ की हदीस जब सुनी तो आप ने उस पर अमल फ़रमाया। लोगों ने दरयाफ़्त किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन वह हदीस क्या है? तो आप ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आप ने फ़रमाया कि अर्शे इलाही के इर्द गिर्द एक जगह है जिसका नाम "हज़ीरतुल कुद्स" है वह नूर की जगह है उसमें इतने फ़रिश्ते हैं जिनकी तादाद अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, इबादते इलाही में मशग़ूल रहते हैं और उसमें एक लम्हा की भी कोताही नहीं करते जब माहे रमज़ान की राते आती हैं तो यह अपने रब से ज़मीन पर उतरने की इजाज़त तलब करते हैं और वह बनी आदम के साथ मिलकर नमाज़ पढ़ते हैं। उम्मते मोहम्मदिया में जिसने उनको छुआ या उन्होंने किसी को छुआ तो वह ऐसा नेक बख़्त व सईद बन जाता है कि फिर कभी बद बख़्त व शक़ी नहीं बनता, यह सुनकर हज़रत उमर ने फ़रमाया जबकि इस नमाज़ की यह शान है तो हम इसके ज़्यादा हक़दार हैं फिर आपने तरावीह की जमाअत क़ायम कर के उसको सुन्नत क़रार दे दिया।

हज़रत अली मुर्तज़ा से मरवी है कि माहे रमज़ान की इब्तेदाई रात में जब घर से बाहर आते और मस्जिदों में तिलावते कुरआन सुनते तो फ़रमाते अल्लाह! उमर की क़ब्र को रौशन कर दे जिन्होंने अल्लाह की मस्जिदों को कुरआन से मुनव्वर किया। इसी तरह की एक रिवायत हज़रत उसमान ग़नी से मरवी है उस रिवायत के अलफ़ाज़ यह है कि हज़रत अली मस्जिदों के क़रीब

से गुज़रे तो मस्जिदों को किन्दीलों से रौशन और लोगों को तरावीह पढ़ते देखा तो फ़रमाने लगे अल्लाह तआला हज़रत उमर की क़ब्र को रौशन फ़रमाये जिस तरह उन्होंने हमारी मस्जिदों को रौशन किया है।

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह के घर में किन्दील लटकाता है (रौशन करता है) सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस किन्दील के बुझने तक उसके लिए दुआए मग़फ़िरत और इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। हज़रत अबूज़र गेफ़ारी ने फ़रमाया हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, रमज़ान की 23वीं रात को एक तिहाई रात तक हुजूर वाला ने खड़े होकर नमाज़ पढाई 24 वीं रात को हुजूर तश्रीफ़ नहीं लाये पच्चीसवीं रात को तश्रीफ़ लाए तो निस्फ़ शब तक नमाज़ पढाई हमने अर्ज़ किया कि अगर हुजूर हम को आज पूरी रात तक नफ़्ल पढ़ाते तो ख़ूब होता हुजूर ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इमाम के साथ नमाज़ ख़त्म होने तक बा जमाअत नमाज़ में खड़ा रहा उसे पूरी रात का सवाब मिलेगा। 26 वीं शब को हुजूर फिर तश्रीफ़ न लाये फिर 27 वीं शब आई तो हुजूर वाला ने अहले बैते कराम को भी जमा फ़रमाया और हम सब को साथ ले कर नमाज़ पढ़ाई हमको ख़ौफ़ हुआ कि हमारी फ़लाह न फ़ौत हो जाये, लोगों ने अर्ज़ किया कि फ़लाह के क्या मानी हैं आप ने फ़रमाया कि सहरी।

नमाज़े तरावीह की जमाअत

मुस्तहब है कि नमाज़े तरावीह बा जमाअत हो और तिलावते कुरआन जहरी हो इसलिए कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़े तरावीह इसी तरह पढ़ी थी। नमाज़े तरावीह की इब्तेदा उसी रात से करना चाहिए जिस रात को माहे रमज़ान का चांद नज़र आ जाये इस लिए कि वह रात माहे रमज़ान की रात होती है और इस लिए भी हुजूर वाला ने भी इस तरह पढ़ी है। इशा के नमाज़ के फ़र्जों और सुन्नतों के बाद तरावीह होनी चाहिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अमल यही था। तरावीह की 20 रकअतें हैं हर दो रकअत के बाद सलाम फेरना चाहिए, 20 रकअत के पांच तरवीहा हैं यानी हर चार रकअत का एक तरवीहा। हर चार रकअत के बाद कुछ देर के लिए वक़्फ़ा ज़रूरी है हर दो रकअत के शुरू में इस तरह नीयत करे कि मैं दो रकअत नमाज़े तरावीह मसनूना अदा कर रहा हूं नमाज ख़्वाह तन्हा पढ़ रहा हो या जमाअत के साथ हर सूरत में नीयत करना मुस्तहब है माहे रमज़ान की अव्वल शब की तरावीह में पहली रकअत मे सूरह फातिहा के बाद सूरह अलक़ यानी पढे क्योंकि हमारे इमाम अहमद बिन हंबल और दूसरे तमाम अइम्मा के नज़दीक यह कुरआन की पहली नाज़िल शुदा सूरत है इसी तरह तमाम मुजतहेदीन के नज़दीक है। फिर सूरत के आख़िर में सजदए तिलावत करे इसके बाद उठ कर सूरह बक़रा की तिलावत करे।

पूरे कुरआन को तरावीह में पढ़ना मुस्तहब है ताकि इस तरह लोग पूरे कुरआन को सुन ले और कुरआन में जो अवामिर व नवाही, नसाएह और बसाइर हैं उनसे वाकिफ़ हो जाये। पूरी तरावीह में एक ख़त्म से ज़्यादा पढ़ना अच्छा नहीं ताकि मुक़तदियों को कोई दुश्वारी न हो और वह तंग दिल होकर उकता ना जाये, जमाअत से कराहत न पैदा हो और उनका सवाबे अज़ीम और अजरे जज़ील फ़ौत न हो जाये और चूंकि यह तमाम दिक्क़तें उनको इमाम की वजह से पेश

आयेंगी इस लिए इमाम का गुनाह गुनाहे अज़ीम होगा। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ से फ़रमाया था कि मआज़ क्या तुम फ़ितना व बला पैदा करते हो, सूरत यह हुई कि हज़रत मआज़ ने कुछ लोगों को ने नमाज़ पढ़ाई और क़िरअत को तूल दिया तो एक शख़्स ने नमाज़ तोड़ कर अलग हो गया और उसने तन्हा नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी फिर उसने इस अम्र की रसूले ख़ुदा से शिकायत की उस वक़्त हुज़ूर उनको बुलवा कर यह अलफ़ाज़ हज़रत मआज़ से फ़रमाये।

मुसतहब है कि तरावीह के बाद वित्र पढ़े वित्र की पहली रिकअत में सब्बेह इस्मे रब्बेकल आला और दूसरी रिकअत में सूरह काफ़िरून और तीसरी रिकअत में सूरह इख़लास पढ़े इस लिए कि हुज़ूर सरवरे काएनात का यही मामूल था। दो तरावीहों के दर्मियान नफ़्ल पढ़ना मकरूह है इसी तरह दो मस्जिदों में तरावीह पढ़ना मकरूह है, नफ़्ल नमाज़ को तरावीह के बाद बा जमाअत पढ़ना भी दो रिवायतों में से एक के बमौजिब मकरूह है। यह तअक्कुब यानी जमाअत के बाद जमाअत करना है। इमाम अहमद के नज़दीक तअक्कुब मकरूह है। एक रिवायत में आया है कि हज़रत अनस बिन मालिक भी इसे मकरूह समझते थे बल्कि तरावीह के बाद कुछ दर सो रहे फिर उठकर जितने नवाफ़िल और तहज्जुद पढ़ना चाहे पढ़े फिर अपनी ख़्वाबगाह में चले जाए। नाशेअतुल लैल (रात का उठना) जिस की तारीफ़ अल्लाह ने सूरह मुज़म्मिल में फ़रमाई है। दूसरी रिवायत में है कि तरावीह के बाद जमाअत नवाफ़िल बिला कराहियत जायज़ है लेकिन बिलकुल आख़िर में सोने से पहले यह नफ़्ल बा जमाअत पढ़े क्योंकि हज़रत उमर ने फ़रमाया था कि तुम लोग रात की फ़ज़ीलत आख़िरी हिस्सा पर छोड़ देते हो मुझे तो उस साअत से जिसमें तुम नमाज़ सोकर उठने के बाद पढ़ते हो वह साअत ज़्यादा महबूब है जबकि तुम सो जाते हो यानी जिस घड़ी तुम सोते हो वह साअत मेरे नज़दीक और वह घड़ी तुम्हारी उस साअत से ज़्यादा पसन्दीदा है जिस में तुम खड़े होकर इबादत करते हो।

शबे क़द्र और माहे रमज़ान

के मज़ीद मसाइल

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है रूह यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को साथ लेकर उतरते हैं उनमें जिब्रील सब फ़रिश्तों के सरदार होते हैं जिब्रील हर उस शख़्स को जो बैठा हो और दूसरे फ़रिश्ते हर उस शख़्स को जो सोया हो सलाम करते हैं। हक़ सुब्हानहु तआला अपने हर उस बन्दे पर जो नमाज़ में खड़ा हो उसी तरह सलाम भेजता है जिस तरह जन्नत के अन्दर मोमिन बन्दों को अल्लाह का सलाम पहुंचाना साबित है। अल्लाह तआला का इरशाद है: मेहरबान रब की तरफ़ से उन को सलाम होगा। इसी तरह यह भी जाएज़ है कि दुनिया में उन नेक बन्दों पर सलाम भेजे जिनके लिए रोज़े अज़ल ही से अल्लाह की तरफ़ से भलाई, रहमत और सआदत मुक़द्दर हो चुकी है जो फ़ानी दुनिया से मोहब्बत नहीं रखते और अल्लाह तआला ही से लौ लगाये हैं और अल्लाह ही की तरफ़ तवज्जोह व सुकून के साथ रुजूअ हो कर अपने गुनाहों पर नादिम हैं।

शबे क़द्र में ज़मीन का कोई चप्पा ऐसा बाक़ी नहीं रहता जहां कोई फ़रिश्ता हालते सुजूद

या क़याम में मसरूफ़ मोमिन मर्द या औरत के लिए दुआ न करता हो सिर्फ़ इसाइयों के मअबद (गिरजा) यहूदियों की हैकल, बुत परस्तों के मन्दिर और वह मक़ामात जहां ग़लाज़त डाली जाती है उससे मुस्तसना है (फ़रिश्ते वहां नहीं जाते)

रात भर यह मलाइका मुसलमान मर्दों और औरतों के लिए दुआ में मसरूफ़ व मशग़ूल रहते हैं हज़रत जिब्रील भी हर मोमिन मर्द और औरत को सलाम व मुसाफ़ा करते हैं वह हर मुसलमान से कहते है कि अगर तू इबादत में मशग़ूल हो तो तुझ पर सलाम है अल्लाह तेरी इबादत को क़बूल करे और तेरे साथ भलाई फ़रमाये अगर तू गुनाहों में मुबतला हो तो तुझ पर सलाम हो अल्लाह तेरे गुनाहों को माफ़ करे अगर तू सोता है तो तुझ पर सलाम हो अल्लाह तुझ से राज़ी हो अगर तू क़ब्र में हो तो तुझ पर सलाम हो और तुझे राहत और रहमते इलाही मयस्सर हो। आयत मिन कुल्ले अमरीन सलामुन का यही मतलब है। बाज़ उलमाए कराम फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते अहले ताअत पर सलाम भेजते हैं अहले इसयां पर नहीं, उन गुनहगारों में कुछ तो वह है जो ज़ालिम हैं उनके लिए फ़रिश्तों के सलाम से कुछ हिस्सा नहीं है कुछ लोग ऐसे हैं जो हराम ख़ोर हैं, रिश्तादारियां मुनक़तअ करने वाले हैं, चुग़लख़ोर, यतीमों का माल खाने वाले हैं तो उन लोगों के नसीबा में फ़रिश्तों का सलाम नहीं है पस गुनाहों से बढ़ कर और कौन सी मुसीबत है कि मुबारक माह के आग़ाज़ में रहमत, दर्मियानी हिस्सा में मग़फ़िरत और आख़िरी हिस्सा में जहन्नम से आज़ादी की नेअमत मौजूद हो और यूंही गुज़र जाये और मलाइका के सलाम से महरूमी नसीब हो इस महरूमी और बदनसीबी की वजह इसके सिवा और कुछ नहीं कि तू रहमान से दूर रह कर नाफ़रमानों में शामिल है तू शैतान की मुवाफ़िक़त करता है और ऐसे ख़ुदा से दूर भागता है जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में बुराई और भलाई है।

रमज़ानुल मुबारक का महीना गुनाहों से रिहाई दिलाने का महीना, अल्लाह तआला से किये हुए वादों को निभाने का महीना, अल्लाह तआला की तरफ़ सिद्क़ दिल से रूजूअ होने का महीना. तमाम बुराइयों से तौबा करने का महीना है अगर यह महीना कभी तेरे दिल की दुरुस्ती न कर सका और तुझे अल्लाह की नाफ़रमानियों से बाज़ न रख सका और बदबख़्तों और मुजरिमों से दूर न कर सका तो फिर तेरे दिल पर कौन सी चीज़ असर करेगी और तुझसे किस भलाई की उम्मीद हो सकती है, अब कौन सी ख़ूबी और अच्छाई तेरे अन्दर बाक़ी रह गई और तेरे जानिब से कौन सी फ़लाह व बहबूद की तवक़्क़ोअ की जा सकती है (ज़रा सोच) कौन सी बदबख़्ती है जो तुम में नहीं ऐ इसयां में मुबतला इंसान तू जिस हाल में मुबतला है उससे ख़बरदार हो जा ग़फ़लत और नींद से बेदार हो जा और जिस मुसीबत में गिरफ़्तार है उसे देख, बाक़ी महीने (माह मुबारक के बक़िया दिनों को) ग़नीमत जान कर तौबा कर और अनाबत की तरफ़ मुतवज्जेह हो, इताअत व इस्तिग़फ़ार के साथ अपने मनहूस नफ़्स पर चीख़ चीख़ कर और हाय हाय कर के गिरया व ज़ारी, बहुत से रोज़ादार ऐसे होंगे कि आइन्दा माहे रमज़ान के रोज़े नहीं रख सकेंगे बहुत से इबादत गुज़ार ऐसे होंगे कि फिर उनको कभी इबादत का मौक़ा नहीं मिलेगा, अमल करने वालों को अमल तमाम करने के बाद ही उजरत दी जाती है बिला शुबहा हम से अमल का वक़्त रूख़सत हो रहा है ऐ काश हमें मालूम होता कि फ़लां शख़्स का रोज़ा या फ़लां शख़्स की इबादत मक़बूल या मरदूद होगी और उसके मुंह पर मार दी जायेगी काश हम को यह भी मालूम हो जाता कि कौन मक़बूल है ताकि हम उसको मुबारकबाद पेश करते और यह मालूम हो

कि रान्दए दरगाह (मरदूद) कौन है कि हम उस की ताज़ियत और उससे इज़हारे अफ़सोस करते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि बहुत से रोज़ादार हैं कि जिनको भूक और प्यास के रोज़ों से कुछ हासिल नहीं होगा (यानी उनके रोज़े भूक और प्यास के सिवा कुछ नहीं) बहुत से रातों को नमाज़ पढ़ने वाले हैं जिन की नमाज़ सिवाए बेदार रहने के और किसी शुमार में नहीं आयेगी।

ऐ रमज़ानुल मुबारक के महीने तुझ पर सलाम! ऐ ईमान के महीने तुझ पर सलाम! नुजूले कुरआन व तिलावत के महीने तुझ पर सलाम! माहे अनवार तुझ पर सलाम! माहे बख़्शिश व मग़फ़िरत तुझ पर सलाम! दरजाते जन्नत के हुसूल और दोज़ख़ के तबक़ात से नजात के महीने तुझ पर सलाम! ऐ आबिदों और तौबा करने वालों के महीने तुझ पर सलाम! अहले मारफ़त के महीने तुझ पर सलाम! ऐ आरिफ़ों के महीने तुझ पर सलाम! ऐ अमन व अमान के महीने तुझ पर सलाम! ऐ माहे रमज़ान तू गुनहगारों को गुनाहों से नजात दिलाने और परहेज़गारों से उन्स व मोहब्बत रखने वाला था तुझ पर सलाम! सलाम हो उन क़िन्दीलों और रौशन चिराग़ों पर, सलाम हो उन आंखों पर जो बेदार रहती हैं, सलाम हो उन आंखों पर जो बहती रहती हैं, सलाम हो उन मेहराबों पर जो रौशन और मनव्वर हैं, सलाम हो क़तरा क़तरा बन कर गिरने वाले आंसुओं पर, सलाम हो सोख़्ता दिलों से निकलने वाली आहों पर, इलाही हम को भी उन लोगों में शामिल फ़रमा दे जिनके रोज़े और नमाज़ें तूने क़बूल फ़रमाई हैं और जिनकी बुराइयों को तूने नेकियों से बदल दिया है और जिनको तूने अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाया और उनके मरातिब को बलन्द फ़रमाया या अरहमर्राहेमीन।

सदक़ए फ़ित्र व ईदुल फ़ित्र

अल्लाह तआला का इरशाद है: बेशक वह कामयाब हुए और फ़लाह पाई जिन्होंने बातिन को पाक किया और अपने रब का ज़िक्र करते हुए नमाज़ पढ़ी। फ़लाह की दो किस्में हैं एक तो तौफ़ीके ताअत की बदौलत दुनिया में बरकत व सआदत से हम किनार होना और आख़िरत में हमेशा जन्नत में रहना। क़द अफ़लहल मोमेनून अहले ईमान को सआदत मिल गई। क़द अफ़लहा मन तज़क्का के मानी हैं जिसको ज़कात अदा करने और ईमान व तक़वा को गुनाहों से पाक रखने की तौफ़ीक़ मिल गई वह ख़ुश नसीब हो गया और जिसने यह तज़किया न किया यानी ज़कात न दी और गुनाहों से अपने आमाल को पाक न रखा उसके लिए कोई फ़लाह नहीं है ला युफ़्लेहुल मुजरेमून के यही मानी हैं यानी गुनहगार (मुजरिम) न कामयाब है और न फ़लाह पाने वाले हैं, गुनहगार कामयाब और ख़ुश नसीब नहीं होंगे। मन तज़क्का के मानी में मुफ़स्सरीन का इख़्तेलाफ़ है। हज़रत इब्ने अब्बास ने इसके मानी फ़रमाये कि जो ईमान के ज़रिये शिर्क से पाक हो गया, हसन बसरी ने फ़रमाया फ़लाह उसके लिए है जिसने नेक और बढ़ने वाले नेक आमाल किये। अबुल अहूस ने इरशाद किया जिस ने माल की ज़कात अदा की, क़तादा और अता फ़रमाते हैं कि इस आयत में सिर्फ़ सदक़ए फ़ित्र मुराद है। शैख़ ने इसी क़ौल की बुनियाद पर आयते मज़कूरा बाला को सदक़ए फ़ित्र के इस्तिदलाल में बयान किया है।

वज़्करा इस्मा रब्बेही फ़सल्ला की तफ़सीर में भी इख़्तेलाफ़ है, हज़रत इब्ने अब्बास ने इसकी

तफ़सीर में फ़रमाया कि जिसने अल्लाह को वाहिद जाना और पंजगाना नमाज़ें अदा कीं गोया ज़िक्र से मुराद तौहीद और पांचों वक़्त की नमाज़ें हैं। हज़रत अबू सईद खुदरी फ़रमाते हैं ज़िक्रे इस्म से मुराद तकबीरात कहना और सल्ला से मुराद हैं ईदगाह जाकर नमाज़े ईद पढ़ना। वकीअ बिन जर्राह ने फ़रमाया रमज़ान के लिए सदक़ए फ़ित्र की वह हैसियत है जो नमाज़ के लिए सजदए सहव की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोज़ादार को यावा गोई से बाज़ रखने के लिए सदक़ए फ़ित्र को वाजिब क़रार दिया है यानी रोज़ादार के रोज़ा में यावा गोई दरोग़, चोरी, चुग़लखोरी, मुश्तबा रोज़ी और हसीन औरतों की तरफ़ निगाह करने से जो ख़राबियां पैदा हो जाती हैं, सदक़ए फ़ित्र मज़कूरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा, रोज़ों का तकमिला और रोज़ों की नक़्स की तलाफ़ी का ज़रिया है जिस तरह गुनाहों के लिए तौबा व इस्तिग़फ़ार है और नमाज़ में सहव के लिए सजदा है, शैतान ही नमाज़ में सहव पैदा करता है पस सजदए सहव शैतान को ज़लील व ख़्वार करता रहता है। इसी तरह रोज़ा में बेहूदा गोई और लग़ज़िशें भी शैतान ही के बाएस होती हैं पस गुनाहों से तौबा और रमज़ान के रोज़ों की ख़राबियां दूर करने के लिए सदक़ए फ़ित्र भी शैतान को ज़लील व ख़्वार करने का ज़रिया है। अल्लाह तआला हम सब को शैतान की घातों से बचाए और दुनिया की आफ़तों और बलाओं से महफ़ूज़ रखे (आमीन) और हमें अपनी रहमत मे जगह दे आमीन सुम्मा आमीन।

ईद की वजहे तसमिया

ईद को ईद इसलिए कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की तरफ़ इस दिन फ़रहत व शादमानी को बार बार लाया है यानी ईद और औद हम मानी हैं। बाज़ उलमा का कौल है कि ईद के दिन अल्लाह तआला की तरफ़ से बन्दे को मुनाफ़ेअ, एहसानात और इनामात हासिल होते हैं यानी ईद अवाइद से मुश्तक़ है और अवाइद [illegible] है मुनाफ़ेअ के, या ईद के दिन बन्दा चूंकि गिरया व ज़ारी की तरफ़ लौटता है और उसके एवज़ अल्लाह तआला बख़्शिश व अता की जानिब रूजूअ फ़रमाता है बाज़ उलमा का कहना है कि इसकी वजहे तसमिया यह है कि बन्दा इताअते इलाही से इताअते रसूल की तरफ़ रूजूअ करता है और फ़र्ज़ के बाद सुन्नत की जानिब पलटता है, माहे रमज़ान के रोज़े रखने के बाद माहे शव्वाल के छः रोज़ों की तरफ़ मुतवज्जेह होता है इसलिए इसको ईद कहते हैं। ईद की वजहे तसमिया के मुताल्लिक़ बाज़ उलमा का कहना है कि ईद इसलिए कहा गया है कि इस दिन मुसलमानों से कहा जाता है कि (अल्लाह तआला फ़रमाता है) कि अब तुम मग़फ़ूर हो कर अपने घरों और मक़ामात को लौट जाओ बाज़ फ़रमाया कि इसको ईद इसलिए कहा गया कि इसमें वादा व वईद का ज़िक्र है, बांदी और गुलाम की आज़ादी का दिन है, हक़ तआला इस दिन अपनी क़रीब व बईद मख़लूक़ की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाता है, कमज़ोर व नातवां बन्दे अपने रब के सामने गुनाहों से तौबा और रूजूअ करते हैं।

वहब बिन मुम्बा का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने यौमे फ़ित्र को जन्नत पैदा फ़रमाई और उसी दिन अर्श पर दरख़्ते तूबा लगाया। हज़रत जिब्रील को वही के लिए मुनतख़ब फ़रमाया और उसी दिन फ़िरऔन की तरफ़ से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में पेश होने वाले साहिरों ने तौबा करके मग़फ़िरत पाई।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक हदीस मरवी है कि हुज़ूर ने फ़रमाया जब ईदुल

फ़ित्र का दिन होता है और लोग ईदगाह की तरफ़ जाते हैं तो हक़ तआला उन पर तवज्जोह फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दो! तुम मेरे लिए रोज़े रखे मेरे लिए नमाज़ें पढ़ीं अब तुम अपने घरों को इस हाल में जाओ कि तुम बख़्श दिए गये हो।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला उस शख़्स को जिस ने माहे रमज़ान में रोज़े रखे ईदुल फ़ित्र की रात में पूरा पूरा अज्र अता फ़रमा देता है और ईद की सुबह फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि ज़मीन पर जाओ और हर गली कूचा और बाज़ार में एलान कर दो (इस आवाज़ को जिन्न व इन्स के अलावा तमाम मख़लूक़ सुनती है) कि मोहम्मद के उम्मतियों! अपने रब की तरफ़ बढ़ो वह तुम्हारी थोड़ी नमाज़ को क़बूल करके बड़ा अज्र अता फ़रमाता है और बड़े बड़े गुनाहों को बख़्श देता है फिर जब लोग ईदगाह रवाना हो जाते हैं और वहां नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर दुआ मांगते हैं तो अल्लाह तआला उस वक़्त किसी दुआ और किसी हाजत को रद्द नहीं फ़रमाता और किसी गुनाह को बग़ैर माफ़ किये नहीं छोड़ता और लोग अपने घरों को मग़फ़ूर हो कर लौटते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास की हदीस में है शबे ईदुल फ़ित्र का नाम शबे जाएज़ा (यानी इनाम की रात) रखा गया और ईदुल फ़ित्र की सुबह को तमाम शहरों के कूचा व बाज़ार में फ़रिश्ते फैल जाते हैं और एलान करते हैं (जिसको जिन्न व इन्स के सिवा तमाम मख़लूक़ सुनती है) कि ऐ मोहम्मद की उम्मत! रब्बे करीम की तरफ़ चलो ताकि वह तुम को सवाबे अज़ीम अता फ़रमाये और तुम्हारे बड़े बड़े गुनाहों को बख़्श दे। लोग ईदगाह को निकल जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाता है ऐ मेरे फ़रिश्तो! फ़रिश्ते लब्बैक कहते हुए हाज़िर हो जाते हैं हक़ तआला फ़रमाता है उस मज़दूर की क्या उजरत है जो अपना काम पूरा करे? फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि ऐ हमारे माबूद! हमारे आक़ा! उस मज़दूर को पूरी पूरी उजरत दी जाये, रब्बे जलील इरशाद फ़रमाता है ऐ मेरे फ़रिश्तो! मैं तुम को गवाह बनाता हूं कि मैंने इनके रोज़ों और नमाज़ों का अज्र, ख़ुशनूदी और गुनाहों की मग़फ़िरत बना दिया फिर फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दो मुझ से मांगो अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम आज तुम अपनी आख़िरत के लिए मुझसे मांगोगे मैं वह तुम को ज़रूर दूंगा और जो कुछ अपनी दुनिया के लिए मांगोगे मैं उसका लिहाज़ रखूंगा। मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम जब तक तुम मेरे अहकाम की हिफ़ाज़त करोगे (बजा लाओगे) मैं तुम्हारी ख़ताओं और लग़ज़िशों की पर्दापोशी करता रहूंगा और तुमको उन लोगों के सामने जिन पर शरई सज़ा वाजिब हो चुकी है रुसवा नहीं करूंगा जाओ तुम्हारी बख़्शिश हो गई, तुमने मुझे रज़ामन्द किया मैं तुम से राज़ी हो गया। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं फ़रिश्ते यह मुज़दा सुनकर ख़ुश हो जाते हैं और माहे रमज़ान के ख़ातमे पर उम्मते मोहम्मदिया को यह ख़ुश ख़बरी पहुंचाते हैं।

चार उम्मतों की चार ईदें

मिल्लते इब्राहीम की ईद

चार उम्मतों की चार ईदें हैं एक ईद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की, मिल्लत के लिए थी जिस का ज़िक्र अल्लाह तआला ने इस तरह फ़रमाया: हज़रत इब्राहीम ने सितारों पर नज़र डाली और कहा मेरी तबीयत ख़राब है इसकी तफ़सील यह है कि हज़रत इब्राहीम की क़ौम की ईद का

दिन था वह लोग ईद मनाने शहर के बाहर निकले, हज़रत इब्राहीम का मज़हब उनके मज़हब से अलग थलग था, आप उन लोगों के साथ (ईद मनाने नहीं गये) और बीमार बन गये जब लोग शहर के बाहर चले गये तो आपने तीशा उठाया और उनके बुतों को तोड़ डाला और उसके बाद तीशा बड़े बुत के कांधे पर रख दिया जब क़ौमे इब्राहीम वापस आई तो उसने अपने बुतों की यह दुरगत बनी देखी उन्होंने हज़रत इब्राहीम से पूछा कि हमारे बुतों के साथ यह सुलूक किसने किया (इसका पूरा क़िस्सा कुरआन मजीद में मज़कूर है) हज़रत इब्राहीम को अपने रब की इज़्ज़त के ख़ातिर जोश आया इसलिए उन्होंने गुस्से में तमाम बुतों को तोड़ डाला और रब्बुल आलमीन की मोहब्बत में अपनी जान को ख़तरे में डाला इसके सिला में रब्बुल आलमीन ने आप को अपनी दोस्ती से नवाज़ा उनके हाथों से मुर्दा परिन्दे को ज़िन्दा कराया उनकी नस्ल में अंबिया व मुरसलीन पैदा फ़रमाए और उनको हज़रत ख़ैरूल मुरसलीन मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जद्दे आला बनाया।

उम्मते मूसा की ईद

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत की ईद: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: मुक़ाबिला का मुक़र्रर शुदा दिन तुम्हारे लिए यौमे ज़ीनत है। यौमे ज़ीनत कहने की वजहे तस्मिया यह बयान की गई है कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल के दुश्मन फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन को हलाक करके हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आप की क़ौम को ज़ीनत बख़्शी। फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन के साथ 72 या 73 जादूगर मैदान में निकल आये थे उन जादूगरों के पास सात सौ लाठियां थीं उन जादूगरों ने लाठियों के ख़ोल में पारा भर दिया था और ऊपर से उन पर रस्सियां लपेट दी थी सब लोग गर्म रेत पर सूरज के नीचे खड़े थे (तेज़ धूप में खड़े थे) जब धूप तेज़ हुई तो पारा में हरकत पैदा हुई और रस्सियों [illegible] हुई लाठियां दौड़ने लगीं लोगों को गुमान हुआ कि वह सांप हैं दौड़ रहे हैं हालांकि लाठियां ग़ैर मुतहर्रिक थीं (उनके अन्दर पारा मुतहर्रिक था) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने दिल में अपनी क़ौम के बारे में यह ख़तरा महसूस किया कि कहीं ऐसा न हो कि लोग जादूगरों की इस शोबदा बाज़ी को देखकर उन साहिरों से मरऊब हो जायें और सही रास्ता से भटक कर रान्दए दरगाह बन जायें। अल्लाह तआला ने उस वक़्त हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया तुम भी अपना असा ज़मीन पर डाल दो जो कुछ उन्होंने झूठ बनाया है तुम्हारी लाठी उसको निगल लेगी, हज़रत मूसा ने अपनी लाठी ज़मीन पर फेंक दी वह फ़ौरन अज़दहा बनकर एक बड़े ऊंट की तरह दौड़ने लगा उस की दो आंखें आग की तरह दहकने लगीं (उस अज़दहे को देखकर) एक क़यामत बरपा हो गई उन लोगों ने जादू के ज़ोर से जितने सांप दौड़ाये थे हज़रत मूसा के उस (अज़दहा) नुमा असा ने इन सब सांपों को यक बारगी निगल लिया और उसकी हालत में कुछ फ़र्क़ नहीं आया न पेट फूला न हरकत में कमी आई न उसकी लम्बाई चौड़ाई में इज़ाफ़ा हुआ चुनांचे बे एख़्तेयार हो कर तमाम जादूगर अल्लाह तआला के हुज़ूर सजदे में गिर गये (उन जादूगरों के सरदार का नाम शमऊन था) सब जादूगर बयक ज़बान हो कर पुकार उठे हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाये।

सांप फ़िरऔन के लश्कर और उसकी क़ौम की तरफ़ बढ़ा, लोग (डर कर) भाग निकले

रिवायत है कि इस भगदड़ में तक़रीबन पचास हज़ार आदमी मर गये (उसी दिन का नाम यौम ज़ीनत रखा गया और यह उम्मते मूसवी का ईद का दिन है)।

हज़रत ईसा की उम्मत की ईद

हज़रत ईसा और आपकी उम्मत की ईद: अल्लाह तआला (हज़रत ईसा की दुआ नक़्ल फ़रमाते हुए) इरशाद करता है:

ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से एक ख़वाने नेमत उतार जो हमारे लिए और हमारे अगले पिछलों के लिऐ ईद हो जाए।

वाक़ेया यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हव्वारियों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल क्या आप का रब आप का यह सवाल पूरा कर सकता है की आप उससे दुआ करें कि वह हमारे लिए आसमान से ख़्वाने नेमत नाज़िल फ़रमाए तो क्या वह यह ख़्वाने नेमत नाज़िल कर सकता है, हज़रत ईसा ने यह सुन कर फ़रमाया अल्लाह से डरो, अगर तुम ईमान रखते हो तो आज़माईश में पड़ने का सवाल न करो अगर ख़्वाने नेमत उतार दिया गया और तुमने फिर भी उसे न माना (झुटलाया) तो तुम पर अज़ाब नाज़िल हो जाएगा। हव्वारियों ने कहा कि हम भूके हैं हम उसमें से खाना भी चाहते हैं और हमारे दिलों को इस पर इत्मीनान हो जाए जिस पर आप ईमान लाने और तसदीक़ करने को हम से कहते हैं और हम को मालूम हो जाए की आप नबुव्वत और रिसालत के मामले में सच्चे हैं दूसरे लोगों (बनी इस्राईल) के सामने जाकर हम ख़्वाने नेमत नाज़िल होने कि शहादत भी दे सकेंगे। नबती ज़बान में हव्वारीन के मानी कपड़े धोने और सफ़ेद करने वाले हैं उनकी तादाद कुल बारह थी यह हव्वारी बैतुल मुक़द्दस में कपड़े धोया करते थे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कौन है जो कुफ़्र व तुग़ियान के मुक़ाबिले में मेरी मदद करे और दीन को फैलाये? ताकि मैं उन काफ़िरों को इबादते इलाही और उसकी वहदानियत की तरफ़ दावत दूं यह सुन कर हव्वारियों ने कहा हम हैं राहे ख़ुदा में आपकी मदद करने वाले। हव्वारी अपना कारोबार छोड़कर हज़रत ईसा की इत्तेबा और पैरवी पर आमादा हो गये और आप के साथ हो गये उन्होंने जब साथ रह कर हज़रत ईसा के हाथ से सरज़द होने वाले अजीब व ग़रीब मोजज़ात देखे कि जब भूक लगती तो ज़मीन की तरफ़ हाथ बढ़ा देते और अपने हव्वारियों के लिए रोटी निकाल लेते। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आप के साथ होते थे जो मोजज़ात दिखाते आपकी मदद करते और नुसरत मन्द फ़रमाते।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल को बराबर मोजज़ात दिखाते रहते मगर बनी इस्राईल आपका इंकार ही करते रहे (आप से दूर ही होते गये) इत्तेबा और तसदीक़ की उनको तौफ़ीक़ नहीं हुई यहां तक कि एक दिन उन हव्वारियों के साथ पांच हज़ार जवान चले और उन्होंने हज़रत ईसा से ख़्वाने नेमत के नुज़ूल की दरख़्वास्त की उस वक़्त हज़रत ईसा ने बारगाहे इलाही में इस तरह दुआ की:

ऐ अल्लाह! ऐ हमारे परवरदिगार! आसमान से हम पर एक ख़्वान नेमत नाज़िल फ़रमा दे जो हमारे लिए (हमारे ज़माने के लोगों के लिए भी) ईद हो और आइन्दा वालों के लिए भी और तेरी तरफ़ से मेरी रिसालत की निशानी भी हो जाये, हमको रिज़्क़ अता फ़रमा तू सबसे अच्छा रज़्ज़ाक़ है।

अल्लाह ताअ़ला ने इस दुआ के जवाब मे इरशाद फ़रमाया:

मैं अंक़रीब तुम पर ख़्वाने नेमत नाज़िल करूंगा लेकिन उसके बाद जो इंकार करेगा उसको अज़ाब भी ऐसा दूंगा कि सारी दुनिया में किसी को नहीं दिया गया होगा।

ग़र्ज़ कि अल्लाह तआला ने इतवार के दिन उनपर ख़्वाने नेमत उतारा जिसमें ताज़ा मछली, चपातियां (पतली पतली रोटियां) और खजूरें थीं। एक क़ौल है कि तली हुई मछली थी जिसके सर के पास नमक और दुम के पास सिरका रखा था रोटियां पांच थीं हर रोटी पर ज़ैतून का एक फल रखा था, पांच अनार और कुछ खजूरें थीं, उनके गिरदा गिर्द मुख़तलिफ़ तरकारियां (अलावा लहसुन) के चुनी हुए थीं बाज़ उलमा ने कहा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जबकि वह एक बाग़ में मुक़ीम थे अपने हव्वारियों से कहा कि तुम में से किसी के पास कुछ खाने के लिए मौजूद हो तो लाओ! शमऊन ने दो छोटी छोटी मछलियां और पांच रोटियां पेश कीं एक हव्वारी थोड़े से सत्तू (भुने हुए जौ का आटा) ले आया, हज़रत ईसा ने उन मछलियों के छोटे छोटे टुकड़े किए और रोटियों के भी टुकड़े कर दिए सत्तू उसी तरह रहने दिए फिर वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ी और अल्लाह से बरकत की दुआ की, अल्लाह तआला ने हव्वारियों पर औंघ तारी कर दी जब उनकी आंख खुली तो खाना इतना ज़्यादा था कि एक क़ाफ़िला के लिए काफ़ी हो हज़रत ईसा ने फ़रमाया कि अल्लाह का नाम ले कर खाना खाओ उठाकर रख देने की इजाज़त नही है हुक्म दिया कि सब हल्क़ा बना कर बैठें चुनांचे सब बैठ गये और अल्लाह का नाम ले कर सब ने खाना शुरू कर दिया यहां तक कि सबके सब शिकम सेर हो गये खाने वालों की तादाद पांच हज़ार थी। एक रिवायत में है कि वह सब लोग 18 सौ मर्द औरत थे उनमें कुछ फ़क़ीर भी थे और कुछ फ़ाक़ा कश थे और ऐसे लोग भी थे जिन्हें एक रोटी भी मैयस्सर न होती थी उन सब ने वह खाना खाया ख़ूब सेर हो कर खाया और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए सब लोग उठ गये और खाना इतना का उतना ही मौजूद था उसमें [illegible] कमी नहीं आई उसके बाद लोगों की नज़रों के सामने ही दसतरख़्वान आसमान की तरफ़ [illegible] गया जिस फ़क़ीर ने उस ख़्वाने नेमत से खाना खाया वह तवंगर बन गया और मरते दम तक तवंगर रहा जिस बीमार या अपाहिज ने खाया वह तन्दुरुस्त हो गया।

मक़ातिल का क़ौल है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने क़ौम से पुकार कर कहा क्या तुम खा चुके, लोगों ने जवाब दिया जी हां, तो आपने फ़रमाया कि दूसरे वक़्त के लिए कुछ उठा कर न रखना, लोगों ने वादा किया लेकिन वादा ख़िलाफ़ी करते हुए कुछ उठा कर रख लिया जिस क़दर खाना उन्होंने उठाया था उसकी मक़दार चौबीस मक़्याल थी।(मक़्याल ग़ल्ला नापने का पैमाना, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में इस पैमाने में जिस क़दर भी आता हो जैसे अरब मे साअ) इस मोजज़े को देख कर वह सब के सब हज़रत ईसा पर ईमान ले आए और आपकी रिसालत की तसदीक़ की, जब बनी इस्राईल के पास पहुंचे तो उन लोगों ने ख़्वाने नेमत की शहादत दी और इसके सबूत में जो खाना (छिपाकर) उठाए थे पेश किया लेकिन बनी इस्राईल ने (जो यहूदी थे) न माना और उन (ईमान लाने वालों) के साथ लगे रहे यहां तक कि उनको इस्लाम से फेर दिया बावजूद कि ख़्वाने नेमत से ली हुई ख़ोराक उनके पास अब भी मौजूद थी फिर भी यह नुजुले माएदा के मुनकिर हो गए इस इन्कार का नतीजा यह हुआ की एक दिन सोते में अल्लाह तआला ने उन सब की सूरतें सूअरों की तरह मस्ख़ कर दीं, जिन की सूरतें मस्ख़ की गई थीं वह [illegible] मर्द थे उनमें कोई औरत या बच्चा नहीं था।

बाज़ ओरफ़ा ने बयान किया है कि उस मोजज़े में एक नुक्ता है और वह यह कि ख़्वाने लज़्ज़त में जो खाना मौजूद था वह बहुत कम था और खाने वाली एक जमाअ़त, एक जम्मे ग़फ़ीर और सबके सब शिकम सैर होकर उठे और खाना उतना ही बाक़ी रहा तो ग़ौर करना चाहीए कि अल्लाह तआ़ला के ख़्वाने रज़ा और ख़्वाने रहमत की क्या कैफ़ियत होगी जिस की न कोई हद है और न कोई इन्तिहा।

हदीस शरीफ़ में वारिद है की अल्लाह के सौ रहमतें हैं एक रहमत उसने दुनिया में उतारी है उसी रहमत के तुफ़ैल लोग आपस में रहमत व शफ़क़त करते हैं बाक़ी निनानवे हिस्से उसके पास हैं क़यामत के दिन वह रहमतें अपने बन्दों पर नाज़िल फ़रमाएगा।

हदीस शरीफ़ में आया है कि क़यामत के दिन अल्लाह जल्ला जलालुहू अपनी रहमत की ऐसी बिसात बिछाएगा कि अव्वलीन व आख़िरीन यानी तमाम इंसानों के गुनाह उसके किनारों में समा जायेंगे और उसके तमाम बिसात ख़ाली रहेगी यहां तक कि इब्लीस भी उसकी तरफ़ बढ़ने की कोशिश करेगा ताकी उसको भी बिसाते रहमत से कुछ मिल जाए हालांकि अल्लाह की रहमत इस क़दर वसीअ़ है लेकिन अक़्लमन्द व ज़ी फ़हम [illegible]स को ज़ेबा नहीं कि [illegible]ह इसी पर तकिया कर ले और इस फ़रेब ख़ुर्दगी में मुब्तला हो जाए ले[illegible]न ख़ौफ़ को उम्मीद [illegible] ग़ालीब भी नहीं बनाना चाहिए वरना हलाक हो जाएगा बक़द्र ताक़ते बश[illegible] कोशिश ज़[illegible] करना [illegible]ाहिए जहां तक मुम्किन हो अवामिर व नवाहि की पाबन्दी करे और अप[illegible]स कामों को अल्लाह के सुपुर्द कर दे यह ज़रूरी है। कसरत से बतौर दवाम तौब[illegible] व इस्ति[illegible] करता र[illegible] न ख़ौफ़े अज़ाब का इतना ग़लबा हो कि रहमत की आस [illegible] जाए और न नजात का इतना यक़ीन कि ममनूआत का इरतेकाब करने लगे और [illegible]ामिर को [illegible]करके नवाही का [illegible]तकिब हो बल्कि दर्मियानी रास्ता इख़्तियार करे य[illegible]ी मोमिन के अन्दर उम्मीद व [illegible], बीम व रजा परिन्दे के दो परों की तरह हैं और [illegible]रिन्दे उड़[illegible] वक़्त दोनों परों का [illegible] बरक़रार रखता है।

चौथी ईद उम्म[illegible] मोह[illegible]दिया की है आग़ाज़ में इसके मुता[illegible]लक़ तफ़सील बयान की जा चुकी है।

ईद मोमिन भी मनाता है और काफ़िर भी

ईद की ख़ुशी मनाने में मोमिन और काफ़िर दोनों शरीक हैं यानी काफ़िर भी (अपनी) ईद की ख़ुशी मनाता है और मोमिन भी, लेकिन काफ़िर की ईद शैतान की ख़ुशनूदी के लिए है और मोमिन की ईद अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिए है। मोमिन ईद के लिए (ईदगाह) जाता है तो उसके सर पर हिदायत का ताज (मुज़य्यन) होता है, हया और शर्म की अलामतें आंखों से नुमायां होती हैं और कान हक़ सुनने की तरफ़ राग़िब होते हैं, ज़बान पर तौहीद की शहादत और दिल में मारेफ़त और यक़ीन होता है, उसके शानों पर इस्लाम की चादर और कमर में इताअ़त (इलाही) का पटका होता है उसका मक़ाम और मंज़िल ख़ानक़ाह व मस्जिद होती है उसका माबूद बन्दों और सारी मख़लूक़ का रब होता है वह उसी के सामने [illegible] है उसी से मांगता है और

अल्लाह तआला की अता और बख़्शिश उसकी पज़ीराई करती है अल्लाह तआला उसे मक़ामे इज़्ज़त और जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा।

काफ़िर ईद को जाता है तो उसके सर पर नामुरादी और गुमराही का ताज होता है, कानों पर ग़फ़लत का परदा और हिजाब पड़ा होता है, आंखें बेहयाई और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी का पता देती हैं, ज़बान पर बद बख़्ती और शक़ावत की मुहर लगी होती है, दिल पर जहल व इंकार का अंधेरा छाया होता है, कमर में बदबख़्ती का पटका होता है, अल्लाह तआला से कट जाने के हैबत नाक गढ़े दर्मियान में हाएल होते हैं (ऐसे गढ़े जो अल्लाह और उसके दर्मियान हाएल होते हैं) उनकी नशिस्त व बरख़ास्त की जगहें गिरजे और आतिश कदे होंगे, उसके माबूद बुत होंगे, आख़िरकार ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है।

ईद मनाने का इस्लामी तरीक़ा

ईद में ऊमदा और अच्छा लिबास पहनने, ऊमदा और लज़ीज़ खाना खाने, हसीन औरतों से मुआनक़ा करने और लज़्ज़त और शहवत से लुत्फ़ अन्दोज़ होने से ईद नहीं होती है बल्कि मुसलमान की ईद होती है ताअत व बन्दगी की अलामात के ज़ाहिर होने से, गुनाहों और ख़ताओं से दूरी से, सय्यात के एवज़ हसनात के हुसूल से, दरजात के बलंदी की बशारत, अल्लाह तआला के तरफ़ से ख़िलअतें बख़्शिशें और करामतें हासिल होने से, नूरे ईमान से सीना की रौशनी, कुव्वते यक़ीन और दूसरी नुमायां अलामात के सबब दिल में सुकून पैदा हो जाने से, उलूम व फ़ुनून और हिकमतों का दिल के [illegible] समन्दर [illegible] से निकल कर ज़बान पर रवा हो जाने से ईद की हक़ीक़ी मुसर्रतें हासिल होती हैं।

ईद के दिन हज़रत अली की ख़िदमत में एक [illegible] हाज़िर हुआ आप उस वक़्त भूसी की रोटी खा रहे थे उसने अर्ज़ किया कि आज ईद का दिन है और आप चोकर (भूसी) खा रहे है? आप ने जवाब दिया, [illegible] ईद तो उसकी है जिसका रोज़ा क़बूल हो जिसकी मेहनत मशकूर हो और जिसके गुनाह बख़्श दिये गये हों। आज का दिन भी हमारे लिए ईद का दिन है और कल भी हमारे लिए ईद होगी [illegible] वह हमारे लिए ईद का दिन है जिस दिन हम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी न करें।

पस हर साहबे अक़्ल व शुऊर के लिए मुनासिब व ज़ेबा है कि ईद के ज़ाहिर पर नज़र रखने से बाज़ आ जाये, ज़ाहिर पर फ़रैफ़ता न हो बल्कि रोज़े ईद को इबरत और ग़ौर व फ़िक्र की निगाह से देखे, ईद के दिन को क़यामत का दिन समझे और शबे ईद में शाही नक़्क़ारा की आवाज को सूर की आवाज़ समझे जब लोग ईद के इंतेज़ार में तैयारी करके रात को सो जाते हैं तो उनकी उस हालत को ऐसा समझे जैसा कि सूर के दो नफ़्हों के दर्मियान ख़्वाब की हालत होगी। ईद की सुबह लोगों को जब अपने अपने महलों और घरों से निकलते देखे उनको रंग बिरंग लिबास, तरह तरह के ज़ेवरात में लिपटा ख़ुशी से झूमता देखे तो ख़्याल करे कि अहले माअसियत ग़मज़दा हैं और अहले तक़्वा ख़ुश व ख़ुर्रम हैं। मुशरिकों और मुजरिमों पर ख़ुदा की फिटकार बरस रही है वह मुंह के बल औंधे पड़े रेंग रेंग कर चल रहे हैं, मुत्तक़ी सवारियों पर सवार हैं अल्लाह तआला फ़रमाता है।

रहमान की तरफ़ हम अहले तक़वा को सवार करा के ले जायेंगे और मुजरिमों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासे ऊंटों की तरह हकायेंगे।

उस दिन हर ज़ाहिद व आबिद व अबदाल अपने हक़ीक़ी बादशाह और महबूब के पास अर्श के साया में आराम व सुकून में होगा, हर एक के जिस्म पर लिबास और ज़ेवर होगा, चेहरे पर मारफ़त व ताअ़त के अनवार होंगे और उसकी ताज़गी और झलक नुमायां होगी, सामने नेमत के दस्तरख़्वान बिछे होंगे जिस पर तरह तरह खाने, मशरूब और फल रखे होंगे यहां तक कि तमाम मख़लूक़ का हिसाब हो चुकेगा उस वक़्त वह अपनी अपनी मंज़िलों (क़याम गाहों) में जन्नत के अन्दर चले जायेंगे जो उनके लिए अल्लाह तआ़ला ने तैयार कर रखी हैं। जन्नत में हर मरगूब तबअ़ चीज़ मौजूद होगी हर चीज़ वहां की जाज़िब नज़र होगी वहां की नेमतें ऐसी होंगी कि न आंखों ने उन जैसी नेमतें देखी होंगी और न कानों ने सुना होगा बल्कि किसी शख़्स के दिल में उनका तसव्वुर भी न आया होगा, अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है:

कोई नहीं जानता कि उनके आमाल की जज़ा में अहले जन्नत के लिए आंखों को ठंडक पहुंचाने वाली कैसी चीज़ें पोशीदा रखी गई हैं।

और जो दुनिया के तलबगार हैं तो वह गिरया व ज़ारी और रन्ज व अलम में मुब्तला होंगे, अहले जन्नत जिन राहतों से हमकिनार होंगे उन राहतों और आसाईशों का दरवाज़ा उन के लिए बन्द रहेगा क्योंकि उन्हें माल व मताअ़ से रग़बत थी, हराम और मुशतबहा माल खाते थे और अपने रब की इबादत में गड़बड़ करते रहते थे, वह अहले जन्नत के मुरातिब देखेंगे मगर उन तक न पहुंच सकेंगे, जब तक वह उन हुक़ूक़ से ओहदा बरआ न होजायेंगे जो उनके ज़िम्मा हैं।

अब रहे काफ़िर तो वह तरह तरह के अज़ाब, ज़िल्लत व ख़्वारी, तबाही और बर्बादी दोज़ख़ के दवामी अज़ाब को महसूस करके मौत व हलाकत की आरज़ू करेंगे मगर उनको मौत नहीं आएगी।

जब मुसलमान ईद के दिन क़ौमी (शाही) फ़रेरों को लहराता और झंडों को सरबुलंद देखे तो उसको चाहिए कि उस वक़्त को याद करे जब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक मुनादी उंचे निशान वाले मुसलमानों को अल्लाह तआ़ला के दीदार के लिए पुकारेगा और जब वह (ईदगाह में) नमाज़ियों की दुरुस्त सफ़ें (जिन में बहुत से लोग शरिक हैं) देखे तो याद करे कि (कल) क़यामत के दिन तमाम मख़लूक़ अल्लाह के सामने उसी तरह खड़ी होगी कि बुरे लोग अलग क़तारों में और नेक लोग अलग क़तारों में खड़े होंगे और तमाम ढकी छिपी बातें उस रोज़ ज़ाहिर हो जायेंगी।

ईद की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर लोग ईदगाह से लौटते हैं, कोई घर को जाता है, कोई दुकान को कोई मस्जिद को, तो उस वक़्त यह हालत देख कर मुसलमान को चाहिए कि एस मंज़र औ कैफ़ियत को याद करे कि इस तरह लोग क़यामत में जज़ा अ सज़ा देने वाले बादशाह के हुज़ूर से जन्नत और दोज़ख़ की तरफ़ लौट कर जायेंगे, जैसा कि हक़ तआ़ला का इरशाद है:

क़यामत क़ाएम होने का दिन याद करो उस रोज़ लोगों के गरोह दो बन जायेंगे, एक गरोह जन्नत में और दूसरा जहन्नम में चला जाएगा।

बाब 15

दस रातें अशरए ज़िल हिज्जा, पैग़म्बरों की दस चीजें पुल सिरात की आठ सीढ़ियां, हज, एहराम व लब्बैक, तरविया और अरफ़ा

दस दिनों के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

क़सम है सुबह की, दस रातों की, जुफ़्त और ताक़ की और उस रात की जो गुज़र जाती है। यह क़समें ज़ी फ़हम लोगों के लिये हैं।

वलफ़ज्र की तफ़सीर में मुफ़स्सरीन का इख़्तेलाफ़ है, हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि फ़ज्र से सुबह की नमाज़ मुराद है वला यालिन अशरिन से ज़िलहिज्जा की दस रातें मुराद हैं यानी अशरा ज़िलहिज्जा, शफ़ए से जिसके लुग़वी मानी जुफ़्त के हैं मख़लूक़ मुराद है और वत्र (ताक़) से मुराद अल्लाह तबारक व तआला है वल्लैलि इज़ा यस्र और क़सम उस रात की जो गुज़र जाती है या जाती हुई रात की क़सम और अहले दानिश के लिए यक़ीनन यह बड़ी क़सम है कि इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद तुम्हारा रब तुम्हारी घात में है

मक़ातिल का क़ौल है कि फ़ज्र से मुराद मुज़दलफ़ा की वह सुबह है जो कुरबानी के दिन होती है और लयालिन अशरिन से ईदे अज़हा के क़ब्ल की दस रातें हैं और अशफ़ेअ से मुराद हज़रत आदम व हव्वा हैं और अलवित्र खुदावंद तआला है और वल्लैल इज़ा यसरिन के मानी हैं आई हुई रात यानी ज़िल हिज्जा की दसवीं रात गोया अल्लाह तआला ने कुरबानी के दिन की दस रातों की, आदम व हव्वा की, अपनी ज़ात की और ईदे अज़हा की रात की क़समें खाईं और इन (मुतअद्दिद) क़समों के बाद फ़रमाया यह क़समें अक़्ल व तमीज़ के लिए काफ़ी नहीं हैं। यह क़समें बहुत अज़ीमुश्शान हैं और जवाबे क़सम इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद है यानी (तुम्हारा रब यक़ीनन इंतज़ार में है।)

एक क़ौल यह है कि फ़ज्र से मुराद है पौ फटना यानी आम सुबह। बाज़ मुफ़स्सरीन कहते हैं कि इससे दिन मुराद है और दिन को फ़ज्र से इस लिए ताबीर किया गया है कि वह दिन से पहले होती है। मुजाहिद का ख़्याल है कि इससे रोज़े नहर (कुरबानी के दिन) की फ़ज्र मुराद है। इक्रमा ने कहा कि फ़ज्र से मुराद चश्मों से पानी का फूट कर बहना, सब्ज़े का ज़मीन फाड़ कर नमूदार होना और फलों का दरख़्तों में आना, फ़ज्र है उसी फ़ज्र की अल्लाह ने क़सम खाई है। एक क़ौल यह भी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अंगुश्त हाये मुबारक से पानी फूटकर बह निकलने की अल्लाह ने क़सम खाई है। यह भी कहा गया है कि पत्थर से फट कर हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी का बरआमद होना इससे मुराद है। यह भी रिवायत है। कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के असा की ज़र्ब से पत्थर के अन्दर से पानी का फूट कर बहना मुराद है।

बाज़ ने कहा है कि अल्लाह तआला ने गुनहगारों की आंखों से पानी फूटने यानी आंसुओं के पानी का बहना मुराद है या दिल से मारफ़ते इलाही का चश्मा फूटना मुराद है (क्योंकि ईमान व मारफ़त से ज़िन्दगी हासिल होती है) जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया देखो मुर्दा दिल को हम ने ईमान व मारफ़त के पानी से ज़िन्दा कर दिया। हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वल फ़ज्र वल यालिन अशरिन से ज़ोहा की दस रातें मुराद हैं। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ज़ुबैर और हज़रत अब्बास ने फ़रमाया कि इससे मुराद ज़िल हिज्जा की दस रातें है हज़रत इब्ने अब्बास से एक दूसरी रिवायत आई है कि आप ने फ़रमाया कि अशरए रमज़ान की दस रातें मुराद हैं। मुजाहिद ने कहा कि वह हज़रत मूसा की दस रातें हैं। मोहम्मद बिन जुरैर तबरी का क़ौल है कि वह मोहर्रम की अव्वल दस रातें हैं।

वश्शफ़्ओ वल वित्र की तफ़सीर में क़तादा और सिद्दी ने कहा शफ़ए हर वह चीज़ है तो जुफ़्त हों अल वित्र से मुराद अल्लाह तआला है। मक़ातिल का क़ौल है कि मुराद आदम और हव्वा है क्योंकि आदम तन्हा थे अल्लाह तआला ने हव्वा से उनका जोड़ा कर दिया। एक क़ौल है कि शफ़ए और वित्र से नमाज़े मुराद हैं यानी कोई नमाज़ (बएतबारे बरकत) जुफ़्त है कोई ताक़, शफ़ए और वित्र दोनों से मुराद मग़रिब की नमाज़ है कि अव्वल दो रकआतें जुफ़्त है और आख़िरी रकअत ताक़, यह क़ौल रबीअ बिन अनस और अबू आलिया का है। यह भी कहा गया है कि शफ़ए यौमे नहर (कुरबानी कर दिन) है और वत्र अरफ़ा का दिन यानी नौ ज़िल हिज्जा या शफ़ए यौमे नहर के बाद के दो दिन हैं और वत्र तीसरा यानी तेरहवीं तारीख़ ज़िल हिज्जा की।

वल्लैल एज़ा यसरिन (गुज़रती रात की क़सम या अंधेरी होने वाली रात की क़सम) बाज़ ने कहा कि वह रिवायत मुज़दलफ़ा की रात है। बाज़ का क़ौल है सरीउन के मानी हैं रात को चलना यहां रात में चलने के मानी हैं रात में लोगों का सैर करना और चलना। वहल फी ज़ालिका क़समल्लज़ी हिजरिन इसमें ज़ी हिज्र के मानी हज़रत अब्बास ने अक़्लमन्द के फ़रमाये हैं। हसन बसरी और अबूरजा कहते हैं कि इसके मानी हैं इल्म वाले, मोहम्मद बिन कअब क़रज़ी कहते हैं कि इससे मुराद दीन वाले हैं आयते बाला में हल बजाए इन्ना के ब मानी तहक़ीक़ इस्तेमाल हुआ है। बाज़ ने रब का लफ़्ज़ महज़ूफ़ माना है यानी क़सम है मालिके फ़ज्र की, क़सम है दस रातों के मालिक की, इसी तरह दूसरी आयात में जहां क़सम मज़कूर है लफ़्ज़ रब महज़ूफ़ माना गया है।

माह ज़िल हिज्जा के अशरए अव्वल में

मोजज़ाते अंबिया

शैख़ अबुल बरकात ने बिल असनाद हज़रत अब्बास से रिवायत की है कि आप ने फ़रमाया ज़िलहिज्जा के अव्वल अशरा में अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल फ़रमाई और उनको अपनी रहमत से नवाज़ा उस वक़्त वह अरफ़ा में थे। अरफ़ा में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी ख़ता का एतराफ़ कर लिया था उसी अशरा में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपनी दोस्ती से नवाज़ा (अपना दोस्त और ख़लील बनाया) अपना माल मेहमानों के लिए, अपनी जान आतिशे नमरूद के लिए और अपने फ़रज़न्द (इस्माईल)

को कुरबानी के लिए पेश कर दिया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़ाते वाला पर कमाले तवक्कुल ख़त्म हो गया। उसी अशरा में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने काबा शरीफ़ की बुनियाद रखी। अल्लाह तआला का इरशाद और जब इब्राहीम और इस्माईल उस घर बुनियादें उठाईं। उसी अशरा में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम की इज़्ज़त अता फ़रमाई, उसी अशरा में हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की लग़ज़िश माफ़ की गई, उसी अशरा में लैलतुल मुबाहात (फ़ख़्र व मुबाहात की रात) रखी गई।

रिवायत में आया है कि नुजूले कुरआन की इब्तिदा उसी अशरा में दस तारीख़ की सुबह को हुई उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईदगाह में तशरीफ़ ले जा रहे थे उसी अशरा में बैत रिज़वान हुई अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस दरख़्त के नीचे यह बैअत हुई वह समरह (बबूल) का दरख़्त था यह बैअत हुदैबिया के दिन हुई थी उस वक़्त सहाबा कराम की तादाद चौदह या पन्द्रह सौ थी सबसे पहले हज़रत अबूसीनान असदी ने बैअत के लिए हाथ बढ़ाया था उसी अशरा में यौमे तरविया (आठ तारीख़) यौमे अरफ़ा नौ तारीख़ और यौमे नहर (दस तारीख़) और यौमे हज्ज अकबर है।

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद बरिवायत हज़रत अबू सईद ख़ुदरी बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम महीनों का सरदार माहे रमज़ान है और तमाम महीनों नें हुरमत वाला महीना ज़िलहिज्जा है शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद व बरकात हज़रत जाबिर कहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया के दिनों में सबसे अफ़ज़ल ज़िलहिज्जा के दस दिन हैं सहाबा कराम ने अर्ज़ किया उन दिनों के अमल के बराबर राहे ख़ुदा में जिहाद करना भी नहीं है? आप ने फ़रमाया नहीं अलबत्ता उस शख़्स की बुज़ुर्गी के बराबर है जिसने अपना मुंह ख़ाक आलूद किया।

अशरा ज़िलहिज्जा की इबादात

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद बयान फ़रमाया कि मैंने ख़ुद सुना कि हज़रत आइशा फ़रमा रही थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक शख़्स गाना सुनने का बहुत दिल दादह था लेकिन ज़िलहिज्जा का चांद देखकर सुबह से रोज़े रख लेता था उसकी इत्तेला हुजूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची हुजूर ने फ़रमाया उसको बुला कर लाओ वह शख़्स हाज़िरे ख़िदमत हुआ, हुजूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम दिनों में रोज़े क्यों रखते हो? (कौन सी ऐसी चीज़ है जिसने तुमको इन दिनों के रोज़े पर उभारा) उसने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! यह दिन हज के हैं और इबादात के हैं और मेरी ख़्वाहिश है कि अल्लाह की अल्लाह उनकी दुआ में मुझे भी शरीक कर दे हुजूर ने इरशाद फ़रमाया तुम जो रोज़े रखते हो उसके हर रोज़े के एवज़ सौ गुलाम आज़ाद कराने, कुरबानी के लिए हरम में सौ ऊंट भेजने और जिहाद में सवारी के लिए सौ घोड़े देने का सवाब है और अरफ़ा के रोज़े के एवज़ दो हज़ार गुलाम आज़ाद करने, दो हज़ार ऊंट कुरबानी के लिए भेजने और दो हज़ार घोड़े जिहाद में देने का सवाब होगा और साल भर पहले और साल भर बाद के रोज़ों का सवाब मज़ीद बरां होगा।

शैख़ अबुल बरकात ने अपनी अस्नाद से बरिवायत सईद बिन जबीरहम से बयान किया कि हज़रत अब्बास ने फ़रमाया कि अय्यामे तशरीक़ में किसी दिन नेक काम करना अल्लाह तआला

को हर एक दिन में नेक काम से ज़्यादा महबूब है सहाबा कराम ने फ़रमाया राहे खुदा में जिहाद करने से भी ज्यादा? तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की राह में जिहाद भी उस से बेहतर नहीं हां जो शख़्स राहे खुदा में अपनी जान और माल ले कर निकला हो और फिर कुछ भी वापस ले कर न आया हो (यानी माल और जान दोनों कुरबान कर दिये हों)

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा से रिवायत की कि आप ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चार अमल तर्क नहीं फ़रमाते थे: अशरा ज़िलहिज्जा के रोज़े, आशूरा का रोज़ा, अय्यामे बैज़ (हर माह 13,14,15, को रोज़े रखना) और फ़ज्र की नमाज़ से पहले दो रकअतें।

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद बयान किया कि सईद बिन मुसय्यब ने हज़रत अबू हुरैरा से मरफ़ूअन यह रिवायत की है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी यौम इबादत की इबादत अल्लाह तआला को इतनी महबूब और पसन्द नहीं जितनी अशरए ज़िलहिज्जा के अय्याम की महबूब है। ज़िलहिज्जा के अशरे में एक रोज़े का सवाब साल भर के रोज़ों के बराबर है और इसमें एक रात की नमाज़ का सवाब एक साल की नमाज़ों के बराबर है।

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने माहे ज़िलहिज्जा के दस दिन के रोज़े रखे अल्लाह तआला हर रोज़े के एवज़ उसके एक साल के रोज़े लिखेगा। हज़रत सईद बिन जुबैर फ़रमाते थे कि ज़िलहिज्जा की दस रातों में तुम अपने चिराग न बुझाओ, आप को इस अशरा में इबादत बहुत पसन्द थी। ख़ादिमों को भी जागने और बेदार रहने का हुक्म दिया करते थे।

अशरए ज़िलहिज्जा में नमाज़ें

इस अशरा की नमाज़ों के फ़ज़ाइल

शैख़ अबुल बरकात ने बिल अस्नाद हज़रत आइशा से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस शख़्स ने अशरए ज़िलहिज्जा की किसी तारीख़ को रात भर इबादत की तो गोया उसने साल भर हज और उमरा करने वाले की सी इबादत की और जिसने अशरए ज़िलहिज्जा को रोज़ा रखा तो गोया उसने पूरे साल इबादत की।

शैख़ अबुल बरकात ने अपनी अस्नाद के साथ हज़रत अली मुर्तज़ा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अशरए ज़िलहिज्जा आ जाये तो इबादत की कोशिश करो, ज़िलहिज्जा के अशरा को अल्लाह तआला ने बुजुर्गी अता फ़रमाई है और इस अशरा की रातों को भी वही इज़्ज़त दी है जो इसके दिनों को हासिल है अगर कोई शख़्स इस अशरा की किसी रात के आख़िरी तिहाई हिस्सा में चार रकअतें इस तरतीब से पढ़ेगा तो उसको हज्जे बैतुल्लाह और रौज़ए पाक की ज़ियारत करने वाले के बराबर सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला से वह जो कुछ मांगेगा अल्लाह तआला उसको अता फ़रमायेगा (नमाज़ की तरकीब व तरतीबे आयात यह है) हर रकअत में सूरह फ़ातिहा ,सूरह ख़लक, सूरह नास, एक एक बार सूरह इख़लास तीन बार और आयतल

कुर्सी तीन बार पढ़े, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर दोनों हाथ उठाकर यह दुआ पढ़े।

अल्लाह तआला पाक बुजुर्ग, जबरूत का, कुदरत का मालिक है, वह मालिकुल मुल्क है, वह हमेशा बाक़ी रहेगा उसे मौत नहीं है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह मोमिन और मुशरिक दोनों का पालने वाला है वही बस्तियों का मालिक है हर हाल में कसीर पाकीज़ा और बरकत वाली हम्द अल्लाह के लिए है अल्लाह बड़ी बुजुर्गी वाला है, हमारा रब बुजुर्ग है उसकी अज़मत बड़ी है उस की कुदरत हर जगह है। शैख़ अबुल बरकात फ़रमाते हैं कि कुदरत से मुराद इल्म है यानी उसका इल्म हर शय को मुहीत है।

इस दुआ के बाद जो चाहे दुआ करे अगर ऐसी नमाज़ अशरा की हर एक रात को पढ़ेगा तो उसको अल्लाह तआला फिरदौश्से आला मे जगह देगा और उसके हर गुनाह को महव कर देगा फिर उससे कहा जायेगा अब अज़ सरे नौ अमल शुरू कर, अगर अरफ़ा के दिन का रोज़ा रखे और अरफ़ा की रात को भी नमाज़ पढ़े और यही दुआ करे और अल्लाह तआला के हुजूर में ज़्यादा से ज़्यादा तज़र्रो व वज़ारी करे तो अल्लाह फ़रमाता है ऐ मेरे फ़रिश्तो! मैंने इस बन्दे को बख़्श दिया और हाजियों में इसको शामिल कर दिया फ़रिश्ते अल्लाह तआला की इस अता से बेहद मसरूर होते हैं और बन्दे को बशारत देते हैं।

पांच पैग़म्बरों की अलग अलग दस मख़सूस चीज़ें

हज़रत आदम की दस चीज़ें

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम महवे ख़्वाब थे अल्लाह तआला ने हज़रत हव्वा को उनकी बाईं छोटी पसली से पैदा फ़रमाया, बेदार होने पर आप ने हज़रत हव्वा को अपने पास बैठा देखा तो पूछा तुम किस लिए हो? उन्होंने जवाब दिया मैं आप ही के लिए हूं हज़रत आदम ने आप को छूना चाहा तो हुक्म हुआ बग़ैर महर अदा किये इनको हाथ न लगाना। हज़रत आदम ने दरयाफ़्त किया कि इलाही! इनका महर क्या है? अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया! नबी आख़िरूज़्ज़मा पर दस बार दरूद पढ़ना।

हज़रत इब्राहीम की दस चीज़ें

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए भी दस चीज़ें मख़सूस थीं! अल्लाह तआला का इरशाद है जब इब्राहीम की आज़माईश अल्लाह ने चन्द बातों से की तो इब्राहीम ने उनको पूरा कर दिया। यह दस अहकाम थे, पांच का ताल्लुक़ सर से है यानी सर के बालों में मांग निकालना मूंछें कतरवाना, मिसवाक करना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना, बाक़ी पांच चीज़ों का ताल्लुक़ सारे जिस्म से है यानी नाख़ून कटवाना, ज़ेरे नाफ़ बालों को साफ़ करना, बग़लों के बाल साफ़ करना, ख़तना कराना, वजू में उंगुलियों का ख़िलाल करना।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब यह दस अहकाम (दस सुन्नतें) अदा कर दिये तो अल्लाह तआला ने उनको अपनी दोस्ती का ख़िलअत मरहमत फ़रमाया। चुनांचे इरशाद फ़रमायाः

अल्लाह ने इब्राहीम को दोस्त बना लिया।

हज़रत शुऐब की दस चीज़ें

दस चीज़ें हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से मख़सूस हुईं। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के क़ौल को नक़्ल फ़रमाते हुए। अगर तुमने दस साल पूरे कर आये तो यह तुम्हारी तरफ़ से एहसान होगा। यह उस वाक़ेया की तरफ़ इशारा है कि हज़रत मूसा ने हज़रत शुऐब की दस साल तक ख़िदमत करना क़बूल किया था उस ख़िदमत को हज़रत शुएब ने अपनी बेटी सफ़ूरा का महर क़रार दिया था (कि दस साल ख़िदमत के एवज़ उनकी बेटी सफ़ूरा का महर अदा हो जायेगा) बाज़ असहाब का क़ौल है कि हज़रत शुऐब दस साल तक रोते रहे उससे उनकी बीनाई जाती रही, अल्लाह तआ़ला ने उन पर लुत्फ़ फ़रमाया और बीनाई वापस आ गई हज़रत शोऐब के पास वही भेजी कि अगर तुम्हारा यह रोना दोज़ख़ के ख़ौफ़ से था तो मैंने दोज़ख़ से तुम को अमान बख़्श दी और अगर तुम जन्नत चाहते हो तो मैंने तुमको जन्नत अता कर दी और अगर तुम मेरी रजा और खुशनूदी के तालिब हो तो मैंने तुम को अपनी रजा और खुशनूदी बख़्श दी। हज़रत शोऐब ने फ़रमाया कि ऐ जिब्रील मेरा रोना न दोज़ख़ के ख़ौफ़ से है और न जन्नत की तलब के लिए बल्कि मैं तो दीदारे इलाही का तालिब हूं, तब हुक्म हुआ कि ऐ शोऐब! तू हक़ के लिए रोया इसलिए और भी जितना रो सके रोओ। अल्लाह तआ़ला ने उनको यह सिला दिया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसे बलन्द मरतबा पैग़म्बर ने दस साल [illegible] उसकी ख़िदमत की और यह उन मरातिबे आलिया और तक़र्रुब और उख़रवी नेमतों के अलावा था कि जो हज़रत शोऐब के लिए अल्लाह तआ़ला ने मख़सूस फ़रमा दी थीं [illegible] मरातिब और नेमतें ऐसी थीं कि न किसी आंख ने देखा न किसी ने सुना न किसी के दिल में उनका तसव्वुर आया।

हज़रत मूसा की दस चीज़ें

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दस चीज़ें वह थीं जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हम ने मूसा से वादा किया कि तीस रातों की इबादत करें फिर हम ने तीस की तकमील मज़ीद दस रातों से कर दी (यानी चालीस रातें इबादत की हो गईं) इसकी सूरत यह हुई कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम करने और तौरैत अता फ़रमाने का वादा किया था, हज़रत मूसा ने तीस दिन की रोज़े रखे यह महीना दस ज़िल हिज्जा का और बक़ौले बाज़ मुहक़्क़क़ीन ज़ी क़अदा का था, एक माह के रोज़ों के बाद मुंह में ना गवार बू महसूस हुई तो आपने ज़ैतून की लकड़ी का एक टुकड़ा मुंह में रख लिया (ताकि बू दूर हो जाये) अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: ऐ मूसा! क्या तुम को मालूम नहीं कि रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की ख़ुशबू से ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर अल्लाह तआ़ला ने, मूसा अलैहिस्सलाम को मज़ीद 10 दिन के रोज़े रखने का हुक्म दिया जिसकी आख़िरी तारीख़ यानी आख़िरी रोज़ा मुहर्रम की दसवीं तारीख़ थी। जिन हज़रात ने उन रोज़ों का महीना ज़ी क़अदा मुराद दिया है उनके हिसाब से मज़ीद 10 दिन ज़िल हिज्जा का अशरए अव्वल होगा।

इस के बाद मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने अपना क़ुर्ब अता फ़रमाया और हम कलामी की इज़्ज़त से नवाज़ा।

सय्यदुल मुरसलीन की दस चीज़ें

सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दस चीज़ें वह हैं जिन का ज़िक्र वल फ़ज्र वल यालिन अशरिन में किया गया है। यह ज़िल हिज्जा की दस इब्तिदाई रातें हैं जिनकी तशरीह व तफ़्सीर इससे क़ब्ल की जा चुकी है।

अशरए ज़िल हिज्जा की अज़मत

कहा गया है कि जो शख़्स इन दस अय्याम की इज़्ज़त करता है अल्लाह तआला यह दस चीज़ें उसको मरहमत फ़रमाकर उसकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई करता है (1) उम्र में बरकत (2) माल में अफ़ज़ूनी (3) अहल व अयाल की हिफ़ाज़त (4) गुनाहों का कफ़्फ़ारा (5) नेकियों में इज़ाफ़ा (6) नज़अ में आसानी (7) ज़ुलमत में रौशनी (8) मीज़ान में संगीनी (वज़नी बनाना) (9) दोज़ख़ के तबक़ात से नजात (10) जन्नत के दरजात पर उरूज। जिसने इस अशरा में किसी मिसकीन को कुछ ख़ैरात दी उसने गोया अपनी पैग़म्बर की सुन्नत पर सदक़ा दिया जिसने इन दिनों में किसी की अयादत की उसने औलिया अल्लाह और अबदाल की अयादत की, जो किसी के जनाज़े के साथ गया उसने गोया शहीदों के जनाज़ें में शिरकत की, जिसने किसी मोमिन को इस अशरा में लिबास पहनाया अल्लाह तअला उसको अपनी तरफ़ से [illegible] पहनाएगा, जो किसी यतीम पर मेहरबानी करेगा अल्लाह तआला उस पर अर्श के नीचे मेहरबानी फ़रमायेगा, जो शख़्स किसी आलिम की मजलिस में [illegible] अशरा में शरीक हुआ गोया अंबिया और मुरसलीन की मजलिस में शरीक हुआ।

वहब बिन [illegible] का इरशाद है की जब हज़रत [illegible] अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा गया तो वह अपनी ख़ताओं पर छः रोज़ तक रोते रहे, सातवें दिन अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फ़रमाई (इस हाल में कि हज़रत आदम मग़मूम व ग़मज़दा और सर झुकाए बैठे थे) कि ऐ आदम! यह तुम ने कैसी मुशक़्क़त और मेहनत इख़्तियार कर रखी है? हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया! इलाही मेरी मुसीबत बड़ी मुसीबत है, मेरी गुनाह ने मुझे हर तरफ़ से घेर रखा है मैं सआदत और इज़्ज़त के [illegible] यानी ख़ुल्द से निकल कर, ज़िल्लत बदबख़्ती मौत और फ़ना के घर में पहुंच गया हूं फिर अपने गुनाहों पर क्यों न रोऊं! अल्लाह तआला ने वही फ़रमाई कि आदम क्या मैंने तुझे अपना ख़ास नहीं बनाया था, अपनी मख़लूक़ पर तुझे फ़ज़ीलत नहीं दी थी? क्या मख़सूस तरीक़ा पर तुझे मुअज़्ज़िज़ नहीं बनाया, क्या अपनी मुहब्बत से तुझे नहीं नवाज़ा, क्या तुझे अपने हाथों से नहीं बनाया, क्या अपने फ़रिशतों से तुझे सजदा नहीं कराया! क्या तू मेरी तरफ़ से मुन्तहाए करामनत और मक़ामे इज़्ज़त में नहीं रहा? फिर तूने मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ क्यों किया, मेरे हुक्म को भूला दिया तू ने किस तरह मेरी रहमत और नेमत को भुला दिया? मुझे अपने इज़्ज़त व जलाल की क़सम है कि अगर तेरी तरह लोगों से सारी ज़मीन भर जाए और वह सब रात दिन मेरी तसबीह में मशग़ूल रहें और एक लम्हा को भी मेरी इबादत पर सुस्ती न करें और फिर वह मेरी नाफ़रमानी करें तो मैं उनको ज़रूर नाफ़रमानों की मंज़िल पर उतार दूंगा यह सुनकर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम कोहे हिन्द पर तीन सौ बरस तक रोते रहे उनके आंसू पहाड़ी नालों में बहते थे और उनसे [illegible] दरख़्त उग आते थे फिर हज़रत जिब्रील ने कहा कि ऐ आदम! बैतुल्लाह

जाइए और अशरए ज़िलहिज्जा के मुन्तज़िर रहिये, शाएद अल्लाह तआ़ला आप की लग़ज़िश पर रहम फ़रमाए, हज़रत आदम वहां से काबा को रवाना हो गए हज़रत आदम का क़दम जिस जगह पड़ता था वह जगह सर सब्ज़ हो जाती थी और दोनों क़दमों के दर्मियान की जगह बन्जर रहती थी और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दोनों क़दमों के दर्मियान का फ़ासला तीन फ़रसंग होता था ग़र्ज़ हज़रत आदम काबा शरीफ़ पहुंच गए वहां पहुंच कर पूरे एक हफ़ता तवाफ़ किया और इतना रोए की घुटनों घुटनों तक पानी चढ़ गया, हज़रत आदम ने अर्ज़ किया! इलाही तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू पाक है मैं तेरी हम्द करता हूं मैंने बदी की और अपने ऊपर ख़ुद ज़ुल्म किया मेरा क़सूर माफ़ फ़रमा दे तू तमाम बख़्शने वालों से बेहतर है तू अरहमर्राहेमीन है मुझ पर रहम फ़रमा। अल्लाह तआ़ला ने उसके बाद वही भेजी और फ़रमाया आदम मुझे तेरी कमज़ोरी पर रहम आ गया मैंने तेरा गुनाह माफ़ कर दिया और तेरी तौबा क़बूल कर ली। आयत फ़तलक़्क़ई आदम मिन रब्बिही कलेमातिन फ़ताब अलैहि की तफ़सीर व तशरीह है यह उसी अशरा की बरकत थी कि अल्लाह ने आदम की तौबा क़बूल की, पस इसी तरह अगर कोई मोमिन अल्लाह का ना फ़रमान हो जाये और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने लगे और वह उन दिनों में (अशरा ज़िल हिज्जा की) तौबा करे और अल्लाह की तरफ़ रूजूअ करे और ख़ुदा का फ़रमांबरदार बन जाये तो अल्लाह उस पर मेहरबानी फ़रमाएगा और उसके गुनाह माफ़ फ़रमा देगा अपनी मेहरबानी से उसके गुनाहों को नेकियों से बदल देगा।

इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद की तफ़सीर

क़सम याद करने की हिकमत

आयत वल फ़ज्र वल यालिन अशरिन से इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद तक अल्लाह तआ़ला ने फ़ज्र की दस रातों की, शफ़आ की और वत्र की क़सम खायी है (यानी जुफ़्त और ताक़ की) बात यह है कि दोज़ख़ के पुल के आठ दरजात हैं अव्वल दरजा या अव्वल सीढ़ी पर बन्दा से ईमान के बारे में सवाल किया जायेगा अगर ईमानदार है तो नजात पा जायेगा वरना दोज़ख़ में गिर पड़ेगा, दूसरी दरजा में वज़ू और नमाज़ के बारे में सवाल किया जायेगा अगर बन्दा ने उसमें कुसूर किया तो दोज़ख़ में गिर पड़ेगा और अगर उसने रूकूअ और सुजूद की तकमील की होगी तो नजात पा जायेगा। तीसरे दरजा में ज़कात के बाबत सवाल किया जायेगा अगर अदा की होगी तो बच जायेगा, चौथे दरजा में रोज़ा के बारे में पूछा जायेगा अगर माहे सियाम के सब रोज़ें रखे हैं तो नजात पा जायेगा। पांचवें दरजा में हज और उमरा के बारे में पुरसिश होगी अगर यह फ़र्ज़ अदा किया होगा तो नजात पायेगा, छठे दरजा पर अमानत व दयानत के बारे में दरयाफ़्त किया जायेगा अगर अमानतदार होगा तो नजात मिल जायेगी, सातवें दरजा पर ग़ीबत, झूट, दोतेपन के बारे में पूछा जायेगा कि उनसे बचता रहा कि नहीं, अगर बचता रहा तो नजात पायेगा वरना दोज़ख़ में गिरा दिया जायेगा। आठवें दरजा पर उससे हराम माल खाने का सवाल किया जायेगा

अगर माले हराम नहीं खाया है तो रिहाई मिल जायेगी वरना दोज़ख़ में गिरा दिया जायेगा। यही मानी हैं इन्ना रब्बका लबिल मिरसाद के यानी तेरा परवरदिगार बिला शुबहा घात में है।

यौमित्तरविया

(8 ज़िल हिज्जा)

अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ इब्राहीम तुम्हारी औलाद हो या दूसरे मोमिन सबको हज के लिए पुकारो, कुछ उनमें से पा पयादा और कुछ दुबले (सफ़र के आदी) ऊंटों पर सवार हज के लिए तुम्हारे पास दूर और नज़दीक की मुसाफ़तों से आ जायेंगे।

यह आयत सूरह हज की है और यह सूरह कुरआने करीम की अजीब तर सूरतों में है क्योंकि इसमे मक्की आयत भी हैं और मदनी भी, सफ़री भी हैं और हजरी (ग़ैर हालते सफ़र) भी रात वाली भी है और दिन वाली भी, नासिख़ भी हैं और मनसूख़ भी।

तीसवीं आयत से आख़िरी सूरत तक तमाम आयात मक्की है, मदनी आयात पन्द्रहवीं आयत से उन्तीसवीं तक हैं। पांच पहली आयात रात में नाज़िल होने वाली हैं और छः से नौ तक दिन में नाज़िल शुदा हैं, एक से बीसवीं आयत तक हजरी आयात हैं और बाक़िया सफ़री हैं। इस सूरह की मदनी इस एतबार से कहा गया है कि मदीना के क़रीब इनका नुजूल हुआ।

आयते मज़कूरा में हज के लिए एक उमूमी हुक्म उस वक़्त दिया जो जब ख़ाना काबा से फ़ारिग़ होकर उन्होंने जनाबे ईलाही में अर्ज़ किया था इलाही! इस मकान का हज कौन करेगा? अल्लाह तआला ने हज के लिए लोगों को पुकारने का हुक्म आप को दिया। आप ने कोहे बूकबीस पर तशरीफ़ ले जाकर बलन्द आवाज़ से पुकारा लोगों! अपने रब के फ़रमान को क़बूल करो अल्लाह तुम को अपने घर का हज करने का हुक्म दे रहा है यह कोहे कबीस वही पहाड़ है जिस की तिलहटी में सफ़ा पहाड़ी है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस पुकार (निदा) को हर उस मोमिन मर्द औरत ने सुन लिया जो रूए ज़मीन पर मौजूद था, या सुल्बे पिदर या शिकमे मादर में था, आज कल हज के मौक़ा पर जो लब्बैक कही जाती है यह उसी दावत का जवाब है जो अल्लाह के हुक्म से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दी थी उस रोज़ उस दावत पर जिसने लब्बैक कहा था वह ख़ाना काबा की ज़ियारत के बग़ैर दुनिया से रुख़सत नहीं होगा।

एहराम बांधना और लब्बैक कहना

मुजाहिद की रिवायत है की हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया की हम ख़िदमते गरामी में मौजूद थे कि यमन से कुछ लोग हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हमारे मां बाप आप पर कुरबान आप हम को हज के फ़ज़ाएल से आगाह फ़रमाइये, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया अच्छा (सुनो) जो शख़्स हज या उमरा की नीयत से घर से चला तो हर क़दम पर उसके गुनाह इस तरह दूर होते हैं जिस तरह दरख़्तों से पत्ते निचे गिर जाते हैं, जब वह मदीना तय्यबा पहुंच कर मुझसे सलाम व मुसाफ़ा करता है और जुलहुलैफ़ा

के चश्मा पर पहुंच कर गुस्ल करता है तो अल्लाहा तआला उसे गुनाहों से पाक कर देता है और उससे फ़रिश्ते मुसाफ़ा करते हैं, जब नए कपड़े (चादर और तहबंद) पहनता है तो अल्लाह तआला उसको बहुत सी नई नेकियां अता करता है जब वह लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक कहता है तो अल्लाह तआला लब्बैक व सअदिका कहता हुआ जवाब देता है। जब मक्का में दाख़िल होकर तवाफ़ और सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई करता है तो अल्लाह नेकियों को उसके साथ कर देता है (बेहद नेकियां उसको अता फ़रमाता है) जब अरफ़ात (के मैदान में) पहुंच कर हाजतों की तलब (दुआ) में उसकी आवाज़ बलन्द होती है तो अल्लाह तआला सातों आसमानों के फ़रीश्तों से फ़ख्र फ़रमाता हुआ कहता है! मेरे फ़रिश्तो मेरे आसमानों पर रहने वालो! क्या तुम नहीं देखते की मेरे बन्दे गुबार आलूद बाल, परीशां दूर दराज़ मक़ामात से आये हैं उन्होंने अपना माल भी ख़र्च किया है और अपनी जानों को भी थकाया है (जिस्मानी तकलीफ़ भी उठाई है) अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं उन नेकों के तुफ़ैल उनके बुरों को भी बख़्श दूंगा और उनको गुनाहों से इस तरह पाक कर दूंगा जिस तरह मां के पेट से पैदा [illegible]ने के दिन थे, जब लोग कंकरीयां फेंकते, सर मुंडाते और काबा की ज़ि[illegible]त करते हैं तो ज़ेरीने [illegible]र्श से एक पुकारने वाला पुकारता है, तुम लोग अपने घरों को वापस जा स[illegible]ते हो मैंने तुम्हारे सब [illegible]छले गुनाह माफ़ कर दिए अब आईन्दा से नेक अमल करो।

एक आराबी का वाक़िआ

रिवायत है कि एक आराबी ख़िदमत गरामी में हाज़िर हु[illegible] और [illegible] किया या रसूलल्लाह मैं हज के इरा[illegible] से निक[illegible] [illegible]गर हज [illegible] कर स[illegible]का मैं एहराम [illegible]हने हूं मुझे किसी ऐसे काम का हुक्म दीजिये जि[illegible]सके ज़रिये मैं हज को या [illegible]ज के [illegible]वाब को [illegible]सिल कर सकूं रसूलुल्लाह ने उस की तरफ़ मुतवज्ज[illegible] हो कर फ़[illegible]माया अबू [illegible]बीस के [illegible]र तुम उसकी बराबा ज़र सुर्ख़ भी राहे ख़ुदा में ख़र्च [illegible]र दो [illegible]ब भी हाजियों के सवाब को नही [illegible] सकते। इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि [illegible] ने फ़रमाया हज करने वाला जब सफ़रे हज की तैयारी शुरू करता है तो अल्लाह तआला [illegible]के लिए दस नेकियां उसी वक़्त लिख देता है और दस बुराइयां मिटा देता है। उसके दस दस [illegible]न्द फ़रमा देता है और जब वह अपनी सवारी पर सवार होता हैं तो उस सवारी के हर [illegible]म पर उतना ही सवाब लिखता है फिर जब काबा का तवाफ़ करता है तो गुनाहों से निकल जाता है, अरफ़ात में ठहरता है तो गुनाहों से अलग हो जाता है मशअरे हराम में क़याम करता है तो गुनाहों से निकल जाता है, कंकरियां फेंकता है तो गुनाहों से निकल जाता है, उसके बाद आपने आराबी से फ़रमाया फिर किस तरह यह हो सकता है कि तुम को हाजी का सवाब मिल जाये (तुम हाजी के मरतबा को पहुंच जाओ)।

हज़रत अली मुर्तज़ा से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ काबा का तवाफ़ कर रहा था मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे मां बाप आप पर कुरबान, यह (काबा) कैसा घर है, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया अली! इसकी बुनियाद अल्लाह ने डाली ताकि मेरी उम्मत के गुनहगारों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो सके मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह यह सियाह पत्थर (हजरे असवद) क्या है हुज़ूर ने फ़रमाया यह जन्नती जौहर है जिसको अल्लाह तआला ने दुनिया में उतार दिया, यह सूरज की किरनों की तरह ताबिन्दा दरख़शन्दा था लेकिन

ज़बसे इसको मुशरिकों ने हाथ लगाया इसकी सियाही बढ़ती रही और इसका रंग बिगड़ गया।

इब्ने अबी मलीका की रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह को फ़रमाते सुना कि इस बैतुल हराम पर हर शब व रोज़ में 120 रहमतें नाज़िल होती हैं साठ तो काबा का तवाफ़ करने वालों के लिए और चालीस काबा के गिर्द एतकाफ़ करने वालों के लिए, और 20 उसकी तरफ़ देखने वालों के लिए हैं।

ज़हरी ने बरिवायत सईद बिन अल मसय्यब हज़रत उमर बिन अबी सलमा का क़ौल नक़्ल किय है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हक़ तबारक व तआला फ़रमाता है कि मैंने बन्दों को सेहत व तन्दुरूस्ती अता की उम्र में दराज़ी बख़्शी अगर तीन ऐसे साल गुज़र जायें कि वह उस घर (काबा की तरफ़) न आयें तो यक़ीनन वह महरूम है बेशक वह महरूम है।

हजरे असवद

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ने फ़रमाया कि हम ने अमीरूल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब के साथ उनकी ख़िलाफ़त के इब्तिदाई ज़माने में हज किया [illegible] वह मस्जिदे हराम में दाख़िल होकर हजरे असवद के पास खड़े हुए तो फ़रमाया कि यक़ीनन तू [illegible]क पत्थर है न नुक़सान पहुंचा सकता है और न नफ़ा अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहे अलैहि वसल्लम को तु[illegible] बोसा [illegible]ते न देखा होता तब मैं भी तुझे बोसा न देता उस वक़्त हज़रत अली ने फ़रमाया ऐ अमीरूल मोमिनीन ऐसा न फ़रमाइये बेशक हजरे असवद ख़ुदा के हुक्म से नफ़ा व नुक़सान पहुंचा सकता है अगर आपने कुरआन पढ़ा होता और मज़मूने कुरआन को समझा होता तो आप इसका इंकार न करते। हज़रत उमर ने फ़रमाया ऐ अबुल[illegible]न! किता[illegible]ह में इसकी तशरीह क्या है? हज़रत अली ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है:

और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे [illegible] की पुश्त से उनकी नस्ल निकाली और उन्हें उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं तो [illegible]ने कहा क्यों नहीं, हम गवाह हुए कि क़यामत के [illegible] न कहो कि हमको न ख़बर थी।

यह इक़रार नामा एक सहीफ़ा पर लिखा उसके बाद उस पत्थर को तलब किया और यह इक़रार नामा उस पत्थर [illegible] ला दिया पस उस जगह यह अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा अमीन है ताकि क़यामत के दिन उस शख़्स की शहादत दे जिसने अपने इक़रार को पूरा किया। हज़रत उमर ने फ़रमाया ऐ अबूल हसन अल्लाह ने आप के सीने में बड़ा इल्मी ख़ज़ाना पोशीदा रखा है।

अबू सालेह ने बरिवायत हज़रत अबू हुरैरा बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हज और उमरा करने वाले अल्लाह के मेहमान हैं और जो दुआ करते हैं अल्लाह उनको क़बूल फ़रमाता है और जब वह गुनाहों की मग़फ़िरत चाहते हैं तो अल्लाह उनके गुनाह माफ़ फ़रमा देता है। मुजाहिद की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया! इलाही हाजियों को और उन लोगों को जिन के लिए हाजी मग़फ़िरत की दुआ करें बख़्श दे। हज़रत हसन बसरी से मरवी है कि हदीस में आया है कि मलाएका हाजियों इस्तिक़बाल करते हैं जो ऊंट पर सवार होते हैं उन को सलाम करते हैं और जो ख़च्चरों पर सवार होते हैं उनसे मुसाफ़ा करते हैं और जो पैदल (पयादा पा) होते हैं उनसे गले मिलते हैं।

हज के इरादे से घर से निकलने वाला और उस की वफ़ात

ज़हाक की मुरसल रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर वह मुसलमान जो जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के मक़सद से घर से चला लेकिन रास्ते में उसको किसी दरिन्दे ने हलाक कर दिया या किसी डसने वाले ने उसको डस लिया या वह किसी और वजह से मर गया तो वह शहीद है, उसी तरह हर वह मुसलमान जो हज्जे बैतुल्लाह के इरादे से घर से चला लेकिन मंज़िल से पहले उसकी मौत आ गई तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत वाजिब कर देता है।

अबू सुफ़ियान बिन ऐनिया ने अबू रिमाद के वास्ते से हज़रत अबू हुरैरा का क़ौल नक़्ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने काबा का हज किया और हज में उसने न कोई गुनाह किया और न नाफ़रमानी की और जहालत की बात की तो वह लौट कर ऐसा हो जाता है जैसा वह पैदाइश के दिन गुनाहों से पाक था सईद बिन मुसय्यब की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने काबा का हज किया और उसने कोई गुनाह व नाफ़रमानी या जिहालत की बात नहीं की तो वह लौट कर ऐसा हो जाता है जैसा पैदाईश के दिन गुनाहों से पाक था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन आदमी एक हज के वास्ते से जन्नत में जाते हैं, एक वह जिस ने वसीयत की, दूसरा वह जिसने वसीयत पर अमल किया, तीसरा वह जिसने उसकी तरफ़ से हज किया। जिहाद की भी यही कैफ़ियत है। अली बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया कि मैंने एक साल हज के सफ़र में उबैदुल क़ासिम बिन सलाम का हम सफ़र था जब मैं मौक़िफ़ में पहुंचा और जब्ले रहमत पर क़याम कर के गुस्ल किया तो मैं अपना सफ़रे ख़र्च वहीं भूल गया फिर जब मैं उतर कर नीचे आया तो अबू उबैदा ने कहा कि अगर आप कुछ मक्खन और खजूरें ख़रीद लाते तो बेहतर होता मैं मक्खन और खजूरें ख़रीदने को निकला तो रूपया याद हुआ फ़ौरन पलट पड़ा और जहां जहां मैं गया था वहां दोबारा पहुंचा आख़िरकार गुस्ल की जगह पर पहुंचा तो रूपया मिल गया रूपया लेकर जब मैं पलटा तो उस वादी को बन्दरों आर सुअरों से भरा हुआ पाया, मुझे उनसे डर महसूस हुआ लेकिन मैं उनसे बचता बचाता वापस आ गया और सुबह से पहले अबू उबैदा के पास पहुंच गया अबू उबैदा ने दरयाफ़्त किया कि क्या माजरा है मैंने सारा वाक़िआ उनको सुनाया उन बन्दरों और सुअरों का भी ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा की वह बन्दर और सुअर न थे बल्कि लोगों के गुनाह थे जिन को हाजी वहां छोड़ कर आए हैं।

यौमे तरविया की वजहे तसमिया

यौमे तरविया की वजहे तसमिया में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं और उलमा का इख़्तिलाफ़ है। यौमे तरविया ज़िल हिज्जा के आठवें दिन का नाम है इस दिन हाजी मक्का मुकर्रमा से मिना की तरफ़ रवाना होते हैं चूंकि यह हज़रात ज़मज़म का पानी ख़ूब सैराब होकर पीते हैं इसीलिए इसको तरविया कहते हैं तरविया बर वज़्न तफ़अ़ला बमानी सैराब करना हैं यह अरतवी से माख़ूज़ है जिसके मानी हैं पानी पिया और गुस्ल किया और हाजी उस रोज़ कसरत से आबे ज़मज़म पीते

हैं। एक वजहे तसमिया यह बताई है कि तरविया के मानी हैं ग़ौर करना, सोचना, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने आठ तारीख़ की रात को ख़्वाब में देखा था कि अपने बेटे को ज़िबह कर रहे हैं सुबह को सोच में पड़ गए और ग़ौर करने लगे कि यह ख़्वाब दुशमने ख़ुदा शैतान की तरफ़ से है या अल्लाह तआला की तरफ़ से, दिन भर सोचते रहे जब अरफ़ा की शब आई तो ग़ैब से कहा गया जो कुछ तुम से कहा गया है वही करो। उस वक़्त आप ने समझ लिया कि यह ख़्वाब अल्लाह तआला की तरफ़ से था इसी बिना पर इसका नाम यौमे तरविया रखा गया और नवीं तारीख़ को यौमे अरफ़ा (पहचान का दिन) से ताबीर किया जाता है।

अल्लाह तआला का इरशाद है: लोगों में हज की मुनादी कर दो। अल्लाह तआला ने अपने ख़लील को हुक्म दिया कि वह उसके बन्दे को उसके घर की तरफ़ आने की दावत दें, चुनांचे यह दावतें चार हैं पहली दावत अल्लाह की तरफ़ से बन्दों को है अल्लाह तआला का इरशाद है: और अल्लाह तुम को दारुस्सलाम की तरफ़ बुलाता है। यह दावत एक घर से दूसरे घर की तरफ़ है। बैते अलम से इज़्ज़त खाने की तरफ़ आने का हुक्म, ग़ैबत के मक़ाम [illegible] (जहां अल्लाह का मुशाहिदा नहीं था) मुशाहिदा के मक़ाम की तरफ़ [illegible] की दावत दी, सैर के [illegible]वाल पज़ीर मक़ाम से मक़ामे बक़ा की तरफ़ बुलाया। बन्दों को ऐसे घर [illegible] तरफ़ बुलाया जहां [illegible] आगाज रोने से और दर्मियानी रास्ता तकलीफ़ से और आख़िरी हिस्सा [illegible]ना है। ऐसे घ[illegible] तर[illegible] बुलाया जिसके शुरु में अता, दर्मियान में रज़ा और आख़िर में दीदारे [illegible] है।

2–दूसरी दावत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल[illegible] की तर[illegible] से उम्मत को इस्लाम की दावत। अल्लाह तआ[illegible] का इर[illegible] है: अल्लाह के रास[illegible] की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत के सा[illegible] बुलाओ।

दावत का [illegible]म रसूलुल्ला[illegible] सल्लल्ला[illegible] अलै[illegible] के सुपुर्द फ़रमाया लेकिन उम्मत को सीधी राह पर [illegible]लाना र[illegible]लुल्लाह के फ़राइज़ में [illegible] रखा [illegible] चुनांचे हुजूर का इरशाद है: मुझे रहनुमा बना क[illegible] भेजा [illegible]या है लेकिन यह मेरे इख़्तेयार में नहीं है कि मैं किसी को ज़बरदस्ती अच्छे रास्ते पर डाल [illegible]

अल्लाह तआला का इरशा[illegible]: आप जिस को पसन्द करे उसको हिदायत पज़ीर नहीं बनाते बल्कि अल्लाह जिसे चाह[illegible] सीधे रास्ते पर चलाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि सल्लम ने अपने चचा अबू तालिब की हिदायतयाबी की दरख़्वास्त की। हक़ तआला ने उनको हिदायतयाब बनाने से इंकार कर दिया और हज़रत हमज़ा के क़ातिल वहशी हिन्दा अबू सुफ़ियान के गुलाम को हिदायतयाब बना दिया गोया अल्लाह तआला अपने रसूल से फ़रमा रहा है ऐ मोहम्मद! तुम्हारे ज़िम्मा सिर्फ़ दावत देना है, ऐ रसूल आप पर जो कुछ उतारा गया वह लोगों तक पहुंचा दीजिये। एक और आयत में है: बेशक हम ने आप को शाहिद, बशारत देने, वाला डराने वाला, अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ़ बुलाने वाला और रौशन चिराग़ बना कर भेजा है।

आप के लिए सिर्फ़ शफ़ाअत है लेकिन क़बूल करना हिदायतयाब करना मेरे इख़्तेयार में है अल्लाह तआला फ़रमाता है: अपने नूर की तरफ़ जिसको चाहता है राह दिखाता है। एक दूसरी आयत में है अगर हम चाहें तो हर एक को हिदायत पर ले आयें।

तीसरी दावत मोअज़्ज़िन की है जो नमाज़ की तरफ़ बुलाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है उस शख़्स से अच्छी बात किस की हो सकती है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाता है और नेक काम

करता है हज़रत आएशा सिद्दीक़ा ने फ़रमाया कि आयत मोअज़्ज़ेनीन के हक में नाज़िल हुई यानी जिसने लोगों को नमाज़ के लिए बुलाया और अज़ान व इक़ामत के दर्मियान नमाज़ पढ़ी उससे अच्छी बात किसकी हो सकती है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अज़ान देने वाले लब्बैक पढने वाले क़यामत के दिन अपने क़ब्रों से अज़ान देते हुए और लब्बैक कहते हुए निकलेंगे। मोअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ जहां तक जाती है वहां तक की सब चीज़ें उसके लिए दुआये मग़फ़िरत करती है। हर ख़ुश्क व तर दरख़्त और मिट्टी जिसने भी उसकी आवाज़ सुनी होगी उसके लिए शाहिद बन जाती है। मोअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ पर जिस शख़्स ने मस्जिद में नमाज़ अदा की होगी उसकी नेकियों के बराबर नेकियां मोअज़्ज़िन के लिए भी लिख दी जाती हैं। अज़ान व इक़ामत के दर्मियान मोअज़्ज़िन जो सवाल करता है अल्लाह उसको दुनिया में दे देता है या आख़िरत में उसके लिए जमा रखता है या उससे किसी बुराई को दफ़ा कर देता है।

एक रिवायत में आया है कि एक शख़्स ने [illegible]ूल्लाह सल्लल्लाहो [illegible]लैहि वसल्लम की ख़िदमते गरामी में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि या रसू[illegible]ल्लाह मुझे कोई ऐसा [illegible]मल बता दीजिए कि जिससे मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं, आप ने फ़[illegible]माया कि अप[illegible] क़ौम [illegible] मोअज़्ज़िन बन जाओ ताकि तुम्हारी आवाज़ पर लोग जमा हो कर जमा[illegible] नमाज़ पढ़[illegible] उसने अर्ज़ किया कि अगर मैं ऐसा न कर सकूं तो क्या करूं, आप ने [illegible]फ़रमाया कि [illegible] (क़ौम का) इमाम बन जाओ, लोग तुम्हारी इक़तेदा में नमाज़ पढ़ें, उसने [illegible]र्ज किया कि अगर मैं यह भी [illegible]न कर सकूं तो, आप ने फ़रमाया पहली सफ़ में [illegible]क होकर [illegible] पढ़ो।

हज़रत अबू अमामा बाहिली से मरवी है कि [illegible] सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोअ[illegible]ज़न की [illegible]ाज़ जहां [illegible]क जाती [illegible] के [illegible]यक़ उसको बख़्श दिया जाता है। मोअज़्ज़िन को [illegible] उत[illegible] ही सवाब मिलता है जितना उस[illegible] साथ नमाज़ पढ़ने वाले को मिलता है, लेकिन नम[illegible]ने वाले के सवाब में कमी करके यह सवाब मोअज़्ज़िन को नहीं दिया जाता। हज़रत सअद इब्ने अबी [illegible]क़ास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मरीज़ [illegible] का मेहमान है जब तक कि वह बीमार रहता है उसको रोज़ाना सत्तर शहीदों के दरजात के बराबर उसके दरजात बलन्द किये जाते हैं जब अच्छा हो जाता है तो गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसा कि वह पैदाइश के दिन था और अगर उसके लिए मौत मुक़द्दर हो चुकी है तो उसे बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल कर देता है।

बाज़ हज़रात का कहना है कि मुअज़्ज़िन अल्लाह का दरबान है, हर अज़ान के एवज़ उसको एक हज़ार नबियों का सवाब दिया जाएगा और इमाम अल्लाह तआला का वज़ीर है हर नमाज़ के एवज़ उसे एक हज़ार सिद्दीक़ों का सवाब दिया जाएगा और आलिम अल्लाह का वकील है हर हदीस के बदले उसको क़यामत के दिन नूर अता किया जाएगा और उसके लिए एक हज़ार साल की इबादत लिखी जाएगी और इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा ख़्वाह वह मर्द हों या औरत वह अल्लाह के ख़िदमत गुज़ार हैं उनकी जज़ा जन्नत है (इसके सिवा कुछ नहीं)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क़यामत के दिन तमाम लोगों से ज़्यादा लम्बी (ऊंची) गरदन मुअज़्ज़िन की होगी। यह भी फ़रमाया जिसने सात साल तक अज़ान दी

अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ से नजात अता फ़रमाएगा बशर्ते कि वह अज़ान हुसने नीयत के साथ दे नीज़ फ़रमाया कि अल्लाह तआला मुअज़्ज़िन को उसकी बलन्द आवाज़ी (सौती) के एतबार से बख़्शेगा (जितनी ही बलन्द आवाज़ होगी उतना ही उस पर लुत्फ़ व करम मबजूल होगा) उसकी तसदीक़ हर वह ख़ुश्क व तर चीज़ करेगी जिसने वह आवाज़ (अजान) सुनी होगी।

चौथी दावत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की है, हक़ तआला ने फ़रमायाः लोगों को हज की दावत दो, इसकी तशरीह अव्वलन की जा चुकी है।

यौमे अरफ़ा के फ़ज़ाएल

तकमीले नेमत का दिन

अल्लाह तआला का इरशाद हैः आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और मैंने तुम्हारे लिए दीने इस्लाम पस[illegible] किया। यह आयते करीमा अरफ़ात मे नाज़िल हुई है इस आयत के अ[illegible]ा इस सूरह की को[illegible] और आयत मक्की नहीं वह तमाम आयते मदीना में नाज़िल हुई। यह सूरत[illegible]सूरह, सूरह म[illegible]दा है, [illegible]स आयत में दीन से मुराद हलाल व हराम के दीनी क़वानीन हैं और नेम[illegible] से मुराद है [illegible]हसा[illegible] कि आइन्दा से अरफ़ात (के मैदान) में मुसलमानों के साथ काफ़िर और [illegible]क जमा नहीं होंगे। रज़ैतो के मानी हैं मैंने पसन्द किया, मैंने इन्तख़ाब किया। यह आयत अरफ़ा क[illegible] दिन हु[illegible]तुल विदाअ में अरफ़ात के मक़ाम पर उतरी, इ[illegible] आयत के[illegible]ज़ूल [illegible] बाद चन्द [illegible] दिन मज़ीद सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अ[illegible]हि वसल्ल[illegible] रौनक़ अ[illegible] आ[illegible]म रहे इस[illegible] बाद अल्लाह तआला ने आप को अपनी रहमत व [illegible]रिज़वान की त[illegible]रफ़ तलब [illegible]र लि[illegible]रीह व तफ़सीर **हज़रत अबदुल्लाह** इब्ने अब्बास और [illegible]सरे मुफ़[illegible]सरीन ने [illegible] है।

मोहम्मद बिन क[illegible]ब [illegible]ज़ी कहते हैं कि फ़तहे मक्का के दिन यह आयत नाज़िल हुई, हज़रत इमाम जाफ़र ने फ़रमा[illegible]क अल यौम का इशारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत और रिसालत की तर[illegible]। बाज़ मुफ़स्सरीन कहते हैं कि अलयौम से यौमे अज़ल की तरफ़ इशारा है और अत[illegible] से वक़्त की तरफ़ और रज़ा से अबद की तरफ़ इशारा हैं। बाज़ ने कहा है कि दीन का कमाल दो चीज़ों में है एक मारफ़ते इलाही दोम सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तेबा व पैरवी है। बाज़ ने कहा है कि दीन का कमाल अमन व फ़रागत में है इस लिए कि जब तुम उससे बेख़ौफ़ हो गये जिसका ज़ामिन अल्लाह तआला है तब तुम उसकी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो गये। बाज़ हज़रात ने कहा कि दीन का कमाले गर्दिश, कुव्वत और मख़लूक़ की तरफ़ से बेज़ारी है, इन तमाम चीज़ों से किनारा कश हो कर उसकी तरफ़ रूजूअ हो जाये जो कुल का मालिक है। बाज़ ने कहा कि तकमीले दीन यह है कि हज के लिए अरफ़ा का दिन मुक़र्रर कर दिया क्योंकि इस्लाम से पहले लोग हर साल मक्का मुकर्रमा में हज करते थे जब अल्लाह तआला ने हज का दिन मुक़र्रर कर दिया और इसको फ़र्ज़ कर दिया तो अल्यौमा अकमलतो लकुम दी–न–कुम की आयत नाज़िल फरमाई।

दीन का लफ़्ज़ कुरआन पाक में कई मानों में इस्तेमाल हुआ है, दुनिया और तरीक़े के मानी में जैसे यूसूफ अपने भाई को बादशाह के दीन यानी मुल्की रस्म व रिवाज के मुताबिक़ नहीं रख

सकते थे (रोक सकते थे)

2—दीन बमानी हिसाब। अल्लाह तआला का इरशाद है यह सीधा और दुरूस्त हिसाब है

3—दीन बमानी एवज़ और बदला। हक़ तआला का इरशाद है अल्लाह उस रोज़ उनको (उनके आमाल के एवज़) ठीक ठीक बदला देगा।

4—दीन के एक मानी हुक्म हैं। हुक्मे खुदा के निफ़ाज़ में तुमको इन दोनों (ज़ानी और ज़ानिया) पर तरस न आये।

5—दीन बमानी ईद (त्योहार) अल्लाह तआला का इरशाद है उन लोगों को छोड़ दो जिन्होंने दीन (यानी ईद) को महज़ खेल कूद बना रखा है।

6—दीन के मानी नमाज़, व ज़कात के भी हैं। यह दीन यानी नमाज़ व ज़कात दुरूस्त व सच्चा है।

7—दीन बमानी क़यामत। इरशादे इलाही है अल्लाह तआला क़यामत के दिन का मलिक है।

8—दीन के मानी शरीयत के भी हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: आज तुम्हारे दीनी क़वानीन (शरीयत) को मैंने मुकम्मल कर दिया।

आयत अल यौमा अकमलतो लकुम दी-न-कुम की मज़ीद तशरीह व तफ़सीर

अल्लाह तआला ने तमाम आसमानी किताबों को (बजुज़ कुरआन मजीद के) एक दम और यक बारगी नाज़िल फ़रमाया और कुरआन मजीद को थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल फ़रमाया। नुज़ूल का कौन सा तरीका बेहतर है इस मसला पर उलमा ने मुख्तलिफ़ ख्यालात पेश किये हैं चुनांचे बाज़ ने कहा कि नुज़ूले कुरआन का तरीका बेहतर है और इसकी दलील यह है कि अल्लाह तआला ने जब तौरेत को यक बारगी उतारा और बनी इस्राईल ने उसको क़बूल किया तो उसपर वह बहुत कम मुद्दत तक आमिल रहे उन पर तौरेत के अवामिर व नवाही बहुत ही गिरां गुज़रे चुनांचे वह कहने लगे: हमने सुन तो लिया मगर करेंगे हम इसके ख़िलाफ़, लेकिन कुरआन हकीम बतदरीज नाज़िल हुआ और अल्लाह तआला ने अहले ईमान को सबसे पहला हुक्म ल़ाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहने का दिया अल्लाह तआला ने ज़मानत दी कि जिसने यह कल्मा पढ़ा वह जन्नती हो गया लोगों ने उसको सुना और तसलीम कर लिया आकर उसके बाद हुक्म दिया गया कि दो दो रकअत की दो नमाज़ें अदा करें एक क़ब्ल तुलूअ आफ़ताब (नमाज़ फ़ज्र) और एक गुरूबे आफ़ताब के बाद, फिर पांच वक़्त की नमाज़ों का हुक्म दिया गया फिर हिजरत के बाद जमाअत के साथ नमाज़े जुमा का हुक्म दिया गया उसके बाद ज़कात का हुक्म हुआ फिर आशूरा के रोज़े का, फिर हर माह तीन दिन के रोज़ों का हुक्म हुआ, फिर जिहाद और आख़िरी में हज का। इसके बाद जब अवामिर व नवाही तमाम हो गये तो अल्लाह तआला ने जुमा के रोज़ अरफ़ा का दिन हुज्जतुल विदा के मौक़ा पर आयत अल यौमा अकमलतो लकुम दी न कुम नाज़िल फ़रमाई, इसी तरह हज़रत उमर से मरवी है:

तारिक़ बिन शहाब ज़ुबैरी से मरवी है कि एक यहूदी ने हज़रत उमर ख़त्ताब की ख़िदमत में

अर्ज़ किया कि आप लोग एक ऐसी आयत पढ़ते हैं कि अगर वह हम पर नाज़िल हुई होती और इसका रोज़ं नजूल हमको मालूम होता तो हम लोग उस रोज़ ईद मनाते। हज़रत उमर ने फ़रमाया वह कौन सी आयत है, यहूदी ने कहा अल यौमा अकमलतो लकुम दी न कुम। हज़रत उमर ने फ़रमाया मुझे मालूम है कि यह आयत किस रोज़ और कहां नाज़िल हुई, यह आयत अरफ़ा के रोज़ जुमा के दिन नाज़िल हुई, हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अरफ़ात के मैदान में ठहरे हुए थे और अल्लाह का शुक्र है कि यह दोनों दिन हमारे लिए ईद के दिन हैं (जुमा और रोज़े हज) और जब तक एक मुसलमान भी दुनिया में बाक़ी रहेगा यह दिन मुसलमानों के लिए ईद का दिन ही रहेगा।

एक यहूदी ने हज़रत इब्ने अब्बास से अर्ज़ किया कि अगर यह दिन हम में होता तो हम इस रोज़ ईद मनाते, हज़रत अब्बास ने फ़रमाया कि यौमे अरफ़ा से बढ़कर ईद का और कौन सा दिन होगा।

अरफ़ात और अरफ़ा के मानी

मौक़िफ़ को अरफ़ात और मौक़िफ़ के दिन को अरफ़ा क्यों कहा जाता है इसमें उलमा का इख़्तिलाफ़ है इसकी तौजीह मुख़्तलिफ़ फ़ीह है ज़हाक ने कहा कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हिन्दुस्तान में और हज़रत हव्वा को जद्दा में उतारा गया हज़रत आदम हव्वा को और हव्वा आदम को ढूंडते रहे आख़िर कार एक मुद्दत बाद दोनों अरफ़ात के मैदान में अरफ़ा के दिन मिल गये एक दूसरे को पहचान लिया इसलिए उस दिन का नाम अरफ़ा और मक़ाम का नाम अरफ़ात रखा गया।

सिद्दी का क़ौल है कि अरफ़ात की वजह तस्मिया यह है कि हज़रत हाजरा हज़रत इस्माईल को लेकर हज़रत सारा के पास से चली आईं उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मौजूद न थे जब वह आये तो इस्माईल को मौजूद न पाया, हज़रत सारा ने वाक़िया बयान किया कि हाजरा इस्माईल को लेकर चली गईं हज़रत इब्राहीम हज़रत इस्माईल की तलाश में रवाना हो गये आख़िर अरफ़ात में दोनों मिल गये हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल को पहचान लिया इसी लिए उस मक़ाम का नाम अरफ़ात हो गया।

एक रिवायत में आया है (जो मरफ़ूअ है) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़िलिस्तीन से रवाना हुए तो हज़रत सारा ने आप को क़सम दी कि आप मेरे पास वापस आने तक सवारी से न उतरें (यानी हज़रत हाजरा से कुरबत न करें) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हज़रत इस्माईल को देख कर लौट आये फिर एक साल तक सारा ने हज़रत इब्राहीम को हज़रत इस्माईल के पास नहीं जाने दिया (एक साल तक रोके रखा) एक साल बाद सारा ने इजाज़त दे दी आप रवाना हो गये और मक्का के कोहिस्तान तक पहुंच गये लेकिन बावजूद रात भर चलने और दौड़ते फिरते रहने के आप को मंज़िल नहीं मिली, तिहाई रात गुज़रने पर अल्लाह तआला के हुक्म से मैदाने अरफ़ात में ठहरे रहे, सुबह हुई तो बस्तियां और वबाल के रास्ते पहचान लिए उसी शिनाख़्त और पहचान की वजह से उसको यौम अरफ़ा क़रार दिया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि इलाही इस जगह को अपना घर बना दे जो तमाम बस्तियों से ज़्यादा पसन्दीदा हो और जिसकी

तरफ़ दूर दराज़ रास्तों से अहले ईमान के दिल मायल हों और वह आयें।

अता ने अरफ़ात की वजहे तस्मिया यह बयान की है कि हज़रत जिब्राईल हज़रत इब्राहीम को अरकाने हज बताते जाते थे और कहते थे अरफ़्तो, अब पहचान गये फिर बताते और फिर कहते अरफ़्तो, इसीलिए उस जगह का नाम अरफ़ात हो गया। सईद बिन मुसय्यब से मरवी है कि हज़रत अली ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जिब्राईल को हज़रत आदम के पास भेजा हज़रत जिब्राईल ने आप को हज कराया जब अरफ़ात के मैदान में पहुंचे तो हज़रत जिब्राईल ने कहा आपने इसे पहचाना इसलिए कि हज़रत इब्राहीम एक मरतबा पहले यहां आ चुके थे इस वजह से उसका नाम अरफ़ात रखा गया।

अबूल तुफ़ैल की रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने अरफ़ा की वजहे तस्मिया यह बयान की है कि हज़रत जिब्राईल ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मक्का के मक़ामात और हज की जगहें दिखा दीं और बता दिया कि ऐ इब्राहीम यह जगह ऐसी है और यह जगह ऐसी है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जवाब में कहते थे मैंने पहचान लिया मैंने पहचान लिया। अस्बात ने सिद्दी का क़ौल नक़्ल करते हुए कहा कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने लोगों को हज की दावत दी तो तमाम लोगों ने लब्बैक कहा और आने वाले हज के लिए आ गये। अल्लाह तआला ने एक मक़ाम की हालत बयान करते हुए फ़रमाया कि उस जगह पर निकल जाओ हज़रत इब्राहीम निकल कर चले दरख़्त के पास पहुंचे तो तीसरे जमरा यानी जमरए उक़बा पर शैतान सामने आया हज़रत इब्राहीम ने उसके सात संगरेज़े मारे हर पत्थर के मारते वक़्त आप अल्लाहो अकबर कहते, शैतान दूसरे जमरे पर जाकर हज़रत इब्राहीम ने वहां भी उस पर संगरेज़े मारे और तकबीर पढ़ी शैतान वहां से हटकर पहले जमरा पर जा गिरा। हज़रत ने वहां भी उसके संगरेज़े मारे और तकबीर पढ़ी, जब शैतान ने अपने अन्दर मुक़ाबले की ताक़त नहीं पाई तो वहां से भाग गया हज़रत इब्राहीम वहां से आगे बढ़कर जुल मजाज़ में पहुंचे आपने उस मक़ाम को नहीं पहचाना और आगे बढ़ गये और अरफ़ात में जाकर ठहरे आपने अरफ़ात को पहचान लिया और फ़रमाया मैंने पहचान लिया इसी लिए उस मक़ाम का नाम अरफ़ात रख दिया गया और उस दिन का नाम अरफ़ा रखा गया। जब शाम हुई तो आप मक़ामे जमा पर पहुंच गये उस मक़ाम को जमा इस लिए कहते हैं कि यहां मग़रिब और ईशा की नमाज़ें जमा की जाती हैं (एक साथ पढ़ी जाती हैं) उस मक़ाम को मुज़दलफ़ा कहते हैं (मुज़दलफ़ा के मानी क़रीबी जगह के हैं) उस मक़ाम को मशअरे हराम कहने की वजह यह है कि अल्लाह तआला ने दूसरे मक़ामात की तरह इस मक़ाम के बारे में भी लोगों को बता दिया कि यह भी हरम जैसा है ताकि कोई शख़्स यहां ऐसा काम न करे जिसकी हज में मुमानियत है।

अबू सालेह की रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि तरवीया और अरफ़ा की वजहे तस्मिया यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़िलहिज्जा की आठवीं तारीख़ की रात को ख़्वाब में देखा कि उन्हें बेटा ज़िबह करने का हुक्म दिया जा रहा है सुबह हुई तो सोच में पड़ गये दिन भर इसी तरह फ़िक्र में गुज़र गया कि यह अल्लाह का हुक्म है या शैतान की तरफ़ से ख़्वाब है इसी सोच की वजह से उस दिन का नाम तरविया (सोच का दिन) पड़ गया। अरफ़ा की रात को फिर वही ख़्वाब दोबारा देखा सुबह हुई तो उनको यक़ीन हो गया और यह पहचान गये कि यह हुक्म अल्लाह की तरफ़ से है इस वजह से उस दिन का नाम अरफ़ा पड़

गया। बाज़ उलमा ने अरफ़ा की वजहे तस्मिया यह बयान की है कि उस दिन मौक़िफ़ में लोग जमा हो कर अपने गुनाहों का एतराफ़ करते हैं और इसकी असल यह है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हज करने का हुक्म दिया गया तो वह अरफ़ा के दिन अरफ़ात में ठहरे और एतराफ़ किया रब्बना ज़लमना अन्फ़ुसेना और बाज़ ने कहा कि अरफ़ात अर्रफ़ (यानी पाक और साफ़) से माख़ूज़ है चुनांचे अल्लाह तआला का इरशाद है: उनके लिए उसको पाकीज़ा बना दिया। यह मिना की ज़िद है क्योंकि मिना वह मक़ाम है जहां ख़ून बहाया जाता है वहां गोबर भी होता है और ख़ून भी, इसलिए यह मक़ाम पाक नहीं रहता, अरफ़ात में यह पलीदियां नहीं होती हैं इसलिए उसको अरफ़ात कहा गया। यौमे वक़ूफ़ यौमे अरफ़ा होता है इसकी वजहे तस्मिया बक़ौले बाज़ यह है कि अरफ़ा में लोग एक दूसरे को पहचान लेते हैं यह भी कहा गया है कि इन दोनों लफ़्ज़ों की वजहे तस्मिया यह है कि अर्रफ़ के मानी हैं सब्र खुशूअ और खुज़ूअ (गिड़गिड़ाना, गिरया व ज़ारी और आजिज़ी करना) चुनांचे रजलुन आरिफ़ुन वह शख़्स है जो सब्र करने वाला और आजिज़ी करने वाला हो। एक ज़र्बुल मिस्ल है नफ़्स बड़ा साबिर है उसपर जो कुछ बोझ रख दो वह उठा लेता है।

शाएर जुर्रमा का क़ौल है हुक्मे खुदावन्दी उसपर जो कुछ ला डालता है वह उसपर सब्र करता है चूंकि हाजी भी उस जगह पर बहुत कुछ गिरया व ज़ारी करते हैं और दुआ करते हैं तरह तरह की तकालीफ़ और शदाइद उस इबादत की तकमील के लिए बरदाश्त करते हैं इसलिए उस दिन को अरफ़ा और मक़ाम को अरफ़ात कहते हैं।

अरफ़ा के रोज़ व शब

रोज़े अरफ़ा और शबे अरफ़ा की फ़ज़ीलत

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद हज़रत जाबिर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यौमे अरफ़ा से अफ़ज़ल कोई दिन नहीं है अल्लाह तआला उस दिन ज़मीन वालों के ज़रिये आसमान वालों पर फ़ख़्र करता है और फ़रमाता है मेरे उन बन्दों को देखो बिखरे और गर्द आलूद बाल हैं मेरे पास दूर दराज़ रास्तों से मेरी रहमत की उम्मीद और मेरे अज़ाब का ख़ौफ़ ले कर आये हैं। लिहाज़ा यौमे अरफ़ा से ज़्यादा दोज़ख़ से रिहाई का दिन कोई दूसरा नहीं है उस दिन जितने मुजरिम दोज़ख़ से रिहाई पाते हैं किसी और दिन नहीं पाते।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अरफ़ा के दिन खुतबा इरशाद फ़रमाते हुए फ़रमाया: "ऐ लोगो! घोड़ों और ऊंटों को इज़ा पहुचाने और लाग़र करने में नेकी नहीं है। उमदा और अच्छी रफ़्तार से चलो और कमज़ोरों पर रहम खाओ, किसी मुसलमान को इज़ा न पहुचाओ।

हज़रत नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की है कि उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अरफ़ा के दिन नज़र फ़रमाता है तो जिसके दिल में ज़रा सा भी ईमान होता है वह ज़रूर बख़्श दिया जाता है। मैंने हज़रत इब्ने उमर से पूछा कि यह मग़फ़िरत तमाम लोगों के लिये है या अहले अरफ़ात के

साथ मख़सूस है, उन्होंने फ़रमाया यह मग़फ़िरत तमाम लोगों के लिये है।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत की कि उन्होंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अरफ़ा का दिन का दिन होता है, तो अल्लाह तआला नीचे के आसमान पर उतरता है और हाजियों की वजह से मलाइका पर फ़ख़्र करता है और फ़रमाता है ऐ मेरे मलाइका! मेरे इन बन्दों को देखो किस तरह परेशान बाल गर्द आलूद, दूर दराज़ रास्तों से आये हैं यह मेरी राहत के उम्मीदवार हैं और मेरे अज़ाब से तरसां हैं और जिस शख़्स के मुलाक़ात के लिए कोई आता है तो उस पर हक़ है कि आने वाले की इज़्ज़त करे, मेज़बान पर मेहमान की इज़्ज़त करना लाज़िम है पस तुम गवाह रहो मैंने उनकी मग़फ़िरत कर दी, उनकी मेहमानी का तआम जन्नत को क़रार दिया, मलाइका अर्ज़ करते हैं कि परवरदिगारे आलम इनमें तो मग़रूर व मुतकब्बिर औरतें भी शामिल हैं, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने उनको भी बख़्श दिया रोज़े अरफ़ा से ज़्यादा और कोई दिन दोज़ख़ से आज़ादी का नहीं है।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत तलह[illegible]न अब्दुल्लाह का क़ौ[illegible] नक़्ल किया हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम् ने फ़रमाया कि अरफ़ा के दिन से ज़्या[illegible]ा किसी दिन भी शैतान को ख़्वार व ज़लील, शर्मिन्दा और ग़ज़बनाक न[illegible]ीं देखा गया[illegible]ोंकि [illegible]स दिन उसको अल्लाह की रहमत का नुजूल और बन्दों के गुनाहों की म[illegible]रत नज़र आ[illegible]ी हैं। हां बद्र का दिन इससे मुस्तसना है। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह [illegible] के दिन [illegible]ीस ने क्या देखा था हज़रत ने फ़रमाया कि जिब्रील को म[illegible]का [illegible] बुलाते देखा था।

इकरमा का क़ौल है [illegible] हज़रत इ[illegible] अब्बा[illegible] फ़रमाते थे [illegible]के यौमे अरफ़ा हज्जे अकबर का दिन है वही दिन यौमे मुबाहात है कि अल्ल[illegible]ह तआ[illegible] [illegible]चले आसमान पर नुजूल फ़रमाता है और फ़रिश्तों स[illegible] फ़रमाता [illegible]मेरी ज़मी[illegible] पर बन्दों [illegible] कि उन्होंने मेरी (वहदानियत और रबूबियत की) तसदी[illegible] की [illegible] तो यौम अरफ़ा से बढ़कर कोई और [illegible]न ऐसा नहीं कि बेशुमार लोग जहन्नम से आज़ाद [illegible]ाते हों।

हज़रत अबू हुरैरा की [illegible]यत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहिं वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अलयौमुल मौऊ[illegible] [illegible]यामत है अश्शाहिद रोज़े जुमा है और अश्शहूद रोज़े अरफ़ा है।

अता ने इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अरफ़ा के दिन आम लोगों के बाइस मुबाहात फ़रमाता है और हज़रत उमर इब्न ख़त्ताब के बाइस ख़ास तौर पर (हज़रत उमर की ज़ाते गरामी से ख़ास तौर पर) हज़रत इब्ने उमर की रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे बड़ा मुजरिम वह है जो यह जानते हुए अरफ़ात से लौटता है कि अल्लाह ने उसकी मग़फ़िरत नहीं की। हज़रत अबूहुरैरा ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अरफ़ा की शाम को मुज़दलफ़ा में जमा होने वाले तमाम लोगों को बख़्श देता है सिवाए उनके जो कबीरा गुनाह करने वाले हैं, जब मुज़दलफ़ा की सुबह होती है तो अल्लाह तआला तमाम अहले कबाइर (कबीरा गुनाह करने वाले) को और आज़ार देने वाले लोगों को भी बख़्श देता है।

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे साथ अरफ़ा की शाम को मौक़िफ़ में ठहरे

जब वहां से रवानगी का क़स्द फ़रमाया तो आप खड़े हो गये, सब लोगों को ख़ामोश रहने का हुक्म दिया और फ़रमाया ऐ लोगो! बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने तुम पर एहसान फ़रमाया है कि तुम्हारी आज के दिन तक उमरें दराज़ कीं और तुम्हारी नेकियों के तुफ़ैल तुम्हारे बदकारों ने भी जो कुछ मांगा बख़्श दिया और बाहमी इज़ा रसानी के तमाम गुनाह भी बख़्श दिये। चलो अल्लाह का नाम ले कर, जब हम लोग मुज़दलफ़ा पहुंचे तो लोगों को हुजूर ने ख़ामोश कराया, जब लोग ख़ामोश हो गये तो फ़रमाया लोगो! आज इस दिन अल्लाह ने तुम पर बड़ा एहसान फ़रमाया तुम्हारे बदकारों को नेकों की वजह से बख़्श दिया और नेकों ने जो कुछ मांगा अता फ़रमा दिया और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दिया और तुम्हारे वह गुनाह भी माफ़ कर दिए जो इज़ा रसानी के बाइस तुम पर हुए थे और इज़ा रसानों के सवाब का भी ज़िम्मादार हो गया। चलो अल्लाह का नाम लेकर चलो। आप के इस इरशाद के बाद एक आराबी आप की ऊंटनी की मुहार पकड़ कर खड़ा हो गया और उसने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह उस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया है दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जो मैंने नहीं किया, मैंने झूठे हलफ़ भी उठाये हैं तो क्या मैं भी उन लोगों में शामिल हूं जिनकी आप ने सिफ़त बयान की है? हुजूर वाला ने इरशाद फ़रमाया ऐ आराबी! अब तू अज़सर नौ नेक अमल करना शुरू कर दे, तेरे पहले तमाम गुनाह बख़्श दिये गये, मुहार छोड़ दे।

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद हज़रत अब्बास बिन मरवास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरफ़ा की रात अपनी उम्मत के लिए मग़फ़िरत, बख़्शिश और रहमत की दुआ फ़रमाई, उसके बाद आप ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को बख़्श दिया सिवाए उनके जो एक दूसरे पर ज़ुल्म करें। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने वह गुनाह बख़्श दिये जो बन्दे और अल्लाह के दर्मियान थे, फिर आप ने फ़रमाया इलाही! तू यक़ीनन तू क़ादिर है उस मज़लूम को उस पर किये गये ज़ुल्म का बेहतर सवाब अता फ़रमाये और उस ज़ुल्म को बख़्श दे। हुजूर ने फ़रमाया कि हक़ तआला ने उस रात जवाब अता नहीं फ़रमाया, फिर जब मुज़दलफ़ा की रात आई तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया और अल्लाह तआला ने उसी वक़्त आप को जवाब अता फ़रमाया कि मैंने उनको भी बख़्श दिया। रावी का बयान है कि उस वक़्त हुजूर ने तबस्सुम फ़रमाया, एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुजूर ऐसे वक़्त मुसकुराये कि उससे पहले ऐसे वक़्त कभी तबस्सुम नहीं फ़रमाते थे (यानी दुआ के वक़्त) आपने फ़रमाया मैं दुश्मने ख़ुदा इब्लीस की हालत पर मुसकुराया, जब उसको मालूम हुआ कि मेरी मुराद के मुताबिक़ उम्मत के लिए अल्लाह तआला ने मेरी दुआ क़बूल फ़रमा ली है तो वह अपनी बर्बादी और तबाही को पुकारने लगा और सर पर ख़ाक डालने लगा।

हज़रत सईद बिन जुबेर से मरवी है कि अरफ़ा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरफ़ात के उस मक़ाम पर तशरीफ़ फ़रमा थे जहां बन्दे अल्लाह के हुजूर में हाथ फैलाते हैं और चिल्ला चिल्ला कर दुआ मांगते हैं कि जिब्रील नाज़िल हुए और कहा ऐ मोहम्मद! ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर आपको सलाम कह रहा है और फ़रमाता है कि यह लोग मेरे घर के हाजी और मेरी ज़ियारत के लिए आने वाले हैं यह जिसकी मुलाक़ात को आये हैं उसपर लाज़िम है कि आने वाले की तौक़ीर करे मैं आपको और आपने मलायका को गवाह बनाता हूं कि मैंने उनसब को बख़्श

दिया और जुमा के दिन जियारत करने वालों के साथ ऐसा ही करते रहूंगा।

हज़रत अली से मरवी है कि अरफ़ा के दिन जब शाम हुई और रसूलुल्लाह सल्लल्ला अलैहि वसल्लम अरफ़ात में ठहरे हुए थे आपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह होकर तीन ब फ़रमाया अल्लाह के उन मेहमानों को मरहबा! यह जो सवाल करते हैं उनका सवाल पूरा कि जाता है, दुनिया में उनके रिज़्क़ में बरकत पैदा करता है और आख़िरत में हर दिरहम के एक अल्लाह तआला हज़ार दिरहम उनको अता फ़रमायेगा। क्या मैं तुमको बशारत दूं? सहाबा करा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्यों नहीं ज़रूर दीजिए आपने फ़रमाया, जब यह रात आती है अल्लाह तआला आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाता है फिर अपने फ़रिश्तों को हुक्म दे है कि वह ज़मीन पर उतर जायें चुनांचे फ़रिश्ते इतने कसीर तादाद में उतरते हैं कि अगर सु गिरे तो फ़रिश्ते पर गिरे, अल्लाह तआला फ़रमाता है ऐ मलाइका! मेरे बन्दों को देखो कि मेरे पा अतराफ़ व अकनाफ़ से परेशान और गुबार आलूद बालों के साथ आये हैं, क्या तुम सुन रहे ह वह मुझसे क्या मांग रहे हैं? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब! वह तुझसे मग़फ़िरत तलब क रहे हैं हक़ तआला फ़रमाता है मैं तुमको गवाह बनाता हूं कि मैंने उनको बख़्श दिया, अल्ला तआला तीन बार यह फ़रमाता है, लिहाज़ा अब अपनी क़याम गाह से चलो, तुम्हारी मग़फ़िरत क दी गई।

अरफ़ा के दिन नमाज़ रोज़ा और दुआ की फ़ज़ीलत

अरफ़ा के दिन की दुआयें

अरफ़ा का रोज़ा

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद बयान किया कि हज़रत ज़ैद ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अरफ़ा के दिन का रोज़ा रखता है अल्लाह तआला उसके एक साल पहले और एक साल बाद के गुनाह माफ़ कर देता है। शैख़ हिबतुल्लाह ने हज़रत अबू क़तादा का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अरफ़ा का रोज़ा दो साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है, एक गुज़िश्ता साल के और एक आइन्दा साल के।

अरफ़ा के दिन की नमाज़ें

अरफ़ा कि दिन की नमाज़ के बारे में शैख़ हिबतुल्लाह ने असनाद के साथ हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स अरफ़ा के दिन जुहर व अस्र के दर्मियान चार रकअतें इस तरतीब से पढ़ता है कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सुरह अख़लास पांच बार, तो उसके लिए हज़ारों नेकियां लिखी जाती हैं, कुरआन के हर लफ़्ज़ के एवज़ जन्नत में उसका मरतबा इतना ऊंचा किया जायेगा जिसकी मुसाफ़त पांच बरस की मुसाफ़त के बराबर होगी। कुरआन के हर हर्फ़ के एवज़ अल्लाह तआला

सत्तर हूरें उसको मरहमत फ़रमायेगा, हर हूर के साथ सत्तर ख़्वान मोती और याकूत के होंगे हर ख़्वान पर हज़ार रंग के खाने होंगे जो सत्तर हज़ार सब्ज़ रंग के गोश्त के होंगे खाने, बर्फ़ की तरह सर्द और शहद की तरह शीरीं और मुश्क की तरह खुशबू दार होंगे उस खाने को न आग ने छुआ होगा और न लोहे से (गोश्त को) काटा गया होगा, हर लुक़्मा पहले लुक़्मा से बेहतर होगा उसके पास एक ऐसा परिन्दा आयेगा जिसकी चोंच सोने की, बाजू सुर्ख़ याकूत के होंगे, उस परिन्दे के सत्तर हज़ार पर होंगे, परिन्दा ऐसी ज़मज़मा संजियां करेगा कि किसी ने ऐसी नहीं सुनी होंगी यह परिन्दा कहेगा! ऐ अहले अरफ़ा! मरहबा! हुज़ूर ने फ़रमाया फिर वह परिन्दा उस शख़्स के प्याला में गिर जायेगा उसके हर पर के नीचे से सत्तर क़िस्म के खाने निकलेंगे जन्नती उनको खायेगा फिर वह परिन्दा उड़ जायेगा उस नमाज़ पढ़ने वाले को (पसे मुरदन) जब क़ब्र में रखा जायेग तो कुरआन के हर हर्फ़ के बाइस उसकी क़ब्र जगमगा उठेगी यहां तक कि वह बैतुल्लाह का तवाफ़ करने वालों को देख लेगा उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जायेगा उस दरवाज़े से उसको वह सवाब और मरतबा दिखाई देगा जो उसके लिए मख़सूस होगा उसको देखकर वह कहेगा इलाही! क़यामत बरपा कर दे।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत हसन से और उन्होंने हज़रत अली और अब्दुल्लाह इब्न मसऊद से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स अरफ़ा के दिन दो रकअतें पढ़े और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा तीन बार (सूरह फ़ातिहा को बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू करे) फिर सूरह काफ़िरून तीन बार और सूरह इख़लास एक बार, हर सूरत को बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू करे तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम गवाह रहो मैंने इसके गुनाह बख़्श दिये।

यौमे अरफ़ात की दुआयें

शैख़ हिबतुल्लाह ने अपनी असनाद के साथ उमर लेसी से रिवायत की है कि उन्होंने कहा कि हम को इत्तेला मिली है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास हज़रत जिब्रील को तवस्सुत से पांच दुआयें बतौरे हदिया भेजीं, जिब्रील ने कहा कि आप यह पांच दुआयें पढ़ा करें। अल्लाह को ज़िलहिज्जा के अशरा की इबादत से ज़्यादा किसी दिन की इबादत महबूब और पसन्दीदा नहीं है।

पहली दुआ

पहली दुआ यह है:

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है और उसी को हम्द है वही ज़िन्दा करता है वही मारता है उसी के क़ब्ज़ा में ख़ैर है और वह हर शय पर क़ादिर है।

दूसरी दुआ

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं वह माबूद है, एक है, बेनियाज़ है न उसके बीवी है न बच्चे।

तीसरी दुआ

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है उसी के लिए हम्द है वही ज़िन्दा करता है वही मारता है वह ज़िन्दा है उसके लिए मौत नहीं है उसी के क़ब्ज़ा में भलाई है और वह हर शय पर क़ादिर है।

चौथी दुआ

मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है और वही काफ़ी है अल्लाह को जिसने पुकारा उसने उसकी पुकार सुनी अल्लाह के सिवा कोई और मुन्तहा नहीं है।

पाचवीं दुआ

इलाही! तू ही सारी तारीफ़ों के लायक़ है जैसा कि तूने आप अपनी तारीफ़ फ़रमाई है, हमारी हर तारीफ़ से तू बाला तर और बेहतर है इलाही! मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब तेरे ही लिए है मेरी मीरास भी ख़ास तेरे लिए है, ऐ मालिक हर सूरत में तेरी ही बारगाह में अज़ाबे क़ब्र से बचने की दरख़्वास्त करता हूं मेरे कामों की परागन्दगी से मुझे बचा जिस चीज़ पर हवा चलती है मैं उसकी बेहतरी के लिए तेरे हुज़ूर में दुआ करता हूं कि उससे मुझे अमन व अमान में रख।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों ने हज़रत ईसा से उन दुआओं का असर दरयाफ़्त किया, आपने फ़रमाया जो शख़्स पहली दुआ एक सौ मरतबा पढ़ेगा तो रूए ज़मीन पर उस जैसा इबादत करने वाला कोई दूसरा नहीं होगा, क़यामत के दिन तमाम नेकोकारों से ज़्यादा उसकी नेकियां होंगी। जिसने दूसरी दुआ को सौ मरतबा पढ़ा तो अल्लाह तआला उसके लिए एक लाख नेकियां लिखेगा और उतनी ही उसकी बुराइयां मिटा देगा और जन्नत में उसके दस हज़ार दर्जे बलन्द कर देगा। जिसने तीसरी दुआ को सौ मरतबा पढ़ा तो सबसे निचले आसमान से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हाथ फैलाये हुए उसके पढ़ने वाले पर रहमत तलब करते हुए उतरेंगे। जिसने चौथी दुआ को सौ मरतबा पढ़ा तो उस दुआ को फ़रिश्ते सजा कर रब्बुल आलमीन के हुज़ूर में पेश करेंगे और अल्लाह तआला उस पर नज़रे करम फ़रमायेगा और जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला का नज़रे करम हो वह बदबख़्त कैसे हो सकता है आपके हवारियों ने पांचवीं दुआ के बारे में दरयाफ़्त किया कि उसमे कितना सवाब है तो हज़रत इसा अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि इसकी वज़ाहत की उन्हे इजाज़त नहीं दी गई है।

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद रिवायत की है कि हज़रत अमीरूल मोमिनीन अली इब्न अबी तालिब ने फ़रमाया अरफ़ा की शाम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकसर दुआ करते और फ़रमाते थे।

ऐ अल्लाह! तू ने आप अपनी जो कुछ तारीफ़ की है वह तेरे ही लिए है मेरे कहने से (तारीफ़ करने से) जो ख़ुद बेहतर कहता है, इलाही! मेरी ज़िन्दगी मेरी मौत और इबादत सब तेरे ही लिए है, मेरी मीरास भी तेरे ही लिए है, इलाही मैं तुझसे अमन व अमान चाहता हूं! इलाही मुझे क़ब्र के अज़ाब से, सीना के फ़ितने और काम की बरहमी से महफ़ूज़ रख, जिस चीज़ के साथ हवा चलती है मैं तुझसे उससे बेहतर चीज़ की दरख़्वास्त करता हूं वह मुझे अता फ़रमा दे।

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने बिल असनाद अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा से यह भी रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरफ़ा में मेरी और मुझसे पहले पैग़म्बरों की दुआ यह है:

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह यकता है उसका कोई शरीक नहीं उसी का मुल्क है और वही तारीफ़ और हम्द व सना के लायक़ है वह हर चीज़ पर क़ादिर है, इलाही! तू मेरे दिल में नूर अता फ़रमा, मेरे कानों और मेरी आंखों की नूर से मामूर कर दे! ऐ अल्लाह मेरा सीना खोल दे, मेरे काम आसान कर दे, मेरे सीने को वसवसों, क़ब्र के फ़ितनों और काम की परागन्दगी से अमन में रख, इलाही मुझे रात और दिन की शरारतों (बुराइयों) से बचा, मुझे हवा की शरारतों और बदी से अमन व अमान में रख।

ज़हाक कहते हैं कि हुज्जतुल विदा में जब लोग अरफ़ात में जमा हो गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया यह हज्जे अकबर का दिन है जो शख़्स आज रात या दिन में अरफ़ात में नहीं पहुंचा उसका हज नहीं हुआ, आज परवरदिगार से दुआ करने और मांगने का दिन है आज तहलील व तकबीर और तसबीह का दिन है जो शख़्स आज इस जगह पहुंचेगा और अपने परवरदिगार से मांगने से महरूम रहा वही महरूम है, हक़ीक़त में तुम ऐसे सख़ी से मांगते हो जो अता में बुख़्ल नहीं करता और ऐसे मुतहम्मिल बुर्दबार से मांगते हो जो जहल (गुस्सा) नहीं फ़रमाता, ऐसे आलिम से मांगते हो जो भूलता नहीं। जिसने अपने घर रहकर अरफ़ा के दिन रोज़ा रखा गोया उसने एक साल पहले और एक साल बाद के रोज़े रखे।

अरफ़ा की शाम की वह दुआयें

जो

सरवरे कायनात खुसूसियत के साथ फ़रमाते

अरफ़ा की वह दुआयें जो आंहज़रत के साथ मख़सूस थीं

शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत अली मुर्तज़ा से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद किया कि मौक़िफ़ अरफ़ा में इस दुआ से अफ़ज़ल और कोई क़ौल या अमल नहीं है, इस दुआ को पढ़ने वाले की तरफ़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला तवज्जोह फ़रमाता है। हज़रत अली फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरफ़ात में क़िब्ला रू होकर दुआ मांगने वाले की तरह दोनों हाथ फैला कर तीन बार लब्बैक फ़रमाते फिर सौ बार इरशाद फ़रमाते ला इला हा इल्लल्लाहो वहदहु ला शरी क लहू, लहुल मुलको वलहुल हम्दो युहई व युमीतो बियदिहिल ख़ैरा व हो व अला कुल्लि शैइन क़दीर।

फिर सौ मरतबा ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलीईल अज़ीम अशहदो अन्नल्ला हा अला कुल्लि शैइन क़दीरून व अन्नल्लाहा क़द अहाता बेकुल्लि शैईन इल्मा

और कुव्वत अल्लाह ही के लिए है, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ादिर है सब कुछ अल्लाह ही के इहातए इल्म में है (कोई चीज़ उसके इल्म से बाहर नहीं है।)

फ़रमाते, इसके बाद शैतान मरदूद से पनाह मांगते और तीन बार फ़रमाते इन्नल्लाहा होवस समीउल अलीम, फिर तीन बार सूरह फ़ातिहा पढ़ते हर बार सूरह फ़ातिहा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से शुरू फ़रमाते और आमीन पर ख़त्म करते फिर सौ बार सूरह इख़्लास पढ़ते फिर सौ बार फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, अल्लाहुम्मा सल्ले अलन्नबीइल उम्मीऐ व रहमतुल्लाहि व बरकातहु पढ़ते उसके बाद हुज़ूर जो चाहते वह दुआ करते। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है जो शख़्स इस तरह दुआ करता है तो मलाइका से अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरे बन्दा को देखो उसने मेरे घर की तरफ़ रूख़ किया मेरी बुज़ुर्गी बयान की, तसबीह व तहलील में मशग़ूल हुआ और जो सूरत मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी वही पढ़ी और मेरे रसूल पर दरूद भेजा मैं तुम को गवाह बनाता हूं कि मैंने उसके अमल को क़बूल किया उसके अज्र को वाजिब कर दिया, उसके गुनाह बख़्श दिये और उसने जो कुछ मांगा मैंने उसकी सिफ़ारिश क़बूल की।

रोज़े अरफ़ा

मलाइका (मुक़र्रबीन) और हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की दुआयें

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक ने अपनी असनाद के साथ हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बर्री और बहरी (पैग़म्बर) यानी हज़रत इलयास और हज़रत ख़िज़्र अलैहिमस्सलाम हर साल मक्का मुअज़्ज़मा में जमा होते हैं हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया हमको यह ख़बर मिली है कि यह दोनों बाहम सर मूंडते हैं और एक दूसरे से कहता है कि पढ़ो:

बिस्मिल्लाह माशाअल्लाह! सिवाए अल्लाह तआला के कोई नेकी नहीं देता बिस्मिल्लाह माशाअल्लह! ख़ुदा के सिवा कोई बदी को दूर नहीं कर सकता, बिस्मिल्लाह माशाअल्लाह! जिस क़दर नेमत भी तुम्हारे पास है अल्लाह ही देता है बिस्मिल्लाह माशाअल्लाह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई चीज़ गर्दीश नहीं कर सकती न किसी में इस बात की ताक़त है।

इस दुआ का असर

हज़रत इब्न अब्बास ने कहा कि हुज़ूरे अक़दस ने फ़रमाया जो शख़्स इस दुआ को रोज़ाना सुबह को पढ़ेगा वह डूबने से, जलने से, चोरी से और नागवार व ना पसंन्दीदा चीज़ से शाम तक महफ़ूज़ रहेगा और जो शख़्स यह दुआ शाम को पढ़ेगा वह सुबह तक अल्लाह की पनाह में रहेगा

शैख़ हिबतुल्लाह बिन मुबारक बिल असनाद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहु से रिवायत करते हैं की आपने फ़रमाया, हर अरफ़ा के दिन अरफ़ात में हज़रत जिब्रील, मिकाईल, इस्राफ़ील और हज़रत ख़िज़्र अलैहिमुस्सलाम जमा होते हैं, हज़रत जिब्रील कहते हैं: अल्लाह जो चाहे और अल्लाह के सिवा किसी को कुव्वत व ताक़त नहीं है। हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम इसके जवाब में कहते हैं: अल्लाह जो चाहे तमाम नेमतें अल्लाह की तरफ़ से हैं। इसके जवाब में हज़रत इस्राफ़ील कहते हैं: अल्लाह जो चाहे सारी भलाईयां अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं इस के जवाब में हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: अल्लाह जो चाहे, अल्लाह के सिवा कोई बुराईयों को दूर नहीं कर सकता।

इस दुआ के बाद वह मुंतशिर व मुतफ़र्रिक़ हो जाते हैं और आईन्दा साल तक अरफ़ा से पहले इकट्ठे नहीं होते।

अरफ़ा के दिन की दुआ में अक़वाल व अख़बार

एक हदीस

इब्ने जुरैह ने कहा कि मुझे इत्तेला मिली है कि हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते थे कि अरफ़ा में मुसलमानों की दुआ ज़्यादा तर यह होनी चाहिए:

इलाही हम को दुनिया में भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई अता कर और ऐ हमारे रब हम को आग के अज़ाब से महफ़ूज़ रख।

मुजाहिद ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया जब से अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान पैदा फ़रमाए हैं रुक्ने यमानी के पास एक फ़रिश्ता आमीन कहने के लिए खड़ा है लिहाज़ा तुम यह कहो: रब्बना आतेना फ़िद्दुनिया हसनतंव व फ़िल आख़िरति हसनतंव व क़ेना अज़ाबन्नार। हम्माद बिन साबित ने बयान किया कि लोगों ने हज़रत अनस बिन मालिक से अर्ज़ किया कि हमारे लिए दुआए मग़फ़िरत फ़रमाए आपने इस तरह दुआ फ़रमाई: अल्लाहुम्मा रब्बना आतेना फ़िद्दुनिया हसनतंव व फ़िल आख़िरति हसनतंव व क़ेना अज़ाबन्नार। लोगों ने अर्ज़ किया कुछ मज़ीद दुआ फ़रमाईए आपने फिर वही दुआ दोहरा दी, लोगों ने फिर अर्ज़ किया कि मज़ीद दुआ फ़रमाईए तो आपने फ़रमाया तुम और क्या चाहते हो मैंने तुम्हारे लिए अल्लाह से दुनिया व आख़िरत की भलाई मांग ली। हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अक्सर इनही अलफ़ाज़ से दुआ फ़रमाया करते थे। अल्लाह तआला का ख़ुद इरशाद है कि जो शख़्स यह दुआ करेगा अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व रहमत का कुछ हिस्सा उसको अता फ़रमाएगा। चुनांचे इरशाद फ़रमाया है फ़मिनन्नासि मैंय्यकूलो रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया। बाज़ लोग कहते हैं परवरदिगार हमको दुनिया ही इनायत कर यानी दुनियावी माल व मताअ इनायत कर, ऊंट, बकरी, घोड़े, गाय, गुलाम व बान्दी, सोना चांदी अता फ़रमा। दुनिया ही उसकी नीयत में होती है दुनिया ही की नीयत से वह ख़र्च करता है दुनिया ही के लिए नेक काम करता है दुनिया ही के लिए कोशिश करता है और थकता है और दुनिया ही उसका मुन्तहाए मक़सूद होती है (तो ऐसे लोगों के लिए) इसके बाद अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया आख़िरत में ऐसे का कुछ हिस्सा नहीं है और कुछ लोग (यानी मोमिन) कहते हैं कि ऐ परवरदिगार हम को दुनिया में भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी, हमको दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रख।

दुनिया और आख़िरत की भलाईयां क्या हैं, इसके मानी के तअय्युन में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं हज़रत अली फ़रमाते मैं दुनिया में हसना (नेकी) से मुराद नेक बीबी (बिवी) और आख़िरत में हसना के मानी हूरे ऐन हैं वक़ेना अज़ाबन्नार से मुराद बुरी बिवी है।

हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया दुनिया में हसना से मुराद इल्म व इबादत और आखिरत में हसना से मुराद जन्नत है, सिद्दी और इब्ने ह्यान ने फ़रमाया दुनिया में हसना से मुराद रिज़्क़ हलाल व वसीअ़ और अमले सालेह हैं और आख़िरत में हसना से मुराद मग़फ़िरत और अज्र है और अतबा ने फ़रमाया की दुनिया में भलाई (हसना) से मुराद इल्म और इल्म के मुताबिक अमल है और आख़िरत की भलाई हिसाब में आसान और जन्नत में दाख़िला है।

बाज़ उलमा ने फ़रमाया है दुनिया में हसना से मुराद तौफ़ीक़ (अमले ख़ैर) इस्मत है और आख़िरत में हसना से मुराद नजात व जन्नत है। बाज़ का कहना है कि दुनिया में हसना से मुराद नेक औलाद और आख़िरत में हसना से मुराद अंबिया अलैहिमुस्सलाम की रिफ़ाकत है। बाज कहते हैं कि दुनिया में हसना से मुराद इख़लास और आख़िरत में नजात है एक कौल यह भी है कि दुनिया की भलाई ईमान पर क़ाइम रहना है और आख़िरत का भलाई आज़ाब से नजात और रज़ाए इलाही का हुसूल है। एक कौल यह भी है कि दुनिया की भलाई से मुराद ताअत की लज़्ज़त है और आख़िरत की भलाई से मुराद दीदार इलाही की लज़्ज़त है।

कतादह ने कहा है कि दुनिया की भलाई से मुराद भी आफ़ियत है और आखिरत की भलाई से भी मुराद आफ़ियत है और इस तावील को इस हदीस से तकवियत पहुंचती है जो साबित बनानी ने हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स की अयादत की वह शख़्स पर नोचे हुए चूज़ा की तरह लागर हो गया था हजूर ने उससे दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुम अल्लाह से कुछ दुआ किया करते हो? और कुछ मांगा करते थे? उस शख़्स ने अर्ज़ किया जी हां, मैं कहता था कि इलाही जो अजाब तू आखिरत में मुझे देना चाहता है वह इस दुनिया ही में दे दे। हजूर ने फ़रमाया सुब्हानल्लाह लेकिन उस वक़्त तुम में इसकी ताब व तवां नहीं है तुमने इस तरह दुआ क्यों नहीं मांगी अल्लाहुम्मा रब्बना आतेना फ़िद्दुनिया हसनतंव व फिल आख़िरति हसनतंव व केना अज़ाबन्नार। इसके बाद उस शख़्स ने यही दुआ मांगना शुरू की तो अल्लाह तआला ने उसको शिफ़ा दे दी।

सहल बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि दुनिया की भलाई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और आख़िरत की भलाई जन्नत है। हज़रत मुसय्यब ने मजकूरा बाला आयत के सिलसिला में औफ़ का कौल नक़ल किया है उन्होंने इस आयते करीमा की तफ़सीर में फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जिस को इस्लाम, कुरआन, अहल व अयाल और माल व मताअ इनायत फ़रमाया। बिला शुबहा उसको दुनिया और आख़िरत में हसना (भलाई) अता की गई।

अब्दुल आला बिन वहब ने इस आयत के सिलसिला में हजरत सुफ़यान सौरी का कौल नक़्ल किया है कि उन्होंने फ़रमाया दुनिया में हसना से मुराद पाक व हलाल रिज़्क और आखिरत में हसना से मुराद जन्नत है।

यौमुल अज़्हा और यौमे नहर के फ़ज़ाएल

कौसर के मानी:

अल्लाह तआला का इरशाद है: बेशक हम ने आप को कौसर अता फ़रमाया तो आप अपने

रब के लिए नमाज पढ़िये और कुरबानी दीजिये बेशक जो तुम्हारा दुशमन है वही हर ख़ैर से महरूम है। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि कौसर से मुराद ख़ैरे कसीर है जो कुरआन भी है, नबुव्वत भी है और जन्नत वाली वह नहर भी जो वस्ते जन्नत से रवां हैं जिस का अनदुरुनी हिस्सा (अन्दर की सतह) खोखले मोती (से बना) है और उसके दोनों किनारों पर सब्ज़ याकूत के कुब्बे हैं, जिस का पानी शहद से ज़्यादा शीरीं, मक्खन से ज़्यादा नर्म और जिस की कीचड़ ख़ालिस मुश्क से ज़्यादा खुशबूदार है, उसकी मिट्टी सफेद काफूर और उसकी कंकरीयां, मोती और याकूत हैं। तीर की तरह उसके पानी की रवानी हैं अल्लाह तआला ने यह नहर अपने पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाई है।

मक़ातिल कहते हैं कि कौसर उस नहर का नाम है जो वस्ते जन्नत में रवां हैं चूंकी यह नहर अपने औसाफ़ और ख़ूबियों में जन्नत की तमाम नहरों में अफ़ज़ल है इस लिए इसका नाम कौसर है। यह नहर उजाज यानी लहरों वाली है (इसमें लहरें उठती रहती हैं) तीर के मानिन्द रवां हैं। उसकी मिट्टी ख़ालिस मुश्क की, कंकरियां याकूत ज़मुर्रद और मोती की हैं, उस का पानी बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद, मक्खन से ज़्यादा नर्म और शहद से ज़्यादा शीरीं हैं , उस नहर के दोनों किनारों पर खोखले मोती के गुंबद हैं, हर गुंबद की लम्बाई चौड़ाई एक एक फ़रसग हैं हर गुंबद के चार हज़ार सुनहरी दरवाज़े हैं और हर गुंबद में एक तरहदार हूर मौजूद है जिस की सत्तर हज़ार ख़ादिमें हैं।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने शबे मेराज में जिब्रील से दरयाफ़्त किया कि यह ख़ेमे कैसे हैं? उन्होंने बताया की यह जन्नत में आपकी बीवियों के रहने के मकानात हैं। क़ौसर से अहले जन्नत के लिए वह चार नहरें निकलती हैं, जिन का ज़िक्र अल्लाह तआला ने सूरह मोहम्मद में फ़रमाया है। एक नहर पानी की, एक दूध की, एक शराब (शरबत) की और एक शहद की है।

फ़सल्ले ले रब्बेका वनहर की तफ़सीर में मक़ातिल कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि नमाज़े पंजगाना पढ़ो और कुरबानी के दिन जानवर (ऊंट, बकरी) ज़िबह करो बाज़ ने कहा है कि इससे मुराद ईद की नमाज़ पढ़ना है और मेना में ऊंट की कुरबानी करना है। बाज़ उलमा ने वनहर की तशरीह में कहा है कि अपने हाथों को तकबीर के लिए हन्सली की हड्डी तक उठाओ(नहर तक) और बाज़ ने कहा है कि अपने सीना को क़िब्ला रूख़ करो।

इन्ना शानेअका हुवल अबतर आस बिन वाएल कहते हैं कि इसकी तशरीह यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनी सहम के दरवाज़े से काबा में दाख़िल हुए, अन्दर कुरैश बैठे हुए थे, हजूर उनके सामने से गुज़र गए और आप उनके पास नहीं रूके और बाबे सफ़ा से बाहर तशरीफ़ ले गए उन लोगों ने दाख़िल होते वक़्त तो आप को देखा नहीं जाते वक़्त देख लिया मगर पहचान न सके (पुश्त होने के बाइस) लेकिन उसी वक़्त आस बिन वाएल बिन हश्शाम बिन सईद बिन सअद बाबे सफ़ा से काबा में दाख़िल हो रहा था उसने आप को देख कर पहचान लिया, यह वह ज़माना था कि हुजूर वाला के साहबज़ादे अब्दुल्लाह का इन्तकाल हो चुका था, अहले अरब का क़ायदा और मामूल था कि जब किसी शख़्स की औलादे नरीना बाक़ी नहीं रहती थी (जो उसके वारिस बन सके) तो ऐसे शख़्स को वह अबतर कहते हैं (यानी नस्ल बुरीदा) चुनांचे आस जब अपनी क़ौम के लोगों के पास पहुंचा तो उन्होंने कहा कि वह कौन

शख़्स था जो तुम्हें रास्ता में मिला था (बदबख़्त) आस ने फ़ौरन जवाब दिया अबतर (मुझे अबतर यानी नस्ल बुरीदा मिला था) इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि "आप से बुग्ज़ रखने वाला और आप का दुशमन ही अबतर हैं यानी हर ख़ैर से मुन्क़तअ़ और अलग और आप का ज़िक्र मेरे ज़िक्र के साथ हमेशा बाक़ी रहेगा चुनांचे आप का ज़िक्र तमाम लोगों में बलन्द किया। सुरह अलम नशरह में इरशाद फ़रमाया।

क्या हम ने आप का सीना कुशादा नहीं किया और हम ने उस बोझ को दूर कर दिया जिसने आप की पीठ दोहरी कर दी थी और हम ने आप के ज़िक्र को बुलंदी और रिफ़अत अता फरमाई।

तो आंहजरत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िक्र हर जगह और हर काम में होता है ईद में, जुमा में, मिमबरों पर, मस्जिदो में, अज़ान में, एक़ामत में, नमाज़ में हत्ता कि तक़रीर और निकाह के ख़ुत्बों में भी किया जाता है। फ़िरदौसे आला को आप की मंज़िल क़रार दिया, आप के दुशमन और बदगो से बद गोई आप को नुक़सान नहीं पहुंचा सकती बल्कि नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में बद गोई के बाइस आस बिन वाएल का ठिकाना जहन्नम क़रार पाया जहां वह तरह तरह के अज़ाबों रूसवाइयों में मुब्तला रहेगा इस सज़ा का मौजिब मज़कूरा क़ौल और रसूल का इन्कार था इसी तरह रसूल से मोहब्बत रखने वाले हर मोमिन को जन्नत और दुशमनी रखने वाले मुनाफ़िक़ और काफ़िर को दोज़ख़ का अज़ाब दिया जाएगा।

आयत फ़सल्ले ले रब्बेका वनहर में अव्वलन तो अल्लाह तआला ने अपने नबीए मोहतरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और आप की उम्मत को नमाज़ का हुक्म दिया इसके बाद दूसरी चीज़ों को यानी दुआ और कुरबानी का अम्र फ़रमाया।

ज़िक्रे इलाही

ज़िक्र व शुक्र

ज़िक्र के सिलसिले में अल्लाह तआला का इरशाद है: ऐ ईमान वालों! तुम कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया करो और तुम मेरी याद करो मैं तुम को याद रखूंगा और तुम मेरा शुक्र बजा लाओ नाशुक्री न करो। इस आयत की तशरीह व तफ़सीर में उलमा का इख़्तिलाफ़ है, हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि इसका मतलब यह है कि मेरी इताअ़त के साथ मेरा ज़िक्र करो (यानी इबादत के शक्ल में) मैं अपनी मदद से तुम को याद करूंगा। एक आयत में आया है: जो लोग हमारे रास्ता की तलाश करते हैं हम उन्हें अपनी राह दिखाते हैं। हज़रत सईद बिन जबीर कहते हैं की मज़कूरा बाला आयत का माना हैं मेरी इताअ़त की सूरत में मेरी याद करो मैं मग़फ़िरत में तुम को फ़रामोश नहीं करूंगा। अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो ताकि तुम सज़ावारे रहमत बनो।

हज़रत फुज़ैल की तशरीह

हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ ने फ़रमाया कि इस फ़रमाने इलाही का मतलब यह है कि मेरी इताअ़त के साथ मेरा ज़िक्र करो मैं अपने सवाब से तुम्हें फ़रामोश नहीं करूंगा। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए हम उनका अज्र ज़ाया नहीं करते, नेक काम करने वालों के लिए अदन की बहिश्त है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जिसने अल्लाह कि इताअ़त की तो हक़ीक़त में उसने अल्लाह की याद की ख़्वाह उसकी नमाज़ें, उसके रोज़े और कुरआन की तिलावत कम हो और जिसने अल्लाह की नाफ़रमानी की वह अल्लाह को भूल गया ख़्वाह उसकी नमाज़ें रोज़े और कुरआन की तिलावत ज़्यादा हो। हज़रत अमिरूल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ फ़रमाते हैं इबादत के लिए तौहीद काफ़ी है और सवाब के लिए जन्नत काफ़ी है।

इब्ने कैसान की तशरीह

इब्ने कैसान कहते हैं कि इसके मानी हैं मेरी याद करो यानी शुक्र करो मैं तुम्हें याद रखूंगा यानी ज़्यादा अज्र दूंगा। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम को ज़्यादा अता करूंगा। बाज़ उलमा ने कहा है कि (इसके मानी हैं) मेरी याद करो यानी मुझे वाहिद जानो और मुझ पर ईमान लाओ मैं तुम्हारी याद करूंगा यानी बहिश्त में मरातिब अता करूंगा। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: उन लोगों को बशारत है जो ईमान लाए और नेक काम किए उनके लिए जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं)

बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि इसके मानी हैं: तुम ज़मीन के ऊपर होने की हालत में मेरा ज़िक्र करो जब तुम ज़मीन के अन्दर होगे और ऊपर वाले तुमको भूल जायेंगे तो उस वक़्त मैं तुम को याद रखूंगा जैसा की असमई ने कहा है कि मैंने अरफ़ा के दिन एक आराबी को मैदाने अरफ़ात में देखा कि वह खड़ा कह रहा था, इलाही! तरह तरह की ज़बानों में तेरी तरफ़ आवाजें बलन्द हो रही हैं (लोग अपनी अपनी ज़बान में तुझे पुकार रहें हैं) लोग तुझसे हाजतें मांग रहे हैं, मेरी मुराद सिर्फ़ यह है कि तू मुझे मुसीबत के वक़्त में याद रखना जबकि मेरे घर के लोग मुझे फ़रामोश कर देंगे।

इस आयत के मानी और तफ़सीर में यह भी कहा गया है कि तुम मुझे दुनिया में याद रखो मैं आख़िरत में तुम्हें याद रखूंगा। एक क़ौल इस सिलसिला में यह भी है कि इसके मानी हैं: तुम बन्दगी के साथ मुझे याद करो मैं हर दुख से बचाने में तुम्हें नहीं भूलूंगा। इस क़ौल की ताईद उस इरशादे रब्बानी से होती है जिस मर्द या औरत ने ईमानदार रहकर नेक आमाल किये तो हम ज़रूर (आख़िरत में) पाकीज़ा ज़िन्दगी देंगे। यह क़ौल भी (उसकी तफ़सीर व तशरीह में) आया है कि तुम मुझे ख़ला व मला (जलवत व ख़लवत) में याद करो मैं तुम्हें ख़ला व मला में याद करूंगा। इस सिलसिला में एक रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने बाज़ किताबों (सहीफ़ों) में फ़रमाया है कि मैं अपने बन्दा के गुमान के क़रीब हूं मेरे बारे में वह जैसा चाहे गुमान करे जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूं जो मुझे अपने दिल में याद करता है मैं उसे बातिन में याद करता हूं और जो मुझे ज़ाहिर में याद करता है मैं उसे ज़ाहिर में याद करता हूं जो मेरी तरफ़ एक बालिश्त बढ़ता है मैं उसकी तरफ़ एक हाथ बढ़ता हूं जो मेरी तरफ़ चल कर आते हैं मैं उनकी तरफ़ दौड़ कर आता हूं जो मेरे पास इतने गुनाह लेकर आते हैं कि सारी ज़मीन उनसे भर जाए तो मैं उतनी ही मग़फ़िरत उसको अता फ़रमाता हूं मगर शर्त यह है कि उसने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो (शिर्क का गुनाह उससे सरज़द न हुआ हो)

बाज़ उलमा ने कहा है की इसका मतलब यह है कि तुम मुझे ऐश व इशरत में याद करोगे तो मैं तुमको शिद्दत और मुसीबत में याद करूंगा जैसा की हक़ तआला का इरशाद है:

अगर वह (यूनुस अलैहिस्सलाम) अल्लाह की तस्बीह करने वालों में से न होते तो क़यामत के दिन तक मछली के पेट में रहते।

हज़रत सलमान फ़ारसी का इरशादे गरामी

हज़रत सलमान फ़ारसी का इरशाद है कि बन्दा जब खुशी में अल्लाह को पुकारता है (अल्लाह को ऐश में याद रखता है) फिर उसपर मुसीबत पड़ती है तो उस वक़्त फ़रिश्ते बारगाहे इलाही में अर्ज़ करते हैं परवरदिगार! तेरे बन्दे पर मुसीबत आ पड़ी हैं, (उसको दूर फ़रमा दे) इस तरह जब फ़रिश्ते उसकी सिफ़ारिश करते हैं तो अल्लाह तबारक व तआला उनकी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा लेता है और बन्दा अगर ऐश व इशरत में अल्लाह को नहीं पुकारता (उसकी याद नहीं करता) और दुख के वक़्त पुकारता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि अब अल्लाह को पुकारता है और फ़रिश्ते उसकी शफ़ाअत व सिफ़ारिश नहीं करते, इसकी तौज़ीह फ़िरऔन के क़िस्सा से होती है कि जब डूबते वक़्त फ़िरऔन ईमान लाया तो अल्लाह का इरशाद हुआ: अब तौबा करता है हालांकि पहले नाफ़रमानी करता रहा।) एक क़ौल यह भी है कि मुझे तुम तस्लीम व सुपुर्दगी के साथ याद करो तो बेहतरीन तरीक़ा पर मैं तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। इसकी ताईद इस इरशादे रब्बानी से होती है: जो अल्लाह पर तवक्कुल और भरोसा करता है अल्लाह उसके लिए काफ़ी है। इसी सिलसिला में एक क़ौल यह भी है कि तुम शौक़ व मुहब्बत से मेरी याद करो मैं विस्ल व क़ुरबत के साथ तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। बाज़ ने कहा है कि हम्द व सना के साथ मेरा ज़िक्र करो मैं आत व जज़ा के साथ तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। एक क़ौल है कि मेरा ज़िक्र तौबा के साथ करो मैं तुम्हारा ज़िक्र मासियत की बख़्शिश (गुनाहों की माफ़ी) के साथ करूंगा, तुम मुझ को दुआ में याद करो मैं तुमको अता से याद करूंगा, तुम सवाल के साथ मुझे याद करो मैं बख़्शिश व नेवाल के साथ तुम्हें याद करूंगा, तुम बग़ैर ग़फ़लत के मुझे याद करोगे मैं बग़ैर ताख़ीर के तुम्हें याद करूंगा, तुम गुनाहों पर पशेमानी के साथ मुझे याद करो मैं लुत्फ़ व करम के साथ तुम को याद करूंगा, तुम उज़्रे गुनाह के साथ मेरी याद करो, मैं मग़फ़िरत से तुम को फ़रामोश नहीं करूंगा, तुम ख़ुलूसे इरादा के साथ मेरी याद करो मैं तुम्हें फ़ायदा पहुंचाने से याद करूंगा (नफ़ा पहुंचाऊंगा) तुम निगाहों से बच कर मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र मुसीबतें दूर करके करूंगा, तुम बग़ैर फ़रामोशी के मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र अमन दे कर करूंगा, तुम इहतियाज से मेरी याद करो, मैं अपने इक़्तिदार से तुम्हारी याद करूंगा, तुम मअज़रत व इस्तिग़फ़ार के साथ मेरी याद करो मैं अपनी रहमत और मग़फ़िरत के साथ तुम्हारी याद करूंगा, तुम ईमान के साथ मेरी याद करो मैं जन्नत देकर तुमको याद करूंगा, तुम इस्लाम के साथ मुझे याद करो मैं इज़्ज़त बख़्श कर तुम्हें याद करूंगा, तुम दिल से मेरी याद करो मैं हिजाब उठा कर तुम को याद करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र आजज़ी के साथ करो, मैं तुम्हारा ज़िक्र फ़ज़्ल फ़रमाकर करूंगा, तुम एतराफ़े गुनाह के साथ मेरा ज़िक्र करो, मैं तुम्हारा ज़िक्र तुम्हारे गुनाहों को मिटा कर करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र सफ़ाए बातिन के साथ करो मैं तुम्हारा ज़िक्र ख़ालिस नेकी के साथ करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र सिदक़ के साथ करो मैं तुम्हारा ज़िक्र मेहरबानी व उलफ़त के साथ करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र

ताज़ीम से करो मैं तुम्हारा ज़िक्र तकरीम से करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र अल्लाहु अकबर (मेरी अज़मत व जलाल) के साथ करो मैं तुम्हारा ज़िक्र दोज़ख़ से नजात के साथ करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र जुल्म को तर्क करके करो मैं तुम्हारा ज़िक्र वफ़ा की निगहदाश्त के साथ करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र तर्के ख़ता से करो मैं तुम्हारा ज़िक्र तरह तरह के लुत्फ़ व अता से करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र इबादत में मशक्कत उठा कर करो मैं तुम पर नेमत तमाम करके तुम्हारा ज़िक्र करूंगा, तुम मेरा ज़िक्र जैसे तुम हो उस तरह करो मैं तुम्हारा ज़िक्र जैसा कि मैं हूं उस तरह करूंगा, बेश्क व शुबहा अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र बहुत बड़ा है।

हज़रत रबीअ़ फ़रमाते हैं कि इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने उस बन्दे को याद फ़रमाया है कि जो बन्दा शुक्र बजा लाता है और उस पर मज़ीद इकराम फ़रमाता है और जो नाशुक्री करता है उसपर अज़ाब करता है। सिद्दी ने इस आयत के सिलसिला में कहा है जो बन्दा अल्लाह का ज़िक्र करता है अल्लाह उसका ज़िक्र फ़रमाता है जो मोमिन अल्लाह का ज़िक्र करता है अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत के साथ उसका ज़िक्र करता है, काफ़िर अल्लाह को याद नहीं करता अल्लाह उसको अज़ाब के साथ याद करता है।

हज़रत सुफ़ियान बिन ओऐनिया ने कहा है कि हम तक यह हदीस पहुंची है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मैंने अपने बन्दों को वह कुछ दे दिया कि अगर मैं जिब्रील और मिकाईल को दे देता तो मैंने उनको बहुत कुछ दिया होता मैंने अपने बन्दे से कह दिया फ़ज़करूनी अज़कुरूकुम और मैंने मुसा (अलैहिस्सलाम) से कह दिया था कि ज़ालिमों से कह दो कि मेरी याद न करें क्योंकि जो मुझे याद करता है मैं उसे याद करता हूं और मेरा ज़ालिमों को याद करना इस तरह है कि मैं उन पर लानत करता हूं।

हज़रत अबू उसमान हिन्दी ने कहा है कि मुझे मालूम है कि मेरा रब मुझे किस वक़्त याद करता है लोगों ने कहा कि यह किस तरह? आपने कहा अल्लाह ने फ़रमाया है फ़ज़कुरूनी अज़कुरूकुम पस जिस वक़्त मैं अल्लाह को याद करता हूं उसी वक़्त वह मेरी याद करता है कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) पर वही नाज़िल फ़रमाई कि दाऊद तुम मुझ से ही खुशी हासिल करो और मेरी ही याद से राहत पाओ। हज़रत सुफ़ियान सूरी ने फ़रमाया हर चीज़ के लिए एक अज़ाब (मौजूद) है, आरिफ़ का अज़ाब है अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से दूर हो जाना। यह भी कहा गया है कि जब दिल में यादे इलाही मुतमक्किन हो जाती है और शैतान उसके क़रीब आता है तो बेहोश हो जाता है जिस तरह इंसान के क़रीब जिन्न आता है तो इंसान बेहोश हो जाता है, उस वक़्त दूसरे शैतान पूछते हैं इसको क्या हो गया? जवाब मिलता है इसको इंसान का साया हो गया है यानी इंसान के छूने से यह बेहोश हो गया है।

हज़रत सुहैल बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि कोई मासियत अल्लाह तआ़ला को भुला देने से भी ज़ाएद क़बीह है। बाज़ उलमा ने कहा है कि ज़िक्रे ख़फ़ी को फ़रिश्ते उठा कर नहीं ले जाते इसलिए कि ज़िक्रे ख़फ़ी बन्दे और अल्लाह के दर्मियान मख़फ़ी रहता है उसकी ख़बर फ़रिश्तों को नहीं होती एक शख़्स ने कहा कि मुझ से एक ऐसे ज़ाकिर की तारीफ़ की गई जो एक जंगल में रहता था मैं उसके पास गया हम बैठे ही हुए थे कि एक बड़ा दरिन्दा आया और ज़ाकिर के पन्जा मारा और उसका गोश्त नोच कर ले गया ज़ाकिर इस सदमा से बे होश हो गया, मुझ पर भी (हैबत से) बेहोशी तारी हो गई, जब मुझे होश आया तो मैंने दरयाफ़्त

किया कि यह क्या क़िस्सा था, ज़ाकिर ने जवाब दिया अल्लाह ने मुझ पर उस दरिन्दे को मुसल्लत फ़रमा दिया है जब अल्लाह की याद में मुझ से सुस्ती होती है तो यह आकर मुझे इसी तरह काटता है जैसा तुम ने अभी देखा।

दुआ

दुआ का हुक्म

अल्लाह तआला का इरशाद है तुम्हारे रब ने हुक्म दिया है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ को क़बूल करूंगा, दूसरी जगह इरशाद होता है: जब तू फ़ारिग़ हो तो खड़ा हो जा यानी नमाज़ से फ़रागत हो तो दुआ के लिए खड़े हो जाओ, एक और जगह इरशाद फ़रमाया: मेरे बन्दे जब मेरे बारे में दरयाफ़्त करें (कि हमारा रब कहां हैं) तो यक़ीनन मैं क़रीब हूं, दुआ करने वाला जब मुझ से दुआ करता है तो मैं उसकी दुआ क़बूल करता हूं, मुफ़स्सेरीने किराम का इस आयते करीमा के नुज़ूल के बारे में इख़्तिलाफ़ है चुनांचे कलबी ने बरिवायत अबू सालेह हज़रत इब्ने अब्बास का क़ौल नक़्ल किया है, उन्होंने फ़रमाया कि मदीना मुनव्वरा के एक यहूदी ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि जब आप कहते हैं कि एक आसमान से दूसरे आसमान तक पांच सौ बरस का रास्ता है और हर आसमान का हजम (मोटाई) भी उतना ही है तो फिर हमारा रब हमारी दुआ कैसे सुनता है तो उस वक़्त यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

हसन बसरी फ़रमाते हैं कि सहाबा कराम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया था कि हमारा रब किस जगह है? इस सवाल पर यह आयत नाज़िल हुई। क़तादा ने कहा कि जब यह आयत उदऊनी अस्तजिब लकुम नाज़िल हुई तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! हम अपने रब को किस तरह पुकारें और किस जगह से पूकारें? तो अल्लाह तआला ने इस सवाल पर यह आयत नाज़िल फ़रमाई वइज़ा असालोका इबादी अनय्या फ़एनी क़रीबं। ज़हाक ने बयान किया है कि बाज़ सहाबा कराम ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या हमारा रब क़रीब है कि हम चुपके चुपके उससे कलाम करें या ज़ोर से उसको पुकारें तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने (इस सवाल के जवाब में) यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

मुफ़स्सरीन का क़ौल

अहले मानी व मुहक्क़क़ीन ने कहा है कि इस आयत में कुल लहुम या फ़आ लेमहुम (जुज़अन शर्त) महज़ूफ़ है तरतीबे कलाम इस तरह थी: जब मेरे बन्दे आप से मेरे मुताल्लिक़ दरयाफ़्त करें तो उनसे कह दीजिए या उनको मुत्तला कर दीजिए कि मैं क़रीब हूं। अरबाबे मारफ़त का क़ौल हैं कि बन्दा और ख़ुदा के दर्मियान से वास्ता को उठा देना कुदरत के इज़हार के लिए है बमानी इस्तिजाबत व अजाबत है यानी मुझसे इस्तिजाबत करे, लुग़त में अजाबत के मानी हैं ताअ़त व बन्दगी और सवाल पूरा करना। अबु रजा ख़ुरसानी ने कहा है कि इसके मानी हैं मुझसे दुआ करें अजाबत बमानी अता है और इस मानी की ताईद अरबी के उस मक़ूला से

होती है: आसमान से पानी मांगा गया तो उसने बारिश दी और ज़मीन से सब्ज़ा तलब किया गया तो उसने सब्ज़ा दिया पस अल्लाह तआला की तरफ़ से अजाबत बमानी अता है और बन्दा की तरफ से अजाबत बमानी ताअत व बन्दगी है ताकि वह हिदायत पाये।

दुआ की अदमे कबूलियत

अब अगर सवाल किया जाये कि जब आयत ओजीबो दअवतिद्दाए और आयत उदऊनी असतजिब लकुम में दुआ की कबूलियत और उसका वादा मौजूद है तो फिर क्या वजह है कि बहुत से लोगों की दुआयें मक़बूल नहीं होतीं, उनके जवाब में दोनों आयतों की तफ़सीर व तौज़ीह मुख़तलिफ़ मानी के साथ की गई है, बाज़ ने कहा है कि दुआ से मुराद ताअत और अजाबत से मुराद सवाब है, गोया अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब बन्दा मेरी ताअत करेगा तो मैं उसको दूंगा बाज़ उलमा और मुफ़स्सरीन ने कहा है कि दोनों आयतों के अलफ़ाज़ अगर्चे आम हैं लेकिन उनके मानी ख़ास हैं असल कलाम यूं था: मैं दुआ करने वाले की दुआ कबूल करता हूं अव्वलन अगर मेरी मशीयत हो, दूसरी सूरत यह कि जब वह दुआ तकदीर (बन्दा) के मवाफ़िक हो, तीसरे जब वह नामुमकिन का सवाल न करे, चौथे जब दुआ का कबूल करना उसके हक़ में बेहतर हो, यह तमाम शराइत महज़ूफ़ हैं और उनकी ताईद इस कौल से होती है जो अली बिन अबी मुतवक्किल ने बरिवायत हज़रत अबू सईद से नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब मुसलमान अल्लाह तआला से दुआ करता है और उसमें रिश्तादारी से कतअ ताल्लुक या फिर कोई गुनाह का सवाल नहीं होता तो अल्लाह तआला उसको ज़रूर तीन चीज़ों में एक चीज़ अता फ़रमा देता है या तो उसका मद्दुआ फ़ौरन दुनिया में पूरा कर देता है या आख़िरत में जमा कर देता है या किसी आने वाली बुराई से उसको बचा लेता है यह सुनकर सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ऐसी सूरत में तो हम और ज़्यादा दुआ किया करेंगे, हुज़ूर ने फ़रमाया अल्लाहो अकबर! उसकी अता बहुत ज्यादा है।

एक इल्मी नुकता

बाज़ उलमा ने कहा है कि आयत अलफ़ाज़ के एतबार से जिस तरह आम है उसी तरह मानी के एतबार से भी आम है। आयत में सिर्फ़ दुआ की अजाबत मज़कूर है, मुराद का देना और हाजत का पूरा करना मज़कूर नहीं जिस तरह एक आका अपने गुलाम की और एक बाप अपने बेटे की किसी बात पर हां कह देता है लेकिन उसकी दरख़्वास्त पूरी नहीं की जाती पस दुआ की अजाबत ज़रूर होती है असल यह है कि उजीब और असतजियब ख़बरिया जुमले हैं और ख़बर कभी मनसूख़ नहीं होती वरना ख़बर देने वाले का काज़िब होना लाज़िम आयेगा और अल्लाह तआला की ज़ात किज़्ब से मुनज़्ज़ा और पाक है अल्लाह तआला की दी हुई ख़बर कभी ख़िलाफ़े वाक़िया नहीं हो सकती।

इस तौज़ीह व तफ़सीर की ताईद उस हदीस शरीफ़ से होती है जिस को नाफ़ेअ ने बरिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसके लिए दुआ का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है उसके लिए अजाबत के बहुत से दरवाज़े खोल दिये जाते हैं हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर अल्लाह ने वही

नाज़िल फ़रमाई थी कि ज़ालिमों से कह दो कि मुझ से दुआ न करें क्योंकि अजाबत को मैंने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है और मैं ज़ालिमों की दुआओं की अजाबत इस तरह करता हूं कि उनपर लानत भेजता हूं इसकी यह तावील भी की गई कि मोमिन की दुआ अल्लाह उसी वक़्त क़बूल कर लेता है मगर अताए मुराद में ताख़ीर इसलिए फ़रमाता है कि बन्दा उसको पुकारता रहे और अल्लाह तआला उसकी आवाज़ सुनता रहे, इस मज़मून की मोवय्यद वह हदीस है जो मोहम्मद बिन मुनकदर ने बरिवायत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा अल्लाह को पुकारता है और अल्लाह उसको पसन्द फ़रमाता है तो कहता है जिब्रील मेरे इस बन्दे की हाजत पूरी कर दो मगर देर से पूरी करना मैं इसकी पैहम आवाज़ सुनना पसन्द करता हूं और अगर बन्दा अल्लाह से दुआ मांगता है और अल्लाह उसको पसन्द नहीं फ़रमाता तो फ़रमाता है जिब्रील मेरे इस बन्दे की हाजत उसके इख़्लास की वजह से पूरी कर दो और जल्द पूरी कर दो मुझे इसकी आवाज़ पसन्द नहीं। कहते हैं कि यहया बिन सईद ने कहा कि मैं रब्बुल इज़्ज़त के दीदार से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुआ तो मैंने अर्ज़ किया इलाही [illegible] तुझ से कितनी दुआ [illegible] लेकिन तू क़बूल नहीं फ़रमाता फ़रमाया कि यहया हमको तेरी आवाज़ [illegible]सन्द है।

बाज़ लोगों ने कहा है कि दुआ के कुछ आदाब [illegible]र शराइत [illegible] पर कामियाबी और अजाबत का मदार है जो शख़्स दुआ में उनको मलहूज़ [illegible] है और उन शराइत की तकमील करता है वह मकबूलुद्दुआ होता है और जो उनको तर्क [illegible] है या उन [illegible] कुछ नक़्स पैदा कर देता है वह दुआ के रास्ता से हट जाता है। मनक़ूल है कि हज़रत इब्राहीम बिन अदहम से किसी ने सवाल किया कि क्या [illegible]ह है कि [illegible] अल्लाह से दुआ क[illegible] हैं मगर वह उनको क़बूल नहीं फ़रमाता उन्होंने जवाब दिया कि तुम रसूलुल्लाह [illegible] अलैहि वसल्लम को पहचानते हो मगर आप के तरीक़े पर नहीं [illegible]लते हो [illegible]आन को [illegible] हो [illegible] उस पर अमल नहीं करते, अल्लाह की दी हुई नेमतें खाते हो मगर उसका शुक्र अदा नहीं [illegible], जन्नत से वाक़िफ़ हो मगर उसको तलब नहीं करते [illegible]ज़ख़ का इक़रार करते हो मगर उससे ख़ौफ़ नहीं खाते, शैतान को पहचानते हो मगर उससे मुका[illegible] नहीं करते बल्कि उसके बर अक्स उसकी मुवाफ़क़त करते हो, मौत से आगाह हो मग[illegible] तैयारी नहीं करते, मुर्दों को दफ़न करते हो मगर उनसे इबरत हासिल नहीं करते, तुमने अपने ऐबों को छोड़ दिया है और लोगों के ऐबों (के बयान करने) में लगे हो फिर तुम्हारी दुआयें किस तरह मक़बूल हों।

कुरबानी

नहर

कुरबानी की असल वह हुक्म है जो अल्लाह तआला ने अपने ख़लील इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दिया था जिस की तफ़सील यह है कि नमरूद ज़ालिम की आग से जब अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह को बचा लिया और उसके कुर्ब व अज़ाब से आप को महफ़ूज़ रखा तो उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा मैं हिजरत करके अपने रब की तरफ़

मुकद्दस सर ज़मीन में जाऊंगा, वह मुझे अपने दीन की हिदायत फ़रमायेगा, दुनिया में दीने इलाही के लिए सबसे पहली हिजरत करने वाले हज़रत इब्राहीम ही थे चुनांचे आप अपने मामूं जाद भाई (हज़रत) लूत और लूत की बहन यानी अपनी बीवी सारह को लेकर वतन से चल दिये अरज़ मुकद्दस में पहुंचे तो अल्लाह तआला से दुआ की और अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार मुझे एक सालेह बेटा अता फ़रमा, अल्लाह तआला ने उनकी दुआ कबूल फ़रमाई और एक ज़ी फ़हम बेटे की बशारत दी। यह लड़का सारह का फ़रज़न्द इसहाक़ था। इस सिलसिला में आगे चलकर हज़रत मुरशदी व मौलाई जनाब मुसन्निफ़ ने खुद बताया है कि ज़बिहुल्लाह इस्हाक़ नहीं थे बल्कि इस्माईल थे, तमाम मुफ़स्सरीन का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि यह फ़रज़न्द इसमाईल थे इस्हाक़ नहीं थे)।

जब हज़रत इसहाक़ आप से आप पहाड़ पर चढ़ने के क़ाबिल हो गये तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक दिन उनसे कहा कि ऐ बेटे! मैंने ख़्वाब में देखा है कि मैं तुमको ज़िबह कर रहा हूं यानी मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हें अल्लाह की राह में ज़िबह कर दूं यह हुक्म उस नज़्र के सिलसिला में था जो आपने मानी [illegible] ऐ फ़रज़न्दे अज़ीज़! बताओ तुम्हारी इस सिलसिला में क्या राय है? फ़रज़न्द ने अर्ज़ किया कि ऐ अब्बा जान! आप को रब ने जो हुक्म दिया है उसको बजा लाइये और अपने रब की इताअत फ़रमाइये! गोया इसहाक़ समझ गये कि यह अल्लाह का हुक्म है इसी लिए उन्होंने यूं कहा कि [illegible] हुक्म किया गया है वैसा ही कीजिए. यह नहीं कहा कि जो ख़्वाब देखा है उसके मुताबिक़ कीजिए।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुतवातिर तीन रात यही ख़्वाब देखा था और ज़िबह (फ़रज़न्द) से पहले आप ने रोज़ा भी रखा था और नमाज़ भी पढ़ी थी। हज़रत इसहाक़ ने जब यह कहा कि आप को जो हुक्म दिया गया है उसको बजा लाइये तो उसके साथ यह भी कहा कि आप इन्शाअल्लाह ज़िबह होने पर मुझे साबिर पायेंगे जब उन दोनों हस्तियों ने अल्लाह के हुक्म को तसलीम कर लिया यानी हुक्मे इलाही की इताअत पर आमादा हो गये तो पेशानी के बल पर हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इसहाक़ को पछाड़ दिया और पेशानी के बाल पकड़ कर उनको ज़िबह करने लगे और अल्लाह तआला पर उन दोनों की सच्चाई अमलन ज़ाहिर हो गई तो अल्लाह तआला ने पुकार कर फ़रमाया ऐ इब्राहीम तुमने बेटे के ज़िबह करने के ख़्वाब को सच कर दिखाया अब तुम अपने बेटे को ज़िबह करने के बजाए मेंढा ज़िबह करो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: और हमने उसके बदले में इब्राहीम को कुरबानी का एक अज़ीम (बड़े रुतबा वाला) जानवर दे दिया उस मेंढे का नाम वज़ीर था यह जन्नत में चालीस साल तक चरने वाले मेंढों में से था बाज़ लोगों का क़ौल है कि यह वही मेंढा था जो हज़रत आदम के बेटे हाबील शहीद ने कुरबानी किया था यह मेंढा जन्नत में चरा करता था अल्लाह तआला का इरशाद है कि हम नेकोकारों को ऐसी ही जज़ा देते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म (ज़िबहे फ़रज़न्द) की इताअत की और नेक अमल बजा लाये उसके बदले में अल्लाह ने उनको बेहतरीन जज़ा दी। बाज़ उलमा व मोहक़्क़क़ीन का यह क़ौल भी है कि हज़रत इब्राहीम को अल्लाह तआला ने जिस फ़रज़न्द के ज़िबह करने का हुक्म दिया वह हज़रत इसहाक़ नहीं थे बल्कि हज़रत इस्माईल थे यही क़ौल क़वी है। इसके बाद इरशाद फ़रमाया: यह बिला शुबहा एक खुली हुई रहमत थी जो अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम के फ़रज़न्द से दरगुज़र फ़रमाई और उसके

फ़िदया में दुम्बा दे दिया। बाज़ असहाब ने कहा है कि ख़लीलुल्लाह ने जब अपने फ़रज़न्द के हल्क़ पर छुरी फेरनी चाही तो निदा आई इब्राहीम लड़के को छोड़ दो क्योंकि हमारी मुराद फ़रज़न्द को कुरबान करना न थी बल्कि मुराद यह थी कि फ़रज़न्द की मोहब्बत से दिल ख़ाली हो जाये। बाज़ किताबों में आया है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जब बेटे को ज़िबह करना चाहा तो दिल में कहा परवरदिगार अगर यह ज़बीहा दूसरे के हाथ से हो जाता तो बेहतर था अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह काम तुम्हारे ही हाथों होना है उस वक़्त फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया कि इलाहल आलमीन! इस इरशाद का मौजिब और सबब क्या है? हक़ तआला ने फ़रमाया ताकि मेरे सिवा किसी और की मोहब्बत ख़लील (इब्राहीम) के दिल में न रहे क्योंकि मैं मोहब्बत में किसी का शरीक होना पसन्द नहीं करता। हज़रत इब्राहीम ने बेटे से मोहब्बत की तो इस इम्तेहान में मुब्तला हुए, हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ने हज़रत यूसुफ़ से मोहब्बत की तो यूसुफ़ चालीस बरस उनसे ग़ायब रहे और हज़रत याकूब को युसुफ़ की जुदाई की तकलीफ़ बरदाश्त करना पड़ी। हमारे पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से मोहब्बत फ़रमाई जब यह मोहब्बत दिल में जागुज़ीं हुई तो जिब्रील ने आकर अर्ज़ किया कि इनमें से एक को ज़हर दिया जायेगा और दूसरे को शहीद किया जायेगा मतलब यह है कि महबूब के साथ कोई दूसरा मोहब्बत में शरीक न हो।

ईदगाह की आमद व रफ़्त

ईदगाह का रास्ता

मुस्तहब है कि जिस रास्ते से ईद की नमाज़ को जाये तो उसी रास्ता से वापस न आये यानी वापसी दूसरे रास्ते से हो। हज़रत इब्ने उमर का क़ौल है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईद के दिन (नमाज़ के लिए) एक रास्ता से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ता से वापस तशरीफ़ लाये, लोगों ने इसकी मुख़तलिफ़ तौजीह की है। अकसर उलमा का क़ौल है कि इस अमल से हुज़ूर का मक़सद मुसलमानों का मुशरिकों के लश्कर से तहफ़्फ़ुज़ मक़सूद था। बाज़ हज़रात ने कहा है कि इससे मक़सूद सिर्फ़ वापसी का रास्ता मुख़्तसर करना था (यानी वापसी का छोटा और कम था) यानी नेकियों की कसरत के हुसूल के लिए तो आप ने तवील रास्ता एख़तियार किया और आप छोटे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाये। बाज़ लोगों ने कहा है कि आप एक रास्ता से तशरीफ़ ले गये तो ज़मीन ने जाने की शहादत दी फिर दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाये ताकि वापसी वाले रास्ते की ज़मीन भी शाहिद बन जाये। बाज़ हजरात ने यह तौजीह की है कि आंहज़रत एक रास्ता से किसी एक क़बीला की तरफ़ तशरीफ़ ले गये और वापसी पर दूसरे क़बीला की तरफ़ हो कर आये ताकि तमाम क़बाएल की इज़्ज़त अफ़ज़ाई हो जाये इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दीदारे मुबारक एक रहमत थी। अल्लाह तआला का इरशाद है हमने आप को सारे जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है।

बाज मोहक़्क़क़ीन का क़ौल है कि चूंकि ज़मीन अंबिया और औलिया के क़दमों से पामाल होने पर फ़ख़्र करती है इस लिए हुज़ूर ने दोनों रास्तों को तय फ़रमाकर एक रास्ता को दूसरे रास्ता पर फ़ख़्र करने का मौक़ा नहीं छोड़ा (दोनों की फ़ज़ीलत व करामत यकसां अता फ़रमा

दी) यह भी कहा गया है कि हुजूर ईदगाह को एक रास्ते से गये इससे मक़सूद था अल्लाह की तरफ़ जाना फिर जब अपने अहल व अयाल, घर बार और मसकन की मामूली मिट्टी और पानी की तरफ़ वापसी का क़स्द फ़रमाया तो आप ने पसन्द नहीं फ़रमाया कि जिस राह से अल्लाह की तरफ़ गये थे उसी रास्ते से दूसरों की तरफ़ जायें इस बिना पर आप ने दूसरा रास्ता एख़्तियार फ़रमाया।

बाज़ हज़रात का ख़्याल है कि अगर हुजूर वाला वापसी के लिए दूसरा रास्ता एख़्तियार न फ़रमाते तो लोगों पर पहले रास्ता ही से वापस होना सुन्नते रसूलुल्लाह के मुताबिक़ लाज़िम हो जाता और फिर नमाज़ के बाद लोगों का अपने अपने घरों को जाना (मुख़्तलिफ़ रास्तों के बजाए एक ही रास्ते से) दुशवार हो जाता इस लिए हुजूर ने वापसी के वक़्त लोगों पर कुशादगी और फ़राख़ी पैदा कर दी कि जिस रास्ते से चाहें घरों को वापस जायें। यह भी कहा गया है कि रास्ते की तब्दीली का बाइस यह था कि हुजूर वाला को मुनाफ़िक़ो और काफ़िरों की चालबाज़ियों का अन्देशा था। बाज़ का ख़्याल है कि आंहज़रत और सहाबा कराम नमाज़ के बाद सदक़ा दिया करते थे, जुदा जुदा रास्ता एख़तियार करने का मक़सद यह था कि दोनों रास्तों के फुक़रा और गुरबा को सदक़ा पहुंच जाये। एक क़ौल यह भी है कि हुजूर वाला इज़्दहाम से बचने के लिए ऐसा किया करते थे।

कुरबानी और यौमुल अज़्हा की फ़ज़ीलत

कुरबानी के वक़्त की दुआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन किर्त़ रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह के नज़दीक कुरबानी का दिन (यौमे नहर) सब दिनों से ज़्यादा अज़्मत वाला है। रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाया कि कुरबानी के जानवर के पास खड़ी रहो इसलिए कि कुरबानी के जानवर की गरदन से जब ख़ून का पहला क़तरा गिरेगा तो उसके एवज़ तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ कर दिए जायेंगे और उस वक़्त यह पढ़ो: मेरी नमाज़, इबादत, ज़िन्दगी और मौत सब अल्लाह ही के लिए है जो सारी मख़लूक़ का पालने वाला है। हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ किया कि इलाही उम्मते मोहम्मदिया में से कुरबानी करने वालों को क्या सवाब मिलेगा अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उसका सवाब कुरबानी के जानवर के हर बाल के एवज़ दस नेकियां हैं (उसको दस नेकियां हर बाल के एवज़ मिलेंगी) और दस गुनाह मिटा दिये जायेंगे और उसके दस दर्जे बलंद किये जायेंगे। हज़रत दाऊद ने फ़रमाया कि जब वह कुरबानी के पेट को चाक करेगा तो उसका क्या सवाब होगा, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जब उस बन्दा की क़ब्र शक़ होगी तो अल्लाह तआला उसके भूक, प्यास और क़यामत के हौल से महफ़ूज़ कर के निकालेगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ दाऊद! कुरबानी के गोश्त के हर पारचा के एवज़ जन्नत के अन्दर उसके लिए बख़्ती ऊंट के बराबर एक परिन्दा मख़सूस होगा और हर टुकड़े के एवज़ उसको जन्नत के अन्दर एक अस्पे बहिश्ती होगा और कुरबानी के जिस्म के हर बाल के बदला उसके

जन्नत में एक महल मिलेगा और कुरबानी के सर के हर बाल के एवज़ उसको हूर मिलेगी। ऐ दाऊद क्या तुमको मालूम नहीं कि कुरबानियां ही क़यामत के दिन पुल सिरात से गुज़रने के लिए सवारियां होंगी यह कुरबानियां गुनाहों को मिटा देती हैं, बलाओं को दफ़ा करती हैं, तुम कुरबानियों का हुक्म दो यह मोमिन का फ़िदया हैं जैसे वह कुरबानी (दुम्बा इसहाक़ का फ़िदया था।

कुरबानी का जानवर अच्छा हो

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अच्छे जानवर कुरबानी करो क़यामत के दिन यह तुम्हारी सवारियां होंगे। एक रिवायत है कि हज़रत अली ने आयत जिस दिन परहेज़गार लोग रहमान वफ़्द बन कर उठाये जायेंगे, तिलावत फ़रमाई (और फ़रमाया वह गरोह जो अपनी क़ौम या हुकूमत की नुमाएंदगी करता है आला क़िस्म के ऊंटों पर सवार हो कर आता है) पुल सिरात से गुज़रने के लिए उनकी सवारियां (ऊंटनियां) यही कुरबानी के जानवर होंगे, फिर उनको ऐसी ऊंटनियां अल्लाह तआला मरहमत फ़रमायेगा कि ऐसी किसी मख़लूक़ ने नहीं देखी होंगी, उनके कुजावे सोने के और उनकी मुहारे ज़मुर्रद की होंगी यह ऊंटनियां उनको जन्नत तक ले जायेंगी, इतने क़रीब पहुंचा देगी कि वह जाकर जन्नत का दरवाज़ा खटखटायेंगे।

एक रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कुरबानियां बतीबे ख़ातिर किया करो क्योंकि जो शख़्स अपनी कुरबानी (कुरबानी के जानवर से मुराद है) को पकड़ कर उसका रूख़ क़िब्ला की तरफ़ करता है तो कुरबानी के बाल उनका ख़ून उसके लिए क़यामत के दिन के लिए महफ़ूज़ रखा जाता है। वजह यह है कि जो ख़ून मिट्टी पर गिरता है वह अल्लाह तआला की निगरानी व निगहदाश्त में रहता है, तुम थोड़ा ख़र्च करोगे तो जब भी तुम को अज्र ज़्यादा दिया जायेगा।

रिवायत है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सियाही माएल बड़े बड़े सींगो वाले दो दुंबे तलब फ़रमाये फिर एक को लिटाकर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, बिस्मिल्लाह वल्लाहु अकबर, इलाही यह मोहम्मद और अहले बैते मोहम्मद की तरफ़ से है फिर दूसरे को लिटा कर आप ने पढ़ा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, बिस्मिल्लाह वल्लाहु अकबर अल्लाहुम्मा हाज़ा अन मोहम्मदिवं व अन उम्मतेही इलाही यह (कुरबानी) मोहम्मद और उम्मते मोहम्मद की तरफ़ से है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने कुरबानी के दिन कुरबानी फ़रमाई। शैख़ हिबतुल्लाह ने बिल असनाद हज़रत आइशा सिद्दीक़ा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स कुरबानी के दिन अपनी कुरबानी के जानवर के नज़दीक उसको ज़िबह करने के इरादे से पहुंचता है तो अल्लाह तआला उसको जन्नत के नज़दीक कर देता है और जब वह उसको ज़िबह कर देता है तो उसके ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही अल्लाह तआला उसको बख़्श देता है और उस ज़बीहा को क़यामत के लिये उसके वासते (पुल सिरात ऊबूर के लिए) सवारी बना देता है ताकि उस पर सवार हो कर जाये। उसके हर बाल और ऊन के गिनती के मुताबिक़ यानी हर बाल के एवज़ उसको नेकियां दी जायेंगी। हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सियाही माएल रंग के सींगो वाले दो मेंढों की कुरबानी की और ज़िबह करते वक़्त उसकी गरदन पर अपना पाए मुबारक उसके मुंह के रूख़ पर रखा और

बिस्मिल्लाह पढ़ी। हज़रत अबू उबैदा फ़रमाते हैं कि अमलह वह मेंढा होता है जिसमे सियाही और सफ़ेदी की आमेज़िश हो मगर सियाही का ग़लबा हो।

हज़रत आइशा फ़रमाती है कि हुज़ूर के हुक्म से सीगों वाला एक मेंढा लाया गया जो सियाही में चलता सियाही में देखता और सियाही में बैठता था यानी उसके पांव, मुंह और उसके पहलू सियाह रंग के थे। आप ने उस मेंढे की कुरबानी की और उस को लिटा कर ज़िबह किया और फ़रमाया बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, इलाही! इस को मोहम्मद, आले मोहम्मद और उम्मते मोहम्मद की तरफ़ से क़बूल फ़रमा। अहले हदीस ने इस हदीस से तशरीह की है कि मेंढा गोश्त और चर्बी की ज़्यादती की वजह से अपने साया में चलता, अपने साया में देखता और अपने साया में बैठता था। अहले लुग़त ने इसके मानी बयान किये हैं कि वह है जो सियाह हाथ पांव, सियाह आंखों और सियाह पहलूओं वाला हो।

शबे ईदे कुरबान

की नमाज़ और कुरबानी के मसाइल

शबे ईद कुरबान की नमाज़ दो रकअत है हर रकअत में सूरह फ़ातिहा सूरह इख़लास और सूरह फ़लक़ पन्द्रह पन्द्रह मरतबा पढ़े दूसरी रकअत में सलाम फेरने के बाद तीन बार आयतल कुर्सी और पन्द्रह मरतबा इस्तिगफ़ार पढ़े इसके बाद दुनिया व आख़िरत की भलाई के लिए जो दुआ चाहे करे

कुरबानी के अहकाम

कुरबानी सुन्नत है, जो शख़्स कुरबानी कर सकता है उसके लिए इसका तर्क अच्छा नहीं है। इमाम अहमद (हम्बली), इमाम मालिक और इमाम शाफ़ई के नज़दीक कुरबानी सुन्नत है बाक़ी दूसरे (मुजतहिदीन) हज़रात के नज़दीक वाजिब है सुन्नत होने की दलील वह हदीस से है जो हज़रत इब्ने अब्बास से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे कुरबानी का हुक्म दिया गया है लेकिन तुम्हारे लिए वह सुन्नत है। एक और हदीस में आया है कि हुजूर ने फ़रमाया तीन चीज़ें मुझ पर फ़र्ज़ हैं मगर तुम्हारे लिए नफ़्ल हैं, कुरबानी, वित्र और फ़ज्र की दो रकअतें। हज़रत उम्मे सलमा की रिवायत में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब अशरए ज़िलहिज्ज आ जाये और तुम में से कोई कुरबानी करना चाहे तो अपने बाल और खाल को बिलकुल न छुए (यानी न बाल मूंडे और न कतरवाये न फ़स्द न पछने लगवाये) इस हदीस में कुरबानी को इरादा और ख़्वाहिश के मुताल्लिक़ किया है और जो हुक्म शरअन वाजिब होता है उसका ताल्लुक़ करने वाले के इरादे से नहीं होता कि जी चाहे करे जी चाहे न करे इससे साबित होता है। कि कुरबानी वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है।

कुरबानी का जानवर

कुरबानी के लिए सबसे अफ़ज़ल ऊंट है फिर गाय, उसके बाद बकरी, भेड़ जज़अ से कम

न हो और दूसरा जानवर मुसिन्ना से कम न हो। भेड़ छः माह की पूरी हो जाये तो जज़अ कहलाती है, बकरा (बकरी) एक साल का हो, गाय दो साल और ऊंट दो साल का, यह सब उस उम्र पर पहुंचकर मुसिन कहलाते हैं।

एक बकरी एक शख़्स के लिए और एक ऊंट या गाय सात आदमियों की तरफ़ से काफी है।

कुरबानी के जानवर का रंग और उसकी अफ़ज़लियत

कुरबानी का अफ़ज़ल जानवर सफ़ेद रंग का है, फिर सियाह रंग का। ख़ुद ज़िब्ह करना अफ़ज़ल है अगर ख़ुद अच्छी तरह ज़िबह न कर सकता हो तो ज़िबह के वक़्त मौजूद रहे। कुरबानी का तीसरा हिस्सा अपने लिए है और एक तीसरा हिस्सा अइज़्ज़ा व अहिब्बा के लिए और एक तीसरा हिस्सा ख़ैरात कर दे। ऐबदार जानवर कुरबानी के लिए न ले, यह ऐब पांच है 1–सिंग या कान का बेशतर हिस्सा कटा हुआ होना (बाज़ अक़वाल में आया है कि जिस जानवर का एक तिहाई कान या सींग न हो उसकी कुरबानी दुरूस्त नहीं) 2–मुंडा (यानी बग़ैर सींग का जानवर) 3–काना (जिसका काना होना नुमाया हो यानी एक आंख अंदर धसी हो) 4–इतना दुबला जिसकी हड्डियों मे मींग भी न रही हो 5–लंगड़ा ऐसा जिसका लंगड़ा पन ज़ाहिर और नुमाया हो यानी कमज़ोरी की वजह से जानवरों के साथ चरने न जा सके, चर न सकता हो या ऐसा बीमार जिसकी बीमारी नुमाया हो, ख़ारशी हो (क्योंकि ख़ारिश गोश्त को ख़राब कर देती है)।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुक़ाबला, मुदाबिरा, ख़रक़ा और शरक़ा की कुरबानी से भी मना फ़रमाया है। मुक़ाबला वह जानवर जिसके कान का अगला हिस्सा काट कर लटका कर छोड़ दिया [illegible] और मुदाबिरा वह जानवर जिसके कान को पिछला हिस्सा काट दिया हो, ख़रक़ा वह जानवर है जिसके कान में दाग़ लगाने से बाइस सुराख़ हो गया हो, शरक़ा उस जानवर को कहते हैं जिस को दाग़ लगाने से [illegible] कान फट गया हो यह मुमानियते तहरीमी नहीं है तन्ज़ीही है पस तन्ज़ीहा है कि ऐसे जानवर की कुरबानी से गुरेज़ करे अगर कुरबानी कर दे तो [illegible] है।

कुरबानी के दिन

कुबानी के तीन दिन [illegible] नमाज़ (ईद) के बाद से, ईद का पूरा दिन और उसके बाद वाले दो दिन अकसर फुक़हा का यही क़ौल है। इमाम शाफ़ई के नज़दीक चार दिन हैं ईद का दिन और उसके बाद तशरीक़ के तीन दिन, तीन दिन के बारे में हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत अबू हुरैरा के अक़वाल मौजूद हैं।

इमाम की नमाज़ से पहले कुरबानी का सवाब हासिल नहीं होता फ़क़त गोश्त खाने के लिए ज़बीहा हो जाता है (उस गोश्त का खाना जाएज़ है लेकिन वह कुरबानी नहीं है) मनसूर ने बिल असनाद रिवायत की है कि हज़रत बरअ बिन आज़िब ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम को ख़िताब किया और नहर के दिन नमाज़ के बाद फ़रमाया कि जिसने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी तरह कुरबानी की। उसने सही कुरबानी की और जिसने नमाज़ से पहले कुरबानी कर दी कि वह गोश्त की एक बकरी है (कुरबानी नहीं हुई।) हज़रत अबू बुरदा ने खड़े हो कर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह मैं तो नमाज़ को आने से पहले ही कुरबानी कर

चुका, मैं तो यह समझा था कि आज का दिन खाने पीने का है इस लिए मैंने कुरबानी जल्द कर ली। खुद भी खाया और अपने पड़ोसियों को भी खिलाया। हुज़ूर ने जवाब में इरशाद फ़रमाया यह गोश्त की बकरी हुई (कुरबानी नहीं हुई)। हज़रत अबू बुरदा ने अर्ज़ किया कि मेरे पास बकरी का जज़अ (शशमाहा) जो गोश्त की दो बकरियों से बेहतर है क्या वह (कुरबानी के लिए) काफ़ी हो जायेगा हुज़ूर ने फ़रमाया सिर्फ़ तेरे लिए, तेरे बाद किसी और के लिए न होगा (यानी यह शशमाहा बच्चा की कुरबानी सिर्फ़ तेरे लिए जायज़ है किसी और के लिए नहीं)।

असवद बिन क़ैस से मरवी है कि मैं नहर के दिन हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर था हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रे जिन्होंने नमाज़ से पहले ही जानवर ज़िबह कर लिए थे, हुज़ूर ने फ़रमाया कि जिसने नमाज़ से पहले जानवर ज़िबह किया उसे चाहिए कि वह दोबारा जानवर ज़बह करे और बाज़ हदीसों में इस तरह आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया जिसने नमाज़ से पहले जानवर ज़बह किया उसे चाहिये वह उसकी जगह दूसरी कुरबानी करे और जिसने ज़िबह नहीं किया है वह अब ज़िबह करे।

अय्यामे तशरीक़

अल्लाह तआला का इरशाद हैः गिने हुए या मुकर्रर दिनो में अल्लाह को याद करो। याद से मुराद है हर नमाज़ के बाद और हर पत्थरी मारते वक़्त तकबीर कहना। अव्वल अशरा से तशरीक़ के आख़िरी दिन तक तकबीर कहना मुस्तहब है।

तशरीक़ के मानी और मुख़्तलिफ़ तौज़ीहात

अय्यामे मादूदात अय्यामे तशरीक़ हैं यानी मिना के तीन दिन और अय्यामे मालूमात से मुराद ज़िलहिज्जा के दस दिन हैं। अकसर उलमा का यही क़ौल है। अल्लाह तआला का इरशाद है और जो दो दिन में जल्द लौट आए उस पर कोई गुनाह नहीं। हाजी अय्यामे तशरीक़ के दो दिन या पूरे तीन दिन के बाद हज से बाहर आ जाते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अय्यामे मादूदात में ज़िक्र का हुक्म दिया है। यह अय्याम, अय्यामे तशरीक़ हैं यानी नहर के बाद तीन दिन, उन दिनों को गिनती के दिन कहने की वजह यह है कि पूरी उम्र के दिनों के मुक़ाबला में यह दिन थोड़े हैं, जैसे रमज़ान के महीने के बारे में अल्लाह तआला ने "गिनती के दिन" फ़रमाया है इसी तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में इरशाद फ़रमायाः यूसुफ़ के भाईयों ने यूसुफ़ को थोड़ी क़ीमत व गिनती के दिरहमों में बेच डाला (यानी बहुत कम दिरहमों के एवज़)

बाज़ उलमा ने मादूदा कहने की वजह यह बताई है कि उन दिनों का शुमार अय्यामे हज में किया जाता है चुनांचे मुज़दलफ़ा में कियाम और मेना में कंकरीयां (रमी जमार) और दूसरे मनासिके हज उन्ही अय्याम में होते हैं।

जजाज़ का क़ौल

जजाज़ का क़ौल है कि मादूदात का इतलाक़ लुग़त में क़लील चीज़ पर होता है चूंकि यह भी तीन दिन हैं (यानी क़लील) इस लिए उनको अय्यामे मादूदात कहा गया यानी तशरीक़ के

तीन दिन और जिस ज़िक्र का उन अय्याम में हुक्म दिया गया है उससे मुराद तकबीर है। नाफ़े की रिवायत है कि है की हज़रत इब्ने उमर ने फ़रमाया अय्यामे मादूदात तीन दिन हैं एक दि नहर का और दो दिन उसके बाद के हैं। इब्राहिम नख़ई ने कहा कि अय्यामे मादूदात (ज़िल हिज्ज के) दस दिन हैं और अय्यामे मालूमात कुरबानी के दिन हैं इस आयत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ज़िक्र का हुक्म दिया है और इससे पहली आयत में फ़ज़कुरूल्लाहा क ज़िकरेकुम आबाकुम में भी ज़िक्र का हुक्म दिया गया है इस का क्या सबब है? इस की वजह जमीअ़ मुफ़स्सेरीन ने कराम ने यह बयान फ़रमाई है कि हज से फ़रागत के बाद अरब काबा के पास क़याम करते और अपने बाप दादा के फ़जाएल और खूबीयां बयान करके तफ़ाखुर करते, कोई कहता कि मेरा बाप मेहमान नवाज़ था खाना खिलाता था ऊंट ज़िबह करता था, क़ैदियों को फ़िदया देकर और दैत अदा करके आज़ाद कराता था, चुनीं करता और चुनां करता, ग़रज़ इस तरह बाहम एक दूसरे पर फ़ख्र करते पस इस तफ़ाखुर के बजाए अल्लाह तआला ने उनको अपनी याद का हुक्म दिया और फ़रमायाः फ़ज़कुरूल्लाहा क ज़िकरेकुम आबाकुम और फ़रमाया वज़कुरूल्लाहा फ़ी अय्यामीम मादूदातिन यानी मेरी याद करो मैंन ही तुम्हारे और तुम्हारे आबा व अजदाद के साथ एहसान किया।

सद्दी की रिवायत

सद्दी कहते हैं कि अहले अरब इबादत से फ़ारिग़ हो कर मिना में जाते उनमें से एक बारगाहे इलाही में दुआ करता ऐ अल्लाह मेरे बाप का प्याला बहुत बड़ा था उसकी दहलीज़ भी बहुत बड़ी थी वह बडा दौलतमंद था मुझे भी उसी तरह वाला माल फ़रमा दे गीया इस तरह वह अल्लाह का ज़िक्र नहीं बल्कि वह अपने बाप के फ़जाएल बयान करता था दुनिया की लज़्ज़त और नेमत ख़्वाहिश करता इस लिए यह आयत नाज़िल की

मुख़्तलिफ़ तौजीहात

हज़रत इब्ने अब्बास, अता, रबीअ़ और ज़हाक ने इस आयत के यह मानी बयान किये हैं कि तुम खुदा को इस तरह याद करो जिस तरह छोटे बच्चे अपने बापों को यांद करते हैं। सबसे पहले जब बच्चा बोलना और समझना शुरू करता है तो साफ़ नहीं बोलता फिर अब्बा अम्मा ठीक तरह से बोलने लगता है। उमर बिन मालिक की रिवायत हैं कि अबुल जौजा ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास से आयत फ़ज़कुरूल्लाहा क ज़िकरेकुम आबाकुम के सिलसिला में दरयाफ़्त किया कि कोई दिन ऐसा भी होता है कि कोई आदमी बाप को याद नहीं करता तो क्या खुदा को भी किसी रोज़ भूल जाना दुरूस्त है? उन्होंने कहा इसका यह मतलब नहीं है बल्कि मतलब यह है कि अगर अल्लाह की नाफ़रमानी की जाए तो देख कर तुम को उतना ही गुस्सा आए जितना गुस्सा तुम को उस वक़्त आता है जब तुम्हारे मां बाप को गाली दी जाए।

मोहम्मद बिन कअ़ब का क़ौल

मोहम्मद बिन कअ़ब क़रतवी ने कहा कि क ज़िकरकुम आबाकुम औ अशद्दा ज़िकरा में औ ब माना बल है जैसे औ यज़ीदूना के मानी हैं बल यज़ीदूना यानी अल्लाह की याद बाप दादा की याद की तरह बल्कि इससे भी ज़्यादा करो। मक़ातिल ने कहा अशद्दु ज़िकरा के मानी हैं

...रा जिकरा यानी शुमार में ज्यादा (अकसर व बेशतर) जैसे अशद्दु कसवतन (सख्ती में ज्यादा) अशद्दु खशयतन (खौफ में ज्यादा)।

जिक्र

जिक्र के मानी

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में चन्द चीजों को 'जिक्र' फरमाया है अव्वलन तौरेत को जिक्र कहा है फरमाया तौरेत वालों से पूछ लो।कुरआन को भी जिक्र कहा है फरमाया यह मुबारक यादाश्त है जो हम ने नाजिल फरमाई। लौहे महफूज को भी जिक्र से याद फरमाया हम ने लौहे महफूज के बाद जुबूर में लिख दिया। नसीहत को भी जिक्र से ताबीर फरमाया है जब वह उस नसीहत को भूल गए जो उनको की गई थी। रसूल को भी जिक्र कहा है इरशाद फरमाया बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हारी तरफ जिक्र को जो रसूल है भेजा। और खबर का नाम भी जिक्र रखा। चुनांचे फरमाया यह उन लोगों की खबर है जो मेरे साथ हैं और उन लोगों की खबर जो मुझ से पहले गए। शरफ व फजीलत को भी जिक्र कहा गया है फरमाया यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी कौम के लिए एक फजीलत व शरफ है। तौबा को भी जिक्र से ताबीर किया गया है, इरशाद है यह तौबा करने वालों के लिए ...स्त है। नमाज को भी जिक्र कहा गया है, इरशाद हुआ अल्लाह को इस तरह याद करो जिस तरह उसने बताया यानी इस तरह नमाज पढो जैसे उसने सिखाई है। अस्र की नमाज को भी जिक्र कहा है फरमाया अपने रब के जिक्र से यानी अस्र की नमाज से माल की मोहब्बत को मैंने ज्यादा प्रतीत रखा। जुमा को भी जिक्र कहा है, इरशाद फरमाया जुमा की नमाज की तरफ जाओ। इताअत और मगफिरत को भी जिक्र कहा है, फरमाया है तुम मेरी इताअत करो मैं तुम्हारी मगफिरत करूंगा। ... को भी जिक्र कहा गया है, फरमाया है जब तुम अपनी जानों पर जुल्म करो तो उस वक्त ... में अल्लाह का जिक्र करो (यानी दिल मे नदामत महसूस करो) और जबान से इस्तिग़फार करो। तकबीर को भी जिक्र कहा है तशरीक के दिनों मे अल्लाह का जिक्र करो यानी तकबीर कहो।

तशरीक़ की वजहे तसमिया

तशरीक़ के मानी

अय्यामे तशरीक की वजहे तसमिया मे उलमा का इख्तिलाफ है बाज का कहना है कि (दौरे जाहिलियत में) मुशरिक कहा करते थे ऐ कोहे सुबैर! रौशन हो जा ताकि हम चलें। बात यह थी कि सूरज के तुलूअ होने से कब्ल मुशरिकीन मुजदलफा से नहीं लौटते थे (जब कोहे सुबैर चमकने लगता तब रवाना होते) इस्लाम ने इस रस्म (जाहिलियत) को बातिल कर दिया। बाज उलमा का इरशाद है कि अय्यामे तशरीक के मानी है कुरबानी के गोश्त को पारचा पारचा करके खुश्क करने के दिन। अय्यामे जाहिलियत मे लोग कुरबानी के गोश्त को खुश्क कर ... रखते थे चुनांचे तशरीकुल लहम, गोश्त के पारचा करके धूप मे सुखाना और शराएकुल लहम ... सूखे पारचों को कहा जाता है।

बाज़ हज़रात का कहना है कि तशरीक़ के मानी हैं ईद की नमाज़। लफ़्ज़ तशरीक़ शुरूकुश शम्स से मुशतक़ है यानी सूरज का रौशन होना, चूंकि ईद की नमाज़ का वक़्त तुलूअे ख़ूरशीद के बाद ही शुरू होता है इसी एतबार से ईदगाह को मशरिक़ कहते हैं कि सूरज तुलूअ होने के बाद लोग वहां पहुंचते हैं इसी वजह से यौमे ईद को यौमे तशरीक़ कहा जाता है। फिर ईद के बाक़ी दो दिनों को अय्यामे तशरीक़ से मौसूम कर दिया गया।

हज़रत जुन्नून मिस्री ने तशरीह फ़रमाई

हज़रत जुन्नून मिस्री से दरयाफ़्त किया गया कि मौक़िफ़ का नाम मशअर क्यों रखा गया, उसको हरम क्यों नहीं कहा गया, फ़रमाया काबा अल्लाह का घर है और हरम उसका पर्दा है, मशअर उसका दरवाज़ा है, जब मेहमान यानी हाजी ख़ानए ख़ुदा का क़स्द करते हैं तो अल्लाह उनको पहले दरवाज़े पर ठहरा देता है ताकि वह दरगाहे इलाही पर आजिज़ी करे, फिर दूसरे पर्दे पर आता है जिसे मुज़दलफ़ा कहते हैं वहां हाजी खड़ा होता है आजिज़ी करता है जब उसकी आजिज़ी और ज़ारी क़बूल हो जाती है तो उसे कुरबानी का हुक्म दिया जाता है। कुरबानी करने से वह गुनाहों से पाक हो जाता है फिर तहारत करके ख़ानए काबा की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होता है। उनसे दरयाफ़्त किया गया कि अय्यामे तशरीक़ में रोज़ा रखना क्यों मकरूह है? जवाब में फ़रमाया कि इस लिए कि लोग (हाजी) अल्लाह के मेहमान हैं उसकी मुलाक़ात को आये हैं और मेज़बान के यहां मेहमान को रोज़ा रखना मुनासिब नहीं है। फिर दरयाफ़्त किया गया कि काबा के पर्दे पकड़ कर लटकने की क्या वजह है? उन्होंने फ़रमाया इसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक बन्दा अपने मालिक का गुनहगार है और उसका कोई सिफ़ारिशी है तो वह मुजरिम बन्दा अपने सिफ़ारिशी का दामन पकड़ लेता है और गिरया व ज़ारी करके माफ़ी की दरख़्वास्त करता है।

तकबीरें

तकबीराते अय्यामे तशरीक़ की तादाद

हज़रत नाफ़ेअ कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत उमर अय्यामे तशरीक़ में मेना के अन्दर के अन्दर नमाजों के बाद मजलिस में, बिस्तर पर, ख़ेमा में और रास्ता में हर जगह तकबीर पढ़ते थे इन दोनों हज़रात की तक़लीद में और लोग भी तकबीर पढ़ते और इस आयत का वज़्कुरूल्लाहा फ़ी अय्यामीम मादूदातिन का यही मतलब व मफ़हूम समझते थे। तकबीर के सुन्नत होने पर सब (अकाबिरीने उम्मत) का इत्तेफ़ाक़ है। इख़्तिलाफ़ है तो इसकी तादाद में है

हज़रत अली अरफ़ा के दिन की फ़ज्र से आख़िरी यौमे तशरीक़ की अस्र तक हर नमाज़ के बाद तकबीर कहते थे। हमारे इमाम अहमद बिन मोहम्मद बिन हंबल और क़ाज़ी अबू यूसुफ और मोहम्मद बिन हसन का यही मज़हब है। इमाम शाफ़ई का भी इस सिलसिला में यही क़ौल है और यह क़ौल सबसे ज़्यादा जामेअ और औला है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद अरफ़ा की फ़ज्र से यौमे नहर (10 ज़िल हिज्जा) की नमाज़े अस्र तक हर नमाज़ के बाद तकबीर पढ़ा करते थे। इमामे आज़म अबू हनीफ़ा नोमान का भी यही मज़हब है। हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत

ज़ैद बिन साबित यौमे नहर की जुहर से आख़िरी यौमे तशरीक़ की अस्र तक तकबीर पढ़ते थे। अता का क़ौल यही है, इमाम शाफ़ई का ज़ाहिरी तरीन क़ौल यह है कि नहर की जुहर से तकबीर का आग़ाज़ किया जाये और आख़िरी यौमे तशरीक़ की फ़ज्र पर उसको ख़त्म कर दिया जाये ताकि हाजियों की इक़्तेदा कामिल तौर पर हो जाये। इमाम मालिक का भी यही मज़हब है, शाफ़ई का एक क़ौल यह भी है कि शबे नहर की मग़रिब की नमाज से तकबीर की इब्तेदा की जाये और आख़िरी यौमे तशरीक़ की नमाज़े फ़ज्र पर उसको ख़त्म किया जाये।

तकबीर के अलफ़ाज़ और तादाद

हज़रत इब्ने मसऊद दो मरतबा तकबीर इस तरह कहते थे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लाल्लाह वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द। हमारे इमाम और इमाम अबू हनीफ़ा और अहले इराक़ का मसलक यही है। इमाम मालिक तकबीर इस तरह कहते थे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर यहां कुछ ठहर जाते फिर कहते अल्लाहु अकबर ला इलाहा इल्लल्लाह। हज़रत सईद बिन जुबैर और हसन बसरी तीन बार लगातार इस तरह तकबीर कहते थे अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर फिर आख़िर तक वही कहते जो हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद के क़ौल में ऊपर बयान किया जा चुका है। इमाम शाफ़ई और अहालियाने मदीना का यही मसलक है (यानी वह शुरू में दो बार के बजाए तीन बार अल्लाहु अकबर कहते हैं) हज़रत क़तादा तकबीर इस तरह कहते थे अल्लाहो कबीरन अला मा हदाना, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द। हज़रत सईद से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अय्यामे मेना खाने पीने और अल्लाह का ज़िक्र करने के दिन हैं। हज़रत जाफ़र बिन मोहम्मद ने कहा कि रसूलुल्लाह ने अय्यामे तशरीक़ में एक मुनादी को भेजा और निदा कराई कि यह दिन (अय्यामे तशरीक़) खाने पीने और औरतों (बीवियों) से क़ुरबत के दिन हैं।

मोहरिम की तकबीरात

आदमी अगर मोहरिम यानी एहराम की हालत में हो तो नहर की जुहर से आख़िरी यौम तशरीक़ तक तकबीर पढ़े। इमाम अहमद का भी यही क़ौल है। इमाम अहमद से सही तरीन क़ौल यह भी आया है कि अगर नमाज़ फ़र्ज़ जमाअत से पढ़ी है तो तकबीर न पढ़े बल्कि तन्हा नमाज़ पढ़े तो तकबीर कहे।

ईदुल फ़ित्र के दिन

ईदुल फ़ित्र की तकबीरात

यह मसाएल जो बयान किये गये हैं ईदुल अज़हा में तकबीर कहने से मुताल्लिक़ हैं, ईदुल फ़ित्र में भी इसी तरह तकबीर कहे बल्कि ईदुल फ़ित्र की रात में तकबीर कहने की ज़्यादा ताकीद आई है। अल्लाह तआला का इरशाद है: और चाहिए कि तुम माहे रमज़ान की गिनती पूरी कर लो उस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो जिसने तुमको हिदायत बख़्शी।

ईदुल फ़ित्र की तकबीरात का आगाज़ शबे फ़ित्र की मग़रिब से होता है और ईद के दिन जब इमाम दोनों ख़ुत्बों से फ़ारिग़ हो जाये उस वक़्त तक तकबीर का हुक्म रहता है फिर यह

हुक्म ख़त्म हो जाता है।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा ने फ़रमाया कि ईदुल फ़ित्र में तकबीर मसनून नहीं है। इमाम मालिक का क़ौल है कि ईदुल फ़ित्र के दिन में तकबीर पढ़े रात में न पढ़े और तकबीर पढ़ने का वक़्त ईदगाह पहुंचने तक है। इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया कि शबे ईद की मग़रिब से तकबीर शुरू और जब इमाम ईद के दोनों ख़ुत्बे ख़त्म कर दे तो तकबीर कहना भी ख़त्म कर दे। इमाम शाफ़ई ने यह भी फ़रमाया है कि तकबीर शबे ईद की मग़रिब से शुरू करके उस वक़्त ख़त्म कर दे जब इमाम ईदगाह में पहुंच जाये। एक क़ौल में इन्तहाई वक़्त नमाज़े ईद के आगाज़ को क़रार दिया गया है और दूसरे क़ौल में नमाज़े ईद से फ़ारिग़ होने का वक़्त तकबीर का आख़िरी वक़्त है।

बाब 16

यौमे आशूरा और यौमे जुमा के फ़ज़ाएल

यौमे आशूरा के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला का इरशाद है:

कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने महीनों की तादाद बारह बयान फ़रमाई है जिस दिन ज़मीन व आसमान पैदा किये गये, जिन में चार महीने हुरमत वाले हैं।

हुरमत के महीनों में से अल्लाह के नज़दीक मोहर्रम भी है (इस की तफ़सील पहले गुज़र चुकी है) और इसी माह में आशूरा का दिन भी है, जिसमें इबादत करने वाले के लिए अज़ीम सवाब मुक़र्रर किया गया। हम ने शैख़ अबू नसर [illegible] बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास का यह क़ौल नक़्ल किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने मोहर्रम के किसी दिन रोज़ा रखा उसको हर रोज़ा के एवज़ तीस दिन के रोज़ों का सवाब मिलेगा। मैमून बिन महरान ने हज़रत इब्ने अब्बास का यह क़ौल नक़्ल किया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस ने मोहर्रम की [illegible] तारीख़ यानी यौमे आशूरा का रोज़ा रखा उसको दस हज़ार फ़रिश्तों, दस हज़ार शहीदों और दस हज़ार हज और उमरा करने वालों का सवाब दिया जाएगा। जिसने आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरा अल्लाह तआला उसके सर के हर बाल के एवज़ जन्नत में उसका दर्जा बलन्द करेगा, जिस ने आशूरा की शाम को किसी मोमिन का रोज़ा खुलवाया [illegible] जिसने अपनी तरफ़ से तमाम उम्मते मुहम्मदिया का रोज़ा खुलवाया और सारी उम्मत का पेट भरा। सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह तआला ने आशूरा के दिन को तमाम दिनों पर फ़ज़ीलत दी है, हुज़ूर ने फ़रमाया हां, अल्लाह तआला आसमानों, ज़मींन, पहाड़ों, समुन्दरों को आशूरा के दिन पैदा फ़रमाया, लौह व क़लम [illegible] आशूरा के दिन पैदा कियां। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम आशूरा के दिन पैदा हुए, हज़रत आदम को जन्नत में आशूरा के दिन दाख़िल फ़रमाया, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम आशूरा के दिन पैदा हुए, उनके बेटे का फ़िदया कुरबानी आशूरा ही के दिन दिया गया, फ़िरऔन को आशूरा के दिन (नील में) ग़रक़ाब किया, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की तकलीफ़ आशूरा के दिन दूर फ़रमाई। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा आशूरा ही के दिन क़बूल फ़रमाई, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की लग़ज़िश आशूरा के दिन माफ़ फ़रमाई, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आशूरा के दिन पैदा हुए, क़यामत आशूरा के दिन ही बरपा होगी।

हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत

हज़रत इब्ने अब्बास ही से एक दूसरी रिवायत इस तरह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने आशूरा का रोज़ा रखा है उसके लिए साठ बरस की इबादत (सियाम व सलात) अल्लाह तआला लिख देता है। जिसने आशूरा का रोज़ा रखा उसको हज़ार शहीदों का सवाब दिया जाता है, जिसने आशूरा का रोज़ा रखा अल्लाह तआला उसके लिए सातों

आसमानों के फ़रिश्तों का सवाब लिख देता है, जिसने आशूरा के दिन किसी मुसलमान का रोज़ा खुलवाया गोया उसने तमाम उम्मते मुहम्मदिया का रोज़ा खुलवाया और सब के पेट भरवा दिए, जिसने आशूरा के दिन किसी यतीम के सर पर हाथ फेरा तो यतीम के सर के हर बाल के एवज़ जन्नत में उसका मरतबा बलन्द किया जाएगा।

हज़रत उमर ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने आशूरा के रोज़ा के साथ हमको बड़ी फ़ज़ीलत अता फ़रमाई। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि हां ऐसा ही है क्योंकि उसी दिन अल्लाह तआला ने अर्श व कुर्सी, सितारों और पहाड़ों को पैदा फ़रमाया, लौह व क़लम आशूरा के दिन पैदा किये, जिब्रील और दूसरे मलाइका को आशूरा के दिन पैदा किया, हज़रत आदम और हज़रत इब्राहीम अलैहिमस्सलाम को आशूरा के दिन पैदा फ़रमाया, अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम को आतिशे नमरूद को आशूरा के दिन नजात बख़्शी, उनके फ़रज़न्द का फ़िदया आशूरा के दिन दिया, फ़िरऔन को आशूरा के दिन ग़र्क़ किया, हज़रत इदरीस को आशूरा के दिन आसमान पर उठाया, हज़रत अय्यूब के दुख दर्द को आशूरा के दिन दूर किया, हज़रत ईसा को आशूरा के दिन उठाया, ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश भी आशूरा के दिन हुई, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा भी उसी दिन कबूल हुई, हज़रत दाऊद की [illegible]ज़िश उसी दिन बख़्शी गई, हज़रत सुलैमान को जिन्न व इन्स पर हुकूमत उसी दिन [illegible] हुई, [illegible]द बारी तआला आशूरा के दिन अर्श पर मुतमक्किन हुआ, क़यामत [illegible] के दिन हो[illegible], आसमान से सबसे पहली बारिश आशूरा के दिन हुई जिस दिन आसमान से [illegible] मरतबा [illegible]हमत नाज़िल हुई वह आशूरा का दिन था, जिसने आशूरा के दिन गुस्ल किया वह म[illegible]जुलमौत के सिवा किसी बीमारी में मुब्तला न होगा, जिसने आशूरा के [illegible] पत्थर का सुर्मा आंख में लगाया तमाम साल उसको आशोबे चश्म नहीं होगा, जिसने उस दिन किसी [illegible] की गोया उसने तमाम औलादे आदम की अयादत की, जिसने आशूरा के दिन किसी [illegible] घूंट पानी पिलाया उसने गोया एक लम्हा को अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं की।

आशूरा के दिन [illegible]कअ़त नमाज़

जिसने आशूरा के दिन [illegible]कअत नमाज़ इस तरह पढ़ी कि हर रकअ़त में एक दफ़ा सूरह फ़ातिहा और पचांस बार [illegible]ह इख़लास पढ़ी। अल्लाह तआला ने उसके पचास बरस गुज़िश्ता और पच्चास बरस आइन्दा गुनाह माफ़ फ़रमाए, मलाए आला में उसके लिए नूर के महल तामीर कराएगा। एक और हदीस में चार रकअ़तें दो सलामों के साथ मज़कूर हैं, हर रकअ़त में सूरह फ़ातिहा, सूरह ज़िलज़ाल, सूरह काफ़ेरून और सूरह इख़लास एक एक दफ़ा और नमाज़ से फ़रागत के बाद सत्तर बार दरूद शरीफ़ पढ़ना मज़कूर है,(यह रिवायत अबू हुरैरा से मरवी है)

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत यह भी आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बनी इस्राईल पर साल में एक दिन यानी आशूरा के दिन रोज़ा फ़र्ज़ किया गया था, तुम भी उस दिन रोज़ा रखो और अपने घर वालों के ख़र्च में उस रोज़ फ़राख़ी रवा रखो, जिसने उस रोज़ अपने घर वालों के ख़र्च में वुसअ़त पैदा की अल्लाह तआला उसको पूरे साल आसूदगी व कशाईश अता फ़रमाता है जिसने उस दिन रोज़ा रखा तो वह रोज़ा उसके चालीस

साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा। जो शख़्स शबे आशूरा में रात भर इबादत में मशग़ूल रहे और सुबह को वह रोज़ा से हो तो उसको इस तरह मौत आएगी कि उसको मरने का एहसास भी न होगा।

हज़रत अली की रिवायत

हज़रत अली से मरवी हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने आशूरा की शब इबादत की तो अल्लाह तआ़ला जब तक चाहेगा उसको ज़िन्दा रखेगा। हज़रत सुलैमान बिन उएनया ने बरिवायत जाफ़र कूफ़ी, इब्राहीम बिन मुहम्मद (जो अपने ज़माने में कूफ़ा के बहुत बड़े बुज़ुर्ग समझे जाते थे) से रिवायत की है कि मुझे इत्तेला मिली है कि आशूरा के दिन जो शख़्स अपने घर वालों के ख़र्च में फ़राख़ी व वुसअत पैदा करता है अल्लाह तआ़ला पूरे साल उसको फ़राख़ी व वुसअत अता फ़रमाता है, हमने पचास साल से (बराबर) इसका तजर्बा किया है और हमेशा रोज़ी की फ़राख़ी ही मयस्सर हुई। यही हदीस हज़रत अब्दुल्लाह से भी मनकूल है कि जिसने यौमुज़ ज़ीनत यानी आशूरा के दिन रोज़ा रखा उसने साल भर के अपने फ़ौत शुदा सदक़ा को पा लिया। यहया बिन कसीर का क़ौल है कि जिसने आशूरा के दिन मुश्क आमेज़ सुर्मा लगाया उसकी आंखों में साल भर तक आशोब नहीं होगा। अबू नसर ने अपनी वालिदा व वालिद की सनद से अबू ग़लीत अजमी से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे घर पर एक सर्द (ममूला) को देखा तो फ़रमाया कि सबसे पहले इस परिन्दे ने आशूरा का रोज़ा रखा।

जंगली जानवर भी रोज़ा रखते हैं

क़ैस बिन उबादा ने फ़रमाया कि जंगली जानवर भी आशूरा के दिन रोज़ा रखते हैं। हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि माहे रमज़ान के बाद रोज़ों का सबसे अफ़ज़ल महीना वह है जिसको मुहर्रम कहा जाता है और फ़र्ज़ नमाज़ और वस्त शब की नमाज़ के बाद सबसे अफ़ज़ल नमाज़ यौमे आशूरा की है। हज़रत अली से मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदा के महीने यानी मुहर्रम में अल्लाह तआ़ला ने कुछ लोगों की तौबा क़बूल फ़रमा ली और कुछ लोगों की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा।

हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने ज़िलहिज्जा के आख़िरी दिन और मुहर्रम के पहले दिन का रोज़ा रखा गोया उसने गुज़िश्ता साल को रोज़ों में ख़त्म किया (यानी साल भर के रोज़े रखे) और आईन्दा साल को भी रोज़ा से शुरू किया। अल्लाह तआ़ला ने उसके पचास बरस के गुनाहों का उस रोज़ा को कफ़्फ़ारा बना दिया। अरवा रिवायत करते हैं कि हज़रत आईशा ने फ़रमाया कि अहदे जाहिलियत में क़ुरैश आशूरा का रोज़ा रखते थे और मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उस दिन का रोज़ा रखते थे जब हिजरत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ फ़रमा हुए तो रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किये गए फिर जिसने चाहा आशूरा का रोज़ा रखा जिसने चाहा उसे तर्क कर दिया। हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तय्यबा में तशरीफ़ लाए तो यहूदियों को आशूरा का रोज़ा रखते हुए पाया जब इसकी

वहज दरयाफ़्त कि गई तो यहूदियों ने अर्ज़ किया कि आज के दिन अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और बनी इस्राईल को फ़िरऔन पर ग़लबा अता फ़रमाया इस वजह से हम इस दिन को अज़ीम समझते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी बनिस्बत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हमारा ताल्लुक़ ज़्यादा है इसके बाद हुज़ूर ने इस दिन का रोज़ा रखने का हुक्म सादिर फ़रमा दिया।

आशूरा की वजहे तसमिया

आशूरा की वजहे तसमीया में उल्मा का इख़तिलाफ़

आशूरा की वजहे तसमीया मे उल्मा का इंख़तिलाफ़ है इसकी वजह मुख़तलिफ़ तौर पर बयान की गई है। अकसर उलमा का क़ौल है कि चूंकि यह मुहर्रम का दसवां दिन होता है इस लिए इसको आँशूरा कहा गया। बाज़ का क़ौल है कि अल्लाह तआला ने जो बुजुर्गियां दिनों के एताबर से उम्मते मुहम्मदिया को अता फ़रमाई हैं उ[illegible] यह दिन दसवीं बुजु[illegible] है इसी मुनासबत से इसको आशूरा कहते हैं। पहली बुजुर्गी तो रजब की है वह अल्लाह का मा[illegible] रहम है, अल्लाह तआला ने यह बुजुर्गी सिर्फ़ इस उम्मत को अता की है कि बाक़ी मही[illegible] पर र[illegible]ब को फ़ज़ीलत ऐसी ही है जैसी उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत दूसरी [illegible]तों पर। माह[illegible] शाबा[illegible] की बुजुर्गी है, माहे शाबान की फ़ज़ीलत बाक़ी महीनों पर ऐसी है जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ज़ीलत दूसरे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम पर। तीसरा माह रमज़ान है इसकी फ़ज़ीलत बाक़ी महीनों पर ऐसी है जैसे [illegible]लाह की फ़[illegible]लत मख़लूक़ पर है। चौथी फ़ज़ीलत शबे क़द्र की है यह हज़ार महीनों से बेहतर है। पांचवां दिन ईदुल[illegible] है यह रोज़ों की जज़ा मिलने का दिन है। अशरा ज़िलहिज्जा [illegible] फ़ज़ीलत है यह अ[illegible]आला की याद के दिन हैं। सातवीं फ़ज़ीलत अरफ़ा का दिन है उस दिन का रोज़ा रखने से दो [illegible] के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है। आठवां दिन [illegible] (कुरबानी) का दिन है। नवां दिन जुमा का दिन है यह दिन सय्यदुल अय्याम है। दसवां दिन आशूरा का दिन है इस दिन रोज़ा रखने से एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा ही जाता है [illegible]माम दिनों की एक ख़ास इज़्ज़त उसके वक़्त पर है जो अल्लाह तआला ने इस उम्मत को अता फ़रमाई है ताकि वह उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाये और उम्मत को ख़ताओं से पाकी हासिल हो जाये।

बाज़ उलमा ने कहा है कि यौमे आशूरा की वजहे तसमिया यह है कि अल्लाह तआला ने उस रोज दस पैग़म्बरों पर एक एक एक इनायते ख़ास फ़रमाई (कुल दस इनायतें हुईं) 1—उस रोज़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल फ़रमाई। 2—हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम को मक़ामे रफ़ीअ पर उठाया। 3—हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती उसी रोज़ कोहे जूदी पर ठहरी 4—उसी रोज़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और उसी रोज़ अल्लाह तआला ने उनको अपना ख़लील बनाया, उसी दिन नमरूद की आग से उनको बचाया। 5—उसी रोज़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल फ़रमाई और उसी रोज़ हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को (छिनी हुई) सलतनत वापस मिली। 6—उसी रोज़ हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का इब्तिला (दुख दर्द) ख़त्म हुआ। 7—उसी दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को (रूदे नील में) ग़र्क़ होने से

बचाया और फ़िरऔन को ग़र्क़ कर दिया। 8—उसी रोज़ हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट से रिहाई मिली। 9—उसी रोज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर उठाया लिया गया। 10— इसी दिन सरवरे कायनात रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैदाईश हुई।

मुहर्रम की किस तारीख़ को आशूरा समझना चाहिए

किस तारीख़ को आशूरा होता है

आशूरा का दिन मुहर्रम की किस तारीख़ को होता है इसमें उलमा का इख़्तिलाफ़ है। अकसर उलमा का क़ौल है (जैसा कि पहले बयान किया जा चुका) कि मुहर्रम की दसवीं तारीख़ को यौमे आशूरा कहते हैं। बाज़ उलमा ने 11वीं तारीख़ को [illegible]शूरा कहा है। हज़रत आईशा सिद्दीक़ा से जो क़ौल मनक़ूल है उसमें नवीं तारीख़ मुहर्रम को आ[illegible]रा होने का ज़िक्र है। हकीम बिन आरज ने हज़रत इब्ने अब्बास से दरयाफ़्त किया कि आशूरा [illegible]ा रोज़ा किस तारीख़ को रखना चाहिए, आपने फ़रमाया जब मुहर्रम का चांद नज़र आ जाये तो [illegible]से गिनती रख लो, नवीं तारीख़ की सुबह को रोज़ा रखो, जब हकीम ने दरयाफ़्त किया [illegible] रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इसी तारीख़ को रोज़ा रखते थे? तो आपने जवाब दिया [illegible]। एक दूसरी हदीस में हज़रत इब्ने अ[illegible]बास का [illegible] यूं आय[illegible] कि [illegible]सूले ख़ुदा स[illegible]ल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद भी दसवें दिन [illegible]ज़ा रखा और उस दिन रोज़ा र[illegible] का ह[illegible]मी सादिर फ़रमाया, सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यहूद व [illegible]सारा इस [illegible] बड़ा और बुज़ुर्ग जानते हैं (यानी दसवीं मुहर्रम को) [illegible] हुजूर [illegible] फ़रमाया कि आईन्दा साल होगा [illegible] इन्शाअल्लाह हम 9वीं (मुहर्रम) तारीख़ को रोज़ा र[illegible]कन आईन्दा साल आने से पहले ही हुजूर ने विसाल फ़रमाया।

हज़रत इब्ने अब्बास के दूसरे अलफ़ाज़ इस तरह हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि [illegible]आईन्दा साल तक मैं ज़िन्दा रहा तो इन्शाअल्लाह तआला नवीं तारीख़ को रोज़ा रखूंगा। हुजूर का यह इरशाद बनज़रे एहतियात था कि कहीं आशूरा का रोज़ा न छुट जाये।

यौमे आशूरा के बाज़ मज़ीद मसाइल

यौमे आशूरा की एक और फ़ज़ीलत यह है कि उसी दिन हज़रत इमाम हुसैन की शहादत हुई। हज़रत उम्मे सलमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम मेरे घर तशरीफ़ फ़रमा थे आपके पास हुसैन भी तशरीफ़ ले आये, मैंने दरवाज़े से देखा तो वह रसूलुल्लाह के सीने मुबारक पर चढ़े हुए खेल रहे थे, हुजूर के दस्ते मुबारक में मिट्टी का एक टुकड़ा था और चश्मे मुबारक से आंसू जारी था, जब हुसैन खेल कर चले गये तो मैं हुजूर के क़रीब गई और मैंने अर्ज़ किया कि हुजूर मेरे मां बाप आप पर कुरबान, मैंने अभी देखा कि आपके हाथ में मिट्टी थी और आप अश्क बारी [illegible] रहे थे? आपने फ़रमाया हुसैन मेरे सीने पर खेल रहे थे मैं बहुत ख़ुश था

कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे वह मिट्टी लाकर दी जिस पर हुसैन को शहीद किया जायेगा यह सबब मेरी अश्क बारी का था।

अहले बैत से अच्छा सुलूक

हसन बसरी से मरवी है कि सुलैमान बिन अब्दुल मलिक (उमवी) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि हुज़ूर उसको बशारत दे रहे हैं और उस पर मेहरबानी फ़रमा रहे हैं, सुबह हुई तो सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने मुझसे उस ख़्वाब की ताबीर पूछी मैंने कहा कि तुमने शायद रसूलुल्लाह के अहले बैत से अच्छा सुलूक किया है सुलैमान ने कहा जी हां, यज़ीद बिन मुआविया के ख़ज़ाने में मुझे हज़रत हुसैन का सर मिला था और मैंने सरे मुबारक दीबाह के पांच कपड़ों से कफ़ना कर अपने साथियों के साथ उस पर नमाज़ पढ़कर क़ब्र में दफ़न कर दिया, मैंने कहा कि इसी वजह से रसूलुल्लाह तुमसे राज़ी हो गये। इस पर सुलैमान ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया और मेहरबानी का बरताव किया।

हमज़ा बिन ज़य्यात ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख़्वाब में देखा कि [illegible] दोनों पैग़म्बर हज़रत हुसैन की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ रहे हैं। शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद अबू असार के [illegible]ले से बयान कयिा कि जाफ़र बिन मोहम्मद ने फ़रमाया कि हज़रत हुसैन की शहादत के बा[illegible] आपकी क़ब्र पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे जो क़यामत तक आपके लिए अश्क[illegible] करते रहेंगे।

आशूरा के रोज़े पर तअन करने वाले ग़[illegible] पर हैं

बाज़ लोग आशू[illegible] रोज़ा रखने वालों पर तअन करते हैं और उन हदीसों और रिवायतों पर नुक्ता चीनी करते [illegible] यौमे आशूरा की ताज़ीम के सिलसिला में बयान की गई हैं वह कहते हैं कि उस रोज़ रोज़ा रख[illegible] नहीं क्योंकि उस रोज़ हज़रत हुसैन शहीद किये गये थे आप की शहादत पर हमागीर [illegible] व मलाल होना चाहिए लेकिन रोज़ा रखकर ख़ुशी और मुसर्रत का दिन क़रार दे लिया जाता है और उस दिन बाल बच्चों के मसारिफ़ में फ़राख़ी पैदा करके ख़ुशी मनाई जाती है, फ़क़ीरों, मुहताजों और ग़रीबों को ख़ैरात दी जाती है तमाम अहले इस्लाम पर इमाम हुसैन का जो हक़ है उसका यह तक़ाज़ा नहीं।

यह एतराज़ करने वाला ग़लती पर है उसका मसलक ग़लत और फ़ासिद है। अल्लाह तआला ने अपने नबीए मोहतरम के फ़रज़न्द की शहादत के लिए ऐसे दिन का इन्तख़ाब फ़रमाया जो क़द्र बुज़ुर्गी, अज़मत व जलालत में सब दिनों से अफ़ज़ल व बरतर था ताकि उनको ज़ाती बुज़ुर्गी के साथ मज़ीद बुज़ुर्गी और उलूए मरतबत हासिल हुआ और शहीद हुए। ख़ुलफ़ाए राशेदीन के मरातिब पर पहुंचा दिये गये अगर आप के शहादत के दिन को मुसीबत का दिन बना लिया जाये तो इस सूरत में दो शम्बा का दिन तो सबसे ज्यादा मुसीबत का दिन ठहरता है कि उस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई और हज़रत अबू बकर ने भी

उसी रोज़ वफ़ात पाई। हश्शाम बिन अरवा से मनकूल है कि हज़रत आइशा ने फ़रमाया कि हज़रत अबूबकर ने मुझसे दरयाफ़्त किया था कि रसूलुल्लाह की वफ़ात किस रोज़ हुई थी मैंने जवाब दिया कि पीर के रोज़, उन्होंने फरमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं भी उसी रोज़ मरूंगा। चुनांचे आप की वफ़ात भी पीर के दिन हुई। पस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो की वफ़ात तो दूसरों की वफ़ात से बहुत अज़ीम है मगर सब लोगों का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि पीर का दिन बुजुर्ग है, उस दिन रोज़ा रखना अफ़ज़ल है, पीर और जुमेरात के दिन अल्लाह तआला के हुजूर में बन्दों के आमाल पेश होते हैं पस आशूरा के दिन को भी इसी तरह मुसीबत का दिन नहीं बनाना चाहिए इस को यौमे मुसर्रत और इनबिसात बनाने से यौमे मुसीबत बनाना किसी तरह भी औला अनसब नहीं है। हम पहले बयान कर चुके हैं कि उस दिन तो अल्लाह तआला ने नबियों को दुश्मनों से नजांत अता की और उनके बद ख़्वाहों को हलाक कर दिया, आसमान व ज़मीन को पैदा किया और अज़मत व बुजुर्गी रखने वाली तमाम चीज़ें उसी रोज़ बनाईं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया, उस रोज़ का रोज़ा रखने वाले के लिए सवाबे अज़ीम मुक़र्रर फ़रमाया, उस दिन के रोज़ों को गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनाया और तमाम बुराइयों से नजात का वसीला बनाया, इन ख़ूबियों व नेमतों के बाइस यौमे आशूरा भी ईदैन, जुमा और अरफ़ा की तरह मुबारक दिन है। अब अगर ऐसे दिन को यौमे मसाइब क़रार देना जाएज़ होता है तो सहाबा कराम और ताबईन ऐसा ज़रूर करते वह ब मुक़ाबला हमारे, हज़रत इमाम हुसैन से ज़्यादा क़ुरबत और ताल्लुक़ रखते थे।

हदीस शरीफ में उस रोज़ अहल व अयाल के नफ़क़ा में ज़्यादा वुसअत व फ़राख़ी और रोज़ा रखने की भी तरग़ीब दी गई है। हसन बसरी से मरवी है कि आप के नज़दीक आशूरा का रोज़ा रखना फ़र्ज़ था और हज़रत अली उस रोज़ रोज़ा रखने का हुक्म दिया करते थे। हज़रत आइशा ने लोगों से दरयाफ़्त किया कि तुमको रोज़ा रखने का हुक्म कौन देता है लोगों ने कहा कि हज़रत अली, आप ने फ़रमाया कि बाक़ी हज़रात में सुन्नत से वह तमाम लोगों से ज़्यादा वाक़िफ़ हैं।

हज़रत अली फ़रमाते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि जिसने शबे आशूरा में रात भर इबादत की तो अल्लाह तआला जब तक चाहे उसको ज़िन्दगी अता करता है, इन मज़कूरा दलाइल से एतराज़ करने वाले के एतराज़ की ग़लती अच्छी तरह वाज़ेह हो गई।

यौमे जुमा के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

ऐ इमान वालो! जब जुमा के दिन अज़ान दी जाये (तुम को पुकारा जाये) तो नमाज़ की तरफ़ जल्दी चलो और ख़रीद व फ़रोख़्त को तर्क कर दो यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो।

हज़रत इब्ने अब्बास इसकी तफ़सीर इस तरह करते हैं कि ऐ ईमान वालो! ऐ वह लोगो! जिन्होंने अल्लाह की वहदानियत का इक़रार किया और उसके वाहिद व यकता होने की तसदीक़ की, जब जुमा के दिन अज़ान के ज़रिये तुमको नमाज़ के लिए बुलाया जाये तो नमाज़े जुमा के

लिए जल्द चलो और अज़ान के बाद ख़रीद व फ़रोख़्त बन्द करो अगर तुम सच जानते हो तो कमाई और तिजारत से नमाज़ तुम्हारे लिए बेहतर है।

शाने नुज़ूल

इस आयत के नुज़ूल का सबब यह है कि यहूदियों ने मुसलमानों पर तीन बातों से तफ़ाख़ुर किया अव्वलन वह कहते थे कि हम अल्लाह के दोस्त और उसके महबूब हैं तुम नहीं हो, सानियन हमारी तो किताब है तुम्हारी कोई किताब नहीं है, सालिसन हमारे लिए यौमुस्बत (हफ़्ता का दिन ख़ास है) और तुम्हारे लिए कोई दिन ख़ास नहीं है। अल्लाह तआला ने इस आयत पर यहूदियों की तकज़ीब फ़रमा दी और उनके दावों को रद्द कर दिया और अपने नबीए मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया।

ऐ यहूदियो! अगर तुम अपने इस दावा में सच्चे हो कि दूसरे लोगों को छोड़कर सिर्फ़ तुम ही अल्लाह के दोस्त हो तो तुम मौत की तमन्ना करो (कि मौत के बाद तु[illegible] को अपनी सआदत और नजात का यक़ीन होना चाहिए)

और उनके दूसरे दावा की तरदीद इस तरह [illegible]माई: अल्लाह ही ने [illegible] अनपढ़ लोगों में एक अज़ीमुश्शान पैग़म्बर उन्ही में से मबऊस फ़रमाया

और यहूदियों की (जिनको साहिबे किताब होने प[illegible] नाज़ था) इ[illegible]रह म[illegible]म्मत फ़रमाई।

जिन लोगों पर तौरैत उतारी गई उन की हालत [illegible] गधा बड़े [illegible]ड़े दफ़्तर उठाए हुए (यानी बे अमल) और उन के तीसरे दावे (यौमे स[illegible]त पर तफ़ाख़ुर) की तर[illegible]द में फ़रमाया: ऐ ईमान वालो जब नमा[illegible] की अ[illegible] हो जुमा [illegible] दिन, [illegible]और इसके ब[illegible] इरशाद फ़रमाया: अगर उनको कोई तिजारत [illegible] खेल की बात नज़र आत[illegible] है त[illegible]उसकी त[illegible] बढ़ जाते हैं (फैल जाते हैं) सूरते वाक़िआ यह हुई [illegible]के मदीना [illegible] कोई क़ा[illegible]फ़िला (ति[illegible]ता तो लोग तालियां और नक़्क़ारे बजा कर उस का[illegible] इस्तिक़[illegible]ल करते [illegible]र लोग उस क़ाफ़िला [illegible] देखने के लिए मस्जिद से निकल कर बाहर च[illegible] जब एक रोज़ क़ाफ़िला आही पहुंचा तो बहुत से लोग मस्जिद से निकल गए सिर्फ़ बारह [illegible] और एक ख़ातून मस्जिद में रह गई, उसके बाद एक क़ाफ़िला और आया जब भी यही सूरत [illegible]ब लोग सिवाए बारह मर्द और एक ख़ातून के मस्जिद से बाहर आ गए उसके बाद दहि[illegible] बिन हुलैफ़ा कलबी इस्लाम लाने से क़ब्ल शाम से कुछ सामाने तिजारत ले कर मदीना मुनव्वरा आया उसके पास तरह तरह का सामाने तिजारत था, उसके इस्तिक़बाल के लिए मदीना वाले तालियां बजाते और नक़्क़ारा पीटते बाहर निकले इत्तेफ़ाक़न मदीना में उसकी आमद जुमा के दिन ऐसे वक़्त में हुई कि जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुतबए जुमा इरशाद फ़रमा रहे थे लोग (उसकी आमद का ग़ोग़ा सुन कर) ख़ुतबा छोड़ कर उस की तरफ़ चले गए, उस वक़्त हुज़ूर ने फ़रमाया देखो मस्जिद में कितने आदमी हैं, लोगों ने अर्ज़ किया बारह मर्द और एक औरत। अगर यह भी न होते तो उन सब की हिलाकत के लिए पत्थरों पर निशान लगा दिये जाते (आसमान से पत्थर बरसते और जिस पत्थर पर जिस का नाम होता वही पत्थर उस फ़र्द को हलाक करता यानी सब के सब पत्थर से हलाक कर दिये जाते)। इस आयत में नक़्क़ारा बजाने और तालिया पीटने को लहव से ताबीर फ़रमाया है और तिजारत से वही तिजारती माल मुराद है जो दहिया लेकर आया था, जो लोग मस्जिद में

ठहरे रहे थे उनमें हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर भी थे।

रोज़े जुमा के फ़ज़ाइल

अहादीसे नबवी में

अल्लामा अब्दुर्रहमान ने बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: रोज़े जुमा से ज़्यादा बन्दगी और इबादत वाले दिन में न सूरज तुलूअ हुआ और न गुरूब हुआ (यानी रोज़े जुमा इबादत व बन्दगी के लिए हर दिन से अफ़ज़ल व बरतर है।)

ज़मीन पर चलने वाला हर जानवर (सिवाये जिन्न व इन्स के) रोज़े जुमा से डरता है (क्योंकि क़यामत जुमा के दिन होगी)। जुमा के दिन मस्जिद के हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते आने वाले लोगों को तर्तीब वार दर्ज करते हैं, अव्वल नम्बर पर ऐसा शख़्स होता है जैसे ऊंट क़ुरबानी करने वाला, दूसरे नम्बर पर गाय की कुरबानी करने वाला और [illegible] नम्बर पर ऐसा शख़्स जिसने बकरी की कुरबानी की हो, फिर ऐसा जैसे किसी ने मुर्ग़ी अल्लाह की दी है, फिर ऐसा जैसे किसी ने अंडा पेश किया हो, जब इमाम खुतबा पढ़ने खड़ा हो जाता है तो वह काग़ज़ लपेट लिया जाता है।

हज़रत अबू सलमा ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत बयान की है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सबसे बेहतर दिन जिस में आफ़ताब तुलूअ और गुरूब होगा जुमा का है, क्योंकि उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए उसी दिन जन्नत में दाख़िल हुए और उसी दिन जन्नत से ज़मीन पर उतारे गये, उसी दिन क़यामत क़ाइम होगी, जुमा के दिन एक ऐसी घड़ी आती है कि उस घड़ी में बन्दा [illegible] तआला से जो कुछ मांगेगा अल्लाह तआला उस ज़रूर अता करेगा।

जुमा की एक स[illegible]

हज़रत अबू सअद फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया कि वह मक़बूलियत की घड़ी दिन [illegible] आख़िरी साअत है वह साअत है जिस में अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया अल्लाह तआला का इरशाद है: व ख़लक़ल इंसान मिन अज्ल

सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के नज़दीक जुमा यौमे फ़ित्र से भी ज़्यादा अफ़ज़ल है, उसी दिन पांच अहम काम हुए यानी उस दिन हज़रत आदम को अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया, उसी दिन वह ज़मीन पर उतारे गये (जिस दिन वह ज़मीन पर उतारे गये वह जुमा का दिन था)। उसी दिन उनकी वफ़ात हुई, उसी दिन में एक घड़ी ऐसी है कि उस घड़ी में बन्दा अल्लाह तआला से जो कुछ मांगता है (बशर्तेकि वह हराम न हो) अल्लाह तआला उसको अता फ़रमाता है, उसी दिन क़यामत क़ाइम होगी। हर मुक़र्रब फ़रिश्ता जुमा के दिन से डरता है आसमान और ज़मीन भी क़यामत के दिन से डरते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेहतरीन दिन जिसमें सूरज तुलूअ होता है जुमा का दिन है, उसी दिन हज़रत आदम को पैदा

किया गया, उसी दिन उनको जन्नत में दाख़िल किया गया, उसी रोज़ उनको जन्नत से ज़मीन पर उतारा गया, और उसी दिन क़यामत बपा होगी। हज़रत अबू हुरैरा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया शायद आयत व शाहिदुन व मशहूदुन में शाहिद रोज़े जुमा है,मशहूद रोज़े अरफ़ा है और अलयौमुल मौऊद से मुराद रोज़े क़यामत है, जुमा से ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले दिन न सूरज निकला न ग़ुरूब हुआ, उसी दिन में एक घड़ी ऐसी है कि उस घड़ी में अगर मोमिन बन्दा अल्लाह तआला से ख़ैर तलब करता है तो अल्लाह तआला उसको ज़रूर देता है और जिस शर से वह पनाह तलब करता है उसको पनाह देता है।

मलाइका फ़ेहरिस्त मुरत्तिब करते हैं

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद और दिगर असनाद से बयान किया है कि हज़रत अली मुर्तज़ा ने फ़रमाया जुमा का दिन होता है तो शयातीन झण्डे लेकर निकलते हैं और लोगों को बाज़ारों की तरफ़ ले जाते हैं और मलाइका मस्जिदों के दरवाज़ों पर उतर कर आने वालों के नाम हस्बे मरातिब आमद लिखते हैं, अव्वल, उसके बाद दोम, दोम के बाद सोम और इसी तरह बित्तर्तीब यहां तक कि इमाम बरआमद होता है। जो शख़्स इमाम से क़रीब होकर ख़ामोशी के साथ खुतबा सुनता है और उस असना में कोई लग़्व बात नहीं करता उसको अज्र एक हिस्सा होता है और जो इमाम के क़रीब रहकर कोई लग़्व बात करता है और ख़ामोश रहकर खुतबा नहीं सुनता उस पर दोहरा गुनाह होता है, और जो इमाम [illegible] रहकर लग़्व बात करता है और ख़ामोशी से खुतबा नहीं सुनता उसपर बड़ा गुनाह होता है, यहां तक ख़ामोश रहने की ताकीद है कि अगर एक शख़्स ने खुतबा के दौरान दूसरे शख़्स से कहा ख़ामोश, तो उसने भी लग़्व बात की और उसका जुमा नहीं हुआ, इसके बाद हज़रत अली ने मज़ीद फ़रमाया मैंने तुम्हारे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा ही सुना है। हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि मैंने ख़ुद सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे इमाम के खुतबा के दौरान अगर तू ने अपने साथी से कहा [illegible] रह, तो तू ने लग़्व बात की। अम्र बिन शुऐब ने अपने वालिद से रिवायत की कि उनके दादा ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा के दिन मस्जिदों के दरवाज़ों पर मलाइका खड़े होते हैं और वह आने वाले लोगों को कहते रहते हैं यहां तक कि इमाम बरआमद हो जाता है उस वक़्त वह काग़ज़ तय कर लेते हैं और क़लम उठा लिए जाते हैं मलाइका आपस में कहते हैं कि फ़लां शख़्स किस वजह से नहीं आया और फ़लां शख़्स क्यों नहीं आया। इलाही अगर वह बीमार है तो उसको शिफ़ा दे और अगर वह रास्ता भूल गया हो तो उसको रास्ता बता दे, अगर वह मुसाफ़िर है तो उसकी मदद फ़रमा।

जुमा के दिन जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाले

जाफ़र बिन साबित ने अपने वालिद का क़ौल नक़्ल किया है कि अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते चांदी की तख़्तियां और सोने के क़लम लेकर उन लोगों के नाम लिखते हैं जो जुमा की रात या दिन में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करते हैं। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद के हवाले से अबुल जुबैर हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह का यह क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह ने

इरशाद फ़रमाया की जो शख़्स अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखता है उस पर जुमा के दिन जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ है अलबत्ता बीमार, मुसाफ़िर, औरत, बच्चा और गुलाम इस हुक्म से मुसतस्ना हैं।

तिजारत व लहूव व लईब में मशग़ूल रहने वाला

जो शख़्स खेल कूद और तिजारत में मशगूलियत के बाएस जुमा की नमाज़ से बेपरवाह हो जाता है अल्लाह तआला भी उससे बेपरवाह हो जाता है। अल्लाह तआला बेनियाज़ है। अबुल जहर ख़मरी की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस ने हक़ीर (मामूली बात) समझ कर तीन जुमा तर्क कर दिए अल्लाह उसके दिल पर मोहर कर देता है। शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद रिवायत की कि हज़रत जाबिर ने फ़रमाया कि मैंने ख़ुद सुना की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे और फ़रमा रहे थे लोगों मरने से पहले अल्लाह से तौबा कर लो और रूकावट पैदा होने से पहले नेक आमाल करने में उजलत करो और ज़िक्रे इलाही की कसरत से [illegible]म्हारे और ख़ुदा के दर्मियान जो रिश्ता है उसको ज़ोड़ो, छुपाकर और खुल्लम खुल्ला ख़ैरात [illegible]रो, तुमको अज्र भी मिलेगा और तुम्हारी तारीफ़ भी की जाएगी, तुम्हारा रिज़्क़ भी ज़्यादा होगा, जान लो कि [illegible]ाह ने जुमा की नमाज़ तुम पर इस महीने में उस जगह उस साल अब क़या[illegible]क के लिए क़तई फ़र्ज़ कर दी है, जिस शख़्स को मौक़ा मिले वह ज़रूर पढ़े मेरी हयात में [illegible]रे बाद जो शख़्स इंकार करके या मामूली बात समझ कर जुमा की नमाज़ को ऐसी हालत में तर्क करे कि उसके लिए कोई ख़लीफ़ा या नाएबे ख़ली[illegible]ा मौजूद [illegible] ख़्वाह वह [illegible]म आ[illegible]दिल हो या फ़ा[illegible]सिक़ तो अल्लाह उसकी परेशानी दूर फ़रमाए औ[illegible] न उसके का[illegible] में बरकत दे।

ख़ूब सुन लो कि ऐसे श[illegible] की न न[illegible]ज़ है न [illegible] ज़कात है न हज है, ग़ौर से सुनो ऐसे आदमी को को[illegible] बरक[illegible] नसीब न[illegible] होगी जब तक वह तौ[illegible] न करे, अगर वह तौबा करेगा तो अल्लाह तआला [illegible]की तौबा क़बूल कर लेगा।

औरत मर्द की, देहा[illegible] मुहाज़िर की, फ़ासिक़ (सालेह) मोमिन की इमामत न करे ता वक़्तेकि उसे किसी जाबिर व ज़ा[illegible]शाह की तलवार या कोड़े का डर न हो।

जुमा के दिन की हैयत

अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू मूसा अशअरी का यह क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लह तआला क़यामत के दिन तमाम दिनों को उनकी हैयत पर महशूर व मबऊस फ़रमाएगा लेकिन जुमा को रौशन और नुमायां हैयत पर उठाएगा, अहले जुमा (जुमा के नमाज़ी) उसके इर्द गिर्द जुलू में इस तरह जा रहे होंगे जैसे दुल्हन को झुर्मुट में शौहर के पास ले जाते हैं, जुमा ऐसा रौशन होगा कि उसकी रौशनी में लोग चलेंगे, जुलू में चलने वालों के रंग बर्फ़ की तरह सफ़ेद होंगे और उन से मुश्क की ख़ुशबू आती होगी वह काफ़ूर के पहाड़ों के अन्दर अन्दर चलेंगे दूसरे लोग ताज्जुब से उनकी तरफ़ तकते होंगे यहां तक कि वह उसी सूरत में जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे, सिवाए उन मोअज़्ज़िनों के जो सवाब की उम्मीद में जुमा की अज़ान देते हैं कोई और उन के साथ शामिल नहीं होगा।

जुमा के दिन छः लाख दोज़ख़ी आज़ाद होते हैं

हज़रत अनस बिन मालिक का यह क़ौल भी शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद के साथ नक़्ल किया है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला हर जुमा को छः लाख दोज़ख़ियों को दोज़ख़ आज़ाद फ़रमाता है, जुमा के दिन रात के चौबिस घंटे होते हैं और हर घंटा में छः लाख दोज़ख़ी दोज़ख़ से आज़ाद होते हैं। इसी हदीस शरीफ़ के दूसरे अलफ़ाज़ इस तरह हैं दुनिया के हर घंटा में छः लाख अफ़राद जो दोज़ख़ के मुसतहिक़ होते हैं दोज़ख़ से अल्लाह तआला की तरफ़ से आज़ाद किये जाते हैं लेकिन जुमा के दिन और रात के चौबिस घंटों में कोई साअ़त भी ऐसी नहीं होती कि छः लाख दोज़ख़ी अल्लाह तआला की तरफ़ से दोज़ख़ से आज़ाद न किये जाते हों।

जुमा की नमाज़ बा जमाअ़त का सवाब

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैल रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू दरदा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स जुमा के दिन जुमा की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ता है अल्लाह तआला उसके लिए एक मक़बूल हज का सवाब लिख देता है और अगर उसी जगह (मस्जिद में) रह कर वह अस्र की नमाज़ भी पढ़ता है तो उसके लिए उमरा का सवाब भी मख़सूस हो जाता है और अगर उसी जगह रह कर वह मग़रिब कि नमाज़ अदा करे तो कोई चीज़ ऐसी नहीं कि वह अल्लाह तआला से मांगे और उसको न मिले।

हज़रत अबू अमामा बाहिली कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने जुमा के दिन इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी और किसी जनाज़ा में हाज़री दी और कुछ सदक़ा दिया, किसी बीमार की अयादत की और किसी निकाह में भी हाज़िर हुआ उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद रिवायत की कि उम्र बिन शुऐब ने अपने वालिद के हवाला से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा की नमाज़ में तीन क़िस्म के लोग होते हैं एक वह जो ख़ुतबा के वक़्त बेकार बातें करता और नमाज़ में शरीक होता है उसका हिस्सा (रहमते इलाही) से बस एक तो वही है जो वह ख़ुतबा के वक़्त मांगता है अल्लाह तआला को इख़्तियार है चाहे उसे दे या न दे, एक वह है जो ख़ामोशी के साथ मुतवज्जेह होकर ख़ुतबा सुनता है और किसी मुसलमान की गरदन को नहीं फलांगता न किसी को ईज़ा पहुंचाता है ऐसी नमाज़ उस नमाज़ी के लिए आने वाले जुमा और उसके तिन दिन बाद तक के लिए मुतवातिर उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है जो नेकी करेगा उसको दस गुना अज्र दिया जाएगा (लिहाज़ा यह दस दिन हो गए)। हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ज़मीन पर चलने वाला हर जानवर अपने पांव पर खड़ा हुआ जुमा के रोज़ क़यामत बरपा होने से डरता है सिवाए शैतान और बद बख़्त इंसानों के कि यह नहीं डरते।

कहते हैं कि जुमा के रोज़ परिन्दे और कीड़े मकोड़े बाहम मिलते हैं और कहते हैं कि तुम्हारे लिए सलामती हो आज का दिन कितना अच्छा है। एक और हदीस में आया है कि हर रोज़ ज़वाले शम्स ज़हवए क़ुबरा से पहले जब ख़ुर्शीद निसफ़ुन्नहार पर होता है तो दोज़ख़ की आग

तेज़ की जाती है तुम उस साअ़त में नमाज़ न पढ़ो हां जुमा का दिन सरा सर नमाज़ ही है (उसका हर लहज़ा व लमहा नमाज़ है)। उस रोज़ जहन्नम की आग तेज़ नहीं होती।

जुमा के दिन गुस्ल करके मस्जिद में जाना

हज़रत अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा के दिन गुस्ल करके जो शख़्स पहली घड़ी ही में मस्जिद में गया यानी अव्वल वक़्त, उसने (अज़रूए सवाब) गोया ऊंट की कुरबानी की और जो दूसरी साअ़त में गया उसने गोया गाय कुरबान की और जो तीसरी साअ़त में गया उसने गोया सींगों वाले मेंढे की कुरबानी की और जो चौथी साअ़त में गया उसने मुर्ग़ी अल्लाह की राह में दी और जो पांचवी साअ़त में गया उसने गोया एक अण्डा ख़ैरात करने का सवाब हासिल किया। उसके बाद जब इमाम बरआमद हो जाता है तो फ़रिश्ते ख़ुतबा सुनने के लिए उठ जाते हैं (उन नामों का इन्दराज ख़त्म हो जाता है)।

दिन की साअ़तों के औक़ात

पहली साअ़त सुबह की नमाज़ के बाद होती है। दूसरी सूरज कुछ बलन्द होने, तीसरी साअ़त धूप फैल जाने पर यानी चाश्त के वक़्त (जब सूरज की गरमी [illegible] रेत इस क़दर गर्म हो जाती है कि पैर जलने लगते हैं) चौथी साअ़त ज़वाल से [illegible] शुरू होती है और पांचवी साअ़त सूरज के ज़वाल (ख़त्म या ठिक ज़वाल के वक़्त) से शुरू होती है। हज़रत नाफ़ेअ़ की रिवायत है कि हज़रत इब्न उमर [illegible] फ़रमाया [illegible] रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि [illegible] शख़्स जुमा को गुस्ल करता है अल्लाह तआला उसको गुनाहों से पाक व साफ़ कर देता है फिर उसे कहा जाता है कि (आईन्दा [illegible] ज़ सरे नौ अमल शुरू कर (पिछले गुनाह तो माफ़ हो गये)।

एक रिवायत में [illegible] कि जिसने दूसरे को नहलाया और ख़ुद भी नहाया और अव्ल वक़्त ही मस्जिद में आ गया, [illegible] म के क़रीब बैठा और कोई लग़्व हरकत नहीं की तो उसके लिए हर क़दम पर एक साल के दिन [illegible] ज़े और उनकी नमाज़ें लिखी जाती हैं, हर जुमा को बीवी से कुरबत करना उलमा के [illegible] दीक मुसतहब है। सलफ़े सालेहीन में बाज़ हज़रात इस हदीस के ततब्बो में ऐसा ही अमल करते थे बाज़ उलमाए सल्फ़ ने इसके मानी यह कहे हैं कि जिस ने अपना सर धोया या अपना बाक़ी जिस्म धोया यानी नहाया।

जुमा के दिन के गुस्ल की ताकीद

हज़रत हसन बसरी ने हज़रत अबू हुरैरा का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया अबू हुरैरह! हर जुमा के दिन गुस्ल किया करो ख़्वाह पानी (बवजहे गिरानी) तुम को अपनी उस रोज़ की ख़ोराक के एवज़ ही क्यों न ख़रीदना पड़े। अकसर फुक़हा ने गुस्ले जुमा को मुसतहब क़रार दिया है। दाऊद के नज़दीक वाजिब है जुमा की नमाज़ पढ़ने वाले के लिए गुस्ले जुमा को तर्क करना मुनासिब नहीं है।

गुस्ल का वक़्त

गुस्ले (जुमा) का वक़्त सुब्हे सादिक़ के तुलूअ़ बाद से शुरू होता है। ज़्यादा मुनासिब और

औला यही है कि गुस्ल से फ़राग़त के फ़ौरन बाद मस्जिद को रवाना हो जाए ताकि हदीस शरीफ़ का इत्तेबा हो जाए और जुमा की नमाज़ तक तहारत टूटने से ख़ूद को महफ़ूज़ रखना चाहिए गुस्ल से मक़सूद ख़िदमते मौला समझिए (यानी जुमा की नमाज़ की अदाएगी)।

अगर एक शख़्स जनाबत की हालत में सुब्ह को उठा और उसने जनाबत दूर करने और जुमा की नमाज़ अदा करने की नियत से वुज़ू करके गुस्ल कर लिया तो यह जाइज़ है। जुमा के रोज़ बाल साफ़ करके, नाख़ून तरशवा कर बदन से बदबू दूर करके यानी ख़ूब अच्छी तरह गुस्ल करके पाकीज़गी हासिल करे, जो बेहतरीन लिबास उसको मयस्सर हो वह पहने, सफ़ेद कपड़े पहनना औला है, अमामा बांधे और चादर ओढ़े। हदीस शरीफ़ में आया है कि जुमा के रोज़ अमामा पहनने वाले के लिए फ़रिश्ते नुज़ूले रहमत की दुआ करते हैं। तबदीले लिबास के बाद जो अच्छी ख़ुशबू मयस्सर आए वह इस्तेमाल करे लेकिन ख़ुशबू के कपड़ों पर दाग़ नहीं पड़ना चाहिए यानी रंग ज़ाहिर न हो सिर्फ़ ख़ुशबू फैले, इसके बाद सुकून, तहम्मुल, बुर्द बारी, ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ बारगाहे इलाही का मोहताज बन कर दुआए इस्तिग़फ़ार [illegible]र कसरत के साथ दरूद शरीफ़ का विर्द करता हुआ घर से बरआमद [illegible] और जामा मस्जिद [illegible]हुंच जाए, वह घर से निकले और मस्जिद को जाने को वह ख़ानए ख़ुदा म[illegible] अल्लाह के हुज़ूर हाज़[illegible] समझे और फ़र्ज़े इलाही की अदाएगी को क़ुर्बे इलाही का ज़रिया जान[illegible] और घर व[illegible] आने [illegible]तक मस्जिद में एतकाफ़ की नियत करे, रास्ता में और मस्जिदे जामा में [illegible]द और ल[illegible] बातों से परहेज़ करे, जुमा के दिन राहत व आराम दुनियावी लज़्ज़तों से दस्त क[illegible] हो जाए। [illegible]ज़ाइफ़ व औराद और इबादात में मुसलसल मश[illegible]ल रहे। जु[illegible] के दि[illegible] के आग़ाज़ [illegible] नमा[illegible] जुमा की अदाएगी तक सारा वक़्त खुद[illegible]न्द तआ[illegible] की ख़िदम[illegible]नी [illegible]राद व वज़[illegible]फ़ में सर्फ़ करे, दोपहर से नमाज़े अस्र तक दीनी [illegible]साइल के सु[illegible]ने और मो[illegible]ज़त [illegible] की मजलिसों में [illegible]िरकत के लिए मख़सूस कर दे। अ[illegible]स्र की न[illegible] से मग़[illegible] तक तस्बी[illegible] इस्तिग़[illegible]र में मसरूफ़ रहे। उस वक़्त शबाना रोज़ में हर [illegible]िक्र [illegible] अफ़ज़ल यह ज़िक्र है (उसमें मश[illegible] व ससरूफ़ रहे)।

जुमा का अफ़ज़ल [illegible]न ज़िक्र

जुमा के तमाम औक़[illegible] फ़ज़ल तरीन ज़िक्र यह है:

ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदहु ला शरीका लहु लहुल मुल्को व लहुल हम्दो यूह ई व यूमीतो वहो व हय्युल ला यमूतो बेयदेहिल ख़ैर वहो व अला कुल्ले शैइन क़दीर इसके बाद दो सौ बार ***सुब्हानल लाहिल अज़ीम व बेहम्देही*** सौ बार ***ला इलाहा इल्लल्लाहो अल मलकुल हक़्क़ुल मुबीन*** सौ मरतबा (यह दरूद शरीफ़) ***अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन अब्देका व रसूलेकन्नबीयुल उम्मी*** इसके बाद सौ मर्तबा ***अस्तग़फ़ेरूल्लाहुल हय्युल क़य्यूम व असअलोहुत्तौबा*** फ़िर सौ मरतबा ***माशा अल्लाहो ला कुव्वाता इल्ला बिल्लाह***

रिवायत है कि बाज़ सहाबा कराम रोज़ाना बारह हज़ार मरतबा तसबीह पढ़ा करते थे। एक रिवायत में आया है कि बाज़ ताबेईन रोज़ाना तीस हज़ार बार तसबीह पढ़ते थे उनमें से हर एक अपनी नमाज़ और अपनी तसबीह से वाक़िफ़ था यानी पाबन्द था तुम इस बात से डरो कि कहीं तुम महरूम रहने वालों में शामिल न हो जाओ, अगर तुम अल्लाह को याद न करोगे तो अल्लाह

तआला की बारगाह में तुम्हारा ज़िक्र भी नहीं होगा। पहले मोमिन ख़ुदा को याद करता है फिर उसका ज़िक्र और उसकी याद बारगाहे इलाही में होती है चुनांचे इरशाद फ़रमाया: फ़ज़्करूनी अज़्करोकुम।

नमाज़े जुमा से क़ब्ल ऐसे शख़्स के पास जाना मुनासिब नहीं जो क़िस्से कहानिया सुनाता है। (ऐसे वाएज़ जिनकी तक़रीर चुटकुल, लतीफ़ों और क़िस्सों पर मबनी होती है और इल्मी हैसियत बिल्कुल मफ़क़ूद हमारे ज़माने में तो ऐसे ही हज़रात का अलम बुलन्द है। हज़रत सय्यदना ग़ौसुल आज़म के ज़माने में भी ऐसे लोग मौजूद थे उन्ही ही सोहबत से मना किया गया है मुतर्जिम) क्योंकि क़िस्से कहानियां सुनाना और कहना बिदअत है। हज़रत इब्ने उमर और दूसरे सहाबा कराम ऐसे किस्सा कहने वालों को जामा मस्जिद से निकलवा देते थे हां अगर वह क़िस्सा गो दीन का इल्म रखता हो और उसको मारफ़ते इलाही हासिल हो तो उसकी मजलिस में हाज़िर होना नमाज़ से बढ़कर है (यानी उसका सवाब बहुत ज़्यादा है) हज़रत अबू [illegible]र से मरवी है हदीस में है कि इल्म की मजलिस में हाज़िर होना हज़ार रकअत नमाज़े नफ़्ल [illegible] बेहतर है।

लोगों को फलांगना मना है

जब नमाज़ी मस्जिद में पहुंचे तो लोगों की गरदने [illegible] फलांगें (या[illegible] पीछे से आगे पहुंचने की कोशिश में सफ़ों का दरहम बरहम करता हुआ आगे न [illegible]) हां अगर [illegible]माम या मोअज़्ज़िन हो तो मोज़ाएक़ा नहीं है (उसके लिए मना नहीं है) एक रिवा[illegible] आया है कि एक शख़्स को हुजूर रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि वह लोगों की गरदने फलांग रहा है, हुजूर ने उससे फ़रमाया [illegible] ख़्स तुझे [illegible] साथ जुमा पढ़ने [illegible] किस चीज़ ने रोक दिया, उसने अर्ज़ किया या [illegible]सूलल्लाह क्या आप ने मुलाहिज़ा [illegible] नहीं फ़र[illegible] कि मैं नमाज पढ़ रहा था, हुजूर ने फ़रमाया मैंने [illegible]खा कि तू आख़िर में [illegible] आया [illegible] को दुख दिया, (लोगों की गरदनें फलांगकर आगे ब[illegible]) एक और हदीस के अल्फ़ाज़ इस तरह [illegible] हैं कि हुजूर ने फ़रमाया तुने आज जुमा क्यों नहीं [illegible] उस शख़्स ने अर्ज़ किया या नबी अल्लाह मैंने जुमा की नमाज़ पढ़ी थी, हुजूर ने फ़रमाया क्या मैंने तुझे लोगों की गरदनें फलांगते हुए नहीं देखा, यानी तू लोगों की गरदनें फलांग रहा था। [illegible] कि जिसने ऐसा अमल किया उसकी पीठ क़यामत के दिन दोज़ख़ का पुल बनाई जाएगी लोग उसके ऊपर से गुज़रेंगे और उसको पामाल करेंगे।

नमाज़ी के सामने से गुज़रने की मुमानियत

ख़बरदार! नमाज़ी के आगे से न गुज़रना। हदीस शरीफ़ में आया है कि चालिस साल तक एक जगह पर ठहरे रहना नमाज़ी के सामने से गुज़रने वालों के लिए बेहतर है। एक दूसरी हदीस में इस तरह आया है कि नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला अगर ख़ाक हो जाए कि उसको हवा में उडा दें तब भी यह बेहतर होगा ब मुक़ाबला इसके कि नमाज़ी के सामने गुज़रे। किसी नमाज़ी को उसकी जगह से उठा कर ख़ुद न बैठे क्योंकि एक रिवायत में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई शख़्स अपने भाई को उसकी जगह से उठा कर उसकी जगह ख़ुद न बैठे। हज़रत इब्ने उमर के लिए अगर कोई अपनी जगह छोड़ कर खड़ा हो जाता तो आप उस जगह पर नहीं बैठते बल्कि वह ख़ुद ही वापस आकर अपनी जगह पर बैठ जाता था।

इमाम अहमद से दरयाफ़्त किया गया अगर किसी के सामने जगह ख़ाली हो तो ऐसी सूरत में क्या लोगों को फलांग कर उस जगह पर बैठ जाना जाएज़ है? इसके जवाब में इमाम अहमद ने फ़रमाया अपने साथी को उस जगह पर बढ़ाये और ख़ुद उसकी जगह पर बैठ जाये तो बेहतर है अगर कोई अपने लिए कपड़ा वग़ैरा बिछा कर चला जाये (जगह को अपने लिए मख़सूस कर दे) तो दूसरे के लिए जायज़ है कि उसे हटा कर बैठ जाये। इमाम के क़रीब बैठने में ज़्यादा सवाब है। जब इमाम ख़ुतबा दे रहा हो तो ख़ामोशी से सुने बातें न करे अगर ऐसा करेगा तो गुनहगार होगा, ख़ुतबा शुरू होने से पहले और ख़ुतबा होने के बाद कलाम करना हराम नहीं है।

रोज़े जुमा की मज़ीद ख़ुसूसियात

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत इमाम मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मेरे पास जिब्रील सफ़ेद पर हाथ में लिए हुए तशरीफ़ लाये उस पर में एक सियाह नुक़्ता था, मैंने दरयाफ़्त किया कि हाथ में क्या है? जिब्रील ने कहा कि यह जुमा का दिन है जिसमें आप सबके लिए ख़ैरे कसीर है मैंने पूछा कि सियाह नुक़्ता क्या है? उन्होंने कहा कि यह क़यामत है जो जुमा के दिन क़ायम होगी। जुमा सय्युदल अय्याम है हम मलाए आला (आलमे मलकूत) में इसको यौमुल मज़ीद कहते हैं, मैंने कहा कि यौमुल मज़ीद कहने की क्या वजह है जिब्रील ने कहा जन्नत में अल्लाह तआला ने एक वादी बनाई है जिसकी ख़ुशबू सफ़ेद मुश्क से ज़्यादा है जब क़यामत का जुमा आयेगा (वह जुमा जिस रोज़ क़यामत बपा होगी) तो अल्लाह तआला उस वादी में जलवा अफ़रोज़ होगा उसकी कुर्सी के गिर्दा गिर्द नूर के मेम्बर होंगे जिन पर अंबिया अलैहिमुस्सलाम तशरीफ़ फ़रमा होंगे। उन मनाबिर के पास सोने की जड़ाओ कुर्सियां होंगी उन कुर्सियों पर शोहदा व सिद्दिक़ीन बैठे होंगे फिर अहले ग़रफ़ा आयेंगे और वह वादी भर जायेगी, फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैंने तुम से जो वादा किया था वह पूरा कर दिया यानी तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और अपनी इज़्ज़त की मक़ाम पर तुम को जगह दी। फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि अब तुम मुझसे अपनी मुराद तलब करो, उस वक़्त सबके सब अर्ज़ करेंगे इलाही हम तेरी ख़ूशनूदी के तालिब हैं, उस वक़्त इरशाद होगा कि मेरी ख़ूशनूदी ही ने तो तुमको इस घर में उतारा है मेरी अता की हुई इज़्ज़त तुमको हासिल हुई, फिर फ़रमायेगा मुझ से मांगो सब लोग वही जवाब देंगे, फिर इरशाद होगा कि मुझ से मांगो आख़िरकार बन्दे अपनी मुरादें मांगेंगे यहां तक कि हर बन्दे की आरज़ू और मुरादें ख़त्म हो जायेंगी उस वक़्त हर एक कहेगा कि हमारे लिए हमारा रब काफ़ी है। उस वक़्त नमाज़े जुमा से वापसी की मिक़दार के मुताबिक़ (यानी जितना वक़्त नमाज़े जुमा से वापसी में बन्दा का सर्फ़ हुआ था उसके बक़द्र) वह चीज़ें उसकी नज़रों के सामने लाई जायेंगी जो अब तक न किसी आंख ने देखी न किसी कान ने उनके बारे में सुना होगा किसी के दिल में उसका तसव्वुर आया होगा। यह सब ग़रफ़ा वाले अपने ग़रफ़ों की जानिब वापस हो जायेंगे, हर ग़रफ़ा(बाला ख़ाना) सफ़ेद मोती, सुर्ख़ याक़ूत और सब्ज़ ज़मुर्रद का होगा न उसमें कोई नक़्स होगा और न किसी क़िस्म की टूट फूट होगी, उन ग़रफ़ों के अन्दर नहरें बहती होंगी, दरख़्त और सब्ज़े की बुहतात होगी, दरख़्त फलों से लदे होंगे, उनकी बीवियों के रहने के लिए मख़सूस जगहें होंगी, ख़िदमतगार ख़िदमत के लिए होंगे उस वक़्त वह (यह इनामात देखकर) किसी चीज़ के

इतने ज़रूरतमन्द नहीं होंगे जितने जुमा के दिन के लिए इस लिए कि अल्लाह के फ़ज़्ल व करम में उससे इज़ाफ़ा होगा।

जुमा के दिन जिब्रील काबा में अपना झंडा नस्ब करते हैं

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद अस्बग़ बिन नबान से रिवायत की है कि उनसे हज़रत अली ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह फ़रमाते थे जुमा का दिन होता है तो जिब्रील अमीन सुबह दम काबा (मस्जिदे हराम) में अपना झंडा नस्ब करते हैं इसी तरह दूसरे फ़रिश्ते भी उन मसाजिद के दरवाज़ों पर जहां जुमा की नमाज़ होती है अपने झंडे और अलम नस्ब कर देते हैं फिर चांदी के कागज़ पर सोने के कलम से जुमा की नमाज़ के लिए आने वालों के नाम बित्तरतीब (आमद) लिखते जाते हैं, जब तरतीबवार आने वालों की तादाद सत्तर हो जाती है तो यह कागज़ तय कर दिए जाते हैं जुमा में बित्तरतीब आने वाले यह सत्तर आदमी उन सत्तर आदमियों की तरह होते हैं जिनका इन्तख़ाब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम से किया था और यह सबके सब नबी थे, उसके बाद फ़रिश्ते सफ़ों में आकर नमाज़ियों को देखते हैं जब किसी नमाज़ी को नहीं पाते हैं तो आपस में पूछते हैं कि फ़लां नमाज़ी कहां है अगर वह फ़ौत हो गया है तो उसके लिए दुआए मग़फ़िरत करते हैं और कहते हैं कि वह जुमा का पाबन्द था, फिर कहते हैं कि फ़लां शख़्स क्यों नहीं आया तो कहते हैं कि फ़लां शख़्स सफ़र में है सवाल करने वाले फ़रिश्ते कहते हैं अल्लाह उसको अपनी अमान में रखे वह जुमा का पाबन्द था फिर दरयाफ़्त करने वाले (फ़रिश्ते) दरयाफ़्त करते हैं कि फ़लां शख़्स का क्या हुआ तो जवाब देते हैं कि फ़लां शख़्स बीमार है तो पूछने वाले फ़रिश्ते उसके लिए सेहत की दुआ करते हैं कि वह जुमा का पाबन्द था।

जुमा के दिन दुआ की कबूलियत की साअत

जुमा के दिन एक साअत ऐसी आती है कि उस साअत में बन्दा अल्लाह तआला से जो कुछ दुआ करता है अल्लाह तआला उसकी दुआ कबूल कर लेता है। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा का कौल नक़्ल किया है कि उन्होंने फ़रमाया कि मैं तूर पर गया वहां मेरी मुलाकात कअब अहबार से हुई मैंने उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस बयान कीं, हमारा उनका किसी चीज़ में इख़तेलाफ़ नहीं हुआ यहां तक कि मैंने यह हदीस बयान की कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया है कि जुमा के दिन एक साअत ऐसी है कि ठीक उस वक़्त अगर कोई मोमिन नमाज़ पढ़ता है और अल्लाह से ऐसी चीज़ की दुआ मांगता है जिसमें ख़ैर हो तो अल्लाह उसको मरहमत फ़रमा देता है। कअब ने कहा क्या हर साल में एक साअत आती है? मैंने कहा कि नहीं बल्कि हर जुमा के दिन। रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने यही फ़रमाया है यह सुनकर कअब कुछ दूर गये और फिर पलट आये और बोले आप ने सच कहा ख़ुदा की कसम ऐसी साअत हर जुमा में है जबकि यह रसूलुल्लाह ने फ़रमाया है। जुमा सय्यदुल अय्याम है और अल्लाह तआला को हर दिन से ज़्यादा पसन्द है, उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश हुई उसी दिन उनको जन्नत में दाख़िल किया गया और उसी दिन वह जन्नत से ज़मीन पर उतारे गये उसी दिन कयामत कायम होगी, जिन्न व इन्स के सिवा ज़मीन पर चलने वाला हर जानवर कान लगाये उस दिन का मुनतज़िर है जो जुमा के दिन वाकेअ होगी।

मैं वापस आकर अब्दुल्लाह बिन सलाम से मिला उनसे वह गुफ़्तगू बयान की जो कअ़ब [illegible] और मुझ से हुई थी, हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कअ़ब ने साल की बात ग़लत कही थी तौरे[illegible] में भी वही है जो रसूल ने फ़रमाया था मैंने कहा कअ़ब ने अपने पहले क़ौल से (साल वाली बा[illegible] से) रूजूअ़ कर लिया था।

अब्दुल्लाह बिन सलाम ने फ़रमाया मुझे मालूम है कि जुमा के दिन वह साअ़त कौन सी [illegible] मैंने कहा कि बताइये वह साअ़त कौन सी है उन्होंने फ़रमाया जुमा के दिन की आख़िरी साअ़त[illegible] मैंने कहा यह किस तरह मुमकिन है कि ठीक उस साअ़त में कोई मोमिन नमाज़ पढ़े (जबकि[illegible] आख़िरी साअ़त नमाज़ का वक़्त नहीं है) उन्होंने फ़रमाया क्या तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाह[illegible] अलैहि वसल्लम का यह इरशाद नहीं सुना कि जो फ़र्ज़ नमाज़ का इन्तज़ार करता है वह गोया नमाज़ ही में होता है, मैंने कहा जी हां, मैंने यह इरशाद सुना है, उन्होंने फ़रमाया बस इसका यही मतलब है।

एक और रिवायत में मोहम्मद बिन सीरीं ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाहा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशा[illegible]रमाया जुमा के दिन [illegible]क साअ़त ऐसी है कि मोमिन अल्लाह तआ़ला से ख़ैर कि दुआ करे तो व[illegible] ज़रूर क़बूल होती है [illegible]र आपने उंगली से इशारा करते हुए कहा कि वह साअ़त बहुत मख़्तसर [illegible]ती है बाज़ [illegible]ने मि[illegible]लत ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के पास बन्दों के उस मोक़र्ररा रिज़्[illegible] अलावह एक रिज़्क़ का फ़ज़्ल और है जिस से सिवाए उस शख़्स के जो जुमेरात की शाम या [illegible] के दिन [illegible]वाल करे किसी और को कुछ नहीं दिया जाता।

शैख़ अबू [illegible]सर ने [illegible] वालिद [illegible]ल असनाद रिवा[illegible] कि है कि मरजाना से हज़रत सय्यदा फ़ातमा [illegible] फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्ल[illegible]हो अ[illegible] वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुमा के दिन एक ऐसी सा[illegible] है कि [illegible] वक़्त [illegible]न्दा अ[illegible]लाह तआ़ला से को ख़ैर का तानिब होता है तो अल्लाहा [illegible]आ़ला उसको ज़रूर अता फ़रमाता [illegible] मैंने अर्ज़ किया कि वह कौन सी साअ़त है? हुजूर [illegible]रमाया जब निस्फ़ सूरज गुरूब कि तरफ़ झुक जाता है।

मरजाना का बयान है कि (उस इरशादे वाला के पेशे नज़र) जब जुमा का दिन होता तो हज़रत फ़ातमा अपने गु[illegible]को हुक्म देती थीं कि वह एक बलन्द मक़ाम पर चढ़ कर यह देखता रहे और जब निस्फ़ सूरज गुरूब की तरफ़ झुक जाए तो उनको आगाह कर दे, चुनांचे ज़ैद ऐसा ही किया करता था, जिस वक़्त ज़ैद आप को ख़बर करता आप फ़ौरन उठकर मस्जिद में तशरीफ़ ले जातीं और जब सूरज गुरूब हो जाता तो नमाज़ अदा फ़रमातीं। कसीर बिन अब्दुल्लाह ने अपने वालिद का और उन्होंने अपने दादा का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जुमा में एक साअ़त ऐसी होती है कि उस वक़्त बन्दा अल्लाह से जो कुछ मांगता है अल्लाह उसका सवाल ज़रूर पूरा कर देता है। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह वह कौन सी घड़ी है? हुजूर ने फ़रमाया इक़ामते सलात से ख़त्मे नमाज़ तक। कसीर बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि जुमा से सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद जुमा कि नमाज़ है।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बयान किया कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते थे कि यह दुआ रसूलुल्लाह पर नाज़िल हुई, हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि

जुमा की (मुक़र्ररा) साअत में मशरिक़ से मग़रिब तक किसी चीज़ के लिए भी अगर दुआ की जाएगी तो ज़रूर क़बूल होगी वह दुआ यह है:

ऐ अज़ीम बख़्शने वाले! ऐ एहसान करने वाले! ऐ आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले! ऐ साहबे जलाल व इकराम! तू पाक है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

सफ़वान बिन सलीम का क़ौल है कि मुझे यह बताया गया है कि जुमा के रोज़ इमाम के मिम्बर पर बैठने के वक़्त जो शख़्स ***ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदहु ला शरीका लहु, लहुल मुल्को व लहुल हम्दो यूह ई व यूमीतो वहो व अला कुल्ले शैइन क़दीर*** कहता है उसको बख़्श दिया जाता है।

हज़रत बरआ बिन आज़िब ने फ़रमाया मैंने ख़ुद सुना है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे कि रमज़ान में दूसरे दिनों पर जुमा को ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है जैसी बाक़ी दिनों पर रमज़ान को फ़ज़ीलत है।

जुमा के दिन दरूद व [illegible]लाम पेश [illegible]रना

जुमा के दिन दरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ना चाहिए

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद [illegible] अली का यह क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़र[illegible]या जुम[illegible] के दिन मुझ पर दरूद ज़्यादा पढ़ा क[illegible] क्योंकि [illegible] रोज़ आ[illegible] (का [illegible]वाब) दो गुन[illegible] कर दिया जाता है और मेरे लिए अल्लाह तआल[illegible] से दरज[illegible] वसीला कि[illegible] दुआ [illegible]ंगा करो [illegible]किसी ने दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह दरज[illegible] वसीला क्य[illegible] है? हुजूर ने फ़रम[illegible] [illegible]न्नत में एक ऐसा आला मक़ाम है जो सिर्फ़ एक नबी को अता होगा और [illegible] यक़ीन ह[illegible] [illegible] म ही [illegible] नबी हूं (जिसको वह मक़ाम अता होगा)।

मोहम्मद बिन मुन[illegible] कहते हैं कि हज़रत जाबिर से रिवायत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़[illegible]या कि जो शख़्स अज़ान सुनकर यह कहेगा अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़ेहिद्दावतित्ताम्मति वस[illegible]तिल क़ाइमती आते मोहम्मद निल वसीलतुल फ़ज़ीला वद्दरजतर्र रफ़ीअता वबअसहू मुक़ामन महमूदा निल्लज़ी व अदतहु। उस शख़्स के लिए मेरी शफ़ाअत हलाल हो गई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि मैंने ख़ुद हुजूरे सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते हुए सुना कि रौशन रात और रौशन दिन यानी जुमा की रात और जुमा के दिन (जिस की रात भी रौशन और दिन भी रौशन है) अपने पैग़म्बर पर कसरत से दरूद पढ़ा करो।

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन हबीब कि रिवायत

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन हबीब से मरवी है कि हज़रत अनस बिन मालिक ने फ़रमाया कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में खड़ा था, आप ने फ़रमाया जो शख़्स हर जुमा को अस्सी बार दरूद मुझ पर पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसके अस्सी बरस के गुनाह माफ़ फ़रमा देगा यह सुन कर मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हुज़ूर पर दरूद शरीफ़ कैसे पढ़ा जाए,

हुज़ूर वाला ने फ़रमाया यूं कहो अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन अब्देका व रसूलेकन नबीयुल उम्मी और उंगलियों पर (तादाद) शुमार करो।

हज़रत अबू अमामा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हर जुमा के रोज़ मुझ पर कसरत से दरूद पढ़ा करो क्योंकि मेरे उम्मत का दरूद हर जुमा के दिन मेरे सामने लाया जाता है पस जो ज़्यादा दरूद पढ़ने वाला है वह क़यामत के दिन मुझ से ज़्यादा क़रीब होगा।

जुमा की सुब्ह की नमाज़ और मसनून सूरतें

हज़रत अब्दुल्लाह की रिवायत

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत अब्दुल्लाह का क़ौल नक़्ल किया है कि जुमा के दिन सुब्ह की नमाज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सूरह अलिफ़ लाम मीम, सजदा और सूरह हल अता तिलावत फ़रमाया करते थे। एक रिवायत में मग़रिब की नमाज़ के सिलसिले में आया है कि आप सूरत कुल या अय्योहल काफ़ेरून और कुल होवल्लाहो अहद पढ़ा करते थे, इशा की नमाज में सूरह जुमा और अल मुनाफ़ेकून की क़िरअत फ़रमाते थे। रिवायत है कि जुमा की नमाज़ में भी हुज़ूर यही दो सूरतें पढ़ा करते थे।

हज़रत हसन बसरी ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सुबे जुमा में जिसने सूरह यासीन, हा मीम और अद्दख़ान पढ़ी तो जब वह सुबह को उठता है तो उसकी मग़फ़िरत हो चुकी होती है (उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं) रिवायत है कि जिसने जुमा के दिन सूरह कहफ़ पढ़ी वह उस शख़्स के बराबर हो गया जिसने दस हज़ार दीनार ख़ैरात किये, शबे जुमा और रोज़े जुमा में चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़ना मुस्तहब है कि चार रकअतों में वह चार सूरतें पढ़े सूरह अनआम, सूरह कहफ़, सूरह ताहा और सूरह मुल्क। अगर तमाम सूरतों को अच्छी तरह नहीं पढ़ सकता तो जितना अच्छी तरह पढ़ सकता है तो उतना ही पढ़े क्योंकि कहा गया है कि ख़त्मे कुरआन बक़द्रे इल्म कुरआन है यानी अगर किसी को कुरआन अच्छी तरह याद न हो तो जितना याद हो उसका उतना ही पढ़ना ख़त्मे कुरआन होगा। अगर किसी को पूरा कुरआन याद है तो उसके लिए मुस्तहब है कि जुमा के दिन पूरा ख़त्मे कुरआन करे। अगर दिन में मुकम्मल न हो हो सके तो रात में भी पढ़े और ख़त्म करे। अगर फ़ज्र या मग़रिब की दो रकअतों में आख़िरी हिस्सा को ख़त्म किया जाए तो उसकी बड़ी फ़ज़ीलत आई है अगर दस बीस रकअतों में हज़ार मरतबा कुल हो वल्लाहो अहद (सूरह इख़लास) पढ़ेगा तो यह भी फ़ज़ीलत में ख़त्मे कुरआन से ज़्यादा होगा।

जुमा के रोज़ हज़ार मरतबा दरूद शरीफ़ पढ़ना

जुमा के दिन हज़ार मरतबा दरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है, इसी तरह हज़ार बार तस्बीह पढ़ना भी मुस्तहब है तस्बीह के चार कलमात यह हैं।

सुब्हानल्लाहि वल हम्दो लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर

सय्यदुल अय्याम

जुमा की वजहे तसमिया

वजहे तसमिया की एक रिवायत

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से उनकी असनाद व रिवायत के साथ हज़रत सलमान से रिवायत किया है कि उन्होंने फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे इरशाद फ़रमाया कि तुम जानते हो कि जुमा का नाम जुमा क्यों हुआ? मैंने अर्ज़ किया नहीं, हुज़ूर ने फ़रमाया इसलिए कि उस रोज तुम्हारे बाप आदम के ख़मीर को जमा किया गया था, इस लिए उसका नाम जुमा रखा गया। जिस शख़्स ने उस दिन अच्छी तरह गुस्ल किया और अच्छी तरह वज़ू करके नमाज़े जुमा अदा की तो एक जुमा से दूसरे जुमा तक उसके तमाम सग़ीरा गुनाह माफ़ कर दिए जाएंगे बशर्ते कि वह कबीरा गुनाहों [illegible] बाज़ रहे। बाज़ उलम[illegible] कराम ने फ़रमाया है कि उस दिन का नाम लफ़्ज़ इजतिमा से माख़ूज़ [illegible] हज़रत आदम अलै[illegible]सलाम का पुतला चालिस बरस तक ख़मीर होता रहा फिर रूह को उसी दिन उस ख़म[illegible] डाल[illegible] गया। बाज़ का क़ौल है कि हज़रत हव्वा को हज़रत आदम अलैहिस्स[illegible] की पसली [illegible] जब [illegible]दा किया गया तो उसी रोज़ दोनों का इजतेमा हुआ था। बाज़ कहते हैं [illegible]ील जुदा[illegible] के बाद हज़रत आदम व हज़रत हव्वा का उसी रोज इजतेमा हुआ था। एक क़ौल य[illegible] भी है [illegible]कि उस रोज़ शहर और देहात के बाशि[illegible]दे (अदाए [illegible]ाज़ के लि[illegible] जमा होते हैं। यह [illegible] कहा गया है कि यौमे क़यामत का नाम यौमुल[illegible]मा है। अल्ला[illegible] तआला क[illegible] इरश[illegible] है: औ[illegible] जिस रोज़ तुम्हें जमा होने के लिए जमा किया जाएग[illegible]।

बाब 17

तौबा, तहारते क़ल्ब, इख़लास और रियाकारी

तौबा और तौबा करने वाले

बरकत वाले महीनों के रोज़े, कुरबानी, नमाज़ और अज़कार जिनका ज़िक्र अब तक किया गया है आइन्दा हम बयान करेंगे उन सब की क़बूलियत, तौबा, दिल की पाकी और इख़लासे अमल और रियाकारी को तर्क करने के बाद होती है। तौबा के सिलसिले में इससे क़ब्ल हम कह चुके हैं यहां इस सिलसिले में मज़ीद यह कहना है कि अल्लाह तआला तौबा करने वालों को दोस्त रखता है और गुनाहों से पाक होने वालों से मोहब्बत करता है। इरशा[illegible] है: अल्लाह कसरत से तौबा करने वाले को पसन्द करता है, ख़ूब पाक [illegible]ने वालों से मोहब्बत [illegible]रता है। इस आयत की तशरीह व तफ़सीर में हज़रत अता, मक़ातिल [illegible] कलबी ने कहा है कि [illegible]ल्लाह गुनाहों से तौबा करने वालों को दोस्त रखता है और नजासत, ज[illegible]बत, हैज़ [illegible] वुज़ू [illegible]ड़ने वाली चीज़ों की नापाकी को पानी (यानी गुस्ल और वुज़ू) से दूर [illegible]रने वालों [illegible] [illegible]स्त [illegible]ता है, इसकी वज़ाहत अहले क़बा के सिलसिले में नाज़िल हो[illegible]ने वाली [illegible]से होती है। अहले क़बा की पाकी तहारत की सिलसिले में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: इसम[illegible] वह लो[illegible] हैं जो ख़ूब पाक होने को पसन्द कर[illegible] हैं। रसू[illegible]ह सल्ल[illegible]हो अ[illegible]हि वसल्लम [illegible] क़बा वालों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम तहारत [illegible] का क्या अमल करते हो। [illegible]न्होंने [illegible]र्ज़ किया [illegible] हम पत्थरियों से सफ़ाई करने के बाद पानी से [illegible]स्तिन्जा कर[illegible] हैं।

मुजाहिद कह[illegible] है कि [illegible]नाहों से [illegible]कसरत तौबा करने वा[illegible] को अल्लाह तआला पसन्द फ़रमाता है और तह[illegible] [illegible]रने वालों को दोस्त रखता है। औरतों के पिछले मक़ाम (दुबुर) में लिवातत करने वाला प[illegible]हीं है। औरत हो या मर्द दोनों से लिवातत का एक ही हुक्म है। बाज़ ने कहा है कि गुनाहों से तौबा [illegible]ने वाले और शिर्क से पाक होने वाले लोगों से मुराद है। अबुल मिनहाल ने कहा है कि मैं [illegible]ू आलिया के पास मौजूद था उन्होंने अच्छी तरह वुज़ू किया (उनकी यह हालत देखकर) मैंने कहा इन्नल्लाहा यक़ूब्बुल तव्वाबैना व यूहिब्बुल मोत्तहहरीन, फ़रमाया किस चीज़ से पाकी के बारे में फ़रमाया गया है, पाकी यक़ीनन अच्छी चीज़ है लेकिन इस आयत में से मुराद उन लोगों से है जो गुनाहों से ख़ूब पाक होते हैं (यानी यह आयत उन लोगों के सिलसिले में है।)

हज़रत सईद बिन जुबैर का क़ौल

सईद बिन जुबैर कहते हैं कि इसके मानी हैं अल्लाह शिर्क से तौबा करने वालों और गुनाहों से पाक होने वालों को पसन्द करता है। यह भी कहा गया है कि कुफ़्र से तौबा करने वाले और ईमान से तहारत हासिल करने वाले इससे मुराद हैं। एक क़ौल यह भी है कि गुनाहों से तौबा करने वाले वह हैं जो दुबारा गुनाहों की तरफ़ न लौटें और गुनाहों से पाक रहने वाले वह हैं

जिनसे गुनाह सरज़द न होते हों। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद कबीरा गुनाहों से तौबा करने वाले और सग़ीरा गुनाहों से पाक रहने वाले मुराद हैं। एक क़ौल यह है कि इससे बुरे कामों से तौबा करने वाले और बुरी बातों से पाक रहने वाले लोग मुराद हैं।

एक क़ौल यह है कि बुरे अफ़आल से तौबा करने वाले और अक़वाले बद से पाक व साफ़ रहने वाले मुराद हैं। एक क़ौल यह है कि गुनाहों से तौबा करने वाले और जुर्मों से पाक व साफ़ रहने वाले मुराद हैं। एक क़ौल है कि गुनाहों से तौबा करने वाले और ऐबों से पाक व साफ़ रहने वाले मुराद हैं। एक क़ौल यह भी है कि ख़ुलूस से तौबा करने वाला वह है कि जब भी गुनाह सरज़द हो फ़ौरन तौबा कर ले जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: अल्लाह तआला की तरफ़ कसरत से रुजूअ करने वाले को अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत

मोहम्मद बिन मनकदर की रिवायत है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुमसे पहले लोगों में से एक शख़्स का गुज़र एक खोपड़ी पर हुआ (उसने एक खोपड़ी देखी) खोपड़ी देख कर उसने कहा, इलाही तू तू ही है और मैं मैं ही हूं तू बार बार मग़फ़िरत फ़रमाता है और मैं बार बार गुनाहों में मुब्तला हो जाता हूं यह कह कर वह सज्दे में गिर पड़ा, अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ऐ बन्दे सर उठा, मैं बार बार मग़फ़िरत करने वाला हूं और तू बार बार गुनाह करने वाला है, जब उस शख़्स ने सज्दे से सर उठाया तो उसकी बख़्शिश कर दी गई।

इख़लास

ख़ालिस इताअत

आमाल के इख़लास के बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है:

उनको सिर्फ़ इस बात का हुक्म दिया गया है कि वह अल्लाह की इबादत करें और इताअते ख़ालिस उसी की करें। [illegible]सिला की दूसरी आयत है: सुन लो (आगाह रहो) अल्लाह ही की ख़ालिस इताअत करना चाहिए। मज़ीद इरशाद फ़रमाया है कि:

अल्लाह को कुरबानियों का गोश्त और ख़ून नहीं पहुंचता मगर तुम्हारी परहेज़गारी पहुंच जाती है।

एक और आयत में इरशाद फ़रमाया:

हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं हम तो उसी के लिए अमले ख़ालिस करते हैं।

इख़लास के मानी

इख़लास के क्या मानी हैं इस सिलसिले में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत हुज़ैफ़ा से दरयाफ़्त किया कि इख़लास क्या चीज़ है? उन्होंने जवाब दिया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया था कि इख़लास की क्या

हक़ीक़त है? तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि मैंने जिब्रील अलैहिस्लाम से यह सवाल किया था कि इख़लास क्या है? जिब्रील अलैहिस्लाम ने कहा मैंने अल्लाह तआ़ला से दरख़्वास्त की कि इख़लास से क्या मुराद है? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह मेरे राज़ों में से एक राज़ है, मैं अपने बन्दों में से जिसके दिल में चाहता हूं उसको अमानत के तौर पर रखता हूं।

अबू इद्रीस ख़ोलानी ने कहा कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि बिला शुबहा हर हक़ की एक हक़ीक़त है बन्दा इख़लास की हक़ीक़त को उस वक़्त तक नहीं पहुंचता जब तक ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिए किये हुए अमल पर अपनी तारीफ़ को नापसन्द न करने लगे (यानी तारीफ़ को पसन्द न करे)।

हज़रत सईद बिन जुबैर के नज़दीक इख़लास के मानी

सईद बिन जुबैर ने फ़रमाया इख़लास यह है कि अपनी ताअ़त और अमल को ख़ालिस अल्लाह के लिए करे और ताअ़त में किसी को उसका शरीक न बनाये और उसके किसी अमल में रियाकारी न हो, हज़रत फ़ुज़ैल रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया कि लोगों की ख़ातिर या लिहाज़ से अमल करना शिर्क है और लोगों की ख़ातिर उसको तर्क कर देना रिया है। इख़लास यह है कि तुम को डर लगा रहे कि अल्लाह तआ़ला उन दोनों बातों की सज़ा देगा। हज़रत यहया बिन मआ़ज़ फ़रमाते हैं कि अमल को उयूब से इस तरह पाक व साफ़ निकाल लेना इख़लास है जिस तरह गोबर और ख़ून से दूध खींच कर निकाल लिया जाता है। अबुल हसन बूशन्जी कहते हैं कि इख़लास वह चीज़ है जिसको न फ़रिश्ते लिखें और न शैतान उसको बिगाड़े और न किसी इंसान को उसकी इत्तेला हो।

शैख़ रूयम ने कहा कि अमल से नज़र का बुलन्द होना इख़लास है (यानी अमल पर नज़र न रहना) बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि इख़लास वह है जिसके साथ हक़ का इरादा किया जाये यानी जिस काम में महज़ हक़ की तलब और सदाक़त का अज़्म हो वह इख़लास है। यह भी कहा गया है कि इख़लास यह है जिसमें ख़राबियों की आमेज़िश और तावीलाते जव्राज़ की तलाश न हो। एक क़ौल यह भी है कि वह अमल जो मख़लूक़ से पोशीदा हो और नक़ाएस से पाक हो उसका नाम इख़लास है। हज़रत हुज़ैफ़ा का क़ौल है कि ज़ाहिर व बातिन की यकसानियत का नाम इख़लास है। शैख़ अबू याकूब मकफ़ूफ़ ने कहा कि जिस तरह बुराईयों को छुपाया जाता है उसी तरह नेकियों को छुपाना इख़लास है। सहल बिल अब्दुल्लाह ने कहा कि अपने अमल (नेक) को हेच व हक़ीर समझना इख़लास है। हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तीन बातें हैं जिनमें मुसलमान के दिल को ख़ियानत नहीं करना चाहिए। अल्लाह के लिए ख़ुलूसे अमल, हुक्काम की ख़ैर ख़्वाही और मुसलमानों की जमाअ़त के साथ रहना।

एक क़ौल के बमौजिब इख़लास यह है कि इताअ़ते हक़ में मख़लूक़ की ख़ुशनूदी को न मिलाना (यानी मख़लूक़ की ख़ुशनूदी से इताअ़ते हक़ को अलग रखना) न मख़लूक़ से तारीफ़ हासिल करने के लिए, न किसी की तरफ़ से मोहब्बत के हुसूल के लिए (कि कोई इख़्लास को देखकर उससे मोहब्बत करने लगे) न इसलिए अमल करना कि मख़लूक़ की ज़बान से मलामत और मज़म्मत को रफ़ा करे (यानी बन्दा के अमल और इख़लास की बिना पर लोग उसकी

मुज़म्मत नहीं करेंगे)।

कहा गया है कि मख़लूक़ की ख़ातिर और उसके लिहाज़ व पास से अपने अमल को पाक रखना इख़लास है। हज़रत ज़ुन्नून मिस्री फ़रमाते थे कि जब तक इख़लास में सच्चाई और इस्तिकलाल न हो इख़लास की तकमील नहीं होती और जब तक सच्चाई और सिद्क़ में इख़लास व दाम न हो सच्चाई कामिल नहीं होती।

अबू याकूब मूसा का क़ौल है कि जब तक लोग अपने इख़लास में इख़लास देखते रहेंगे (यानी इख़लास का दावा रहेगा) उनका वह इख़लास सदा ख़ुलूस का मुहताज रहेगा। हज़रत ज़ुन्नून मिस्री का क़ौल है कि इख़लास की तीन निशानियां हैं अवाम की मदह व ज़म दोनों उसके लिए बराबर हों, अपने अच्छे आमाल को न देखना, अच्छे आमाल पर आख़िरत में सवाब की तलब को फ़रामोश कर देना। हज़रत ज़ुन्नून का यह क़ौल भी है कि इख़लास वह है कि जिसे दुश्मन ख़राब न कर सके।

इख़लास के दर्जे

अबू उसमान मग़रबी ने कहा है कि एक इख़लास तो वह है जिसके अन्दर नफ़्स को कोई हिस्सा किसी हाल में न हो यह अवाम का इख़लास है ख़वास का इख़लास वह है कि बग़ैर इरादा खुद बखुद आमाले हसना का सुदूर हो, उनसे ताअत का ज़हूर बग़ैर क़स्द के होता है और उनसे इस सिलसिला में कोई ऐसी अलामत ज़ाहिर न हो जिससे उस अम्र का इज़हार हो कि उन को ताअत मलहूज़ थी।

हक़ीक़ी इख़लास

हज़रत अबू बकर दक़्क़ाक़ फ़रमाते हैं कि हर मुख़लिस को अपने इख़लास के देखने से नुक़सान पहुंचता है। अल्लाह तआला जब किसी के इख़लास को पसन्द फ़रमा लेता है तो फिर उसके इख़लास को उसकी नज़र से गिरा देता है यानी मुख़लिस अपने इख़लास पर नज़र नहीं रखता। इस तरह वह मुख़लिस अपने इख़लास को इख़लास ही नहीं समझता इस तरह वह ख़ुदा की नज़र में पसन्दीदा हो जाता है।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह का इरशाद

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह का इरशाद है कि सिर्फ़ मुख़लिस ही रिया को पहचान सकता है। हज़रत अबू सईद मराज़ का क़ौल है कि अहले मारफ़त का रिया अहले इरादा के इख़लास से बेहतर है यानी वह इख़लास जो इरादा से हो उन अहले मारफ़त के रिया से भी कम तर दर्जा की चीज़ है। अबू उसमान कहते हैं कि ख़ालिक़ की तरफ़ हमेशा निगाह रखने वाला मख़लूक़ की तरफ़ देखना भूल जाता है यही इख़लास है। एक क़ौल यह भी है कि इख़लास वह है जिस में सिर्फ़ हक़्क़े मतलूब और सिद्क़े मक़सूद होता है। एक क़ौल यह भी है कि अपने आमाल पर नज़र नखने से गुरेज़ और ऐराज़ इख़लास है। हज़रत सिरीं सिक़ती ने कहा कि जो शख़्स लोगों के दिखाने के लिए उन चीज़ों से आरास्ता हो जो उसके अन्दर मौजूद नहीं हैं वह अल्लाह की नज़र से गिर जाता है।

हज़रत जुनैद बग़दादी का इरशाद है कि इख़लास ख़ुदा और बन्दे के माबैन एक ऐसा राज़

है जिससे न कोई फ़रिश्ता वाक़िफ़ है कि उसको लिख सके और न शैतान उससे आगाह है कि उसको इख़लास से रोक सके।

हज़रत रूयम फ़रमाते हैं कि अमल में इख़लास यह है कि अमल करने वाला दोनों जहां में अपने उस अमल पर अज्र की उम्मीद न रखे न देखने वाले दोनों फ़रिश्तों से (अज्र के) कुछ हिस्से का ख़्वास्तगार हो (कि वह उसके अमल को लिखेंगे तो उसको कुछ न कुछ अज्र मिलेगा)

सहल इब्न अब्दुल्लाह से पूछा गया कि नफ़्स के लिए सबसे ज़्यादा दुश्वार क्या चीज़ है उन्होंने फ़रमाया इख़लास। इसलिए कि नफ़्स के लिए उसमें कुछ हिस्सा नहीं है। एक क़ौल यह भी है कि इख़लास ऐसी चीज़ है कि अल्लाह तआला के सिवा उससे कोई और बाख़बर नहीं होता एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं कि जुमा के दिन अस्र से पहले हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह के पास पहुंचा मैंने देखा कि उनके हुजरे में एक सांप है मैं एक क़दम आगे बढ़ाता और फिर एक क़दम पीछे हट जाता, सांप का डर मुझ पर ग़ालिब आ गया था हज़रत सहल ने अन्दर से आवाज़ दी क्यों डरते हो अन्दर आ जाओ जिस का ईमान खुदा पर हो उससे हर चीज़ डरती है फिर फ़रमाया कि तुम जुमा पढ़ना चाहते हो? मैंने अर्ज़ किया कि हमारे और जामा मस्जिद के माबैन एक दिन रात की मुसाफ़त है, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और रवाना हो गये हम लोग थोड़ी ही दूर चले थे कि जामा मस्जिद सामने नज़र आने लगी, हमने नमाज़े जुमा अदा की फिर बाहर निकल आये हज़रत सहल रूक गये और मस्जिद से निकलने वालों को देखने लगे फिर फ़रमाया कि कलमए तौहीद पढ़ने वाले तो बहुत हैं लेकिन उन मुख़लिस (साहिबाने इख़लास) बहुत कम हैं।

तवक्कल व इख़लास

एक बार मैं (हज़रत मुसन्निफ़) हज़रत इब्राहीम की हमराही में सफ़र कर रहा था हम एक ऐसी जगह पहुंचे जहां सांप बकसरत थे हज़रत इब्राहीम ख़्वास ने अपना आफ़ताबा रख दिया और वहां बैठ गये जब रात हुई तो सांप बाहर निकल आये मैंने हज़रत इब्राहीम को आवाज़ दी उन्होंने फ़रमाया कि ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहो मैं ज़िक्र में मशगूल हो गया आये हुए सांप लौट गये, थोड़ी देर बाद वह फिर पलट पड़े मैंने शैख़ को पुकारा शैख़ ने फिर फ़रमाया कि ज़िक्र में मसरूफ़ रहो सुबह तक ऐसी ही हालत रही सुबह को हज़रत शैख़ रवाना हुए मैं भी उन के साथ चल पड़ा रवाना होते वक़्त शैख़ के बिस्तर से एक बहुत बड़ा सांप गिरा जो कुन्डली मारे बिस्तर में मौजूद था मैंने कहा क्या आप को उस सांप का एहसास भी नहीं हुआ उन्होंने फ़रमाया नहीं, एक मुद्दत के बाद मेरी रात ऐसी अच्छी तरह गुज़री। अबू उसमान फ़रमाते हैं जिसने वहशत की ग़फ़लत का मज़ा नहीं चखा (दुनियावी वहशत में मुब्तला नहीं हुआ) उसने ज़िक्र की मोहब्बत की लज़्ज़त हासिल नहीं की।

दिल की पाकीज़गी

नापाक नफ़्स इंसान के दर पै आज़ार है

हर आबिद व हर आरिफ़ को हर सूरत में रियाकारी, मख़लूक़ के दिखावे और ख़ुद पसन्दी से बचना चाहिए क्योंकि यह ख़बीस नफ़्स हर इंसान के दर पै है। यह नफ़्स गुमराह करने वाली

ख़्वाहिशात, तबाह व बर्बाद करने वाली रग़बतों और उन लज़्ज़तों का सर चश्मा और मम्बा है जो ख़ुदा और बन्दे के दर्मियान एक हिजाब (पर्दा) बन जाती हैं। जब तक बदन में रूह मौजूद है उसकी तबाह कुन ख़्वाहिशात से बचना बहुत मुशकिल है ख़्वाह इंसान अबदाल या सिद्दीक़ीन के मरतबा पर पहुंच जाये ख़्वाह उसकी मौजूदा हालत उसकी साबिक़ा हालत के मुक़ाबले में ज़्यादा अमन व सलामती की हो (ऐसे दर्जा पर हो जहां नफ़्स की फ़रेब कारियों से अमन हासिल रहता हो) ख़ैर ग़ालिब हो, नूरे मारफ़त की फ़रावानी हो, हिदायत शरीके हाल और तौफ़ीक़े इलाही मुमिद्द व मुआविन हो और अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त मयस्सर हो बईं हमा गुनाह से मामून व मसून रहना हमारी खुसूसियत नहीं है (अवामुन्नास का ख़ास्सा नहीं है) बल्कि मासूम अनिल ख़ता तो अंबिया अलैहिमुस्सलाम हैं नबुव्वत और विलायत का फ़र्क़ उसी से होता है (यानी वली मासूम नहीं होता नबी मासूम होता है)

रियाकारी

रियाकारों को तहदीद

अल्लाह तआला ने रियाकारों और शर पसन्दों को डराते हुए नफ़्स की ख़बासते दुनियवी और उसके ख़तरात से ख़बरदार फ़रमाया है और नफ़्स की पैरवी से मना फ़रमाया है उसकी मुख़ालिफ़त का हुक्म कभी कुरआन से और कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने वही तरजुमान से फ़रमाया, इरशादे रब्बानी है:

उन नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी व तबाही है जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। दिखवा करते हैं और मामूली इस्तेमाल की चीज़ों को भी ज़रूरत मन्दों से रोके रखते हैं।

एक दूसरी आयत में इरशाद होता है:

वह मुंह से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं होतीं, अल्लाह उनकी छुपाई हुई बातों से ख़ूब वाक़िफ़ है।

एक और जगह इरशाद फ़रमाया गया:

जब नमाज़ को उठते हैं तो कसल और सुस्ती के साथ (महज़) लोगों के दिखावे को (उठते हैं) और अल्लाह की याद कम करते हैं। लोग दोनों गरोहों के दर्मियान डांवा डोल (फिर रहे) हैं न एक तरफ़ न दूसरी तरफ़।

एक और आयत में इरशाद है:

आलिमों और आबिदों में (बनी इस्राईल के) बहुत से ऐसे हैं जो बातिल तरीक़ों से लोगों का माल खाते हैं और दूसरों को अल्लाह के राह से रोकते हैं।

एक और आयत में फ़रमाया है:

ऐ वह लोगो जो ईमान ला चुके हो जो बात करते नहीं वह कहते क्यों हो? अल्लाह को यह बात बहुत नापसंद है कि ऐसी बात कहो जो करते नहीं।

एक और आयत में आया है:

ख़्वाह तुम पोशीदा तरीक़े से बात कहो या ज़ाहिर करके, जो कुछ तुम्हारे दिल में है अल्लाह तआला उससे बख़ूबी वाक़िफ़ है

मज़ीद इरशाद फ़रमाया:

जो अल्लाह के पाक दीदार का ख़्वास्तगार और तालिब है उसको नेक अमल के लिए कह दीजिए और उससे कह दीजिए कि अल्लाह की इबादत में किसी और को शरीक न कर।

एक और आयत है:

नफ़्स तो बहुत ज़्यादा बुराई का हुक्म देता है मगर वह महफ़ूज़ रहता है जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाए।

एक और मक़ाम पर इरशाद हुआ:

और तबाए बुख़्ल पर हाज़िर रखी जाती हैं (तबाए बुख़्ल पर आमादा रहती हैं)

एक और मक़ाम पर हुक्म फ़रमाया:

ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी न करो अगर ऐसा करोगे तो वह तुम को राहे ख़ुदा से गुमराह कर देगा।

अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम से फ़रमाया था ऐ दाऊद अपने नफ़्स की ख़्वाहिश को छोड़ दो, ख़्वाहिशे नफ़्स के अलावा मेरी हुकूमत में मुझसे झगड़ने वाला कोई और नहीं है।

रिया की मज़म्मत में अहादीसे शरीफ़ा

हज़रत शद्दाद बिन औन्स से एक हदीस मरवी है उन्होंने कहा कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने चेहरए अनवर पर कुछ ऐसे आसार देखे जिन से मुझे बहुत दुख हुआ, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हुज़ूर का यह क्या हाल है? हुज़ूर वाला ने फ़रमाया मुझे अपनी उम्मत के मुशरिक होने का अन्देशा है। मैंने अर्ज़ किया क्या हुज़ूर के बाद लोग शिर्क में मुब्तला हो जायेंगे? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह सूरज, चांद, बुत और पत्थर की तो यक़ीनन पूजा नहीं करेंगे मगर आमाल में रिया करेंगे और रिया ही शिर्क हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया है कि क़यामत के दिन कुछ मुहर कर्दा आमाल नामे [illegible] जायेंगे उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाएगा इस आमाल नामे को फेंक दो ओर इसको [illegible] कर लो, फ़रिश्ते बारगाहे इलाही में अर्ज़ करेंगे इलाही! तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! हम तो उन आमाल में ख़ैर ही मालूम होई थी। अल्लाह तआला फ़रमायेगा हां लेकिन यह अमल तो दूसरों के लिए था मैं सिर्फ़ वही अमल क़बूल करता हूं जो ख़ालिसन मेरे लिए हो (जिस का मक़सद सिर्फ़ मेरी ज़ात हो)।

रसूलुल्लाह की दुआ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी दुआ में फ़रमाया करते थे, इलाही मेरी ज़बान को झूठ से पाक फ़रमा, मेरे दिल को निफ़ाक़ से, मेरे अमल को रिया से, मेरी आंख को ख़्यानत से पाक फ़रमा, तू आंखों की ख़्यानत और दिलों के पोशीदा अहवाल को जानता है।

किस आलिम की सोहबत में बैठना चाहिए

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐसे आलिम की सोहबत में बैठो जो पांच चीज़ों को छुड़ा कर पांच चीज़ों की तरग़ीब देता हो: दुनिया की रग़बत से निकाल

कर जुहद की तरग़ीब देता हो, रिया से निकाल कर इख़लास की तालीम दे, गुरूर से छुड़ा कर तवाज़ो की तरग़ीब, काहिली और सुस्ती से बचा कर पिन्द व नसीहत करने की तरग़ीब, जिहालत से निकाल कर इल्म की तरग़ीब दे।

हुज़ूर सरवरे कायनात का एक और इरशाद

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का इरशाद है मैं हर शरीक से बेहतर हूं जो शख़्स किसी को मेरे साथ अपने अमल में शरीक करेगा तो उसका अमल उसी शरीक के लिए होगा मेरे लिए नहीं होगा, मैं तो सिर्फ़ उसी अमल को क़बूल करता हूं जो महज़ मेरे लिए किया गया हो, ऐ इंसान मैं सबसे अच्छा हिस्सादार हूं देख जो अमल तू ने मेरे लिए नहीं बल्कि दूसरे के लिए किया तो उसका अज्र भी उसी के ज़िम्मा है जिस के लिए तू ने वह अमल किया।

एक और इरशाद गरामी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़[illegible]या इस उम्मत को ब[illegible]रत दे दो कि दीन में उसको बुज़ुर्गी हासिल है और शहरों पर क़ब्ज़ा और [illegible]रफ़्त, जब तक वह दी[illegible] का काम दुनिया के हुसूल के लिए न करें यानी मुसलमानों को तमाम दु[illegible]या में उस व[illegible]क बु[illegible]र्गी और दुनिया के शहरों पर उनकी हुकूमत रहेगी जब तक वह दीन [illegible]म दुनिया [illegible] हुसूल के लिए नहीं करेंगे, उनके आमाल ख़ालिस रहेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व[illegible]लम ने इरशाद फ़रमाया कि आख़िरत की नियत [illegible] (अमल क[illegible] वाले को) अल्लाह [illegible]आला दुनिया भी देता है लेकिन दुनिया की नि[illegible] पर (अ[illegible] करने वा[illegible]) अ[illegible]ख़िरत नहीं [illegible]लेगी।

हज़रत अन[illegible] बिन मालि[illegible] से मरवी है कि[illegible] सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया [illegible] मेराज [illegible] मेरा गुज़[illegible]से लोगों की तरफ़ हु[illegible]जिन के होंठ आग की कैंचियों से काटे जा रहे थे [illegible] [illegible]ील अमीन से दरयाफ़्त किया कि यह कौन लोग हैं, उन्होंने जवाब दिया यह आप की उ[illegible]के वाएज़ हैं कि दूसरों से तो कहते थे और ख़ुद उस काम को नहीं करते थे जिस चीज़ को वह अ[illegible] जानते थे उसका हुक्म दूसरों को देते थे और ख़ुद वह काम करते थे जिनको वह बु[illegible]हते थे, लोगों को नेकी का हुक्म देते थे और अपने आप को भूल जाते थे।

सबसे बड़ा अंदेशा

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे अपनी उम्मत के मुताल्लिक़ सबसे बड़ा अंदेशा उस मुनाफ़िक़ से है जिसकी ज़बान दराज़ हो (बहुत बोलने वाला) क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि उस वक़्त तक क़यामत बरपा नहीं होगी जब तक तुम लोगों पर झूठे हाकिम, बद किरदार वज़ीर, ख़ाइन अमीर, ज़ालिम पेशकार, फ़ासिक़ व फ़ाजिर, क़ारी और जाहिल आबिद मुसल्लत न हो जायेंगे। जब ऐसा वक़्त आ जायेगा तो अल्लाह तआला उन फ़ितनों के तारीक (सियाह) दरवाज़े खोल देगा जिसके अन्दर वह ज़ालिम यहूदियों की तरह हैरान व परेशान फिरते रहेंगे, यह वक़्त ऐसा (नाज़ुक) होगा, इस्लाम का क़ब्ज़ा आहिस्ता आहिस्ता कमज़ोर होता जायेगा और फिर एक वक़्त ऐसा आ जायेगा कि अल्लाह अल्लाह भी नहीं

कहा जायेगा (मुसलमान इस्लाम से बहुत दूर हो जायेंगे)।

दर्दनाक अज़ाब

हज़रत अद्दी बिन हातिम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन कुछ लोगों को सख़्त अज़ाब में मुब्तला किया जाएगा, अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएगाः क्या तुम तन्हाई में मेरे सामने बड़े बड़े गुनाह नहीं करते थे लेकिन जब तुम लोगों से मिलते थे तो बड़ी आजज़ी और इन्कसार के साथ मिलते थे, तुम लोगों से डरते थे लेकिन मुझसे नहीं डरते थे, तुमने लोगों को बड़ा जाना लेकिन मुझे बड़ा नहीं समझा, अपनी इज़्ज़त की क़सम आज मैं तुमको दर्दनाक अज़ाब दूंगा।

हज़रत ओसामा बिन ज़ैद से मरवी है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना कि एक आदमी को दोज़ख़ में डाला जाएगा तो उसकी आंतें बाहर निकल पड़ेंगी वह अपनी आंतों को खींचता हुआ चक्की की तरह घूमता फिरेगा उससे पूछा जाएगा क्या तू नेकी का हुक्म लोगों को नहीं देता था, क्या उनको बुरी [illegible]तों से मना नहीं करता [illegible]? वह जवाब देगा मैं अच्छे काम करने का दूसरों को हुक्म देता था [illegible]न ख़ुद नहीं करता [illegible] इसी तरह दूसरों को बुरी बातों से रोकता था मगर ख़ुद मैं ऐसी बातें क[illegible]ता था।

दिखावे का रोज़ा और उसकी जज़ा

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़[illegible] कि बह[illegible] से रोज़ादारों को भूक प्यास के सिवा रोज़ा से [illegible] कुछ हा[illegible] नहीं होता, इसी त[illegible]ह बहु[illegible] से शब बेदार नमाज़ियों को उनकी शब बेदारी [illegible]सवाए नमा[illegible]के [illegible] कुछ हासि[illegible] नहीं होता (शब बेदारी से कुछ हासिल नहीं होता) हजूर वाला [illegible] यह भी इ[illegible]शाद [illegible] (उन लोगों की इस ज़ाहिर परस्ती से) अर्श लरज़ जा[illegible] है और [illegible]ल्लाह तअ[illegible] ग़ज़बना[illegible] है। [illegible]लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद [illegible]रमाया वह बन्दा बुरा है जिसके और सवाब [illegible]लाही के दर्मियान कोई दूसरा बन्दा हाएल हो जाए [illegible] बन्दा इबादत इसलिए करता है कि जो दूसरे शख़्स के पास है वह उसको मिल जाए। वह उस बन्[illegible] ख़ुशनूदी के हुसूल के लिए अपने जिस्म को थकाता है लेकिन उस का नतीजा यह होता [illegible] के वह अपने दीन से भी महरूम हो जाता है और उसको इज़्ज़त से भी हाथ धोना पड़ते हैं। ऐसा शख़्स उस बन्दे को (जिस के लिए नमाज़ पढ़ी) अपनी ख़िदमत का उतना हिस्सा देता है कि उतना वह अपनी इताअ़त का हिस्सा अल्लाह को भी नहीं देता।

महज़ अल्लाह के लिए ख़ैरात करना

हज़रत मोजाहिद से मरवी है कि एक शख़्स रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमते गरामी में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं महज़ अल्लाह के लिए ख़ैरात करता हूं लेकिन यह भी चाहता हूं कि मुझे दुनिया में भी (इसी वस्फ़ के बाएस) अच्छा कहा जाए इस पर यह इरशादे इलाही नाज़िल हुआः व मन का न यरजू लिक़ा रब्बिही फ़लयामल अमेलन यालिहन वला युशरिक बेइबादति रब्बिही अहदा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आख़री ज़माने में कुछ लोग दीन को दुनिया कमाने का ज़रिया बना लेंगे अपनी नर्मी दिखाने के लिए भेड़ की खाल पहन लेंगे

(बातिन मे दरीन्दे होंगे) उनकी ज़बानें शकर से ज़्यादा मीठी होंगी लेकिन दिल में भेड़ियों के होंगे अल्लाह तआला ऐसे लोगों के बारे में इरशाद फ़रमाता है क्या यह लोग मेरे मुताल्लिक़ फ़रेब ख़ुरदा हैं या मेरे ख़िलाफ़ दिलेरी और जसारत करते हैं मैं क़सम खाता हूं कि उन पर ऐसा फ़ितना खड़ा कर दूंगा जिसे देख कर बड़े बड़े बुर्दबार भी हैरान रह जायेंगे।

हज़रत हमज़ा ने अबी हबीब से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि फ़रिश्ते बाज़ बन्दों के बाज़ आमाल उठा कर बारगाहे इलाही में उस मक़ाम पर ले जाते हैं जहां अल्लाह तआला चाहता है, फ़रिश्ते उन आमाल को अच्छा समझते हैं और उस शख़्स को गुनाहों से पाक क़रार देते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम मेरे बन्दे के आमाले ज़ाहिरी के निगरां हो और मैं तो उसकी नियत को भी देखता हूं चूंकि मेरे इस बन्दे ने ख़ालिस मेरे लिए यह अमल किया है लिहाज़ा इसको इल्लीईन के दफ़तर में रख दो।

रियाकार क़ारी, रियाकार सख़ी और रियाकार मुजाहिद

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्[illegible] सल्लल्लाहो अलैहि [illegible]सल्लम ने इरशाद फ़रमाया क़यामत के दिन अल्लाह तआला अपनी [illegible]लूक़ का फ़ैसला फ़[illegible]एगा, हर उम्मत उसक हुजूर में ज़ानू के बल मौजूद होगी, उस वक़्त अ[illegible]लाह तआला [illegible]ए कु[illegible]आन, शहीद और तवन्गर को तलब फ़रमाएगा और अव्वलन क़ारी से इ[illegible]ार होगा कि तू जि[illegible]ना जानता था उस पर तूने कितना अमल किया क़ारी कहेगा मैं शबाना[illegible] के औक़ा[illegible] में खड़े होकर नमाज़ में कुरआन पढ़ता था, अल्लाह तआला उसको [illegible]वाब देगा तूने झूठ क[illegible] (फ़रिश्ते भी यही कहेंगे कि यह दरोग़ [illegible]ो है) ते[illegible]क़सद तो[illegible] यह था कि लोग तुझे क़ारी कहें चुनांचे तुझे क़ारी कह दिया गया, फिर अल्लाह [illegible]आला तव[illegible]र क[illegible]लब [illegible]कर दरयाफ़्त करेगा कि मैंने तुझे जो कुछ दिया थ[illegible] तूने उस[illegible] क्या मस[illegible]क किया [illegible] करेगा मैं उसको सिला ए रहम में (कराबत दारियों क[illegible] क़याम के लिए) [illegible]र्च करता रहा और ख़ै[illegible] करता रहा अल्लाह तआला फ़रमाएगा तू झूठा है [illegible] भी यही कहेंगे) तूने ग़लत कहा, उस अमल से तेरा मक़सद सिर्फ़ यह था कि तुझे सख़ी समझा जाए, सो तुझे सख़ी कह दिया गया, फिर जिहाद में शरीक होने वाले से पूछा जाएगा कि तू किस[illegible]रा गया वह जवाब देगा मैं तेरे लिए तेरी राह में लड़ा था और आख़िरकार मारा गया, अल्लाह तआला फ़रमाएगा तूने झूठ कहा (फ़रिश्ते भी यही कहेंगे) तेरा मक़सद यह नहीं था बल्कि तेरे मक़सद यह था कि तुझे बहादुर कहा जाए चुनांचे तुझे बहादुर कह दिया गया, यह इरशाद फ़रमाकर हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोनों दस्तहाय मुबारक अपने पाक ज़ानुओं पर इज़हारे अफ़सोस के लिए मारे और फ़रमाया, अबू हुरैरा मख़लूक़ में सबसे पहले क़यामत के दिन इन्ही तीनों (क़िस्म के) लोगों पर दोज़ख़ की आग शोला ज़न होगी।

इस हदीस शरीफ़ की ख़बर जब मुआविया को पहुंची तो वह बहुत रोये और कहने लगे कि अल्लाह के रसूल ने सच फ़रमाया इसके बाद यह आयत पढ़ी।

जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत का तालिब है हम उस को दुनिया ही में अज्र देते हैं दुनिया में उनका हिस्सा कम नहीं किया जाता लेकिन ऐसे लोगों के लिए आख़िरत में सिवाए दोज़ख़ के और कुछ नहीं है। दुनिया में जो कुछ किया होगा वह अकारत जाएगा और जो कुछ वह करते थे वह बेकार गया। उन लोगों के लिए बड़ा (दर्दनाक) अज़ाब होगा और

आख़िरत में यह लोग बड़े ख़सारे में रहेंगे।

जन्नत से महरूम रहने वाले

हज़रत अदी बिन हातिम की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन चन्द दोज़ख़ियों को जन्नत की तरफ़ ले जाने का हुक्म होगा जब यह दोज़ख़ी जन्नत के क़रीब पहुंचेंगे और उसकी ख़ुशबू सूंघेंगे वहां के महल्लात देखेंगे और उन चीज़ों का मुशाहिदा करेंगे जो अल्लाह तआ़ला ने बहिश्त वालों के लिए तय्यार की हैं तो यकायक निदा आएगी कि उसको वापस कर दो उनका यहां से कोई हिस्सा नहीं है उस वक़्त वह ऐसी हसरत व पशेमानी के साथ वापस होंगे कि ऐसी हसरत व पशेमानी से कभी न लौटे होंगे उस वक़्त वह (हसरत के साथ) कहेंगे परवरदिगार तूने अपने दोस्तों के लिए जो नेमतें फ़राहम की हैं वह अभी हम ने तमाम व कमाल देखी भी नहीं थी कि हम को दोज़ख़ में दाख़िल कर दिया गया (हमको वह नेमतें पूरी देखने को मिल जातीं) इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा मेरी यही मशीयत थी तुम तन्हाई में तो मेरे सामने और लोगों के सामने अपनी पारसाई (तक़वा) का दावा करते थे और उनके सामने आजज़ी और तवाज़ो का इज़हार करते थे, तुम्हारे दिलों में उसके ख़िलाफ़ होता था, तुम लोगों से तो डरते थे लेकिन मेरा ख़ौफ़ तुम को नहीं आया, तुम लोगों को बड़ा समझते थे लेकिन मुझे बड़ा नहीं जाना, तुमने लोगों की वजह से बुरे काम तर्क कर दिए लेकिन मेरे डर से बुरे कामों को तर्क नहीं किया इसलिए आज मैं अपने अज़ीम सवाब से तुम को महरूम रखूंगा और अपना अज़ाब तुम पर मुसल्लत करूंगा।

मोमिनीन की फ़लाह और रियाकारों की इब्तला

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने जब जन्नते अदन को पैदा फ़रमाया तो उसमें ऐसी नेमतें पैदा फ़रमाईं जिनको न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने सुना, न किसी इंसान के दिल में उसका ख़्याल गुज़रा तो उससे फ़रमाया कि तू कुछ कहना चाहती है तो मुझसे कह, तो जन्नते अदन ने तीन मरतबा कहा मोमिनीन ही फ़लाह पाने वाले हैं फिर कहा बेशक मैं हर बख़ील और रियाकार पर हराम हूं।

रियाकार अल्लाह तआ़ला को फ़रेब देना चाहता है

एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि रोज़े क़यामत मेरी नजात का ज़रिया क्या होगा, हुज़ूर ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला को फ़रेब देने की कोशिश न करना, उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं अल्लाह को फ़रेब कैसे दे सकता हूं आपने फ़रमाया काम तो तू वह करे जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है मगर उसका मक़सद (इताअ़ते इलाही न हो बल्कि) दूसरा हो, रिया से बचो, रिया शिर्क है। तमाम रियाकार क़यामत के दिन तमाम मख़लूक़ के सामने चार नामों से पुकारे जायेंगे, ऐ काफ़िर! ऐ फ़ाजिर! ऐ दग़ाबाज़! ऐ नुक़्सान उठाने वाले! तेरा अमल बेकार गया तेरा अज्र ज़ाया हो गया, आज तेरा कोई हिस्सा नहीं ऐ रियाकार तू अपना सवाब उसी से मांग जिसके लिए तू अमल करता था।

मुनाफ़िक़ का अंजाम

अल्लाह तआला हम सब को रिया, शोहरत तलबी और निफ़ाक़ से अपनी पनाह में रखे, यह सब काम दोज़ख़ियों के हैं मुनाफ़िक़ के लिए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: यक़ीनन मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे निचले तबक़ा में रहेंगे यानी फ़िरऔन व हामान के साथ हाविया में पड़े होंगे। अगर कोई यह सवाल करे कि बाज़ अहादीस से तो यह मुसतंबित होता है कि अगर नेक अमल को मख़लूक़ देख भी ले तब भी कोई हरज नहीं है जैसा कि वकीअ ने बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा का क़ौल नक़्ल किया है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं बाज़ अच्छे काम अगरचे छुपा कर करता हूं फिर भी लोगों को उसकी ख़बर हो जाती है (लोग मुत्तला हो जाते हैं) और यह बात मेरे दिल को बुरी भी लगती है, क्या ऐसे अमल का मुझे अज्र मिलेगा? हुज़ूर ने फ़रमाया तेरा अज्र दोहरा होगा, एक अज्र छुपाने का और दूसरा ज़ाहिर हो जाने का। इस हदीस शरीफ़ की तौज़ीह में कहा गया कि दोहरा अज्र इस तरह हुआ कि उस शख़्स को यह बात पसन्द थी कि दूसरे लोग भी उसकी इत्तेबा करें और उस सूरत में एक अज्र तो अमल का और दूसरा अज्र दूसरे लोगों की इत्तेबा व पैरवी का।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने कोई अच्छा तरीक़ा (नेक अमल) का निकाला उसको अपने उस अमल का सवाब मिलेगा और उन लोगों के अमल करने का भी जो क़यामत तक उस पर अमल पैरा रहेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह मालूम था कि उस शख़्स (सायल) को यह बात पसन्द है कि लोग उसके अमल की पैरवी करें इसी लिये आपने दोहरा अज्र उसके बदले में फ़रमाया) हां अगर अमल की पसन्दीदगी लोगों के इत्तेबा के ख़्याल से ख़ाली हो अपने अमल को महज़ अपनी ज़ात के एतबार से पसन्द करता है और उस पर नाज़ां है और यह ख़्याल नहीं कि लोग मेरे अमल की पैरवी करें) तो ऐसे अमल के लिए कोई अज्र नहीं है इसलिए कि ख़ुद पसन्दी बारगाहे इलाही में पसन्द नहीं, बन्दा उसकी बदौलत अल्लाह की नज़र से गिर जाता है।

हज़रत हसन बसरी का इरशाद है कि जब तुम बूढ़े होगे तो तुमको ऐसे लोग मिलेंगे जिनके रंग गोरे होंगे लेकिन दुरुश्त मिज़ाज, तेज़ ज़बान और बेबाक नज़र, दिल के मुर्दा, तुम उनके जिस्म देखोगे उनके जिस्म न होंगे, उनकी आवाज़ सुनाई देगी उनमें उन्सियत न होगी, उनकी ज़बानें बहुत तर्रार होंगी लेकिन दिल क़हत के मारे ख़ुश्क होंगे। बाज़ असहाबे रसूल ने मुझसे बयान किया कि जब तक हमारी उम्मत के उलमा, रऊसा और उमरा की सोहबत की तरफ़ रागिब न होंगे और सालेह लोग दौड़ दौड़ कर फ़ाजिरों से मुलाक़ात के लिए न जायेंगे, नेक लोगों को बुरों का ख़ौफ़ न होगा उस वक़्त तक उम्मते मोहम्मदिया अल्लाह तआला की पनाह में रहेगी लेकिन जब उनसे यह बद किरदारियां सरज़द होंगी तो अल्लाह तआला उनसे अपना हाथ उठा लेगा और उनको फ़िक्र व फ़ाक़ा में मुब्तला फ़रमायेगा और उनके दिलों में ज़ालिमों का ख़ौफ़ पैदा कर देगा और सितमगारों को उनपर मुसल्लत कर देगा और बुरी बुरी तकलीफ़ों की उन पर मार पड़ेगी।

हज़रत हसन बसरी ही से रिवायत भी है कि वह बन्दा बहुत ही बुरा बन्दा है जो मग़फ़िरत

का सवाल करता है और अमल मासियत के उससे सरज़द होते हैं। ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ का इज़हार अपनी अमानतदारी के इज़हार के लिए करता है हालांकि वह फ़रेब से ऐसा करता है, दूसरों को (बुरी बातों से) मना करता है लेकिन ख़ुद उन पर अमल पैरा है दूसरों को जिस काम का हुक्म देता है ख़ुद वह काम नहीं करता, देता है तो पूरा नहीं देता, तो न देने की उज़्र पेश नहीं करता, तन्दुरूस्त होता है तो निडर बन जाता है बीमार होता है तो पशेमान होता है, मुहताजी में ग़मगीन होता है, तवन्गर बन जाता है तो फ़ितने उठाता है, अज्र व सवाब का तालिब हो मगर शदाइद पर सब्र न करे बद मस्त हो कर सो जाये और रोज़े में ताख़ीर करे।

हज़रत हसन बसरी और फ़रक़द

एक दिन हसन बसरी बेश क़ीमत लिबास पहने हुए अपनी मजलिस में मौजूद थे उस मजलिस में फ़रक़द सनजी भी मौजूद था और फ़रक़द सौफ़ (पशमीना) का लिबास पहने था आप ने फ़रक़द से फ़रमाया मेरा लिबास जन्नतियों का है और तुम्हारा लिबास दोज़ख़ियों का है तुमने ज़ाहिर में दुनिया छोड़ रखी है लेकिन तुम्हारे दिल [illegible] गुरूर और तकब्बुर भ[illegible] हुआ है आज कल लोगों ने सौफ़ पहनना शेआर बना लिया है लेकिन ह[illegible]क़त में वह चादर आ[illegible]ते वालों से ज़्यादा मग़रूर होते हैं। लोग आपस में तफ़ाख़ुर करते हैं (लिब[illegible]स से एक दूस[illegible] पर फ़[illegible] करते हैं) सुनो शाहाना लिबास पहनो मगर दिलों को अल्लाह के ख़ौफ़ से मुर्दा बना[illegible] (दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से मुर्दा हो जाये)।

लिबास तीन क़िस्म के हैं

हज़रत उ[illegible] फ़रमात[illegible] कि लिबा[illegible]ह पह[illegible] कि उल[illegible] उसका मज़ाक़ न बनायें और न बे ख़िरद तुम क[illegible] (उस लिबास के बाएस) हक़ीर [illegible] ख़्वाह सूती ही क्यों न हो दिल पाक व साफ़ होना चाहिए। [illegible]बास तीन [illegible]स्म के लो[illegible] होत[illegible] परहेज़गारों का लिबास, यह ऐसा जाएज़ लिबास होना [illegible]हिए जिसके पहनने से न मख़लूक़ की तरफ़ से मुआख़ज़ा हो न शरअ का उस पर मु[illegible] हो सके, ख़्वाह वह सूत का हो या सौफ़ का, नीला हो या सफ़ेद रंग का। औलिया अल्लाह का [illegible]सः औलिया का लिबास वह है जिस का हुक्म शरीअत ने दिया है यानी कम से कम इतन[illegible] [illegible]रे औरत हो सके और जिस्म का ज़रूरी हिस्सा छुप जाये और ज़रूरत का तक़ाज़ा पूरा हो जाये ताकि हवा व हवस शिकस्ता पर हो जायें और अबदाल के दर्जा तक रसाई हो जाये। अबदाल का लिबासः अबदाल का लिबास यह है कि शरई हुदूद की हिफ़ाज़त के साथ जो कुछ तक़दीर से मिल जाये (उसको काफ़ी समझा जाये)। वह एक दांग क़ीमत का कुर्ता हो या एक सौ अशरफ़ी का ख़िलअत (दोनों उसके लिए बराबर हों) न अपना इरादा आला लिबास पहनने का हो न नफ़्सानी ख़्वाहिश कि अदना लिबास पहन कर उस ख़्वाहिश को शिकस्त दी जाये बल्कि जो हलाल लिबास अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से मरहमत फ़रमा दे बग़ैर मेहनत और तकलीफ़ के इनायत कर दे नफ़्स में न किसी लिबास का शौक़ हो न कोई आरज़ू (कि ऐसा लिबास मिले) तो ऐसा लिबास अबदाल का लिबास है इन लिबासों के अलावा हर क़िस्म का लिबास अहदे जाहिलियत का लिबास है, हिमाक़त का लिबास है और नफ़्सानी ख़्वाहिश का लिबास है।

बाब 18

हफ़्ता के मुख़्तलिफ़ दिन और उनके फ़ज़ाइल

अय्यामे बैज़ और अय्यामे बैज़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल और तरग़ीबात, अय्यामे बैज़ मे शबाना रोज़ के वज़ाएफ़ व औराद

अय्याम की तख़लीक़ और हर दिन की ख़ुसूसियत

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया [illegible] अल्लाह तआला ने शम्बा के दिन ज़मीन पैदा फ़रमाई और यक शम्बा [illegible] ज़मीन पर पहाड़ों [illegible] क़ायम फ़रमाया। दो शम्बा को दरख़्तों को और सह शम्बा को तमाम [illegible] रूहात को पैदा कि[illegible] चहार शम्बा को तमाम ख़ूबियां तख़लीक़ फ़रमाईं और पंज शम्बा को ज़मीन पर तमाम [illegible]ओं को पैदा फ़रमा कर इधर उधर मुन्तशिर फ़रमाया, जुमा के रोज़ हज़रत आद[illegible] अलैहिस्सलाम [illegible] अस्र के बाद मग़रिब से क़ब्ल आख़िरी साअत में पैदा फ़रमाया।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि [illegible]सूलुल्लाह सल[illegible]ल्लाहो अलैहि वसल्लम से हफ़्ता के दिन के बारे में दरयाफ़्[illegible] किया गया [illegible] हुज़ूर [illegible] फ़रमाया य[illegible] मक्र व फ़रेब का दिन है। सहाबा कराम ने वजह [illegible]रयाफ़्त की तो हुज़ूर ने [illegible]रमा[illegible] कि [illegible] दिन कुरैश ने दारुल नदवा (हुज़ूर सल्लल्लाहो अलै[illegible] वसल्लम [illegible] जिस शब [illegible] हिजर[illegible] उस दिन में कुफ़्फ़ारे कुरैश ने एक मकान में जमा हो [illegible]र हुज़[illegible] के बारे में नऊज़बिल्लाह क़त्ल का [illegible]ग्राम बनाया था) में मेरे लिए फ़रेब का मन्सूबा तै[illegible]या था। इतवार के दिन के बारे में दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया यह दरख़्त लगाने और इमारत बनाने का दिन है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि इसी दिन दुनिया की और इसकी आबादी की इब्ति[illegible], पीर के दिन के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया यह सफ़र और तिजारत का दिन है, सहाबा ने फ़रमाया यह किस तरह? हुज़ूर ने फ़रमाया कि शुऐब पैग़म्बर ने इसी दिन सफ़र किया था और तिजारत में मशग़ूल हुए थे, मंगल के दिन के बारे में जब दरयाफ़्त किया गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया यह ख़ून का दिन है, सहाबा कराम ने अर्ज़ किया यह किस तरह, हुज़ूर ने फ़रमाया, इसी दिन हज़रत हव्वा को हैज़ आया और आदम के बेटे (क़ाबील) ने अपने बड़े भाई (हाबील) को क़त्ल किया था, बुध के दिन के बारे में जब दरयाफ़्त किया गया तो इरशाद फ़रमाया यह नहूसत और बदबख़्ती का दिन है, सहाबा ने अर्ज़ किया यह क्योंकर? हुज़ूर ने फ़रमाया, इसी दिन अल्लाह ने फ़िरऔन और उसकी क़ौम को (नील में) ग़र्क़ किया और आद व समूद को तबाह किया। जुमेरात के बारे में सवाल करने पर फ़रमाया हाजतों के पूरा करने और सलातीन के पास जाने का दिन है, सहाबा कराम ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर यह किस तरह? आप ने फ़रमाया कि इसी रोज़े हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह नमरुद के पास तशरीफ़ ले गए थे, नमरुद ने आप का मुद्दआ पूरा कर दिया और आप ने हाजरा को उससे

हासिल कर लिया।

जुमा के बारे में जब दरयाफ़्त किया गया तो हुजूर ने इरशाद फ़रमाया कि यह ख़ुतबा और निकाह का दिन है, जब अर्ज किया गया कि किस तरह ? तो हुजूर वाला ने इरशाद फ़रमाया कि इसी दिन अम्बिया अलैहिमुस्सलाम/निकाह करते थे।

ज़हरी ने बरिवायत अब्दुर्रहमान बिन कअब बयान किया कि उनके दादा अब्दुर्रहमान ने बयान फ़रमाया कि रसुलूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफ़र के लिए जुमेरात ही के दिन निकला करते थे, मुआविया बिन हज़्ज़ा ने हज़रत अनस से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स 17 तारीख़ मंगल के दिन सेंगी लगवाता है अल्लाह साल भर तक उसको बीमारी से महफ़ूज़ कर देता है।

अम्बिया के मख़सूस दिन

एक रिवायत है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा और दूसरे पचास पैग़म्बरों को हफ़्ता का दिन दिया था (यानी उनकी इबादत का दिन) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उनके अलावा बीस और अम्बिया को इतवार का दिन दिया था, पीर [illegible] शम्बा) का दिन सरवरे आलम मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और तिरसठ (63) दूसरे रसूलों को अता फ़रमाया, मंगल का दिन हज़रत सुलैमान और दूसरे पचास पैग़म्बरों को अता किया, बुध [illegible] हरा शम्बा) का दिन हज़रल याक़ूब और पचास दूसरे रसूलों को अता फ़रमाया [illegible] जुमेरात का दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और पचास दूसरे नबीयों को अता किया, जुमा का दिन ख़ालिस अल्लाह तआला का अपना दिन है।

उम्मते मुहम्मदिया का तोहफ़ए ख़ास

मनकुल है कि रसूले [illegible] सल्लल्लाहो अलैहि [illegible] ल्लम ने बारगाहे इलाही में मुनाजात फ़रमाई, इलाही मेरी उम्मत को तूने क्या अता फ़रमाया? अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ महबूब जुमा का दिन मेरा है [illegible] जन्नत मेरी है मैं जुमा का दिन और जन्नत आप की उम्मत को अता करता हूँ और मैं जन्नत में आप की उम्मत के साथ हूंगा।

बुध, जुमेरात और जुमा के रोजे की फ़ज़ीलत

हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जिसने बुध, जुमेरात और जुमा का रोज़ा रखा उसके अज्र में अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में मोती, याकूत और ज़मुर्रद का महल तैयार फ़रमाता है और दोज़ख़ से उसके लिए नजात लिख दी जाती है। हज़रत अनस बिन मालिक की एक और रिवायत में है कि हुज़ूर वाला ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने हुरमत वाले महीनों में जुमेरात, जुमा और हफ़्ता के दिन के (तीन) रोज़े रखे उसके नामए आमाल में नौ साल की इबादत लिखी जाती है नीज़ इरशाद फ़रमाया कि हफ़्ता और इतवार को रोज़ा रखो और यहूद और नसारा की मुख़ालिफ़त करो।

हज़रत अबू हुरैरा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया पीर और जुमेरात को आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और हर शख़्स को जो शिर्क नहीं करता बख़्श दिया जाता है मगर वह शख़्स नहीं बख़्शा जाता जिसके दिल में अपने मुसलमान भाई की तरफ़ से हसद और कीना

है। एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दिनों के रोज़ों को तर्क नहीं किया करते थे ख़्वाह आप सफ़र में हो या हज़र में, यह दोनों दिन ऐसे हैं जब बन्दे के आमाल बारगाहे इलाही में पेश किये जाते हैं।

अय्यामे बैज़ के रोज़े

अय्यामे बैज़ के रोज़ों की फ़ज़ीलत

अय्यामे बैज़ के रोज़ों की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (इब्न हुसैन इब्ने अली मुर्तज़ा करमुल्लाहो वज्हहु) ने फ़रमाया कि तेरह तारीख़ का रोज़ा तीन हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर और चौदह तारीख़ का रोज़ा दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर और पन्द्रह तारीख़ का रोज़ा एक लाख तेरह हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।

अबू इसहाक़ ने हज़रत जुरैर का क़ौल नक़्ल [illegible]या है कि रसूलुल्लाह [illegible] फ़रमाया कि जो शख़्स चांद की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं का र[illegible]ा रखेगा उ[illegible] उम्र [illegible]र के रोज़ों का सवाब मिलेगा। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इरशाद फ़रम[illegible] जिस[illegible] एक नेकी की उसके लिए दस गुना सवाब है, गोया तीन रोज़ों का स[illegible]हीना भर के रोज़ों के बराबर होगा इसी तरह हर माह तीन रोज़े रखने वाला तमा[illegible] उम्र रोज़े र[illegible]ने वाला [illegible] जायेगा।

हज़रत इ[illegible] अब्बास [illegible] क़ौल है [illegible] रसूलुल्लाह सल्लल्[illegible]हो अलैहि वसल्लम अय्यामे बैज़ के रोज़े ख़्वाह [illegible]फ़र में ह[illegible] या इक़ामत [illegible] नहीं [illegible]ोड़ते थे। [illegible]अबी का क़ौल है कि मैंने हज़रत इब्ने उमर से सु[illegible] कि उन्होंने फ़रमाया र[illegible]सूलुल्ल[illegible]हो अलैहि वसल्लम ने मेरे सामने इरशाद फ़रमाया: [illegible]सने ह[illegible]ाह तीन [illegible] का रोज़े [illegible] और [illegible] की दो रकअत सुन्नतें अदा कीं और नमाज़े वित्र [illegible]को [illegible] सफ़र में छोड़ा न हज़र में उसको सौ शहीदों का सवाब मिलता है।

सईद बिन अबी [illegible]ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने [illegible] इन तीन बातों की वसीयत फ़रमाई कि मरते दम तक महीने के तीन रोज़े (अय्यामे बै[illegible]) रखूं और मरने से पहले चाश्त और वित्र की नमाज़ न छोडूं।

अब्दुल मालिक बिन हारून ने बरिवायत अनजह बयान किया कि अन्ज़ह बयान किया कि अन्ज़ह ने कहा मैंने हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहो वज्हहु से उन्होंने फ़रमाया कि एक दिन दोपहर के वक़्त मैं रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, हुज़ूर उस वक़्त हुजरए मुबारक में रौनक़ अफ़रोज़ थे, मैंने सलाम अर्ज़ किया हुज़ूर ने सलाम के जवाब देने के बाद फ़रमाया अली! यह जिब्रील हैं तुमको सलाम कर रहे हैं मैंने अर्ज़ किया वअलैका व अलैहिस्सलाम या रसूलल्लाह, हुज़ूर ने फ़रमाया मेरे क़रीब आ जाओ, मैं क़रीब में हाज़िर हो गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि अली! जिब्रील कह रहे हैं कि हर माह तीन दिन के रोज़े रखा करो, पहले रोज़े पर दस हज़ार साल का, दूसरे रोज़े पर तीस हज़ार साल का और तीसरे रोज़े पर एक लाख साल का सवाब लिखा जायेगा। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या इस सवाब की तख़सीस मेरे ही साथ है या यह आम तौर पर सब के लिए है, हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह सवाब तुम्हे होगा और उसको भी जो तुम्हारी तरह यह रोज़े रखे[illegible] हज़रत अली मुर्तज़ा ने रोज़ों की तारीख़ दरयाफ़्त की तो फ़रमाया हर माह

की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं।

अय्यामे बैज़ की वजहे तसमिया

अन्ज़ह कहते हैं कि मैंने हज़रत अली से दरयाफ़्त किया कि अय्यामे बैज़ की वजहे तसमिया क्या है? हज़रत अली ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत से ज़मीन पर उतारा तो आफ़ताब की तमाज़त ने उनके जिस्म को सियाह कर दिया हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उनके पास आये और कहा कि ऐ आदम! क्या आप चाहते हैं कि आप के जिस्म की यह सियाही दूर हो जाये और इसकी जगह सपेदी आ जाये, हज़रत आदम ने फ़रमाया हां, उस वक़्त हज़रत जिब्रील ने फ़रमाया कि आप हर माह की तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं का रोज़ा रखा कीजिए। चुनांचे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने पहला रोज़ा रखा तो 1/3 जिस्म की सियाही दूर हो गई, दूसरे दिन 2/3 और तीसरे दिन पूरा जिस्म मुबारक सफ़ेद हो गया (तमाम सियाही ज़ाएल हो गई।) इस लिए इन दिनों को अय्यामे बैज़ कहते हैं।

हज़रत ज़र्र बिन जैश का क़ौल है कि मैंने ह[illegible]त इब्ने मसऊद से अ[illegible]यामे बैज़ की वजहे तसमिया दरयाफ़्त की तो उन्होने फ़रमाया कि मैंने [illegible]लुल्लाह सल्लल्लाहो [illegible]लैहि वसल्लम से इसके बारे में दरयाफ़्त किया था तो हुजूर ने फ़रमाया था जब हज[illegible] आद[illegible] ने अल्लाह की नाफ़रमानी की और दरख़्ते ममनूआ खा लिया तो अल्[illegible]ाह तआला ने [illegible]म दिया कि मेरे क़ुर्ब इज़्ज़त व अज़मत से नीचे उतर जाओ, जो मेरी नाफ़र[illegible] करता है वह मेरे क़रीब नहीं रह सकता। आदम अलैहिस्सलाम नीचे उतर गये, आप के बदन का रंग सि[illegible]ाह हो गया फ़रिश्तों ने उस पर आह व बुका की [illegible] बारगाहे [illegible]ाही में अर्ज़ किया [illegible]बुल इज़्ज़त तूने आदम को अपने हाथ से बनाया, अपने फ़रिश्तों से उनको [illegible]जदा कराया और अब एक गुनाह पर उनके सफ़ेद रंग को सियाही [illegible] बदल दिया। उस पर अल्लाह [illegible] हज़रत आदम के पास वही भेजी कि तुम मेरे लिए इ[illegible] दिन यानी तेरहवीं [illegible]रीख़ का रोज़ा रखो, ह[illegible] आदम ने पहला रोज़ा रखा तो उनका तिहाई ब[illegible] हो गया फिर वही भेजी कि आज चौदहवीं का रोज़ा रखो, हज़रत आदम ने रोज़ा रखा [illegible]सुबह को दो तिहाई बदन गोरा हो गया, अल्लाह तआला ने फिर वही भेजी कि इस रोज़ यानी [illegible]तारीख़ का भी रोज़ा रखो, तो सारा बदन गोरा हो गया अय्यामे बैज़ कहने की यही वजह [illegible]।

अतबी ने अदबुल कातिब में कहा है कि इन तारीख़ियों (दिनों) को अरब अय्यामे बैज़ इस वजह से कहते हैं कि इन तारीख़ियों में पूरी रात भर की चांदनी होती है (रातों में बजाए सियाही के सफ़ेदी होती है)

सयामुद्दहर और उसका अज्र

हमेशा रोज़ा रखने वाले का अज्र

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से और उन्होंने अपने असनाद के साथ हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे बेहतर रोज़े हज़रत दाऊद के रोज़े हैं, एक दिन रोज़ा, एक दिन नागा।

जिस शख़्स ने हमेशा सारे रोज़े रखे (उम्र भर रोज़ाप रखा) उसने बिला शुब्हा अपनी जान अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दी। हज़रत अबू मूसा अशअरी फ़रमाते हैं कि जिसने उम्र भर रोज़े रखे उस पर दोज़ख़ इस तरह तंग हो जाता है कि उसमें दाख़िल होना मुमकिन ही नहीं रहता (हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 90 का अदद बना कर दिखाया)

शुऐब ने बरिवायत सअद बिन इब्राहीम बयान किया है कि हज़रत आइशा हमेशा रोज़े रखती थीं। याकूब ने अपने वालिद की असनाद के साथ बयान किया है कि हज़रत सअद ने अपने मरने से पहले चालीस साल पहले से पैहम रोज़े रखे। अबू इद्रीस कहते हैं कि हज़रत अबु मूसा अशअरी ने इतने रोज़े रखे कि सूख कर ख़िलाल की तरह हो गये थे, मैंने उनसे कहा कि हज़रत आप अपने नफ़्स को तो कुछ आराम दीजिए, उन्होंने फ़रमाया कि (रोज़े रखकर) उसको आराम ही तो देना चाहता हूं, मैंने देखा है कि वह दौड़ में आगे निकल जाने वाले घोड़े वही होते हैं जिनको मश्शाक़ बना कर दुबला कर दिया जाता है।

अबु इसहाक़ बिन इब्राहीम का बयान है कि मु[illegible]से अम्मार राहिब ने कहा कि ओएला में ईसा बिन ज़ाज़ान की मजलिस में सकीनए ग़फ़्फ़ारिया ह[illegible] साथ शरीके महफ़िल होती थीं, आप उस मजलिस में हाज़िरी के लिए बसरा से आती थीं मैंने उनको ख़्वाब में देखा और दरयाफ़्त किया सकीना! ईसा के साथ अल्लाह ने क्या मामला किया? सकीना हंसीं और बोलीं, उनको चमकदार हुल्ला (बहिश्ती) पहनाया गया। ख़िदमतगार आफ़ताबे [illegible] उनके गिर्दा गिर्द घूमने लगे फिर उनको ज़ेवर पहनाए गये और कहा गया ऐ क़ारी! अपने मरतबा में तरक़्क़ी करता जा, अपनी बक़ा की क़सम रोज़ों ने [illegible] को पाक कर दिया है।

ईसा इतने रोज़े रखते थे कि उनकी कमर [illegible]मीदा हो गई थी और आवाज़ भी (कमज़ोरी के बाइस) नहीं निकलती थी।

हज़रत अनस का बयान है कि हज़रत अबू तलहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में जिहाद के बाइस नफ़ली रोज़े नहीं रखते थे लेकिन सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वि[illegible] के बाद मैंने उनको कभी रोज़े के बग़ैर नहीं देखा सिवाय यौमे फ़ित्र और यौमे नहर के। अबू बकर [illegible] अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हश्शाम कहते हैं कि मुझसे एक ऐसे आदमी ने यह रिवा[illegible] की जिसने ख़ुद मुशाहिदा किया था कि गर्मी के दिन हैं, हुजूर रोज़े से हैं और गर्मी की शिद्दत और प्यास की वजह से सरे मुबारक पर पानी डाल रहे हैं।

सुफ़ियान ने बरिवायत अबु इसहाक़ हारिस के हवाला से बयान किया कि हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्जहु ने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रोज़ रोज़ा रखते थे और एक रोज़ नाग़ा फ़रमाते थे। एक रिवायत में आया है कि हज़रत उमर ने रसूलुल्लाह की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह अगर कोई शख़्स तमाम उम्र रोज़ा रखे तो क्या हुक्म है? हुज़ूर ने जवाब में फ़रमाया न उसने रोज़ा रखा न बग़ैर रोजे के रहा। इस हदीस से यह अम्र मुस्तंबित हुआ कि उस शख़्स ने हमेशा रोज़े रखे, ईदुल फ़ित्र और अय्याम तशरीक़ में भी नाग़ा नहीं किया, हज़रत इमाम अहमद हंबल ने भी यही फ़रमाया है लेकिन अगर उसने उन अय्याम में रोज़े न रखे और बाक़ी पूरे साल रखे तो उसके हक़ में कोई मुमानियत नहीं है बल्कि उसके लिए वही फ़ज़ीलत है जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है।

आम रोज़ा की फ़ज़ीलत

रोज़ा की फ़ज़ीलत बिला तख़सीस

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स ख़ालिसन अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी के लिए रोज़ा रखेगा तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम से उतनी मुसाफ़त के बक़द्र दूर कर देगा कि एक कौआ का बच्चा उस मुसाफ़त पर उड़ना शुरू करे और बूढ़ा हो कर मर जाये और मुसाफ़त बाक़ी रहे। (कहा जाता है कि कौआ की उम्र तक़रीबन पांच सौ बरस है)

हज़रत अबू दरदा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स महज़ अल्लाह के लिए किसी दिन का रोज़ा रखेगा अल्लाह उसके मुंह को दोज़ख़ से बक़द्र सत्तर बरस की मुसाफ़त से दूर फ़रमा देगा। हज़रत आईशा ने इरशाद फ़रमाया मैं ख़ुद सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे जो बन्दा सुबह को रोज़ा दार होता है उसके लिए आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं, उसके आज़ा अल्लाह की तसबीह व तक़दीस बयान करते हैं और उसके लिए दुनियावी आसमान वाले मलाफ़िरत की दुआ करते हैं और यह हालत गुरूबे आफ़ताब तक रहती है अगर वह एक दो रकअत नमाज़े नफ़्ल भी पढ़ लेता है तो उसके लिए आसमान नूर से जगमगा जाते हैं (जन्नत में) उसकी बीबियां यानी बड़ी बड़ी आंख वाली हूरें कहती हैं इलाही इसकी रूह क़ब्ज़ करके हमारे पास पहुंचा दे हम इसके मुशताक़ हैं, अगर वह रोज़ादार तस्बीह व तहलील में मसरूफ़ रहता है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसकी तस्बीह व तहलील को लिखते हैं और यह हालत गुरूबे आफ़ताब तक रहती है।

अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा के हवाले से बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो बन्दा एक नेकी करे उसकी जज़ा उसको दस से सौ तक बल्कि सात सौ गुना तक मिलती लेकिन रोज़ा ऐसा अमल है कि इसके बारे में हक़ तआला ने फ़रमाया कि वह मेरे लिए है और मैं ही इसकी जज़ा दूंगा और रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह तआला के नज़दीक मुश्क की ख़ुशबू से ज़्यादा महबूब है।

हज़रत अली मुर्तजा कर्रमल्लाहो वज्हहु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा के बाइस जो शख़्स खाने पीने और ख़्वाहिशे नफ़्स से दूर रहा अल्लाह तआला जन्नत में उसको मेवा खिलायेगा और जन्नत का शरबत पिलायेगा।

जन्नत का दरवाज़ा रय्यान

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हर नेक काम करने वालों के लिए जन्नत का एक ख़ास दरवाज़ा होगा जहां से उनको पुकारा जायेगा और रोज़ा रखने वालों को जिस ख़ास दरवाज़े से पुकारा जायेगा उसका नाम रय्यान होगा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या कोई शख़्स ऐसा भी होगा जिसको तमाम दरवाज़ों से पुकारा जाये? हुज़ूर ने फ़रमाया हां मुझे उम्मीद है कि तुम उन ही में से होगे। रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि हर चीज़ का एक दरवाज़ा है चुनांचे इबादत का दरवाज़ा रोज़ा है।

रोज़ा निस्फ़ सब्र है

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया रोज़ा निस्फ़ सब्र है हर चीज़ की ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़ा है। हज़रत अबू औफ़ा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ादार का सोना इबादत है, उसकी ख़ामोशी तस्बीह है और उसका अमल मक़बूल है। हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन रोज़ादारों के लिए सोने का एक ख़्वान रखा जायेगा जिसमें मछली होगी। रोज़ादार उस ख़्वान से खाते होंगे और दूसरे लोग उनको देखते होंगे (दूसरों का उससे कुछ हिस्सा न होगा)।

अहमद बिन हवारी से रिवायत है कि अबू सुलैमान रहमतुल्लाह अलैहि ने उनसे कहा कि अबू अली असीम एक दिन तश्रीफ़ लाये और उन्होंने एक ऐसी हदीस सुनाई जिससे बेहतर आज तक हमने नहीं सुनी थी, उन्होंने फ़रमाया कि रोज़ादारों के लिए क़यामत में एक दस्तरख़्वान बिछाया जायेगा और वह उस पर खाने में मशगूल होंगे जबकि दूसरे तमाम लोगों से हिसाब लिया जाता होगा, यह लोग हिसाब (देने वाले) कहेंगे कि इलाही हमारा हिसाब लिया जा रहा है और यह लोग (नेमतें) खाने में मशगूल हैं अल्लाह तआला फ़रमायेगा यह वह लोग हैं जिन्होंने मुद्दतों तक रोज़े रखे और तुमने नहीं रखे, वह खड़े नमाज़ें पढ़ते रहे और तुम सोते रहे (यह उसका इनाम उनको दिया गया है)।

रोज़ादार के मुंह से मुश्क की लपटें

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि
हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है की रसूलुल्लाह
जब रोज़ादार अपनी कब्रों से निकलेंगे तो उनके मुंह से मुश्क की खुशबू की लपटें आयेंगी, जन्नत
का एक ख़्वान उनके सामने रखा जाएगा जिससे वह खायेंगे और वह सब अर्श के साया में होंगे।
हज़रत सुफ़ियान बिन उऐनिया ने कहा मुझे इत्तेला मिली है कि रोज़ेदार जिन चीज़ों से रोज़ा
खोलता है उनका हिसाब उससे नहीं लिया जाएगा। हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला फ़रमाता है कि रोज़ा मेरे लिए
है और मैं ही रोज़ा का जज़ा दूंगा, मेरा बन्दा मेरे लिए अपना खाना पीना और नफ़सानी ख़्वाहिश
को छोड़ता है, रोज़ा एक सेपर है रोज़ादार के लिए दो मसर्रतें रखी गई हैं एक तो वह जब वह
रोज़ा इफ़तार करता है दूसरी ख़ुशी रब से मुलाक़ात के वक़्त मयस्सर होगी। रोज़ादार के मुंह की
बू अल्लाह तआला को मुश्क की ख़ुश्बू से ज़्यादा पसंद है।
हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने
फ़रमाया रोज़ा एक सिपर है, जिस के ज़रिया बन्दा दोज़ख़ से महफ़ूज़ रहता है सईद बिन जुबैर
की रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ने फ़रमाया मैं दुनिया में अपने पीछे क्या क्या
चीज़ें छोड़ जाऊंगा इसका मुझे ग़म नहीं, ग़म है तो दोपहर के वक़्त रोज़ादार होने और नमाज़
के जाने का (कि मरने के बाद यह चीज़ें मयस्सर न होंगी)। मुजाहीद ने हज़रत अबू हुरैरा से
रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है जो शख़्स अल्लाह के
वास्ते नफ़्ल रोज़ा रखे और उस के बदला में ज़मीन भर सोना उसको मिल जाए तब भी क़यामत
से पहले उसको रोज़े का सवाब उसको पूरा नही होगा।

औरादे शब व नमाज़ें शब

और उसकी तरग़ीब

औरादे शब के सिलसिले में अहादीस

हज़रत शफ़ीक़ बिन अब्दुल्लाह रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने कुछ लोगों का ज़िक्र हुआ, किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह फ़लां शख़्स रात भर सोता रहा यहां तक की सुबह की नमाज़ भी उसने अदा नहीं की हुज़ूर ने फ़रमाया शैतान ने उसके कान में पेशाब कर दिया। हदीस शरीफ़ में आया है कि जब आदमी सो जाता है तो शैतान उसके सर पर तीन गिरहें लगा देता है फिर जब सो कर उठता है और अल्लाह का ज़िक्र करता है तो उसकी एक गिरह खुल जाती है जब वज़ू करता है तो दूसरी गिरह भी खुल जाती है और जब दो रकअत नमाज़ पढ़ लेता है तो आख़िरी गिरह भी खुल जाती है सुबह को आदमी हश्शाश व बश्शाश होता है, वरना दूसरी सूरत में सुस्त और चिड़चिड़ा रहता है। एक हदीस में आया है कि शैतान के पास कुछ चीज़ें नाक में डालने, कुछ चाटने और कुछ छिड़कने की होती है आदमी जब नाक में डालने वाली चीज़ को सुड़क लेता है तो वह बद खुल्क हो जाता है और चाटने वाली चीज़ को जब चाट लेता है तो बुरी बातें उसकी ज़बान पर चढ़ जाती हैं, जब छिड़कने वाली चीज़ को किसी पर छिड़क दिया जाता है तो वह रात से सुबह तक सोता रहता है।

रात की नमाज़ में कुरआन को तूल देना सुन्नत है, रात की नमाज में दो दो रकअतें हैं, दिन की नमाज़ में रुकूअ और सुजूद की कसरत सुन्नत है अगर एक सलाम से चार रकअतें पढ़ी जाएं तब भी जायज़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए रात की नमाज़ें नाफ़िला (पांच नमाज़ों) से ज़्यादा थी और वह हुज़ूर पर फ़र्ज़ थीं और हुज़ूर के लिए कुरबे इलाही और मरतबत अफ़ज़ाई का ज़रीया थी, उम्मत से फ़राइज़ में जो कोताही होती है उसकी पूरा करने वाली है।

सालिम ने हज़रत इब्ने उमर का क़ौल नक़्ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मसऊद में जब कोई ख़्वाब देखता था तो उसको हुज़ूर की ख़िदमत में बयान करता था मुझे भी आरज़ू थी कि मैं कोई ख़्वाब देखूं और हुज़ूर वाला से बयान करूं (आख़िरकार यह आरज़ू पूरी हुई और) मैंने एक ख़्वाब देखा दो फ़रिश्तें मुझे पकड़ कर दोज़ख़ की तरफ़ लिये जा रहे हैं, दोज़ख़ के गिर्द कुवें की तरह मुंडेर (मन) बनी हुई है और कुवें के चर्ख़ के मिनारों की तरह उसमें दो मीनार भी थे मैंने वहां के कुछ लोगों को देख कर पहचान लिया और मैंने कहा मैं दोज़ख़ से अल्लाह की पनाह मागंता हूं, मुझे फ़ौरन ही एक फ़रिश्ता मिला और मुझ से कहने लगा ख़ौफ़ न खा (फिर मेरी आंख खुल गई) मैंने यह ख़्वाब उम्मुल मोमेनीन हज़रत हफ़्सा से बयान किया और उन्होंने हुज़ूर वाला से बयान किया, हुज़ूर ने फ़रमाया अब्दुल्लाह अच्छा शख़्स है काश वो रात को नमाज़ पढ़ता। सालिम कहते हैं कि फिर अब्दुल्लाह रात को बहुत थोड़ी देर के लिए सोते थे।

अबू सलमा रिवायत करते है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र आस ने कहा कि मुझ से

रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि तुम फ़लां शख़्स की मानिंद न हो जाना कि पहले वह रात की नमाज़ पढ़ता था फिर उसने वह नमाज़ छोड़ दी।

हज़रत अबू सालेह ने बिल असनाद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहु से रिवायत की कि उन्होंने फ़रमाया एक रात हुजूर वाला मेरे और अपनी साहबज़ादी फ़ातिमा के पास तशरीफ़ लाए हम दोनों को सोता (लेटा हुआ) पाकर, आप ने फ़रमाया, तुम नमाज़ नहीं पढ़ते हो (नमाज़े शब) मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हमारी जानों का मालिक अल्लाह तआला है अगर वह हम को उठाना चाहेगा तो (नमाज़ के लिए) उठा देगा, हुज़ूर वाला वापस चले गये और इस बात का कोई जवाब इरशाद नहीं फ़रमाया, अलबत्ता मैंने सुना कि वापिस होकर आप ज़ानूए मुबारक पर हाथ मार कर फ़रमा रहे थे कि आदमी बड़ा झगड़ालू है।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह का क़ौल नक़्ल किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर आदमी दो रकअतें रात के दर्मियान पढ़ ले तो वह दुनिया और माफ़ीहा से बेहतर है अगर मैं अपनी उम्मत पर इस को बार न समझता तो (इन दो रकअतों को) फ़र्ज़ क़रार दे देता।

सबसे अफ़ज़ल नमाज़

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से अबू मुस्लिम का यह क़ौल नक़्ल किया कि मैंने हज़रत अबूज़र गेफ़ारी से दरयाफ़्त किया कि कौन सी नमाज़ अफ़ज़ल है, उन्होंने फ़रमाया मैनें रसूलुल्लाह से इसके मुताल्लिक दरयाफ़्त किया था, हुजूर ने फ़रमाया था कि दर्मियान शब या आधी रात की नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है मगर ऐसा करने वाले (इस नमाज़ को अदा करने वाले) कम हैं।

हज़रत दाऊद को हुक्म हुआ

बाज़ अहादीस में आया है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से सवाल किया इलाही मैं तेरी इबादत करना चाहता हूं इस लिए कौन सा वक़्त अफ़ज़ल है? अल्लाह ने उन पर वही नाज़िल फ़रमाई और उनसे फ़रमाया ऐ दाउद न रात के अव्वल हिस्सा में नमाज़ को खड़ा हो न आख़िर हिस्सा में, जो अव्वल हिस्सा में खड़ा होगा वह आख़िर हिस्सा में सो जाएगा और जो आख़िर में खड़ा होगा वह अव्वल हिस्सा में सो जाएगा। तो शब के दर्मियानी हिस्सा में खड़ा हो तेरी ख़लवत में मैं हूं और मेरी ख़लवत में तू हो और उस वक़्त मेरे सामने अपनी हाजतें बयान कर।

यहया इब्न मुख़तार से मरवी है कि हसन बसरी ने फ़रमाया कि वस्त शब में पाबन्दी के साथ क़याम (नमाज़) और हक़ पर माल ख़र्च करने से ज़्यादा आंखों को ठंडक बख़्शने वाला, पीठ को (मासियत के बोझ से) हलका रखने वाला और दिल के लिए मुसर्रत बख़्श बन्दा का कोई अमल नहीं है।

वहशते क़ब्र नमाज़ से दूर हाती है

हज़रत अबू दरदा फ़रमाते हैं कि बिला शुब्हा मैं तुम्हारा बही ख़्वाह हूं, मैं तुम पर शफ़क़त करने वाला हूं, ऐ लोगो! वहशते क़ब्र को दूर करने लिए रात की तारीकी में नमाज़ें पढ़ो, रोज़े

महशर की गर्मी से बचने के लिए रोज़े रखो, सख़्त दिन के ख़ौफ़ से ख़ैरात करो। ऐ लोगो! मैं तुम्हारा भला चाहने वाला हूं, मैं तुम्हारा बही ख्वाह हूं। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि वह फ़रमा रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक तिहाई रात बाक़ी रह जाती है उस वक़्त दुनियावी आसमान की तरफ़ अल्लाह तआला नुज़ूले इजलाल फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है कौन है जो मुझ से दुआ करे और मैं उसको क़बूल करूं, कौन है जो मुझ से तालिबे मग़फ़िरत हो और मैं उसकी मग़फ़िरत करूं, कौन है जो मुझसे रिज़्क़ मांगे और मैं उसको रिज़्क़ अता करूं, कौन है जो मुझ से दुख दर्द दूर करने की इस्तदा करे और मैं उसका दुख दूर करूं। यह कैफ़ियत तुलूए फ़ज्र तक रहती है।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है हर रात आख़िरी तिहाई में अल्लाह तआला दुनियावी आसमान की तरफ़ नुज़ूले इजलाल फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है कि कौन मग़फ़िरत का तलबगार है कि मैं उसकी मग़फ़िरत करूं, कौन दुआ करने वाला है कि मैं उसकी दुआ क़बूल करूं, कौन साएल है कि मैं उसका सवाल पूरा करूं। सहाबा करामं इसी बिना पर आख़िरी रात की नमाज़ को मुस्तहब कहते थे।

आख़िरी रात में फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद दुआ क़बूल होती है

हज़रत अबू अमामा ने फ़रमाया, रसूलुल्लाह से दरयाफ़्त किया गया कि किस हिस्सए शब में दुआ ज़्यादा क़ाबिले पज़ीराई होती है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आख़िरी रात में और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने [illegible] से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया बेहतरीन रोज़े हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के रोज़े हैं, आप निस्फ़ मुद्दत रोज़ा रखते थे एक दिन रोज़ा से और एक दिन बग़ैर रोज़े के रहते थे, इसी तरह हर साल वह छः माह रोज़े से रहते थे और बेहतरीन नमाज़ दाऊद की नमाज़ है, हज़रत दाऊद आधी रात तक सोते और पिछले पहर में नमाज़ पढते थे।

हज़रत अबू हुरैरा ने फ़रमाया मैं रात के तीन हिस्से करता हूं एक तिहाई में नमाज़ अदा करता हूं बाक़ी एक तिहाई में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अहादीस (फ़रमूदाते नबवी) याद करता हूं।

हज़रत इब्ने मसऊद का इरशाद है कि रात की नमाज़ को दिन की नमाज़ पर ऐसी ही फ़ज़ीलत हासिल है जैसे पाशीदा तौर पर ख़ैरात देने को ज़ाहिरी तौर पर ख़ैरात देने पर। हज़रत अम्र बिन अलआस का इरशाद है कि रात की एक रकअत नमाज़ दिन की दस रकअतों से अफ़ज़ल है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील से दरयाफ़्त किया कि रात में दुआ किस वक़्त ज़्यादा सुनी जाती है, जिब्रील ने जवाब दिया, सहर के वक़्त से अर्श में लरज़ा आता है (यानी सहर के वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नुज़ूले इजलाल होता है)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद गरामी है कि नमाज़े शब को लाज़िम करो यह तुमसे पहले गुज़रने वाले सालेहीन का तरीक़ा था, क़यामे शब क़ुर्बे इलाही का ज़रिया और गुनाहों को साक़ित करने, गुनाहों से रोकने और जिस्म से बीमारी को दूर करने का वास्ता है।

रात की एक ख़ास साअ़त

शैख़ अबू नसैर ने अपने वालिद से बिल असनाद बहवाला हजरत जाबिर बयान किया है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि रात में एक ऐसी साअ़त है कि ठीक उसी साअ़त में अगर बन्दा अल्लाह से कुछ मांगता है तो खुदाए बुजुर्ग व बरतर ज़रूर अता फ़रमा देता है और यह साअ़त हर रात में मौजूद है। उलमा ने कहा है कि जिस तरह रमज़ान के अशरए अख़ीर में शबे क़द्र और रोज़े जुमा में क़बूलियत की एक साअ़त है उसी तरह यह साअ़त हर रोज़ आम है।

कहा गया है कि रात में एक साअ़त ऐसी है जिसमें हर आंख वाला सोता और ग़ाफ़िल हो जाता है सिवाए हय्य व क़य्यूम के जिसको फ़ना नहीं है शायद यह साअ़त वही हो। हज़रत अम्र बिन उक़बा से मरवी हदीस में है आख़िर शब की नमाज़ का इल्तज़ाम रखो यह नमाज़ मशहूदा व महसूरा है रात और दिन के मलाइका उस वक़्त हाज़िर और मौजूद होते हैं।

रसूलुल्लाह की नमाज़े शबीना

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की सराहत

अबू इसहाक़ ने बयान किया कि असवद बिन य[illegible] मेरे भाई और दोस्त थे मैंने उनसे जाकर कहा कि अबू उमर (असवद की कुन्नियत) मुझसे रसूलुल्लाह की उस नमाज़ के बारे में वज़ाहत कीजिए जो आप से हज़रत आइशा ने बयान फ़रमाई थी, उन्होंने कहा कि हज़रत आइशा ने फ़रमाया था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अव्वल वक़्त में सो रहते थे और आख़िर शब में इबादत्त फ़रमाते थे फिर अगर आपको बीवी की ज़रूरत होती तो आप अपनी यह ज़रूरत पूरी फ़रमा लेते और पानी को हाथ लगाये बग़ैर सो जाते थे और फिर जब अज़ाने अव्वल सुनते (अज़ाने फ़ज्र) तो उछल जाते थे (यक बारगी खड़े हो जाते थे) हज़रत आइशा ने उठ कर खड़े हो जाते थे नहीं फ़रमाया, मुराद यह है कि बहुत उजलत के साथ दफ़अतन हुज़ूर खड़े हो जाते थे और बदन पर पानी बहाते थे। (हज़रत उम्मूल मोमिनीन आइशा ने "गुस्ल फ़रमाते थे" नहीं फ़रमाया लेकिन मैं [illegible] जानता हूं कि हज़रत आइशा की मुराद उछलने और पानी मुराद बहाने से क्या थी) अगर हुज़ूर को नहाने की ज़रूरत नहीं होती थी तो नमाज़ के लिए वुज़ू फ़रमा कर नमाज़ में मशगूल हो जाते थे।

कुरैब मौला इब्ने अब्बास (यानी हज़रत इब्ने अब्बास के गुलाम कुरैब) ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि एक रात मैं अपनी ख़ाला उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना के पास रात को ठहर गया, मैं बिछौने के अर्ज़ में और रसूलुल्लाह और मेरी ख़ाला हज़रत मैमूना बिस्तर के तूल में इस्तराहत फ़रमा हुए, रसूलुल्लाह सो गये जब आधी रात हुई या कुछ कम वक़्त होगा कि हुज़ूर वाला बेदार हो गये, दस्ते मुबारक से चश्मे हाय मुबारक को मला (नींद की कैफ़ियत को दूर फ़रमाया) फिर सूरह आले इमरान की आख़िरी दस आयात पढ़ीं इसके बाद आप उठ खड़े हुए और पास ही जो मुश्क लटकी हुई थी उससे ख़ूब अच्छी तरह वुज़ू किया और फिर नमाज़ को खड़े हो गये, मैं भी उठ गया और जो अमल हुज़ूर ने फ़रमाया था वही मैंने किया और मैं हुज़ूर के पहलू में खड़ा हो गया, हुज़ूर ने अपना दस्ते रास्त और मेरे सीधे कान को मड़ोड़ा,

फिर दो र[illegible]अतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, फिर दो रकअतें, (दस रकअतें) पढ़ीं इसके बाद वित्र अदा फ़रमाए और फिर इस्तराहत के लिए लेट गये। जब सुबह को मोअज़्ज़िन (इत्तेला के लिए) हाज़िर हुआ तो आपने उठकर दो रकअतें इख़्तिसार के साथ अदा कीं उसके बाद बाहर जाकर नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई।

हज़रत आइशा की रिवायत

अबू सलमा से मरवी है कि उम्मूल मोमिनीन हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि मैं पिछली रात को रसुलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने पास इस्तराहत फ़रमा पाती थी यानी आप वित्र की नमाज़ से फ़रागत के बाद मेरे पास इस्तराहत फ़रमाया करते थे।

अमल की मदावमत पसन्दी

मसरूक़ ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि हुजूर वाला को हर अमल पर मदावमत बहुत पसन्द थी मैंने दरयाफ़्त किया कि हुजूर [illegible]ात के किस हिस्सा में उठते थे? फ़रमाया जब सुबह को मुर्ग़ की बांग[illegible] लेते थे।

हज़रत हसन से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलै[illegible] वसल्लम ने फ़रमाया र[illegible] में ज़रूर इबादत किया करो ख़्वाह चार रकअत पढ़ो या दो रकअत, इसलिए कि जिस घर [illegible]त में [illegible]माज़ पढ़ी जाती है उस घर में मुनादी आवाज़ देता है कि ऐ घर वालो! उ[illegible]नी अपनी [illegible]माज़ पढ़ लो।

हुजूर का इरशाद तिलावत के बारे में

अबू सलम[illegible] ने अबू हु[illegible] से रिवाय[illegible] है कि हुजूर सल्ल[illegible]ाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह त[illegible]ला नबी का खुशअलहान[illegible] से [illegible]आन प[illegible] जिस तरह सुनता है उस तरह किसी और चीज़ [illegible]ो नहीं स[illegible]ा। हज़रत[illegible] उमर ने [illegible] अइशा सिद्दीक़ा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ने रात [illegible]ी नम[illegible]ज़ में एक [illegible]ख़्स की क़िरात समा[illegible] फ़रमाई तो इरशाद फ़रमाया अल्लाह उस पर रह[illegible] ज़िल फ़रमाये उसने मुझे फ़लां फ़लां आयत याद दिला दी जो मैंने फ़लां सूरत से हज़्फ़ [illegible] दी थी।

हुजूर की नमाज़ शब [illegible] [illegible]क़दार

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शब में तेरह रकअत और दो रकअत फ़ज्र कीं सुन्नत पढ़ा करते थे। यह भी एक रिवायत में आया है कि आप रात में बारह रकअत पढ़ा करते थे और एक रकअत मज़ीद मिला कर नमाज़ को वित्र (ताक़) बना देते थे। एक रिवायत यह भी है कि आप दस रकअत नमाज़ पढ़ते थे और एक रकअत मज़ीद मिला कर वित्र बना देते थे। (इस तरह ग्यारह रकअतें हो जाती थीं)।

नमाज़े तहज्जुद की मज़ीद तफ़सील

नस्से क़ुरआन

अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताबे मुबीन में शब का क़याम करने वालों के बारे में इस तरह ज़िक्र फ़रमाया है:

वह रात के थोड़े हिस्सा में सोते हैं और सुबह दम अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करते हैं।

एक और आयत मे इस तरह आया है:

इनके पहलू रात को बिस्तरों से दूर रहते हैं और वह अपने रब से ख़ौफ़ और उम्मीद के ज़ेरे असर दुआ करते हैं।

एक और इरशादे रब्बानी है:

भला जो शख़्स रात के औक़ात में सजदा व क़याम की हालत में इबादत करता है, आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत की उम्मीद [illegible]ता है।

एक और आयत में इरशाद है:

और वह लोग (नेक बन्दे) हैं जो रातों को अपने रब के सामने स[illegible] रेज़ [illegible]ते हैं और खड़े रहते हैं।

एक और आयत में आया है:

रात के कुछ हिस्से में [illegible]ज्जुद प[illegible] कीजिए यह आप के लिए ज़ायद नमाज़ (फ़र्ज़) है क़रीब है कि आप का रब आप [illegible] मक़ामे म[illegible] पर [illegible]एज़ करे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इ[illegible]ते हैं कि जब क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला अ[illegible]ले पिछ[illegible] लोगों को [illegible]कट्ठा फ़रमा[illegible] तो एक [illegible]नादी पुकारेगा वह लोग खड़े हो जायें जिनके पह[illegible] बिस्[illegible]रों से अलग रहते थे और वह अपने रब को ख़ौफ़ व उम्मीद के तहत पुकारते थे, यह निदा [illegible]कर सब लोग खड़े हो जायेंगे मगर उनकी तादाद कम होगी। फिर दोबारा मुनादी पुकारेगा वह लो[illegible] खड़े हो जायें जिनको माले तिजारत, ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं [illegible]रती थीं उन मशाग़िल के बावजूद वह यादे इलाही से ग़ाफ़िल नहीं होते थे। यह लोग खड़े हो जायेंगे मगर यह भी थोड़े होंगे, फिर मुनादी पुकार कर कहेगा जो रन्ज व ग़म में अल्लाह की सना करते थे यह लोग खड़े हो जायेंगे मगर यह भी कम होंगे, फिर उनके बाक़ी लोगों का हिसाब किताब होगा।

सहरी खाना और क़यामे शब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है सहरी खाने से दिन के रोज़े के लिए और दोपहर में कैलूला करके रात के क़याम के लिए मदद हासिल करो क्योंकि रात भर सोने वाला क़यामत के दिन अफ़लास की हालत में आएगा, उसके कान में शैतान पेशाब कर देता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी कभी रात में एक ही आयत बार बार पढ़ते थे और इस तरह सुबह हो जाती। हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि एक शब रसूलुल्लाह मेरे पहलू ब पहलू इस्तराहत फ़रमा हुए फिर फ़रमाया आइशा! क्या तुम इजाज़त देती

हो कि आज रात मैं अपने रब की इबादत में मशगूल रहूं मैंने अर्ज़ किया ख़ुदा की क़सम, अगरचे मैं आपके कुर्ब को पसंद करती हूं मगर मैं आपकी ख़्वाहिश को तरजीह देती हूं (कि आप अपने रब की इबादत फरमायें) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उठ खड़े हुए और कुरआन पाक की तिलावत शुरू फ़रमाई असनाए तिलावत हुज़ूर इस क़दर रोए कि आपके दोनों मोंढ़े तर हो गए फिर आप बैठ कर कुरआन पढ़ने में मशगूल हुए और इस क़दर रोए कि आंसूओं से आपके दोनों पहलू और कूल्हे तर हो गए फिर आप लेट गए और कुरआन पढ़ते रहे और इस क़दर रोए कि क़रीब की ज़मीन भीग गई, इतने में हज़रत बिलाल हाज़िर हुए और यह हाल देख कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या अल्लाह तआला ने आपको मग़फ़ूर नहीं फ़रमा दिया, हुज़ूर ने जवाब दिया कि ऐ बिलाल! क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा नहीं बनूं आज रात ही यह आयात मुझपर नाज़िल हूई हैं।

बेशक आसमानों, ज़मीन की पैदाईश रात दिन के इख़्तिलाफ़ में उन दानिशमन्दों के लिए निशानियां हैं जो खड़े, बैठे और पहलू के बल लेटे अल्लाह का ज़िक्र करते हैं और ज़मीन व आसमान की आफ़रीनश पर ग़ौर कर के कहते हैं ऐ हमारे रब तूने उनको बेकार नहीं बनाया, तू पाक है (हर आजिज़ी से) हमको दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रख।

हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि मैंने कभी रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रात की नमाज़ बैठ कर पढ़ते हुए नहीं देखा, हां जब आप किब्र सिनी को पहुंचे तो आप बैठकर नमाज़ (तहज्जुद) अदा फ़रमाते थे फिर भी जब सूरह की तीस चालीस आयात बाक़ी रह जाती थीं तो आप खड़े हो जाते और उनको पढ़ कर रूकुअ फ़रमाते थे।

यअमर बिन बशीर का बयान है कि रात के वक़्त मैं अब्दुल्लाह बिन मुबारक के मकान पर गया तो उनको नमाज़ पढ़ते पाया वह सूरह इज़स्समाउल फ़तरत की तिलावत कर रहे थे, जब वो इस आयत पर पहुंचे: ऐ इंसान तुझे किस बात ने अपने रब्बे करीम से मग़रुर करके मुनहरिफ़ कर दिया है? तो उसको पढ़ कर ठहर गए और बार बार उसकी तकरार करने लगे यहां तक कि सारी रात गुज़र गई (मैं वापिस आगया और) फिर मैं तुलूए फ़ज्र के वक़्त उनके यहां गया वह उस वक़्त भी इस आयते करीमा की तिलावत कर रहे थे, जब उन्होंने देखा कि सुबह हो रही है तो नमाज़ ख़त्म कर दी और इसके बाद कहा, इलाही तेरे हिल्म ने और मेरी जिहालत ने मुझे दिलेर कर दिया था इसके बाद मैं लौट आया और उनको उनके हाल पर छोड़ दिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे सर्दी का मौसम मोमिन के लिए बहार का मौसम है, दिन छोटा होता है और उसमें वह रोज़ा रखता है, रात तवील होती है उसमें क़याम करता है।

हज़रत इब्ने मसऊद के पाकीज़ा अक़वाल

हज़रत इब्ने मसऊद ने फ़रमाया कुरआन पाक पढ़ने वाले के लिए मुनासिब वक़्त यह है कि रात को जब सब सो जायें तो कुरआन पाक की तिलावत करे (अपनी रात को पहचाने) और अपने दिन को पहचाने जब लोग बे रोज़ा हों (रोज़ा रखे) जब लोग हंस रहे हों तो अपने रोने से वाक़िफ़ रहे और अपनी परहेज़गारी को जाने, जब लोग हराम व हलाल में तमीज़ न कर रहे हों (तक़वा पर क़ायम रहे) अपनी आजिज़ी को पहचाने जब लोग गुरुर व तकब्बुर में मुब्तला हों,

(खुजूअ व खुशूअ से काम ले) अपने ग़म को पहचाने जब लोग खुशी और मसर्रत में मशगूल हों, जब लोग यावा गोई में मसरुफ़ हों तो अपनी ख़ामोशी को पहचाने (ख़ामोशी इख़्तियार करे)।

मग़रिब और इशा के दर्मियान नवाफ़िल

मग़रिब व इशा के दर्मियान नमाज़ की फ़ज़ीलत

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया अगर किसी ने मग़रिब के बाद छः रकअतें पढ़ीं और उनके दर्मियान कलाम नहीं किया तो यह छः रकअतें बारह साल की इबादत के बराबर होंगी। जनाब ज़ैद बिन ख़ब्बाब की रिवायत है कि यह भी शर्त है कि उस असना में कोई बुरी बात न कही।

कहा गया है कि पहली दो रकअतों में कुल या अय्युहल काफ़िरुन और कुल हुवल्लाहो अहद पढ़ना मुस्तहब है ताकि नमाज़ जल्द ख़त्म हो जाये इसलिए कि यह दो रकअतें नमाज़े मगरिब के साथ उठाई जाती हैं, बाक़ी चार रकअतों में अगर चाहे तो क़िरात तवील करे।

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मग़रिब के बाद किसी से बात किये बग़ैर अगर किसी ने चार रकअतें पढ़ीं तो यह रकअतें उसके लिए ईल्लीईन में लिखी जायेंगी और सवाब में यह शख़्स उसके मिस्ल हो जाता है जिसने शबे क़द्र में मस्जिदे अक़सा में नमाज़ अदा की। यह नमाज़ आधी रात के क़याम से बेहतर है।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बहवाला हज़रत अमीरुल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ बयान किया कि सिद्दीक़ अकबर ने फ़रमाया कि मैंने खुद सुना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे कि जिस शख़्स ने मग़रिब की नमाज़ के बाद चार रकअतें पढ़ीं तो वह उस शख़्स की मानिन्द हो गया जिसने हज पर हज अदा किया हो, हज़रत सिद्दीके अकबर फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि अगर कोई शख़्स छः रकअतें अदा करे तब, हुज़ूर ने फ़रमाया, उसके पचास बरस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।

हज़रत सईद बिन जुबैर ने बरिवायत हज़रत सोबान बयान किया कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जो शख़्स जमाअत वाली मस्जिद में मग़रिब व इशा के दर्मियानी अरसा में मस्जिद में रूका रहे और सिवाए नमाज़ या तिलावते कुरआन के किसी से कोई बात न करे तो उस बन्दा का अल्लाह तआला पर हक़ हो जाता है कि जन्नत के अन्दर उसके लिए ऐसे दो महल तामीर किये जायें कि हर महल का तूल सद साला रास्ता की मुसाफ़त के बक़द्र हो और दोनों महलों के नीचे ऐसे दरख़्त लगा दे कि तमाम दुनिया उन दरख़्तों के नीचे बतौर मेहमान बैठ जाये जब भी तंगी न हो। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत आइशा का इरशाद नक़्ल किया है फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला को मग़रिब की नमाज़ से ज़्यादा और कोई नमाज़ प्यारी नहीं, बन्दा उसी नमाज़ से अपनी रात शुरु करता है और उसी नमाज़ पर अपना दिन ख़त्म करता है यह नमाज़ न मुसाफ़िर से साकित है न मुक़ीम से। जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बाद चार रकअतें किसी शख़्स से बात किये बग़ैर पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए दो महल मोती और याकूत मुरस्सा तैयार फ़रमायेगा और अगर

किसी हमनशीं से बात किये बग़ैर मग़रिब के बाद छः रकअतें पढ़ेगा तो उसके चालीस बरस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा मग़रिब और इशा के दर्मियान बारह रकअतें पढ़ते थे।

हश्शाम बिन अरवा ने बरिवायत अपने वालिद से हज़रत आइशा सिद्दीक़ा का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स मग़रिब और इशा के दर्मियान बीस रकअतें पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल तैयार फ़रमायेगा। एक रिवायत में है कि हज़रत अनस बिन मालिक मग़रिब और इशा के माबैन नफ़्ल पढ़ते थे और फ़रमाते थे यह तहज्जुद की नमाज़ के क़ायम मक़ाम है।

अब्दुर्रहमान बिन असवद ने अपने चचा का क़ौल नक़्ल किया है कि उन्होंने कहा मग़रिब और ईशा के दर्मियान जब भी हज़रत इब्ने मसऊद के पास जाता आप को नमाज़ पढ़ते पाता, वह फ़रमाते थे कि यह ग़फ़लत की घड़ी है।

कहा गया है कि इसी नमाज़ के मुताल्लिक़ आयत ततजाफ़ा जुनूबि[illegible]म अनिल मज़ाजेअ नाज़िल हुई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा [illegible] रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने नमाज़े [illegible]रिब के बाद अलीफ़ [illegible]म मीम तंज़िलिस सजदा और तबारकल्लज़ी बयदिहिल ख़ैर पढ़ी तो उसने उस शब [illegible] हक़ अदा कर दिया, क़यामत के दिन उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह [illegible]शां और ता[illegible] होगा मुमकिन है कि यह मसनून दो गाना से अलावा हो या उसके साथ शा[illegible]ो।

मग़रिब की नमाज़ से पहले दो रकअतें

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल का इरशा[illegible]

हज़रत इमाम [illegible]हमद [illegible]न हंबल से मग़रिब की नमाज़ से [illegible] दो रकअतें पढ़ने के बारे में दरयाफ़्त किया गया, [illegible]या मैं ऐसा नहीं करता और अगर कोई करे तो कुछ हरज भी नहीं है। हज़रत इब्ने उमर से इसकी बाबत दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल[illegible] ज़माने में मैंने किसी को पढ़ते नहीं देखा लेकिन हज़रत इब्ने उमर ने मग़रिब से पहले दो रकअतें पढ़ने से किसी को मना भी नहीं फ़रमाया।

एक रिवायत में है कि हज़रत अनस ने फ़रमाया रसूलुल्लाह के अहदे मुबारक में गुरूब के बाद नमाज़े मग़रिब से पहले हम दो रकअतें पढ़ा करते थे, मैंने हज़रत अनस से दरयाफ़्त किया कि क्या आप ने भी पढ़ी थीं? उन्होंने फ़रमाया हम हुजूर को पढ़ते देखते थे लेकिन हुजूर ने न हुक्म दिया और न मुमानियत फ़रमाई।

सहाबा केबार में किसी ने यह नमाज नहीं पढ़ी

इब्राहीम नख़ई का बयान है कि एक ज़माना में कूफ़ा में बड़े बड़े बुजुर्ग सहाबी मौजूद थे जैसे हज़रत अली कर्रमुल्लाहो वज्हहु, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत अबू मसऊद अंसारी वग़ैरह लेकिन मैंने मग़रिब से पहले किसी को भी नमाज़ पढ़ते नहीं देखा और न हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर और हज़रत उसमान रिज़वानुल्लाह

तआला अलैहिम अजमईन में से किसी ने यह नमाज़ पढ़ी।

मग़रिब और इशा के दर्मियान

नमाज़ पढ़ना और उसका सवाब

अब्दुर्रहमान बिन हबीब हारसी बसरी ने सईद बिन सअद से उन्होंने अबू तैबा कुर्ज़ बिन दैरा अबदाल से रिवायत की है कि मुल्क शाम से मेरा भाई मेरे पास एक तोहफ़ा लाया और मुझसे कहा इसको कबूल फ़रमाइये क्योंकि यह बहुत उमदा तोहफ़ा है, कुर्ज़ ने उनसे दरयाफ़्त किया कि यह तोहफ़ा तुम कहां से लाये हो उन्होंने कहा कि मुझे यह तोहफ़ा इब्राहीम तैमी ने दिया था। कुर्ज़ अपने भाई से दरयाफ़्त किया कि क्या तुमने इब्राहीम तैमी से दरयाफ़्त था कि उनको यह तोहफ़ा कहां से मिला? उन्होंने कहा कि इब्राहीम तैमी से मैंने दरयाफ़्त किया था तो उन्होंने मुझे बताया था किः

हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात और दीदारे रसूल[illegible] करीम

मैं ख़ानए काबा के रूबरू बैठा हुआ तस्बीह व त[illegible]मीद व तहली[illegible]में मस[illegible]फ़ था कि एक साहब तशरीफ़ लाये और सलाम करके मेरी दाईं जानि[illegible] गये, वह [illegible]हुत [illegible]यादा ख़ूबरू थे, ऊमदा साफ़ और मुअत्तर लिबास पहने हुए थे, मैंने दर[illegible] किया, अ[illegible]ाह के बन्दे तुम कौन हो? उन्होंने जवाब दिया कि मैं ख़िज़्र हूं और [illegible]म्हे सलाम कर[illegible] आया हूं, चूंकि तुम अल्लाह के महबूब हो इस[illegible]लिए तुम[illegible] एक तोह[illegible]श [illegible]रता हूं, मैंने [illegible]रयाफ़्त किया कि वह कौन सा तोहफ़ा है? मेरे [illegible]छने पर हज़रत ख़िज़्र ने [illegible]ताया [illegible] तम [illegible] निकलने और धूप फैलने से पहले और इसी तरह ग[illegible]रुबे आफ़[illegible] से पहले [illegible]ात मरत[illegible]म्द शरीफ़, सात मरतबा सूरह सूरह अन्नासा, सात म[illegible]बा स[illegible]ह फ़लक़ [illegible]र सात मरतबा सूरह [illegible]लास, सात मरतबा कुल या अय्योहल काफ़ेरून, [illegible]मरतबा आयतल कुर्सी और सात मरतबा सुब्हानल्लाहि वलहम्दो लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर और सात मरतबा दरूद शरीफ़ और सात मरतबा अपने और अपने [illegible] और जमीअ़ मुसलमानों मर्द और औरतों के लिए इस्तिग़फ़ार पढ़ो और इस्तिग़फ़ार के बाद यह दुआ पढ़ा करोः

इलाही मेरे साथ और तमाम के साथ जल्दी बिला ताख़ीर दुनिया व आख़िरत में वही कर जो तेरे शायाने शान हो और हमारे साथ वह न कर जिसके हम लायक़ नहीं हैं, बेशक तू ही बख़्शने वाला, बुर्दबार, सख़ी, करीम, मेहरबान और रहम करने वाला है।

यह विर्द सुबह व शाम बराबर करते रहा करो इसको कभी तर्क न करना, चूंकि जिसने मुझे यह तोहफ़ा दिया है उसने मुझसे कहा था ख़्वाह उम्र भर में एक ही मरतबा ही पढ़ना लेकिन इसको पढ़ना ज़रूर। मैंने हज़रत ख़िज़्र से दरयाफ़्त किया कि आप को यह तोहफ़ा देने वाला कौन था? उन्होंने कहा कि मुझे सय्यदना आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाया है। फिर मैंने कहा कि मुझे भी ऐसी चीज़ बता दीजिए कि अगर मैं उसको पढूं तो मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीदार से ख़्वाब में मुशर्रफ हो जाऊं और मैं खुद हुजूर से दरयाफ़्त कर लूं कि वह तोहफ़ा क्या है जो हुजूर ने हज़रत ख़िज़्र को दिया था?

हज़रत ख़िज़्र ने फ़रमाया तो क्या तुम मुझ को झूठा समझते हो और मुझसे झूठ की तोहमत रखते हो? मैंने कहा नहीं ख़ुदा की क़सम ऐसा नहीं है मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से सुनना चाहता हूं।

हज़रत ख़िज़्र ने फ़रमाया कि अगर तुम ख़्वाब में ज़ियारत के ख़्वाहां हो तो अच्छी तरह समझ लो और याद कर लो कि मग़रिब की नमाज़ के बाद इशा तक बग़ैर किसी से बात किये खड़े हो कर नमाज़ (नफ़्ल) पढ़ो और हुज़ूरे क़ल्ब और पूरी तवज्जोह से नमाज़ अदा करो हर दो रकअत पर सलाम फेरो हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़लास सात बार पढ़ो, जमाअत के साथ ईशा की नमाज़ पढ़कर किसी से बात किये बग़ैर घर आ कर वित्र पढ़ो, सोने से क़ब्ल दो रकअतें और पढ़ो, हर रकअत में सूरह फ़ातिहा और सूरह इख़लास हर एक सात बार, फिर नमाज़ के बाद सजदा करो, सजदा में सात बार इस्तिग़फ़ार, सात मरतबा सुब्हानल्लाहि वलहम्दो लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीइल अज़ीम पढ़ो, फिर सजदे से सर उठा कर अच्छी तरह बैठकर दोनों हाथ उठा कर यह दुआ पढ़ो या हय्यो या क़य्यूमो या ज़ुलजलाले वल इकराम या इलाहल अव्वलीना वल आख़ेरीना या रहमानद्दुनिया वल आख़ेरते व र हिम हुमा या रब्बे या अल्लाहो या अल्लाहो, फिर खड़े हो जाओ और क़याम में वही दुआ करो जो पहले सजदा में की थी फिर सजदा में जाओ और यही दुआ मांगो इसके बाद सर उठा कर जिस जगह मुंह हो क़िब्ला रु हो कर दरूद शरीफ़ पढ़ते हुए सो जाओ। दरूद शरीफ़ बराबर पढ़ते रहना, यहां तक तुम नींद से मग़लूब हो जाओ। मैंने कहा कि मेरी ख़्वाहिश तो यह है कि जिस हस्ती से आप ने यह दुआ सुनी है वही मुझे भी इसकी तालीम दें। हज़रत ख़िज़्र ने कहा कि तुम मुझ पर झूठ की तोहमत रखते हो, मैंने कहा उस ख़ुदा की क़सम जिसने मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबीए बरहक़ बना कर भेजा मैं आप पर झूठ की तोहमत नहीं लगाता। हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिस जगह इस दुआ की तालीम दी जा रही थी और हुक्म दिया जा रहा था मैं वहां मौजूद था पस जिस हस्ती को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तालीम दी थी मैंने उस हस्ती से इसे सीख लिया। मैंने हज़रत ख़िज़्र से कहा अच्छा मुझे इस दुआ का सवाब सुनाइये तब ख़िज़्र ने कहा कि अब तुम ख़ुद ही सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त कर लेना।

इब्राहीम नख़ई का बयान है कि मैंने हज़रत ख़िज़्र के इरशाद के मुताबिक़ दुआयें पढ़ीं और बिस्तर पर लेट कर बराबर दुआ पढ़ता रहा, ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात और हुज़ूर के दीदारे पाक की आरज़ू से मुझे इतनी ख़ुशी हुई कि मेरी नींद उड़ गई (जागते जागते) और सुबह भी हो गई, मैं फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर अपनी महराब में बैठा रहा यहां तक कि दिन चढ़ आया उस वक़्त मैंने इशराक़ की नमाज़ पढ़ी लेकिन मैं अपने दिल से हम कलाम था कि अगर आज रात तक ज़िन्दगी बाक़ी रही तो साबिका शब की तरह इन दुआओं को फिर पढूंगा, यह ख़्याल करते करते मैं सो गया, नींद में कुछ फ़रिश्ते आये मुझे सवार करके अपने हमराह ले चले और मुझे ले जाकर जन्नत मे दाख़िल कर दिया, मैंने वहां कुछ महल देखे उनमें से बाज़ याक़ूते सुर्ख़, कुछ सब्ज़ ज़मुर्रद के थे और बाज सफ़ेद मोतियों के थे, शहद, दूध और शराबे (तहूर) की नहरें भी दिखाई गईं, एक महल में एक हसीन औरत पर मेरी नज़र पड़ी जो मुझे इश्तियाक़ से देख

ही थी उसके चेहरा के नूर से सूरज की रौशनी मांद थीं, उसकी ज़ुल्फ़ें उस महल के ऊपर से ज़मीन तक लटक रही थीं। चूंकि फ़रिश्तों ने मुझे जन्नत में दाख़िल किया था इस लिए मैंने उन्ही से पूछा कि यह महल कौन से हैं और यह औरत कौन है और किसके लिए है? उन्होंने कहा कि तेरे अमल की तरह जो भी अमल करे यह उसके लिए है। फ़रिश्ते मुझे जन्नत से उस वक़्त तक बाहर नहीं लाये जब तक उन्होंने मुझे जन्नत के फल न खिला दिए और वहां का शरबत न पिला दिया उसके बाद उन फ़रिश्तों ने मुझे उसी जगह पहुंचा दिया जहां मैं बैठा था, इतने में मैंने देखा कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सत्तर अम्बिया के साथ फ़रिश्तों की सत्तर क़तारों के जुलू में तशरीफ़ लाए हैं। उन क़तारों में से हर क़तार मशरिक़ से मग़रिब तक चली गई थी। हुज़ूर तशरीफ़ लाए और सलाम अलैक से नवाज़ा और मेरा हाथ पकड़ लिया मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझसे ख़िज़्र ने इस तरह फ़रमाया है कि उन्होंने यह बात हुज़ूरे वाला से सुनी है, यह सुन कर हुज़ूर ने फ़रमाया ख़िज़्र ने जो कुछ कहा सच कहा और जो कुछ वह बयान करते हैं हक़ होता है, वह अहले ज़मीन में सबसे बड़े आलिम हैं और रईसुल अबदाल हैं और अल्लाह के लशकरियों में से हैं, मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह जो ऐसा अमल करेगा उसका क्या सवाब मिलेगा, हुज़ूर ने फ़रमाया कि जो कुछ तूने देखा और जो कुछ तुझे दिया गया उससे बढ़कर और क्या सवाब होगा, तूने जन्नत में अपनी जगह देखी, जन्नत के फल खाये और जन्नत का शरबत पिया, फ़रिश्तों और अंबियां को [illegible] देख लिया और हूरें भी देख लीं (इससे बढ़कर सवाब और क्या होगा) मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह अगर कोई शख़्स मेरे अमल की तरह अमल करे और जो कुछ मैंने मुशाहिदा किया वह यह सब कुछ नहीं देख पाये तो क्या उसको इन चीज़ों के बदले कुछ सवाब मिलेगा, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे नबीए [illegible] कर भेजा है ऐसे शख़्स के तमाम सग़ीरा और कबीरा गुनाह बख़्श दिये जायेंगे, अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब नहीं फ़रमायेगा और न उससे नाख़ूश होगा अगर वह जन्नत को ख़्वाब में नहीं भी देखेगा तब भी उसको वही कुछ मिलेगा जो तुझ को दिया गया है, एक मुनादी आसमान की निदा करेगा कि इस अमल को करने वाले के और उम्मते मोहम्मदिया के मशरिक़ से लेकर मग़रिब तक (जहां जहां वह मौजूद हैं) तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के गुनाह अल्लाह तआला ने बख़्श दिए हैं, बाईं जानिब के फ़रिश्ते को (किरामन कातेबीन में से एक को) हुक्म दिया जायेगा कि आइन्दा साल तक इस बन्दे के गुनाह न लिखना।

यह सुनकर मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह मेरे मां बाप हुज़ूर पर कुरबान! क़सम है उस ख़ुदा की जिसने मुझे हुज़ूर के जमाल से मुशर्रफ़ और सरफ़राज़ फ़रमाया और जन्नत की सैर कराई क्या उस शख़्स के लिए भी इस क़दर सवाब है? हुज़ूर ने फ़रमाया हां, यह सब इनाम उसको दिया जायेगा। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह तब तो तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिए यह ज़रूरी है कि वह इस तरीक़े को सीखें और सिखायें क्योंकि इसमें बड़ी फ़ज़ीलत और बड़ा सवाब है। यह सुनकर हुज़ूर ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे बरहक़ नबी बना कर भेजा इस अमल को वही शख़्स करेगा जिसको अल्लाह ने सईद पैदा किया होगा और इस को वही तर्क करेगा जो पैदाइशी तौर पर बदबख़्त होगा।

मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ऐसा अमल करने वाले को क्या कुछ और भी मिलेगा? हुजूर ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे नबीए बरहक़ बना कर भेजा है कि जो शख़्स यह अमल एक रात भी करेगा तो उसके लिए कायनात की पैदाइश से सूर फूंके जाने के दिन तक आसमान से बरसने वाले हर क़तरे की तादाद के बराबर नेकियां लिखी जायेंगी और ज़मीन से पैदा होने वाले दानों के बराबर उसकी बुराइयां और बदियां दूर कर दी जायेंगी, ख़्वाह वह मर्द हो या औरत।

शबे जुमा में दो रकअ़त नमाज़

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो कोई शबे जुमा में दो रकअ़त नमाज इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा, आयतल कुर्सी एक एक बार सूरह इख़लास पन्द्रह बार पढ़े फिर नमाज़ के आख़िर में हज़ार मरतबा यह दरूद अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन नबीइल उम्मी पढ़े तो वह मेरा दीदार ख़्वाब [illegible] ज़रूर करेगा यानी दूसरा जुमा होने से पहले उसको मेरा दीदार ख़्वाब [illegible] जायेगा और जिस[illegible] मुझको देखा उसके लिए जन्नत है, उसके गुज़िश्ता और आइन्दा गुनाह [illegible] कर दिये जायेंगे।

नमाज़े इशा के बा[illegible]

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की असन[illegible]द के साथ ह[illegible]रत इब्ने [illegible]ब्बास से रिवायत की है कि जिसने [illegible]माज़ इशा [illegible] बादे चार [illegible]अत न[illegible]ाज़े ईशा के [illegible]द चार रकअत नमाज़े नफ़्ल पढ़ी गोया मस्जिदे [illegible]राम में श[illegible] क़द्र का स[illegible] उस[illegible] हासिल [illegible]गया!

चार रकअत न[illegible]ल का [illegible]ाब

कअ़ब अहबार [illegible] क़ौल है कि जि[illegible]ने इशा के बाद ख़ूब ऊ[illegible] क़िरात के साथ चार रकअत नफ़्ल पढ़े उसके लिए [illegible] अज्र है जितना शबे क़द्र का। (गोया उसने शबे क़द्र में नमाज़ अदा की) शैख़ अबू नसर ने अपने [illegible]लिद से बिल असनाद हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्ल[illegible] [illegible]लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स ईशा के बाद दो रकअतें इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़लास बीस बार पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसके लिए दो महल बनायेगा जो जन्नत में रहने वालों को नज़र आयेंगे।

नमाज़ वित्र का वक़्त

वित्र की नमाज़ रात के आख़िरी हिस्सा में पढ़ना अफ़ज़ल है क्योंकि उस वक़्त के क़याम की बड़ी फ़ज़ीलत है जैसा कि इससे पहले बयान किया जा चुका है। हज़रत नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की है कि उन्होंने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह से एक शख़्स ने नमाज़े शब के बारे में दरयाफ़्त किया, हुजूर ने फ़रमाया दो दो रकअत पढ़ो जब सुबह सादिक़ होने का एहतमाल हो तो तीसरी रकअत मिला कर वित्र पढ़ लिया करो।

हज़रत उमर फ़ारूक़ आख़िरी रात में वित्र पढ़ा करते थे और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अव्वल रात में सोने से क़ब्ल वित्र पढ़ लिया करते थे। जब हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

उन दोनों हज़रात से दरयाफ़्त फ़रमाया कि वित्र किस तरह पढ़ते हो? तो हज़रत सिद्दीके अकबर ने फ़रमाया अव्वल शब में सोने से क़ब्ल और हज़रत उमर फ़ारूक़ ने बताया कि आख़िरी रात में पढ़ते हैं तो आपने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि यह मुहतात हैं और हज़रत उमर फ़ारूक़ के बारे में इरशाद किया कि यह क़वी व तवाना हैं। रिवायत में आया है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ ने फ़रमाया कि होशमन्द अव्वल शब में वित्र पढ़ लेते हैं और क़वी व तवाना आख़िरी रात में और यही अफ़ज़ल है लेकिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के अमल के बाइस बाज़ लोगों ने अव्वल शब में वित्र पढ़ना अफ़ज़ल क़रार दिया है।

हज़रत उसमान ग़नी के बारे में रिवायत है कि उन्होंने (इस सिलसिला में) फ़रमाया मेरा मामला यह है कि मैं अव्वल शब में वित्र पढ़ लेता हूं फिर अगर बेदार हो गया तो फिर वित्र पढ़ लेता हूं। एक रकअत पढ़ कर वित्र को शिफ़ा बना लेता हूं गोया मेरी यह रकअत एक अजनबी ऊंट की तरह है जिसको मैं उसके हमजिन्सों से मिला देता हूं। हज़रत उसमान का यह अमल कि आप रात भर में पूरा कुरआन पाक एक रकअत में ख़त्म कर दिया करते थे। यह एक रकअत ही उनकी वित्र नमाज़ थी।.

हज़रत अबू हुरैरा को सरवरे आलम की तीन हिदायतें

हज़रत अबू हुरैरा फ़रमाते हैं कि मेरे हबीब अबुल क़ासिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन बातों की वसीयत फ़रमाई है, एक यह कि सोने से पहले वित्र पढ़ा करूं, दोम हर माह तीन रोज़े रखूं सोम यह है कि चाश्त की दो रकअतें पढ़ा करूं। जिस शख़्स को यह डर हो कि सोने के बाद आंख नहीं खुल सकेगी उस को सोने से पहले वित्र ज़रूर पढ़ लेना चाहिए।

नमाज़े वित्र के तीन तरीक़े

हज़रत अली ने फ़रमाया नमाज़ें वित्र के तीन तरीक़े हैं अगर तुम चाहो तो अव्वल शब में पढ़ लो फिर दो दो नफ़्ल पढ़ो और चाहो तो वित्र की एक रकअत पढ़ कर सो रहो, फिर अगर तुम बेदार हो जाओ तो एक रकअत पढ़ कर इसको शिफ़ा बना दो और इसके बाद दूसरे वित्र पढ़ लो और अगर दिल चाहे तो वित्र को आख़िरी रात के लिए छोड़ दो और तहज्जुद की नमाज़ के बाद पढ़ लो।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लहा ने इरशाद फ़रमाया जिसको अन्देशा हो कि आख़िर शब में बेदार नहीं हो सकेगा उसको चाहिए कि अव्वल शब में वित्र पढ़ कर सो रहे और जिसको पिछली रात में उठने की उमीद हो वह वित्र को मोअख़्ख़र कर दे (आख़िर शब में पढ़े) क्योंकि आख़िर शब की नमाज़ में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और यह अफ़ज़ल हैं।

हज़रत आइशा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आख़िर शब में वित्र पढ़ लेते थे अगर आपको बीवी से कुरबत की ग़र्ज़ होती तो कुरबत फ़रमाते वरना जाए नमाज़ ही पर लेट जाते थे यहां तक कि (सुबह सादिक़ के वक़्त) बिलाल हाज़िर होकर नमाज़ (तैयार होने) की इत्तेला देते थे।

रसूलुल्लाह ने पूरी रात में वित्र पढ़े हैं

हज़रत आइशा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पूरी

रात में वित्र पढ़े हैं यानी अव्वल में भी, दर्मियान शब में भी और आख़िर शब में भी। आप के वित्र की आख़िरी हद सहर होती थी। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह (कभी कभी) वित्र अज़ान के वक़्त और फ़ज्र की दो रकअतें इक़ामत के वक़्त पढ़ लेते थे। सहाबा कराम नमाज़े इशा पढ़ कर दो रकअतें पढ़ते थे फिर चार पढ़ते थे फिर जो चाहता वित्र पढ़ लेता और जिस की राय होती वह सो रहता (पिछले पहर उठ कर वित्र पढ़ लेता)।

वित्रों को फ़स्ख़ कर देना

वित्रों का फ़स्ख़ करना

अगर अव्वल शब में वित्र पढ़ लिये हों और फिर तहज्जुद को भी उठे तो अव्वल शब के पढ़े होये वित्रों को फ़स्ख़ कर दे और अज़ सरे नौ वित्र पढ़े या वित्र को फ़स्ख़ किए बग़ैर जिस क़दर चाहे नमाज़ अदा करे। इस सिलसिला में इमाम अहमद हंबल की एक रिवायत तो यह है कि वह वित्र को फ़स्ख़ न करे (यह अदमे फ़स्ख़ की रिवायत है) और दूसरी फ़ज़्ल बिन ज़ियाद की रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया आख़िर शब में वित्र अफ़ज़ल हैं हां अगर किसी को सोते रहने का अन्देश हो तो अव्वल शब में वित्र पढ़ ले फिर अगर आख़िर शब में बेदार हो जाये दो दो रकअतें (कुल चार) पढ़ ले और वित्र न पढ़े लेकिन दूसरी रिवायत इस रिवायत के ख़िलाफ है। फ़ज़्ल बिन ज़ियाद कहते हैं कि मैंने इमाम अहमद हंबल से दरयाफ़्त किया कि पिछली रात में उठलने वाला क्या सोने से पहले पढ़े हुए वित्र फ़स्ख़ कर दे। उन्होंने फ़रमाया फ़स्ख़ न करे लेकिन अगर फ़स्ख़ कर दे और अज़ सरे नौ पढ़े तो इस में भी काई हरज नहीं है।

हज़रत उमर, हज़रत उसामा, हज़रत अली, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत अबू हुरैरा ने ऐसा किया है। वित्र को फ़स्ख़ करने का तरीक़ा यह है कि अव्वल शब में अगर वित्र की एक रकअत पढ़ कर सोया और फिर आख़िर शब में नमाज़ पढ़ने के लिए बेदार हो जाए तो पढ़े हुए वित्र को फ़स्ख़ करने और उसको शफ़अ़ बनाने की नीयत से एक रकअत और पढ़ कर सलाम फेर दे इस तरह पहली रकअत जुफ़्त हो जाएगी, उसके बाद जिस क़दर चाहे दो दो रकअत पढ़े और तुलूए फ़ज्र से पहले किसी दोगाना को एक रकअत पढ़ कर वित्र बनादे।

हज़रत उसमान इब्ने अफ़्फ़ान के अमल से इसकी वज़ाहत हुई है जैसा कि ऊपर बयान हो चुका है, ऐसा न करे कि अव्वल शब में पढ़े हुए वित्र वैसे ही छोड़ दे और फिर मज़ीद वित्र पढ़ ले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि एक रात में वित्र की दो नमाज़ें नहीं हैं। अलबत्ता अगर पहले पढ़े हुए वित्र छोड़े दे (फ़स्ख़ कर दे) फिर जितनी नमाज़ चाहे पढ़े और आख़िर में वित्र पढ़ ले तो जाइज़ है जैसा कि ऊपर सराहत की जा चुकी है।

वित्र की दुआ

वित्र की आख़िरी रकअत में रूकुअ से सर उठा कर यह दुआ पढ़ी जाये हज़राते हनाबला का यही मज़हब है, अहनाफ़ में क़िरत के बाद रूकुअ से पहले तफ़अ यदैन

उसके बाद दुआए कुनूत पढ़ी जाती है।

इलाही हम तुझ ही से मदद चाहते हैं और तुझ ही से हिदायत के और मग़फ़िरत के तालिब हैं और हम तुझ पर ईमान रखते हैं और तेरा भरोसा रखते हैं और तमाम भलाईयों पर तेरी सना करते हैं और हम तेरा शुक्र अदा करते हैं और ना शुक्री नहीं करते, हम तेरे ख़ताकार को छोड़ते हैं और उससे क़तअ़ ताल्लुक़ करते हैं। इलाही हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते हैं और सजदा करते हैं और तेरी ही तरफ़ हम दौड़ते हैं और शताबी करते हैं। हम तेरी रहमत से उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं बिला शुब्हा तेरा अज़ाब काफ़िरों को पहुंचने वाला है।

इलाही जिनको तूने हिदायत अता फ़रमाई मिनजुमला उनके मुझे यही हिदायत अता फ़रमा और जिनको तू ने आराम दिया मिनजुमला उनके मुझे भी आराम अता फ़रमा और जिनको तूने कारसाज़ी की उनके मिनजुमला मेरे भी काम बना, उसमें बरकत अता कर और अपने फ़ैसला की बुराई से मुझे महफ़ूज़ रख, बिला शुब्हा तू हुक्म चलाता है तुझ पर हुक्म नहीं चलाया जाता, बिला शुब्हा जिसको तूने दोस्त बनाया वह ज़लील नहीं हुआ और जिसको तूने दुशमन बनाया वह इज़्ज़त न पा सका, ऐ हमारे परवरदिगार तू बुजुर्ग व बरतर है इलाही मैं तेरे ग़ज़ब से तेरी रज़ा की और तेरे अज़ाब से तेरी माफ़ी की और तुझसे तेरी ही पनाह मांगता हूं। इलाही जैसी तूने अपनी सना फ़रमाई वैसी सना मैं किसी हाल में नहीं कर सकता।

इन अलफ़ाज़ के बाद चाहे तो दुआईया अलफ़ाज़ और इज़ाफ़ा करे, इसके बाद हाथों को चेहरे (मुंह) पर फेरे। एक रिवायत में है कि सीने पर फेरे अगर माहे रमज़ान में यह दुआ मांगने वाला इमाम हो तो दुआ में वाहिद के सेग़ों के बजाए जमा के सेग़े इस्तेमाल करे।

नीन्द का ग़लबा

जो शख़्स रात में नमाज़ पढ़ रहा हो अगर उसपर नीन्द का ग़लबा हो जाये तो बेहतर यह है कि वह सो जाये क्योंकि बुख़ारी और मुस्लिम (सहीहैन) में हज़रत आइशा से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब किसी को नमाज़ की हालत में नीन्द ग़ालिब हो जाये तो उसको सो जाना चाहिए ताकि नीन्द का ग़लबा जाता रहे इसलिए कि ऊँघने की हालत में नमाज़ पढ़ेगा तो मुमकिन है कि इस्तिग़फ़ार के बजाए ख़ुद को बुरा कहने लगे।

अब्दुल अज़ीज़ बिन हबीब हज़रत अनस से रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो दो सुतूनों के दर्मियान रस्सी बंधी हुई मुलाहज़ा फ़रमाई। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम से इसकी वजह दरयाफ़्त फ़रमाई तो सहाबा ने अर्ज़ किया कि यह हज़रत ज़ैनब की रस्सी है वह रात को जब नमाज़ पढ़ती हैं तो जब सुस्त हो जाती हैं या उनका बदन (नीन्द के ग़लबा से) ढीला पड़ जाता है तो हाथ से उसका सहारा ले लेती हैं, आपने फ़रमाया इस रस्सी को खोल दो जब तक बदन में चुस्ती रहे नमाज़ पढ़ो और जब थक जाओ या नीन्द का ग़लबा हो तो बैठ जाओ।

हज़रत अरवा का बयान है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा की ख़िदमत में क़बीलए बनी असद की एक औरत मौजूद थी कि हुज़ूर अक़दस तशरीफ़ लाये और फ़रमाया यह कौन है हज़रत आइशा ने अर्ज़ किया कि यह फ़लां औरत है रात को (इबादत की वजह से) सोती

ही नहीं, हुजूर ने फ़रमाया तुम में जिस अमल की सकत और ताक़त है उसकी पाबन्दी करो खुदा की क़सम तुम थक जाओगे अल्लाह तआला नहीं थकेगा (वह बदला देने से नहीं थकेगा) हज़रत आइशा फरमाती हैं कि अल्लाह को वही अमल ज़्यादा महबूब है जो हमेशा किया जाये ख़्वाह वह कम ही क्यों न हो (रोज़ किया जाये) क्योंकि रसूलुल्लाह जब लोगों को उनकी ताक़त और तवानाई के मुताबिक़ अमल का हुक्म देते थे तो वह अर्ज़ करते थे या रसूलल्लाह हम आप की तरह किस तरह हो सकते हैं कि अल्लाह तआला ने आपकी तमाम अगली पिछली लग़जिशें तो माफ़ फ़रमा दी हैं लिहाज़ा हमारा अमल सख़्त और ज़्यादा होना चाहिए यह सुनकर हुज़ूर वाला के चेहरए मुबारक पर नागवारी के आसार नुमायां हो जाते। पस जिस इबादत गुज़ार पर नीन्द का इस क़दर ग़लबा हो जाये कि उसको नमाज़ और ज़िक्र से रोके (नमाज़ और ज़िक्र में रूकावट पड़े) तो उसको चाहिए कि सो जाये ताकि नीन्द का ग़लबा जाता रहे और बाद में वह हश्शाश बश्शाश हो कर इबादत कर सके और जो पढ़े उसको समझे भी।

बैठे बैठे सो जाना बुरा है

हज़रत इब्ने अब्बास बैठे बैठे सो जाने को बुरा [illegible]झते थे। हदीस शर[illegible] में आया है रात में नीन्द की तकलीफ़ न उठाओ। चुनांचे बाज़ लोग [illegible]दन खुद को [illegible]ने में [illegible]शगूल कर लेते थे ताकि कुछ आराम करके रात में इबादत कर सकें बा[illegible] सुलहा क[illegible] सोने को बुरा जानते थे और जब तक पूरी तरह ग़ालिब नहीं आ जाती थी न[illegible] थे कहते [illegible] कि वहब बिन मम्बा यमनी ने तीस बरस तक ज़मीन से अपना पहलू नहीं लगाया, [illegible]प के प[illegible] चमड़े का एक सहारा था जब नीन्द [illegible] मगलूब [illegible]ाते तो उ[illegible]र सी[illegible]ा रखकर च[illegible] बार झूलते और फिर घबरा कर नमाज़ के लिए [illegible]ड़ हो जाते, वह फ़रमा[illegible] थे [illegible] किसी [illegible] में मुझे शैतान को देखना इतना नागवार नहीं गुज़[illegible]ता जितना [illegible]स्तर को दे[illegible]ना ना[illegible] [illegible]राद यह कि बिस्तर नीन्द की तरफ रग़बत दिलाता है।

अबदाल के औस[illegible]

किसी से अबदाल के औस[illegible] दरयाफ़्त किये गये उन्होंने जवाब दिया कि उनका खाना फ़ाका है उनका सोना उस वक़्[illegible] जब नीन्द का इन्तहाई ग़लबा हो, वह ज़रूरत के वक़्त बोलते हैं उनकी ख़ामोशी हिकमत है और उनका इल्म कुदरत है। बाज़ सुलहा से दरयाफ़्त किया गया कि ख़ौफ़े खुदा रखने वालों के औसाफ़ क्या हैं उन्होंने जवाब दिया उनका खाना बीमारों का खाना होता है और उनकी नीन्द डूबने वालों की नीन्द होती है लेकिन कोई शख़्स सालेहीन के आमाल व अहवाल को पेशे नज़र न रखे बल्कि उन अहवाल व अक़वाल की जुस्तजू करना चाहिए जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मरवी हैं उनको देखो कि क़ाबिले एतमाद वही हैं ख़्वाह उनकी पैरवी में कोई शख़्स ऐसी हालत ही को क्यों न पहुंच जाये जो मुनफ़रिद हो।

बेहतर अमल

हज़रत उम्मे सलमा ने हज़रत आइशा से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किसी शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि कौन सा अमल अफ़ज़ल है? हुज़ूर ने फरमाया अमल वही अफ़ज़ल है जो हमेशा किया जाये ख़्वाह वह कम ही क्यों न हो।

अलक़मा ने हज़रत आइशा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदते करीमा यह थी कि आप की नमाज़ हमेशा पाबन्दी के साथ होती थी इसलिए रसूलुल्लाह कभी आधी रात तक नमाज़ पढ़ते थे कभी एक तिहाई रात तक, कभी आधी रात से रात के 1/12 हिस्सा तक, कभी सिर्फ़ चहारूम रात तक, कभी रात के छठे हिस्से तक, उन तमाम का तज़किरा सूरह मुज़म्मिल में आया है। एक रिवायत है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रात की नमाज़ पढ़ो ख़्वाह उसका वक़्त इतना क़लील ही क्यों न हो जितना बकरी का दूध दूहने का। उतनी देर में कभी दो रकअतें होती हैं और कभी चार। हुजूर वाला ने यह भी इरशाद फ़रमाया कि आदमी के लिए रात में दो रकअतें पढ़ लेना दुनिया और माफ़ीहा से बेहतर है। अगर उम्मत की मशक़्क़त का ख़्याल न होता तो मैं रात की दो रकअतें उनपर फ़र्ज़ कर देता। हुजूर ने यह सब-कुछ इसलिए किया कि क़यामे शब की इबादत उम्मत पर दुशवार न गुज़रे और इबादत से उनको बेज़ारी न हो जाये और वह उकता न जायें उनके लिए सहूलत बाक़ी रहे। हुजूर ने क़यामे शब की हिदायत फ़रमाई और इसका सवाब व फ़ज़ीलत बयान फ़रमा दी ताकि वह सिर्फ़ फ़राइज़ व सुनन पर इक्तिफ़ा न करें।

मुसतहब क़याम

एक तिहाई रात का क़याम मुसतहब है और इस्तिहबाब का कम तर दरजा छटे हिस्सा तक क़याम व इबादत है। इसलिए कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम रात कभी क़याम नहीं फ़रमाया और न आप तमामा रात सुबह तक महवे ख़्वाब रहे हैं बल्कि रात में कुछ हिस्सा क़याम ज़रूर फ़रमाते थे।

एक क़ौल यह भी कि अव्वल रात की नमाज़ तहज्जुद पढ़ने वालों के लिए है और आधी रात की नमाज़ आबिदों और ज़ाहिदों की लिए है और आख़िर शब का क़याम नमाज़ियों के लिए है और सिर्फ़ फ़ज्र के क़याम ग़ाफ़िलों के लिए है।

युसुफ़ बिन मेहरान रिवायत करते हैं कि मुझे इत्तेला मिली है कि अर्श के नीचे मुर्ग़ की शक्ल का एक फ़रिश्ता है जिसके नीचे मोतियों और नाख़ून सब्ज़ ज़मुर्रद के हैं। जब तिहाई रात गुज़र जाती है तो वह बाजू फड़फड़ाता है और कहता है ऐ इबादत गुज़ारो! उठो और जब सुबह सादिक़ हो जाती है तो बाजू फड़फड़ा कर कहता है ऐ ग़ाफ़िलों! उठो (उनसे कहता है जो तहज्जुद के लिए नहीं उठे थे) उनका गुनाह उन ही पर है।

शब बेदारों के दिलों पर अल्लाह तआ़ला की तवज्जोह

बाज़ अहले इरफ़ान का क़ौल है कि अल्लाह तआ़ला सहर के वक़्त शब बेदारों के दिलों पर नज़र फ़रमाता है और उनको नूर से भर देता है जिस के बाएस उन के दिलों पर रूहानी फ़वाईद का नुज़ुल होता है और वह मुनव्वर हो जाते हैं। फिर यह रौशनी उन मुनव्वर दिलों से ग़ाफ़िलों के दिलों तक पहुंचती है।

अल्लाह के मक़बूल बन्दे

एक रिवायत में आया है कि अल्लाह तआ़ला ने बाज़ सिद्दीक़ीन को बज़रिया इलहाम ख़बर दी कि मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं जो मुझ से मोहब्बत रखते हैं और मैं भी उनको महबूब रखता हूं वह

मेरे मुशताक़ हैं और मैं उन का, वह मेरी तरफ़ देखते हैं अगर तुमने भी वैसा ही अमल किया तो मैं तुम को भी महबूब बना लूंगा और अगर तुम उनका तरीक़ा तर्क कर दोगे तो मैं भी तुम से मुंह मोड़ लूंगा। उन सिद्दीक़ीन ने अर्ज़ किया इलाहल आलमिन! तेरे उस महबूब बन्दे की निशानियां क्या हैं? अल्लाह तआला ने फ़रमाया, वह दिन में नमाज़ के औक़ात (सायों) की ऐसी हिफ़ाज़त करते हैं जैसे दरिन्दों से डरने वाला चरवाहा अपनी बकरियों की देख भाल करता है और वह गुरूबे आफ़ताब के ऐसे मुशताक़ होते हैं जैसे परिन्दे अपने अपने घौंसलों में जाने के लिए सूरज डूबने के मुन्तज़िर होते हैं, जब रात हो जाती है तो बिस्तर लगा दिये जाते हैं, चरपाईयां बिछा दी जाती हैं और हर दोस्त तन्हाई में अपने दोस्त से मिलता है, उस वक़्त वह मेरे लिए क़याम करते हैं और मेरे लिए अपने चेहरे बिछाते यानी सजदे करते हैं और वह मेरे कलाम की तिलावत करके मुझ से हम कलाम होते हैं और मेरे इनाम का ज़िक्र करके आजज़ी का इज़हार करते हैं। उन में से कुछ गिरया व ज़ारी करते हैं और कुछ ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ, कुछ आह करते हैं और कुछ ज़ारी, कुछ क़याम व क़ऊद करते हैं और कुछ [illegible]कूअ व सुजूद।

मेरी तरफ़ से उन पर सबसे पहले इनाम यह [illegible] है कि मैं अपने नू[illegible] से उनके दिलों को मुनव्वर करता हूं फिर वह ग़ाफ़िल लोगों को मेरी ख़ब[illegible] देते हैं। दूसरी मरहम[illegible] यह होती है कि जो कुछ सातों आसमान और जो कुछ उनमें है अगर उनके पलड़ों [illegible] रख [illegible] जाए तब भी मैं उसको उनके लिए बहुत थोड़ा और क़लील समझ[illegible]। मेरा तीसरा इना[illegible] यह है कि मैं उनकी तरफ मुतवज्जेह होता हूं। अब तुम ग़ौर करो कि [illegible] जिनकी त[illegible] मुतवज्जेह होता हूं उनको मैं क्या कुछ देना चाहता हूं।

तमाम शब का क़याम

सारी रात का क़याम तो उन क़वी लोगों का [illegible] न पर अल्लाह तआला की इनायत पहले से हो चुकी है और अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त हमेशा [illegible] के शामिले हाल रही हो और जिन के दिलों पर त[illegible] इलाही और जलाल व जमाले ख़ुदावन्दी का नूर हमेशा परतवे फ़गन रहा हो, ऐसे लोगों के लिए अल्लाह तआला ने क़यामे शब को अपनी ऐसी बख़्शिश व नेमत का ख़िलअत उनके लिए बना दिया [illegible] कि वह उनसे अपनी मुलाक़ात (हश्र) तक वापस नहीं लेगा।

हज़रत उसमान ग़नी के मुताल्लिक़ रिवायत है कि आप पूरा कुरआन मजीद एक रकअत में ख़त्म करते और तमाम रात गुज़ार देते थे। हज़राते ताबेईन में से चालीस हज़रात के बारे में बयान किया गया है कि वह रात भर इबादत में मसरुफ़ रहते और फ़ज्र की नमाज़े इशा के वुज़ू से अदा फ़रमाते थे और इस हाल में उन्होंने चालीस साल गुज़ार दिए, यह रिवायत सही और बहुत मशहूर है। उन ताबेईन हज़रात में सईद बिन जुबैर, सफ़वान बिन शिल्म, अबू हाज़िम, मुहम्मद बिन मुकन्दर, अहालियाने मदीना से थे और अहले मक्का में फ़ुज़ैल बिन अयाज़ और वहब बिन मुनय्या और कूफ़े वालों में रबीअ बिन हशम, हिकम, शामियों में अबू सुलैमान दारानी और अली बिन बक्कार थे और अबादान के रहने वालों में से अबू अब्दुल्लाह ख़व्वास और अबू आसिम, अहले फ़ारस में हबीब अबू मोहम्मद और अबु हाइज़ सुलैमानी, मिसरियों में मालिक बिन दीनार और सुलैमान तैमी, यज़ीद अक़ाशी, हबीब इब्ने अबी साबित और यहया बक्कार वग़ैरह ऐसे बुज़ुर्ग थे।

ग़फ़लत के बाद शब बेदारी

गुनाहगार अगर क़यामे शब का ख़्वास्तगार हो

जिस को ग़फ़लत ने घेर रखा हो और गुनाहों में जकड़ा हो, ख़ताओं और लग़ज़िशों ने उस को शब बेदारी से महरुम कर दिया हो और अब अगर वह इस बात का ख़्वास्तगार हो कि शब बेदारी करके सहर के वक़्त इस्तिग़फ़ार करने वालों और इबादत गुज़ारों के ज़ुमरे में दाख़िल होना चाहता हो तो उसको चाहिए कि सोने का इरादा करते और लेटते वक़्त तीन मर्तबा इस्तिग़फ़ार करें फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ कर सूरह कहफ़ की इब्तिदाई दस और आख़िरी दस आयतें पढ़े यानी आमिनुर्रसूलो से आख़िर तक पढ़े फिर कुल या अय्योहल काफ़िरून पढ़ कर सो रहे, यक़ीनन अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से उसको वक़्त पर बेदार फ़रमा देगा और क़यामे शब का अहल बना देगा और अपनी वसीअ रहमत और मग़फ़िरत के सदक़ा में उसको शब बेदारी की कुव्वत व हिम्मत अता फ़रमा देगा। मज़कूरा बाला सूरतों के साथ यह दुआ भी बेहतर है।

इलाही मुझे ऐसे वक़्त बेदार कर दे जो तुझे महबूब हो और मुझे उस अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा जो तुझे पसन्द हो और जो मुझे तेरे नज़दीक कर दे तेरे अज़ाब से दूर कर दे। इलाही मैं तुझ से सवाल करता हूं मुझे अता फ़रमा, मैं मग़फ़िरत चाहता हूं मुझे बख़्श दे, दुआ करता हूं इस को क़बूल फ़रमा। इलाही! मुझे अपने अज़ाब से मामून फ़रमा, अपने सिवा किसी दूसरे के हवाले मत कर और मुझसे अपना बुरद[illegible]व न[illegible]ीन और अपना ज़िक्र मुझसे न भुला। (मैं तेरा ज़िक्र न भूलूं) और मुझे ग़ाफ़िलों में शामिल न कर।

कहा गया है कि जो शख़्स सोते वक़्त मज़कूरा बाला दुआ पढ़ता है तो अल्लाह तआ़ला के तीन फ़रिश्ते उसको नमाज़ के लिए वक़्त पर बेदार कर देते हैं और जब वह नमाज़ पढ़ता और दुआ करता है तो दुआ पर फ़रिश्ते आमीन कहते हैं और अगर वह शख़्स नहीं उठता तो फ़रिश्ते उसके एवज़ इबादत करते हैं और उनकी इबादत कर सवाब उस शख़्स के लिए लिख दिया जाता है।

एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स रात को बेदारी की लज़्ज़त और मुसर्रत हासिल करना चहता है वह सोते वक़्त यह दुआ पढ़े।

इलाही! मुझे मेरी ख़्वाबगाह से उठा दे, अपने ज़िक्र के लिए अपने शुक्र के लिए, अपनी नमाज़ के लिए और इस्तिग़फ़ार और कुरआन मजीद की तिलावत और बेहतरीन इबादत के लिए।

फिर 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अकबर पढे चाहे तो 25 मर्तबा सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि ला इलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर पढ़ ले। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सोते वक़्त अपने दाहिने हाथ पर रूख़सारे मुबारक रख लेते थे ऐसा मालूम होता था कि आज शब विसाल इलल्लाह होने वाला है और उस वक़्त आप यह कलमात ज़बाने मुबारक से अदा फ़रमाते थे।

इलाही! तू सातों असमान और अर्शे अज़ीम का परवरदिगार है, हमारी हर चीज़ का मालिक है, तौरेत, इंजील और कुरआन मजीद का नाज़िल करने वाला है हर दाने और बीज का फाड़ने

वाला है। मैं तेरे यहां बदों की बदी से अमन में रहने की दरख़्वास्त करता हूं और हर उस जानदार के शर से जो तेरे क़ब्ज़ा और गिरफ़्त में है पनाह चाहता हूं ऐ कि तू अव्वल से है, तुझसे पहले काई चीज़ नहीं थी और तू ही आख़िर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं, तू ज़ाहिर है और कोई चीज़ तुझसे ऊपर नहीं और तू ही पोशीदा है और काई दूसरी चीज़ तेरे सिवा ऐसी पोशीदा नहीं, मुझ से मेरा क़र्ज़ दूर कर और मूझे फ़क्र (तंगदस्ती) से महफ़ूज़ रख।

क़यामे शब पर मदावमत

जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला क़यामे शब और नवाफ़िल पढ़ने की नेमत अता फ़रमा दे तो उसको चाहिए कि वह उसकी पाबन्दी करे, बशर्त कि उसपर कुदरत हो और कोई उज़्र न हो, हज़रत आइशा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने अल्लाह तआ़ला की इबादत (अज़ क़िस्म नवाफ़िल वग़ैरह) की और फिर थक कर उसको तर्क करं दिया तो अल्लाह को उससे नफ़रत हो जाती है। हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि अगर नीन्द के ग़ल्बा या बीमारी के बाएस रसुलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी रात को नहीं उठते थे तो दिन में बारह रकअतें अदा फ़रमा लेते थे। हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह को सबसे प्यारा वह अमल होता है जो हमेशा किया जाए ख़्वाह वह थोड़ा ही क्यों न हो। फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे ज़्यादा सवाब तहज्जुद की नमाज़ का है।

तहज्जुद की दुआयें

मुसतहब है कि तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठते वक़्त कहे:

तारीफ़ है उस अल्लाह के लिए जिसने मारने के बाद मुझे ज़िन्दा किया और मख़लूक़ का हश्र उसी की तरफ़ है।

इस के बाद सुरह आले इमरान की आयात पढ़े और मिस्वाक करे, मिस्वाक के बाद वुज़ू कर के यह दुआ पढ़े।

इलाही! तू पाक है और तू ही हम्द के लाएक़ है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, मैं तुझ से मग़फ़िरत तलब करता हूं और तेरे हुजूर तौबा करता हूं तू मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही तौबा क़बूल करने वाला और रहम करने वाला है, इलाही तू मुझे तौबा करने वालों में कर दे और पाकों में शामिल फरमा दे और मुझे सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला बना दे और उन लोगों में शामिल फरमा दे जो तुझे बहुत याद करने वाले हैं और सुबह व शाम तेरी पाकी बयान करते हैं।

इसके बाद आसमान की तरफ़ सर उठा कर यह दुआ पढ़े:

मैं शहादत देता हूं कि सिवा अल्लाह के कोई माबूद नहीं है उसका शरीक नहीं और मैं शहादत देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं मैं तेरे अज़ाब से तेरी मांफ़ी की पनाह मांगता हूं और तेरे ग़ज़ब से तेरी रज़ा के ज़रिये पनाह मांगता हूं मैं हरगिज़ तेरी सना नहीं कर सकता जैसी तूने अपनी सना की है, मैं तेरा बन्दा और तेरे बन्दे का बेटा हूं मेरी पेशानी तेरे क़ब्ज़ा में है [illegible] तेरा फ़ैसला

सरासर इन्साफ़ है, मेरे यह हाथ अपने किये में गिरफ़्तार हैं और यह मेरी जान अपने किये हुए आमाल से वाबस्ता है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं बेशक मैं ग़ाफ़िलों में से हूं मैंने बुरे काम किये और अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तू मेरे गुनाह को बख़्श दे, तू ही मेरा रब है तेरे सिवा कोई गुनाह बख़्शने वाला नहीं है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

फिर क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके नमाज़ को खड़ा हो और कहे अल्लाहो अकबर कबीरन वलहम्दु लिल्लाहि कसीरन व सुब्हानल्लाहि बुकरतन व अयीलन फिर दस मर्तबा सुब्हानल्लाह दस मर्तबा अल्हम्दु लिल्लाह, दस मर्तबा ला इलाहा इल्लल्लाह और दस बार अल्लाहो अकबर कहे इसके बाद अल्लाहो अकबर ज़ुल मलकूति वल जबरूति वल किबरियाए वल अज़मति वल जलालि वल क़ुदरति एक बार पढ़े।

तहज्जुद में क़याम की हालत में दुआ

तहज्जुद में क़याम की हालत में अगर चाहे तो यह दुआ पढ़े। यह दुआ भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मनकूल है।

इलाही! तू ही हम्द के लाइक़ है तू आसमान व ज़मीन का नूर है तू ही हम्द के लाइक़ है तू आसमान व ज़मीन को ताज़गी है, तू ही हम्द के लाइक़ है, तू ज़मीन व आसमान को ज़ीनत बख़्शता है तू ही हम्द के लाइक़ है तू आसमान व ज़मीन [illegible] और जो कुछ उन में है और जो कुछ उन पर है सब को बाक़ी रखता है तू ही हक़ है और तेरी ही तरफ़ से हक़ है जन्नत हक़ है, दोज़ख हक़ है, तमाम नबी हक़ हैं और मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बरहक़ हैं ऐ खुदा तेरे लिए ही मैं इस्लाम लाया और तुझ ही पर ईमान लाया और तुझ ही पर तवक्कुल है मेरे तमाम मामलात तेरे हवाले हैं तू ही हुक्म फ़रमाने वाला है मेरे तमाम अगले पिछले पोशीदा और ज़ाहिर गुनाह बख़्श दे तू ही पहला है तू ही बाद में है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है ऐ खुदा! मुझे तक़्वा और [illegible] नसीब फ़रमा तू ही बेहतरीन पाक करने वाला है तू ही मेरा कारसाज़ है तू ही मेरा आक़ा है ऐ खुदा! मुझे नेक कामों की तौफ़ीक़ अता कर, तेरे सिवा कोई हिदायत देने वाला नहीं है मुझे गुनाहों से फेर दे तू ही गुनाहों से फेरने वाला है मैं तुझ से उन बातों का सवाली हूं कि मैं मिस्कीन व मोहताज हूं और तुझ से आजज़ी व बेबसी के साथ दुआ करता हूं इलाही! मैं ज़लील फ़क़ीर की तरह तझे पुकार रहा हूं परवरदिगार अपनी पुकार में मुझे बदनसीब न बना और मुझ पर मेहेरबान और रहीम हो जा। ऐ वह ज़ात जो हर मसऊल (जिससे सवाल किया जाए) से बेहतर और हर देने वाले से ज़्यादा करीम है।

तहज्जुद की तकबीर

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बयान किया कि अबू सलमा ने कहा मैंने हज़रत आईशा से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठते थे तो तकबीर किस तरह पढ़ते थे और नमाज़ की इब्तिदा किस तरह फ़रमाते थे? उन्होंने फ़रमाया कि तकबीर और इब्तिदाए नमाज़ इस तरह फ़रमाते थे:

या अल्लाह! जिब्रील, मिकाईल और इस्राफ़ील को तूने ही पैदा किया है आसमानों और ज़मीन के ज़ाहिरी और बातिनी भेदों का जानने वाला तू ही है बन्दे जिन बातों में इख़्तिलाफ़ करते

हैं उनमें तू ही हुक्म करने वाला है जिस चीज़ में इख़्तिलाफ़ किया गया है तो तू उसमें मुझे सीधा रास्ता देखा, बिला शुब्हा तू जिस को चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत करता है।

तहज्जुद की नमाज़ का आग़ाज़

जब शब को तहज्जुद की नमाज़ के लिए खड़े हो तो दो रकअतें (ग़ैर तवील सूरतों के साथ) पढ़ो, नमाज़ से क़ब्ल कुछ खाना पीना दुरुस्त नहीं है क्योंकि बेदारी के बाद दिल साफ़ और अफ़कार से ख़ाली होता है लेकिन खाने पीने के बाद यह कैफ़ियत बाक़ी नहीं रहती और तारीकी पैदा हो जाएगी इसलिए बेहतर और औला यही है कि कुछ न खाए जब तक भूख हद से ज़्यादा न हो जाए बसूरते दीगर (यानी सहरी) रमज़ान में दिन में भूख पैदा हो जाने का अंदेशा हो और ताख़ीर करने से ख़त्मे सहरी (तुलूए फ़ज्र) का अंदेशा हो तो ऐसी सूरत में पहले ही खा लेना मुसतहब है।

तीन सौ आयात का विर्द

मुसतहॅब है कि सोने से क़ब्ल तीन सौ आयात [illegible] ताकि बन्दा इबादत [illegible]ज़ारों के जुमरे में शामिल हो जाए और उसका नाम ग़ाफ़िलों में दर्ज न [illegible]या जाए, मुनासिब है कि सूरह फुरक़ान या सूरह शोअ़रा पढ़े इसलिए कि इन दोनों सूरतों में ती[illegible] तीन सौ [illegible] हैं। अगर इन सूरतों का पढ़ना मुमकिन न हो तो सूरह वाक़िआ, सूरह नून, [illegible] अलहाक़्क़ा, [illegible]ाक़िअ[illegible] (साल साइल) और अल मुदस्सिर पढ़े और अगर यह भी अच्छी न पढ़ [illegible] हो तो [illegible]रह तारिक़ से आख़िर कुरआन तक पढ़े यह कुल तीन सौ आयात हैं, अगर तीन सौ आयात के बजाए हज़ार आयात पढ़े तो बहुत ही अफ़ज़ल [illegible] इसके ति[illegible] अज़ीम अज्र है और इबादत गुज़ारों में उसका शुमार होगा, एक हज़ार आयात की मिक़दार सूरह तबार[illegible] आख़िर कुरआन तक है अगर यह हिस्सा अच्छी तरह याद न हो [illegible] ढाई सौ मर्तबा सूरह [illegible]ास पढ़े यह हज़ार आयात के बराबर होगा। हर एक रात में यह सूरतें पढ़ना बेहतर है इनको किसी [illegible]ल में तर्क न करे यानी सूरह अलीफ़ लाम मीम सज[illegible] सूरह यासीन, सूरह हामीम, सूहर दख़ान, सूरह तबारकल्लज़ी अगर इन सूरतों के साथ सूरह जुमर और सूरह वाक़िआ भी पढ़े तो बहुत बेहरत है।

मामूलात नबवी

हज़रत रसूले मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस्तराहत फ़रमाने से क़ब्ल सूरह सजदा सूरह तबारक पढ़ा करते थे। एक हदीस में यह भी आया है कि सूरह बनी इस्राईल और सूरह अज़्ज़ुमर पढ़ा करते थे। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुसब्बहात पढ़ा करते थे (यानी वह सूरतें जो सब्बीह से शुरू होती हैं) इस सूरह में एक आयत ऐसी है जो कि एक लाख आयतों से अफ़ज़ल है।

शबे ज़िन्दादारी के लिए मुआविन चीज़ें

शब बेदारी के लिए जो चीज़ें मुआविन हैं उन में से कुछ यह हैं कि (1) रिज़्क़े हलाल (2) तौबा पर इस्तेक़ामत (3) अज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ (4) अल्लाह तआ़ला के सवाब के वादों के हुसूल का ज़ौक़ व शौक़ (5) मुशतबहा रोज़ी से परहेज़ (6) गुनाहों से गुरेज़ (7) मौत की याद और मआद की फ़िक्र (8) दुनियावी [illegible] [illegible] आज़ादी (9) मौत को बकसरत याद करना

(10) आख़िरत का फ़रामोश न करना (11) अहले दुनिया की मोहब्बत से दिल का ख़ाली होना।

एक शख़्स ने हसन बसरी से अर्ज़ किया कि मैं तन्दरूस्त हूं, तवाना हूं और शब बेदारी को भी महबूब रखता हूं, वुज़ू के लिए पानी भी तैयार रखता हूं, इस के बावजूद रात भर सोता रहता हूं इस की क्या वजह है? उन्होंने कहा कि तुम्हे गुनाहों ने जकड़ रखा है।

इमाम सौरी फ़रमाते हैं कि मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया जिस की पादाश में पांच माह तक मैं रात के क़याम से महरुम रहा। किसी ने दरयाफ़्त किया कि हज़रत वह गुनाह कौन सा था? फ़रमाया मैंने एक शख़्स को रोता देख कर यह ख़्याल किया कि यह शख़्स रियाकारी से रो रहा है।

हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि बन्दा एक गुनाह की पादाश में दिन के रोज़े और के क़याम से महरुम रहता है बाज़ उलमा का क़ौल है कि बहुत से ऐसे खाने हैं जिन की वजह से रात का क़याम दुश्वार हो जाता है और बहुत सी (हराम) निगाहें कुरआन की क़िरअत से महरुम कर देती हैं। बन्दा यक़ीनन ऐसा खाना खा लेता है या ऐसा काम कर गुज़रता है जिस की बिना पर साल भर तक रात के क़याम से महरुम रहता [illegible] बहुत जुस्तजू के बा[illegible] उस नुक़सान की शिनाख़्त होती और जुस्तजू की तौफ़ीक़ उस वक़्त मिलती है जब गुनाह बहुत कम सरज़द हों।

अबू सुलैमान फ़रमाते थे सिर्फ़ गुनाह ही की वजह से नमाज़ी [illegible]माअत फ़ौत हो जाती है। फ़रमाया कि बदख़्वाबी का होना भी एक अज़ाब है ना[illegible] रहना खुदा से दूर रहने का मौजिब है। क़याम लैल व शब बेदारी को मदद खाने पीने की कमी और मेदे को ख़ाली रखने से भी पहुंचती है।

औन बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि [illegible]ी इस्राईल के कु[illegible] लोग इबादत किया करते थे जब उनके सामने खाना आता तो एक शख़्स खड़े कह[illegible] ज़्यादा न खाओ अगर ज़्यादा खाओगे तो नींद आ जाएगी और जब नींद का ग़ल्बा होगा तो नमाज़ कम [illegible]ोगे। बाज़ बुज़ुर्गों का कहना है कि नींद की ज़्यादती कसरत से पानी पीने की वजह से होती है। बताया गया है कि सत्तर सिद्दीक़ों की राये यही है कि नींद की ज़्यादती पानी बकसरत पीने से होती है। शब बेदारी की मुआविन चीज़ें यह भी हैं कि [illegible] को मौत, क़ब्र और क़यामत की हौलनाकियों के ग़म व अलम से ख़ाली न होने दिया [illegible], दिल की ज़िन्दगी के लिए शब बेदारी ज़रुरी है। आलमे मलकूत में ग़ौर करने और उन में थोड़ी देर क़ैलूला करने से शब बेदारी में मदद मिलती है, बदन को ज़्यादा मेहनत करके न थकाए ताकि शब बेदारी में रख़ना न पड़े।

शब बेदारी के तरीक़े

क़यामे शब की एक सूरत तो यह है कि अव्वल शब में क़याम करे और जब नींद का ज़्यादा ग़लबा हो तो सो जाए फिर बेदार होकर नमाज़ को खड़ा हो जाए, फिर नींद से मग़लूब होकर से जाए फिर आख़िर शब में उठ कर नमाज़ को खड़ा हो जाए, इस सूरत से रात में दो मर्तबा नींद हो जाएगी और दो मर्तबा क़याम भी हो जाएगा। इस तरह रात भर की इबादत हो जाएगी मगर यह एक कठिन और मुश्किल काम है यह उन्ही लोगों का अमल है जो अहले हुज़ूर हैं और साहबे ज़िक्र व फ़िक्र हैं, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शब बेदारी में यही शान थी।

जो आबिद क़वी और तवाना हो वही रात में कई मर्तबा क़याम और कई मर्तबा नींद कर

सकता है लेकिन क़याम व ख़्वाब का बराबर रखना बड़ा कमाल है जो सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हासिल था। किसी दूसरे के लिए ऐसा अमल मुमकिन नहीं इस लिए कि हुजूर पूर नूर का मुबारक क़ल्ब हमेशा बेदार रहता था और वहीए इलाही से आप को बेदार किया जाता था और सोने से मुमानिअ़त की जाती थी आप को करवट व हरकत दी जाती थी बजुज़ आप की ज़ाते पाक के किसी मख़लूक़ को यह वस्फ़ हासिल नहीं था यह खुसूसियत सिर्फ़ आप ही की थी।

आख़िर शब में सोना

क़ायमुल लैल के लिए आख़िरी शब में सो जाना दो वजूह के बाइस मुस्तहब है एक तो यह कि सुबह के वक़्त ओंघ न आए, सुबह का सोना मकरुह है इसी लिए असलाफ़ फ़ज्र की नमाज़ से क़ब्ल सोने से मना फ़रमाते थे इसी लिए सोने वाले को नमाज़े फ़ज्र के बाद सोने की इजाज़त दे दी गई लेकिन नमाज़ फ़ज्र से क़ब्ल सोना ममनूअ है। हुजूर पुर नू[illegible] सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ के बाद कुछ देर के लिए [illegible] जाते थे। दूसरी वज[illegible] यह है की आख़िरी शब में सोने से चेहरे की वह ज़रदी दूर हो जाती है [illegible] बेदारी के बाइस पैद[illegible] जाती है अगर न सोया जाए तो ज़र्दी बाक़ी रहती है और इससे बच[illegible] ज़रूरी है। [illegible] एक [illegible]हुत बारीक बात है इस में नफ़्स की एक ख़्वाहिश पिन्हा से और एक शिर्क [illegible] पोशीदा [illegible] क्योंकि चेहरे की ज़र्दी देख कर उस शख़्स की तरफ़ लोगों की उंगलियां उठ[illegible] उसकी ने[illegible], उसका जुहद और उसकी शब बेदारी, रोज़ादारी और ख़ौफ़ का लोगों को यक़ीन होगा [illegible]ग यक़ीन कर लेंगे कि यह ज़ाहिद श[illegible] ज़िन्दा[illegible]) हम उ[illegible] शिर्के [illegible]फ़ी और उ[illegible] रिया से और उस अलामत से जिसमें रिया हो [illegible]ल्लाह की पनाह मांगते [illegible]। रात [illegible] पानी [illegible] पीना चाहिए, पानी पीने से नींद आती है और चेह[illegible] पर ज़र्दी [illegible] आ जा[illegible] है ख़ास[illegible] आख़िरी शब में अगर ऐसा किया जाए। नींद से फ़ौ[illegible] जाग[illegible] ही पानी पीना ही नहीं चाहिए [illegible]दीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्ला[illegible]हि वसल्लम आख़िर शब में वित्र पढ़ने के बाद दायें करवट से इस्तराहत फ़रमाते थे यहां तक कि (सुबह हो जाती और) बिलाल आते और नमाज़े फ़ज्र की इत्तेला देते तो आप नमा[illegible]ए तशरीफ़ ले जाते थे।

वित्र की नमाज़ से पहले आराम करना

वित्र के बाद सुबह की नमाज़ से पहले कुछ देर के लिए आराम करना (सोना) हमारे असलाफ़े कराम के नज़दीक मुस्तहब था बल्कि हज़रत अबू हुरैरा और आप कम मुत्तबईन तो इस को सुन्नत समझते थे। असलाफ़े कराम इस को इस वजह से पसन्द करते थे कि इस से असहाबे मुशाहिदा और अहले हुजूर के अहवाल में तरक़्क़ी होती है (कुरबते इलाही का हुसूल होता है) उनको आलमे मलकूत का कश्फ़ होता है, आलमे जबरूत (दुनिया) के तरह तरह के उलूम उन पर मुन्कशिफ़ हो जाते हैं और अजीब अजीब हिकमतों से उनके दिल आगाह होते हैं और अहले रियाज़त और अरबाबे मुजाहिदा को इससे सुकून हासिल होता है, इस लिए फ़ज्र की नमाज़ के बाद तुलूअ आफ़ताब तक और अस्र की नमाज़ कम बाद गुरुबे आफ़ताब तक नमाज़ पढ़ने को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, ने मना फ़रमाया है ताकि शबाना रोज़ के

औराद वज़ाइफ़ अदा करने वाले इन साआत में कुछ देर आराम कर लें।

इसी तरह रात की नमाज़ के दर्मियान यानी हर दो रकअतों के बाद थोड़ी देर के लिए बैठना और उन रकअतों में फ़स्ल पैदा करने मुस्तहब है उस जुलूस में सौ बार सुब्हानल्लाह पढ़े ताकि नमाज़ के लिए कुव्वत हासिल हो और आज़ाए बदन को कुछ आराम मिल जाए तबीयत का कसल दूर हो जाए और तहज्जुद की नमाज़ के लिए ज़ौक़ व शौक़ में कमी न आने पाये। यह अल्लाह के इस इरशाद के तहत है: जब कि रात बाक़ी हो तो सितारों के ग़ायब हो जाने तक अल्लाह की तस्बीह बयान करो। दूसरी आयत में नमाज़ के पीछे तस्बीह और पाकी बयान करो फ़रमाया।

क़यामे शब की क़ज़ा

अगर नींद या किसी और वजह से रात का क़याम तर्क हो जाए (नमाज़ अदा न की हो) तो तुलूए आफ़ताब से ज़वाले आफ़ताब (ज़हवे कुबरा) के दर्मियान उसकी क़ज़ा करना ऐसा ही है जैसे कि रात के वक़्त उस को वक़्त पर पढ़ा गया है। शैख़ अबू नस्र ने अपने वालिद से, उन्होंने अपनी असनाद के साथ हज़रत उमर बिन अल ख़त्ताब से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ज़वाले आफ़ताब के बाद ज़ुहर के फ़र्ज़ से पहले चार रकअत नमाज़ का शुमार सहर की रकअतों में होता है। हज़रत उमर से एक हदीस दूसरे अलफ़ाज़ में इस तरह मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने रात का वज़ीफ़ा अदा किये के बग़ैर सोता रहा या अदा करना भूल गया फिर नमाज़े फ़ज्र से नमाज़े ज़ुहर तक उसको पढ़ लिया तो गोया उसने रात ही में पढ़ ली।

बाज़ असनाफ़े कराम का क़ौल है [illegible] आले रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमाना यह है कि अगर रात के औराद व वज़ाइफ़ फ़ौत हो जायें और ज़वाले आफ़ताब से क़ब्ल उनको पढ़ ले तो वही अज्र व सवाब मिलता है जो रात [illegible] से मिलता। अगर ज़वाल से क़ब्ल न पढ़ सका तो ज़ोहर व अस्र के दर्मियान उनको पढ़ ले। अल्लाह तआला का इरशाद है। उसी ख़ुदा ने रात और दिन को एक दूसरे का क़ायम मक़ाम कर दिया है उसके लिए जो ज़िक्र और शुक्र का इरादा करे। मतलब यह है कि अज्र व सवाब में दिन रात बराबर हैं हर एक फ़ज़ीलत में एक दूसरे का क़ायम [illegible]।

रात के औराद के पांच औक़ात

इन तमाम बयान और तस्रीहात का हासिल यह है कि वज़ाइफ़े शब पांच हैं (1) मग़रिब व इशा के दर्मियान (2) इशा से सोने के वक़्त तक (3) आधी रात में (4) आख़िरी शब में (5) सहर के आख़िरी हिस्सा में तुलूए फ़ज्र से पहले। यह पांचवा सिर्फ़ क़िरअते क़ुरआन, इस्तिग़फ़ार, मुराक़बा और इबरत के हुसूल के लिए है नमाज़ के नहीं हैं इस लिए कि यह अन्देशा है कहीं नमाज़ के अन्दर फ़ज्र हो जाए और उस वक़्त नमाज़ की मुमानिअत है इसी लिए नमाज़े शब दो दो रकअत कर के पढ़े कि अगर फ़ज्र के तुलूअ का अन्देशा हो तो एक रकअत पढ़ ली जाए उस रकअत के मिलने से पिछले नमाज़ वित्र हो जाएगी, हाँ अगर सोने की वजह से नमाज़े वित्र, वज़ीफ़ा और नमाज़े तहज्जुद सबके सब फ़ौत हो गए तो वित्र को सुबह सादिक़ में पढ़ ले (इस की तफ़सील वित्र के बयान में गुज़र चुकी है)

दिन की इबादत के पांच औक़ात

दिन की इबादत और औराद व वज़ाइफ़ के भी पांच हैं (1) तुलूए फ़ज्र से तुलूए आफ़ताब तक (2) चाश्त की नमाज़ ज़वाले आफ़ताब तक (3) बाद ज़वाले आफ़ताब चार रकअत नमाज़ मगर एक सलाम के साथ (इस के लिए सवाब यह है कि आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं) (4) अस्र व जुहर के दर्मियान (5) अस्र के बाद मग़रिब तक।

सुबह सादिक़ की इबादत

दिन का पहला वज़ीफ़ा

फ़ज्र की नमाज़ के बाद से सूरज निकलने के वक़्त तक ज़िक्रे इलाही के लिए बैठना मुस्तहब है, उस वक़्त में तिलावत करे या ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ [illegible] मुराक़बा क़ल्बी में मुतवज्जेह हो, किसी को दीनी तालीम दे या किस[illegible] आलिम की सोहबत मे[illegible]ठे। इसी तरह की मशगूलियत नमाज़े अस्र के बाद गुरुबे आफ़ताब तक [illegible]ना चाहिए, इस लिए[illegible] कि इन दो औक़ात में नफ़्ल पढ़ने की मुमानिअत है।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की सनद के साथ [illegible] अमामा स[illegible]ायत [illegible] है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़े फ़[illegible] बाद तुलू[illegible] आफ़ताब तक अगर मैं लोगों के साथ बैठा तकबीर व तहलील में म[illegible]सरूफ़ रहूं तो [illegible]झे यह [illegible]मल दो गुलाम आज़ाद कराने से ज़्या[illegible] महबूब [illegible] और नमा[illegible] अस्र [illegible] बाद गुरूबे आफ़ताब तक अगर मैं ज़िक्र व तहलील करता [illegible] तो औलादे इस्माईल से [illegible]ार गु[illegible]म आजा[illegible] करने से ज़्यादा पसन्द है। हज़रत अनस बिन मालि[illegible] फ़रमाते हैं कि रसूले [illegible]दा स[illegible] अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि अपने रिज़्क़ की त[illegible]ब से ग़फ़लत न ब[illegible] और ग़ाफ़िल न रहो [illegible]गों ने हज़रत अनस से इस की तशरीह चाही तो [illegible] कि जब नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ हो जाओ तो 33 बार अलहम्दुलिल्लाह और सुब्हानल्लाह ला इ[illegible] इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर पढ़ा करो, एक दूसरी हदीस में इस तरह है कि 33 सुब्हानल्लाह 33 [illegible] [illegible]हम्दुलिल्लाह और 33 बार अल्लाहु अकबर और आख़िर में यह कलमात कहे।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, उस का कोई शरीक नहीं मुल्क उसी के लिए मख़सूस है उसी के लिए हम्द है वही ज़िन्दा करता है वही मारता है, वह ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं, सब नेकी उसी के हाथ में है वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

इसी तरह अस्र के बाद और सोते वक़्त पढ़ना चाहिए।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद उरवा बिन ज़ुबैर का क़ौल नक़्ल किया है कि उन्होंने कहा मैंने ख़ुद सुना कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे कि राहे ख़ुदा में जिहाद के लिए सुबह व शाम को निकलना दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस शख़्स में जिहाद की क़ुदरत और इस्तिताअत न हो (वह क्या करे)? फ़रमाया मग़रिब की नमाज़ पढ़ने के बाद वहीं बैठा अल्लाह की याद इशा की नमाज़ तक करता रहे (इशा की नमाज़ इसी तरह पढ़ ले) उसकी यह

इबादत (मग़रिब से इशा तक) जिहाद के लिए शाम को निकलने की तरह है और जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर तुलूए आफ़ताब तक बैठा ख़ुदा का ज़िक्र करता रहे तो उसका यह अमल जिहाद के लिए सुबह को लिकलने की तरह होगा।

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की सनद से अबू अमामा का यह क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस मर्तबा यह (दुआ) पढ़ता है तो उसको अल्लाह तआला उसके लिए दस नेकियां लिख देता है।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, उस का कोई शरीक नहीं मुल्क उसी के लिए मख़सूस है उसी के लिए हम्द है वही ज़िन्दा करता है वही मारता है, वह ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं, सब नेकी उसी के हाथ में है वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

उस बन्दे दस दर्जे बलन्द कर देता है और दस गुलामों को आज़ाद कराने के बराबर सवाब उसको मिलता है और शिर्क के अलावा उस रोज़ का किया हुआ कोई गुनाह उसको नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा। जो बन्दा अच्छी तरह वुज़ू करता है और अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ मुंह धोता है तो अल्लाह तआला उसके वह तमाम [illegible]नाह महव फ़रमा देता है जिन को उसने आंखों से किया या ज़बान से किया, जो बन्दा हुक्मे खु[illegible]वन्दी के मुताबिक़ हा[illegible] को धोता है तो अल्लाह उसके हाथों से किये हुए तमाम गुनाह फ़रमा [illegible] है फिर ज[illegible] अप[illegible] कानों और सर पर मसह करता है तो उसके वह तमाम गुनाह मिटा [illegible]ते हैं जो उसने कानों से सुने थे फिर जब वह अम्रे इलाही के मुताबिक़ दोनों पांव धोता है तो अल्लाह [illegible]ला उसके वह तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा देता है जिनकी तर[illegible] वह पांव से चला था आख़िरकार वह नमाज़ को खड़ा हो जाता है तो नमाज़ उसके लिए मह[illegible] फ़ज़ी[illegible]त का बा[illegible] बन जाती है (तमाम सवाब वुज़ू क एवज़ उस [illegible] मिल जाता है)।

जो शख़्स वु[illegible] की हाल[illegible] में अल्ला[illegible] के ज़िक्र के [illegible]रान सो [illegible]ता है तो बेदारी पर वह जो कुछ दुआ करता है [illegible]बूल [illegible] जाती है। जो बन्दा अल्लाह की राह में एक तीर फेंकता है ख़्वाह वह निशाने पर लगे [illegible] लगे उसका सवाब एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर उसको ज़रुर दिया जाता है और जिस ब[illegible] के अल्लाह की राह में बाल सफ़ेद होते हैं अल्लाह जआला क़यामत के दिन उसको [illegible] अता फ़रमाएगा और जो गुलाम आज़ाद करेगा तो उसके हर उज़्व को दोज़ख़ से बचाने के लिए उसका फ़िदया बन जाएगा।

इमाम हसन का इरशाद

शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत इमाम हसन का यह क़ौल नक़्ल किया है कि मैं ने ख़ुद सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ मस्जिद में पढ़ कर वहीं बैठा तुलूए आफ़ताब तक अल्लाह का ज़िक्र करता रहे और तुलूए आफ़ताब के बाद अल्लाह तआला की हम्द व सना करके दो रकअत नमाज़ पढ़ ले तो हर रकअत के एवज़ अल्लाह जआला जन्नत के अन्दर दस लाख क़स्र मरहमत फ़रमाएगा और हर क़स्र के अन्दर दस लाख हूरें होंगी और हर हूर के दस लाख ख़ादिम होंगे और अल्लाह तआला के हुज़ूर में वह अव्वाबीन में से होगा।

(सलातुल अव्वाबीन इसलिए कहा जाता है कि ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ होने वालों की नमाज़ है)

हज़रत नाफ़ेअ ने बरिवायत इब्ने उमर बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमा कर अपनी जगह से नहीं उठते थे यहां तक कि इशराक़ की नमाज़ का वक़्त हो जाता (सूरज निकल आता) हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया था कि जो शख़्स सुबह की नमाज़ पढ़ कर उसी जगह उस वक़्त तक बैठा रहे कि उसके लिए इशराक़ का वक़्त हो जाए तो उसकी फ़ज्र की नमाज़ ऐसी हो जाएगी जैसे किसी का मक़बूल हज और उमरा। यही वजह थी कि हज़रत इब्ने उमर नमाज़ पढ़ कर तुलूए आफ़ताब तक वहीं बैठे रहते थे जब उनसे इस क़याम की वजह दरयाफ़्त की गई तो उन्होंने फ़रमाया मैं सुन्नत की पैरवी करना चाहता हूं।

शैख़ अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स जमाअत के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर सूरज निकलने तक वहीं बैठा रहे फिर तुलूए आफ़ताब के बाद चार रकअतें मुसलसल पढ़े और पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा और तीन बार आयतल कुर्सी, सात बार सूरह इख़लास, दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद वश्शम्स वज़्ज़ुहाहा एक बार, तीसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा और वस्समाए वत्तारिक़ एक बार और चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी और तीन बार सूरह इख़लास पढ़े तो अल्लाह तआला उसके पास सत्तर फ़रिश्ते भेजेगा यानी हर आसमान से दस फ़रिश्ते, हर फ़रिश्ते के पास बहिशती ख़्वान और बहिशती रुमाल होंगे यह फ़रिश्ते उन ख़्वानों में उस नमाज़ को रख कर रुमाल से ढांप कर ऊपर ले जायेंगे यह फ़रिश्ते फ़रिश्तों की जिस जमाअत के क़रीब से गुज़रेंगे वह फ़रिश्ते उस नमाज़ी के लिए मग़फ़िरत तलब करेंगे। जब अल्लाह तआला के हुज़ूर में यह ख़्वान रखे जायेंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मेरे बन्दे! तूने मेरे लिए नमाज़ पढ़ी और मेरी इबादत की अब तो अज़ सरे नौ अमल कर, तेरे पिछले गुनाह मैंने माफ़ फ़रमा दिये।

नमाज़े इशराक़

यही नमाज़ उस रिवायत की तशरीह है जिसमें रसूलुल्लाह ने अल्लाह तआला का यह क़ौल नक़्ल फ़रमाया था ऐ बनी आदम! मेरे लिए शुरु दिन में चार रकअत पढ़ जो आख़िर दिन तक तेरे लिए काफ़ी हैं।

बाज़ उलमाए कराम ने इस इरशाद को नमाज़ फ़ज्र की सुन्नत व फ़र्ज़ (की चार रकअतों) पर महमूल किया है लेकिन इससे नमाज़े इशराक़ ही मुराद है जिसके बारे लिखा जा चुका है।

सलातुल अव्वाबीन

चाश्त की नमाज़ का नाम सलातुल अव्वाबीन भी है इसको हमेशा पढ़ना चाहिए या नहीं इस सिलसिले में हमारे उलमा (उलमाए हंबली) के दो क़ौल है एक मुसबत और एक मनफ़ी और इस की असल वह हदीस है जिसको अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से बरिवायत हजरत अबू हुरैरह बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया चाश्त की नमाज़ अव्वाबीन की नमाज़ है (ख़ुदा की तरफ़ रूजूअ करने वालों की) इन्ही असनाद के साथ दूसरी हदीस में आया है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया चाश्त की नमाज़ अकसर दाऊद की नमाज़ होती थी यानी हज़रत दाऊद अकसर चाश्त के वक़्त नमाज़ पढ़ा करते थे।

जन्नत के एक दरवाज़े का नाम ज़ोहा है

हज़रत अबू हुरैरह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत के दरवाजों में से एक दरवाज़े का नाम ज़ोहा है, जब क़यामत का दिन होगा तो एक मुनादी पुकारेगा कि वह लोग कहां हैं जो चाश्त की नमाज़ पढ़ा करते थे? ताकि वह अल्लाह की रहमत के साथ उस दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल हों। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली की ख़िलाफ़त के ज़माने में लोग नमाज़े फ़ज्र के बाद चाश्त की नमाज़ के इन्तेज़ार में बैठे रहा करते थे और फिर नमाज़ (चाश्त) पढ़ कर मस्जिद से निकला करते थे। ज़हहाक बिन क़ैस हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं कि वह फ़रमाते थे एक ज़माना हम पर भी ऐसा गुज़रा है कि आयत युसब्बेहुन्ना बिल अ़शी वल इशराक़ का मतलब समझ में नहीं आता था यहां तक कि हम ने लोगों को चाश्त की नमाज़ पढ़ते देख लिया उस वक़्त समझ में आया कि इशराक़ की नमाज़ यही है।

इब्ने अबी मलीका की रिवायत है कि हज़रत अब्बास से चाश्त की नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो उन्होंने फ़रमाया इसका ज़िक्र तो किताबुल्लाह में मौजूद है यह फ़रमा कर आपने यह आयत पढ़ी: अल्लाह ने हुक्म दिया है कि घरों में अल्लाह को याद किया जाए और उसका नाम बलन्द हो उनमें सुबह व शाम अल्लाह की तसबीह पढ़ी जाती है।

मालूम हुआ कि इस आयत में हज़रत इब्ने अब्बास के नज़दीक तसबीहे गुदू से मुराद चाश्त की नमाज़ है। हज़रत इब्ने अब्बास चाश्त की सिर्फ़ दो रकअतें पढ़ते थे लेकिन इसकी मुदावमत नहीं करते थे बल्कि कभी कभी पढ़ लिया करते थे। हज़रत इकरामा से दरयाफ़्त किया गया कि हज़रत इब्ने अब्बास सलाते ज़ोहा (चाश्त की नमाज़) क्या रोज़ाना पढ़ते थे तो उन्होंने कहा कि वह एक दिन पढ़ते थे और एक दिन छोड़ देते थे [illegible] नख़ई ने कहा कि सहाबा कराम नमाज़े चाश्त की पाबन्दी को मकरुह जानते थे यानी पढ़ते भी थे और छोड़ भी देते थे ताकि वह फ़र्ज़ नमाज़ की [illegible] हो जाये।

नमाज़े चाश्त की रकअतें

नमाज़े चाश्त कम से कम दो रकअतें हैं और ज़्यादा से ज़्यादा बारह औसतन आठ हैं दो रकअतों के सिलसिले में शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद से हज़रत बरीदा का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि इंसान में तीन सौ साठ जोड़ (जिस्म के अन्दर हैं) और हर जोड़ का रोज़ाना सदक़ा देना वाजिब है यह सुन कर सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह किस की ताक़त है कि इस क़दर सदक़ा दे सके। हुज़ूर ने फ़रमाया अगर कोई शख़्स नाक की रेज़िश मस्जिद में देख ले तो उसपर मिट्टी डाल दे या किसी तकलीफ़ देह चीज़ को रास्ते से हटा दे अगर ऐसा मुमकिन न हो तो चाश्त की दो रकअतें पढ़ लेना उसके लिए काफ़ी हैं।

हज़रत अबू हुरैरह रिवायत करते हैं कि मुझे मेरे महबूब सय्येदना अबुल क़ासिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बातों की वसीयत फ़रमाई है अव्वल यह कि सोने से पहले वित्र पढ़ लिया करूं, दोयम यह कि हर महीने के तीन दिन रोज़े रखा करूं और सोम यह कि चाश्त की

दो रकअतें पढ़ लिया करूं। नमाज़े चाश्त की चार रकअतें भी रिवायत में आई हैं एक रिवायत तो अकरमा ने हज़रत इब्ने अब्बास से मरफूअन बयान की है दूसरी हदीस हज़रत मआज़ा ने हज़रत आइशा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चाश्त की नमाज़ की चार रकअतें पढ़ीं और फिर छः रकअतें पढ़ीं।

हमीदुल तवील हज़रत अनस से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर चाश्त की छः रकअतें भी पढ़ते थे और आठ भी। इकरमा बिन ख़ालिद उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर फ़तहे मक्का के दिन जब तशरीफ़ फरमाए मक्का हुए आप ने आलाए मक्का में नुज़ूल फ़रमा कर चाश्त की आठ रकअतें पढ़ीं मैंने दरयाफ़्त किया या रसूलल्लाह! यह कौन सी नमाज़ है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह चाश्त की नमाज़ है। हज़रत इमाम अहमद हंबल फ़रमाते हैं कि यह हदीस सही है और उलमा के नज़दीक चाश्त की आठ रकअत ही मख़्तार हैं अबू सईद ख़ुदरी ने रसूलुल्लाह से इसी तरह नक़्ल किया है।

हज़रत आइशा ने भी चाश्त की आठ रकअतें पढ़ी हैं, क़ासिम बिन मोहम्मद की रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा चाश्त की आठ रकअतें पढ़ा करती थीं और तवील पढ़ती थीं जब आप नमाज़े चाश्त पढतीं तो दरवाज़ा बन्द रखती थीं अगर कोई दस रकअतें पढ़ना चाहे तो दस पढ़े, बारह रकअत की भी रिवायत आई है और यही अफ़ज़ल भी है शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते सुना कि जो शख़्स चाश्त की बारह रकअतें पढ़ेगा अल्लाह उसके लिए जन्नत में सोने का महल बनाएगा। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद की इसनाद ही से एक और रिवायत हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा से की है कि उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स बारह रकअतें दिन की पढ़ेगा अल्लाह तआला जन्नत में उसको महल अता फ़रमाएगा।

हज़रत अबू ज़र का मामूल

शैख़ अबू नसर ही ने अपने वालिद से बिल असनाद बरिवायत हज़रत अबू ज़र बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अबू ज़र दिन के बारह घंटे हैं तुम हर घंटा के एक रुकूअ और दो सजदा अदा करो यह तुम्हारे दिन भर के गुनाहों की तलाफ़ी कर देंगे, ऐ अबू ज़र! जिसने दो रकअत पढ़ी उसका शुमार ग़ाफ़िलों में न होगा जिसने चार पढ़ीं उसका नाम ज़ाकिरों में होगा। जिसने छः रकअत पढ़ी उसको शिर्क के सिवा कोई गुनाह नुक़सान नहीं पहुंचाएगा और जिसने बारह रकअतें पढ़ी उनके लिए जन्नत में महल तैयार किया जाएगा, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (यह बारह रकअतें) एक सलाम से या जुदा जुदा? आप ने इरशाद फ़रमाया अगर एक सलाम से भी पढ़ीं तब भी कोई हरज नहीं है।

चाश्त की नमाज़ का वक़्त

चाश्त की नमाज़ के दो औक़ात हैं

चाश्त की नमाज़ के औक़ात दो हैं एक जाएज़ दूसरा मुसतहब, जाएज़ वक़्त तुलूए आफ़ताब

से नमाज़े जुहर तक है और मुसतहब वक़्त दिन के गर्म होने से ज़वाल तक है। मुसतहब होने की दलील यह कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ने मस्जिद कुबा में एक जमाअत को चाश्त पढ़ते देखा तो फ़रमाया काश इन लोगों का मालूम होता कि यह कुछ और देर करके नमाज़ पढ़ते तो अफ़ज़ल था क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि चाश्त का वक़्त उस वक़्त है जब ऊंट के बच्चे के पांव गर्म होने लगें बाद ज़वाले चाश्त पढ़ना भी जाएज़ है। हज़रत औफ़ बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि औसत आसमान से आफ़ताब के ढल जाने पर चाश्त (साअते सुबहा) का वक़्त है यह नमाज़ आजज़ी करने वालों की है इसको सख़्त गर्मी में पढ़ना अफ़ज़ल है अगर जुहर की नमाज़ तक चाश्त की नमाज़ नहीं पढ़ी है तो बाद नमाज़ जुहर कज़ा करना मुसतहब है।

नमाज़े चाश्त की क़िरात

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि नमाज़े चा[illegible] में सूरह वश्शम्स वज़्ज़ुहाहा और वज़्ज़ुहा पढ़े। उमर इब्ने शोऐब ने [illegible] वालिद से बिल अ[illegible]ाद रिवायत की है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमा[illegible] कि जिसने चाश्त की [illegible]रह रकआत पढ़ीं और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आय[illegible]ल कुर्सी, ती[illegible] सू[illegible] इख़लास पढ़ी तो हर आसमान से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरते हैं जि[illegible] हाथ में स[illegible] का[illegible]ज़ और नूर के क़लम होते हैं जो उस नमाज़ का सवाब ता क़यामे क़[illegible] लिखते [illegible]गे, क़यामत के दिन फ़रिश्ते उसकी क़ब्र पर आयेंगे हर फ़रिश्ते के [illegible]स बहिश्ती लि[illegible]स का जोड़ा और तुहफ़ा होगा, फ़रिश्ते कहेंगे [illegible] साहबे [illegible] अल्लाह [illegible]क्म [illegible] उठो क्योंकि तुम उन में से एक हो जिन को अल्लाह ने अज़[illegible] से अमन अ[illegible]ा फ़रमा [illegible] है।

नमाज़े चाश्त [illegible] सिल[illegible] में रि[illegible]याते म[illegible]

बाज़ सहाबा क[illegible] [illegible]माज़े चाश्त से इन्कार किया है, चुनांचे इब्नुल मुबारक अपनी सनद के साथ हज़रत इब्ने [illegible] से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया मैं जब से इस्लाम लाया हूं मैंने चाश्त की नमाज़ नहीं पढ़ी [illegible] सिर्फ़ ख़ाना काबा के तवाफ़ के दिन पढ़ी थी, बिला शुब्हा यह बिदअत है लेकिन बिद[illegible] हसना है। लोगों की ईजाद कर्दा बिदअतों में यह सबसे अच्छी बिदअत है। हज़रत इब्ने मसऊद चाश्त की नमाज़ के बारे में फ़रमाते थे अल्लाह के बन्दे लोगों पर ऐसा बोझ न डालो जो अल्लाह ने उन पर नहीं डाला हो अगर तुम को ऐसा करना ही है (नमाज़े चाश्त पढ़ना है) तो अपने घरों में पढ़ा करो।

इन अक़वाले बाला से (जिनमें इन्कार किया गया है) नमाज़े चाश्त के उन फ़ज़ाइल की तरदीद नहीं होती जो ऊपर बयान किए जा चुके हैं। उन बुजुर्गों का मक़सद यह था कि चाश्त की नमाज़ फ़र्ज़ नमाज़ कि तरह न हो जाए और लोगों में इसके वुजूब का अक़ीदा पैदा हो जाए अलावा अज़ीं तमाम लोग इबादत और ताअत के लिए चुस्ती और आमादगी में बराबर नहीं हैं इस लिए इन बुजुर्गों ने इन्कार करके आम लोगों का बोझ हल्का कर दिया और ताअत को आसान कर देना चाहा। हज़रत उतबान बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काशानए नबुव्वत के अन्दर नमाज़ चाश्त पढ़ी और सहाबा कराम ने आप के पीछे खड़े होकर पढ़ी (उस हुजरए मुक़द्दस में) पहले बयान किया जा चुका है कि हज़रत आइशा जब

चाश्त की नमाज़ पढ़ना चाहती थीं तो वह दरवाज़ा बन्द कर लेती थीं, हज़रत इब्ने अब्बास नमाज़े चाश्त को एक दीन पढ़ते और दूसरे दिन तर्क कर देते (यह इसी बिना पर था)।

दिन का तीसरा वज़ीफ़ा

जुहर से पहले और जुहर के बाद का वक़्त

तीसरे वज़ीफ़ा का वक़्त जुहर से पहले और जुहर के बाद है। शैख़ अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत उम्मे हबीबा से रिवायत की है कि वह फ़रमाती हैं कि जिस ने जुहर की नमाज़ से पहले चार रकअतें और बाद नमाज़े जुहर चार रकअतें पढ़ीं अल्लाह उसके गोश्त पर आतिशे दोज़ख़ को क़ाबू नहीं पाने देता। बाज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि ज़वाल के बाद जुहर की नमाज़ तक आसमान और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं इसी बिना पर कहा गया है कि उस वक़्त दुआयें मक़बूल होती हैं और यही वजह है कि इबादत, दुआ और ज़िक्रे इलाही उस वक़्त करना मुसतहब है।

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़े जुहर से क़ब्ल चार रकअतें हमेशा पढ़ा करते थे जब हुज़ूर वाला से इसकी वजह दरयाफ़्त की गई तो इरशाद फ़रमाया कि सूरज ढलने पर जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जुहर की नमाज़ होने तक बन्द नहीं किए जाते इसलिए मुझे यह नमाज़ (चार रकअत) नमाज़े जुहर से क़ब्ल पढ़ना मुझे पसन्द है।

हज़रत आइशा से दरयाफ़्त किया गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किस नमाज़ की पाबन्दी बहुत ज़्यादा मरग़ूब थी? उन्होंने फ़रमाया नमाज़े जुहर से क़ब्ल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चार रकअतें [illegible] उन रकअतों में आप तवील क़याम और रुकूअ व सुजूद ख़ूब अच्छी तरह करते थे (अच्छी तरह से मुराद तवील वक़्त है)।

चौथा वज़ीफ़ा

चौथा वज़ीफ़ा जुहर और अस्र के दर्मियान की नमाज़ है

दिन का चौथा वज़ीफ़ा जुहर और अस्र के दर्मियान की नमाज़ से मुराद है। शैख़ अबू नसर अपने वालिद से बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशद फ़रमाया जिसने जुहर और अस्र के दर्मियानी वक़्त में ज़िक्रे इलाही किया (ज़िन्दा रखा) अल्लाह उसके दिल को उस रोज़ ज़िन्दा रखेगा जिस दिन तमाम दिल मर जायेंगे। हज़रत इब्ने उमर जुहर व अस्र के दर्मियानी वक़्त को ज़िक्र व इबादत से ज़िन्दा रखते थे।

हज़रत इब्राहीम नख़ई फ़रमाते हैं कि हुज़ूर वाला मग़रिब व इशा के दर्मियान और जुहर व अस्र के दर्मियानी ज़माने की इबादतों को रात की इबादतों के मिस्ल बताया करते थे और हुज़ूर की अकसर इबादत गुज़ारी का तरीक़ा यह था कि तन्हाई में जुहर व अस्र के दर्मियान ज़िक्र में मसरुफ़ रहते थे। तमाम मख़लूक़ से अलग होकर अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते थे यह वक़्त अल्लाह से ख़लवत का है उस वक़्त की नमाज़ ग़फ़लत को दूर करने वाली है, ज़िक्र

व नमाज़ के लिए जुहर व अस्र के दर्मियान मस्जिद में बैठे रहना मुसतहब है ताकि एतकाफ़ भी हो जाए और इन्तेज़ार भी (नमाज़ अस्र का इन्तेज़ार) बुजुर्गाने सल्फ़ का भी यही मामूल था, लेकिन अगर कोई शख़्स ज़वाल से पहले न सोया हो तो उस वक़्त में सो जाए ताकि आने वाली रात में नमाज़ पढ़ने की सकत आ जाए इसलिए कि दोपहर से पहले का सोना तो गुज़िश्ता शब बेदारी की वजह से होता है और ज़वाल के बाद सोना आने वाली रात के लिए है।

कितने घंटे सोना मुसतहब है

आठ घंटे से ज़्यादा सोना मुसतहब नहीं है अगर इस मुद्दत से कम सोया जाएगा तो निज़ामे जिस्मानी में ख़राबी पैदा हो जाएगी नीन्द से बदन को राहत और कुव्वत दोनों चीज़ें हासिल होती हैं। अबू नसर अपने वालिद से बिल अस्नाद हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत करते हैं कि रसुले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने यह बारह रबअतें रोज़ाना अदा कीं अल्लाह तआला उसको जन्नत में महल तैयार करके देगा यानी दो फ़[illegible]र के फ़र्ज़ से पहले, जुहर से पहले चार रकअत, जुहर के बाद दो रक[illegible] अस्र से पहले दो र[illegible]त और मग़रिब के बाद दो रकअत (कुल बारह रकअतें हुईं) हज़रत [illegible]द बिन मुसय्यब ने [illegible]ज़रत आईशा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल[illegible]म ने फ़रमा[illegible] नम[illegible] अस्र से पहले चार चार रकअत पढ़ते रहेंगे उनके लिए अल्लाह तआल[illegible]पनी बख़्शिश[illegible]को ल[illegible]ज़िम कर देगा।

औरादे मज़कूरा और एक जामेअ हदी[illegible]

अबू नसर[illegible] ने अपने [illegible]लिद से [illegible] असन[illegible]द हज़रत इ[illegible] अब्बास से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल[illegible]ल्लाहो अलैहि वसल्लम [illegible]फ़रमा[illegible] जिस ने [illegible]रिब की नमाज़ के बाद किसी से बात किए बग़ैर [illegible]र रकअत न[illegible]ाज़ अदा क[illegible] उस [illegible]लीइन में बुलन्द किया जाएगा और उसको ऐसा सवाब[illegible]मिलेगा ज[illegible] उसने श[illegible] क़द्र में मस्जिद अक़्सा [illegible]न्दर ज़िक्रे इलाही किया और यह आधी रात के [illegible]म [illegible]इबादत से बेहतर है। अल्लाह तआला का इरशाद है: यह लोग रात में बहुत कम सोय[illegible]रते थे और फ़रमाया: वह अपने पहलूओं को बिस्तरों से और दूर रखते हैं नीज़ इरशाद फ़रमाया: वह [illegible] में उस वक़्त दाख़िल हुए जब कि शहर वाले ग़ाफ़िल थे।

जिस शख़्स ने इशा [illegible]नमाज़ के बाद चार रकअतें पढ़ीं उसका मर्तबा ऐसा होगा जैसे किसी ने मस्जिदे हराम में शबे क़द्र को पा लिया और जो जुहर से पहले चार रकअतें और बाद चार रकअतें पढ़ता है अल्लाह तआला उसके बदन को आग पर हराम कर देता है (दोज़ख़ की आग उस के बदन को नहीं जलाती) और जो अस्र से पहले चार रकअतें पढ़ता है उसके लिए दोज़ख़ से नजात दे दी जाती है।

हज़रत नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत किया की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया फ़ज्र की दो रकअतें मुझे दुनिया और क़ायनाते दुनिया से ज़्यादा पसन्द है। अबू नसर ने अपने वालिद से बिल असनाद बयान किया है कि हज़रत अली से रसूलुल्लाह की नफ़्ल नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरह नवाफ़िल अदा करने की किस में ताक़त है, हुज़ूर उस वक़्त तक इन्तेज़ार फ़रमाते थे जब तक कि सूरज जितना दाईं जानिब रहता उतना ही बाईं जानिब न हो जाता तो हुज़ूर अस्र से पहले दो रकअतें पढ़ते थे और सूरज दायें बायें बराबर होता तो जुहर

से पहले चार रकअतें पढ़ते थे और अगर सूरज ढलने पर कुछ वक़्त होता तो जुहर से पहले और जुहर के बाद दो और अस्र के पहले चार रकअतें पढ़ते थे।

पांचवा वज़ीफ़ा

अस्र की नमाज़ के बाद से गुरुबे आफ़ताब तक

अस्र की नमाज़ के बाद से आफ़ताब के गुरुब होने तक तसबीह व तहलील, इस्तिग़फ़ार, अल्लाह की कुदरते कामिला का बग़ौर मुताला यानी मुराक़बा, कुराअन पाक की तिलावत और ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहना चाहिये उस वक़्त नफ़्ल नमाज़ मना है। गुरुबे आफ़ताब से क़ब्ल सूरह वश्शम्स वज़्ज़ोहाहा, वल्लैल इज़ा यग़शा, सूरह फ़लक़ और सूरह अन्नास इस तरह पढ़े कि दिन ख़त्म हो जाए।

रहमते इलाही

हज़रत हसन रज़ियल्लाहो अन्हो की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की रहमत के ज़िक्र के सिलसिला में फ़रमाया ऐ इब्ने आदम फ़ज्र की नमाज़ के बाद थोड़ी देर और अस्र की नमाज़ के बाद एक साअत मेरी याद कर लिया कर मैं इन दोनों औक़ात के दर्मियान तुझे पेश आने वाले कामों का सर [illegible] दूंगा।
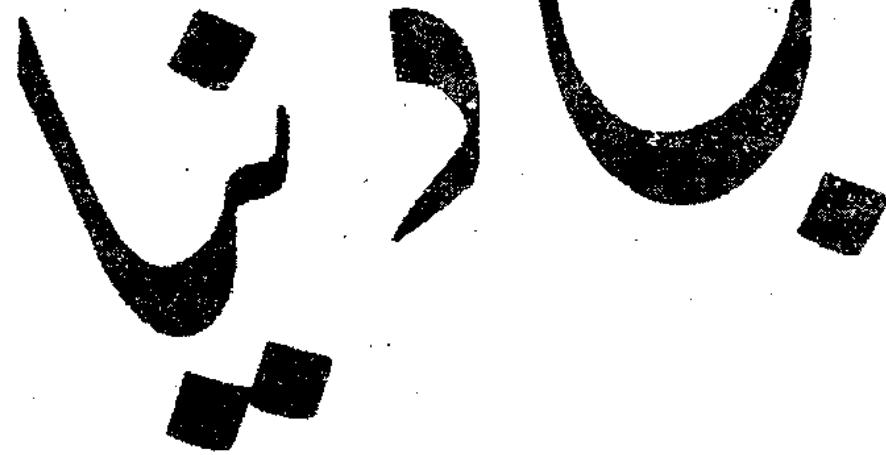
बाब 19

नमाज़े पंजगाना के औक़ात

सुन्नतें और हर नमाज़ के फ़ज़ाइल

शबे मेराज में पचास नमाज़ें फ़र्ज़ हुई

फ़र्ज़ नमाज़ें पांच हैं, फ़ज्र की दो रकअतें, जुहर की चार रकअतें, अस्र की चार रकअतें, मग़रिब की तीन रकअ़तें, इशा की चार रकअतें है। यक कुल सतरह रिकअ़तें हैं, नमाज़े जुमा की रकअ़तें इसके अलावा हैं। शबे मेराज में पचास वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ की गई थीं फिर तख़फ़ीफ़ की इस्तिदा पर हिकमते इलाही के तहत पांच वक़्त की कर दी गई ताकि उम्मते मोहम्मदी के लिए तख़फ़ीफ़ व आसानी हो। अल्लाह तआ़ला ने पैंतालीस को साक़ित कर के पांच बाक़ी (नमाज़ों) का सवाब पचास के बराबर रखा, यह हुक्म ऐसा है जैसा जिहाद में एक मुसलमान का दस काफ़िरों और मुशरिकों के मुक़ाबला का हुक्म था फिर उसको साक़ित करके एक मुसलमान के लिए दो का मुक़ाबला बाक़ी रखा या जिस तरह रमज़ान की रातों में सोकर उठने के बाद खाना पीना और बीवियों से कुरबंत करना हराम था फिर इस हुरमत को साक़ित कर के माहे रमज़ान की तमाम रातों में फ़ज्र सादिक़ तक खाने पीने (वग़ैरह) की इजाज़त अता फ़रमा दी इरशाद फ़रमाया: जब रात की सियाही से जब तक सफ़ेद धागा ज़ाहिर न हो उस वक़्त तक खाओ पीओ।

नमाज़ की फ़र्ज़ीयत

अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ की फ़र्ज़ीयत के बारे में हुक्म दिया यानी नफ़्से वुजूबे सलात की दलील यह हुक्म है: नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।

औक़ाते सलात

औक़ाते सलात के सिलसिले में चन्द आयात और अहादीस मौजूद हैं इस सिलसिले में आयात यह हैं: अल्लाह की पाकी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त और उसी के लिए ज़मीन व आसमान पर हम्द है और इशा की नमाज़ पढ़ो और जब जुहर करो तो नमाज़ पढ़ो। दूसरी आयत में यह फ़रमाया: मुसलमानों पर नमाज़ वक़्ते मुक़र्ररा पर फ़र्ज़ है। एक और आयत में फ़रमाया: दिन के दोनों तरफ़ (अस्र) और रात के कुछ औक़ात नमाज़ क़ायम करो। और एक और आयत में यह हुक्म आया है: आफ़ताब गुरुब होने पर नमाज़ क़ायम करो। दुलूक का तर्जमा ज़वाल भी किया गया यानी ज़वाल के बाद नमाज़ पढ़ो। एक और आयत में आया है: अपने रब की तस्बीह और तहमीद सूरज के तुलूअ़ और गुरुब से पहले करो और रात के कुछ औक़ात में भी तसबीह बयान करो और दिन के किनारों पर ताकि रज़ाए इलाही हासिल करो।

हज़रत क़तादा ने फ़रमाया है तुलूए आफ़ताब से पहले फ़ज्र की नमाज़ है। ग़ुरूब से पहले अस्र की और औक़ात शब में मग़रिब और इशा की नमाज़ें हैं और दिन के किनारों पर जुहर की नमाज़ है नमाज़ की फ़र्ज़ीयत अहादीस में भी मौजूद है।

अहादीस से नमाज़ की फ़र्ज़ीयत

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक बार जिब्रील ने ख़ानए काबा के पास मेरी इमामत की और ज़वाले आफ़ताब के फ़ौरन बाद जुहर की नमाज़ और दो मिस्ल साया हो जाने पर अस्र की नमाज़ पढ़ाई और फिर इफ़्तारे रोज़ा के वक़्त मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई जब शफ़क़ ग़ायब हो गई तो इशा की नमाज़ पढ़ाई और उस वक़्त जब रोज़ादार पर खाना पीना हराम हो जाता है यानी सुबह सादिक़ के वक़्त मुझे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। दूसरे दिन फिर जुहर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब हर चीज़ का साया उस शय के मिस्ल हो गया और अस्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब हर शय का साया उसका दोगुना हो गया और मग़रिब की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब रोज़ादार इफ़्तार करता है, इशा की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब एक तिहाई रात गुज़र गई फिर फ़ज्र की नमाज़ उस वक़्त पढ़ाई जब उजाला फैल गया उसके बाद मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह औक़ाते नमाज़ आप से पहले पैग़म्बर के हैं दोनों वक़्त के दर्मियान नमाज़ का वक़्त है यह हदीस तअय्युने औक़ात की असल है इस सिलसिले की और हदीस भी हैं जो इसी हदीस के हम मानी हैं इसी लिए उन अहादीस को हमने बयान नहीं किया।

उन औक़ात से पहले नमाज़ पढ़ने वाले पैग़म्बर

हमारे नबी करीम सय्यदे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क़ब्ल जिन्होंने इन वक़्तों में सबसे पहले जिन्होंने नमाज़ अदा फ़रमाई उनका ज़िक्र अहादीसे शरीफ़ा में मौजूद है चुनांचे एक अंसारी ने सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नमाज़े फ़ज्र के बारे में दरयाफ़्त किया कि सबसे पहले किसने अदा फ़रमाई तो आप ने फ़रमाया सबसे पहले हज़रत आदम ने इस नमाज़ को पढ़ा है और नमाज़ जुहर को सबसे पहले इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पढ़ा। जब अल्लाह तआला ने आप को नमरूद की आग से नजात बख़्शी, अस्र की नमाज सबसे पहले हज़रत याकूब ने उस वक़्त पढ़ी जब हजरत जिब्रील ने उनको हज़रत युसूफ की ख़ुशख़बरी सुनाई। मग़रिब की नमाज़ हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब उनकी तौबा क़बूल हुई और सबसे पहले इशा की नमाज़ उस वक़्त हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने पढ़ी जब वह मछली के पेट बाहर आए। उनकी हालत ऐसी थी जैसे मुर्ग़ी का चूज़ा बग़ैर बाल और पर के होता है। जब हज़रत यूनुस बतने माँही से निकले तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर उनसे अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला आप पर सलाम भेजता है और वह अपनी शान के मुताबिक़ आप से हया फ़रमाता है कि दुनिया में आप को ऐसा अज़ाब दिया, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क्या अब तुम मुझ से राज़ी हो? हज़रत यूनुस उसी वक़्त खड़े हुए और चार रकअत इशा की नमाज़ अदा फ़रमाई और बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अर्ज़ किया यक़ीनन मैं अपने रब से राज़ी हूं, मैं अपने रब से राज़ी हूं।

रसूलुल्लाह पर सबसे पहले फ़र्ज़ होने वाली नमाज़ें

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सबसे पहले फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ वाजिब हुई थी और उसी के बारे में हुक्म हुआ था फ़सब्बेह बेहम्दे रब्बेका बिल अशय्या वल इबकार का यहीं मतलब है यानी आप अपने रब की तसबीह सुबह व शाम किया कीजिये, यहां तक कि आप को शबे मेराज में पांच नमाज़ों का तोहफ़ा अता हुआ, उन नमाज़ों में सबसे पहली नमाज़ फ़ज्र की है, उस के बाद जुहर है लेकिन उलमा ने उन नमाज़ों में सबसे पहले जुहर की नमाज़ का तज़किरा किया है और वह बरबिनाए इत्तेबाए सुन्नत है। हज़रत अब्बास वाली हदीस में है कि ख़ानए काबा के पास जिब्रील ने मुझे जुहर की नमाज़ पढ़ाई यही वजह है कि उलमा ने जुहर की नमाज़ का वक़्त पहले बयान किया है, इस के यह मानी नहीं कि पहले नमाज़े जुहर फ़र्ज़ हो गई थी, पहले ज़िक्र हो चुका है कि फ़ज्र की नमाज़ सबसे पहले हज़रत आदम ने पढ़ी थी और आप इन्सानों में सबसे पहले नबी थे जिनको ज़मीन पर भेजा गया था, इस से ज़ाहिर व साबित है कि फ़ज्र की नमाज़ ही सब से पहले नमाज़ है जो फ़र्ज़ हुई।

नमाज़े फ़ज्र का वक़्त

नमाज़े फ़ज्र का इब्तिदाई वक़्त तुलूअ सुबहे सादिक़ है उस वक़्त [illegible]रिक़ से सुबहे सादिक़ की पौ फट कर इन्तिहाई मशरिक़ में फैल जाती है औ[illegible] ऊंची होकर सारे उफ़क़ पर छा जाती है और फिर पहाड़ों की चोटियां और ऊंचे मकानात रोशन हो जाते हैं और उस का आख़िरी वक़्त वह उजाला है कि [illegible] का स[illegible] फेरते ही सूरज का किनारा उफ़क़ से नमूदार हो जाए इन दोनों हुदूद के माबैन फ़ज्र का वक़्त है जो बहुत वसीअ [illegible] इस नमाज़ को सुबह की नमाज़ (फ़ज्र की नमाज़) कहना मुस्तहब है इस को नमा[illegible] कहा जाए चूंकि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है फ़ज्र [illegible] नमाज़ के वक़्त रात और दिन के फ़रिश्तें हाज़िर होते हैं इस लिए फ़ज्र की नमाज़ रा[illegible] रोज़ नामचों में भी लिख ली जाती है और दिन वाले फ़रिश्तों के दफ़्तर में भी।

नमाज़े फ़ज्र किस व[illegible]ज़ल है

बिलकुल इब्तिदाई वक़्त में जब अंधेरा ही हो (तग़लीस) नमाज़े फ़ज्र पढ़ना अफ़ज़ल है और हमारे इस क़ौल पर दलील हज़रत आइशा का वह क़ौल है जिसमें उन्होंने फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में औरतें हुज़ूर के साथ नमाज़े फ़ज्र आकर पढ़ती थीं वह चादरों में लिपटी हुई वापिस चली जाती थीं और सुबह के अंधेरे में उनको कोई शिनाख़्त नहीं कर सकता था।

हमारे इमाम अहमद हम्बल से एक क़ौल और भी मनकूल है वह यह कि मुक़तदियों की हालत को देखना चाहिए अगर मुक़तदी रौशनी फैलने के बाद आये हैं तो फिर ख़ूब रौशनी फैलने पर नमाज़ अफ़ज़ल है ताकि जमाअत में लोग ज़्यादा हो जायें और सवाब बढ़ जाए। फ़ज्रे अव्वल (सुबहे काज़िब) क़ाबिले एतबार नहीं है वह न रोज़ादार पर कोई चीज़ हराम करती है और न नमाज़े फ़ज्र वाजिब करती है। हज़रत इब्ने अब्बास रिवायत करतें है कि फ़ज्र दो हैं, वह फ़ज्र जिससे नमाज़ वाजिब हो जाती है और रोज़ादार पर खाना पीना हराम करती है वह है जो पहाड़ों

पर रौशनी फैलाती है।

बाज़ उलमा ने दोनों फ़ज्रों के हुदूद और अहवाल बयान किये हैं कहते हैं कि पहली फ़ज्र (सुबहे काज़िब) शुआए आफ़ताब के ग़लबा की इब्तिदा होती है यानी आफ़ताब की रौशनी पांचवे ज़मीन के पीछे से निकल कर आसमान के दर्मियान फैल जाए यह रौशनी रात के आख़िरी तीसरे हिस्सा में ज़ाहिर होती है और फिर सियाही लौट आती है इस लिए आफ़ताब नीचे वाले आसमान के दर्मियान रूपोश हो जाता है और छठीं ज़मीन उसके आगे परदा बन जाती है।

फ़ज्रे सानी यानी सुबहे सादिक़ सूरज की शफ़क़ फट कर निकलने को कहते हैं यह वह सफ़ेदी जिसके नीचे शफ़क़ की सुर्ख़ी हो जो शफ़क़े सानी कहलाती है, यही सुर्ख़ी आख़िरी रात के वक़्त सूरज की किरनों का अव्वलीन पेश ख़ेमा होती है यानी वहीं से किरनों के फूटने की इब्तिदा होती है इस के बाद कुर्से ख़ुरशीद निकलना शुरु होती है, सूरज जब उस मसकुना ज़मीन पर (उठ कर) परतवे फ़गन होता है और उसकी किरनें नीचे वाले आसमान के दामन से फूट कर निकलना शुरु होती हैं तो पहाड़ों, समुन्द्रों और उन मुल्कों पर जो [illegible]चे हैं (यानी मशरिक़े बईद के मुल्क हैं) छा जाती हैं। अव्वलन फ़ज्र क[illegible]आयें तूल में फैलती[illegible] उसके बाद अर्ज़ में फैलना शुरु होती हैं और फिर सारे उफ़क़ पर मुन्त[illegible]र हो जाती हैं। शफ़[illegible] दो होती हैं एक तुलूए शम्स के वक़्त और एक गुरुबे शम्स के वक़्त।

जुहर का वक़[illegible]

जुहर के वक़[illegible] की इ[illegible]दा

सूरज ढलन[illegible] पर जुहर का वक़्त हो ज[illegible]ता है [illegible] वक़्त वह है जब कि साया एक मिस्ल न हो जाए [illegible] जुहर अ[illegible] वक़्त में [illegible]ना अफ़[illegible] अलब[illegible] जमाअत में शिर्कत से अगर ताख़ीर करना पड़े [illegible] ताख़[illegible]र दुरुस्त है, गर्मी या अब्र के बाइ[illegible]भी ताख़ीर करना दुरुस्त है। हदीस में आया है कि [illegible]ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जुहर की नमाज़ ठंडक में पढ़ो, गरमी क[illegible] शिद्दत जहन्नम की लपट (शोला ज़नी) से होती है। एक दूसरी रिवायत हज़रत बिलाल [illegible]है कि उन्होंने फ़रमाया कि मैंने जुहर की नमाज़ तैयार होने की इत्तेला हुजूर को दी, हुजूर ने फ़रमाया बिलाल ख़ुनकी होने दो कुछ देर के बाद मैंने फिर इत्तेला दी तो हुजूर ने फिर फ़रमांया, ख़नकी होने दो, तीसरी बार मैंने इत्तेला दी तब भी हुजूर ने यही फ़रमाया यहां तक कि टीलों के साये मुझे नज़र आने लगे, फिर हुजूर ने फ़रमाया गर्मी की शिद्दत जहन्नम की शोला ज़नी से है गर्मी सख़्त हा`तो (नमाज़े जुहर के लिए) ठंडक होने दिया करो।

ज़वाल की पहचान

निस्फुन्नहार और ज़वाल

ज़वाल से क़ब्ल सूरज ठहरा हुआ होता है अगर ज़रा भी ढल जाए तो जुहर का वक़्त शुरु हो जाता है। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि सूरज तिस्मा बराबर भी ढल जाए तो जुहर के वक़्त का आग़ाज़ हो जाता है और जब साया हर चीज़ का एक मिस्ल हो जाए तो जुहर का वक़्त ख़त्म हो

कर अस्र का वक़्त शुरु हो जाता है अगर उसकी शिनाख़्त चाहते हो तो इसका तरीक़ा यह कि एक लकड़ी हमवार ज़मीन पर सीधी खड़ी की जाए या खुद ही सीधे किसी हमवार और ठीक ज़मीन पर खड़े हो जाओ जहां तक साया पड़ रहा है उसके ख़त्म पर एक निशान लगा दो या कोई लकीर खींच दो फिर साये के घटने बढ़ने को देखो अगर साया कम हो जाए तो समझ लो अभी ज़वाल का वक़्त नहीं हुआ है और अगर घटता बढ़ता न हो बल्कि एक जगह ठहरा और क़ाएम हो तो वह निस्फ़ुन्नहार (ठीक दोपहर) है उस वक़्त नमाज़ दुरुस्त नहीं है। जब साया कुछ बढ़ने लगे तो समझ लो कि सूरज ढलना शुरु हो गया (ज़वाल का वक़्त शुरू हो गया) अब मुक़र्ररा निशान या लकीर को देखो अगर साया लकीर से आगे एक मिस्ल बढ़ गया है तो यह ज़ुहर का आख़िरी वक़्त है और अगर एक मिस्ल से कुछ आगे बढ़ जाए तो अस्र का अव्वल वक़्त होगा।

अगर सायए असल के दो मिस्ल हो जाए तो वह अस्र का आख़िरी वक़्त होगा उससे आगे सिर्फ़ ज़रुरत और मजबूरी पर वह वक़्त नमाज़ के लिए है यानी अगर मजबूरन किसी को नमाज़ अदा करना है तो उस वक़्त में अदा करे। यही तरीक़ा अपने क़द से साये के पहचानने का है यानी क़द का साया अगर देखो कि वह घट रहा है तो समझ लो कि आफ़ताब का अभी ज़वाल नहीं हुआ अगर साया ठहर गया है तो निस्फ़ुन्नहार का वक़्त है अगर साया बढ़ गया है तो ज़वाल हो गया है सायए मिस्ल के पहचानने का तरीक़ा यह है कि अगर क़द की लम्बाई सात क़दम है तो सामने की तरफ़ से साया नाप लो जिस क़दम पर खड़े हो उसको शुमार न करो सायए असल के सिवा सात क़दम हो जाए तो समझ लेना चाहिए कि ज़ुहर का वक़्त हो गया है अगर उससे बढ़ जाए तो (फ़िक़्हे हंबली में) अस्र का वक़्त हो गया।

सायए असल की मज़ीद तशरीह

सायए असल के सिलसिले में जो कुछ कहा गया है तो उसका इतलाक़ मौसमे सर्मा और गर्मा दोनों पर यकसां नहीं है बल्कि मौसम के एतबार से कम व बेश होता है, मौसमे गर्मा की बनिस्बत मौसमे सर्मा में साया ज्यादा तवील होता है इसका सबब यह है कि मौसमे सर्मा में आफ़ताब ऐन सिमतुर्रास से होकर नहीं गुज़रता बल्कि आसमान के दामन की तरफ़ हट कर गुज़रता है और मौसमे गर्मा में साया कम होता है क्योंकि इस मौसम में आफ़ताब ऐन सिमतुर्रास (यानी वस्ते आसमान) से गुज़रता है उस वक़्त उसकी शुआयें इंसान के बिल्कुल ठीक सर पर पड़ती हैं।

आफ़ताब जिस वक़्त तुलूअ़ होता है वह आसमान के उफ़क़ पर दिखाई देता है और उसका साया बहुत लम्बा होता है जूं जूं वह चढ़ता जाता है साया घटता जाता है और जब वह वस्ते आसमान पर पहुंच जाता है तो फिर साया ठहर जाता है यही वक़्त तवक़्क़ुफ़ है लेकिन सूरज की रफ़्तार बराबर जारी रहती है और सूरज का मग़रिब की जानिब झुकाओ शुरु हो जाता है और असले साया में तूल शुरु हो जाता है सूरज के इस उतार (नुज़ूल) को ज़वाल कहते हैं।

जिस तरह मौसमों के एतबार से साया में कमी व बेशी होती रहती है उसी तरह शहरों के महल्ले वुक़ूअ़ के इख़्तिलाफ़ से भी साया में कमी व बेशी होती है जो शहर आसमान के ऐन वस्त में आते हैं जैसे मक्का और उसके अतराफ़ के बस्तियां, उन बस्तियों में आफ़ताब का साया कम पड़ता है यहां तक कि तवक़्क़ुफ़ के वक़्त साया बिल्कुल नहीं रहता है और जो ममालिक वस्ते

आसमान से दूर हैं जैसे ख़ुरासान अतराफ़े ख़ुरासान वग़ैरह वहां मौसमे सर्मा और गर्मा दोनों में साया तवील होता है, उन शहरों में मौसमे गर्मा में सूरज का असल साया इतना होता है जितना दूसरे शहरों में मौसमे गर्मा के अन्दर।

मुख़्तलिफ़ महीनों में ज़वाल के वक़्त साया

उलमाए सल्फ़ की तशरीह

इल्म तौक़ीत के उलमाए सल्फ़ ने कहा है कि माहे हज़ीरान (आसाढ़) में जब साया दो क़दम रह जाता है तो वह ज़वाल हो जाता है और माहे कानून (पूस) में अकसर जब आठ क़दम साया होता है तो ज़वाल होता है और माहे ऐलूल (कंवार) में पांच क़दम साया पर ज़वाल होता है और नशरीन अव्वल (कार्तिक) में छः क़दम साया पर ज़वाल होता है। नशरीन सानी (अगन) में सात क़दम पर और कानू अव्वल (पूस) में आठ क़दम पर इस महीना में दिन बहुत ही छोटा और रात बहुत ही ज़्यादा तवील हो जाती है। इसके बाद [illegible] घटने और दिन ब[illegible] लगता है चुनांचे कानून सानी (माघ) के महीने में सात क़दम पर ज़वाल होता है और माहे श[illegible] (फ़ागुन) में छः क़दम पर, माहे अदार (बैसाख) में पांच क़दम पर ज़वाल होता है इस [illegible] में कुछ दिन के लिए रात दिन बराबर होते हैं। फिर माह अयार (चैत) में चार [illegible] पर ज़वाल होता है माहे नीसां में भी चार क़दम पर ज़वाल होता है और माहे तिमोज (ज[illegible]) [illegible] तीन क़दम पर और माहे आब (सावन) में इसी तरह दो क़दम पर ज़वाल होता है यह ज़माना दिन के इन्तहाई तवील और रात के सबसे ज़्यादा छोटे हो[illegible] होता है [illegible] कम से कम अस[illegible] साया पर दिन का ज़वाल होता है दिन पन्द्रह घ[illegible] का और रात नौ घंटे की होती [illegible] ज़वाल तीन क़दम साया पर और भादो में चार क़दम साया प[illegible] होता है, कु[illegible]र के मह[illegible] ज़वाल पांच क़दम साया पर होता है और इस ज़माने में [illegible]त दि[illegible] बराबर होते हैं।

हज़रत सुफ़ियान [illegible] से मरवी है कि आफ़ताब का ज़वाल ज़्यादा से ज़्यादा सात क़दम पर और कम से कम एक क़दम [illegible] है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से मरवी है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो [illegible] सल्लम के साथ जुहर की नमाज़ उस वक़्त पढ़ते थे जब साया तीन क़दम से पांच क़दम तक होता था और सर्दी के मौसम में पांच क़दम साया होने पर पढ़ा करते थे।

बाज़ उलमा की तसरीह ज़वाल के बारे में

साया के घटने और बढ़ने की एक सूरत बाज़ उलाम ने यह बयान की है कि जेठ की 19 तारीख़ को हर चीज़ का सायए असली तीन क़दम होता है और उसी पर ज़वाल होता है इस लिए उस दिन सूरज का ज़वाल हर चीज़ के 3/7 हिस्सों पर वाक़ेअ होता है इसके बाद साया घटने लगता है, हर 36 दिन गुज़रने पर साया बक़द्र एक क़दम बढ़ जाता है। कुंवार की 19 तारीख़ को दिन रात फिर बराबर हो जाते हैं। उस दिन ज़वाले आफ़ताब तीन क़दम पर होता है (चौदह दिन के बाद साया बक़द्र एक क़दम बढ़ जाता है पोह या पूस की 19 तारीख़ को रात का बढ़ना और दिन का घटना इन्तहा को पहुंच जाता है उस दिन सायए असली साढ़े सात क़दम होता है यह

साया ज़वाल के वक़्त के लिए सबसे ज़्यादा है इसके बाद चौदह दिन गुज़रने पर एक क़दम साया ज़्यादा हो जाता है। साया का घटना और बढ़ना ख़िज़ां और बहार के मौसम में हर छत्तीस दिन पर एक क़दम होता है मौसमे बहार में हर चौदह दिन बाद एक क़दम बढ़ता है।

ज़वाल की शिनाख़्त का एक और तरीक़ा

हमारे मशाइख़ (उलमाए हंबली) ने शिनाख़्ते ज़वाल का एक और तरीक़ा बयान किया है और वह यह है कि क़दमे इंसान के क़द का 1/7 होता है। चैत क पूरे महीने में तीन क़दम साया पर ज़वाल होता है इस महीने में अस्र का अव्वल वक़्त साढ़े नौ क़दम साया पर होता है (यानी असल और बढ़ा हुआ साया दोनों को मिला कर साढ़े नौ क़दम सावन के पूरे महीने में जुहर का अव्वल वक़्त साढ़े ग्यारह क़दम होता है। पूरे कुंवार में जुहर का अव्वल वक़्त छः क़दम साया पर और अस्र का वक़्त साढ़ बारह क़दम पर शुरू होता है। माघ के शुरू महीने में सात क़दम के फ़ासला (साया) पर जुहर का और साढ़े तेरह क़दम पर अस्र का वक़्त शुरू होता है और इस महीने के अख़ीर में आठ क़दम साया पर जुहर का और साढ़े चौदह क़दम साया पर अस्र का वक़्त शुरु हो जाता है, पूस (पोह) के महीने में साढ़े दस क़दम पर जुहर और साढ़े सतरह क़दम साया (असल और ज़्यादा) पर अस्र का वक़्त शुरु होता है, फागुन में [illegible] क़दम साया पर जुहर और साढ़े चौदह क़दम पर अस्र का वक़्त शुरु हो जाता है चैत के महीने में छः क़दम पर जुहर और साढ़े बारह क़दम साया पर अस्र का वक़्त शुरु होता है बैसाख में साढ़े चार क़दम साया पर जुहर और ग्यराह क़दम पर अस्र का वक़्त शुरु हो जाता है, जेठ में साढ़े तीन क़दम पर जुहर और साढ़े दस क़दम पर अस्र का वक़्त शुरु होता है साल के बारह महीनों में ज़वाले आफ़ताब का यह एक अन्दाज़ा है लेकिन हर बात की असल हक़ीक़त अल्लाह तआला ही को मालूम है हमारी अक़्लें इसके इदराक से क़ासिर [illegible] हैं।

ज़न व यक़ीन के ग़लबा पर अमल

बयानात व तसरीहाते मज़कूरा बाला से ज़वाल की शिनाख़्त और उसकी हद बन्दी (बारह महीनों में) काई आख़िरी और [illegible] नहीं है यह सब कुछ शिनाख़्त का एक ज़रिया है लकिन इस से हर शख़्स इस्तिफ़ादा नहीं कर सकता बल्कि इसका क़ाइदए कुल्लिया यह है कि जिस शख़्स का ज़वाल का यक़ीन और उस पर गुमान ग़ालिब हो जाए तो उस पर उस वक़्त में जुहर की नमाज़ अदा करना वाजिब हो जाता है और हक़ीक़त यह है कि ज़वाल की शिनाख़्त करने वाले लोग तीन तरह के होते हैं अव्वल वह लोग जिन पर उन औक़ात का यक़ीनी इल्म फ़र्ज़ होता है, वह लोग हैं जो इल्मे तौक़ीत (घंटा मिनट मोअय्यन करने का इल्म) और सितारों की रफ़्तार से वाक़िफ़ होते हैं उन ज़राए से उनको औक़ात का यक़ीनी इल्म हो जाता है दोम वह लोग हैं जिन का फ़र्ज़ इस सिलसिले में कोशिश करना और औक़ात की शिनाख़्त और अपने काम की मिक़दार या दूसरे लोगों के काम की मिक़दार से नतीजा हासिल करना है मसलन नाने बुज़ की आदत यह हो कि वह जुहर के वक़्त तक एक मख़सूस वज़न की रोटीयां पका लेता हो और वह उस मख़सूस मिक़ादार को पका ले तो यह राय क़ायम कर ली जाएगी कि जुहर का वक़्त हो गया या एक आटा पीसने वाला जुहर तक एक मख़सूस पैमाना तक ग़ल्ला पीस लेता है और वह उस दिन यह मख़सूस वज़न और पैमाना ग़ल्ला का पीस ले तो यह राय क़ायम कर ली

जाएगी कि जुहर का वक़्त हो गया है। इस तरह तरीक़ए कार की मदद से पेशावर वक़्त की शिनाख़्त कर लेता है और नमाज़ अदा कर लेता है, अन्दाज़ए कार से वक़्त के अन्दाज़े की ज़रुरत इसलिए पेश और भी आई कि अब्र के दिन सूरज न होने की वजह से वक़्त कम मालूम होता है और इंसान वक़्त की सही शिनाख़्त नहीं कर सकता।

इसी तरह वक़्त को पहचानने वाले मोअज़्ज़िन की अज़ान या ऐसे शख़्स की अज़ान जिसने किसी वक़्त शनास की इजाज़त से अज़ान दी हो (इंसान वक़्त का अन्दाज़ा कर लेता है और) नमाज़ को खड़ा हो जाता है, सोम वह शख़्स जिसका फ़र्ज़ सिर्फ अपनी फ़िक्र व अक़्ल से इज्तिहाद करना है, यह शख़्स उस वक़्त तक नमाज़ को मोअख़्ख़र करता है यानी उस वक़्त तक वक़्त हो जाने का हुक्म नहीं लगाता जब तक वक़्त हो जाने का उसको गुमान ग़ालिब न हो जाए मसलन वह लोग जो किसी जगह पर बन्द हों या मुक़ैयद हो जहां न कोई दलील वक़्त पहचानने की हो और न कोई इत्तला मिलने की उम्मीद और न अज़ान की अवाज़ आने की तवक़्क़ो तो ऐसे लोग महज़ अपने गुमाने ग़ालिब से नमाज़ अदा करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाह[illegible] अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है मैं जब तुम को किसी काम कर[illegible] हुक्म दूं तो जितना [illegible]र सकते हो करो।

यक़ीनी तौर पर ज़वाल की शिनाख़्त

यक़ीनी तौर पर ज़वाल के वक़्त की पहचान मुश्किल भी है और [illegible]क़ीक़ [illegible]ी, इसका सही अंदाज़ा कोई नहीं कर सकता। हदीस शरीफ़ में आया [illegible] रसूलुल्ला[illegible] सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि क्या आफ़ताब ढल गया? उन्होंने जवाब दिया नहीं फिर फ़[illegible] ही कहा [illegible] आप ने दरयाफ़्त किया यह क्या जवाब तुमने दिया? उन्होंने ने कहा कि जब मैंने नहीं के बा[illegible]हां [illegible] उतनी [illegible] में आफ़ताब ने अपने मदार पर पचास हज़ार फ़र[illegible]ख मुसाफ़त [illegible] कर ली है हुज़ूर [illegible] से ज़वाल के बारे में सवाल करना इल्मे इलाही के बारे में था।

बहरहाल अगर [illegible] क़िब्ला रू खड़े हो और गर्मी का ज़माना है, सूरज तुम्हारी दायें अबरु के ऊपर हो तो समझ लो कि ज़वाल हो गया ज़ुहर की नमाज़ पढ़ लो और जब हर चीज़ का साया एक मिस्ल हो जाए तो समझ लो कि अस्र का वक़्त हो गया और अगर आफ़ताब बायें अबरू पर हो तो यक़ीन कर लो कि अभी ज़वाल नहीं हुआ और अगर आफ़ताब दोनों अबरूओं के वस्त में हो तो यह समझना चाहिये कि आफ़ताब के तवक़्क़ुफ़ और क़याम का वक़्त है यानी उस वक़्त आफ़ताब ठीक निस्फ़ुन्नहार पर है। मौसमे सर्मा के इब्तिदा में जब कि दिन छोटा होता है यह मुमकिन है कि हालते मज़कूरा में ज़वाल हो गया हो (यानी जब आफ़ताब दोनों अबरुओं के दर्मियान हो और जाड़े का मौसम हो) अगर मौसमे सर्मा की इब्तिदा में आफ़ताब दायें अबरु पर हो तो हर मौसम में ज़वाल का वक़्त हो जाता है (ख़्वाह गर्मी का मौसम हो या सर्दी का) बस फ़र्क़ इतना होगा कि अगर गरमी है तो अव्वल वक़्त ज़ुहर का होगा और मौसमे सरमा में ज़ुहर का आख़िरी वक़्त। अगर आफ़ताब बायें अबरु पर हो तो मौसमे सर्मा में तो ज़वाल का वक़्त मुमकिन है लेकिन गर्मा में ज़वाल का वक़्त नहीं हो सकता है क्योंकि दिन बड़ा होता है, मौसमे सर्मा में अगर आफ़ताब दोनों अबरुओं के दर्मियान हो तो ज़वाल का वक़्त यक़ीनी है और अगर दायें अबरु की तरफ़ आफ़ताब माएल हो तो ज़ुहर का आख़िरी वक़्त होगा लेकिन यह वक़्त अहले ख़ुरासान व इराक़ के लिए होगा

यानी उन लोगों के लिए जो रुक्ने असवद और बैतुल्लाह के दरवाज़े की तरफ़ रुख़ कर के नमाज़ अदा करते हैं लेकिन यमन और अहले मग़रिब और उसके अतराफ़ में रहने वाले लोगों का वक़्त इसके ख़िलाफ़ होगा इसलिए कि वह रुक्ने यमानी और काबा की पुश्त की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते हैं पस साया का अंदाज़ वक़्त तबदील हो जाता है।

काबा की शिनाख़्त

ज़वाल की शिनाख़्त के बाद अगर काबा की सिम्त की शिनाख़्त करना है तो अपना साया अपनी बाईं तरफ़ कर लो उस वक़्त तुम्हारा मुह क़िब्ला रू होगा इस मौक़ा पर इताना और जान लो कि ज़वाल के वक़्त की शिनाख़्त मुश्किल और बहुत दक़ीक़ बात है यही वजह है कि हम ने इस को इस क़दर तफ़सील से बयान किया। हज़रत इब्ने मसऊद से मरवी हदीस में ज़वाल के बारे में शिनाख़्त की तंबीह आई है यानी ज़वाल के वक़्त के सिलसिला में ज़्यादा काविश न की जाए।

अस्र का वक़्त

अस्र के वक़्त का आग़ाज़?

नमाज़े अस्र का वक़्त उस वक़्त होता है कि साया एक मिस्ल से बढ़ जाए और उसका आख़िरी वक़्त रह जाता है कि साया दो मिस्ल हो जाए इसके बाद से ग़ुरूबे आफ़ताब तक सिर्फ़ वक़्ते ज़रूरत है, अस्र की नमाज़ अव्वल वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल है।

मग़रिब का वक़्त

मग़रिब के औक़ात

आफ़ताब के ग़ुरूब होते ही मग़रिब का वक़्त हो जाता है। डूबने के मानी यह हैं कि क़ुर्से ख़ुर्शीद का बालाई किनारा नीचे को लटक जाए और नज़रों से ग़ायब हो जाए। मग़रिब के दो वक़्त है एक इब्तेदाई दूसरा इन्तेहाई। ग़ुरूबे आफ़ताब मग़रिब का अव्वल वक़्त है और मग़रिब का आख़िरी वक़्त शफ़क़ की सुर्ख़ी ग़ायब होने तक है सही रिवायत यही है।

इशा का वक़्त

इशा का आग़ाज़

जब आसमान पर शफ़क़ की सुर्ख़ी (ग़ुरुब के बाद) बिल्कुल ग़ायब हो जाए तो इशा का वक़्त शुरु हो जाता है और वक़्ते फ़ज़ीलत एक रिवायत के एतबार से एक तिहाई रात तक और दूसरी रिवायत के लिहाज़ से निस्फ़ शब तक बाक़ी रहता है अलबत्ता उज़्र और ज़रूरत का वक़्त सुबहे सादिक़ के नमूदार होने तक है। इशा के दो नाम हैं अतमा और इशा आख़िरा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि देहाती इस नमाज़ का नाम (अतमा) रखने में तुम पर ग़ालिब आ जाएं इस बात में उनकी मुख़ालिफ़त न करो।

तिहाई रात के अव्वल या निस्फ़ शब तक इशा की नमाज़ में ताख़ीर करना अफ़ज़ल है इशा
की नमाज़ का अफ़ज़ल वक़्त वह है कि मग़रिब के उफ़क़ की सफ़ेदी ग़ायब हो कर उसकी जगह
सियाही ने ले ली हो उस सफ़ेदी को जिस पर तारीकी ग़ालिब आ गई दूसरी शफ़क़ कहते हैं
लिहाज़ा चौथाई या तिहाई या निस्फ़ शब तक ताख़ीर करना चाहिए लेकिन यह अहकाम (ताख़ीर)
उस शख़्स के लिए है जो पढ़ने से पहले न सोए (इशा की नमाज़ पढ़े बग़ैर सोना मकरूह है)
जिसको नीन्द आ जाने का डर हो उसके लिए नमाज़ पढ़ कर सो जाना ही अफ़ज़ल है ख़्वाह
वह शुरु शब ही क्यों न हो। इमाम शाफ़ई के नज़दीक इसी एतबार से अव्वल शब में इशा पढ़ना
अफ़ज़ल है, लेकिन हम (हनाबिला) ताख़ीर की फ़ज़ीलत के क़ायल हैं क्योंकि रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि इशा की नमाज़ में ताख़ीर करो।

एक शब हुज़ूर सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम देर से नमाज़ (इशा) के लिए
तशरीफ़ लाए थे और फ़रमाया था कि अगर मुझे उम्मत की दुशवारी का ख़याल न होता तो मैं
उनको ऐसे ही वक़्त इशा पढ़ने का हुक्म देता। लिहाज़ा आपने न सिर्फ़ ताख़[illegible]र फ़रमाई थी बल्कि
ताख़ीर की रग़बत भी दिलाई।

नमाज़े पंजगाना और सुन्नने मो[illegible]क्किदा

पंजगाना नमाज़ में तेरह रकअतें सुन्नते मोअक्किदा [illegible]को सुनने [illegible]तिबा भी कहते हैं) दो
रकअतें नमाज़े फ़ज्र से क़ब्ल, दो रकअतें नमा[illegible] ज़ुहर से क़ब्ल और दो इसके बाद, दो रकअतें
नमाज़े मग़रिब के बाद, दो [illegible]कअतें नमा[illegible]इशा [illegible] बाद और ती[illegible] रकअत वित्र, वित्र में इख़्तियार
है कि चाहे तो [illegible]ारिब की नमाज़ की तरह एक स[illegible]ाम से प[illegible]ा दो रकअत पर सलाम फेर कर
फ़ौरन इसके बा[illegible] एक रकअत मिला दे और यह [illegible]। वित्र की पहली रकअत में सूरह
फ़ातिहा के बाद स[illegible]बेहिस म[illegible]रब्बिकल आला और दूसरी रकअत [illegible] कुल या अय्युहल काफ़िरून
और तीसरी रकअत [illegible] कुल हुवल्लाहो अहद पढ़े। फ़ज्र की सुन्नतों में पहली रकअत में कुल या
अय्युहल काफ़िरून औ[illegible]दूसरी रकअत में कुल हुवल्लाहो अहद पढ़े। फ़ज्र की सुन्नतें घर पर
पढ़ कर फ़र्ज़ के लिए नि[illegible]ल[illegible]सतहब है। फ़ज्र की सुन्नतों के बाद ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल
रहे और किसी से बात [illegible]करे (सिवाए ज़रुरी बात के) मग़रिब की नमाज़ की सुन्नतों में वही
क़िरत करे जो फ़ज्र की सुन्नतों में की गई है। हज़रत इब्ने उमर फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बीस से ज़्यादा बार सुना है कि आप मग़रिब की सुन्नतों में कुल
या अय्युहल काफ़िरून और सूरह इख़लास पढ़ा करते थे। हज़रत ताऊस पहली रकअत में कुल
आमनर्रसूलो और दूसरी रकअत कु हुवल्लाहो अहद पढ़ते थे।

मग़रिब की सुन्नतें जल्द पढ़ना

मग़रिब की सुन्नतें जल्द पढ़ना मुसतहब है, हज़रत हुज़ैफ़ा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मग़रिब की नमाज़ के बाद दो रकअतें जल्द पढ़ लिया
करो ताकि फ़र्ज़ नमाज़ के साथ मलाइका उनको भी उठा कर ले जायें पस दोनों रकअतें
मुख़्तसर पढ़ना मुस्तहब हैं। एक और हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि
वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने बात करने से पहले मग़रिब के बाद की दो रकअतें पढ़ीं

फ़रिश्ते उस शख़्स की यह नमाज़ इल्लीईन में ले जाते हैं।

एक ऐसी भी रिवायत आई है कि जिससे इन दोनों रकअतों का तवील पढ़ना मुस्तहब साबित होता है। हज़रत इब्ने अब्बास की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मग़रिब के बाद वाली रकअतें इस क़दर तवील पढ़ते थे कि तमाम अहले मस्जिद मुतफ़र्रिक़ हो जाते थे (अपने अपने घरों को चले जाते थे) हज़रत हुज़ैफ़ा का बयान है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, मग़रिब की नमाज़ के बाद इशा तक हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ते रहे फिर घर को तशरीफ़ ले गए।

एक हदीस में आया है कि मग़रिब के बाद की दो रकअतें घर में पढ़ना मुस्तहब हैं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मग़रिब के बाद वाली दो रकअतें मेरे घर में अदा फ़रमाते थे। हज़रत उम्मे हबीबा से भी ऐसी ही रिवायत आई है। हज़रत सुहैल बिन सअ़द फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उसमान का ज़माना पाया है जब अमीरुल मोमिनीन मग़रिब की नमाज़ का सलाम फेरते थे तो मैं किसी को बाद की दोनों रकअतें मस्जिद के अन्दर पढ़ते नहीं देखा था सब लोग [illegible] से जल्द मस्जिद के दरवाज़े की तरफ़ जाते और अपने अपने घर में पहुंच कर यह दो रकअतें अदा करते थे।

नमाज पंचगाना के फ़ज़ाइल:

एक तमसील

अबू सलमा ने हज़रत अबू हुरैरह [illegible] रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ग़ौर करो! अगर तुम में [illegible] दरवाज़े पर नहर जारी हो और वह रोज़ाना उसमें पांच बार गुस्ल करे तो क्या उसके बदन पर कुछ [illegible] बाक़ी रहेगा, सहाबा कराम ने अर्ज़ किया! नहीं, हुज़ूर [illegible] फ़रमाया नमाज़े पंजगाना का भी यही हाल है। अल्लाह उनके ज़रिये गुनाहों को मिटा देता [illegible] बू सअ़लबा क़रतबी का बयान है कि मैंने हज़रत उमर ख़त्ताब से सुना कि आप फ़रमा रहे थे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोग रात भर जलते हैं जब सुबह की नमाज़ [illegible] लेते हैं तो नमाज़ से पहले के जलाने वाले गुनाहों को वह नमाज़ धो डालती है फिर जब जुहर की नमाज़ पढ़ते हैं तो यह नमाज़ उस वक़्त से पहले के जलाने वाले गुनाहों को धो डालती है इसी तरह जब अस्र की नमाज़ पढ़ते हैं तो यह नमाज़ इससे पहले के गुनाहों को धो डालती है यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी तरह पांचों नामज़ों को बयान फ़रमाया।

हज़रत उसमान के आज़ाद कर्दा गुलाम हारिस का बयान है कि एक दिन हज़रत उसमान ने मज़ीद पानी वुज़ू के लिए तलब फ़रमाया और वुज़ू किया और इरशाद किया कि मैंने इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वुज़ू करते देखा था, जिसने मेरे वुज़ू की तरह वुज़ू किया और खड़े होकर जुहर की नमाज़ अदा की उसके फ़ज्र से लेकर जुहर तक तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे फिर जिसने मग़रिब की नमाज़ पढ़ी उसके अस्र से मग़रिब तक के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे इसके बाद जिसने इशा की नमाज़ अदा की उसके मग़रिब से इशा तक के तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे फिर मुमकिन है कि वह बिस्तर पर तमाम रात लेटा रहे

लेकिन जब सूबह को उठ कर उसने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ ली तो इशा से फ़ज्र तक के तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। बेशक नेकियां बुराईयों को दूर कर देती हैं। लोगों ने अर्ज़ किया यह तो नेकियां हैं और बाक़ियाते सालिहात किस को कहते हैं, आपने फ़रमायाः सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर वला हौला वला कुव्व त इल्ला बिल्लाह।

नमाज़ के औसाफ़

इमाम जाफ़र बिन मोहम्मद ने बरिवायत अपने जद्दे मोहतरम बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने फ़रमायाः नमाज़ रब की ख़ुशनूदी, मलाईका की मोहब्बत, अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत, मारफ़त का नूर, ईमान की असल अल्लाह और बन्दे के माबैन शफ़ी, नमाज़ी की क़ब्र का चिराग़, क़ब्र में उसके पहलू के लिए बिस्तर, मुनकर नकीर के सवाल का जवाब और क़यामत तक के लिए क़ब्र के अन्दर एक ग़मगुसार दोस्त की मानिन्द है।

जब क़यामत का दिन होगा तो नमाज़ नमाज़ी के ऊपर साया फ़गन होगी, उसके सर का ताज होगी, उसके बदन का लिबास और उसको [illegible] दिखाने के लिए नूर बन जायेगी, यह नूर नमाज़ी के आगे रवां दवां होगा, नमाज़ नमाज़ी और [illegible]ज़ख़ के दर्मियान एक आड़ बन जायेगी, अल्लाह तआला के हुज़ूर में मोमिनों के लिए हुज्जत होगी, मीज़ान को भारी [illegible]रेगी पुल सिरात से गुज़रने का वासता बन जाएगी, जन्नत की कलीद होगी, इसलिए [illegible] नमाज़ में तसबीह भी है और तहमीद भी, तक़दीस भी है और ताज़ीम भी, इस[illegible]किरत भी है और दुआ भी, ग़र्ज़कि तमाम आमाल से अफ़ज़ल वक़्त पर अदा की जाने वाली नमाज़ है।

नमाज़ दीन का सुतून है

हज़रत इब्ने उमर फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुद सुना कि [illegible]ल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे पांचों नमाज़ें दीन का सुतून हैं [illegible]लाह तआला बग़ैर नमाज़ के दीन को क़बूल नहीं फ़रमायेगा।

हज़रत अनस बि[illegible]लिक ने फ़रमाया एक शख़्स ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ [illegible]या या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर कितनी नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं? हुज़ू[illegible] फ़रमाया पांच नमाज़ें! उस शख़्स ने अर्ज़ किया, क्या इनसे अव्वल या बाद को कुछ और भी है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं जिन से पहले या बाद को और कुछ नहीं है, उस शख़्स ने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि मैं इस से न कम करुंगा न ज़्यादा, आप ने फ़रमाया अगर इस शख़्स ने सच कहा है तो यह जन्नत में जाएगा।

क़यामत में बन्दे से सबसे पहले नमाज़ का सवाल होगा

हज़रत तमीम दारी ने फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़यामत के दिन बन्दे से सबसे पहले अव्वल नमाज़ों का सवाल होगा, अगर उस की नमाज़ें पूरी होईं तो पूरी लिखी जायेंगी अगर पूरी न हुईं तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमायेगा मेरे बन्दे के नवाफ़िल देखो अगर वह तुम को मिल जायें तो जो कुछ (फ़र्ज़) इसने खोये हैं उसको उन (नवाफ़िल) से पूरा कर दो। हज़रत अनस बिन हकम खुब्बी से रिवायत है कि [illegible]

से हज़रत अबू हुरैरह ने कहा कि तुम जब अपने घर वालों के पास जाओं तो उन से कह देना कि अबू हुरैरह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना था कि हुजूर वाला फ़रमा रहे थे क़यामत के दिन बन्दे से सबसे अव्वल फ़र्ज़ नमाज़ का हिसाब होगा अगर उसने पूरी कर ली होगी तो फ़ब्बेहा वरना अगर उसके पास नवाफ़िल होंगे तो यह कमी उन से पूरी की जाएगी और तमाम आमाल का हिसाब इसी तरह किया जाएगा।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सबसे पहले बन्दे की नमाज़ का हिसाब होगा और सब से पहले इस उम्मत (मोहम्मदी) पर अल्लाह ने नमाज़ ही फ़र्ज़ की है।

मस्जिद को जाना, नमाज़ बाजमाअत

अदा करना और नमाज़ में खुजूअ़ खुशूअ़

मस्जिद में जाने की फ़ज़ीलत औ जमाअत

नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह स[illegible]ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जमाअत की नमाज़ और तन्हा नमा[illegible] में सत्ताईस द[illegible] का फ़र्क है। हज़रत अबू हुरैरह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि [illegible]ल्लम ने इरशाद फ़रमाया जब बन्दा वुजू करके मस्जिद को जाता है तो उसके हर [illegible]क क़दम पर अल्लाह [illegible]आला एक नेकी लिखता है और एक गु[illegible]ाह मिटा[illegible] और उ[illegible] एक दर्जा बलन्द [illegible]रमाता है और जिस तरह मुद्दत दराज़ के सफ़र [illegible] कोई मुसाफ़िर जब घर वापस [illegible]ता है [illegible] उसके घर वाले खुश होते हैं उसी तरह उसके मस्[illegible]द में आने [illegible] अल्लाह [illegible]आला [illegible] है।

अबू उसमान [illegible]दी से [illegible]रवी है कि हज़रत सलमान ने फ़र[illegible] कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इ[illegible]रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है जो शख़्स अपने घर में अच्छी तरह वुजू करके मेरे किसी घर (मस्जिद) में मेरी मुलाक़ात के लिए आता है तो मैं उसकी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा कर देता हूं इ[illegible] जब मुलाक़ात को कोई आये तो आने वाले की ख़ातिर करनी वाजिब है।

सालिम बिन अब्दुल्लाह ने बरिवायत हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर का यह क़ौल नक़्ल किया है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम के पास आये और कहा जो लोग रात की तारीकी में पैदल चल कर मस्जिद में पहुंचते हैं उनको क़यामत के दिन नूरे कामिल की बशारत दे दीजिये। हज़रत अबू दरदा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स रात के अंधेरे में पैदल चल कर मस्जिदों में आता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको नूर अता फ़रमाएगा।

हज़रत अबु सईद खुदरी का क़ौल है कि मैंने खुद सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमा रहे थे कि बाजमाअत नमाज़ को तन्हा नमाज़ पर पच्चीस दर्जा फ़ज़ीलत हासिल है। नाफ़ेअ ने हज़रत इब्ने उमर से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि [illegible] नमाज़ और तन्हा नमाज़ में 27 दर्जा का फ़र्क़ है। (फ़ज़ीलत में)

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया ऐ असमान इब्ने मज़ऊन जिस ने सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी उसके लिए यह नमाज़ क़बूले हज और क़बूले उमरा के बराबर हो जाती है। ऐ उसमान जिसने जुहर की नमाज़ जमाअत से पढ़ी उसको पच्चीस नमाज़ों का सवाब है और उसके सत्तर दर्जे जन्नत में बलन्द होगे। ऐ उसमान जिसने असर की नमाज़ बाजमाअत पढ़ी फिर गुरुबे आफ़ताब तक ज़िक्रे इलाही में मसरुफ़ रहा तो गोया उसने औलादे इस्माईल से बारह हज़ार गुलामों को आज़ाद किया और जिसने मग़रिब की बाजमाअत नमाज़ पढ़ी उसके लिए पच्चीस नमाज़ों का सवाब है और उसके साथ जन्नते अदन में उसके सत्तर दर्जे बलन्द होंगे और ऐ उस्मान! जिसने इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़ी गोया उसने शबे क़द्र में इबादत की।

मस्जिद में दाख़िल होना

मस्जिद में आये तो अल्लाह तआला से ख़ौफ़ खाता और डरता हुआ खुजूअ व खुशूअ के साथ आए, यह मुसतहब है, संजीदगी और ब्रर्दबारी नुमायां हो, मस्जिद में आने से पहले दुनिया के जिन झमेलों और बखेड़ों में उलझा था उनको छोड़ कर हुजूरे खुदावन्दी में हाजिरी पर ग़ौर करता हुआ आए और अदब के साथ आए, सवाब की रग़बत पर अज़ाब का ख़ौफ़ तारी हो, आजिज़ी, इंकेसारी और फ़रोतनी नुमायां हो, खुदपसन्दी, गुरुर और तकब्बुर न हो, खुद बीनी और खुदआराई मौजूद न हो सिर्फ़ ख़ानए खुदा की तरफ़ तवज्जोह करने की निस्बत हो वह ख़ानए खुदा जिस की अज़मत को बरक़रार रखने और वहां ज़िक्रे खुदावन्दी करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है।

घरों में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनमें अल्लाह को याद किया जाए और उसका नाम बलन्द हो जहां कुछ ऐसे लोग सुबह व शाम उसकी तस्बीह बयान करते हैं जिनको तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं कर पाते।

पस जितनी नमाज़ जमाअत के साथ मिल जाए और जितनी फ़ौत हो गई उसको लौटा ले। हज़रत अबू हुरैरह से मरवी हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर नमाज़ हो रही हो और कोई आए तो आहिस्तगी से आए औ जितनी नमाज़ (बाजमाअत) मिल जाए पढ़ ले जितनी पहली हो चुकी हो उसको लौटा कर अदा कर ले। इसी हदीस के दूसरे अल्फ़ाज़ हैं इत्मिनाना और वक़ार से चल कर आंए, बन्दे के लिए यह भी ज़रुरी है कि अपनी इबादत की पाबन्दी और हमेशा अदा करने पर न इतराए, यह खुद बीनी अल्लाह तआला की नज़रों से गिरा देती है और कुर्बे खुदावन्दी से महरुमी का बाइस बनती है। और इंसान अपनी असल हालत के मुशाहदा से महरुम रहता है, नूरे बसीरत ज़ाइल हो जाता है, इबादत से जो लज़्ज़त हासिल होती है उसका एहसास मिट जाता है और मारफ़त की सफ़ाई उस से मुकद्दर और धुंदली पड़ जाती है उसके बाइस अल्लाह तआला बन्दे के नामए आमाल को उस के मुंह पर मार देता है। एक रिवायत में आया है कि तकब्बुर करने वाले जब तक तौबा न करें अल्लाह तआला के यहां उनके अमल क़बूल नहीं होते।

हज़रत इब्राहीम का एक वाक़िआ

हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ने एक दफ़ा तमाम रात इबादत

की जब सुबह होई तो शब बेदारी पर उनको हैरत और ताज्जुब हुआ वह खुद बखुद कहने लगे कि कितना अच्छा रब है और इब्राहीम भी कितना अच्छा बन्दा है (उनको अपनी इबादत पर नाज़ औ तबख़तुर हुआ) जब सुबह नाश्ता का वक़्त आया तो कोई शख़्स शरीके तआम होने के लिए नहीं मिला आप बग़ैर मेहमान के खाना नहीं खाते थे मजबूरन वह सरे राह बैठ गए कि कोई राहगीर मिला जाए और साथ में खाले, इतने में दो फ़रिश्ते आसमान से उतरे और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरफ़ बढ़े आपने उनको मुसाफ़िर समझ कर खाने की दावत दी उन फ़रिश्तों ने दावत क़बूल कर ली आपने फ़रमाया इस क़रीब के बाग़ में चलो वहां चश्मा भी है हम सब वहीं खाना खायेंगं चुनांचे सब के सब बाग़ में पहुंचे, देखा तो चश्मा खुश्क पड़ा है, हज़रत इब्राहीम को यह देख कर बहुत दुख हुआ और क़ौल के मुताबिक़ वहां पानी न होने पर मुसाफ़िरों से शर्मिन्दगी हुई फ़रिश्तों ने कहा ऐ इब्राहीम! अपने रब से दुआ कीजिए कि वह दोबारा चश्मा जारी कर दे हज़रत इब्राहीम ने दुआ की लेकिन कुछ जवाब नहीं मिला आप को इससे और ज़्यादा तकलीफ़ हुई तब आप ने फ़रिश्तों से कहा कि तुम दुआ करो चुनांचे एक फ़रिश्ते ने दुआ की फ़ौरन पानी का चश्मा जारी हो गया फिर दुसरे ने दुआ की तो चश्मा का पानी उबल कर सामने बहने लगा, आख़िर कार उन्होंने बताया कि हम अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं और आपको जो शब बेदारी और रात की इबादत पर कुछ गुरुर पैदा हो गया उसकी वजह से अल्लाह तआला ने आपकी दुआ क़बूल नहीं फ़रमाई। ग़ौर करो कि जब अल्लाह तआला ने अपने ख़लील से यह मामला किया तो दूसरों का क्या हक़ीक़त है पस बन्दा को यक़ीन रखना चाहिए कि जो कुछ इबादत व ताअत वह कर रहा है, सब कुछ तौफ़ीके इलाही है उसका फ़ज़्ल व करम उसकी मेहरबानी है।

पस अल्लाह तआला के हुज़ूर में जब खड़ा हो तो ख़ुज़ू व खुशूअ, एहतराम व अदब और इज्ज़ के इज़हार के साथ खड़ा हो, इस तरह कि वह अल्लाह तआला को अपनी आंखों से देख रहा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह की इबादत इस तरह किया करो गोया कि तुम देख रहे हो फिर अगर तुम उसको नहीं देखते तो वह तो तुम को देख ही रहा है।

हज़रत ईसा से ख़िताब

हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर वही नाज़िल फ़रमाई कि ऐ ईसा! जब तुम मेरे सामने क़याम करो तो इस तरह करो कि तुम डरते कांपते और अपने आप को ज़लील समझते हुए हो और अपने नफ़्स को बुरा कहते हुए कि नफ़्स इस क़ाबिल है कि इसको ख़्वार किया जाए और अगर तुम मुझसे दुआ करो तो इस हालत में करो तुम्हारे आज़ा लर्ज़िश में हों, (तुम्हारा हर उज़्व कांप रहा हो) इसी तरह एक हदीस में आया है कि ऐसी ही वही अल्लाह तआला ने हज़रत मुसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाई थी।

बाज़ बुज़ुर्गाने सल्फ़ की नमाज़ें

एक रिवायत में है कि इब्ने सिरीन जब नमाज़ को खड़े हाते तो ख़शीयते इलाही से उनके चहरे का ख़ून खुश्क हो जाता था। मुस्लिम बिन यसार जब नमाज़ शुरु करते थे तो फिर उनकी

महवियत का यह आलम होता था और ख़शीयते इलाही का इस क़दर ग़लबा होता था कि कोई आवाज़ उनके कानों में नहीं पहुंचती थी। आमिर बिन क़ैस का बयान है कि नमाज़ की हालत में दुनिया क बारे में किसी क़िस्म का ख़याल और किसी मामला में ग़ौर व फ़िक्र करने से दोनों रानों के दर्मियान ख़ुंजर घोंपना मेरे ख़याल में ज़्यादा बेहतर है। हज़रत सअद बिन मआज़ ने फ़रमाया मैं कभी ऐसी नमाज़ नहीं पढ़ता जिस को ख़त्म करने से पहले दुनिया का कोई ख़्याल मेरे दिल में आया हो।

शैख़ मुजाहिद फ़रमाते हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर नमाज़ के लिए खड़े होते तो ऐसे हमातन महव हो जाते गोया लकड़ी का एक सुतून खड़ा है। वहब बिन मुनब्बेह जब नमाज़ को खड़े होते तो मालूम होता है कि शायद वह जहन्नम को अपनी नज़रों के सामने देख रहे हैं। अतबा जो एक गुलाम थे जब नमाज़ का खड़े होते तो सर्दी क मौसम में (ख़ौफ़े इलाही से) उनके जिस्म से पसीना आ जाता, लोगों ने वजह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया कि अल्लाह के सामने मुझे अपने गुनाहों पर शर्म आती है। एक बार मुस्लिम बिन यसार एक हुजरे में नमाज़ पढ़ रहे थे अचानक मकान में आग लग गई, मोहल्ले के लोग घबरा कर अपने अपने घरों से निकल आए और आग बुझा दी लेकिन मुस्लिम को इस वाक़ेअ की मुतलक़ खबर भी न हुई और उस वक़्त आप को यह तमाम बातें मालूम हुई जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, आप ही का एक वाक़िआ यह कि एक बार आप मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे मस्जिद का एक सुतून आप पर गिर पड़ा, सुतून गिरने की ऐसी आवाज़ हुई कि बाज़ार के लोग घबरा कर दौड़े आए मगर आप को इस हंगामा का अहसास भी न हुआ।

अम्मार बिन जुबैर नमाज़ में मशगूल थे, आप की जूतियां सामने रखी थीं उनमें नया तिसमा पड़ा था, नमाज़ में आप की नज़र उस नए तिसमा पर पड़ गई, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर जूती को फेंक दिया और वह फिर जब तक ज़िन्दा रहे जूती नहीं पहनी। रबीअ बिन ख़शीम नफ़्ल नमाज़ पढ़ रहे थे, उनके सामने उनका बीस हज़ार दिरहम कीमत का घोड़ा बंधा था, कोई चोर आया और घोड़ा खोल कर ले गया जब इस चोरी का हाल लोगों को मालूम हुआ तो वह इज़हारे हमदर्दी के लिए आप के पास आए, आप ने फ़रमाया, मैंने चोर को घोड़ा खोलते देख लिया था लेकिन मैं तो उस वक़्त एक ऐसे काम में मशगूल था जो मुझे घोड़े से ज़्यादा अज़ीज़ था (इस लिए मैं चोर की तरफ़ मशगूल नहीं हुआ) कुछ दिन के बाद वही घोड़ा खुद बख़ुद आप के पास आ गया।

एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुर्ख़ धारी की सियाह चादर पहने नमाज़ अदा फ़रमा रहे थे जब आप ने सलाम फेरा तो फ़रमाया इस सुर्ख़ धारी ने मुझे नमाज़ की तरफ़ से हटा कर दूसरी तरफ़ लगा दिया। (मेरा ध्यान बटा दिया)।

ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ करने वालों की तारीफ़

अल्लाह तआला ने उन बन्दों की जो नमाज़ में ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ करते हैं इस तरह तारीफ़ फ़रमाई है। वह लोग जो अपनी नमाज़ों में ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ करते हैं।

ज़हरी फ़रमाते हैं कि ख़ुशूअ के मानी हैं नमाज़ में दिल का क़ायम रखना, बाज़ ने इस के मानी कहे हैं नमाज़ में इनहिमाक व मशगूलियत की वजह से दायें बायें वालों से भी बेख़बर होना। हुज़ूर वाला का इरशाद है कि नमाज़ तो हक़ीक़त में ख़ुद एक आला मशग़ला है।

नमाज़ों की हिफ़ाज़त और मदावमत

अव्वल वक़्त में नमाज़ की अदाएगी

आमश ने बरिवायत शफ़ीक़ बिन सलमा इब्ने मसऊद का यह क़ौल नक़्ल किया है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अव्वल वक़्त में नमाज़ अदा कर लेता है ख़ुद उसकी नमाज़ जगमगाती हुई और ताबां बन कर आसमान पर उठा ली जाती है और अर्श पर पहुंच जाती है और वह क़यामत तक नमाज़ी के लिए इस्तिग़फ़ार करती रहती है और कहती है कि जैसी हिफ़ाज़त तूने मेरी की है अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त भी उसी तरह करे। और जब बन्दा वक़्त के ख़िलाफ़ नमाज़ पढ़ता है तो उसकी नमाज़ में नूर नहीं होता जब वह आसमान की तरफ़ बढ़ती है तो एक फटे हुये कपड़े की तरह लपेट कर उसके मुंह पर मार दी जाती है, उस वक़्त नमाज़ कहती है अल्लाह तआ़ला तुझे भी इसी तरह ज़ाया करे जिस तरह तुने मुझे ज़ाया किया है।

हज़रत एबाद बिन सामित फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने उम्दा और मुकम्मल वज़ू किया कामिल क़िरअत और सही रूकूअ व सुजूद किया तो नमाज़ कहती है अल्लाह तआ़ला तेरी हिफ़ाज़त इसी तरह करे जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाज़त की इस के बाद उसको असमान पर उठा लिया जाता है उसमें नूरानियत होती है और वह रौशन होती है उसके लिए कि आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और वह बारगाहे इलाही तक पहुंच जाती है और अपने नमाज़ी के लिए सिफ़ारिश करती है और अगर नमाज़ी ने रूकूअ व सुजूद अच्छी तरह अदा नहीं किये तो नमाज़ कहती है जिस तरह तूने मुझे बरबाद किया अल्लाह तआ़ला तुझे भी उसी तरह बरबाद करे फिर जब उसको ऊपर ले जाया जाता है तो नूर के बजाये उस पर तारीकी होती है और जब वह आसमान तक पहुंचती है तो आसमान के दरवाज़े उसके लिए बन्द कर दिए जाते हैं और पुराने कपड़े की तरह लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है।

हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि कौन सा अमल सबसे अच्छा है फ़रमाया वक़्त पर नमाज़ें अदा करना, वालिदैन की इताअत करना और अल्लाह की राह में जिहाद। इब्राहीम बिन अबी महज़ूर मोअज़्ज़िन ने अपने वालिद से अपने दादा का यह क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अव्वल वक़्त नमाज़ की अदाएगी अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी का ज़रिया है और दर्मियानी वक़्त की नमाज़ अल्लाह तआ़ला के रहम के हुसूल का ज़रिया है और आख़िर वक़्त की नमाज़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से माफ़ी का ज़रिया है अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

वक़्त टाल कर नमाज़ पढ़ना

उन नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है जो अपनी नमाज़ों से ग़ाफ़िल रहते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम नमाज़ियों की ख़राबी की वजह यह कि उन्होंने अपनी नमाज़ों को उनके औक़ात टाल कर पढ़ा, इस से मुराद बिलकुल छोड़ देना नहीं है। हज़रत सअद ने फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुम अन सलातेमि साहून का मतलब पूछा तो फ़रमाया वह वक़्त से देर करके नमाज़ पढ़ते हैं।

हज़रत बरा बिन आज़िब ने अज़ाउस्सलाता वत्तबउश्शहवाते फ़सौफ़ा युलकूना गैया में लफ़्ज़ गैया के बारे में फ़रमाया कि गैया जहन्नम की एक वादी है। हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि इस में वही लोग जाएंगे जिन्होंने अपनी नमाज़ों के औक़ात खो दिए हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ने फ़रमाया कि एक रोज़ रसूलुल्लाह ने नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाया और इरशाद किया कि जो नमाज़ की निगहदाश्त करेगा उसके लिए नमाज़, नूर और हुज्जत और क़यामत के दिन नजात का ज़रीया होगी और जो इसकी निगहदाश्त नहीं करेगा उसके लिए नमाज़ न नूर होगी और न हुज्जत, न दोज़ख़ से नजात का ज़रीया होगी, वह दोज़ख़ के अन्दर फ़िरऔन व हामान और अबी बिन ख़लफ़ के साथ होगा।

हारिस़ ने हज़रत अली बिन अबी तालिब का क़ौल नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स नमाज़ को हक़ीर समझेगा अल्लाह तआला उस को पन्द्रह सज़ायें देगा, छः क़िस्म के अज़ाब मरने से पहले, तीन मरते वक़्त, तीन क़ब्र में और तीन क़ब्र से निकलते वक़्त।

छः दुनियावी अज़ाब

छ दुनियावी अज़ाबों में पहला अज़ाब यह है, गाफ़ि[illegible] नमाज़ी को [illegible]लेही[illegible] की फ़ेहरिस्त से ख़ारिज कर दिया जाएगा (2) उससे ज़िन्दगी की बरक[illegible] दूर कर दी[illegible]एगी [illegible]) उसके रिज़्क़ से बरकत दूर हो जाएगी (4) उसका कोई नेक अमल क़[illegible]हीं किया जाता (5) उस की दुआ क़बूल नहीं होती (6) वह नेकों की दुआओं से महरूम कर दिया जात[illegible]है।

मरते वक़्त का अज़[illegible]

ऐसे नमाज़ी को मरते वक़्त जो तीन अज़ाब [illegible] हैं [illegible]ह हैं (1) वह प्यासा मरता अगरचे उसके मुंह में सात दरिया [illegible]ट दिये ज[illegible] (2) उस[illegible]त अ[illegible]क होगी (तौबा की मोहलत ही नहीं मिलेगी) (3) उसके कांधों पर दुनियावी लोहे, लकड़ी और पत्थरों का बोझ डाला जाएगा जिस से वह बोझल [illegible]रगा।

क़ब्र के तीन अज़ाब

क़ब्र के तीन अज़ाब [illegible] हैं कि (1) क़ब्र उस पर तंग कर दी जाएगी (2) क़ब्र में ज़बरदस्त अंधेरा होगा (3) मुनकर नकीर के सवालों का जवाब नहीं दे सकेगा।

क़ब्र से निकलने पर तीन अज़ाब

क़ब्र से निकलने पर यह तीन अज़ाब होंगे (1) अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक होगा (2) उससे हिसाब बहुत ज़्यादा सख़्त होगा (3) अल्लाह तआला के दरबार से उसकी वापसी दोज़ख़ की तरफ़ होगी (अगर अल्लाह माफ़ फ़रमा दे तो ख़ैर)

नमाज़ की अज़मत और शान

नमाज़ की बुज़ुर्गी और इस की अज़मत व शान बहुत अज़ीम है, इसके तमाम अहकाम भी अज़मत वाले हैं। अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुसूसियत के

साथ नमाज़ ही का हुक्म दिया, नबूव्वत की पहली वही में इसका हुक्म दिया है इस के बाद हर अमल से पहले नमाज़ के बारे में हुक्म दिया इस सिलसिला में बकसरत आयात हैं। एक आयत में इरशाद फ़रमाया: जो किताब बज़रीये वही आप के पास भेजी गई है उसकी तिलावत कीजिये और नमाज़ क़ायम कीजिये। दूसरी आयत में फ़रमाया: बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है। एक और जगह इरशाद फ़रमाया:

अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिये और खुद भी नमाज़ की पाबन्दी कीजिये हम तुम से रिज़्क़ के तालिब नहीं, रिज़्क़ तो हम ही तुम को देंगे।

अल्लाह तआ़ला ने तमाम मुसलामानों को मुख़ातिब फ़रमा कर तमाम ताअ़तों में सब्र और सलात से मदद लेने का हुक्म फ़रमाया है:

मुसलमानो! सब्र और नमाज़ के ज़रीये अल्लाह से मदद मांगो, बिला शुबहा अल्लाह की मदद सब्र करने वालों के साथ है। एक और मक़ाम पर इस तरह इरशाद फ़रमाया:

हमने वही के ज़रीये उनको अच्छाईयां करने, नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने का हुक्म दिया।

इस आयत में अव्वलन अल्लाह ने मुजमिलन लफ़्ज़ ख़ैरात फ़रमाया जिसके तहत तमाम अच्छाईयां और नेकियां करना और गुनाहों से बचना आ जाता है फिर उससे अलग नमाज़ क़ायम करने का और पढ़ने का खुसूसियत के साथ ज़िक्र किया।

नमाज़ की अव्वलियत और अहमियत

रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुनिया से तशरीफ़ ले जाते वक़्त भी अपनी उम्मत को नमाज़ की वसीयत फ़रमाई थी और इरशाद किया था अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, नमाज़ के मामला में और बांदी गुलामों के मामला में हदीस में वारिद है कि यह नबी की आख़िर वसीयत और दुनिया से रुखसत होते वक़्त अपनी उम्मत को आख़िरी हुक्म यही हुआ था। पस रसूलुल्लाह और आपकी उम्मत पर भी सबसे पहला फ़र्ज़ है कि सबसे आख़िरी वसीयत हुज़ूरे वाला की यही थी, वह इस्लामी अमल जिस को बन्दा साथ ले जाएगा यही है और क़यामत के दिन जिस अमल की सबसे पहले पुरसिशस होगी वह भी यही है, नमाज़ इस्लाम का सुतून है अगर यह ज़ाया हो गई तो न दीन रहा और न इस्लाम।

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारे दीन से जो चीज़ सबसे पहले गुम होगी वह अमानत है और दीन की आख़िरी गुम होने वाली चीज़ नमाज़ है। बिला शुबहा लोग नमाज़ें पढ़ेंगे लेकिन नमाज़ में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा (उनकी नमाज़ें कामिल नहीं होंगी)

नमाज़ की फ़रज़ीयत के मुनकिर का हुक्म

अगर कोई शख़्स नमाज़ की फ़रज़ीयत का मुनकिर है और नमाज़ तर्क करे तो काफ़िर हो जाता है और उस का क़त्ल वाजिब हो जाता है (इमाम अहमद के मज़हब में) अगर फ़रज़ीयत का अक़ीदा रखता है लेकिन बेपरवाई और सुस्ती के बाइस नमाज़ छोड़ दी है। नमाज़ के लिए उसको बुलाया गया मगर उसने नहीं पढ़ी और उस नमाज़ के बाद वाली नमाज़ का वक़्त भी तंग हो गया उस वक़्त यह शख़्स भी काफ़िर हो जाएगा और दोनों सूरतों में उस पर मुरतद का हुक्म होगा तीन रोज़ तक उससे तौबा कराई जाएगी अगर वह तौबा न करेगा तो उसको तलवार

से क़त्ल कर दीया जाएगा उसका माल ज़ब्त करके बैतुल माल में दाख़िल कर दिया जायेगा और उसकी जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी जाएगी न मुस्लिम क़ब्रिस्तान में उसको दफ़्न किया जाएगा।

बेनमाज़ी का शरई हुक्म:

इमाम अहमद की दूसरी रिवायत में है कि बेनमाज़ी को जिसने सुस्ती और ग़फ़लत की बिना पर नमाज़ नहीं पढ़ी है फ़ौरन क़त्ल करना वाजिब नहीं है जब तक वह तीन नमाज़ों को तर्क करके चौथी नमाज़ का वक़्त भी उसने तंग कर दिया तो ऐसे शख़्स को शादी शुदा ज़ानी की तरह हद्दे शरई में क़त्ल कर दिया जाएगा मगर इसका हुक्म मुसलमानों के मुर्दों जैसा होगा यानी उसका माल उसके वारिसों में तक़सीम किया जाएगा।

इमाम अबू हनीफ़ा फ़रमाते हैं कि उसको क़त्ल नहीं बल्कि क़ैद किया जाएगा और उस वक़्त तक क़ैद में रखा जाएगा जब तक वह तौबा करके नमाज़ न पढ़े वर्ना तमाम उम्र क़ैद में रहेगा और क़ैद ही में मर जाएगा। इमाम शाफ़ई फ़रमाते हैं वह काफ़िर नहीं हो[illegible]ा मगर हद्दे शरई में उसको तलवार से क़त्ल किया जाएगा। ऐसे शख़[illegible] का काफ़िर होने का [illegible]बूत उन आयात व अहादीस से मिलता है जो ऊपर मज़कूर हो चुकी [illegible]हां मज़ीद ताईदी रि[illegible]ात और पेश की जाती है।

तरके सलात के सिलासिल में मज़ीद रिवाया[illegible]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्ला[illegible] सल्लल्[illegible]हो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदमी के इ[illegible]लाम और [illegible] व शि[illegible]र्क के दर्मियान तरके [illegible]लात के सिवा कोई और फ़र्क़ नहीं है। [illegible]ब्दुल्लाह [illegible]न ज़ैद [illegible]पने [illegible]लिद की [illegible]ायत बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अले[illegible] वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया [illegible] उन (काफ़िरों) के दर्मियान तरके सलात (हद्दे फ़ासि[illegible]) है जि[illegible] नमाज़ [illegible] की वह [illegible]र हो[illegible]या।

इमाम जाफ़र [illegible]िन मो[illegible]हम्मद ने अपने वालिद की रिवाय[illegible] बयान की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व[illegible] ने फ़रमाया वह सजदे में ठोंगे मार रहा है यानी सजदे में पेशानी रख कर फ़ौरन उठा लेता है [illegible] फिर सजदे में सर रख देता है (उसका बैठना ऐतदाल पर है और न क़ाइदा से सज[illegible] है) हुज़ूर ने फ़रमाया अगर यह इस हालत में मर जाए तो मोहम्मद के दीन पर नहीं मरेगा। अतिया औनी ने कहा कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी का क़ौल बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी ने क़सदन नमाज़ तर्क की तो उसका नाम दोज़ख़ियों के साथ दोज़ख़ के दरवाज़े पर लिखा जाएगा (जो उसमें दाख़िल होंगे)

हज़रत अनस बिन मालिक रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़बरदार कोई शख़्स इशा की नमाज पढ़े बग़ैर न सोए क्योंकि ऐसे शख़्स से (जो नमाज़ पढ़े बग़ैर सो गया) फ़रिश्ते कहते हैं तेरी आंखों से नींद का ख़ुमार न जाए और तेरी आंखों को ठंडक नसीब न हो अल्लाह तुझे दोज़ख़ और जन्नत के दर्मियान रोक दे जैसा कि तूने हम को रोके रखा है।

बाब 20

नमाज़ के आदाब, मुस्तहब्बात, नमाज़ के मकरुहात, इमामत, इमाम के औसाफ़, मुक़्तदी और मोअज़्ज़िन आदाबे नमाज़

पैंतालीस मकरुह बातें

हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि सहाबा करा[illegible] पैंतालीस बातों को म[illegible]ह जानते थे, उनमें
से कुछ फ़र्ज़ नमाज़ों से मुताल्लिक़ हैं जिन को क[illegible] बग़ैर ज़रुरत करन[illegible] ममनूअ़ व मकरुह
है और वह यह हैं (1) क़सदन खखारना (2) किसी त[illegible]फ़ मशग़ूल ह[illegible] (3) [illegible]सन छींकना (4)
आसमान की तरफ़ मुंह उठाना (हदीस शरीफ़ में आय[illegible] है कि रसूलुल्[illegible]ह सल्लल्लाहो अलैहि
वसल्लम आसमान की तरफ़ निगाह फ़रमाया करते थे ल[illegible] जब आयते करीमा वल्लज़ीना हुम
फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि [illegible]सल्लम ने सरे अक़दस
झुका लिया) (5[illegible] अपनी [illegible] गाह से [illegible]रों क[illegible] हटाना (6) [illegible]ड़ी को सीने से मिलाना (7) कपड़े
ठीक करना (8[illegible] अंगड़ाई लेना (9) लम्बे ल[illegible]बे सा[illegible] लेना ([illegible] आंखें बन्द करना (11) दायें बायें
कंखियों से देखन[illegible] (हज़रत उ[illegible]बा बिन आ[illegible]मिर ने [illegible]मा अल्लज़ीना हुम अला सलातेहिम
दाएमून) की तफ़सी[illegible] में फ़र[illegible]माया कि दा[illegible]मून से मुराद वह लोग [illegible]ो नमाज़ पढ़ते में इधर उधर
नहीं देखते। हज़रत [illegible] फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से
नमाज़ की हालत में इधर उधर तवज्जोह करने के बारे में दरयाफ़्त किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया
यह शैतानी झपट है जो [illegible] को नमाज़ से हटा कर दूसरी तरफ़ ले जाती है। मनकूल है कि
एक दिन तलहा बिन म[illegible]रफ़ अब्दुल जब्बार बिन वाइल के पास आए उस वक़्त वह मजलिस
में बैठे हुए थे तलहा ने उनसे सरगोशी में कुछ बातें कीं फिर चले गए तो अब्दुल जब्बार बिन
वाइल ने कहा कि तुम्हें मालूम है कि तलहा बिन मसरफ़ ने क्या कहा? उन्होंने मुझसे कहा कि
मैंने कल नमाज़ में तुम को इधर उधर तवज्जोह करते देखा था यह मकरुह हैं।

हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया बन्दा जब नमाज़ शुरु करता है तो
अल्लाह तआला उसकी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाता है और वह बन्दा से उस वक़्त तक तवज्जोह
नहीं हटाता जब तक बन्दा ख़ुद अपना मुंह न फेर ले या दायें बायें झाके। एक और हदीस में
आया है कि बन्दा जब तक नमाज़ की हालत में रहता है तीन रहमतें उसके शामिले हाल रहती
हैं एक यह कि आसमान से उसके सर पर नेकियों की बौछार होती रहती है, दूसरे यह कि
फ़रिश्ते नमाज़ी के क़दमों से आसमान तक उसे घेरे में लिये रहते हैं, तीसरे यह कि मुनादी निदा
करता है कि अल्लाह उसकी नमाज़ की गवाही देता है अगर नमाज़ी को यह मालूम होता कि

वह किस की बारगाह में मुनाजात कर रहा है तब वह किसी और तरफ़ कभी तवज्जोह न करता।
इन अहादीस से मालूम हुआ कि नमाज़ की हालत में इधर उधर देखना मकरुह है बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि नमाज़ में किसी और तरफ़ तवज्जोह करने से नमाज़ क़तअ़ हो जाती है क्योंकि इस तरह नमाज़ की बे हुरमती और आदाब की पामाली होती है।

कुत्ते की तरह नमाज़ में बैठना और इमाम की हरकात से पहले हरकत करना, सजदे में दोनों बाहें ज़मीन पर बिछाना, सीना ज़ांनू से मिलाना, सजदे में बग़लों को पहलुओं से मिलाना भी मकरूह है।

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुजूर जब सजदा फ़रमाते थे तो दोनों बाज़ूओं को ख़ूब कुशादा रखते थे इसी तरह सजदा में हाथ की उंगलियां फैला कर अलग अलग रखना भी मना है, मिला कर रखना चाहिए इसी तरह रूकूअ में दोनों हाथों को घुटनों के अलावा कहीं और रखना भी मना है पैर पर पैर रखना भी ममनूअ है तहबन्द या पाएजामा लटकाना, दातों को कुरेदना, एक या दो दाना के बराबर गिज़ा को निगल जाना भी मना है, ज़बान से कुछ निकालना फिर और निगल लेना, फूंक मारना, थूकना भी मना है, सज[illegible] के लिए कंकरियों [illegible] हमवार करना भी ममनूअ है। अर्ज़ पर चलना, तशहहुद के अन्दर साथ[illegible] से बलन्द आवाज़ [illegible]कुछ कहना, दायें बायें खड़े हुए शख़्स को पहचानना, आंख या हाथ से इ[illegible]शारा करना, [illegible]र ले[illegible] या कोई चीज़ हल्क़ से बाहर आ रही हो उसको हल्क़ के अन्दर उता[illegible] खांसना, ना[illegible] सुनु[illegible]ना, कपड़ों को देखना, पेशानी से मिट्टी साफ़ करना और सज[illegible] के मक़ा[illegible] झाड़ना [illegible] तमाम बातें मना हैं। अगर इमाम हो तो सलाम फेरने के बा[illegible] महराब में बायें जानि[illegible] रूख़ [illegible]दले बग़ैर बैठा रहना भी मकरुह है। रसू[illegible]ल्लाह [illegible]ल्लाहो अ[illegible] वसल[illegible]म का इरश[illegible] है अल्लाह तआ़ला उस आदमी की नमाज़ की त[illegible]फ़ नज़र भी [illegible]हीं फ़रमात[illegible] जो [illegible] अपने दिल को हाज़िर न रखे।

नमाज़ में दूसर[illegible] चीज़ों [illegible] शग़फ़ [illegible]ना है

हुजूर सल्लल्ला[illegible] [illegible]हि वसल्लम ने एक शख़्स को नमाज़ की हालत में दाढ़ी से खेलते देखा तो फ़रमाया अगर [illegible] के दिल में खुशूअ होता तो उसके आज़ा में भी होता। हसन बसरी ने एक शख़्स को देखा व[illegible] [illegible]यों से खेल रहा है और कहता जाता था इलाही! मेरा निकाह हूरों से करा दे, हसन ब[illegible] ने कहा तू बहुत बुरा ख़िताब करने वाला है तू खेलता भी जाता है निकाह का भी ख़्वास्तगार है। अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह ने हज़रत अब्दुल्लाह का क़ौल बयान किया है कि जो लोग नमाज़ की हालत में नज़रें ऊपर उठाते हैं वह इससे बाज़ आ जायें वर्ना उनकी बीनाई छीन ली जाएगी। हज़रत औज़ाई फ़रमाते हैं कि दो शख़्स नमाज़ में मसरूफ़ होते हैं लेकिन उन दोनों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ होता है, एक दिल की गहराईयों से ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जेह होता है और दूसरा खेल और ग़फ़लत में मुबतला होता है।

नमाज़ का सवाब

सही हदीस में वारिद है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नमाज़ी जिस क़दर नमाज़ में इनहिमाक रखता है उसी के मुताबिक़ नमाज़ का सवाब निस्फ़ हिस्सा से दसवें हिस्सा तक उसको देता है। एक और हदीस में आया है कि किसी नमाज़ी को चार सौ

गुना, किसी को दो सौ गुना, किसी को डेढ़ सौ गुना, किसी को पचास गुना, किसी को सत्ताईस गुना, किसी को दस गुना और किसी को एक ही नमाज़ का सवाब मिलता है। एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि किसी नमाज़ी की चार सौ नमाज़ें होती हैं, किसी नमाज़ी की दो सौ नमाज़ें, किसी कि डेढ़ सौ नमाज़े, किसी को सत्तर नमाज़ें और एक नमाज़ के एवज़ पचास नमाज़ों का सवाब और एक नमाज के एवज़ सत्ताईस नमाज़ों का सवाब और एक नमाज़ के बदले दस नमाज़ों का सवाब और एक नमाज़ के एवज़ सिर्फ़ एक नमाज़ होती है। जिस के लिए चार सो नमाज़ें रखी गई हैं वह शख़्स है जो काबा में इमाम के साथ जमाअत की नमाज़ अदा करता है और तकबीरे ऊला भी क़ज़ा नहीं होती, वह शख़्स जिसके लिए दो सौ नमाज़ें रखी गई हैं वह शख़्स हैं जो नमाज़ के अहकाम जानने के बाद लोगों की इमामत करता है और जो मोअज़्ज़िन है उसके लिए डेढ़ सौ नमाज़ें रखी गई हैं। जो शख़्स मिसवाक करता है जो पूरा वुज़ू करके जामा मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा करता है और तकबीरे तहरीमा भी फ़ौत नहीं होने देता उसके सत्ताइस नमाज़ें रखी गई हैं जो शख़्स जमाअत के साथ बाद को आकर मिलता है (लाहक़ होता है) और उसकी तकबीरे तहरीमा फ़ौत हो जाती है उसके लिए दस नमाज़ों का सवाब है और जो शख़्स तन्हा बग़ैर जमाअत के नमाज़ पढ़ता है उसकी सिर्फ़ एक नमाज़ लिखी जाती है और वह जिस की नमाज़ बिल्कुल नहीं होती वह शख़्स है जो नमाज़ पढ़ता है मगर मुर्ग़ की तरह सजदे में ठोंग मार लेता है, रूकूअ व सुजूद पूरा नहीं करता उसकी नमाज़ उसके मुंह पर पुराने कपड़े की तरह लपेट कर मार दी जाती है और उससे कहा जाता है कि जिस तरह तूने नमाज़ की निगहदाश्त नहीं की उसी तरह अल्लाह तेरी निगहदाश्त नहीं करेगा।

नमाज़ के अव्वलीन आदाब

हर नमाज़ी पर वाजिब है कि पहले नमाज़ की नीयत करे और क़िब्ला रू खड़े होकर ख़ानाए काबा का तसव्वुर करे और सजदे की जगह पर नज़र रखे और यक़ीन करे कि वह अल्लाह तआला के हुज़ूर में खड़ा है और इस में शक व शुबहा न करे कि अल्लाह तआला उसको देख रहा है अल्लाह का यही इरशाद है:

और जब तुम खड़े होते हो और सजदा करने वालों के साथ हरकत करते हो तो अल्लाह तुम को देखता है।

नमाज़ की तरकीब

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह की इबादत इस तरह करो गोया उसको देख रहे हो क्योंकि अगर तुम उसको नहीं देखते तो वह तो बिला शुबहा तुमको देखता है।

फ़र्ज़ नमाज़ की नीयत करे, अदा या क़ज़ा का तअय्युन करना औला है, कानों की लौ या शानों तक हाथ उठाना (इसकी तफ़सील पहली लिखी जा चुकी है) हाथ उठाते वक़्त अपनी उंगलियों को खुला हुआ रखे (यह दोनों रिवायतें इमाम अहमद से मनकूल हैं) इसके बाद तकबीर कहे गोया वह परदा उठा दे जो उसको और अल्लाह के दर्मियान पड़ा था और उस मक़ाम पर

पहुंच जाए जहां दूसरी तरफ़ तवज्जोह करना और किसी दूसरे काम में मशगूल होना किसी तरह जाएज़ नहीं। क्योंकि उस वक़्त बन्दा को यक़ीन होता है मैं उस माबूद के सामने हूं जो मेरी हर एक हरकत को देख रहा है और जो ख़्याल दिल में गुज़रता है उससे वाक़िफ़ है और वह उस राज़ से भी वाक़िफ़ है जो अन्दरूनी परदे में लिपटा हुआ है, पस अपनी सजदा गाह (सजदा करने की जगह) पर नज़र जमाए रहे दायें बायें न देखे और अपने सर को आसमान की तरफ़ न उठाए।

सना पढ़ते वक़्त हुज़ूरे क़ल्ब

जब सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बेहम्देका व तबारकसमोका व तआला जद्दोका व ला इलाहा ग़ैरोका पढ़े तो उस वक़्त यह समझे कि मैं ऐसी अज़ीम हस्ती से मुख़ातिब हूं जो सुनने वाला, क़बूल करने वाला, हर शय को देखने वाला है और बाल बराबर शय भी उससे पोशीदा नहीं है और न किसी हिस्सए जिस्म की हरकत उससे मख़फ़ी पोशीदा है। इसी तरह जब इय्याकानअबदु व इय्याका नसतईन एहदनस सिरातल [illegible]स्तक़ीम (हम तेरी ही [illegible]ादत करते हैं और तुझ ही से मदद के तालिब हैं, इलाही हम को सीधा [illegible]ता दिखा दे) पढ़े तो [illegible]मझे कि क्या कह रहा है और जाने कि वह किस से ख़िताब कर रहा है [illegible] ख़ुजूअ व ख़[illegible] के [illegible]वजूद इस बात का ख़्याल रखे कि कहीं इस चीज में सहव व निसयान न हो जाए [illegible]के लिए खड़ा है और जिसकी तरफ़ मुतवज्जेह है। सूरह फ़ातिहा में ग्यारह तश[illegible]का ख़्याल रखें, अलफ़ाज की ऐसी ग़लती से बचे जिससे मानी में तबदीली आ जाती है क्योंकि सूरह फ़ातिहा की क़िरअत फ़र्ज़ है और यह नमाज़ का एक [illegible] है इस [illegible]र्क से नमाज फ़ासिद हो जाती है। लफ़्ज़ी निगहदाश्त के साथ यह भी समझता रहे कि मैं पुल [illegible]रात [illegible] खड़ा हूं [illegible]स के दायें जानिब जन्नत अपने तमाम सिफ़ात के साथ मौजूद है और बाईं तरफ़ ज[illegible]नी तमाम हौलनाकियों के साथ है। नमाज़ी को समझना चाहिए कि नमाज़ [illegible] के ज़रीये मुझे वह [illegible]ब मिलने वाला है जिस का अल्लाह तआला ने [illegible]रमाया है। बशर्ते कि नमाज़ दुरूस्त हो और समझिये कि इसी के ज़रीये मुझे दोज़ख़ के उ[illegible] अज़ाब से पनाह मिलेगी जिससे अल्लाह ने डराया है। इन तमाम बातों पर दिल से यक़ीन रखे और [illegible] को हाज़िर रखे, इन तमाम बातों के साथ साथ इस बात का भी अक़ीदा रखे कि यह न[illegible]ज़ रूख़सत करने वाले के मानिन्द है इस में किसी क़िस्म का शुबहा और शक न लाए कि यह नमाज़ बारगाहे इलाही में पेश होती है, सही नमाज़ वही होगी जो अल्लाह के नज़दीक सही होगी सूरह फ़ातिहा के बाद कोई पूरी सूरत पढ़ना अफ़ज़ल है यूं किसी सूरत के आख़िर या औसत या इब्तिदा से जो कुछ याद हो वह भी पढ़ सकता है लेकिन जो कुछ पढ़े पूरी तरह समझ कर पढ़े दुरुस्त और सही मख़ारिज के साथ क़िरअत करे। नमाज़ी अगर इमाम के पीछे है तो ख़ामोशी से उसकी क़िरअत सुने और आयात में नसीहतें और तंबीहें हैं उनसे असर ले, अहकामे इलाही पर चलने और ममनूआत से बाज़ रहने का पुख़्ता इरादा करे यहां तक कि क़िरअत ख़त्म हो जाए, क़िरअत से फ़ारिग़ होकर रूकूअ से पहले दम लेने के लिए (चन्द सानिया) ख़ामोश खड़ा रहे ताकि रूकूअ की तकबीर और किराअत बाहम मिल न जाए, फिर कानों की लौ या मोंढों के मुक़ाबिल तक हाथ उठा कर तकबीर (रूकूअ) कहे तकबीर ख़त्म हो जाए तो हाथ नीचे गिरा दे और रूकूअ में चला जाए, रूकूअ में दोनों हाथों की उंगलियां खुली

रखे। और हथेलियों में घुटनों को भर ले (घुटनों की चपनियां हथेलियों की गिरिफ़्त में आ जायें) बग़लों और कलाईयों पर ज़ोर दे, पीठ हमवार रखे, सर को झुकाने की हद तक झुकाए ऊंचा न रखे। हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब रूकूअ फ़रमाते थे तो ऐसा फ़रमाते कि पुश्ते मुबारक पर अगर पानी का एक क़तरा भी होता तो वह भी अपनी जगह क़ायम रहता। एक दूसरी हदीस में है कि अगर रूकूअ की हालत में पुश्ते मुबारक पर पानी से भरा हुआ प्याला रख दिया जाता तो वह भी अपनी जगह से हरकत नहीं करता। रूकूअ में पहुंच कर सुब्हान रब्बीयल अज़ीम कम से कम तीन बार कहे। हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि सात बार यह पढ़ना मुकम्मल तसबीह है, पाँच बार पढ़ना मुतवस्सित और तीन बार पढ़ना औला। इस तसबीह के बाद समेअल्लाहो लेमन हमेदह कहता हुआ सर को उठाए और हाथ छोड़कर सीधा खड़ा हो जाए फिर सजदे को झुके, ज़मीन पर पहले घुटने, फिर हाथ फिर नाक और पेशानी रखे और निहायत इत्मीनान के साथ सजदा बजा लाए। बदन के हर हिस्से को क़िबला रूख़ रखे। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मुझे सात हड्डियों पर सजदा करन का हुक्म दिया गया है। दूसरी हदीस में इस तरह आया है कि बन्दा सात आज़ा पर सजदा करता है। सजदा में जिस उज़्व को बिगाड़ देगा, वही उज़्व उस नमाज़ी के लिए बददुआ करेगा, सजदे की हालत में जिस्म को ज़्यादा नहीं फैलाना चाहिए बल्कि अपने बांहों को नहीं बिछाना चाहिए, दोनों हाथों की उंगलियां और [illegible] यां ज़मीन पर मोंढ़ों के मुक़ाबिल बिलकुल उसी तरह रखे जिस तरह तकबीरे क़याम के वक़्त रखा था, हाथों को सर के बराबर रखे, उंगलियों को कुशादा न करे और [illegible] का रूख क़िबला की तरफ़ रखे दोनों बाजूओं को पहलू से अलग रखे, रानों को पिंडलियों से और पेट को ज़मीन से अलग रखे फिर रूकूअ की तरह सजदे में तीन बार सुब्हाना रब्बीयल आला पढ़े इसके [illegible] कहता हुआ सर उठाए, बायें पांव पर बैठे और दाहिने पांव खड़ा अपनी गोद की तरफ़ देखता हुआ तीन बार रब्बिग़ फ़िरली पढ़े फिर दूसरा सजदा करे फिर तकबीर कहता हुआ अव्वल सर को उठाये फिर हाथों को फिर ज़ानूओं को, हाथों को, घुटनों [illegible] सहार दे कर पांव की उंगलियों के बल पर खड़ा हो जाए, एक क़दम को दूसरा क़दम से न बढ़ाए [illegible] मकरुह है। हज़रत इब्ने अब्बास का क़ौल है कि इससे नमाज़ फ़ासिद हो जाती है इसी तरह दूसरी रकअत पूरी करे।

जब पहले तशहहुद के लिए बैठे तो बायें पांव पर बैठे दाहिना पांव खड़ा रखे लेकिन उस की उंगलियों का रूख काबा की तरफ़ करे, बायां हाथ बायें (रान) ज़ानू पर और दाहिना हाथ दायें ज़ानू (रान) पर रखे, अंगुश्ते शहादत से इशारा करे, दर्मियानी उंगली और अंगूठे का हलक़ा बना कर दोनों पिछली उंगलियों का बन्द रखे (न फैलाये) तशहहुद पढ़ने में आख़िर वक़्त तक उंगलियों पर नज़र रखे। हदीस शरीफ़ में आया है कि कोई नमाज़ी हालते नमाज़ में किसी चीज़ से न खेले, इस लिए कि वह अपने रब से हम कलाम है। यह उंगली शैतान को भगाने का हथियार है फिर तशहहुद में यह पढ़े, अत्तहय्यातो लिल्लाहे वस्सलावातो वत्तैयबाते अस्सलामो अलैका अय्योहन नबीयो व रहमतुल्लाहि बरकातहु अस्सलामो अलैना व अला इबादिल लाहिस्सालेहीन अशहदु अल ला इलाहा इल्लल्लाहो व अशहदु व अन्ना मोहम्मदन अबदहु व रसूलहु इसके बाद तकबीर कहता हुआ खड़ा हो जाए और सिर्फ़ सूरत फ़ातिहा पढ़े और रूकूअ व सजदा करे फिर इसी तरह चौथी रकअत पढ़ कर तशहहुद के लिए बैठ जाए और तशहहुद पढ़ कर (जिस तरह

बताया गया) यह दरूद शरीफ़ पढ़े अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिवं व अला आले मोहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीम इन्नका हमीदुम मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अला मोहम्मदिवं व अला आले मोहम्मदिन कमा बारकता अला इब्राहीमा इन्नका हमीदुम मजीद

हमारे इमाम हम्बल से एक रिवायत आई है कि लफ़्ज़ इब्राहीम के साथ आले इब्राहीम भी कहे यानी इस तरह कहे कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा और दूसरी जगह कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा पढ़े नमाज़ी के लिए मुस्तहब है कि चार चीज़ों से पनाह मांगना और यूं कहे:

या रब! मैं तेरी पनाह लेता हूं दोज़ख़ के अज़ाब से, क़ब्र के अज़ाब से, दज्जाले मसीह के फ़ितने से और ज़िन्दगी और मौत की आज़माईशों से।

और इसके बाद यह दुआ मांगे:

इलाही! जिन चीजों से मैं आगाह हूं उन तमाम की तुझ से भलाई चाहता हूं और जिन से आगाह नहीं उनकी भी, और मैं उन तमाम बुराईयों से तेरी पनाह हासिल करता हूं जिन को मैं जानता हूं या नहीं जानता। इलाही! तेरी नेक बन्दों ने तुझ से तेरे नेक बन्दों ने तूझ से जो चीज़ तलब की है मैं तुझ से उसकी भलाई दरख़्वास्त करता हूं और जिस चीज़ से तेरे नेक बन्दों ने पनाह मांगी है मैं उससे भी पनाह मांगता हूं। ऐ अल्लाह में तुझ से बहिश्त का तालिब हूं और वह क़ौल व अमल चाहता हूं जो मुझे बहिश्त से क़रीब कर रहे हैं, दोज़ख़ के अज़ाब से तेरी पनाह मांगता हूं उस क़ौल व अमल से जो मुझे दोज़ख़ से क़रीब कर दे। ऐ हमारे परवरदिगार हमें दुनिया और आख़िरत में भलाई अता कर और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। इलाही हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराईयां दूर फ़रमा दे हमको नेकोकार लोगों से मिला दे। ऐ हमारे रब तुने जो कुछ अपने पैग़म्बरों को अता करने का वादा फ़रमाया है वह हमें अता फ़रमा दे, क़यामत के दिन हमें ज़लील ख़्वार न फ़रमाना बेशक तू कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।

इस से ज़्यादा भी अगर दुआ मांगे तो जाइज़ है, हां अगर इमाम हो तो तवील दुआ मुक़तदियों को गिरां गुज़रे (ज़ईफ़ व बीमारी के बाइस) तो तालीफ़े क़ल्ब और दिलदही के ख़ातिर दुआ में इख़्तिसार करना मुस्तहब है इस के बाद सलाम फेर दे, अपने लिए, अपने वालिदैन के लिए और तमाम मुसलमानों के लिए दुआ करे, उन तमाम कामों और बातों में अपनी नमाज़ के बारे में डरता रहे कि वह बारगाहे ख़ुदावन्दी में पेश होने वाली है, नमाज़ का हुक्म और उसकी दावत देने वाला अल्लाह तआला है नमाज़ का सवाब भी वही अता करने वाला है और अगर नमाज़ ख़राब हो जाए (सही अदा न हो) तो सज़ा देने वाला भी वही है।

नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाने के बाद अपने इल्म के मुताबिक़ उस पर ग़ौर करे अगर इल्म इस बात की शहादत दे कि नमाज़ तमाम ख़राबियों से पाक व साफ़ है तो अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान करे कि उसी ने तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और अगर इल्म शहादत दे नमाज़ में कुछ ख़राबी वाक़ेअ हो गई है तो तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और बाद वाली नमाज़ में उस ग़लती व कोताही से दूर होने की कोशिश करे।

मक़बूल और मरदूद नमाज़ की निशानियां

मक़बूल नमाज़ की भी खुली हुई निशानियां हैं और मरदूद नमाज़ की भी। मक़बूल नमाज़ की

अलामत यह है कि नमाज़ नमाज़ी को तमाम बेहयाइयों और बदकारियों से रोक दे और नमाज़ी और, नेकी और कसरते ताअत की तरफ़ माइल हो जाए और दुरुस्तीए आमाल की कोशिश करे सवाब के कामों की तरफ़ उसकी रग़बत हो जाये, बुराईयों से बाज़ आ जाए, गुनाहों और ख़ताओं को बुरा समझने लगे। अल्लाह तआला को इरशाद है: नमाज़ बुराईयों और गुनाहों से रोकती है। हमने जो कुछ बयान किया इसमें इमाम, मुनफ़रिद और मुक़तदी सब शरीक हैं, नमाज़ की शरायत और वाजिबात व मसनूनात का ज़िक्र हम अव्वलन कर चुके हैं।

इमाम और उसकी खुसूसियात

इमाम के औसाफ़

जब तक यह बातें (औसाफ़) इमाम में मौजूद न हों उस शख़्स का इमाम होना जाइज़ नहीं है। (1) उस शख़्स को ख़ुद इमामत की ख़्वाहिश न हो लेकिन इस सूरत में कि दूसरा आदमी इस मनसब को अंजाम देने वाला मौजूद हो (अगर मौजूद न हो तो ख़्वाहिश करना दुरुस्त है) (2) जब उससे अफ़ज़ल शख़्स इमामत के लिए मौजूद न हो तो भी ख़ुद आगे न बढ़े (3) हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया लोगों की इमामत कोई शख़्स करे और उससे अफ़ज़ल शख़्स उसके पीछे मौजूद हो तो ऐसे लोग हमेशा पस्ती में रहेंगे। हज़रत उमर फ़रमाते हैं कि अगर मेरी गर्दन मार दी जाए तो मेरी नज़र में इस बात से बेहतर है कि ऐसी मैं जमाअत की इमामत करूं जिसमें अबू बकर सिद्दीक़ मौजूद हों (4) इमाम क़ारी हो, दीन की बातें समझता हो, सुन्नत से ख़ूब आगाह हो। हदीस शरीफ़ में आया है कि अपना दीनी मामला तुम अपने फ़क़ीहों के सुपुर्द करो और क़ारियों को अपना इमाम बनाओ। एक दूसरी हदीस इस सिलसिला में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारी इमामत वह लोग करें जो तुम में बेहतर हों वह अल्लाह की बारगाह में तुम्हारे नुमाईन्दे हैं। हुज़ूर ने यह तख़[illegible] इसलिए फ़रमाई कि दीनदार इमाम और इल्म व फ़ज़्ल रखने वाले लोग, अल्लाह को जानने और उससे डरने वाले होते हैं वह अपनी नमाज़ और अपने मुक़्तदियों की नमाज़ को समझते हैं और वह नमाज़ को ख़राब करने वाली बातों से गुरेज़ करते हैं वह ख़ुद अपना और अपने मुक़्तदियों का बार उठाते हैं। क़ारीए कुरआन से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुराद बे अमल क़ारी नहीं हैं बल्कि बा अमल हाफ़िज़ है। हदीस शरीफ़ में वारिद है कि इस क़िरअत का ज़्यादा हक़दार वह है जो उस पर अमल करता है अगर वह उसको पढ़ता न हो यानी हाफ़िज़ व क़ारी न हो। जो क़ारी कुरआन पर अमल नहीं करता और हुदूदे इलाही की परवाह नहीं करता, न अल्लाह तआला के फ़राइज़ पर अमल करता है और न उसकी ममनूआत से बचता है अल्लाह भी उसकी कोई परवाह नहीं करता और न ऐसा शख़्स इज़्ज़त व करामत का मुस्तहिक़ है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि जिसने कुरआन की हराम कर्दा चीज़ों को हलाल जाना वह कुरआन पर ईमान नहीं रखता लोगों को जाईज़ नहीं कि ऐसे शख़्स को इमाम बनायें, इमामत के लाएक़ वही है जो सबसे ज़्यादा आलिम होने के साथ उस पर अमल भी करे और उसको ख़ुदा ख़ौफ़ भी हो। इमाम लोगों की ऐब जोई और ग़ीबत से अपनी

ज़बान को रोके, दूसरों को नेकी का हुक्म दे और खुद भी उस पर अमल करे, दूसरों को बुराई से मना करे और खुद भी बाज़ रहे, नकी और नेक लोगों से मोहब्बत रखे, बदी और बदों से नफ़रत करे, औक़ाते नमाज़ से वाक़िफ़ हो और उनकी पाबन्दी करे, अपने हाल की इस्लाह करता रहे, मुशतब्हा रोज़ी से बचता हो (पाकिज़ा शिकम हो) हराम बातों से इज्तिनाब करता हो, फ़ेअ़ले हराम से अपने हाथों को रोकने वाला हो। अल्लाह तआला की खुशनूदी के सिवा दूसरी चीज़ों की कम कोशिश करे। दुनिया की तलब उसमें न हो, हलीम हो और साबिर और शर से चश्म पसेशी व एराज़ करने वाला हो, लोग अगर उस पर नुक्ता चीनी करें तो सब्र करे और खुदा का शुक्र अदा करे, बुरे कामों से आंखों को बन्द रखे, हर काम अल्म व बुर्दबारी से अंजाम दे। सतरे औरत से अपनी आंखों को बचाए, अगर कोई जाहिल उसके साथ बुराई से पेश आए तो उसकी बुराई को बरदाश्त करे और कह दे अल्लाहो सलामन लोग उसकी तरफ़ से आराम पायें (लोगों को उससे तकलीफ़ न पहुंचती हो) लेकिन वह खुद अपने नफ़्स की तरफ़ से बेचैन हो, नफ़्सानी ख़्वाहिशात से अपनी आज़ादी का ख़्वाहां हो और उनसे अपनी नफ़्स की रिहा[illegible] की कोशिश करता हो हमेशा इस बात को महसूस करता हो कि इमा[illegible] जैसे अज़ीम काम क[illegible] उसके सुपुर्द करके उसकी आज़माईश की गई है, इमामत का दर्जा बहुत [illegible]ज़ुर्ग और अज़ीम है। [illegible]ाम के पेशे नज़र हमेशा इमामत की अज़मत और मरतबत रहना चाहिए[illegible]

इमाम को लाज़िम है कि बेकार गुफ़्तगू न करे, इम[illegible] हालात दू[illegible]रे लो[illegible] की हालत से बिल्कुल जुदागाना है। जब वह महराब में खड़ा हो तो उ[illegible] उसको समझना चाहिए कि मैं अंबिया और रसूलुल्लाह [illegible]ल्लल्लाहो [illegible]लैहि व[illegible]ल्लम के ख़ल[illegible]फ़ा के मक़ाम पर खड़ा हूं और रब्बुल आलमीन से कला[illegible]र रहा हूं। [illegible]ज़ के अरकान पूरे [illegible] अदा करने कि दिल से कोशिश करे और जिन ल[illegible]गों ने इमामत की यह रस्[illegible]ी उस[illegible] गले [illegible]ली है यानी उसको इमाम बनाया है उनकी नमाज़ [illegible] तकमील [illegible]की भी को[illegible]श करे। [illegible] मुख़्त[illegible] पढ़े इस ग़र्ज़ से कि तमाम अरकान पूरे अदा ह[illegible] जायें, जो लोग उसके पीछे खड़े हैं उनका [illegible]याल करे कि उनमें कमज़ोर और ज़ईफ़ लोग भी [illegible] हैं इसलिए अपने आप का कमज़ोर व नातवां लोगों में महसूब करे।

अल्लाह तआला इमाम से [illegible] उसके बारे में और दूसरे लोगों (मुक़्तदियों) के मुताल्लिक़ बाज़ पुर्स फ़रमाएगा, अपनी उ[illegible] की ज़िम्मादारी पर तास्सुफ़ करे, साबिक़ा ख़ताओं, गुनाहों और तल्फ़ कर्दा औक़ात पर नदामत का इज़हार करे, अपने आप को मुक़्तदियों से बरतर न समझे और उसी तरह कम दर्जा लोगों से अपने को बरतर न गरदाने, मगर कोई शख़्स उसकी बुराई करे तो उसे बुरा न समझे। अगर उसकी ग़लती ज़ाहिर करे तो नफ़्सानी ख़्वाहिश के पेशे नज़र हट धर्मी और ज़िद न करे, इस बात को पसन्द न करे कि लोग उसकी तारीफ़ करें तारीफ़ और मज़म्मत दोनों को बराबर समझे, इमाम का लिबास साफ़ सुथरा और ख़ोराक पाक हो उसके लिबास से तबख़्तुर और बड़ाई ज़ाहिर न होती हो, उसकी नशिस्त में गुरुर की झलक न हो, किसी जुर्म की सज़ा में उस पर इस्लामी हद जारी न की गई हो (सज़ा याफ़्ता ना हो) लोगों की नज़र में मुत्तहिम न हो, किसी भाई की हाकिमों से लगाई बुझाई न करता हो, लोगों के राज़ों का तहफ़्फ़ुज़ करे, (पर्दा दरी न करे) किसी भाई से कीना न रखे। अमानत, तिजारत और मुस्तआर चीज़ों में उसने ख़यानत न की हो, ख़बीस कमाई वाला इमामत का अहल नहीं है, जिसके दिल में हसद, कीना और बुग़्ज़ हो उसको भी इमाम न बनाया जाए, वह किसी के ऐब की तलाश में

हो और उम्मते मुहम्मदिया को फ़रेब देने वाला, मग़लूबुल ग़ज़ब, नफ़्स परस्त और फ़ितना परवर शख़्स को भी इमाम नहीं बनाना चाहिए।

इमाम के लिए मज़ीद शर्तें

इमाम के लिए ज़रुरी है कि फ़ितना पैदा करने की कोशिश न करे न फ़ितना को तक़वीयत पहुंचाए बल्कि बातिल परस्तों के ख़िलाफ़ अहले हक़ की मदद करे हाथ से मुमकिन न हो तो ज़बान से, अगर ज़बान से भी मुमकिन न हो तो दिल से उनकी मदद का ख़्वाहां हों, अल्लाह के मामला में किसी बुरा कहने वाले के बुरा कहने का ख़्याल न करे, अपनी तारीफ़ को पसन्द न करे न अपनी मजम्मत को बुरा माने, अपने लिए दुआ में तख़सीस न करे बल्कि जब दुआ करे तो अपने लिए और तमाम लोगों के लिए आम तौर पर दुआ करे, अगर तन्हा अपने लिए दुआ करेगा तो दूसरों के साथ ख़यानत होगी।

अहले इल्म के सिवा किसी को किसी पर तरजीह न दे। रसूलुल्लह [illegible] सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है मुझ से मुत्तसिल व दानिश[illegible] और ज़ी फ़हम लोग [illegible] खड़े हों, इसी तरह इमाम के पीछे यानी अगली सफ़ में ऐसे ही लोगों [illegible] होना चाहिए। दौलत[illegible] को अपने क़रीब और ग़रीब को हक़ीर जान कर दूर खड़ा न करे। ऐ[illegible] लोगों की [illegible]त न करे जो उसकी इमामत को पसन्द नहीं करते। अगर मुक़्तदियों में कुछ [illegible] उसकी इमा[illegible] को [illegible]सन्द और कुछ नापसन्द करते हैं तो नापसन्द करने वालों की तादाद अ[illegible]दा है तो इमाम को महराब छोड़ देना चाहिए लेकिन शर्त यह है कि मुक़्तदि[illegible] की नागवा[illegible] और नापसन्दीदगी की वजह हक़्क़ानियत अ[illegible]र इल्म [illegible]गही पर [illegible] अगर नागवारी का [illegible]आएस जिहालत, बातिल परस्ती, नादानी और फ़ि[illegible]क़ा वाराना ता[illegible]स्सुब, नफ़्स[illegible]नी ख़[illegible]हिश प[illegible]नी हो तो फिर मुक़्तदियों की ना गवारी की परवाह [illegible] करे औ[illegible] [illegible]नकी वज[illegible] से नमाज़ [illegible] तर्क न करे, अगर क़ौम में इस बिना पर फ़ितना व फ़सा[illegible] बरपा होने का अन्देशा हो तो अलबत्ता कि[illegible]रा कश हो जाए और महराब को छोड़ दे और उ[illegible] तक महराब के पास न जाए जब तक कि लोग आपस में सुलह न कर लें और उसकी इमामत पर राज़ी न हो जायें।

इमाम झगड़ने वाला, [illegible] क़समें खाने वाला और लानत करने वाला न हो, उसको बुराई की जगह और तुहमत के मक़ाम पर जाना मुनासिब नहीं उसको चाहिए कि सालेहीन के अलावा किसी से मेल मिलाप न रखे, इमाम को लाज़िम है कि फ़ितने और फ़साद उठाने वालों से गुनाह और गुनाहगारों से, सरदारी और सरदारों से मुहब्बत न करे, अगर लोग उसे ईज़ा पहुंचायें तो उस पर सब्र करे और उसके एवज़ उनसे मुहब्बत करे और उनकी भलाई का तालिब हो और ख़ैर ख़्वाही की कोशिश करता रहे।

इमामत के लिए झगड़ा करना मना है

इमामत के लिए झगड़ा नहीं करना चाहिए और अगर कोई दूसरा शख़्स इस बार को उसकी जगह उठाना चाहता है तो उससे इस मामले में न झगड़े। अकाबिरीने मिल्लत और सालेहीने सल्फ़ के बारे में मनकूल है कि उन्होंने इमाम बनने से गुरेज़ किया है और अपनी बजाए उन्होंने इमामत के लिए ऐसे लोगों को बढ़ा दिया जो बुजुर्गी और तक़्वा में उनके बराबर नहीं थे, इस तर्ज़े अमल से [illegible] यह था कि [illegible] उनका बोझ हलका हो जाए वह इस बात से डरते

थे कि कहीं इमामत में उनसे कोई कुसूर व कोताही न हो जाए।

हाकिमे वक़्त की इजाज़त ज़रूरी है

अगर हाज़िरीन में हाकिमे वक़्त मौजूद हो तो उसकी इजाज़त के बग़ैर इमामत के लिए आगे न बढ़े इसी तरह जब किसी गांव में या क़बीला में पहुंचे तो वहां के लोगों की इजाज़त से बग़ैर इमामत न करे, इसी तरह किसी क़ाफ़ला या सफ़र में बहुत से लोगों के साथ हो जाने का इत्तेफ़ाक़ हो तो साथियों की इजाज़त के बग़ैर उनकी इमामत न करे, नमाज़ लम्बी नहीं पढ़ाना चाहिए बल्कि मुख़्सतर पढ़ाना चाहिए मगर अरकान पूरे अदा करे। हज़रत अबू हुरैरह से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई इमाम हो तो नमाज़ मुख़्तसर करे क्योंकि उसके पीछे बच्चे व बूढ़े और काम करने वाले लोग भी खड़े होते हैं, हां अगर नमाज़ तन्हा पढ़े तो फिर जितनी चाहे लम्बी पढ़े। हज़रत अबू वाक़िद रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते तो बहुत ही मुख़्तसर नमाज़ होती और जब बह नफ़्से नफ़ीस अदा फ़रमाते तो सबसे ज़्यादा लम्बी नमाज़ होती।

इमाम का दिल और ज़बान से नीयत करना

इमाम को चाहिए कि दिल से नीयत किए बग़ैर न नमाज़ शुरु करे और न तकबीरे तहरीमा कहे अगर ज़बान से भी नीयत के अलफ़ाज़ कह ले तो [illegible] अच्छा है। इमाम को चाहिए कि पहले दायें बायें देख कर सफ़ें दुरुस्त कराए और मुक़्तदियों से कहे सीधे खड़े हो जाओ, अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल फ़रमाए, ठीक खड़े हो जाओ अल्लाह तुम से राज़ी हो, दर्मियान के ख़ला को पुर करने के लिए हुक्म दे कि शाने से शाना मिला कर खड़े हो जाओ सफ़ों की कजी से नमाज़ में नक़्स पैदा होता है, शैतान लोगों के साथ सफ़ों में घुस कर खड़े हो जाते हैं। हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि सफ़ें जोड़ लिया करो, शाने से शाना मिला लिया करो और दर्मियानी ख़ला को पुर कर लिया करो ताकि बकरी के बच्चों जैसे शैतान तुम्हारे दर्मियाद घुस कर न खड़े हो जायें।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो सरकार वाला तकबीर कहने से पहले दायें और बायें के लोगों को शाने बराबर रखने का हुक्म दिया करते थे और फ़रमाते थे कि कोई शख़्स आगे पीछे न हो वरना दोनों में फूट पड़ जाएगी। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक रोज़ (नमाज़ के वक़्त) देखा कि एक शख़्स का सीना सफ़ से बाहर निकला हुआ है हुज़ूर नं इरशाद फ़रमाया तुम को अपने मोंढे बराबर कर लेना चाहिए वरना अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में फूट डाल देगा।

मुस्लिम और बुख़ारी की मुत्तफ़क़ अलैह रिवायत है कि सालिम बिन जोर ने हज़रत नोमान बिन बशीर से सुना कि उन्होंने फ़रमाया रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि अपनी सफ़ें सीधी रखो वरना अल्लाह तआला तुम्हारे चेहरों में फ़र्क़ पैदा कर देगा। एक और हदीस में हज़रत क़तादा ने हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत कि है कि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया सफ़ों को सीधा रखना तकमीले नमाज़ में से है (यानी तकमीले सलात का एक हिस्सा है)

हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर बिन अलख़त्ताब ने एक शख़्स को महज़ सफ़ें सीधी करने पर

मुकर्रर कर रखा था जब तक वह शख़्स सफ़ों के हमवार होने की इत्तेला आपको नहीं देता था आप तकबीर (तहरीमा) नहीं कहते थे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का भी यही मामूल था, एक रिवायत में है कि हज़रत बिलाल (मोअज़्ज़िने रसूलुल्लाह) सफ़ें हमवार कराते थे और एड़ियों पर कोड़े मारते थे ताकि लोग हमवार खड़े हो जायें बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि इस रिवायत से यह ज़ाहिर होता है कि हज़रत बिलाल यह ख़िदमत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में इक़ामत के वक़्त नमाज़ शुरू करने से पहले अंजाम दिया करते थे इसलिए कि हज़रत बिलाल ने हुजूर वाला के बाद किसी इमाम के लिए कभी अज़ान नहीं दी। सिर्फ़ एक दिन हज़रत अबू बकर के ज़माने में जबकि आप मुल्के शाम से वापस आए थे तो हज़रत सिद्दीक़े अकबर और दूसरे सहाबा ने अहदे नबवी की याद और इश्तियाक़ में हज़रत बिलाल से दरख़्वास्त अज़ान की थी, तो आपने अज़ान दा थी, अज़ान में जब आप कलमा अशहदो अन्ना मुहम्मदुर्रसूल्लाह पर पहुंचे तो रुक गए और आगे कुछ न कह सके, हुजूर वाला की मुहब्बत और आपके इश्क व मुहब्बत में बेहोश हो कर गिर पड़े, मदीना के अंसार व मुहाजिरीन में एक कोहराम पड़ गया यहां तक कि मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जवान औरतें भी पर्दे से बाहर निकल आईं, इस रिवायत से साबित होता है कि हज़रत बिलाल का लोगों की एड़ियों पर दुर्रे मारना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमानए मुबारक में था।

इमाम महराब में बिल्कुल अन्दर न खड़ा हो

इमाम को जाईज़ नहीं है कि महराब के बिल्कुल अन्दर घुस कर खड़ा हो और पीछे वाले लोगों की नज़रों से छुप जाए बल्कि उसको महराब से क़दरे बाहर खड़ा होना चाहिए। इमाम अहमद से दूसरी रिवायत यह है कि ताक़चा (महराबे इमाम) के अन्दर खड़ा होना मुस्तहब है अलबत्ता उसको यह जाएज़ नहीं कि वह मुक़्तदियों से ऊँची जगह खड़ा हो अगर ऐसा करेगा तो एक क़ौल के मुताबिक़ नमाज़ बातिल हो जाएगी। इमाम के लिए मुनासिब है कि नमाज़ से सलाम फेरने के बाद ज़्यादा देर तक महराब में न ठहरे बल्कि बाहर निकल कर सुन्नतों के लिए खड़ा हो जाए या महराब के बाईं जानिब खड़े होकर सुन्नतें अदा करे। हज़रत मुग़ीरा बिन शअबा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इमाम ने जिस जगह खड़े हो कर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ाई है, उस जगह सुन्नतें और नफ़्ल न पढ़े, अलबत्ता मुक़्तदी के लिए जाएज़ है कि वह अपनी जगह पर खड़े होकर सुन्नतें और नफ़्ल पढ़ ले चाहे तो इधर उधर हट कर भी पढ़ सकता है।

क़िरअत के अव्वल व बाद सुकूत

इमान को दोबारा वक़्फ़ा करना चाहिए, एक बार तो नमाज़ के शुरु में और दूसरी बार क़िरअत के बाद रूकूअ से पहले, कि इस वक़्फ़ा में उसको दम लेने का मौका मिल जाएगा और क़िरअत से जो जोश पैदा हुआ था वह सुकून से बदल जाए और क़िरअत का इत्तेसाल रूकूअ की तकबीर से भी नहीं होगा, हज़रत समराह बिन जुन्दुब से मरवी हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इसी तरह मनकूल है।

इमाम को चाहिए कि अपने सामने सुतरह (ओट) रखे लेकिन सुतरह इतने फ़ासला पर नहीं

रखना चाहिए कि उसके दर्मियान से काला कुत्ता, गधा या औरत गुज़र सके, उनके गुज़रने से नमाज़ टूट जाती है। हज़रत इमाम अहमद का यही मसलक है लेकिन आप ही से एक दूसरी रिवायत यह है कि औरत और गधा सामने से गुज़र जाए तो नमाज़ में नुक़सान वाक़ेअ नहीं होता।

रूकूअ की तसबीह

रूकूअ में जाए तो तीन बार वह तसबीह पढ़े जिस का हम ज़िक्र कर चुके हैं, तसबीह पढ़ने में उजलत न करे बल्कि बहुत आहिस्तगी और जम कर अल्फ़ाज़ अदा करे क्योंकि अगर इमाम उस तसबीह को उजलत से पढ़ लेगा तो मुक़्तदी उसको नहीं पा लेंगे और इस सूरत में मुक़्तदी इमाम से सबक़त ले जायेंगे और उनकी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और उनका गुनाह इमाम की तरफ़ लौटेगा (इमाम पर होगा) इसी तरह रूकूअ से सर उठा कर समे अल्ला होलेमन हमेदह कह कर ठीक ठीक खड़ा हो जाए और बग़ैर उजलत के रब्बना लकल हम्द कहे ताकि मुक़्तदी भी उतनी देर में कह लें। अगर उसके साथ मिलअस्समाए व मिलअल अर्ज़ व मिलअशेतअ मिन शैइन कहे तो भी जाइज़ है। इस सिलसिला में ए[illegible] हदीस आई है हज़रत अनस बिन मालिक ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रूकूअ से सरे मुबा[illegible] उठा कर इतनी देर तक (सजदे से) तवक़्कुफ़ फ़रमाते कि यह ख़्याल होता था कि [illegible] भूल गए, इसी तरह सजदे में और दोनों सजदों के दर्मियान क़अदा में वक़्फ़ा करे और उस [illegible] के कहने का कुछ ख़्याल न करे जो यह कहता है कि इस सूरत में मुक़त[illegible] इमाम से पहले बाज़ अरकान अदा करेगा और फ़ेअल मुक़द्दम किया तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। जब लोग इमाम के वक़्फ़ा को देखेंगे और समझ लेंगे कि इमाम हमेशा [illegible] वक़्फ़ा करता है तो वह समझ लेंगे कि दोनो सजदों के दर्मियान वक़्फ़ा इमाम की आदत है इस लिए फ़िर वह [illegible] ठहरा करेंगे और इमाम से पहले अमल नहीं करेंगे।

नमाज़ से पहले मुक़्तदियों को तंबीह करना

इमाम को यह हु[illegible] है कि नमाज़ शुरु करने से पहले मुक़्तदियों का ख़बरदार कर दे कि इमाम से मुसाबक़त बड़ा गुनाह है (इस को मुफ़स्सेलन हम आइन्दा औराक़ में बयान करेंगे) पस इमाम के इस तवक़्कुफ़ [illegible] सुकून से कोई से ख़राबी नहीं पैदा होगी बल्कि इस के बर अक्स आम इसलाह हो जाएगी और नमाज़ें मुकम्मल होंगी। हदीस शरीफ़ में आया है इमाम हर उस नमाज़ी पर निगरां है जो उसके साथ नमाज़ पढ़ रहा है और उससे उसकी रईयत (यानी मुक़्तदी) के बारे में सवाल किया जाएगा। इस तरह भी आया है कि इमाम मुक़्तदी की नमाज़ का मुहाफ़िज़ व निगहबान है इस लिए इमाम पर मुक़्तदियों की ख़ैर ख़्वाही और भलाई लाज़िम है।

मुक़्तदी का गुनाह इमाम का गुनाह है

इमाम अपनी नमाज़ को मुकम्मल, उम्दा और महकम बनाये यह उस पर फ़र्ज़ है ताकि मुक़्तदियों की नमाज़ का उसको भी सवाब है वर्ना अगर नमाज़ में ख़राबी और कोताही करता रहेगा तो जैसा गुनाह मुक़्तदियों को होगा वैसा ही उसको भी होगा।

इक़्तदा के आदाब

इक़्तदा की नीयत

इमाम की पैरवी के लिए नीयत करना वाजिब है, मुक़्तदी को इमाम के दायें जानिब खड़ा होना चाहिए बशर्ते कि तन्हा हो, न इमाम के आगे खड़ा और न बायें हाथ को। अगर मुक़्तदियों की जमाअत हो (यानी चन्द अफ़राद हो) तो सब को इमाम के पीछे खड़ा होना चाहिए। अगर अकेला मुक़्तदी हसबे शर्त इमाम के दायें जानिब खड़ा होकर तकबीर कह चुका था कि दूसरा मुक़्तदी भी आ गया तो वह भी उसके साथ तकबीर में शरीक हो जाए और फिर दोनों इमाम के पीछे जाकर एक सफ़ में खड़े हो जायें ऐसी सूरत में जब दूसरा आदमी तकबीर कह चुके तो इमाम अपने हाथ से दोनों को पीछे कर दे, इमाम ख़ुद आगे न बढ़े हां अगर पीछे जगह न हो तो बसूरते मजबूरी कि अगर आगे बढ़ जाए।

जमाअ़त का शिगाफ़ पुर करना

अगर जमाअ़त खड़ी हो और बाद को कोई शख़्स आए तो और उसको जमाअ़त के अन्दर कहीं पर ख़ला नज़र आये तो उसमें दाख़िल हो जाये वर्ना सफ़ के पीछे इमाम के दायें रूख़ पर खड़ा हो जाये अपने साथ मिलाने के लिए किसी नमाज़ी को सफ़ में से न खींचे इस तर्ज़े अमल से आपस में बुग्ज़ व अदावत पैदा होती है अलावा अज़ीं जिस शख़्स को सफ़ बनाने के लिए खींचा गया है उसकी नमाज़ हमारे नज़दीक (हंबली मज़हब में) फ़ासिद हो जाती है इसलिए कोशिश करके सफ़ में दाख़िल हो जाये और तकबीरे तहरीमा कह कर नमाज़ शुरु कर दे, अगर मुक़्तदी ऐसे वक़्त में मस्जिद में दाख़िल हुआ है कि इमाम रूकूअ में है तो वह दो तकबीरें कहे और एक तकबीरे तहरीमा और दूसरी तकबीरे रूकूअ, अगर एक तकबीर कही लेकिन दोनों तकबीरें कर लीं तब भी दुरुस्त है, अगर मुक़्तदी ऐसे वक़्त पहुंचा है कि इमाम तशहहुद में हो तो नमाज़ की नीयत कर के तकबीर कह कर तशहहुद के लिए बैठ जाना मुस्तहब है ताकि जमाअ़त की फ़ज़ीतल से महरूम न रहे, जब इमाम सलाम फेरे तो उसी तकबीर को बना बना कर अपनी बाक़ी नमाज़ पूरी करे।

इमाम से सबक़त न करना

मुक़्तदी के लिए लाज़िम है कि अपने किसी फ़ेअल में इमाम से सबक़त न करे और न तकबीर में और न रकूअ में न सुजूद में और न सर उठाने में, जहां तक मुमकिन हो हर रुक्न इमाम के बाद अदा करे, इस सिलसिले में बहुत सी अहादीस आई हैं और सहाबा कराम के भी बहुत से अक़वाल हैं।

हज़रत बरा बिन आज़िब फ़रमाते हैं कि हम रसुलू ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ते थे तो जब तक आप जबीने मुबारक सजदे में न रखते हम अपनी कमरों को न झुकाते थे (सजदे में जाने के लिए न झुकते थे) और जब आप रूकूअ के बाद तकबीर कह कर अपना सरे मुबारक ज़मीन पर न रख दिया करते थे उस वक़्त तक हम आप के पीछे ही

क़याम की हालत में खड़े रहते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है जो शख़्स इमाम से पहले सर उठाता है क्या उसको डर नहीं लगता कि कहीं अल्लाह उसके सर को गधे के सर में तबदील न कर दे। दूसरी हदीस में हुजूर ने फ़रमाया कि इमाम तुम से पहले रूकूअ करता है और तुम से पहले सर उठाता है।

सहाबा कराम के अक़वाल में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सीधे खड़े हो जाते थे और उस वक़्त तक हम सजदे ही में होते थे। हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इमाम से पहले अपना सर सजदा से उठाता है क्या उसको डर नहीं लगता कि अल्लाह तआला उसके सर को गधे के सर से बदल दे या ख़िन्ज़ीर के सर की तरह बना दे। हज़रत अबू हुरैरह से जो रिवायत है उसमें ख़िन्ज़ीर का ज़िक्र नहीं है। एक रिवायत में है कि

हज़रत इब्ने मसऊद ने एक शख़्स को इमाम से पहले अरकान अदा करते देख कर फ़रमाया तूने न तन्हा नमाज़ पढ़ी है और न इमाम की इक़्तिदा की है और जिसने इमाम से पहले रूक्न अदा किए वह न तन्हा नमाज़ पढ़ता न इमाम के साथ। ऐसे ही लोगों की नमाज़ें नहीं होतीं। इसी तरह हज़रत इब्ने उमर से एक रिवायत है कि उन्होंने एक शख़्स को इमाम से सबक़त करते देख कर फ़रमाया तूने न तन्हा नमाज़ पढ़ी और न इमाम के साथ, फिर उसको दोबारा नमाज पढ़ने का हुक्म दिया।

इमाम मुताबेअत की ग़र्ज़ व ग़ायत के लिए मुक़र्रर किया जाता है

अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इमाम को इसी लिए मुक़र्रर किया जाता है कि उसकी मुताबेअ़त की जाए लिहाज़ा जब वह तकबीर कहे तब तुम भी तकबीर कहो जब वह रूकूअ करे तब तुम भी रूकूअ करो जब वह सजदा करे उस वक़्त तुम भी सजदा करो, जब वह सर उठाए तुम भी सर उठाओ जब समेअ अल्ला होलेमन हमेदह कहे तब तुम रब्बना लकल हम्द कहो जब इमाम बैठे (जलसा करे) तब तुम भी बैठो।

हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन हंबल ने अपने एक रिसाला में अपनी असनाद के साथ हजरत अबू मूसा अशअरी की एक रिवायत बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम को हमारी नमाज़ सिखाई है और नमाज़ में हम जो कुछ पढ़ते हैं वह भी हम को बता दिया। हुजूर ने फ़रमाया जब इमाम तकबीर कहे तो तुम भी तकबीर कहो, जब क़िरअत करे तो ख़ामोशी के साथ मुतवज्जेह होकर सुने, जब इमाम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन कहे तो तुम मुक़्तदी आमीन कहो अल्लाह तुम्हारी दुआओं को क़बूल फ़रमाएगा और जब इमाम तकबीर कहे तो तुम तकबीर कहो जब वह रूकूअ से सर उठाकर समेअ अल्ला होलेमन हमेदह कहे तो तो तुम सर उठाकर अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द कहो। अल्लाह तुम्हारा क़ौल सुनेगा, जब वह तकबीर कहे और सजदा करे तो तुम तकबीर और सजद करो, जब वह सजदे से सर उठाए तो तुम सर उठाओ और उसके बाद तकबीर कहो। हुज़ूर ने इस मक़ाम पर फ़रमाया बस! यह तुम्हारे आमाल इमाम के अफ़आल के साथ हैं इसी तरह जब इमाम कअदा में हो तो तुम अत्तहयातो

लिल्लाहि वस्सलवातो वत्तैय्येबात पढ़ो यहां तक कि नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ।

हमारे इमाम हज़रत अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन शअबान ने इस हदीस की तशरीह में फ़रमाया है (अल्लाह हमारा ख़ातमा उन के अक़ीदे पर करे और उनके साथ हम को महशूर फ़रमाए) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब इमाम तकबीर कहे तो उसके साथ भी तकबीर कहो इस के मानी और इससे मुराद यह है कि जब इमाम तकबीर कह चुके और उस के अल्फ़ाज़ ख़त्म हो जायें तो उसके बाद तुम तकबीर कहो अवाम नमाज़ को एक मामूली बात समझ कर परवाह नहीं करते, हदीस को नहीं समझते चुनांचे जब इमामा तकबीर शुरु करता है तो वह भी तकबीर शुरु कर देते हैं और यह ग़लती है। जब तक इमाम तकबीर से फ़ारिग़ न हो जाए और उसकी आवाज़ ख़त्म न हो जाए उस वक़्त तक मुक़्तदियों का तकबीर कहना जाइज़ नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादे गिरामी का यही मतलब है।

इमाम को तकबीर कहने वाला उसी वक़्त कहा जा सकता है जब वह पूरी तकबीर कह दे पस जब वह अल्लाहु अकबर कह चुके तो मुक़्तदियों को तकबीर कहना चाहिए। इमाम के साथ साथ कहना दुरुस्त नहीं है और यह अमल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशादे गिरामी के ख़िलाफ़ है मसलन तुम कहो कि जब फ़लां शख़्स नमाज़ पढ़ेगा तो मैं उससे कलाम करुंगा तो इसका मतलब यह होगा कि मैं इतनी देर इन्तेज़ार करुंगा कि वह नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए इसका यह मतलब तो नहीं हो सकता कि वह [illegible] नमाज़ भी पढ़ता रहे और बात भी होती रहे, यही इस फ़रमाने नब्वी का मतनब है कि जब इमाम तकबीर कहे तब तुम भी कहो।

बाज़ कम फ़हम इमाम तकबीर को लम्बा कर देते हैं और मुक़्तदी की तकबीर उसके साथ या बाद में ख़त्म होती है तो इस सूरत में मुक़्तदी इमाम का ताबेअ नहीं होगा और जो शख़्स इमाम से पहले तकबीर कह ले उसकी नमाज़ नहीं होती [illegible] शख़्स की नमाज़ भी नहीं होगी) इस लिए कि इसके मानी यह हुए कि उस शख़्स ने इमाम से पहले नमाज़ शुरु कर दी।

इसी तरह हुज़ूर के फ़रमान का कि जब इमाम सर उठाए और समेअ अल्ला होलेमन हमेदा कहे तो तुम भी सर उठाओ और अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द कहो मतलब यह है कि तब तक इमाम सर को उठा कर समेअल्ला होलेमन हमेदा न कह चुके और उसकी आवाज़ ख़त्म न हो जाए मुक़्तदी सर को न उठाएयें और अल्लाहुम्मा रब्बना लकल हम्द न कहें, इसी तरह इस इरशादे वाला के कि जब इमाम तकबीर कहे और सजदा करे तो तुम तकबीर कहो और सजदा करो, मानी भी यही है कि मुक़्तदी उस तक वक़्त खड़े रहें जब तक इमाम तकबीर कहता हुआ सजदा को झुके और पेशानी ज़मीन पर रख दे। (उस वक़्त यह तकबीर कहे और सजदा करें) हज़रत बरा बिन आज़िब ने यही तशरीह की है और यही तशरीह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस इरशादे गिरामी के मुवाफ़िक़ है कि इमाम तुम से पहले रूकूअ करता है और तुम से पहले सजदा करता और तुम से पहले सर उठाता है और इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो यह फ़रमाया था कि इमाम जब तकबीर कहे और सर उठाए तो तुम अपने सर उठाओ और तकबीर कहो इसका भी मतलब यही है कि मुक़्तदी उस वक़्त तक सजदा में रहें कि इमाम सजदा से सर उठाऐ और तकबीर कहे और उसकी आवाज़ ख़त्म हो जाए तो उसकी पैरवी करें और सजदा से सर को उठायें। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान यह मुक़्तदी उन इमामों के साथ साथ हैं यानी क़याम की हालत में तुम इतना इन्तेज़ार

करो कि इमाम तकबीर कह चुके और रूकूअ में पहुंच जाए और रूकूअ की हालत में यह इन्तेज़ार करो कि इमाम रूकूअ से सर उठा ले और समेअ अल्ला होलेमन हमेदह कह चुके और उसकी आवाज़ ख़त्म हो जाए तब तुम अपना सर रूकूअ से उठाओ और रब्बना लकल हम्द कहो अल ग़र्ज़ हुज़ूर का फ़रमाने मज़कूरा हर हरकत को शामिल है, तुम पूरी नमाज़ इमाम की उसी तरह पैरवी करके मुकम्मल करो और ख़ूब सोच समझ कर उस पर अमल करो।

इमाम से मुसाबक़त के बाएस नमाज़ क़बूल नहीं होगी

क़यामत के दिन बहुत से ऐसे लोग होंगे जिनकी नमाज़ें क़बूल नहीं हुई क्योंकि रूकूअ सुजूद और क़ऊद व क़याम में उन्होंने इमाम से मुसाबक़त की होगी। हदीस शरीफ़ में आया है कि एक ज़माना ऐसा आएगा कि लोग नमाज़ तो पढ़ेंगे मगर हक़ीक़त में नमाज़ नहीं पढ़ेंगे मुमकिन है कि वह ज़माना यही हो क्योंकि इस ज़माने में बेशतर लोग इमाम से अफ़आले नमाज़ में सबक़त करते हैं और इस तरह वह नमाज़ के अरकान व वाजिबात और मसनूनात को ज़ाये कर देते हैं।

तर्के वाजिबात व आदाबे नमाज़ पर तंबीह करना ज़रूरी है

अगर कोई शख़्स किसी शख़्स को नमाज़ के वाजिबात व आदाब में कोताही करता हुआ देखे तो उस पर वाजिब है कि उसको बताए और समझाए ताकि वह आइन्दा नमाज़ दुरुस्ती के साथ अदा करे और नाक़िस अदा कर्दा नमाज़ों की तलाफ़ी [illegible] इस्तिग़फ़ार करे और देखने वाला ऐसा नहीं करेगा तो करने वाले का शरीक क़रार दिया जाएगा और उसका बार और गुनाह उस पर भी होगा।

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जाहिल की वजह से आलिम की तबाही होगी क्योंकि [illegible] जाहिल को नहीं सिखात। इससे यह लाज़िम आता है कि न जानने वाले को बताना और [illegible]ाना आलिम पर वाजिब है इसी लिए हुज़ूर सरवरे काइनात ने उसको तबाही से डराया है जो वाजिब और फ़र्ज़ का तर्क करने वाला होता है वही वईद का [illegible]हिक़ होता है।

ख़ताकार की इस्लाह

हज़रत बिलाल बिन [illegible]अद से हदीस मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया गुनाह जब तक छुपा रहता है उस वक़्त तक गुनाह करने वाले के सिवा किसी और को ज़रर नहीं पहुंचता और जब सामने आ जाता है (ज़ाहिर हो जाता है) और उसकी इस्लाह नहीं की जाती तो उसका नुक़सान आम लोगों को पहुंचता है क्योंकि लोगों पर यह लाज़िम है कि जिस से गुनाह सरज़द हो रहा है उसको रोके और गुनाह की इस्लाह करें लेकिन वह ख़ामोश रहते हैं उससे उस गुनाह की ख़राबी और उसका वबाल बढ़ जाता है और सब लोग उसकी लपेट में आ जाते हैं और इस तरह बदकारों की बदकारी में नेकोकार भी शरीक हो जाते हैं अगर उन्होंने रोका और नसीहत की तो शिरकत ख़त्म हो जाती है।

हज़रत इब्ने मसऊद का क़ौल

हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि जिसने किसी को नमाज़ में ग़लती और कोताही करते

देखा और उसको उस ग़लती से नहीं रोका तो वह गुनाह में शरीक उसका शरीक होगा, देखने वाला अगर मना न करे तो वह शैताने लईन की मुवाफ़क़त करता है इसलिए कि शैतान भी तो बुराई से मना नहीं करता-बल्कि तरग़ीब देता है और उस नेकी व तक़वा से रोकता है जिस का हुक्म अल्लाह तआ़ला नें मुसलमानों को दिया है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: नेकी और तक़वा में एक दूसरे के साथ तआवुन करो।

मुसलमानों को नसीहत करना हर एक पर वाजिब है

हर मुसलमान पर वाजिब है कि दूसरे मुसलमान को नसीहत करे क्योंकि शैतान तो यही चाहता है कि मुसलमानों का दीन कमज़ोर हो जाए और इस्लाम दुनिया से मिट जाए और तमाम मख़लूक़ इसयां में मुब्तला हो जाए पस किसी ज़ी फ़हम के लिए यह मुनासिब नहीं कि वह शैतान के कहने पर चले। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

ऐ औलादे आदम! कहीं ऐसा न हो कि शैतान तुम को फ़ितने में उसी तरह डाल दे जिस तरह तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकलवाया था।

दूसरा इरशादे रब्बानी है: यक़ीनन शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तुम उसे [illegible]ना दुश्मन जानो शैतान और उसकी जुर्रीयत तो तुम को उसी तरफ़ बुला[illegible] है कि तुम [illegible]ख़ियों में से हो जाओ।

उलमा की ख़ामोशी का नतीजा

नमाज़, रोज़ा और दीगर इबादात में जो क[illegible] और कोताही [illegible]ई जा[illegible]है यह सब कुछ उलमा और फुक़हा की ख़ामोशी [illegible] नतीजा [illegible]कि [illegible]न्होंने वाज़ व पिन्द को तर्क कर दिया है और दीन की तालीम देना और आदाब सिखा[illegible] छोड़ [illegible]या इसकी [illegible]जह से इबादतों में जो नक़्स पैदा होता है अव्वलन उसकी इब्तिदा जाहिलों [illegible] होती [illegible]के बाद यह आलिमों और फ़क़ीहों में भी फैल जाती [illegible] और फि[illegible] तमाम बु[illegible]इयां उन ही [illegible]रफ़ म[illegible] हो जाती है और सब लोग यही कहने लगते हैं कि [illegible] सब क़सूर उलमा का है। किस क़दर ताज्जुब की बात है कि एक मर्द मुसलमान अगर [illegible] शख़्स को एक यहूदी या एक मुसलमान का एक जुब्बा या एक रोटी भी चुराते देखता है तो चीख़ [illegible]ता है चोर चोर पुकारता है और उसको बुरा कहता है लेकिन वही शख़्स अगर किसी [illegible] नमाज़ पढ़ते वक़्त नमाज़ के अरकान व वाजिबात को चोरी करते यानी उनको छोड़ते देखता है और उसकी नज़रों के सामने मुक़्तदी इमाम से सबक़त करता है तो ख़ामोश रहता है कुछ भी नहीं कहता है, न उसको रोकता है न उसकी इसलाह करता है बल्कि उसके मामले को नाक़ाबिले तवज्जोह समझ कर छोड़ देता है।

सबसे बड़ा चोर

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स नमाज़ में से कुछ चुराता है वह बदतरीन चोर है, सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कोई नमाज़ की चोरी कैसे कर सकता है, हुजूर ने इरशाद फ़रमाया रुकूअ व सुजूद को पूरा अदा न करना नमाज़ की चोरी है, हसन बसरी ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम को बताऊं कि लोगों में सबसे बदतरीन चोर कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया ज़रूर इरशाद फ़रमाइये वह कौन है? हुजूर ने

फ़रमाया जो न रूकूअ पूरा करता है और न सजदा मुकम्मल करता है।

हज़रत सलमान फ़ारसी फ़रमाते हैं कि नमाज़ एक पैमाना है जो पूरा देगा उसक पूरा दिया जाएगा (बदला) और जो कम देगा तो जानते ही हो कि कम देने वाले के हक़ में अल्लाह तआला ने क्या फ़रमाया है हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली या अली बिन शैबान फ़रमाते हैं कि मैं उन नुमाइन्दों में से एक था जो हुज़ूर की ख़िदमते गरामी में अपने क़बीले की तरफ़ से हाज़िर हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त फ़रमाया कि अल्लाह उसकी तरफ़ इलतेफ़ात नहीं फ़रमाता जो रूकूअ और सुजूद में अपनी कमर सीधी नहीं रखता।

इआदए नमाज़ का हुक्म

हज़रत अबू हुरैरा ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद के एक गोशा में तशरीफ़ फ़रमा थे एक शख़्स आया और नमाज़ पढ़ कर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ किया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सलाम का जवाब देने बाद फ़रमाया लौट कर जाओ और नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने हक़ीक़त में नमाज़ नहीं पढ़ी। उस शख़्स ने फिर उसी तरह नमाज़ पढ़ी जैसे पहले पढ़ी थी फिर हाज़िरे ख़िदमत होकर सलाम अर्ज़ किया, हुज़ूर ने फिर इरशाद फ़रमाया नमाज़ पढ़ लो क्योंकि तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी उस शख़्स ने तीन बार ऐसा ही किया उसके बाद हुज़ूर से अर्ज़ किया कि मैं नमाज का इल्म अच्छी तरह नहीं रखता आप मुझे नमाज़ सीखा दीजिये! हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो अच्छी तरह वुज़ू कर लो फिर क़िब्ला रु होकर तकबीर कहे फिर कुरआन में से जो कुछ याद हो पढ़ो फिर रूकूअ करो जब ठीक तरह रूकूअ कर लो तो सर उठाओ और सीधे खड़े हो जाओ फिर सजदा करो, ठीक ठीक सजदा करने के बाद बैठ जाओ जब नशिस्त ठीक हो जाए तो दूसरा सजदा करो और ठहराओ [illegible] करने के बाद सर उठाकर ठीक तरह बैठ जाओ और इसी तरह नमाज़ पूरी करो।

एक दूसरी हदीस में है कि हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ़ ने फ़रमाया है कि हम रसूलुल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर थे कि एक शख़्स आया और उसने क़िब्ला रु होकर नमाज़ पढ़ी उसके बाद वह ख़िदमते वाला में हाज़िर हुआ और सलाम पेश किया, हुज़ूर ने उससे फ़रमाया दोबारा जाकर नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी, हुज़ूर ने उसको यह हुक्म दो तीन मर्तबा दिया आख़िर उस शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हत्तल इमकान तो मैंने नमाज़ में कोई कमी नहीं की। मुझे नहीं मालूम कि आप मुझसे किस तरह नमाज अदा कराना चाहते हैं? आप ने फ़रमाया बग़ैर कामिल वुज़ू के किसी की नमाज़ नहीं होती जैसा कि अल्लाह तआला का हुक्म है अपने चेहरों और हाथों को कोहनियों तक धोओ, सर का मसह करो, टख़नों तक पैर धोओ, उसके बाद अल्लाहु अकबर कह कर सुब्हानका अल्लाहुम्मा पढ़ो फिर तकबीर कह कर रूकूअ में जाओ, दोनों हथेलियों को घुटने पर रखो यहां तक कि आज़ा अपनी हालत पर ठहर जायें, फिर रूकूअ से उठते हुए समेअल्लाहो लिमन हमेदह कहो और सीधे खड़े हो जाओ यहां तक कि रीढ़ की हड्डी सीधी हो जाए फिर तकबीर कहते हुए सजदे में जाओ इसी तरह आप ने नमाज़ की चारों रकअतें अदा करने की तशरीही हालत बयान फ़रमाई उसके बाद फ़रमाया ऐसा किए बग़ैर तुम में से किसी की नमाज पूरी नहीं होगी।

गौर कीजीये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ और रूकूअ व सुजूद को पूरा करने का हुक्म दिया और इरशाद फ़रमा दिया कि इस के बगैर नमाज़ कबूल नहीं होती अलावा अज़ीं हुजूर वाला ने एक शख़्स को नाक़िस नमाज़ पढ़ते देखा तो आपने ख़ामोश न रहे बल्कि उसकी इसलाह फ़रमा दी पस अगर वक़्ते ज़रूरत बयान व हुक्म की ताख़ीर जाइज़ होती और ना वाक़िफ़ की तरदीद और उसकी तालीम का तर्क दुरुस्त होता तो हुजूर ख़ामोशी और सुकूत इख़्तेयार फ़रमाते और उससे क़ब्ल सहाबा कराम को मुफ़स्सलन जो कुछ बता चुके थे उसी पर इकतिफ़ा फ़रमाते और नाक़िस नमाज़ पढ़ने वाले से दरगुज़र फ़रमाते लेकिन हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शिद्दत के साथ उस शख़्स से नमाज़ का इआदा कराया और सही नमाज़ की तालीम दी इस से साफ़ ज़ाहिर है कि जाहिल को बताना (तालीम देना) वाजिब है। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हाज़िरीने मजलिस को भी ताकीद फ़रमा दी कि अगर वह किसी को इस तरह नमाज़ पढ़ते देखें तो उसी तरह (उसकी इसलाह) करें और अपने साथियों को भी बता दें और सीखा दें ताकि अहकामे शरअ की तालीम क़यामत तक इसी तरह जारी व सारी रहे।

मोअज़्ज़िन के आदाब

मोअज़्ज़िन पर वाजिब है कि अज़ान में दोनों शहादतों की अदाएगी में अपना तलफ़्फ़ुज़ दुरुस्त रखे (शीन सीन न कहे) औक़ात को पहचानता हो फ़ज्र की अज़ान के सिवा दूसरी नमाज़ों की अज़ान वक़्त से पहले न दे, अज़ान देनी की उजरत न ले बल्कि सिर्फ़ सवाब के लिए अज़ान दे, अल्लाहु अकबर और अश्शहदु अल ला इलाहा इल्लाह और अश्शहदु अन्ना मोहम्मदन रसूलुल्लाह कहते वक़्त क़िब्ला की तरफ़ मुंह रखे और हय्या अलस्सलाह और हय्या अलल फ़लाह कहने के वक़्त दायें बायें मुंह फेरे, मग़रिब की अज़ान दे तो अज़ान व इक़ामत के दर्मियान थोड़ी देर को बैठ जाए।

जनाबत की हालत में या बेवुजू रह कर अज़ान देनी मकरुह है। इक़ामत के बाद सफ़ों को चीरता हुआ पहली सफ़ में जाकर खड़ा होना मना है, मुनासिब तो यही है कि जहां अज़ान दी है उसी जगह इक़ामत कहे लेकिन इस में अगर दुश्वारी हो मसलन अज़ान मिनारा पर चढ़कर दी थी, या ख़ारिज मस्जिद किसी जगह अज़ान दी थी तो वहां से उतर कर नमाज़ की जगह पहुंच कर इक़ामत कहे।

नमाज़ में खुशूअ व खुज़ूअ

खुशूअ व खुज़ूअ, आजिज़ी, इन्कसारी, ख़ौफ़ व ख़शीयते इलाही और रग़बत व शौक़ के साथ नमाज़ अदा करने पर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल होती है, नमाज़ में नमाज़ी के पेशे नज़र अल्लाह तआला की खुशनूदी हो, मुनाजात, क़याम, रूकूअ और सुजूद की हालत में यह जाने कि अल्लाह के सामने कमर बस्ता रहना है इस लिए अपने दिल को दुनियावी तसव्वुरात से ख़ाली कर ले और अदाए फ़र्ज़ की सरगर्म कोशिश करे मालूम नहीं के इस नमाज़ के बाद भी दूसरी नमाज़ पढ़ सकेगा या नहीं या दूसरी नमाज़ से पहले ही उसको मौत का प्याम आ जाएगा। लिहाज़ा अपने रब के सामने उम्मीद व बीम की हालत में ग़मगीन और ख़ौफ़ज़दा खड़ा हो, नमाज़

क़बूल होने की उम्मीद लगाए रहे और रद्द किये जाने से डरता रहे, नमाज़ क़बूल हो गई तो सआदत हासिल होगी अगर लौटा दी गई तो बद बख़्ती और बद नसीबी का सामना होगा।

ऐ वह मुसलमान जो नमाज़ में और दूसरे आमाल में नूरे इस्लाम से मुनव्वर है तेरा अन्देशा बहुत अज़ीम है, नमाज़ हो या दूसरे फ़राइज़े ख़ुदावन्दी सब में रंज व ग़म और ख़ौफ़ व ख़तर तुझ से बहुत की क़रीब है इस लिए कि तुझे नहीं मालूम कि तेरी कोई नमाज़ या कोई नेकी क़बूल हुई भी या नहीं, तेरा कोई गुनाह माफ़ भी हुआ या नहीं लेकिन उस पर भी हंसता है, ख़ुश होता है, तू ग़फ़लत में पड़ा है, दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी की ख़ातिर अपनी दाइमी और अबदी ज़िन्दगी से ग़ाफ़िल है, उसका तुम को कुछ इल्म नहीं कि तुम्हारा अंजाम क्या होगा। एक सच्चे अमीन और मुख़बिर के पास यह यक़ीनी ख़बर आ चुकी है कि तुझे दोज़ख़ पर से ज़रूर गुज़रना है। अल्लाह तआला का इरशाद है: तुम में से कोई ऐसा नहीं जो दोज़ख़ पर न उतरे। और तुझे उसका यक़ीन नहीं। जब तक अल्लाह तेरी ताअत क़बूल न करे उस वक़्त तक तुझ को सब से ज़्यादा गिरया करना और ग़म में मुबतला रहना चाहिये। फिर तुझे यह भी तो मालूम नहीं है कि तेरी शाम के बाद सुबह भी होगी या [illegible] और तेरी सुबह के बाद शाम आएगी या नहीं और तुझे जन्नत की बशारत मिलेगी या दोजख़ की, तेरी इस हालत [illegible] इक़्तेज़ा तो यह था कि तुझे न बीवी बच्चों से ख़ुशी हासिल होगी और न माल व म[illegible] से।

इन्सान बड़ी भूल और एक अज़ीम ग़फ़लत में

तुम्हारी इस ग़फ़लत और इस भूल पर बड़ा ताज्जुब है कि दिन और रात की हर घड़ी मुम्हारी ज़िन्दगी कम हो [illegible] है, तुम को मौत की तरफ़ हंकाया जा रहा है पस मौत से डर और उस अज़ीम ख़तरे से जो तुझ पर छाया हुआ है, ग़ाफ़िल मत [illegible] मौत का मज़ा बिल आख़िर तुम्हें चखना है, तुम्हें सब कुछ छोड़कर ख़ाली हाथ इस [illegible] जाना है मुमकिन है सुबह या शाम मौत तेरे घर डेरे डाल दे और उस का रूख़ तेरे मकान की जानिब हो जाए, आख़िर सब कुछ छीन कर तुझे यहां से निकाला जाना ही है फिर तेरा रूख़ ख़्वाह दोज़ख़ की तरफ़ हो या जन्नत की तरफ़ (इस की तुझे ख़बर नहीं) दोज़ख़ की हक़ीक़त उसके अज़ाब की मिक़दार और तरह तरह के अज़ाबों का जानना और समझना ना मुमकिन है, वह तहरीर के इहाते और रिवायत के दायरे में नहीं आ सकते।

जन्नत का तलबगार और दोज़ख़ से फ़रारी

एक नेक बन्दे का क़ौल है कि मैं हैरान हूं कि दोज़ख़ के अज़ाब से भागने वाला किस तरह सोता है और जन्नत के तलबगार को नींद किस तरह आती है। ख़ुदा की क़सम तू अगर दोज़ख़ से फ़रार और जन्नत की आरज़ू दोनों से ख़ाली है तो फिर तू अज़ाब पाने वाले बद नसीबों के साथ तबाही में मुबतला होगा और तेरी बद बख़्ती अज़ीम तरीन बदबख़्ती होगी तेरा ग़म और तेरी गिरया व ज़ारी बहुत तवील होगी और अगर तुझे यह दावा है कि तू दोज़ख़ से फ़रार चाहता है और जन्नत का ख़्वाहां है तू होशियार हो कि आरज़ूएं तुझे फ़रेब में मुबतला न कर दें;

कोशिश और काविश से काम ले और नफ़्स और शैतान से हमेशा डरता रह, इन दोनों के नफ़ूस की जगह बहुत ही बारीक है यह ज़बरदस्त लुटेरे हैं और इन की मक्कारियों में ख़बासत

ही अदावत है, पस दुनिया से ख़बरदार रह, कहीं यह अपनी ज़ेबाईश से तुझे न मोह ले, कहीं तुझे वह अपनी बे माया सरो सामान से, झूट से और सर सब्ज़ी व शादाबी से फ़रेब में मुबतला न कर दे कि

दुनिया धोका देती और ज़रर पहुंचाती है

हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि दुनिया धोका देती है गुज़र इन से और मुज़रत रसां हैं।

अल्लाह तआला का इरशाद है: कहीं तुम को दुनियवी ज़िन्दगी फ़रेब में न डाले, कहीं फ़रेब देने वाला शैतान तुम्हें अल्लाह के साथ फ़रेब में मुबतला न कर दे।

पस अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो, नमाज़ और दूसरे अहकाम की इताअत करो, ममनूआत से बचो, ज़ाहिरी और बातिनी गुनाहों को छोड़ दो, अल्लाह किसमत में जो कुछ लिख दिया है जितना रिज़्क मुकद्दर कर दिया है उस पर राज़ी और शाकिर रहो, अपने रब के अवामिर और मनाही के पाबन्द रहो और उसके फ़रमा बरदार बन जाओ। जिस काम के इरतेकाब से मना किया है उस हुक्म से न भागो (ममनूआत से बचो) तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ रिज़्क की जो तक़सीम की गई है और बहुत से ऐसे काम हैं जिन को तुम पसन्द नहीं करते उनके मसालेह तुम को मालूम नहीं और उनका अंजाम तुम से पोशीदा है उनका अज्र तुम पर ज़ाहिर नहीं पस तुम अल्लाह की तदबीरों पर एतराज़ कर के उसकी नाख़ुशी के सज़ावार मत बनो। अल्लाह तआला का इरशाद है:

बसा औक़ात तुम किसी चीज़ को बुरा जानते हो हालांकि तुम्हारे लिए बेहतर वही है और बसा औक़ात तुम किसी शय को अच्छा समझते हो हालांकि वह तुम्हारे लिए बुरी होती है, अल्लाह तआला सब हक़ाइक़ का आलिम है और तुम नहीं।

तुम हमेशा अपने मौला के फ़रमाबरदार और उसके फ़ैसले पर राज़ी और उसकी भेजी हुई मुसीबत पर साबिर और उसकी नेमतों पर शुक्र गुज़ार रहो उसके नाम से उसकी नेमतों और उसकी कुदरत की निशानियों का ज़िक्र करके उस से दुआ करो और उसके फ़ेअ़ल और उसकी मशीयत और उसके इन्तिज़ाम पर नुक्ता चीनी न करो उस वक़्त तब उस पर अमल पैरा रहो कि मौत आ जाए। नेक लोगों के साथ मरना और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के साथ तुम्हारे हश्र हो, रब्बुल आलमीन की रहमत और उसके करम से तुम को भी जन्नत में दाख़िला मिल जाए।

ख़्वास की नमाज़

अल्लाह तआला के ख़ास बन्दों की नमाज़

अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे जो दिल को बेदार रखते और ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ और मुराक़बा करते, दिलों की मुहाफ़िज़त करते और ख़ुदावन्द तआला के मुक़र्रब हैं, उनकी नमाज़ की हक़ीक़त और है। एक रिवायत में है कि हज़रत युसूफ़ बिन असाम ख़ुरासान की जामा मस्जिद में पहुंचे आपने वहां देखा की एक बहुत बड़ा मजमा हलक़ा बनाए बैठा है, उन्होंने दरयाफ़्त किया यह कौन लोग हैं, किसी ने उनको बताया यह शैख़ हातिम का हलक़ा है और इस वक़्त वह ज़ुहद

और तक़वा और बीम व उम्मीद के मौज़ूअ पर बातें कर रहे हैं, युसूफ़ ने अपने साथियों से क
चलो इनसे नमाज़ के बारे में कुछ पूछें अगर इन्होंने ठीक ठीक जवाब दिया तो हम भी व
बैठकर उनका वाज़ सुनेंगे (वर्ना नहीं) चुनांचे युसूफ़ उनके पास पहुंचे सलाम किया और क
अल्लाह तआला आप पर रहमत फ़रमाए हम को चन्द मसाएल दरयाफ़्त करना है, हातिन
कहा पूछिये क्या पूछना है, युसूफ़ ने कहा कि मैं नमाज़ के बारे में कुछ दरयाफ़्त करना चाहत
हूं हातिम ने फ़रमाया कि मारफ़ते नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त करना चाहते हो या अदाबे नमाज़
के बारे में? युसूफ़ ने कहा कि मेरा सवाल आदाबे नमाज़ के बारे में है।

आदाबे नमाज़

हातिम ने फ़रमाया, आदाबे नमाज़ यह हैं कि हुक्म के मुताबिक़ तुम उठो, सवाब की उम्मीद करके मस्जिद को चलो फिर नीयत करके अज़मत के साथ तकबीर कहो, तरतील के साथ कुरआन पाक पढ़ो, ख़ुशूअ के साथ रूकूअ करो, आजिज़ी के साथ सजदा करो, इख़लास के साथ तशहहुद पढ़ो और रहमत से सलाम फेरो।

मारफ़ते नमाज़

यह सुन कर युसूफ के अहबाब ने कहा कि अब तो मारफ़ते नमाज़ के बारे में इनसे दरयाफ़्त करना चाहिए चुनांचे युसूफ़ ने मारफ़ते नमाज़ के बारे में हातिम से दरयाफ़्त किया, उन्होंने फ़रमाया कि मारफ़ते नमाज़ यह है कि जन्नत को अपने दायें जानिब और दोज़ख़ को अपने पीछे पुलसिरात को अपने पैरों तले और मीज़ान को आंखों के सामने समझो और यक़ीन रखो कि ख़ुदा को देख रहो, अगर यह मरतबा हासिल न हो तो यह समझो कि अल्लाह तआला तुम को देख रहा है। युसूफ़ ने उनसे दरयाफ़्त किया कि आप कितने अर्से से इस तरह नमाज़ अदा कर रहे हैं? उन्होंने फ़रमाया बीस साल से, यह सुन कर युसूफ़ ने अपने साथियों से कहा कि उठो ताकि हम अपनी पचास बरस की नमाज़ों को दोबारा अदा करें। युसूफ़ ने हज़रत हातिम से यह भी सवाल किया कि आप ने मारफ़त की नमाज़ की यह तालीम कहां से हासिल की उन्होंने फ़रमाया उन किताबों से जो आप ने हमारे लिए इस्तिफ़ादा के लिए लिखी हैं।

अबू हाज़िम की वज़ाहत

इसी तरह का एक वाक़िआ अबू हाज़िम अल मरज का है अबू हाज़िम का बयान है कि मैं समुन्दर के साहिल पर था एक सहाबी से मुलाक़ात हुई, सहाबी ने फ़रमाया अबू हाज़िम क्या तुम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ना जानते हो, मैंने कहा मैं फ़राईज़ और सुन्नतों को अच्छी तरह जानता हूं इसके अलावा अच्छी तरह नमाज़ पढ़ने के और क्या मानी हैं? सहाबी ने फ़रमाया अबू हाज़िम बताओं अदाइगी फ़र्ज़ के लिए खड़े होने से क़ब्ल कितने फ़राइज़ हैं? मैंने कहा छः फ़र्ज़ हैं, उन्होंने दरयाफ़्त किया वह क्या हैं? मैंने कहा (1) तहारत (2) सतर औरत (सतर पोशी) (3) नमाज़ के लिए एक जगह का इन्तिख़ाब (4) नमाज़ के लिए खड़ा होना (5) नीयत करना (6) और क़िबला रू होना। उन्होंने कहा कि किस नीयत के साथ घर से मस्जिद की तरफ जाते हो? मैंने कहा रब से मुलाक़ात करने की नीयत के साथ, उन्होंने कहा किस नीयत के साथ मस्जिद में दाख़िल होते हो? मैंने कहा इबादत व बन्दगी की नीयत से, फिर दरयाफ़्त किया कि किस नीयत

से इबादत के लिए खड़े होते हो? मैंने कहा बन्दगी की नीयत से, अल्लाह तआला की रबूबियत का इक़रार करते हुए। सहाबी ने फिर दरयाफ़्त किया कि अबू हाज़िम किन चीज़ों के साथ क़िबला की तरफ़ मुंह करते हो, मैंने कहा कि तीन फ़राईज़ और एक सुन्नत के साथ, पूछा वह क्या हैं? मैंने जवाब दिया, क़िबला रू खड़ा होना फ़र्ज़ है, नीयत फ़र्ज़ है और तकबीरे तहरीमा फ़र्ज़ है (यह तीन फ़राईज़ हुए) और तकबीरे तहरीमा में दोनों हाथ उठाना सुन्नत है। सहाबी ने पूछा कितनी तकबीरें फ़र्ज़ हैं और कितनी सुन्नत? मैंने कहा चौरानवे (94) तकबीरें हैं और उनमें सिर्फ़ पांच तकबीरें फ़र्ज़ हैं बाक़ी सब सुन्नत हैं, उन्होंने दरयाफ़्त किया कि नमाज़ किस चीज़ से शुरू करते हो? मैंने कहा तकबीर से, उन्होंने पूछा नमाज़ की बुरहान क्या है? मैंने कहा क़िरअत, पूछा नमाज़ का जौहर क्या है? मैंने कहा उसकी तसबीहात, उन्होंने पूछा नमाज़ की ज़िन्दगी क्या है? मैंने कहा ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ, उन्होंने पूछा ख़ुशूअ क्या है? मैंने कहा सजदागाह पर नज़र जमाए रखना, उन्होंने दरयाफ़्त किया नमाज़ का वक़ार क्या है? मैंने कहा सुकून और इत्मिनान, उन्होंने पूछा कि वह फ़ेअ़ल कौन सा है जिसकी बिना पर नमाज़ के सिवा हर फ़ेअ़ल मना हो जाता है? मैंने कहा तकबीरे तहरीमा, उन्होंने ने पूछा नमाज़ को ख़त्म करने वाली कौन सी चीज़ है? मैंने कहा सलाम फेरना, उन्होंने दरयाफ़्त किया कि उसकी खुसूसी अलामत क्या है? मैंने कहा नमाज़ ख़त्म करने के बाद सुब्हानल्लाहि, अलहम्दु लिल्लाहि और अल्लाहु अकबर पढ़ना।

सहाबी ने दरयाफ़्त किया इन सब की कुंजी क्या है? मैंने कहा नीयत, उन्होंने कहा नीयत की कुंजी क्या है, मैंने कहा यक़ीन, उन्होंने कहा यक़ीन की कुंजी क्या है, मैंने कहा तवक्कुल, उन्होंने कहा तवक्कुल की कुंजी क्या है? मैंने कहा ख़ौफ़े ख़ुदा, उन्होंने कहा ख़ौफ़े ख़ुदा की कुंजी क्या है? मैंने कहा उमीद? दरयाफ़्त किया उम्मीद की कुंजी क्या है? मैंने कहा सब्र, उन्होंने कहा सब्र की कुंजी क्या है? मैंने कहा रज़ा, उन्होंने पूछा रज़ा की कुंजी क्या है? मैंने कहा इताअ़त, उन्होंने पूछा इताअ़त की कुंजी क्या है, मैंने कहा इक़रार, उन्होंने पूछा इक़रार की कुंजी क्या है? मैंने कहा अल्लाह की रबूबियत और उसकी वहदानियत का इक़रार, उन्होंने दरयाफ़्त किया कि यह सब बातें तुम को कहां से मालूम हुईं? मै ने कहा इल्म के ज़रीये से। उन्होंने पूछा इल्म कहां से हासिल किया? मैंने कहा सीखने से, उन्होंने कहा कि सीखने का ज़रीया क्या था? मैंने कहा अक़्ल, उन्होंने पूछा अक़्ल कहां से आई? मैंने कहा अक़्ल दो क़िस्म की है एक अक़्ल वह है जिस को सिर्फ़ अल्लाह तआला पैदा करता है दूसरी वह जिस को इन्सान अपनी लियाक़त से हासिल करता है, जब यह दोनों जमा हो जाती हैं तो दोनों एक दूसरे की मददगार बनती हैं, उन्होंने पूछा यह सब चीज़ें तुम को कहां से हासिल हुईं? मैंने कहा अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से, अल्लाह तआला आप को और हम को ऐसी तौफ़ीक़ बख़्शे जिस से वह राज़ी हो।

इन सब सवालात व जवाबात के बाद सहाबी ने मुझ से कहा ख़ुदा की क़सम! तुमने जन्नत की कुंजियां तो मुकम्मल कर लीं अब यह बताओ कि तुम्हारा फ़र्ज़ क्या है और फ़र्ज़ का फ़र्ज़ क्या है, और वह कौन सा फ़र्ज़ है जो फ़र्ज़ की तरफ़ ले जाता है? फ़र्ज़ में सुन्नत क्या है? वह कौन सी सुन्नत है जिससे फ़र्ज़ पूरा हो जाता है? मैंने जवाब दिया कि हमारा फ़र्ज़ यह है कि हम नमाज़ पढ़ें, फ़र्ज़ का फ़र्ज़ तहारत है, दायें हाथ से बायें हाथ को मिला कर (चुल्लू बना कर) पानी लेना ऐसा फ़र्ज़ है जो दूसरे फ़र्ज़ तक पहुंचाता है और पानी से उंगलियों का ख़िलाल करना ऐसी सुन्नत है जो फ़र्ज़ में दाख़िल है और वह सुन्नत जिस से फ़र्ज़ की तकमील हो जाए ख़तना

कराना है यह सुनकर सहाबी ने फ़रमाया अबू हाज़िम! तुम ने अपने ऊपर हुज्जत तमाम कर ली अब कुछ बाक़ी नहीं है लेकिन इतना और बता दो कि खाना खाने में तुम पर क्या फ़र्ज़ है और क्या सुन्नत है, मैंने उनसे कहा कि क्या खाना खाने में किसी फ़र्ज़ व सुन्नत होते हैं? उन्होंने कहा हां इसमें चार फ़र्ज़ हैं चार सुन्नतें हैं और चार बातें मुस्तहब हैं।

खाना खाने में फ़राइज़ व सुनन और मुस्तहब्बात

फ़रमाया फ़र्ज़ तो यह बातें हैं (1) इब्तिदा (शुरु करते वक़्त) बिस्मिल्लाह कहना (2) अल्लाह की हम्द करना (3) शुक्र बजा लाना (4) पहचानना कि जो खाना अल्लाह ने दिया है वह हलाल है या हराम। बायें रान पर ज़ोर देकर बैठना (टेक लगाना) तीन उंगलियों से खाना, लुक़मा, ख़ूब चबाना आख़िर में उंगलियां चाटना, यह चार सुन्नतें है, पहले दोनों हाथ धोना, लुक़मा छोटा लेना, अपने सामने से खाना, और अपने हम तआम की तरफ़ कम देखना यह चारों मुस्तहब्बात या तहज़ीबी उमूर हैं।

बाब: 21

नमाज़े जुमा, नमाज़े ईदैन, नमाज़े इस्तिसक़ा नमाज़े कसूफ़ व ख़सूफ़, नमाज़े ख़ौफ़ नमाज़ में क़स्र, नमाज़े जनाज़ा व दीगर मसाएल

नमाज़े जुमा

नमाज़े जुमा की फ़र्ज़ीयत के बारे में दलील बारी तआला का यह इरशाद है:

ऐ ईमान वालो! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए तो अल्लाह की याद (नमाज़) के लिए जल्द जाओ और ख़रीद व फ़रो[illegible] को तर्क कर दो।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे [illegible]रामी है कि अल्लाह [illegible]आला ने जुमा के दिन की नमाज़ फ़र्ज़ की है। एक दूसरा इरशादे गिरामी है कि जिसने [illegible]ला उ[illegible] तीन जुमा तर्क कर दिये अल्लाह उसके दिल पर मोहर लगा देता है। [illegible]स शख़्स पर [illegible]ों नमाज़ें फ़र्ज़ हैं उस पर जुमा भी फ़र्ज़ है बशर्ते कि वह वतन में हो या ऐसे [illegible] और ऐसी ब[illegible]ती में मोक़ीम हो जहां चालीस आक़िल व बालिग़ और आज़ाद अफ़रा[illegible] रहते हों, अ[illegible]र कोई [illegible]ख़्स ऐसे गांव में रहता हो जहां चाली[illegible] मर्द न [illegible]किन उस[illegible]व में [illegible]माज़े जुमा [illegible] अज़ान दूसरी बस्ती या शहर से सुनाई देती हो [illegible] शहर एक फ़रसंग (फ़रस[illegible]) के फ़ासले प[illegible] तो ऐसी जगह जुमा अदा करना वाजिब है, बग़ैर [illegible] के जुमा [illegible]ड़ना जा[illegible] नहीं, [illegible] सूरत में जुमा को तर्क करने और बाक़ी दूसरी नमाज़ों की ज[illegible]अत तर्क [illegible]रने में माजूर समझा जा[illegible]। मसलन कोई शख़्स बीमार हो या शिरकते जुमा [illegible]ह से माल के ज़ाया हो जाना का डर हो या किसी अज़ीज़ की मौत का डर हो कि उसकी [illegible] मौजूदगी में वह मर जाएगा या पेशाब या पाख़ाना की सख़्स हाजत हो या खानां मौजूद हो औ[illegible] भूका हो या हाकिम की तरफ़ से गिरफ़्तारी का अंदेशा हो क़र्ज़ ख़्वाह का डर हो कि वह [illegible] छोड़ेगा या यह डर हो कि जुमा की नमाज़ में शरीक होने पर जो माल मिल सकता है वह न मिल सकेगा या नीन्द का इस क़दर ग़लबा हो कि नमाज़े जुमा का वक़्त गुज़र जाए, बारिश, कीचड़ या शदीद तूफ़ान मानेअ हो (यह सबकी सब उज़्रे शरई की सूरतें हैं)।

जुमा की रकअतें

जुमा की (फ़र्ज़) दो रकअतें हैं जो ख़ुतबा के बाद इमाम के साथ पढ़ी जाती हैं, अगर जुमा की नमाज़ न मिले तो चाहे तन्हा चाहे जमाअत के साथ नमाज़े जुहर (की चार रकअतें) पढ़ ले।

जुमा की नमाज़ का वक़्त

नमाज़ का वक़्त ज़वाल से अव्वल वक़्त है जिस में नमाज़े ईद अदा की जाती है (अहनाफ़ के यहां इसका वक़्त पांचवें पहर से शुरू होता है यानी ज़वाल के बाद) लेकिन बाज़ उलमा का क़ौल है कि जुमा की नमाज़ दिन के पांचवें पहर में अदा करना चाहिए (जुमा का वक़्त पांचवें

साअत है) इनअेकादे जुमा की शर्त यह है कि जमाअत में ऐसे चालीस आदमी मौजूद हों जिन पर जुमा फ़र्ज़ है एक रिवायत में तीन आदमी भी आयें हैं।

क़िरअते मस्नूना

सुन्नत है कि क़िरअत में जहर किया जाए और सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह जुमा अव्वल रकअत में और सूरह मुनाफ़िकून दूसरी रकअत में पढ़ी जाए। क्या जुमा की नमाज़ के लिए हाकिमे इस्लाम (ख़लिफ़ए वक़्त) की इजाज़त की ज़रुरत है इसके जवाब में दो अक़वाल हैं यानी मुस्बत और मनफ़ी। शराइते जुमा में दो ख़ुतबे भी दाख़िल हैं, जुमा से पहले कोई सुन्नत (अदा करना) लाज़िम नहीं है लेकिन नमाज़े जुमा के बाद कम से कम से दो और ज़्यादा से ज़्यादा छः रकअतें सुन्नत हैं इसको बाज़ सहाबा कराम ने रसूले ख़ुदा से रिवायत किया है बाज़ उलमा फ़रमाते हैं कि नमाज़े जुमा से पहले बारह रकअत और नमाज़े जुमा के बाद छः रकअत पढ़ना मुस्तहब है।

जब मिंबर के पास अज़ान हो जाए तो ख़रीद व फ़रोख़्त बन्द कर देना चाहिए इसलिए कि बारी तआला का इरशाद है: ऐ ईमान वालो! जब जुमा की नमाज़ के लिए तुम को (अज़ान से) पुकारा जाए तो अल्लाह के ज़िक्र की जानिब चलो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो।) यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में अज़ान थी (हम्बली मसलक में) हमारे नज़दीक जुमा के दिन यह अज़ान वाजिब है और दूसरी नमाज़ों के लिए फ़र्ज़े कफ़ाया है। मिनारा पर चढ़ कर अज़ान देने का हुक्म हज़रत उस्मान ने अपने अहद में आम मसलेहत के पेशे नज़र नीज़ उन लोगों की इत्तेलाअ के लिए जो शहर से दूर आबादियों से बाहर बस्ते थे दिया था लेकिन यह पहली अज़ान ख़रीद व फ़रोख़्त को बातिल नहीं करती।

चार रकअत मुस्तहब

मुस्तहब है कि मस्जिद में दाख़िल होते ही अगर वक़्त में गुंजाईश हो तो चार रकअत पढ़े, हर रकअत में पचास पचास मर्तबा सूरह इख़्लास, सूरह फ़ातिहा के बाद पढ़े। हज़रत इब्ने उमर से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स यह चार रकअत पढ़ेगा अपना घर जन्नत में अपनी ज़िंदगी में ही देख लेगा। (उसको ज़िंदगी ही में उसका मक़ाम दिखा दिया जाएगा)।

दो रकअत नमाज़

मस्जिद में दाख़िल होने के बाद दो रकअत नमाज़ तहय्यतुल मस्जिद पढ़े, उससे क़ब्ल न बैठे जैसा कि हम इससे क़ब्ल फ़ज़ाइले जुमा में बयान कर चुके हैं जामा मस्जिद में जाने और दीगर मुताल्लिक़ाते जुमा इससे बयान हो चुके हैं।

ईदैन की नमाज़

ईदैन की नमाज़ फ़र्ज़े कफ़ाया है

ईदैन (ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़हा) की नमाज़ फ़र्ज़े कफ़ाया है किसी बस्ती में अगर कुछ

लोग पढ़ें और कुछ न पढ़ें तो न पढ़ने वालों के ज़िम्मा से साक़ित हो जाती है अगर बस्ती के तमाम लोग इस नमाज़ के अदा करने पर मुत्तफ़िक़ हो जायें तो इस सूरत में इमामे वक़्त को उन से जंग करना चाहिए यहां तक कि सब तौबा कर लें।

ईद की नमाज़ का वक़्त

ईदैन की नमाज़ का वक़्ते अव्वल वह है जब आफ़ताब बलन्द हो जाए और ज़वाल पर वक़्ते नमाज़ ख़त्मा हो जाता है। ईदुल अज़हा की नमाज़ अव्वल वक़्त पर पढ़ना मुस्तहब है कि लोगों को कुर्बानी का वक़्त मिल जाए, हां ईदुल फ़ित्र की नमाज़ में ताख़ीर करना मुस्तहब है।

ईद की नमाज़ के शराइत

ईदैन की नामज़ के शराइत यह हैं कि वतन में हो, नमाज़ियों की मुक़र्ररा तादाद (तीन या चालीस या पचास) मौजूद हो और नमाज़े जुमा की तरह इस नमाज़ के लिए भी हाकिमे इस्लाम की तरफ़ से इजाज़त हो। इमाम अहमद से एक दूसरी रिवायत इस तरह आई है कि इससे साबित होता है, तमाम शर्तों का पाया जाना ज़रुरी नहीं है। यही मज़हब इमाम शाफ़ई का है।

ईद की नमाज़ नमाज़ मैदान में मढ़ना मुस्तहब है औला यह है कि नमाज़ शहर से बाहर पढ़ी जाए, जामा मस्जिद में बिला उज़्र पढ़ना मकरुह है, सुबह सवेरे ईद की नमाज़ को जाना, उम्दा लिबास ज़ेब तन करना और खुशबू लगाना मुस्तहब है ईद की नमाज़ में औरतों की शिर्कत भी ममनूअ नहीं है। ईदगाह को पैदल जाना और दूसरे रास्ता से वापस आना मुस्तहब है इसकी इल्लत हम ईदैन की फ़ज़ीलत में बयान कर चुके हैं। ईद की नमाज़ के लिए अस्सलातु जामेआ के ज़रिया यह कह कर निदा की जा सकती है कि नमाज़ तैयार है।

ईद की नमाज़ किस तरह पढ़ी जाए

ईद की नमाज़ की दो रकअतें हैं पहली रकअत में सुब्हा नकल्लाहुम्मा और अऊज़ो बिल्लाह के दर्मियान सात तकबीरें (मअ तकबीरे तहरीमा) और दूसरी रकअत में क़िरअत से पहले पांच तकबीरें कही जायें और हर तकबीर में हाथ उठाये जायें और अल्लाहु अकबर कबीरन वल्हम्दो कसीरन व सुब्हानल्लाहो बुक्रतंव असीला कहा जाए (हनफ़ी मज़हब में पहली रकअत में तऊज़ से पहले सिर्फ़ तीन तकबीरें और दूसरी रकअत में क़िरअल के बाद रूकूअ से पहले तीन तकबीरें हैं। तकबीर में सिर्फ़ अल्लाहु अकबर कहा जाता है, इस सिलसिले में ऊपर जो कुछ बयान हुआ है वह हंबली मज़हब के एतबार से है) पहली रकअत में जब तकबीरों से फ़ारिग़ हो जाए तो अऊज़ो बिल्लाह पढ़ कर सूरह फ़ातिहा पढ़ी जाए और इसके बाद सब्बेह इसमे रब्बेकल आला पढ़े और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद हल अता का हदीसुल ग़ाशिया पढ़े, अगर पहली रकअत में सूरह क़ाफ़ वल कुरआनुल मजीद तो दूसरी रकअत में इक़त–र बतिस्साअतो पढ़े, इमाम अहमद से यही मनक़ूल है अगर इन सूरतों के अलावा और दूसरी सूरतें पढ़े तो वह भी जाइज़ है।

क्या तकबीरों के बाद आऊज़ के साथ सुब्हान–क पढ़े या तकबीरे तहरीमा के बाद ही मज़ीद तकबीरों से पहले पढ़े? जवाब यह है कि यह दोनों रिवायतें आई हैं।

ईद की नमाज़ के बाद नवाफ़िल

ईद की नमाज़ से पहले और ईद की नमाज़ के बाद नवाफ़िल ना पढ़े बल्कि नमाज़े ईद पढ़

कर घर लौट आए, अहले खाना की ज़रुरियात का इन्तिज़ाम करे और उनसे मुहब्बत व ख़ुलूस के साथ पेश आए, मसारिफ़ व नफ़क़ा में कुशादगी करे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि ईद के अय्याम खाने पीने और अहले खाना के साथ ख़ुशी और मसर्रत के इज़हार के दिन है यह हुक्म ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़हा और अय्यामे तशरीक़ के लिए है।

ईद की नमाज़ मस्जिद में

अगर ईद की नमाज़ मस्जिद में पढ़े तब भी जाइज़ है अलबत्ता मस्जिद में दाख़िल के होने पर दो रकअत "तहय्यतुल मस्जिद" पढ़े बग़ैर न बैठे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि जब तुम मस्जिद में दाख़िल हो तो जब तक दो रकअत न पढ़ लो न बैठो, यह हुक्म उमूमी है इस में दोनों ईदें भी शामिल हैं। इमाम अहमद ने जो नवाफ़िल न पढ़ने की सराहत की वह ईदगाह के लिए मख़सूस है मस्जिद के लिए नहीं है चूंकि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न तो नमाज़े ईद से पहले नवाफ़िल पढ़ते थे और न नमाज़े ईद के बाद और यही क़ौल हज़रत उमर, अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास और इब्ने उमर का है।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ईद की नमाज़ मैदान में पढ़ा करते थे अगर आप मस्जिद में पढ़ते तो तहय्यतुल मस्जिद तर्क न फ़रमाते।

नमाज़ ईद की क़ज़ा

अगर किसी शख़्स की नमाज़े ईद किसी वजह से फ़ौत हो जाए तो उसके लिए क़ज़ा मुस्तहब है और उसको इख़्तियार है कि नमाज़े चाश्त की मानिन्द चार रकअत बग़ैर तकबीराते ज़ाएदा के पढ़ ले या फिर नमाज़े ईद की तरह दो रकअत मअ तकबीराते ज़ाएदा के पढ़े ऐसे शख़्स को चाहिये कि अपने घर वालों को और दो[illegible] को जमा कर के पढ़े इस में बड़ा सवाब है।

नमाज़े इस्तिसक़ा

नमाज़े इस्तिसक़ा कब पढ़ी जाती है

इस्तिसक़ा की नमाज़ सुन्नत है, बारिश न हो तो बारिश की दुआ लिए यह नमाज़ पढ़ी जाती है। यह नमाज़ इमाम के साथ इस तरह अदा की जाए जैसे ईद की नमाज़ मैदान या ईदगाह में चाश्त के वक़्त अदा की जाती है। नमाज़े इस्तिसक़ा के अहकाम व अहवाल ईद की नमाज़ की तरह हैं।

मुस्तहब है की इस नमाज़ के लिए गुस्ल कर के पाक साफ़ होकर जाए सिर्फ़ ख़ुशबू लगाना मुस्तहब नहीं है इस लिए कि यह आजिज़ी मिसकीनी और तलबे हाजत का वक़्त होता है इस लिए पुराने कपड़े पहन कर ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ, ज़ारी व मिसकीनी, शिकस्ता हाली के साथ नमाज़ को जाना मुस्तहब है इस नमाज़ में पढ़े, बूढ़े, मर्द, औरतें, बच्चें और मुसीबत ज़दा लोग शरीक हों। मज़ालिम, गुनाहों और हुकूकूल इबाद के अतलाफ़ से सिद्क़े दिल से तौबा करें लोगों के तमाम हुकूक़ अदा करें, बेजा ली हुई चीज़ें और ज़कात, मन्नतें और कफ़्फ़ारे अदा करें, ख़ैरात

ज़्यादा करें, रोज़े बकसरत रखें, अज सरे नौ तौबा करे और मरते दम तक तौबा पर क़ायम रहने का पुख़्ता इरादा करें, सग़ीरा और कबीरा गुनाहों से इजतिनाब करें ख़लवत और जलवत में ख़ुदा से शर्म करें, ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ अल्लाह से पोशीदा नहीं है वह हर ज़ाहिर और पोशीदा चीज़ से वाक़िफ़ है।

ज़ाहिदों, नेकोकारों, आलिमों और बुज़ुर्गों और दीनदारों का वसीला इख़्तेयार करें। रिवायत में आया है कि उमर फ़ारूक़ इस्तिसक़ा की नमाज़ के लिए जब बाहर मैदान में आयें तो हज़रत अब्बास का हाथ पकड़ कर क़िबला रू होकर इस तरह दुआ मांगी, इलाही यह हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मोहतरम चाचा हैं हम इनको वसीला में पेश करते हैं इनके तुफ़ैल में तू हम को सैराब फ़रमा। रावी का बयान है कि लोग वहां से घरों को लौटने न पाए थे कि बारिश से जल थल भर गए। वजह इसकी यह है कि बारिश न होना और मेंह बन्द हो जाना, औलादे आदम की नहूसत का बदला और उनकी सज़ा है इसी लिए रिवायत में आया है कि जब काफ़िर को क़ब्र में दफ़्न कर दिया जाता है तो मुनकर नकीर आकर उससे रब, नबी और दीन के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं और जब उससे जवाब बन नहीं पड़ता तो गुर्ज़ से उसको मारते हैं उसकी ज़र्ब से वह चीख़ता है तो उस की चीख़ को जिन्न व इन्सान के सिवा बाक़ी तमाम मख़लूक़ सुनती है और लानत भेजती है हत्ता कि वह बकरी भी उस पर लानत भेजती है जो क़स्साब की छुरी के नीचे होती है वह कहती है कि हम पर इस मनहूस के बाइस बारिश बन्द हो गई, अल्लाह तआला का इरशादः

उन लोगों पर अल्लाह और लानत करने वालों की लानत है, का यही मलतब है। आदमी जब बिगड़ जाता है तो उसका बिगाड़ हर जानदार तक असर अन्दाज़ होता है अगर दुरुस्त होता उसकी दोस्ती का असर हर चीज़ तक पहुंच जाता है इन्सान का बिगाड़ अल्लाह तआला की ना फ़रमानी और उसकी दुरुस्ती उसकी ताअत व फ़रमां बरदारी के बाइस होती है।

नमाज़े इस्तिसक़ा का इमाम कौन हो

ख़लीफ़ा या ख़लीफ़ा का नायब लोगों को नमाज़े इस्तिसक़ा की दो रकअतें बग़ैर अज़ान के पढ़ाये, पहली रकअत में तकबीरे तहरीमा के अलावा छः तकबीरें ज़ाइद कही जाएंगी और दूसरी रकअत में पांच ज़ाएद तकबीरें कही जाएंगी, यह तकबीरात दोनों रकअत में क़याम की तकबीर के अलावा हैं, हर दो तकबीरों के दर्मियान अल्लाह तआला का ज़िक्र करे, नमाज़ के बाद इमाम खुतबा पढ़े। एक रिवायत में नमाज़ से क़ब्ल खुतबा पढ़ने को भी जाइज़ कहा गया है। इमाम अहमद से यह भी मनकूल है कि खुतबा की तक़दीम व ताख़ीर में इमाम मुख़तार है इमाम अहमद ही से एक रिवायत में आया है कि नमाज़े इस्तिसक़ा के लिए खुतबए मसनूना नहीं है बल्कि नमाज़ के बाद बजाए खुतबा सिर्फ़ दुआ करे। अलग़र्ज़ इमाम को जिस में आसानी हो वही करे।

इमाम अगर खुतबा पढ़े तो खुतबा का आग़ाज़ ईद के खुतबा की तरह तकबीर से करे और दुरुद शरीफ़ कसरत से पढ़े, इन आयात को भी खुतबा में पढ़े।

हज़रत नूह ने उनसे कहा अपने रब से तुम इस्तिग़फ़ार करो वही बख़्शने वाला है वह आसमान से मुसलाधार बारिश उतारता है।

खुतबा से फ़ारिग होने के बाद क़िबला रु होकर खड़े होकर अपनी चादर उलट दे, दायें

कांधे वाला हिस्सा बायें कांधे पर और बायें कांधे वाला हिस्सा दायें कांधे पर डाला दे, बालाई किनारा नीचे और नीचे का किनारा ऊपर को डाले तमाम लोग भी इसी तरह करें, और घर वापस पहुंचने तक चादरों की हैयत इसी तरह रहने दें। घर पहुंच कर बतौर खुशफ़ाली दूसरे कपड़ों के साथ चादरों को भी बदल लें गोया सबने भीगा हुआ लिबास बदल डाला यह नेक शगुन है इससे खुश्क साली और इमसाक बारां दूर हो जाता है। हदीस शरीफ़ में यही तरीक़ा मनकूल है। उबाद बिन तमीम अपने चचा के हवाले से बयान करते हैं कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को लेकर नमाज़े इस्तिसक़ा के लिए तशरीफ़ ले गए और जहरी क़िरअत के साथ दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। रिदाये मुबारक को फेरा और दुआ फ़रमाई, अल्लाह तआला से बारिश तलब फ़रमाई।

इमाम को चाहिए कि क़िबला रु होकर दोनों हाथ उठा कर यह दुआ करे, रसूलुल्ला[illegible] सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी दुआ मांगी थी।

इलाही! हमारे लिए पानी भेज जो मुसीबत से नजात दे, इसका नतीज[illegible] और अंजाम अच्छा हो खुशगवार हो वह सैराब करने वाला और ज़मीन[illegible] असर करने वाला हो[illegible]आम तौर पर जारी होने वाला और कसरत से जारी होने वाला हो, इला[illegible] हमारे पास पानी भे[illegible] हमें पानी से ना उम्मीद होने वाले लोगों में से न बना, इलाही ऐसा पा[illegible] हमको अत[illegible] फ़रम[illegible] जो अज़ाब हो, न वह पानी जो हमारी खेतियों को बहा ले जाने वाला [illegible]र न वह मु[illegible]बत [illegible] डाले न हमारे घरों को गिराए न उन्हें ग़र्क़ करे, ऐ अल्लाह! श[illegible]रों में और [illegible]न्दों में [illegible] अफ़सुर्दगी और भूक फैली हुई है, बहुत तंगी [illegible] मुसीबत [illegible]पेश है इन बातों का [illegible]ला तुझ ही से है हम तेरे सिवा किसी के पास [illegible]ला नहीं [illegible]रते, इलाही [illegible]री ख[illegible]ती को सरस[illegible] कर दे और हमारे जानवरों का दूध बढ़ा दे और हम पर आसमान की बरकतें ना[illegible] और ज़मीन की बरकतों से हमारे फ़स्लें उगा दे, जो नर्म और [illegible]लहाती [illegible]र आती [illegible]ाही! [illegible]को भूक प्यास की मुशक़्क़त और सख़ती से महफ़[illegible] रख तेरे सिवा और कोई नहीं जो हम को [illegible]स मुशक़्क़त से बचाए, इलाही हम तेरी ही बख़्शिश [illegible]हैं इसलिए कि तू ही बख़्शने वाला है, इलाही हम पर बरसने वाला अब्र भेज, ऐ अल्लाह! तू ने अ[illegible] हुजूर में हम को दुआ करने का हुक्म दिया है और तू ने हम से दुआ क़बूल करना का[illegible] वादा किया है, इसलिए तेरे इरशाद के मुताबिक़ हम ने तुझ से दुआ की है पस अब तू अपने वादा के मुताबिक़ इसको क़बूल फ़रमा।

ऐसा क़ौल यह भी है कि ख़ुतबा के दौरान क़िबला की तरफ़ रूख़ करे और क़िबला रु हो कर ख़ुतबा ख़त्म करे इसके बाद दुआ करे लेकिन बेहतर यही है जो अव्वलन ज़िक्र किया जा चुका है कि ख़ुतबा से फ़ारिग़ होकर क़िबला रूख़ होकर दुआ करे क्योंकि ख़ुतबा में मोअज़त व पिन्द तंबीह और ख़ौफ़ का तास्सुर होता है और यह मक़सूद उसी वक़्त हासिल होता है जब कि लोगों की तरफ़ ख़तीब का रूख़ हो ताकि उसका वाज़ कानों से लोगों के दिलों तक पहुंच सके, क़िबला की तरफ़ मुंह करने से लोगों की तरफ़ पुश्त हो जाती है जैसा कि नमाज़ में इमाम की पुश्त होती है (इस तरह ख़िताबत का मक़सूद फ़ौत हो जाता है)

सूरज और चान्द गरहन और नमाज़

नमाज़े कसूफ़ सुन्नते मोअक्कदा है

नमाज़े कसूफ़ या सूरज गरहन की नमाज़ सुन्नते मोअक्कदा है। गरहन शुरु होने से मुकम्मल रोशनी की वापसी तक इस नमाज़ का वक़्त है यानी सूरज या चांद जिस वक़्त गहना शुरु हुआ यानी धुंधले पन और किरनों का घटाओ का आग़ाज़ हो तब से नमाज़ का वक़्त शुरु हो जाता है और जब तक यह हालत बिलकुल ख़त्म न हो जाए, वक़्त बाकी रहता जब गरहन का ज़वाल हों जाता है इस नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाता है।

नमाज़ का तरीक़ा

मसनून यह कि नमाज़ जामा मस्जिद में अदा की जाए और इमाम दो रकअत नमाज़ पढ़ाये, पहली रकअत में तकबीरे तहरीमा के बाद सना और तऊज़ के बाद सूरह फ़ातिहा पढ़ कर सूरह बक़र पढ़े फिर रूकूअ करे, रूकूअ इतना तवील हो कि सौ आयतों के बक़द्र सुब्हान रब्बीयल अज़ीम की तकरार करता रहे फिर समेअल्लाहु लिमन हमेदह कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाए और सूरह फ़ातिहा पढ़े इसके बाद सूरह आले इमरान पढ़ कर दोबारा रूकूअ करे जो पहले से तवालत में कम हो फिर सर उठाए और सजदे में जाए रूकूअ की तरह सजदे भी इतने तवील करे कि हर सजदे में सौ आयतों के बक़द्र सुब्हान रब्बीयल आला पढ़ सके फिर दूसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाए दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा पढ़ कर सूरह निसा पढ़े फिर पहली रकअत की तरह तवील रूकूअ करे फिर सर उठाए और सीधा खड़ा होकर सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह माएदा पढ़े, अगर यह सूरतें अच्छी तरह याद न हों तो [illegible] आयात के बक़द्रे कुरआन मजीद की दूसरी सूरतें पढ़ें अगर कुछ भी न पढ़ सकता हो तो सूरह इख़लास ही पढ़े लेकिन इतनी मिक़दार में कि मज़कूरा सूरतों की तादाद के बराबर हो।

हर बार क़िरअत की मिक़दार

अव्वल रकअत में दूसरे क़याम के अन्दर क़िरअत अव्वल क़िरअत से 2/3 होगी और तीसरे क़याम में (दूसरी रकअत के अन्दर) क़िरअत की मिक़दार अव्वल क़याम की क़िरअत से 1/2 होगी और चौथे क़याम में क़िरअत की मिक़दार तीसरे क़याम की क़िरअत से 2/3 होगी। इसी तरह हर तसबीह (रूकूअ व सुजूद) की मिक़दार हर क़याम की क़िरअत की मिक़दार से 3/2 (दो तिहाई) के बराबर होगी, दूसरी रकअत में रूकूअ व सुजूद और तशहहुद के बाद सलाम फेर दे इस तरह इस नमाज़ में चार रूकूअ और सुजूद करे यानी हर रकअत में दो रूकूअ होंगे। लोग नमाज़ पढ़ने में मसरूफ़ हों और घर में खुल जाए तो नमाज़ में तख़फ़ीफ़ कर देना मुस्तहब है लेकिन नमाज़ को मुनक़तअ नहीं करना चाहिए यह नमाज़ घर में भी पढ़ना जाइज़ है लेकिन मस्जिद में इस को पढ़ना अफ़ज़ल है।

नमाज़े कसूफ़ की दलील

सूरज गरहन की नमाज़ की दलील वह हदीस है जो हज़रत आइशा ने नक़्ल फ़रमाई है आप

फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहदे मुबारक में एक मर्तबा सूरज गरहन हुआ, हुज़ूरे अक़दस ईदगाह को तशरीफ़ ले गए, वहां पहुंच कर आपने तकबीरे तहरीमा कही लोगों ने भी इत्तेबा की फिर आप ने जहरी क़िरअत फ़रमाई और तवील क़याम के बाद रूकूअ किया, फिर सरे अक़दस उठा कर समेअल्लाहु लिमन हमेदह फ़रमा कर फिर तवील क़िरअत फ़रमाई फिर रूकूअ फ़रमाया फिर खड़े हुए फिर सजदा फ़रमाया फिर सरे अक़दस उठाया और फिर सजदा किया और उसके बाद खड़े हो गए, हुज़ूर ने दूसरी रकअत भी इसी तरह अदा फ़रमाई (इस तरह पूरी नमाज़ में हुज़ूर ने चार रूकूअ और चार सजदे अदा फ़रमाए) नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आफ़ताब व माहताब अल्लाह तआला की दो निशानियां हैं उनमें किसी के जीने और मरने से गहन नहीं लगता, जब तुम कभी गहन देखो तो घबरा कर नमाज़ पढ़ने लगा करो।

नमाज़ ख़ौफ़

नमाज़े ख़ौफ़ की शर्तें

नमाज़े ख़ौफ़ इन चार शर्तों के साथ जाएज़ है (1) एक यह मद्दे मुक़ाबिल दुशमन से जंग करना जाएज़ हो (2) दुशमन सम्ते क़िबला के सिवा और किसी दूसरी सम्त हो (3) दुशमन के हमला कर देने का ख़ौफ़ हो (4) लश्कर में इतने आदमी हों कि उन्हें मुतफ़र्रिक़ किया जा सके, यानी कम से कम छः, इन आदमियों को दो गरोहों में तक़सीम करके एक गरोह को दुशमन के मक़ाबिल रखे और दूसरे गरोह को इमाम एक रकअत पढ़ाये जब इमाम पहली रकअत से फ़ारिग़ होकर दूसरी रकअत के लिए उठे तो इक़्तेदा करने वाला गरोह दुशमन के मक़ाबिल में चला जाये और इमाम से जुदाई की नीयत पर नमाज़ क़ायम करके सलाम फेर दे और अब दूसरा गरोह उनकी जगह ले ले और तकबीरे तहरीमा साथ इमाम के पीछे एक रकअत पढ़े फिर इमाम बैठ जाए (कि यह उसकी दूसरी रकअत होगी) और मुक़तदी खड़े होकर अपनी फ़ौत शुदा रकअत पूरी करके बैठ जायें अब इमाम के साथ सब सलाम फेरें, दूसरी रकअत में इमाम को क़िरअत इतनी तवील करना चाहिए कि पहला गरोह दूसरी रकअत पढ़ कर चला जाए और दूसरा गरोह आकर तकबीरे तहरीमा कह कर इमाम के साथ शरीक हो जाए इस दूसरी गरोह के लिए इमाम तशहहुद को इतना तवील कर दे कि यह गरोह अपनी दूसरी रकअत पूरी कर के इमाम को तशहहुद में पा ले और इमाम के साथ सलाम फेर सके। इसी तरह इस दूसरे गरोह को इमाम के साथ सलाम फेरने की फ़ज़ीलत हासिल हो जाएगी जिस तरह पहले गरोह को इमाम के साथ तकबीरे तहरीमा कहने की फ़ज़ीलत हासिल हो चुकी थी।

हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ में सलातुल ख़ौफ़ इसी तरह अदा फ़रमाई थी।

हज़रत सहल बिन ख़ुज़ैमा से मरवी हदीस में है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इमाम के साथ एक सफ़ खड़ी हो और दूसरी सफ़ दुशमन के सामने हो, इमाम अव्वल सफ़ को एक रकअत दो सजदों के साथ पढ़ाये फिर सीधा खड़ा हो जाए यहां तक कि मुक़तदी अपनी दूसरी रकअत पूरी कर लें फिर उस सफ़ की जगह दूसरी सफ़ आ जाए और

यह उस की जगह चली जाए दूसरी सफ़ को भी इमाम एक रकअत दो सजदों के साथ पढ़ाये फिर इमाम क़ऊद में इतनी देर करे कि यह सफ़ (आख़िर में आने वाली) अपनी रकअत पूरी करे फिर इमाम उस सफ़ को साथ लेकर सलाम फेर दे।

इमाम अहमद बिन हंबल का इरशाद

हमारे इमाम से जो क़ौल मरवी है कि इससे साबित होता है कि घमसान की लड़ाई और सख़्त जंग की हालत में नमाज़ में इतनी देर कर देना कि यह शिद्दत जाती रहे और लड़ाई कुछ ठंडी पड़ जाए जाइज़ है।

सलाते ख़ौफ़ का मज़कूरा बाला कैफ़ियत का ताल्लुक़ नमाज़े फ़ज्र और उन नमाज़ों से है जिन में क़स्र किया जाता है यानी जुहर, अस्र और इशा अगर मग़रिब की नमाज़ हो तो पहली दो रकअतें पहले गरोह को पढ़ाए और आख़िरी रकअत दूसरे गरोह को, उन तीनों रकअतों में कमी न की जाए क्योंकि नमाज़े मग़रिब में क़स्र नहीं है। मग़रिब की न[illegible]ाज़ में इमाम पहली जमाअत को दो रकअत पढ़ाएगा और दूसरे गरोह [illegible] आख़िरी (यानी तीस[illegible] रकअत पढ़ाएगा।

पहला गरोह इक़्तदाए इमाम को किस वक़्त तर्क क[illegible] क्या उस वक़्त जब इ[illegible] तशहहुद अव्वल के लिए बैठे या उस वक़्त करे जब इमाम तशहहुद अव्वल से फ़ारिग़ हो[illegible] तीस[illegible] रकअत के लिए खड़ा हो जाए यह दोनों क़ौल आए हैं यानी पहली सूरत [illegible] और दूसरी [illegible]रत भ[illegible]।

अगर सफ़र न हो बल्कि इंसान हज़र में हो और स[illegible] ख़ौफ़ पढ़[illegible] हो तो इमाम दो दो रकअतें हर गरोह को पढ़ा दे (नमाज़ में क़स्र न होगा) हर गरो[illegible] अपन[illegible] बक़िया दो रकअतें ख़ुद बग़ैर इक़्तदा [illegible] पूरी करे[illegible] अगर इम[illegible]ार [illegible]रोह जमाअत [illegible] कर के हर गरोह को एक एक रकतअ पढ़ाएगा तो इमाम की [illegible]माज़ नहीं होगी [illegible] न ती[illegible] और चौथे गरोह की। पहले और दूसरे गरोह की [illegible]ाज़ होने [illegible] न होने [illegible] बारे में [illegible] हैं।

नमाज़े ख़ौफ़ [illegible] अदा[illegible]गी की यह सूरत उस वक़्त है जब [illegible] दुशमन क़िबला की तरफ़ न हो बल्कि मुख़ालिफ़ [illegible] हो या क़िबला से शिमाल या जुनूब की तरफ़ हो लेकिन अगर यह सूरत हो कि दुशमन क़ि[illegible]ला [illegible] सम्त हो और एक फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ को देख रहा हो यानी दुशमन का अमना सामन[illegible] दुशमन के घात में बैठ जाने का अन्देशा न हो तो ऐसी सूरत में भी सलाते ख़ौफ़ पढ़ना जाइज़ है। अफ़राद की कसरत या क़िल्लत के एतबार से इमाम फ़ौजियों की दो तीन सफ़ें बना ले, सब लोग तकबीरे तहरीमा साथ साथ कहें, इमाम सबको पहली रकअत पढ़ाए (यानी पहली रकअत में तमाम लोग शरीक हों) जब इमाम सजदे में जाए तो मुक़्तदियों की पहली सफ़ हिफ़ाज़त के लिए खड़ी रहे, (सजदे में न जाए) जब बाक़ी सफ़ें सजदे से सर उठा कर खड़ी हो जायें तो पहली सफ़ सजदे करे फिर सब सफ़ें क़याम की हालत में आ जायें, जब दूसरी रकअत के बाद इमाम सजदा करे तो पहली रकअत में जिस सफ़ ने इमाम के साथ सजदा किया था वह सजदे न करे बाक़ी सजदा करें और यह उन सब सजदा करने वालों की हिफ़ाज़त करे जब इमाम तशहहुद के लिए बैठे तो उस वक़्त यह हिफ़ाज़त करने वाली सफ़ सजदा करे और सजदा के बाद इमाम के साथ तशहहुद में शरीक हो जाए और सब मिल कर सलाम फेर दें। ग़ज़वए असफ़ान में हुज़ूर सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी तरह नमाज़ अदा फ़रमाई थी, बयान कर्दा सूरत में अगर पहली सफ़ दूसरी रकअत में

पीछे हट कर आ जाए और दूसरी पहली सफ़ की जगह आ जाए तो यह भी जाएज़ है।

घमसान की जंग में सलाते ख़ौफ़

अगर घमसान की लड़ाई जारी हो तो उस वक़्त जिस तरह बन पड़े नमाज़ अदा करें, जमाअत बनाकर, मुनफ़रिद तौर पर, पैदल या सवारी पर जैसे भी मुमकिन हो ख़्वाह रुख़ काबा की तरफ़ हो या पुश्त हो इशारा से अदा करे या बग़ैर इशारा के। नमाज़ शुरु करते वक़्त काबा की तरफ़ मुंह होना ज़रुरी है या नहीं इस सिलसिले में दो अक़वाल मनकूल हैं। जब अमन या दुशमन को शिकस्त हो जाए तो पिछली नमाज़ अदा कर लें। सवारियों से उतर आयें और काबा की तरफ़ मुंह कर के पढ़ें, हां अगर हालते सुकून में नमाज़ शुरु की थी कि जंग ने शिद्दत पकड़ ली और पहली सी ख़ौफ़ की हालत हो गई तो सवारियों पर सवार हो जायें और सलाते ख़ौफ़ पूरी करें ख़्वाह उस वक़्त शमशीर ज़नी की ज़रुरत हो या नेज़ा बाज़ी की या (दुशमन के दबाव से) पीछे हटने का मौक़ा हो।

सलाते ख़ौफ़ दुशमन से डरने वाले के लिए है ख़्वाह वह दुशमन इंस[illegible] हों, सैलाब हो या कोई दरिन्दा हो, इसी तरह अगर दुशमन पर हमल[illegible] करना चाहता है या [illegible]मन को अंक़रीब शिकस्त होने वाली है और यह ख़तरा है कि नमाज़ में म[illegible]गूल हो जान[illegible] दुश[illegible] ज़द से निकल जाएगा हर सूरत में सलाते ख़ौफ़ पढ़ी जायगी इसके [illegible]लाफ़ भी ए[illegible]वायत है।

नमाज़ों का क़स्र

क़स्र का हुक[illegible]

चार रकअत[illegible] वाली नमाज़ को क़स्र क[illegible] के सि[illegible]अतें उन सूरतों में पढ़ना जाएज़ है (1) कि अपनी बस्त[illegible] की आबादी या अपनी क़ौम के ख़ेमों से [illegible] निकल जाए। (2) सफ़र की तवालत चार मंज़िल[illegible] (एक मंज़िल चार फ़रसख़ की होती है) 16 फ़रसख़ या 48 मील, इस सूरत में आमद व रफ़्त [illegible]नों हालतों में क़स्र किया जाएगा।

अगर किसी शहर या [illegible] में दाख़िल हो और वहां 22 नमाज़ों तक इक़ामत का इरादा हो तो वह बजाए मुसाफ़िर के [illegible]क़ीम समझा जाएगा और पूरी नमाज़ पढ़ना होगी अगर 21 नमाज़ों तक ठहरने की नीयत है तो क़स्र व अदमे क़स्र करने के सिलसिले में दो क़ौल हैं। अलबत्ता इस से कम मुद्दत के लिए क़स्र ही का हुक्म है। अगर किसी आबादी में पहुंचा और यह नहीं मालूम कि कब तक ठहरना होगा, कोई नीयत नहीं हर रोज़ जाने का इरादा रखता है लेकिन जाना नहीं होता तो क़स्र करना होगा। एक रिवायत में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहे अलैहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा में अठारह दिन एक रात और एक रिवायत के बमौजिब पंद्रह दिन क़याम फ़रमाया लेकिन इस मुद्दत में हुज़ूर ने नमाज़ों को क़स्र ही पढ़ा।

हज़रत इमरान बिन हसीन बयान करते हैं कि फ़तहे मक्का के वक़्त मैं रसूलुल्लह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ही था, आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और फ़रमाया कि ऐ शहर वालो! तुम अपनी चार रकअत पूरी कर लो क्योंकि हम मुसाफ़िर हैं, इसी तरह हुज़ूर ने ग़ज़वए तबूक में बीस दिन क़याम फ़रमाया मगर नमाज़ें क़स्र ही अदा फ़रमाईं, यही सहाबा कराम

का अमल था। हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि सहाबा कराम ने राम हरमज़ में सात माह क़याम फ़रमाया लेकिन नमाज़ें क़स्र ही पढ़ी।

एक रिवायत है कि हज़रत इब्ने उमर ने आज़र बाईजान में छः माह क़याम फ़रमाया मगर नमाज़ों में क़स्र फ़रमाते रहे।

क़स्र के मसाईल

अगर किसी ने सफ़र की हालत में नमाज़ शुरु की फिर वह मुक़ीम हो गया या मुक़ीम ने इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ी या ऐसे शख़्स की इक़्तदा की जिसके बारे में यह शक था कि वह मुक़ीम है या मुसाफ़िर, या नमाज़ शुरु करते वक़्त क़स्र की नीयत नहीं की तो उन तमाम सूरतों में वह नमाज़ पूरी पढ़ेगा इसके लिए क़स्र जाएज़ नहीं होगा।

क़ज़ा नमाज़ अदा करने वाले को भी नमाज़ में क़स्र जाएज़ नहीं क्योंकि पूरी नमाज़ क़ज़ा हुई है, सफ़र का असर सिर्फ़ वक़्ती नमाज़ के अदा करने पर पड़ेगा।

अगर क़स्र की नीयत के साथ नमाज़ शुरु हो [illegible]र दौराने सलात इक़ा[illegible]त (मुक़ीम होने) की नीयत कर ली तो नमाज़ पूरी पढ़ेगा इसी तरह अगर ब[illegible]लते इक़ामत नमाज़ शु[illegible] की थी फिर सफ़र की नीयत कर ली तब भी नमाज़ पूरी पढ़ेगा इसी तरह अ[illegible]र सफ़र कि[illegible]खेल [illegible] तफ़रीह के लिए होगा तो नमाज़ पूरी पढ़ना होगी। रुख़्सते सफ़र से फ़ाए[illegible] नहीं उठाया ज[illegible] सकत[illegible], रुख़्सते सफ़र का फ़ाएदा उसी वक़्त उठाया जा सकता है जब सफ़र कि[illegible]जिब को [illegible]दा करने मसलन हज, जिहाद वग़ैरह के लिए हो या किसी अम्रे मुबाह, [illegible]जारत, तलबे म[illegible]आश, त[illegible]बे मदयुन वग़ैरह के लिए हो। अगर हम [illegible]फ़र मासियत में मुब्तला होने वाले को रुख़्सते [illegible]फ़र की इजाज़त दे देंगे तो गुनाह करने और गुनाह पर क़ायम रहने और ताअत की [illegible]हाह न करने पर उसकी मदद करेंगे, इस तरह उसकी हालत दुरुस्त नहीं होगी और वह रब की [illegible] तरफ़ रुजूअ न होगा लिहाज़ा हम इस सूरत में उसकी किसी तरह इआनत नहीं करेंगे और न उसका हौसला अफ़ज़ाई करेंगे, ऐसे सफ़र से उसको बाज़ रखने की कोशिश करेंगे और उसका हौसला तोड़ेंगे।

इमाम अहमद के नज़दीक क़स्र करना पूरी नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है वैसे पूरी नमाज़ भी जाएज है। जिस तरह मुसाफ़िर के लिए दौराने सफ़र रोज़ा और इफ़्तार दोनों जाएज़ हैं लेकिन अल्लाह तआला की अता कर्दा इजाज़त के ख़िलाफ़ जुर्रत न करना और उसकी मेहरबानियों और इनायतों से मुस्तफ़ीद होना अफ़ज़ल है। अगर सफ़र में पूरी नमाज़ पढ़ना और रोज़ा रखना खुद पसन्दी गुरुरे नफ़्स और फ़ख़्र व मुबाहात के लिए न हो या क़स्र करने और रोज़ा न रखने का बाएसे फ़रोतनी, इज़हारे इज्ज़ और तकमीले इबादत से अपना क़स्द व इंकिसार हो तो क़स्र करने और रोज़ा न रखने को ज़्यादा अफ़ज़ल कहना मुनासिब है। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जब अर्ज़ किया गया कि अब हालते अमन है अब हमको क़स्र नहीं करना चाहिऐ तो हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह सदक़ा अल्लाह ने अपने बन्दों को दिया है अल्लाह के दिये हुए सदक़ा को क़बूल करो, हुज़ूर वाला ने यह भी फ़रमाया था कि अल्लाह तआला जिस तरह फ़राएज़े खुदावन्दी की पाबन्दी को पसन्द फ़रमाता है उसी तरह खुदादाद रुख़्सत (इख़्तियार) करना भी उसको पसन्द है पस बड़ा ताज्जुब है उस शख़्स पर जो सफ़र में पूरी नमाज़ पढ़ता और रोज़ा रखता है और खुदादाद रुख़्सत को तर्क करता है

हालांकि यूं वह मुख़्तलिफ़ क़बाएर जैसे हराम ख़ोरी, मय नोशी, रेशम पोशी, ज़िना, लिवातत और उसूली बद एतक़ादियों में मुब्तला है।

हालते सफ़र में दो नमाज़ों को मिला कर पढ़ना

जुहर व अस्र, मग़रिब और इशा को मिला कर पढ़ना

सफ़र की हालत में दो नमाज़ों को एक वक़्त में पढ़ना जाएज़ है जैसे जुहर व अस्र को मिलाना या मग़रिब व इशा को मिला कर पढ़ना लेकिन इसके लिए शर्त यह है कि सफ़र तवील हो यानी 16 फ़रसंग या साढ़े सत्तावन मील से ज़्यादा हो उससे कम सफ़र में जमा करना जाएज़ नहीं है, दो नमाज़ों को जमा करने की दो सूरतें हैं अव्वल यह कि नमाज़ को आख़िर वक़्त तक मोअख़्ख़र किया जाए और आने वाली नमाज़ को अव्वल नमाज़ के आख़िरी वक़्त में एक साथ पढ़ा जाए, दूसरी सूरत यह है कि अव्वल नमाज़ को दूसरी नमाज़ के शुरू वक़्त में पढ़ा जाए, दोनों सूरतों में पहली अफ़ज़ल है अगर कोई दूसरी सूरत इख़्तियार करे तो उसे चाहिए कि पहले अव्वल नमाज़ पढ़ ले फिर दूसरी पढ़े।

नीयत करना ज़रूरी है

अव्वल नमाज़ की तक्बीरे तहरीमा के वक़्त जमा बैनुस्सलातीन (दो नमाज़ो को जमा करना) की नीयत करे, दोनों नमाज़ों में इतना फ़स्ल करे कि उन दोनों के दर्मियान इक़ामत कही जा सकती हो। अगर वुज़ू टूट गया हो तो वुज़ू करे अगर किसी ने दोनों नमाज़ों के दर्मियान सुन्नतें पढ़ लीं तो एक रिवायत के मुताबिक़ जमा का हुक्म बातिल हो जाएगा। औला यह है कि सुन्नतों को फ़र्ज़ों से फ़ारिग़ होने तक मोअख़्ख़र कर दे, (फ़र्ज़ों से फ़ारिग़ हो कर पढ़े) दोनों फ़र्ज़ों के दर्मियान किसी और नमाज़ से फ़स्ल पैदा न करे।

अगर दूसरी नमाज़ के वक़्त में पहली नमाज़ पढ़ी हो तो पहली नमाज़ में जमा की नीयत करना काफ़ी है दूसरी नमाज़ के वक़्त जमा की नीयत करना ज़रूरी नहीं है। जमा की नीयत पहली नमाज़ के अव्वल वक़्त में कर ले ख़्वाह उस वक़्त करे जब नीयत करने के बक़द्रे वक़्त बाक़ी है (तंग वक़्त में) दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं है अगर पहली नमाज़ का वक़्त जमा कि नीयत किये बग़ैर निकल गया तो फिर जमा की नीयत करना दुरूस्त नहीं है।

अगर दूसरी नमाज़ के वक़्त में पहली नमाज़ पढ़ी तो अव्वलन पहली नमाज़ अदा करे फिर दूसरी पढ़े यही तर्तीब उस वक़्त भी पेशे नज़र रखना होगी जब अव्वल नमाज़ के वक़्त में दूसरी नमाज़ पढ़ रहा हो उस वक़्त दोनों फ़र्ज़ों के दर्मियान सुन्नतें पढ़ना और दोनों फ़र्ज़ों में फ़स्ल कर देना जाएज़ नहीं लेकिन एक रिवायत के एतबार से जाएज़ भी है।

हमारे उलमा कराम में अबू बकर क़ाएल हैं कि जमा और क़स्र के लिए नीयत ज़रूरत नहीं है, बारिश की वजह से मग़रिब व इशा को तो जमा करना जाएज़ है लेकिन जुहर व अस्र को जमा करने के बारे में मुस्बत व मनफ़ी दो क़ौल हैं इसी तरह अगर बारिश न हो सिर्फ़ कीचड़

हो या सख़्त सर्द हवायें चल रही हों तो इसके बारे में भी मुस्बत व मनफ़ी दो क़ौल आये हैं।

बारिश के बिना पर नमाज़ों का जमा करना

अगर किसी ने बारिश की बिना पर दो नमाज़ों को जमा किया है तो अगर पहली नमाज़ के वक़्त जमा किया है तो पहली नमाज़ को शुरू और उसको ख़त्म करते वक़्त और दूसरी नमाज़ को शुरू करते वक़्त बारिश होना शर्त है और दूसरी नमाज़ के वक़्त में जमा किया है और पहली नमाज़ के वक़्त से बारिश का सिलसिला जारी है तो दूसरी नमाज़ को अदा करते वक़्त बारिश जारी हो या न हो दोनों बराबर हैं क्योंकि ताख़ीर तो अव्वल नमाज़ ही की थी और उस वक़्त उज़्रे बारिश मौजूद था अब अगर उज़्र जाता रहा तो पहली नमाज़ का वक़्त भी जाता रहा और उसकी तलाफ़ी करना मुमकिन नहीं, हां दूसरी नमाज़ वह अपने वक़्त में पढ़ रहा है उस वक़्त बारिश हो या न हो दोनों सूरतें यकसां हैं।

जमा का यह हुक्म लोगों की दुशवारी के पेशे नज़र है कि बारिश के बाइस लोगों की आमद व रफ़्त मुशकिल है इसके साथ जूतों और कपड़ो की [illegible]जियां की भी रियाएत [illegible]लहूज़ रखी गई है। हजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है जब जूते तर हो जायें तो नमाज़ घरों ही पर पढ़ लो।

हमारे नज़दीक मुसाफ़िर और मरीज़ के लिए भी जमा का जवाज़ इसी वजह से है, अल्लाह तआला ने इन दोनों का ज़िक्र एक ही जगह और एक ही कलाम में फ़रमाया है: अगर तुम में से कोई बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में रोज़ों की क़ज़ा करे।

यह इजाज़त (क़ज़ा) कमज़ोरी के बाइस दी गई है और मरीज़ की कमज़ोरी ज़ाहिर है यही हाल मुसाफ़िर का है कि कभी आराम से सवारी पर सफ़र करता है और कभी नहीं, जब दौलत मंद मुसाफ़िर को भी अल्लाह तआला ने आराम मिलने के बावजूद क़स्र व जमा की इजाज़त दी तो मरीज़ तो उससे ज़्यादा हक़दार है और शरई रूख़सतों का उसको ज़्यादा हक़ पहुंचता है।

नमाज़े जनाज़ा

नमाज़े जनाज़ा के लिए खड़े होने का तरीक़ा

मुसलमान मय्यत की नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है, हमारे नज़दीक नमाज़े जनाज़ा की इमामत का सबसे ज़्यादा हक़दार मय्यत का वसी है उसके बाद हाकिमे इस्लाम फिर तर्तीब वार मय्यत के असबात (पेदरी रिश्तादार) सबसे पहले सबसे ज़्यादा क़रीबी रिश्ता रखने वाला उसके बाद बित्तरतीब बाद वाले लोग (असबात से)। इमाम मय्यत अगर मर्द की हो तो उसके सीने के मुक़ाबिल और अगर औरत की है तो उसकी कमर के मुक़ाबिल खड़ा हो, मुक़्तदियों की अगर एक जमाअत हो तो सब को बराबर रखे लेकिन अगर तरह तरह के लोग मौजूद हों तो इमाम की जानिब वह लोग हों जो अफ़ज़ल हैं, इमाम की तरफ़ सब से आगे मर्दों को होना चाहिये उनके पीछे औरतें, औरतों के पीछे गुलाम, फिर ख़्वाजा सरा और उनके पीछे बच्चे। एक रिवायत में यह भी आया है कि बच्चे गुलामों से आगे हों बहरहाल इसी तरह हर क़िस्म के लोगों पर तवज्जोह रखना चाहिये और इमाम के जानिब खड़े हुए सबसे अव्वल वही लोग हों जो इल्म में दीन में और

तक़वा में अफ़ज़ल हों।

कहा गया है कि औरत और मर्द का जनाज़ा साथ साथ हो तो जनाज़ों को इस तरह रखना चाहिये की औरत की कमर के मुक़ाबिल मर्द का सीना हो।

नमाज़े जनाज़ा

नमाज़े जनाज़ा के लिए इमाम सफ़ों को दूसरी नमाज़ों की तरह दायें बायें देख कर सीधा करा दे। इमाम अव्वल अपनी गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करे, अपनी क़ब्र, आख़िरत और मौत को याद करे कि मौत का प्याला हर एक को पीना है और ख़्याल करे कि मुझे भी एक दिन मौत आएगी उससे छुटकारा मुमकिन नहीं है इसके बाद हुज़ूरे क़ल्ब पैदा करे और ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ नमाज़े जनाज़ा पढ़े ताकि दुआ जल्द क़बूल हो, फिर चार तकबीरें कहे, पहली तकबीर पर सूरह फ़ातिहा पढ़े (हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़े जनाज़ा में सूरह फ़ातिहा पढ़ने का हम को हुक्म दिया था) फिर दूसरी तकबीर कह कर दरूद शरीफ़ पढ़े, वह दरूद जो तशहहुद में पढ़ा जाता है (मुजाहिद फ़रमाते हैं कि मैंने 18 सहा[illegible] कराम से जनाज़ा की नमाज़ के बारे में दरयाफ़्त किया हर एक ने यही फ़रमाया कि पहले तकबीर कहो फिर सूरह फ़ातिहा पढ़ो, तकबीर कहो और दरूद शरीफ़ पढ़ो) फिर तीसरी तकबीर कह कर मय्यत के लिए, अपने लिए और अपने वालिदैन और तमाम मुसलमानों के लिए जो दुआ तुझ को महबूब और पसंद हो और जो तुम्हारे लिए आसान हो पढ़ो मगर यह दुआ [illegible] मुस्तहब है

इलाही हमारे ज़िन्दों और मुर्दों को बख़्श दे, हमारे उन लोगों को जो हाज़िर हैं और जो ग़ायब हैं बख़्श दे, हमारे छोटों को और बड़ों को और हम में मर्दों को और औरतों को बख़्श दे, ऐ अल्लाह हम में से जिसे तू ज़िन्दा रखे उसको सुन्नते रसूल और इस्लाम पर ज़िन्दा रखना और जिसको तू मारे (मौत दे) उसको भी सुन्नत और इस्लाम पर मा[illegible]ो इस्लाम पर मौत आए) तू जानता है कि हमारी बख़्शिश और आराम की जगह कौन सी है तू हर एक चीज़ पर क़ादिर है, इलाही तेरा यह बन्दा और तेरे बन्दे का बेटा और तेरी बन्दी (कनीज़) का बेटा, अब तेरी बारगाह में हाज़िर हो जाए और तू उन सब से बेहतर है जिस के पास कोई हाज़िर हो हम उसकी नेकी के सिवा किसी चीज़ से आगाह नहीं हैं ऐ अल्लाह अगर यह नेक है तो इसकी अच्छी जज़ा दे और ऐ अल्लाह अगर यह ख़ताकार है तो अपनी रहमत से इसको बख़्श दे हम तेरी बारगाह में इसकी शफ़ाअ़त के लिए हाज़िर हुए हैं इसके हक़ में हमारी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा और इसको क़ब्र के अज़ाब से बचा, दोज़ख़ के अज़ाब से महफ़ूज़ रख, इसके सारे जुर्म माफ़ फ़रमा दे इसको अच्छी जगह आराम दे और जो घर इसने छोड़े हैं उससे बेहतर घर इसको अता फ़रमा और इसको अच्छा हमसाया अता कर अपने अता और बख़्शिश से हमको और तमाम मुसलमानों को सरफ़राज़ फ़रमा हम को इसके अज्र से महरूम न रख और हमें इसके बाद फ़ितना में मुब्तला न कर।

यह दुआ पढ़ कर चौथी तकबीर कहे और कहे

ऐ हमारे रब! हमें दुनिया व आख़िरत में नेकी अता कर और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा।

हमारे बाज़ उलमा का क़ौल है कि चौथी तकबीर के बाद कुछ न कहे कुछ तवक्क़ुफ़ कर के पहले सीधी तरफ़ को सलाम फेरे दोनों तरफ़ को सलाम फेरना भी जाएज़ है दोनों तरफ़ सलाम फेरना इमाम शाफ़ई का मज़हब है इमाम अहमद (हम्बल) का मज़हब यही है कि सिर्फ़

दायें तरफ सलाम फेरे। इमाम अहमद फरमाते हैं कि चन्द सहाबा कराम हज़रत अली इब्ने अबी तालिब, हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर, हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अबी ऊफा, हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत वासला बिन अलअसक़ा के बारे में रिवायत है कि उन तमाम असहाब ने जनाज़ा की नमाज़ में एक तरफ (दायें जानिब) सलाम फेरा। एक मरफूअ रिवायत यह भी आई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जनाज़ा की नमाज में सिर्फ दाएं जानिब सलाम फेरा।

जो दुआ ऊपर लिखी जा चुकी है इसके अलावा अगर चाहे तो यह दुआ पढ़े:

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो हर एक को मारने वाला और ज़िन्दा करने वाला है, वही है जो मुर्दों को ज़िन्दा करेगा बुज़ुर्गी और अजमत उसी के लिए है वही मुल्क और कुदरत रखता है उसी के लिए तारीफ़ है वही हर चीज पर कादिर है इलाही हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी आल पर दरूद भेज जैसा की तूने बरकत पहुंचाई और रहमत फरमाई हज़रत इब्राहीम और उनकी आल पर, बेशक तू ही तारीफ किया [illegible] है तूही बुजुर्ग है। इलाही! यह तेरा बन्दा है और तेरे बन्दे का बेटा अ[illegible]री बंदी का बेटा है, [illegible] ही ने इसको पैदा किया इसको रिज़्क़ दिया तू ही मारने और जिन्दा कर[illegible] वाला तू ही [illegible]के भे[illegible] को जानने वाला है हम तेरी बारगाह में इसकी सिफारिश करते हैं तू ह[illegible]री शफाअत [illegible] फर[illegible] ले ऐ अल्लाह अब तू इसको अपने जवारे रहमत मे कबूल फरमा ले। [illegible]लिक है तू [illegible]म्मादार है, इलाही तू इसको कब्र के फितने व दोजख के अजाब से बचा इसका [illegible] दे [illegible] पर रहम फरमा, इसे और इसके बु[illegible]र्गों को म[illegible] कर और [illegible]की [illegible]राम गाह को [illegible]हतर बना और इसकी कब्र को फराख और कु[illegible]दा कर [illegible] इसको ब[illegible] पानी [illegible]र ठंडे [illegible] से नहला दे और इसको इसके गुनाहों से पाक [illegible]र दे इस तर[illegible] पाक फर[illegible] दे ज[illegible] कुचैले कपड़ों को साफ कर देता है इसको अच्छे घ[illegible] में दाखि[illegible] फरमा दे [illegible]सको ऐसी [illegible] इनाय[illegible]र जो तमाम हूरों से बेहतर हो, इसको बहिश्त [illegible] जग[illegible] दे दे इसकी दोजख की आग से ब[illegible], इलाही अगर तेरा यह बन्दा नेक है तो इसकी नेक[illegible]को बढ़ा दे और इसको उनका एवज अता फरमा अगर यह बदकार है तो इसको माफ़ फरमा दे, इ[illegible]ही यह तेरी जनाब में हाजिर हुआ है और तू उन सब से बेहतर है जिस के पास कोई हा[illegible] होता है इलाही यह तेरी रहमत का मुहताज है और तू ग़नी है, यह मुफलिस और मुहताज है और तू इससे बेपरवाह है कि इसको अजाब दे, इलाही जब मुनकर नकीर सवाल करे तो इसकी तू मदद फरमाना, इसको कब्र के अजाब में गिरिफ्तार न करना यह उस अज़ाब की ताक़त नहीं रखता, इलाही हमको इसके अज्र से महरूम वापस न कर और इसके बाद हम को फित्ना में न डाल।

जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाने का हमारे इमाम अहमद के नजदीक सबसे ज्यादा मुस्तहिक वह शख्स है जिसको मय्यत ने वसीयत कि है यानी मय्यत का वसी हो फिर हाकिमे इस्लाम, फिर मय्यत के असबात में से उसूल यानी बाप, दादा वगैरह इसके बाद बेटा और बेटे के नीचे जो असबात में सबसे ज्यादा मय्यत से करीब हो भाई, भतीजा, चचा जाद भाई वगैरह। औरत की जनाजा की इमामत का हक शौहर को पहले है या उसके बेटे को यह हक हासिल है इस बारे में मुस्बत और मन्फी दोनों कौल मौजूद हैं।

सहाबा कराम की वसीयत

सहाबा कराम ने अपनी मय्यत की नमाज पढ़ाने की वसीयत फ़रमाई है चुनांचे हज़रत अबू बकर सिद्दीक ने वसीयत फ़रमाई थी कि उनके जनाज़ा की नमाज़ हज़रत उमर पढ़ायें और हज़रत उमर ने वसीयत फ़रमाई कि उनके जनाज़े की नमाज़ हज़रत हबीब पढ़ायें हालांकि उस वक़्त आप के साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह मौजूद थे। जनाब शुरैह ने वसीयत फ़रमाई थी की कि उनकी नमाज़ हज़रत जैद बिन अरक़म पढ़ायें, हज़रत मैसरा ने अपनी नमाज़े जनाज़ा के लिए हज़रत शुरैह को वसीयत की थी। हज़रत आएशा ने हज़रत अबू हुरैरह को अपनी नमाज़ के लिए वसी बनाया था इसी तरह हज़रत उम्मे सलमा ने सईद बिन जुबैर को वसीयत की थी कि उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ायें।

मय्यत अगर बच्चा हो तो दुआ इस तरह पढ़ें

इलाही यह तेरा ही बन्दा है और तेरे बन्दे का बेटा है और तेरी बन्दी (कनीज़) का बेटा है इसे तूने ही पैदा किया इसको रिज़्क़ अता किया तू [illegible] मारता और तू ही [illegible] करता है इलाही तू इसके मां बाप के लिए इसको पेश ख़ेमा बना [illegible] उनके लिए इसक[illegible] अज्र की ज़्यादती का बाएस बना दे यह उनके मीज़ान के पल्लों के भार[illegible] होने का बा[illegible] बन [illegible]ये इसके बाएस इसके वालिदैन के अज्र को ज़्यादा फ़रमा दे हमें भी इ[illegible]के अज्र से [illegible] न [illegible]ख। और इसके बाद हमको फ़ितना में न डाल बल्कि उससे [illegible]फ़ूज़ र[illegible]ाही इसको अपने नेकोकारो और सालेह बन्दों में शामिल फ़रमा ले इसको हज़र[illegible] इब्राहीम की कफ़ाल[illegible] व ज़मानत में दाख़िल फ़रमा दे इसक[illegible] दुनिया [illegible]रों से बेह[illegible] घर अ[illegible]ा फ़रमा इस[illegible] अहल से बेहतर अहल इनायत कर, इसको जह[illegible]म के अज़ाब से बचा इल[illegible]ही ह[illegible] औलाद[illegible] हमारे बुर्जुगों को जिन्होंने ईमान में हमसे पहले प[illegible]ल की उन [illegible]बको बख़्[illegible] दे इल[illegible] से जिसको तू ज़िन्दा रखे उसको इस्लाम पर ज़िन्दा [illegible]ख औ[illegible] जिसको [illegible]त दे उसको इस्लाम [illegible] मौत दे (मुसलमान होने की हालत में मरे) इलाह[illegible] मुसलमान मर्दों और औरतों को जो जीते हैं और या जो मर गये हैं उन सब को बख़्श दे।

जनीन की नमाज़े ज[illegible]

अगर नातमाम बच्चा में इंसानी खद व ख़ाल नुमाया हो गए तो उसको गुस्ल भी दिया जाएगा और नमाज़ भी पढ़ी जाएगी लेकिन अगर वह सिर्फ़ मज़गए गोश्त है और कोई बनावट नुमाया नहीं है तो न उसको गुस्ल दिया जाएगा और न उसकी नमाज़ होगी, सिर्फ़ दफ़्न कर दिया जाएगा, बच्चा को गुस्ल मर्द दें या औरतें दोनों जाएज़ है। हज़रत इब्राहीम फ़रज़न्दे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात आठ माह की उम्र में हुई और उनको औरतों ने गुस्ल दिया था।

मौत, तलक़ीन, गुस्ले मय्यत तकफ़ीन और तदफ़ीन

मौत पर यक़ीन

हर मोमिन साहबे अक़्ल व फ़िरासत के लिए मुस्तहब है कि वह मौत पर यक़ीन रखे, उसे कसरत से याद करे और उसकी तैयारी और साज़ व सामान मुहय्या करने की कोशिश करे, हर आन व हर लहज़ा तौबा करता रहे अपने नफ़्स का मुहासबा करे और तमाम हुकूक़ और क़र्ज़ से सुबुकदोश रहे, वसीयत नामा तैयार रखे। ऐसी यक़ीनी बात से ग़फ़लत न बरते जिस की हैसियत मख़लूक़ के लिए उमूमी है लेकिन मौत का आना और उसका प्याला पीना ज़रूरी है। मौत की याद को मुसतहब कहना इस वजह से है कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मौत की याद बहुत किया करो अगर तुम उसको तवंगरी के हालत में याद रखोगे तो ऐश परस्ती से मुकद्दर कर देगी और मुफ़लिसी और तंगदस्ती की हालत में याद करोगे तो वह तंग दस्ती को तुम्हारे लिए गवाह बना देगा।

सबसे ज्यादा दानिशमंद

यह इरशादे गरामी है हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है कि जानते हो कि सबसे बड़ा दाना और होशमंद शख़्स कौन है? सबसे ज़्यादा दाना वह है जो मौत को बहुत याद रखे और सबसे बड़ा होशियार वह है जो मौत की तैयारी [illegible] करे। सहाबा कराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इसकी अलामत और पहचान क्या है? हुजूर ने इरशाद फ़रमाया इस फ़रेब ख़ाना (दुनिया) से ज़्यादा दूर रहना और हमेशगी के घर की तरफ़ रुजूअ करना।

हज़रत लुक़मान की नसीहत

हज़रत लुक़मान ने [illegible] से फ़रमाया था, ऐ फ़रज़न्द! तौबा को कल पर टालना मौत अचानक आ जाएगी।

फ़रमाने मुस्तफ़वी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसके पास माल हो उसके लिए मुनासिब नहीं कि दो रातें भी ऐसी गुज़ार दे जिस में वसीयत नामा लिखा हुआ पास मौजूद न हो। एक और हदीस में आया है कि हिसाब के लिए जाने से पहले तुम अपना मोहासबा कर लो, मीज़ान अमल पर तौले जाने से पहले तुम अपने आमाल का वज़न कर लो। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि दुनिया में ऐसे अमल कर लो गोया तुम को हमेशा यहां रहना है और आख़िरत के लिए अमल करते वक़्त यह न भूलो कि मौत सर पर खड़ी है गोया तुम कल ही मर जाओगे।

इस लिए दानिशमंद को चाहिए कि वह अपनी मौत से क़ब्ल उन हुकूक़ से ओहदा बरआ

हो जाए जो उस पर लाज़िम हैं। गुनाहों से बरअत हासिल कर ले, क़र्ज़ अदा कर दे, अगर ऐसा न करेगा तो क़तई तौर पर जान ले और अच्छी तरह समझ ले कि वह उन हुक़ूक़ में गिरिफ़्तार रहेगा उन हुक़ूक़ के एवज़ पकड़ा जाएगा और क़ब्र के अज़ाब में मुबतला होगा तमाम कुव्वतें जाएल हो जाएंगी तमाम तदबीरें बेकार हो जाएंगी हवास बाख़ता होगा घर वाले और पड़ोसी छोड़ जाएंगे और उसका छोड़ा हुआ माल उसके दुशमनों, मर्दों, औरतों और बच्चों के क़ब्ज़े में चला जाएगा उस बुरे अंजाम से नजात देने वाली चीज़ सिर्फ़ यही है कि हुक़ूक़ को दुनिया में अदा कर दिया जाए और उनकी अदाएगी से ओहदा बरआ हो जाए तौबा करे और इताअत में मसरूफ़ रहे यहां तक कि अल्लाह तआला की रहमत और उसकी मेहरबानियां उस पर छा जाएं वह सबसे बड़ा रहम करने वाला है जो कुछ चाहेगा बहिश्ते जाविदां में उसको जज़ा अता फ़रमा देगा।

मक़रूज़ पर अज़ाब

हज़रत समरा बिन जुन्दब फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे हुजूर वाला ने एक जनाज़ा की नमाज पढ़ाई सलाम फेरने के बाद हुजूर ने फ़रमाया कि फ़लां ख़ानदान का कोई यहां मौजूद है? एक शख़्स ने अर्ज़ किया हुजूर मैं हाज़िर हूं। हुजूर ने फ़रमाया फ़लां शख़्स (यानी मय्यत) क़र्ज़ कि वजह से गिरिफ़्तार है। हज़रत समरा फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुद देखा कि मय्यत के घर वाले फ़ौरन ही क़र्ज़ चुकाने लगे फिर कोई क़र्ज़ ख़्वाह बाक़ी नहीं रहा।

यही हदीस शरीफ़ में दूसरे अल्फ़ाज़ में इस तरह है।

फ़लां शख़्स जन्नत के दरवाज़े पर क़र्ज़दार होने की वजह से महबूस है। हज़रत अली से रिवायत है कि अहले सफ़्फ़ा में से एक साहब का इन्तक़ाल हो गया, लोगों ने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह इसने एक दीनार और एक दिरहम तरका में छोड़ा है, हुजूर ने फ़रमाया यह आग के दो दाग़ हैं तुम अपने साथी की नमाज़ पढ़ो (मैं इस में शिरकत नहीं करूंगा) उस शख़्स पर कुछ क़र्ज़ था।

एक और हदीस है कि एक अंसारी का जनाज़ा बारगाहे नबूव्वत में लाया गया आपने फ़रमाया क्या इस पर क़र्ज़ है? अर्ज़ किया गया जी हां यह सुन कर हुजूर वापस जाने लगे उस वक़्त हज़रत अली ने अर्ज़ किया कि इसके क़र्ज़ का मैं ज़ामिन हूं यह सुन कर हुजूर वापस तशरीफ़ ले आए और उसकी नमाज़ पढ़ी और इरशाद फ़रमाया ऐ अली अल्लाह ने तुम्हारी गरदन इस तरह आज़ाद कर दी जिस तरह तुम ने अपने मुसलमान भाई की गरदन आज़ाद कराई। जो किसी का क़र्ज़ छोड़ाता है अल्लाह क़यामत के दिन उसको रिहा कर देगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है, क़यामत के दिन हक़दारों के हक़ूक़ ज़रूर दिए जाएंगे यहां तक कि मुन्डी बकरी का हक़ सींगों वाली बकरी से लिया जाएगा, हुजूर ने यह भी इरशाद फ़रमाया ज़ुल्म करने से गुरेज़ करो, क़यामत के दिन ज़ुल्म अंधेरियां बन जाएगा, फ़हश से परहेज़ करो, अल्लाह तआला बेहयाई को पसन्द नहीं फ़रमाता, बुख़्ल से बचो इसी बुख़्ल ने तुम से पहले गुज़रने वाले लोगों को बरबाद कर दिया, इसी बुख़्ल ने बख़ीलों रिश्तेदारियां मुन्क़तअ करने का हुक्म दिया और उन्होंने (अज़ीज़ों रिश्तेदारों के) हक़ूक़ तल्फ़ किए।

अयादत

अयादत मुस्तहब है

अगर कोई मोमिन बीमार हो उसकी बीमार पुरसी करना मुस्तहब है, मुसलमान भाई जब उसकी अयादत को पहुंचता है और उसके हाल को देखता है तो अगर अच्छा हो जाने की उम्मीद होती है तो उसके लिए दुआ करके लौटता है और अगर मरने का अन्देशा होता है तो उसको तौबा करने की तरग़ीब देता है और उसको आमादा करता है कि वह अपना तिहाई माल उन ग़रीब रिश्तेदारों को देने की वसीयत कर जाए जो उसको शरअन वारिस नहीं हैं अगर उसके अक़रबा में कोई मोहताज नहीं होता तो फिर उन लोगों के हक़ में वसीयत करने की तरग़ीब देता है जो फ़क़ीर व मिसकीन हों, अहले इल्म हों, दीनदार हों या ऐसे लोग हों कि अल्लाह तआला की तक़दीर ने उनके रोज़ी के ज़राए मसदूद कर दिए हैं और तक़वा व [illegible]रहेज़गारी के बाएस अलाएक़े दुनयवी से उन्होंने मुंह मोड़ लिया हो।

मुत्तक़ी और मुतवक्किल हज़रात

मुत्तक़ी और मुतवक्किल हज़रात के नज़दीक चूंकि [illegible] के असबाब ज़ाहिर भी शिरकत का बाएस होते हैं इस लिए वह सबसे किनारा कश हो कर ख़ा[illegible]बुल इज़्ज़त की इबादत में मशग़ूल रहते हैं और रिज़्क़ के लिए सिर्फ़ उसी की त[illegible]फ़ रुजूअ होते हैं क्योंकि वह हर ज़ाहिरी सबब को शिर्क समझ[illegible]ते हैं, उन[illegible]हाल अल्ल[illegible]आला से इस ताल[illegible]क़ के बिना पर पुख़्तगी के कमाल पर पहुंचता है, [illegible]की तौहीद बे दाग़ होती [illegible] और [illegible] रोज़ी है वह पाक व साफ़ होकर उनके पास पहुंच जाती है [illegible] लिए न [illegible]को दु[illegible]र अंजाम का अन्देशा होता है और न आख़िरत की स[illegible]ा का [illegible] मुबारक है वह लोग और बशारत [illegible] उन लोगों के लिए जो ऐसे मुतवक्कलीन के ख़िद[illegible] कुछ माल पेश करें और उनके साथ मेहरबानियां करके उनके साथ मेल जोल रखें, किसी रोज़ उनकी ख़िदमत करें, उनकी दुआ पर आमीन कहें और उनके लिए कलमए ख़ैर ज़बान से नि[illegible]गों को मुबारक हो कि यह मुतवक्कलीन, अहलुल्लाह (औलिया अल्लाह) हैं यह अल्लाह के ख़ास बंदे हैं बादशाह के हुज़ूर में बादशाह के में बादशाह के अमाएदीन के बग़ैर रसाई नहीं होती। ग़ौर करो क्या किसी शख़्स को शाही बख़्शिश या शाही इनाम बादशाह के उन मुक़र्रबों और ख़ादिमों के ज़रीये के अलावा किसी दूसरे ज़रिया से मिल सकती है, पस अगर कोई बादशाह के इन हाशिया नशीनों से और ख़िदमतगारों से मिल लें और उनके साथ हुसने सुलूक से पेश आए, उनकी ख़िदमत करे तो हो सकता है कि उनमें से कोई बादशाह के हुज़ूर में उसको पेश कर दे और उसकी पसन्दीदा आदतों और ऊमदा ख़साएल का ज़िक्र करे और बादशाह उसके हुस्न व इख़लास से ख़ुश हो कर उस बन्दा को अपनी नेमतों और बख़्शिशों से नवाज़ें (यह मिसाल अहलुल्लाह यानी औलिया ए कराम की है कि वह बारगाहे इलाही में गुनाहगारों को पेश करते हैं।

तलक़ीन

अगर मरीज़ में मौत की अलामात नमूदार हो जाएं तो घर वालों को चाहिए, उनके लिए

मुस्तहब है कि जो शख़्स मरीज़ का सबसे बड़ा रफ़ीक़ हो और मरीज़ के तौर तरीक़ों से वाकि
हो और सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी और परहेज़गार हो उसको इस बात पर मुक़र्रर करे कि वह मर
वाले को ख़ुदा की याद दिलाये और ताअते इलाही की तरफ़ उसको राग़िब करे उसके हल्क़
पानी या शरबत टपकाए और भीगी हुई रूई से उसके लबों को तर करने की ख़िदमत अन्जा
दे और ला इलाहा इल्लल्लाह की एक बार तलक़ीन करे (ज़्यादा से ज़्यादा तीन बार तलक़ी
की जाए, इससे ज़्यादा न करें कि मरने वाले की तंग दिली का बाएस हो और उसको नफ़र
न पैदा हो जाए और इस ना गवारी के आलम में जान निकल जाए)।

अगर तलक़ीन के बाद के बाद कोई और बात कर ली हो तो दोबारा तलक़ीन करना चाहिये
ताकि आख़िरी कलाम कलमए तौहीद ही हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद
गरामी है कि जिस का आख़िरी कलाम होगा वह जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, तलक़ीन बड़ी
आहिस्तगी, नरमी और ख़ूश इख़लासी से करना चाहिये मुनासिब यह है कि सूरह यासीन उसके
पास पढ़ी जाए ताकि रूह निकलने में आसानी हो जब उसकी रूह निकल जाए तो उसको चित
लेटा कर मय्यत का मुंह काबा की तरफ़ कर दिया जाए (इस तरह की अगर बिठाया जाता तो
मुंह काबा की तरफ़ होता) मय्यत की आंखें जल्द ही बन्द कर देना चाहिए

मुर्दा के हक़ में अच्छा कलमा कहो

हज़रत शद्दाद बिन औस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इरशाद
फ़रमाया तुम लोग मुर्दे के पास मौजूद हो तो उसकी आंखें बन्द कर दो क्योंकि नज़र रूह की
परवाज़ का पीछा करती है और आंखें [illegible]र और बद शक्ल हो जाती हैं मुर्दे के हक़ में कलमए
ख़ैर कहना चाहिए इस लिए कि घर वाले जो कुछ उसके बारे में कहते हैं उस पर आमीन कही
जाती है फिर मय्यत के दोनों जबड़ों को दबाव दे कर [illegible] देना चाहिए। एक रिवायत है कि
हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब का जब वक़्त (मर्ग) क़रीब आ पहुंचा तो आप ने अपने फ़र्ज़न्द
हज़रत अब्दुल्लाह से [illegible] जब देखो कि मेरी जान तालू तक आ पहुंची है तो तुम दाईं हथेली
मेरी पेशानी पर और बाईं हथेली ठोढ़ी के नीचे रख कर मेरा मुंह बंद कर देना। मुंह बन्द करने
के बाद मय्यत के जोड़ों को [illegible] किया जाए यानी कलाईयों को उठा कर इस तरह मोड़ा जाए
कि वह बाजुओं से मिल जाएं फिर उनको खोल दिया जाए इस तरह उनमें नर्मी पैदा हो जायेगी।
इसी तरह दोनों पिंडलियों को रानों से मिलाया जाये उसके बाद मय्यत के कपड़े उतार कर एक
चादर से पूरी मय्यत को ढांप दिया जाए इस लिए के मौत के बाइस मय्यत का पूरा बदन छुपाना
वाजिब हो जाता है (वाजिबुल सतर होता है) इसी बुनियाद पर उस के सारे बदन को कफ़न से
ढांपना वाजिब है मय्यत के पेट पर तलवार या आइना रख देना चाहिए ताकि पेट ज़्यादा न फूले
इस अमल के बाद मय्यत को गुस्ल के तख़्त पर रख देना चाहिये तख़ता पर मय्यत को टांगों
की तरफ़ नीचे रखना चाहिये (तख़ता सर की तरफ़ से कुछ ऊंचा कर देना चाहिए) इस अमल
के बाद मय्यत के क़र्ज़ों को अदा करना चाहिए और उसकी वसीयतों को पूरा करना चाहिए ताकि
ख़ुदावन्दे आलम के हुज़ूर में वह तमाम हुकूक़ और बारों से बरी होकर पहुंचे।

मय्यत का गुस्ल

इस से फ़ारिग़ होने के बाद मय्यत के गुस्ल तजहीज़ तकफ़ीन और तदफ़ीन में उजलत करना चाहिए अगर मौत अचानक आ गई हो तो कुछ तवक़्क़ूफ़ करने में हरज नहीं ताकि मौत का यक़ीन हो जाए यानी दोनों पहुंचें लटक जाएं, टांगें ढिली पड़ जाएं, नाक बहने लगे, कनपटियां बैठ जाएं उस वक़्त गुस्ल की तैयारी शुरू कर देना चाहिए।

मय्यत का गुस्ल

सबसे पहले गुस्साल मय्यत के कपड़े उतार कर मय्यत के जिस्म को नाफ़ से ज़ानू तक एक कपड़े में छुपा दे इस सतर पोश से नहलाने में जहां तक मुमकिन हो नहलाने वाला मुर्दे के सतर के मक़ाम से आंखें बन्द रखें, मुर्दे को एक लम्बा चौड़ा कुर्ता पहना कर नहलाना अच्छा है अगर कमीज़ तंग हो तो चाक को और कुशादा कर लिया जाए फिर आसानी और नरमी के साथ मय्यत के जोड़ों को नर्म करे अगर ज़्यादा सख़्त हो तो उनको वैसा ही छोड़ दो इस लिए कि अकसर इस अमल से हड्डियां टूट जाती हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि मुर्दे का हडडी तोड़ना ऐसा है जैसे ज़िन्दा की हडडी तोड़ना। इसके बाद मुर्दे को बैठने के अंदाज़ तक झुकाए और उसके पेट को आहिस्ता आहिस्ता सौंते ताकि अन्दर जो कुछ नजासत हो ख़ारिज हो जाए फिर हाथों पर कपड़ा लपेट ले ताकि उसके सतर पर नंगा हाथ न पड़े दूसरे यह कि कपड़े से सफ़ाई अच्छी तरह हो जाती है इसी तरह बदन के बाक़ी हिस्सा को भी हाथों पर कपड़ा लपेट कर छुना ही मुस्तहब है इस दौरान में नहलाने वाले के हाथों पर पानी बराबर डालता रहना चाहिए जिस कपड़े से इसतिन्जा कराया जाए उसको इसतिन्जा के अमल से फ़ारिग़ होने के बाद उतार कर दूसरा पाक कपड़ा लपेट लेना चाहिए इस तरह तीन मरतबा कपड़ा बदलना और हाथ धोना चाहिए, फिर मय्यत को नमाज़ के वुज़ू की तरह तरतीब के साथ वुज़ू कराए खुद नीयत करे बिस्मिल्लाह कह कर नहलाने वाला अपनी दोनों उंगुलियों को पानी से तर करके मय्यत के दांतों को मले, इसी तरह नाक के सूराख़ों में उंगलियों से सफ़ाई करने पर नाक और मुंह पर पानी डाले लेकिन एहतियात रखे कि पानी नाक और मुंह के अन्दर न जाये उसके बाद वुज़ू को तमाम करे। वुज़ू से फ़ारिग़ होकर बेरी के पत्तों से जोश दिए पानी (आबे सिदरा) से सर और दाढ़ी को धोये लेकिन बालों में कंघी न करे फिर सर से पांव तक पानी डाले उसके बाद पहलू बदल कर दाहिनी जानिब को धोए बाईं तरफ़ को करवट दे कर बायें पहलू को भी धोए। इसी तरह हर मर्तबा पानी और बेरी के पत्तों वाले पानी से गुस्ल देने के बाद सादा पानी से गुस्ल देता रहे (बेरी के पानी से गुस्ल देने के बाद ख़ालिस पानी से गुस्ल देना ज़रूरी है) अगर मैल दूर करने के लिए अशनान (घास) की ज़रूरत हो तो उसको इस्तेमाल किया जा सकता है नाख़ूनों के अन्दर का मैल निकालने के लिए ख़िलाल पर रूई लपेट कर नाख़ूनों के अन्दर से और नाक कान के सुराख़ों से मैल साफ़ कर दे फिर दोबारा पेट क़दरे उठाए और पेट पर हाथ फेर कर नजासत निकाल दे और दोबारा वुज़ू कराये फिर आख़िरी गुस्ल आबे काफ़ूर करा के किसी पाक कपड़े से बदन पोछ दे। कम से कम गुस्ल तीन बार और ज़्यादा से ज़्यादा सात बार है अगर तीन बार गुस्ल देने से पूरी पूरी सफ़ाई न हुई तो सात बार तक गुस्ल दिया

जा सकता है। ख़्याल रखना चाहिए की गुस्ल का ख़ातमा ताक़ अदद पर करे (जैसे तीन, पांच, या सात) अगर जिस्म से नजासत निकलना बंद न हो तो रूई या पाक मिट्टी रख कर बंद कर दें। बाज़ उलमा का क़ौल है कि उसको बंद करने की हाजत नहीं, इमाम अहमद के नज़दीक ऐसा अमल मकरूह है। बाज़ उलमा का क़ौल है कि गुस्ल के बाद अगर जिस्म से कुछ ख़ारिज हो जाए तो गुस्ल के इआदा की हाजत नहीं है सिर्फ़ जाए ख़ुरूज को धो दिया जाए उसके बाद नमाज़ के मानिन्द वुज़ू करा दिया जाए और कफ़न पहनाने के लिए तख़तए गुस्ल से लाश को उठा लिया जाए। अफ़ज़ल यह है कि पहली बार आबे सिदरा (बेरी के पत्तों के जोश दिए हुए पानी) से गुस्ल दिया जाए फिर ख़ालिस पानी से और आख़िर में काफ़ूरी पानी से।

मर्द की तकफ़ीन

अगर मय्यत मर्द की है तो तीन कपड़े कफ़न में दिये जाएं, कपड़ा सफ़ेद होना चाहिये (रंगीन न हो) यह तीन कपड़ें सिर्फ़ चादरें हों, सिला हुआ तहबंद, क़मीज़, पाजामा न हो, अगर कपड़े का अरज़ कम हो तो दो पार्ट कर के सी दिया जा[illegible] (अरज़ में सी दिया ज[illegible]) मय्यत के जिस्म से कफ़न लपेटने से क़ब्ल कपड़ों को ऊद और का[illegible] के बुख़रात से मुअत्त[illegible] कर लेना चाहिये लपेट की हर दो चादरों के दर्मियान ख़ुशबू लगाई जाए। बाज़ उलम[illegible] क़ौ[illegible] है कि यह तीन कपड़े कफ़न में (अगर मर्द हो तो) दिये जाएं, बग़ैर स[illegible]ली क़मीज़ जि[illegible] तुक[illegible] न हो, तहबंद और लपेट की चादर, तीन कपड़ों का कफ़न देना अ[illegible] है। हज़र[illegible] आइशा सिद्दीक़ा ने फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीन स[illegible] सहोली कपड़ों का कफ़न दिया गया था, जि[illegible] क़मीज़ [illegible]न अ[illegible]मा। इमाम अ[illegible]मद ने इस हदीस को सही माना है और अपने म[illegible]हब की बिना इसी हदी[illegible] को [illegible]ाया है।

कफ़न के क[illegible]ड़ों से ख़ुशब[illegible] मल दे और काफ़ूर [illegible] कर दोनों सुरीनों के दर्मीयान रख दे और ऊपर से क[illegible]ड़े का टुकड़ा रख [illegible], आज़ाए सजदा यान[illegible]ानी, नाक, हाथ, ज़ानू और पैरों पर काफ़ूर लगा[illegible] तरह दोनों कानों, रान, बग़ल, कानों और आंखों के बैरूनी हलक़ों में भी काफ़ूर लगा दे, अ[illegible] के अंदर काफ़ूर दाख़िल न करे। अगर उन सूराख़ों से किसी चीज़ के निकल पड़ने का डर [illegible] [illegible]क कान के सूराख़ों को रूई और काफ़ूर उन पर रख कर बंद कर दे अगर सारे जिस्म [illegible] काफ़ूर और संदल की ख़ुशबू लगाई जाए तो अफ़ज़ल है। जनाब नाफ़ेअ की रिवायत है कि हज़रत इब्ने उमर मय्यत के जंगासों (कुन्ज रान) बग़लों और कोहनियों पर मुश्क लगाया करते थे। इस तरह कफ़ना कर मय्यत को लाकर लपेट की चादरों पर रख दिया जाए पहले बायें तरफ़ से दायें तरफ़ को लपेटा जाए फिर दायें तरफ़ से बायें तरफ़ से लपेट दें, दूसरी और तीसरी चादर को भी इसी तरह लपेटा जाए लेकिन सर की जानिब का किनारा ज़्यादा हो और टांगों की तरफ़ का कम छोड़ा जाये। अगर किनारा खुल जाने का अंदेशा हो तो गिरह लगा कर बांध दिया जाये। क़ब्र में उतारने के बाद बंदिश खोल दी जाए लेकिन कफ़न को चाक न किया जाए।

औरत का कफ़न

मर्द के ख़िलाफ़ औरत को पांच कपड़ों का कफ़न देना चाहिए, एक तहबंद, ओढ़नी, कुर्ता और दो चादरें लपेट की। तहबंद पूरे बदन पर लिपटा होना चाहिये हमारे बाज़ उलमा के

नज़दीक यह बात मुस्तहब है कि पांचवीं चादर से मय्यत की रानें लपेट दी जाएं और एक चादर लिफ़ाफ़ा के क़ायम मक़ाम है औरत के सर के बालों को तीन लटों में गूंध कर पुश्त की जानिब डाल दिया जाए, मय्यत औरत की हो या मर्द की उसको दुलहन की तरह आरास्ता किया जाए, अगर किसी को मज़कूरा बाला मिक़दार में कपड़ा मय्यसर न आए तो बहालते मजबूरी एक कपड़ा ही काफ़ी है या जिस क़दर मय्यसर आ सके।

मोहरिम का कफ़न

अगर कोई हालते एहराम में फ़ौत हो जाए (हज या उमरा में) तो उस पानी से जिस में बेरी के पत्ते पड़े हों उस को गुस्ल दिया जाए, ख़ुशबू उसके पास न लाई जाए उसके सर और पांव को ढांपा न जाए सिला हुआ कपड़ा उसको न पहनाया जाए और सिर्फ़ दो कपडों का कफ़न दिया जाए। हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरफ़ात में तवक्क़ुफ़ फ़रमा थे अचानक एक शख़्स ऊंटनी से गिर पड़ा उसकी गरदन टूट गई और मर गया हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया इसको पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल दो और सिर्फ़ दो कपड़ों का कफ़न दो इसके सर को न ढांको क्योंकि अल्लाह तआला क़यामत में इसे तलबीह कहता हुआ उठाएगा।

मुर्दा जनीन का गुस्ल

ना तमाम बच्चा अगर चार माह से ज़्यादा का हो तो उसको गुस्ल दिया जाए और उसकी नमाज़ भी पढ़ी जाए और ऐसा नाम रखा जाए जो मर्द और औरत दोनों पर सादिक़ आए। बच्चा को गुस्ल मर्द दे या औरत दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं। रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम को औरतों ने गुस्ल दिया था साहबज़ादे कि उम्र आठ माह की थी उम्मे अतिया की बयान करदा हदीस से यह साबित है।

मर्द को मर्द और औरत को औरत गुस्ल दे

मर्द की मय्यत को मर्द गुस्ल दे और औरत की मय्यत को औरत गुस्ल दे अगर बीवी अपने शौहर को गुस्ल दे तो जाइज़ है शौहर अपनी बीवी को गुस्ल दे सकता है या नहीं इसके बारे में दो रिवायतें हैं एक मुस्बत दूसरा मनफ़ी, उम्मे वलद का हुक्म भी यूंही जैसा है, हज़रत अली ने अपनी ज़ौजा मोहतरमा हज़रत सय्यदा फ़ातिमा को गुस्ल दिया था।

मर्द मय्यत का कफ़न अदाए क़र्ज़ व तकमीले वसीयत पर मुक़द्दम है अगर मय्यत के पास माल बिल्कुल न हो तो जो शख़्स उसके ख़र्च के कफ़ील हो उसपर कफ़न देना लाज़िम है अगर ऐसा शख़्स मौजूद न हो तो उसका कफ़न बैतुल माल से दिया जाएगा। औरत के कफ़न का भी यही हुक्म है। शौहर पर उसका कफ़न देना वाजिब नहीं, मय्यत के दफ़न की ख़िदमत उस शख़्स को ही अंजाम देना चाहिए जिस ने गुस्ल दिया था, यही औला है।

क़ब्र का तूल व अर्ज़ और गहराई

मुर्दों के लिए क़ब्र बक़दरे मुतवस्सित क़द्दे आदम गहरी खादी जाए क़ब्र का तूल तीन हाथ और एक बालिश्त हो और अर्ज़ एक हाथ एक बालिश्त जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने हज़रत उमर से फ़रमाया था कि ऐ उमर तुम्हारा उस वक़्त क्या होगा जब तुम्
लिए तीन हाथ एक बालिश्त लम्बी और एक हाथ एक बालिश्त चौड़ी ज़मीन तैयार की जाए
फिर तुम्हारे घर वाले तुम को गुस्ल देंगे और कफ़न पहनायेंगे और ख़ुशबू मलेंगे इसके बाद उ
कर ले जायेंगे और ज़मीन में छुपा कर तुम पर मिट्टी डाल कर तन्हा छोड़ कर वापस आ जायें

मय्यत को क़ब्र में उतारना

मुस्तहब है कि मुर्दे को सर की जानिब से क़ब्र में उतारा जाए, अगर ऐसा करना दुश्वार
तो क़ब्र के पहलू से या जिस तरफ़ से ज़्यादा आसान हो उतारा जाए। इमाम अहमद से इ
तरह मनक़ूल है। औरत को दफ़न करने की ख़िदमत भी औरतें ही अंजाम दें जिस तरह गु
की ख़िदमत अंजाम दी थी अगर यह औरतों के लिए दुश्वार हो मय्यत के क़रीबी रिश्तादार
काम अंजाम दें यह भी मुमकिन न हो तो ग़ैरों में से ज़ईफ़ और बूढ़े लोग यह काम अंजाम
औरत की क़ब्र का (मय्यत को उतारते वक़्त) पर्दा करना मुस्तहब है, मर्द का न किया जा
रिवायत है कि हज़रत अली एक जगह से गुज़रे व[illegible] लोग मुर्दे को दफ़न क[illegible] रहे थे और उन्हों
क़ब्र पर पर्दा तान रखा था हज़रत अली ने पर्दा क[illegible]ींच लिया और फ़रम[illegible] ऐसा तो और
के लिए किया जाता है।

जब मुर्दे को क़ब्र के अन्दर पहुंचा दिया जाए तो [illegible]स पर तीन [illegible] (दोनों हाथ मिलाने
जो ज़र्फ़ बनता है उसको लप कहते हैं) मिट्टी डाली जा[illegible]दीस शरीफ़ में इसी तरह आया
इसके बाद बाक़ी मिट्टी डाल दी जाए, क़ब्र को [illegible]क बालिश्त ऊं[illegible]ा रखा [illegible]ाए और मिट्टी पर पा
छिड़क दिया ज[illegible]ए कुछ [illegible] भी रख[illegible]ये जा[illegible], मिट्टी से उ[illegible] को लेप देना भी जाएज़ है। क़
पर चूने से सफ़े[illegible] करना मकरूह है क़ब्र [illegible]हान [illegible] तरह ब[illegible]ना मुस्तहब है चिपटी क़ब्र मस्नू
नहीं है। हज़रत [illegible]सन बसरी [illegible]रमाते हैं [illegible] मैंने [illegible] सल्लल्लाहो अलै[illegible] वसल्लम क
रौज़ए मुबारक औ[illegible] आपके दोनों रफ़ी[illegible] (हज़रत अबू बकर [illegible]दीक़ और हज़रत उमर) क
मज़ारात को देखा ह[illegible]हान नुमा हैं।

तलक़ीने मय्यत

मुर्दे को दफ़न करने[illegible] तलक़ीन करना मस्नून है। हज़रत अबू उमामा से मरवी हदी
में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम से जब काई मर जा
और एसके क़ब्र में दफ़न करके मिट्टी डाल दी जाए तो तुम में से कोई उसके सिरहाने खड़े होक
कहे ऐ फ़लां इब्ने फ़लाना! बेशक वह सुनता है जवाब नहीं दे सकता, फिर कहे फ़लां इब्ने फ़ला
जब दूसरी मर्तबा आवाज़ देगा तो मुर्दा उठकर बैठ जाएगा फिर तीसरी बार भी इसी तर
मुख़ातिब करे, उस वक़्त मय्यत कहती है, ऐ ख़ुदा के बन्दे! अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल
फ़रमाए, हमें राहे रास्त दिखाओ, लेकिन तुम सुन नहीं सकते, फिर तलक़ीन कहने वाला कहे त
जिस कलमा पर दुनिया से निकला था उसको याद कर, तू शहादत देता था कि अल्लाह के
सिवा कोई माबूद नहीं है और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल है
और तू अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबी
होने और क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी था।

उस वक़्त मन्कर नकीर कहते हैं कि इसको मुदल्लल और मुकम्मल जवाब बता दिया गया

है हम इसके पास बैठ कर क्या करें।

किसी शख़्स ने यह सुन कर हजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह अगर किसी शख़्स की वालिदा का नाम मालूम न हो तो किस तरह उसको पुकारें, हजूर ने इरशाद फ़रमाया कि उसको हज़रत हव्वा की तरफ़ मन्सूब कर दे तलक़ीन करने वाला शख़्स अगर चाहे तो यह भी उसमें इज़ाफ़ा कर सकता है कि तू मुसलमानों के भाई होने और काबा के क़िब्ला होने पर राज़ी था (यानी तू ने इसका भी इक़रार किया था) तो उस इज़ाफ़ा से कोई हरज नहीं इसी तरह उस तलक़ीन में दूसरे शिआरे इस्लाम का ज़िक्र भी किया जा सकता है।

बाब 22

हफ़्ता भर की नमाज़ें और उनके फ़ज़ाएल

हफ़्ता भर में दिन में पढ़ी जाने जाने वाली नमाज़ें

हज़रत अबू सलमा ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया जब तुम घर से निकलो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ लिया करो, यह रकअतें तुम को बैरूनी और ख़ारजी आफ़ात से महफ़ूज़ रखेंगी और जब घर में दाख़िल हुआ करो तब भी दो रकअतें पढ़ लिया करो, यह रकअतें तुम को दाख़िली और अन्दरूनी ख़राबी और परेशानी से मामून रखेंगी।

फ़ज्र की नमाज़ के बारे में इरशादे नबवी

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ के बारे में इरशाद फ़रमाया कि जो कोई वुज़ू कर के मस्जिद की तरफ़ जाता है और वहां पहुंच कर नमाज़ पढ़ता है तो उसके हर कदम पर उसके लिए एक नेकी तहरीर की जाती है और एक गुनाह महव कर दिया जाता है, उसको हर नेकी के एवज़ दस गुना दिया जाता है फिर जब वह नमाज़ पढ़ कर उस वक़्त लौटता है जब सूरज के तुलूअ़ का वक़्त होता है तो अल्लाह तआ़ला उसके बदन के हर बाल के एवज़ [illegible] नेकी तहरीर फ़रमा देता है और इस तरह वह एक हज्जे मक़बूल का सवाब ले कर वापस लौटता है और अगर दूसरी नमाज़ पढ़ने तक वह वहीं मस्जिद में मुक़ीम रहे तो उस नशिस्त का बदला अल्लाह तआ़ला उसको दो लाख नेकियां अता फ़रमाता है और जो मुसलमान इशा की नमाज़ पढ़ता है उसको भी यही कुछ बदला अता फ़रमाता है और वह एक मक़बूल उमरा का सवाब ले कर लौटता है।

हज़रत उसमान का इरशाद

हज़रत उसमान इब्ने अफ़्फ़ान फ़रमाते हैं कि मैंनं ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो शख़्स जमाअत के साथ इशा की नमाज़ पढ़ता है वह गोया निस्फ़ शब तक नमाज़ पढ़ता है और जो शख़्स जमाअत के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढता है वह गोया पूरी रात नमाज़ अदा करता है।

मुनाफ़िक़ों पर नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े इशा भारी थी

अबू सालेह हज़रत अबू हुरैरा की सन्द से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ों पर नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े इशा से बढ़कर कोई चीज़ भारी नहीं थीं, अगर वह जानते कि इन दोनों नमाज़ों का कितना अज्र व सवाब है तो यक़ीनन वह सर के बल घसीटते आते और मेरा इरादा है कि मैं ऐसे लोगों के घरों को आग लगवा दूं जो हमारे साथ नमाज़ के लिए घरों से नहीं निकलते।

ज़वाल के बाद नमाज़

अता बिन यसार ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाहा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स ज़वाल के बाद चार रकअतें अच्छी तरह क़िरअत व रुकूअ़ व सुजूद के साथ पढ़ता है तो हज़ार फ़रिश्ते उसके साथ नमाज़ पढ़ते हैं और शाम तक उसके लिए मग़फ़िरत का दुआ करते रहते हैं।

रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़वाल के बाद की चार रकअतें कभी तर्क नहीं फ़रमाते थे, आप उन रकअतों को तवील पढ़ते थे और फ़रमाते थे उस वक़्त आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और मैं पसन्द करता हूं कि मेरा कोई अमल उस वक़्त उठा लिया जाए।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह क्या यह चार रकअतें दो सलामों से पढ़ी जायें? आपने फ़रमाया नहीं (यानी एक सलाम से पढ़ी जायें) नीज़ हुज़ूरे वाला ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाए जो अस्र से पहले चार रकअतें पढ़ ले।

यक शम्बा की नमाज़

हज व उमरा की नमाज़

हज़रत अबू हुरैरह से मरवी है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस ने इतवार के रोज़ [illegible] रकअत [illegible] पढ़े और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार अपमनर रसूल पढ़ा अल्लाह तआ़ला उसको [illegible] मर्द और औरत की नेकियों के बराबर नेकियां देता है। नबी [illegible] सवाब [illegible]हमत फ़[illegible] एक हज और एक उमरा का सवाब उसके अमाल नामे में लिख देता है, हर रकअत के बदला उसको [illegible]ार नमाज़ों का अता फ़रमाता है। अलावा अज़ीं अल्लाह तआ़ला जन्नत में हर हर्फ़ के एवज़ उसको मुश्के अज़फ़र से तामीर किया हुआ एक शहर अता फ़रमाएगा।

हज़रत अली मुर्तुज़ा [illegible] है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इतवार के दिन नमाज़ की कसरत करके अल्लाह तआ़ला की तौहीद बयान किया करो क्योंकि वह यकता है और उसका कोई शरीक नहीं।

चार रकअत इस

अगर इतवार के दिन वह जुहर के फ़र्ज़ और सुन्नतों के बाद कोई शख़्स चार रकअत इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के साथ अलीफ़ लाम मीम सजदा और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के साथ तबारकुल मुल्क पढ़े और तशहहुद पढ़ कर सलाम फेरे फिर खड़ा होकर दो रकअतें और पढ़े और उन दोनों रकअतों में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह जुमा की क़िरअत करेगा और फिर दुआ मांगेगा तो अल्लाह तआ़ला पर उसका हक़ है कि उसकी हाजत पूरी फ़रमाए और उसको ईसाईयों के दीन से महफ़ूज़ रखे।

दो शम्बा की नमाज़

हज़रत अबू ज़ुबैर हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत करते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने दो शम्बा (पीर) के दिन आफ़ताब बलन्द होने के बाद दो रकअत नमाज़ पढ़ी और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी और एक बार सूरह इख़लास और एक एक बार मुऊज़तैन पढ़ कर सलाम फेरा फिर दस मर्तबा असतग़फ़िरूल्लाह और दस बार दरूद शरीफ़ पढ़ा तो अल्लाह तआ़ला उसके तमाम गुनाह बख़्श देगा।

साबित नबानी हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स पीर के दिन बारह रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक मर्तबा आयतल कुर्सी पढ़े, नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद बारह मर्तबा सूरह इख़लास और बारह मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़े तो क़यामत के दिन मुनादी पुकारेगा कि फ़लां का बेटा फ़लां कहां है? वह उठे और अपने सवाब अल्लाह तआ़ला से हासिल करे, उसको सवाब में जो चीज़ पहले अता होगी वह एक हज़ार जोड़े और ताज होगा, उससे कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ उसके इस्तिक़बाल के लिए एक हज़ार फ़रिशते मौजूद होंगे।

सेह शम्बा की नमाज़

यज़ीद रफ़ाई हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मंगल के दिन दस रकअतें निस्फुन्नहार (दोपहर) से क़ब्ल पढ़ेगा (एक रिवायत में है कि दिन चढ़े पढ़ेगा) और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक बार आयतल कुर्सी और तीन मर्तबा सूरह इख़लास पढ़ेगा तो उसके नामए आमाल में सत्तर दिन तक कोई गुनाह नहीं लिखा जाएगा और उस दौरान में अगर वह फ़ौत हो जाएगा तो उसको शहादत की मौत नसीब होगी और उसके सत्तर साल की गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

चहार शम्बा की नमाज़

अबू इदरीस ख़ौलानी हज़रत मआ़ज़ बिन जबल के हवाले से बयान करते हैं कि हज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ज़ो शख़्स चहार शम्बा के दिन चाश्त के वक़्त बारह रकअतें इस तहर पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा, आयतल कुर्सी एक एक बार और सूरह इख़लास तीन बार, मुऊज़तैन तीन बार पढ़ी जाए तो ऐसे शख़्स को एक फ़रिशता जो अर्श के क़रीब रहता है पुकार कर कहेगा ऐ अल्लाह के बन्दे! तेरे पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गये अब अज़ सरे नौ अमल शुरू कर, अल्लाह तआ़ला उससे अज़ाबे क़ब्र, फ़िशारे क़ब्र और ज़ुल्मते क़ब्र को दूर फ़मा देता है और उससे क़यामत की तमाम मुसीबतों को उठा लेगा, उस बन्दा का उस दिन का अमल नबी के अमल की हैसियत से उठाया जाएगा।

पन्ज शम्बा की नमाज़

हज़रत इकरमा ने हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत की है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो बन्दा जुमेरात के दिन ज़ुहर व अस्र के दर्मियान दो रकअतें इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद एक सौ मर्तबा आयतल कुर्सी और दूसरी

रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सौ मर्तबा सूरह इख़लास और नमाज़ के बाद सौ मर्तबा मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे तो अल्लाह तआला उसे रजब, शाबान और रमज़ान के रोज़ों के बराबर सवाब अता फ़रमाएगा अलावा अज़ीं उसको एक हज का सवाब भी मिलेगा उसके नामए आमाल में उन तमाम लोगों के बराबर नेकियां लिखी जायेंगी जो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और उस पर तवक्कुल किया है।

जुमा के दिन की नमाज़

तमाम दिन इबादत करना

अली बिन हुसैन ने अपने वालिद से और उन्होंने अपने दादा से रिवायत की है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया कि जुमा का पूरा दिन इबादत का है जो शख़्स एक दो नेज़ा आफ़ताब बलन्द होने पर अच्छी तरह वुज़ू कर के अल्लाह तआला के लिए चाश्त की तस्बीह की दो रकअतें [illegible]ब कि नीयत से पढ़े [illegible] अल्लाह तआला ऐसे शख़्स के लिए दो सौ नेकियां लिख देता है और उसकी दो सौ [illegible]राईयां माफ़ फ़रमा देता है और जो बन्दा चार रकअत पढ़े अल्लाह तआला जन्[illegible]त में उसके [illegible] सौ [illegible]र्जे बलन्द फ़रमा देता है जो आठ रकअतें पढ़े अल्लाह तआला बहिश्त मे[illegible]के आठ सौ [illegible]र्जे बलन्द फ़रमा देता है और उसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमा दिये [illegible]ाते हैं।

जो शख़्स बारह रक[illegible]तें पढ़े अल्[illegible] तआ[illegible]ा उसके लिए एक हज़ार दो सौ नेकियां लिख देता है और उ[illegible]के एक ह[illegible]ार दो सौ [illegible] बलन्[illegible] फ़रमा दे[illegible]ै। हज़रत अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा के हव[illegible]े से रिवायत कि है कि [illegible]ज़ूरे [illegible]ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने जुमा के [illegible]न सुबह [illegible] नमाज़ [illegible]माअत से [illegible] की [illegible]ुलूअ आफ़ताब तक मस्जिद में बैठा ज़िक्रे खुदा [illegible]रता [illegible]ा उसको जन्नतुल फ़िरदौस में सत्तर दर्जे नसीब होंगे। हर दो दर्जों का दर्मियानी फ़ासला [illegible]रौ घोड़े की सत्तर साला तक क़तअ मुसाफ़त के बराबर होगा और जिसने जुमा की नमाज़ जमाअ[illegible]के साथ अदा की उसको जन्नतुल फ़िरदौस में पांच सौ मंज़िलें अता होंगी, हर दो मंज़िल[illegible] दर्मियानी फ़ासला तेज़ रौ घोड़े की पचास साला मुसाफ़त के बक़द्र होगा और जिस ने अस्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी गोया उसने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद से आठ गुलामों को आज़ाद करने का सवाब हासिल किया और जिसने मग़रिब की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की उसने गोया एक मक़बूल हज और उमरा का सवाब हासिल किया।

जुहर व अस्र के माबैन दो रकअत पढ़ना

मुजाहिद ने हज़रत इब्ने अब्बास के हवाले से नक़्ल किया है कि हजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स जुमा के दिन जुहर व अस्र के दर्मियान दो रकअत नमाज़ पढ़ ले और अव्वल रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार, आयतल कुर्सी एक बार और कुल अऊज़ुबे रब्बिल फ़लक़ पच्चीस बार पढ़े और और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार, सूरह अख़लास एक मर्तबा और कुल अऊज़ुबे रब्बिल फ़लक़ बीस मर्तबा पढ़े उसके बाद सलाम फेर कर पांच

बार ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़े तो ऐसे शख़्स को उस वक़्त तक मौत नहीं आएगी जब तक वह जन्नत में अपना मक़ाम नहीं देख लेगा और अल्लाह तआला का ख़्वाब में दीदार नहीं कर लेगा।

रिवायत है कि एक आराबी ने हज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में खड़े हो कर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम शहर से दूर सेहरा में आबाद हैं और जुमा को आप की ख़िदमत में हाज़िर नहीं हो सकते, लिहाज़ा आप मुझे ऐसा अमल बता दें कि जब मैं अपनी क़ौम में वापस जाऊं तो उनको जुमा की क़ायम मक़ाम कोई चीज़ बता सकूं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया ऐ आराबी! जुमा का दिन हो तो दिन चढ़ने के बाद तुम दो रकअतें इस तरह अदा कर लिया करो कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा और कुल अऊज़ुबे रब्बिल फ़लक़ और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा और कुल अऊज़ुबे रब्बिन्नास पढ़ो फिर नमाज़ पूरी कर के सलाम फेर दो, इसके बाद बैठे बैठे सात बार आयतल कुर्सी पढ़ो इससे फ़ारिग़ हो कर फिर आठ रकअतें चार चार करके इस त[illegible] अदा करो कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के साथ सूरह नसर एक [illegible] बार और सूरह अ[illegible]लास पचीस मर्तबा पढ़ो, फिर अपनी नमाज़ पूरी कर लो इसके बाद स[illegible]र मर्तबा ला हौला [illegible] कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीईल अज़ीम पढ़ो, इसके बाद आप ने फ़[illegible]माया उस ज[illegible] की क़[illegible]म जिसके हाथ में मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है जो [illegible] मोमिन या [illegible]मिना इस नमाज़ को इस तरीक़ा पर पढ़ लेगा जो मैंने बताया है मैं जन्नत में उ[illegible] ज़ामिन हो [illegible]ऊंगा और वह अपने मक़ाम से उठने न पाएगा कि अल्लाह [illegible]आला उसको और उसके वालि[illegible]न को बख़्श देगा (बशर्ते कि वह मुसलम[illegible]न हों) [illegible]र्श के नी[illegible] मुना[illegible] निदा देगा कि ऐ ख़ुदा के बन्दे! अब तू अज़ सरे नौ अमल शु[illegible] कर दे (पि[illegible]ले तमाम [illegible]नाह [illegible] गये) इस नमाज़ की और बहुत सी फ़ज़ीलतें हैं उ[illegible] सबका [illegible]यान तवा[illegible] का मौ[illegible]गा [illegible] ने मज़कूरा नमाज़ के दूसरे मसाएल भी बयान [illegible]ये हैं और जो जुमा के दिन बारह मर्तबा [illegible]रह इख़लास पढ़ी जाने वाली नमाज़ में मज़कूर हैं [illegible] उस नमाज़ को पढ़े।

[illegible]म्बा की नमाज़

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत

हज़रत सईद ने हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत कि है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो कोई हफ़्ता के दिन चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद तीन बार कुल या अय्योहल काफ़ेरून पढ़े और सलाम फेर कर आयतल कुर्सी पढ़े, अल्लाह तआला हर हर्फ़ के एवज़ एक हज और एक उमरा का सवाब देगा और उसके आमाल नामा में एक साल के रोज़ों और रात के क़याम का सवाब दर्ज किया जाएगा और अल्लाह तआला उसको हर हर्फ़ के बदले एक शहीद का सवाब अता फ़रमाएगा, वह शख़्स अर्श के साया में शहीदों और नबीयों की सफ़ों में मौजूद होगा।

हफ़्ता की रातों की नमाज़ें

शबे यक शम्बा की नमाज़

हज़रत अनस बिन मालिक की रिवायत

हज़रत अनस बिन मालिक फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि जो बन्दा इतवार की शब में बीस रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार, सूरह इख़लास पच्चास बार और मऊज़तैन एक एक बार और अल्लाह तआला से सौ बार इस्तिग़फ़ार करे अपने नफ़्स और वालिदैन के लिए सौ बार इस्तिग़फ़ार करे और मुझ पर सौ बार दरूद भेजे और अपने इज्ज़ का इज़हार करे और अल्लाह तआला की कुव्वत और कुदरत के सामने झुक जाए और यह पढ़े।

तो ऐसे शख़्स का हश्र क़यामत के दिन अमन [illegible] वालों के साथ होगा [illegible]र अल्लाह तआला के करम के ज़िम्मा होगा कि वह उसको जन्नत में [illegible]म्बिया के साथ दाख़ि[illegible] फ़रमा दे।

शबे दो शम्बा की नमाज़

नमाज़े हाजत

आमश ने [illegible]ज़रत अ[illegible] के हवाले [illegible] बयान किया है कि [illegible]हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरश[illegible]द फ़रमाया कि जो शख़्स [illegible] शम्[illegible] की शब [illegible]चार रकअत नमाज़ इस तरह अदा करे की कि पहली रकअत में [illegible]ह फ़ातिहा [illegible]क बार सू[illegible]लास दस बार पढ़े और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार [illegible]र सूरह इख़लास बीस बार पढ़े ती[illegible] रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़ल[illegible] बार पढ़े और चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़लास चालिस बार पढ़े फिर तशहहुद पढ़कर सलाम फेर दे और सलाम के बाद 75 मर्तबा सूरह इख़लास पढ़े और अल्लाह [illegible] से अपने और अपने वालिदैन के लिए 75 बार इस्तिग़फ़ार करे फिर मुझ पर 75 बार दरूद भेजे और उसके बाद अपनी हाजत तलब करे तो खुदा पर हक़ हो जाता है की उसका सवाल पूरा करे उस नमाज़ को नमाज़े हाजत कहा जाता है।

हज़रत अबू ओमामा से मरवी है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स शबे दो शम्बा को दो रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पन्द्रह मर्तबा सूरह इख़लास पढ़े फिर नमाज़ पूरी करके सलाम फेरे और उस के बाद पन्द्रह मर्तबा आयतल कुर्सी और पन्द्रह मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़े तो अल्लह तआला उसका नाम जन्नती लोगों में मुक़र्रर फ़रमा देता है ख़्वाह वह अहले दोज़ख़ से क्यों न हो और उस के तमाम ज़ाहिरी गुनाह बख़्श देगा उसको हर आयत के बदला हज वग़ैरह का सवाब अता फ़रमाएगा और अगर दूसरे दो शम्बा के दर्मियान वह फ़ौत हो गया तो उसको शहीद का दर्जा मिलेगा।

शबे सह शम्बा की नमाज़

हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो कोई सह शम्बा की शब में दस रकअत नमाज़ पढ़े और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह नसर पांच बार पढ़े तो अल्लाह तआला उसको जन्नत में एक ऐसा घर अता फ़रमाएगा जो तूल व अर्ज़ के एतबार से दुनिया से सात गुना बड़ा होगा।

शबे चहार शम्बा की नमाज़

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि बुध की रात में दो रकअत नमाज़ इस तरह पढ़ो कि सूरह फ़ातिहा के बाद दस बार सूरह फ़लक़ पहली रकअत में और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद दस बार सूरह नास तो हर आसमान से सत्तर हज़ार फ़रिशते उतर कर आते हैं और उस नमाज़ी के लिए क़यामत तक सवाब [illegible]हते रहते हैं।

शबे पन्ज शम्बा की नमाज़

हज़रत अबू सालेह ने हज़रत अबू हुरैरा के हवाले [illegible] नक़्ल किया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो बन्दा जुमेरात की रात में मग़रिब व इशा के दर्मियान दो रकअतें इस तरह अदा करे कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पांच बार आयतल कुर्सी पांच बार सूरह इख़लास और मऊज़तैन पढ़े फिर नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर पन्द्रह बार अस्तग़फ़िरूल्लाह पढ़ कर उसका सवाब अपने वालि[illegible] [illegible]हुंचाए तो गोया उसने वालिदैन का हक़ अदा कर दिया अगरचे वह अपने वालदैन का नाफ़रमान [illegible] आक़ कर्दा बेटा ही क्यों न हो अल्लाह तआला [illegible] सिद्दीक़ीन और शुहदा का दर्जा अता फ़रमाएगा।

शबे जुमा की नमाज़

हज़रत जाबिर की रिवायत

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहे अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिस ने शबे जुमा में मग़रिब व इशा के दर्मियान बारह रकअत इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद दस मर्तबा सूरह इख़लास पढ़ी गोया उस ने बारह साल तक दिन के रोज़े रखे और रात की इबादत की।

लैलतुल क़द्र की इबादत का सवाब

कसीर बिन सलमा ने हज़रत अनस बिन मालिक के हवाले से बयान किया है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो कोई इशा की नमाज़ जुमा की शब में बा जमाअत अदा करे और उसके बाद वह शख़्स दो रकअत सुन्नत अदा कर ले और उसके बाद दस रकअत नफ़्ल पढ़े और हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और मऊज़तैन और सूरह

इख़लास एक एक बार पढ़े फिर तीन रकअत वित्र अदा कर के अपनी दाहिनी करवट पर सो जाए और मुंह क़िब्ला की तरफ़ रखे तो उसका अज्र यह है कि गोया उसने तमाम शबे क़द्र इबादत में बसर की।

शबे जुमा में दरूद की कसरत

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह भी इरशाद है कि जुमा की अज़ीमुश्शान रात और ताबनाक दिन में मुझ पर कसरत से दरूद भेजा करो।

शबे शम्बा की नमाज़

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो बन्दा हफ़्ता की शब में मग़रिब और इशा के माबैन बारह रकअत नमाज़े नवाफ़िल अदा करे तो अल्लाह तआला जन्नत में उसके लिए एक क़स्र बना देगा (अता फ़[illegible]ा देगा) गोया उसने हर मोमिन और मोमिना के हक़ में सदक़ा अदा कि[illegible]ौर यहूदियत से बेज़ा[illegible] का इज़हार किया और फिर ख़ुदा वन्द तआला के करम के ज़िम्मा है [illegible] उसे बख़्श दे।

नफ़्लों की अ[illegible]गी

तौबा के बयान में हम मुफ़स्सलन यह कह चुके हैं कि फ़[illegible]एज़ [illegible]र सुनन की अदाएगी के बाद नफ़्ल नम[illegible]ज़ों, रोज़[illegible]र सदक़[illegible]दा [illegible]रने की तरफ़ तवज्जोह की जाए, फ़राएज़ व सुनन को अदा [illegible]िए बग़ैर इन इबादाते ना[illegible]िला [illegible]शगूल [illegible]ो अगर इन फ़राएज़ की तकमील नहीं कर सका है तो मज़कू[illegible] दिन रात [illegible] नवाफ़ि[illegible]तलिफ़ुन नौ फ़राएज़ ही की क़ज़ा की नीयत करे ता[illegible] फ़राए[illegible] उससे [illegible]क़ित हो जायें (नफ़्ल फ़[illegible]ज़ की कमी को कर देते हैं) अल्लाह तआला अप[illegible] व करम से उसके लिए ज़्यादा से ज़्यादा अज्र जमा कर देगा जब वह उन तमाम फ़राएज़ [illegible] अदाएगी से सुबुकदोश हो जाए तो फिर मज़कूरा औक़ात में नवाफ़िल की नीयत की जाए।

सलातुत्तसबीह और इसकी फ़ज़ीलत

सलातुत्तसबीह सग़ीरा और कबीरा गुनाहों को माफ़ करा देती है

अबू नसर ने बिल असनाद हज़रत इब्ने अब्बास से बयान किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अम्मे मुहतरम हज़रत अब्बास से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि ऐ चचा! क्या मैं तुम को ऐसी दस बातें बता दूं की अगर तुम उन पर अमल पैरा हो जाओ तो अल्लाह तआला तुम्हारे अगले पिछले, नए पुराने सब गुनाह ख़्वाह वह बिल इरादा हों या बग़ैर इरादा, सग़ीरा हों या कबीरा, पोशीदा हों या ज़ाहिर सबके सब माफ़ फ़रमा दे और यह दस बातें यह हैं कि तुम चार रकअत नमाज़ पढ़ो, जिस कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा और जो सूरह याद हो पढ़ो, पहली रकअत में सना के बाद 15 बार और क़िरअत के बाद 10 बार यह पढ़ो

सुब्हानल्लाहे वल हम्दो लिल्लाहे वला इलाहा इल्लाहो वल्लाहो अकबर फिर रूकूअ में इसी तसबीह को दस मरतबा पढ़ो फिर रूकूअ से सर उठा कर और क़ौमा में इस तसबीह को दस बार पढ़ो फिर सजदा में दस बार यही तसबीह पढ़ो पहले सजदा के बाद जलसा में बैठो तो यही तसबीह दस बार पढ़ो इस तरह हर रकअत में पचहत्तर दफ़ा यह तसबीह होगी इस तरह तुम चार रकअतों में यह तसबीह पढ़ो। अब अगर तुम को कुदरत है तो यह नमाज़ रोज़ाना पढ़ो, वरना हर जुमा को पढ़ लिया करो अगर यह भी न हो सके तो साल में एक मरतबा पढ़ लो और यह भी न हो सके तो तमाम उमर में एक बार पढ़ लो।

दूसरी हदीस में है कि पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा और उसके साथ सूरह आला, दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह ज़िलज़ाल पढ़ें, तीसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह काफ़ेरून और चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा और सूरह इखलास पढ़ी जाए।

इमाम अबू नसर ने अपने वालिद कि सनद से साथ हम से जो हदीस बयान की है उसमें ख़िताब हज़रत अबू जाफ़र बिन अबू तालिब से फ़रमाया है और इस तरह आख़िर बताया है। यह भी कहा गया है कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहो अ[illegible] वसल्लम यह हदीस [illegible] उमर बिन आस से मुख़ातिब हो कर फ़रमाई लेकिन इस हदीस में हालते क़याम में दस तसबीह[illegible]ज़ीद बताई गई हैं (यानी 25 बार) इस के अलावा और किसी हैयत में तसबीह पढ़ने [illegible] ज़िक्र नहीं है।

तीन सौ तसबीहें

बाज़ रिवायतों में आया है कि यह सब तीन सौ तसबीहें हैं [illegible]नी चा[illegible] रकअतों की तसबीहात तीन सौ हैं एक रिवायत [illegible]ह सब तम[illegible] तसबीहों की तादाद [illegible]क हजार दो सौ है इस तसबीह के चार जुमले ह[illegible] सुब्हानल्लाह, वल हम्दो [illegible]ल्लाह व ला इ[illegible] इल्लाह, वल्लाहो अकबर। अगर इन चारों को ती[illegible] से ज़र्ब दें [illegible]ी बारह स[illegible] बनते [illegible]ह तीन सौ बार पढ़ना साबित है।

नमाज़ को जु[illegible] के [illegible]न दो मर[illegible] पढ़ना, एक मरतबा [illegible] और एक मरतबा रात में मुस्तहब है।

नमाज़ इ[illegible]ख़ारा और उसकी दुआएं

इस्तख़ारा की तालीम

मुहम्मद बिन मंकदर ने हज़रत जाबिर के हवाले से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर काम के लिए इस्तख़ारा कि तालीम हम को इस तरह दी जिस तरह आप ने कुरआन की सूरतों की तालिम दी। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जब तुम्हें कोई काम दर पेश हो या सफ़र का इरादा हो तो दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ करे यह दुआ पढ़ो।

इलाही मैं तुझ से तेरे इल्म के ज़रिये ख़ैर की दरख़्वास्त करता हूं और तेरी कुदरत से तेरी मदद और तेरी इस्तक़ामत चाहता हूं मैं क़ादिर नहीं हूं साहबे कुदरत तू है मैं नादान हूं और तू दाना है, इलाही! ग़ैब का इल्म तुझ ही को है, इलाही! तूही जानता है यह काम मेरे दीन, मेरी दुनिया, मेरी आख़िरत और मेरे अन्जाम में बेहतर है। जल्दी या देर में फ़ायदा देने वाली ही जो चीज़ मेरे हक़

में बेहतर हो और मेरे लिए फ़ायदा बख़्श हो वह मेरे लिए मुक़द्दर और आसान कर। उसमें मुझे बरकत दे और अगर ऐसी न हो तो मुझ से दूर रख और जिस जगह मैं हूं वहां मेरे लिए नेकी और आसान कर दे जब तक मैं दुनिया में रहूं मुझे अपने हुक्म से खुशनूद कर तू अरहमर्राहेमीन है।

सफ़र, तिजारत, हज व ज़ियारत के लिए इस्तख़ारा

अगर कोई शख़्स किसी सफ़र या किसी तिजारत के अज़्म रखता हो तो अपनी दुआए इस्तख़ारा में इन अल्फ़ाज़ को और बढ़ाये।

ऐ अल्लाहफ! मैं उस तरफ़ अपने मकसद के लिए जाना चाहता हूं तेरे सिवा मेरा और कोई सहारा नहीं और ने तेरी ज़ात के सिवा किसी और से उम्मीद है न ही कुव्वत है कि उस पर तवक्कुल करूं और न ही तेरे सिवा कोई और चारा है कि उसकी पनाह हासिल करूं मगर मैं तेरे फ़ज़्ल का तलबगार हूं, तुझ से तेरी रहमत और नेकियों का ख़्वास्तगार हूं, मैं तेरी इबादत पुर सुकून तरीक़े पर करना चाहता हूं, ऐ अल्लाह तू मेरे उस रास्ते की राहतों और कुलफ़तों को पहले से ख़ूब जानता है, अल्लाह तू अपनी कुदरत से मुझ पर आई हुई हर बला को टाल दे और हर सख़्ती को मुझ पर आसान कर दे और बीमारी को दूर फ़रमा दे और मुझे अपनी रहमत की चादर से ढांप ले और मुझ पर अपनी मदद से करम फ़रमा, मुझ को अपनी हिफ़ाज़त और पूरी तरह से आफ़ियत में रख।

यह दुआ पढ़ कर सामाने सफ़र उठाए, सफ़र शुरू कर दे और यह पढ़े।

इलाही! तेरा फ़ैसला मुझ पर बर हक़ है, मेरी उम्मीद को नेक बना और जिस चीज़ से मैं डरता हूं उससे मुझे बचा जिस को तू मुझ से ज़्यादा जानता है और इस सफ़र को मेरे लिए दीन और आख़िरत की भलाई बना दे, ऐ अल्लाह मैं तुझ से इल्तजा करता हूं तू निगरां बन जा मेरे इन अहल व अयाल का और उन अज़ीज़ों का जिनको मैं छोड़ आया हूं जिस तरह तू तमाम मोमिनीन के घरों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है और उनको हर मुसीबत से बचाता है, उनसे हर तकलीफ़ को दूर करता और रंज व ग़म को रफ़ा करता है दुनिया और आख़िरत में अपनी रज़ा और ख़ूशनूदी से मेरी दिलजोई फ़रमा अपनी याद और अपना शुक्र नसीब कर (मुझे तौफ़ीक़ अता कर) अपनी इबादत और [illegible] रखा, मुझ से राज़ी हो और मुझे बहिश्त में दाख़िल कर तू तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

मुसाफ़िर को दौराने सफ़र में यह दुआ बकसरत पढ़ना चाहिए इस लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस दुआ को बकसरत पढ़ा करते थे।

तमाम तारीफें उस खुदा के लिए है जिस ने मुझे पैदा किया जब कि मैं कुछ भी तो न था, ऐ अल्लाह दुनिया की परेशानियों, ज़माने की सऊबतों और रात दिन की मुश्किलों में मेरी मदद फ़रमा और मुझ को ज़ालिमों के शर से बचा, इलाही तू सफ़र में मेरा साथ दे और मेरे घर वालों के लिए निगरां बन जा, मेरी रोज़ी में बरकत अता फ़रमा मुझे अपनी आंखों में तू ज़लील रख लेकिन लोगों के निगाहों में इज़्ज़त दे, मुझे सेहतमंद रख, मेरे आज़ा दुरुस्त रख और मेरे रब मुझे अपना दोस्त बना, मैं तेरी उस शान वाली ज़ात की पनाह चाहता हूं जिस ने तमाम आसमान रौशन किए और जिससे तमाम तारीकियां छट गई हैं और जिस रौशनी से गुज़श्ता और आइन्दा आने वालों के काम सुधर गये मैं तुझ से पनाह चाहता हूं कि तू मुझ पर अपना ग़ज़ब नाज़िल

न फ़रमाना और नाराज़गी का इज़हार न फ़रमाना। इलाही मैं तेरी जानिब बक़द्र अपनी ताक़त व इस्तेताअत के रूजूअ होता हूं और नहीं है क़ोई ताक़त और कुव्वत सिवाए अल्लाह के। इलाही मैं पनाह चाहता हूं तेरे ज़रिया सफ़र की मुशक़्क़त और नाकाम वापस आने से और फ़राख़ी व आसूदगी के बाद तंगी से और मज़लूम की बद्दुआ से, ऐ अल्लाह हमें रास्ता तय करा दे और हम पर इस सफ़र को आसान फ़रमा दे मैं तुझ से बेहतर बात का ख्वाहां हूं और तुझ से मग़्फ़िरत तलब करता हूं और तेरी रज़ा का तालिब हूं मैं तुझ से तमाम भलाईयां चाहता हूं बेशक तू तमाम बातों पर कुदरत रखने वाला है।

घर से निकलते वक़्त की दुआ

जब सफ़र के लिए अपने घर से निकले तो पढ़े

बिस्मिल्लाहे तवक्कलतो अलल्लाहे वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह।

एक हदीस में इस तरह आया है कि (उसके जवाब में) फ़रिश्ते कहते हैं तेरी हिफ़ाज़त की गई, तुझे बचा लिया गया, तेरी हिमायत की गई।

सवार होते वक़्त की दुआ

जब मुसाफ़िर सवार हो तो तीन बार अलहम्दो लिल्लाह कहे इसके बाद यह दुआ पढ़े।

जिसने इस (सवारी) को मेरा ताबेअ़ किया वह ज़ात पाक है यह ताक़त मुझ में तो न थी कि मैं इस को क़ाबू में रख सकूं ऐ अल्लाह तेरी ज़ात पाक है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं इलाही मैंने अपनी जात पे जुल्म किया है मुझे बख़्श दे तेरे सिवा कोई दूसरा बख़्शने वाला नहीं।

यह दुआयें मज़कूरा [illegible] को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इसी तरह मरवी है, हज़रत इब्ने उमर से मरवी हदीस में इस तरह है कि जब आप सफ़र फ़रमाते और सवारी पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो इस तरह फ़रमाते।

इलाही! मुझे इस सफ़र में परहेज़गारी अता फ़रमा, मुझे ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दे जो तेरी रज़ामंदी का मोजिब हो [illegible] सफ़र आसान फ़रमा दे, ज़मीन की दूरी व दराज़ी हम पर आसान फ़रमा दे ताकि मैं इस को आसानी से तय कर लूं ऐ अल्लाह सफ़र में तू ही मेरा मददगार है तू ही हमारे पीछे हमारे घर वालों का निगहबान है।

इस दुआ में इब्ने सरीह की रिवायत के ब मौजिब यह अल्फ़ाज़ ज़ायद हैं।

इलाही मैं तेरे ही ज़रीये पनाह चाहता हूं, सफ़र की तकलीफ़ से और नाकाम लौटने से और अपने घर वालों और अपने माल को तबाह हाल व बरबाद देखने से।

जब मुसाफ़िर किसी गावं व शहर में दाख़िल हो तो जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मनकूल है यह पढ़े।

ऐ आसमान और उनके ज़ेरे साया तमाम अशिया के मालिक, ऐ सातों ज़मीनों और उन चीज़ों के मालिक जिनको यह अपने ऊपर उठाए हुए हैं, ऐ शैतानों और उनकी गुमराहियों के मालिक मैं तुझ से इस क़रिया की और इसके बाशिन्दो और जो कुछ इस में मौजूद है उसकी भलाई का ख्वाहां हूं, मैं इस बस्ती के, इसके बाशिन्दों के और इसके हर दाख़िली शर से तेरी पनाह मांगता हूं मैं तुझ से इस बस्ती के नेक लोगों की दोस्ती और मोहब्बत और यहां के अशरार के हिफ़ाज़त चाहता हूं।

चोर, डाकू और दरिन्दों से

महफ़ूज़ रहने की दुआ

दौराने सफ़र चोर, डाकूओं और दरिन्दों से महफ़ूज़ रहने के लिए यह दुआ पढ़े।

इलाही! हमारी निगहबानी फ़रमा अपनी उस आंख से जो कभी सोई नहीं और अपनी उस ताक़त से हम को पनाह दे जिस कि मुख़ालिफ़त का कोई क़स्द नहीं कर सकता तू हम पर क़ादिर है उसी कुदरत से हम पर रहम फ़रमा, तू हमारी उम्मीद है हम हलाक नहीं होंगे।

हज़रत उसमान फ़रमाते हैं कि मैंने सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि जिसने अपने सफ़र की पहली रात में तीन मर्तबा यह पढ़ लिया उसके पढ़ने वाले को सुबह तक कोई नागहानी बला (दरिन्दा, डाकू वग़ैरह) गज़न्द नहीं पहुंचाएगा (उसको नहीं घेरेगा)।

हिफ़ाज़त की दुआ

अल्लाह के नाम से शुरू (करता हूं) जिसे आसमान व ज़मीन [illegible] कोई चीज़ ज़रर नहीं पहुंचाती वह हर बात को सुनता है और हर चीज़ का [illegible] रखता है।

अबू सईद का वाक़िया

अबू युसूफ़ ख़ुरासानी [illegible] अबू सई[illegible] बिन अ[illegible] रूहा के हवाले से नक़्ल किया है कि उन्होंने कहा मैं एक रा[illegible] मक्का के सफ़र में रास्ता भूल गया अचा[illegible] मैंने अपने पीछे आहट सुनी तो बहुत घबराया कि कौन है जब मैंने ग़ौर [illegible] सुना [illegible] हुआ कि कोई शख़्स कुरआन पाक की तिलावत कर [illegible]हा है, थोड़ी देर के बाद वही साहब मेरे पा[illegible] आ गए और कहने लगे मेरा ख़्याल है कि तुम रा[illegible] गए हो मैंने कहा जी हां ऐसा ही है इस पर उन्होंने कहा मैं तुम को वह चीज़ न बता दूं [illegible] जब तुम कभी रास्ता भूलने के बाद उसको पढ़ लो तो तुम को फ़ौरन रास्ता मिल जाए और अग[illegible] ड[illegible]सूस हो रहा हो तो उसके पढ़ने से डर जाता रहे, या बे ख़्वाबी की शिकायत है वह शि[illegible]त दूर हो जाए, मैंने कहा ज़रूर बताइये उन्होंने के पढ़ोः

उस ख़ुदा के नाम से शुरू करता हूं जो साहबे रुतबा है उसकी दलील बहुत अज़ीम है, उसकी कुदरत बड़ी सख़्त है हर दिन वह नई शान में है, मैं शैतान से ख़ुदा की पनाह चाहता हूं वही होता है जो अल्लाह को मन्ज़ूर होता है कोई ख़ौफ़ नहीं और कोई कुव्वत नहीं सिवाए अल्लाह तआला के।

जब मैंने इस दुआ को पढ़ा तो अचानक मैंने खुद को अपने हम सफ़रों में पाया, उस वक़्त मैंने उन साहब को बहुत तलाश किया लेकिन नहीं मिले। अबू हिलाल फ़रमाते हैं कि मैं मिना में अपने हमराहियों से बिछड़ गया उस वक़्त मैंने यह दुआ पढ़ी अचानक मुझे मेरे हमराही मिल गए।

यह दुआ ग़म व अलम रफ़्अ करती है

हज़रत अबू दरदा से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स सात मर्तबा यह दुआ पढ़ेः

बेशक अल्लाह तआला ऐसा मालिक है कि उसने कुरआन पाक नाज़िल फ़रमाया और जि क़दर नेकोकार लोग हैं उनका वह वाली है और वही अल्लाह काफ़ी है, उस के सिवा कोई औ माबूद नहीं है मैंने उसी पर तवक्कुल किया और वह अर्शे अज़ीम का परवरदिगार है।

उसके तमाम ग़म ख़्वाह वह वाक़ई हों या ग़ैर वाक़ई इन्शाअल्लाह सब दूर हो जायेंगे। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने मुसीबत के वक़्त ल इलाहा इल्लाह हुवल्लाहुल अलीमो सुबहनल्लाहे रब्बिल अर्शिल अज़ीम अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन (ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं वह हर बात का जानने वाला है करीम है, पाक है और वह अर्शे अज़ीम का मालिक है, तमाम हम्द उसी के लिए है वह तमाम आलम का पालने वाला है।) पढ़ा तो अल्लाह तआला उसके तमाम ग़म और उसकी मुसीबत को दूर फ़रमा देता है।

नमाज़े किफ़ायत

वह नमाज़ जो तमानियते क़ल्ब के लिए पढ़ी जाती है

नमाज़े किफ़ायत से तमानियते क़ल्ब हासिल होती है

इस नमाज़ की दो रकअतें हैं इस नमाज़ को जिस वक़्त चाहें प[illegible] वक़्त की क़ैद नहीं है) इसकी हर रकअत में सूरह फ़ातिहा एक मर्तबा सूरह इख़ला[illegible] मर्तबा और सयक फ़ीकहुमुल्लाहो व हुस्समीउल अलीम पचास बार पढ़े फिर सलाम फेर कर इन अल्फ़ाज़ के साथ दुआ मांगे।

ऐ अल्लाह, ऐ रहमा[illegible] शफ़ीक[illegible] मोहसिन, ऐ वह हस्ती जिसकी पाकी हर ज़बान से बयान की जाती है, ऐ वह ज़ाते पाक जिसके दोनों हाथ भ[illegible] के साथ कुशादा हैं, ऐ अहज़ाब से हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम [illegible] वाला, ऐ हज़रत इब्राहीम को आग से नजात बख़्शने वाले, ऐ हज़रत मूसा को फ़िरऔन से नजात [illegible]ने वाले, ऐ हज़रत ईसा को ज़ालिमों से नजात ब[illegible] वाले, ऐ हज़रत नूह को तूफ़ान से निकालने वाले, ऐ हज़रत लूत को उनकी कौम की बदका[illegible] से दूर रखने वाले, ऐ हर चीज़ से बचाने वाले मुझे हर मुशकिल से बचा ताकि न मैं डरूं और न [illegible] ख़ौफ़ खाऊं, तेरे उस नाम की वजह से जो सबसे अज़ीम है।

जो शख़्स इस नमाज़ [illegible] पढ़ेगा उसके ग़मों और तबाह हालियों और शिकस्तगीए ख़ातिर को यह नमाज़ दूर कर देगी।

इज़ालए दुशमनी की नमाज़

नमाज़ दफ़ए ख़सूमत

इस नमाज़ की चार रकअतें हैं यह चारों रकअतें एक ही सलाम के साथ पढ़ी जाती हैं पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख़लास ग्यारह मर्तबा और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख़लास दस बार और सूरह क़ाफ़िरून तीन बार पढ़े तीसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के साथ सूरह इख़लास दर मर्तबा और सूरह तकासुर तीन बार पढ़े, चौथी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पन्द्रह बार सूरह इख़लास और एक मर्तबा आयतल कुर्सी पढ़े फिर इसका

सवाब अपने दुशमनों को बख़्श दे, इनशा अल्लाह तआला क़यामत के दिन के मामला में अल्लाह तआला काफ़ी होगा।

नमाज़े ख़सूमत के औक़ात

यह नमाज़ इन सात औक़ात में पढ़ी जाती है माहे रजब की पहली रात, शबे निस्फ़ माहे शाबान, माहे रमज़ान के आख़िरी जुमा को, दोनों ईदों के दिन, यौमे अरफ़ा और यौमे आशूरा पर।

सलाते उतक़ा

सलाते उतक़ा शव्वाल में पढ़ी जाती है

शैख़ हज़रत अबू नसर ने अपने वालिद की असनाद के साथ हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो कोई माहे शव्वाल की किसी रात या किसी दिन में इस नमा[illegible] की आठ रकअत को [illegible] तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद पन्द्रह बार सूरह इ[illegible]ास पढ़ी जाए नमाज़[illegible] फ़ारिग़ होने के बाद 70 बार सुब्हानल्लाह पढ़े फिर रसूले मक़बूल सल्[illegible]ल्लाहो अलैहि[illegible] पर सत्तर मर्तबा दरूद व सलाम भेजे तो क़सम है उस ज़ात की जिसने [illegible] बरहक़ म[illegible]ऊस [illegible]रमाया कि इस नमाज़ के पढ़ने वाले के दिल में अल्लाह तआला हिकमत [illegible]शमे रवां [illegible]रमा देगा। और ज़बान को नुत्क़े शीरीं अता फ़रमायेगा दुनिया के अम[illegible]ाज़ और उसका इला[illegible] उसको बता देगा और क़सम है उस [illegible]ात की [illegible]ने मुझे न[illegible]रहक़ बना कर म[illegible]कस फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस नमाज़ के [illegible]ने वाले को [illegible]ख़्श देगा [illegible]ब्ल इ[illegible]के कि [illegible] सजदा से सर उठाए। अगर इस दौरान उसका इ[illegible]क़ाल हो [illegible]ए तो उस[illegible] शहीद [illegible] दिया जाएगा जिसके सारे गुनाह बख़्श दिए गये हों और कोई शख़्स ऐसा नहीं कि उसने अस[illegible] सफ़र नमाज़ पढ़ी हो और उसका मक़सूद आस[illegible] बना दिया गया हो अगर इस नमाज़ का पढ़ने वाला क़र्ज़दार है तो उसका क़र्ज़ अदा करा देता है और अगर वह ज़रूरतमंद है तो उसकी ज़रूरत पूरी करा देता है और क़सम है उस ज़ात [illegible]ने मुझे दीने बरहक़ दे कर भेजा कि जिसने यह नमाज़ पढ़ी है अल्लाह तआला उसको हर हर्फ़ और हर आयत के बदला जन्नत में एक मख़रफ़ा अता फ़रमएगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया कि हुज़ूर ने मख़रफ़ा क्या है? हुज़ूर ने फ़रमाया कि वह जन्नत में चन्द बाग़ हैं इतने तवील व अरीज़ कि अगर एक सवार एक सौ साल तक उसके दरख़्तों के साया में क़तए मुसाफ़त करे तब भी उसको तय न कर सके।

अज़ाबे क़ब्र दूर करने वाली नमाज़

नमाज़ दाफ़ेअ़ अज़ाबे क़ब्र की फ़ज़ीलत

हज़रत अली ने हज़रत हसन से और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि कोई यह दो रकअत नमाज़े नफ़्ल इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में सूरह फ़ुरक़ान का आख़िरी रूकूअ, अख़ीर सूरह तक

और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह मोमिनून की इब्तिदा से फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालेक़ीन तक, तो ऐसा शख़्स जिन्नात और इंसानों के शर और फ़रेब से महफ़ूज़ रहेगा और उसका आमाल नामा हश्र के दिन उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।

इस दुआ के फ़ज़ाइले औसाफ़

अज़ाबे क़ब्र और अज़ीम इज़्तिराब से उसको अमन दे दिया जाएगा तो अल्लाह तआला उसको कुरआन का इल्म अता फ़रमाएगा ख़्वाह वह कुरआन आमोज़ी की ख़्वाहिश भी न रखता हो। अल्लाह तआला उसकी मोहताजी और ग़रीबी को दूर फ़रमा देगा, शान व शौकत अता फ़रमाएगा, उसको कुरआन फ़हमी की बसीरत अता होगी, क़यामत के दिन हिसाब फ़हमी और बाज़ पुर्स के वक़्त मुदलल्ल जवाब देना उसको सिखा दिया जाएगा, उसके दिल में नूर पैदा कर दिया जाएगा, जब दूसरे लोग ग़मगीन होंगे तो उसके लिए कोई ग़म न होगा न उसे कोई ख़ौफ़ होगा। अल्लाह तआला उसकी आंखों में रौशनी पैदा कर देगा उसके दिल से दुनिया की मुहब्बत महव हो जाएगी उसका नाम अल्लाह तआला के पास सिद्दीक़ीन में लिखा जाएगा।

नमाज़े हाजत

नमाज़े हाजत किस तरह अदा की जाए

नमाज़े हाजत के सिलसिले में अबुल हाशिम ने हज़रत अनस बिन मालिक के हवाला से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला से कोई हाजत तलब करनी हो या उसको कोई सख़्त मुश्किल दरपेश हो तो अच्छी तरह वुज़ू कर के यह दो रकअत नमाज़ पढ़े पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा और उसके साथ आयतल कुर्सी और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद आमनर्रसूलो बिमा उन्ज़ेला इलैहे मिर्रब्बेही वल मोमेनून से फ़न्सुरना अलल क़ौमिल काफ़ेरीन तक पढ़े फिर तशहहुद व दरूद पढ़ कर सलाम फेरे और उसके बाद यह दुआ पढ़े।

ऐ अल्लाह हर अकेले के ग़मगुसार हर यगाना के यार व मददगार, ऐ वह क़रीब कि किसी से दूर नहीं, तू हर वक़्त बाख़बर है, तू कभी किसी से दूर नहीं होता, तू ग़ालिब है किसी से मग़लूब नहीं होता मैं तुझ से तेरे उस नाम की ताक़त मांगता हूं बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ऐ वह कि कभी तुझे कभी औंघ और नींद नहीं आती बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम तू हमेशा क़ाइम है सबके मुंह आजिज़ी और लजाजत के साथ तेरी तरफ़ लगे हैं, सब आवाज़ें तेरे हुज़ूर आजिज़ी कर रही हैं तमाम दिल तेरे ख़ौफ़ से कांप रहे हैं तू मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर दरूद व सलाम भेज मेरे काम में कुशादगी पैदा कर दे और मेरी हाजत पूरी फ़रमा।

तो इसके पढ़ने वाले की हाजत और मुराद पूरी हो जाएगी।

मुसीबत और ज़ुल्म से नजात पाने की दुआ

रसूलुल्लाह ने हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा को यह दुआ सिखाई

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा को यह दुआ सिखाई थीं और फ़रमाया था कि जब तुम पर कोई मुसीबत आए या किसी हाकिम के ज़ुल्म का डर हो या तुम्हारा कोई जानवर गुम हो जाए तो ऐसी सूरत में अच्छी तरह वुज़ू कर के दो रकअत नमाज़ (नफ़्ल) पढ़ो फिर दोनों हाथ ऊपर की तरफ़ फैला कर यह पढ़ो।

ऐ ग़ैब और राज़ की बातों के जानने वाले, हर चीज़ की बाज़गश्त तेरी ही तरफ़ है तू सब दिलों के नज़दीक अज़ीज़ है ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह ऐ अल्लाह, अपने रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुशमन गरोहों को शिकस्त देने वाला तू ही है, हज़रत मूसा के लिए फ़िरऔन को तूने ही सज़ा दी थी, ऐ हज़रत नूह की क़ौम को ग़र्क़ होने से बचाने वाले, हज़रत याक़ूब की अश्कबारी पर तूने ही रहम खाया था। हज़रत युनूस को तीन रातों की तारीकी से नजात तूने ही दी थी इलाही तू ही हर नेकी का पैदा करने वाला है तू ही हर नेकी की तरफ़ रास्ता दिखाने वाला है, तू ही नेकी का साहब व मालिक है तू ही साहबे खैरात है इलाही जिस चीज़ को तू मुफ़ीद जानता हो मैं उसके लिए तुझ से सवाल करता हूं मैं तुझ ही से दरख़्वास्त करता हूं कि तू आंहज़रत और उनकी आल पर दरूद भेजे

यह दुआ पढ़ने के बाद अपनी हाजत और मुराद तलब करो, इन्शा अल्लाह ज़रूर क़बूल होगी।

ज़ुल्म से महफ़ूज़ होने की दूसरी दुआ

दुशमनों के शर और ज़ुल्म से महफ़ूज़ रहने के के लिए दूसरी दुआ वह है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंगे अहज़ाब के रोज़ की थी।

हज़रत उमर से रिवायत है कि वह दुआ यह है:

इलाही मैं तेरे हुज़ूर अमन की दरख़्वास्त करता हूं तेरे पाक नूर और तेरी बुज़ुर्गी और तेरे जलाल की बरकतों के ज़रिये से हर आफ़त और हर रंज व जुनून और इंसानों की बलाओं से अमन चाहता हूं मैं उस पर राज़ी हूं जो कुछ तेरी तरफ़ से मुझे पहुंचे मेरी पनाह तू ही है मैं तुझ ही से पनाह मांगता हूं मेरी अमन की जगह (मामन) तू ही है, सब गर्दन कशों की गर्दनें तेरे हुज़ूर में ख़म हैं और वह तेरे सामने ज़लील व ख़्वार हैं अपनी मख़लूक़ की हिफ़ाज़त और उनकी निगहबानी की चाबियां तेरे ही ख़ज़ाने में मौजूद हैं मैं तेरी ज़ात के जलाल के सदक़ा में तुझ ही से अमन चाहता हूं और तेरे हुज़ूर रूसवा होने से महफ़ूज़ होने की दरख़्वास्त करता हूं इलाही मेरी पर्दादरी न की जाए मैं तेरी याद से फ़रामोशी इख़्तियार न करूं और तेरा शुक्र अदा करने से बाज़ न आऊं।

रात के वक़्त, दिन के वक़्त, सोते में, जागते में, आराम में, सफ़र में, वतन में, तेरी पनाह में रहने की दरख़ास्त करता हूं तेरा ही ज़िक्र तेरा ही ज़िक्र मेरा शिआर हो और तेरी ही तारीफ़ मेरा

दसार (लिबास) हो तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है तू पाक है मैं तेरे नाम को बिल्कुल पाक जान हूं मुझे रूसवाई से महफूज़ रख, अज़ाब और अपने बन्दों की बुराई से मुझे बचा, मेरे लि निगहबानी और अपनी हाजत के ख़ेमे खड़े कर दे और अपनी रहमत के दरवाज़े खोल कर मु ग़नी फ़रमा दे और गुनाहों के अज़ाब से मुझे बचा नेकी से मुझे माला माल फ़रमा दे तू सब ज़्यादा रहीम है।

इज़ालए रंज व अलम

और अदाए क़र्ज़ की दुआ

हज़रत अबू मूसा अशअरी से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स को कोई रन्ज व ग़म लाहिक़ हो तो उसको चाहिए कि यह दुआ पढ़े।

इलाही मैं तेरा बन्दा हूं, तेरे बन्दे का बेटा हूं, मेरी पेशानी तेरे हाथ में है मुझ में तेरा हुक्म जारी है तू मेरे लिए आदिलाना हुक्म जारी करता है, ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूं कि अपने तमाम असमा के तुफ़ैल जो तूने अपने लिए मुकर्रर किये हैं और अपनी किताब कुरआन में लिखे हैं या मख़लूक़ में से किसी को सिखाये हैं और इल्मे ग़ैब में उसको बरगुज़ीदा किया है कि मेरे सीने को रौशन फ़रमा दे ताकि ग़म व अलम दूर हो जायें और उसकी मोहब्बत दिल को अता कर तू उससे इंसान का रंज व ग़म दूर कर देगा और खुशी से सीना कुशादा फ़रमा देगा।

हाज़रीन में से किसी ने किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह वह शख़्स जो इन अलफ़ाज़ को भूल गया दिवालिया हुआ और बड़े ख़सारे में रहा हुजूर ने फ़रमाया हां तुम इन अलफ़ाज़ को याद करो और दूसरों को भी सिखाओ जो शख़्स इन अलफ़ाज़ के साथ अल्लाह को पुकारेगा (दुआ करेगा) अल्लाह तआला उसके ग़म दूर कर देगा और बहुत ज़्यादा मुसर्रत व शादमानी अता फ़रमायेगा।

हज़रत आएशा से हज़रत सिद्दीक़ का इरशाद

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ मेरे पास तशरीफ़ लाए और मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम ने वह दुआ सुनी है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम को सिखाया करते थे और ईसा अलैहिस्सलाम ने भी अपनी हवारियों को सिखाई थी हुजूर फ़रमाते थे अगर तुम में से किसी शख़्स के ज़िम्मा कोहे अहद के बराबर भी कर्ज़ हो तो वह क़र्ज़ इस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला अदा करा देता है।

हज़रत आइशा ने जवाब में इरशाद किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दुआ फ़रमाया करते थे।

ऐ अल्लाह गिरहों का खोलने वाला और रंज व अलम का दूर करने वाला तू ही है, तू बेक़रारों की दुआ क़बूल करने वाला है, तू दुनिया में रहमान है और आख़िरत में रहीम है मैं तुझ से दरख़्वास्त करता हूं कि मुझ पर अपनी रहमत फ़रमा और अपनी रहमत के तुफ़ैल मुझे दूसरों से बे नियाज़ फ़रमा दे।

हज़रत हसन बसरी के दोस्त का वाक़िया

अदाए क़र्ज़ के लिए एक और दुआ है जो हसन बसरी से मनक़ूल है रिवायत है कि हज़रत हसन बसरी के पास उनके एक अज़ीज़ और दोस्त आए और कहा अबू सईद (हज़रत हसन बसरी की कुन्नियत) मैं क़र्ज़दार हूं मेरी ख़्वाहिश है कि आप मुझे अल्लाह का इस्मे आज़म सिखा दें (ताकि क़र्ज़ अदा हो जाए) हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया अगर तुम इस्मे आज़म सीखना चाहते हो तो उठो और वुज़ू करो यह सुन कर वह दोस्त उठे और उन्होंने वुज़ू किया, हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया पढ़ो या अल्लाहो, या अल्लाहो, अन्ता अल्लाहो, अन्ता अल्लाहो, बला वल्लाहे अन्ता ला इलाहा इल्ला अन्ता अल्लाहो, अल्लाहो, अल्लाहो, अल्लाहो, वल्लाहो ला इलाहा इल्लल्लाहो इक़्ज़े अनीयद्दीना वर्रज़ुक़नी बादद दीन उनके दोस्त ने यह कलिमात पढ़े (और चले गए) जब सुबह हुई तो उन बुज़ुर्ग ने अपने सामने भरी हुई थैलियां रखी हुई पाई उन थैलियों में एक लाख दिरहम थे, थैलियों के मुंह पर लिखा था अगर तू इससे ज़्यादा मांगता तब वह भी देते, तूने जन्नत क्यों नहीं मांगी। यह बुज़ुर्ग हज़रत हसन बसरी की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस वाक़िया की इत्तेला दी आप उनके साथ उनके घर तशरीफ़ ले गए और उन दिरहमों को बचश्मे ख़ुद मुलाहिज़ा फ़रमाया उनके दोस्त ने कहा मुझे पशेमानी है कि मैंने जन्नत क्यों नहीं मांगी। हज़रत हसन बसरी ने फ़रमाया सिखाने वाले ने तुम्हारी भलाई और बेहतरी के लिए तुमको इस्मे आज़म सिखाया है तुम इस बात को पोशीदा रखना कहीं (हुज्जाज बिन युसूफ़ सक़फ़ी) न सुनने पाए अगर उसने यह दुआ सुन ली तो फिर कोई शख़्स भी उसके ज़ुल्म व सितम से नहीं बच सकेगा।

हज़रत जिब्रील की सिखाई हुई दुआ

एक और दुआ अदाए क़र्ज़ और कशाइशे रिज़्क़ के लिए है, यह दुआ जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह अलैहिस्सलाम को उस वक़्त सिखाई थी जब आप कुरैश की चीरा दस्तियों से परेशान होकर और कशाइशे रिज़्क़ के लिए मक्का मुअज़्ज़मा से ग़ारे हिरा की तरफ़ तशरीफ़ लिये जा रहे थे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रावी हैं कि जिब्रील ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा ऐ मोहम्मद अल्लाह तआ़ला ने आप को सलाम फ़रमाया है और मुझे यह दुआ सिखाई है कि मैं आप को सिखा दूं अब आप इस दुआ को पढ़िये अल्लाह तआ़ला आपके और आपके कुरैश के दर्मियान एक पर्दा हाइल फ़रमा देगा (आप कुरैश की चीरा दस्तियों से महफ़ूज़ रहेंगे) हुज़ूर ने फ़रमाया हां ऐ जिब्रील मुझे वह दुआ बताइये हज़रत जिब्रील ने कहा पढ़िये।

ऐ सब बुज़ुर्गों के बुज़ुर्ग तू हर एक की आवाज़ सुनता है और हर एक को देखता है तेरा कोई शरीक नहीं है न ही तेरा कोई वज़ीर है चमकने वाले सूरज को तू ने ही पैदा किया है और रौशन चांद को तू ही ने रौशनी बख़्शी है तू ख़ौफ़ज़दा आदमी की हिफ़ाज़त करने वाला है तू अमन के तालिब को अमन देता है शीर ख़्वार बच्चे को तू ही रोज़ी देता है टूटी हुई हड्डियों का दुरूस्त करने वाला तू ही है तू ही ज़ालिमों को हलाक करता है, दुशमनों को तू ही मारता है मैं तेरे हुज़ूर में फ़क़ीरों और बेक़रार लोगों की तरह सवाल करता हूं कि अपने अर्श की रहमत की इज़्ज़त और रहमत की कुंजियों के तुफ़ैल अपने उन आठ नामों के तुफ़ैल जिनको तू ने आफ़ताब के ऊपर लिखा है और जो तेरे जलाल के ज़ाहिर करने वाले हैं, मेरे मक़सद को पूरा फ़रमादे।

इसके बाद अपनी हाजत का नाम लिया जाए।

बाब 23

फ़र्ज़ नमाज़ों और ख़त्में कुरआन के बाद पढ़ी जाने वाली दुआयें

फ़ज्र और अस्र के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ

फ़ज्र और अस्र की फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ यह है:

ऐ अल्लाह! तमाम हम्द व शुक्र ख़ालिस तेरे ही लिए है, फ़ज़्ल और अज़मत व बुजुर्गी तेरे ही लिए है, तमाम नेकियां तेरी ही नेमत से तमाम होती हैं, ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाली हूं कि मेरी रोज़ी कुशादा फ़रमा दे क्योंकि तू ही दुआयें कबूल फ़रमाता है तवक्कुल और सब्रे जमील तू ही अता फ़रमाता है तू अपनी रहमते कामिला के तुफ़ैल हर मुसीबत से रिहाई बख़्शता है और तू ही सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है, इलाही! हमें गुनाहों से बचा, बद बख़्ती और बद नसीबी से दूर रख, हमारी हाजतें पूरी फ़रमा, हमें अपनी बारगाह से बद नसीब और महरूम न रख, अपने सिवा किसी ग़ैर के आगे न झुका, अपनी नेमतों से हमको [illegible] माल कर दे और अपने सामने शर्मिन्दा होने का हमको मौक़ा न दे, अपनी रहमत से दुनिया और आख़िरत की नेकी अता फ़रमा, तू ही सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहीम है, इलाही हमको सुबह व शाम नेकी अता कर, क़ज़ा व क़द्र की नेकी बख़्श दे और हमसे सुबह व शाम के शर और क़ज़ा व क़द्र के शर को दूर फ़रमा दे, ऐ अल्लाह उस दिन जिस क़दर नेकी [illegible]ती, भलाई और बेहतरी, रिज़्क़ की कुशादगी तू ने उतारी है उससे ज़्यादा हिस्सा हमको अता फ़रमा और जिस क़दर बदी व बुराई, फ़ितना व शर तू ने आज के दिन नाज़िल किया उससे मुझे सब मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को महफ़ूज़ रख तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहीम है।

एक और दुआ

इसी सिलसिले में एक और दुआए मासूरा यह है:

तमाम तारीफ़ें उस ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के लिए हैं जिसने अपने इल्म से सब चीज़ों को इहाता कर लिया है और वह सब चीज़ों का शुमार जानता है उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, वही बुजुर्गी और अज़मत वाला है, इज़्ज़त व जलाल की इन्तेहा उसी के लिए है, वही बारां और रहमत का मालि है वही दुनिया व आख़िरत का वाली है वही ग़ैब का जानने वाला है उसकी ताक़त और क़हर शदीद है वह जो चाहे करे वह हर शय से अव्वल है और तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है और उनका रज़्ज़ाक़ है वह पाक है और उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ऐ अल्लाह हमारी सुबह बख़ैर कर और हमें रूसवा न कर, हमें ज़माना की सख़्तियों से महफ़ूज़ रख, ज़माने के मकरूहात को हम से दूर रख, बदी और शैतान की बुराइयों से हमको महफ़ूज़ रख, आज और दूसरे दिनों में भी हमको नेकी अता फ़रमा हमको बुराइयों से दूर रख, इलाही हमको नेक बना

दे, हमारे आमाल व अफ़आल को नेक बना, हमारे अख़लाक़ को संवार दे हमारे आबा व अजदाद सबको नेक बना दे। इलाही जिस तरह तू ने हमारी रात गुज़ारी है और आफ़ियत बख़्शी है उसी तरह हमारे दिन को भी बसर करा दे आफ़ियत और सलामती के साथ, हम पर रहम कर तू सब रहम करने वालों में बड़ा रहम करने वाला है, इलाही! हमको दुनिया और आख़िरत की नेकी अता फ़रमा अपनी रहमत से दोज़ख़ के अज़ाब से बचा, तू सबसे रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। (आमीन) ऐ दो जहानों के पालने वाले (आमीन)

तीसरी दुआ

इसी सिलसिला की एक दुआ यह भी है:

तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह के लिए हैं जो ज़मीन और आसमान का पैदा करने वाला है सिवाए उस वहदहु ला शरीक के कोई दूसरा माबूद नहीं है उसी पर मेरा तवक्कुल है जो अर्श का परवरदिगार है वह पाक है शिर्क से और बलन्द है, इलाही हमारे गुनाह ज़ाहिरी हों या बातिनी सब बख़्श दे, तू हमारी सारी ख़ताओं को जानता है सब ख़ताओं को बख़्श दे इलाही हमको अपनी रज़ा अता फ़रमा दुनिया में भी और आख़िरत में भी और कलमए शहादत व मग़फ़िरत पर हमारा ख़ातमा फ़रमा, हमारी अख़ीर उम्रों को अच्छा बना दे, हमारे आमाल का ख़ातमा नेकी पर कर दे, हमारे लिए सबसे अच्छा दिन और नेक दिन वही होगा जब हम तेरा दीदार करेंगे, इलाही! हम तुझ से तेरी अता की हुई नुसरत के ज़वाल से पनाह चाहते हैं, हम तेरी आफ़त और दुशमनी से पनाह चाहते हैं, हमारी दरख़्वासत है कि हमको अपनी आफ़ियत से दूर न रख, इलाही मैं बद बख़्ती और हर आफ़त व बला से और मुसीबतों से और दुश्मनों की तानाज़नी से पनाह चाहते हूं नेमतों के तग़य्युर और क़ज़ा व क़द्र की बदी से और तमाम बुराइयों से तेरी पनाह चाहता हूं और मैं तमाम बुराइयों और रंज व अलम से तेरी पनाह चाहता हूं इलाही हमारे बीमारों को शिफ़ा इनायत कर और हमारे मुर्दों पर रहम फ़रमा हमारे जिस्मों को सेहत अता फ़रमा और हमारे लिए अपने दीन को ख़ालिस फ़रमा, इलाही हमारे सीनों को खोल दे, हमारे सारे कामों का अच्छा बन्दोबस्त कर दे और हमारे बच्चों की परवरिश का बन्दोबस्त फ़रमा दे हमारे जुर्मों को ढ़ांप ले हमारे बिछड़े हुए लोगों को हम से मिला दे, हमारे दीन पर हम को साबित क़दम रख, इलाही! मैं तुझ से नेकी और राहे रास्त से राहनुमाई चाहता हूं हम को ईस्लाम पर मौत दे अपनी रहमत से हमें दुनिया और आख़िरत में नेकी अता फ़रमा, नारे दोज़ख़ और क़ब्र के अज़ाब से बचा तू ही सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है तू ही सब जहानों का पालने वाला है।

दुआए ख़त्मे क़ुरआन

ख़त्मे क़ुरआन मजीद की दुआ यह है:

वह अज़मत वाला अल्लाह सच्चा है जिसने मख़लूक़ को पैदा किया बग़ैर किसी नमूने के और दीन के क़वानीन बनाए और उसको जारी किया और नूर को रौशनी और चमक अता फ़रमाई और रोज़ी में तंगी और फ़राख़ी रखी और अपनी मख़लूक़ को नक़्सान और नफ़ा बख़्शा और पानी को जारी किया और उसके सोते पैदा किए और आसमान को मज़बूत छत बनाया और

उस को बलन्द किया, ज़मीन को फ़र्श बनाया और उसके नीचे बिछाया और चांद को गर्दिश दी (चलाया) और उसको नमूदार किया वह अल्लाह पाक है उसका मर्तबा बहुत ऊंचा और बड़ा बलन्द है उसका तसल्लुत बहुत मज़बूत और नादिर है उसकी सनअ़त को कोई रोकने वाला नहीं है और न उसकी ईजाद को कोई तग़य्युर देने वाला है और जिसको उसने इज़्ज़त दी उसको कोई ज़लील करने वाला नहीं है और जिसको उसने नीचा किया उसको कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं है जिसको उसने जमा किया उसको कोई मुंतशिर करने वाला नहीं, उसका कोई शरीक नहीं और उसके साथ कोइ दूसरा माबूद नहीं, उस खुदा ने सच फ़रमाया जिसने ज़मानों का इन्तेज़ाम किया और जिसने तक़दीर को मुक़द्दर फ़रमाया और तमाम उमूर में तसर्रूफ़ किया वह दिलों के ख़यालात से आगाह है और तारीकियों की मुसलसल रफ़्तार से वाक़िफ़ है, वह आसान को मुशकिल बनाता है, तमाम समुन्दर उसके मुसख़्ख़र हैं उसी ने कुरआन मजीद, नूर, तौरात, इंजील और ज़ुबूर नाज़िल फ़रमाई और उसने कुरआन मजीद की क़सम खाई और कोहे तूर की और उस तहरीर की जो फैली हुई झिल्ली पर लिखी जाती है, वही तारीकियों [illegible]और रौशनी को पैदा करने वाला है, उसी ने हूर व ग़िलमान और जन्न[illegible] महल्लात बनाए ह[illegible]क़त में अल्लाह ही जिसको चाहता है सुनाता है तुम क़ब्र के मुर्दों को सु[illegible]ने वाले नहीं, अज़मत[illegible]ले खुदा ने सच फ़रमाया जो इज़्ज़त वाला और मर्तबा वाला है जो बुज़ु[illegible] और ताक़त[illegible] है, जि[illegible]की अज़मत के सामने हर चीज़ ज़लील और ताबेअ़ फ़रमान है और उसी[illegible]समान को [illegible]लन्द [illegible]ौर ऊंचा किया और ज़मीन को बिछाया और कुशादगी दी उसी ने दरि[illegible]हाए और [illegible]शमे निकाले उसी ने समुन्दर को मिलाया और लबरेज़ किया उसी ने सितारों को अ[illegible]ने हुक्[illegible] के नीचे रखा और उसी ने बादलों को भेजा और [illegible] के हुक्[illegible] अब्र [illegible]ठा और उ[illegible] ने नूर को रौशनी अता फ़रमाई जिसकी वजह से वह चमका, उसी ने बारि[illegible] की [illegible] उसी ने मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम किया और उनको ([illegible]ाम) सुना[illegible] और प[illegible]) प[illegible] जलवा अफ़रोज़ हुआ जिसके बाएस वह पारह पारह हो गया वही बख़्शता है वही छीनता है, [illegible] नफ़ा और नक़सान पहुंचाता है, वही देता है वही [illegible] है, उसने शरीअत का इजरा फ़रमाया उसी ने मुंतशिर किया और यकजा किया, तुम को एक नफ़्स वाहिद से पैदा किया पस एक ही (मय्यत की) क़रार गाह है और एक ही सुपुर्दगी का [illegible] (क़ब्र) है। अज़मत वाला आल्लाह सच्चा है वह तौबा को क़बूल करने वाला है बख़्शने वाला और अता फ़रमाने वाला है वह जिसकी अज़मत के सामने गर्दनें झुकी हुई हैं और जिस के दबदबा के सामने सरकश आजिज़ व सरनिगूं हैं जिसके सामने सख़्त खू नर्म पड़ गए और उसकी सनअ़त में दानिश व अक़्ल से इस्तिदलाल किया, बादल, बिजली, मिट्टी, दरख़्त और चौपाए सब उसकी पाकी बयान करते हैं वह हाकिमों का हाकिम और असबाब बनाने वाला है और किताब (कुरआन मजीद) नाज़िल करने वाला है और अपनी मख़लूक़ (उंसुरी) को मिट्टी से पैदा करने वाला है गुनाह को माफ़ करने वाला और तौबा क़बूल करने वाला है सख़्त अज़ाब देने वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी पर मेरा तवक्कुल है और उसकी तरफ़ मेरी वापसी है सच फ़रमाया उस अल्लाह ने जो हमेशा से बुज़ुर्ग व बरतर है और रहनुमा है वह जो मेरी किफ़ायत के लिए काफ़ी है सच्चा है वह सच्चा है जिस को मैंने अपना कारसाज़ समझ रखा है वह अल्लाह सच्चा है जो अपने पास पहुंचने का रास्ता खुद बताने वाला है, अल्लाह सच्चा है और उसके पैग़म्बर सच्चे हैं, अल्लाह सच्चा है और उसकी नेमतें बड़ी हैं और अल्लाह

से बढ़ कर सच बात कहने वाला और कौन हो सकता है, अल्लाह सच्चा है उसकी दी हुई ख़बरें सच्ची हैं, अल्लाह सच्चा है और उसके ज़मीन व आसमान भी शहादत देते हैं, वह अल्लाह जो पाक हमेशगी वाला और बुज़ुर्ग व बीना, करीम दाना माफ़ करने वाला मेहरबान क़दरदान, बुर्दबार है सच्चा है कह दो कि अल्लाह ने सच फ़रमाया है तुम दीने इब्राहीम पर चलो, हिकमत वाला अल्लाह सच्चा है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं वह रहमान व रहीम है वह ज़िन्दा है इल्म वाला है साहिबे हयात है करीम है मुर्दा नहीं ग़ैर फ़ानी है ऐसा ज़िन्दा जिसको कभी भी मौत नहीं आएगी बुज़ुर्गी और जलाल व जमाल वाला अज़मत वाले नामों और अज़ीम एहसानों वाला है उसके इज़्ज़त वाले पैग़म्बरों ने उसका पयाम ठीक ठीक पहुंचा दिया, अल्लाह की रहमत और सलामती हो हमारे आक़ा पर और दूसरों पैग़म्बरों पर हम अपने मालिक और मौला के क़ौल के गवाह हैं और जो कुछ उसने फ़र्ज़ व वाजिब किया हैं उसके इन्कार करने वाले नहीं हैं हम्द है उस ख़ुदा को जो जहानों का मालिक है और उसकी रहमत व सलाम हो हमारे आक़ा हमारे पुश्त पनाह हज़रत मोहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर जो ख़ातिमुल अम्बिया हैं और आप के दो मुहतरम दादाओं पर यानी हज़रत आदम व हज़रत इब्राहिम अलैहिमस्सलाम पर उनके तमाम पैग़म्बर भाईयों पर और पाक अहले बैत पर और उन के बरगुज़ीदा अस्हाब पर और आपकी पाक बीबियों पर जो मुसलमानों की मायें थीं और अच्छे तरीक़े पर सहाबा की [illegible] की पैरवी करने वालों पर रोज़े क़यामत तक और उनके साथ हम पर भी, ऐ [illegible] ज़्यादा रहम फ़रमाने वाले अपनी रहमत फ़रमा। सच्चा है अल्लाह, बुज़ुर्गी इज़्ज़त, अज़मत और हुकूमत वाला वह ऐसा ताक़तवर है कि उसको [illegible]र करने का इरादा नहीं किया जा सकता ऐसा ग़ालिब है कि उस पर हुक्म नहीं चलाया जा सकता सारे [illegible] का इन्तेज़ाम करने वाला है जो कभी नहीं सोता, बुज़ुर्गी वाले काम उसी के लिए मख़सूस हैं बड़ी बड़ी बख़्शिशें और [illegible] एहसान और इनामे कमाल और तकमिला (उसी के साथ मख़सूस है) उसकी पाकी बयान करते हैं तमाम मुअज़्ज़िज़ फ़रिशते और चौपाए कीड़े मकोड़े, हवायें और बादल और रौशनी और तारीकी (में उसकी पाकी बयान करते हैं) वही अल्लाह है [illegible] आला है हर ऐब से पाक है हर नक़्स से सालिम अल्लाह हमारा रब है उसकी तारीफ़ बड़ी है, उसके पाक नाम हैं और उस के एहसान अज़ीम हैं और हम उसके क़ौल की शहादत देते हैं ज़मीन व आसमान भी उसके शाहिद हैं और पैग़म्बरों और नबियों ने भी उसकी शहादत दी है फ़रिशते और अहले इल्म शाहिद हैं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अदल पर क़ाएम है वही ग़ालिब हिकमत वाला है, अल्लाह के नज़दीक पसंदीदा दीन सिर्फ़ इस्लाम है हमारे रब ने और मलाएका ने और अहले इल्म ने जो कुछ शहादत दी है हम भी वही शहादत देते हैं यह शहादत अल्लाह ने खुद दी है और उसी शहादत के सबब मोमिन माफ़ करने वाले मेहरबान अल्लाह की इताअत करता है वह और अर्श के मालिक बरतर ख़ुदा के लिए उस शहादत को ख़ुलूस से अदा करता है, अल्लाह उस शहादत को अच्छे और हिदायत वाले आमाल की वजह से बलन्द मर्तबा कर देता है और उसके क़ाएल को बहिश्त में बक़ाए दवाम अता फ़रमाता है वह बहिश्त जहां की बेरियां बे ख़ार हैं और अकेले तह बतह, साया वसीअ और पानी बहाव है, मोमिन उस बहिश्त में उन अम्बिया के साथ रहेगा जो शहादत देने वाले और रुकूअ व सुजूद करने वाले और ताअते इलाही में इन्तेहाई कोशिश करने वाले हैं। इलाही हमको तसदीक़ की बिना पर सादिक़ बना दे और उस सच्चाई का गवाह कर दे और उस शहादत [illegible]

ईमान लाने वाला बना दे और उस ईमान के ज़रिये हम को मुवहिहद बना दे और उस तौहिद में हमको मुख़लिस कर दे और इख़लास की वजह से अहले यक़ीन से बना दे और उस यक़ीन के बाएस आरिफ़ों में से कर दे, उस मारफ़त के बाएस अपना शनासा बना दे और उस अतराफ़ के बाएस अपनी तरफ़ रूजूअ होने वाला बना दे और उसकी तौबा की वजह से हमको कामियाब और अपने सवाब की तरफ़ राग़िब और जज़ा का तालिब बना दे, और इज़्ज़त वाले आमाल लिखने वाले फ़रिशतों पर हमको बतौरे फ़ख़्र पेश कर और हम को पैग़म्बरों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेह आमाल रखने वालों के साथ उठाना और उन लोगों में से हमारा शुमार न फ़रमा जिनको शयातीन ने अपनी तरफ़ माएल कर लिया है और दुनिया के एवज़ दीन से रोक दिया है जिसके नतीजा में वह पशेमान और आख़िरत में ख़सारायाब हो गए। ऐ अरहमर्राहेमीन! अपनी रहमत से राहत की जन्नतों को हमारे लिए दवामी कर दे, इलाही तमाम सताईश तेरे ही लिए है और तू ही तारीफ़ का मुस्तहिक़ है और एहसान व फ़ज़्ल करने का भी अहल है, तेरे ही लिए हम्द है तेरे मुसलसल एहसानात पर और तेरे लिए हम्द है, तेरे पैहम इनाम पर [illegible]र तेरे लिए हम्द है तेरे मुतवातिर फ़ज़्ल पर, इलाही तू ने ही हमारे अ[illegible] तिफ़ली में मां बाप [illegible] दिलों को हम पर मेहरबान बनाया और बड़े होने के ज़माने में तू ने हम[illegible] गू ना गूं नेमतें अत[illegible]फ़रमाई और हम पर अपने ख़ैर की मुसलसल बारिश की, हम बारहा तेरे [illegible] आशना रहे [illegible]न तू[illegible] हमारी गिरफ़्त फ़ौरी नहीं की पस तेरे ही लिए हम्द है कि तू ने गुनाह[illegible]स्तिग़फ़ार [illegible]रने [illegible] हमारे दिल में जज़्बा डाला तेरे ही लिए हम्द है हमको जन्नत नसीब फ़[illegible] और अप[illegible] उफ़्व से दोज़ख़ को हम से छिपा दे, इलाही ह[illegible] तेरी हम्द [illegible]रते हैं [illegible]ाहिर में भी औ[illegible] बाति[illegible] में भी, और दिली रग़बत और इरादा से [illegible]रा शुक्र[illegible] करते है[illegible] हम[illegible]रा पर्दा फ़ा[illegible] करके हश्र के दिन अक़्वाम के सामने हम को [illegible]सवा न फ़रम[illegible]ना और अ[illegible]नी प[illegible] के [illegible] हमको बद आमाली की वजह से रूसवा करके ज़ि[illegible]त व ख़्[illegible] का लिब[illegible] न पहना[illegible] अरह[illegible]हेमीन, अपनी रहमत से इस दुआ को क़बूल फ़र[illegible] इल[illegible]ी तेरे लिए हम्द है कि तू ने हम को [illegible]लाम का रास्ता दिखाया और हिकमत व कुरआन [illegible]म दी, इलाही तू ने हम को कुरआन सिखाया जबकी हमको इसके सीखने की रग़बत न थी और [illegible] ने कुरआन सिखा कर हम पर एहसान किया कि हमको इसकी मारफ़त का बिल्कुल इल्म[illegible] तू ने ख़ुसूसियत के साथ हमको कुरआन अता किया जबकि हम उसके फ़ज़्ल से वाक़िफ़ भी न थे, इलाही जबकि यह सब कुछ हमारी कुव्वत के बग़ैर तू ने हम पर एहसान किया है तो फिर उसके हक़ की निगहदाश्त अता फ़रमा और उसकी आयतों के हिफ़्ज़ करने की कुव्वत दे और उसके हुक्म पर अमल और मुतशाबेह पर ईमान और उस पर ग़ौर करने का सही रास्ता और उसकी इमसाल और मोजज़ पर ग़ौर और उसके नूर और हुक्म को देखने की निगाह अता फ़रमा। इसकी तसदीक़ में हमको शुब्हात लाहिक़ व आरिज़ न हों और उसके सीधे रास्तों में हमारे दिलों के अन्दर कजी का ख़्याल न आने पाए इलाही हमको कुरआने अज़ीम से नफ़ा अता फ़रमा हमको इसकी आयात और पुर हिकमत नसीहतों में बरकत अता फ़रमा और इसको हमसे क़बूल फ़रमा तू बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है और हमारी तरफ़ रहमत रूजूअ फ़रमा की तू ही तौबा क़बूल करने वाला रहीम है, ऐ अरहमर्राहेमीन अपनी रहमत से ऐसा कर दे कि कुरआन हमारे दिलों की बहार बन जाए, हमारे सीनों को शिफ़ा देने वाला, हमारे ग़मों को ज़ाएल करने वाला हमारे अनदोह व अफ़कार को दूर करने वाला और हमको तेरी

रहमत की तरफ़ और तेरी राहत वाली जन्नतों की तरफ़ चलाने वाला, खींचने वाला और रास्ता बताने वाला बना दे, ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले अपनी रहमत से ऐसा कर दे इलाही कुरआन पाक को हमारे दिलों के लिए ज़िया और हमारी आंखों के लिए जिला, हमारी बीमारियों के लिए शिफ़ा बना दे हमको गुनाहों से छुड़ाने वाला और दोज़ख़ से नजात दिलाने वाला बना दे, इलाही! इसके ज़रिया से हमको बहिश्ती जोड़े पहना हमको क़यामत के दिन साया में रखना, हमको पूरी पूरी नेमतें अता फ़रमा और हमसे अज़ाब को दफ़ा कर, बदला देते वक़्त हमको कामियाब होने वालों में शामिल फ़रमा राहतों और नेमतों के वक़्त हम को शुक्र करने वालों और मुसीबत के वक़्त सब्र करने वालों में से बना, इलाही हमको उन लोगों में से न कर देना जिन को शैतान ने अपनी तरफ़ माएल कर लिया है, दीन से अलग करके दुनिया में लगा दिया है जिसके बाएस वह नक़सान उठाने वालों में से बन गए हैं ऐ अरहमर्राहेमीन यह दुआ क़बूल फ़रमा ले इलाही कुरआन को हमारे हक़ में बुराइ न बना न पुल सिरात को हमारे फिसला देने वाला और हमारे नबी हमारे सरदार और हमारे वसीला हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़यामत के दिन हम से एराज़ करने वाला और मुं [illegible]ड़ने वाला न बना ब[illegible]क ऐ हमारे रब, ऐ हमारे ख़ालिक़ ऐ हमारे राज़िक़ उनको हमारे लिए ऐसे सिफ़ारिश करने वाले बना दे जिनकी सिफ़ारिश क़बूल की जाए और हमको उनके हौज़े कौ[illegible]र पर हाज़िर [illegible] और उन ही के जाम से हम को सैराब फ़रमा वह हम को ख़ुशगवार और मुबार[illegible]बत पिलायें जिस के बाद हम कभी प्यासे न हों और न ख़्वार हों और न ज़लील हों और न इंकार करने वाले [illegible] न हम मुसतहि़ ग़ज़ब हों और न गुमराह हों ऐ अ[illegible]मर्राहेमीन [illegible]नी रहमत से यह स[illegible] चीज़ें इनायत फ़रमा, इलाही इस कुरआन के ज़[illegible]या हम [illegible] फ़ाएदा पहु[illegible] जिस [illegible] तू ने म[illegible] बलन्द किया, जिस के फ़राएज़ क़ाइम किए जि[illegible] की दलील [illegible]ज़बूत बना[illegible], जिस[illegible] ज़ाहिर फ़रमाई और फ़सीह अरबी लुग़त (ज़बान) म[illegible]सूस क[illegible] और तू [illegible] फ़रमाया [illegible] जब ह[illegible] उसको पढ़ें तो ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि [illegible]सल[illegible] आप इसकी पैरवी करें, इसका बया[illegible] हमारे ज़िम्मा है और कुरआन की तरतीब तेरी सब [illegible] से अच्छी है और कलाम सबसे ज़्यादा वाज़ेह है और हलाल व हराम को सबसे ज़्यादा खोल कर ब[illegible] करने वाला है बयान के एतबार से महकम है इसकी दलील ज़ाहिर है और वह कमी [illegible]शी से महफ़ूज़ है, इसके अन्दर वादे और वईदें हैं और डरावे और धमकियां हैं इसमें किसी तरफ़ से भी आकर झूठ शामिल नहीं हुआ है, वह ख़ुदा के तरफ़ से उतारी हुई किताब है इलाही तू इसके ज़रिये हमारे लिए शरफ़ और ज़्यादतीए सवाब का ज़रिया बना दे और हम को ख़ुश नसीब लोगों में शामिल फ़रमा दे और हमसे अच्छे और नेक काम लेना, बेशक तू नज़दीक है, क़बूल करने वाला है अपनी रहमत से इस दुआ को क़बूल फ़रमा इलाही जैसा की तू ने हमको कुरआन की तसदीक़ करने वालो में से बनाया है और जो कुछ इस में है उसको हक़ समझने वाला बनाया है इसी तरह इसकी तिलावत से हम को नफ़ा उठाने वाला बना दे और इसके ख़ूश आइन्द ख़िताब को सुनने वाला कर दे और जो कुछ इसमें है उससे नसीहत हासिल करने वाला बना दे और उन अहकाम पर अमल करने वाला बना दे और उसके अवामिर व नही के सामने झुकने वाला वाला बना दे, इसके ख़त्म के बाद हमको बामुराद कर हमको इसके सवाब को हासिल करने वाला बना दे हमको तमाम महीनों में अपना ज़िक्र करने वाला अपनी ह[illegible] तमाम मामलों में रूजूअ करने वाला बना दे हम सबकी इस रात मग़फ़िरत

फ़रमा दे ऐ अरहमर्राहेमीन हरमत के ज़रिया माफ़ फ़रमा दे।

ऐ अल्लाह हमको उन लोगों में शामिल कर दे जिन्होंने कुरआन की इज़्ज़त की उसको हिफ़्ज़ करने के बाद और इसको सुनने के बाद इसकी ताज़ीम की और जब उस के सामने आए तो उस के आदाब को मलहूज़ रखा और जब जुदा हुए तो उसके अहकाम को मज़बूती से थामा और उस का हक़्क़े रिफ़ाक़त अदा किया और जब उन्होंने उसको साथ लिया तो उसके पढ़ने से तेरी रज़ा चाही और आख़िरत को तलब किया पस वह इस कुरआन के ज़रिया आला मक़ामात को पहुंचने और इसी कुरआन के ज़रिया जन्नत के दर्जों पर चढ़ने वालों में शामिल कर दे और उन लोगों में शामिल कर दे जिनसे ख़ुशनूदी के साथ रसूलुल्लाहा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुलाक़ात फ़रमायेंगे, कुरआन की शफ़ाअत ढूंडने वाला बद नसीब नहीं होता, ऐ अरहमर्राहेमीन इस दुआ को क़बूल फ़रमा ले, इलाही इसको बरकत वाला ख़त्म बना दे इसके पढ़ने वालों के लिए और उस वक़्त हाज़िर होने वालों के लिए और उनके लिए जिन्होंने इसको सुना और इसकी दुआ पर आमीन कहा ऐ अल्लाह इस कुरआन की बरकतें घर वालों पर उनके घरों में और महल्लात वालों के महल्लात में नाज़िल फ़रमा, इ[illegible] सरहद पर जिहाद [illegible]रने वालों पर और हरमैन शरीफ़ैन में रहने वाले मोमिनों पर इस की बर[illegible]तें नाज़िल फ़रमा, इ[illegible] हमारी मिल्लत के मुर्दों की क़ब्रों में (इसकी बरकत से) रौशनी और [illegible]ुशादगी ना[illegible] फ़रम[illegible] दे और उनकी नेकियों की अच्छी जज़ा अता फ़रमा और उनके गुनाह[illegible] बख़्श दे [illegible] अरह[illegible]र्राहेमीन अपनी रहमत से रहम फ़रमा जब कि हम चले जायें ऐ वह ज़ात [illegible] साबिक़ [illegible] साबिक़ है ऐ आवाज़ के सुनने वाले ऐ वह ज़ात जो मरने के [illegible]द हड्डियों को गोश्त क[illegible] लिबा[illegible] पहनाने वाली है, रहमत भेज हुजूर सल[illegible]ल्लाहो [illegible]हे वसल्ल[illegible] औ[illegible] उनकी औ[illegible]द पर और उस मुबारक रात में हमारा कोई गुना[illegible] ऐसा न छोड़ जिस को त[illegible] ने न [illegible] हो और न कोई ऐसा ग़म हो जिस को तू ने दूर न [illegible] दिया ह[illegible]ार न को[illegible] ऐसी स[illegible] को [illegible] ने हटा न दिया हो और न कोई ऐसा रंज जि[illegible] को त[illegible]ने दूर न [illegible]र दिया हो और न को[illegible]सी बुराई जिस को तू ने फ़ेर न दिया हो और न [illegible]ा मरीज जिस को जिस को तुने शिफ़ा न बख़्शी हो और न कोई ऐसा गुनहगार जिस को तूने [illegible] न कर दिया हो (और हिदायतयाब किए बग़ैर छोड़ा हो) और न किसी बच्चे को साले[illegible] बग़ैर और न किसी मुर्दे को रहमत के बग़ैर और दुनिया व आख़िरत की कोई ऐसी हाजत पूरी किए बग़ैर न छोड़ जिसमें तेरी रज़ा हो और वह हमारे लिए भी मोफ़ीद हो, इलाही तू इसको हमारे लिए आसान, फ़ाइदा रसां और बख़्शिश का बाएस बना दे, ऐ अरहमर्राहेमीन! हमारी यह दुआ अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा, इलाही! हमको आफ़ियत अता फ़रमा और अपने उफ़्वे अज़ीम से हम को माफ़ फ़रमा दे अपनी जमील पर्दा पोशी से और अपने क़दीम एहसान के तुफ़ैल ऐ बहुत ही भलाई और नेकी करने वाले रहमत नाज़िल फ़रमा, हमारे आक़ा और सरदार हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और उनके तमाम पैग़म्बर भाईयों, उनकी औलाद और मलाएका पर और उन सब पर अपनी सलामती नाज़िल कर, ऐ हमारे रब हम पर अपनी तरफ़ से रहमत फ़रमा और हम को हमारे कामों में दुरुस्ती इनायत कर दे और हम को इस नेक अमल की तौफ़ीक़ अता कर जिस से तू राज़ी हो, ऐ अरहमर्राहेमीन! अपनी रहमत से इस दुआ को क़बूल कर, इलाही हुजूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह उन्होंने रिसालत का फ़र्ज़ अदा किया

है, ऐ अल्लाह हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो शहरों के आफ़ताब, ज़मीन के महताब, क़यामत की ज़ीनत और रोज़े महशर में गुनहगारों की शफ़ाअत करने वाले हैं उन पर रहमत नाज़िल फ़रमा, इलाही हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उनकी औलाद पर और उनके तमाम सहाबा पर जिन्होंने दीन की मदद फ़रमाई और सबके सब रसूल की पैरू रहे अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा, इलाही रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिन को तू ने सच्चा दीन दे कर भेजा और तू ने उनकी सच्ची तारीफ़ की और बुर्दबारी उनकी अलामत बनाई और अहमद उन का मुबारक नाम रखा और क़यामत के दिन उम्मत के बारे में तू उनकी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमाएगा, इलाही हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फ़रमा जब तक सितारे रौशन हैं और उन पर रहमत भेज जब तक बादल जमा होते रहें और उन पर रहमत नाज़िल फ़रमा ऐ हय्यो ऐ क़य्यूमो, इलाही हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फ़रमा जब तक नेक लोग उनका ज़िक्र करते रहें, ऐ अल्लाह हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रहमत नाज़िल फ़रमा जब तक रात दिन की [illegible]मद व रफ़्त का सिलसिला क़ाएम है ऐ अल्लाह अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और मुहाजरीन व अंसार पर।

एक वसीयत

साहबे [illegible] व बरक[illegible] माहे [illegible]मज़ान की आख़िरी शब

अल्लाह के [illegible]न्दो! अल्लाह तुम पर रहमत ना[illegible] यह रूख़सत होने वाले महीने की आख़िरी शब है जिस को अल्लाह तआला ने मुशर्रफ़ किया और [illegible]सकी अज़मत बढ़ाई उसके रुतबा को बलंद कि[illegible] दि[illegible] के रोज़ों, रात की नमाज़ों और क़ुरआन पाक की तिलावत अल्लाह की रहमत और उसकी [illegible]नूदी के नुज़ूल के बाइस अल्लाह तआला ने इसको करामत बख़्शी। इस महीने में तुम पर अल्लाह [illegible]ला की जानिब से रहमत व सआदत नाज़िल हुई है, अल्लाह तआला ने इस महीने को [illegible]ल के चिराग़ और मोतियों के हार का दर्मियानी मोती (वास्ता अल अक़्द) बनाया, नमाज़ व रोज़ा के नूर की वजह से इसको अरकाने इस्लाम में बहुत ज़्यादा मुकर्रम बनाया इसी महीने में उसने अपनी किताब नाज़िल फ़रमाई और तौबा करने वालों के लिए क़बूलियत के दरवाज़े खोल दिए। इस माह में हर दुआ क़बूल होती है और हर नेकी जमा जाती है, हर ज़रर इस महीना में उठा दिया जाता है कामयाब और क़ाबिले मुबारक बाद वही है जिसने इस महीने के औक़ात को ग़नीमत समझा और नुक़सान उठाने वाला और घाटे में रहने वाला वही है जिसने इसको ज़ाया कर दिया और इसको हाथ से खो दिया।

यह महीना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है

अल्लाह तआला ने इस महीने को तुम्हारे लिए गुनाहों के लिए तहारत का ज़रीया और तुम्हारी बुराईयों के लिए कफ़्फ़ारा बनाया है, तुम में से जिस किसी ने इसको अच्छी तरह बसर किया उसके लिए यह आख़िरत का ज़ख़ीरा और नूर बन गया और जिसने इस महीने के तक़ाज़े

पूरे किए और इस माह के हुकूक अदा कर दिए उसके लिए यह महीना खुशी और मुसर्रत का महीना बना दिया गया यह महीना ऐसा है कि इस महीने में फासिक व फाजिर भी सुधर जाते हैं और नेक बन्दों की तवज्जोह अल्लाह तआला की तरफ बढ़ जाती है। यह ऐसा महीना है जो दिलों को आबाद करता है, गुनाहों का कफ्फारा बन जाता है और यह महीना मस्जिदों को पुर करने वाला है इस महीना में फरिश्ते आजादी और रिहाई के परवाने लेकर नाजिल होते हैं इस महीने मे मस्जिदें आबाद हो जाती हैं, चिराग रौशन होते हैं आयाते कुरआनी की तिलावत की जाती है दिलों की दुरुस्ती होती है, गुनाह बख्श दिए जाते हैं।

यह महीना वह है जिस में मस्जिदें अनवारे इलाही से चमक उठती हैं और मलाइका रोजादारों के लिए कसरत से इस्तिगफार करते हैं। अल्लाह तआला इस महीने की हर रात को इफ्तार के वक्त छः लाख अफराद को दोजख की आग से नजात देता है, इस माह में बरकतों नुजूल होता है, लोग इस माह में ज्यादा सदकात करते हैं इस माह में बरकतों का नुजूल होता है लगजिशें माफ कर दी जाती हैं लोगों की गिरया व जारी पर रहम फरमाता है और वह कम हो जाती है, इस माह में जन्नत की हसीन हूरें आवाज देती हैं ऐ रोजादार मर्दों और औरतो! और इबादत करने वाले मर्द और औरतो! तुम को वह रहमतें और भलाईयां मुबारक हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए तैयार कर रखी हैं यकीनन तुम को बरकतों ने ढांप लिया है और जमीन व आसमान के तमाम रहने वाले तुम से खुश हैं।

अल्लाह तआला उस शख्स पर रहमत फरमाए जिस ने मरने से पहले अपने नफ्स के लिए तैयारी की और माज़ी व मुस्तकबिल की फिक्र से आजाद होकर इमरोज़ (हाल) मे मशगूल (हाल को कामयाब बनाया) और अपने बचे हुए सामान से जादे राह फराहम करने में मसरूफ हुआ जो उसकी उम्र खत्म होने तक पूरा हो जाएगा और वह बन्दा इस महीने की जवानी से गमगीन हुआ और सलाम [illegible] इसको [illegible] तरह [illegible] किया।

अस्सलामो अलैका या [illegible]हरा रमजान अस्सलामो अलैका [illegible]हर अस्सियाम वस्सियाम व तिलावतिल कुरआन [illegible] गुजर और माफी के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ बरकत व भलाई के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ [illegible] व रजामन्दी के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ इबादत और कुरबानी (नफ्स) के महीने [illegible] सलाम हो ऐ रोजों और तहज्जुद की इबादत वाले महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ तरावीह के महीने तुझ पर सलाम हो ऐ नूर और चिरागों के महीने तुझ पर सलाम हो, ऐ आरिफो के मुसर्रत तुझ पर सलाम हो ऐ खूबियों वाले लोगो के बाइसे इफ्तेखार महीने तुझ पर सलाम हो ऐ इबादत गुजारों के बाग तुझ पर सलाम हो।

ऐ हमारे महीने हम ने तुझे रूखसत किया हालांकि हम तुझे रूखसत करना नहीं चाहते थे हम तुझ से जुदा हो गए हालाकि तू हमारा दुश्मन नहीं था, ऐ माहे रमजान, तेरा सरापा सदका और रोजा था, तेरी जात सरापा कुरआन की तिलावत और कयाम था, तुझ पर हमारी जानिब से सलामती हो, तुझे हम मुबारक बाद पेश करते हैं, खुदा जाने हम को आइन्दा तू मयस्सर होगा या नहीं, मुमकिन है कि हम मौत से हम आगोश हो जाए और तू हम तक न आए! ऐ माह रमजान तुझ से हमारी मस्जिदो के चिराग रौशन रहते थे और वह आबाद रहती थी, अब जब कि तू जा रहा है वह चिराग बुझ जाएंगे और तरावीह खत्म हो जाएगी और हम फिर असल हालत पर लौट आएंगे और तुझ जैसे इबादत वाले महीने से जुदा हो जाएंगे।

ऐ काश मैं जानता कि हम में से (इस माह के) किस के आमाल क़बूल हुए हम उसको उसके ऐसे अच्छे आमाल पर मुबारक बाद पेश करते हैं, ऐ काश कि मैं जानता हम में से किस के आमाल ना मक़बूल हुए हम उसकी बद आमाली पर ताज़ियत करते।

ऐ मक़बूल आमाल वाले! तुझे अल्लाह का सवाब उसकी ख़ुशी मुबारक हो, तुझे अल्लाह की रहमत, उसकी मक़बूलियत और उसकी मग़फ़िरत मुबारक हो, तुझे अल्लाह का इनाम, गुनाहों की माफ़ी, उसकी नेमतों की अरज़ानी मुबारक हो तुझे अल्लाह जन्नत में हमेशा हमेशा के लिए दाख़िला मुबारक हो।

ऐ ना मक़बूल आमाल वाले! तेरे इसरार, सरकशी, ज़ुल्म व तअ़द्दी, ग़फ़लत व निसयान, नुक़सान और मुसलसल गुनाह करने का बाइस अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब और उसकी नाराज़गी तुझ पर बहुत बड़ा ग़ज़ब बन कर टूटी है, ऐ बन्दे तेरी अश्क रेज़ आंखें कहां है तेरे बहने वाले आंसू कहां गए ,तेरी फ़रयाद कहां गई, तूने तौबा को ताख़ीर में किस दि[illegible] के लिए डाल रखा है और किस साल के लिए तूने अपने ख़ज़ाने को जमा कर रखा है (उस [illegible]ो कब ख़र्च करेगा) क्या आइन्दा साल के लिए या मौजूदा साल गुज़र[illegible] के वक़्त तक। ख़ब[illegible]ार ऐसा न करना, उम्रों की मुद्दत तेरे इल्म में नही है (तुझे क्या मालूम [illegible]ौत कब आए[illegible]) औ[illegible] तू मुक़द्दरों के पहचानने पर क़ादिर है।

ज़रा ग़ौर कर, कितने उम्मीदों से भर पूर दिल गुज़[illegible] जिनको उम्[illegible]द बरारी की तवक़्क़ो थी लेकिन उनकी उम्मीद बर नहीं आई और कितने उम्मीदा क[illegible] चाहत [illegible] थे जो उस तक नहीं पहुंच सके। बहुत से ऐसे [illegible] थे जो [illegible] की [illegible]ुशियां मनाने [illegible]ी तैयारी में मसरूफ़ थे और वह क़ब्र में पहुंचा [illegible]ए गए और उनका [illegible] लिबास उनका कफ़न साबित हुआ, बहुत से ऐसे थे जो सदक़ए [illegible]त्र अदा करने की तैयारी में मश[illegible] [illegible]कन वह ख़ुद ही क़ब्र में रेहन रख दिए गए।

बहुत से ऐसे ल[illegible] हैं [illegible] रोज़ा नहीं रखेंगे और अल्लाह के सिवा दूसरे मशग़लों में लगे रहेंगे पस ऐ ख़ुदा के बन्दो! [illegible] की हम्द करो कि उसने माहे ख़ैर को अख़ीर तक पहुंचा दिया और अल्लाह तआ़ला से इस माह [illegible] रोज़ों और इबादत की क़बूलियत की दुआ मांगो इस माह के जो हुक़ूक़ हैं उनकी अद[illegible] की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ, अल्लाह और उसकी तौफ़ीक़ की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो।

ऐ लोगो! अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल फ़रमाये तुम को समझ लेना चाहिए कि तुम एक बहुत ही बरगुज़ीदा और मुअज़्ज़िज़ महीने से जुदा हो रहे हो पस वह रोज़ादार और इबादत करने वाले कहां हैं जो पिछले बरसों में तुम्हारे साथ थे? और वह लोग कहां हैं जो तुम्हारे साथ रमज़ान की रातों में शरीके इबादत थे और तुम्हारे वालिदैन,बहन और भाई, हमसाये और क़राबतदार कहां हैं जो ख़ुदा का हर हक़ अदा किया करते थे, ख़ुदा की क़सम उनको मौत आ गई वह मौत जो तमाम लज़्ज़तों को ढाने वाली और बरबाद करने वाली है, तमाम अरमानों को काटने वाली है और जमीअ़तों में तफ़रक़ा डालने वाली है, उनसे मजलिसें ख़ाली हो गई, मस्जिदें उनसे सुनसान हो गई, अब तो तुम उनको क़ब्रों की मिट्टी में पड़ा हुआ देख रहे हो, उन पर जो हालत तारी है उसको वह टाल नहीं सकते अब उनको अपने नुफ़ूस के नफ़ा व नक़सान पर क़ुदरत हासिल नहीं है, वह [illegible] [illegible] के मुंतज़िर हैं जिस दिन लोग अपने रब की तरफ़ बुलाये जायेंगे (रोज़े हश्र)

और सारी मख़लूक़ मैदान में जमा कर दी जाएगी वह उस दिन हर तरफ़ दौड़ते फिरेंगे, उस दिन की हौलनाकी (हैबत) से कांपते होंगे और उस दिन के हिसाब के ख़ौफ़ से उनके दिल फटे पड़े होंगे अल्लाह तआला का इरशाद है और सूर फूंका जाएगा तो हम उन सब को इकट्ठा कर लेंगे।

ऐ अल्लाह के बन्दो! पस जिस ने माहे रमज़ान में हराम से अपने आप को बाज़ रखा तो उसे चाहिए कि इसी तरह वह तमाम महीनों में और सालों में भी अपने नफ़्स को इसी तरह हराम से बचाए रखे इसलिए कि माहे रमज़ान व ग़ैर माहे रमज़ान यानी दूसरे महीने का मालिक एक है और वह उन दोनों ज़मानों से अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

अल्लाह तआला हम को और तुम को इस महीने की जुदाई के बाद जज़ा दे और अपनी रहमते आम से हम को और तुम को सिला अता फ़रमाए और बाक़ी उमूर में हमारे और तुम्हारे लिए बरकत अता फ़रमाए, अपने फ़ज़्ल, रहमत और एहसान से हमें हिदायत के रास्ते पर चलाए आमीन।

इलाही! तू ने इस रात में अपनी बख़्शिश, आज़ादी, रहमत, रज़ा, उफ़्व व दरगुज़र, एहसान व इकराम दोज़ख़ से नजात और हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िला तय फ़[illegible]मा दिया है, इलाहल आलमीन! हम को सबसे ज़्यादा इससे हिस्सा इना[illegible] फ़रमा (आमीन)।

इलाही! जिस तरह तू ने माहे सियाम हम को अता [illegible]फ़रमाया उसी तरह इ[illegible] माह के हाल को बरकतों से भर दे और इसके अय्याम को बहुत ज़्यादा [illegible]बारक बना दे[illegible] हम [illegible]से इसको क़बूल फ़रमा ले यानी वह आमाल जो इस माह में हमने बहैसिय[illegible]ज़ा और इबा[illegible]त किये हैं वह क़बूल फ़रमा ले और हमारे उन गुनाहों को बख़्श दे जो [illegible]इस माह में हम [illegible]से सरज़द[illegible] हुए हैं, हम को मख़लूक़ के हुक़ूक़ से उ[illegible]स दिन न[illegible] अता फ़[illegible] दे जि[illegible] दिन तेरे सि[illegible] कोई उम्मीद गाह नहीं होगी, ऐ सबसे ज़्यादा ज[illegible]नने वाले, [illegible] सबसे ज़्या[illegible] रहम [illegible]करने वाले [illegible] दुआ को क़बूल फ़रमा ले।

इलाही! इस[illegible] में कुछ शक न[illegible]हीं कि हम से इस [illegible] और क़याम (इबादत) में कोताही हुई और हम तेरी [illegible]बादत क[illegible] कुछ हक़ [illegible] अदा नहीं [illegible]सके, [illegible] क़सूर के पेशे नज़र हम तेरे दर पर सवाली बन [illegible]र झ[illegible]ते हैं और तेरी रज़ा और रहमत के [illegible]लिब बन कर सर को झूकाते हैं, इलाही! हम को ना[illegible] वापस न कर और न अपनी रहमत से मायूस फ़रमा, हम तेरे मुहताज हैं तेरे सामने एक बन्दे की तर[illegible] हैं पस हम तो तेरी ही जानिब रूजूअ करते हैं, और तुझ ही से ख़ैर के तालिब हैं, हम तेरे[illegible] दरवाज़े को खटखटाते हैं और सिर्फ़ तेरी ही रहमत से सवाल करते हैं, तू हम पर रहम फ़रमा और हमारे दिलों को संवार दे और हमारे ऐबों को छुपा ले, हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे और क़यामत के दिन हमारी आंखों को खुनकी मरहमत फ़रमा और हम को अपनी अज़ीम व गिरांबार तवज्जोह से महरूम न कर, हमारे अमल को क़बूल फ़रमा और हमारी कोशिशों को पज़ीराई अता कर और उस रात से हम को ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा अता फ़रमा दे।

इलाही! अगर तेरे लाज़वाल इल्म में आइन्दा साल इस माह में हमारा मुक़द्दर है तो इस में हमें बरकत अता फ़रमा और अगर हमारी उम्र पूरी हो चुकी है और मौत हमारे दर्मियान हाएल होने वाली है तो हमारे अख़लाफ़ (बेटे पोते वग़ैरह) को नेक बना दे और हमारे अगलों पर अपनी रहमत को कुशादा कर दे और हम सब को अपनी आम रहमत व बख़्शिश से नवाज़, अम्बिया, सिद्दीक़ीन शुहदा और सालेहीन की रिफ़ाक़त दे, इलाही हमारी इस दुआ को क़बूलियत का शरफ़ अता फ़रमा।

इलाही अहले क़बूर ऐसे गुनाहों (की पादाश) में घिरे हैं कि उनसे छुटकारा नही पा सकते

और ऐसी तन्हाई की क़ैद में गिरफ़्तार हैं कि उससे आज़ाद नहीं हो सकते और ऐसे मुसाफ़िर हैं जिन को मुहलत नहीं दी जा सकती उनके चेहरे की ख़ूबसूरती को मौत ने मस्ख़ कर दिया और ज़हरीले कीड़े क़ब्रों में उनके हमसाये बन गये हैं वह इस तरह ख़ामोश हैं कि बात नहीं कर सकते और एक दूसरे के ऐसे पड़ोसी हैं कि आपस में मिलजुल नहीं सकते, और वह अपनी अपनी क़ब्रों में क़यामत तक इस तरह सोने वाले हैं कि कहीं और मुन्तक़िल नहीं हो सकते उनमें नेक भी हैं और बद भी, पीछे रह जाने वाले भी हैं और आगे बढ़ जाने वाले भी।

इलाही जो लोग उनमें ख़ूश होने वाले हैं उनकी ख़ूशी और मुसर्रत को और बढ़ा दे और जो उनमें ग़मगीन हैं उनका ग़म ख़ूशी और मुसर्रत में बदल दे। इलाही तमाम मोमिन मुर्दों पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ऐ अरहमर्राहेमीन इस दुआ को शर्फ़े क़बूल अता फ़रमा।

इलाही इन मुर्दों की क़ब्रों को उनके लिए राहतगाह और अपनी बख़्शिश, मग़फ़िरत, माफ़ी और अहसान की मंज़िल बना दे ताकि वह अपनी अपनी क़ब्रों में मुतमईन हो जाएं और तेरे जूद व करम पर यक़ीन करने वाले और आला दरज़ों पर पहुंचने वाला बन जा[illegible]। इलाही इन तमाम नेमतों के साथ इनके बाप, बेटों, भाईयों और रिश्ते[illegible] को भी अपने करम [illegible] नवाज़ क़ब्ल इस के कि यह दुनिया तबाह हो जाए और तैरगी सफ़ा प[illegible] ग़ालिब आ जाए औ[illegible] ज़िन्दगी के हाथ से उम्मीद का दामन निकल जाए और मकानात मिट्टी [illegible] दब कर ब[illegible] हो ज[illegible]एं और यह सब कुछ इससे पहले हो कि हमदर्दी दुशमनी से बदल जाए [illegible] सैलाब की तरह इख़्तियार करे, सुबह रात का रूप धार ले और ज़मीन व आसमान के रैन [illegible]लों पर [illegible]कूते मर्ग तारी हो जाए और यह सब नेमतें हम [illegible] इस से पह[illegible] हासिल हों कि ज़ईफ़ अपनी पीराना साली पर और अधेड़ उम्र वाला अपनी अधेड़ उम्र पर तास्सु[illegible] करे, [illegible]नाहगार [illegible] अफ़सोस मलें और नौजवान वा हसरत वा हसर[illegible] पुकारें यह सब नेमतें [illegible]ससे [illegible] फ़रमा दे कि नदामत व शर्मिन्दगी उनको ग़र्क़ करे और वह इस तरह मह[illegible]ब लब हों [illegible] कि [illegible] न सकें और अपने आमाल से आगाह होकर न[illegible]मत [illegible] सरों को झुकायें और (अज़ाब से) ख़ौफ़ज़दा होकर वह यह ख़्वाहिश करने लगें कि काश [illegible]दा न हुए होते।

ऐ रोज़ी देने वाले, आवाज़[illegible] सुनने वाले, मरने के बाद ज़िन्दा करने वाले हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलै[illegible]वसल्लम पर और उनकी आल व औलाद पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा। इलाही! इस मुबारक और शरफ़ रखने वाली रात में हमारा कोई ऐसा गुनाह माफ़ किए बग़ैर न छोड़ और न कोई ऐसा ग़म मौजूद हो जिसे तूने तूने दूर न फ़रमा दिया हो, और न कोई ऐसा मुसीबत ज़दा बाक़ी रहे जिस को तूने आफ़ियत अता न कर दी हो, बूरों को भी नज़र अंदाज़ न फ़रमा, उनके गुनाह भी माफ़ फ़रमा दे, न कोई ऐसा क़र्ज़दार बाक़ी रहे जिस को तूने क़र्ज़ से नजात अता न फ़रमा दी हो अगर कोई गुमगश्ता हो तो तू उसको रांह बता दे, कोई ऐसा गुनहगार बाक़ी न रहे जिसके गुनाह तूने न बख़्श दिए हों और न कोई ऐसा मुर्दा बाक़ी रहे जिस पर तूने अपनी रहमत नाज़िल न फ़रमाई हो।

हमारी दीन व दुनिया की कोई भी ज़रूरत जिस में तेरी रज़ा भी शामिल है और उस में हमारी भलाई भी, उसको हमारे लिए आसान बना दे और अपनी बख़्शिश के साथ पूरा फ़रमा दे, ऐ अरहमर्राहेमीन इस दुआ को अपनी क़बूलीयत का शर्फ़ अता फ़रमा, इलाही हमारे आबा व

अजदाद, हमारी माओं, भाइयों, बेटों, अज़ीज़ों, शार्गिदों, उस्तादों, हमारे लिए दुआ करने वालों औ हम से दुआ के तलबगारों के गुनाह बख़्श दे, इलाही उनके भी गुनाह माफ़ फ़रमा जिनसे ह तेरी ख़ातिर रग़बत और नफ़रत है जिनको हम ने तेरी ख़ातिर छोड़ा है ख़्वांह उनमें से कोई ज़िन्द है या मुर्दा, उन सब के भी गुनाह बख़्श दे इलाही हमारी इस दुआ को अपनी रहमत से क़बूलीय का शर्फ़ अता फ़रमा।

ऐ माबूदे बरहक़! तमाम छुपी बातों को जानने वाले, ऐ बलाओं को दूर करने वाले, दुआ क क़बूलीयत अता करने वाले और ग़मों को दूर करने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलै वसल्लम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा जो सारी मख़लूक़ से बेहतर हैं हम को अपनी किता कुरआन मजीद) की आयात से नफ़ा पहुंचा और इस की तरतील व तिलावत के वास्ते से हमा गुनाहों को धो डाल और रमज़ान के रोज़ों और इबादत के ज़रीये हमारे दरजे अपनी कुरबत बुलंद फ़रमा। ऐ पोशीदा बातों को जानने वाले हमारे हुजूर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलै वसल्लम और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और कुरआन के ज़री हमारी ख़तायें मा फ़रमा और उसके तवस्सुत से हम पर ज़्यादा इनाय कर उसके ज़रीये हम बीमारों को अच्छ कर दे हम में से जो मर गए हैं उन पर रहम फ़रमा, हमा दीनी व दुनियवी मा ात बेहतर फ़रम दे और इसके ज़रीये हमारे ईसयां के बोझ उतार दे अ र हम को तौ क अत फ़रमा कि ह नेकों क ख़साएल इख़्तियार करें, हमारी तमाम ख़ताएं अ गज़िशें औ ग़लतियां माफ़ फ़रम दे हमारे दिल और हमारे बातिन को पाक फ़रमा दे और कु आन की रकत से अज़कार क बेहतर बना दे और इसके ज़रीये हमारे ख़्यालात को पाकी अता फ़रमा हम को गिरानी से नजा अता कर दे ह से अशर की बुराईय र फ़ाजिरों के म को दूर फ़रमा दे हम को सहाब कराम की मोहब्ब पर ज़िन्दा रख, हम को दोज़ख़ नजा ता फ़रमा और दुनिया व आख़िरत में भलाई अता क दोज़ख़ अज़ाब से हफ़ूज़ र

तमाम तारीफ़ ख़ुदा के लिए है ख़ुदा की तमाम रहमतें हुजूरे रम ख़ातिमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो वसल्लम पर उनकी औलाद पर, सहाबा कराम पर और अज़वाजे मुतहहरात पर नाज़िल हों ऐ ल्लाह उन सब पर कसरत से सलाम भेज।

बाब 24

आदाबुल मुरीदीन

वह फ़ुक़राए हक़ीक़ी जो उन सूफ़ियाए कराम के रास्ते और तरीक़े पर चलने वाले हैं, जो नफ़्सानी ख़्वाहिशों और गुमराह करने वाली आरज़ूओं से पाक और आदाते रज़ीला से महफ़ूज़ हैं, वह सब लोग अबदाल और औलिया (अल्लाह) के गरोह में दाख़िल हैं, उनके दिल में जो ख़ुदा का ख़ौफ़ और डर है उसके बाएस यह हज़रात बहुत कम मुद्दत में शर्फ़याब हो जाते हैं।

इरादत, मुरीद व मुराद

इरादत की तारीफ़

अपनी आदात को तर्क कर देना इरादत है तफ़सील इस इजमाल की यह है कि दिल को अल्लाह तआला की तलब में तर्के मासिवा के लिए मुसतएद बना लेना इरादत है, जब इंसान उन आदतों को छोड़ देगा जो दुनिया व आख़िरत की लज़्ज़तें कहलाती हैं तो उसकी इरादत कामिल होगी, हर मामले में यही इरादत सबसे मुक़द्दम है, इसके बाद क़स्द का नम्बर है और फिर अमल का, बस इरादत सालिके हक़ की इब्तिदा है और उसकी पहली मंज़िल का नाम है।

अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इरशाद फ़रमायाः

तुम उन लोगों को जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं और उसकी रज़ा के तालिब हैं न धुतकारो।

मक़ामे फ़िक्र है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसे लोगों को धुतकारने और अपने से दूर रखने से मना फ़रमाया। दूसरी जगह इरशाद होता हैः

ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने नफ़्स को सब्र की आदत डालिये उन लोगों के साथ जो अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं ताकि उसकी रज़ा हासिल करें और आप उनसे अपनी आंखें न फेरें इस नीयत से कि आप उनसे दुनियवी ज़िन्दगी की रौनक़ चाहें।

अल्लाह तआला ने अपने हबीब को उनके साथ राब्ता रखने और सब्र करने का हुक्म दिया और सहाबा कराम की तारीफ़ इन अलफ़ाज़ में फ़रमाई कि यह लोग ख़ुदावन्द तआला की रज़ा के तालिब हैं इसके बाद फ़रमाया गया कि आप उनसे दुनियवी ज़िन्दगी की आसाईश चाहते हुए अग़माज़ व अग़राज़ न फ़रमायें। इससे यह बात पाए सुबूत को पहुंच गई कि तरीक़त की हक़ीक़त ख़ुदावन्द तआला की रज़ा तलबी है और दुनिया व आख़िरत की ज़ीनत के मुक़ाबले में अल्लाह की रज़ा बहुत काफ़ी व वाफ़ी है।

मुरीद किसे कहते हैं

मुरीद यानी ख़ुदावन्द तआला की रज़ा का तालिब वह है जिसमें यह सब औसाफ़ तमाम व

कमाल मौजूद हों यानी वह इस वस्फ़ से बहरामन्द हो कि हमेशा ख़ुदावन्द तआ़ला और उसक ताअ़त की जानिब मुतवज्जेह रहे, मा सिवा अल्लाह से उसको बेज़ारी हो, वह अल्लाह के सिव किसी और चीज़ के क़बूल करने से नफ़रत करे, वह अपने रब की सुनता हो और किताब सुन्नत के अहकाम पर अमल पैरा हो, ग़ैरुल्लाह की जानिब से वह बहरा हो जाए (किसी बा पर कान न धरे) वह ख़ुदा के नूर के ज़रिया से देखता हो और ख़ुदा अपनी ज़ात में और अफ़ से सिवा तमाम मख़लूक़ में अल्लाह का फ़ेअ़ल ही मुशाहिदा करता हो, ग़ैरुल्लाह की तरफ़ अंधा हो जाए और किसी और को (सिवाए अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के) फ़ाएले हक़ीक़ी न समझे

हुज़ूर का इरशाद

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है तेरी मोहब्बत तुझे किसी चीज़ से अन्धा और बहरा बना देती है, यानी महबूब के मासिवा से तुझे अंधा और बहरा कर देती है इस लिए तू महबूब ही में खोया रहता है आदमी उस वक़्त तक मोहब्बत नहीं करता जब तक वह इरादा न करे और वह उस वक़्त तक इरादा नहीं कर सकता जब तक इरादा में ख़ुलूस मौजूद न हो और इरादा में ख़ुलूस उस वक़्त पैदा होता है जब उसके दिल में मशीयते इलाही की चिंगारी शोला ज़न हो जाती है और यही चिंगारी मा सिवा अल्लाह को जला डालती है।

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

बेशक बादशाह जब किसी बस्ती (क़रिया) में दाख़िल होते हैं तो उसको वीरान कर देते हैं और इसी बस्ती के ज़ी इज़्ज़त लोगों को ज़लील बना देते हैं।

गोया दिल एक बस्ती है और मशीयते इलाही की चिंगारी उस बस्ती की हर चीज़, आरज़ू और ख़्वाहिश को जला डालती है।

मोहब्बते इलाही का ख़्वास्तगार

मोहब्बत एक ऐसी आरज़ू और एक ऐसी ख़्वाहिश है जो हर मुसीबत को आसान बना देती है। ऐसे शख़्स की नींद नींद के इन्तेहाई ग़लबा के वक़्त होती है (आराम के लिए नहीं) उसका खाना फ़ाक़ा के वक़्त और कलाम ज़रूरत के तेहत होता है इसलिए कि वह हमेशा अपने नफ़्स से नफ़रत करता रहता है (उसको आराम पहुंचाने के लिए उसका सोना खाना और बोलना नहीं होता) और वह हमेशा महबूबे हक़ीक़ी की तरफ़ राग़िब होता है वह सिर्फ़ अल्लाह के बन्दों की ख़ैर ख़्वाही करता है लेकिन अपने लिए गोशए तन्हाई पसन्द करता है, वह गुनाहों से बचता है और अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहता है और उसके अहकाम की इताअ़त व बजा आवरी में मसरूफ़ रहता है, अम्रे ख़ुदावन्दी को पसन्द करता है और ख़ुदा की नज़र से शर्म करता है (ऐसा काम नहीं करता जो अल्लाह को नापसन्द हो) उसकी तमाम कोशिशें अल्लाह की मोहब्बत में सर्फ़ होती हैं वह हमेशा ऐसे काम करता है जो उसको ख़ुदा तक पहुंचायें वह गुमनामी और ख़लवत नशीनी पर क़ानेअ़ रहता है मख़लूक़ की मदह व सताईश उसको पसन्द नहीं आती।

मारेफ़त

वह ख़ास ख़ुदा के लिए कसरत से नवाफ़िल पढ़ता है ताकि अल्लाह तआ़ला तक रसाई का ज़रिया बन सकें यहां तक की वह ख़ुदा तक पहुंच जाता है फिर वह औलिया अल्लाह और

सालिकीने हक़ के गरोह में दाख़िल हो जाता है उस वक़्त उस मुरीद को मुराद कहेंगे, उस वक़्त उससे वह तमाम गिरां बारियां ले ली जाती हैं जो उसको लाहिक़ थीं और उसको ख़ुदावन्द तआ़ला की मेहरबानी और शफ़क़त से गुस्ल दिया जाता है फिर अल्लाह तआ़ला के कुर्ब में उस के लिए मंज़िल बना दी जाती है और उसको तरह तरह की ख़िलअतें पहनाई जाती हैं, इसी का नाम मारेफ़त है यही ख़ुदा की मोहब्बत है इसी से उस को सुकून हासिल होता है उसको तमानियते कुल्ली हासिल हो जाती है।

ऐसा शख़्स जो कलाम करता है वह हिकमते इलाही और इल्मे इलाही से करता है, उसका नाम अल्लाह के दोस्तों में पुकारा जाता है वह ख़ुदा के ख़ास बन्दों में दाख़िल कर लिया जाता है और वह ऐसे कई नामों से मौसूम हो जाता है जिनका इल्म ख़ुदा के सिवा किसी और को नहीं उस वक़्त वह ऐसे राज़ों से मुत्तला हो जाता है जो उसी के साथ मख़सूस होते हैं वह उन राज़ों को मा सिवा अल्लाह पर ज़ाहिर नहीं करता, वह अल्लाह से सुनता है वह उसी के ज़रिये देखता है, उसी की मदद से काम करता है और उसी की कुव्वत से कुव्वत हासि[illegible] करता है वह उसी की ताअ़त पर चलता है, अल्लाह ही से सुकून हा[illegible] करता है और अल[illegible]ह की ताअ़त और याद के साथ उसी की निगहबानी और हिफ़ाज़त में व[illegible] सो जाता है फिर व[illegible] ख़ुदा की राह में मरने वालों और शहीद होने वालों में से हो जाता है वह अल्लाह की [illegible]न के औताद में से हो जाता है वह अल्लाह के शहरों और अल्लाह के दोस्तों [illegible] निगहबान ब[illegible] जाता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हदीसे कुदसी म ब[illegible]ान फ़रम[illegible]ा की अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरा मोमि[illegible] न्दा हमेश[illegible] वाफ़ि[illegible] के ज़रिये मे[illegible] कुर्ब हासिल करता है यहां तक की मैं उसको [illegible]पना दोस[illegible] बना लेता [illegible] र मैं [illegible]सके कान [illegible]ांखें, ज़बान, हाथ पांव और दिल बन जाता हूं पस [illegible]ह मेरे ही ज़[illegible]रिया सुनता [illegible] और [illegible] से देखने लगता है मेरे ही ज़रिया बोलता है और मे[illegible] ही ज़ेह[illegible] से सोचने [illegible]गता है औ[illegible] मुझ ही [illegible] कुव्वत हासिल करता है।

यह वह बन्दा ह[illegible] जिस [illegible] एक बड़ी अक़्ल का बार उठा रखा है जिस की नफ़्सानी ख़्वाहिशात फ़ना हो चुकी हैं चूंकि [illegible] पर ख़ुदावन्द जल्लो उला का क़ब्ज़ा हो गया है इसलिए उस का दिल ख़ज़ानए इलाही बन जाता है, [illegible]ुदा के बन्दे! अगर तेरा इरादा है कि तू मारेफ़ते इलाही हासिल करे तो फिर मंज़िले ख़ुदा [illegible] यही है। (इन बातों पर अमल कर और को ख़ुद को वैसा बना ले)।

मुराद और मुरीद का फ़र्क़

बुज़ुर्गगाने सल्फ़ में से किसी बुज़ुर्ग का इरशाद है कि मुरीद और मक़सूद के असल मानी यही हैं अगर अल्लाह तआ़ला को उसे मुरीद बनाना मक़सूद न होता तो वह हरगिज़ मुरीद न होता। अल्लाह तआ़ला जो चाहता वही होता है इसलिए जब वह किसी को कोई भी ख़ुसूसियत अता करना चाहता है तो उसको इरादत की तौफ़िक़ अता फ़रमा देता है। बाज़ दूसरे बुज़ुर्गों का इरशाद है कि मुरीद इब्तेदा करने वाला होता है और मुराद व मक़सूद मुनतहा है। सालिक यानी मुरीद वह है जो मसाएब और मशक़्क़तों में फेंक दिया जाता है और मुराद वह है जो मंज़िले मक़सूद तक पहुंच गया हो और रंज व मशक़्क़त से आज़ाद हो चुका हो, मुरीद को रंज दिया जाता है और सुन्नते इलाही यही है कि वह सालिकीने हक़ को मजाहिदात की तकलीफ़ देता है फिर उन को ख़ुद तक पहुंचा देता है और उनसे बोझ उतार देता है नवाफ़िल की अदाएगी

और तर्के ख़्वाहिशात के सिलसिले में उनको आसानी फ़राहम कर देता है, फ़राएज़ व सुनन की अदाएगी के अलावा दीगर इबादात की अदाएगी में रियायत फ़रमा देता है फिर अल्लाह तआला उनको हुक्म देता है कि वह अपने दिलों कि हिफ़ाज़त करें, हुदूदे इलाही के मुहाफ़िज़त में मशगूल हों और मा सिवा अल्लाह से अपने दिलों को मुनक़तअ कर लें, उस वक़्त उन लोगों का ज़ाहिर तो मख़लूके ख़ुदा के साथ होता है लेकिन उन का बातिन अल्लाह के साथ मशगूल होता है, उनकी ज़बानें अल्लाह के हुक्म और उनके दिल इल्मे ख़ुदावन्दी के साथ होते हैं, उनकी ज़बानें बन्दगाने इलाही को नसीहत करने के लिए मख़सूस हो जाती हैं और उनके बातिन इलाही अमानतों की हिफ़ाज़त के लिए वक़्फ़ हो जाते हैं पस जब तक बन्दे अल्लाह की इबादत में मसरूफ़ व मशगूल हैं और उसके हुकूक़ और हुदूद की हिफ़ाज़त पर क़ाएम हैं उन सब बन्दों पर अल्लाह तआला का सलाम और उसकी बरकतें नाज़िल हों।

मुरीद व मुराद के सिलसिले में हज़रत जुनैद की तशरीह

हज़रत जुनैद से दरयाफ़्त किया गया कि मुरीद और मुराद के क्या मानी हैं आप ने फ़रमाया मुरीद वह है जिस की सरपरस्त तदबीरे इल्मी होती है और मुराद की सरपरस्त रियायते ख़ुदावन्दी होती है, मुरीद तो चलता है लेकिन मुराद उड़ता है, ज़ाहिर है कि चलने वाला और उड़ने वाला बराबर नहीं हो सकते।

हज़रत मूसा और आंहज़रत की मिसाल

यह फ़र्क़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और आंहज़रत सल्ल[illegible]ाहो अलैहि वसल्लम की मिसाल से बख़ूबी वाज़ेह हो सकता है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सिर्फ़ मुरीद थे कि उन का मुनतहाए सैर कोहे तूर था और सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सैर की हद अर्श व लौहे महफ़ूज़ तक है पस मुरीद तालिब है और मुराद मतलूब है, मुरीद की इबादत मुजाहिदा है और मुराद की इबादत बख़्शिश व मोहेबत है, मुरीद मौजूद है और मुराद फ़ानी (बिल हक़) है मुरीद जज़ा के लिए अमल करता है लेकिन मुराद अमल की तरफ़ तवज्जोह नहीं करता बल्कि तौफ़ीक़ व एहसाने ख़ुदावन्दी की तरफ़ उस की नज़र होती है, मुरीद सुलूक की मंज़िल तय करता है और मुराद [illegible] के तमाम रास्तों के मक़ामे इत्तेसाल पर खड़ा है, मुरीद तो नज़रे ख़ुदावन्दी के नूर से देखता और मुराद ख़ुद अल्लाह के ज़रिये देखता है, मुरीद अपनी ख़्वाहिशात की मुख़ालिफ़त करता है और मुराद अपने इरादे और ख़्वाहिशे नफ़्स ही से बेज़ार होता है (उसके अन्दर अपना इरादा और अपनी ख़्वाहिश जन्म नहीं लेती) मुरीद तक़र्रुब हासिल करता है और मुराद को तक़र्रुब दिया जाता है मुरीद को परहेज़ कराया जाता है और मुराद की रहनुमाई की जाती है उस को नाज़े नअम से नवाज़ा जाता है और खिलाया जाता है, मुरीद महफ़ूज़ होता है और मुराद के ज़रिये (दूसरों की) हिफ़ाज़त कराई जाती है, मुरीद हालते सऊद (ऊपर चढ़ना) में होता है और मुराद अपने उस रब तक पहुच चुका होता है जिस के पास हर ऊम्दा और नफ़ीस नेमत मौजूद है इसलिए मुराद हर आबिद, मुतक़र्रिब, परहेज़गार और नेकोकार से बढ़ जाता है।

मुतसव्विफ़ और सूफ़ी का फ़र्क़

मुतसव्विफ़ कौन है

मुतसव्विफ़ वह है जो सूफ़ी बनने के लिए रियाज़ करता है और इतनी कोशिश करता है कि वह आख़िरकार सूफ़ी बन जाता है, पस जब वह मशक़्क़तें उठा सकता है और उस क़ौम के तरीक़ा को अपना शिआर बना लेता है और उन लोगों की राह इख़्तियार कर लेता है तो वह मुतसव्विफ़ कहलाता है जिस तरह क़मीज़ पहनने वाले और ज़िरह बांधने वाले को कहा जाता है कि उसने क़मीज़ पहनी और ज़िरह बांधी और उस को साहिबे क़मीज़ और साहिबे ज़िरह कह कर पुकारते हैं उसी तरह जुहद इख़्तियार करने वाले को तज़हहुद कहते हैं और जब वह अपने जुहद में उस कमाल पर पहुंच जाता है कि तमाम अशिया को हेच समझने लगता है, तो उस वक़्त उस को ज़ाहिद कहा जाता है उस वक़्त उसके सामने ऐसी बहुत सी बातें आती हैं [illegible]नको वह न चाहता है और न उनसे नफ़रत करता है वह उन तमाम बा[illegible] अहकामे इलाही की [illegible]बंदी करता है और फ़ेअले इलाही का मुंतज़िर रहता है इसी मिसाल पर मु[illegible]सव्विफ़ और [illegible]फ़ी क[illegible] क़यास कर लेना चाहिए। सूफ़ी में जब यह वस्फ़ पैदा हो जाएगा तो उ[illegible]को सूफ़ी क[illegible] लफ़्ज़ सूफ़ी फ़ौइल के वज़न पर है और मुसाफ़ात से मुशतक़ है इस एतबार से [illegible] के मानी ह[illegible] वह एक बन्दा जिस को अल्लाह तआला ने सफ़ाए क़ल्ब अता फ़रमा[illegible], सूफ़ी वह ह[illegible] जो नफ़्स [illegible] आफ़तों और उस की बुराईयों से ख़ाली, ख़ुदा के [illegible] रस्ते प[illegible]लने [illegible]ला, हक़ाएक़ [illegible] गिरफ़्त में लेने वाला और अपने दिल को मख़लूक़ के दर्मियान ग़ैर मुत[illegible] महसूस करने वा[illegible] हो।

तसव्वुफ़ के मा[illegible]नी

तसव्वुफ़ के म[illegible]नी के [illegible]रे में कहा गया है कि अल्लाह के [illegible] सिद्क़ और उस के बन्दों के साथ अच्छे अख़्ल[illegible] पेश आना तसव्वुफ़ है।

मुतसव्विफ़ और सूफ़ी [illegible] फ़र्क़

सूफ़ी और मुतसव्वि[illegible] दर्मियान फ़र्क़ यह है कि मुतसव्विफ़ मुब्तदी है और सूफ़ी मुनतहा, मुतसव्विफ़ राहे सुलूक का राह रौ है और सूफ़ी वह है जो उस राह को तय कर चुका है और मक़सूदे हक़ीक़ी को पा चुका है, मुतसव्विफ़ बार का बरदाश्त करने वाला है और सूफ़ी तमाम बार बरदाश्त कर चुकता है, मुतसव्विफ़ पर हलकी और भारी चीज़ें इसलिए बार की जाती हैं ताकि उस का नफ़्स शिकस्ता हो जाए और उस की ख़्वाहिशात ज़ाएल और उसकी तमाम आरज़ूयें और तमन्नायें नाबूद हो जायें इस तरह वह साफ़ हो जाता है और सूफ़ी कहलाता है। जो बन्दा यह बोझ उठा लेता है पस वह अमानते ख़ुदावन्दी का उठाने वाला, मशीयते इलाही का कर्रा और ख़ुदावन्द तआला का तर्बियत याफ़्ता और उस के उलूम व अहकाम का सर चशमा बन जाता है, वह अमन व कामरानी का घर, औलिया अल्लाह का निगरां, उन का मामन और उनकी पनाह गाह बन जाता है, तमाम औलिया अल्लाह और औताद का मरजा, उनकी क़याम गाह और राहत व मसर्रत के हुसूल का मम्बा हो जाता है, हार और ताज का मोती और ख़ुदा नुमा बन जाता है। मुरीद मुतसव्विफ़ अपने नफ़्स अपनी ख़्वाहिश और अपने शैतान से बेज़ार हो कर तमाम मख़लूक़

और अपनी दुनिया व आख़िरत से बेनियाज़ बन जाता है, वह तमाम दुनिया और उस के आमाल व अफ़आल से कट कर ख़ुदा की इबादत में मशग़ूल हो जाता है अपने नफ़्स को मुजाहिदा और रियाज़त में लगा देता है, अपने शैतान के ख़िलाफ़ चलता है और अपनी दुनिया को तर्क कर देता है, तमाम ख़्वेश व अक़ारिब से किनारा कशी इख़्तियार कर लेता है, यह सब कुछ वह हुक्मे ख़ुदा वन्दी से करता है और आख़िरत की ग़र्ज़ से करता है। इसके बाद वह बहुक्मे इलाही अपने नफ़्स और ख़्वाहिश से जिहाद करता है और उस जिहाद में तरक़्क़ी करके अपने रब की मोहब्बत में तलबे आख़िरत और जो कुछ अल्लाह तआला ने आख़िरत में अपने दोस्तों के लिए नेमतें तैयार कर रखी हैं उन सब को छोड़ देता है इस मरहला पर पहुंच कर वह मौजूदात के इहाता से निकल जाता है और तमाम आलाईशों से पाक हो जाता है और तमाम जहानों का मालिक बन जाता है उस वक़्त उससे तमाम दुनियवी अलाएक़ व असबाब और अहल व अयाल के ताल्लूक़ात ख़त्म हो जाते हैं, सारी जिहात उस पर बन्द हो जाती हैं और उसकी रू बरू सारी जिहात की छत और तमाम दरवाज़ों का एक दरवाज़ा खुल जाता है जिस को रज़ाए इलाही कहते हैं यानी उस अल्लाह की रज़ा मन्दी जो तमाम मुल्कों का मालिक और हर माज़ी व मुस्तक़बिल का जानने वाला हैं जो तमाम राज़ों और पोशीदा बातों से वाक़िफ़ और जो कुछ हमारे आज़ा करते हैं और जो कुछ हमारे दिल और हमारी नीयतें सोचती हैं उन का अच्छी तरह जानने वाला है।

फिर उस दरवाज़े के सामने एक और दरवाज़ा खुलता है यह क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का दरवाज़ा है, उस दरवाज़े से सूफ़ी को मोहब्बत की महफ़िलों की जानिब उठा लिया जाता है, फिर वह वहदानियत के राज़ की दुनिया में पहुंच जाता है और उस पर अज़मत व जलाले इलाही मुंकशिफ़ होते हैं जब उसकी नज़र जमाल व अज़मत पर पड़ती है तो वह अपनी हस्ती बतौर नज़राना पेश करता है और अपने नफ़्से हसाब, ग़लबा व इख़्तियार, क़ल्ब, अमल, इरादा और ख़्वाहिश, दुनिया व आख़िरत सब को छोड़ जाता है और उस वक़्त वह ऐसे बलूरी ज़र्फ़ की तरह हो जाता है जो लबा लब पानी से भरा हो और उसमें जलवा बारियां होती हों और उस पर तक़दीर के सिवा कोई और हुक्म नहीं किया जाता वह ख़ुद अपनी ज़ात और अपनी लज़्ज़तों से गुज़र जाता है और उस वक़्त वह उस बच्चे की मानिन्द बन जाता है जिस को जब तक खिलाया नहीं जाता वह नहीं खाता और जब तक पहनाया नहीं जाता नहीं पहनता, इस मर्तबा पर पहुंच कर वह आज़ाद हो जाता है और अपनी ज़ात को अल्लाह के सुपुर्द कर देता है जैसा कि अल्लाह तआला ने अस्हाबे कहफ़ के बारे में इरशाद फ़रमाया कि हम उनको दायें बायें करवटें बदलवाते रहते हैं।

सालिक का मख़लूक़ में मौजूद होना

अगरचे सालिक हक़्क़े मख़लूक़ में मौजूद होता है लेकिन अफ़आल व आमाले बातिनी, ज़ाहिरी हालात ख़्यालात और अपनी नीयतों में उन सबसे जुदा होता है उस वक़्त वह सूफ़ी कहलाता है और उसके मानी यह होते हैं कि वह मख़लूक़ की कदूरत से साफ़ हो गया और अपने नफ़्स को और उस रब को पहचानने वाला बन जाता है जो मुर्दे को जिलाता है और जो अपने दोस्तों को नफ़ूस और तबाए की ख़्वाहिशात और उनकी गुमराहियों की ज़ुलमतों से निकाल कर मारिफ़े उलूम, असरार, अनवारे क़ुरबत और अपने नूर की वादी की तरफ़ ले जाता है और ख़ुद ज़िम्मादार है अल्लाह तआला ने उन लोगों के दिल ख़्यालात और नीयतों से वाक़िफ़ कर दिया है मेरे रब ने उनके

दिलों का भेदी और पोशीदा बातों का अमीन बना दिया है और ख़लवत व जलवत में अल्लाह तआला ने उनको (हर मुसीबत से) महफ़ूज़ कर दिया है, उस मंज़िल पर ऐसा कोई शैतान नहीं जो उनको बहका सके और न कोई उनके पीछे लगी हुई गुमराही उन को किसी लग़ज़िश की तरफ़ माएल कर सकती है अल्लाह तआला ने शैतान से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया मेरे बन्दों पर तेरा कोई ग़लबा नहीं होगा न उनको कोई गुमराह करने वाला है और न उनके साथ कोई ऐसी नफ़्सानी ख़्वाहिश होगी जो उनको अहले सुन्नत वल जमाअत के तरीक़े से निकाल दे।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है यह इस लिए होगा कि हम उस से बुराई और बेहयाई दूर कर दें वह तो हमारे मुख़लिस बन्दों में से है, पस मेरे रब ने उन (सूफ़िया) की हिफ़ाज़त की और उनके नुफ़ूस की रऊनतें और किब्र व नख़ूव्वत को अपने ग़लबा और ज़ोर से ख़त्म कर दिया और उनको मक़ामाते सुलूक में साबित क़दम रखा और उन को इफ़ाए अहद की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई उनको यह तौफ़ीक़ उस वक़्त अता हुई जब उन्होंने अल्लाह की राह में रास्ती से काम लिया और अपनी ज़ात के मख़लूक़ से अलाहदा होने पर और अपनी परेशानियों पर सब्र से काम लिया, अपने फ़राएज़ अदा किए, हुदूदे शरईय्या और अहकामे इलाही की हिफ़ाज़त की और सुलूक के मक़ामात पर सख़्ती से क़ाएम रहे, यहां तक कि अल्लाह तआला ने उनको साबित क़दम कर दिया और उनको आरास्ता किया और सफ़ाए क़ल्ब से नवाज़ा उन्होंने ख़ुद को बा अदब बनाया और पाक व साफ़ रखा, फ़राख़ी को दिल में जगह दी ख़ुद को पाकीज़ा बनाया और जसारत व दिलेरी से काम लिया और उन तमाम बातों के आदी और ख़ूगर हो गये पस उनको अल्लाह की कामिल विलायत और सरमस्ती हासिल हो गई

अल्लाह तआला मोमिनीन का दोस्त होता है इरशाद फ़रमाता है: अल्लाह सालेहीन का कारसाज़ है। उस मंज़िल से सूफ़ी का दरजात [illegible] ख़ुदा के नज़दीक कर दिये जाते हैं जिस मक़ाम पर यह पहुंचते हैं वह ख़ुदा के रू बरू है, उस मंज़िल पर पहुंच कर उनकी मुनाजात वह मुनाजात बन जाती है जो उनके बातिन व कुलूब में पैदा होती है, वह सब कुछ छोड़ कर ख़ुदा की तरफ़ मशगूल हो जाते हैं उनके नुफ़ूस को हर शय से रोक दिया गया है और अल्लाह तआला ने जो हर चीज़ का रब और मौला है उनको अपने क़ब्ज़े में कर लिया और उनको उनकी उकूल के साथ मुक़य्यद कर दिया और फिर वह उसी के क़ब्ज़ा और हिफ़ाज़त में हो जाते हैं। क़ुर्बे इलाही की वह ख़ूश्बू सूंघते हैं और तौहीद व रहमत की सैरगाह में ज़िन्दगी बसर करते हैं और उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी काम में मशगूल नहीं होते ताकि शैतान और नफ़्से अम्मारा और उसकी ख़्वाहिशात उनको ज़रर न पहुंचा सकें इस सूरत में उनके आमाल में न शयातीन का कोई दख़ल बाक़ी रहता है न नफ़्सानी उयूब का जैसे रिया, निफ़ाक़, ग़ज़ब, ख़ुद पसन्दी, तल्बे मुआविज़ा, शिर्क और किसी मख़लूक़ की ताक़त और कुव्वत पर एतमाद का दख़ल बाक़ी नहीं रहता, वह अपने आमाल को अल्लाह की मेहरबानी और तख़लीक़े ख़ुदावन्दी और उसी की दी हुई अमली तौफ़ीक़ समझते हैं।

मेरी तलब भी तो तेरे करम का सदक़ा है
क़दम यह उठते नहीं हैं उठाए जाते हैं

उन का यह अक़ीदा इस वजह से रासिख़ हो जाता है कि कहीं वह हिदायते इलाहिया की राह से न भटक जायें जब वह अहकाम की अदाएगी और आमाल की तकमील से फ़ारिग़ हो जाते

हैं तो उनको फिर उन ही मरातिब की तरफ लौटा दिया जाता है जिन को उन्होंने अपने लिए लाज़िम कर लिया था कभी ऐसा होता है कि उनको अमीन बना दिया जाता है और उनमें से हर एक से उसकी हैसियत और हालत के मुताबिक खिताब किया जाता है और इरशाद होता है तुम आज से हमारे अमीन हो चुके यह मरतबा जब उन्हें हासिल हो जाता है तो उसके बाद यह किसी हुक्म के मुहताज नहीं रहते बल्कि उनको मुखतार बना दिया जाता है उनका काम उन ही के सुपुर्द हो जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसे सही इस की ताईद करती है कि अल्लाह तआला ने बज़रिये जिब्रील अलैहिस्सलाम अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास फ़रमान भेजा था और फ़रमाया था कि बन्दा को मुझ से क़रीब करने वाली चीज अदाए फ़र्ज़ से ज्यादा और कोई नहीं है, बन्दा नवाफ़िल के ज़रिये मेरा कुर्ब हासिल करता है यहां तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं और जब मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं तो मैं उसके कान, आंखें, ज़बान, हाथ, पांव और दिल बन जाता हूं वह मेरे ही कानों के ज़रिये सुनता है और मेरी ही आंखों के ज़रिये देखता है और मेरी ज़बान से बोलता है, मेरे ही कल[illegible] से समझता है और मेरे ही हाथों से पकड़ता है। इस हदीसे कुदसी को [illegible] किताब में हमने क[illegible] जगह बयान किया है क्योंकि यही हदीस सूफ़िया ए कराम के इस मका[illegible] की हामिल है।

अलगर्ज़ उस बन्दा का दिल अल्लाह की मुहब्बत, [illegible]र और इल्म [illegible]रेफत) से पुर हो जाता है फिर इसके अलावा उसके अन्दर किसी और चीज [illegible] गुंजाईश न[illegible]ं रह[illegible]। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि जो शख्स [illegible]लाह से क[illegible]ी मुहब्बत करने वाले को देखना चाहता है वह अबू हुज़ैफ़ा के आजाद कर्दा गुलाम ([illegible]जरत) सालिम को देख ले जिस का ज़ाहिर फे[illegible]ले इलाही [illegible] मुतहर्रिक [illegible] बा[illegible]न आल्लाह [illegible] मुहब्बत से पुर है।

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने बारगाह इलाह[illegible] अर्ज़ [illegible]या था कि ऐ परवरदिगार मैं तुझे कहां ढूंढूं अल्लाह तआला ने [illegible]रशाद फ़र[illegible] ऐ मूसा [illegible]सी [illegible] में मेरी रसाई हो सकती है वह कौन सी जगह है जो मुझे बरदाश्त कर सकती है (मेरा [illegible]ा कर सकती है) अगर तुम जानना ही चाहते हो [illegible] कहां रहता हूं तो मेरा मकाम है तारिक, वद्दाअ और अफीफ का दिल. तारिक वह है जो कोशिश और तकलीफ़ के साथ दुनिया को छोड़ता है लेकिन फिर भी उस में शाएबा बाकी रहता है, फि[illegible] अल्लाह उस पर अहसान फरमाता है तो वह दुनिया की तरफ से मुर्दा हो जाता है और सारी दुनिया को तर्क कर देता है (वद्दाअ) हउस के बाद वह अफीफ बन जाता है यानी अपने मौला के सिवा किसी और की तरफ तव्वजोह ही नहीं करता।

अगर कोई यह सवाल करे कि इन्सान जब तर्के दुनिया कर लेता है तो फिर उस पर मज़ीद अहसाने इलाही क्या होता है? तो इसके जवाब की तफ़सील यह है कि जब अल्लह तआला बन्दा को एक मरतबा पर क़ायम करता है तो शर्त यह होती है कि बन्दा उस पर काइम रहे और अपने क़दम जमाए रखे। पस बंदा अगर इस शर्त को पूरा कर लेता है तो फिर उस मरतबा से आगे अल्लाह उसको आलमे जबरूत में दाख़िल फ़रमा देता है, आलमे जबरूत का हाकिम उसके नफ़्स की निगहदाश्त करता और ख्वाहिशात से उसकी बाज़ दाश्त करता है जिस की वजह से उसके नफ़्स में मसकनत और ख़ूशूअ पैदा हो जाता है उसके बाद उसको बादशाहे आलमे जबरूत के हुजूर में पेश किया जाता है और शाहे जबरूत उसको मुहज़्ज़ब (आरास्ता) कर देता है उसके बाद आलमे जलाल में ले जाकर उसको अदब सिखाता है फ़िर आलमे जमाल में ले

जाकर उसके मैल कुचैल (कसाफ़ते नफ़्स) को साफ़ करता है फिर मुल्के अज़मत में ले जाकर उसको पाक करता है और मुल्के तजल्ला में गुस्ल कर के उसको निखार देता है फिर मुल्के बहजत में पहुंचा कर उसको वुसअत अता फ़रमाता है उसके बाद मुल्के हैबत में उसकी तरबीयत फ़रमाता है वहां से मुल्के रहमत में पहुंचा कर ताज़गी, कुव्वत और शुजाअत अता करता है फिर मुल्के फ़रदियत में पहुंचा कर उसको सब से यगाना व यक्ता बना देता है इस मरतबा पर लुत्फ़े इलाही से उस को गिज़ा पहुंचती है और शफ़कते इलाहिया उसको जमीयत अता करती है और उसका इहाता कर लेती है, मुहब्बत उसको कुव्वत पहुंचाती है, शौक़ कुर्ब अता करता है और मशीयत (इलाही) कुरबे ख़ुदावन्दी तक पहुंचा देती है और अल्लाह तआला उसका रूख़ पलट कर उसको कुर्ब अता फ़रमाता है इस मंज़िल पर पहुंच कर वह ठहर जाता है, फ़िर उसको अदब सिखाया जाता है उससे राज़ कहे जाते हैं अपने करम से अल्लाह तआला उसको बस्त इनायत करता है फिर उस पर क़ब्ज़ तारी फ़रमा देता है, उस मंज़िल पर पहुंच कर वह जहां जाता है और जिस ख़लवत में भी होता है, अपने रब से करीब और उसी के क़ब्ज़ा में होता है। उस वक़्त वह अल्लाह के असरार और उन अहकाम व तसर्रुफ़ात का अमीन बन जाता है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मख़लूक़ को पहुंचते हैं इस मरतबा पर पहुंच कर उसकी सिफात ख़त्म हो जाती हैं, कलाम और ताबीर क़तअ़ हो जाती है, यही मक़ाम क़ल्ब व [illegible] की रसाई क मुन्तहा और औलिया अल्लाह की ग़ायत (मंज़िले आख़िरी) है यहां तक औलिया अल्लाह के अहवाल की पहुंच है इससे आगे के मक़ामात अंबिया और रसूलों के लिए मख़सूस हैं इस लिए कि वली की इन्तेहा नबी की इब्तिदा होती है।

नबूव्वत और विलायत का फ़र्क़

नबूव्वत और विलादत में फ़र्क़ यह है कि नबूव्वत अल्लाह की तरफ़ से एक कलाम है और जिब्रील अलैहिस्सलाम की मारफ़त अल्लाह की तरफ़ से एक वही है, हज़रत जिब्रील वही अदा करते हैं और अल्लाह की तरफ़ से उस पर क़बूलीयत की मोहर लग जाती है उसकी तसदीक़ लाज़िम है और उसका मुनकिर क़ाफ़िर है इस लिए कि नबूव्वत का मुनकिर हक़ीक़त में कलामे इलाही का मुनकिर है।

विलायत यह है कि अल्लाह अपने दोस्त को अपनी बात बतौरे इलहाम पहुंचा देता है, यह इलहाम अल्लाह ही की तरफ़ से होता है और अल्लाह की तरफ़ से सच्ची ज़बान पर जारी होता है इस इलहाम में एक ठहराओ और सुकून होता है मजज़ूब का दिल उसको क़बूल कर लेता है और उससे सुकून हासिल करता है। मुख़्तसरन यह कि कलाम (वही) ख़ुदावन्दी अंबिया के लिए मख़सूस है और इलहाम औलिया अल्लाह के लिए है अव्वल का रद्द करने और न मानने वाला काफ़िर है इस लिए कि वह हक़ीक़त में कलामे इलाही को रद्द करने वाला है और दूसरे का मुनकिर काफ़िर नहीं बल्कि नाकाम है उसका इनकार वबाल का बाइस बन जाता है। इलहमाम हक़ीक़त में उस चीज़ को कहते हैं जो मशीयते ख़ुदावन्दी के इल्मे इलाही से किसी के दिल में एक राज़ की तरह पैदा हो अल्लाह जिस बन्दा से मोहब्बत करता है उसकी मोहब्बत उस चीज़ को वाक़ैइयत के साथ बंदा के दिल तक पहुंचा देती है और मुहिब का दिल सुकून के साथ उसको क़बूल कर लेता है।

बाब 25

राहे सुलूक में मुबतदी के वाजिबात

मुबतदी के वाजिबात

सही एतक़ाद ही इस की बुनियाद है और सल्फ़ सालेहीन क़ुदमाए अहले सुन्नत के अक़ीदे पर होना ज़रूरी है। अंबिया मुर्सलीन, सहाबा कराम, ताबेईन और सिद्दीक़ीन के तरीक़े पर क़ायम रहना ज़रूरी है (इस की तफ़सील) इस किताब में पहले पेश कि जा चुकी है)

कुरआन मजीद और हदीसे पाक की पाबंदी

अवामिर व मनाही, उसूल और फ़रोअ़ दोनों में कुरआन मजीद और हदीसे पाक की पाबंदी ज़रूरी है अल्लाह तक उड़ कर पहुंचने के लिए इन ही को दो बाज़ू बना लेना चाहिए इसके बाद सिदक़ और सई की ज़रूरत है क्योंकि राहे सुलूक में तवक़्क़ुफ़ और काहिली हर आदमी की सरिश्त में दाख़िल है हवा व हवस गुमराह करने वाली चीज़ें हैं, नफ़्स बड़ा ऐबी है, लज़्ज़तें और ख़्वाहिशें हर वक़्त है तलाश में रहती हैं उन से ज़ुलमत व दामानदगी और तकान हासिल होती है अगर उस दामानदगी और ज़ुलमत में मुरीद सई व कोशिश से काम ले तो उसको हिदायत, इरशाद, रहबरी करने वाला, नामूस बनाने वाला, मोनिस और एक राहत आफ़रीं राहतनुमा मिल जाएगा। अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो लोग हमारी राह में कोशिश करते हैं हम अपने रास्ते उनको खुद बता देते हैं। एक बुज़ुर्ग दानिशमन्द का क़ौल है कि जो शख़्स तलब और सई करता है वह अपने मक़सद को पा लेता है पस एतक़ाद (सही) की बदौलत इल्मे हक़ीक़त हासिल होता है और सई और कोशिश से राहे हक़ीक़त का तै करना मयस्सर आता है।

मुरीद को सच्चे दिल से अहद करना चाहिए कि जब तक बारगाहे ख़ुदावन्दी तक वह नहीं पहुंच जाएगा एक क़दम भी अल्लाह तआला की रज़ा के बग़ैर न उठाएगा और न कहीं रखेगा। दिल सुलूक में किसी मलामत करने वाले की मलामत से अपने मक़सद से वापस नहीं होना चाहिए, इस लिए की जो अहले सिदक़ हैं उनका क़दम कभी पीछे नहीं हटता है उसको करामत की वजह से रास्ता में कहीं तवक़्क़ुफ़ नहीं करना चाहिए। करामत को अल्लाह के रास्ते में अपने जिहाद व सई का सिला नहीं समझना चाहिए क्योंकि करामत तो अल्लाह तक रसाई में खुद एक हिजाब है जो उस तक पहुंचने से रोकती है अलबत्ता वसूले हक़ के बाद ज़रर नहीं पहुंचाती इस लिए कि करामत ख़ुदावन्द तआला की अता करदा कुदरत का नमूना और बारगाहे इलाही तक रसाई का समरा होती है उस वक़्त साहबे करामत अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह की कुदरत और ख़िरक़ए आदत होता है, पहले वह नादान था, ना वाक़िफ़ था, गूंगा था अब उसका कलाम

हिकमते कामिला बन जाता है उसकी हरकात व सकनात और ज़िन्दगी की रफ़्तार उलुल अबसार के लिए दर्से इबरत बन जाती है और उसके ऊपर और उसके दिल में ऐसे अफ़आले इलाही का ज़हूर होता है जो दानिश व फ़हम को हैरानी में डाल देते हैं।

मोजज़ा और करामत

विलायत की शर्त है कि करामत को पोशीदा रखे और नबूव्वत और रिसालत में शर्त है कि मोजज़ात का इज़हार किया जाए ताकि नबूव्वत और विलायत का फ़र्क़ ज़ाहिर हो जाए, इसलिए मुबतदी (मुरीद) को लाज़िम है कि इस की पाबंदी करे।

मुरीद का मेल मिलाप किन लोगों से मना है

मुरीद के लिए जाएज़ है कि वह मक़ामाते तक़सीर में न घिरे यानी तक़सीर व कोताही से बचे, उन लोगों के साथ मेल मिलाप न रखे जो इस्लाम व ईमान के तो दाई हैं लेकिन अमल में कोताही करते हैं, नाकारा हैं महज़ बातें बनाते हैं आमाल व अहकाम के मुख़ालिफ़ हैं ऐसे ही लोगों के हक़ में अल्लाह तआला फ़रमाया है:

ऐ लोगो! अगर तुम ईमान वाले हो तो जो बात तुम खुद नहीं करते उसके लिए दूसरों को क्यों कहते हो क्योंकि यह खुदा के नज़दीक बड़ा गुनाह है कि जो बात तुम खुद न करो दूसरों को उसकी दावत दो।

एक और आयत में इरशाद फ़रमाया:

क्या तुम दूसरों को नेकी का मशवरा देते हो और अपनी जानों को फ़रामोश कर देते हो हालांकि तुम अल्लाह की किताब पढ़ते हो क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते (कि दूसरों नेकी का हुक्म देना खुद न करना बुरी बात है

मुरीद के लिए यह भी ज़रूरी है कि जो कुछ मयस्सर आए राहे खुदा में ख़र्च कर दे और उसके पास जो कुछ है उसके देने में इस लिए बुख़्ल न करे कि अगर मैं ख़र्च करूंगा तो इफ़्तार व सहर के वक़्त क्या खाऊंगा, अपने दिल में उसको यक़ीन रखना चाहिए कि ज़मान साबिक़ में कोई वली ऐसा पैदा नहीं हुआ जो मयस्सर होने वाली चीज़ के ख़र्च करने में बुख़्ल करता हो।

इज्ज़ व इन्केसार

मुरीद के लिए ज़रूरी है कि हमेशा आजिज़ी को अपनाये रहे, भूक और गुमनामी को पसन्द करे अगर लोग उसकी मज़म्मत करें तो उस पर ख़ूश हो। अगर उसके मुआसिरीन और हम सर लोगों को इज़्ज़त, बख़्शिश और मशाएख़ व उलमा की मजालिस में कुर्ब के लिहाज़ से उस पर तरजीह दी जाए तो रंज न करे बल्कि उस पर राज़ी रहे, ख़ुद भूका रहे और दूसरों को पेट भरता रहे, सब की इज़्ज़त होने दे और ख़ुद ज़िल्लत पर राज़ी रहे ख़ुद भी सब की इज़्ज़त करे और अपने लिए ज़िल्लत पसन्द करे अगर कोई मुरीद इन उमूर पर राज़ी न होगा और अपने नफ़्स को इन हालात में मुतमईन नहीं रखेगा तो उस पर असरारे मारफ़त का खुलना मुमकिन नहीं है और वह इस राह में कुछ भी न कर सकेगा उसकी मुकम्मल फ़लाह और कामयाबी इस में मुज़मिर है जिस का हम ने अभी ज़िक्र किया।

मुरीद और रज़ाए इलाही

मुरीद के लिए ज़रूरी है कि अपने गुज़िश्ता गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करे और आइन्दा गुनाहों से हिफ़ाज़ते इलाही का ख़्वास्तगार हो, अल्लाह तआला की पसन्द के मवाफ़िक़ ताअते इलाही और अल्लाह तआला को पहचानने वाली इबादत को तौफ़ीक़ के सिवा किसी और मक़सद कि पूरा होने का मुन्तज़िर न रहे वह अपनी तमाम हरकात व सकनात में राज़ी ब रज़ा रहे, मशाएख़ व औलिया और अबदाल की नजरों में महबूब व मक़बूल हो जाने को पसन्द करे इस लिए की ज़ी अक़्ल व ज़ी फ़हम दोस्तों के गरोह में दाख़िल होने का यही ज़रीया है, अहले फ़र्द वही है जो अल्लाह की जानिब से फ़हम रखते हैं। यह जो कुछ ने हम ने बयान किया सब मुरीद के अहवाल से मुताल्लिक़ था जब तक मुरीद का दिल तमाम ख़्वाहिशात और अग़राज़ से ख़ाली नहीं होगा और सिर्फ़ मजकूरा बाला मक़सद के हुसूल के अलावा दूसरे मतालिब व मक़ासिद के हुसूल की आरज़ू से पाक व साफ़ नहीं हो जाएगा वह मुरीद कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं है।

शैख़ तरीक़त के साथ मुरीद के आदाब

शैख़ की मुख़ालफ़त न करना

मुरीद पर वाजिब है कि ज़ाहिरी अमल में पीर (शैख़) [illegible] ख़ालिफ़त न करे और न दिल पर उस पर ऐतराज़ करे, ज़ाहिर में शैख़ पर नाफ़रमानी करने वाला गुस्ताख़ और बे अदब है और बातिन में उस पर मुअतरि[illegible] होने वाला [illegible] अपनी तबाही और हलाकत का ख़्वास्तगार है। मुरीद को चाहिए की [illegible]खे तरीक़त की तरफ़दारी में अपने नफ़्स को [illegible]सरूफ़ रखे और ज़ाहिर व बातिन में शैख़ की मुख़ालिफ़त से अपने नफ़्स को बाज़ [illegible] उसकी उस ख़्वाहिश पर उसको मलामत करे और इस आयत की तिलावत कसरत से करे।

ऐ अल्लाह हम को [illegible] दे हम से पहले जो मोमिन भाई दुनिया से रूख़सत हो चुके हैं उन को भी बख़्श दे, हमारे दिलों को मोमिनों की तरफ़ से न हटा ऐ परवरदिगार बेशक तू ही मेहरबान और रहमत करने वाला है।

अगर पीरे तरीक़त से ख़िलाफ़ शरअ़ कोई अमल सरज़द हो तो इशारा और किनाया में उसकी वजह दरयाफ़्त करे सराहत के साथ वजह न पूछे इस सूरत में शैख़ को अपने मुरीद से नफ़रत हो जाएगी। अगर शैख़ में कोई ऐब नज़र आए तो उसकी पर्दा पोशी करे और उसकी कोई शरई तावील निकाले और इस बारे में अपने नफ़्स को ग़लत फ़हम समझे यानी यह ख़्याल करे कि मैंने शैख़ के बारे में जो कुछ समझा है ग़लत समझा है। अगर इस फ़ेअ़ल का कोई शरई उज़्र बन ही न सकता हो तो शैख़ के लिए इस्तिग़फ़ार करे और अल्लाह से दुआ करे कि अल्लाह उस को तौफ़ीक़, इल्म, बेदारी और तक़वा अता फ़रमाये। मुरीद को चाहिए की पीर के मासूम होने का अक़ीदा न रखे, उसके ऐब की किसी दूसरे को ख़बर न करे, जब मुरीद दूसरी मरतबा शैख़ की ख़िदमत में जाए तो यह ख़्याल लेकर जाए कि शैख़ का पिछला ऐब ज़ाएल हो चुका होगा और शैख़ पिछले दर्जा से तरक़्क़ी करके दूसरे बलन्द मरतबा तक पहुंच चुका होगा और शैख़ से जो गुनाह सरज़द हो चुका है वह किसी सहव की बिना पर सरज़द हुआ है और

वह शैख़ के दोनों मरतबों के दर्मियान हद्दे फ़ासिल बन गया था जहां एक हालत की इन्तेहा और दूसरी हालत की इब्तिदा होती है यानी विलायत के एक दर्जा से दूसरे दर्जा की तरफ़ इन्तक़ाल होता है और एक अदना लिबास को उतार कर दूसरे आला व अफ़ज़ल लिबास और ख़िलअत उसको पहनाया जाता है इस लिए की औलिया अल्लाह का क़ुर्ब रोज़ाना बढ़ता है।

शैख़े तरीक़त अगर नाराज़ हो जाए या चीं ब जबीं हो या किसी क़िस्म की बे इल्तेफ़ाती उस से ज़ाहिर हो तो मुरीद उससे किनारा कश न हो बल्कि अपनी हालत का जाएज़ा ले और देखे कि कहीं शैख़ के हक़ में उससे कोई गुस्ताख़ी और बे अदबी तो सरज़द नहीं हो गई है या हक़ की अदाएगी में उससे कुछ कोताही तो नहीं हुई है अगर हुक़ूकुल्लाह में कुछ क़ुसूर हुआ है तो पहले अल्लाह तआला से तौबा इस्तिग़फ़ार करे और दोबारा उस का इआदा न करने का अहद करे फिर अपने. शैख़ से माज़रत चाहे उसके सामने इज्ज़ व इन्केसार का इज़हार करे और आइन्दा शैख़ के हुक्म के ख़िलाफ़ न करने का अहद करे और शैख़ की निगाहे इल्तेफ़ात के हुसूल की कोशिश करे। शैख़ के हुक्म की हमेशा [illegible]ताअत करे और शैख़ [illegible] ख़ुदा तक पहुंचने का वसीला और ज़रीया, रास्ता और सबब समझे, [illegible]को इस मिसाल से [illegible]मझना चाहिए कि अगर कोई बादशाह के हुजूर पहुंचना चाहे और बादशा[illegible] उसको पहचानता न [illegible] तो ला महाला उस को किसी दरबारी या शाही ख़िदमतगार या बादशाह के मुक़र्रब का [illegible]ीला [illegible]ढना होगा ताकि शाही आदाब और हुजूरी के तौर तरीक़ों से वाक़िफ़ हो [illegible]शी और ख़िताब के आदाब मालूम हो जाएं और उसको आगाही हो जाए कि कौन कौन से तोहफ़[illegible] और मेवे ऐसे हैं जो बादशाह के हुज़ूर में पेश करने के ला[illegible] हैं और [illegible] कौ[illegible] सी चीजें हैं जिन की अफ़ज़ाइश बादशाह को पसन्द है इस [illegible]ए सबसे पहले उसको [illegible] तरी[illegible] को इख़्ते[illegible]र करना ज़रूरी है कि कहीं ऐसा न हो कि वह उ[illegible] वसीला और आगाही के बग़ैर [illegible] जाए और उसको ज़िल्लत ख़्वारी का मुंह देखना प[illegible] और बादशाह से जो ग़रज़ व म[illegible] वाब[illegible] था वह हासिल न हो सके। हर नये दाख़िल होने वाले [illegible]र एक हैबत और दहशत तारी होती है उसको एक ऐसे शख़्स की ज़रूरत होती है जो आ[illegible] की याद दहानी कराता रहे और अज़ राहे मेहरबानी उसको उसके मरतबे के लायक़ जगह प[illegible] खड़ा कर दे या बिठा दे या इशारा से उसके मुनासिब हाल मक़ाम को बता दे ताकि वह बद तहज़ीबी और बेवक़ूफ़ी का निशाना न बने।

हज़रत आदम की तरबीयत

मुरीद को इस बात का यक़ीन रखना चाहिए कि आदते इलाही इसी तरह जारी है कि ज़मीन पर एक पीर हो एक मुरीद, एक मुक़तदिर हो. दूसरा मुसाहिब, एक पेशवा हो दूसरा पैरो। यह आदते इलाही हजरत आदम अलैहिस्सलाम के वक़्त से जारी है और क़यामत जारी रहेगी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा करने के बाद तमाम अस्मा अल्लाह ने उनको सिखा दिये और उन ही से कायनात की इब्तिदा-की गोया उनको इस तरह बता दिया जैसा उस्ताद शागिर्द को बता देता है (सिखाता पढ़ाता है) या पीर मुरीद को बताता है फिर तालिम व तहज़ीब से आरास्ता करने के बाद अल्लाह तआला ने उनको मुअल्लिम, उस्ताद और शैखे हुक्म बना दिया तरह तरह के लिबास और ज़ेवर पहनाए, ज़बान को कुव्वते गोयाई अता फरमाई, जन्नत के अन्दर कुर्सी नशीन बनाया और मलाइका को उनके गिर्दा गिर्द कतार अन्दर कतार खड़ा किया और फ़रिश्तों से

सवाल किया तमाम फ़रिश्तों ने ला जवाब हो कर कहा

इलाही! तू पाक है, तूने जो कुछ हम को नहीं सिखाया उसका हम को इल्म नहीं बेशक तू जानने वाला और हिकमत वाला है।

तब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से इरशाद हुआ कि आप उन तमाम चीज़ों के नाम बता दें, हज़रत आदम ने तमाम अशिया के नाम बता दिए इस से फ़रिश्तों पर आदम की फ़ज़ीलत नुमायां हो गई। आदम सब के शैख़ और फ़रिश्ते उनके शागिर्द हो गए, अल्लाह की नज़र में फ़रिश्तों कि नज़र में भी वह फ़रिश्तों से अफ़ज़ल और अशरफ़ क़रार पाए चुनांचे आदम पेशवा हुए और फ़रिश्ते उनके ताबेअ और पैरो।

हज़रत आदम का जन्नत से ख़ुरूज

इस के बाद हज़रत आदम को शजरे ममनूआ को खाने, जन्नत से निकलने और एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ मुन्तक़िल होने का हादसा पेश आया और आदम अलैहिस्सलाम वहां पहुंचे जिसका न आप को इल्म था न आप वहां कभी रहे थे न आप के दिल में उस जगह का कभी ख़्याल आया था। जब आप ज़मीन पर पहुंचे और इधर उधर घुमे तो आप को सख़्त इज़तराब लाहिक़ हुआ और वहां आप को ऐसी चीज़ों से साबिक़ा पड़ा जिनका इससे क़ब्ल आप ने कभी महसूस नहीं किया था यानी भूक, प्यांस, बातिनी सोज़िश और इसी क़ब्ज़ की कैफ़ियत कि इस से पहले आप को इन चीज़ों से वास्ता नहीं पड़ा था उस वक़्त ला महाला आप को किसी मुअल्लिम, मुर्शीद, उस्ताद, रहनुमा, और अदब आमोज़ की ज़रूरत महसूस हुई। इस ज़रूरत को रफ़अ करने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को आप के पास भेजा हज़रत जिब्रील ने आप के पास आकर उस वहशत को दूर किया और उस मंज़िल और फ़रवागाह के तमाम ऊक़दे आप पर खोल दिए और गेहूं बोने का हुक्म दिया आलात फ़राहम कर दिए, गेहूं बोना, खेती काटना, साफ़ करना और पीसना सिखाया, इन तमाम उमूर की अंजाम देही के बाद रोटी पकाना सिखाई। आदम अलैहिस्सलाम ने रोटी पका ली फिर हज़रत जिब्रील ने रोटी खाने का हुक्म दिया, ग़िज़ा ने हज़्म हो कर बाहर निकलना चाहा, इस की तालीम हज़रत जिब्रील ने दी और उनको इस्तिनजा करना सिखाया, इन कामों में मशगूल रह कर हज़रत आदम की जिस्म की चमक दमक और सफ़ेदी सियाही से बदल गई थी। हज़रत जिब्रील ने उनको अय्यामे बैज़ के रोज़े रखने की तालीम दी, उन रोज़ों को रखने से आप के जिस्म का गोरापन फिर लौट आया, इस के अलावा दुनिया के दूसरे उलूम और आदाबे ज़िन्दगी आप को सिखाए, इस तरह हज़रत आदम जिब्रील के शागिर्द बन गए और हज़रत जिब्रील आप के उस्ताद और शैख़ क़रार पाए।

अगरचे हबूत से क़ब्ल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत जिब्रील और तमाम मलाइका के मुक़तदा और शैख़ थे और सबसे ज़्यादा आलिम थे, इस तब्दीली का बाइस, तग़ैयुरे हाल और एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम की तरफ़ इन्तक़ाल था। इसी तरह हज़रत शीस इब्ने आदम ने अपने बाप आदम से आदाबे ज़िन्दगी और तमाम उलूम सीखे और उनसे उनकी औलाद ने। इसी तरह हज़रत नूह ने जो कुछ बाप से सीखा उसकी तालीम अपनी औलाद को दी और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद को यह तालीम दी। अल्लाह तआला का इरशाद है: इब्राहीम ने अपनी औलाद को हुक्म दिया और तालीम दी और याक़ूब ने अपनी औलाद यानी बनी इस्राइल

को तालीम दी। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने हवारियों को और आख़िर में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हमारे पैग़म्बर मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वुज़ू और नमाज़ की तालीम दी और मिसवाक करने का भी हुक्म दिया। चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि मुझे जिब्रील ने मिसवाक करने की ताकीद फ़रमाई। एक और हदीस में इस तरह आया है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे मिसवाक करने की ऐसी सख़्त नसीहत की कि क़रीब था कि वह मुझे परिन्दा बना दें और उन्होंने मुझे काबा के पास दो मरतबा नमाज़ पढ़ाई. ज़ुहर की नमाज़ सूरज ढलते पढ़ाई थी। इस हदीस को इस से क़ब्ल बयान कर चुके हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सहाबा कराम ने उनसे ताबईन हज़रात ने, उनसे तबअ़ ताबेईन ने, अपने अपने दौर और अपने अपने ज़माना में तालीम हासिल की हर एक नबी का कोई न कोई सहाबी ज़रूर ऐसा हुआ है जिसने उसकी रहनुमाई (तालीम) कि मुताबिक़ ज़िन्दगी का रास्ता तै किया और वह पैग़म्बर का जानशींन और क़ायम मक़ाम बना जैसे हज़रत मूसा के जानशीन उनके ख़ादिमे ख़ास उनके भांजे यूशअ़ बिन नून गुज़रे और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी जानशीन हुए हैं और हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर ख़लीफ़ा और जानशीन हुए और उन ही की तरह हज़रत उसमान और हज़रत अली और दूसरे सहाबा कराम जानशीन और शागिर्द हुए।

औलिया अल्लाह और अबदाल

तमाम औलिया अल्लाह और अबदाल और सिद्दीक़ीन का सिलसिला भी इसी तरह चलता आया है कोई उस्ताद हुआ कोई शागिर्द हज़रत हसन बसरी के शागिर्द ऊक़बा गुलाम थे, हज़रत सिर्री सिक़्ती के शागिर्द उनके भांजे और हज़रत अबुल क़ासिम जुनैद थे। यह मशाएख़ ही अल्लाह तक पहुंचने का ज़रिया और रास्ता हैं, यही ख़ुदा का रास्ता दिखाने वाले हैं, इसी दरवाज़े से अल्लाह तआला की बारगाह में रास्ता मिलता है (शाज़ इससे मुस्तसना हैं) वरना हर मुरीद के लिए शैख़ की ज़रूरत है। यह दूसरी बात है कि अल्लाह तआला बन्दे का ख़ुद इंतेख़ाब फ़रमाए और उसकी तरबीयत फ़रमाये और शैतान व हवा व हवस से ख़ुद भी उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाये जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत ओवैस क़रनी के साथ उस ने किया। हम इसके मुनकिर नहीं (लेकिन यह सूरतें शाज़ हैं) लेकिन अकसर और आम तरीक़ा वही है जिस को हम ने बयान किया, यही तरीक़ा ज़्यादा सलामती और बेहतरी का है।

शैख़ से मुनक़तअ़ होना

शैख़ से मुनक़तअ हो जाना उस वक़्त तक किसी मुरीद के लिए दुरुस्त और जाइज़ नहीं जब तक वह ख़ुदा रसीदा होकर मुसतग़नी न हो जाए और ख़ुदा तक न पहुंच जाये और अल्लाह तआला ख़ुद उसकी तर्बीयत व तहज़ीब का मुतवल्ली और ज़िम्मादार हो जाए और उन चीज़ों से मुरीद को आगाह फ़रमा दे जो शैख़ को भी मालूम नहीं थीं और ख़ुद अपनी मशीयत के मुताबिक़ उस से अमल कराए, रोके या हुक्म दे, तंगी और फ़राख़ी अता फ़रमाए, ग़नी बनाए या फ़क़ीर कर दे इस सूरत में अपने रब्बानी ताल्लुक़ की वजह से अल्लाह के सिवा बाक़ी दूसरों

से मुस्तग़नी हो जाता है दूसरों की तरफ़ मुतवज्जेह होने की उसको फ़ुरसत ही नहीं मिलती, अल्लाह की ताज़ीम व तकरीम और ख़िदमत की पाबन्दी के सिवा और किसी बात की गुंजाईश ही बाक़ी नहीं रहती। इस मर्तबा और हाल में और वह शैख़ से क़तअ़ मुनक़तअ़ हो जाता है इस हाल में शैख़ और मुरीद के रास्ते अलग अलग हो जाते हैं शैख़ मुरीद को एक रास्ते पर ले जाएगा और मुरीद दूसरे रास्ता पर चलेगा इसलिए सोहबत व इज्तिमा का हुसूल मुमकिन नहीं रहेगा। अल्लाह की रहमतें नाज़िल हों उस शैख़ पर और उस मुरीद पर कि जब अल्लाह तआ़ला उसको इस हालते इस्तग़ना पर पहुंचा दे तो वह अपने रब के लिए अपने शैख़ से भी मुस्तग़नी हो जाए।

मज़ीद आदाब

मुरीद के लिए जो आदाब ज़रूरी हैं मिनजुम्ला उनके एक यह भी हैं कि बे ज़रूरत शैख़ के सामने बात न करे और न शैख़ के सामने अपनी कोई ख़ूबी बयान करे, नमाज़ के सिवा किसी और वक़्त शैख़ के आ़गे अपना मुसल्ला न बिछाए जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए तो अपना मुसल्ला लपेट दे, अपने शैख़ नीज़ उन लोगों की ख़िदमत के लिए भी मुसाइद रहे जो शैख़ के साथ उसके सज्जादा पर मुतमककिन हैं शैख़ के सज्जादा के बराबर और शैख़ के असहाब के सज्जादा के बराबर या उससे ऊपर अपना सज्जादा न बिछाए यह बात शैख़ की नज़र में सूए अदब है अलबत्ता शैख़ अगर हुक्म दे तो तामीले हुक्म में ऐसा कर सकता है।

शैख़ के सामने अगर कोई मसला आ जाए और मुरीद को उस मसला का सही और तफ़सीली जवाब मालूम हो जब भी ख़ामोश रहे और शैख़ की ज़बान से उस मसले का जवाब सुने और उसको ग़नीमत समझे, उसके मसला को मान ले और उस पर अमल करे अगर शैख़ के जवाब में में कोई कोताही नज़र आये तो उसकी अलल एलान तरदीद न करे बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा करे कि अल्लाह ने उसको फ़ज़्ल और करम से नवाज़ा है लेकिन इन बातों को पोशीदा रखे और शैख़ की ग़लती को ज़ाहिर न करे।

समाअ़ के वक़्त के आदाब

समाअ़ के वक़्त शैख़ के सामने कोई हरकत न करे अलबत्ता अगर शैख़ की तवज्जोह उस की जानिब हो और उसकी तवज्जोह से उसमें कोई कैफ़ियत पैदा हो तो वज्द में आ सकता है अलबत्ता इस हालत को अपनी तरफ़ से पैदा शुदा ख़्याल न करे अगर इस सूरत में मग़लूबुल हाल हो जाए तो इस मग़लूबियत के बक़द्रे इजाज़त है लेकिन वज्द का जोश ख़त्म होते ही फ़ौरन सुकून, अदब और संजीदगी की तरफ़ वापस आ जाए और जिस राज़ का इन्किशाफ़ अल्लाह ने इस हाल में उस पर किया है उसको पोशीदा रखे।

समाअ़ के बारे में हमारे नुक्ता ए नज़र

समाअ़, क़व्वाली, मज़ामीर और रक़्स को हम जाएज़ नहीं समझते और इस की कराहत हम पहले बयान कर चुके हैं लेकिन हमारे ज़माना में लोग अपनी ख़ानक़ाहों और मजलिसों में इस राह को इख़्तियार किए हुए हैं (उनकी मजलिसों में क़व्वाली रक़्स व मज़ामीर का सिलसिला जारी है) और मुमकिन है कि इस राह पर चलने वाले सच्चे हों इसलिए उनके मसलक के मुताबिक़ हम इस मौज़ूअ़ पर क़लम उठा रहे हैं। मुमकिन है कि समाअ़ में कलाम के मानी सामेअ़ के

जज़्बाए मुहब्बत व सदाक़त की आग को भड़का दे और वह इस आग से भड़क उठे और खुदी उस से ग़ाएब हो जाए और उसके आज़ा में बेसाख़्ता हरकत पैदा हो जाए लेकिन उस शख़्स की हालत का उस शख़्स की हालत से कोई ताल्लुक़ नहीं जिन को समाअ के लुत्फ़े तबअ और लज़्ज़ते हवस हासिल होती है। किसी फ़ौत शुदा महबूब और बिछड़े हुए माशूक़ की याद उनके दिल में ताज़ा हो जाती है और ज़ाहिरी मुहब्बत की आग भड़क उठती है।

चूंकि मुरीद से उसके दिल की आग तो बुझती ही नहीं उसका शोलए अश्क तो कभी फ़ुरु नहीं होता उसका महबूब ग़ाएब नहीं होता और न उसका दोस्त उसको किसी वक़्त छोड़ता है बल्कि उसके लिए महबूब का क़ुर्ब लज़्ज़त व कैफ़ियत में इज़ाफ़ा का बाएस होता है उसके हाल को महबूबे हक़ीक़ी (ख़ुदावन्द तआला) के कलाम और गुफ़तगू के सिवा न कोई चीज़ बदल सकती है और न उसकी हालत को बर अंगेख़ता कर सकती है इसलिए न उसको अशआर सुनने की ज़रूरत हाती है न गाने की आवाज़ से हिज़ हासिल होता है और न चीख़ने चिल्लाने वालों के शोर शर से (जो शैतानों के शरीक, नफ़सानी ख़्वाहिशात पर सवार हो[illegible]) उसे कुछ लज़्ज़त हासिल होती है।

समाअ में मुरीद के आदाब

मुरीद को चाहिए कि समाअ की हालत में न किस[illegible] से मुजाहमत [illegible] और न तआर्रुज़, न गाने वालों से यह फ़र्माईश करे कि ऐसे अशआर गाओ जो [illegible] से बे त[illegible]लूकी पैदा करने वाले, रिक्क़त आफ़रीन हों न यह फ़र्माईश करे कि [illegible]सा कलाम पेश करो [illegible]ससे जन्नत की, जन्नत की हूरों की अ[illegible] दीदारे [illegible]ही की रग़[illegible] पैदा [illegible], दुनिया से [illegible]ज़ारी, दुनिया वालों से गुरेज़ की तालीम हासिल [illegible], दुनिया के दुख दर्द [illegible]र मस[illegible] को [illegible]श्त करने की जुर्रत पैदा हो और आख़िरत के तालि[illegible]ों से दुनि[illegible] जो अपना [illegible]ख़ फेर[illegible] पर सब्र हासिल हो (अलग़र्ज़ किसी मख़सूस मज़मून क[illegible] फ़र्माई[illegible] न करे) [illegible] काम शैख़ का है, स[illegible] उसके सुपुर्द रहना चाहिए। शैख़ जो महफ़िल में [illegible] है उस वक़्त तमाम महफ़िल के लोगों की बाग डोर उसी के हाथ में है अलबत्ता अगर सामेअ अहले हाल है और आदाबे ज़ाहिरी से वाकिफ़ है और तसन्नो से आरी है तो अल्लाह खुद ऐसे [illegible]ाब पैदा कर देगा कि क़व्वाल खुद ऐसे अशआर पेश करेगा जिसका यह ख़्वास्तगार है या अगर सामेअ किसी मिसरअ की तकरार चाहता है तो गाने वाला खुद बखुद उसकी तकरार करेगा और इसी तरह उस सच्चे सामेअ की ख़्वाहिश खुद बखुद पूरी हो जाएगी। समाअ के सिलसिला में आदाबे मुरीद की बहस को ख़त्म करते हुए मुरीद के लिए चन्द और आदाब ज़िक्र किये जाते हैं।

शैख़ की अहमीयत

मुरीद अगर शैख़ से कुछ सीखना चाहता है तो उसके लिए ज़रूरी है कि उसको शैख़ पर यक़ीने रासिख़ और पुख़्ता एतक़ाद हो कि इस मुल्क में मेरे शैख़ से बुज़ुर्ग और कोई शैख़ नहीं। इस एतक़ाद से उसको अपने असले मक़सद में फ़ायदा हासिल होगा अल्लाह के हुज़ूर में उसको क़बूलियत हासिल होगी और जो कुछ वह पीर की ख़िदमत में अंजाम दे रहा है उस को आफ़ात से महफ़ूज़ रखेगा और जो मुआहदा इरादत है उसको ख़तरात से बचाएगा, पीर की ज़बान से भी

वही बात निकलेगी जो उसके लिए मुनासिब होगी, मुरीद को चाहिए कि शैख़ की मुख़ालिफ़त किसी हाल में न करे, मशाएख़ की मुख़ालिफ़त मुरीदों के हक़ में ज़हरे क़ातिल है इसलिए न सराहतन मुख़ालिफ़त करे न किसी तावील के साथ। मुरीद को लाज़िम है कोशिश करे कि शैख़ से अपना कोई राज़ और अपनी कोई हालत पोशीदा न रखे, न शैख़ के हुक्म की किसी को इत्तेला दे।

मुरीद के लिए किसी हाल में भी यह जाइज़ नहीं कि अम्रे ममनूआ की रूख़सत (इजाज़त) का शैख़ से तलबगार हो और अल्लाह की जिस नाफ़रमानी को तर्क कर चुका है उसकी तरफ़ दोबारा वापस आए यह कबीरा गुनाह है। अहले तरीक़त की नज़र में मुरीदी की शिकस्त है, इरादते शैख़ इस इरादा से फ़िस्ख़ हो जाती है। सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि हिबा की कोई चीज़ को दोबारा वापस लेने वाला उस कुत्ते के मानिन्द है जो मुंह से गिज़ा उलट कर दोबारा उसको खा ले।

मुरीद पर लाज़िम है कि उसका शैख़ उसकी अदब आमोजी के लिए जो कुछ हुक्म दे उस को बजा लाए अगर उससे इस बारे में कोताही हो तो शैख़ को उससे आ[illegible]ह कर दे ताकि वह इस सिलसिले में ग़ौर व ख़ौज़ करे और मुरीद के [illegible]क़ में तौफ़ीक़े अमल [illegible] दुआ फ़रमाये।

मुरीद की तादीब व तरबी[illegible]त

किस तरह की जा[illegible]

तादीबे मुरीद में शैख़ [illegible]का तर्ज़े [illegible]ल

शैख़े तरीक़[illegible] के लिए ज़रूरी है कि व[illegible] महज़ अल्लाह [illegible]लिए (अपनी किसी ग़रज़ के बग़ैर) मुरीद को क़बूल [illegible]रे मुरीद के [illegible]थ उठे बै[illegible] और [illegible] आंख से उसको देखे, अगर मुरीद से रियाज़त बरदाश्[illegible] न हो [illegible] नर्मी के [illegible]थ पेश आए और उस[illegible] तरबीयत इस तरह करे जैसे मां अपने बच्चे की [illegible]मन्द बाप अपने बेटे या गुलाम कि तरबीयत करता है, अव्वलन उस पर आसान गिरिफ़्त क[illegible]र ना क़ाबिले बरदाश्त बार उस पर न डाले।

अव्वलन उसको हुक्[illegible] दे [illegible] दिल की तमाम ख़्वाहिशात को तर्क करे और शरअ़ ने जिस उमूर कि इजाज़त दी है [illegible]सको बजा लाए ताकि वह अपने नफ़्स और तबीयत की क़ैद से आज़ाद हो कर शरअ़ की क़ैद और गिरफ़्त में आ जाए इस के बाद उस को रूख़सत (शरईया) से अज़ीमत की तरफ़ ले जाए। अगर इब्तिदाए कार ही में शैख़े तरीक़त को मुरीद में मुजाहिदा का सिदक़ और अज़्म की पुख़्तगी नज़र आए और वह अपनी ख़ुदादाद फ़िरासत व फ़हम और अल्लाह तआ़ला के अता करदा मुकाशिफ़ा से यह मालूम करे कि मुरीद में अज़ीमत मौजूद है तो ऐसी हालत में मुरीद के लिए दरगुज़र से काम न ले बल्कि ऐसी सख़्त रियाज़तों के साथ उसको मशग़ूल करे कि उसकी कुव्वते इरादी में क़सूर पैदा होने न पाए उसके लिए आसानी पैदा करके उस के हक़ में ख़यानत न करे, मुरीद से फ़ायदा उठाना शैख़ के लिए जाइज़ नहीं है न माल से न उस की ख़िदमत से। इस अदब आमोज़ी और तरबीयत के सिला की अल्लाह तआ़ला से भी तमन्ना न करे बल्कि उस को महज़ हुक्मे ख़ुदावन्दी की तामील और एक इनामे इलाही समझ कर क़बूल करे। इस लिए शैख़ की ख़िदमत में मुरीदो का हाज़िर होना न शैख़ कि इख़्तियार में

है और न इस में उसकी कोशिश को कुछ दख़ल है सिर्फ़ अल्लाह तआला की रहनुमाई और तक़दीरे इलाही पर इस का मदार है अल्लाह ही ने उसको भेजा है गोया वह अल्लाह का भेजा हुआ एक तोहफ़ा है पस इस तोहफ़ा के हुस्ने क़बूल की यही एक सूरत है कि मुरीद के साथ भलाई से पेश आए उसको आदाब सिखाए और उसको रूहानी और अख़लाक़ी तरबीयत करे इस से यह साबित होता है कि मुरीद के माल और ख़िदमत से ग़रज़ नहीं रखना चाहिए यहां सिर्फ़ एक सूरत में इस का जवाज़ है कि अल्लाह तआला ने शैख़ को इसका हुक्म दे दिया हो और उसकी माली पेशकश के क़बूल करने की उसको ख़बर दे दी हो और मुरीद का भलाई और उसकी नजात इस अम्र से वाबस्ता कर दी हो इस सूरत में उससे बचने और उसके माल को वापस लौटा देना दुरूस्त नहीं।

मुरीद किस को बनाया जाए

मुरीद के इन्तिख़ाब के सिलसिले में शैख़ को एहतियात रखना चाहिए ऐसा न करे कि जो भी मिले उसको मुरीद बना ले बल्कि इस अम्र में [illegible] अल्लाह के हुक्म और तक़दीर का मुंतज़िर रहे और अल्लाह तआला जिस की रहनुमाई फ़रमा करे उसको शैख़ की ख़िदमत में भेजे और शैख़ के कमालात या ज़ाहिरी हालत को इस में दख़ल न हो उसको मुरीद [illegible] और उसकी तरबीयत करे, इस सूरत में उसकी तरबीयत और अदब आमोज़ी की तौफ़ीक़ अल्लाह की तरफ़ से होगी वरना नहीं।

शैख़ पर लाज़िम है कि हत्तल मक़दूर मुरीद की तरबीयत में क़सूर न करे अगर मुरीद से इताअते इलाही में सुस्ती [illegible] क़सूर हो [illegible] तो तन्हाई के वक़्त उससे तौबा कराए और ख़ुद भी उसके लिए माफ़ी तलब करे, मुरीदों के राज़ की निगहदाश्त [illegible] के लिए ज़रूरी है कि यह मुरीद की अमानत है।

अगर कोई मुरीद मकरूहाते शरईया में से किसी मकरूह [illegible] मुरतकिब हो तो तन्हाई में उसको नसीहत करे [illegible] उसको इसके इआदा से बाज़ रखे ख़्वाह वह अम्र मकरूह जिस का इरतिकाब किया है उसूली हो या फ़रोई। मुरीद को कभी ऐसा दावा न करने दे जिस का वह अहल नहीं है, मुरीद को [illegible] करे कि वह अपने अमल पर ग़रूर व तकब्बुर न करे, ख़ुद पसन्दी से बचे शैख़ को चाहिए कि मुरीद के अहवाल आमाल को उसकी नज़र में हक़ीर व बे माया दिखाए ताकि वह बेचारा ओजुब व ग़रूर में मुब्तिला होकर तबाह न हो जाए ख़ुद पसन्दी बंदे को अल्लाह तआला की नज़रों से गिरा देती है।

अगर तरबीयत इजतेमाई मक़सूद हो इन्फ़ेरादी मतलूब न हो तो सब मुरीदों को जमा करके बिला तअय्युन व तख़सीस कहे कि तुम में से बाज़ लोग मुद्दई हैं या यह बात कहते हैं या ऐसा करते हैं ग़रज़ इस सिलसिले के तमाम मफ़ासिद और बुराईयों को बयान कर के उनको नसीहत करे और बुराईयों से बचने की तलक़ीन करे मगर किसी फ़र्द की तख़सीस व तअय्युन न करे इस तर्ज़े अमल से इस्लाह भी हो जाएगी और किसी के दिल में नफ़रत भी पैदा नहीं होगी अगर बद ख़ुल्क़ी से काम लेगा, जज़्र तौबीख़ करेगा तो या उनके असरार को फ़ाश करेगा या उन पर खुल्लम खुल्ला नुक्ता चीनी करेगा और उनकी बुराईयों का तज़किरा दूसरों से करेगा तो इस तर्ज़े अमल से शैख़ की मोहब्बत से उनके दिलों में नफ़रत पैदा होगी। अहले तरीक़त के मसलक में

यह अमल मुरीदों पर तोहमत तराशी कहलाता है और औलिया अल्लाह की मोहब्बत का जो बीज मुरीदों के दिल में बोया जाता है इस अमल से उसकी नश्व व नुमा नहीं होती है, लिहाज़ा पीर तरीक़त को इस सिलसिले में पूरी एहतियात रखना चाहिए, अगर ऐसी सूरत पेश आए कि शैख़ मग़लूबुल हाल हो जाए और इसका तदारुक उसके बस की बात न हो तो फिर शैख़ को मरतबए इरशाद और मसनदे तरीक़त से अलग हो जाना चाहिए और अलग हो कर अपने नफ़्स को मुजाहिदा और रियाज़त में मशगूल करके और ख़ुद किसी शैख़ की जुस्तजू करे ताकि उसको मोअद्दब, मुहज़्ज़ब और सहीहुल हाल बना दे ऐसे ख़तरात जब उसके पास हों तो वह शैख़ बनने का अहल नहीं है इस लिए मुरीदों की राह में उसको रुकावट नहीं बनना चाहिए।

बाब 26

अवामुन्नास, अग़निया, और फ़ुक़रा के साथ तर्ज़े मुआशरत

दोस्तों के साथ सूफ़ी की रविश

राहे तरीक़त के राह रौ के लिए ज़रूरी है कि दोस्तों की मुसाहिबत में ईसार, जवानमर्दी, दरगुज़र और ख़िदमत गुज़ारी से काम ले, अपना हक़ किसी पर न समझे और न किसी से अपने हक़ का मुतालबा करे, बल्कि इसके बर अक्स यह समझे कि हर शख़्स का उस पर हक़ है और उसके अदा करने में कोताही न करे। दोस्ती और मुसाहिबत के हुक़ूक़ में से यह भी है कि दोस्तों की हर बात और फ़ेअ़ल से मुवाफ़क़त का इज़हार करे (बशर्ते कि वह शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो) ख़्वाह उसका अपना नुक़सान हो मगर हमेशा उसका साथ दे अगर उनसे कोई ग़लती हो जाए तो उनकी ख़ातिर उसकी तौजीह करे और उनकी तरफ़ [illegible] ख़्वाही करे, उनके साथ नफ़रत तशद्दुद और जंग का ख़्याल भी न करे उनके ओयूब की तरफ़ से आंख बन्द कर लें।

हमेशा दोस्तों के दिल की पासदारी करे जो बात दोस्त को पसन्द न हो इससे इजतेनाब करे ख़्वाह उस में उसकी भलाई ही क्यों न हो, किसी दोस्त की तरफ़ से दिल में कीना न रखे अगर किसी के दिल में उसकी तरफ़ से नागवारी [illegible] ख़ुशी पैदा हो जाए तो उसके साथ इस तरह पेश आए की उसके दिल से शिकायत दूर हो जाए, [illegible]र कोई दोस्त उसकी ग़ीबत करे और उस ग़ीबत [illegible] के दिल में नागवारी का अहसास हो तो अपनी तरफ़ से इस कबीदगी का इज़हार न होने पाए बल्कि बरताव पहले जैसा ही रखे।

ग़ैरों के साथ बरताव

ग़ैरों के साथ बरताव और मुआशरती ताल्लुक़ का तक़ाज़ा यह है कि उनसे अपना राज़ छुपाये, उन के साथ शफ़क़त और मेहरबानी से पेश आए, उनका माल बतौरे अमानत अगर हो तो उनके सुपुर्द कर दे तरीक़त व मारफ़त के अहकाम उनसे पोशीदा रखे उनकी बद अख़लाक़ी पर सब्र करे उन पर अपनी बरतरी का ख़्याल भी दिल में न लाए बल्कि कहे कि अल्लाह उन से दर गुज़र फ़रमाएगा ऐ मेरे नफ़्स तुझ से हर छोटी बड़ी बात की पुरशिश होगी और हर शय की तुझ से हिसाब फ़हमी होगी। अल्लाह तआ़ला ना वाक़िफ़ की इन बातों से दर गुज़र फ़रमाएगा कि वह इन बातों के जाने वाले नहीं हैं लेकिन जानने वालों से हिसाब फ़हमी होगी पस अवाम की तो परवाह भी नहीं की जाती अलबत्ता ख़्वास एक बड़े ख़तरे मे हैं।

उमरा के साथ सोहबत

अंग़निया और दौलतमंदों के ख़िलाफ़ हुज्जत पेश करे उनसे ताल्लुक़ मुनक़तअ करे, उनकी दौलत

का लालच न करे, तमाम बातों को दिल से निकाल दे और महज़ उनके इकराम व इनाम से फ़ायदा उठाने के लिए उनके सामने ज़लील होने से अपने दीन को महफ़ूज़ रखे। हदीस शरीफ़ आया है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मालदार के सामने जिसने उसके माल की वजह से अपनी ज़िल्लत का इज़्हार किया उसका दो तिहाई दीन तबाह हो गया।

हम अल्लाह तआला से ऐसी हरकत से जिससे दीन को नुक़सान पहुंचे अल्लाह की पनाह चाहते हैं, और ऐसे लोगों की मोहब्बत से भी पनाह चाहते हैं जिस की वजह से इसमे रख़ना और ख़राबी पैदा हो और जिस से दीन का क़ब्ज़ा टूट जाए और लोग के नूरे इमान की शुआ को दुनिया के माल की चमक व दमक बुझा दे, हां अगर सैर व सफ़र या मस्जिद या सराये वग़ैरह में उससे मोहब्बत का इत्तेफ़ाक़ हो जाए (कि ऐसे मवाक़ेअ पर मिलना जुलना बहुत मुमकिन है) तो उनके साथ ख़ुश अख़लाक़ी से पेश आना चाहिए यह उमूमी हुक्म है इस में अग़निया और फ़ुक़रा दोनों शामिल हैं फ़ुक़रा के सोहबत के वक़्त तुम्हारे दिल में यह ख़्याल न आना चाहिए कि तुम उनसे बरतर और बढ़ कर हो बल्कि यह यक़ीन रखो की तमाम मख़लूक़ तुम से बेहतर है, तुम सब से कमतर हो इस अक़ीदा की बदौलत तुम को ग़रूर नजात मिल जाएगी हत्त्रा कि फ़ज़ीलते फ़क्र की ख़्वाहिश भी दिल में नहीं पैदा होना चाहिए तुम अपनी फ़क्र को न दुनिया में कोई फ़ज़ीलत समझो न आख़िरत में और न इस का कोई वज़न जानो। एक मशहूर मकूला है कि जिस ने अपने नफ़्स की बड़ाई महसूस की उसकी कोई बड़ाई नहीं और जिस ने अपने नफ़्स को गिरां बार समझा तो उसका भी कोई वज़न और गिरा मायगी नहीं।

हर चन्द की मालदार के लिए यह ज़ेबा है कि फ़क़ीर के साथ भलाई से पेश आए, माल अपनी थैली से निकाल कर फ़क़ीर को अता करे और ख़ुद ख़ाली हो जाए, अपने आप को सिर्फ़ गुज़श्ता मालदारों और अग़निया का जानशीन मुतसव्विर करे ख़ुद को उस माल का मालिक मुतसव्विर न करे लेकिन फ़क़ीर का अक्ल नफ़्स वही है कि माल व ज़र का ख़्याल अपने दिल से निकाल दे और माल व ज़र से और बल्कि दुनिया से फ़ारिगुल बाल हो जाए किसी चीज़ को दिल में जगह न दे सिर्फ़ अपने रब के ख़्याल से ख़ाली दिल को पुर करे उसकी नज़र में ख़ुदा की हस्ती के सिवा किसी और की शौकत, तवानाई और हस्ती का तसव्वुर न आए उस वक़्त बग़ैर रज व अलम के अल्लाह का फ़ज़्ल उसको मय्यसर आ जाएगा।

फ़ुक़रा की मुसाहेबत उमरा के लिए

फ़क़ीरों के मुसाहेबत का तक़ाज़ा यह है कि न अक्ल व शरब व लिबास में और हर अच्छी चीज़ में उनको अपनी ज़ात पर तरजीह दे अपनी जान को उनसे कम मरतबा समझे और कभी किसी हाल में फ़क़ीरों पर बरतरी का ख़्याल दिल में न लाए।

हज़रत अबू सईद बिन अहमद बिन ईसा फ़रमाते हैं कि मैं फ़क़ीरों के साथ तीस साल तक रहा लेकिन मेरे और उनके दर्मियान कभी कोई ऐसी बात नहीं हुई जिससे उनको दुख पहुंचता, न मेरी तरफ़ से कोई नफ़रत आफ़रीं सुलूक हुआ जिससे उनको वहशत हो जाती, लोगों इस बरताव की जब कैफ़ियत दरयाफ़्त की तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं उनके साथ हमेशा अपन नफ़्स के ख़िलाफ़ रहा।

जब तुम फ़ुक़रा पास पहुंचो तो मुसर्रत और ख़ुश अख़लाक़ी के साथ जाओ और ख़ुश

अख़लाक़ी को तोहफ़ा बनाओ लेकिन यह ख़्याल रहे कि इस खुश अख़लाक़ी के बाइस तुम्हारे दिल में उनसे बरतरी का ख़्याल पैदा न हो, उनके एहसान को अपनी गर्दन का तौक़ समझो और इस ख़्याल से भी बचते रहो कि तुम उन पर एहसान कर रहे हो बल्कि अल्लाह का शुक्र बजा लाओ कि उसने तुम को जिस ख़ल्क की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और तुम को अपने औलिया, अपने ख़ास बंदों और अल्लाह वालों की ख़िदमत का मौक़ा इनायत फ़रमाया क्योंकि फ़ुक़रा सालेहीन अहलुल्लाह और उसके ख़ास बंदे होते हैं रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है:

कुरआन वाले ही अहलुल्लाह और उसके ख़ास बंदें हैं।

कुरआन वाले वह हैं जो कुरआन पर अमल करते हैं, जो कुरआन की तिलावत तो करते हैं लेकिन उस पर अमल नहीं करते वह अहले कुरआन नहीं हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो कुरआन के ममनूआत को हलाल समझता है वह कुरआन पर ईमान नहीं लाया।

मुसाहबते फ़ुक़रा के तोहफ़ए अदब में से यह [illegible] कि तुम फ़ुक़रा को [illegible]सा मौक़ा ही न दो कि उनको तुम से सवाल करना पड़े। अगर इत्तेफ़ाक़न अगर कोई फ़क़ीर तुम[illegible]से क़र्ज़ मांगे उस को ब ज़ाहिर तो क़र्ज़ दो लेकिन दिल में उसको इस क़र्ज़ से सुबुकद[illegible] क़रार [illegible] दो और जल्द ही उसको सुबुकदोशी से मुत्तेला भी कर दो ताकि बारे [illegible] मजीद बरदाश्त करने की उसको तकलीफ़ न हो।

फ़क़ीर से हुस्ने सुलूक

फ़क़ीर के [illegible]थ हुस्ने सुलूक का एक तरीक़ा [illegible] भी [illegible]क उसकी मुराद जल्द पूरी करके उसके दिल को [illegible]तमईन क[illegible]दे इंतज़ा[illegible] (वादा) [illegible] दिल को दुख न पहुंचाना चाहिए, फ़क़ीर के पास मुस[illegible]कबिल के इंतज़ार का वक़्त नहीं है अगर तु[illegible]को इल्म हो कि फ़क़ीर साहबे अयाल है तो आदाब[illegible] का तक़ाज़ा यह है कि उसके साथ ऐसा सुलूक किया जाए जो उसके और उसके वाबस्तगान के लिए काफ़ी हो। फ़क़ीर अपना जो कुछ हाल बयान करे उसको सब्र के साथ सुनना चा[illegible] उसके साथ कज अदाई तुर्श रूई और सख़्त कलामी से पेश न आए, उसको क़तई ना उम्मीद करके उसको दिल शिकस्ता न किया जाए उसके दिल में नफ़रत न पैदा की जाए और उसने अपना राज़ जो तुम से मुनकशिफ़ किया है उसकी शर्मन्दगी और नामुरादी उस की शिकस्तगी का बाइस न बन जाए, ऐसी सूरत में फ़क़ीर बेक़ाबू हो जाता है, नफ़्सानियत का उस पर ग़लबा हो जाता है और फिर वह आपे में नहीं रहता और वह फिर ग़ज़बनाक हो जाता है और मुक़द्दर का शिकवा करने लगता है उसका दिल अंधा हो जाता है और नूरे ईमान की शमा बुझने लगती है चूंकि उसके ग़ैज़ व हैजान का बाइस तुम हुए हो इस लिए तुम इस गुनाह में पकड़े जाओगे।

फ़क्र पर सब्र की ख़ूबी

फ़क़ीर के सवाल के अन्दर जो मसालेह पोशीदा हैं और जो सवाल इस में मख़फ़ी हैं और जो मारफ़ते उलूम इस के अंदर है वह मख़लूक़ की नज़र से पोशीदा हैं अगर फ़क़ीर पर फ़क्र व फ़ाक़ा की यह ख़ूबियां का ज़ाहिर हो जाएं तो फिर सवाल की नौबत ही न आए फ़क़ीर का

दिल भी ग़नी हो जाए। अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल एहसान और उसके इनाम के लशकर उसके मसाएले हाल हो जाएं, उसकी रहमत, मेहरबानी और उसकी हिफ़ाज़त उसकी निगहबान बन जाए और वह हुवा यतवल्लाह अस्सालेहीन का मिसदाक़ बन जाए और वह तमाम चीज़ों से बे परवाह बन जाए और सिवाए रब की लगन के कोई और आरज़ू उसको बाक़ी न रहे। सब चीज़ें खुद उसके पास आएं उसको किसी चीज़ की तलब के लिए किसी के पास न जाना पड़े, लोग उस को अपना मक़सूद व मतलूब बना लें उसके अनवार व असरार के हुसूल में कोशां हो सिर्फ़ मौला से उसको लौ लगी हो और किसी की तरफ़ तवज्जोह न करे उसका जज़्बा उसको खींच कर उसको रब की तरफ़ ले जाए। मख़लूक़ के साथ ताल्लुक़े ख़ातिर की ज़ुलमत, नफ़्स की मुवाफ़िक़त व मुताबिक़त, ख़्वाहिशात की पैरवी और दुनिया व आख़िरत में किसी चीज़ की तलब उन तमाम चीज़ों से उसको आज़ादी मिल जाए।

सुपुर्दगी का सिला

उन लोगों ने जब अपनी जानें और अपने अमवाल अल्लाह के हाथ बेच डाले तो अल्लाह ने भी उनकी जान व माल को बहिश्त के बदला में ख़रीद लिया।

बेशक हम ने मोमिनीन से उनके जानों व माल को ख़रीद लिया और उसके एवज़ उनको बहिश्त अता फ़रमा दी।

उन्होंने दुनिया में अफ़लास पर सब्र किया, अपने जान, माल और औलाद का पूरा पूरा इख़्तियार खुदा वन्द तआ़ला को दे दिया और सब कुछ उसी के सुपुर्द कर दिया, उसके अहकाम की पाबन्दी और ममनूआत से खुद को बचाया और अपने मुकद्दर को तक़दीरे इलाही के हवाले कर दिया मख़लूक़ से अलग हो गये, इरादों और आरज़ूओं से पाक हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने भी उनको जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया और [illegible] में उनको मशग़ूल कर दिया जिन को न किसी आंख ने देखा और न किसी कान ने उनको सुना न किसी इन्सान के दिल में उनका ख़्याल गुज़रा और खुदा ने इरशाद फ़रमाया:

तहक़ीक़ अहले बहिश्त उस दिन अपने शग़्ल में ख़ुशहाल हैं।

फ़क़ीर जब इस मंज़िल से गुज़र जाता है तो उसके लिए जन्नत का हुसूल यक़ीनी हो जाता है तो उस वक़्त वह जन्नत के एवज़ अपने रब को ले लेता है और मकान से पहले हमसाया की तलब करता है जैसा कि राबिआ अदविया ने इरशाद किया था मकान से पहले हमसाया को देखो। अल्लाह तआ़ला का भी इरशाद है वह अल्लाह की ज़ात के तालिब हुए हैं अल्लाह तआ़ला ने किसी साबिक़ आसमानी किताब में भी इरशाद फ़रामाया है: मुझे दोस्तों में सब से ज़्यादा प्यारा बंदा वह है जो बख़्शिश की आरज़ू के बग़ैर मेरी इबादत महज़ हक़्क़े रबूबियत को अदा करने के लिए करता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआ़ला जन्नत और दोज़ख़ को पैदा न करता तो कोई उसकी इबादत न करता। हज़रत अली मुर्तज़ा का इरशाद है कि अगर अल्लाह तआ़ला जन्नत व दोज़ख़ का पैदा न करता तो उसे कोई न पूजता।

जब फ़क़ीर इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ हो जाता है और अल्लाह के सिवा हर चीज़ से वह बे ताल्लुक़ हो जाता है और हर चीज़ की वाबस्तगी से उसका दिल पाक हो जाता है तो वह इस

अम्र का मुस्तहिक़ बन जाता है कि अल्लाह तआला खुद उसकी कारसाज़ी फ़रमाए उसकी रहनुमाई करे और जब तक ज़िन्दा रहे दुनिया में भी उसको अपनी नेमतों से नवाज़े और मरने के बाद भी उस पर मज़ीद नवाज़िशें फ़रमाए, नई नई खिलअतें, नूर, राहत, पाकीज़ा ज़िन्दगी और अपना कुर्ब अता करे और उन तमाम चीज़ों से नवाज़ें जो उसने अपने औलिया और दोस्तों के लिए तैयार रखीं हैं और जिस की खुद इस तरह ख़बर दी है।

किसी नफ़्स को मालूम नहीं कि उसके लिए क्या क्या चीज़ें पोशीदा रखी गई है।

रसूलुल्लाह की हदीस

सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैंने अपने नेक बन्दों के लिए वह चीज़ें तैयार रखी हैं जो न किसी आंख ने देखीं न किसी कान ने सुना और न किसी शख़्स के ख़्याल में आईं। हज़रत अबू हुरैरा ने यह हदीस नक़्ल फ़रमाते हुए फ़रमाया अगर तुम इस की तसदीक़ में हुक्मे रब्बानी चाहते हो तो पढ़ो फ़ला तअलम व नफ़सु[illegible] व उकफ़िया लहुम मिन कुर्रतीन अईन।

अगर तुम ऐसे शख़्स को ख़ाली हाथ वापस कर[illegible]गो जो हाथ और दिल [illegible]ा ग़नी है लेकिन हुक्मे मौला की तामील में अपने लिए और अपने अह[illegible] व अयाल [illegible]लिए तु[illegible] से कुछ तलब करता है और तर्के सवाल इस लिए नहीं करता कि अ[illegible] तआला न[illegible]सको इस सवाल का मुकल्लफ़ बना दिया है और फ़ेक्र में मुबतला क[illegible]र दिया ह[illegible] कि बारी [illegible]आला का इरशाद है: हम ने तुम्हारे बाज़ के लिए आज़माइश की है, आया तुम सब्र करते [illegible] या नहीं।

याद रखो कि फ़की[illegible]मेशा क़ा[illegible]हने [illegible]ली नहीं है, [illegible]ल्द दूर हो जाती है और जल्द तवंगरी में बदल[illegible]जाती है और [illegible]सके मुक़द्द[illegible] में ज[illegible]दौलत [illegible] मौला की कुरबत के बाइस दवामी इज़्ज़त लिख दी [illegible]ई है वह [illegible]नक़रीब उ[illegible]को मयस्[illegible]जाएगी, तो इस सूरत में ऐ हाथ के सख़ी और दिल क[illegible] फ़क़ीर [illegible] अपने नफ़[illegible] और अपने रब की [illegible]त से ना वाक़िफ़ और अपने आग़ाज़ व अंजाम स[illegible]र तुझे उसकी सज़ा दी जाएगी और दौलत तेरे हाथ से छीन ली जाएगी और तू जिस तरह तू दिल का फ़कीर था उसी तरह तू हाथ का फ़कीर हो जायेगा, तमाम चीज़ों की हिस्र व तलब[illegible]गी और उनके हुसूल के लिए तुझे दुख झेलना होंगे जो तेरे मुक़द्दर में नहीं हैं जैसा कि कहा गया है जो चीज़ मक़सूम में न हो उसकी तलब सख़्त तरीन अज़ाब है हां अगर अल्लाह तआला अपनी आगोशे रहमत में ले ले और अल्लाह तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाये और तुम को बख़्श दे तो इस सूरत में तुम अज़ाब से महफ़ूज़ रह सकते हो, पस अल्लाह से तौबा करो वह अरहमर्राहेमीन और ग़फ़ूरुर्रहीम है।

फ़ेक्र के आदाब

फ़ेक्र से मोहब्बत

फ़कीर को चाहिए कि वह अपने फ़ेक्र से ऐसी मोहब्बत करे जैसे दौलतमन्द अपनी दौलत से मोहब्बत करता है और वह हमेशा इसी अम्र में कोशां रहता है कि उसकी दौलत को ज़वाल न हो इसी तरह फ़कीर को चाहिए कि वह भी ऐसी ही कोशिश करे (कि उसके फ़ेक्र को ज़वाल

न हो) और अल्लाह से दुआ करे कि उसका फ़ेक्र ज़वाल पज़ीर न हो अपने नफ़्स को इहितयाज और तंगी के वक़्त और भी ज़ईफ़ बना ले ग़नी बनने के लिए अस्बाबे मईशत की फ़राहमी और कमाई के गोना गूं ज़राये से ताल्लुक़ न रखे, न अपने नफ़्स के लिए और न अपने अयाल के लिए।

फ़ेक्र की शर्त

फ़ेक्र की एक शर्त यह भी है कि क़द्रे किफ़ायत पर क़नाअत करे, किसी हाल में भी क़द्रे किफ़ायत से तजावुज़ न करे (क़द्रे किफ़ायत सें ज़्यादा माल न ले) और बक़द्रे किफ़ायत माल का क़बूल करना भी सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म की तामील और क़त्ले नफ़्स से बाज़ रहने के लिए। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है: तुम अपनी जानों को मत मारो ख़ुदा तुम पर अपनी रहमत करने वाला है)।

पस अपने नफ़्स के हक़ (जाएज़) को रोकना हराम है और नफ़्स का हक़ है कि वक़्त बसर करने के बक़द्र खाना पीना ताकि जिस्मानी कुव्वत क़ाएम रहे और बक़द्र [illegible]तरे लिबास पहनना कि नमाज़ के अरकान व वाजिबात और शराइत अ[illegible] हो सकें।

तर्के हिज़्ज़े नफ़्स

फ़क़ीर को चाहिए कि हिज़्ज़े नफ़्स को तर्क कर दे, [illegible] कभी लज़्ज़त के हुसूल के दर पै न हो अलबत्ता अगर बीमार हो और उसकी सेहत के लिए ऐसी [illegible]ज़ तजवी[illegible] कि जाए जो लज़ीज़ हो तो उसका इस्तेमाल दुरुस्त है उस [illegible] लज़ीज़ चीज़ का हुक्म वही होगा जो हालते सेहत में रोज़ी (कुव्वते ल[illegible] यमूत) [illegible]है। फ़क़ीर [illegible] अपनी फ़क़ीरी में [illegible]ही लज़्ज़त महसूस करना चाहिए जैसी लज़्ज़त दौलत मंद अपनी दौलत में महसूस [illegible] [illegible]ी ज़िल्लत व ख़्वारी और गुमनामी को लोगों में क़बूलियत का [illegible]या न बन[illegible] दे, लोगों [illegible]जूम को अपने पास पसंद न करे।

माल की कमी ह[illegible] दिल का मौजिब है

फ़ेक्र की एक शर्त [illegible] भी है कि जब ख़ाली हाथ हो तो अपने माल की सफ़ा से कुव्वत हासिल करे, जिस क़दर [illegible] कमी होगी उसी क़दर मसर्रत ख़ातिर में इज़ाफ़ा होगा दिल की कुव्वत और क़ल्ब की रौश[illegible] में इज़ाफ़ा होगा लेकिन अगर फ़क़ीर की नादारी उसके दिल को तारीक और तबीअ़त को मुतज़लज़ल कर दे और अल्लाह से शिकायत का पहलू निकल आए तो उस वक़्त फ़क़ीर को समझ लेना चाहिए की उसको आज़माईश में डाल दिया गया है या फ़ेक्र की हालत में उससे कोई गुनाहे अज़ीम सरज़द हो गया है लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला से तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और अपने क़ुसूर और लग़ज़िश का पता चलाने की कोशिश करे और अपने नफ़्स की मलामत करे।

फ़क़ीर के लिए सज़ावार है कि उसकी औलाद जिस क़दर ज़्यादा हो उसी क़दर रिज़्क़ के मामला में उसका दिल पुरसुकून हो, अल्लाह तआ़ला पर कामिल एतमाद रखे और यह तामीले हुक्मे इलाही ज़ाहिरी हालत में उनके लिए है लेकिन बातिन में अल्लाह के वादा पर कामिल एतमाद रखे और पुख़्ता यक़ीन रखे कि उनका रिज़्क़ अल्लाह के पास मौजूद है, उसने रिज़्क़ का वादा किया है और मुक़द्दर कर दिया है हर हाल में वह उसके या किसी और ज़रिया से बच्चों

तक ज़रूर पहुंचेगा पस उसको अपनी सई (और कोशिश को वसीला रिज़्क़ न समझे और ख़ालिक़ को मख़लूक़ के दर्मियान दख़ील न बने रिज़्क़ में कमी और फ़ाक़ा कशी की तोहमत राज़िक़े मुतलक़ पर न रखे और उसके वादा में शक न करे न किसी और से उस कमी का शिकवा करे उसका शिकवा उसी से करे और उसी से हाजत रवाई की दुआ करे। फ़क़ीर पर अल्लाह तआला ने अयाल के नफ़क़ा की जो ज़िम्मादारी डाली है उस बात पर साबित क़दम रहने की दुआ करे और दुआ करे कि इलाही इनके रिज़्क़ को सहल और आसान बना दे, अल्लाह अपने बन्दे को मुसीबत में इसलिए मुब्तला करता है कि बन्दा उसकी तरफ़ रूजूअ़ हो कि ज़ारी के साथ मांगने वाले उसको पसन्द हैं यह सवाल ही तो है जिसके बाएस बन्दा और मौला ग़नी और फ़क़ीर का फ़र्क़ वाज़ेह हो जाता है सवाल ही की बदौलत बन्दा किब्र, नखुव्वत व ग़रूर और तबख़तुर से निकल कर आजज़ी, मसकनत और एहतियात की तरफ़ आता है इस सूरत में उस को जल्द क़बूलियत हासिल होती है और इसके लिए आख़िरत में सवाब भी जमा होता है।

फ़क़ीर को मुस्तक़बिल की फ़िक्र नहीं क[illegible]ा चाहिए

फ़क़ीर को लाज़िम है कि मुस्तक़बिल की फ़िक्र [illegible] करे हाल पर नज़र [illegible] उसके हुदूद से तजावुज़ न करे शराइते हाल और आदाबे हाल को महफ़ूज़ रखे अप[illegible]ल से बलन्द हाल की तरफ़ न देखे, किसी दूसरे की हालत का हरीस न बने कि ऐसा भी होता [illegible] कि वह हालत साहिबे हाल के लिए वजहे सलामती है मगर हरीस के लिए [illegible]त आफ़री[illegible] बन जाती है इसकी मिसाल ग़िज़ा की तरह है कि बाज़ ग़िज़ायें बाज़ लोगों के लिए सेह[illegible] अफ़ज़ा होती हैं लेकिन बाज़ के लिए [illegible]ज़िरे सेह[illegible]न जाती [illegible] फ़क़ी[illegible] को चाहिए कि खुद अपने इंतेख़ाब से किसी हालत को पसं[illegible] न करे जब तक कि खुद[illegible] की [illegible]फ़ से [illegible]को इस हालत में दाख़िल न कर दिया जाए अगर खुद अपने [illegible]स को किसी हाल[illegible]ख़िल करेगा तो वह अपने नफ़्स की जलालत व हलाक[illegible] का ब[illegible]स खुद ब[illegible]गा खुद बखुद किसी [illegible]त में दाख़िल न हो जब तक खुदा का हुक्म न आ[illegible]कि उसी के क़ब्ज़ा में मौत व ज़िन्दगी है और किसी हालत से उस वक़्त तक न निकले जब तक तसर्रूफ़े इलाही ही उसको इस हाल से न निकाले, जो फ़क़ीर व ग़नी बनाता है हंसाता [illegible]लाता है, अल्लाह तआला का कुर्ब बढ़ाने वाला अमल यही है, उलमाए सल्फ़ और अरबाबे तरीक़त का यही अमल था इसी की पैरवी लाज़िम है।

मौत का इन्तेज़ार

फ़क़ीर के लिए ज़रूरी है कि हर वक़्त मौत का मुंतज़िर और उसके लिए तैयार रहे। नाज़िल शुदा मसाइब और हालते फ़ेक्र पर राज़ी बरज़ा रहने में इस तरीक़ा को अपनाने से मदद मिलेगी इस लिए कि मौत की याद से उम्मीदें कोताह हो जाती हैं। नफ़्स पर शिकस्तगी पैदा होती है और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी का जोश ठंडा पड़ जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया लज़्ज़तों की इमारत को ढा देने वाली मैत की याद ज़्यादा किया करो।

मिन जुम्ला आदाबे फ़ेक्र यह भी है कि मख़लूक़ की याद दिल से निकाल दे, आदाबे फ़ेक्र से यह भी है कि फ़क़ीर को जो कुछ मयस्सर आए (फल हो या खाना) अगर कोई ग़नी उसके यहां आए तो खुश खुल्क़ी से उसके सामने पेश करे, ईसार में फ़क़ीर को ग़नी से ज़्यादा होना चाहिए अगर उसरत की हालत हो तब ग़नी पर ख़र्च करके अपने अयाल को तंगी में न डाले

हां अगर अयाल उसके ईसार पर राज़ी और उससे खुश हों तो ख़र्च करने में मुज़ाइक़ा न करे।

फ़क़ीर के आदाब में से यह भी है कि तंगदस्ती और उसरत की हालत में अपने तक़वा की इहतियात व निगहदाश्त रखे, उसरत और नादारी के बाएस ख़िलाफ़े शरीअत काम न कर बैठे और अज़ीमत छोड़ कर रिफ़अत की तरफ़ क़दम न बढ़ाए, ख़ूब अच्छी तरह समझ ले कि तक़वा पर दीन का मदार है और तमअ़ दीन की बुर्दबारी है, मुशतब्हा चीज़ों के क़बूल करने में दीन की ख़राबी है जैसा की एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि जिस फ़क़ीर के फ़ेक्र में तक़वा नहीं उसका खाना हराम है इसलिए ज़रूरी है कि उसरत की हालत में दीनी तावीलों की तरफ़ माएल न हो बल्कि अज़ीमत की तरफ़ क़दम बढ़ाए अज़ीमत अगरचे दुशवार है मगर इहतियात की चीज़ है।

फ़क़ीर का सवाल

फ़क़ीर कब सवाल करे

फ़ेक्र के आदाब में यह भी है कि जब तक फ़[illegible] के पास बक़द्रे किफ़[illegible]त चीज़ मौजूद है मख़लूक़ से सवाल न करे, अगर हाजत और ज़रूरत [illegible]सको बहुत [illegible] मजबूर कर दे तो बक़द्रे हाजत तलब कर ले, उसकी हाजत ही सवाल का क[illegible]फ़ारा बन [illegible]। फ़क़ीर को सवाल करना उसी वक़्त वाजिब है कि जब वह हर तरह से म[illegible] हो जाए और किसी तरह उसका बस न चले फिर भी अपने नफ़्स के लिए सवाल न करना ही बेहतर [illegible] सिर्फ़ अयाल के लिए तलब करे अग[illegible] फ़क़ीर [illegible]स एक [illegible] है त[illegible] जब तक व[illegible] ख़र्च न हो जाए सवाल न करे क्योंकि जब त[illegible] उसके पास कुछ माल [illegible] उस [illegible]क्त तक [illegible] से उसको कुछ मदद नहीं मिल सकती।

सवाल की ए[illegible] शर्त य[illegible] भी है कि [illegible]ख़लूक़ पर उसकी नज[illegible] हो बल्कि ख़ुदा पर हो वही उसकी हाजत पूरी [illegible] है इसलिए सवालिया इशारा ख़ुदा ही की तरफ़ हो। मख़लूक़ को सिर्फ़ वकील और अल्[illegible] कारिन्दा समझे, किसी बंदे को रब न समझे मख़लूक़ से सवाल करने का मतलब यह है कि म[illegible] अपना और अपने बच्चों (के फ़ेक्र व फ़ाक़ा) का हाल बता दे लेकिन इसमें अल्लाह [illegible] शिकवा न हो सवाल करे तो इस्तफ़हामिया सूरत में करे मसलन इस तरह कहे क्या हमारे लिए आप को कुछ दिया गया है? क्या आप पर हमारा कुछ बार डार गया है? ऐ अल्लाह के मम्लूक! ऐ अल्लाह के दर के फ़क़ीर आप और मैं अपने अपने मक़बूज़ा माल में यकसां हैसियत रखते हैं हम में से कोई भी इस माल का मालिक नहीं है मालिक तो कोई और है जिस के हम सब मोहताज हैं, अगर इन अल्फ़ाज़ के साथ सवाल करे तो सवाल करना उसके लिए हलाल है वरना हराम। ऐसे फ़क़ीर की कोई इज़्ज़त नहीं जो मख़लूक़ को कारसाज़ समझ कर सवाल करे वह मुशरिक है फ़रेबी है रियाकार है, अहले तरीक़त से ख़ारिज है, दरोग़ गो, दोग़ला और बे दीन है।

फ़क़ीर को अगर काई कुछ दे दे तो शुक्र करे न दे तो सब्र करे सच्चे फ़क़ीर के यही औसाफ़ होते हैं। अगर फ़क़ीर का सवाल रद्द कर दिया जाए तो ग़मगीन न हो अपने हाल को न बिगाड़े, न गुस्सा करे और न मोतरिज़ हो न सवाल रद्द करने वाले को बुरा भला कहे। अगर वह ऐसा

करेगा तो उसके साथ जुल्म करेगा, यानी मसऊल तो अल्लाह की तरफ़ से मामूर और वकील मुअक्किल के हुक्म के मुताबिक़ ही करता है, देने वाला तो असल में मुअक्किल है और वह अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल है पस ऐसी हालत में अल्लाह ही की तरफ़ रूजूअ करे और उसी से फ़राख़ी व आसानी और युस्र की दरख़्वास्त करे ताकि अल्लाह तआला लोगों के दिलों को उसकी तरफ़ माएल फ़रमा दे और उसकी मुशकिलात आसान हो जायें, रिज़्क़ जारी हो जाए और जो कुछ मक़सूम है वह उसको पहुंच जाए, मुमकिन है कि अल्लाह तआला ने उसकी तरफ़ से लोगों के हाथ इस लिए रोक दिये हों कि उसका अपनी तरफ़ रूजूअ कराना मक़सूद हो इसलिए फ़क़ीर को चाहिए कि अल्लाह के दरवाज़े से लिपट जाए और दुआ व ज़ारी करके उसके दर के हिजाब को दूर कर दे कि असल में देने वाला तो अल्लाह तआला है कोई बंदा देने वाला नहीं।

फ़ुक़रा के आदाबे मुआशरत

दोस्तों के साथ सुलूक

फ़क़ीर को दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक रवा रखना चाहिए, उनके साथ श[illegible]फ़ता रवी से पेश आए चीं बजबीं न हो जो कुछ वह चाहते हैं अगर वह ख़िलाफ़े [illegible] नहीं है तो उसकी मुख़ालफ़त न करे या उसका इरतिकाब गुनाह का मौ[illegible] शरीअत की मुख़ालफ़ और नहीए इलाही से तजावुज़ का बाएस न हो, इसी तरह दोस्तों से झगड़ा न करे और न उनसे ख़सूमत रखे बल्कि उसके बर अक्स हमेशा दोस्तों का [illegible]मदूह व मुआविन रहे लेकिन इसी शर्त के साथ जो हम ने अभी ऊपर बयान की है।

दोस्त अगर मुख़ालफ़त करें तो उनकी मुख़ा[illegible]रदाश्त करे और उनकी तरफ़ से पहुंचने वाले रंज पर सब्र से काम ले उनका कीना व दुश्मनी न [illegible] किसी दोस्त के लिए अपने दिल में बुराई, नफ़रत और फ़रेब को जगह न दे, अगर वह मौजूद नहीं है तो उसकी ग़ीबत न करे न सामने उसको [illegible] कहे। दोस्त की ग़ैर हाज़िरी में अगर कोई उस पर इलज़ाम तराशी करे या उसकी बुराई करे तो उन [illegible]ज़ामात को रफ़अ करे जहां तक मुमकिन हो दोस्त के उयूब दूसरे दोस्तों से पोशीदा र[illegible] अगर कोई दोस्त बीमार हो जाए तो उसकी अयादत करे अगर किसी सबब से अयादत न कर सके तो उसकी सेहत के बाद उसको सेहत की मुबारक बाद दे अगर ख़ुद बीमार हो जाए और कोई दोस्त अयादत के लिए न आए तो उनको माजूर समझे और आइंदा उस से बदला लेने की दिल में न ठाने (कि वह बीमार पड़ेगा तो मैं बीमार पुर्सी और अयादत नहीं करूंगा) यानी जो यह रिश्ता तोड़े उससे फ़क़ीर को चाहिए कि यह रिश्ता जोड़े, अपनी अता यानी यानी अयादत से उसको महरूम न रखे, उसको अता करे जो उस पर जुल्म करे उसको माफ़ करे जो उसके साथ बुराई से पेश आए, उसको उस ख़ता और क़ुसूर पर माजूर समझे।

दूसरों की चीज़ों का इस्तेमाल

दूसरों की चीज़ें उनकी इजाज़त बग़ैर इस्तेमाल न करे लेकिन अपनी चीज़ें और दोस्तों के लिए ममनूअ न क़रार दे (उनको इख़्तियार दे दे कि चाहें तो इस्तेमाल करें) अपनी तमाम हरकात व सकनात में परहेज़गारी से ग़ाफ़िल न रहे (कोई अम्र तक़वा के ख़िलाफ़ सरज़द न हो) अगर

कोई दोस्त बर बिनाए यगानगत और बेतकल्लुफ़ी उसके किसी माल या किसी चीज़ का ख़्वास्तगार हो तो शगुफ़्ता रवी और ख़न्दा पेशानी के साथ उसका शुक्र अदा करते हुए उसकी ख़्वाहिश को पूरा कर दे, उसका शुक्र गुज़ार और मन्नत पज़ीर हो कि उसने उसको इस क़ाबिल समझा और अपनी हाजत रवाई का अहल क़रार दिया। हत्तल वसअ किसी के इस्तेमाल की कोई चीज़ मुसतआर न ले, हां अगर दूसरा मुसतआर ले ले तो उसे उससे वापसी का मुतालबा न करे, मुसतआर दी हुई चीज़ का वापस मांगना शाने जवांमर्दी के ख़िलाफ़ है जिस तरह शरअ में हदिया और हिबा की हुई चीज़ का वापस ले लेना दुरूस्त नहीं है इसी तरह मुसतआर चीज़ को वापस न ले और अगर तलब से खुद को न रोक सके तो वापस ले कर फिर उसको लौटा दे यानी उसको इस्तेमाल के लिए फिर मुसतआर दे दे ख़्वाह उसको यह ज़हमत रोज़ाना ही क्यों न उठाना पड़े। अपना माल लेकर लोगों से अलग थलग हो जाना शाने फ़क़ीरी नहीं है फ़क़ीर तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उस माल का अमीन है जो शख़्स किसी चीज़ का मालिक होता है हक़ीक़त में वह चीज़ उसकी मालिक होती है क्योंकि उसकी मोहब्बत उ[illegible]के दिल पर ग़ालिब हो जाती है पस दिल मग़लूब हो और शय ग़ालि[illegible] जिस के हाथ में इंस[illegible] की बाग डोर हो हक़ीक़त में वह उसका बंदा है बल्कि हमारे पास जो [illegible]ीज़ें हैं सब का मालि[illegible] अल्लाह ही को जानना चाहिए और बंदों की तमाम चीज़ें अल्लाह की [illegible]मिल्क में बरा[illegible] और य[illegible]कसां हैं।

जो चीज़ किसी दूसरे के क़ब्ज़ा में हो उसके इस्ते[illegible]ं शरीअत के अहकाम, तक़वा और अल्लाह तआला की क़ाएम कर्दा पाबंदियों को म[illegible]लहूज़ रखे [illegible] उस गरो[illegible] में शामिल न हो जाए जो हर चीज़ को मुबाह स[illegible]ने वाला बे[illegible]न लो[illegible]ों का गरोह है[illegible] अगर किसी तकलीफ़ या फ़ाक़ा में मुब्तला हो ज[illegible]ए तो जह[illegible]क मुमकि[illegible] अपन[illegible] दोस्तों से [illegible]को छुपाए ताकि उसकी परेशानी से वह लोग भी [illegible]रेशान हों इस[illegible] तरह ग़म [illegible]व अन्[illegible]त में भी दोस्तों से इसका इज़हार न करे वरना उनक[illegible] मुसर्रतें [illegible]र उनकी [illegible]गुफ़्तगी म[illegible]ना प[illegible]ाएगा।

अगर कोई दोस[illegible] हाल[illegible] रंज व ग़म में बज़ाहिर खुशी और मुसर्रत का इज़हार करे तो फ़क़ीर को चाहिए कि वह उन[illegible]ज़ाहिरी हालत में शरीक हो। रंज और ग़म को जान लेने के बावजूद उसको दिल में पोशीदा रखे औ[illegible]कोई ऐसी बात उनके सामने न कहे जो उनकी दिल शिकस्तगी का बाइस हो। अगर दो[illegible]की बात से कबीदा ख़ातिर हो जाए तो हुस्ने अख़लाक़ का तक़ाज़ा है कि उससे इस तरह गुफ़्तगू करे कि उसकी उदासी दूर हो जाए।

हस्बे हैसियत बरताव

हर शख़्स से उसकी हैसियत के मुताबिक़ बरताव करे और उसको हद से ज़्यादा तकलीफ़ न दे और जब तक ख़िलाफ़े शरअ बात ज़हूर में न आए या पैरवी करने से शरीअत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न हो रही हो उस वक़्त तक उसकी पैरवी करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि हमारे अंबिया के गरोह को हुक्म दिया गया है कि लोगों से उनकी समझ के मुताबिक़ गुफ़्तगू करें जो लोग उनसे कम मतर्बा हैं उनसे शफ़क़त के साथ और जो उनसे मुआशरत में बलन्द हैं उनसे ताज़ीम के साथ और बराबर वालों के साथ मेहरबानी, भलाई और ईसार के साथ पेश आयें।

आदाबे तआ़म

फ़क़ीर को किस तरह खाना चाहिए

फ़क़ीर को हिर्स और बेनियाज़ी के साथ नहीं खाना चाहिए बल्कि खाना खाते वक़्त अल्लाह की याद दिल में रखना चाहिए, बुजुर्गों से पहले खाना की तरफ़ हाथ न बढ़ाये (खाना शुरु न करे) न दूसरे से खाने को कहे और न अपने सामने से उठा कर किसी दूसरे के सामने से रखे न उसे खुश ख़ुल्क़ी समझे और न तवाज़ोअ़। अलबत्ता यह बात मेज़बान के लिए जाएज़ है, यह मेज़बान की तरफ़ से एक गुना ख़िदमत है, खाने वाला मेज़बान से अपनी तरफ़ से यह न कहे आप भी हमारे साथ खाइये। जिस शख़्स को जिस जगह बिठा दिया जाए बैठ जाए ख़ुद दूसरी जगह बैठने के लिए पसन्द न करे जब तक साथ वाले खाने से फ़ारिग़ न हो जाए ख़ुद अपना हाथ खाने से न खींचे अगर वह ऐसा करेगा (यानी हाथ खाना से खींच लेगा) तो दूसरे को झिझक और शर्म महसूस होगी और वह शिकम सैर न होने के बावजूद वह रूक जाएगा जब तक दरवेश खा रहा रहो उसके सामने खाना न उठाया जाए, खाने पर दूसरे साथियों का साथ दे कि बाहम मुख़ालिफ़त न हो अगरचे ख़ुद उस को इश्तिहा न हो। दस्तरख़्वान पर किसी दूसरे को लुक़मे बना बना कर न दे। अगर पानी पेश किया जाए तो तन्हा पानी पी ले, मेज़बान अगर ख़िदमत के लिए खड़ा हो तो उसको मना न करे अगर वह हाथ धुलाना चाहे तो उसको न रोके।

अग़निया और फ़ुक़रा के साथ खाना खाना

अगर अग़निया और मुतमव्विल हज़रात के साथ खाने का इत्तेफ़ाक़ हो तो ख़ुद्दारी के साथ खाए हां फ़ुक़रा और अहबाब के साथ ईसार और बे तकल्लुफ़ी के साथ खाने में मुज़ाएक़ा नहीं, खाने के सिलसिले में ना नदीदापन न दिखाये, यानी जब तब खाना सामने न आ जाए दिल में खाने का ख़्याल भी न लाए जब सामने आ जाए तो खाए। खाने की ख़्वाहिश में नफ़्स का शरीक न बने मुमकिन है कि वह खाना मुक़द्दर और मक़सूम ही में न हो और वह ख़्वाहिश कभी पूरी न हो सके। कहीं ऐसा न हो कि उसकी ख़्वाहिश में मुबतला होकर निगरानीए हाल से ग़ाफ़िल हो जाए और अल्लाह की इबादत से महजूब और महरूम रहे।

पस खाना अगर सामने आ जाए तो उस की ख़्वाहिश करे और खा कर अल्लाह का शुक्र अदा करे, खाने को असले मक़सूद न बना ले और दिल को उससे वाबस्ता न कर दे और न बार बार उसका ज़िक्र कर के अपने नदीदापन को ज़ाहिर न कर दे बल्कि उससे महफ़ूज़ रहने के लिए दिल को एतबार दिलाए कि वह बीमार है और सेहतयाब होने तक खाने पीने से परहेज़ ज़रुरी है। हक़ीक़त भी यही कि नफ़्स की आरज़ू और ख़्वाहिश बीमारी है और अल्लाह तआ़ला उसका तबीब और मुआलिज है। जब तबीब अपने किसी गुलाम (बंदा) के हाथ उसके लिए खाने पीने का कुछ सामान भेज दे तो समझ ले कि उसके नफ़्से बीमार के लिए दवा है चूंकि तबीब की तरफ़ से आई है। पस अपने हाल की निगहदाश्त और हिफ़ाज़त में मशग़ूल हो जाये। दरवेश को चाहिए कि कभी किसी आरज़ू और ख़्वाहिश को मर्कज़े ख़ातिर और मतमहे नज़र न बनाये इसी तरह अपनी तमाम हरकात व सकनात में किसी चीज़ को तमानीयते क़ल्ब का मौजिब न समझे।

फ़ुक़रा के माबैन आदाबे मुआशरत

अपने साथियों के साथ सुलूक

फ़क़ीर को चाहिए कि अपनी किसी चीज़ को साथियों से अलग थलग न रखे जैसे कपड़े, मुसल्ला, अपने प्याले, गिलास वग़ैरह अपने साथियों से बचा कर न रखे (अगर वह इस्तेमाल करना चाहें तो उनको इस्तेमाल के लिए दे दे।) अगर काई दूसरा शख़्स उसकी जानमाज़ पर क़दम रखे तो उससे रंजीदा न हो और जवाबान अपना क़दम दूसरे के मुसल्ले पर न रखे, अपना मुसल्ला अपने से बलन्द मरतबत शख़्स के मुसल्ले से बलन्द जगह और ऊपर न बिछाए, किसी से अपनी ख़िदमत न बल्कि ख़ुद दूसरों की ख़िदमत करे, फ़क़ीरों और दरवेशों के पांव दाबे लेकिन ख़ुद किसी से अपने पांव न दबवाये। अगर दरवेश हम्माम में जाए तो हम्मामी से मालिश और मसाज न कराये, आपस में एक दरवेश दूसरे दरवेश की अगर मालिश करना चाहे तो कोई मुज़ाइक़ा नहीं।

अगर कोई दरवेश किसी दूसरे दरवेश की कोई चीज जैसे ख़िरक़ा मुसल्ला वगैरह पसंदीदगी की नज़र से देखे तो उसी वक़्त वह चीज़ उस दरवेश की [illegible]मत [illegible] पेश कर दे जो उसका ख़्वास्तगार है अपनी ज़ात पर उसको तरजीह [illegible]

खाने का वक़्त हो या और किसी काम का वक़्त [illegible] फुक़रा [illegible] अपने इन्तेज़ार की तकलीफ़ में मुबतला न करे इस लिए कि मुनतज़िर को इन्तेज़ार का बार उठाना पड़ता है। अगर किसी दरवेश [illegible] खाना [illegible]ना है तो [illegible]को इन्तेज़ार में रोके न रखे, शोरबा का इन्तेज़ार बड़ी ज़िल्लत की बात है।

दरवेश को लाज़िम है कि [illegible]क़द्रे इमकान किसी [illegible] ज़ख़ीरा बना कर न रखे अगर खाना ज़्यादा नहीं है तो [illegible] तक दूसरों के सर्फ़ से बच न जाए ख़ुद [illegible] खाए। इस अम्र की कोशिश करे कि दरवेशों को [illegible]ा पेश किया है वह बहुत की पाकीज़ा और उनकी तबाए के मुताबिक़ है। अगर जमाअत के साथ है तो किसी चीज़ के क़बूल करने या खाने में अपनी इंफ़िरादीयत को नुमाया न करें अगर [illegible] आग़ाज़ उसी की ज़ात से किया जा रहा है या तोहफ़ा उसी के सुपुर्द किया गया है तो मुनासिब है उस चीज़ को वस्त में रख दे अगर बीमार है और किसी मख़सूस ग़िज़ा वग़ैरह की ज़रुरत है तो अपने जमाअत से इजाज़त लेकर उसका इस्तेमाल करे।

इजाज़त ज़रूरी है

अगर किसी मेहमान खाने में फ़रूकश है या मदरसा में मुक़ीम है तो वहां के मोहतमिम (शैख़) या ख़ादिम की इजाज़त से मशवरा के बग़ैर कोई काम न करे। अगर जमाअत के साथ है तो अफ़रादे जमाअत जिस काम में मशगूल हों ख़ुद भी उसी काम में लग जाये (उनसे अलग थलग न रहे) दरवेशों के साथ हो तो तसबीह और ज़िक्र बलन्द आवाज़ से न करे बल्कि आहिस्ता आहिस्ता पढ़े और ज़िक्र करे बल्कि उससे बेहतर है कि इबादते बातिनी यानी तफ़क्कुर और हुसूले इबरत की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए हां अगर साथी ख़्वास में से है तो फिर मुज़ाइक़ा नहीं। हर काम की दुरुस्तगी और असबाब की फ़राहमी उसका रब ख़ुद फ़रमाएगा, वही हुक्म देगा वही

मना फ़रमाएगा। जमाअत के दिलों को वही माबूदे बरहक़ उसका ताबेअ और मुतीअ बनाएगा और उसकी मोहब्बत से उनके दिलों को भर देगा और उनके दिलों में उसकी हैबत और ताज़ीम फ़रमा देगा। ज़िक्रे इलाही के अलावा और कोई बात बलन्द आवाज़ से नहीं करना चाहिये।

जमाअत की हमराही की हालत में सरगोशी न करे और जहां तक मुमकिन हो दुनिया के मख़मसों और खाने पीने की बाते न करे, दरवेशों की सोहबत में (आदाब व उसूले तरीक़त वग़ैरह) लिखने से बाज़ रहे बल्कि जो कुछ लिखा हुआ है उस पर अमल पैरा हो और इस शग़्ल के बजाए बातिनी शग़्ल (ज़िक्र) और अपनी हालत की निगहदाश्त में बसर करे, दरवेशों के सामने ज़्यादा नवाफ़िल भी न पढ़े, अगर दरवेशों की जमाअत (नफ़्ली) रोज़ा रखे तो ख़ुद भी रोज़ा रखे, उनकी मुवाफ़क़त करे तन्हा रोज़ा न रखे।

दरवेश अगर बेदार हो तो ख़ुद भी बेदार रहे सो न जाए बदर्जा मजबूरी अगर नींद का बहुत ही ग़लबा हो तो कुछ देर तन्हा सो सकता है ताकि नींद का ग़लबा और जोश सर्द पड़ जाए।

पेश क़दमी और पहल करना

किसी चीज़ की ख़्वाहिश और उसके इख़्तियार करने में पेश क़दमी [illegible] करे हत्तल वसअ उससे बचे अगर कोई दरवेश उससे कुछ तलब करे तो उसकी ख़्वा[illegible] और तलब को न रद्द करे, थोड़ी ही चीज़ देकर उसका सवाल पूरा कर दे और इस सूरत में [illegible] उसको इन्तेज़ार की ज़हमत में न डाले और उसके दिल को न दुखाए। अगर [illegible] उससे मशवरा तलब करे तो पूरे ग़ौर व ख़ौज़ से जवाब दे, जवाब देने में जल्दी न करे बल्कि मशवरा तलब करने वाले के इतनी मोहलत दे कि वह इत[illegible]न के सा[illegible] अपनी बात पूरी करे जहां तक मुमकिन हो रद्द और इनकार में जवाब न दे, अगर उसका सवाल दुरु[illegible] न [illegible] भरपूर मुवाफ़क़त न करे, बल्कि कुछ मुवाफ़क़त [illegible]रे और [illegible] नर्मी के साथ वह [illegible] दे जो उसकी राय से ज़्यादा सही और दुरुस्त हो लेकिन सही राये होने में सख़्ती और दुरुश्ती [illegible] काम न ले।

अहल [illegible] अयाल के साथ तर्ज़े मुआशरत

नफ़्क़ा की अदाएगी [illegible]दबे दरवेश है

ख़ुश अख़लाक़ी और दस्तूर के मुताबिक़ हत्तल वसअ व बक़द्रे इमकान अहल व अयाल का नफ़्क़ा अदा करना अदबे दरवेश है, अगर दरवेश को आज और सिर्फ़ आज की ज़रूरत के मुताबिक़ कोई चीज़ मयस्सर आए तो वक़्ती ज़रूरत को नज़र अन्दाज़ करके कल के लिए जमा नहीं रखना चाहिए अलबत्ता अगर वक़्ती ज़रूरत से कुछ बच रहे तो कल के लिए रख लें लेकिन यह भी अपने लिए नहीं बल्कि अहल व अयाल के लिए। अगर वह उसमें से अपनी ज़ात पर भी कुछ ख़र्च कर ले तो सिर्फ़ उस शक्ल में कि वह अयाल का ख़ादिम और उनका वकील है जिस तरह गुलाम अपने आक़ा के तुफ़ैल में खाता है। यह यक़ीन रखना चाहिए कि अहल व अयाल की ख़िदमत करना और उनकी रोज़ी के लिए मुशक़्क़त करना और तकलीफ़ बरदाश्त करना हुक्मे इलाही की तामील और उसकी इताअत है। इस सिलसिला में अपने नफ़्स की ख़्वाहिश पूरी करने से गुरेज़ करे, अहल व अयाल को अपने ऊपर हमेशा तरजीह दे अगर कुछ

खाए तो उनकी इश्तिहा और भूक की मुवाफ़क़त में खाए अपनी इश्तिहा की मुवाफ़क़त मुनासबत पर उनको आमादा न करे।

अगर मौसमे गरमा में कोई ऐसी चीज़ उसको मिला जाए जिस की ज़रूरत मौसमे सरमा होगी तो उसको फ़रोख़्त करके बशर्ते ज़रूरत उसकी क़ीमत अपनी ज़रूरत में सर्फ़ कर ले अग आज की ज़रूरत पूरी होने के लायक़ उसको कुछ मिल जाए और मज़ीद कमाई से कल मसारिफ़ के लिए कुछ जमा हो सकता है तो मज़ीद कमाई और कसब में मशग़ूल न हो बलि सिर्फ़ आज की ज़रूरत के बक़द्र किफ़ायत पर क़नाअत करना वाजिब है। कल की रोज़ी की तदबीर कल पर छोड़ दे अगर ख़ुद दरवेश के अन्दर तवक्कुल और भूक पर सब्र करने की ताक़त तो है लेकिन बाल बच्चों में यह ताक़त नहीं है तो उनको अपनी हालत पर लाने की कोशिश करे यानी उनको तकलीफ़ और मुसीबत बरदाश्त करने का आदी बनाए।

अगर बाल बच्चों में अल्लाह की इताअत, हुसने सीरत और इबादते इलाही का ज़ौक़ व शौक़ देखे तो उनको मुबाह चीज़ कसबे हलाल से खिलाना वाजिब है ताकि उससे अल्लाह की इताअत और नेकी के नताएज मुरत्तब हों उनको हराम न खि[illegible], हराम खिलाने से उ[illegible]में ना फ़रमानी और गुनाह की जुर्रत पैदा होगी। ख़ुद दरवेश के लिए भी ज़[illegible]री है कि अपने अमल की दुरुस्ती, क़ौल की सच्चाई और दिल की नफ़ासत हासिल करने की क[illegible]शिश करे ता[illegible] अल्ला[illegible] तआला उसके और उसके अहल व अयाल के मामलात में दुरुस्ती पै[illegible]रे और वह [illegible]ब्र व शुक्र का रास्ता इख़्तियार करे और अल्लाह तआला की इताअत बवजहे क[illegible] कर सकें ख़ुद उसकी मुवाफ़क़त से रू गरदानी न करें और दरवेश की ज़ाती इसलाहे अहवाल की ब[illegible]कत अहल व अयाल को भी हासिल हो [illegible]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का [illegible] कि जो ख़ुदा से अपने मामलात दुरुस्त कर लेता [illegible] तो अल्ल[illegible] तआला ब[illegible] से उस[illegible]लात दुरुस्त करा देता है (बीवी बच्चे भी अल्लाह तआला के बन्दे हैं इस तरह बन्दे के मामलात इस[illegible] भी दुरुस्त हो जाएंगे)।

मेहमान के खाने [illegible]च्चों को भी शरीक करे

अगर अल्लाह तआला [illegible] दस्ती अता फ़रमाए और घर मेहमान आयें और अनके लिए ऊम्दा ऊम्दा खाने तैयार [illegible]राये तो बक़द्रे इमकान अहल व अयाल को भी मेहमान के खाने में शरीक करे और इस क़दर खाना तैयार कराए कि जो सब के लिए काफ़ी हो जाए, अगर नादार है और अपनी तंगदस्ती और फ़ेक्र व फ़ाक़ा के बाउस समझता है कि मेहमान की मेहमानदारी में बीवी बच्चे ख़ुद ईसार से काम लेंगे तो तैयार किया हुआ खाना मेहमान को खिला दे हां अगर मेहमान से कुछ बच रहे तो घर वाले भी खा लें कुछ मुज़ाएक़ा नहीं है। इस तरह यह अम्र अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी का मौजिब होगा और अल्लाह तआला उनके रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमाएगा। मेहमान अपना रिज़्क़ अपने साथ ख़ुद लाता है और उसके तुफ़ैल में घर वालों (मेज़बान) के गुनाह कम हो जाते हैं। हदीस शरीफ़ में इसी तरह वारिद है।

ख़ुद दावत में शरीक होना मुनासिब नहीं है

अगर दरवेश की कहीं दावत है लेकिन बच्चों की ज़रुरियात पूरी करने के लिए उस के पास कुछ मौजूद नहीं तो बच्चों को तबाह हाल छोड़ देना और ख़ुद दावत में पहुंच कर ख़ूब खाना

पीना और बच्चों को फ़ाक़ा से रखना इंसानियत के ख़िलाफ़ है और दावत में शरीक होकर गुनाहगार बनना किसी तरह भी जाएज़ नहीं इसलिए ऐसी सूरत में दावत में हरगिज़ न जाए बल्कि बाल बच्चों के साथ फ़ाक़ा पर क़नाअ़त और सब्र करे हां अगर दावत देने वाला मुख़लिस और बाख़बर इंसान है और उसको मालूम है कि दरवेश के बाल बच्चे गिरफ़्तार फ़लाकत और मुब्तलाए फ़ाक़ा हैं तो तन्हा दरवेश का नहीं बुलाना चाहिए बल्कि उसके अहल व अयाल की ज़रुरत के मुताबिक़ उसके घर खाना भेज देना ज़रुरी है और अपने इस इरादा की ख़बर दरवेश को भी दे देना चाहिए ताकि उसके दिल से बच्चों की फ़िक्र का बार उतर जाए।

उलूमे शरीअ़त की तालीम अहल व अयाल को देना ज़रुरी है

फ़क़ीर पर लाज़िम है कि अपने बीवी बच्चों को उलूमे ज़ाहिरी और शरीअ़त की पाबन्दी की तालीम दे ताकि वह किसी बात में (ख़्वाह मामूली हो या अहम) शरीअ़त की मुख़लफ़त न करें उन का हर अमल शरीअ़त की तालीम के मुताबिक़ हो, अपनी औलाद को बाज़[illegible]री लोगों के सुपुर्द न करे कि वह उनको तिजारत के हिरफ़त के गुर सि[illegible]ं बल्कि उनको दीनी [illegible]लीम और अहकामे मज़हब सिखाए और तलबे दुनिया के तर्क पर आमादा [illegible]रे हां अगर नादारी, [illegible]सी और फ़ज़ीहत व रुसवाई का अन्देशा हो तो रोज़ी की तलब के लिए मख़लूक़ की [illegible] रु[illegible] करे और ऐसे नाज़ुक वक़्त में बाल बच्चों को कमाई में लगा दे और खु[illegible] भी उस में लग[illegible] जाए [illegible]किन इहतियात रखे कि हुदूदे शरीअ़त से तजावुज़ न हो, हुदूदे शरीअ़त [illegible]फ़्फ़ुज़ के साथ कसब में मशगूल हो जाना अफ़ज़ल व अनसब है।

औलाद क[illegible] यह ताल[illegible] भी दे कि [illegible]दैन की नाफ़रमानी [illegible] इज्तिनाब करें, बीवी को तालीम दे कि वह अल्ल[illegible]ह के हुक़ूक़ अदा करे शौहर के [illegible]क़ूक़ अ[illegible]कर, शौहर की फ़रमांबरदारी करे और उसको अपनी नादारी [illegible] बे सरो स[illegible]ानी पर [illegible] तालीम दे। (जैसा कि आदाबे निकाह के सिलसिला में हुक़ूक़े जौज़ा के बारे [illegible] लिखा जा चुका है)।

आदाबे सफ़र

मोमिन के सफ़र की [illegible]रज़ व ग़ायत

मोमिन के सफ़र की ग़रज़ व ग़ायत यह होना चाहिए कि वह बुरे ख़सायल को छोड़ कर सिफ़ाते पसंदीदा के हुसूल की जानिब माइल है (सिफ़ाते पसंदीदा को कसब करना चाहता है) इसलिए दरवेश को लाज़िम है कि परहेज़गारी और तक़वा की सेहत के साथ साथ रज़ाए इलाही की तलब में अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क कर दे। दरवेश इस मक़सद से अगर अपने शहर से सफ़र करना चाहता हो तो सबसे पहले उन लोगों की रज़ा जोई करे जिनसे उसके ताल्लुक़ात बिगड़े हुए थे, अपने मां बाप से और अगर वह न हों तो उन लोगों से जो उनके क़ाइम मक़ाम हो सकते हैं जैसे चचा मामूं दादा दादी वग़ैरह से इजाज़त तलब करना ज़रूरी है, जब उनकी रज़ा हासिल हो जाए तो सफ़र के लिए रवाना हो अगर दरवेश साहबे अयाल है और उनके छोड़ जाने में उनको ज़रर पहुंचने या उनके तबाह व बर्बाद हो जाने का अंदेशा हो तो उनका बंदोबस्त किए बग़ैर सफ़र करना जाएज़ नहीं या उन सब लवाहिक़ीन को भी अपने साथ ले जाए। हुज़ूर

सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि आदमी जिस का रिज़्क़ फ़राहम करता है उसको ज़ाया कर देना बड़ा गुनाह है। पस दरवेश चूंकि अहल व अयाल के नफ़क़ा का कफ़ील व ज़ामिन है इसलिए उनको ज़ाया होने से बचाये।

सफ़र की एक शर्त

दरवेश के सफ़र की एक शर्त यह भी है कि सफ़र में उसको हर हर क़दम पर हुज़ूरे क़ल्ब हासिल हो गुज़िश्ता अलाएक़ और दिलबसतगियों की तरफ़ उसकी तवज्जोह न हो न मुस्तक़बिल की, मस्जिदों के ख़्याल में हो बल्कि उसका दिल माज़ी और मुस्तक़बिल के अलाएक़ व अफ़कार से बेनियाज़ हो, हर चीज़ से उसका दिल ख़ाली हो जहां हो हुज़ूरे क़ल्ब उसको हासिल हो। जनाब इब्राहीम बिन रूहा ने फ़रमाया है कि मैं इब्राहीम बिन शैबा के साथ एक मर्तबा सफ़र में गया, इब्ने शैबा ने मुझ से कहा जो कुछ तुम्हारे पास है सब फेंक दो, मैंने इमतसाले अम्र के तौर पर हर एक चीज़ फेंक दी मगर एक दीनार अपने पास रहने दिया, इब्ने शैबा ने फ़रमाया तुम मेरे बातिन को दूसरे मशग़ला में क्यों लगाए हुए हो, जो कुछ तुम्हा[illegible] पास है वह फेंक दो मैं[illegible] वह दीनार भी फेंक दिया, इब्ने शैबा ने फिर फ़रमाया हर वह चीज़ फेंक [illegible] जिससे तुम्हारी तबअ [illegible] वाबस्तगी है यह सुन कर मुझे जूते के वह तिस्मे याद आए जो मेरे पास रखे हुए थे मैं[illegible] वह ति[illegible]मे भी फेंक दिए, खुदा की क़सम मुझे जहां भी उस सफ़र में जूते के तिस्मे की ज़रूरत पे[illegible]ई मुझ[illegible] वह सामने पड़ा मिल गया। इब्ने शैबा ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह के [illegible]दक़ का म[illegible]मला रखता है उसका हाल ऐसा ही हो जाता है। (उसकी हर ज़रूरत आप पूरी हो जाती है)

औराद व व[illegible]ाइफ़े स[illegible]

दरवेश हज़[illegible] की हालत में जो औराद व वज़[illegible] [illegible]या सफ़र की हालत में भी उनको पढ़े उनमें कमी न करे, इस[illegible] कि सफ़[illegible] से तो हा[illegible] अफ़[illegible] होती है न कि कमी। पस सफ़र की वजह से [illegible]माल व अहवाल में किसी क़िस्म का इख़[illegible]ल न पैदा होने दे। रुख़सत का हुक्म और उसका [illegible] तो सिर्फ़ अवाम और कमज़ोर लोगों के लिए है ख़ास और ताक़तवर लोगों के लिए नहीं है, उन के [illegible] तो हमेशा हर हाल में अज़ीमत ज़रूरी और लाज़मी है, तौफ़ीक़े इलाही उनके शामिले हा[illegible] है और रहमते इलाही का उन पर नुज़ूल होता है। अल्लाह के निगहबान उन के साथ निगहबानी के लिए होते हैं। महबूबे हक़ीक़ी उनका हम नशीन होता है और उसकी मोहब्बत के तुफ़ैल हर चीज़ से बेनियाज़ी हासिल हो जाती है। ग़ैब से ऐसी इमदादे पैहम और मुसलसल नाज़िल होती है, महबूबे ख़ास की इआनत में हर वक़्त सरगर्म रहता है ग़ैबी लशकर उसकी इआनत के लिए हलक़ा ब हलक़ा मामूर होते हैं, इसलिए सफ़र उनके लिए मज़ीद तक़वीयत का बाइस होता है इसलिए सफ़र से ज़्यादा उनके लिए और कोई चीज़ बेहतर नहीं।

सफ़र में दरवेश से वह तमाम ख़्वाहिशात और तमन्नायें गरेज़ान हो जाती हैं जो हज़र में उसका मक़सूद बने रहते हैं और मख़लूक़ से दूरी हो जाती है जो बुतों की हैसियत रखते हैं, यह माबूद उसके लिए गुमराही में सलीब से ज़्यादा और शैतान से बढ़कर अग़वा व गुमराह करने वाली है चीज़ें हैं।

आग़ाज़े सफ़र ही से दिल की निगरानी करना

फ़क़ीर के लिए मुनासिब है कि आग़ाज़े सफ़र ही से दिल की निगरानी करे ग़फ़लत की हालत में सफ़र का आग़ाज़ न करे। यही कोशिश करता रहे कि सफ़र में ख़ुदा दिल से किसी हाल में फ़रामोश न हो, यह सफ़र किसी दुनियावी ग़रज़ पर मबनी नहीं होना चाहिए इसका मक़सूद हज, मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत या शैख़ की मुलाक़ात हो।

एक जगह पर क़याम

असनाए सफ़र में दरवेश को अगर किसी जगह पर सफ़ाए क़ल्ब और कमाले ज़िन्दगी मयस्सर आ जाए तो वहां मोक़ीम हो जाए उस जगह को न छोड़े सिर्फ़ इस सूरत में उस जगह को छोड़े जब अल्लाह तआला की तरफ़ से क़तई हुक्म मिल जाए या बज़ोरे तक़दीर ऐसा करना पड़े उस सूरत में जहां जाने का हुक्म हुआ है वहां चला जाए लेकिन यह हुक्म उस दरवेश के लिए है जो उन लोगों में शामिल हों जो राज़ी बरजाए इलाही अ[illegible]र तक़दीर के इशारों प[illegible]चलते हैं और अपनी ख़्वाहिशात और इरादों से आज़ाद मुरादियत और म[illegible]यित के दर्जा पर फ़ा[illegible]न हों।

मक़बूलियत वजहे हिजाब है

अगर किसी मक़ाम पर फ़क़ीर को इज़्ज़त और क़[illegible] अवाम हासि[illegible] हो [illegible]ाए तो उस को अपने लिए मौजिबे परेशानी समझे और उस मक़ाम को फ़ौ[illegible]ोड़ दे ता[illegible] यह मक़बूलियत उस के लिए हिजाब और ख़ुदा से दूरी का मौजिब न बन जाए लेकिन फ़क़ीर के लिए यह हुक्म उस वक़्त है जबकि उसकी [illegible]शाते नफ़[illegible] बाक़ी हों अगर न[illegible]ानी ख़्वाहिशात फ़ना हो चुकी हैं तो उस वक़्त [illegible]वेश की नज़र में न मख़लूक़ [illegible] कोई [illegible]ी बाक़ी होती है और न उनकी क़बूलियत उसके लिए वजहे [illegible]ाज़िश बन[illegible] है यह [illegible] उसके दिल से महव हो चुका होता है, दरवेश और मख़[illegible]क़ के [illegible]र्मियान हिजाबात हाएल हो जाते हैं [illegible]र उनके निगरां दिल इस अम्र की निगरानी करते है[illegible]क उनके अंदर दाख़िल न होने पाए वरना शिर्क पैदा हो जाएगा और तौहीद की मंज़िल मुतज़लज़ल [illegible] जाएगी।

सफ़र में रफ़ीक़ों के [illegible] रहने का तरीक़ा

सफ़र में रफ़ीक़ाने सफ़र के साथ रहने सहने का तरीक़ा यह है कि अपने हम सफ़रों से ख़ुश अख़लाक़ी से पेश आये तमाम बातों में उनके साथ सुलह व आशती को क़ाइम रखे उनसे मुख़ालफ़त या झगड़ा न करे उनकी ख़िदमत में मशगूल रहे लेकिन ख़ुद उनसे किसी क़िस्म की ख़िदमत न ले।

सफ़र में हमेशा पाक रहे अगर पानी मयस्सर न आ सके तो तयम्मुम कर ले जिस तरह हज़र में पाक रहना मुस्तहब है सफ़र में भी मुस्तहब है। वुज़ू मोमिन का हथियार है। हदीस शरीफ़ में आया है मोमिन के लिए वुज़ू तमाम शयातीन और मूज़ीयों से बचने के लिए एक अमान है।

सफ़र मे अमरदों के साथ न रहे

दरवेश के लिए ज़रूरी है कि ख़ुसूसियत के साथ अमरदों के साथ सफ़र न करे अमरदों की सोहबत और उनका क़ुर्ब शैतानों की दोस्ती से भी ज़्यादा ख़तरनाक है उनका क़ुर्ब हवस परस्ती,

फ़ितना अंगेज़ी, नफ़्सानी उयूब और तोहमत का ज़रिया बन जाती है। उनकी सोबहत और कुर्ब में सख़्त ख़तरा है वहां अगर दरवेश शैख़े वक़्त हो या आरिफ़ बिल्लाह, अबदाल, मासूम अल्लाह वाला, नेकी की तालिम देने वाला, मख़लूक़ का अदब आमोज़, अज़ाबे इलाही से डरने वाला, मख़लूक़ को ऐबों से पाक बनाने वाला, अल्लाह और मख़लूक़ के दर्मियान वास्ता, हक़ व नाहक़ को परखने वाला तो ऐसी सूरत में उनके कुर्ब की परवाह न करे, उसकी नज़र में नौजवान और बूढ़े सब बराबर हैं।

ख़िदमते शैख़

अगर किसी शहर में पहुंचने पर मालूम हो कि वहां कोई शैख़ मौजूद है तो सबसे पहले उसकी ख़िदमत में पहुंचे उसको सलाम करे उसकी ख़िदमत में मसरूफ़ हो जाए गुरूर, तबख़्तुर, पिन्दार और खुद पसंदी की निगाह से उसको न देखे ताकि उसकी ख़िदमत से जो फ़वाइद हासिल होते उनसे महरूम न रहे। अगर उस शहर का शैख़ उसको कुछ अता करे तो अपने दूसरे रोफ़क़ाए सफ़र को भी उस में शरीक करे सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए उसको मख़सूस न करे।

अगर रोफ़क़ाए सफ़र में से किसी को कोई उज़्र [illegible] पेश आए तो उसको छोड़ कर न चल दे बल्कि खुद भी ठहर जाए ताकि वह रफ़ीक़े सफ़र उसके हाथ से [illegible] जाए। अल्लाह जआ़ला ही सबको नेकियों की तौफ़ीक़ देने वाला है।

समाअ़ के आदाब

समाअ़ के आदाब

समाअ़ की महफ़िल में शरीक हो तो समाअ़ में [illegible] और बनावट का इज़हार न करे और अपने इख़्तियार से समाअ़ का इस्तिक़बाल न करें, (खुद बख़ुद समाअ़ की महफ़िल में शरीक होने की कोशिश न करें) अगर इत्तेफ़ाक़ से समाअ़ का मौक़ा मिल जाए तो सुनने वाले पर लाज़िम है कि मुहज़्ज़ब हो कर बैठे, दिल को अल्लाह की याद में मसरूफ़ रखे और कोशिश करे कि गफ़तल व निसयान के वसवसों से दिल की बेदारी न जाती रहे, जब कानों में कोई आवाज़ आए तो क़ारी के बारे में ऐसा ख़्याल करे कि वह अल्लाह की तरफ़ से उन वारदाते ग़ैबी का इज़हार कर रहा है यानी उन मज़ामीन को अदा कर रहा है जो जन्नत की तलब, दोज़ख़ का डर, मोहब्बत और शैफ़तगी, अल्लाह की ना ख़ुशी का डर और महारत का ज़ौक़ बढ़ाने वाले हैं ऐसे वक़्त में वारदाते दिली की तरफ़ बढ़ने और इशारए ग़ैबी का फ़ौरन इस्तिक़बाल करे, अगर समाअ़ ऐसा हो कि क़ारी की ज़बान उसकी अपनी ज़बान बन जाए और क़ारी की ज़बान से यह खुद अल्लाह तआ़ला से ख़िताब कर रहा है लेकिन यह याद रखना चाहिए कि समाअ़ का कोई विजदान और क़ल्बी इक़्तिज़ा अबदीयत और आदाबे शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो।

महफ़िले समाअ़ में शैख़ की मौजूदगी

अगर समाअ़ की महफ़िल में शैख़ की मौजूदगी हो तो हत्तल वसअ दरवेश को पुरसुकून रहना चाहिए और शैख़े तरीक़त के वक़ार को मलहूज़ रखना चाहिए अगर कैफ़ से मग़लूब हो जाए तो बक़द्रे ग़लबा, कैफ़ व वज्द (हरकत) करना दुरुस्त है और जब ग़लबा ख़त्म हो जाए तो फ़ौरन

पुरसुकून हो जाए और वक़ारे शैख़ का लिहाज़ रखे। क़ारी या क़व्वाल से दरवेश का यह तक़ाज़ा करना कि क़िरत को छोड़ कर शेअर ख़्वानी शुरू कर दे दुरूस्त नहीं जबकि हमारे ज़माने में रिवाज हो गया है। अगर यह अहले समाअ अपने इरादे, तख़य्युल की यकसूई और रूहानी तसर्रूफ़ में सच्चे और सादिक़ हैं तो कलामे इलाही के सुनने से उनके दिलों में और उनके आज़ा में तास्सुर पैदा होना चाहिए न कि दूसरों का कलाम सुनने से उनको झुरझुरी आ जाए, कुरआन पाक तो उनके महबूब का कलाम है उसी का बयान है, उस में महबूबे हक़ीक़ी का ज़िक्र, औलिया साबेक़िन का ज़िक्र है, आशिक़ व माशूक़, मुरीद व मुराद का ज़िक्र है झूठी मोहब्बत के दावेदारों पर अताब और उनकी मज़म्मत मौजूद है पस जब उनकी सदाक़त और इरादत में ख़लल वाक़ेअ है और उनका दावा बिला सुबूत है तो साबित हो गया कि यह न उनका बातिनी जज़्बा है और न अंदरूनी सिद्क़ है, न उसका नाम मारेफ़त है न कश्फ़, न उनका मक़सूद उलूमे अजूबा का हुसूल है न अंदरुनी असरार पर इत्तेला न कुर्ब व उन्स के मक़ाम तक रसाई है और न इस तरह महबूब तक पहुंच हो सकती है और न हक़ीक़ी समाअ का उनके कुलूब पर वुरूद हो सकता है, उनका (हालते वज्द में) खड़ा हो जाना महज़ रसमी और आदतन है, हक़ीक़ी समाअ तो एक इल्हाम है और इस हाल में अल्लाह तआला अपने जानने वालों ख़ास औलिया और अबदाल से अपना मख़सूस तरीक़ा से कलाम करना है लेकिन यह मुद्दई इससे बिल्कुल बेबहरा होते हैं। यह तो उन अशआर को सुनकर खड़े हो जाते हैं जो माद्दी कुव्वतों को पहचान में लाने वाले और आशिक़ों की कुव्वते शहवानी की आग को भड़काने वाले होते हैं। यह अशआर क़ल्बी और रूहानी जज़बात को नहीं भड़काते, पस तमाम शोअरा को चाहिए ख़्वाह फ़क़ीरे हक़ हों या फ़क़ीरे ख़ल्क़, फ़क़ीरे हक़ीक़त हों या फ़क़ीरे सूरत, फ़क़ीरे दुनिया हों या फ़क़ीरे आख़िरत कि क़ारी और कव्वाल से किसी शेअर की तकरार की ख़्वाहिश न करें बल्कि इस आरज़ू को खुदा के सुपुर्द कर दें अगर उसकी मशीयत होगी और सुनने वाला फ़क़ीर सच्चा होगा और तकरार में उसकी फ़ौज़ व फ़लाह और रूहानी मरज़ का इलाज होगा तो अल्लाह तआला उसके बजाए किसी दूसरे शख़्स को इस बात पर मुक़र्रर फ़रमा देगा और उसकी तरफ़ से तकरार की ख़्वाहिश पैदा होगी या ख़ुद क़व्वाल के दिल में ख़्वाहिश पैदा हो जाएगी और वह उन अशआर की तकरार करेगा।

वज्द में मदद लेना

वज्द की हालत में किसी दूसरे से मदद चाहना फ़क़ीर को ज़ेबा नहीं हां अगर दूसरे दरवेश उससे मदद लेना चाहें तो उनकी मदद में मुज़ाएक़ा नहीं दूसरे से मदद लेना वज्द की कमज़ोरी की दलील है।

अगर दरवेश कोई आयत और या शेअर सुन कर वज्द में आए तो किसी शख़्स को उसकी मज़ाहमत नहीं करना चाहिए (जैसा कि आम तौर पर पकड़ लिया जाता है या लोग इधर उधर से थाम लेते हैं) बल्कि उसकी इस हालत को उसी के सुपुर्द कर देना चाहिए अगर अहयानन कोई थाम ले जो वज्द वाले को चाहिए की थामने वाले के रोकने से रूक जाए। अगर दरवेश किसी आयत या शेअर की वजह से वज्द या कैफ़ में आ जाए तो उसको आज़ाद ही छोड़ देना बेहतर है। अगर किसी शख़्स को इसमें बनावट और तसन्नोअ़ नज़र आए तो बरदाश्त करे उसकी परदा पोशी ज़रूरी है, अगर यह ज़रूरी हो कि उसको तंबीह की जाए तो उसको नर्मी

और मोहब्बत के साथ समझा दिया जाए या सिर्फ़ इस बात को दिल में रख ले ज़बान से कुछ न कहे, हाल या हक़ीक़ी है या तसन्नोअ़ है उसकी शिनाख़्त के लिए कुव्वते हाल सफ़ाए बातिन, तबहहुरे इल्मी असरार व रमूज़ के से आगाही होना ज़रूरी है।

दरवेश का अताए ख़िरक़ा

अगर दरवेश वज्द में आकर अपना ख़िरक़ा उतार दे तो दूसरों को उसके अता करने की चन्द सूरतें हैं। अगर साहिबे ख़िरक़ा अपना ख़िरक़ा क़व्वाल को देना चाहता है तो क़व्वाल को दे देना चाहिए। वह क़व्वाल का हक़ और हिस्सा है अगर मजमा के वस्त में उसको फेंक दिया है तो उसका इख़्तियार साहिबे ख़िरक़ा ही को है उससे दरयाफ़्त करना चाहिए की फेंकते वक़्त किसको अता करने का इरादा था अगर जवाब में बताया जाए कि दरवेशों को देने का इरादा था तो फिर उसकी तरफ़ से दरवेशों के लिए अतिया होगा और दरवेशों के लिए वह फ़ुतूह और नज़राना में शामिल होगा जैसा वह चाहें करें और अगर दरवेश यह जवाब दे कि चूंकि मेरे शैख़ ने ख़िरक़ा उतार कर फेंका था उसकी तक़लीद और पैरवी में मैंने भी ऐसा ही किया तो ऐसा दरवेश बड़ा ज़ईफ़ुल हाल है और वज्द उसके लिए [illegible]ना नहीं है, ख़िरक़ा उतारने में शैख़ की मुवाफ़क़त तो उस शख़्स के लिए ज़ेबा है जो वज्द और हाल में शैख़ [illegible] तक़लीद व मुवाफ़क़त कर रहा हो।

आज कल दरवेशों में यह तरीक़ा राएज हो गया है [illegible] एक रस्म सी बन गई है कि दूसरे की देखा देखी अपना ख़िरक़ा उतार फेंकते हैं यह बड़ी ना रवा सी बात है इस की कुछ असल नहीं है और बाई हमा जि[illegible] दरवेश ने [illegible]ने सिफ़ते वज्द के [illegible] वस्फ़ ख़िरक़ा उतार कर फेंक दिया तो ब इक़्ज़ाए रस्म ख़िरक़ा का इ[illegible]तयार उस शैख़ [illegible] हासिल है जिस की तक़लीद में यह ख़िरक़ा फेंका गया था अगर ख़िरक़ा फेंकने [illegible]वेश यह कहे कि मैंने यह फ़ेअ़ल हाज़िरीन की इत्तेबाअ़ में करना चाहा [illegible] तो ऐसा दरवेश से [illegible] पहले दरवेश से भी ज़्यादा ज़ईफ़ुल हाल है क्यों[illegible] हाल और वज्द में मुवाफ़क़त क़ौम के साथ की गई थी तो फ़ेअ़ले अता में भी मुवाफ़क़त [illegible]ना ज़रूरी था और अब इत्तेफ़ाक़ बहुत कम होता है कि तमाम क़ौम मशरब और हाल में एक [illegible] जाएं। बहर नौअ़ दरवेश के इस फ़ेअ़ल को क़ौम की तरफ़ रुजूअ किया जाएगा जो [illegible] के दूसरे ख़िरक़ों का हुक्म होगा वही हुक्म उस दरवेश के ख़िरक़ा पर लगाया जाएगा।

अगर दरवेश कहे कि ख़िरक़ा फेंकते वक़्त मेरा कोई इरादा और क़स्द ही न था कि मैं किसी को यह अता करूंगा तो उससे मुतालबा किया जाएगा कि अब वह अपने इख़्तियार से काम ले और किसी को अता कर दे (हाज़िरीन में से किसी को उसका इख़्तियार नहीं होगा) शैख़ को भी यह इख़्तियार नहीं होगा अगर दरवेश कहे कि यक़ीनी तौर पर मेरा कुछ इरादा नहीं था बल्कि मैंने यह काम इशारए ग़ैबी की बुनियाद पर किया है तो दरवेश का यह क़ौल जानदार है और उसकी तरीक़त में असर है, गोया अल्लाह तआ़ला ने उसको हुक्म दिया कि अपना ख़िरक़ा उतार कर नूरे क़ुरबत और लुत्फ़ व राहत का जो ख़िलअ़त उसको मरहमत हुआ है उसको पहन ले इस सूरत में अताए ख़िरक़ा का इख़्तियार अताए शैख़ को है (मुरीद को नहीं) अगर शैख़ वहां मौजूद न हो तो दरवेशों को इख़्तियार है कि वह उस ख़िरक़ा को क़व्वाल को अता कर दे। कुछ

दुनियादार हाज़िरीने मजलिस उस ख़िरक़ा को ख़रीद लेते हैं और उनकी इस ख़रीदारी का मक़सद यह होता है कि ख़रीद कर मालिके ख़िरक़ा को वापस कर दें (इस से दरवेश की ख़ूशनूदी हासिल हो जाएगी) लेकिन तरीक़त में यह फ़ेअ़ल अच्छा और पसंदीदा नहीं है अलबत्ता अगर ख़रीदने वाले में जवांमर्दी और दरवेश से कमाल अक़ीदत हो तो दूसरी बात है। फ़क़ीर के लिए ऐसा फ़ेअ़ल बुरा है इस लिए कि उसने ख़िरक़ा फेंक कर अपने वज्द की सच्चाई और हाल की सदाक़त ज़ाहिर की है अब अगर उसको वापस लेना है तो ख़ुद ही फ़ेअ़ले हसन की तकज़ीब कर रहा है अलबत्ता अगर यह बात शैख़ के इशारे से हो जो शैख़ के हुक्म की तामील में उसको ले ले और बाद को उतार कर किसी और को बख़्श दे।

अगर मजलिस के वस्त में कोई चीज़ किसी ने डाल दी है तो उसमें सब का बराबर का हक़ है अगर शैख़ मौजूद हो तो मुनासिब है कि चन्द लोगों या किसी एक को अता फ़रमा दे, शैख़ की इस राय को बे चूं व चरा मान लेना चाहिए अगर शैख़ की मौजूदगी में दूसरे दरवेश अपना अपना ख़िरक़ा वापस भी ले ले तब भी उस दरवेश को वह ख़िरक़ा वापस नहीं लेना चाहिए, अगर शैख़ मौजूद न हो और अकेला हो तो उसको दूस[illegible]रवेशों की मुताबिक़त [illegible] मुज़ाएक़ा नहीं है ताकि दूसरो को उसके इनफ़ेरादी अमल से ख़जालत न हो और उनमें नाराज़[illegible] पैदा न हो अगर ख़िरक़ा वापस लेने के बाद (शैख़ की अदमे मौजूदगी में) फिर किसी क[illegible] दिया तो ज़्यादा बेहतर है अगर किसी ऐसे शख़्स के लिए मख़सूस कर दे जो [illegible]क़्त महफ़िल में मौजूद नहीं तो तब भी जाइज़ है।

तक़ाज़ाए वक़्त और [illegible]जाइशे हा[illegible] के चन्द उमूर बतौरे [illegible]लासा हम ने लिख दिए हैं और आदाबे फुक़रा [illegible]हरीर क[illegible] दिए हैं अ[illegible]म इ[illegible] मबहस को ख़त्म करते हैं। मुसाफ़िर ख़ानों, सबीलों में दाख़ि[illegible] होने से ता[illegible]ल्लुक़ रखने वाले, [illegible] वग़ैरह के आदाब जो दरवेशों ने ईजाद किए हैं औ[illegible] उनको [illegible] बना दि[illegible] है उनकी [illegible] द[illegible]ों की सोहबत से हासिल हो सकती है इस क़िस्[illegible] के [illegible]क्सर मबाहिस चूकिं हम बहस अल अदब फ़ी शरअ़ में लिए चुके हैं इस लिए यहां उनका [illegible]दा नहीं करते। अब हम एक और बाब उन चीज़ों के बयान में शुरू करते हैं जो तरीक़त की बुनि[illegible] हैं और यह सात चीज़े हैं यानी मुजाहिदा, तवक्कुल, हुसने अख़लाक़, शुक्र व सब्र, [illegible] और सिद्क़।

बाब 27

अरकाने तरीक़त

मुजाहिदा

मुजाहिदा की अस्ल

मुजाहिदा की असल अल्लाह तआला का इरशाद है:

जो लोग हमारी राह में सई व कोशि'श करते हैं हम अपने रास्ते उनको खुद बता देते हैं।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से अबू नसर ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लोगों ने दरयाफ़्त किया कि अफ़ज़ल जिहाद कौन सा है, हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ बात कहना अफ़ज़ल जिहाद है। यह हदीस बयान करते वक़्त हज़रत अबू सईद ख़ुदरी के आंखों से आंसू बहने लगे।

हज़रत अबू अली दक़्क़ाक़ ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने अपने ज़ाहिर को मुजाहिदा के ज़रीये आरास्ता किया अल्लाह तआला उसके बातिन को मुशाहिदा के ज़रीये आरास्ता फ़रमा देगा जैसा कि इरशाद फ़रमाया है: जो लोग हमारी राह में सई व कोशिश करते हैं हम अपने रास्ते उनको खुद बता देते हैं, जो सालिक इब्तदा में साहिबे मुजाहिदा नहीं होता उसको तरीक़त की हवा भी नहीं लगती।

अबू उसमान मग़रबी ने इरशाद फ़रमाया अगर मुजाहिदा के बग़ैर कोई शख़्स यह ख़्याल करे कि तरीक़त में उस पर कोई बात खोल दिया जाएगी या उसको किसी बात का कश्फ़ हो जाएगा वह ग़लती पर है उसके लिए ऐसा ना मुमकिन है। अबू अली दक़्क़ाक़ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स शुरू में मुजाहिदा न करे उसके लिए आख़िर में आराम नहीं है और यह भी इरशाद फ़रमरया कि हरकत में बरकत है ज़ाहिरी आमाल बातिन की बरकतों को लाने वाले हैं। हसन बिन अलविया ने अबू यज़ीद के बारे में बताया कि उनका इरशाद है मैं अपने नफ़्स के बारे में बारह बरस तक सोया रहा और पांच साल तक अपने दिल का आईना रहा और एक साल तक आईना के अंदर की चीज़ों का मुशाहिदा करता रहा फिर मैंने देखा कि मेरे अंदर ज़ाहिर आसार मौजूद हैं उसके दूर करने के लिए मैंने मज़ीद बारह साल तक मुजाहिदा किया फिर नज़र कि तो वह जुन्नार मौजूद था मैंने उसको तोड़ने के लिए मज़ीद पांच साल तक अमल किया कि किसी तरह यह ख़त्म हो जाए उस वक़्त मुझे कश्फ़ हुआ उसके बाद मैंने मख़लूक़ की तरफ़ देखा तो उनको मुर्दा पाया उस वक़्त मैंने जनाज़ा की चार तकबीरें उन पर पढ़ दीं।

हज़रत जुनैद ने इरशाद फ़रमाया कि मैं हज़रत सिर्री सिक़्ती को खुद यह फ़रमाते सुना कि ए नौजवानो! इससे क़ब्ल की तुम मेरी हालत को पहुंचो उसकी कोशिश करो, वरना आख़िर उम्र में तुम कमजोर हो जाओगे और इस तरह क़ासिर रहोगे जिस तरह मैं क़ासिर रहा। हज़रत सिर्री

सिक़्ती ने जिस ज़माने में यह बात फ़रमाई वह इबादत के उस दर्जा पर थे कि जवान वहां तक नहीं पहुंच सकते। हज़रत हसन फ़ज्जाज़ रहमतुल्लाह अलैह का इरशाद है कि मुजाहिदा की बुनियाद तीन चीज़ों पर रखी गई है यानी फ़ाक़ा के बग़ैर न खाए, नींद से मग़लूब हो जाने के बग़ैर न सोए, बे ज़रूरत न बोले।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम का इरशाद है कि जब तक आदमी इन छः दुशवार मंज़िलों (घाटियों) को तय नहीं कर लेता सालेहीन के मरतबा को नहीं पहुंचता। पहली घाटी यह है कि अपने ऊपर ऐश व नअ्म का दरवाज़ा बन्द कर ले और सख़्ती का दरवाज़ा खोल दे, दूसरी घाटी यह है कि अपने लिए इज़्ज़त का दरवाज़ा बंद कर ले और ज़िल्लत का दरवाज़ा खोल ले, सोम नींद का दरवाज़ा बंद कर दे और बेदारी का दरवाज़ा खोल दे, चहारुम आराम का दरवाज़ा बंद कर दे और तकलीफ़ का दरवाज़ा खोल ले, पंजुम दौलत का दरवाज़ा बन्द कर दे फ़ेक्र का दरवाज़ा खोले, शशुम उम्मीद का दरवाज़ा बन्द कर दे और मौत की तैयारी का दरवाज़ा खोल ले।

हज़रत इब्ने उमर बिन नजीब फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को नफ़्स अज़ीज़ होता है उसकी नज़र में उसका दीन ख़्वार होता है, अबू अली रूदबारी ने फ़रमाया कि अगर सूफ़ी पांच ही दिन के बाद यह कहने लगे कि मैं भूका हूं तो उसको बाज़ार का रास्ता बताओ और उसको खाने का हुक्म दो (वह मुजाहिदा का क़ाबिल नहीं है) हज़रत जुन्नून मिस्री फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दे को इससे बढ़ कर कोई इज़्ज़त नहीं दी कि वह अपनी ज़िल्लते नफ़्स को पहचाने, और इससे बढ़ कर उसको कोई ज़िल्लत नहीं दी कि वह अपने ज़ाते नफ़्स पर पर्दा डाल दे। हज़रत इब्राहीम ख़वास फ़रमाते हैं कि मुझे जिस चीज़ ने डराया मैंने उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। मोहम्मद बिन फ़ज़्ल ने फ़रमाया, नफ़्स की ख़्वाहिशों से छुटकारे का नाम राहत है।

आफ़त आने के असबाब

हज़रत मनसूर बिन अब्दुल्लाह का इरशाद है कि मैंने अबू अली रूदबारी को फ़रमाते सुना कि आफ़त तीन वजूह से आती है, तबीयत की ख़राबी के ख़राबी से। मैंने दरयाफ़्त किया तबीया की ख़राबी क्या है? फ़रमाया हराम खाना, मैंने अर्ज़ किया कि आदत के जड़ पकड़ लेने से क्या मुराद है फ़रमाया बुरी न[illegible] से फ़ायदा उठाना और दूसरों को पीठ पीछे बुरा कहना, फिर मैंने अर्ज़ किया कि सोहबत कि ख़राबी क्या है? फ़रमाया जब नफ़्स में कोई ख़्वाहिश पैदा हो तो उसकी पैरवी करना। हज़रत नसराबादी का इरशाद है कि तेरा नफ़्स बड़ा क़ैद खाना है जब तू उससे निकल आएगा तो राहते अबदी तुझ को मय्यसर आ जाएगी। हज़रत अबुल हसन वारिक़ का इरशाद है कि हमारे इब्तिदाई मुजाहिदा के ज़माने में जब हम मस्जिद अबू उसमान में मुक़ीम थे तो हमारे फ़राएज यह थे कि हम को जो कुछ फ़ुतूह हासिल हों हम दूसरों को दे दें और रात को कोई सिक्का हमारे पास बाक़ी न बचे। जो शख़्स हमारे साथ बुराई से पेश आए हम महज़ अपने नफ़्स की ख़ातिर बदला न लें बल्कि उससे माफ़ी मांग लें और उसके मुक़ाबिले में आजिज़ी इख़्तियार करें और जब कभी हमारे दिलों में किसी के बारे में हिक़ारते अहसास पैदा हो तो हम उसकी ख़िदमत के लिए मुसतैद हो जाएं।

ख़्वास और अवाम का मुजाहिदा

आम लोगों का मुजाहिदा यह है कि आमाल को पूरी तरह अंजाम दें और ख़्वास का मुजाहिदा

यह है कि अपने अहवाल का तसफ़िया करें, भूक और प्यास का बरदाश्त करना और शब बेदारी आसान है लेकिन बुरे अख़लाक़ का इलाज दुशवार और मुश्किल होता है।

आफ़ाते नफ़्स

आफ़ाते नफ़्स क्या हैं

दूसरे लोगों की ज़बान से अपनी तारीफ़ सुनना और मदह सराई से नफ़्स का लज़्ज़त अंदोज होना नफ़्स के लिए आफ़त है। नफ़्स कभी कभी इबादात का बार उठाता है और फिर उस पर रिया और निफ़ाक़ ग़ालिब आ जाता है और इसकी अलामत यह है कि जब लोगों की जानिब से उसकी तारीफ़ का सिलसिला टूट जाता है और बर अक्स लोग उसकी बुराई करने लगते हैं तो नफ़्स इबादात में सुस्ती और काहिली की तरफ़ माएल हो जाते हैं। नफ़्स की ख़राबियों के शिर्के दावा और उसकी दरोग़ गोई का पर्दा उस वक़्त उठ जाता है जब दावा (मुजाहदा) को रियाज़त के मेआर पर परखा जाता है और जब तक उसके तक़वा के इम्तिहान न लिया जाए वह मुत्तक़ी लोगों जैसी बातें करता है लेकिन जब तुम उसके तक़वा के ख़्वास्तगार या ज़रूरत मंद होगे तो उस वक़्त वह तुम को मुशरिक, रियाकार और ख़ुद पिन्दार [illegible] तुम होगा और जब तुम उससे इनायत के तालिब होगे तो उसका दावा ग़लत साबित [illegible] इख़लास की आज़माईश से पहले अहले यक़ीन के होने का मुद्दई होगा और अपना मोतवाज़ होना ज़ाहिर करेगा बशर्ते कि ग़ज़ब के वक़्त उसके ख़िलाफ़ ख़्वाहिश की कोई चीज़ पैदा न हो।

अख़्लाके हमीदा की हक़ीक़त

यही हाल उसके दावा सख़ावत, करम, ईसार, [illegible] बेनियाज़ी और जवांमर्दी जैसे अख़्लाके हमीदा का है यही अख़्लाक़ औलिया अल्लाह और अबदाल के हैं उनका दावा करने वाला महज अपने बातिल आरज़ू [illegible] और हिमाक़त के तेहत दावा करता है लेकिन जब तुम उनसे उन फ़ज़ाएले अख़्लाक़ का मुतालबा करोगे और उसको इम्तिहान की कसौटी पर कसोगे तो उनके उस दावे की हक़ीक़त सराब से [illegible] न होगी, जिस को दूर से प्यासा शख़्स पानी समझता है लेकिन पास जाने पर उसको कुछ नहीं मिलता, अगर उनके पास कुछ भी सिद्क़ व इख़्लास होता तो उह उस मख़लूक़ के सामने उस तसन्नो और बनावट से काम न लेते, जो न उनके नफ़ा की मालिक है और न नुक़सान की। (न उनको नफ़ा पहुंचा सकती है न नुक़सान)।

नफ़्स की हक़ीक़त

हज़रत अबू हफ़्स फ़रमाते हैं कि नफ़्स सरासर ज़ुल्मत है उसका चिराग़ यानी रौशनी करने वाला उसका इख़्लास है, उसके चिराग़ इख़्लास का नूर तौफ़ीक़े इलाही है। पस जिस के बातिन को तौफ़ीक़े इलाही हासिल न हो तो वह सरासर तारीक रहेगा। अबू उसमान का इरशाद है कि जिस शख़्स को अपने नफ़्स की कोई बात भी अच्छी लगती है तो वह शख़्स अपने नफ़्स का ऐब नहीं देख सकता, नफ़्स का ऐब तो उसी शख़्स को नज़र आता है जो हर हालत में अपने नफ़्स को मुशतब्हा समझता है।

आमाले नफ़्स को पसंद करना

हज़रत अबू हफ़्स का इरशाद है कि लोगों में सब से जल्द वह शख़्स हलाक होने वाला है जो अपने ऐब को नहीं पहचानता मआसी तो कुफ़्र के क़ासिद होते हैं। हज़रत अबू सूफ़ियान ने फ़रमाया कि मैंने अपने नफ़्स के किसी अमल को पसंदीदगी की नज़र से नहीं देखा कि जिस से मुझे सवाब की उम्मीद होती (यानी मैंने अपने नफ़्स के किसी अमल से सवाब कि उम्मीद नहीं रखी) हज़रत सिर्री सिक़्ती का इरशाद है कि उमरा के पड़ोस, बाज़ारी क़ारियों और दरबारी आलिमों के कुर्ब से बचते रहो। हज़रत जुन्नून मिस्री ने फ़रमाया मख़लूक़ में छः चीज़ों की वजह से फ़साद हुआ है (1) अमले आख़िरत के सिलसिला में उनकी नीयत की ख़िफ़्फ़त (2) उनके जिस्म का ख़्वाहिशात के लिए वक़्फ़ हो जाना (3) मौत से क़रीब होने के बावजूद लम्बी उम्मीदें बांधना (4) मख़लूक़ की रज़ामंदी को ख़ालिक़ की रज़ामंदी से मुक़द्दम समझना (5) सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नज़र अंदाज़ करके दिली ख़्वाहिशात पर अमल करना (6) बुज़ुर्गाने सल्फ़ की मामूली ख़ताओं और लग़ज़िशों को अपनी नफ़्स परस्ती के लिए हीला बना लेना और उन अकाबिर के आमाले हसना को नज़र अंदाज़ कर देना।

मुजाहिदा की अस्ल

मुजाहिदा की अस्ल यह है कि ख़्वाहिशाते नफ़्स की ख़िलाफ़वर्ज़ी की जाए इस लिए चाहिए कि अपने नफ़्स को ख़्वाहिशों और लज़्ज़तों से दूर रखे। नफ़्स उमूमन जिस चीज़ के ख़्वाहां रहता है उसके ख़िलाफ़ करने की कोशिश करे अगर नफ़्स ख़्वाहिशात के दर पै हो तो ख़ौफ़े इलाही और तक़वा से उसकी बाज़दाश्त करे, और अगर वह फिर भी म[illegible]न व सरकशी हो और इताअत व तामील में उससे तवक्कुफ़ सरज़द हो तो ख़ौफ़[illegible] का मुरतकिब हुआ और इजतिनाब इहतराज़ पर कारबंद होकर उसको बाज़ रखे (ख़्वाहिशात के घोड़े पर इजतिनाब व एहतराज़ के कोड़े लगाए ताकि [illegible] तरफ़ का क़स्द न करे)।

मुराक़बा

मुराक़बा की अहमीयत

मुजाहिदा बग़ैर मुराक़बा के मुकम्मल नहीं होता हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशादे गरामी में इसी तरफ़ इशारा है, हुज़ूर ने फ़रमाया कि जब जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आप से एहसान की हक़ीक़त दरयाफ़्त फ़रमाई तो हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया एहसान यह है कि तुम अल्लाह तआला की इबादत इस तरह करो गोया तुम उसको देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देखते तो बिला शुब्हा वह तुम को देख रहा है। लिहाज़ा मुराक़बा यह है कि बन्दा यह जान ले कि अल्लाह तआला उस पर मुत्तला है और इसी एहसास के हमेशा क़ाएम रहने का नाम मुराक़बा है।

यह मुराक़बा तमाम ख़ूबियों और भलाईयों कि असल है और इस दर्जा तक सालिक की रसाई और इन चीज़ों के बग़ैर नहीं होती, आमाल का मुहासबा जल्द अज़ जल्द इसलाहे हाल, राहे हक़ पर साबित क़दमी, अल्लाह तआला से दिली लगाव की निगहदाश्त, किसी सांस को बेकार और यूंही ज़ाया न कर देना है। यह पास अन्फ़ास है, पस समझ लेना चाहिए कि अल्लाह

तआला सालिक का निगरां हैं उसके दिल के करीब है और उसके तमाम अहवाल से वाकिफ है, उसकी तमाम बातें सुनता है।

मुजाहिदा की तकमील

इन औसाफ के बग़ैर मुजाहिदा की तकमील नहीं होती: (1) अल्लाह तआला की मारफत (2) अल्लाह के दुशमन इब्लीस (लईन) को पहचानना (3) अपने नफ़्से अम्मारा की बुराई को पहचानना, अल्लाह तआला के लिए जो अमल किया है उसको पहचानना, अगर कोई शख्स कोशिश के साथ साथ तमाम उम्र इबादत करता है और वह उन उमूर से आगाह नहीं और उसने उनके मुवाफ़िक़ अमल नहीं किया तो इस इबादत से उसको कोई फ़ायदा नहीं पहुचेगा, वह हमेशा नादानी में बसर करेगा और मआले कार उसका ठिकाना जहन्नम होगा, हां अल्लाह तआला अपनी रहमत से नवाज़े तो और बात है।

मारफ़ते खुदावन्दी

मारफ़ते खुदावन्दी से असास यह है कि बंदा [illegible] में यह यक़ीने वासिक़ रखे कि अल्लाह तआला उसके क़रीब है, उसका कारसाज़ है, उस पर क़ादिर है उसको देख [illegible] है, उसके हाल से आगाह है, उसका निगरां और मुहाफ़िज़ है, वही हर चीज़ का पालने वाला है उसकी हुकूमत में कोई उसका शरीक नहीं, वह सादिकुल वादा है वह [illegible] किए हुए वादा को पूरा करेगा, वह अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने वाला है, वह लोगों को [illegible] तरफ़ बुलाता है और पुकारता है अगरचे वह उससे मुस्तग़नी है, उसकी वईद और धमकी सच्ची है जिसको वह ज़रूर पूरा करेगा, उसकी हस्ती सारी मखलूक का मरजअ है वह ऐसा सर चश्मा है कि तमाम एहकाम वहीं से जारी होते हैं उसी को सवाब व अज़ाब देने का इख्तियार है, उसका कोई मिस्ल नहीं वह बे मानिन्द और मुशाबेह है, वह काफ़ी है मेहरबान है मोहब्बत करने वाला है समीअ और अर्ले म है, हर दिन वह एक नए हाल में है उसको कोई हाल दूसरे हाल से मानेअ नहीं हो सकता वह हर ख़फी से ख़फी तरीन बात से आगाह है, दिल में पैदा होने वाले ख़्यालात और वसवसों से आगाह है, इरादों, नीयतों का जानता है, हर हरकत से वाकिफ है, आंख झपकने, आंख और हाथ के इशारे उससे भी ज़्यादा और कम से कम [illegible] कितनी ही बारीक चीज़ जिस को हम शिनाख़्त नहीं कर सकते वह उसको जानता है ख़्वाह वह चीज़ इतनी अज़ीम हो कि उसका बयान न हो सके उससे वह वाक़िफ़ है वह गुज़श्ता और आइन्दा से आगाह है। यक़ीनन अल्लाह तआला गलबा और हिकमत वाला है (हम मारफ़ते इलाही के ज़िम्न में तफ़सील से इस मौज़ूअ पर लिख चुके हैं)

पस जब बन्दा यक़ीने रासिख़ के साथ इस मारिफ़त को दिल में जमा लेगा और उसको जिस्म का हर हिस्सा, हर उज़्व, हर जोड़, हर हड्डी, असबा व रेशा, खाल और बाल उस पर कारबंद हो जाएगा और उसको यक़ीन हो जाएगा कि अल्लाह तआला मुझ पर शाहिद है, मुझ से वाक़िफ़ है और उसका इल्म मुझे मुहीत है और उसके इल्म से कोई चीज़ पोशीदा नहीं है उसी ने मुझे बनाया है और ख़ूब बनाया है और उसी ने मुझे यह अच्छी सूरत अता की है, यह तमाम बातें जब बन्दे के दिल में रासिख़ हो जाएंगी और उसका अज़्म सही और अक़्ल कामिल हो जाएगी और उस वक़्त उसको मोहास्बा का मरतबा मिल जाएगा और अल्लाह की मारफ़त हासिल हो जाएगी और बारगाहे इलाही से उसको एक मक़ामे अज़ीम हासिल हो जाएगा, ऐसी सूरत में

हर अमल में अल्लाह का ख़ौफ़ उसके साथ रहेगा और अल्लाह की तरफ़ से उसके दिल की निगरानी की जाएगी और तमाम ला हासिल मशाग़िल उससे मुनक़तअ कर दिए जाएंगे सिर्फ़ उसके वह मशाग़िल बाक़ी रह जाएंगे जो उसकी दानिशवरी में मोमिद व मुआविन होंगे ब ईं हमा उसको अंदेशा लगा रहेगा कि कहीं उसके दिल की गिरफ़्त न हो जाए इस लिए कि अल्लाह तआला उसके गुज़श्ता और आइन्दा के आमाल पर गिरफ़्त की कुदरत रखने वाला है और चूंकि उसको कुर्बे ख़ुदावंदी भी हासिल है इस लिए उसको अल्लाह की शर्म भी दामनगीर होगी इस लिए कि उसके किसी मक़सद व इरादा का ज़वाल अल्लाह के इल्म के बग़ैर नहीं होगा, चुनांचे बन्दा इस फ़ेअल पर मुरतकिब होगा जो अल्लाह तआला को पसंद होगा और उससे बाज़ रहेगा, जो अल्लाह को ना पसंद होगा और उसका कोई वसवसा, कोई इरादा, उसकी कोई बैरूनी या अंदुरूनी हरकत ऐसी न होगी जिससे अल्लाह तआला की आगही का ख़्याल पहले से उसके दिल में मौजूद न हो।

यह मक़ाम उन उलमाए रब्बानी को हासिल होता है जो आरिफ़, मुत्तकी, ज़ाहिद और ख़ुदा से डरने वाले हैं।

इब्लीस की शिनाख़्त और मारफ़त

शैतान से जिहाद

अल्लाह तआला ने ज़ाहिर व बातिन, इताअत व मासियत हर हालत में इब्लीस से जो उदुल्लाह है लड़ने का हुक्म दिया है और उसने अपने बन्दों को बता दिया है कि इब्लीस अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का, उसके बन्दों का, उसके नबियों का और उसके दोस्तों का और उसके ख़लीफ़ा अलल अर्ज़ (हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) का दुश्मन है उसने हज़रत आदम की औलाद को नुक़सान पहुंचाता है, जब आदमी सोता है तो वह नहीं सोता, इन्सान से तो भूल चूक हो जाती है लेकिन इब्लीस से भूल चूक नहीं होती न वह ग़ाफ़िल होता है और न बोलता है आदमी सोता हो या जागता इब्लीस हर हाल में उसको तबाह व बर्बाद करने की कोशीश करता रहता है और इस सिलसिले में वह कोई हीला, मक्र और फ़रेब उठा नहीं रखता है वह जाल जो आदमी को फांसने के लिए वह इबादत या नाफ़रमानी की हालत में लगाये रखता है बडे ही दिल फ़रेब और लज़्ज़त आगीं होते हैं, उस जाल से बहुत से आबिद जो फ़रेब में आने वाले और घोका खाने वाले हैं ग़ाफ़िल और ना वाक़िफ़ होते हैं।

इब्लीस की यह ख़्वाहिश नहीं है कि वह इब्ने आदम को रियाकारी, नाफ़रमानी, ख़ूद पसंदी में मुब्तला कर दे बल्कि उसकी ख़्वाहिश यह होती है कि वह इब्ने आदम को अपने साथ अपने ठिकाने यानी ज्हान्नम में ले जाए। अल्लाह तआला का इरशाद है: वह अपने गरोह को बुलाता है कि वह दोज़ख़ में चलें (असहाबे जहन्नम बन जाएं)

जो शख़्स शैतान को इन औसाफ़ के साथ शिनाख़्त कर चुका है उस पर लाज़िम है कि भूल चूक के बग़ैर यह हक़ और बातिल में उसकी शिनाख़्त को दिल से न मिटने दे और उस को सख़्। जंग और जिहाद करे ख़्वाह वहं जंग बातिन में हो या ज़ाहिर में, इस में ज़रा भी कोताही न करे। बन्दा को चाहिए कि अपनी तमाम मसाई शैतान की उस दावते शर के ख़िलाफ़ जंग व

जिहाद में सर्फ़ कर दे और अल्लाह तआ़ला से आजिज़ाना दुआ, इलतेजा और इमदाद की तलब को तर्क न करे ताकी खुदावन्द जल्ल व ऊला शैतान के मुक़ाबले में उसकी इमदाद फ़रमाए और अपने नफ़्स अल्लाह तआला के हुज़ूर में हाजतमंदाना और आजिज़ाना तरीक़े पर पेश करे इस लिए कि अल्लाह के सिवा किसी की तदबीर तदबीर और कुव्वत कुव्वत नहीं है। बन्दा को चाहिए की अल्लाह तआ़ला से आजिज़ी और ज़ारी के साथ फ़रयाद करे और शब व रोज़ ज़ाहिर व बातिन, जलवत व ख़लवत में आजिज़ाना तरीक़े पर शैतान के ख़िलाफ़ (जिहाद में) मदद की दरख़्वास्त करे, ताकि अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से उसको अपनी वह कोशिश हक़ीर नज़र आए जो उसने मारफ़ते इलाही में की है।

शैतान अल्लाह का दुशमन है

हक़ीक़त में शैतान अल्लाह का दुशमन है, तमाम मख़लूक़ से पहले उसी ने ख़ुदा की नाफ़रमानी की और ख़ुदा की मख़लूक़ में अव्वलीन मुर्दा यानी नाफ़रमान वही है ख़ुदा का हर नाफ़रमान मुर्दा होता है जैसा कि हदीसे कुदसी में आया है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: सब से पहले मेरी मख़लूक़ में मरा वह इब्लीस है, इब्लीस ही ने तमाम अंबिया, सिद्दिक़ीन, औलिया अल्लाह और हर बंदए इलाही से दुशमनी की, पस बन्दा को चाहिए कि वह (इब्लीस की दुशमनी में) यक़ीन करे कि मैं जिहादे अज़ीम में मसरूफ़ हूं और अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब मुझे हासिल है और यह कुर्बे इलाही ऐसा मक़ाम है जिसकी अज़मत का बयान ना मुमकिन है। पस इस अदावते इब्लीस में उसको साबित क़दम रहना चाहिए और कभी पीछे न हटे, इस लिए कि अगर वह पीछे हटा या इस जिहाद से उकता गया नाफ़रमान होगा और दोज़ख़ में जा गिरेगा। अल्लाह का ग़ज़ब उस पर नाज़िल होगा कि ऐसी सूरत में उसने गोया अपनी उम्मीदें उसी दुशमने ख़ुदा से वाबस्ता कर ली हैं और उसको अपने ऊपर ग़ालिब कर चुका है, बंदा से शैतान की इन्तेहाई ख़्वाहिश और ग़ायत आरजू बस यही है कि बन्दा अल्लाह की तौहीद का इंकार कर दे, क्योंकि इब्लीस बन्दा को एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ पलटता रहता है यहां तक कि उस पर ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो जाता है उस वक़्त अल्लाह तआला बन्दा को उसके हाल पर छोड़ देता है और फिर वह हलाक हो जाता है और जहन्नम में शैतान के साथ गिर जाता है। पस ज़ाहिर है कि बन्दे के हक़ में शैतान से ज़्यादा ख़तरनाक कोई और मख़लूक़ नहीं है लिहाज़ा उससे बचते रहो, इस लिए कि सूरतें दो ही हैं या हलाकत या रहमते इलाही के तुफ़ैल में नजात इन दोनों में से एक का हुसूल ज़रूरी है। अल्लाह तआ़ला हम को और तमाम मुसलमानों को शैतान और उसके लशकरियों के शर से पनाह में रखे (ख़ुदावंद बुज़ुर्ग व बरतर ही की मदद से ग़लबा व कुव्वत मयस्सर आती है)।

नफ़्से अम्मारा की शिनाख़्त

नफ़्से अम्मारा की पहचान

बुराई पर आमादा करने वाले नफ़्से यानी नफ़्से अम्मारा की मारफ़त यह है कि उसको उसी मक़ाम पर रखे जिस पर खुदावन्द तआ़ला ने उसको रखा है और उसकी वही हालत समझे जो

अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाई और उसकी ऐसी ही निगरानी करे जैसा खुदा ने हुक्म दिया है। नफ़्स बन्दे के हक़ में इब्लीस से ज़्यादा दुशमन है इब्लीस इसी के ज़रीये से बन्दा पर ग़लबा पाता है कि नफ़्स शैतानी हुक्म को क़बूल करके अमल करता है लिहाज़ा तुम उसकी सरिश्त के हर पहलू और उसकी फ़ितरत को पहचान लो, नफ़्स की फ़ितरत ज़ईफ़ है लेकिन उसकी तमअ़ औा हिर्स क़वी है यह मुद्दई है ख़ुदा की इताअ़त से बाहर सरकशी करने वाला है, तसल्लुत जमाने वाला और उम्मीदें बांधने वाला है, उसका सच झूट है, उसका दावा बातिल है उसकी हर चीज़ धोका है, उसका कोई फ़ेअ़ल न महमूद व पसन्दीदा है और न कोई दावा सच्चा है। पस बन्दे को अपने नफ़्स के किसी बयान पर फ़रेब में नहीं आना चाहिए और न उसकी किसी ख़्वाहिश का उम्मीदवार बने, अगर उसको क़ैद से आज़ाद कर दिया जाए तो यह आवारा हो जाता है और अगर इसकी बंदिश खोल दी जाती है तो यह सरकश हो जाता है अगर इसकी ख़्वाहिशें पूरी की जाती रहीं तो बन्दा हलाक हो जाता है अगर उसके मुहासबा में ग़फ़लत बरती जाए तो यह बदहाल हो जाता है, अगर इसकी मुख़ालफ़त में ज़रा सी भी कमी हो जाती है तो यह बिल्कुल ग़र्क़ हो जाता है (हलाक हो जाता है) अगर इसकी ख़्वाहिशों पर चलाया जाए तो वह रूख़ फेर कर दोज़ख़ में गिर पड़ता है, इसका हक़ और ख़ैर की तरफ़ बिल्कुल मैलान नहीं होता, यह तमाम बलाओं की जड़, रूसवाई की असल और इब्लीस का ख़ज़ाना है इसको सिवाए उसके ख़ालिक़ (ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल्ल) के कोई नहीं पहचान सकता।

नफ़्स की शिनाख़्त अल्लाह तआला ने बता दी है

इसकी पहचान और शिनाख़्त वही है जो अल्लाह तआला ने बयान फ़रमा दी है, जब कभी वह ख़ौफ़ का इज़हार करे तो समझ लो कि अम्न व अमान है और जब वह सिद्क़ का दावा करे तो झूटा है, जब नफ़्स इख़्लास का इज़हार करे तो ख़ुद पसन्दी और रियाकारी है चुनांचे हालात व वाक़ियात की कसौटी पर उसका झूठ सच ज़ाहिर हो जाता है और उसको पहचान लिया जाता है आज़माइश के मौक़े पर उसके दावा की क़लई खुल जाती है, हर अज़ीम मुसीबत व सानेहा इंसान पर उसी की वजह से आता है।

पस बन्दा पर लाज़िम है कि उसका एहतेसाब करे उसकी निगरानी करे और उसकी मुख़ालफ़त करे और जिस चीज़ की यह दावत दे या जिस काम में यह दख़ील हो उसके ख़िलाफ़ जिहाद करे यक़ीन रखे कि उसका कोई दावा सच्चा नहीं है नफ़्स हर वक़्त ख़ुद अपनी ही बर्बादी और तबाही में कोशां और मसाई रहता है उसकी जो कुछ भी बुराई बयान की जाए वह उससे भी ज़्यादा बुरा है। नफ़्स शैतान का फ़रज़न्द और दोस्त है, जो शख़्स उसकी अलामात को जान लेता है वह उसको पहचान लेता है और फिर उसकी नज़र में उसका नफ़्स ज़लील व ख़्वार हो जाता है और वह ताईदे इलाही से उस पर ग़ालिब आ जाता है।

जब बन्दा को यह तीनों औसाफ़ (मारेफ़ते नफ़्स, ज़िल्लते नफ़्स और ग़लबए नफ़्स) हासिल हो जाए तो वह ख़ुदा से मदद चाहे कि यह मारेफ़त और ग़लबा उस को हासिल रहे, अपने नफ़्स की जानिब से ग़फ़लत न बरते उसकी इताअ़त न करे और अल्लाह तआला की इमदाद के भरोसा पर पुख़्ता अज़्म के साथ क़दम बढ़ाए और उन तमाम उमूर में अल्लाह तआला के सिवा किसी और तरफ़ रूजूअ़ न करे अगर वह ग़ैरुल्लाह की तरफ़ रूजूअ़ करेगा तो नेकी और भलाई

की तौफ़ीक़ से महरूम हो जाएगा और अल्लाह तआला असको उसके नफ़्स के हवाले कर देगा, पस लाज़िम है कि बन्दा उन तमाम उमूर में अल्लाह तआला से मदद तलब करे और तमाम अवामिर व नवाही में अल्लाह तआला की मरज़ियात की पैरवी करे और किसी तरह मा सिवा अल्लाह का ख़्याल दिल में न लाये, जब बन्दा उस पर आमिल हो जाएगा तो अल्लाह तआला उसको तौफ़ीक़ व हिदायत अता फ़रमाएगा और उससे मोहब्बत फ़रमाएगा और ना पसन्दीदा बातों से उसको महफ़ूज़ रखेगा और अपनी रहमत के परदे उस पर डाल देगा।

ताअत व मासियत

अल्लाह के लिए अमल करने की शिनाख़्त

ख़ालिसन अल्लाह के लिए अमल करने की शिनाख़्त क्या है? इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला ने बन्दा को कुछ बातों का हुक्म दिया है (काम करने का) और कामों से रोका है जिस काम का उसको हुक्म दिया है उसको बजा लाना ताअत है और जिस काम से रोका है उसको करना मासियत है।

ताअत हो या गुनाह से इज्तिनाब दोनों में इख़लास का हुक्म दिया गया है और कुरआन व हदीस के बताए हुए तरीक़े पर चलने का हुक्म फ़रमाया है उसी के साथ यह भी हुक्म दिया है कि उस के अमल के वक़्त उसके दिल में अल्लाह के सिवा किसी के रज़ा तलबी दिखावट का ख़्याल दिल में न हो वरना वह उन लोगों के गरोह में शामिल हो जाएगा जो ज़ाहिरी गुनाह तो छोड़ देते हैं और उन बातिनी गुनाहों को नहीं छोड़ते जो मआसी की बुनियाद और असास हैं। अल्लाह तआला ने तर्के ऐसी तर्के मासियत पर मग़फ़िरत का वादा नहीं फ़रमाया है, दारे आख़िरत में उसको जज़ा मिलेगी। लिहाज़ा फ़ासिद नीयत और मुज़महिल इरादे के साथ बन्दा सिर्फ़ ज़ाहिरी इबादत की कोशिश न करे वरना उसकी तमाम ताअतें मासियत में बदल जायेंगी और जिस्मानी तकान, लज़्ज़ात और ख़्वाहिशों के तर्क कर देने के बावजूद दोनों जहान का अज़ाब उस पर नाज़िल होगा और दारैन की नाकामी उसके हिस्सा में आएगी।

इबादत में ख़ुलूस होना चाहिए

बन्दा को चाहिए कि अपनी इबादत को ख़ुलूसे तक़वा और परहेज़गारी से आरास्ता करे, नीयत में सच्चाई रखे इरादा की निगरानी करे और उसका मुहासबा करता रहे उसका अज़्म सिद्क़े नीयत पर मबनी हो, अपने तमाम अक़वाल, आमाल व अहवाल में ख़ुलूस का अज़्म रखता हो, इबादत में इसी तरह मशग़ूल हो और मासियत को तर्क करे, इसके साथ इसका भी लिहाज़ रखे कि कहीं शैतान मरदूद उसको अपनी मक्कारियों से फ़रेब में मुब्तला न कर दे और अपनी कमीनगाह में न गिरा दे, कहीं अपने जालों में न फांस ले और कहीं अपनी फ़रेब कारियों और दग़ा बाज़ियों से उसको हलाकत में न डाल दे, इसलिए कि उसकें जाल दिलों पर लगे हुए हैं, उसके फ़रेब बहुत दिल पसन्द और कैफ़ आंगीं होते हैं कि उनको बज़ाहिर नूरे ईमान समझा जाता है लेकिन वह हक़ीक़त में इस तरह शक व ज़ुल्मत के ऐसे सैंकड़ों दरवाज़े खोल देता है कि बन्दे को किसी दरवाज़े में दाख़िल कर के उसकी अदना सी लग़ज़िश में फंसा कर उसके

तमाम आमाल को ज़ाया कर दे। पस उसके फ़रेब से बचो और डरो। अगर मुमकिन हो तो कुरआन सीखने की तरह शैतान के फ़रेब से भी वाक़फ़ीयत हासिल करे।

पस बन्दे को अपनी इबादत में उस से ऐसा ही बचना चाहिए जिस तरह मआसी से बचता है। अगर उसके दिल में कोई ख़्याल आए और उसका नफ़्स उस जानिब रूजूअ हो या उसको उस तरफ़ बुलाए तो समझे बूझे बग़ैर उस तरफ़ जाने में जल्दी न करे और सोच समझ कर क़दम उठाए।

नफ़्स की इन शरारतों से बचने के लिए आदमी को चाहिए कि अहकामे इलाही के आरिफ़ों की सोहबत में बैठे ताकि वह उसको अल्लाह का रास्ता दिखायें और बतायें, अमराज़ से भी आगाह करें और उसका इलाज भी बतायें जैसा कि हम इससे क़ब्ल मजलिसे तौबा में बयान कर चुके हैं, बन्दे के लिए मुनासिब नहीं कि अपने अमल से वाक़फ़ीयते कुल्ली के बग़ैर अपने जुहद व इत्तेक़ा तूले क़याम शिद्दते क़याम व नवाफ़िल से धोका न खाए, जब वह देख ले कि उसका अमल मारफ़ते नफ़्स, मारफ़ते रब के साथ साथ अंजाम पज़ीर हो रहा है तो उसका फ़ेअल उस वक़्त सही होगा, उस वक़्त उसे इल्म और दीन की वाक़फ़ीयत अता होगी। अब जो कुछ भी इल्मे ज़ाहिरी और बातिनी से पेश आए उसपर ग़ौर करे अगर वाक़ई वह ख़ालिसन लिल्लाह है तो वह उसको क़बूल फ़रमा कर सवाब बख़्शेगा और अगर ऐसा नहीं है तो अल्लाह तआला उसको रद फ़रमा देगा।

इन तमाम उमूर पर आगाही हासिल हो जाने के बाद भी अपने नफ़्स पर एतमाद न करे न अपनी ज़ात पर न दीन के मामला में, तबीअत के मैलान और रुजहान पर भरोसा करे न इब्लीसे लईन से मुतमइन हो कर बैठ रहे और इन के साथ साथ अपनी खुद शनासी पर भी नफ़्स का एतबार न करे।

अहले मुजाहदा व मुहासबा के दस ख़साइल

अहले मुजाहदा के दस ख़साइल

अहले मुजाहदा व मुहासबए अरबाबे तरीक़त और उलुल अज़्म हज़रात ने अपने इन ख़सलतों का इन्तेख़ाब किया है और उनको अपनाया है जब बहुक्मे इलाही वह सख़्ती के साथ उन ख़सलतों से कारबन्द हो गए तो उनको बड़े बड़े मरतबे हासिल हुए, वह दस ख़सलतें यह हैं:

पहली ख़सलत

अव्वलः खुदा की क़सम न खाए ख़्वाह वह सच हो या झूठ, अमदन हो या भूल से, इस लिए कि जब वह इस बात का आदी हो जाएगा और तर्के क़सम की आदत रासिख़ हो जाएगी तो फिर उसकी ज़बान से भूल कर भी क़सम अदा नहीं होगी और तर्के क़सम का वह आदी हो जाएगा। उस वक़्त अल्लाह तआला उसके दिल पर अपने अनवार के दरवाज़े खोल देगा, उस वक़्त वह तर्के क़सम का फ़ाइदा महसूस करेगा, उसको अपने बदन में कुव्वत महसूस होगी, दर्जा में बलन्दी, बसारत में कुव्वत, अहबाब में उसकी तारीफ़ होगी और पड़ोसियों में उसकी इज़्ज़त

होगी फिर हर शनासा उसका हुक्म बजा लाएगा और हर देखने वाला उसकी ताज़ीम करेगा।

दूसरी ख़सलत

दोमः झूठ से परहेज़ रखे, मज़ाहन भी झूठ न बोले, संजीदगी तो बड़ी बात है, जब बन्दा का नफ़्स झूठ से बचने का आदी हो जाएगा और ज़बान से उसकी आदत तर्क हो जाएगी तो अल्लाह तआला उसको शरहे सद्र अता फ़रमाएगा और इल्म की सफ़ा से उसको नवाज़ेगा उस वक़्त वह ऐसा हो जाएगा जैसा कि वह झूठ को जानता ही नहीं। इसी तरह जब किसी दूसरे से झूठ बात सुने तो उसको टोके और अपने दिल में उसकी दरोग़ गोई से नफ़रत व आर महसूस करे, अगर वह दूसरे से झूठ की आदत छुड़ाने कि दुआ करेगा तो उसका भी उसको सवाब मिलेगा।

तीसरी ख़सलत

सोमः जहां तक मुमकिन हो किसी से वादा कर के बग़ैर किसी उज़्रे ख़ास के वादा ख़िलाफ़ी न करे, अगर ख़ल्फ़े अहद न करने का आदी हो जाएगा तो फिर इस सूरत में वादा करने की आदत ही यकसर छूट जाएगी। यह तरीक़ा किसी अमल को सही तरीक़े पर अंजाम देने का बड़ा क़वी ज़रिया और सीधा रास्ता है। ख़ल्फ़े अहद झूठ ही का एक शोबा है जब बन्दा ख़िलाफ़ी से बचने का बन्दा आदी हो जाएगा तो उस पर सख़ावत का दरवाज़ा खुल जाएगा और हया का ज़ीना वा हो जाएगा। जो लोग रास्त गुफ़्तार हैं उनके दिलों में उसकी मोहब्बत पैदा होगी और अल्लाह तआला के यहां उसको अज़ीम मरतबा हासिल होगा

चौथी ख़सलत

चहारुमः किसी मख़लूक़ पर लानत न करे। [illegible] कम हैसीयत मख़लूक़ को भी गज़न्द न पहुंचाए। यह नेक और रास्त बाज़ लोगों का ख़ुल्क़ है इसके [illegible] में वह दुनिया में भी अमन से रहेगा और वह आख़िरत में भी वह मरातिबे आलिया पर फ़ाएज़ होगा अल्लाह तआला उसको हलाकत के मक़ामात से मामून व महफ़ूज़ रखेगा और वह मख़लूक़ के शर से भी आमान में रहेगा बन्दों की शफ़क़त [illegible] हासिल और कुर्बे इलाही मय्यसर होगा।

पांचवी ख़सलत

पंजुमः किसी के लिए बद्दुआ न करे ख़्वाह किसी ने उस पर ज़ुल्म ही क्यों न किया हो, न उसको ज़बान से बुरा कहे और न उसके ज़ुल्म का अपने किसी अमल से बदला ले बल्कि उसका बदला ख़ुदा पर छोड़ दे। ग़र्ज़ कि अपने क़ौल व फ़ेअल से बदला न ले अगर बन्दा में यह वस्फ़ पैदा हो जाए तो यह वस्फ़ उसको बलन्द मतर्बा पर पहुंचा देगा और दारैन में इनामे अज़ीम उसको हासिल होगा। दूर व नज़दीक की मख़लूक़ के दिलों में उसको अपनी मोहब्बत मिलेगी और लोग उससे शफ़क़त से पेश आयेंगे उसकी दुआ क़बूल होगी और अहले ईमान के दिलों में उसकी इज़्ज़त पैदा होगी।

छटी ख़सलत

शशुमः अहले क़िबला में से किसी के कुफ़्र और निफ़ाक़ पर क़तई शहादत न दे यह अमल

उसको रहमते खुदावंदी से बहुत क़रीब कर देगा बलन्द मरतबा हासिल होगा, यह सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है, इल्मे इलाही में दख़ील बनने से बन्दा को महफ़ूज़ रखती है, और अल्लाह के ग़ज़ब में गिरफ़्तार होने से बन्दा महफ़ूज़ रहता है, अल्लाह की रहमत और ख़ुशनूदी से यह अमल बहुत क़रीब है यह ख़सलत अल्लाह तक पहुंचने का एक मुअज़्ज़िज़ दरवाज़ा है और दूसरे मख़लूक़ पर रहम करने का जज़्बा अल्लाह तआ़ला बन्दा में पैदा कर देता है।

सातवीं ख़सलत

हफ़्तुमः ज़ाहिरी और बातिनी गुनाह की तरफ़ नज़र करने और उसका इरादा करने से भी परहेज़ करे, गुनाहों से अपने आज़ा को रोके रखे, इस फ़ेअ़ल का सवाब दुनिया में उसके दिल को और दूसरे आज़ा को बहुत जल्द हासिल हो जाएगा और साथ ही साथ आख़िरत में अल्लाह उसके लिए भलाई का ज़ख़ीरा जमा फ़रमाएगा।

आठवीं ख़सलत

हशतुमः अपना बार किसी मख़लूक़ पर प डाले [illegible] ह वह बारे गिरां हो [illegible] बारे सुबुक, बल्कि दूसरों का बार ख़ुद उठा ले ख़्वाह किसी मख़लूक़ की तरफ़ से इस [illegible] की ख़्वा[illegible]श हो या न हो, बिला शुब्हा यही इबादत गुज़ारों और बरगुज़ीदा हस्तिय[illegible] की बुज़ुर्गी [illegible] अज़म[illegible] कमाल यही है और इसी वस्फ़ के बाइस बन्दा अम्र बिल मारूफ़ व न[illegible]ील मुनकर पर क़ाएम रहेगा और फिर तमाम मख़लूक़, हक़ के मामला में बराबर हो जाएगी ज[illegible] बन्दा इ[illegible] वस्फ़ से मुत्तसिफ़ हो जाएगा तो अल्लाह तआ़[illegible] उसको बे[illegible]ज़ी, [illegible]क़ीने कामिल और त[illegible]क्कुल का मक़ाम मरहमत फ़रमाएगा, यक[illegible] रखना [illegible]हिए कि यह [illegible]स्फ़ म[illegible]नीन की [illegible]ज़त और मुत्तक़ीन की बुज़ुर्गी के हुसूल का दरवा[illegible] है और क[illegible]ब तरीन [illegible]बे इख़[illegible]है।

नवीं ख़सलत

नहुमः लोगों से [illegible]नके माल व मताअ़ से क़तअ़ उम्मीद करे, यही सब से बड़ी इज़्ज़त है, यही ख़ालिस तवंगरी, अज़ी[illegible] हुकूमत, अज़ीम फ़ख़्र और शिफ़ा बख़्श सही तवक्कुल है। इस ख़सलत के बाइस अल्ल[illegible] [illegible]रोसा होता है और दुनिया से बेरग़बती पैदा होती है इसी से तक़वा का हुसूल और इबादत का तकमिला होता है यह ख़सलत तमाम दुनिया से कट कर अल्लाह से रिश्ता जोड़ने वालों की अलामत है।

दसवीं ख़सलत

दहुमः तवाज़ोअ़, तवाज़ोअ़ से मरतबा की अज़मत में इस्तेक़ामत और पुख़्तगी पैदा होती है, दर्जा बलन्द होता है अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल और मख़लूक़ की नज़र में इज़्ज़त और रूख़सते कामिल होती है दुनिया और आख़िरत दोनों के हर काम पर बन्दा क़ादिर हो जाता है यह ख़सलत तमाम ख़साएल की असल है और यही असल कमाल है। इस ख़सलत के ज़रीया बन्दा उन नेक लोगों का मरतबा पाता है जो ख़ुदा से हर हाल में ख़्वाह राहत हो या तकलीफ़ राज़ी रहते हैं और उनका तक़वा कामिल हो जाता है।

तवाज़ोअ की तारीफ़

तवाज़ोअ किसे कहते हैं? तवाज़ोअ यह है कि बन्दा जिस से भी मिले उसको अपने मुक़ाबले में अफ़ज़ल समझे और यह ख़्याल करे कि मुमकिन यह शख़्स अल्लाह के नज़दीक मुझ से हज़ार दर्जा बलन्द और बेहतर हो। अपने छोटों के बारे में ख़्याल करे कि इन्होंने ख़ुदा की नाफ़रमानी नहीं की और मैं (ब एतबारे सिन व साल) काफ़ी कर चुका हूं इस लिए वह मुझ से बेहतर हैं और जब बड़ों से मिले तो ख़्याल करे कि इन्होंने मुझसे ज़्यादा इबादत की है इस लिए कि वह उम्र में मुझ से बड़े हैं इस लिए यक़ीनन वह मुझ बेहतर हैं कि इनको इबादत का ज़्यादा वक़्त मिला है, जब किसी आलिम से मिले तो ख़्याल करे कि इस आलिम को वह चीज़ बख़्शी गई है जो मुझे नहीं मिली है, वह जानता है और मैं नहीं जानता और वह अपने इल्म के मुताबिक़ अमल भी करता है। जाहिल से मुलाक़ात हो तो यह समझे कि इसने नादानी में ख़ुदा की नाफ़रमानी की और मैं इल्म रखते हुए नाफ़रमान हुआ, नहीं मालूम कि इसका ख़ात्मा किस तरह हो और मेरा किस तरह। अगर काफ़िर से मुलाक़ात हो तो यह ख़्याल करे कि मुमकिन है कि यह ईमान ले आए और इसकी वजह से इसका ख़ात्मा ब ख़ैर हो और मुमकिन है कि मैं कुफ़्र में मुब्तला हो जाऊं और उस कुफ़्र के बाइस मेरा ख़ात्मा बुरा हो, तवाज़ोअ अल्लाह से डरने का दरवाज़ा है। साथ रहने के क़ाबिल औसाफ़ व फ़ज़ाएल में इसको अव्वलियत का दर्जा हासिल है और बाक़ी रहने वाले औसाफ़ में यह आख़िरी वस्फ़ है। बन्दा ज़ब तवाज़ोअ इख़्तियार कर लेता है तो अल्लाह तआला उसको तमाम तबाहियों से महफ़ूज़ कर देता है और अल्लाह तआला उसको उन मुरातिब तक पहुंचा देता है जो महज़ अल्लाह के लिए ख़ैर तलबी करने के मरातिब हैं बन्दा अल्लाह की मुन्तख़ब और मुहिब बन्दों में शामिल हो जाता है और उसका शुमार इब्लीस के दुश्मनों में होने लगता है।

तवाज़ोअ रहमत का दरवाज़ा है तकब्बुर की [illegible]तअ करने और ख़ुद पसन्दियों की रस्सियों को काटने का ज़रीया है। दारैन में अपने आप को सब से बरतर और अफ़ज़ल समझने के यक़ीन को बातिल करने का सबब है, यही इबादत का फ़ख़्र है और यही ज़ाहिदों का शरफ़ है, यह आबिदों की निशानी है, कोई शय और कोई वस्फ़ इससे अफ़ज़ल नहीं है। बन्दा जब इस वस्फ़ को अपना ले तो मख़लूक़ के तज़किरे से अपनी ज़बान रोक ले, अगर ऐसा नहीं करेगा तो उसका अमल मुकम्मल नहीं होगा। बन्दा को चाहिए की तमाम अहवाल में अपने दिल से कीना, जज़्बए बरतरी और तकब्बुर को निकाल दे, बन्दा की ज़बान, उसका कलाम और उसका इरादा ज़ाहिर व बातिन यकसां हो, वह तमाम मख़लूक़ का यकसां ख़ैर ख़्वाह हो अगर वह किसी का ज़िक्र बुराई के साथ करेगा या किसी को उसके फ़ेअ़ल पर शर्मिन्दा करेगा या इस बात को पसंद करेगा कि उसके सामने किसी की बुराई की जाए तो किसी की बुराई होते वक़्त अगर उसका दिल ख़ुश होता है तो इस सूरत में उसका शुमारा ख़ैर ख़्वाहों में नहीं होगा। यह बुराईयां आबिदों के लिए आफ़त और इबादत गुज़ारों के लिए तबाही का मौजिब और ज़रीया हैं इस तबाही से वही बच सकता है जिस को अल्लाह तआला अपनी रहमते कामिला से दिल व ज़बान की हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हम अल्लाह तआला से इस अम्र के साएल हैं कि वह हम सब को इन फ़ज़ाएल पर आमिल बना कर एहसानमन्द बनाए और हमारे दिलों से ख़्वाहिशों को निकाल दे (आमीन)

तवक्कुल

तवक्कुल की अस्ल

तवक्कुल की अस्ल अल्लाह तआ़ला का यह इरशादे गरामी है: जिस ने अल्लाह पर भरोसा किया अल्लाह उसके लिए काफ़ी है। एक दूसरी आयत है: अगर तुम ईमान वाले हो तो अल्लाह ही पर तवक्कुल करो।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद का इरशाद

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ज़मानए हज में बहुत से रूयाए सादिक़ा मुझे दिखाए गए, मैंने अपनी उम्मत को देखा कि उससे मैदान और पहाड़ भरे पड़े हैं मुझे उनकी यह वजह औ[illegible] उनकी यह कसरत पसन्द आई, मुझे से कहा गया क्या आप इस पर [illegible]ज़ी है? मैंने जवाब [illegible] कि जी हां, फिर मुझ से कहा कि इनके साथ सत्तर हज़ार ऐसे भी हैं [illegible] बग़ैर किसी हिसाब [illegible] जन्नत में दाख़िल होंगे, यह लोग वह हैं जो दाग़ नहीं लगवाते, शगुन न[illegible]ीं लेते, मंत्र [illegible] कराते बल्कि ख़ुदा ही पर तवक्कुल करते हैं, यह सुनकर उकाशा बिन महज़ [illegible] खड़े हुए [illegible]र बार[illegible]ाहे रिसालत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आप अल्लाह से दु[illegible] फरमाए [illegible]झे इन लो[illegible]ों में से कर दे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई ऐ अल्लाह इनको उन लो[illegible] में से कर दे। इस के बाद एक दूसरे साहब ख[illegible]ए और उ[illegible] अर्ज़ किया कि ऐ [illegible]ल्लाह के रसूल! अल्लाह से दुआ फ़रमाइये कि मु[illegible] भी उन लोगों में से क[illegible] दे, हु[illegible] स[illegible]ाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि उक[illegible]ा तुम से [illegible]स मामल[illegible]ें) सबक़[illegible]ए।

तवक्कुल की त[illegible]रीफ़

तवक्कुल की हक़[illegible] यह कि तमाम उमूर को अल्लाह के सुपुर्द कर देना, तदबीर व इख़्तियार की तारीकियों से प[illegible]ना और तक़दीर (इलाही) के बाद उनकी जानिब क़दम बढ़ाना है, बन्दा जब यह यक़ीन [illegible] लेता है कि क़िस्मत में कोई तब्दीली नहीं हो सकती और जो कुछ उसके मुक़द्दर में है वह उससे नहीं लिया जाएगा और जो मुक़द्दर नहीं है वह किसी सूरत में हासिल नहीं होगा तो उसके दिल को सुकून हो जाता है और अपने रब के वादा पर मुतमईन हो जाता है और उसी से वह क़िस्मत की चीज़ को हासिल करता है।

तवक्कुल के दर्जे

तवक्कुल के तीन दर्जे हैं अव्वल का तव्वक्कुल और दूसरे का नाम तसलीम और तीसरे का नाम तफ़वीज़ है। मुतवक्किल अपने रब के वादा से मुतमईन होकर सुकून हासिल कर लेता है, साहबे तसलीम अल्लाह के इल्म को अपने लिए काफ़ी समझता है और साहबे तफ़वीज़ अल्लाह के हुक्म पर (हर सूरत में) ख़ुश होता है।

बाज़ अकाबिर का ख़्याल है कि तवक्कुल इब्तिदा है तसलीम उसका दर्मियाना दर्जा और तफ़वीज़ उसकी इन्तेहा है, बाज़ उल्मा का ख़्याल है कि तवक्कुल तो आम मोमिनीन का वस्फ़

है, तसलीम औलिया कराम की सिफ़त है और तफ़वीज़ तौहीद परस्तों का वस्फ़ है। बाज़ असहाब फ़रमाते हैं कि तवक्कुल अवाम की, तसलीम ख़्वास की और तफ़वीज़ ख़ासाने ख़ास का वस्फ़ है इस सिलसिले में बाज़ दूसरे अकाबेरीन फ़रमाते हैं कि तवक्कुल आम अम्बियाए कराम की सिफ़त है, तसलीम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए मख़सूस है और तफ़वीज़ हमारे सय्यदुल अंबिया मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सिफ़त है।

तवक्कुल हक़ीक़ी ब एतबारे कमाल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उस वक़्त हासिल हुआ जिस वक़्त आपने जिब्रील अलैहिस्सलाम से (उनकी इमदाद की पेशकश के जवाब में) फ़रमाया था मुझे तुम्हारी हाजत नहीं है क्योंकि उस वक़्त उनकी ख़ुदी ख़त्म हो चुकी थी यही सबब था कि आप ने सिवाए अल्लाह तआला के किसी और को उस वक़्त नहीं देखा (उसी की ज़ात पर तवक्कुल किया।

मुतवक्किल की तारीफ़

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह ने इरशाद फ़रमा[illegible] कि तवक्कुल का पह[illegible]ा मक़ाम यह है कि बन्दा अल्लाह तआला के सामने ऐसा हो जाए जिस[illegible]रह मुर्दा गुस्साल के [illegible]मने होता है कि गुस्ल देने वाला जिधर चाहता है उधर उसको उलट [illegible]लट करता [illegible] (फ़ेर [illegible]ा है) और ख़ुद उसको अपने किसी अमल पर इख़्तियार और तदबी[illegible] पर ज़ोर [illegible] क़ाबू [illegible]हीं होता, जो मुतवक्किल इलल्लाह है वह न किसी से सवाल करता [illegible]रादा करत[illegible] है न रद्द करता है न रोकत्ता है (बिल्कुल बे इख़्तियार होता है)।

बाज़ अका[illegible]बिर का [illegible] है कि [illegible]क्कुल ख़ुद को छोड़ देने का नाम है। हज़रत हमदून का इरशाद है [illegible] अल्लाह तआला के दा[illegible]न को मज़बूती [illegible]कड़ लेने का नाम तवक्कुल है। हज़रत इब्राहीम [illegible]वास ने इर[illegible]ाद फ़रमा[illegible] कि [illegible] उम्मीद व बीम के ताल्लुक़ को मुनक़ता कर देने [illegible] नाम त[illegible]वक्कुल है। बाज़ सुफ़ियाए कराम [illegible] क़ौल है कि एक ही ज़िन्दगी पर इक्तिफ़ा करना [illegible] का ग़म तर्क कर देने का नाम तवक्कुल है।

तवक्कूल की तीन अहम बातें

हज़रत अली रूदबा[illegible] फ़रमाया कि तवक्कुल में तीन बातें क़ाबिले लिहाज़ हैं अव्वल यह कि मिले तो शुक्र अदा करे न मिले तो सब्र, दोम यह कि हुसूल व अदमे हुसूल दोनों उसकी नज़र में यकसां हों, सोम यह कि न मिलने पर इस वजह से शुक्र करे कि अल्लाह तआला ने उसके लिए यही पसन्द किया है और उसको यही पसन्द है तो मुझे भी यह बात क्यों न पसन्द हो। हज़रत जाफ़र से मरवी है कि हज़रत इब्राहीम ख़वास ने इरशाद फ़रमाया कि मैं मक्का के सफ़र पर था असनाए राह में मुझे एक वहशी सूरत नज़र आई मैंने उससे कहा कि तू इंसान है या जिन? उसने कहा ख़ुल्दी मैं इंसान नहीं जिन हूं मैंने कहा कहां जा रहे हो, उसने कहा मक्का जाने का क़स्द है, मैंने कहा कि बग़ैर ज़ाद और सवारी के, उसने कहा कि हां हम में से बाज़ ऐसे हैं जो तवक्कुल पर सफ़र करते हैं मैंने कहा कि तवक्कुल क्या है? उसने जवाब दिया, अल्लाह से लेना तवक्कुल है।

हज़रत सहल ने फ़रमाया कि कुल मख़लूक़ को रिज़्क़ पहुंचाने वाले की मारफ़त का नाम तवक्कुल है (इस एतबार से) किसी का तवक्कुल उस वक़्त तक कामिल नहीं है जब तक उसकी नज़र में

आसमान तांबे की तरह और लोहे की तरह न हो जाये, आसमान से पानी न बरसे और ज़मीन से सब्ज़ा न उगे उसे कोई ग़र्ज़ नहीं वह यकीन करे कि उन दोनों के दर्मियान में जो मख़लूक़ है उनके रिज़्क़ का जो ज़ामिन है वही मुझे भी रिज़्क़ पहुंचाएगा और मुझे फ़रामोश नहीं करेगा।

बाज़ असहाब का कहना है कि तवक्कुल यह है कि तू रिज़्क़ की ख़ातिर ख़ुदा की नाफ़रमानी न करे। बाज़ हज़रात कहते हैं कि बन्दा के लिए यही तवक्कुल काफ़ी है कि वह अल्लाह के सिवा अपने लिए कोई और मददगार और अपने रिज़्क़ के लिए कोई दूसरा ख़ाजिन और अपने आमाल के लिए कोई दूसरा देखने वाला पसन्द न करे।

हज़रत जुनैद का इरशाद तवक्कुल के सिलसिले में

तवक्कुल के सिलसिले में हज़रत जुनैद का इरशाद है कि तवक्कुल यह है कि अपनी तदबीर को ख़ुदा की राह में फ़ना कर दे और अल्लाह तआला से जो तेरा ज़ामिन और मददगार है, राज़ी रहे। अल्लाह तआला का इरशाद है: और अल्लाह कारसाज़ी के लिए काफ़ी है। बाज़ हज़रात का इरशाद है कि बन्दए हक़ीर को खुद[illegible]द अज़ीम को अपने [illegible]ए काफ़ी समझना तवक्कुल है जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सला[illegible] ने अल्लाह तआला को अपने लिए काफ़ी समझा था और हज़रत जिब्रील की इमदाद की पेशक[illegible] पर नज़र [illegible]ा भी [illegible]वारा नहीं की। बाज़ कहते हैं कि ख़ालिक़े दो जहां पर भरोसा कर [illegible] जिद्दो जेहद [illegible] बाज़ रहने का नाम तवक्कुल है। हज़रत बहलूल मजनून से दरयाफ़्त किया ग[illegible] बन्दा को मुतवक्किल किस वक़्त कहना चाहिए उन्हों ने फ़रमाया कि जब उसका नफ़्स मख़लूक़ में होते हुए भी मख़लूक़ से अजनबी और [illegible]गाना रहे [illegible]र उसका [illegible] ख़ुदा के साथ हो[illegible]

हज़रत अ[illegible]स से दरयाफ़्त किया गया कि [illegible] को [illegible]क्कुल का यह मक़ाम किस तरह हासिल हुआ? आ[illegible] ने फ़रमा[illegible] चार बातों की वजह [illegible]ल यह कि मुझे इस बात का यक़ीन हो गया कि मेरा रि[illegible]क़ कोई दूसरा नहीं खाएगा लिहाज़ा मैं उस[illegible] तालाश में मशग़ूल नहीं हुआ और दूसरे मैंने जान [illegible] कि मेरा अमल कोई दूसरा अन्जाम नहीं देगा पस मैं उस में मशग़ूल हो गया, तीसरे मैंने यक़ीन कर लिया कि मौत अचानक आती है लिहाज़ा मैं उसके पाने की जल्दी करता हूं चहारुम [illegible]न लिया कि मैं हर हाल में ख़ुदा के सामने मौजूद हूं पस मैंने उससे हया की।

अबू मूसा दुबैली फ़रमातें है कि मैं ने अब्दुर्रहमान बिन यहया से तवक्कुल के बारे में दरयाफ़्त किया तो उनहोंने फ़रमाया कि तवक्कुल यह है कि तू अज़दहे के मुंह में भी हाथ डाल दे तो अल्लाह तआला के साथ होने की वजह से तुझे किसी क़िस्म का गज़न्द न पहुंचने का यक़ीन हो और तुझे उससे कुछ ख़ौफ़ न आए। इसके बाद अबू मूसा ने कहा कि मैं यही सवाल हज़रत बायज़ीद बुस्तामी से करने के लिए निकला। चुनांचे शहरे बुस्ताम में दाख़िल हुआ और उनका दरवाज़ा खटखटाया, अन्दर से उनकी आवाज़ आई, अबू मूसा! क्या तुम्हारे लिए अब्दुर्रहमान का जवाब काफ़ी नहीं है जो तवक्कुल की हक़ीक़त दरयाफ़्त करने यहां आए हो और मुझ से पूछ रहे हो, मैंने अर्ज़ किया, ऐ आक़ा दरवाज़ा खोल दीजिए, अन्दर से जवाब आया अगर तुम मुलाक़ाती की हैसीयत से तुम मेरे पास आते तो मैं ज़रूर दरवाज़ा खोल देता (तुम से मिलता) तुम दरवाज़ा ही पर जवाब सुन लो और लौट जाओ, सुनो, तवक्कुल यह है कि अगर वह सांप

जो अर्श के गिर्द हलक़ा ज़न है अगर तुम्हारी तरफ़ बढ़े तो तुम इस बिना पर ज़रा भी न डरो कि ख़ुदा तुम्हारे साथ है। अबू मूसा कहते हैं कि मैं यह सुन कर अपने वतन दुबैल लौट आया और एक साल तक मुक़ीम रहा फिर मैं हज़रत बा यज़ीद की मुलाक़ात के इरादा से वहां से रवाना हो कर बुस्ताम पहुंचा, जब मैं उनके पास पहुंचा तो उन्होंने मुझे ख़ुश आमदीद कहा और फ़रमाया, आओ अब तुम मेरे पास मुलाक़ाती की हैसीयत से आए हो, मैं उनके पास तक़रीबन एक माह ठहरा रहा और इस अर्से में जब मैंने उनसे कोई बात दरयाफ़्त करना चाही तो मेरे सवाल से पहले उन्होंने उसका जवाब दे दिया। एक माह बाद मैंने उनसे रूख़सत तलब की और अर्ज़ किया कि मुझे आप से कुछ भी फ़ाइदा हासिल होना चाहिए तो उन्होंने फ़रमाया जान लो मख़लूक़ का फ़ाइदा कोई फ़ाइदा नहीं है लिहाज़ा जाओ मैंने इसी क़ौल को फ़ाइदा समझ लिया और वहां से लौट आया।

इब्ने ताऊस ने अपने वालिद हज़रत ताऊस का क़ौल नक़्ल किया है कि एक आराबी ने अपनी सवारी का ऊंट एक जगह बिठा कर बांध दिया फिर आसमान की तर[illegible] मुंह उठा कर कहा कि इलाही! यह सवारी का ऊंट मअ तमाम समान [illegible] जब तक यह लोगों [illegible] है तेरी ज़मानत में है, यह कह कर वह मस्जिदुल हराम में चला गया, थो[illegible] देर बाद वहां से नि[illegible] कर उस जगह पहुंचा जहां ऊंट बांध दिया था देखा कि ऊंट और साम[illegible] सब कुछ ग़[illegible] है उ[illegible]ने आसमान की तरफ़ मुंह उठा कर कहा कि इलाही! मेरी कोई चीज़ त[illegible]री नहीं गई [illegible]जो कु[illegible] चोरी गया है वह तेरा ही था, तेरी ही चीज़ें चोरी की गई हैं[illegible] ताऊस [illegible] हैं कि ह[illegible] यह हाल देख ही रहे थे कि अचानक कोहे अबू क़बीस की [illegible]टी से [illegible]म ने एक शख़्[illegible] को [illegible]तरते देखा जो बायें हाथ से ऊंट की मु[illegible]र पकड़े [illegible] को खींच [illegible]ला र[illegible] था और [illegible]का दायां हाथ कटा हुआ उसके गले में झूल रह[illegible]था, वह शख़्स आराबी के पास [illegible] अपनी सवारी और सामान। मैंने आराबी से कैफ़ीय[illegible] दरयाफ़्[illegible]की उसने [illegible]हा कि म[illegible]ऊंट [illegible] सामान को लेकर जब अबू क़बीस पर पहुंचा त[illegible] एक [illegible]वार आया और मझ से कहा ऐ चो[illegible] अपना दाहिना हाथ निकाल, मैंने दाहिना हाथ बढ़ा[illegible] उसने मेरा दाहिना हाथ पत्थर पर रख कर काट दिया और मेरी गर्दन में लटका दिया और मुझ से क[illegible] कि नीचे उतर और यह सवारी और सामान जिस आराबी का है उसको वापस कर दे[illegible]

हज़रत उमर का इरशाद

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम लोग अल्लाह तआला पर पूरा पूरा तवक्कुल रखोगे तो अल्लाह तआला तुम को ज़रूर रिज़्क़ देगा जिस तरह परिन्दों को देता है कि वह सुबह को भुके जाते हैं और शाम को शिकम सैर हो कर लौटते हैं। मोहम्मद बिन कअब ने हज़रत इब्ने अब्बास के हवाले से रिवायत की है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स यह बात पसन्द करता है कि वह लोगों में बुज़ुर्ग शुमार हो तो उसको चाहिए कि अल्लाह से डरे और जिस को यह बात पसन्द हो कि वह लोगों में सबसे ज़्यादा बेनियाज़ हो तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह तआला के हाथ की चीज़ पर अपने हाथ की चीज़ के मुक़ाबले में ज़्यादा भरोसा करे।

हज़रत उमर इस सिलसिले में दो अशआर पढ़ा करते थे (जो यह हैं)

कर आसान काम खुद पर जान ले यह सारे कामों में
हैं हुक्मे इयज़दी से सारे अंदाजे ही वाबस्ता
न आयेंगी तुम्हारे पास, वह पलटी हुई चीजें
मुक़द्दर में जो है उसको फ़रारी का नहीं रस्ता

हज़रत यहया बिन मआज़ से पूछा गया कि आदमी को मुतवक्किल कब कहा जाता है? फ़रमाया जब अल्लाह तआला की कारसाज़ी पर ख़ुश हो। हज़रत बिश्र रहमतुल्लाह अलैह का इरशाद है कि हर एक यह कहता है कि मेरा पर खुदा पर तवक्कुल है, हालांकि खुदा की क़सम वह झूटा है क्योंकि अगर खुदा पर उसको तवक्कुल होता तो वह उस पर राज़ी रहता जो अल्लाह तआला उसके हक़ में करता है। हज़रत अबू तोराब नख़शबी कहते हैं बदन को उबूदियत में लगा देना, अपने दिल से रबूबियत से वाबस्ता कर देना और अपने कामों की दुरुस्ती की तरफ़ से मुतमईन हो जाना तवक्कुल है, पस अगर उसको कुछ मिल जाए तो शुक्र अदा करे न मिले तो सब्र करे।

हज़रत जुन्नून मिस्री का इरशाद है कि नफ़्स की तदबीर का तर्क और अपनी कुव्वत और ग़लबा का सहारा छोड़ देना तवक्कुल है, आप से एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया तो आपने फ़रमाया अरबाबे दुनिया को छोड़ देना ज़राये को तर्क कर देना तवक्कुल है। साएल ने अर्ज़ किया कि इस सिलसिले में कुछ मज़ीद फ़रमाइए तो आप ने फ़रमाया नफ़्स को बन्दगी में लगा देना और अरबाबे दुनिया से उसका निकाल लेना तवक्कुल है। हज़रत जुन्नून मिस्री ने तवक्कुल की यह तारीफ़ भी की है कि तवक्कुल वह हिर्स व हवा को तोड़ देना है लेकिन ज़ाहिरी कोशिश तो वह है कसब है और कसब सुन्नत से साबित है, यह कस्बी तवक्कुल को मानेअ नहीं है जबकि बन्दा अपने दिल में यह बात रासिख़ कर ले कि बिलाशुब्हा तक़दीर अल्लाह ही की तरफ़ से है इस लिए तवक्कुल का मुक़ाम क़ल्ब ही है। [illegible] दिल में जमा लेना ही तवक्कुल है जिसने कसब का इन्कार किया गोया उसने सुन्नत से इन्कार किया जिस ने तवक्कुल का इन्कार किया उसने गोया ईमान से इन्कार किया, पस जब असबाब से कोई चीज़ मुश्किल हो जाए तो समझ ले कि उसका तअल्लुक तक़दीरे इलाही से है और अगर कोई चीज़ सहल हो जाए तक भी यही समझे कि वह खुदा के सहल करने पर सहल होती है लिहाज़ा तमाम आज़ा और ज़ाहिरी क़वा को (किसी सबब के मुकम्मल करने में) इख़्तियार करने में कोशां हो कि यही हुक्मे इलाही है, हां बातिन को अल्लाह के वादे से मुतमईन रखे।

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि एक दफ़ा एक शख़्स एक ऊंटनी पर सवार आया और हुजूर रिसालत में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं इस ऊंटनी को छोड़े देता हूं और (इसकी हिफ़ाज़त के लिए) अल्लाह पर तवक्कुल करता हूं, हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसको बांध दो और फिर खुदा पर तवक्कुल करो।

सोलहा और ओरफ़ा ने कहा है कि तवक्कुल उस शीर ख़्वार बच्चा की तरह है जो सिवाए अपनी मां के छाती के और कोई ठिकाना नहीं जानता। इसी तरह मुतवक्किल भी सिवाये खुदा के और किसी सहारे को नहीं जानता। बाज़ हज़रात ने तवक्कुल की तारीफ़ इस तरह की है कि तवक्कुल अपने शकूक को रफ़ा करना और अल्लाह तआला पर भरोसा करना है। बाज़ हज़रात कहते हैं कि ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल की कुदरत पर एतमाद करना और दूसरे लोगों की कुदरत और इख़्तियार से ना उम्मीद हो जाना तवक्कुल है।

हुस्ने अख़लाक़

हुस्ने अख़लाक़ की अस्ल अल्लाह तआला का यह इरशाद है जो उसने अपने महबूब व बरगुज़ीदा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान में कुरआन में नाज़िल फ़रमाया है यानी बिला शुब्हा आप अज़ीम अख़लाक़ पर फ़ाएज़ हैं। हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया गया या रसूलल्लाह किस मोमिन का ईमान अफ़ज़ल है आप ने फ़रमाया जिस का अख़लाक़ सबसे अच्छा है।

हुस्ने अख़लाक़ की अफ़ज़लियत

हुस्ने अख़लाक़ बन्दे की तमाम सनअतों में अफ़ज़ल है, उससे जवांमर्दी के जौहर नुमायां होते हैं, इन्सान अपनी जिस्मानी बनावट के लिहाज़ से पोशीदा है लेकिन अपने अख़लाक़ के लिहाज़ से ज़ाहिर व नुमायां है। बाज़ मुहक़्क़ेक़ीन ने कहा है कि अल्लाह अज़्ज़ व [illegible]ल्ल ने अपने रसूल हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्[illegible] को मोजज़े करामतें [illegible] बहुत से फ़ज़ाएल ख़ास तौर पर अता फ़रमाए लेकिन उन फ़जाएल में स[illegible] किसी एक की ऐसी त[illegible]फ़ नहीं की जैसे के आप के अख़लाक़ की फ़रमाई यानी इरशाद फ़रमाय[illegible] बिला शुब्हा [illegible] अज़[illegible]म अख़लाक़ पर फ़ाएज़ हैं। बाज़ मुहक़्क़ेक़ीन का क़ौल है कि अल्लाह त[illegible] ने आप के ख़ुल्क़[illegible] की यह तारीफ़ इस लिए फ़रमाई कि आप ने दोनों जहान बख़्[illegible] दिए और [illegible] पर ही [illegible]कतेफ़ा किया। यह भी कहा गया है कि ख़ुल्के अ[illegible]ज़ीम यह है कि कमा[illegible] मारफ़ते इला[illegible]ही की [illegible]बिना पर किसी से झगड़ा न किया न जा[illegible] न कोई [illegible]से झगड़ा[illegible] यानी न किसी से [illegible]पना हक़ मांगे कि उसके बाइस झगड़ा करना प[illegible] और न किसी की हक़ त[illegible]फ़ी क[illegible] कि [illegible] बाइस दूसरा उससे झगड़े। बाज़ हज़रात ने ख़ुल्के [illegible]ज़ीम की [illegible]रीफ़ यह [illegible] है कि [illegible] मार[illegible] के बाद दूसरे लोगों के बुरे अख़लाक़ उस पर [illegible]सर अ[illegible]दाज़ न हों। हज़रत अबू सईद ख़[illegible] ने फ़रमाया कि आदमी के इरादा के सामने अल[illegible] सिवा कोई न हो (उसका इरादा अल्लाह की रज़ा के तहत हो) हज़रत जुनैद रहमतुल्लाह अल[illegible] ने फ़रमाया कि मैंने हारिस मुहासबी को कहते हुए सुना है कि हम ने तीन चीज़ों को ख[illegible] अव्वल कुशादा रवी व हिफ़्ज़े आबरू, दोम बग़ैर ख़यानत के ख़ुश कलामी, सोम वफ़ाये अहद के साथ दोस्ती का निभाना। बाज़ हज़रात का क़ौल है कि ख़ुल्के हुस्न यह है कि तुम से जो चीज़ दूसरे को पहुंचे उसको तुम हक़ीर समझो। दूसरों से जो कुछ तुम को मिले उसको अज़ीम समझो। बाज़ कहते हैं कि हुस्ने ख़ुल्क़ यह है कि तुम अपनी तरफ़ से दूसरों को ईज़ा न दो और दूसरों की तरफ़ से पहुंचने वाले दुख को बरदाश्त करो।

हुज़ूर का इरशाद

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा कराम से इरशाद फ़रमाया तुम्हारे माल में सब लोगों (के ख़र्च) की यक़ीनन गुंजाइश नहीं होगी लेकिन ख़न्दा पेशानी और हुस्ने ख़ुल्क़ में तो उनकी समाई कर लो। अल्लाह तआला के साथ हुस्ने ख़ुल्क़ यह है कि तुम उस के अवामिर को बजा लाओ और ममनूआत को तर्क कर दो और आम हालत में बग़ैर किसी इस्तेहक़ाक़ सवाब के उस की इताअत करो और बग़ैर तरद्दुद के अपने तमाम मुक़द्दरात को उसी के सुपुर्द करो और बग़ैर किसी

शिर्क के उसके एक तसलीम करो और बग़ैर किसी शक के उसको वादा में सच्चा जानो।

हज़रत जुन्नून मिस्री से किसी ने दरयाफ़्त किया कि सबसे ज़्यादा अंदोहनाक हालत किस शख़्स की है, फ़रमाया उसकी जो सबसे बद ख़ुल्क़ हो। हज़रत हसन बसरी ने अल्लाह तआ़ला के इस इरशाद: अपने कपड़ों को पाक रखिये, की तफ़सीर करते हुए कहा कि यानी अपने ख़ुल्क़ को अच्छा (पाकीज़ा) कर लो।

बाज़ लोगों ने आयत: और अल्लाह तआ़ला ने तुम को ज़ाहिरी और बातिनी दोनों क़िस्म की नेमतें पूरी पूरी अता की हैं, की तफ़सीर में बयान किया है कि ज़ाहिरी नेमत तो आज़ाए जिस्मानी की सेहत व तन्दरुस्ती है और बातिनी नेमत अख़लाक़ की पाकीज़गी है।

हज़रत इब्राहीम अदहम का इरशाद

हज़रत इब्राहीम अदहम से दरयाफ़्त किया गया कि क्या आप दुनिया में कभी ख़ुश भी हुए? फ़रमाया हां दो मरतबा ऐसा हुआ पहली मरतबा तो उस वक़्त जब कि मैं बैठा हुआ था कि एक कुत्ता आया और मुझ पर पेशाब कर दिया, दूसरी [illegible] उस वक़्त जब मैं बैठा था तो एक आदमी आया उसने मेरे तमांचा मारा।

रिवायत है कि हज़रत ओवैस क़रनी को जब लड़के देखते तो [illegible] को ईंटें मारते, आप उनसे कहते अगर पत्थर मारते ही हो तो छोटे छोटे पत्थर मारो ताकि मेरी पिंडलियां (इन बड़े पत्थरों और ईंटों से) लहु लहान न हो जाए और मैं नमाज़ [illegible] पढ़ सकूं। एक रिवायत है कि एक शख़्स अहनफ़ बिन कैस के पीछे पीछे उनको गालियां देता जाता था जब हज़रत अपने क़बीला के क़रीब पहुंच गए तो [illegible] गए और फ़रमाया ऐ शख़्स! अगर तेरे दिल में कुछ और बाक़ी रह गया हो तो उसे भी कह डाल ऐसा न हो कि आगे बढ़ कर कोई नादान शख़्स तेरी गालियां सुने और तुझे गालियां देने लगें (तो उस वक़्त तुझे अफ़सोस होगा)।

हज़रत हातिम असम से कहा गया कि इन्सान हर एक की (बात) बरदाश्त कर लेता है आप ने फ़रमाया हां मगर अपने नफ़्स के सिवा। रिवायत है कि अमीरूल मोमीनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब ने अपने गुलाम को आवाज़ दी, उसने काई जवाब नहीं दिया, आप दूसरी फिर तीसरी बार आवाज़ दी तो उसने कोई जवाब नहीं दिया, आप उसके पास गए तो उसको लेटे हुए देखा आपने फ़रमाया ऐ गुलाम क्या तू सुन नहीं रहा है, तो उसने कहा हां मैं सुन रहा हूं, आपने फ़रमाया फिर तूने जवाब क्यों नहीं दिया, उसने कहा मुझे आप की सज़ा का तो कोई डर ही नहीं था इस लिए मैंने जवाब देने में सुस्ती की, आप ने फ़रमाया जा तू अल्लाह के लिए आज़ाद है।

बाज़ हज़रात का क़ौल है कि हुस्ने ख़ुल्क़ यह कि तुम लोगों के साथ रहते हुए भी उनसे बेगाना रहो। बाज़ का ख़्याल यह है कि हुस्ने ख़ुल्क़ यह कि मख़लूक़ की तरफ़ जो ज़ुल्म तुम पर किया जाए उसको बरदाश्त कर लो और उनका हक़ बग़ैर तंगदिली और नागवारी के अदा करते रहो। इंजील में मौजूद है: मेरे बन्दे मुझे याद रख, जब तू गुस्सा में हो, मैं तुझे अपने ग़ज़ब के वक़्त अपनी रहमत के साथ याद रखूंगा।

मालिक बिन दीनार से किसी औरत ने कहा ऐ रियाकार! आपने उसको जवाब दिया कि तुमने मेरा वह नाम पा लिया जिसे अहले बसरा भूल चुके थे। हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम ने

अपने बेटे से फ़रमाया ऐ मेरे प्यारे बेटे तीन क़िस्म के लोग इन तीन मौक़ों पर पहचाने जाते हैं, (1) हलीम और बुर्दबार गुस्सा के वक़्त (2) बहादुर जंग के मौक़ा पर (3) दोस्त हाजत और ज़रुरत के वक़्त।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि इलाही! मेरी तुझ से यह दरख़्वास्त है कि मेरे बारे वह कुछ न कहा जाए जो मुझ में मौजूद नहीं है (यानी मुझ पर बोहतान तराशी न हो) जवाब आया कि यह हम ने अपने लिए जब नहीं किया तो तेरे लिए क़ैसे करूं।

शुक्र

शुक्र की अस्ल

शुक्र की अस्ल अल्लाह तआला का यह इरशाद हैः अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हारे लिए नेमतें ज़रूर और ज़्यादा कर दूंगा। यही हदीस भी शुक्र की हक़ीक़त पर रौश[illegible] डालती है जिसको हज़रत अता ने नक़्ल किया है, हज़रत अता का बया[illegible] है मैं हज़रत आएशा [illegible] ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या उम्मुल मोमिनीन आप हम को [illegible]लुल्लाह सल्लल्लाहो [illegible]लैहि वसल्लम की सबसे ऊम्दा और आला वह बात बतायें कि जो आप ने [illegible]भी देखी हो, [illegible] सुन [illegible] आप अश्कबार हो गईं और फ़रमाया आप की कौन सी बात ऐसी न थीं [illegible] ऊम्दा और [illegible]ला न हो। एक मर्तबा रात में आप मेरे पास तशरीफ़ लाए और मेरे सा[illegible] आराम [illegible] लगे, आ[illegible] को मुझ में इस क़दर कुर्ब था मेरी जिल्द आप की जिल्द से [illegible] हो रह[illegible] थी, आप ने फ़[illegible]रमाया [illegible] अबू बकर की बेटी आज तुम मुझे अपने [illegible]ब की इ[illegible] करने दो[illegible] अर्ज़ किया हर च[illegible] कि आप का कुर्ब मुझे पसन्द है लेकिन मैं आप [illegible] ख़्वाहिश को तरजीह देती हूं मैंने [illegible] इजाज़त दे दी। हुजूर वाला उठ कर मशक के पास त[illegible]रीफ़ ले ग[illegible] और वुज़ू [illegible] काफ़ी पा[illegible] कि[illegible] फिर खड़े हो कर नमाज़ में मशगूल हो गये आ[illegible] क़याम की हालत में इस क़दर रोये कि आ[illegible]के आंसू आप के नूरानी सीने तक पहुंचने लगे फिर [illegible] रूकूअ फ़रमाया और फिर अश्कबारी की, फिर सजदा किया और रोते रहे फिर सरे मुबारक उठाया इस [illegible]रान में भी आप अश्कबार रहे यहां तक हज़रत बिलाल आए और नमाज़े फ़ज्र की इत्तेला [illegible] वक़्त मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह इस क़दर रोने का मौजिब क्या है जब कि अल्लाह तआला ने आप के तमाम अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये हैं, आप ने यह सुन कर फ़रमाया क्या मैं खुदा का शुक्र गुज़ार बन्दा ना बनूं और क्योंकर ऐसा ना करूं जब कि अल्लाह ने मुझ पर यह आयत नाज़िल फ़रमाई हैंः

आसमानों और ज़मीन के माबैन निशानियां हैं (आख़िर आयत तक) अहले तहक़ीक़ ने शुक्र के हक़ीक़त में कहा कि यह आजिज़ाना तौर पर मुनईम की नेमत का एतराफ़ करना है और इसी मानी में अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात के लिए लफ़्ज़े शकूरो मजाज़न फ़रमाया है जिस के मानी हैं कि वह बंदों को उनकी शुक्र गुज़ारी का बदला देता है, शुक्र के बदला को भी शुक्र कहा गया है जैसा की अल्लाह तआला के इस इरशाद में है।

बुराई के बदला बुराई को मजाज़न फ़रमाया है वरना हक़ीक़त में बुराई का बदला बुराई नहीं है। बाज़ अहले तहक़ीक़ कहते हैं कि शुक्र की हक़ीक़त है किसी मोहसिन के एहसान को या[illegible] करके उसकी तारीफ़ करना लिहाज़ा बन्दा की तरफ़ से खुदावन्द तआला के शुक्र अदा करने के

मानी ही खुदा की तारीफ़ उसके एहसान की याद के साथ और खुदा की तरफ़ से बंदा का शुक्र अदा करने के हैं कि खुदावन्द तआला की तरफ़ से बन्दा की शुक्रगुज़ारी पर उसकी तारीफ़ करना। बंदा का एहसान (हुस्ने किरदार) खुदावन्द तआल की इताअत करना है और हक़ तआला का एहसान अपने बंदा पर इनाम व इकराम फ़रमाना है। बंदा की तरफ़ से अल्लाह का शुक्र अदा करना यह है कि अल्लाह तआला के इनाम का ज़बान से ज़िक्र और दिल से उसका इक़रार करे।

शुक्र की क़िस्में

शुक्र की कई क़िस्में हैं अव्वल ज़बान का शुक्र। ज़बान का शुक्र यह है कि आजिज़ाना तरीक़े पर अल्लाह की तारीफ़ के साथ साथ अल्लाह की नेमत का एतराफ़ व इक़रार। दोमः बदन व आज़ा के साथ शुक्र, वफ़ादारी और ख़िदमत के साथ शुक्र गुज़ारी है। सोमः दिल का शुक्र, यह हुदूदे इलाही की पाबन्दी के साथ हाज़िरी के फ़रिश्ता पर यक सूई के साथ खड़ा हो जाना। चहारुमः आंखों और कानों का शुक्र, आंखों का शुक्र यह है कि अपने साथी के ऐब को देख कर उससे अग़माज़ और पर्दा पोशी करे, कानों का शुक्र यह है कि साथी के अन्दर किसी ऐब की ख़बर सुनकर उसको छुपा ले। तमाम मबाहिस का हासिल यह है कि शुक्र यह है कि अल्लाह तआला की नेमतें होते हुए उसकी नाफ़रमानी न करना।

कहा गया है कि आलिमों का शुक्र क़ौली (क़ौल से) होता है और आबिदों का अमली और आरिफ़ों का शुक्र यह है कि अल्लाह के हुक्म पर हर हाल में क़ायम रहें और यक़ीन रखें कि हम से जो नेकी हो रही है वह जिस ताअत व अब्दीयत और ज़िक्रे खुदावन्दी का ज़हूर जो हम से हुआ है वह सब कुछ अल्लाह की तौफ़ीक़, उसकी मदद क़ुव्वत, ताक़त और उसके इनाम की बदौलत हुआ है।

बन्दा को चाहिए कि शुक्र में अपने अहवाल से [illegible] थलग हो कर अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात और नूर में फ़ना हो जाए अपनी आजिज़ी, नादानी, कोताही का इक़रार करे और हर हाल में अपना मरकज़े सु[illegible]ी की ज़ात को जाने।

शुक्र की तारीफ़ में मुख़्तलिफ़ अक़वाल

अबू बकर वर्राक़ का इरशाद है कि हुदूदे इलाही की हिफ़ाज़त रखना और एहसाने इलाही का मुशाहिदा करना शुक्रे नेमत है और यह भी कहा गया है कि अपने नफ़्स को तुफ़ैली समझना भी शुक्रे नेमत है (अदाए शुक्र में।) हज़रत अबू उसमान ने फ़रमाया कि अदाए शुक्र से क़ासिर रहने की मारफ़त का नाम शुक्र है यह भी कहा गया है कि शुक्र का शुक्र अदा ही कामिल शुक्र है (यानी इस बात का शुक्र अदा करना कि अल्लाह तआला ने शुक्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई कामिल शुक्र है) कि तौफ़ीक़े शुक्र भी एक बड़ी नेमत है। लिहाज़ा बन्दा को चाहिए कि पहले शुक्र अदा करे फिर तौफ़ीक़ के शुक्र का शुक्र अदा करे फिर तौफ़ीक़े शुक्र पर शुक्र अदा करने का शुक्र अदा करे इस तरह शुक्र अदा करने का एक ग़ैर महदूद सिलसिला जारी रखा जाए।

बाज़ अहले तहक़ीक़ ने कहा कि नेमत को मुनइम की तरफ़ आजिज़ाना अंदाज़े बयान के साथ मन्सूब करना शुक्र है। हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं कि शुक्र यह है कि तुम खुद को अल्लाह की नेमत का अहल न समझो। बाज़ ने कहा है कि शाकिर वह है जो नेमते मौजूदा पर शुक्र अदा करे और मशकूर (बहुत शुक्र गुज़ार) वह है जो उस नेमत पर शुक्र अदा करे जो उसको अभी

नहीं मिली है। एक क़ौल यह भी है कि शाकिर वह है जो मिलने पर शुक्र करे और मशकूर वह है जो न मिलने पर शुक्र करे एक क़ौल यह भी है कि शाकिर वह है जो इनाम व बख़्शिश पर शुक्र अदा करे और मशकूर वह है जो मुसीबत पर शुक्र करे। यह भी कहा गया है कि शाकिर वह है जो किसी नेमत के मिलने पर शुक्र अदा करे और मशकूर वह है जो नेमत के अदमे हुसूल पर भी शुक्र करे।

हज़रत शिबली ने फ़रमाया कि शुक्र मुनइम का दीदार है न कि नेमत का। बाज़ अहले तहक़ीक़ कहते हैं कि शुक्र नेमते मौजूदा को क़ैद रखता है और नेमते ग़ैब को शिकार करता है। अबू उसमान का इरशाद है कि अवाम का शुक्र तो माकूलात, मशरूबात और मलबूसात पर होता है और ख़्वास का शुक्र उनकी वारदाते क़ल्बी पर होता है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है मेरे बन्दों में थोड़े ही शुक्र गुज़ार बन्दे हैं।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, इलाही मैं तेरा किस तरह शुक्र अदा करुं, तेरा शुक्र अदा करना भी तो तेरी एक नेमत है, पस अल्लाह तआ़ला ने उन पर वही नाज़िल फ़रमाई कि तू ने मेरा शुक्र अब अदा किया। बाज़ का क़ौल है कि जब ऐ इंसान तेरे हाथ बदला चुकाने से क़ासिर रहे तो चाहिए कि तेरी ज़बान शुक्र में दराज़ हो।

रिवायत है कि जब हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को मग़फ़िरत की ख़ुशख़बरी दी गई तो उन्होंने कुछ ज़िन्दगी मांगी उनसे पूछा गया कि मज़ीद ज़िन्दगी क्यों चाहते हो अर्ज़ किया इस लिए कि तेरी नेमत का शुक्र अदा कर सकूं, इस से पहले तो मैं मग़फ़िरत के लिए मसरूफ़े अमल रहता था। यह सुन कर फ़रिशते ने अपने बाज़ू फैलाए और उनको ऊपर उठा लिया गया।

रिवायत है कि किसी नबी का एक छोटे पत्थर के पास से गुज़र हुआ उस पत्थर से बड़ी मिक़दार में पानी जारी था यह बात देख कर उनको बहुत ताज्जुब हुआ अल्लाह तआ़ला ने पत्थर को गोयाई की कुव्वत अता कर दी, नबी अल्लाह ने उससे पानी निकलने की वजह दरयाफ़्त की, पत्थर ने जवाब दिया कि जब से अल्लाह तआ़ला ने आयत, आदमी और पत्थर दोज़ख़ का इंधन होंगे, नाज़िल फ़रमाई है मैं ख़ौफ़ के बाइस रोता रहता हूं (यह पानी मेरे आंसू हैं) नबी अल्लाह ने दुआ की कि इलाही इस पत्थर को दोज़ख़ से महफ़ूज़ रख, वही नाज़िल हुई कि हमने इसको नजात दे दी। नबी अल्लाह वहां से रुख़सत हो गए जब वापस हुए तो पहले से ज़्यादा पानी निकलते देखा यह देख कर उनको ताज्जुब हुआ अल्लाह ने पत्थर को फिर कुव्वते गोयाई अता फ़रमा दी और नबी अल्लाह ने पत्थर से इस तरह रोने की वजह दरयाफ़्त की और फ़रमाया कि मैंने तेरी बख़्शिश के लिए दुआ की थी (और वह क़बूल हो गई है) पत्थर ने अर्ज़ किया कि पहला रोना तो ग़म व ख़ौफ़ का रोना था और यह रोना शुक्र और मुसर्रत का रोना है।

बाज़ असहाब का इरशाद है कि शाकिर को मज़ीद नेमतें हासिल होती हैं क्योंकि उसको नेमतों को मुशाहिदा होता है अल्लाह तआ़ला का इरशाद है कि अगर तुम शुक्रे नेमत बजा लाओगे मैं तुमको मज़ीद नेमतों से नवाज़ूंगा।

मुसीबत पर सब्र करने वाला अल्लाह की पनाह लेता है क्योंकि वह मुशाहदए मुसीबत में होता है उस पर इनाम यह होता है कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया दिया कि मैं यक़ीनन सब्र करने वालों के साथ हूं। बाज़ हज़रात का इरशाद है कि अपनी सांसों पर हम्द करना और हवास की नेमतों पर शुक्र करना ही शुक्र है। हदीसे सही में आया है कि जन्नत की तरफ़ सबसे पहले

हम्द करने वाले बुलाए जायेंगे। बाज़ का क़ौल है कि अल्लाह ने जो मुसीबत दफ़ा फ़रमा दी है उस पर हम्द होती है और अल्लाह तआला ने जो एहसान फ़रमाया है उस पर शुक्र होता है। मनकूल है कि एक शख़्स का असनाए सफ़र एक बड़े बूढ़े के पास गुज़र हुआ मुसाफ़िर ने उस साल ख़ूर्दा से उसका हाल दरयाफ़्त किया उसने कहा कि मैं इब्तदाए जवानी में अपनी चचा ज़ाद बहन से मोहब्बत करता था और वह भी मुझ उसी तरह चाहती थी, हुस्ने इत्तेफ़ाक़ कि मेरा उस से निकाह हो गया, जब शबे ज़िफ़ाफ़ हुई तो मैंने अपनी बीवी से कहा कि आओ! आज रात हम दोनों अल्लाह की इबादत इस शुक्र में करें कि उसने हम दोनों को मिला दिया चुनांचे (कुर्बत के बजाए) वह पूरी रात हम ने इबादत में गुज़ार दी, उस वक़्त से आज तक सत्तर अस्सी साल हम को इसी हाल में हो गये हैं, हर रात यही कैफ़ीयत होती है। उस वक़्त यह बातें हो रही थीं उसकी बीवी भी उसके साथ थी, उन बुज़ुर्ग ने अपनी बीवी से इस बात की जब तसदीक़ चाही तो बीवी ने कहा ऐसा ही है।

सब्र

अल्लाह तआला का यह क़ौल सब्र के सिलसिले में अस्ल है:

ऐ ईमान वालो! **सब्र करो और सब्र कराओ** और डरो शायद इससे तुम को रुस्तगारी हासिल हो जाए।

इस सिलसिले में एक दूसरी आयत है:

तुम सब्र करो, सब्र [illegible]लाह तआ[illegible] की मदद के साथ [illegible]।

इस सिलसिले में वह हदीस शरीफ़ जो हज़रत [illegible]शा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया सब्र [illegible] जो पहली ही मुसीबत पर हो। एक रिवायत में आया है एक शख़्स ने ख़िदमते नबवी में अर्ज़ किया [illegible] रसूलल्लाह मेरा माल जाता रहा और मेरी सेहत [illegible] गई (जिस्म बीमार हो गया) हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया उस बन्दे में कोई भलाई नहीं है जिस का माल चोरी न जाए और जिस्म बीमार न हो।

अल्लाह तआला जब [illegible] बन्दा से मोहब्बत फ़रमाता है तो उसको आज़माईश करता है और जब उसको आज़माइश में डालता है तो उसको सब्र भी अता फ़रमाता है। एक और हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा के यहां बन्दा के लिए ज़रूर एक ऐसा दर्जा होता है कि उस दर्जा तक वह अपने अमल के ज़रिये नहीं पहुंच पाता यहां तक कि वह किसी जिस्मानी तकलीफ़ (मरज़) में मुब्तला हो जाता है और फिर वह उस ज़रिया से उस दर्जा तक पहुंच जाता है। एक और हदीस में इस तरह है कि आयत मय्यामल सूअन यूज्ज़बही नाज़िल हुई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने ख़िदमते नबवी में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अब इस आयत के नुज़ूल के बाद फ़लाह किस तरह मय्यसर होगी? हुज़ूर ने फ़रमाया अबू बकर ख़ुदा तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए क्या तुम अलील नहीं होते? क्या तुम पर मुसीबत नाज़िल नहीं होती, क्या तुम सब्र नहीं करते, क्या तुम ग़मज़दा नहीं होते? बस यही तुम्हारे गुनाह का बदला हो जाता है यानी जो कुछ दुख तुम पर आते हैं वह तुम्हारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाते हैं।

सब्र की क़िस्में

सब्र की कई क़िस्में हैं अव्वल अल्लाह के लिए सब्र करना यानी हुक्मे इलाही बजा आवरी और मुमानिअत की इताअ़त में जो कुछ तकलीफ़ पहुंचे उस पर सब्र करना। दोम अल्लाह तआ़ला की मशीयत पर सब्र करना यानी अल्लाह तआ़ला का जो कुछ फ़ैसला और अहकाम जारी हों और उनसे तुम पर कुछ मुसीबत आए या उफ़ताद पड़े उस पर सब्र करना। सोम अल्लाह के वादों पर सब्र करना यानी रिज़्क़ की कशाइश, माली ज़रूरियात की तकमील, ज़रूरत का रवा होना और आख़िरत में सवाब का जो वादा किया है उस वादा पर सब्र करना।

बाज़ अहले तहक़ीक़ ने सब्र की दो क़िस्में बयान की हैं अव्वल यह कि उन चीज़ों के करने या न करने पर सब्र करना जिनके करने पर बन्दे को इख़्तियार है। दोम उन बातों पर सब्र करना जिन पर बंदा को इख़्तियार नहीं है। पहले क़िस्म के सब्र की दो सूरतें हैं अव्वल अवामिरे इलाही की तामील पर सब्र, दोम नवाही की इताअत पर सब्र, दूसरी क़िस्म का सब्र यह है कि उन उमूर पर सब्र करे जो बन्दे के इख़्तियार में नहीं है यानी इंसान के लिए जिस्मा[illegible] दिली या रूहानी तकलीफ़ का जो हुक्मे इलाही है और मशीअते खु[illegible]दी है उस पर सब्र [illegible]रना (मायूसी और नाफ़रमानी न करना)।

बाज़ असहाब का क़ौल है कि सब्र करने वाले ती[illegible] तरह के होत[illegible] अव्व[illegible] वह तकल्लुफ़ और जब्र के साथ सब्र करे, दोम आम सब्र करने वाला, [illegible] बहुत ज़्या[illegible]ा सब्र करने वाला।

रिवायत है कि एक शख़्स ने हज़रत शिबली से कहा कि क[illegible]न सा [illegible] साबिर के लिए सबसे ज़्यादा सख़्त है आप ने फ़[illegible]या अल्ल[illegible]की राह में सब्र करन[illegible] उस शख़्स ने कहा नहीं, आपने फ़रमाया सब्र लि[illegible]ल्लाह (अल्लाह के वास्ते [illegible]ब्र क[illegible]ना) उसने [illegible]हा नहीं यह भी नहीं है, आप ने फ़रमाया सब्र मअ[illegible]अल्लाह (अल्लाह की मअ़इयत क[illegible] करने में साबिर रहना) उस शख़्स ने कहा नहीं, आप[illegible] उस [illegible] फ़रमाया [illegible]कर कौन सा सब्र है, [illegible] शख़्स ने जवाब दिया सब्र ल मिनल्लाह (अल्ला[illegible]खते हुए सब्र करना) यह सुनते ही हज़रत शिबली ने एक चीख़ मारी यह मालूम होता था कि[illegible]नकी रूह निकल जाएगी।

हज़रत जुनैद का इ[illegible]

हज़रत जुनैद का इ[illegible]द है कि दुनिया से आख़िरत की तरफ़ जाना मोमिन के लिए आसान और सहल है लेकिन ख़ुदा की राह में मख़लूक़ को छोड़ देना मुश्किल है और नफ़्स को छोड़ कर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ़ करना मुश्किल तर है और सब्र मअ अल्लाह मुश्किल तरीन सब्र है। एक बार जब सब्र के बारे में आप से दरयाफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया कि मुंह बिगाड़े बग़ैर किसी कड़वी चीज़ का एक एक घूंट करके पीना सब्र है।

हज़रत अली का इरशाद

हज़रत अली ने फ़रमाया सब्र ईमान से उसी तरह वाबस्ता है जिस तरह सर बदन से लगा होता है। हज़रत जुन्नून मिसरी फ़रमाते है कि सब्र अल्लाह की ना पसन्द चीज़ों से दूर रहने और मसाइब के ग़मों का घूंट घूंट पीना और मआश की तंगी के बावजूद बेनियाज़ी का इज़हार करना सब्र है। बाज़ का क़ौल है कि हर मुसीबत को ख़न्दा पेशानी से बर्दाश्त करने का नाम सब्र है। यह भी कहा गया है कि सब्र के मानी हैं मसाइब में इज़हारे शिकवा व शिकायत के बग़ैर फ़ना

हो जाना। बाज़ कहते हैं कि जिस तरह आफ़ियत, आसूदगी की मौजूदगी में दिल को एक गूना सुकून होता है उसी तरह मुसीबत की हालत में दिल के ठहराव और सुकून का नाम सब्र है। इस सिलसिले में यह भी कहा गया है कि इबादत की बेहतरीन जज़ा सब्र की जज़ा है इससे बढ़ कर कोई जज़ा नहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

सब्र करने वालों को उनका अज्र बे हिसाब पूरा पूरा दिया जाता है।

अल्लाह तआला ने यह भी इरशाद फ़रमाया है:

जिन लोगों ने सब्र किया हम ज़रूर उन्हें ज़्यादा नेक चीज़ों के साथ अज्र देंगे जैसा कि वह सब्र करते हैं।

बाज़ हज़रात का कहना है कि अल्लाह तआला की मअइयत में साबित कदम रहना और इसकी फ़र्सतादा मुसीबत के दुखों का कुशादा दिली से इस्तिक़बाल करना सब्र है। हज़रत ख़्वास ने फ़रमाया कि सब्र मअ अल्लाह के मानी हैं कुरआन और सुन्नत (रसूलुल्लाह के अहकाम पर साबित क़दम रहना) यहया बिन मआज़ राज़ी ने कहा कि आशिक़ों का सब्र ज़ाहिदों के सब्र से ज़्यादा सख़्त है।

सब्र करते हैं हम हर सूरत
बस तेरे वास्ते नहीं होता

बाज़ हज़रात का इरशाद है कि सब्र शिक़ायत को तर्क करना है। बाज़ ने कहा है कि अल्लाह तआला के हुज़ूर आजिज़ी का इख़्तियार करना और उसकी पनाह चाहना सब्र है। बाज़ कहते हैं कि सब्र के मानी हैं सिर्फ़ खुदा से मदद मांगना बाज़ कहते हैं कि सब्र अल्लाह के इस्म की तरह है, कहा गया है कि सब्र यह है कि नेमत व मुसीबत में फ़र्क़ न करे और दोनों सूरतों में दिल जमई रहे।

रज़ा

रज़ा की तारीफ़

रज़ा की अस्ल अल्लाह तआला का यह इरशाद है: अल्लाह उन मुसलमानों से राज़ी हुआ और वह उससे राज़ी हुए। और दूसरी आयत है: उनका रब उनको अपनी रहमत और रज़ामन्दी की बशारत देता है।

हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया उस शख़्स ने ईमान का मज़ा चख लिया जो अपने रब की रबूबियत से राज़ी हुआ। रिवायात है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने हज़रत अबू मूसा अशअरी को लिखा था (हम्द व सलात के बाद कुल भलाई अल्लाह के इल्म पर राज़ी ब रज़ा होने में है पस अगर तुम राज़ी रह सको तो बेहतर है वरना सब्र करो। इस इरशादे इलाही, जब उनमें से किसी को ख़बर दी जाती है कि तुम्हारे घर में लड़की पैदा हुई है तो ग़म से उसका मुंह सियाह पड़ जाता है, की तशरीह व तफ़सीर में हज़रत क़तादा ने फ़रमाया यह मुशरिकों का तरीक़ा था। अल्लाह तआला ने उनके इस ख़ुब्से अमल की इस आयत में ख़बर दी है, पस मोमिन के शायाने शान है कि जो अल्लाह तआला ने उसको मक़सूम कर दिया है उस पर राज़ी रहे अल्लाह का फ़ैसला अपने

फ़ैसले से कहीं बेहतर है।

ऐ इब्ने आदम जो कुछ खुदा ने तेरे लिये मुक़र्रर फ़रमा दिया है और जिस को तू नागवार महसूस कर रहा है वह तेरे लिए उस से बेहतर है कि ख़ुदावन्द तआला तेरे लिए तेरी पसन्दीदा चीज़ मुक़र्रर करता। खुदा से डर और उसकी क़ज़ा पर राज़ी रह।

अल्लाह तआला का इरशाद है।

और जिस चीज़ को तुम नागवार समझते हो, हो सकता है कि वह तुम्हारे लिए बेहतर हो और जिस चीज़ को तुम पसन्द करते हो शायद वह तुम्हारे लिए बुरी हो अल्लाह वाक़िफ़ है तुम ना वाक़िफ़ हो (तुम्हारी दीनी व दुनियवी मसलेहत से अल्लाह ही वाक़िफ़ है)।

पस अल्लाह तआला ने मख़लूक़ से उनकी मसलहतें पोशीदा रखी हैं और उनको अपनी बन्दगी के लिए मुकल्लफ़ बनाया है जिससे मुराद अवामिर का पूरा करना और ममनूआत (नवाही) से रूकना, मुक़द्दर के आगे सर झुकाना और क़ज़ाए इलाही पर अपने तमाम मुनाफ़े और नुकसानात में राज़ी ब रज़ा रहना, अल्लाह तआला ने अन्जाम और मसलेहत [illegible] को अपने इख़्तियार में रखा है। पस बन्दे को चाहिए कि हमेशा अपने [illegible] और मौला की इता[illegible] में लगा रहे, और उससे राज़ी रहे जो कुछ खुदा ने उसके लिए मक़सूम [illegible] कर दिया है उस पर [illegible]हमत न दे। यह बात अच्छी तरह जान लो कि आदमी अपने मक़सूम [illegible] लिए जिस [illegible] तक[illegible]र के मुक़ाबला में कशमकश करेगा और जितना भी अपनी ख़्वाहिश के [illegible] होगा और जिस क़दर रज़ा और क़ज़ा को तर्क करेगा उसी क़दर तकलीफ़ में र[illegible]गा। जो [illegible] तक़दीर [illegible] हुक्म पर राज़ी रहता है वह आराम से रहता है और तक़दीरे ख़ुदावन्[illegible] से नाराज़ [illegible]ता है इसका रंज व अलम बढ़ जाता है हालांकि दुनिया [illegible] वही कुछ [illegible]लता [illegible] जो मक़स[illegible] में होता है, जब तक नफ़्सानी ख़्वाहिश इन्सान [illegible]र हुकमरां और उसकी पेशवा रह[illegible] है और [illegible]दा हुक्मे क़ज़ा पर राज़ी नहीं होता वह नतीजा में दुख पर दुख [illegible]ता है और उसकी [illegible] में [illegible]फ़ा होता रहता है, राहत के हुसूल तो नफ़्स की [illegible]खाल[illegible]त में है इस लिए कि इस सूरत में [illegible] महाला राज़ी ब क़ज़ा होना होता है और नफ़्स [illegible]क़त का नतीजा तकलीफ़ और मशक़्क़त, पस इस लिये कि इस सूरत में बंदा हो हक़ से कशाक[illegible] करना पड़ती है, खुदा करे कि ख़्वाहिशे नफ़्स बाक़ी न रहे और वह हो तो हमारा भला [illegible]ो।

रज़ा हाल है या मक़ाम

साहिबाने तरीक़त के माबैन इस तअय्युन में इख़तिलाफ़ है कि रज़ा हाल है या मक़ाम। अहले इराक़ ने इसको हाल कहा है बन्दा के इख़्तियार को इस में दख़ल है यह भी मिन जानिब दिल ही पैदा होने वाली एक हालत है और ग़ैर मुस्तक़िल है इस के बाद दूसरी हालत आ जाती है।

सुफ़याए ख़ुरासान फ़रमाते हैं कि रज़ा एक मक़ाम है और तवक्कुल की आख़िरी हद है, उस हद तक बन्दा अपनी रियाज़त से पहुंच सकता है, दोनों क़ौलों में मुताबिक़त इस तरह हो सकती है कि इब्तेदाई रज़ा बन्दा को रियाज़त से हासिल हो सकती है यह रज़ा (कसबे अब्द) का एक मक़ाम है और इन्तेहाए रज़ा एक हाल है जो क़ाबिले कसब नहीं है। पस साहबे रज़ा वह बन्दा है जो तक़दीरे ख़ुदावन्दी पर एतराज़ न करे। अबू अली दक़्क़ाक़ फ़रमाते हैं रज़ा यह नहीं है कि तकलीफ़ का एहसास ही बन्दा न करे बल्कि रज़ा यह है कि तू तक़दीरे ख़ुदावन्दी पर एतराज़

करे। कुछ और मशाइख़ ने फ़रमाया है कि तक़दीरे ख़ुदावन्दी पर रज़ा इख़्तियार करना ख़ुदा रसी का बहुत बड़ा ज़रीया है और दुनिया की जन्नत है यानी जिस बन्दा को रज़ा से नवाज़ा गया उसको कामिल फ़राख़ी हो गई और कुर्बे आला से सरफ़राज़ किया गया।

रिवायत है कि एक शार्गिद ने अपने उस्ताद से दरयाफ़्त किया कि क्या बन्दा यह जान सकता है कि ख़ुदा उससे राज़ी है? उस्ताद ने जवाब दिया नहीं जान सकता, ग़ौर करो कि किस तरह जान सकता है जब कि रज़ाए इलाही पोशीदा है, शागिर्द ने कहा कि बन्दा रज़ाए इलाही जान लेता है, उस्ताद ने कहा किस तरह? शागिर्द ने जवाब किया कि जब मैं अपने क़ल्ब को ख़ुदा से राज़ी पाता हूं तो जान लेता हूं कि वह मुझ से राज़ी है, उस्ताद ने कहा कि ऐ शार्गिद तूने ख़ूब बात कही, बंदा उसी वक़्त ख़ुदा से राज़ी होता जब कि ख़ुदा उससे राज़ी होता है।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया है: अल्लाह तआला उनसे राज़ी हुआ और वह ख़ुदा से राज़ी हुए यानी ख़ुदा की ख़ुशनूदी के बाइस वह लोग ख़ुश हुए, बयान किया जाता है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी। इलाही मुझे ऐसा कोई अमल बता दे जिस के करने से तू राज़ी हो, अल्लाह तआला ने जवाब दिया कि तुझ [illegible] उसकी ताक़त नहीं, हज़रत मूसा सजदे में गिर पड़े, अल्लाह तआला ने वही भेजी कि ऐ इमरान के बेटे! मेरी रज़ा इस में [illegible] कि तू मेरी क़ज़ा पर राज़ी रहे।

कहा गया है कि जो कोई मक़ामे रज़ा पर पहुंचना [illegible] उसको चाहिए कि उस अमल को इख़्तियार करे जिस में ख़ुदा ने अपनी रज़ा रखी है। रज़ा की दो क़िस्में हैं एक ख़ुदा पर राज़ी रहना दूसरे ख़ुदा से राज़ी रहना। ख़ुदा [illegible] राज़ी रहने का मतलब यह है कि बन्दा उसको साहिबे तदबीर माने और ख़ुदा से राज़ी रहने [illegible] मानी यह है कि अल्लाह तआला हाकिम व साहबे फ़ैसला होने के [illegible]तबार से जो फ़ैसला करता है उ[illegible] से राज़ी रहे और बाज़ ने कहा कि रज़ा यह है कि अगर दोज़ख़ उसकी दाहनी जानिब [illegible] जाए तो उसको बाईं जानिब करने का ख़्याल दिल में न लाए। कहा गया है कि रज़ा क़ल्ब से ना गवारी को निकाल देने का नाम है दिल में सिर्फ़ फ़रहत [illegible] मुसर्रत ही बाक़ी रहे। जनाब राबिया अदविया से दरयाफ़्त किया गया कि बन्दा तक़दीर पर कब राज़ी होता है, जवाब दिया वह मुसीबत पर वह ख़ुश होने लगे, जिस तरह नेमत पर ख़ुश होता [illegible] रिवायत है कि हज़रत शिबली ने हज़रत जुनैद बग़दादी के सामने ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह पढ़ा हज़रत जुनैद ने फ़रमाया आयत पढ़ना सीने की तंगी की वजह से है (यानी मुसीबत को मुसीबत समझे और उससे नाख़ुश होने की वजह से) और सीने की तंगी रज़ाए इलाही के तर्क की वजह से है। हज़रत अबू सुफ़ियान ने फ़रमाया कि रज़ा यह है कि न तो ख़ुदा से जन्नत की आरज़ू करे और न दोज़ख़ से पनाह मांगे। हज़रत जुन्नून मिस्री ने कहा कि तीन बातें रज़ा की अलामतों में से हैं, क़ज़ा से पहले इख़्तियार को तर्क कर देना और क़ज़ा के बाद तल्ख़ी को ख़त्म कर देना और मुसीबत के दौरान मोहब्बत का जोश पैदा होना। आप ही से यह भी मनक़ूल है कि रज़ा तक़दीर की तल्ख़ी पर दिल का ख़ुश होना है और अबू उसमान से हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस क़ौल का मतलब दरयाफ़्त किया गया: इलाही मैं तुझ से क़ज़ा के बाद रज़ा का तालिब हूं। हज़रत अबू उसमान ने कहा रज़ा क़ज़ाए इलाही से पहले के मानी हैं रज़ा का अज़्म करना और क़ज़ा के बाद रज़ा मानी हैं क़ज़ा पर राज़ी होना। एक और रिवायत में आया है कि हज़रत हुसैन बिन अमीरूल

मोमिनीन अली से कहा गया कि अबू ज़र फ़रमाते हैं कि फ़ेक्र मेरे नज़दीक ग़िना है, बीमरी मुझे सेहत से और मौत हयात से ज़्यादा पसन्दीदा है आप ने जवाब दिया अल्लाह तआला अबू ज़र पर रहम फ़रमाए मैं कहता हूं कि जो अल्लाह तआला कि पसन्दीदगी पर भरोसा करे वह ख़ुदा के पसन्दीदगी के सिवा किसी चीज़ की तमन्ना नहीं करेगा।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ का इरशाद

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ ने बिश्र हाफ़ी से इरशाद फ़रमाया कि दुनिया में रज़ा ज़ुहद से अफ़ज़ल से सबब इस का यह है कि साहबे रज़ा अपने मरतबा से बलन्द मरतबा की तमन्ना नहीं करता। हज़रत फ़ुज़ैल का यह फ़रमाना बजा है इस लिए कि इस क़ौल में रज़ा बिलहाल है और रज़ा बिलहाल में वह तमाम ख़ूबियां जमा हैं। अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम से इरशाद फ़रमाया:

मैंने अपने कलाम और पयाम से सरफ़राज़ करने में तुम को दूसरे लोगों पर तरजीह दी पस जो कुछ मैंने तुम को दिया उसको ले लो और शुक्र अदा करने वालों में से हो जाओ।

इसी तरह अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाया:

मुख़तलिफ़ लोंगों को हम ने जो रौनक़े दुनयवी बतौर इम्तेहान अता की है तुम उसकी तरफ़ नज़र न उठाओ।

इस आयत में अल्लाह तआला अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अदब की तालीम दी है और आयत [illegible] रिज़्को र[illegible] ख़ैरुन व अल अब[illegible] में हाल पर क़ायम रहने, राज़ी ब रज़ा रहने और क़ज़ा पर क़ानेअ रहने की तालीम से मक़सूद यह है कि हम ने जो आप को नबूव्वत, क़नायत, सब्र, विलायत और क़ुदरत अता [illegible] चीज़ों से कहीं बेहतर और औला है जो दूसरों को अता किया है।

पस साबित हुआ कि सारी ख़ैर हाल की हिफ़ाज़त और उस पर राज़ी रहने और मरज़ीए मौला के सिवा हर चीज़ [illegible] तर्क कर देने में है इस लिए कि बन्दा के मतलूब की इन तीन सूरतों में से एक सूरत ज़रूर होगी [illegible] वह उसका मक़सूम होगा या किसी दूसरे का मक़सूम होगा या फिर किसी के लिए [illegible] होगा बल्कि आज़माइश के लिए उसकी तख़लीक़ की गई होगी। पस अगर ऐ बन्दा वह तेरा मक़सूम है तो तुझ तक ज़रूर पहुंचेगा ख़्वाह तू चाहे या न चाहे इस लिए यह किस तरह मुनासिब है कि ऐसी चीज़ की तलब में तुझ से बेक़रारी और हिर्स का इज़हार हो, अक़्ल व इल्म का फ़ैसला उस को बजा और अच्छा क़रार नहीं देता और अगर वह किसी दूसरे का मक़सूम है तो फिर उसकी तलब में क्यों मेहनत और सऊबत बरदाश्त कर रहा है वह तुझे मिलने वाली नहीं है, वह तुझ तक नहीं पहुंचेगी और अगर वह किसी का भी मक़सूम नहीं बल्कि आज़माइश है तो फिर उस के लिए अपने आप को आज़माइश में डालना कौन सी दानिशवरी है, अक़्लमंद उस पर किस तरह ख़ुश होगा, इस लिए दानिशमंद तो उसकी तलब ही नहीं करेगा।

एक जमाअत ने कहा है कि क़ज़ा पर राज़ी रहना यह है कि अल्लाह का हुक्म तुझ को पसन्द हो या ना पसन्द हो, तेरी नज़र में दोनों बराबर हों। बाज़ ने कहा है कि क़ज़ा की तल्ख़ी

(नागवारी) पर सब्र करना रज़ा है। एक और क़ौल है कि ख़ुदा के हुज़ूर में अपने इख़्तियार को साक़ित कर देना रज़ा है। एक क़ौल यह भी है कि मुदब्बिरे हक़ीक़ी के सामने अपने इख़्तियार को तर्क कर देना रज़ा है। किसी ने यह भी तारीफ़ कि रज़ा तर्के इख़्तियार का नाम है, बाज़ कहते हैं कि अहले रज़ा वह हैं जिन्होंने अपने दिलों को इख़्तियार से ख़ाली कर दिया है (इख़्तियार की जड़ ही काट दी है) वह न उस चीज़ को इख़्तियार करते हैं जिसको उनका दिल चाहता है और न ऐसी चीज़ को इख़्तियार करते हैं जिसमें तलब का पहलू हो, वह नुज़ुले हुक्म से पहले हुक्म के मुन्तज़िर नहीं रहते बल्कि जब हुक्म आ जाता है जिसके न वह मुन्तज़िर थे न शाएक़ तो उस हुक्म पर राज़ी हो जाते हैं, उस को पसन्द करते हैं और उस पर खुश होते हैं। उन ही साहब का यह क़ौल भी है कि अल्लाह तआ़ला के ऐसे बहुत से बन्दे हैं कि जब उन पर कोई मुसीबत का वक़्त आ जाता है तो वह उसको अपने लिए नेमते ख़ुदावन्दी समझते हैं शुक्र अदा करते हैं और खुश होते हैं, इस ख़ुशी से वह अन्दाज़ा कर लेते हैं कि बिला शुब्हा नेमतों में मशग़ूल रहकर मुनइम की तरफ़ से ग़ाफ़िल होन[illegible] मुज़रत रसां है इस [illegible]ए उनके दिल नेमत की तरफ़ से हट कर मुनइम की तरफ़ रूजूअ हो [illegible]े हैं। इस तरह मुसी[illegible]ें उन पर नाज़िल होती रहती हैं और उनके दिल मसाइब की तरफ़ से बे [illegible]स हो जाते हैं जब इ[illegible] मक़ाम पर पहुंच कर उनको क़रार हासिल हो जाता है तो उनका रब [illegible]नका मरतबा [illegible] दर्जा[illegible]से भी ऊंचा कर देता है, अल्लाह तआ़ला की बख़्शिशें और नेमतें ला म[illegible] और बे इन्त[illegible]ा हैं।

रज़ा का अदना दर्जा

रज़ा का [illegible]दना द[illegible] है कि [illegible]सवा [illegible]ल्लाह से ब[illegible] की उम्मीद मुनक़तअ़ हो जाए। अल्लाह तआ़ला[illegible]ने अपने सिवा बन्दों से [illegible]स ल[illegible]ने कि [illegible]म्मत फ़रमाई है। एक रिवायत में आया है कि यह[illegible] बिन क़[illegible] ने कहा [illegible] मैंने त[illegible]ढ़ा है कि वह मलऊन है जिस का एतमाद अपनी ही [illegible]सी म[illegible]लूक़ पर [illegible]।

हदीसे कुद्सी

हदीसे कुद्सी आया है कि [illegible]पनी इज़्ज़त व जलाल और सख़ावत व बुज़ुर्गी की क़सम मैं हर उस उम्मीदवार की उम्मी[illegible]को ना उम्मीदी से मुन्क़तअ कर दूंगा जिस ने मेरे सिवा ग़ैर से आस लगाई। पस ज़रूर उस शख़्स को लोगों के दर्मियान ज़लील करूंगा और अपने कुर्ब से दूर कर दूंगा, और उससे अपना रिश्ता मुन्क़तअ़ कर दूंगा, क्या वह मुसीबतों में ग़ैर से उम्मीद बांधे बैठा है हालांकि मसाएब मेरे हाथ में हैं, तो बन्दा मेरे ग़ैर से आस लगाता है और ग़ौर व फ़िक्र के बाद दूसरों के दरवाज़े खटखटाता है हालांकि वह दरवाज़े बन्द हैं और उनकी कुंजियां मेरे क़ब्ज़े में हैं, जो बन्दा मख़लूक़ को छोड़ कर मुझे पकड़ता है उसके उस इरादे को मैं उस के दिल और उसकी नीयत से मालूम कर लेता हूं और तमाम आसमान और ज़मीन और सारी कायनात भी अगर मेरे ऐसे बन्दे पर अपना दाव चलाते हैं तो मैं उसको उस दाव से निकलने का रास्ता दे देता हूं और उसको पनाह देता हूं और जो शख़्स मुझे छोड़ कर मख़लूक़ का दामन थामता है तो मैं आसमान से उसकी रस्सियां काट देता हूं और उसके नीचे से ज़मीन को खींच देता हूं और फिर दुनिया में उसको दुखी बना देता हूं और वह तबाह हो जाता है।

हुज़ूर का इरशाद

एक सहाबी ने फ़रमाया कि मैंने सुना कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमा रहे थे कि जो शख़्स लोगों के ज़रीये इज़्ज़त चाहता है वह ज़लील होता है। एक कौल है कि जो अपने जैसी मख़्लूक़ पर भरोसा और तकिया करता है ज़लील होता है, ऐसी चीज़ की ख़्वाहिश करना जो इधर उधर झांकने और इरादों के परेशान होने और ज़िल्लत व ख़्वारी से हासिल होती है उसकी पादाश में यही काफ़ी है कि ऐसे आदमी के अन्दर वह तमाम ख़राबियां जमा हो जाती हैं जो दुनिया में ख़्वारी और ख़ुदा से दूरी का बाइस होती हैं ऐसे आदमी के रिज़्क़ में ज़र्रा बराबर भी इज़ाफ़ा नहीं होता।

तमअ शिर्क है

एक शख़्स ने कहा कि मैं मुरीदों और तालिबाने हक़ के लिए जरर रसां, दिलों को वीरान करने वाली, मकसद से दूर रखने वाली, इरादों को मुन्तशिर रखने वाली त[illegible]अ से ज़्यादा किसी चीज को नहीं जानता इसका सबब यह है कि मुरी[illegible]ाह किसी दर्जा पर [illegible] तमअ उसके लिए शिर्क है। जिस शख़्स ने अपनी ही जैसी हस्ती से तम[illegible] वाबस्ता की जो न नु[illegible]सान पहुंचाने पर कादिर है और न फ़ायदा पहुंचाने पर न रोकने पर, तो उसने बादशा[illegible] हुक[illegible]त गोया गुलाम के सुपुर्द कर दी इस लिए वह मुशरिक हो गया। ऐसी [illegible]ें तकवा का सबूत उस वक्त मिल सकता है जब चीज़ों को उसके अस्ल मालिक की तरफ [illegible] किया [illegible]ए उसी से मांगे दूसरे से तलब न करे। बाज़ [illegible] कौल है [illegible] तमअ दरख़्त की ज[illegible] की [illegible]रह है और उसकी शाखें रियाकारी, शोह[illegible]त पसन्द[illegible]सन्नोअ [illegible] जाह [illegible]सन्दी है।

हवारियों से ह[illegible]रत ईसा [illegible]ा इरशा[illegible]

हज़रत ईसा [illegible]लैहिस्स[illegible]ाम ने अप[illegible] हवारियों से फ़रमाया [illegible] कि तमअ सफ़्फ़ाक, कातिल और बख़ील बनाने [illegible] एक बुज़ुर्ग का इरशाद है कि मैंने एक बार किसी दुनियावी चीज़ की तमअ की तो हातिफ़[illegible] पुकार कर कहा कि ऐ शख़्स बन्दो की तरफ़ दिल को माएल करना आज़ाद मुरीद को ज़ेब न[illegible]ल्कि वह अपनी हर मुराद अल्लाह से पा सकता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह [illegible]न्दों से उन चीजों की तमअ पोशीदा तौर पर रखते हैं जो उनके कब्ज़ा में होती हैं, लेकिन उनको बरकत वहां से मिलती है जहां से उनको तमअ नहीं होती यानी मुनइमे हकीक़ी के यहां से और वह अच्छी तरह जानते हैं कि तमअ अहवाल की ख़ामी का सबब है यह मुतवक्किल आरिफ़ों का सबसे अदना दर्जा है।

किसी मुरीद के दिल में तमअ उसी वक़्त पैदा होती है और दिल में जागुज़ीं होती हैं जब उसको अल्लाह तआला से इन्तेहाई दूरी हो जाती है, क्योंकि उसको मालूम है कि उसका मौला उसको देख रहा है फिर भी वह अपनी जैसी मख़्लूक़ से तमअ करता है और ख़िलाफ़े इलाही उसको (तमअ से) नहीं रोकता।

सिद्क़

सिद्क़ की अस्ल

सिद्क की असल अल्लाह तआ़ला का यह इरशाद है:

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला से डरो और सच्चों के साथ रहो।

हुज़ूरे अकरम का इरशाद

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद मरवी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बन्दा सच बोलता रहता है और सच बोलने का क़स्द करता रहता है यहां तक कि बारगाहे इलाही में उसको सिद्दीक़ लिख लिया जाता है और बन्दा झूट बोलता है और झूट बोलने का इरादा करता रहता है कि यहां तक कि अल्लाह के यहां उसको कज़्ज़ाब लिख [illegible]या जाता है।

बयान करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत [illegible]ऊद अलैहिस्सलाम [illegible]पास वही भेजी कि ऐ दाऊद जो मुझे अपने बातिन (दिल) में सच्चा जान[illegible] मैं उसको मख़लूक़ [illegible] अन्दर सच्चा कर दूंगा। समझ लेना चाहिए कि सिद्क़ हर काम का सुतू[illegible] है, हर काम[illegible] दुरु[illegible]ी और तकमील सच्चाई ही ही होती है, सिद्क नबूव्वत से दूसरे दर्जा [illegible] है। अल्लाह [illegible]आ़ला का इरशाद है:

जो लोग रास्तबाज़ (सच्चे) हैं वह पैग़म्बरों, सिद्दीक़ों, [illegible]दों और [illegible]को कारों के साथ हैं।

सादिक़ लफ़्ज़ सिद्क़ से इस्मे फ़ा[illegible]एल है, सिद्दीक़ इससे [illegible]स्मे मु[illegible]लग़ा का सीग़ा है यानी बहुत ही सच्चा[illegible] सिद्दीक़ [illegible] है जिस[illegible] बा[illegible] सच्चाई ज़ा[illegible]र होती हो यहां तक कि सच्चाई उस की आदत [illegible]और मल्का ब[illegible] जाए, सि[illegible]क़ उ[illegible] पर [illegible] हो गया हो गोया सिद्क़ नाम है ज़ाहिर व बातिन [illegible]ी यकसा[illegible]यत का। [illegible]दिक़ वह [illegible] क़ौल में सच्चा हो, और सिद्दीक़ वह है जो अक़्वाल, अ[illegible]ल औ[illegible] कुल अहवाल में सच्चा हो। कहा ग[illegible]है कि जो शख़्स यह ख़्वाहिश रखता हो कि अल्ला[illegible]ला उसके साथ रहे तो उसको चाहिए कि वह सच्चाई को अपनाए रहे क्योंकि अल्लाह सच्चा के [illegible]थ होता है।

हज़रत जुनैद का इर[illegible]

हज़रत जुनैद का इरशाद है कि सादिक़ एक दिन में चालीस बार बदलता है (वह हर बार सच बोलता है) और रियाकार चालीस बरस तक एक हालत (रियाकारी) में रहता है, बाज़ का क़ौल है कि सच्चाई हलाकत के मक़ाम पर भी कलमए हक़ ज़बान से निकालने का नाम है। बाज़ ने कहा कि बातिन के मुवाफ़िक़ ज़बान से अदा करना सिद्क़ है। एक क़ौल यह है कि नाजाएज़ बात की अदाएगी से मुंह को रोक लेना सिद्क़ है, किसी ने कहा कि अल्लाह के लिए तकमीले अमल सिद्क़ है। सहल बिन अब्दुल्लाह ने कहा जो शख़्स अपने नफ़्स या किसी दूसरे शख़्स के बारे में यावा गोई करता है वह सिद्क की बू भी नहीं सुंघ सकता।

हज़रत अबू सईद क़रशी का इरशाद

हज़रत अबू सईद क़रशी ने कहा कि सादिक़ मौत के लिए तैयार रहता है और अन्दुरूनी हालतों के ज़ाहिर होने से नहीं झिझकता। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है:

अगर तुम रास्त गुफ़तार हो तो मौत की आरज़ू करो।

एक क़ौल है कि बिल इरादा तौहीद की सेहत, सिद्क़ है। फ़रमाया असले सिद्क़ यह है कि जहां झूट बोलने से छुटकारा हो सके वहां भी सच बोले। सादिक़ में तीन ख़सलतें होती हैं जिन में से दो ख़ता नहीं करतीं। अव्वल यह कि सादिक़ की इबादत में हलावत होती है दोम यह कि मख़लूक़ उस से ख़ौफ़ ख़ाती है, सोम यह है कि उसकी गुफ़्तगू में तमकिनत होती है।

हज़रत जुन्नून मिस्री की सराहत

हजरत जुन्नून मिस्री फ़रमाते हैं कि रास्ती और सच्चाई ख़ुदा की तलवार है जिस से वार किया जाता है और वह रस्सी को दो टुकड़ो में काट देती है। लोगों ने फ़तहे मूसली से सिद्क़ के बारे में दरयाफ़्त किया आप ने लोहार के भट्टी में जिसमें आग दहक रही थी हाथ डाल कर आग की तरह दहकता हुआ लोहा हाथ में उठा लिया और उतनी देर तक हाथ में लिए रहे कि वह ठंडा हो गया उस वक़्त आप ने फ़रमाया यह सिद्क़ है।

हारिस मोहासबी का इरशाद

हारिस मोहासबी से सिद्क़ की निशानी दरयाफ़्त [illegible] गई तो उन्होंने फ़र[illegible]या सादिक़ वह है कि अगर लोगों के दिलों से उसकी क़द्र व मंज़िलत [illegible]ल्कुल जाती [illegible] तो [illegible]सलाहे क़ल्ब के बाइस वह उसकी बिल्कुल परवाह न करे और चींटी ब[illegible] अपने हुस्ने [illegible]मल की ख़बर लोगों को हो जाना पसन्द न करे और अगर उसके अ[illegible]माले बद [illegible] [illegible]बर लोगों को हो जाए तो उसको गिरां न गुज़रे, अगर वह [illegible]वारी मह[illegible] करेग[illegible] तो यह इस [illegible] का सबूत होगा कि वह लोगों की नज़र में अ[illegible]ने आमा[illegible] ज़्यादा [illegible] बनन[illegible] चाहता है, [illegible]ह सिद्दीक़ीन का ख़ुल्क़ नहीं है। एक शख़्स ने क[illegible] जो शख़्स [illegible]वामी फ़र्ज़ अदा [illegible] उसका वक़्ती फ़र्ज़ भी क़बूल नहीं किया जाता, उन [illegible]ाहब से [illegible]याफ़्त कि[illegible] गया कि [illegible] फ़र्[illegible] क्या है? उन्होंने जवाब दिया सिद्क़। फ़रमाया [illegible] ज[illegible] तू अल्लाह तआला से सिद्क़ के [illegible]थ तलब करेगा तो अल्लाह तआला तुझ को एक [illegible] इनायत करेगा जिसके अन्दर दुनिया व आख़िरत के तमाम अजाए बात तुझ पर ज़ाहिर हो जाएंगे[illegible]

तम्मत बिल ख़ैर

4 जमादिउल अव्वल 1431 हि०

बमुताबिक़ 19 अप्रील 2010 बरोज़ पीर

अज़ क़लम साजिद हाशमी

हिन्दी तर्जमा मुकम्मल हुआ अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाये